ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष . ७ | अंक २ | रविवार ७ नवम्बर | २२ कार्तिक वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५

अमृतसर में लूटपाट : ऊन बाजार की रक्षा हिन्दुओं ने की

आत्मरक्षा के लिए हिन्दू तैयार हों : हिंसात्मक कारंवाई के लिए अकालियों की निन्दा : शालवाले द्वारा हिन्दू सम्मेलन का सुझाव

नई दिल्ली। विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि अमृतसर को पवित्र नगर षित करने वालो ने १८ अक्तूबर के दिन जो जघन्य कार्य किया उससे अमृतसर पवित्रता को गहरी क्षति पहुची है और यह क्षति सरलता से पूरी नहीं जा ती। यह भी ज्ञात हुआ कि १८ अक्तूबर के दिन दोपहर को ढाई-तीन बजे नगी वारें और भाले लिए सैकडो अकाली बाहर निकले और लूटमार शुरू कर दी। दगइयो ने गुरुद्वारे के साथ लगी तीन दुकानें लूट लीं। दो दुकानें तलवारो और लो की थीं और तीसरी सोडावाटर की। इसी प्रकार कांग्रेसी नेता बाबा शाल ; बिल्ला की दुकान पूरी तरह लूट ली गयी। इस दुकान मे दो लाख रुपयो का त था, उपद्रवियो को आता देख कर दुकान बन्द कर दी गई थी, परन्तु हमला- ों ने दरवाजा तोड़कर दुकान का माल और टेलीफोन तक लूट लिया। यह भी त हुआ है कि मामला जब काफी गम्भीर हो गया और लुटेरो ऊन के बडे बाजार रा आहलुवालिया को भी आग लगाने की कोशिश की तो हिन्दू दुकानदारों ने नी रक्षा स्वय करने का निर्णय किया और पथराव कर दगइयो को खदेड दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले अमृतसर मे हुई लूटपाट और आगजनी का समाचार मिलते ही अमृतसर गए थे। उन्होने लूटी हुई दुकानें, जली हुई बसें, जीपें तथा नगर मे हुए अन्य विनाश को देखा। श्री शालवाले ने इस बात पर गहरा खेद प्रकट किया कि गुरुद्वारे के पास दुकानें जब लूटी जा रही थीं, तब पुलिस खडी तमाशा देख रही थी। श्री शालवाले ने सुझाव दिया कि अकालियो से उत्पन्न स्थिति का मुकाबला करने के लिए अमृतसर मे एक अखिल भारतीय हिन्दू सम्मेलन आयोजित करना चाहिए। उन्होने कहा—पजाब केवल अकालियो का नहीं, वहां ४८ प्रतिशत हिन्दू भी रहते हैं।

अमृतसर के प्रसिद्ध दुर्गा मन्दिर की कमेटी ने एक वक्तव्य मे अकालियों की हिंसात्मक कार्यवाइयो की निन्दा की है, जिसके कारण शहर का जीवन अस्तव्यस्त हो गया। कमेटी ने हिन्दुओ से कहा है कि यदि पुन ऐसी घटना घटे तो वे आत्म-रक्षा के लिए तैयार रहे।

ऐसा कोई काम न करो, जिससे हिन्दु और सिखोंमें दरार हो

गुरुओं की शिक्षा के खिलाफ कार्य न करो : अकालियों से हिन्दुस्तान टाइम्स के सम्पादक श्री खुशवन्तसिंह की अपील

नई दिल्ली। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के सम्पादक श्री खुशवन्तसिंह ने गुरु कदेव के ५१३ वें जन्मदिवस पर इस आशा से अकालियो से अपील की है कि रे देश में विवेक की आवाज सुनी जाएगी—उन्होंने कहा है—"सबसे पहले मैं अकाली भाइयों से पूछना चाहूगा कि उनके मोर्चे से अमृतसर, पजाब और त को क्या नुकसान पहुचा है ? मैं व्यापार में हुए नुकसान, विधि-व्यवस्था बनाए मे आई लागत और जेलों में ढाई महीने तक २५,००० अकालियों को खिलाने हुए खर्च की बात नहीं कर रहा। मैं उनसे पूछना चाहूगा कि हिन्दु, सिख न्ध को जो अन्य किन्ही दो सम्प्रदायों की तुलना में ज्यादा प्रगाढ़ थे, क्या क्षति है। मैं उनसे पूछना चाहूगा कि क्या उन्होने इस बात पर ध्यान दिया है कि हाल तक अमृतसर के 'हर मन्दिर' में पूजा के लिये आने वाले लोगों मे काफी सख्या हिन्दुओं, सहजधारियो और मोने सिखों की हुआ करती थी। आज मैं हरमन्दिर के दरवाजे पर दो-चार घटे बिताने की दरख्वास्त करूगा, ताकि य जान सकें कि गैर (खालसा सिखो की सख्या स्पष्ट रूप से घटी है या। मेरे विश्वासपात्र लोगों ने मुझे बताया है कि हरमन्दिर और वास्तव मे सभी गुरुद्वारों में हिन्दू भक्तों की सख्या एक तिहाई घट गई है। यदि वास्तव में है तो क्या यह उपयुक्त अवसर नहीं है कि अकाली और अन्य सभी सिख आप से सवाल करें कि ऐसी क्या चीज है जो इन हिन्दू सिखों को गुरुद्वारो खींच रही है ? कौन हिन्दुओं को सिखों से दूर कर रहा है ? वे लोग जो सम्प्रदायों के बीच मतभेद पैदा कर रहे हैं, क्या सिख गुरुओं और पवित्र ग्रंथ में दी गई उनकी शिक्षाओं के उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं ?

एक विचारणीय बात यह और भी है कि हर दस सिखो में से तीन पंजाब र रहते हैं। शायद ही कोई अपवाद हो, अन्यथा सभी जहां भी हैं, फल-फूल। गोहाटी से लेकर दिल्ली तक, बर्फीले हिमालय से कन्याकुमारी के शैल तक। न केवल सिख जनसख्या का ३० प्रतिशत पंजाब से बाहर रहता है, भारत के किसी भी नगर की तुलना में, यहां तक कि अमृतसर, लुधियाना या जालन्धर से भी ज्यादह सिख दिल्ली मे रहते हैं। जब सिखो को अकाली एक अलग कौम बतलाते हैं, तो अन्य भारतीयो के बीच रह रहे और फल-फूल रहे इन सिखो के प्रति उनकी प्रतिक्रिया कैसी होगी, इस बारे मे भी मैं चाहूगा कि वे विचार करें"। कुछ भी करो, पर वह वह काम न करो जिससे हिन्दुओ और सिखो के बीच दरार पैदा हो, न ही वह काम करो जिससे सिखो के प्रति हिन्दुओ के प्रेम, ग्रन्थ साहिब, सिख गुरुओं एव सिख उपासना स्थलो से उन्हे बिलगाए। □

मीनाक्षीपुरम में आर्य महासम्मेलन की तैयारी

अनेक सम्मेलनों का आयोजन : आर्य हिन्दू बड़ी सख्या मे जाएं श्री शालवाले का अनुरोध

नई दिल्ली। हिन्दू समाज के नवजागरण के प्रतीक मीनाक्षीपुरम मे ३१ दिसम्बर १९८२ और १-२ जनवरी १९८३ को एक विशेष आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है उसकी तैयारिया बडे जोर शोर से शुरू हो गई हैं। इसके लिए नियुक्त समिति के सदस्यो ने अपना-अपना कार्य सभाल लिया है।

उक्त घोषणा करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक वक्तव्य मे कहा कि मीनाक्षीपुरम सम्मेलन हिन्दुओं का परीक्षा स्थल है। यहीं से ही पेट्रो डालर के बल पर हिन्दू समाज को विभाजित करने का प्रकट आक्रमण शुरू हुआ था और आर्यसमाज ने इसी स्थान से इस आक्रमण को चुनौती को स्वीकार करते हुए धर्मरक्षा महाभियान के रूप मे एक देशव्यापी आंदोलन प्रारम्भ किया था। इस सम्मेलन मे यह सिंहावलोकन किया जायेगा कि हमारा धर्मरक्षा महाभियान किस प्रकार सफलता के साथ प्रगति कर रहा है। श्री शाल वाले ने देश भर के हिन्दुओ से आग्रह किया कि वे ऊच-नीच, जाति-पाति के भेदभाव व पाखण्ड और फूट की दीवारो को तोडने के लिए बडी सख्या मे मीनाक्षी-पुरम पहुचे।

इस महा आर्यसम्मेलन मे वैदिक महायज्ञ, सामूहिक यज्ञोपवीत, हरिजन स्नेह मिलन, हरिजन स्नेह सम्मेलन और बिछुडो का पुनर्मिलन (शुद्धि) कार्यक्रम रखे जाने हैं। इस अवसर पर आर्यसमाज द्वारा मीनाक्षीपुरम मे सचालित दयानन्द चिरजीलाल विद्यालय की आधारशिला भी रखी जायगी और मीनाक्षीपुरम आर्य समाज का प्रथम वर्ष मनाया जाएगा।

पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

निष्काम कर्म करता हुआ शतायु हो !

प्रस्तुतकर्ता—श्री प्रेमनाथ सभा-प्रधान

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा । सभा-प्रधान
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ यजु० ४०।२ ॥

दीर्घतमा ऋषि:, आत्मा देवता, छन्द, धैवत स्वर. ।

मनुष्य वेदोक्त निष्काम कर्मों को करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा करे,

शब्दार्थ—(मनुष्य) (इह) इस इस ससार मे (कर्माणि) (वेदोक्त धर्म्य निष्काम) धर्मयुक्त वेदोक्त निष्काम कर्मों को (कुर्वन) करता हुआ (एव) ही (शतम्) सौ (समा) वर्ष (जिजीविषेत्) जीने की इच्छा करे । (एवम्) इस प्रकार (धर्मयुक्त कर्म मे प्रवर्तमान) (त्वयि) तुझ (नरे) (मन, इन्द्रिय) शरीर व आत्मा को धर्म की ओर ले जाने वाले) मनुष्य मे (कर्म) (अधर्म्य अवैदिक मनोरथ सम्बन्धी) कर्म (न) कही (लिप्यते) लिप्त होना (जिसमे मनुष्य बारम्बार जन्म-मरण के बन्धन मे पडना है) (इन) इस प्रकार से (अन्यथा) अन्य किसी से (कर्मों के लिप्त होने का अभाव) (न) नही (अस्ति) होता है ॥

(ऋषि दयानन्द वेदभाष्य)

भावार्थ मनुष्य आलस्य को छोड़ कर सब देखने हारे न्यायाधीश परमात्मा और करने योग्य उसकी आज्ञा को मान कर शुभ कर्मों को करते हुए और अशुभ कर्मों को छोडते हुए ब्रह्मचर्य के सेवन से विद्या और अच्छी शिक्षा को पाकर उपस्थ इन्द्रिय के रोकने से पराक्रम को बढ़ाकर अल्पमृत्यु को हटावें, युक्त-आहार विहार से सौ वर्ष की आयु को प्राप्त जैसे-जैसे मनुष्य सुकर्मों मे चेष्टा करते हैं वैसे ही पाप कर्म से बुद्धि की निवृत्ति होती और विद्या, अवस्था और सुशीलता बढ़ती है ।

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

(इस वेद मन्त्र मे ईश्वर की आज्ञा है कि मनुष्य सौ पर्यन्त अर्थात जब तक जीवे धर्म्य, वेदोक्त, निष्काम कर्मों को करता हुआ ही जीने की इच्छा करे । पापी, स्वार्थी अथवा आलसी मनुष्य जन्म-मरण के बन्धन छूटकर मोक्ष की की प्राप्ति नही कर सकता)

बोध-कथा

शिष्टाचार

स्वभावत सवाल होता है कि आदमी किस प्रकार शिष्ट या सज्जन बन सकता है ? एक सीख तो यही है कि शिष्टो या सज्जनो का अनुसरण किया जाए तो व्यक्ति सज्जन बन सकता है । दूसरी ओर यह भी कहा जाता है कि यदि व्यक्ति अक्लमन्दी से कार्य करे तो मूर्खों से भी शिष्टाचार सीख सकता है । एक बार किसी जिज्ञासु ने अपने समय के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक एव साधु पुरुष हकीम लुकमान से से पूछा—'आपने शिष्टाचार कहा से सीखा ?' हकीम लुकमान का जवाब था—'यह तहजीब मैंने मूर्खों से सीखी ।' इस पर सवाल करने वाला पूछ बैठा—'मूर्खों से हम कैसे सीख सकते हैं ?' हकीम लुकमान का उत्तर था—'उनकी जो बात समझ मे नही आई, वह छोड दी ।

हम भी शिष्टाचार या कोई भी गुण उसी स्थिति मे सीख सकते हैं जब दूसरो की बुराइयो या दुर्गुणो को देखने की बजाय केवल दूसरों के सद्गुण देखें । सम्भवत. यही कारण था कि गाधी जी अपने सामने एक जापानी सज्जन द्वारा दिए तीन बन्दरों की तस्वीर अपने सामने रखते थे । वे तीन बन्दर अपने हाथो का इशारा करते हुए मानो कहते थे—कभी बुरा न सुनो, कभी बुरा न देखो और कभी बुरा न कहो ।'

—नरेन्द्र

कृपया 'आर्यसन्देश' के नए ग्राहक बनाइए

'आर्यसन्देश' के सभी प्रतिष्ठित पाठको के पास यह पत्र आर्य विचारो को लेकर समय पर पहुच रहा है । इसे और गतिशील तथा लोकप्रिय बनाने के लिए पाठकों को इसके नए ग्राहक बढ़ाने वा बनाने चाहिए।

प्रतिष्ठित महानुभावो के पास भी यह पत्र भेजा जा रहा है । इसे सभी और से ख्याति भी मिल रही है ।

अत 'आर्यसन्देश' के सभी प्रेमियो से सानुरोध प्रार्थना है कि वे अपना तथा नए सदस्यो का चन्दा शीघ्रता से शीघ्र भिजवाकर यश के पात्र बनें ।

—भारत मित्र शास्त्री,

मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

पुरुषार्थ कर

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम.ए.एलटी.,

उत्काम महते सौभगाय यजु० ११/२१

(महते) महान् (सौभगाय) सौभाग्य के लिए (उत्काम) बल लगा, पुरुषार्थ कर ।

'मनुष्य अपने भाग्य का स्वय निर्माता और विधाता है । आप ससार मे उथल-पुथल मचा सकते हैं । भाग्य को बदलने की आप मे पूरी शक्ति है, आवश्यकता है पुरुषार्थ की । पुरुषार्थ करो । पुरुषार्थ के द्वारा आप धन-धान्य, दौलत, वैभव तथा ऐश्वर्य सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं तथा मृत्यु पर विजय प्राप्त कर मोक्ष के अधिकारी बन सकते हैं ।" आचार्य श्री जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती के ये वचन कितने प्रेरणादायक है । कुछ मनुष्य राम राम' अथवा और 'ओ३म् ओ३म्' का उच्चारण करना ही अपना लक्ष्य मान भगवान को प्राप्त करने का साधन समझते हैं । परन्तु बिना पुरुषार्थ के ईश्वर भक्ति का भी महत्त्व नहीं । ईश्वर ने मनुष्य को पुरुषार्थ के लिए पैदा किया है ।

एक बार की बात है नारद जी विष्णु भगवान से बोले 'मैं केवल 'नारायण नारायण' प्रतिदिन जपता हू । बतये मुझसे अधिक भगवान का भक्त कौन है ?

भगवान विष्णु बोले, यदि तुम अपने से भी बडा भक्त देखना चाहते हो तो मर्त्यलोक मे जाकर उस किसान को देखो, वह तुमसे बडा भक्त है । नारद आये और झट से जाँच-पडताल करके आए और विष्णु भगवान से जाकर बोले, महाराज, वह किसान तो सवेरे उठकर हल, कुदाल आदि लेकर खेत पर चला जाता है और दिन भर खेत मे खूब परिश्रम से काम करता है और शाम को लौटकर हल रख देता है । हा, सवेरे जब वह निकलता है और शाम को जब हल रखता है तब केवल दो बार भगवान का नाम लेता है और मैं दिन भर लेता हू । कहा वह मुझसे अधिक भगवान का भक्त हुआ ।

नारायण ने कुछ न कहकर नारद जी से एक काम करने को कहा । वह बोले, नारद ! यह तेल का बर्तन लो जो लबालब भरा है और सारे नगर की परिक्रमा करके लौट आओ । यह ध्यान रखना एक बूद भी तेल न गिरे । नारद जी चल पड़े ! वर्तन पर अपना ध्यान केन्द्रित करके धीरे-धीरे परिक्रमा करने लगे—आखिर भगवान का हुक्म था, लौटे तो भगवान ने पूछा, कही तेल गिरा ।'

'नही भगवन्, एक बूद भी नही ।'

'उस परिक्रमा मे तुमने मेरा नाम कितनी बार लिया ।'

'एक बार भी नही, क्योकि मेरा सारा चित्त तो तेल सभालने मे लगा था ।

तुम नाम नलेकर मेरा काम कर रहे थे । मैं भी पुरुष को पृथ्वी पर पुरुषार्थ के लिए भेजता हूं । यदि वह मेरी आज्ञा का पालन कर पुरुषार्थ करता है तो वही मेरा सच्चा भक्त है, वही मेरा प्रिय है । तुम दिन भर केवल मेरा नाम ही लेते हो परन्तु वह दिन भर पुरुषार्थ करता है और दिन मे दो बार 'हरि' का नाम भी लेता है । अत वह तुमसे बड़ा भक्त है ।

एक और घटना रूस की है काउंट लियो टालस्टाय एक दिन वह प्रातः अपने कमरे मे बैठे चिन्तन मे मग्न थे । सेवक ने सूचना दी, एक युवक आपसे मिलना चाहता है । 'अच्छा आने दो ।'

युवक टालस्टाय के सामने आया । वह स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट था । पर उसके कपडे उसकी निर्धनता की सूचना दे रहे थे :

'क्या बात है ?' 'आपके दर्शन की इच्छा थी ।' 'मेरे दर्शन ! मैं कोई अजनबी मनुष्य तो हू नही । तुम्हारे समान रूप-रग का एक इन्सान हूं ।' 'काउंट मैं भूख, बेकारी, निर्धनता से तग आ गया हू । मेरे पास एक भी पैसा नही ।'

'तुम्हारे पास एक भी पैसा नही है ?

टालस्टाय आश्चर्यचकित हो बोले ।" अच्छा, ऐसा करो कि मेरा एक परिचित व्यापारी है जो जीवित आदमी की आखें खरीदता है । मैं उसे पत्र लिख देता हू तुम्हारी दोनो आखो के बदले दो हजार रुपये तुम्हें जरूर दे देगा ।' आंखे काउंट···मैं तो···' 'अच्छा ऐसा करो वह हाथ भी खरीदता है । मैं पत्र लिख दूंगा । तुम्हारे हाथो का एक हजार रुपया मिल जाएगा ।' युवक घबरा गया । टालस्टाय आगे बोले, 'वह तुम्हारा पूरा शरीर खरीद लेगा । इसका वह एक लाख रुपये दे देगा । मेरा व्यापारी मित्र जीवित आदमी को मार कर एक बहुत ही गुप्त औषधि तैयार करता है ।'

युवक ने कापते हुए कहा, 'मैं तो मर जाऊगा काउंट ! इन रुपयो का क्या होगा ?'

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ओ३म् यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवाऽनुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ।। यजु ४०-६

आत्मा में जब प्राणियों का तथा सब प्राणियो मे जब आत्मा का अनुदर्शन हो तब सब द्वैतभाव नष्ट हो जाते हैं ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

वीरभोग्या वसुन्धरा !

इस शताब्दी के तीसरे दशक की बात है कि असहयोग आन्दोलन की विफलता के बाद आंग्ल महाप्रभुओं के इशारे पर देश की जनता मे मनोमालिन्य पैदा करने के लिए स्थान-स्थान पर साम्प्रदायिक दगे भड़कने लगे । अल्पसख्यको की सगठित एव आक्रमणात्मक कार्यवाइयों से बहुसख्यक होने के बावजूद हिन्दू आर्य पिटने लगे । उन दिनों दिल्ली के बेताज बादशाह स्वामी श्रद्धानन्दजी थे । एक ओर वह राष्ट्रीय संघर्ष मे हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे तो दूसरी ओर उन्होंने निर्बल हिन्दू जनता को सगठन एव शक्ति संचय द्वारा आत्मरक्षा का सन्देश दिया । पहली बार दिल्ली तथा उत्तर भारत के हिन्दुओ ने आत्मरक्षा के लिए अखाडो के माध्यम से शारीरिक व्यायाम एव विशिष्ट दाव-पेंच द्वारा स्वामी जी के नेतृत्व एव पथ-प्रदर्शन मे सगठित एव सन्नद्ध होने का प्रयत्न किया । जल्दी ही अल्पसख्यको को भी अनुभूति हो गई कि गीदड़भभकी द्वारा वे बहुसख्यक जनता को परेशान नही कर सकेंगे । यह इस सगठन का ही फल था कि पूर्वी पजाब को अल्पसख्यको के नापाक षड्यन्त्रों के चगुल से सुरक्षित रखा जा सका । आज कुछ वैसी ही परिस्थिति देश के पश्चिमोत्तर अंचल में पनप रही है ।

इन दिनो केन्द्रीय सरकार पश्चिमोत्तर प्रदेश मे शान्ति-व्यवस्था की सुरक्षा के लिये प्रमुख अकाली नेताओ से समझौते की बातचीत कर रही है । ऐसे सकेत भी मिल रहे हैं कि उग्रवादी अकाली आनन्दपुर के प्रस्ताव के कार्यान्वियन के बिना किसी समझौते के लिए तैयार नहीं हैं । यह स्थिति अत्यन्त विस्फोटक है । पिछले दो-ढाई वर्ष से पजाब की स्थिति निरन्तर बिगडती गई है । दिल्ली और पजाब मे कई निर्दोष व्यक्तियो को उग्रवादी मारने मे कामयाब हो गये हैं, परन्तु उन्हे पकड़कर उनका समूल नाश करने मे शासन ने उपयुक्त दिलचस्पी नही दिखलाई है । पश्चिमोत्तर अचल आज विक्षुब्ध है, वहा के अल्पसख्यको की भाषा, सस्कृति एव भविष्य खतरे मे पड़ा है । खेद की बात यह है कि आज केन्द्रीय प्रशासन उन तत्वो से समझौते की बात कर रहा है जो इस अंचल में अशान्ति एव अव्यवस्था पैदा करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं । केन्द्रीय प्रशासन और जनता को इतिहास का यह तत्व हृदयगम कर लेना होगा कि—'वीरभोग्या वसुन्धरा ।'

आततायी व्यक्ति, समाज या सगठन का सामना कोरी बातचीत से करना सम्भव नहीं हो सकता, न उससे समझौते की बात करना ही नीतिसगत है । नीति मे कहा गया है कि 'आततायिनमायान्त हन्यादेवाविचारयन्'—किसी प्रदेश या देश के आन्तरिक एव बाह्य आक्रमणकारी या आततायी का नियन्त्रण केवल शक्ति द्वारा ही सम्भव है । पश्चिमोत्तर अचल के साम्प्रदायिक तत्वो की अराष्ट्रीय माग के सामने झुकने का अर्थ होगा देश की एकता को खण्डित करना । आज उनकी एक माग मानी जाएगी, कल वे दूसरी माग रखेंगे, इस सवेदनशील संकटग्रस्त क्षेत्र की अल्पसख्यक जनता तथा क्षेत्र में राष्ट्रीय हितो के सरक्षण के लिए केन्द्र सरकार को समय रहते दृढ़ता से कदम उठाना होगा । यहां की बहुसख्यक जनता के उचित धार्मिक अधिकार स्वीकार किए जा सकते हैं, परन्तु साथ ही यहा की अल्पसख्यक जनता को साम्प्रदायिक राष्ट्रद्रोही तत्त्वों के घृणित षड्यन्त्रो का शिकार न होने देने के लिए उसे आत्मरक्षा की पूरी सुविधा देना एक राष्ट्रीय दायित्व है । इस क्षेत्र की ४७-४८ प्र. श. अल्पसख्यक जनता को आत्मरक्षा की सुविधा एव स्थिति देना तथा इस क्षेत्र को देश का एक भूभाग बनाए रखना केन्द्र की जिम्मेदारी है । इस गम्भीर कार्य को केवल वीरता और साहस से ही पूरा किया जा सकता है ।

मनुष्य के तीन बुनियादी कर्तव्य

—महात्मा आनन्द स्वामी

मनुष्य के कर्तव्य सक्षिप्त रीति से, यदि कहा जाए तो तीन भागो मे विभक्त हो सकते हैं ये विभाग हैं —

१ – मनुष्य को, अच्छा मनुष्य बनने के लिए अपने सम्बन्ध मे क्या करना चाहिए ।

२—उससे दूसरे प्राणियो के प्रति क्या कर्तव्य है ।

३—ईश्वर के सम्बन्ध मे उसे क्या करना चाहिए । इन्ही को दूसरे शब्दो में (१) शारीरिक (२) सामाजिक और (३) आत्मिक उन्नति कहते हैं । कर्तव्य के इन विभागो का कुछ विवरण देना उचित है, ताकि जिससे सभी को उनका ज्ञान हो सके —

कर्तव्य का पहला विभाग

पहला कर्तव्य इस विभाग मे, मनुष्य को अपने सम्बन्ध मे क्या करना चाहिए, इस पर विचार करना होगा उन्ही का यहाँ सक्षिप्त विवरण दिया जाता है —

१ – पहला कर्तव्य अपनी इन्द्रियो को बलवान बनाना है मनुष्य का बाह्य स्थूल शरीर पाँव से सिर तक इन्द्रियाँ है । फलत इन्द्रियो को बलवान बनाने के अर्थ यह हुए कि बाह्य शरीर को बलवान बनाना । शारीरिक बल प्राप्त करने की प्रत्येक को इतनी चिन्ता रहती थी कि चार आश्रमो मे से पहले आश्रम मे विद्यालय के सिवा ब्रह्मचर्य द्वारा अपने को बलवान बनाना मुख्य कर्तव्य था । इस देश की माताएँ यदि उनसे निर्बल सन्तान पैदा हो जाए तो उसे अपने लिए घातक समझती थी । महाभारत मे एक जगह आया है कि सप्त ऋषि, जिनमे अरुन्धती नाम वाली एक ऋषि भी थी, यात्रा कर रहे थे । एक सरोवर मे कमल के डण्ठल तोडकर उन्होन एक जगह रखे । परन्तु उन्हे वहाँ से कोई उठा ले गया । जब ले जाने वाला कोई नही दिखाई दिया तो एक दूसरे पर सन्देह होने पर यह ठहरा कि प्रत्येक अपने को निर्दोष होने के लिए कसम खाए । उस मौके पर देवी अरुन्धती की कसम यह थी "अयोग्याः वीरसूरस्तु विसरस्तेये करोति या" अर्थात् जो पाप माता को अनाचार करने और निर्बल सतान पैदा करने से लगता है, वही पाप उसको लगे, जिसने इन डण्ठलों को चुराया हो । स्पष्ट है कि उस समय माताए निर्बल सतान पैदा करने को अनाचार और चोरी करना जैसा घातक समझती थी । इसलिए निर्बलता को घातक समझते हुए शारीरिकोन्नति प्रत्येक को करना चाहिए ।

दूसरा कर्तव्य —अपने को पवित्र बनाना है । पवित्रता मे बल का दुरुपयोग नहीं हुआ करता । इन्द्रिय और मनमे पवित्रता का सचार होने से मनुष्य सदाचारी बना करता है । पवित्रता के लिए मनका शुद्ध होना अनिवार्य है । मन शुद्ध अन्न के सेवन और सत्य के क्रियात्मक प्रयोग से शुद्ध हुआ करना है । छल और कपट से पैदा किया हुआ अन्न, मनको दूषित कर दिया करता है । सस्कृत मे कहावत है—'यथा अन्न तथा मन ।'

तीसरा कर्तव्य —अपने को अच्छा बनाने के लिए मनुष्य का तीसरा कर्तव्य यह है कि वह अपने अन्दर श्रद्धा के भाव पैदा करे । श्रद्धा यास्काचार्य के विवेचनानुसार, 'श्रतसत्य दधाति या सा श्रद्धा' सच्चाई का धारण श्रद्धा करना दूसरी चीज । सच्चाई का ज्ञान रखने से मनुष्य सच्चाई पर अमल करने के लिए बाधित नही होता परन्तु सच्चाई के धारण कर लेने से, अर्थात् स्वाद चखने के सदृश उसके अनुभव कर लेने से, वह उस सच्चाई के विरुद्ध अचम्भा न कर सकने के लिए मजबूर हो जाता है ।

सकलनकर्त्ता हरिओम अग्रहरि टीटागढ

शिक्षा क्षेत्र की समस्याएं और निदान

नैतिक शिक्षा का अभाव

सदा से ही शिक्षा का प्रयोजन रहा है 'आत्मान विद्धि' अर्थात् अपने को जानो। शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है जीवन में उच्चतम सस्कारों का आरोपण। शिक्षा का मुख्य प्रयोजन मानव को पशुता के स्तर से ऊपर उठाकर सस्कारी जीव का निर्माण करना है। प्राचीन गुरुकुलों में गुरु के सरक्षण मे अध्ययन-रत तरुण आध्यात्मिक सत्यों के प्रकाश में, जीवन का यथार्थ खोजता था। आज भी शिक्षा सस्थानो की शिक्षा ऐसी होनी चाहिये कि यहा से जब ब्रह्मचारी बाहर जाए तो उसके मुख पर स्वास्थ्य और सच्चरित्रता की आभा हो, मन में लोक-सेवा और अन्याय निवारण की भावना हो, उसके मस्तिष्क मे सदसद का विवेक हो, उसके हृदय मे ईश्वर आराधना का स्पन्दन हो।

शिक्षा के प्राचीन आचार्यों ने जहां परा विद्या अर्थात् ब्रह्म विद्या पर जोर दिया, वहा अपरा विद्या अर्थात् सम्पूर्ण लौकिक ज्ञान और शिल्प को भी आवश्यक माना है। परा एव अपरा विद्या का समन्वय ही गुरुकुलीय शिक्षा का आदर्श था। सचमुच वह शिक्षा जो मानव को केवल भूत (पदार्थ) विद्याओ का बोध कराती है अपूर्ण है।

शिक्षा मे ब्रह्मचर्य का स्थान

अथर्ववेद के ग्यारहवे काण्ड का पांचवा ब्रह्मचर्य सूक्त शिक्षा मनीषियो को निश्चय ही दिशाबोध प्रदान करता है। इस ब्रह्मचर्य सूक्त के तृतीय मन्त्र मे कहा गया है 'आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिण-कृणुते गर्भमन्तः (अथर्व ११।५।३)' जब आचार्य ब्रह्मचारी को शिष्य मानकर अपने पास रखता है तब इसको अपने गर्भ मे धारण कर लेता है। यहा गर्भ मे धारण करने का तात्पर्य केवल अपने परिवार अथवा कुल मे सम्मिलित करना नहीं, प्रत्युत उस विद्यार्थी को अपने गर्भ अथवा हृदय मे रखना है। गर्भ मे अथवा अपने हृदय मे रखने का भाव यह है कि उससे छिपाकर कुछ भी नही रखा जा रहा। तथा माता की तरह उसकी सभी समस्याओ के निराकरण हेतु अहर्निश उद्यत रहना है। यही गुरु शिष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। आचार्य अपने शिष्य से कोई बात छिपाकर न रखे, जो विद्या स्वय प्राप्त की है उसे पूर्ण रीति से शिष्य को सिखलाए और उसकी तरुणाई की सभी समस्याओं का निदान करे। आचार्य को सच्चा सन्तोष तभी होता है जब वह शिष्य को अपनी कृति के रूप मे अपना जैसा (और अपने से अच्छा) बनाकर खड़ा करता है।

इसी मन्त्र के दूसरे भाग में कथन है कि 'त रात्रीस्तिस्रं उदरे बिभर्ति।' आचार्य अपने पेट में उस ब्रह्मचारी को तीन रात्रि का समय व्यतीत होने तक धारण करता है। रात्रि शब्द अन्धकार के भाव को प्रकट करता है जिसके अनुसार यहां शिष्य आचार्य के समीप तीन प्रकार के अज्ञान दूर होने तक रहता है। प्रथम अज्ञान है अपने आपको न जानना, अपने जीवन के लक्ष्य को नहीं समझना, द्वितीय प्रकार का अज्ञान है सृष्टि के पदार्थों के प्रति अनभिज्ञता अर्थात् विज्ञान, नक्षत्र, अभियान्त्रिक आदि विषयों का ज्ञान नही होता, तृतीय प्रकार का अज्ञान आत्मा अनात्मा के सम्बन्ध मे जड चेतन के सम्बन्ध को न समझने के कारण या यों कहिए उपार्जित विद्या को यथा योग्य प्रयोग मे न लेने के कारण। इन तीनो प्रकार के अज्ञानो को दूर करना ही शिक्षा का प्रयोजन है

शिक्षा में तप का स्थान

ऋग्वेद में एक स्थल पर कहा गया है, 'न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।' (ऋ० ४।३३।११) श्रम किए बिना देव सहायता नही करते। विद्यार्थी का शिक्षण तप से ही प्रारम्भ होता है तथा उसी से वह विद्यार्जन के मार्ग में सफल होता है। अथर्ववेद के इसी ब्रह्मचर्य सूक्त में कहा गया है, 'ब्रह्मचारी समिधया मेखलया श्रमेण लोकांस्तपसा पिपर्ति।' ब्रह्मचारी अपनी समिधा, मेखला, परिश्रम और तप से सब लोगों को सहारा देता है। यहां समिधा से अभिप्राय ज्ञान प्राप्त करने से है जो मेखला अर्थात् कटिबद्धता या कठोर सकल्प के होने से तप द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। आज शिक्षा जगत के विद्वानों को वेद का यही आह्वान है। सभी शिक्षा हृदय की शुद्धता के लिए ही होनी चाहिए। केवल भोगो की समृद्धि अथवा केवल उदर-पोषण अथवा ग्रन्थावलोकन होने से शिक्षा की सार्थकता नही है। परन्तु जब हृदय शुद्ध, पवित्र और निर्मल हो तभी जीवनोद्देश्य की पूर्ति होती है। वेद कहता है तप से ही देवताओ ने मृत्यु पर विजय पाई। हमारी शिक्षाप्रणाली मे तप शब्द आज लुप्त होता जा रहा है।

गुरु शिष्य परम्परा.

अथर्ववेद मे आचार्य को मृत्यु कहा है क्योकि उसकी कृपा से शिष्य को दूसरा जन्म प्राप्त होता है व शिष्य द्विज बनता है। पहला जन्म माता-पिता से मिलता है। पहले जन्म से प्राप्त शरीर का नाश आचार्य द्वारा शिष्य को ग्रहण करते ही हो जाता है। आचार्य के गर्भ में रहने के पश्चात् जब वह गुरुकुल से बाहर स्नातक बनकर आता है, तब उसका दूसरा जन्म होता है। 'आचार्यो मृत्यु' (अथर्व० ११।५।१४) आचार्य वरुण है अर्थात् वह शिष्य को पाप के पक्ष से हटाकर पुण्य मार्ग में प्रवृत्त करता है। आचार्य का अर्थ ही है जो (आचार ग्राहयति) सदाचार की शिक्षा देता है।

भारतीय सस्कृति में आचार्य रूपी सूर्य के विद्या तेज से शिष्य रूपी चन्द्रमा प्रकाशित होता है और वह सूर्य चन्द्र विद्याध्ययन की समाप्ति तक एकत्र ही रहते हैं। 'अमा घृत कृणुते केवल माचार्यो' गुरु-शिष्य के सहवास से ही दिव्य तेज अथवा तेजस्वी ज्ञान का प्रवाह प्रचलित होता है। (अथर्व ११।५।१५) अथर्ववेद के एक मन्त्र मे गुरुदक्षिणा का भाव 'प्रजापतो' शब्द से अभिप्रेत है अर्थात् गुरु अपने स्वार्थ का साधन करने के लिए दक्षिणा नही मागता वरन् वह शिष्य से लोकसेवा का व्रत चाहता है। शिक्षा का यही पुनीत आदर्श हमे ऋषि दयानन्द एव विरजानन्द की गुरु-शिष्य परम्परा मे देखने को मिलता है जिसमे विरजानन्द गुरु दक्षिणा के रूप मे ऋषि दयानन्द से जन मानस मे वेदो के प्रचार करने का व्रत लेते हैं।

लोकसेवी शिक्षा

शिक्षा प्रदान करने मे आचार्य की शिक्षा के प्रति यही मगल भावना रहती है कि वह लोकसेवा के सकल्प से अपनी शिक्षा फलीभूत करेगा। मुझे यह कहते हुए हर्ष है कि लोकसेवा की इन मगलमय भावनाओं को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय आंशिक रूप से साकार करने मे सन्नद्ध है। इस गुरुकुल ने अपने मातृस्थान कागडी ग्राम के लोकसेवा के कर्मक्षेत्र के लिये चुना है। कागडी ग्राम निवासियों की दशा सुधारने में गुरुकुल कृत सकल्प है। गुरुकुल के इस प्रयास के सूत्रधार हैं, हमारे वनस्पति विभाग के अध्यक्ष डा० विजयशकर। उनके नेतृत्व मे कागडी ग्राम मे अनेक कल्याणकारी योजनाए लागू हो रही हैं। जिला बिजनौर के कलक्टर श्री ओमप्रकाश आर्य इस कार्य मे बहुत रुचि दिखला रहे हैं। उनके सौजन्य से इस ग्राम के निवासियों को भवन निर्माण हेतु ऋण दिया जा रहा है। व्यापक रूप से कुटीर उद्योगो की स्थापना की जा रही है। विशेषकर यहां के निवासियो को रेशम उद्योग में नियोजित करने की एक व्यापक योजना तैयार की गई है। इस वर्ष लगभग ३०,००० पौधे शहतूत के और २,००० बबूल के पेड़ लगाए जाएगे। यहां बायोगैस और पवन चक्की लगाने की योजना भी है। कागड़ी ग्राम शायद देहात के दूरवर्ती अचलों में ऐसा प्रथम ग्राम है जहा गुरुकुल के सहयोग से ग्राम्य पुस्तकालय की सस्थापना की गई है। आज इस ग्राम पुस्तकालय मे १५०० पुस्तकों का सकलन है। १० पत्रिकाए एव दो समाचार पत्र भी नियमित रूप से आ रहे है।

लेखक
—बलभद्र कुमार हूजा
कुलपति, गुरुकुल
विश्वविद्यालय कांगड़ी

शिक्षा का स्वरूप और ऋषि दयानन्द

ऋषि दयानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक मानसिक और आत्मिक शक्तियो का विकास किया जाना है। वह शिक्षा व्यवस्था को राज्य का कर्तव्य मानते हैं। 'राजा को योग्य है कि वे सब कन्या और लडको को ब्रह्मचर्य मे रखकर विद्वान कराना। अनिवार्य शिक्षा के मन्तव्य को ऋषि दयानन्द ने बहुत पहले ही प्रस्तुत कर दिया था। सत्यार्थप्रकाश के तृतीय सम्मुल्लास में उन्होंने लिखा है, 'राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लडका वा लडकी किसी के घर मे न रहने पाय, किन्तु आचार्य कुल मे रहे। आज के शिक्षा मनीषियो के सामने भी ऋषि दयानन्द की आचार्य-शिष्य आचार सहिता दिशा बोध प्रदान करती है। उन्होंने बतलाया है कि राजा-रक, गरीब अमीर सभी के बालको के साथ समान व्यवहार होना चाहिए। 'सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान आसन दिए जायें, चाहे वह राजकुमार हो, चाहे दरिद्र की सतान हो, सबको तपस्वी होना चाहिए।'

ऋषि दयानन्द की शिक्षा पद्धति मे केवल आध्यात्मिकता का लक्ष्य ही नहीं है वरन् लौकिक विद्याओ मे निष्णात प्रवीणता प्राप्त किये जाने का निर्देश भी है। तृतीय समुल्लास मे ऋषि लिखते हैं 'विज्ञान कला कौशल नानाविध पदार्थों का निर्माण पृथ्वी से लेकर आकाश पर्यन्त की विद्या को यथावत् सीखे।'

ऋषि दयानन्द के शिक्षा दर्शन मे चारों वेदो का अध्ययन, आयुर्वेद धनुर्वेद गान्धर्ववेद, कलाकौशल, शिल्प विद्या, अभियान्त्रिक ज्ञान, गणित शास्त्र, ज्योतिष, भूगर्भ शास्त्र आदि सभी विषयों की शिक्षा का कार्यक्रम है। चरित्र निर्माण के साथ जीविका उपार्जन की विद्याओ एवं कलाओं की सस्तुति का

(शेष पृष्ठ ६ पर)

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में— —गतांक से आगे

वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला की प्रमुख संस्तुतियां

८. बच्चे को प्रारम्भिक शिक्षा उसकी मातृभाषा मे दी जानी चाहिये तथा मिडिल स्तर तक की शिक्षा मे उसको राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त अन्य एक भाषी शिक्षा दी जानी चाहिये। उच्चतम शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा हो इसलिए हिन्दी भाषा को विज्ञान एव साहित्य से अधिकाधिक समृद्ध किया जाना परम आवश्यक है। विज्ञान के उच्चतम एव मूल ग्रन्थों को हिन्दी मे अनूदित करने हेतु पतनगर कृषि विश्वविद्यालय की प्रणाली पर देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों मे अनुवाद एव प्रकाशन निर्देशालयो की स्थापना की जानी चाहिये जिससे विज्ञान आदि विषयो की पुस्तको का हिन्दी मे अभाव न हो। हिन्दी में प्रकाशित श्रेष्ठ वैज्ञानिक साहित्य पर राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर साहित्य अकादमियो द्वारा पुरस्कार दिये जाने व्यवस्था की जानी चाहिये।

९. गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय मे जिस प्रकार सभी प्रकार के प्रशासनिक एव व्यवस्था सम्बन्धी कार्य गत ८० वर्षों से हिन्दी मे किये जाने की परम्परा है उसी तरीके पर देश के समस्त विश्वविद्यालयो मे एव विभिन्न सरकारी कार्यालयो में समस्त प्रशासनिक कार्य हिन्दी या प्रादेशिक भाषाओ मे ही कराये जाने पर बल दिया जाना चाहिये।

१०. विश्वविद्यालय की शिक्षा केवल विषय की अत्यधिक विशेषज्ञता प्राप्त करने हेतु जिज्ञासु छात्रो के लिये ही होनी चाहिये।

११ डिग्री के आधार पर सेवाओ मे नियुक्ति की प्रक्रिया के स्थान पर उपार्जित योग्यता के आधार पर विभिन्न सेवाओ मे अथवा शिक्षा के उच्च सस्थानो में नियुक्ति की जानी चाहिये। जिससे डिग्रिया लेने की होड को समाप्त किया जा सके। इसी से येन केन प्रकारेण डिग्री एव डिवीजन लेने की प्रवृत्ति पर अकुश लग सकेगा।

१२ वर्तमान परीक्षा प्रणाली के स्थान पर मूल्याकन का आधार आतरिक बाह्य एव साक्षात्कार के आधार पर नियत किया जाना चाहिये। १०० पूर्णाकों मे से आंतरिक मूल्याकन के ३० बाह्य के ५० तथा साक्षात्कार के २० अंक निर्धारित किये जाने चाहिए। १०० पूर्णाकों के अंक देने के स्थान पर ग्रेडिग प्रणाली (क, ख, ग) के प्रारूप मे लागू की जानी चाहिये। आकस्मिक परीक्षायें भी विना पूर्व सूचना के कराये जाने का प्रावधान होना चाहिये।

१३. शिक्षकों एव छात्रो के हडताल एवं सगठन आदि बनाने पर अविलम्ब प्रतिबध लगा दिया जाये। शिक्षण कार्य को आवश्यक सेवाओ मे समाविष्ट किया जाना चाहिये।

१४ कम से कम वर्ष मे २०० दिन वास्तविक रूप से अध्ययन अध्यापन होना चाहिये।

१५ वर्तमान प्रचलित शिक्षा क्रम मे अभिभावक की भूमिका को सबसे नगण्य रखा हुआ है जब कि शिक्षा के सारे व्यय की जिम्मेदारी उस पर है। छात्रो की अनुशासनहीनता पर नियत्रण हेतु माता—पिता से सतत सम्पर्क स्थापित रखना चाहिये तथा अधिकाधिक रूप से छात्र के आचार, व्यवहार की रिपोर्ट अध्यापक द्वारा उसके पिता को विशेषकर जन्मदात्री मा को समय-समय पर अवगत कराते रहना चाहिये। बहुधा यह देखा गया है कि उद्दण्ड से उदण्ड शरारती छात्र भी माता पिता को सूचना दिये जाने पर सर्वाधिक भय खाता है। अध्यापक भी छात्रो के व्यक्तित्व का समग्र विकास माता पिता की सहायता से ही करने की ओर अग्रसर हो सकते हैं। यही मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुष वेद् का वास्तविक स्वरूप है तीन महीने मे न्यूनतम एक बार अभिभावक एव अध्यापको की बैठक किया जाना समूची शिक्षा व्यवस्था का अविभाज्य अग माना जाना चाहिये।

इस समय समस्त देश मे शायद ही कोई विश्वविद्यालय हो जिसमे किसी स्तर पर भी किसी प्रबंध परिषद मे अभिभावको को प्रतिनिधित्व दिया गया हो। शिक्षा के ढाचे मे अभिभावको की भूमिका कोस्वीकार करते हुए शिक्षा सस्थानो की शिष्ट परिषदो मे समुचित प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिये।

१७ जिस प्रकार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे पचासो वर्षों तक छात्रो

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत् समाचार

राज्यपाल द्वारा दयानन्द शोधपीठ का उद्घाटन

आर्यसमाज अजमेर की शताब्दी पर विभिन्न सम्मेलन

अजमेर। आर्यसमाज, अजमेर द्वारा स्थापित दयानन्द शोधपीठ संस्थान का उद्घाटन करने के लिए राजस्थान के राज्यपाल श्री ओ० पी० मेहरा दिनाक ६ नवम्बर ८२ को अजमेर पधारेंगे। यह समारोह दयानन्द (स्नातकोत्तर) कालेज के सभा भवन मे होगा। राजस्थान सरकार द्वारा दयानन्द शोधपीठ के स्थापना की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इस शोधपीठ का सचालन आर्यसमाज अजमेर की अन्तरग सभा करेगी। अन्तरग सभा ने आर्यसमाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले को दयानन्द शोधपीठ का अवैतनिक निदेशक नियुक्त किया है।

मुख्यमन्त्री जी दयानन्द बाल निकेतन का उद्घाटन करगे

आर्यसमाज अजमेर द्वारा सचालित दयानन्द बाल निकेतन अग्रेजी माध्यम विद्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन राजस्थान के मुख्यमत्री श्री शिवचरण जी माथुर १० नवम्वर को साय ५॥ बजे करेंगे।

आर्यसमाज डी ब्लाक जनकपुरी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज डी ब्लाक जनकपुरी का वार्षिकोत्सव आर्यसमाज के प्लाट डी १ ए पर आगामी ५, ६ और ७ नवम्बर को मनाया जाएगा। ५-६ नवम्बर को रात्रि ७॥ से ६॥ बजे तक फैजाबाद के पं. देवनारायण शास्त्री और दिल्ली के प. लखपति शास्त्री प्रवचन करेंगे, ७ नवम्बर को प्रात ८ से ९ बजे तक यज्ञ, ९ से ६॥ बजे तक भजन और प. देवनारायण शास्त्री और प. लखपति शास्त्री के प्रवचन होंगे।

पुरुषार्थ कर(पृष्ठ २ का शेष

इसका मतलब है कि तुम एक लाख रुपये मे भी अपना शरीर नही बेच सकते हो। इसकी इतनी कीमत है तो फिर तुम क्यो कहते हो कि तुम्हारे पास एक पैसा नही, लाखो रुपये मूल्य का यह शरीर लिये घूमते हो! बताओ तुम निर्धन कहा हो?' युवक का सिर लज्जा से झुक गया। काउट लियो टालस्टाय ने कहा 'जाओ युवक! अपने मन से यह हीन भावना निकाल दो। अपने इस कीमती शरीर, को श्रम, दृढ इच्छाशक्ति, लगन के बदले मे बेचो। तुम्हारे पास सब कुछ हो जाएगा।

वेद कहता है 'वावृधु सौभगाय' ऋ ५।६०।५ अर्थात् (सौभगाय) ऐश्वर्य के लिये (वावृधु) उद्योग करो। वेद भी कहता है 'युवक! अपनी शक्तियो को निहार। तू तुच्छ नही है अपितु महान् है, तू अनन्त शक्तियो का पुञ्ज है। तू तो पारसमणि है। जिस पदार्थ को छूएगा वही स्वर्ण बन जाएगा। बस, सौभाग्य के लिए उद्योग करते हुए आगे बढो।' सस्कृत के एक कवि ने कहा है, 'अगानां मर्दन कृत्वा श्रमसजात वारिणा' शरीर से इतना परिश्रम करो कि कर्म करते-करते पसीने की धार वह निकले।'

'स्व महिमानमायजताम्'

— यजुर्वेद २१।४७

(स्व) अपनी (महिमानम्) महिमा को (आयजताम्) बढ़ाओ, फैलाओ।

जब आपको जीवन मे चारों ओर असफलता ही असफलता नजर आ रही हो, आपकी अभिलाषा पूरी न हो रही हों और चारो ओर निराशा का अन्धकार छाया हुआ हो उस समय एक व्यक्ति के जीवन भर की हार और जीत की घटनाओ पर ध्यान दीजिए। तीस वर्षों तक वह निरन्तर हारता रहा निराशा के झूले मे झूलता रहा, तथापि इस सब हार और निराशा के बावजूद वह एक गरीब युवक मुसीबतो के तूफान से घिर जाने पर भी कभी निराश नहीं हुआ और न जिसने भाग्य के आगे हार मानी, स्वावलम्बन के मार्ग पर चलते हुए—दृढ आत्मविश्वास का सम्बल लेकर नित नवीन उत्साह से भी जीवन पथ पर आगे बढ़ता चला गया। यह था अमेरिका का भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन।

याद रखो, अपने भाग्य का निर्माता और विधाता मनुष्य स्वयम् है।

९-ए ई, ओबरा (मिर्जापुर)

शिक्षा क्षेत्र की समस्याएं और निदान(पृष्ठ ४ का शेष)

ऋषि का विचार मंथन शिक्षा जगत में आज भी प्रेरणा दीप के रूप में हम सबके सम्मुख उपस्थित है।

शिक्षा का माध्यम

निस्सन्देह बच्चे का यह अधिकार है कि उसकी शिक्षा उसकी मातृ भाषा द्वारा ही हो। उसी से बच्चा सहज सुशिक्षित हो सकता है। शिशु मस्तिष्क पर यह बडा आघात है कि उसे मातृ भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा द्वारा ज्ञानार्जन कराया जाए। शिक्षा में रस तभी आ सकता है जब शिक्षा का माध्यम शिशु की बोलचाल की भाषा हो। हां, उच्च शिक्षा के लिए अन्य विकसित भाषाओं का अवलम्बन आवश्यक हो जाता है। भारतवर्ष मे राष्ट्र भाषा के रूप मे हिन्दी को यह गौरव प्राप्त है। यह सर्वविदित है कि गुरुकुल कागडी आज ८२ वर्ष से यह सफल प्रयोग कर रहा है। आज विज्ञान की शिक्षा के माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओ को अपनाने मे अनेक कठिनाइयो की आशका की जाती है जबकि गुरुकुल कांगडी ने आज से ८० पूर्व ही विज्ञान की शिक्षा देने हेतु उच्च कोटि के पाठ्य ग्रन्थों का निर्माण कर लिया था। भौतिकी और रसायन शास्त्र पर गुरुकुल के तत्कालीन मुख्याध्यापक श्री गोवर्धन शास्त्री की लिखी पुस्तको का आज भी आदर से नाम लिया जाता है। इसी प्रकार हिन्दी कैमिस्ट्री प्रो० महेशपाल सिंह के द्वारा लिखी गई। गुणात्मक विश्लेषण पर प्रो. रामशरणदास सक्सेना द्वारा लिखी पुस्तक आज भी हिन्दी भाषा मे विज्ञान की जानकारी देने मे महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक, आचार्य विश्वनाथ जी, प्रो० सत्यव्रत सिद्धातालकार, आचार्य प्रियव्रत जी, डा० सत्यकेतु विद्यालकार तथा प्रो० हरिदत्त वेदालकार आदि विद्वानो ने वेद, इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान आदि अनेक विषयों में महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना हिन्दी में की है।

राष्ट्र की उच्च शिक्षा प्रणाली के सुधार में मुख्य बाधा यह है कि आज भी हमारे मन मे कोई स्पष्ट चित्र नहीं है कि शिक्षा का लक्ष्य क्या है? आज शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने के लिये ली जाती है। चूंकि प्रायः सभी नौकरियों के लिए बी० ए० की शर्त लाजमी है इसलिए शिक्षा का लक्ष्य बी. ए. की उपाधि प्राप्त करना रह जाता है। भले ही उपाधि कैसे प्राप्त की जाय महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी ने साधनो की शुद्धता पर जितना जोर दिया था उतने ही आज हम उनके दिखलाए पथ से भ्रष्ट हो चुके हैं। आज शिक्षा शिक्षा न रहकर कुशिक्षा हो चुकी है। सबसे पहले हमें नौकरियों के लिये बी. ए. की शर्त हटानी होगी ताकि विश्वविद्यालयो में केवल वही विद्यार्थी जायें जिन्हें बौद्धिक उन्नति की इच्छा है, जिन्हें क्षत्रियधर्म, वैश्य धर्म अथवा अन्य काम करने में उन्हें क्यों न तत्सम्बन्धी शालाओं में आधारभूत शिक्षा के बाद प्रवेश दिया जाये? हालांकि हम लगभग २० वर्ष से माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम मे कलाकौशल के समावेश करने की बात करते आये हैं, हमने इस दिशा मे ठोस कदम नही उठाये। यदि हम प्रत्येक विद्यार्थी को किसी एक कला मे दक्ष बना देते हैं तो निस्सदेह उसका भविष्य स्थिर हो सकता है। वयस्क होते ही वह बैंक से कर्जा आदि लेकर अपना धन्धा शुरू कर सकता है। अन्यथा वह किंकर्तव्य विमूढ होकर भेडचाल चलता हुआ महाविद्यालय के कराल गाल मे जा फसता है।

इन सबके साथ सबसे बडी आवश्यकता इस बात की है कि हम लाखों शिक्षकों को जो शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं, शिक्षा के लक्ष्यों, आदर्शों और सार्थक पद्धतियो से अवगत करायें। अन्ततोगत्वा किसी भी सस्था का स्तर वहां के शिक्षकों के स्तर से ऊंचा नहीं हो सकता। इसलिए हमें धारावाहिक रूप से शिक्षकों के प्रशिक्षित करने हेतु, सगोष्ठियां एवं कार्यशालाओ का आयोजन करना पडेगा और प्रयास करना पड़ेगा कि अधिक से अधिक शिक्षक कम से कम समय मे आज और कल की आवश्यकतानुसार शिक्षा प्रदान करने के योग्य बन जाएं। उनके लक्ष्य ध्रुव हों, उनके आदर्श स्थिर हों, उनमें आत्मविश्वास हो, उनके नेताओं के संकल्प शिव हो।

आर्यसमाज तिलकनगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज तिलकनगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ७ नवम्बर से १४ नवम्बर तक सम्पन्न किया जा रहा है। १४ नव को प्रात: ८ से ९ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। यज्ञ के ब्रह्मा हैं आचार्य ओमवीर शास्त्री। ८ नवम्बर से १२ नवम्बर तक साय ७-४५ से ८.४५ तक पं. चुन्नीलाल जी भजनोपदेश करेंगे और सांय ८-४५ से ९-४५ तक आचार्य ओमवीर शास्त्री 'वेद और मानव कल्याण' विषय वेदोपदेश देंगे। रविवार १४ नवम्बर को १२॥ बजे ऋषिलंगर होगा।

आर्यसमाजों के सत्संग

७-११-८२

अन्धा मुगल-प्रतापनगर—प. रामनिवास-अमरकालोन—प. ज्ञानचन्द; आरकेपुरम सेक्टर ५—स्वामी जगदीश्वरानन्द; आरके पुरम सेक्टर ७—प. कामेश्वर शास्त्री; आनन्दविहार-हरिनगर एल ब्लाक—प. विश्वप्रकाश शास्त्री; किंजवे कैंप—प. प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; कालकाजी डी. डी ए. फ्लैट एल १/१४३-ए स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती; कालकाजी—प. वेदपाल शास्त्री; करोलबाग—डा० रघुनन्दनसिंह; कृष्णनगर—प. मुनिशंकर वानप्रस्थ, गाधीनगर—प. प्रकाश चन्द्र शास्त्री; गीताकालोनी—प. सोमदेव शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II—प. हरिश्चन्द्र आर्य; १५१ गुप्ताकालोनी—प. रामदेव शास्त्री; गोविन्दपुरी—डा० नन्दलाल; गोविन्दभवन-दयानन्दवाटिका—प. ईश्वरदत्त; चूना मण्डी-पहाडगज—प. छवि कृष्ण शास्त्री; जगपुरा-भोगल—प. राजवीर शास्त्री; जनकपुरी सी ३—प्रो० सत्य पाल बेदार; जनकपुरी बी ३/२४—प. रामरूप शर्मा, टैगोर गार्डन—पा० लक्ष्मी दास; तिलकनगर—श्रीमती लीलावती आर्या, तिमारपुर—प. हरिश्चन्द्र शास्त्री, देवनगर—प. सुरेन्द्रकुमार शास्त्री, नयाबास—डा. रघुवीर वेदालकार, नगर शाहदरा—प. सुखदयाल भूटानी; पजाबी बाग एकस्टेन्शन—आचार्य हरिदेव सि. भू., प्रीतमपुरा सी. पी. २/२—प देवराज वैदिक मिशनरी, बाग कडे खा—प बरकत राम भजनोपदेशक; मोडल टाउन—प्रो. वीरपाल विद्यालकार, महरौली—प. ओमवीर शास्त्री; मोतीबाग—पं. आशानन्द—भजनोपदेशक, राणा प्रतापबाग—प. प्रकाशचन्द वेदालकार; राजौरी गार्डन —प. देवेश, लड्डूघाटी—पहाडगज—प. बलवीरसिंह—शास्त्री; लाजपतनगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, लेखरामनगर त्रिनगर—पं. ओम्प्रकाश गायक, लारेंन्स रोड—श्रीमती सुशीला राजपाल, विक्रम नगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; विनयनगर—प. हरिदत्त शास्त्री, सरायरोहल्ला प. तुलसीराम भजनोपदेशक; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा श्रीमती कमला आर्या गायक, सोहन गज—पं. अमरनाथकान्त, श्री निवासपुरी—प. प्रकाश वीर 'व्याकुल' हनुमान रोड—पं. हरिशरण सिद्धान्तालकार; हौज खास ब्हाई ६० ए प ओम्प्रकाश वेदालकार, खेडाखुर्द—प. सत्यदेव भजनोपदेशक;

—ज्ञानचन्द, डोगरा वेद प्रचार प्रबन्धक

वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला की प्रमुख संस्तुतिया

(पृष्ठ ५ का शेष)

को कठोर नियमित जीवन का अभ्यासी बनाने हेतु व्रताभ्यास की परिपाटी प्रचलित रही है उसी आधार पर देश के समस्त शिक्षा सस्थानो मे छात्रो को नियमित कठोर जीवन का अभ्यासी बनाने हेतु प्रयत्न किया जाना चाहिये। वैदिक दृष्टिकोण मे यही योग, तप एव ब्रह्मचर्य है। योगिक शिक्षा के इस आधार को स्वीकार करते हुए शिक्षा अविभाज्य अग बना दिया जाये। प्रत्येक शिक्षणालय मे योग के अनिवार्य शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिये। इस हेतु प्रत्येक विद्यालय मे योग शिक्षण का समुचित प्रबन्ध होना चाहिए।

१८. समाज मे शिक्षा के प्रसार हेतु रेडियो, दूरदर्शन एव अन्य दृश्य, श्रव्य साधनो का व्यापक सुरुचिपूर्ण ढग से प्रयोग होना चाहिये।

१९, प्रत्येक शिक्षणालय मे शिक्षण कार्य से पूर्व, सम्मिलित अग्निहोत्र करने की परिपाटी का विस्तार किया जाये तथा इसे पौराणिक कर्मकाण्ड के रूप मे नही बल्कि पर्यावरण की शुद्धि हेतु प्रयोग किया जाये।

२०. शिक्षा नीति की समस्त ढाचा शिक्षक पर अवलम्बित है अत सर्वप्रथम देश के दस लाख शिक्षक वर्ग को शिक्षा के वास्तविक एव आदर्शों के अन्तर्गत शिक्षित किया जाना प्रथम आवश्यकता है। जिसके लिए निम्न सतुतियाँ दी गई हैं—

२१. शिक्षको को भी शिक्षित करने हेतु शिक्षा शास्त्री विद्वानो द्वारा सारे पाठ्यक्रम को निर्मित किया जाये।

२०. देश के चुने हुए विद्यालयो, महाविद्यालयो एव विश्वविद्यालयो मे विभिन्न चरणों मे दो-दो सप्ताह तक शिक्षको को शिक्षित करने हेतु अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यशाला शिविर लगाया जाये।

२०. प्रत्येक शिक्षा सस्थान इन शिविरो के माध्यम से एक वर्ष मे २००० शिक्षकों को शिक्षित करने के व्यापक कार्यक्रम में योगदान करें। तभी कही जाकर शिक्षा के आधार भूतसिद्धान्त शिक्षक तक पहुच सकेंगे क्योकि राष्ट्रीय शिक्षा के वेही प्रहरी हैं।

आर्यसमाज कृष्णनगर में अथर्ववेद पारायण यज्ञ

आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१ मे २७ सितम्बर से अथर्ववेद पारायण यज्ञ हो रहा है। इस यज्ञ की पूर्णाहुति १४ नवम्बर के दिन रखी गई है। ८ नवम्बर से १३ नवम्बर तक रात्रि के समय ८॥ से १०॥ तक कथा का कार्यक्रम रखा गया है। इस अवसर पर प्रवचन महात्मा प्रेमभिक्षु जी मथुरा वालो के होगे। १४ नवम्बर के दिन ऋषि निर्वाणोत्सव के कार्यक्रम के बाद ऋषि लगर होगा।

आर्यसमाज बाजार सीताराम मे आंखों के आपरेशन

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली द्वारा सेठ गनपतराय रामजीलाल खण्डेलवाल चेरिटेबल सोसायटी के सहयोग से रविवार २१ नवम्बर ८२ को प्रात ८॥ बजे आर्यसमाज मन्दिर बाजार सीताराम दिल्ली मे आखो के मुफ्त आपरेशन तथा इलाज का आयोजन किया गया है। मुल्तान सेवा समिति नेत्र चिकित्सालय के नेत्र विशेषज्ञ डा० बी एन खन्ना आखो की बीमारियो का इलाज और आपरेशन करेंगे।

आर्यसमाज हनुमान रोड का ६० वा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ६० वा वार्षिकोत्सव ५, ६, ७ नवम्बर को आयोजित किया गया है। रविवार ७ नवम्बर को प्रात ७। से ९ बजे तक ऋग्वेद बृहद यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल कागडी के आचार्य रामप्रसाद वेदालकार है। शनिवार ६ नवम्बर को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा राजधानी के महाविद्यालयो के छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिताए होगी। रविवार को प्रात १० बजे आर्य सम्मेलन होगा और दोपहर को २॥ बजे राष्ट्रोत्थान सम्मेलन आयोजित किया गया है।

आंखों के नि शुल्क शिविर का उद्घाटन

प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के ६५वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे लायन्स क्लब पजाबी बाग के सौजन्य से रविवार ३१ अक्तूबर, को प्रात १० बजे श्रीमती चन्ननदेवी नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय सुभाष नगर, नई दिल्ली मे आखो के नि शुल्क शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन ससद सदस्य श्री धर्मदास शास्त्री ने किया।

वेद-मनन

लोक-परलोक में अतुल सुख की प्राप्ति

—प्रेमनाथ सभाप्रधान

असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता. ।
तास्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना. ॥ यजु० ४०.३

दीर्घतमा—ऋषि, आत्मा देवता, अनुष्टु छन्द वा गान्धार स्वर । पदार्थ—जो (लोक)लोग (अन्धेन) अन्धकार रूप (तमसा) अज्ञान से (आवृता:) सब ओर से ढके हुए (च) और (ये) जो (के) कोई (आत्महन) आत्मा का हनन करने वाले अर्थात् अपनी आत्मा के विरुद्ध चलने वाले (जना) मनुष्य हैं (ते) (असुर्य्या) असुर अर्थात् अपने प्राण पोषण मे ही तत्पर अविद्या आदि से युक्त लोगो के सम्बन्धी, पापकर्म करने वाले (नाम) प्रसिद्ध होते हैं (ते) वे (प्रेत्य) मरने के पीछे (अपि) और जीते हुए भी (तान्) दु ख व अन्धकार से युक्त भोगों को (गच्छन्ति) प्राप्त होते हैं ।

(ऋषि दयानन्द भाष्य

भावार्थ —वे ही मनुष्य असुर, दैत्य, राक्षस तथा पिशाच आदि हैं जो आत्मा मे और जानते वाणी से और बोलते और करते कुछ और ही हैं ये कभी अविद्यारूप दु ख सागर से पार हो आनन्द को प्राप्त नही हो सकते और जो आत्मा मन वाणी और कर्म से निष्कपट एक-सा आचरण करते हैं वे ही देव आर्य सौभाग्यवान् सब जगत् को पवित्र करते हुए इस लोक और परलोक मे अतुल सुख भोगते हैं ।

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

ऋषि दयानन्द ने अपने 'व्यवहार भानु' में उक्त मन्त्र का अर्थ निम्न प्रकार से दिया है—

अर्थ—(ये) जो (आत्महन.) आत्महत्यारे अर्थात् आत्मस्थ ज्ञान से विरुद्ध कहने, मानने और करने हारे हैं (वे) ही (लोका) लोग (असुर्य्या नाम) असुर अर्थात् दैत्य राक्षस नाम वाले मनुष्य हैं और वे ही (अन्धेन तमसावृता) बड़े अधर्मरूप अन्धकार से युक्त होकर जीते हुए और मरण को प्राप्त होकर (तान्) दु खदायक देहादि पदार्थों को (अभिगच्छन्ति) सर्वथा प्राप्त होते हैं और जो आत्मरक्षक अर्थात् आत्मा के अनुकूल ही कहते, मानते और आचरण करते हैं वे मनुष्य विद्या रूप शुद्ध प्रकाश से युक्त होकर देव अर्थात् विद्वान् नाम से प्रख्यात हैं । वे ही सर्वदा सुख को प्राप्त होकर मरने के पीछे भी आनन्दयुक्त देहादि पदार्थों को प्राप्त होते हैं ।

(ऋषिदयानन्द व्यवहारभानु)

बोध-कथा

आत्मदीप बनो !

महात्मा बुद्ध ने सत्य-अहिंसा, प्रेम-करुणा, सेवा और त्याग से परिपूर्ण जीवन बिताया । जीवन-भर वह धर्मप्रचार के लिए संघ को सुदृढ करने के लिए प्रयत्नशील रहे । इस लम्बी जीवन यात्रा के बाद जब वह अन्तिम यात्रा के लिए निर्वाण के लिए प्रस्तुत हुए तब उनका प्रिय शिष्य आनन्द रोने लगा, वह बोला—"गुरुदेव, आप क्यों जा रहे हैं ? आपके निर्वाण के बाद हमें कौन सहारा देगा ?" महात्मा बुद्ध ने कहा—'अभी तक तुमने मुझसे रोशनी ली है, भविष्य में तुम आत्मदीप बनकर विचरण करो । तुम अपनी ही शरण जाओ । किसी दूसरे का सहारा मत ढूढ़ो । केवल सच्चे धर्म को अपना दीपक बनाओ । केवल सच्चे धर्म की शरण लो ।' महात्मा बुद्ध ने यह सीख भी दी थी—"भिक्षुओ, बहुजनो के हितों के लिए बहुजनो के सुख के लिए और लोक पर दया करने के लिए विचरण करो । एक साथ दो मत जाओ । अकेले ही जाओ, स्वत ज्योति लो, दूसरों को रोशनी दो ।'

भिक्षुओं ने गुरु की इस सीख का पालन किया । किसी का सहारा न लिया, किसी का साथ न लिया, एकाकी यात्री भिक्षुक अकेले दीए के रूप में दूसरों को रोशनी देने और सेवा के लिए चल पड़े । शायद यही कारण है कि कुछ ही शताब्दियों मे महात्मा बुद्ध की सीख और शिक्षाए एशिया ही नहीं, विश्व के विस्तीर्ण क्षेत्र में व्याप्त हो गई ।

—नरेन्द्र

आइए, अध्यात्म-दीप जलाएं

—डा० रामनाथ वेदालंकार

एक बार महर्षि याज्ञवल्क्य राजा जनक से मिलने गए । जनक ज्ञानपिपासु थे, ज्ञानचर्चा का कोई अवसर खाली नहीं जाने देते थे । बस, ज्ञानचर्चा आरम्भ हो गई । राजर्षि जनकजी बोले—'महर्षिवर, क्या कृपाकर बताए गे, मनुष्य के पास दीपक कौन-सा है ?"

"आदित्य ही दीपक है राजन् ! उसी के प्रकाश मे मनुष्य बैठता है, खड़ा होता है, घूमता-फिरता है, काम-काज करता है और अपने स्थान पर लौट आता है । तभी तो आदित्यरूपी दीपक के प्रज्ज्वलित होने पर वैदिक स्तोता प्रसन्न हो गाने लगते हैं—

उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह । ऋग्वेद १ ५०.१३

'अहा, देखो, यह आदित्य अपने समस्त तेज के साथ उदित हो गया है ।'

महर्षि याज्ञवल्क्य का उत्तर सुनकर जनकजी बोले—"आदित्य के दीपक होने की बात समझ गया मुनिवर, पर आदित्य तो सदा नहीं रहता । जब आदित्य अस्त हो जाता है तब मनुष्य के पास कौन-सा दीपक होता है ?"

"आदित्य अस्त हो जाने पर चन्द्रमा दीपक का कार्य करता है राजन्, उसी के प्रकाश मे मनुष्य बैठता है, उठता है, घूमता-फिरता है, काम-काज करता है और अपने स्थान पर लौट आता है । इसी चन्द्रमारूपी दीपक पर मोहित हो गायक ने गाया है—

नवो नवो भवति जायमान: । —ऋग् १०.८५.१९

"इस चन्द्र-दीप को देखो, जो नित्य नए-नए रूप में जगकर आता है ।"

जनक ने सुना और बोले— 'पर चन्द्रमा भी तो सदा नहीं रहता ऋषिवर । आज पूनम की चांदनी है,तो कल अमावस की रात भी तो आती है । जब सूर्य अस्त हो जाता है, चाँद भी अस्त हो जाता है, तब मनुष्य के पास कौन-सा दीप होता है, यह मुझे बताइए ।"

"आदित्य और चन्द्रमा दोनों के अस्त हो जाने पर अग्नि ही मनुष्य का दीपक होता है, राजन् !। उसी के प्रकाश में वह बैठता है, उठता, घूमता-फिरता है, काम-काज करता है और अपने स्थान पर लौट आता । तभी तो भगवती श्रुति गा रही है—

अग्निर्ज्योति. ज्योतिरग्नि· स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च. स्वाहा ॥
यजुर्वेद ३.९

"अहा, अग्नि का दीपक देखो, अग्नि की ज्योति देखो, अग्नि का वर्चस् देखो ।"

राजा जनक ने सुना और कुछ सोचकर बोले—"ठीक है मुनिराज, पर अग्नि भी तो सदा सुलभ नहीं होती । जब सूर्य भी अस्त हो जाता है, अग्नि भी शान्त हो जाती है, तब मनुष्य का दीपक क्या होता है, यह मेरे मन में शका बनी हुई है ।'

"तब वाणी मनुष्य का दीपक होती है, राजन् ! इसीलिए जब इतना घोर अन्धकार होता है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता, उस समय मनुष्य वाणी के दीपक का ही प्रयोग करता है । वह जहा खडा होकर शब्द करता है, उसके शब्द को दिशा का अनुसरण करके उसके साथी वहां पहुच जाते हैं, मानो दीपक की ज्योति मे मार्ग देखते-देखते वे वहां पहुचे हों । और समझना हो तो इसे यो समझिए राजन्—गुरु की वाणी ही दीपक बनकर शिष्य को मार्ग दर्शाती है न, इसी से तो वाग्-दीप की महिमा गाते हुए शास्त्र कहते हैं—

इयं या परमेष्ठिनी वाग् देवो ब्रह्मसंशिता । अथर्ववेद १९.९.३

यह ज्ञान-घृत से तीक्ष्णीकृत वाग् देवी जो परमेष्ठिनी है—परम पद पर प्रतिष्ठित है ।'

महर्षि याज्ञवल्क्य ने सोचा, शायद अबकी बार राजा जनक सन्तुष्ट हो जाए गे । पर जनकजी की जिज्ञासा अब भी शान्त नहीं हुई । उन्होंने फिर प्रश्न किया—यदि वाणी भी शान्त हो जाए, तब मनुष्य के लिए दीपक क्या होगा, मुनिवर ?"

जहां आदित्य कीगति नहीं होती, चन्द्र की गति नहीं होती, अग्नि की गति नहीं होती, वाणी की गति नहीं होती, वहां 'आत्मा' दीपक बनकर मनुष्य को प्रकाश देती है, राजन् । 'आत्मा' दीपकों का दीपक है, सच्चा दीपक है, अमर दीपक है—

"इदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु" ऋ० ६.९.४

यह उत्तर सुनकर राजा जनक मौन हो गए । उन्हें सच्चे दीपक के दर्शन हो चुके थे ।

बृहदारण्यकोपनिषद् ४.३ के आधार पर लिखित) पता—१/११६ फूलबाग
पंतनगर (नैनीताल)

तेरी महिमा अपरम्पार !

ओ३म् गायन्ति त्वा गायत्रिणो अर्चन्त्यर्कमर्किणः ।

ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतो उद्वंशमिव येमिरे ॥ ऋ. १.१०.१

सामगान के गायक तेरे मधुर गीत गाते हैं, वेदों की रचनाएं मधुर कण्ठ से तेरा स्तवन करती हैं, ज्ञानी और कर्मयोगी सब तेरी महिमा का गान करते हैं, तेरी महिमा अपरम्पार है, उसे कोई पार नहीं कर सकता ।

ओ३म्

आर्य सन्देश

नायमात्मा बलहीनेन लभ्या

१८ अक्तूबर के दिन अमृतसर में जो कुछ हुआ, उसका विवरण पढकर दिल कांप उठता है । उस दिन दोपहर बाद सैकड़ों मजहबी उन्मादी नगी तलवारें और भाले लेकर बाहर निकले और लूटमार शुरू कर दी । गुरुद्वारे के समीपस्थ दो-तीन दुकानें लूट ली गईं । इस क्षेत्र में दगइयों ने बसें, जीपें, दुकानें लूटीं और जलाईं । कहते हैं कि दगई जब ऊन के मुख्य बाजार कटरा आहुलवालिया को भी आग लगाने की कोशिश करने लगे, तब वहां के हिन्दुओं ने अपनी रक्षा स्वय करने का निर्णय किया और पथराव कर वे दगइयों को खदेड़ने में सफल हो गए । यदि हिन्दू बचाव न करते तो ऊन का सबसे बड़ा बाजार आग की लपटो मे स्वाहा हो जाता । दुःखकी बात यह है कि जब दुकानों और बाजारों को लूटा जा रहा था और उन्हें भस्म करने की कोशिश की जा रही थी, तब पुलिस निष्क्रिय दर्शक की तरह खड़ी रही । जब पुलिस अफसरों से कहा गया कि कार्रवाई क्यों नही करते तब एक पुलिस अफसर ने कहा कि ऊपर से हमें कोई हिदायत नहीं है । पुलिस ने उसी स्थिति में गोली चलाई, जब हमलावरो ने पुलिस जीप व बसों मे आग लगाई । दुर्गाना कमेटी ने नगर की सामान्य जनता से अनुरोध किया है कि भविष्य में ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए उन्हें आत्मरक्षा के लिए तैयार होना चाहिए ।

अमृतसर की इस घटना से स्पष्ट है कि अमृतसर हो या दिल्ली—अथवा भारत का कोई भी नगर या प्रदेश उसकी सामान्य जनता को आत्मरक्षा के लिए अथवा जान-माल की सुरक्षा के लिए सामान्य नागरिक प्रशासन या पुलिस पर भरोसा करने के स्थान पर अपनी सगठित शक्ति पर विश्वास करना चाहिए । यदि अमृतसर ऊन बाजार के व्यापारी सगठित होकर दंगइयों और गुण्डो का मुकाबला कर सकते हैं तो पजाब के ४८ प्र० शत अल्पसख्यक हिन्दू अपने जान माल को बचाने के लिए अपने मान-सम्मान की रक्षा करने के लिए यदि गांव-गांव, नगर-नगर में सगठित और सन्नद्ध हो जायें तो आततायी बहुसख्यक साम्प्रदायिक तत्वों की धींगामुश्ती और अनाचार की रोकथाम की जा सकती है । दूसरे महायुद्ध के दिनों में जब कई नगरों में साम्प्रदायिक अशान्ति भड़की थी, उस समय भी अनेक नगरो कस्बों की जनता ने आत्म रक्षा के लिए अपने स्थानीय सगठन बनाकर सफलता पाई थी ।

आत्मा या व्यक्ति की विजय केवल शक्ति संचय से सम्भव है । कभी भी कमजोर या निर्बल व्यक्ति परिवार, समाज और राष्ट्र मे अभ्युदय के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकते नायत्मा बलहीनेन लभ्या । पूर्वोत्तर एव पश्चिमोत्तर प्रदेशों मे उठते हुए अराजकतत्त्वो के नियन्त्रण के लिए यदि केन्द्र स्वतः दृढता से कार्य करे तो समस्या बड़ी सरलता से सुलझ जाए, आज यदि इस सम्बन्ध मे केन्द्रीय एव प्रान्तीय प्रशासन अपना दायित्व निबाहने मे सकोच करें तो इन क्षेत्रों के आर्य-हिन्दुओं को आत्मरक्षा के लिए संगठित और सन्नद्ध हो जाना चाहिए । १५ नवम्बर के दिन दीपावली का पर्व है ! दीपावली का पर्व अन्धकार पर ज्योति पथ पर प्रवृत्त होने का सन्देश देता है । अन्धकार पर प्रकाश अथवा ज्योति की विजय उसी समय सम्भव हो सकती है जब अन्याय-अत्याचार से टक्कर लेने के लिए विजय का सकल्प किया जाए । आज राष्ट्र तथा हरयाणा के हितों के विरुद्ध अकाली साम्प्रदायिक तत्त्व अनुचित मांग रख रहे है । भारत सरकार ने सिखों की समस्त न्यायसगत धार्मिक मांगों को मानने में अपनी सहमति प्रदर्शित की थी, परन्तु वे शक्ति के बल पर समीपस्थ प्रदेशों एवं राष्ट्रीय जनता के हितों की उपेक्षा कर अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए तुले दीखते हैं । इन साम्प्रदायिक तत्वों की अनुचित मांगें एवं दबाव का राष्ट्र और बहुसख्यक जनता को मुकाबला करना ही होगा । इस सम्बन्ध मे शासन की बड़ी जिम्मेदारी है, यदि यह अपने कर्त्तव्यपालन में सकोच करे तो जनता को सगठित एवं सन्नद्ध होकर इसका दृढ़ता से सामना करना होगा ।

चिट्ठी-पत्री

पुनर्वास विधेयक : एक दुर्भाग्यपूर्ण कदम

जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने मरहूम मुख्यमत्री शेख अब्दुल्ला के राष्ट्र-विरोधी पुनर्वास विधेयक को पुनः पारित कर एक दुर्भाग्यपूर्ण कदम उठाया है । राज्यपाल श्री बी. के. नेहरू ने उक्त विधेयक की सवैधानिकता का प्रश्न उठाया है कि पुनर्विचार के लिए वापस किया गया विधेयक यदि विधानसभा पुन निष्पादित कर दे, तो उस विधेयक को राज्यपाल की स्वीकृति की आवश्यकता नही रह जाती । यह खेद का विषय है कि डा० फारूख अब्दुल्ला अपने स्वर्गीय पिता के चरण-चिह्नों पर चलकर राष्ट्रविरोधी कार्यों से सलग्न हो रहे हैं । नागरिकता प्रदान करने का अधिकार केन्द्र को है, राज्यों को नहीं, लेकिन शेख अब्दुल्ला ने केन्द्र के इस अधिकार को चुनौती देकर केन्द्र से टक्कर लेने का दुस्साहस किया था और उनकी मृत्यु परान्त उनके उत्तराधिकारी, लाडले बेटे ने भी वही दुस्साहस दिखाया । यह दुस्साहस सविधान विरोधी, राष्ट्रविरोधी है । यदि पाकिस्तान मे बसे लोगों को ३५ वर्ष उपरान्त पुन भारतीय नागरिकता प्रदान की जाती है तो निश्चित रूप से यह देश का बडा दुर्भाग्य होगा क्योंकि जिन पाकिस्तानवासियों ने पिछले पैंतीस वर्षों में भारत के साथ दुश्मनी का व्यवहार किया है, पाकिस्तानी सेना, गुप्तचर सेवा मे रहे हैं, वे भारत के साथ एक राष्ट्रभक्त नागरिक का व्यवहार नहीं कर सकते ।

—राधेश्याम आर्य, एडवोकेट, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

पत्र मिला १४ वर्ष बाद

डाक और तार विभाग की कार्य कुशलता ने नई मिसाल पैदा की है । आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई मे २५ सितम्बर १९६७ को लिखा गया पत्र मुझे १४ वर्ष ३ मास पश्चात् दिल्ली मे प्राप्त हुआ है ।

—वेदपथिक धर्मवीर आर्य, झंडाधारी, ९८५७ अहाता ठाकुरदास, सराय रुहेला नई दिल्ली—५

साहित्य और नैतिकता

डा. विजय द्विवेदी ने अपने साहित्य और नैतिकता' शीर्षक लेख की द्वितीय पंक्ति में लिखा है 'आत्म, परमात्मा का अश और अनात्म का सहोदर है ।' आत्म अर्थात् प्रकृति के शरीर को धारण करता है अथवा यों कहिए कि शरीर, (प्रकृति के साथ तथा उसके आश्रय से प्रकट होता तथा प्रकाश में आता है, इसलिए अनात्मा सहोदर तो है, परन्तु वह परमात्मा का अश नहीं है, अपितु परमात्मा से पृथक् उसकी स्वतन्त्र अनादि सत्ता है । ऐसे अनादि तत्त्व को परमात्मा का अश बताकर उसकी सत्ता से नकार करना और नवीन वेदान्तियों की इस भ्रान्त मान्यता का समर्थन करना है कि आत्मा-परमात्मा मे अशा-अशी भाव है ।

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद

दीपावलीका पर्व आर्यजनों के लिए मंगलकारी हो

दीपावली की मगलमय ज्योति सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो तथा गणमान्य आर्य सदस्यों की ज्योति को पुनीत करे । सभी आर्य महानुभाव 'तमसा मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर हों ।

यह पावनपर्व प्रकाश, ज्ञान, ध्यान, धनधान्य का प्रवर्द्धन करें । ऋषि निर्वाण की शताब्दी का महान् पर्व भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली मे १९८३ मे मनाया जाएगा । उसकी तैयारी के लिए उत्साह, साहस की अपूर्व प्रेरणा से बढ़ें ।

यज्ञों और वेदों के प्रति निष्ठा बढ़े—जीवन की यज्ञाग्नि के वृक्ष अर्थात् राक्षस आलस्य, कायरता, भीरुता आदि दूर हों और आर्यों की जीवनाग्नि विश्वाग्नि से प्रदीप्त हो ।

अतः उस पावन महान पर्व पर सबको शुभकामनाएं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्राप्त हो

ऋषि दयानन्द जी की जीवन ज्योति से जागे हुए दीपक अन्य बुझे हुए और मन्द प्रकाश वाले दीपकों की ज्योति को 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के घोष से प्रदीप्त कर दें ।

जहा एक दयानन्द का वीर सैनिक हो, वहा सौ दयानन्दी हो जो अपना और अपने आस-पडोस की रक्षा कर सकें । यह पावन दृढ़ सकल्प भी जाग्रत हो ।

प्रेमनाथ प्रधान प्रो० भारत मित्र शास्त्री मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नयी दिल्ली-१

दीवाली फिर आ गई सजनी, स्नेह के दीप जला लो

लेखिका :
—श्रीमती सुशीलादेवी
विद्यालंकृत, साहित्यरत्न

दीपावली भारत का राष्ट्रीय पर्व है। भारतीय संस्कृति मे धर्मशून्य राष्ट्र की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। राष्ट्र शब्द राष्ज्दीप्तौ धातु से बनता जहां, दीप्ति, प्रकाश ज्योति, सगठन, स्नेह नही, वह कैसा राष्ट्र ? आज देश अन्याय अत्याचार, बेईमानी, भ्रष्टाचार हिंसा, ईर्ष्या-द्वेष, जाति-पाति की दलदल मे फसा हुआ है। भारत के अन्दर पचमांगी शक्तिए पृथकतावादी षड्यन्त्र रचकर हमारी राष्ट्रीयता की जड़ें खोखली कर रहे हैं। नागालैंड, मिजोरम राष्ट्रविरोधियों के अड्डे बने हुए हैं। मुरादाबाद, अलीगढ़, मेरठ, हैदराबाद, मिनी पाकिस्तान की योजनाओं के केन्द्र स्थल हैं। पजाब में अपने ही भाई अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए विदेशी षड्यन्त्रों को बढ़ावा देकर सीमाप्रान्तों पर खतरा पैदा करने में व्यस्त हैं। अर्चनास्पद भाई सत्यव्रतजी सिद्धांतालकार अपनी हालैंड यात्रा के संस्मरणों में लिख रहे हैं कि हालैंड में कोई गरीब नहीं। परन्तु भारती भारत की तो ८० प्रतिशत जनसंख्या गरीब है। मैं आन्ध्रप्रदेश के हैदराबाद में रहती हू। विशाखापट्टनम् में तूफानी हवायें चलकर पूरे समुद्रतटीय प्रदेश को खतरा पैदा कर रही हैं। मैं समाचारपत्रों में पढ़ रही थी कि हजारों लोग तूफानी सकट के के शिकार हो गये हैं। बेचारों को सिर छुपाने का कोई आश्रय नहीं। भूख मिटाने को दो मुट्ठी अनाज नहीं। लगातार की वर्षा ने रही-सही कसर भी पूरी करदी। क्या करेंगे बेचारे गरीब ? कौन है उनकी सुध लेने वाला ? केन्द्र से लोग आए। कागजी कार्यवाहियां हुई। परन्तु उनकी मुश्किलें तो आसान नहीं हो सकीं।

जातिपाति के झगड़े ? यह भी देश की राष्ट्रीयता को घुन बनकर खा रहे हैं। हमारी समाजवादी समाज रचना का उद्घोष करने वाली सरकार के प्रत्येक कार्य जातिपांति के भेदभावों की दृष्टि में रख कर किए जाते हैं। चुनावों में वोटें, जातिपाति, प्रान्त आदि के आधार पर दी जाती हैं। मन्त्रिमण्डल के गठन जातिपाति, प्रान्तो के आधार पर किए जाते हैं। अल्पसख्यक, आदिवासी पिछड़ी वर्ग न जाने कितने खाके तैयार कर दिए हैं सरकार ने ?

उदात्त गुणों से युक्त-आर्य

वेद मे मनुष्य जाति कोदो ही भागों मे बांटा गया है—ओं विजानीह्यार्यान् ये च दस्यव। आर्य और दस्यु। आर्य कौन ? वह नहीं जो चदा देकर आर्य समाज का सदस्य बनता है। आर्य का सम्बन्ध चन्दे से नहीं। जीवन से है। जिसका जीवन उदात्त है। भद्र मितगती से आर्य शब्द बनता है। जिसका प्रत्येक कार्य नपा-तुला है। व्यवस्थित है। मर्यादित है। मर्यादा से खाना, मर्यादा में अर्थ काम का उपभोग करना। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन पांच सार्वभौम महाव्रतों का पालन करना। शौच, सतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान इन नियमों के के अनुसार जीवनयापन करना। स्वाध्याय, प्रवचन में प्रमादन करना वेदों का सुनना-सुनाना, पढ़ना-पढ़ाना जीवन का परमधर्म मानना। सत्य के ग्रहण करने करने और असत्य को त्यागने में सदा-सर्वदा तत्पर रहना। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि का प्रयत्न करना, अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति करने के भाव जगाना। जीवन को यज्ञमय बनाना। 'आर्याः ज्योतिरग्राः'। ज्योति प्रकाश को जीवन का लक्ष्य बनाना। यह आर्यों के चिन्ह है। आर्य कौन ? जो श्रेष्ठ हैं। वही आर्य हैं। ससार के तख्ते पर कहीं भी रहने वाला, कोई भी भाषा बोलने वाला व्यक्ति यदि इन मानवीय गुणों से युक्त है तो वह आर्य है। देश, धर्म, मत-मतान्तर भाषा सम्बन्धी कोई बाधा नहीं आर्य बनने में। आर्य का सम्बन्ध जीवन को मूल्यवान् बनाने से है। यह सार्वदेशिक शब्द है। उदात्त गुणों से युक्त प्रत्येक व्यक्ति आर्य है।

"दस्यु कौन ? दसु उपक्षये, इस धातु से दस्यु शब्द बनता है। जिसका जीवन निकृष्ट है। राग, ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा, घृणा, भ्रष्टाचार, बेईमानी से ओत-प्रोत है। खाओ-पीओ, मौज करो। कर्ज ले लेकर घी पियो के दृष्टिकोण वाले मानवीय गुणों से शून्य व्यक्ति दस्यु हैं। चाहे कोई मारे चाहे जिए, पोपजी का पेट पूरा भरे। यह दृष्टिकोण दस्युओं का है।

रामायण में भी यह दृष्टिकोण बड़ी सुन्दरता से प्रकट किया गया है। विजय दशमी (दशहरा) का पर्व भारत का बहुत ही महत्वपूर्ण पर्व है। इसमें हम दशानन (रावण) का पुतला जलाते हैं। और दशरथ की पूजा करते हैं। इसके शब्द बड़े गहरे हैं। दशानन कौन है ? जो दशों इन्द्रियों को मुख बनाकर विषय भोग में मस्त रहता है। दशरथ कौन ? जो दशों इन्द्रियों को रथ बनाकर उन पर सवारी करता है। उन्हें वश में रखता है। दशानन दस्यु दृष्टिकोण भरी प्रधान संस्कृति मनुष्य को पथभ्रष्ट करने वाली नीचे गिराने वाली विचारधारा है। इन्द्रियों को वश में करके संयम तथा अनुशासन में बांधकर चलने वाली संस्कृति मनुष्य को मनुष्य तथा आर्य बनाती है। यही दशहरा पर्व हमें शिक्षा देता है। विजय सत्य की ही होती है। सत्यमेव जयते।

तीर्थंकर महावीर के जीवन से

तीर्थंकर महावीर के जीवन की घटना है। विशाल राजसभा आयोजित थी। मन्त्री, सहामन्त्री, अन्य अभिजात्य वर्ग के प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। सम्राट अपने आसन पर सुशोभित थे। महावीर भी उपस्थित थे। एक क्रूर 'काल' शौकरिक कसाई भी पास में बैठा था। शांति और समता की उपदेशधारा बह रही थी कि अचानक ही एक बूढ़ा, जर्जर शरीर, फटे-पुराने चिथड़े पहिने लकड़ी के सहारे सभाभवन में आया। और जोर जोर से चिल्लाकर बोला:— तुम जीते रहो। सबकी नजरें उस विचित्र बूढ़े पर पड़ गयीं। कैसा असभ्य और ढीठ है यह। न नमस्ते की राजा को। नदण्डवत्। और आशीर्वाद दे रहा तभी बूढ़े ने तीर्थंकर महावीर की ओर नजर उठाई और कहा कि तुम मर जाओ। यह सुनते ही पूरी परिषद क्रोध से आग बबूला हो उठी। सम्राट की भी भवें तन आईं। परन्तु डरा नहीं। उसने मन्त्री अभयकुमार की ओर इशारा करते हुए कहा—"महामंत्री ! तुम चाहे जीओ चाहे मरो। कोई फर्क नहीं पड़ता। सब चिल्लाये। निकाल दो इस इस पागल को बाहर। क्या बकवास कर रहा है। इतने में ही वृद्ध न काल शौकिरिक कसाई को कहा—भद्र तुम न मरो न जीओ। इतना कहते ही बूढ़ा सभा से गायब हो गया। सभी हैरान ! कौन था वह ? कहां गायब हो गया। आखिर राजा श्रेणिक ने महावीर जी से पूछा ? भन्ते वह पागल कौन था ? क्या मतलब था उसकी बातों में का ? क्या यू ही बकवास कर रहा था ?

महावीर बोले, राजन् ! वह पागल नहीं, देवदूत था। वह जो भी कह रहा था सोलह आने सच कह रहा था। उसने आपसे कहा—जीते रहो। क्यों ? क्योंकि यहां आपका वैभव अनन्त है। आपको सब सुख सुविधाए प्राप्त हैं। जब तक जिओगे ऐश आराम का जीवन व्यतीत कर सकते हो। आगे आपके लिए दुःख ही दुःख है क्योंकि आपने कुछ अच्छे कार्य तो किए ही नहीं। मनुष्य जो बोता है वही काटता है न। इसीलिए देवदूत ने आपसे कहा जीते रहो। करने के पश्चात आपके लिए नरक ही नरक है। सम्राट चिन्तित हो उठे। पूछा भन्ते ! आपको क्या कहा कि मर जाओ। महावीर ने उत्तर दिया:—मेरा जीवन का लक्ष्य पूर्ण हो चुका है। राजन् ! साधना के द्वारा सब पापों को धो लेने के बाद ही 'अर्हन्त' बना जाता है। परन्तु 'अर्हन्त' जीवन शुद्धि की अन्तिम भूमिका नहीं है। मुक्तावस्था ही आध्यात्मिक विकास का सर्वोत्कृष्ट शाश्वत रूप है। पूर्व कर्मों का अभी भोग चल रहा है मैं उससे मुक्त नहीं हुआ हूं इसीलिए देवदूत मेरे वर्तमान जीवन का देह का बंधन मानता है और मरण को मुक्तावस्था। इस कारण उसने मुझसे कहा कि 'मर जाओ' इसका अर्थ है सदा के लिए बंधन मुक्त हो जाओ। दो प्रश्नों का समाधान हुआ। जिज्ञासा तीसरे प्रश्न की ओर बढ़ी। महावीर जी ने पहेली खोलते हुए समझाया:—

अभयकुमार के जीवन में भोग है त्याग भी। उसकी जीवन दृष्टि स्पष्ट है है। फलों से रस ग्रहण करने वाले भ्रमर की तरह वह जीवन का रस लेता हुआ भी उसमें डूबता नहीं है। वह जो भी कर रहा है कर्तव्यभावना से कर रहा है। इसलिए उसका यह जीवन भी सुखी है तथा अगला जीवन भी सुखी ही होगा। इसीलिए देवदूत ने कहा—

"मंत्री ! तुम चाहे जिन्दा रहो चाहे मरो ! सम्राट आत्मग्लानि से भर उठे। मंत्री के शुद्ध चरित्र के प्रति उन्हें ईर्ष्या होने लगी। किन्तु अभी अन्तिम प्रश्न बाकी था। सम्राट ने उसका भी उत्तर जानना चाहा। महावीर जी ने कहा — देवदूत ने काल शौकरिक जो कसाई है, जिसका काम ही रात दिन हिंसा करना है। उसे कहा:—न मरो न जिओ अर्थ स्पष्ट है। शौकरिक का वर्तमान जीवन भी दुःख, दारिद्रय और कष्टों से भरा है। यहां इतने पाप किए हैं कि अगले जीवन में भी सुख शांति व प्रकाश की आशा नहीं की जा सकती। जीता है तो भी पाप कर रहा है। मरने के बाद भी नरक ही नरक है। अतः उसका न जीना अच्छा न मरना अच्छा !

महावीर ने कहा राजन् ! जो जीवन में विवेक पूर्वक जीते हैं। किसी को दुःख न देते उदात्त जीवन जीते हैं उनके दोनों जन्म ही सुखमय होते हैं। यही आर्यों की जीवन दृष्टि है। इसीलिए आर्यों के जीवन का लक्ष्य था—

ओमसतो मा सद्गमय—हे प्रभो ! मुझे असत्यमार्ग से हटाकर सत्यपथ पर ले चलो।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ईश्वरकृत वेदग्रन्थों का ही स्वाध्याय करें

— पुष्करलाल आर्य

'तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ॥
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।"

यजु० अ० ३१/म० ७/

वेद ईश्वर का ज्ञान है जिसका कभी नाश नहीं होता। ईश्वर को अज्ञान का कभी लेश भी नहीं और सदा सबको सुख देने वाला है इत्यादि लक्षणों से युक्त पुरुष जो सब जगह में परिपूर्ण हो रहा है जो सब मनुष्यों का उपासना के योग्य इष्टदेव सब सामर्थ्य से युक्त है उसी परब्रह्म से ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं इसलिए सब मनुष्यों को उचित है कि वेदों का उपदेश ग्रहण करें और वेदोक्त रीति से ही चलें। वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं। जो सब जगत् का आरंभकर्ता परमेश्वर है। उसी को तुम वेदों का कर्ता जानो, और यह भी जानो कि उसको छोड़ के मनुष्यों को उपासना करने के योग्य दूसरा कोई इष्टदेव नहीं है, क्योंकि ऐसा अभागी कौन मनुष्य है जो वेदों के कर्त्ता सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को छोड़ कर दूसरे को परमेश्वर मान के उपासना करे।

याज्ञवल्क्य महाविद्वान् जो महर्षि हुए हैं, वह अपनी पण्डिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं कि हे मैत्रेयि, जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋक् यजु साम साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं, जैसे मनुष्य के शरीर से श्वासा बाहर को आकर फिर भीतर को जाती है इसी प्रकार सृष्टि के आदि मे ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है, और प्रलय मे ससार मे वेद नहीं रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं, बीजांकुरवत्। जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्षरूप होके फिर भी बीज के भीतर रहता है, इसी प्रकार से वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उनका नाश कभी नहीं होता, क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है, इससे इनको नित्य ही जानना।

इसलिए सत्यप्रमाणयुक्त जो इतिहास है, वही सब मनुष्यों को ग्रहण करने करने के योग्य है इससे विपरीत इतिहास का ग्रहण करना किसी को योग्य नहीं क्योंकि प्रमादी पुरुष के मिथ्या कहने का इतिहास में ग्रहण ही नही होता, जो आजकल के बने ब्रह्मवैवर्त्तादि पुराण और ब्रह्मयामल आदि तन्त्रग्रथ है इनमें कहे इतिहासों का प्रमाण करना किसी मनुष्य को योग्य नही क्योंकि इनमे असम्भव और अप्रमाण कपोलकल्पित मिथ्या इतिहास बहुत लिख रखे हैं, अत जो सत्य-ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मणादि है उनके इतिहासो का कभी त्याग नहीं करना चाहिए।

वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। श्रेष्ठ आचरण करने वाले को आर्य कहते हैं। आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य ससार की भलाई करना है जो ईश्वरकृत वेद ग्रथ है, उसको पढें-पढाए सुने-सुनाए अन्य जो असत्य ग्रन्थ है, दुख सागर मे डुबाने वाले है उनको न पढे न सुने क्योंकि स्वार्थ के वशीभूत रचे ग्रथ स्वार्थ से भरे है।

सयोजक वैदिक प्रचार समिति,
१२१ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता—७

श्री अर्जुनभाई पटेल के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि

बम्बई की समस्त आर्यसमाजों की संयुक्त शोकसभा

बम्बई। २३ अक्तूबर के दिन बृहद् बम्बई की समस्त आर्यसमाजो एव आर्य-सस्थाओ की ओर से टागानिका की राजधानी दारेस्सलाम आर्यसमाज में दस वर्ष तक तथा आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई के १४ वर्ष तक प्रधान का कार्य करने वाले श्री अर्जुनभाई कुंवरजी पटेल को आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई मे भावपूर्ण श्रद्धांजलियां दी गयीं। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के वर्तमान प्रधान श्री प्रकाश चन्द्र मूनाबी, महामन्त्री कैप्टन देवदत्त आर्य, आर्यसमाज सान्ताक्रुज के भू. पू. प्रधान श्री नवीनचन्द्रपाल, वेद मनीषी पं० सत्यकाम विद्यालंकार, श्री हरवंश लाल मरवाह जी अनेक वक्ताओ ने श्री अर्जुनभाई के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट की। सभा के अध्यक्ष श्री प्रतापसिंह मूरजी भाई ने आशा प्रकट की कि अर्जुनभाई की पावन ज्योति आर्य नरनारियो के हृदयों में श्रद्धा की भावना जाग्रत करती रहेगी। शोकप्रस्ताव द्वारा स्वर्गस्थ की चिरन्तन शान्ति तथा स्वर्गस्थ की पत्नी श्रीमती शारदाबहन, पुत्र रोहित, पांचों पुत्रियों एव समस्त परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति व्यक्त की गई।

आर्य जगत् समाचार

फाजिल्का-अबोहर मिलने पर चण्डीगढ़ की बात बनेगी

हरियाणा अपनी न्यायसंगत मांगों के लिए सब चुनौतियों का जवाब देगा : हरियाणा रक्षावाहिनी की घोषणा

रोहतक। दयानन्द मठ, रोहतक से हरियाणा रक्षावाहिनी ने भारत राष्ट्र तथा हरयाणा के हितो के विरुद्ध अकालियों की अनुचित मागो का तीव्र विरोध करते हुए घोषणा की है कि हरियाणा रक्षावाहिनी के सिपाही मैदान मे उतर आए हैं, गुरुद्रोही अकालियों के पापयुद्ध का जवाब हरियाणा एकजुट होकर देगा। हरयाणा रक्षावाहिनी ने ऐलान किया है—१६ वर्षों से हरियाणा लुट रहा है। पंजाब की सरकार रोपड़, फीरोजपुर और हरीके हैडवर्क पर गैरकानूनी कब्जा किए बैठी है और हरियाणा तथा राजस्थान का एक चौथाई के करीब पानी हड़प रही है।

हरियाणा रक्षावाहिनी ने घोषणा की है—रावी-व्यास के पानी का फैसला हुए साढ़े छह वर्ष से अधिक हो चुके हैं, हरियाणा के हिस्से का पानी ले जाने वाली नहर न बनने के कारण पानी पाकिस्तान जा रहा है। इन वर्षों में हरियाणा ६ अरब ५० करोड़ रुपयों का घाटा उठा चुका है और प्रतिदिन ३० लाख रुपए से अधिक खो रहा है। अकाल तख्त पर फैसला हो जाने के बावजूद आज अकाली अम्बाला जिला, कुरुक्षेत्र, करनाल, जीन्द, हिसार और सिरसा जिलों के बड़े भाग मांग रहे हैं। ये सब इलाके हिन्दी भाषी हैं और इनका पजाब में शामिल होने का सवाल ही नहीं उठता।

पजाब के ४८ प्र० श० हिन्दू अल्पसख्यकों को अकाली पजाब में भाषा सम्बन्धी अधिकार नहीं देना चाहते। ४ प्र० श० होकर वे हरियाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा माग रहे हैं, वे राजस्थान नहर का एक बूद पानी हरियाणा को देने के लिए तैयार नहीं हैं, ऐसी हालत में हरियाणा की मांग है कि प्रधानमन्त्री ने १९७० में फाजिल्का—अबोहर हरियाणा को देने की घोषणा की थी। ये क्षेत्र हरियाणा को मिलने पर ही चण्डीगढ की बात चलेगी, इसी प्रकार लाडली सुनाम के साथ लगते हुए पजाब में रह गए तीन दर्जन गांव तथा अन्य हिन्दी भाषी इलाके तुरन्त हरियाणा को मिलने चाहिएं। अकालियों की चुनौतियों का जवाब देने के लिए देश की एकता तथा हरियाणा के हितों की रक्षा के लिए हरियाणावासियो को कर्त्तव्यपालन के लिए तैयार होना पड़ेगा।

महर्षि निर्वाण शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिसम्बर, १९८३ में सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में

इस निश्चय के विरुद्ध अवसरवादी तत्त्वों से सावधान रहें : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० भारतमित्र की अपील

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री ने एक पत्र द्वारा दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एव आर्यजनों से अनुरोध किया है—

आपको पूर्व भी सूचित किया जा चुका है कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा के सर्वसम्मत निश्चयानुसार अन्तराष्ट्रीय स्तर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिसम्बर, १९८३ के अन्त मे दिल्ली के विशाल रामलीला मैदान में मनाई जायेगी। संगठन एव अनुशासन के नाते इस निश्चय के विरुद्ध किसी प्रकार की भी भ्रान्ति उत्पन्न करने का किसी को भी प्रयत्न नहीं करना चाहिए। सार्वदेशिक सभा आर्यों का सर्वोच्च सगठन है। अतः उक्त सभा के निश्चय के अनुसार आचरण करना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है।

खेद है कि कुछ अवसरवादी एव स्वार्थी तत्त्व आर्यसमाज के पवित्र संगठन एव प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से नाना प्रकार को भ्रान्तियां उत्पन्न कर रहे हैं। एक ओर कुछ व्यक्ति महर्षि निर्वाण शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दीपावली ८३ के अवसर पर अजमेर मे मनाने का प्रचार कर रहे हैं। और दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में साप्ताहिक बैठकों का आयोजन कर रहे हैं। दूसरी ओर आर्यसमाज के स्वयंभू तथाकथित नेता इन्द्रवेश, अग्निवेश जिनका अब समाज की किसी भी संस्था से कोई सबध नहीं है इस अवसर से स्वार्थसिद्ध करने हेतु मैदान मे आये हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दयानन्द निर्वाण शताब्दी २५ से २७ नवम्बर ८३ को दिल्ली में मनाने के हेतु दिल्ली की आर्य समाजों की एक बैठक आर्यसमाज शक्ति नगर में करने जा रहे थे। अतः दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य स्त्री समाजों, आर्य शिक्षण सस्थाओं के अधिकारियो से अनुरोध है कि ऐसे विघटनकारी एवं स्वार्थी तत्वों के प्रति जागरूक रहें और इन्हें किसी प्रकार का कोई सहयोग प्रदान न करें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार इस सभा के माध्यम से ही इस अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन की सफलतार्थ कार्य करें।

स्मरण रहे कि आर्यसमाज मन्दिर शक्ति नगर में निर्वाण शताब्दी संबधी कोई कार्यालय नहीं है और न ही रविवार ३१ अक्तूबर ८२ को इस सबंध मे कोई बैठक ही अधिकृत रूप से आयोजित की गई थी।

देश में आपात स्थिति घोषित की जाए

दिल्ली के आर्य नेताओं की भारत सरकार से मांग

दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव, मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा, पश्चिमी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राजाराम आर्य, दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान श्री गुरुमुख दास ग्रोवर इत्यादि ने एक प्रैस वक्तव्य में सरकार से बलपूर्वक माग है कि अकालियो से हर प्रकार की बातचीत बन्द कर दी जाए। पृथकतावादी तत्वो को कड़ाई से दबाने के लिए देश मे आन्तरिक आपात स्थिति घोषित की जाए।

आर्य नेताओं ने कहा कश्मीर, असम, मिजोराम, नागालैंड और विशेषतया पंजाब के हालात को देखते हुए कोई राष्ट्रवादी चुप नहीं रह सकता। इस स्थिति में आर्यसमाज कभी पीछे नहीं हटेगा। अब समय है अगर सरकार ने अकालियों से इस प्रकार देश विभाजन की बातचीत जारी रखी तो इसके परिणामस्वरूप पजाब से बाहर जो इसकी प्रतिक्रिया दूसरे प्रान्तों मे होगी उसकी सारी जिम्मेदारी सरकार पर होगी। आर्यसमाजी नेताओ द्वारा दिल्ली की सभी आर्यसमाजों को जारी किए गए निर्देश के अनुसार ७ नवम्बर ८२ को देश एकता दिवस मनाया गया। साप्ताहिक सत्सग के पश्चात प्रस्ताव द्वारा अकालियो से बातचीत बन्द करने तथा पृथकतावादी तत्वों पर प्रतिबन्ध लगाने की सरकार से मांग की गई।

ऋषि की सत्य साधना के दीप जल रहे!

□ प्रा० रमाकान्त दीक्षित

ऋषि की सत्य-साधना के दीप जल रहे!
मिली रोशनी हमें निज विकास के लिए,
धरा पर नाचती किरण प्रकाश के लिए,
प्रगति के पन्थ पर चरण रोज चल रहे।
ऋषि की सत्य साधना के दीप जल रहे!!

रश्मि से धरा की अब न सूनी गोद है,
आज दिख रहा हमें हर्ष, सौख्य, मोद है,
युगल पुतलियों में सुमधुर स्वप्न पल रहे!
ऋषि की सत्य-साधना के दीप जल रहे!!

दिये जले, धरा-गगन की बात क्या कहें?
प्रमोद के पलों में आज मौन क्या कहें?
स्वदेश के लिए सुविचार आप ढल रहे!
ऋषि की सत्य साधना के दीप जल रहे!!

मधुर प्रीति फिर से आज सुरीति को मिली,
मन-कमल की आज फिर हर पंखुरी खिली,
खड़े पुतले सघनतम के हाथ मल रहे!
ऋषि की सत्य-साधना के दीप जल रहे!!

डा० मुरारीलाल शर्मा, भिवानी (हरियाणा)

आर्यसमाजों के सत्संग

१४-११-८२

अन्धा मुगल-प्रतापनगर—पं. प्रकाशचन्द्र शास्त्री, अशोकविहार—के सी. ५२-ए आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार; आर्यपुरा—प दिनेशचन्द्र शास्त्री; गांधी नगर—पं. मुनिशंकर वानप्रस्थ; गीताकालोनी—प. अमरनाथ कान्त; ग्रेटर कैलाश-II—पं. वेदपाल शास्त्री; गुड़मण्डी—प. राजवीर शास्त्री; गुप्ता कालोनी—पं. प्राणनाथ सिद्धांतालंकार; गोविन्दभवन दयानन्दवाटिका—प. रामरूप शर्मा; जनकपुरी सी-III—डा० रघुनन्दनसिंह; तिलकनगर—प. तुलसीराम भजनोपदेशक; तिमारपुर—पं. देवराज वैदिक मिशनरी; दरियागंज—प. सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; नारायणविहार—प. ओमवीर शास्त्री; नया बांस—श्री बनारसीसिंह; निर्माण विहार—डा० सुखदयाल भूटानी; पंजाबी बाग—प देवेश, पंजाबी बाग एक्सटेन्शन—श्री महावीर बग्गा; बाग कड़े खां—प. बरकतराम भजनोपदेशक; मॉडल बस्ती—प. रामदेव शास्त्री, मोडल टाउन—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; महावीर नगर—प. सोमदेव शास्त्री; मालवीय नगर—प. चुन्नीलाल तथा प. प्रकाशवीर भजनोपदेशक; राणा प्रतापबाग हरिश्चन्द्र शास्त्री; राजा गार्डन—बालीनगर—डा० रघुवीर वेदालंकार; रोहतास नगर—प. छविकृष्ण शास्त्री; लड्डूघाटी पहाड़गंज—प. ओमप्रकाश भजनोपदेशक; लेखरामनगर-त्रिनगर—प. खुशीराम शर्मा; लारेंस रोड—पं. रामनिवास; विक्रमनगर—प. सत्यपाल भजनोपदेशक; विनय नगर—प. हरिश्चन्द्र आर्य; सदरबाजार-पहाड़ी धीरज—प. विश्वप्रकाश शास्त्री, सराय रोहेल्ला—प. प्रकाशचन्द्र वेदालंकार; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री तथा श्रीमती कमला आर्या, सोहनगंज—पं. ईश्वर दत्त, श्री निवासपुरी—वैद्य रामकिशोर, शालीमार बाग—प. रविदत्त गौतम; शादीपुर—श्री मोहनलाल गांधी, हौज खास ई-४९—प्रो० सत्यपाल बेदार; ज्ञानचन्द्र डोंगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

बोट क्लब में महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव

मंगलवार ९ नवम्बर के दिन उद्योग भवन की दीवार के साथ वाले पार्क मे आर्यसमाज बोट क्लब, नई दिल्ली के तत्त्वावधान मे महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा, सभामन्त्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री, महोपदेशक श्री रामकिशोर वैद्य, रेडियो सिंगर श्री सत्यदेव स्नातक, संगीताचार्य श्री गुलाब सिंह राघव, कवि श्री प्रकाशवीर व्याकुल, ढोलक कलाकार श्री ज्योतिप्रसाद आदि विद्वान एव संगीताचार्य पधारे।

द० दिल्ली का सामूहिक निर्वाण उत्सव मालवीय नगर में

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचारक मण्डल की ओर से महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव १४ नवम्बर के दिन आर्यसमाज मालवीय नगर मे प्रात ९ से १ बजे तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर उच्चकोटि के विद्वान् एव संगीताचार्य पधार रहे हैं। उत्सव के बाद सामूहिक प्रीतिभोज की व्यवस्था की गयी है।

स्वामी सुव्रतानन्द जी का देहावसान

महर्षि दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर के व्यवस्थापक स्वामी सुव्रतानन्द जी का बुधवार ३ नवम्बर को असामयिक देहावसान हो गया। उनकी स्मृति मे श्रद्धांजलि सभा १२ नवम्बर को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक वेद विद्यालय, गौतम नगर मे होने जा रही है।

आर्यसमाज न्यूमोतीनगर का वार्षिकोत्सव

७ नवम्बर से १४ नवम्बर, १९८२ तक आर्यसमाज न्यूमोतीनगर कर्मपुरा का वार्षिकोत्सव हो रहा है। प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से ८॥ बजे तक यज्ञ एव उपदेश का कार्यक्रम हो रहा है। प्रतिरात्रि को ७॥ बजे से ९॥ बजे तक मनोहर भजन एव वैदिक विद्वान् श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की कथा होती है।

आर्यसमाज ने स्थानीय जनता के स्वास्थ्यकल्याण के लिए निःशुल्क होमियोपैथिक औषधालय तथा क्षेत्र की कन्याओं के लिए कढ़ाई सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र खोलने का भी निश्चय किया है।

दीवाली फिर आ गई सजनो ......(पृष्ठ ४ का शेष)

ओ तमसो मा ज्योतिर्गमय! हे स्वामिन्। अन्धकार से दूर हटाकर ज्योतिर्मय मार्ग पर ले चलो। ओ मृत्योर्माऽमृतं गमय। मृत्यु के दुखों से हटाकर अमरतत्त्व की ओर ले चलो।

असत्य से सत्य की ओर चलना, अंधकार को छोड़ प्रकाश के पथ पर बढ़ना, मृत्यु के बंधनों से मुक्त होकर अमरतत्त्व की प्राप्ति यह आर्यों का जीवन दर्शन था। दीपावली अंधकार के दीपक जलाकर दूर करते हैं। परन्तु मन के अंधेरे को कैसे दूर करेंगे? स्वाध्याय, सत्संग, ही मन के अंधकार को दूर करते हैं। इसीलिए कहा था स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय और प्रवचन मे कभी प्रमाद न करें।

महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्य समाज को एक प्रकाशस्तम्भ के रूप में संसार को दे गए हैं। ऋषि एक थे। कितने मोर्चों पर लड़े। आज संसार में लगभग ४००० आर्य समाजें हैं। उनमें लाखों सदस्य हैं। क्या हम सब मिलकर देश से भ्रष्टाचार, अनैतिकता, जातिपांति, दहेज का अभिशाप, राष्ट्र-विरोधी पथगामियों का मुकाबला नहीं कर सकते। आर्यसमाज एक सशक्त संस्था है। संगठन है। हमें अपनी शक्ति को स्मरण करना है। जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले। यदि हम इस दीपावली पर ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते हैं तो आइए याद करें ऋषि के अन्तिम शब्दो को।, ऋषि ने कहा था—सब लोग मेरे पीछे आ जाओ। सारे दरवाजे और खिड़कियां खोल दो। आज कहा हैं हम ऋषि के पीछे। ऋषि के पीछे आने का तात्पर्य है ऋषि के चरण चिन्हों पर चलना। उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना।

कहां खोले हैं हमने दरवाजे और खिड़कियां। दरवाजे-खिड़कियां खोलने का तात्पर्य है। हृदयों का विशाल बनाना। अभी भी हमारे हृदय ईर्ष्या-द्वेष से भरे हैं। कहां है आर्य परिवार की भावना। सब आर्य हमारे भाई-बहिन हैं। यह भावना पैदा होनी चाहिए। जब अपना घर संगठित है तभी दूसरे भी हमारी ओर खिंचते हुए चले आयेंगे। नैरोबी में हम हर शुक्रवार को अस्पतालों मे बीमारों को देखने जाते थे। उनके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते थे। खुशियों का बांटना आर्यों का मिशन होना चाहिए। एक परिवार की भावना बड़ी जादू का काम करती है। दीपावली में स्नेह के दीपक जलाते हैं। आओ हमें सब अपने हृदयों मे स्नेह की ज्योति जगाए। उस ज्योति में सारे ईर्ष्या, द्वेष जलकर भस्म हो जाए। आर्य एक नया संकल्प लेकर आगे बढ़ें। देश के वातावरण में एक नया प्रकाश भरने की शक्ति पैदा करें। हर आर्यसमाज सच्चा आर्य बने यही दीपावली का अमर जीवनदर्शन है।

वरदान, १६,७४,६, पूर्वी मारड़पल्ली, सिकन्दराबाद, ५०००२६

आर्यसमाज हरदोई का ९८वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हरदोई का ९८ वा वार्षिकोत्सव २५, २६ तथा २७ अक्तूबर १९९२ के दिन आर्य कन्या पाठशाला भवन मे मनाया गया। इस अवसर पर सस्कृत सम्मेलन राष्ट्रभाषा सम्मेलन, युवक सम्मेलन तथा वक्तृता प्रतियोगिता सम्मेलन, धर्मरक्षा सम्मेलन, जिला आर्य सम्मेलन आयोजित किए गए।

चलो मीनाक्षीपुरम्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा सभा मन्त्री श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर आर्य हिन्दू जनता से अनुरोध किया है कि ३१ दिसम्बर, १९८२ तथा १-२ जनवरी १९८३ को मीनाक्षीपुरम (तमिलनाडु) मे आयोजित हो रहे आर्य महासम्मेलन मे सम्मिलित होने के लिए अभी से अपना कार्यक्रम बना लें। इस अवसर पर वैदिक यज्ञ, सामूहिक यज्ञोपवीत, हरिजन स्नेह सम्मेलन, बिछुड़ों के पुनर्मिलन के कार्यक्रम रखे गए हैं। साथ ही आर्यसमाज मीनाक्षीपुरम का प्रथम वार्षिकोत्सव तथा महर्षि दयानन्द चिरंजीलाल विद्यालय का शिलान्यास भी किया जाएगा।

रजि० नं० (डी०) ७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा [illegible]
[illegible] दिल्ली ६ में मुद्रित [illegible]

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष ७ अंक ४ रविवार २१ नवम्बर १९८२ ६ मार्गशीर्ष वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

राष्ट्र को बचाने की जिम्मेदारी आर्यसमाज पर

चुनौती का जवाब हमें संयुक्त और संगठित होकर देना होगा—

केन्द्रीय राज्यमन्त्री कुमुद बेन जोशी और श्री रामगोपाल शालवाले का आह्वान : दिल्ली मे महर्षि निर्वाण महोत्सव

नई दिल्ली। 'आज राष्ट्र को बचाने की जिम्मेदारी आर्यसमाज पर आई है। आर्यसमाज एक सम्प्रदाय नही है एक सगठन है एक सस्था है, आज राष्ट्र को समस्त जनता को जाग्रत करने और बचाने की जिम्मेदारी आर्यसमाज पर आई है। आज राष्ट्र के सामने जो चुनौती आई है, उसे सगठित और मजबूत होकर आर्यसमाज को जवाब देना होगा। आज हमे दयानन्द की जोत लेकर राष्ट्र और राष्ट्रभक्ति की जोत सारे देश मे जगानी होगी—'इन शब्दो मे सोमवार १५ नवम्बर के दिन महर्षि निर्वाण महोत्सव पर रामलीला मैदान मे आयोजित विशाल सभा मे केन्द्रीय राज्य मन्त्री कुमारी कुमुद बेन जोशी ने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।

इस जनसभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा—पिछले दिनो हम प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी से मिले थे। उनसे हमने कहा था कि आर्यसमाज देश की अखण्डता, राष्ट्र तथा भारतीय सस्कृति का विरोध करने वालो का विरोध करता है। आज देश के सामने जो गम्भीर समस्या है, उसे सुलझाने के लिए चाहे आप इमरजेंसी स्थापित करें, चाहे राष्ट्रपति शासन लागू करें या फौज को शासन सौंपे किसी भी तरह इस गम्भीर स्थिति को सुलझाना होगा। देश के विभाजन से सबसे ज्यादा क्षति आर्यसमाज को पहुची थी, यदि अब पंजाब मजहबी सूबा बनता है तो सर्वाधिक क्षति आर्यसमाज को पहुचेगी। जनता को जागरूक और सन्नद्ध होकर इस नए बटवारे को रोकना होगा।

निर्वाण महोत्सव के अध्यक्ष स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा—अगले वर्ष महर्षि की निर्वाण शताब्दी है वर्ष भर मे हमे प्रयत्न कर ससार की सभी भाषाओ मे महर्षि और आर्यसमाज का सन्देश पहुचा देना होगा।

ससद सदस्य श्री भगवानदेव ने कहा महर्षि दयानन्द एक महान ज्योति स्तम्भ थे हमें उनसे ज्योति लेकर प्रयत्न करना होगा कि देश में कोई गद्दार और दुश्मन न पनपने पाए। भूतपूर्व ससद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि महर्षि निर्वाण उत्सव पर हमे भारत, भारतीय भाषाओ एव भारतीय सस्कृति को अपनाने का सकल्प करना होगा। महर्षि निर्वाण महोत्सव की सफलता के लिए आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान— श्री महाशय धर्मपालजी और श्री रतनचन्द्र सूद ने ११००) ११००) रुपये दिए, श्री विद्याप्रकाश सेठी ने ५००) की सहायता दी।

सार्वदेशिक के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, योगीराज स्वामी ओमानन्द जी आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने जनता का सामयिक उद्बोधन किया। सभा से पूर्व यज्ञ एव झण्डोत्तोलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभा का कार्य सचालन सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने किया।

अकाली आन्दोलन का दृढ़ता से सामना किया जाए

अराजकता के उन्मूलन में देश प्रधानमन्त्री के साथ : श्री शालवाले का प्रधानमन्त्री के नाम पत्र

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक पत्र लिखकर अकाली आन्दोलन से बिगडती हुई पंजाब की स्थिति के बारे में उनका ध्यान खींचा है और विश्वास दिलाया है कि अराजकता एव देशद्रोही तत्त्वों के उन्मूलन में सारा देश उनके साथ है। उन्होंने यह मांग भी की कि अराजकता उत्पन्न करने वाले देशद्रोही अकाली तत्वों के विरुद्ध दृढ़ता से कार्रवाई की जाए।

श्री शालवाले ने कहा है देश में विघटनकारी तत्व विदेशों के संकेतों के आधार पर सिर उठा रहे हैं यह चिन्ता का विषय है। पिछले ३५ वर्षों से अकाली देश को [illegible] करने के अनेक प्रयास कर चुके हैं। देश का बहुमत [illegible] की स्थिति से बेचैन है, अकालियों का संबंध है वे अपनी मांगों को मनवाकर देश का विभाजन कर खालिस्तान बनाना चाहते हैं। आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव देश को [illegible] करने का षड्यन्त्र है, अमृतसर गुरुद्वारे में पाकिस्तानी एजेन्ट का समर्थन इस बात को पुष्ट करता है। पंजाब में उग्रवादी अकालियों द्वारा उत्पन्न स्थिति के कारण अनेक निर्दोष व्यक्ति मारे जा चुके हैं। ऐसी स्थिति में मेरा सरकार से अनुरोध है कि वह जांच करे कि सरकारी उच्च पदों, नौकरियों, फौज, ट्रांसपोर्ट और सरकारी ठेकेदारी में सिख किस अनुपात में लगे हैं। हरियाणा में अकाली पंजाबी को दूसरी भाषा बनाने की मांग कर रहे हैं, परन्तु वे पंजाब में १० प्र० श० हिन्दी भाषियों को कोई अधिकार नहीं देना चाहते। मेरा निवेदन है कि यदि आपने दृढ़तापूर्वक राष्ट्र की सुरक्षा का ध्यान रखा और अराजक तत्वों से लोहा लिया तो देश का पूर्ण बहुमत आपके साथ है।

हरयाणा रक्षावाहिनी अकालियों को दिल्ली जाने से रोकेगी

चण्डीगढ़ तथा अबोहर-फाजिल्का हरयाणा मे लेने के लिये धर्मयुद्ध आरम्भ रोहतक मे हरयाणा के धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्ताओ की बैठक मे महत्त्वपूर्ण निर्णय

रोहतक। ७ नवम्बर के दिन दयानन्द मठ रोहतक मे हरयाणा रक्षा वाहिनी की सभी जिलो मे स्थापित शाखाओ की सम्मिलित बैठक प्रो शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक मे आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ के अतिरिक्त सनातन धर्म, निरकारी मण्डल, हरयाणा युवा सघर्ष समिति, मानव अधिकार सघर्ष समिति, हरयाणा सुरक्षा दल के कार्यकर्ता भी भारी सख्या मे उपस्थित हुए। इस अवसर पर अनेक नेताओ ने हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए अपने सुझाव दिए।

सभी नेताओं ने हरियाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी का धन्यवाद करते हुए कहा कि आपने सर्वप्रथम अबोहर-फाजिल्का के ही हिन्दी क्षेत्र हरियाणा में मिलाने की मांग तथा उग्रवादी अकालियों की ४६ अनुचित मांगों की निन्दा करके हरयाणा के हितो की रक्षा के लिये हरयाणा रक्षा वाहिनी का गठन करके ऐतिहासिक कार्य किया है। यदि आपने इस सम्बन्ध मे हरयाणा का भ्रमण करके जनमत तैयार न किया होता तो हरयाणा के विरुद्ध एक तरफा निर्णय हो जाता।

विचार विमर्श के पश्चात् सभा मे ये प्रस्ताव स्वीकार किए गए—

१ हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए प्रो० शेरसिंह जी को डिक्टेटर नियुक्त किया गया।

२ पजाब के सिखो के गुरुद्वारो मे भयकर अपराध करने वाले अपराधियो ने शरण ली हुई है। अत भारत सर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादक—[illegible]

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

ईश्वर का साक्षात्कार किस मनुष्य को होता है

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

अनेजदेक मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत् ।

तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्न को मातरिश्वा दधाति ।। यजु० ४०।४।।

दीर्घतमा ऋषि, ब्रह्मा देवता, निचृत्रिष्टुप छन्द धैवत स्वर ।

पदार्थ —हे विद्वान मनुष्यो ! जो [एकम्] अद्वितीय ब्रह्म [अनेजत्] नहीं कम्पने वाला अर्थात् अचल [मनस] मन के वेग से भी [जवीय] अति वेगवान् [पूर्वम्] पहले ही सबसे आगे [अर्षत्] सर्वत्र अपनी व्याप्ति से पहुचा हुआ होता है [एनत्] इस पूर्वोक्त ईश्वर को [देवा.] चक्षु आदि इन्द्रिय [न] नही [प्राप्नुवन्] प्राप्त होते । [तत्] वह परब्रह्म [तिष्ठत्] अपने आप स्थिर हुआ हुआ [अपनी अनन्त व्याप्ति से] [धावत] [विषयो की ओर] गिरते हुए [अन्यान्न्] अपने स्वरूप से विलक्षण [भिन्न] मन वाणी आदि इन्द्रियों का [अति एति] उल्लंघन कर जाता है । [तस्मिन्] उस [सर्वत्र अभिव्याप्त स्थिर ब्रह्म] में [मातरिश्वा] जीव [अप.] कर्म अथवा क्रिया को [दधाति] धारण करता है यह जानो ।।

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

भावार्थ.—ब्रह्म के अनन्त होने से जहा-जहा मन जाता है, वहा-वहा प्रथम से ही स्थित ब्रह्म वर्त्तमान है । उसका विज्ञान शुद्ध मन से होता है । चक्षु आदि इन्द्रियां और अविद्वानो से देखने योग्य नही है । वह आप निश्चल हुआ सब जीवों को नियम से चलाता और धारण करता है । उसके अतिसूक्ष्म वा इन्द्रिय-गम्य न होने के कारण धर्मात्मा विद्वान् योगी को ही उसका साक्षात्कार होता है अन्य को नहीं ।

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

जयगान है

—आचार्य सोमव्रत विद्याभास्कर

सद्धर्म पालन के लिए नर—आगमन ससार मे ।
सयम-सुधा का पानकर मानव बहे जग-धार मे ।
जीवन बनेगा फिर स्वय ही मन-गगन-दिनमान है ।
ससार-शतदल नित करेगा फिर स्वय जयगान है ।।
निज-दोष-दर्शन के लिए सद्ज्ञान-दर्पण है मिला ।
सत्सग-साबुन-योग से जीवन-वसन रहता खिला ।
पर दभ-दर्प-निरत मनुज का ज्ञान खुद अज्ञान है ।
अपने सिवा करता कभी ना अन्य जयगान है ।
सज्जन, असज्जन, मूर्ख, प्रज्ञ चाहे कोई कुछ कहे ।
निन्दा, प्रशस्ति की नदी हरपल चाहे खुलकर बहे ।
पर लक्ष्यशील मनुज कभी देता इधर ना ध्यान है ।
बस लक्ष्य-हित जीवन-मरण उसके लिए जयगान है ।
शोभा-सदन नर को बनाया ईश ने ससार मे ।
ताकि मनुज बहता रहे उपकार-नदी-शुभधार में ।
उपकार से बनता मनुज मन सूर्य-सा द्युतिमान है ।
कौन नर उपकारियो का करता नही जयगान है ।।
बिजली-चमक, पावक-दमक ये स्थिर कहाँ रहती भला ?
क्या चन्द्र की जग-मोहिनी सस्थिर कभी रहती कला ?
तो मूढ मन ! प्रभु-छोड क्यो तू कर रहा जग-ध्यान है ।
विश्व से मिलता ना कुछ यह भ्रम तेरा जयगान है ।

रत्तानिवास, डी० २६, दयानन्द नगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश)

आर्यसमाज अमर कालोनी का १५वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमर कालोनी, ऋषि दयानन्द मार्केट, नई दिल्ली-२४ का १५ वा वार्षिकोत्सव ५, ६, ७, नवम्बर को मनाया गया । इस अवसर पर अनेक विद्वानों एव भजनोपदेशको ने जनता का मार्गदर्शन किया ।

मैं भी यशस्वी बनूं !

—डा० रामनाथ वेदालकार

यशा इन्द्रो यशा अग्निर यशा. सोमो अजायत ।

यशा विश्वस्य भूतस्य अहमस्मि यशस्तम. ।। अथर्व ६.५८.३

० (इन्द्र:) सूर्य (यशा·) यशस्वी है, (अग्नि) अग्नि (यशा:) यशस्वी है, (सोम:) चन्द्रमा भी (यशा· अजायत) यशस्वी बना हुआ है । इसी प्रकार (अह) मैं भी (विश्वस्य भूतस्य) सब प्राणियों मे (यशा:) यशस्वी, और (यशस्तम:) यशस्वितम (अस्मि) बनूं ।

० भाइयो, देखो, जरा इस सूर्य की ओर देखो । यह तेज का गोला सूर्य युग-युग से अपने प्रखर तेज को बखेरता हुआ यशस्वी बना हुआ है । प्रतिदिन चारों ओर फैले हुए अधकार के व्यूह को चीरता हुआ उदित होता है, नियम से अस्त होता है, दिन-रात के चक्र का प्रवर्त्तन करता है, ऋतुओ का निर्माण करता है, जड़-चेतन को प्राण प्रदान करता है ।

इस अग्नि की ओर भी देखो । अपनी तेजोमयी ज्वालाओं से सदा ऊपर की ओर गति करने वाला यह अग्नि कैसा यशस्वी है । जरा इस पर पाद-प्रहार करके तो देखो । तुम्हारा पादाघात होते ही उसे न सहन करता हुआ कैसे वेग से यह भभकेगा और अपनी क्रुद्ध ज्वाला से तुम्हें अभिभूत कर लेगा ।

इस चन्द्रमा की ओर भी दृष्टिपात करो । अपनी सौम्य शीतल चांदनी से सबके अन्त.करणों को आह्लादित करने वाला यह चन्द्रमा भी कैसा यशस्वी है । जिसकी क्षीणता भी वृद्धि के लिए होती है वह चारु चन्द्र सचमुच कैसा यशस्वी है ।

तो, जैसे यह सूर्य यशस्वी है, अग्नि यशस्वी है, चन्द्रमा यशस्वी है, वैसे ही मैं भी यशस्वी बनू, ससार-भर के प्राणियों में सबसे अधिक यशस्वी बनूं । यह मेरी महत्त्वाकाक्षा पूर्ण हो ।

१/१२६ फूलबाग पतनगर (नैनीताल)

बोध-कथा

मध्यम मार्ग

सुन्दरी पत्नी यशोधरा, दुध मुहे बालक राहुल और कपिलवस्तु का राज-पाट छोड कर राजकुमार सिद्धार्थ तपस्या के लिए चल पड़े । भोजन के लिए भिक्षा मागी, पहला कौर मुह मे देते ही उल्टी होने लगी । ऐसा खाना तो पहले कभी नही खाया था, पर अब तो ऐसा ही खाना होगा । उन्होने जी कड़ा किया । योग-साधना समाधि सीखी । इन दिनो वह तिल-चावल खाते थे । फिर कोई भी आहार लेना बन्द कर दिया । उनका शरीर सूख कर काटा हो गया । स्वल्प आहार लेते हुए तपस्या करते हुए उन्हें छह साल हो गए । परन्तु सिद्धार्थ की तपस्या सफल नही हुई । एक दिन वह वृक्ष के नीचे बैठे थे । समाधि मे बैठने की कोशिश में थे परन्तु उनका चित्त उद्विग्न था कि अचानक कुछ महिलाए नगर से लौट रही थी । वे समवेत स्वरो मे गाना गा रही थी—जिनके बोल का सार था—'वीणा के तार ढीले मत छोडो । ढीला छोडने से उनका स्वर सुरीला नही निकलेगा परन्तु तार इतने अधिक कसो भी नही कि वे टूट जाए ।'

गीत की बात सिद्धार्थ को जंच गई । उन्हें अनुभूति हुई कि वीणा के तारो और सगीत के लिए जो बात ठीक है, वही शरीर के लिए भी ठीक है । न तो अधिक आहार लेना ठीक है और न बहुत न्यून ही । नियमित मध्यम आहार-विहार से ही योग सिद्ध हो सकता है । अति किसी बात की अच्छी नही । मध्यम मार्ग ही ठीक होता है ।

—नरेन्द्र

खण्डवा में सप्तम निमाड़ जिला आर्य सम्मेलन

१-२ नवम्बर के दिन खण्डवा में सम्पूर्ण निमाड जिला सप्तम आर्य सम्मेलन का आयोजन नगरपालिका निगम प्रांगण खण्डवा में किया गया । इस अवसर पर ध्वजारोहण, गायत्री यज्ञ, पत्रकार परिषद, युवासम्मेलन, धर्मरक्षा सम्मेलन के अतिरिक्त विषय निर्धारिणी समिति एव खुला अधिवेशन सम्पन्न हुआ ।

वसन्त विहार दिल्ली में यज्ञ और प्रार्थना

वसन्तविहार दिल्ली में श्री बाबूलाल बियाणी की कोठी पर १८ अक्तूबर के दिन वेदपथिक पं. धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी ने यज्ञ और प्रार्थना के कार्यक्रम सम्पन्न कराए ।

श्रद्धा से राष्ट्र को नमन करो !

ओ३म् भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।

ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ॥

अथर्व १९ ४१ १

आत्मानुभवी ऋषियो ने जब कल्याण-अभ्युदय चाहा, तब पहले घोर तपस्या की और दीक्षा ग्रहण की, उनसे ही राष्ट्र जन्मा, वह ओजस्वी बलवान् बना, राष्ट्र-भक्त विद्वानो, श्रद्धा से राष्ट्र का नमन करो ।

ओ३म्

आर्य सन्देश

राष्ट्ररक्षा का संकल्प

राज्यों के पुनर्गठन से कुछ समय पूर्व भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा था—"आज देश को जरूरत है कि उसे आन्तरिक अव्यवस्था एव बाह्य आक्रमण के खतरो से सुरक्षित किया जाए । यदि भगवान मुझे शक्ति और आयुष्य दें तो मैं नए राज्यों के पुनर्गठन को रोक दूं गा । आज देश को छोटे छोटे राज्यों या टुकड़ों की जरूरत नहीं है । अच्छा होगा कि जिस प्रकार रेलो के प्रबन्ध के लिए रेलों की ५ या ६ इकाइयां बनी हुई हैं, उसी प्रकार देश की प्रशासनिक व्यवस्था के लिए पांच या छह इकाइयों मे बांट कर प्रबन्ध करना चाहिए । कम से कम दस साल के लिए देश को केवल निर्माण और शक्तिसचय करना होगा ।" खेद है कि अपने उस ऐतिहासिक भाषण के बाद सरदार पटेल चिरजीवी नहीं हो सके । सरदार का सपना चरितार्थ नहीं हो सका, उसके बाद भाषा के आधार पर छोटे-बड़े अनेक प्रांतों का पुनर्गठन हो गया । इन प्रान्तो के निर्माण से देश की समस्या सुलझी नहीं है, प्रत्युत बढ़ती ही गई है ।

पिछले दिनों लन्दन स्थित 'खालिस्तान टाइम्स' मे तथाकथित खालिस्तान का नक्शा प्रकाशित किया गया है, इसमें वर्तमान पजाब के अतिरिक्त जम्मू-कश्मीर हिमाचल, हरियाणा, राजस्थान एव गुजरात के बड़े भूभाग तथा चडीगढ़ को उस देश की सीमाओं में दिखलाया गया है । इस प्रदेश के लिए बड़े भूभाग मांगने के लिए भाषा, सस्कृति का कोई भी आधार नही है । जिन नए भूभागों को कथित खालिस्तान में सम्मिलित होने के लिए मांगा जा रहा है, वहां पजाबी भाषाभाषी पांच प्रतिशत से भी कम हैं । खालिस्तान के समर्थकों या दावेदारो की मांग के पीछे न्याय का औचित्य न होकर कोरी धींगामुश्ती है । सम्भवत: मुस्लिम लीगियों की तरह उनकी उमग है—'हसकर लिया पंजाबिस्तान, लड के लेंगे खालिस्तान ।' लन्दन में इस नए मजहबी मुल्क के नक्शे के प्रदर्शन का साफ मतलब है कि विदेशी ताकतें भारत की एकता और अखण्डता पसन्द नहीं करतीं । उनका बस चले तो वर्तमान देश की ईंट से ईंट बज जाए । मजहबी खालिस्तान की मांग के निराकरण के लिए केन्द्रीय सरकार दृढ़ता से कदम उठाये, इसके लिए अपेक्षित है कि हरियाणा हिमाचल, राजस्थान आदि सम्बन्धित प्रदेशों एवं आर्यसमाज, सनातन धर्म, जैन आदि धर्मों एव सब राजनीतिक दलों को मिलकर एक संयुक्त मोर्चा बनाना चाहिए ।

समीपस्थ प्रदेशों के सभी दलों, संस्थाओं एव जनता को सयुक्त होकर एक स्वर से कहना होगा कि हम अपनी सीमाओं में खालिस्तान की घुसपैठ सहन नहीं करेंगे । प्रसन्नता का विषय है कि हरियाणा में इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रदेश की सभी संस्थाओं की ओर से हरियाणा रक्षावाहिनी सगठित की गई है । इसी प्रकार के सगठन हिमाचल, राजस्थान, आदि सम्बन्धित प्रदेशों में बनने चाहिए । केन्द्रीय एव प्रादेशिक सरकारों और सम्बन्धित प्रदेशों की जनता को सगठित एव सन्नद्ध होकर घोषित कर देना होगा कि सिख हिन्दू धर्म के रक्षक के रूप में अवतीर्ण हुए थे, यदि वे धर्म की उन्नति चाहते हैं तो उनकी धार्मिक मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जा सकता है परन्तु वे यदि भाषा के नाम पर देश के बड़े भाग में एक नया मजहबी राज स्थापित करना चाहते हैं तो इस प्रकार के राष्ट्रद्रोहात्मक कार्य का सारा देश मिलकर विरोध करेगा । पजाब के ४८ प्र० श० हिन्दुओं को हिन्दी एवं धर्म के व्यवहार एवं प्रचार की सुविधा नहीं, अब वे भाषा के नाम पर अपनी मजहबी सल्तनत का सपना ले रहे हैं, इस समय खतरा भीषण है, इसकी रोकथाम के लिए समस्त देशवासियों का राष्ट्ररक्षा का संकल्प लेना होगा ।

कार-ए-सल्तनत लोहे से चलता है

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

दो वर्ष पहले सन् १९८० मे जब अब्दुल्ला बुखारी ने यह कहा था कि मुसलमान भारत के वफादार नही हो सकते, तभी मैंने 'अब्दुल्ला बुखारी का प्रलाप शीर्षक से भारत को प्रधानमन्त्री को एक पत्र लिखा था । यदि उसी समय बुखारी को बन्द कर दिया होता, तो अब जो मेरठ मे धन-जन की हानि हुई है, यह नहीं होती और मेरठ के इस काण्ड में देश मे विशेषकर उत्तर प्रदेश और दिल्ली मे जो विषाक्त वातावरण बना है, वह न बनता ।

यह किसी से छिपा नही है कि मेरठ में दगे बुखारी ने कराए । भारत सरकार ने एक मस्जिद के इमाम को नेता बनने का अवसर दे दिया । जैसा किसी अन्य मस्जिद का इमाम ऐसा ही दिल्ली की शाही मस्जिद का है । इमाम शाही मस्जिद का अर्थ किसी समय के बादशाह द्वारा बनवाई गई मस्जिद होती है न कि सरकारी मस्जिद और न यह कि उसे सदासर्वदा सरकारी मस्जिद अर्थात् राजकीय उपासनागृह जैसा मान लिया जाए और किसी व्यक्ति को इसलिए कि वह उस मस्जिद का इमाम है, साम्प्रदायिक दगे कराने तथा राष्ट्र-द्रोहात्मक रवैया अपनाने की खुली छूट दे दी जाए ।

सरकार की इस नीति का ही परिणाम है कि उसे मेरठ मे बलवा कराने और मेरठ प्रवेश के प्रतिबन्धादेश पर हस्ताक्षर करते समय सरकारी अधिकारियो को यह कहने का साहस हुआ कि तुम क्या मुझे तो सेण्ट्रल गवर्नमेंट भी नही रोक सकती । सरकार की इस तुष्टिकरण की नीति के परिणामस्वरूप ही मेरठ के जिलाधिकारी महोदय पुलिस अधिकारियो सहित राजकीय अतिथि की भांति बुखारी को शहर मे घुमाते फिरे और उसके पश्चात सर्किट हाउस मे ले जाकर तथा वहां उसका दरबार लगवाकर उसे सम्मान प्रदान किया ।

१९८० में जब अब्दुल्ला बुखारी ने यह कहा था कि मुसलमान भारत का वफादार नहीं हो सकता, तो भारत के किसी भी मुसलमान ने उसके इस वक्तव्य का विरोध नहीं किया था । बाद मे प्रधानमन्त्री को लिखा गया मेरा वह पत्र पुस्तकाकार छपा तो उसमें भी मैंने यह चर्चा की थी कि अब्दुल्ला बुखारी के इन विचारो को किसी भी अन्य मुसलमान द्वारा विरोध न होना इस बात का प्रमाण है कि भारत के सभी मुसलमान अब्दुल्ला बुखारी के समर्थक तथा भारत के प्रति गैर वफादार हैं ।

मुस्लिम ससद सदस्यो की बैठक

मेरे उन शब्दों का प्रबल प्रमाण यह है कि तीन मुस्लिम ससदसदस्यो को एक बैठक पिछले दिनों दिल्ली मे इका सासद तथा 'जुमेतुल उलेमा हिन्द' के अध्यक्ष मौलाना हुसैन अहमद मदनी के स्थानीय निवास पर हुई । मौलाना मदनी पुराने कांग्रेसी है और बड़े राष्ट्रभक्त गिने जाते हैं । पता चला है कि इस बैठक मे अन्य बातों के साथ-साथ यह भी निश्चय किया गया कि ससद के आगामी सत्र के समय सभी संसद सदस्य विरोधस्वरूप एक दिन के लिए ससद से अनुपस्थित रहें । इका के १५ मुस्लिम सांसदों ने भी इस बैठक में भाग लिया । इनमे एक तो श्री जाफर शरीफ (कर्नाटक से) केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के सदस्य भी हैं ।

अब तक प्राप्त हुए समाचारों के अनुसार भारत की प्रधान मंत्री ने इस बैठक के विषय में अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि "वह बैठक हमें भारत-पाक विभाजन के दिनों की याद ताजा कराती है । जब हिन्दू तथा मुसलमान साम्प्रदायिकता से ग्रस्त होकर कदम उठाते थे ।

इस विषय में हमे यह कहना है कि हिन्दू कभी साम्प्रदायिक नहीं होता । इसने कभी साम्प्रदायिकता से ग्रस्त होकर पग नहीं उठाया । जब पग उठाया तो साम्प्रदायिकता तथा देश-द्रोह के विरुद्ध ही पग उठाया, परन्तु खेद की बात यह है कि इस देश के नेता देशद्रोही तत्त्वों का तो आस्तीन का सांप बनाकर पालते हैं और देश भक्तों की देश भक्ति को साम्प्रदायिकता बताते हैं । हिन्दू का अपराध यह है कि उसे देशद्रोह सहन नहीं । सहन हो भी क्यो ? भारत ही तो उसकी मातृ-पितृ भूमि है, यहां उसका घर है । वह इस घर को आग लगती कैसे देख सकता है । यहां का अन्न-जल खाकर, यहां के वायुमण्डल मे पलकर और यहीं जन्म लेकर विदेशों के गीत गाना, युद्ध हो अथवा खेल हो इनमे से होने वाली पाकिस्तान की जीत पर खुशियां मनाना, मिठाई बांटना तथा 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाया जाना और पाकिस्तान की हार पर शोक मनाना, यह सब देशभक्त हिन्दू नहीं सहन कर सकता और इस प्रकार की गतिविधियो को सहन न करने के कारण हिन्दू पुरस्कार और प्रत्येक प्रकार से सम्मान का अधिकारी है न कि दण्डनीय अपराधी ।

(शेष आगामी अक में)

मृत्युंजयी : क्रान्तदर्शी युग पुरोधा महर्षि दयानन्द

ब्रिटिश शासनकाल के गुजरात-काठियावाड प्रदेश के अन्तर्गत मोरवी रियासत के टकारा ग्राम के एक समृद्ध औदीच्य ब्राह्मण जमींदार के होनहार पुत्र मूलशंकर के किशोर काल में जिन दो घटनाओं ने उसके संस्कारी मानस पर सर्वाधिक प्रभाव डाला, उनमे प्रथम थी, माता के विरोध पर भी दृढ़ता और आस्था के साथ शिवरात्रि पर्व पर व्रत-उपवास का पालन, समस्त रात्रि जागते हुए गाँव के पास ही शिव मन्दिर में शिवलिंग की पूजा, अपने पिता सहित उसकी आज्ञा का पालन, अन्य वयोवृद्ध श्रद्धालुओं के साथ आधी रात के लगभग जब उसके पिता सहित सब भक्त-जन निद्राग्रस्त हो लुढ़कने लगे, तब बालक मूलशंकर सावधानता से शिव मूर्ति की ओर टकटकी लगाए जाग रहा था। उसने एक चूहे को शिवलिंग पर कूदते-फांदते नैवेद्य भक्षण करते देखा। आश्चर्य के साथ मन की जिज्ञासा के समाधान के लिए जब उसने त्रिलोकाधिपति, दुष्ट व शत्रु संहार इत्यादि, अनेक गुणयुक्त शिव का एक लघुकाय चूहे को अपने सिर पर से भगा देने की असमर्थता को अत्यन्त शंकालु मन के साथ देखा और मंदिर में सो रहे अपने पिता को झकझोर कर पूछा, तब पिता केवल यह कहते हुए कि "इस मंदिर की मूर्त्ति और हिमालय के त्रिशूलधारी शिव दोनों में बड़ा भेद है। तू भी सो जा।" पुन. निद्राग्रस्त हो गए। पर बालक मूलशंकर इस उत्तर से तनिक भी सन्तुष्ट न हो इसके समाधान के लिए सदा व्यस्त ही रहा।

बहन और चाचा की मृत्यु

कुछ कालभेद के साथ परिवार में दो हृदयवेधक घटनाएं हुईं। मूलशंकर की एक बहिन थी, लगभग १४ वर्ष की, भाई-बहिन मे प्रगाढ स्नेह पर, यथासंभव पूरे उपचार के बावजूद, उस अबोध बालिका की मृत्यु। माता-पिता का, भाई का अपरिमित स्नेह, पूरा इलाज —पर ये सब उस कन्या को मौत के प्रबल पंजे से बचाने मे सर्वथा अशक्त। मूलशंकर प्रबल शंकाओं और प्रश्नों मे झूलता हुआ बार-बार सोचता 'मृत्यु क्या है जिसने जबर्दस्ती मेरी प्यारी बहिन को छीन लिया और न जाने कहा ले गए।" तीन-चार वर्ष बाद यही समस्या फिर उठ गई जब उसके विद्वान और उसे वेदपाठ, संस्कृत व्याकरण आदि की शिक्षा देने वाले चाचा का भी स्वर्गवास हो गया दोनों अवसरों पर शोक सागर में डूबता परिवार जब रो-पीट रहा था, तब मूलशंकर एक कोने में—बिना अश्रुपात के-पर एकदम पाषाणवत् स्तब्ध, हतप्रभ और यह मृत्यु किस पिशाचिनी का नाम है जिसने उसके परिवार में से दो अमूल्य व्यक्तियों का बलात् अपहरण कर लिया—यही सोचता रहा।

गृहत्याग

मूल शंकर जब लगभग २१ वर्ष के हो गए तब उनके माता-पिता ने उसे विवाह बंधन में फंसाने की तैयारी की। युवक मूलशंकर इसके विरुद्ध था। उसने अपनी अनिच्छा भी प्रकट की, पर कोई सुनने को तैयार नहीं था। फिर उसने वही पग उठाया जो एक मात्र उसके लिए सम्भव था। वह घर से भागकर सिद्धपुर के मेले में भाग आया। समृद्ध पिता को किसी प्रकार पता लग गया। अपने सिपाहियों को साथ ले पिता वहां पहुंचे, मूलशंकर पकड़ा गया, पिता की कड़ी ताड़ना के साथ युवक ने आज्ञा-पालन का आश्वासन दिया। रात को विश्रामकर प्रातः वापस जाने का निश्चय पिता ने किया। मूल शंकर को भला नींद कहां? रात भर उसके अन्तराल में देवासुरसंग्राम चलता रहा। अन्ततः प्रभु कृपा से दैवीय भावनाओं की विजय हुई। मूल शंकर पिता और चौकीदारी करते सिपाहियों को निद्रामग्न देख रात्रि के दूसरे पहर शौच जाने के बहाने वहां से भाग दूर एक घने पीपल के वृक्ष के ऊपर चढ़-छिपकर बैठ गया।

विश्व के, विशेषतः भारत के इतिहास को एकदम नया मोड़ देने वाली, क्रान्तिकारी, उल्लेखनीय घर से भाग जाने की दो घटनाएं हैं—एक गौतम बुद्ध की और दूसरी मूलशंकर (दयानन्द) की। दोनों मे मार्के के भेद हैं। बुद्ध राजकुमार, विवाहित और एक बच्चे के पिता और राज्य के कुछ व्यक्तियों की पूर्व जानकारी में घर से भागे थे, बुढ़ापा रोग और मृत्यु की घटनाओं से द्रवित हो। मूल शंकर समृद्ध जमींदार के पुत्र, ब्रह्मचारी, दो दशक के लगभग आयु और सर्वथा रहस्यमय ढंग से भागे, केवल दो उद्देश्यों के लिए—शिव का वास्तविक रूप जानने और 'शव'—मृत्यु पर विजय प्राप्त करने। मृत्यु की समस्या दोनों महापुरुषों के सम्मुख थी। दोनों दिव्य विभूतियां वन्दनीय हैं। इससे अधिक तुलना करना समीचीन नहीं है।

शिवदर्शन के लिए तप: समाधि

मूलशंकर से चैतन्य ब्रह्मचारी, 'नर्मदा तट स्थित स्वामी पूर्णानन्द का शिष्यत्व ब्रह्मचर्य से सीधा संन्यास आश्रम मे प्रवेश, 'दयानन्द सरस्वती' के नाम से योग विद्या की शिक्षा और उसकी उत्कट आकांक्षा की पूर्ति के लिए हिमालय के दुर्गम शिखरों, अरण्यों की यात्रा घोर तपस्या और आत्म साक्षात्कार के साथ मुमुक्षु बन समाधि स्थिति तक पहुंच निराकार सत्य स्वरूप 'सर्वव्यापी, सर्वज्ञ शिव के दर्शन की अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति के साथ।

एक विदेशी का ऋषि समर्थक शोधग्रन्थ

डा. जे. एफ. टी. जार्डन्स आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय कैनबरा में रीडर हैं। आर्यसमाज से तनिक भी सम्बद्ध न होते हुए भी भारत के नव-जागरण आन्दोलनों का अध्ययन करते हुए महर्षि दयानन्द के जीवन और कृतित्व से प्रभावित हो १९७३ में भारत आए और विभिन्न आर्य संस्थाओं और पुस्तकालयों में स्वामी दयानन्द विषयक गहन अनुसंधान कर 'दयानन्द सरस्वती—हिज लाइफ एण्ड आइडियल्स' नामक एक अत्यन्त उपयोगी और पठनीय ग्रंथ भारत के लगभग सभी प्रमुख हिन्दी अंग्रेजी दैनिकों और अन्य पत्रों में इसकी प्रशंसापूर्ण आलोचना हुई। 'टाइम्स आफ इण्डिया' नई दिल्ली के २५ फरवरी १९७९ के रविवासरीय अंक में श्रीमती मीनाक्षी जैन ने काफी विस्तृत, अध्ययन आधारित, निष्पक्ष आलोचना करते हुए महर्षि दयानन्द ने शिवस्वरूप ब्रह्म साक्षात्कार—समाधिकाल के बाद किया और जिस निष्कर्ष पर महर्षि पहुंचे उसका सारगर्भित वर्णन निम्न शब्दों मे किया—

हिन्दू धर्म के प्रति दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान उसका त्रैतवाद है जो अद्वैतवाद के प्रबल विरुद्ध है। उसका विश्वास था त्रैतवाद, ईश्वर सृष्टि और जीव ये सब अनादि हैं। इससे भी अधिक दयानन्द ने इस बात का प्रयास किया कि मानव को ईश्वर के मूलभूत अस्तित्व में ही ब्रह्म हूं इस भावना से पृथक् किया जिसे मानव पर थोपा गया था। दयानन्द ने मानव की विशेषताओं पर अधिक से अधिक बल दिया, अर्थात् वह सशक्त, सृष्टि का अंग स्वतन्त्र और अपने कार्यों का स्वयं जिम्मेदार है और भलाई व बुराई के दायित्व से मुक्त नहीं हो सकता।"

मोक्ष आनन्द के संग : भारत की समस्याओं से युद्ध

मुमुक्षु और हिमाच्छादित हिमशृंगों और हिंस्र पशु संकुल वन उपत्यकाओं में तपोरत और यात्राशील स्वामी दयानन्द पांच हजार मील समुद्रपार से विदेशियों के अमानवीय अत्याचारों, और भारत की कई सदियों से चली आ रही पराधीनता और साथ ही देश में व्याप्त अशिक्षा, पाखण्ड, गरीबी, अनैतिकता, सामाजिक रूढ़ियों, नारी के प्रति हीन दृष्टि, इत्यादि और दूसरी ओर ईश्वरीय ज्ञान वेद के नाम पर हिंसा, व्यभिचार, जड़पूजा, इत्यादि अनेक धार्मिक कुत्सित भावनाएं—साथ ही उस समय ईसाई मत द्वारा हिन्दु धर्मान्तरकरण—इन सब विकट परिस्थितियों को दयानन्द भला कैसे सहन कर सकता था? अपने मोक्ष के आनन्द के साथ लंगोटबन्द परिव्राजकाचार्य सन्यासी ने अकेले ही अनगिनत बाधाओं विपरीत स्थितियों और अपने ही देशवासी, धर्मसाथी जनता के जोरदार विरोध की परवाह न करते हुए, अपने जीवन की बाजी लगाकर क्षमा, अहिंसा शान्ति और प्रेम की भावना अपने कट्टर शत्रुओं और विरोधियों के प्रति के साथ मैदान मे उतर धर्म युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

लेखक :

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

वेदों को जनसामान्य तक—ऋषि द्वारा—जार्डन्स

आस्ट्रेलिया के जिस विद्वान डा० जार्डन्स का हम उल्लेख कर आए हैं, उसने अपनी इसी पुस्तक के पृष्ठ२७४ पर महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की प्रशंसा में जो शब्द कहे हैं, उनका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है—

इस भाष्य की एक अन्य विशेषता है। वह यह कि इस दिशा में यह पहला प्रयास है और निश्चय ही अत्यन्त महान् प्रयास है कि पवित्र स्थानों में अथवा ब्राह्मणों के आधिपत्य से वेदों को मुक्त कर समस्त हिन्दुओं के लिए उन्मुक्त कर दिया है।"

दयानन्द का अखंड आदर्श ब्रह्मचर्य

आध्यात्मिक, धार्मिक, पारिवारिक व्यक्तिगत कल्याण और मार्गदर्शन के साथ सतत यात्रा, ग्रंथ लेखन, शास्त्रार्थ, पाखंड-खंडन, वैदिक शिक्षाप्रचार, गुण-कर्म स्वभाव आधारित वर्णाश्रम, व्यवस्था इत्यादि बहुविध प्रवृत्तियों के साथ दैनिक कम से कम चार घंटों तक योगाभ्यास उपासना, अध्ययन चिंतन—प्रतिक्षण का स्वजीवन महर्षि का था। एक भक्त के द्वारा यह पूछे जाने पर कि क्या वासना आपके हृदय में कभी पैदा नहीं

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महापुरुषों की कुछ सूक्तियां

—प्रस्तुतकर्ता—श्री चमनलाल

महापुरुषों के अमृत वचनों एवं धर्म सूक्तियों के श्रवण-मनन से बहुतो का जीवन सफल हो गया। आइए, आप भी इन सूक्तियों का श्रवण-मनन करेंगे और उन पर चलने का संकल्प करेंगे।

- अपने को सब सांसारिक विषयों से हटाकर अपने अन्दर ही अपने प्रभु का चिन्तन अथवा अनुभव करना ही सच्ची भक्ति है।
- प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करने से पहले हित व अहित की दृष्टि से उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर लेना चाहिए।
- आज के पुरुषार्थ को आने वाले कल का भाग्य समझो।
- जिस ज्ञान से अपना अथवा दूसरे का हित न हो, उस ज्ञान को निरर्थक जानो।
- चरित्रहीनता जीवन का सबसे बड़ा दोष है।
- पवित्र शुद्ध स्वरूप प्रभु दर्शन के लिए पवित्र निर्मल शुद्ध हृदय की आवश्यकता है।
- ज्ञान से कर्म और कर्म से ज्ञान की शोभा होती है।
- सुख बाजार से खरीदा नहीं जाता उनका स्रोत तो अन्तःकरण में ही मिलेगा।
- अपने को शरीर कभी मत समझो।
- मर्यादा रहित काम क्रोध और लोभ ही मनुष्य के महाबली शत्रु हैं।
- जो मनुष्य परमात्मा की ओर आकृष्ट हो गया, वह समझो, निहाल हो गया।
- भगवान से सम्बन्धित बातों के श्रवण, मनन तथा कथन मे जिसका जितना विशेष भाव होगा, उसे उतना ही पारमार्थिक लाभ होगा।
- दो बातन को भूल मत, जो चाहता है कल्याण नारायण ! एक मौत को दूजे श्री भगवान।
- दुआ कबूल होती है, अगर यह दिल से होती है ? मगर मुश्किल है कि यह बात मुश्किल से होती है।
- जो मनुष्य धन के लोभ और कामवासना में नहीं फसता ? धन का ज्ञान उसको ही होता है।
- शरीर छूटने से नहीं अपितु मोह ममता (आसक्ति) और विषम कामना के त्याग से मुक्ति सम्भव है।
- वही इन्सान वास्तविक खुशी हासिल कर सकता है, जो किसी मे आसक्ति नहीं रखता और अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित रखता है।
- गया हुआ धन पुन प्राप्त हो सकता है, परन्तु बीता समय पुन वापिस नहीं आता—पल-पल में आ रहा लाख रत्न का माल—अत समय को कभी व्यर्थ में न गंवाओ।
- ईर्ष्यालु लोग बड़े दुखी होते हैं क्योकि जितनी पीडा उनको अपने दुख से होती है, उतनी ही दूसरो की खुशियों से भी होती है।

—प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार

जग का मेटो अंधियारा

कवि—बनवारीलाल, शादां

दीवाली को ऋषि स्वर्ग सिधार। जन-जन रोया था सारा ॥
वेदों का सूरज जो चमका। अस्त हुआ उस दिन प्यारा ॥
आसुरीवृत्तियां देश में फैली। उन्हे मिटाने आया था ॥
पाखण्डों के किले खड़े थे। उनको ढाने आया था ॥
सच्चे शिव की खोज मे जिसने। तजा जगत का सुख सारा ॥
तन पर कष्ट अनेकों झेले। ऐसा था वेदो वाला ॥
वेदों के उपदेश किए थे। पी-पी जहरो का प्याला ॥
दीप शिखा सम जल-जल उसने। किया जगत मे उजियारा ॥
नफरत कि कांटों को छांटा। तोडे थे झूठे रिवाज ॥
मानव मे मानवता आए। स्थापित की आर्यसमाज ॥
सत्यार्थ प्रकाश रच के ऋषि ने। मिथ्या मतों को ललकारा ॥
ईसाई और मुसलमां हमको। लालच दे फुसलाते थे ॥
भाषा शिक्षा और धर्म पर। गहरी चोट लगा रहे थे ॥
शादां वेद प्रचार करके। ऋषि ने मेटा अंधियारा ॥

प्रधान आर्यसमाज मोडल बस्ती, दिल्ली—११०००५

आर्य जगत् समाचार

समग्र क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

छात्र-छात्राओं की प्रतियोगिताए कर्मयोग पर व्याख्यान : एवं यज्ञ अनेक सम्मेलन

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ६०वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली। २८ अक्तूबर १९८२ से ८ नवम्बर १९८२ तक आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव विशेष उत्साहपूर्वक मनाया गया। २८ से ३० रात्रि को प्रो० रत्नसिंह जी द्वारा विशेष व्याख्यान कर्मयोग, भक्ति योग, एवं मुक्ति का स्वरूप विषयो पर एव १ नवम्बर से ५ नवम्बर तक आचार्य रामप्रसाद जी गुरुकुल कागडी द्वारा यजुर्वेद के ४० वें अध्याय की मार्मिक कथा होती रही तथा प्रात ७ से ८॥ बजे तक ऋग्वेद महायज्ञ भी आचार्य रामप्रसाद जी की अध्यक्षता मे होता रहा। ६ नवम्बर दोपहर महिला सम्मेलन श्रीमती प्रकाशवती आर्या की अध्यक्षता मे एव रात्रि आचार्य रामप्रसाद जी की अध्यक्षता मे विराट कवि सम्मेलन हुआ।

शनिवार दोपहर राकेश कैला भाषण प्रतियोगिता हुई, जिसमें दिल्ली के सीनियर सैं० स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के रीडर श्री वाचस्पति उपाध्याय ने की। रात्रि वेद सम्मेलन एव रविवार प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात डा० सत्यव्रत जी सिद्धांतालकार की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन एव दोपहर ऋषि लगर के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी की अध्यक्षता में राष्ट्रोत्थान सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

सोमवार ८ नवम्बर को भी राकेश कैला भाषण प्रतियोगिता साय ५ से ६ बजे तक हुई जिसमें राजधानी के महाविद्यालयों एव विश्वविद्यालय के छात्रो ने भाग लिया इसका विषय था 'समग्र क्रांति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द'। उत्सव में आचार्य रामप्रसाद के आध्यात्मिक उपदेशो का जनता पर बहुत प्रभाव पडा एवं श्री जयप्रकाश जी आर्य भूतपूर्व मौलाना खुर्शीद आलम इमाम, जामा मस्जिद बेतिया (बिहार) एव भारत सरकार के श्रम उपमन्त्री श्री धर्मवीर जी के प्रवचनो और छात्र-छात्राओं के भाषणो का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा।

आर्यसमाज अजमेर का स्थापना-शताब्दी समारोह

अष्ट दिवसीय कार्यक्रम धूमधाम से सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर का प्रथम स्थापना शताब्दी समारोह दिनांक २६ अक्तूबर १९८२ ई० से २ नवम्बर'८२ ई० तक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारभ एवं ध्वजारोहण श्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

शताब्दी समारोह के दौरान विद्यालय स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य की अध्यक्षता में, महाविद्यालय स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता श्री प० विश्वदेव शर्मा प्रधानसपादक दैनिक 'न्याय' की अध्यक्षता में, आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती उर्मिला देवी रानी मसूदा की अध्यक्षता में, आर्य युवक सम्मेलन श्री आचार्य भगवान देव एम. पी. की अध्यक्षता मे एव कैप्टन देवरत्न आर्य (बम्बई) के मुख्य आतिथ्य में, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन श्री टी. एन. चतुर्वेदी गृह सचिव भारत सरकार के मुख्य आतिथ्य में, जात-पांत तोडो एव छूआछूत उन्मूलन सम्मेलन श्री प. मजुनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में, आर्यसमाज शिक्षण संस्था सम्मेलन श्री विक्रम महाजन केन्द्रीय ऊर्जा राज्य मन्त्री की अध्यक्षता एव प्रो. वेदव्यास प्रधान डी. ए. वी. मैनेजिंग कमेटी दिल्ली के मुख्य आतिथ्य में, राजस्थान प्रान्तीय आर्य सम्मेलन श्री छोटूसिंह एडवोकेट प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान की अध्यक्षता तथा लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य आतिथ्य में आर्य विचार मन्च सम्मेलन श्री ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता तथा श्री स्वामी विद्यानन्द जो सरस्वती के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। दयानन्द शोधपीठ का उद्घाटन श्री महामहिम ओमप्रकाश मेहरा राज्यपाल राजस्थान द्वारा तथा दयानन्द बाल निकेतन का उद्घाटन श्री शिवचरण माथुर मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार द्वारा सपन्न हुआ।

इस शताब्दी समारोह के दौरान ३१ अक्तूबर ८२ को अजमेर नगर में तीन किलो मीटर लम्बी विशाल शोभा यात्रा (जलूस) भी लाला रामगोपाल शालवाले, श्री छोटूसिंह आर्य तथा श्री दत्तात्रेय आर्य के नेतृत्व में निकाली गई जिस में हाथी, घोडे, बग्गी, ५ ऊंट, ६ बैण्ड, भजन मण्डलियां, अखाड़े, सन्यासी मण्डल, हजारों विद्यार्थी, राजस्थान के आर्य समाजों के प्रतिनिधि, महिलाएं आदि थे। यह विराट् एवं भव्य जलूस था। इसका अजमेर की जनता ने स्थान २ पर भव्य स्वागत किया।

शताब्दी समारोह पर प्रो. रमेशचन्द्र शास्त्री दिल्ली के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ संपन्न हुआ। प्रातः कालीन एवं रात्रिकालीन प्रवचनों के कार्यक्रमों में ८ से १० हजार लोग उपस्थित होते थे।

अबोहर-फाजिल्का हरयाणा को न सौंपे गए तो हरियाणा की ओर से अकालियों से भी जोरदार आन्दोलन होगा

रोहतक में आर्य नेताओं की सरकार को चेतावनी

रोहतक दयानन्द मठ रोहतक मे पं. जगदेवसिंह सिद्धांती की ८, वीं जयन्ती के अवसर पर सम्पन्न एक बैठक मे आर्य नेताओ ने भारत सरकार को चेतावनी दी है कि यदि अकालियों के दवाब में आकर चण्डीगढ़ पंजाब को देकर अबोहर फाजिल्का प्रधानमन्त्री के एवार्ड के अनुसार हरयाणा को न सौंपे गए तो हरयाणा की जनता इस अन्याय को सहन नहीं करेगी और अकालियों से भी अधिक जोरदार आन्दोलन आरम्भ कर दिया जाएगा। अकालियों ने २५ हजार सत्याग्रही जेल भेजे हैं, परन्तु हरयाणा की ओर से ५० हजार से भी अधिक सख्या मे नर-नारी दिल्ली मे सत्याग्रह करेंगे तथा हरयाणा वासी बडे से बडा बलिदान करने से भी सकोच नहीं करेंगे।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह जी, चौ. रामेश्वर एडवोकेट, आदि नेताओं ने आर्यकार्यकर्ताओं से आन्दोलन की तैयारी करने का आह्वान करते हुए कहा कि आर्यसमाज ने सदा से ही राष्ट्र रक्षा के लए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अबोहर तथा फाजिल्का क्षेत्र से पधारे हुए बिश्नोई मन्दिर अबोहर के महन्त स्वामी कृष्णदास ने घोषणा करते हुए कहा कि यदि अबोहर-फाजिल्का हरयाणा को नवम्बर के अन्त तक सौंपे गए तो प्रधानमंत्री की कोठी के सामने तेल छिडक कर आत्मदाह करूंगा। अबोहर-फाजिल्का के पूर्व विधायक मा० तेगराम जी ने पंजाब सरकार की सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि अबोहर के क्षेत्र के बच्चों को हिन्दी संस्कृत की पढाई की सुविधा समाप्त करके यहां भारतीय सस्कृति को समाप्त किया जा रहा है। और १५ नवम्बर को अबोहर मे हरयाणा रक्षा वाहिनी की विशाल जन सभा का आयोजन किया जावेगा इसमे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह जी आदि नेता पधारेंगे।

श्री धर्मदेव मेहता का असामयिक निधन

आर्यसमाज अशोक विहार-२ की भीषण क्षति

श्री धर्मदेव मेहता, प्रधान आर्य समाज, अशोक विहार फेस-२ का असामयिक निधन दिनाक ८-१०-१९८२ को और क्रिया भी २०-१०-८२ को उनके निवास-स्थान सी-३/१०७ फेस-२ पर शोकसभा आयोजित की गयी थी। श्री धर्मदेव मेहता अत्यन्त उत्साही; परिश्रमी एव साहसी व्यक्ति थे। कभी भी घबराते नही थे और अपने सहयोगियों को सदा प्रोत्साहित करते रहते थे। उनके ही प्रयत्नों के कारण रु० ६१०००/- जमा करके डी० डी० ए० से आर्यसमाज के लिए भवन बनाने के लिए ५०० गज भूमि अशोक विहार फेस-२ में ले ली गई। निरन्तर चिंतित रहते थे कि समाज का भवन व यज्ञशाला शीघ्रातिशीघ्र बन जाए किन्तु नियति के क्रूर हाथों ने उन्हें हमसे छीन लिया।

शोक सभा की अध्यक्षता स्वामी जगदीशवरानन्द सरस्वती ने की। श्री स्वरूपानन्द जी, श्री आर्य भिक्षुजी, श्री मित्रानन्द जी, डा० प्रेमचन्द श्रीधर, डा० महेश, श्री दीनानाथ सिद्धातालकार, श्री प्रद्युम्नलाल तलवार, श्री खैरातीलाल, श्रीमती शान्ता भण्डारी, श्री रामप्रकाश, श्री मायादास, श्री बतरा, श्री जगदीश सरन मन्त्री आर्य समाज एव अन्य विद्वानों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होने बताया कि श्री मेहता ने लखनऊ में (चन्द्रनगर) एक आर्यसमाज पहले ही स्थापित की थी और यह दूसरी समाज का शिलान्यास उन्होंने ९-५-१९८२ को रखवाया था। रु० ३१००/- उनके पुत्रों ने दान इस समय अवसर पर यज्ञशाला के लिए दिया और रु० १००/- मासिक समाज बनने तक देने का वचन दिया है। —जगदीश सरन

आर्यसमाजों के सत्संग

२१ नवम्बर'८२

अन्धा मुगल-प्रतापनगर—प० राजवीर शास्त्री, अमर कालोनी—श्री चमनलाल; अशोक विहार बी २/३ फेज-२—डा० रघुनन्दनसिंह; अशोक नगर—पं० प्राणनाथ सिद्धांतालंकार; आर. के. पुरम सेक्टर-५—श्री देवीचरण बन्सल; आर. के. पुरम सेक्टर-६—प० हरिदत्त शास्त्री; आर के. पुरम सेक्टर-९—प० बलबीरसिंह शास्त्री; आनन्द विहार-हरिनगर एल ब्लाक—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक; इन्द्रपुरी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; किशनगंज मिल एरिया—प० रामनिवास, किंग्जवे कैंप—प० रामदेव शास्त्री; कीर्तिनगर—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश-I—प्रो० सत्यपाल बेदार; ग्रेटर कैलाश-II—श्रीमती लीलावती; गुडमण्डी—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; गुप्ता कालोनी—प० वेदपाल शास्त्री, गोविदपुरी—प० हरिश्चन्द्र आर्य; चूना मण्डी पहाडगंज—आचार्य हरिदेव जंगपुरा-भोगल—डा० नन्दलाल, जनकपुरी बी-३/२४—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; टैगोर गार्डन—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ; तिलकनगर—पं० मनोहरलाल ऋषि-भजनोपदेशक; तिमारपुर—प० ओम्प्रकाश गायक, दरियागंज—प० अमरनाथ कान्त; नारायण विहार—प० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार; नया बास—श्री ओम्प्रकाश त्यागी, पंजाबी बाग—प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; पंजाबी बाग एक्स्टेंशन—स्वामी प्रेमानन्द; बिरला लाइंस—प० ईश्वरदत्त, मोडल बस्ती—प० सोमदेव शास्त्री, मोडल टाऊन—प० रमेशचन्द शास्त्री; महरौली—श्रीमती सुशीला राजपाल; रमेशनगर—प० कामेश्वर शास्त्री; राणा प्रतापबाग—प० रामरूप शर्मा; राजौरी गार्डन—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; लड्डू घाटी-पहाड़गंज—प प्रकाशवीर 'व्याकुल', [illegible] रोड—आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार, विक्रमनगर—पं० हरिश्चन्द्र [illegible]; [illegible] रोहेला—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा श्रीमती कमला आर्य गायक, सोहनगंज—डा० लक्ष्मीदास; शालीमार बाग—प० छविकृष्ण शास्त्री; शादीपुर—प० देवराज वैदिक मिशनरी; हौज खास ई-४९—प० चन्द्रभानु सिद्धांतभूषण, रतनदेवी आर्य पुत्री पाठशाला कृष्णनगर—वैद्य रामकिशोर तथा प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक,

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

हरियाणा रक्षा वाहिनी ······· (पृष्ठ १ का शेष)

कार से मांग की जाती है कि इस तरह के गुरुद्वारों प्रबन्धकों को २४ घटे की चेतावनी देकर अपराधियों को गिरफ्तार करके उन्हें कड़ा दण्ड दिया जाए।

३ यदि सिखो की मांग पर जालंधर आकाशवाणी से गुरुवाणी के प्रसारण की सुविधा दी जाती है तो रोहतक आकाशवाणी से भी वेदवाणी के प्रसारण की एक घटा प्रात. सायं व्यवस्था की जाए। इसी प्रकार यदि सिखों की मांग पर अमृतसर को पवित्र शहर घोषित किया जाता है तो हरयाणा के भी ऐतिहासिक तथा धार्मिक शहर रोहतक अथवा कुरुक्षेत्र पवित्र शहर घोषित किए जाए।

४. पजाब में ४८ प्रतिशत हिन्दी भाषी जनता को हिन्दी पढ़ाई की सुविधा नहीं है अत: हरयाणा मे ४ प्रतिशत पंजाबी भाषी जनता की मांग पर पंजाबी को, दूसरी भाषा का दर्जा हरयाणा में न दिया जाए। हरयाणा की संस्कृति की रक्षा के लिये संस्कृत भाषा को हरयाणा की दूसरी राजकीय भाषा घोषित किया जावें।

५. पानी के वितरण के लिये हैडवर्कस, रोपड़, फिरोजपुर तथा हरीके पर केवल पंजाब का ही नियन्त्रण न रहे। पानी के बटवारे के अनुसार हरयाणा बराबर का अधिकारी है इसी प्रकार राजस्थान के लिये नहर बनने तक फालतू पानी पर पजाब की भांति हरयाणा को भी बराबर का पानी भारत सरकार के निर्णयो के अनुसार दिया जावें। हरयाणा के लिये पजाब की सीमा में जो नहर खोदी जा रही है उसका निर्माण शीघ्र पूरा किया जावे।

६. भारत सरकार द्वारा नियुक्त शाह आयोग ने चण्डीगढ़ तथा खरड तहसील आदि के क्षेत्र हरयाणा को दिये थे अत. चण्डीगढ को पजाब मे शामिल न किया जावे और इसी प्रकार अबोहर एव फाजिल्का के क्षेत्र हिन्दी भाषी होने के कारण वे प्रधानमन्त्री के १९७० के एवार्ड के अनुसार हरयाणा को तुरन्त सौंपे जावें।

७. उग्रवादी सिख एशियाड मे गड़बड़ी करने की धमकियां देकर राष्ट्र एवं विदेशी अतिथियों का घोर अपमान करना चाहते हैं। अत. हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्यकर्ता तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक सहयोगी सस्थाए पजाब से दिल्ली जाने वाले अकालियों को हरयाणा की सीमा से दिल्ली मे प्रवेश नहीं करने देंगे और हरयाणा सरकार से मांग की जाती है कि इस प्रकार की गड़बड़ी करने वाले सिखों से लाइसेन्स शुदा हथियार तुरन्त जब्त कर लिये जावें।

मृत्युंजयी क्रान्तदर्शी युगपुरोधा····· (पृष्ठ ४ का शेष)

होती, ऋषि का कितना सरल और सार्थक उत्तर था 'मुझे इसके लिए कभी फुर्सत ही नहीं मिलती है।' ऋषि के कट्टर प्राणघातक शत्रु और विरोधियों ने भी मुक्तकंठ से यह स्वीकार किया कि दयानन्द, आचार्य शंकर की तरह कट्टर लगोट बद सन्यासी था।

दयानन्द को विष

ऋषि दयानन्द को विरोधियों ने कम से कम १४ बार विष दिया और उन्होंने प्रत्येक बार विषदाता को क्षमा कर परास्त कर दिया। विश्व इतिहास मे ऐसा उदाहरण दुर्लभ ही है।

ऋषिवर को जोधपुर मे अंतिम बार उनके रसोइए जगन्नाथ द्वारा दिया गया विष प्राणघातक सिद्ध हुआ। दयानन्द की मानवोत्तर और अनुपम महिमा फिर भी देखिए। उन्होंने विषदाता जगन्नाथ को १०० रु. मार्गव्यय दे नेपाल भाग जाने का निर्देश दिया और साथ ही नेपाल का रास्ता बता दिया।

मृत्युंजयी दयानन्द

हमने लेख के आरम्भ मे बालक मूल शंकर के हृदय मे उत्पन्न 'शिव और शव' से प्रेरक दो घटनाओं का सकेत किया था। आजीवन नियमित रूप से समाधि द्वारा ऋषि दयानन्द ने 'शिव' (परमात्मा) के दर्शन कर लिए। अब जोधपुर में दिए गए भयकर विष के हेतु अत्यन्त रुग्ण हो अजमेर मे दीपावली के सान्ध्यकाल मे ३० अक्तूबर १८८३ को इस 'शव' अर्थात् मृत्यु जय की स्थिति प्राप्त करते हुए इन अन्तिम वचनो के साथ मोक्ष यात्रा की—

अंतिम वचन

'हे दयानन्द ! हे सर्वशक्तिमान् प्रभो ! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छापूर्ण हो ! ऋषि तूने खूब अच्छी लीला की।'

अतकाल मे, प्राणायाम और 'विश्वानि देव इत्यादि प्रार्थना मन्त्रों के साथ भौतिक शरीर छोडते हुए एक ऐसी रिक्तता छोड दी जिसे सदियों तक पूरा करना सभव नही है।

के.सी ३७।बी अशोक विहार दिल्ली-५२

आर्यसमाज रमेशनगर के नए पदाधिकारी

प्रधान डा० रामधन ऋषि, उपप्रधान - नन्दलाल विग, डा० बोधराज कोछड मन्त्री—श्री सत्यपाल नारंग, उपमन्त्री—श्री दीवानचन्द्र बत्रा, कोषाध्यक्ष—श्री श्री भारतभूषण।

श्री सोमनाथ मरवाहा शोकग्रस्त

हमें आर्य जगत को सूचित करते हुए दुःख हो रहा है कि सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री सोमनाथ जी मरवाहा, कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के बहनोई का कोटकपूरा (पंजाब) में देहावसान हो गया है। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करेंगे एवं उनके वियोग में सन्तप्त परिवारजनों एव मित्रों को उनके वियोग का दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करेंगे।

आर्यसमाज बम्बई के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री गणपतराय आर्य, उपप्रधान—श्री जगनप्रसाद गौतम, श्री [illegible] मन्त्री—श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय, उपमन्त्री—श्री चन्द्रकान्त सी. भट्ट (राजा) कोषाध्यक्ष—श्री करसनदास राणा पुस्तकाध्यक्ष—श्री देवेश्वर शर्मा।

रजि० डी (सी०) ७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वाटिका प्रेस १६७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय : १५ हनुमान रोड नई दिल्ली : फोन ३१०१५० ।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे　वार्षिक १५ रुपये　वर्ष : ७　अंक ५　रविवार २८ नवम्बर १९८२　१३ मार्गशीर्ष वि० २०३९　दयानन्दाब्द—१५८

धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों की सुरक्षा आवश्यक

हिन्दुओं की एकता मजबुत करो : बलात धर्मपरिवर्त्तन का विरोध : संस्कृत का प्रचार करो—डा० कर्णसिंह का आह्वाहन

पटना। "आज भारत का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि हमारे देश में जिस प्रकार नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो का ह्रास हुआ है, उसके कारण लोक जीवन के प्राय प्रत्येक क्षेत्र मे भ्रष्टाचार की भयकर वृद्धि हुई है। धर्मनिरपेक्ष की गलत व्याख्या के कारण हमारी शिक्षापद्धति मूल्यो से शून्य हो गई है। इसका निराकरण तत्काल किया जाना चाहिए। इस स्थिति के सुधार के लिए भारतीय धर्मग्रन्थों की धरोहर संस्कृत भाषा का संरक्षण, सवर्द्धन होना ही चाहिए। धार्मिक एव लोक शिक्षा के केन्द्रों के रूप में हिन्दू धर्मस्थानों, मन्दिरो, मठों एव तीर्थों का समुचित उपयोग करना चाहिए।"—इन शब्दों में भारत के भू० पू० विदेश मन्त्री ससद सदस्य विराट हिन्दू समाज के अध्यक्ष डा० कर्णसिंह ने विराट हिन्दू सम्मेलन में एकत्र विशाल जनसमूह का आह्वान किया।

डा० कर्णसिंह ने कहा—ससार के सब धर्मों में वैदिक हिन्दू धर्म सर्वाधिक प्राचीन है, यह अकेला धर्म है जो किसी पैगम्बर की बात न कहकर सच्चा मानव-धर्म है। यह सम्पूर्ण मानवता का कल्याण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकता है। वेदों में मानव मात्र की एकता पर बल दिया गया है, वहा मानवमात्र को एक कुटुम्ब माना गया है, समाज के सभी वर्गों के कल्याण, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की महत्ता उसमें प्रतिपादित की गई है। हमें किसी भी कीमत पर हिन्दुओं की एकता कायम रखनी चाहिए। हम बलात धर्मपरिवर्तन की घटनाओं को सहन नहीं करेंगे, हम दूसरे धर्मों और धर्मग्रन्थों को सम्मान करते हैं। परन्तु बहुसंख्यक हिन्दू जनता के उचित एवं न्यायसगत हितों का संरक्षण अपना बुनियादी कर्तव्य मानते हैं।

भारत : हिन्दुओं का अपना देश

—श्रीमती इन्दिरा गांधी

नई दिल्ली। श्री धर्मवीर गांधी द्वारा सम्पादित 'खास खबर' के १६-३० नवम्बर के अक में पृष्ठ ४ पर पाकिस्तानी पत्रकार नसरीन परवेज को दी गई एक भेंट का समाचार छपा है। उस भेंट में भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने स्वीकार किया है—'भारत हिन्दुओं का देश है।"

नसरीन परवेज ने पूछा था—'अगर यहां अधिकतर मुसलमान शिक्षा इसलिए प्राप्त नहीं करने कि डिग्री के बाद भी हिन्दू के मुकाबले में वे नौकरी से वचित रहते हैं तो ऐसा क्यों ?'

प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी ने उत्तर दिया—"आप मुझे यह बतलाइए कि हिन्दू को अगर भारत में नौकरी नही मिलेगी तो वह कहां जाकर नौकरी करेगा ? हर आदमी तो मध्यपूर्व नहीं भेजा जा सकता। अगर उनके रोजगार का उनके अपने देश में संरक्षण नहीं होगा तो कहां होगा ?"

गृहमन्त्री द्वारा अकाली आंदोलन से निपटने के लिए श्री शालवाले के सुझावों का स्वागत

नई दिल्ली। अकाली आन्दोलन के कारण पश्चिमोत्तर भारत में कानून एव शान्ति की व्यवस्था में विघ्नकारी उग्रवादी तत्वों के विरुद्ध सख्ती से कारंवाई करने के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने देश की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक पत्र लिखा था, उस पत्र की प्रतिलिपि उचित कार्यवाही के लिए गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी को भी भेजी गई थी। पत्र के उत्तर में भारत के गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने लिखा है—'देश में चल रहे अकालियों के आन्दोलन से सफलतापूर्वक निपटने के लिए आपने जो सुझाव दिए हैं, उनके लिए मैं आपका आभारी हू।'

सन्त विनोबा को सच्ची श्रद्धांजलि गोहत्याबन्दी का कानून बनाकर सम्भव

नई दिल्ली। वेदों के विद्वान्, सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, १८ भाषाओ के ज्ञाता, भूदान एव सर्वोदय आन्दोलनों के प्रणेता सन्त विनोबा भावे ने दीवाली-१५ नवम्बर के दिन पवनार स्थित परमधाम आश्रम में सात दिन तक निराहार-निर्जल रहने के बाद स्वेच्छया अपने प्राणत्याग दिए। १६ नवम्बर के दिन धाम नदी के तट पर उनके भौतिक शरीर के अन्तिम सस्कार मे देश की प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी एव प्रमुख राष्ट्रीय नेता एव कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में वह गोवश की रक्षा के लिए विशेष प्रयत्नशील हो गए थे। उनके निधन पर श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा—'एक परम गोभक्त अध्यात्मिक सदा के लिए उठ गया। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि गोहत्याबन्दी का कानून शीघ्र बने।

गोवंश रक्षा के लिए सत्याग्रह

नई दिल्ली। ७ नवम्बर के दिन हुआ बोट क्लब नई दिल्ली में प्रथम गोभक्त मेला और उसी दिन दरियागज में गोभक्त राष्ट्रीय गोष्ठी सम्पन्न हुई। श्री योगेश्वर विदेही हरि ने एक प्रेस सम्मेलन में घोषित किया—"यदि भारत सरकार ने सम्पूर्ण गोवश हत्या निरोध केन्द्रीय कानून बना कर उसका क्रियान्वयन न करवाया तो जुलाई १९८३ से सत्याग्रह होगा।"

आर्यसमाज मालवीय नगर में महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव

रविवार १४ नवम्बर, १९८२ के दिन प्रात ८ बजे से १ बजे तक द० दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में आर्यसमाज मालवीय नगर के प्रागण मे महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव मनाया गया। मुख्य अतिथि समाजसेविका श्रीमती कान्ता मनचन्दा थी और स्वागताध्यक्ष थे—श्री ब्रह्मदेव लारोइया थे। यज्ञ के ब्रह्मा डा० तीर्थराज शास्त्री थे, झण्डाभिवादन एव दयानन्द धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन श्री जे. के. पुरी ने किया। १ बजे सामूहिक लगर हुआ।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

ब्रह्म विद्वानों के निकट और अविद्वानों से दूर है

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥ यजु० ४०।५ ॥

दीर्घतमा ऋषि,आत्मा देवता, निचृत्त्रिष्टुप् छन्द, गान्धार स्वर

पदार्थ —हे मनुष्यो ! [तत्] वह ब्रह्म [एजति] (मूर्खों की दृष्टि मे) कम्पता अथवा चलता है (और) [तत] वह (सर्वत्र व्यापक परिपूर्ण होने से, विद्वानों की दृष्टि में) [न] नहीं [एजति] कम्पायमान होता है और नहीं चलता अथवा चलाया जाता है [तत्] वह [दूरे] (अधर्मात्मा अविद्वान अयोगियो से) दूर है (अर्थात् करोड़ो वर्षों में भी प्राप्त नहीं होता), [तत्] वह [उ] ही [अन्तिके] (धर्मात्मा विद्वान योगियों के) समीप है । [तत्] वह [अस्य] उस [सर्वस्य] अखिल (सब जगत वा जीवों) के [अन्त·] भीतर [उ] और [तत्] वह [अस्य] इस [सर्वस्य] सकल (प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप जगत्) के [बवाह्यत] बाहर (भी वर्तमान है ऐसा निश्चय जानो ॥

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

भावार्थः—हे मनुष्यो ! वह ब्रह्म मूढ की दृष्टि मे कम्पता जैसा है वह आप व्यापक होने से कभी नहीं चलायमान होता है । जो जन उसकी आज्ञा से विरुद्ध हैं वे इधर-उधर भागते हुए भी उसको नही जानते और जो ईश्वर की आज्ञा का अनुष्ठान करने वाले हैं वे अपने आत्मा मे स्थित अति निकट ब्रह्म को प्राप्त होते हैं, जो ब्रह्म सब प्रकृति आदि के बाहर-भीतर अवयवों मे अभिव्याप्त होके अन्तर्यामी रूप से सब जीवों के सब पाप-पुण्य रूप कर्मों को जानता हुआ यथार्थ फल देता है वही सब के ध्यान में रखना चाहिए और उसी से सब को डरना चाहिए ।

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

अतिरिक्त स्पष्टीकरण:—वह ब्रह्म सर्वत्र व्यापक परिपूर्ण होने से अचल और उसके हिलने अथवा चलने का वा जन्म-मरण के बन्धन में आने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता, परन्तु मूर्ख लोग मिथ्या मतावलम्बी उसको किसी विशेष स्थान पर रहता हुआ अथवा अवतार रूप जन्म लेने वाला अर्थात् चलायमान मानते हैं । उसको प्राप्त करने के लिए मनुष्य को धर्मात्मा, विद्वान (अर्थात् आत्मज्ञान युक्त) वा योगी होना चाहिये । ऐसे लोगों के वह अति निकट है, परन्तु पापी, अविद्वान (जिनको आत्मा, परमात्मा वा प्रकृति का ठीक परिज्ञान नही) वा अयोगी लोगो से वह बहुत दूर है और वे उसको लाखों-करोड़ों जन्मों में भी नहीं पा सकते और बार-बार मरण-जन्म के बन्धन में पड़कर कई नीच योनियों में भी जन्म लेकर अनेक दुःख भोगते हैं । वह ब्रह्म अत्यन्त सूक्ष्म वा अत्यन्त महान् वा अनन्त है इसलिए वह सब जगत वा जीवो के भीतर विद्यमान है और इनके बाहर भी । इन सब बड़े लोक-लोकान्तरों की भी अवधि है और जहां यह सारा जगत् समाप्त हो जाता है उसके बाहर भी वह बिना अवधि के विद्यमान रहता है ।

बोध-कथा

मानव सबसे श्रेष्ठ

वर्षों पहले बिहार के नगर चम्पारण मे महात्मा गांधी माता कस्तूरबा के साथ बैठे हुए चर्खा कात रहे थे । अचानक शोर की आवाज आई । पूछने पर मालूम हुआ कि कुछ लोग एक हृष्टपुष्ट बकरे को पुष्पमालाओं से सजा कर गाजे-बाजे के साथ काली माई को बलि चढ़ाने ले जा रहे हैं । माता कस्तूरबा पसीज उठीं । बोलीं—'इस अबोध गूंगे जानवर को वध के लिए ले जा रहे हो ?' उन्होंने उन लोगो से पूछा—'इस बेचारे जानवर को कहा ले जा रहे हो ? क्यों इसे मारते जा रहे हो ?' उन लोगों ने बतलाया—'इस बकरे के बलिदान से देवी खुश हो जाएगी, रोग मिटेंगे, निर्धनता हटेगी और गांव में सुख-शांति आ जाएगी ।' इस पर बापू गांधी जी बोल उठे—"बताओ जानवर अच्छा है अथवा मनुष्य ?" उन लोगों ने उत्तर दिया—"जानवर से आदमी श्रेष्ठ है ।"

इस पर गांधी जी ने कहा—'जब जानवर से मानव श्रेष्ठ है तो उसके लिए अपनी बलि देकर सभी संकट दूर क्यों नहीं करते ? बोलो, तुम में से कौन बलिदान के लिए तैयार है ?' उन लोगो मे से एक भी आदमी देवी को अपनी बलि देने के लिए तैयार नहीं हुआ । इस पर गांधी जी ने कहा—'तो मेरी ही बलि दे दो ।' यह सुनकर वे सभी बोले— महाराज हमसे भूल हुई, हम भविष्य में किसी प्राणी की बलि नहीं देंगे ।

— नरेन्द्र

नूतन वर्षाभिनन्दन : वैदिक ईश्वर प्रार्थना

ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ॥ (यजुर्वेद) हे स्वप्रकाश स्वरूप ! अनन्ततेज ! आप अविद्यान्धकारसे रहित हो, किन्तु सत्यविज्ञान तेजःस्वरूप हो । आप कृपादृष्टि से मुझमें वही तेज धारण करो जिससे मैं निस्तेज दीन और भीरु कहीं कभी न होऊं । —महर्षि दयानन्द सरस्वती

शुभचिन्तक:- आर्यसमाज, कारीबाग, बडोदरा—३९०००१

आओ, हम ऊंची उड़ान लें

— सुरेशचन्द्र वेदालंकार

प्रवाता इव दोधत उन्मा पीता अयंसत ।
कुवित् सोमस्यापामिति ॥ २ ॥ ऋ. १०।११९।२

(दोधत·) गति देने वाली (वाताः) वायु (इव) जैसे वृक्षों को (उत्) उछाल-उछाल कर प्रहार करती है वैसे ही (मा) मुझे (पीताः) पीए हुए ये भक्ति रस (प्र) खूब (उत्+अयंसत) मस्ती में उछाल रहे हैं । (कुवित् सोमस्यापामिति) क्योंकि मैंने बहुत बार खूब-खूब सोम का पान किया है ।

उन्मा पीता अयंसत रथमश्वा इवाशवः ।
कुवित् सोमस्यापामिति ॥ ३ ॥ ऋ. १०।११९।३

(इव) जैसे (आशव) तीव्रगामी (अश्वाः) घोड़े (रथम्) रथ को उड़ाकर ले जाते हैं वैसे ही (पीताः) पीए हुए ये भक्ति रस (मा) मुझको (उद् अयंसत) मस्ती में उड़ाए लिए जा रहे हैं । (कुवित् सोमस्यापामिति) क्योंकि मैंने बहुत बार खूब-खूब सोम का पान किया है ।

परमेश्वर की भक्ति रस का पान करके मैं उड़ता चला जा रहा हूं, स्वयं ही नहीं उड रहा औरों को भी उसका आनन्द लुटाता चल रहा हू । यह भक्ति क्या है ? संस्कृत का एक शब्द है 'अनुराग' । 'अनुराग' का अर्थ है किसी के पीछे लग जाना, किसी का बन जाना । यदि आपने अपने को गुरु के लिए, माता-पिता के लिए बड़े-बूढ़ों के लिए अपने को अर्पित कर दिया तो यह 'श्रद्धा' बन जाएगी । यह अनुराग पति के मन में पत्नी के लिए या पत्नी के मन में पति के लिए जाग्रत हो गया तो इसे 'प्रेम' कहते हैं । जब यह अनुराग पिता, माता या गुरु का अपने बच्चों और शिष्यों के प्रति होता है तो इसे स्नेह कहते हैं और जब यह भक्त के मन में भगवान के लिए हो और हम उसके प्रति पागल से हो रहे हों तो यह भक्ति है । यह अनुराग जब मनुष्य के हृदय मे भगवान के प्रति बढ़ता ही जाय यह बेअन्त हो, अथाह हो तो इससे एक मस्ती की आनन्द की धारा प्रवाहित होने लग जाती है वह ही तो 'सोम रस' है । उस समय का वर्णन करते हुए दया बाई कहती हैं :—

पिय का रूप अनूप लखि, कोटि भानु उजियार ।
'दया' सकल दुःख मिटि गया, प्रगट भया सुखसार ॥

स्वामी की अनुपम छवि देखी, और दुःख दर्द सब दूर हो गया, और शाश्वत सुख प्रकाश मे आ गया—कोटि-कोटि सूर्य के समान ।

ऐसी भक्ति, ऐसा प्रेम, ऐसा अनुराग जाग उठे तो मनुष्य में स्वयं 'सोम' के गुण आ जाते हैं । उसमें दुनिया वालों की दृष्टि मे एक पागलपन आ जाता है । स्वामी रामतीर्थ जब अपनी अच्छी भली गृहस्थी, अच्छी भली प्रोफेसरी, अच्छा भला वेतन छोड़कर जाने लगे तब लोगों ने उन्हें पागल कहा । स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रभु के इस 'सोम' रस का आभास पाकर झलक पाकर जब अपनी शराब की प्यालियां तोडीं तब लोगों ने इसे पागलपन कहा, स्वामी दयानन्द जब घरबार छोड़कर सच्चे शिव की खोज में निकल पड़े तो सामान्य मनुष्यों ने इसे पागलपन समझा ।

"इस प्रकार पीया हुआ भक्ति रस-सोम रस मुझे उसी तरह उड़ाकर ले जा रहा है जिस तरह वायु के झोंके वृक्षों को मस्त करके उछाल देते हैं ।" "यह पीया हुआ भक्ति रस मुझे जीवन में उसी तरह आगे-आगे ले जा रहा है जिस तरह घोड़े रथ को आगे ही आगे ले जाते हैं ।

प्रभु ! हमारा हृदय अब आपका घर होगा आप इस घर में मेहमान बनकर नहीं बल्कि घर के मालिक बनकर रहें । इसमें जो कुछ प्रकाशमय है, ज्ञानमय है, आनन्दमय है वह आपका ही है । हे प्रभु मैं और तुम भिन्न नहीं । अब हम एक हैं ।" मैं तुम्हें खोजने निकला था पर तुम्हारी यह भक्ति के रस की बूंद पीकर मैं तुममें मिल गया या तुम मुझमें समा गए । अब तुम मुझ मे वास करो ।

१ ए. ई. टी. ११० ओबरा (मिर्जापुर) उ० प्र० ।

सबका कल्याण करो !

ओ३म् शं नो मित्र: शं वरुण: शं नो भवत्वर्यमा ।
शं न इन्द्रो बृहस्पति: शं नो विष्णुरुरुक्रम: ॥ यजु ३६-९

हे न्यायकारि मित्र वरुण प्रभु, हम सब का कल्याण करें, हे ऐश्वर्यों के स्वामिन, हमें भी ऐश्वर्य दें, सर्वव्यापक प्रभु हमें वेदज्ञान प्रदान करें, स्रष्टा जगपालक प्रभो, सब का कल्याण करें ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

आर्यसमाज की प्रासंगिकता

उस दिन दिल्ली के रामलीला मैदान में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस की भव्य सभा का आयोजन था । अधिकांश वक्ताओं ने भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश की विस्फोटक स्थिति तथा देश के दूसरे भागों में विदेशी शक्तियों द्वारा किए सामूहिक धर्मान्तरण के लिए किए षड्यन्त्र पर प्रकाश डाला । देश के सामने इस समय भीषण चुनौती है, उसका सामना करने के लिए आर्यसमाज तथा आर्यजनो को अपनी सक्रिय भूमिका इसी प्रकार निभानी होगी, जिस प्रकार उन्होंने देश की आज़ादी की लड़ाई के दिनों में निभाई थी । इस समय विभिन्न प्रदेश तथा विभिन्न राजनीतिक दल अपने-अपने संकुचित स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील हैं, वे भूल गए हैं कि इस मातृभूमि एव भारत राष्ट्र के प्रति उनका क्या दायित्व है । यह ठीक है कि देश के सम्मुख जो सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय समस्याए हैं, उसके निवारण में आर्यसमाज एवं आर्यजनों को अपनी जिम्मेदारी उसी तरह निभानी चाहिए, जिस तरह उन्होंने राष्ट्र के स्वाधीनता संघर्ष में—राष्ट्र की नानाविध समस्याओं के समाधान में प्रस्तुत की थी । आज आर्यसमाज के सम्मुख उससे भी कहीं अधिक बड़ा उत्तरदायित्व है ।

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण हुए ९९ वर्ष व्यतीत हो गए हैं, अगले वर्ष आर्यसमाज अपने संस्थापक की निर्वाण शताब्दी मना रहा है । इस समय आर्यसमाज एव आर्यजनों को चाहिए कि वे देखें कि इन वर्षों में हमारा क्या लेखा-जोखा रहा है और साथ ही हमें अगले सो वर्षों के लिए एक सुनिश्चित कार्यक्रम बना कर उसके कार्यान्वियन की निश्चित व्यवस्था करनी चाहिए। पिछले वर्षों के कार्यों के लेखे-जोखे या सिंहावलोकन करते समय यह तो स्पष्ट है कि आज देश में और विदेशो मे आर्यसमाज एव उसके सिद्धांतों का पर्याप्त प्रचार प्रसार हुआ है । यह भी स्वीकार किया जा सकता है कि इन वर्षों मे आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं के आकार-प्रकार में बड़ी वृद्धि हुई है, परन्तु इसी के साथ यह कटु तथ्य भी हृदयंगम करना होगा कि विगत वर्षों में देश का सामाजिक राष्ट्रीय जीवन भ्रष्टाचार तथा जीवन मूल्यों के प्रति जिस अनास्था से प्रभावित हुआ है, उसे प्रभावित करने की बजाय आर्यसमाज उससे प्रभावित हुआ है । समय की मांग है कि राष्ट्र और समाज की दिन प्रतिदिन अधोगति को प्राप्त करती हुई स्थिति को नियन्त्रित तथा ऊर्ध्वमुखी बनाने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादिक वैदिक सिद्धांतों का प्रचार करने वाला आर्यसमाज और आर्यजन जड़वादी तत्त्वों से मुक्त हों ।

यह अधिकारपूर्वक कहा जा सकता है कि आर्यसमाज की देश और जनता के लिए आज भी उतनी ही प्रासंगिकता या उपयोगिता है जितनी कि सो वर्ष पूर्व [illegible]

[illegible] की चर्चा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर की जाए । इसके लिए इन सिद्धान्तों का बृहद्, मध्यवर्ती और संक्षिप्त विवरण ससार भर की प्रमुख भाषाओ में दृश्य-श्रव्य एवं अन्य साधनों के द्वारा पहुचाने की सुनिश्चित व्यवस्था की जानी चाहिए । समाज और राष्ट्र की सामयिक चुनौतियों को सुलझाने के साथ राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारतीय आर्य सिद्धांतों के व्यवस्थित प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसमाज को भविष्य में अपनी विशिष्ट भूमिका प्रस्तुत करनी होगी । यही उसकी सबसे बड़ी प्रासंगिकता है ।

हिन्दी से ही राष्ट्र की एकता सम्भव

[२९ दिसम्बर '८२ को राजभाषा सम्मेलन, कलकत्ता के स्वागताध्यक्ष के रूप में दिए गए भाषण के कुछ अंश]

—सुभाषचन्द्र बोस

आजकल की हिन्दी के गद्य का जन्म कलकत्ते में ही हुआ है । लल्लू जी लाल ने अपना प्रेम सागर इसी नगर में बैठकर बनाया और सदल मिश्र ने चन्द्रावली रचना यहीं पर की और वे ही दोनों सज्जन हिन्दी गद्य के आचार्य माने जाते हैं । हिन्दी का सबसे पहिला अखबार 'बिहार-बन्धु' यहीं से निकला । सबसे पहले कलकत्ता विश्वविद्यालय ने ही हिन्दी को एम० ए० में स्थान दिया । सबसे पहले एक गलतफहमी दूर कर देना चाहता हू । कितने सज्जनों का ख्याल है कि बंगाली या तो हिन्दी के विरोधी होते हैं या उसके प्रति उपेक्षा करते हैं । यह बात भ्रमपूर्ण है और इसका खण्डन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हू । मैं व्यर्थ अभिमान करना नहीं चाहता पर इतना तो अवश्य कहूगा कि हिन्दी साहित्य के लिए जितना कार्य बंगालियों ने किया है उतना हिन्दी-भाषी प्रांतों को छोड़कर और किसी प्रान्त के निवासियों ने शायद ही किया हो । यहां मैं हिन्दी-प्रचार की बात नही कहता । उसके लिए स्वामी दयानन्द ने जो कुछ किया और 'महात्मा गांधी जो कुछ कर रहे हैं जो दोनों ही हिन्दी भाषी नहीं हैं उसके लिए हम सब उनके कृतज्ञ हैं, पर हिन्दी साहित्य प्रचार के लिए स्वर्गीय श्री भूदेव मुकर्जी ने और पंजाब मे स्वर्गीय श्री नवीनचन्द्र राय ने हिन्दी से लिए १८८० में ही जो प्रयास किया वह कभी भुलाया जा सकता है ।

संयुक्त प्रान्त में इंडियन प्रेस के स्वामी स्वर्गीय श्री चिन्तामणि घोष ने प्रथम सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका 'सरस्वती' द्वारा और पचासों हिन्दी ग्रन्थो को छपा कर हिन्दी साहित्य की जो सेवा की है, उतनी सेवा हिन्दी-भाषा-भाषी किसी प्रकाशक ने शायद ही की होगी । जस्टिस शारदाचरण मित्र ने 'एक लिपिविस्तार परिषद' को जन्म देकर और 'देवनागर' पत्र निकल कर हिन्दी के लिए प्रशंसनीय कार्य किया था । 'हितवार्ता' के स्वामी एक बंगाली सज्जन ही थे ।

कविवर श्री रवीन्द्रनाथ ने कबीर की एक सौ कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद करके और उनके शांति निकेतन के श्री क्षितिमोहन सेन ने सन्त कवियों के विषय में अनुसंधान करके हिन्दी की सेवा ही की है । लगभग १५ वर्ष से श्री नगेन्द्रनाथ जी वसु अपने हिन्दी-विश्वकोष द्वारा हिन्दी की सेवा और पुष्टि कर रहे हैं । मैं नम्रता पूर्वक आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या यह सब जानते हुए भी कोई यह कहने का साहस कर सकता है कि हम लोग हिन्दी के विरोधी हैं ? शायद हममे कुछ ऐसे आदमी भी हैं जिन्हें इस बात का डर है कि हिन्दी वाले हमारी मातृभाषा बंगला को छुड़ाकर उसके स्थान पर हिन्दी रखवाना चाहते हैं । यह भी निराधार भ्रम है । हिन्दी-प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से लिया जाता है वह आगे चलकर हिन्दी से लिया जाए । भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के भाइयों से बातचीत करने के लिए हिन्दी या हिन्दुस्तानी तो हमको सीखनी ही चाहिए । हम लोग जो मजदूर आंदोलनो मे काम करते है हिन्दुस्तानी भाषा की जरूरत को हर रोज महसूस करते हैं । बिना हिन्दुस्तानी भाषा जाने हम उत्तरी भारत के मजदूरो के दिल तक नही पहुच सकते । अगर आप लोग हम सबके लिए हिन्दी पढ़ाने का इन्तजाम कर देंगे तो यह मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि हम लोग आपके योग्य शिष्य होने का भरपूर प्रयत्न करेंगे । अन्त मे बंगाल के निवासियों से और खास तौर से यहां के नवयुवकों से मेरा अनुरोध है कि वे हिन्दी पढ़ें । जो लोग अपने पास से शिक्षक रखकर पढ़ सकते हैं वे वैसा करें । भूतकाल की तरह आगे चलकर हिन्दी प्रचार का भार उन्हीं पर पड़ेगा ।

प्रान्तीय ईर्ष्या द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिन्दीप्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती । सारे प्रान्तो में सार्वजनिक भाषाका पद हिन्दी या हिन्दुस्तानी को मिलेगा । नेहरू रिपोर्ट में भी उसी की सिफारिश की गई है । यदि हम लोगो ने तन-मन-धन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नहीं है जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिन्दी '

— 'लोक शिक्षक' से साभार

आर्यसमाज तिलकनगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज तिलकनगर का वार्षिकोत्सव ७ से १४ नवम्बर तक मनाया गया । श्री ओमवीर शास्त्री ने 'वेदो के द्वारा मानवकल्याण' विषय पर वेद कथा प्रस्तुत की । भाषण से पूर्व प्रतिदिन भजनोपदेशक प० चुन्नीलाल जी के भजन हुए । १४ नवम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई । दयानन्द आदर्श विद्यालय के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया । बाद में ऋषि लंगर हुआ ।

ऋषि दयानन्द

— सुशीला राजपाल

हम दयानन्द को ऋषि क्यो कहते है ? ऋषि का क्या अर्थ है व सामान्य कर्म और ऋषित्व कर्म में क्या भेद है ? जब मनुष्य अपनी प्रकृति के अधीन होकर कर्म करता है चाहे वह सात्विक हो या राजस या तामस हो उस कृत कर्म को लौकिक या सामान्य कर्म कहते हैं। वह आध्यात्मिक कर्म नही होता। ऋषि वह कहलाता है जो आत्मा को सत्य देखता हैं और उसकी ध्वनि को सुनता है और उसी मे आचरण करता है। उसका प्रत्येक कर्म दिव्यत्व भाव से प्रेरित होता है। वह किसी मानसिक योजना द्वारा या मानवीय प्रतिमान से निर्धारित नहीं किया जाता, क्योंकि उसकी आत्मा मानवीय नियमो और सामाजिक मर्यादाओं को पार कर चुकी होती है। बाह्य और नश्वर के राज्य से निकल कर आन्तर तथा नित्य के आत्म-शासन में विचरण करती है। और सान्त के भ्रमनकारी रूपों से परे हटकर अनन्त के दिव्य आलोक मे विचरण करती है और सनातन के स्वतन्त्र आत्म निर्धारित नियमों मे प्रविष्ट हो गई होती है। वह मनुष्यो को अज्ञानता पूर्ण निर्णय और अहकारमूलक सीमित नियमों के अनुसार नहीं चलती। वह अपने भागवत जगत में विचरण करती है और भगवान की दिव्य शक्ति द्वारा परिचालित होती है। उसका वास्तविक जीवन भौतिक शरीर मे न रहकर आत्मा में होता है। ऋषि की प्रत्येक क्रिया और उसका चिन्तन मनन भगवत इच्छा से नियोजित होता है। वह ईश्वर की चेतना में विचरता, खाता-पीता और चलता-फिरता है। वह आवेगो और आवेशों से मुक्त हो जाता है। ऋषि ज्वलन्त सत्य का पुजारी होता है वह म्रियमाण मर्त्यों पर गम्भीरता पूर्वक आघात कर देता है। उक्त 'ऋषि' शब्द के व्याख्या मूलक विशेषणो से ऋषि दयानन्द ओत-प्रोत थे इसलिए हम उनको 'ऋषि कहते हैं।

एक सच्चे शिल्पकार

श्री अरविन्द ने ऋषि दयानन्द के विषय में 'दयानन्द' पुस्तक मे लिखा है कि वह एक सच्चे शिल्पकार थे। वह मनुष्यों के मन और आत्मा को वेदोक्त ज्ञानद्वारा निर्मित करना चाहते थे, क्योंकि वह स्वय भी वेदज्ञान की चक्षु मे विचरण करते थे। उनका मनन, और चिन्तन और भाषण वेद की आधारशिला पर था। वह अपने अह से पूर्णतया मुक्त थे। वह ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त कर चुके थे, इसीलिए हम वेद और उपनिषदों के ऋषियों की उच्चतर-कोटियों की परिगणना में ऋषि दयानन्द को देखते हैं। निर्वाण में मुक्त आत्माओं की संसद-पार्लिमैन्ट में निर्विवाद रूप से निर्वाचित ऋषि दयानन्द पृथ्वी पर अवतरित हुए। अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा अतीत के वेदोक्त युग का हमको दिव्य दर्शन कराया, जिनको हम विस्मृत कर चुके थे। भारतवर्ष देश का नाम आर्यावर्त, और इसकी भाषा आर्य भाषा (सस्कृत) और हमारी प्राचीन सस्कृति वैदिक थी। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। और वेद की आधारशिला पर अखण्ड सार्वभौमिक राज्य की प्राप्ति के लिए आर्य-अधिविनय में वेद मन्त्रों के द्वारा प्रार्थना पढ़कर हमारा प्रसुप्त गौरव जाग्रत हो जाता है।

किसी व्यक्ति की महत्ता का यह चिह्न होता है, वह अपने काल में पहचाना नहीं जाता। कृष्ण भगवान को महाभारत काल में तीन-चार व्यक्तियो ने पहचाना था विदुर, व्यास अर्जुनादि भाइयों ने शेष सब विरोधी थे। उनकी गीता का भाष्य, शकराचार्य और वल्लभाचार्यादि ने किया जिनको लगभग २००० हजार वर्ष हो चुके हैं। ३००० हजार वर्ष तक गीता के उच्चतर अध्यात्मवाद को लोग नहीं समझ पाये। आज ३०० भाषाओं में गीता का अनुवाद हो चुका है। इसी प्रकार ऋषि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश, सस्कार विधि वेद भाष्यादि पुस्तकों को विद्वद् मण्डली कुछ जान रही है शेष मेरे आर्य भाई और बहनें इस अमूल्य ज्ञान से वंचित हैं और न उनमें अभीप्सा जागृत हुई है। भजनों में 'दयानन्द' को पुकारते हैं परन्तु दयानन्द की आत्मा उनकी रचित पुस्तकों में जो विचरण कर रही है, उसको नहीं देखते।

श्री अरविन्द ने लिखा है कि ऋषि दयानन्द का अनवरत प्रयास और सच्ची अभीप्सा का प्रत्युतर उनको अवश्य मिलेगा। उनका श्लाघनीय कार्य कि वेद के युग को पुनः प्रस्थापित किया है। यह अवश्य ही भविष्य में प्रतिफलित होगा शेष जितने भी धर्म ससार में पाये जाते है, वे केवल अन्धी श्रद्धा के आधार पर चल रहे हैं। जब मनुष्यों में जागृति आ जाएगी वेद की वैज्ञानिक और दार्शनिक सच्चाइयां उनको हृदयगम हो जाएगी केवल सनातन वैदिकम् धर्म ही ससार का कल्याण कर सकता है। एक दिन यह विश्वधर्म बन जाएगा। सब सम्प्रदाय समाप्त हो जाएंगे, इसीलिए हम अनुयायियों का यही कर्त्तव्य है और सच्ची श्रद्धांजलि भी यही है कि वेद के प्रचार और प्रसार में हम अपना तन-मन और धन अर्पण कर दें।

एन-१३, पश्चिमी पटेलनगर दिल्ली

गतांक से आगे—

कार–ए–सल्तनत लोहे से चलता है

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

अध्यक्ष वैदिक सस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

देश की आर्थिक प्रगति के लिए अपनाए गए परिवार-नियोजन का विरोध मुसलमान साम्प्रदायिक आधार पर करता है। भारतीय अर्थशास्त्र के मेरुदण्ड गोवंश की रक्षा का वह समर्थक नहीं तो साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दुओं की पूजा की ध्वनि तक उसे सहन नहीं। जबकि पग-पग पर बनी मस्जिदो मे लगे ध्वनि विस्तारको पर अजान की ध्वनि प्रातः-साय कानों के पर्दे फाड़ डालती हैं और हिन्दू मन्दिरों में होने वाली पूजा-आरती ही नहीं अपितु अधिकांश व्यक्तियों द्वारा प्रातः ब्राह्म मुहूर्त मे अपने घरों पर शान्त बैठकर ध्यान तथा योगाभ्यास करने वालों के लिए महान बाधा है। परन्तु फिर भी हिन्दू कभी इसका विरोध नहीं करते। मुसलमान हिंदुओं के पुजारियों तक का वध करें, पाकिस्तानी साहित्य बांटे, हिंदुओं के घरों पर आक्रमण कर उनकी बहू-बेटियो के साथ मुंह काला करें, हिंदुओं के घरो में आग लगायें, उनकी हत्या करें और ऐसे अवसरो पर पी० ए० सी० तथा पुलिस इनके काम में बाधक बने तो वे भी अपराधी, उसे हटाने की मांग की जाए। यहां तक कि मुस्लिम सांसद विधिवत बैठक कर पी० ए० सी० का विरोध करें और सामूहिक रूप से आने वाले ससद के सत्र में एक दिन अनुपस्थित रहने का निश्चय करें।

इसका ध्वनितार्थ यही तो हुआ कि उनके धर्मग्रन्थ की 'रू' से काफिरों को कत्ल करने का जो मुसलमानो का अधिकार है उसमें पी० ए० सी० आड़े आ रही है अत: उसे हटाकर मुसलमानों को हिन्दुओं 'काफिरो' को कत्ल करने के अपने मजहबी कर्त्तव्य को पूरा करने का शुभ अवसर प्रदान किया जाए।

मेरठ से मिलने वाले समाचारों के अनुसार श्री धर्मदिवाकर शर्मा प्रधान ह का मेरठ से यद्यपि हिन्दुओं को यह शिकायत है कि हिंदुओं द्वारा पीड़ित हरिजनों के लिए दिया गया चन्दे का धन उन्होने मुसलमानों में बांटा तो भी उन पर छुरे से वार किया मुसलमानों ने। यद्यपि साथ मे मोहसिना किदवई भी थीं और केन्द्रीय मंत्री होने से वह पी० ए० सी० हटवा सकती थीं। यह कार्य धर्म दिवाकर शर्मा के सामर्थ्य से बाहर था अतएव सही अर्थों में मुसलमानों द्वारा मोहसिना शत्रु मानी जानी चाहिए थीं और उन्हीं को छुरा मारा जाना चाहिए था किन्तु वार उन पर नहीं शर्मा पर किया। क्यों, क्योंकि शर्मा जी काफिर हैं और मोहसिना—मोमिन है। दीनदार हैं। प्रस्तुत शिकायत के सदर्भ में शर्मा जी को छुरा तो हिन्दुओ द्वारा मारा जाना चाहिये था। परन्तु विष उगलने वाले सांपो को भी दूध पिलाने वाला हिंदू छुरा मारना क्या जानें, यह कार्य तो दूध पिलाने वाली गाय को भी काट कर खा जाने वाला कृतघ्न ही कर सकता है।

गांधी जी द्वारा अपनाई गई और कांग्रेस द्वारा प्रारम्भ से ही पोषित तुष्टीकरण की नीति का व्यामोह देश के नेताओ को कुछ नहीं करने देता अन्यथा ये लोग भी जानते सब कुछ हैं, परन्तु यदि इसी प्रकार जानकर भी अनजान बने रहे तो वह दिन दूर नहीं, जबकि नेताओं को इस दुर्नीति का दण्ड सन १९४७ की ही भांति देश को एक बार पुनः भोगना पड़ेगा। इस दुर्नीति से ही अब्दुल्ला बुखारी जैसे देशद्रोही और इका सांसदो का साहस बढ़ा है। मौलाना मदनी ने तो लगता है, मोहम्मद अली जिन्ना की भांति 'कायदे आजम' बनने का स्वप्न लेना प्रारम्भ कर दिया है। देश के कर्णधारों ! सुनो, शासन प्रस्तावों, अपीलों और तुष्टीकरण से नहीं अपितु कठोरता से चलता है।

कसीदे से न चलता है न यह लोहे से चलता है।
जो सच पूछो तो कार-ए-सल्तनत लोहे चलता है॥

चिचोली में आर्यवीर दल व्यायामशाला

चिचोली (बेतूल)। आर्य वीर दल चिचोली के तत्वावधान में दशहरा पर्व बड़ी ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आधुनिक भीम ब्रह्मचारी श्री विशलपाल ने अपने व्यायाम प्रदर्शन से चिचोली की युवा पीढ़ी को मोहित किया। आर्यसमाज चिचोली के कार्यकर्त्ताओं ने युवा-शक्ति को प्रोत्साहित करने हेतु अनेक निर्णय लिए हैं। दल के कार्यकर्तागण शीघ्र ही चिचोली नगर में अपना मन्दिर, आर्यवीर दल व्यायामशाला के विकास हेतु कृत संकल्प हैं।

समीक्षा

वेदों में मानववाद

लेखक—डा० दिलीप वेदालंकार, प्रकाशक अमर भारती अन्तर्राष्ट्रीय, पो० बाक्स २१२, बड़ोदरा-३९०००१ (भारत) पृष्ठ संख्या-२८०, मूल्य ७५)

इस संसार में मानव-उद्देश्य एक श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण विषय है। आधुनिक चिन्तकों की दृष्टि में समस्त घटनाएं प्रकृति के नियमों के अनुरूप ही घटित होती हैं, इसलिए उनमे अद्भुत अथवा अतिमानवीय कुछ नहीं है। आज का चिन्तक मानव-अनुभव को ही विश्व में चिन्तन का विषय, समस्त मूल्यों का मापदण्ड और समस्त वस्तुओ का निर्माता मानता है तथा सत्य और फलवाद को मानववाद की संज्ञा से परिभाषित करता है। यह आधुनिक काल का एक प्रसिद्ध और महान् दर्शन है। साम्यवाद, समाजवाद, प्रगतिवाद तथा अनेक रूपों मे मानवहित सामाजिक चिन्तकों के मनन का विषय है। मानवीय पुस्तकालय में वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ माने जाते हैं, उनमें मानववाद ओत-प्रोत है। वेदों मे मानवता की गरिमा एवं महिमा वर्णित है।

सन्तप्त और दु:खी मानवता के कल्याण एवं सच्चे मानवधर्म के निदर्शन में वेदों की उल्लेखनीय भूमिका है, इस सम्बन्ध में डा० दिलीप वेदालकार के वेदों में मानववाद, शीर्षक ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता मिल सकती है। प्रस्तुत ग्रंथ मे मानववाद के आधुनिक स्वरूप के शास्त्रीय विवेचन करने के अनन्तर वैदिक दर्शन एव मानववाद, वैदिक धर्म और मानववाद, वेद की मानववादी शास्त्र व्यवस्था तथा वेद में मानवोपयोगी ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल एव वाणिज्य शीर्षकों के अन्दर मानववाद का व्यवस्थित विवेचन किया गया है।

सम्भवत. आधुनिक आलोचक इस निष्कर्ष से सहमत न हो कि वेद सृष्टि के ज्ञान-विज्ञान के आगार है, परन्तु इस ग्रन्थ से उस सम्बन्ध की आवश्यक पूर्ण जानकारी मिलती है। मानववादी शासन व्यवस्था, आचारशास्त्र और मानववाद के वैदिक स्वरूप की जानकारी प्राप्त करने मे प्रस्तुत ग्रन्थ से सहायता मिल सकती है। इस ग्रंथ से यह तथ्य भी उजागर होता है कि एक सामान्य मानव को व्यक्तिगत, परिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व का बोध करा कर उसे सच्ची शान्ति एव आनन्द का मार्ग दिखलाना वैदिक मानववाद का लक्ष्य है। इस विवेचन से यह तथ्य भी प्रमाणित हो जाता है कि वेद किसी एक जाति या किसी देश विशेष के लिए निर्दिष्ट न होकर सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण के लक्ष्य से अभिप्रेत हैं।

'वेदों मे मानववाद' ग्रंथ आधुनिक चिन्तन को मानववाद के प्राचीन मानवीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में प्रमाणित एव पुष्ट करता है। आर्य संस्कृति एव वैदिक विचारधारा का समुचित अध्ययन-मनन करने वाले जिज्ञासु पाठक के लिए यह ग्रन्थ नवीन दार्शनिक चिन्तन एव भारतीय दर्शन के सन्तुलित अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत करने के कारण उपयोगी बन गया है।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश में आर्ययुवक सम्मेलन

आर्यसमाज ग्रेटर कलाश के वार्षिकोत्सव पर २७ नवम्बर शनिवार दोपहर २ बजे आर्य युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

युवक सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य, श्री देवशर्मा शास्त्री, परिषद् के दक्षिणी दिल्ली मण्डल अध्यक्ष ब्र. रामपाल आर्य, श्री धर्मवीर व्यायामाचार्य आदि।

आर्यसमाज पुल बंगश दिल्ली में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्यसमाज मन्दिर पुलबंगश दिल्ली मे सोमवार दिनांक १६ नवम्बर ८२ से रविवार दिनाक २१ नवम्बर ८२ तक वेद सप्ताह मनाया गया, जिसमें प्रतिदिन प्रात: ६ से ८ बजे तक यज्ञ होम प० लखपति शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में हुआ तथा रात्रि ९ से १० बजे तक आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी (खतौली वासी) द्वारा वेदवाणी की अमृत वर्षा हुई, प्रवचन से पूर्व ८॥ से ९ बजे तक श्री सत्यदेवजी स्नातक द्वारा मनोहर भजन हुए प्रात.काल प्रभात फेरी भी निकाली गयी।

यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार दिनाक २१-११-८२ को प्रात १० बजे हुई पूर्णाहुति के पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन हुआ।

आर्य जगत् समाचार

२१० मूले जाट स्वेच्छया हिन्दू बने

समालखा (करनाल) की हिन्दू शुद्धि समिति की सफलता

"समालखा जिला करनाल। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में हिन्दूशुद्धि संरक्षणीय समिति जिला करनाल के शुद्धि प्रचारक वैद्य रतनसिंह एवं सभा के प्रधान बाबू ओम्प्रकाश आर्य आदि समाजसुधारकों के प्रयासों के फलस्वरूप २१० के लगभग मूले जाटों ने स्वेच्छया आर्य हिन्दू वैदिक धर्म ग्रहण किया। उन्हें गांवों और पंचायतों के रिवाज के अनुसार हुक्का-पानी और समान इज्जत दिलाई गई।

३ नवम्बर को हरियाणा के गांव पुण्डरी में मा० भगतराम की अध्यक्षता में हुए हवन में श्री भोनूराम सुपुत्र हमीरा (६ सदस्य) मेहरसिंह, सु. भोनूराम (४ सदस्य) श्री बख्शीराम, सु. हमीरा (७ सदस्य), श्री रतीराम, सु. हमीरा, (१५ सदस्य) जीवनसिंह, सु. हमीरा ४ सदस्य, जिलेसिंह, सु. गन्तूराम, (६ सदस्य) मेहरसिंह सु. गन्तूराम (४ सदस्य) मुनीशराम सु. गन्तूराम (२ सदस्य) वजीरसिंह सु. गन्तूराम, रोशनलाल सु. रतीराम (३ सदस्य) ५२ व्यक्तियों ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया।

४ नवम्बर को गांव गढी में मास्टर भगतराम जी की अध्यक्षता में हुए हवन में इन ८२—श्री उदयराम सु. शेरसिंह (दस) शेरसिंह सुपुत्र समन्दा (२) पालेराम सुपुत्र शेरसिंह (८) बलदेव सुपुत्र शेरसिंह (६) सुरताराम सुपुत्र शेरसिंह (५) भोलूराम सुपुत्र शेरसिंह(५) मेहरसिंह सुपुत्र समन्दा (८) अमरसिंह सुपुत्र समन्दा (२०) सरूपा सुपुत्र अबरू (११) अद्धा सुपुत्र अबरू (६) जीता सुपुत्र अबरू (४) जीतो धर्मपत्नी जीता ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया।

५ नवम्बर को पंजाब के गांव राम पुरा में श्री वजीरसिंह सरपंच की अध्यक्षता में हुए हवन मे ये ४० मूले जाट हिन्दू हुए, इदु सुपुत्र जुम्मा (१०) लिखा सुपुत्र उदेराम (७) मेहरसिंह सुपुत्र जुम्मा (५) शेरा सुपुत्र जुम्मा १४, पीलू सुपुत्र शेरा (२) गुलजार सुपुत्र शेरा (२)।

६ नवम्बर के दिन गांव धमताण में श्री ईश्वरसिंह की अध्यक्षता में हुए हवन में ३३ मूले जाटों ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया। कुरडी सुपुत्र सुभाना (८) हरिकेश सुपुत्र कुरडिया (२), जोध सुपुत्र सुभाना (१०) मानमल सुपुत्र शेरू (२) रामचन्द्र सुपुत्र नेकी (४), पूर्ण सुपुत्र नेकी (७) कुल ३३।

समस्तीपुर में आर्य राज्य सम्मेलन का आयोजन

(१) आर्य समाज, जगदीशपुर (दिघरा), जिला समस्तीपुर का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक २८-१०-८२ से ३१-१०-८२ तक मनाया गया। उक्त अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री देवदत्त शर्मा, पंजाब, श्री भुवनारायण आर्य भजनोपदेशक, लहेरियासराय तथा श्री शिवानन्द वानप्रस्थी के वेदोपदेश, आध्यात्मिक प्रवचन तथा भजनोपदेश हुए।

(२) दिनांक २४-१०-८२ को आर्य समाज मंदिर समस्तीपुर में उत्तर बिहार आर्य सभा, दरभंगा प्रमंडल आर्य सभा एवं समस्तीपुर आर्य समाज के अधिकारी एवं प्रमुख कार्यकर्ताओं की एक सम्मिलित बैठक हुई। इस में १८-१९ दिसम्बर के दिन आर्य समाज समस्तीपुर में राज्य सम्मेलन आयोजित करने का निश्चय किया गया। ७ दिसम्बर '८२ तक पुरोहित एवं प्रचारक प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन किया जाएगा।

(३) आर्य समस्तीपुर के तत्त्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १५-१०-८२ से २२-१०-८२ तक मनाया गया जिसमें समस्तीपुर नगर के अलावा रेलवे कालोनी एवं निकटवर्ती ग्रामों में प्रचार का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर आचार्य श्री सत्यदेव शास्त्री तथा ठाकुर विन्देश्वरी प्र० आर्य, बनारस के सारगर्भित वेद प्रवचन तथा भजनोपदेश हुए।

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निर्वाणोत्सव

दिल्ली। यमुना पार क्षेत्र शाहदरा के समस्त आर्यसमाजों की ओर से क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा, शाहदरा के तत्वावधान में रविवार २१ नवम्बर, १९८२ को प्रातः ८॥ से ११॥ बजे तक महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव समारोहपूर्वक मनाया गया। अध्यक्ष थे आर्य नेता श्री सरदारीलाल वर्मा। इस अवसर पर पं० रामकिशोर जी वैद्य, प० वेदभिक्षु जी के भाषण हुए और श्री सत्यपाल मधुर ने भजनोपदेश प्रस्तुत किया।

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के नये पदाधिकारी

पटना। १० अक्तूबर १९८२ के दिन मुनीश्वरानन्द भवन, नया टोला, पटना-४ में बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी इस प्रकार चुने गए—संरक्षक—पद्मभूषण डा० दुखनराम, प्रधान—प० वासुदेव शर्मा, उपप्रधान—आचार्य प० रामानन्द शास्त्री, श्री विद्या भूषण प्रसाद, मन्त्री—श्री हरिदास व्यास सहमन्त्री—पं० सर्वेन्द्र शास्त्री, श्री रमेन्द्रकुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र प्रसाद, लेखानिरीक्षक—श्री यमुनाप्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष—श्री योगेन्द्रनारायण, अधिष्ठात्री—महिला संगठन—डा० सम्पत्ति आर्याणी, अधिष्ठाता—प्रकाशन-विभाग—प्रो० रामनन्दन शास्त्री।

डा० आनन्द सुमन को पुत्ररत्न की प्राप्ति

देहरादून। ७ नवम्बर १९८२ के दिन प्रातः ४ बजे अ० भा० शुद्धि परिषद और पुनर्मिलन अभियान के संयोजक डाक्टर आनन्द सुमन (भूतपूर्व डा० रफल अब्बलाक) की पत्नी श्रीमती सरस्वती सुमन को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है। पुत्र का नामकरण संस्कार १७ दिसम्बर को प्रातः ८ बजे तपोवन आश्रम देहरादून में सम्पन्न होगा। ज्ञात हुआ है कि डा. सुमन के पुत्र का नाम कान्ति सुमन रखने का सुझाव दिया गया है। हार्दिक बधाई।

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव की ओर से दीपावली पर्व

सोमवार १५ नवम्बर के दिन प्रात. ८ बजे से १२॥ बजे तक आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के तत्वावधान में रामलीला मैदान के निकट बड़ा डाकखाना गुड़गांव छावनी में महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर अनेक आर्य विद्वानों एवं भजनोपदेशकों ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

लुधियाना में महर्षि निर्वाणोत्सव

१३ नवम्बर से १५ नवम्बर, १९८२ तक आर्यसमाज स्त्री आर्यसमाज, स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) और आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से महर्षि निर्वाण उत्सव मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प्रो० वेदव्रत विद्यालंकार थे। अनेक विद्वानों और भजनोपदेशों ने महर्षि के जीवन और उपदेशों का सन्देश दिया। १४ नवम्बर के दिन छात्र छात्राओं का भाषण एवं संगीत प्रतियोगिता भी हुई।

प्राच्य विद्यापरिषद् का ३१वां अधिवेशन

अ० भा० प्राच्य विद्या परिषद की ओर से प्राच्य विद्या परिषद का ३१ वां अधिवेशन २९-३०-३१ अक्तूबर को वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० गौरीनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में स्वामी ओमानन्द सरस्वती, पं० युधिष्ठिर मीमांसक, डा० भवानीलाल भारतीय, प० वीरेन्द्र शास्त्री, प० सुधीन्द्रनाथ शास्त्री डा० श्रीनिवास शास्त्री, कु० उषा विष्ट, प्रो० जयदेव आर्य, श्री वेदपाल वर्णी, डा० यज्ञवीर, डा० वाचस्पति उपाध्याय आदि २३ के लगभग विद्वानों ने अपने शोध प्रबंध पढे।

मुसलमान के घर से अपहृत तीन बच्चे व मां बरामद

कानपुर। आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य व श्री राजेन्द्र आर्य के सहयोग से थाना फजलगंज पुलिस ने दर्शनपुरवा में हसमुद्दीन के मकान से ३० वर्षीय श्रीमती पुष्पा शर्मा व उसके तीन बच्चों को बरामद कर लिया।

पांच बच्चों की मां पुष्पा शर्मा के पति काकादेव निवासी श्री देवदत्त शर्मा ने थाना फजलगंज में रिपोर्ट की थी कि उसकी पत्नी पुष्पा व तीन बच्चे गत १२ अगस्त ८२ को हसमुद्दीन नामक एक व्यक्ति भगा कर ले गया। थाना में धारा ३४२ के अन्तर्गत मुकदमा कायम किया गया।

लाला लाजपतराय जी की आर्यसमाज पुस्तक का विमोचन

आर्य जगत के मनीषी लेखक, विचारक तथा प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं आर्य विचार मंच के प्रणेता श्री दत्तात्रेय वाब्ले (आर्य) द्वारा अंग्रेजी में लिखित—दी आर्यसमाज हिन्दू विदाऊट हिन्दुइज्म—नामक २३५ पृष्ठीय पुस्तक देश के प्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान विकास पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई है।

इस पुस्तक का विमोचन आर्यसमाज अजमेर की शताब्दी के अवसर पर दिनांक ३१ अक्तूबर १९८२ ई० को एक विशेष समारोह में आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी श्री डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती डी० एस० सी० के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस पुस्तक का मूल्य १२०.०० (एक सौ बीस रुपया) है। इस पर ३० प्रतिशत रियायत आर्य संस्थाओं को देय होगी।

आर्यसमाजों के सत्संग

२८ नवम्बर '८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—पं० ईश्वरदत्त, अमर कालोनी—श्रीमती गीता-शास्त्री; अशोक विहार के-डी-५२-ए—पं० वेदव्यास भजनोपदेशक, आर. के. पुरम सेक्टर-५—ओमवीर शास्त्री; आर. के. पुरम सेक्टर ९—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; किशनगंज मिल एरिया—पं० हरिदत्त शास्त्री; किंग्जवे कैम्प—पं० राजवीर शास्त्री, कालकाजी—पं० रामनिवास; कृष्ण नगर—श्रीमती उषा शास्त्री; गीता कालोनी—पं० हरिश्चन्द्र आर्य; ग्रेटर कैलाश-II—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक; गुडमण्डी—पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री; गुप्ता कालोनी—पं० रामरूप शर्मा; गोविंद भवन-दयानन्द वाटिका—डा० लक्ष्मीदास आर्य; जंगपुरा-भोगल—पं० बलवीरसिंह शास्त्री; जनकपुरी बी-३/२४—पं० वेदपाल शास्त्री; डिफेंस कालोनी—पं० देवेश; तिलक नगर—श्रीमती सुशीला राजपाल; तिमारपुर—पं० चुन्नीलाल भजनोपदेशक; दरियागंज—पं० ओम्प्रकाश वेदालंकार; नारायण विहार जी-२५—डा० सुखदयाल भूटानी; नया बांस—प्रो० सत्यपाल बेदार; न्यू मोती-नगर—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी; नगर शाहदरा—श्री महावीर बत्रा; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन—पं० प्रेमचन्द श्रीधर; बाग कड़े खां—पं० बरकतराम भजनोपदेशक; बिरला लाइन्स—पं० प्रकाशचन्द वेदालंकार; मोडल बस्ती—पं० प्राणनाथ सिद्धांतालंकार; मोडल टाउन—पं० रविदत्त गौतम; महावीर नगर—पं० विश्वप्रकाश शास्त्री; रमेश नगर—स्वामी प्रेमानन्द, राणा प्रताप बाग—पं० कामेश्वर शास्त्री; राजौरी गार्डन—डा० रघुनन्दनसिंह; रोहतास नगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; [illegible] बाटी-पहाड़गंज—पं० अमरनाथ कान्त; लेखराम नगर-त्रिनगर—आचार्य [illegible] सिद्धांतालंकार; लारेंस रोड—डा० रघुवीर वेदालंकार; विक्रम-नगर—[illegible] ऋषि भजनोपदेशक; विनय नगर—श्री रोशनलाल खन्ना; सदर बाजार-पहाड़ी [illegible]—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; साकेत—पं० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; सराय रोहेला—पं० [illegible]पाल शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा [illegible] आर्य गायक; सोहनगंज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; शालीमार बाग—आचार्य विक्रम; हौज खास ए-२१—पं० छविकृष्ण शास्त्री।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

संक्षिप्त समाचार

—आर्यसमाज कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली मे ८ नवम्बर से १५ नवम्बर तक प्रात ६॥ बजे से ८॥ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन आचार्य हरिदेव जी के ब्रह्मत्व में किया गया। पूर्णाहुति १५ नवम्बर को प्रातः ८ बजे सम्पन्न हुई।

—आर्यसमाज पहाड़गंज-चूना मण्डी नई दिल्ली का ६४ वां वार्षिकोत्सव २९ नवम्बर से ५ दिसम्बर, १९८२ तक होगा। २६ नवम्बर से २८ नवम्बर तक प्रातः ५ बजे से ६॥ बजे तक प्रभातफेरी होगी। २९ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक प्रातः ६ बजे से ८ बजे तक चतुर्वेद शतक यज्ञ एवं उपदेश होंगे। इन्हीं दिनों में रात्रि को ८॥ से १० बजे तक वेद कथा होगी। यज्ञ की पूर्णाहुति ५ दिसम्बर को प्रातः ९ से १० बजे तक होगी। उसके बाद ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई है।

—आर्य धर्मार्थ न्यास विजयनगर की ओर से विजयनगर ब्लाक १ में धर्मार्थ चिकित्सालय का उद्घाटन २ नवम्बर को सायं ७ बजे डा० कृष्णलाल आर्य कथूरिया ने किया। यह चिकित्सालय ब्लाक १ विजयनगर में प्रतिदिन प्रात १० बजे से दोपहर एक बजे तक खुलेगा।

—आर्यसमाज बांदीकुई राजस्थान के तत्वावधान में एक राजपूत कन्या आयु. सुन्दरबाई का विवाह किशनसिंह से सम्पन्न हुआ। सुन्दरबाई का अपहरण निकटवर्ती एक मुस्लिम युवक द्वारा किया गया था, परन्तु पंचायत और आर्यसमाज ने मिलकर उस कन्या का उद्धार किया।

—आर्यसमाज गोविन्द नगर, कानपुर ६ में श्री महेश नारायण द्विवेदी का विवाह संस्कार कुमारी उमा गुप्ता के साथ, श्री विष्णु प्रसाद निगम का कुमारी विनीता खरे के साथ तथा श्री जयनारायण मेहरोत्रा का विवाह कुमारी कंचन वर्मा के साथ वैदिक रीति के अनुसार बिना दहेज के साथ सम्पन्न हुआ।

राजस्थान प्रान्तीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर की स्थापना शताब्दी के अवसर पर दि० ३० अक्तूबर १९८२ को श्री छोटूसिंह जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अध्यक्षता में राजस्थान आर्य प्रान्तीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसमें राजस्थान प्रांत की विभिन्न आर्य समाजों के लगभग ४०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस प्रांतीय आर्य सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने किया। उन्होंने अपने ओजस्वी भाषण में आर्यजनों को राष्ट्र की विघटनकारी शक्तियों के प्रतिरोध में डटकर संघर्ष करने और महर्षि दयानंद के सपनों का भारत बनाने का आह्वान किया। सम्मेलन का संयोजन श्री भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने किया। इस अवसर पर स्वामी ओमानद जी, पं० वेदराजजी आर्य, श्री दत्तात्रय बाब्ले व छोटू सिंह जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अंत मे कश्मीर पुनर्वास विधेयक को वापस लेने, धारा ३७० को समाप्त करने, खालिस्तान की पृथकतावादी मांग का विरोध करने एवं धर्मरक्षा महाभियान चलाने तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पहले अजमेर तथा फिर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजधानी दिल्ली में मनाने संबंधी प्रस्ताव पारित हुए।

सिलाई-कढ़ाई का केन्द्र और होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन

आर्यसमाज न्यू मोतीनगर में दिनांक १४-११-८२ रविवार को सामवेद पारायण की पूर्णाहुति के बाद श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती के कर कमलों से ओम ध्वज का आरोहण हुआ।

श्री मदनलाल जी खुराना भूतपूर्व कार्यकारी परिषद के द्वारा प्रशिक्षण केन्द्र तथा औषधालय का उद्घाटन किया गया। जिसमे सहाशय धर्मपाल जी दानी, तथा श्री प्रेमनाथ जी प्रधान सनातन धर्मसभा, तथा अर्जुन देव सराफ, प्रधान दशहरा कमेटी आदि वरिष्ठ व्यक्ति उपस्थित थे।

वार्षिकोत्सव स्वामी विद्यानन्दजी एक सप्ताह भर वेद कथा के द्वारा सम्पन्न हुआ तीर्थराम आर्य, प्रधान आर्य समाज

अब हम व्यंग्य करते हैं

एक गांधीवादी सज्जन अपने घर में बैठे सूत कात रहे थे उनके एक प्रगतिवादी मित्र सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए आ पहुंचे और चर्खे को देखकर बोले—तुम्हारे कातने से क्रांति हो जाएगी क्या ?

कातते ही कातते उन्होंने कहा—"ना मेरे कातने से नहीं, क्रांति तो तुम्हारे सिगरेट पीने से होगी।"

नहले पर बड़ा करारा दहला था—सिगरेट बाबू झेंपे। हम जब किसी पर व्यंग्य करते हैं तो उसकी चोट का अनुभव नहीं कर पाते, नम्र हृदय बने रहते हैं। पर जब व्यंग की चोट हम पर पड़ती है तो हमारी निर्ममता का बांध पलक मारते टूट जाता है, यह कितनी विचित्र बात है ?

—पद्मावती तलवाड़, आई २०८ अशोक विहार फेज १ दिल्ली-५२

आर्यसमाज फतेहाबाद रजाइयां बांटेगा

आर्यसमाज फतेहाबाद की ओर से २८ नवम्बर को श्री ..... सुरेश अग्रवाल की अध्यक्षता में ७५ नई रजाइयां फरीदी, जामली, देवहारा, ... आदि अपनों में बांटने का निश्चय किया गया है।

एक आचार्या की आवश्यकता है

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान में आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेंद्र नगर के लिए एक आचार्या की आवश्यकता है। योग्यता एम ए पी एच डी अथवा न्यून से न्यून एम ए हो। कम से कम किसी शिक्षण संस्था का दस वर्ष का अनुभव हो। गुरुकुल सारी गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने की दक्षता, दूसरी विषयों के अधिक से अधिक ज्ञान के साथ ही साथ संस्कृत विषय में विशेष पारंगत हो। वेतन योग्यतानुसार निर्धारित किया जाएगा।

कृपया इच्छुक महिलाएं सप्रमाण आवेदन पत्र इस सूचना के १५ दिन तक—आचार्या कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली ११००६० के पते पर अवश्य भेज दें।

—प्रेमशील मन्त्रिणी

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

२८ नवम्बर रविवार १९८२ से १९ दिसम्बर रविवार ८२ तक श्रीमद्-दयानन्द वेद विद्यालय के प्रांगण में पूज्य श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में होना निश्चित हुआ है। इस सुअवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान एवं आर्य नेता पधार रहे हैं। आप भी यज्ञ में यजमान बनकर पुण्यलाभ प्राप्त करें और अधिक से अधिक संख्या में अपने बन्धु-बान्धवों को यज्ञ में आने के लिए प्रेरित करें। यज्ञ के लिए पुष्कल मात्रा में घी और सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें।

हर प्रकार की सहायता इस पते पर भेजें—

श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली-४९।

यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव आचार्य हरिदेव से सम्पर्क स्थापित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश संक्षिप्त (हिन्दी)	१.००
(अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश महासम्मेलन	
विशेषांक	५ ००
पादरी भाग गया—	
ओमप्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान	
अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६ ००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह	
स्मारिका	५ ००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस ९९७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष : ७ | अंक ६ | रविवार ५ दिसम्बर १९८२ | मार्गशीर्ष २० वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

मुस्लिम संस्था के मुखिया का बयान : 'जिहाद उनका रास्ता'

दूसरी शासन व्यवस्थाओं को कुचलने का मकसद : मुस्लिम व्यवस्था में केवल उनके ही धर्मभाइयों को अधिकार : भारत में सामूहिक धर्मपरिवर्त्तन का लक्ष्य

नई दिल्ली। इस्लाम के पुनरुत्थान के लिए मध्यपूर्व के मुस्लिम राष्ट्रों मे कार्य कर रहे एक मुख्य इस्लामिक संगठन 'इख्वानुल मुस्लिमुन' के सर्वोच्च नेता मुर्शीद-ए-आम जस्टिस उमर तिलमेसानी ने एक अरबी पत्र को भेंट में घोषित किया है—"कुरआन ही पूरे इस्लामी समुदाय का दस्तूर और कानून है। उनकी संस्था 'इख्वान' का मकसद है कि हर उस इस्लाम विरोधी दृष्टिकोण और सिद्धांत की काट कर दी जाए जो विभिन्न नामो—'सेक्यूलरिज्म', 'कम्युनिज्म' आदि के नामों से सिर उठा रहे हैं, उन्हें कुचल दिया जाए। इस्लाम के पुनरुत्थान के लिए प्रयत्नशील इस मुस्लिम सगठन इख्वान के मुर्शीद के कथनानुसार - 'अल कुरआनु दस्तूरना'—कुरआन ही उनका दस्तूर और कानून है और उस कानून के पालन के लिए 'अल जिहादु सबीलना'—जिहाद ही उनका नारा है।

एक प्रश्न के उत्तर में इस तथाकथित मुर्शीद जनाब तिलमसानी ने फरमाया है— इख्वान' का रास्ता तरबियत या प्रशिक्षण का रास्ता है। यह रास्ता है जिस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगा सकता। अगर हमने अपने ऊपर धीरज रखा और पूरे विश्वास के साथ इस रास्ते पर चलना चाहा तो कोई ताकत उन्हे इस रास्ते से रोक नहीं सकती। जनाब तिलमिसानी के अनुसार—यदि 'इस्लाम की आवश्यकता के स्तर के व्यक्ति तैयार होते जाए तो सोचिए कि सत्ता किस के हाथ में होगी। उन्हीं प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियो मे से उलमा, जज, सैनिक अधिकारी, मत्री, प्रशासनाध्यक्ष नियुक्त होंगे और इन्शा अल्लाह वह क्रांति आकर रहेगी और जिसके लिए हम काम कर रहे हैं। (साप्ताहिक क्रांति २१-२७ नवम्बर १९८२)।

यह काम क्या कर रहे हैं यह विभिन्न पश्चिमी पत्रो के अनुसार जगजाहिर हो चुका है। लन्दन स्थित इस्लामिक कल्चरल सैण्टर ने तेल समृद्ध अरब देशों और खाडी देशों की आर्थिक सहायता से भारत के १२ करोड हरिजनो मे से ७ करोड को इस शताब्दी के अन्त तक मुसलमान बनाने की योजना बनाई थी, जिससे उस समय तक देश के मुसलमानो की गिनती २० करोड तक पहुच जाए। यह भी ज्ञात हुआ है कि १९८१ मे ५० हजार हरिजनो को मुसलमान बनाने की योजना थी, पर केवल १७ हजार हरिजन मुसलमान बन सके, सन १९८२ के अन्त तक दो लाख हरिजनों को मुसलमान बनाने की योजना है।

खेलकूद एवं क्रीडाओं का विकास : कुछ उपयोगी लक्ष्य

१९ नवम्बर से ४ दिसम्बर, १९८२ तक दिल्ली मे एशियाई खेल खेले गए। इन खेलों से देश की जनता मे एक नई चेतना व्याप्त हुई। ये क्रीडा प्रतियोगिताए करते हुए ये लक्ष्य भी सामने रखे जाए तो कितना अच्छा हो।

- खेल-कूद एव क्रीडा सम्बन्धी गतिविधियां इस प्रकार गठित की जानी चाहिए कि वे शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ खिलाड़ी के मानसिक एव धार्मिक विकास में भी सहायक सिद्ध हो सकें।
- खेल कूद-क्रीडाओं एव शारीरिक व्यायाम का उद्देश्य यह होना चाहिए कि खिलाडी में पाई जाने वाली शारीरिक अक्षमता दूर की जा सके और उसके अन्दर यह क्षमता पैदा की जा सके कि वह आपात कालीन एव सकटकालीन परिस्थितियों का सरलता से सामना कर सके।
- खेलकूद, क्रीडाओं एव शारीरिक व्यायाम का आयोजन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उससे आपसी हमदर्दी, बलिदान, वीरता और मेलजोल की भावनाए बढ़ाई जा सकें।
- क्रीड़ाएं और खेलकूद नैतिकता और शौर्य के ऐसे वातावरण मे होने चाहिए जिससे क्रीडा सम्बन्धी क्षमता की वृद्धि के साथ खिलाडी मानवता के श्रेष्ठ मापदण्डों का परिपालन कर सकें।
- ऐसे तमाम खेल और क्रीड़ाएं त्याग देनी चाहिए जिन्हें केवल दर्शकों के मनोरंजन के लिए खेला जाता है, परन्तु उनसे खिलाडियों के जीवन और आत्मा को संकट पैदा हो।

अकालियों की राजनीतिक मांगों के बारे में

सम्बद्ध राज्यों से विचार-विनिमय आवश्यक

नई दिल्ली। शुक्रवार २६ नवम्बर के दिन भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने दिल्ली गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के एक शिष्टमण्डल को सूचित किया कि अकालियों की राजनीतिक मांगो पर अलग-अलग से विचार नहीं किया

(शेष पृष्ठ ३ पर पढ़ें)

ऋषि निर्वाण उत्सव पर ओ३म् की पताका की वन्दना के अवसर पर

(बाए से) सर्व श्री सूर्यदेव, रामनाथ सहगल, सरदारीलाल वर्मा, सार्वदेशिक के प्रधान रामगोपाल शालवाले, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, चौधरी देशराज, ओम्प्रकाश आर्य, प्रिंसिपल ओम्प्रकाश आदि।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

कौन मनुष्य संशयरहित होकर मोक्ष को प्राप्त होता है

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।
सर्वभूतेष चात्मानं ततो न विचिकित्सति ।। यजु. ४०।६।।

दीर्घतमा ऋषि आत्मा देवता, निचृद-नुष्टुप् छन्द, गान्धार स्वर ।

पदार्थ—हे मनुष्यो ! [य] जो (विद्वान जन) [आत्मीनि] परमात्मा के भीतर [एव] ही [सर्वाणि] सब [भूतानि] प्राणियों (जीवो) अथवा अप्राणियो (अचतस्थ जड पदार्थो को)[अनु पश्यति] (विद्या, धर्म और योगाभ्यास करने) पश्चात् (ध्यानदृष्टि से) देखता है [च] और (जो) [तु:] पुनः [सर्वभूतेषु] सपूर्ण प्राणियों अथवा अप्राणियों अर्थात प्रकृति रूप जगत् में [आत्मानम्] परमात्मा को (देखता है) (वह विद्वान्) [ततः] तत्पश्चात [न] नहीं [विचिकित्सति] सशय को प्राप्त होता है ऐसा देख तुम जानो ।। (ऋषि दयानन्द भाष्य) ।

भावार्थ—हे मनुष्यो ! जो लोग सर्वव्यापी, न्यायकारी, सर्वज्ञ, सनातन, सब के आत्मा (सर्वान्तर्यामी) और सबके द्रष्टा परमात्मा को जान कर सुख-दु.ख हानि-लाभ मे सब प्राणियो को अपने आत्मा के तुल्य जान कर धार्मिक होते हैं वे ही मोक्ष को प्राप्त होते हैं ।।

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

अतिरिक्त स्पष्टीकरण—परमात्मा अवधिरहित अनन्त है इससे सब प्राणी (जीव) वा सम्पूर्ण प्रकृतिरूप जगत् उसमें वास करते हैं। और परमात्मा सूक्ष्म से सूक्ष्म है इससे सब जीवों का वह अन्तरात्मा है और सब जगत के अणु-अणु परमाणु-परमाणु मे भी व्यापक हो रहा है। जिस विद्वान् को धर्माचरण वा योगाभ्यास से ऐसा पूरे तौर पर ज्ञान हो जाता है और ऐसा अनुभव करता है वह किसी प्राणी से वैर नहीं करता है अपने सुख-दुःख के समान ही सब के सुख-दुःख को समझता है। और वह सब सशयों से रहित होकर, मोक्ष को प्राप्त होता है।

टिप्पणी-जीव वा ब्रह्म दोनों 'आत्मा' शब्द से ग्रहण किये जाते हैं, परन्तु ब्रह्म को सर्वोत्कृष्ट वा सब जीवो का अन्तर्यामी होने से परमात्मा कहते हैं। इस वेदमत्र मे आत्मा शब्द से ब्रह्म का ही ग्रहण किया गया है। 'भूत' शब्द से सब प्राणी जीव) वा सब प्रकृतिरूप जड पदार्थ अर्थात् सब पृथिव्यादि लोक, जल, वायु तेजादि तत्त्व वा अन्य सब जगत् वा जगदस्थ पदार्थ ग्रहण किए जाते हैं। इस वेदमत्र मे 'भूत'-शब्द से दोनो प्राणी वा अप्राणीरूप जगत् का ग्रहण किया गया है।

बोध-कथा

कभी सत्य को दबाऊंगा नहीं!

बरेली में स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों में ऊंचे राज्याधिकारी भी आया करते थे। स्वामी जी बिना भय और लिहाज के सत्यधर्म का प्रकाश करते थे। एक दिन व्याख्यान देते-देते स्वामी जी ने कहा—'अब तक आपने पुराणियों की लीला सुनी, अब किरातियों (ईसाइयों) की लीला सुनो। ये ऐसे भ्रष्ट हैं कि कुमारी के बेटा होना बताते हैं, फिर दोष सर्वज्ञ शुद्धस्वरूप परमात्मा पर लगाते हैं और ऐसा पाप करते हुए तनिक भी लज्जित नहीं होते।" इतना कहना था कि कलक्टर और कमिश्नर के चेहरे मारे गुस्से के लाल हो गए। स्वामी जी महाराज उसी तरह बोलते रहे। अगले दिन कमिश्नर ने उस कोठी के मालिक को अपने यहां बुलाया और कहा कि अपने पण्डित से कह दो कि बहुत सख्ती से काम न लिया करें। इस पर उस कोठी के मालिक स्वामी जी के पास पहुचे। कई मिनट तक सकोच करते रहे, कुछ न कह सके। बहुत हिम्मत करके केवल इतना कह सके—' महाराज, अगर सख्ती न की जाए तो क्या हर्ज है, इससे अंग्रेज भी नाराज न होगे और असर भी अच्छा पड़ेगा।"

स्वामी जी ने हंसकर कहा—"इतना गिड़गिड़ाता क्यों है! साहब ने यही कहा है कि तुम्हारा पण्डित सख्त बोलता है, कारखाने बन्द हो जाए गे। इसमें डरने की क्या बात है।" उसी दिन शाम के व्याख्यान मे स्वामी जी ने कहा—"लोग कहते हैं कि सत्य प्रकट न करो। कलक्टर क्रोधित होग, कमिश्नर अप्रसन्न होगा। गवर्नर पीडा देगा। अरे चक्रवर्ती राजा क्यो न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे।" इसके बाद उपनिषद के वाक्य का उल्लेख कर बोले—"आत्मा को न कोई हथियार छेद सकता है और न उसे कोई आग जला सकती है।" गर्जती हुई आवाज में बोले—"यह शरीर तो अनित्य है, इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना, असत्य बोलना और सत्य को छिपाना व्यर्थ है।" फिर चारों ओर तीक्ष्ण आंखों की ज्योति डालते हुए बोले—"वह सूरमा दिखलाओ—जो यह दावा कर सकता है कि मेरी आत्मा का नाश कर सकता है। मेरी आत्मा का कोई नाश नहीं कर सकता। मैं कभी सत्य को दबाऊंगा नहीं।"

—नरेन्द्र

उत्तर प्रदेश में अकाली गतिविधियां सहन नहीं होंगी

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

पिछले कुछ दिनों से उत्तर प्रदेश में भी साम्प्रदायिक अकालियों की गतिविधियों के समाचार आ रहे हैं। प्रदेश में बसे सिख बन्धुओं को यह समझ लेना चाहिए कि इस प्रदेश में इस प्रकार की गतिविधियां सहन नहीं होंगी। यदि उत्तर प्रदेश के सिख बन्धु देश-द्रोही अकालियों का साथ देते हैं और अकाली दल में सम्मिलित होते हैं तब उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि यहां अकालियों की काली करतूतों का मुंह तोड़ उत्तर दिया जाएगा।

इस प्रदेश के राष्ट्र भक्त हिन्दू शान्तिपूर्वक जीना चाहते हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि दूसरे प्रदेशों से आकर कुछ अराष्ट्रीय तत्त्व यहां के वातावरण को बिगाड़े और यहां के निवासी उसे सहन करते रहें। पाकिस्तान से बर्बाद होकर आने वालों का प्रदेश के हिन्दुओं ने अपना भाई समझ कर भरे हृदय और टपकते आंसुओं से स्वागत किया था, परन्तु यदि वे ही भाई 'सगे धर्म हिन्दु जगें भ्रम सारे' गुरु गोविन्दसिंह के इस उद्घोष के विरुद्ध हिन्दू विरोधिनी और देश-द्रोहात्मक अकाली गतिविधियों में भाग लेते हैं और पजाब से आने वाले अकालियों को किसी भी प्रकार का सहयोग और सहायता देते हैं तो उन्हें यह ध्यान भी रखना चाहिए, कि उत्तर प्रदेश पजाब नहीं है और न इसे पजाब बनने दिया जायेगा।

पिछले दिनों जिला नैनीताल के नानकमता गुरुद्वारे के निकट एक अकाली सम्मेलन भी किया गया तथा इसी प्रकार प्रदेश में कई अन्य स्थानों पर भी अकाली सम्मेलन हुए। इस प्रदेश के निवासी सभी सिख बन्धुओं से हमारा निवेदन है कि गुरुद्वारों को वे अकालियो को हिन्दू विरोधिनी और राष्ट्र-द्रोही राजनीतिक गतिविधियों के अखाड़े न बनने दें।

नैनीताल जिले के किछा नामक स्थान पर कोई पुराने अकाली गुरुबचनसिंह बड़े सम्पन्न किसान हैं। समाचार यह है कि उन्हीं के नेतृत्व में अकाली दल को उत्तर प्रदेश में सुनियोजित ढग से सगठित करने के प्रयत्न हो रहे हैं। पजाब से आने वाले समाचारों मे बताया गया है कि सन्त लगोवाल ने इस दिशा में उचित निर्देशों तथा सहायता के साथ शिरोमणि अकाली दल के नेताओं को उत्तर प्रदेश भेजा है।

सिख भाइयों को मैंने इस वक्तव्य में इसलिए सम्बोधित किया है, क्योंकि अकाली सिखो को ही प्रभावित करेंगे और सिख ही अकाली दल में सम्मिलित हो सकते हैं, अन्य कोई नहीं। यदि उत्तर प्रदेश में 'राज्य करेगा खालसा, बाकी रहे न कोय' के नारे लगे तो हम उसका उत्तर में 'राज्य करेंगे आर्य, शेष रहे नहीं कोय' के उद्घोषों से देंगे। राम-कृष्ण की पवित्र भूमि ब्रज-कोशल का यही उद्घोष होगा।

प्रदेश और केन्द्र सरकारो को भी हम सावधान कर रहे हैं, वह भी समय रहते सचेत हो जाएं। यदि प्रदेश मे स्थिति बिगड़ती है तो उसका दायित्व प्रदेश में बसे हुए सिखों पर तो होगा ही—सरकार भी इस दायित्व मे बच न सकेगी। हम बलिदानों को तैयार हैं।

पजाब की जैसी स्थिति यहां नहीं बनने दी जाएगी और इसके लिए बलिदानों की यदि आवश्यकता होगी तो उससे भी हम पीछे नहीं हटेंगे। बलिदानियों की लम्बी पंक्ति होगी तथा उस पंक्ति में सबसे आगे स्वयं मैं होऊंगा।

सच्चिदानन्द प्रभु सबका सहारा

—श्री ब्रह्मानन्द जिज्ञासु

हमारा ओ३म् सच्चिदानन्द प्रभु सब का सहारा है।
वही आराध्य हम सब का, वही जग का आधारा है।।
वह प्रभु सृष्टि करता है, वही है जग का पालनकर्त्ता।
वही है प्रेम का भगवन्, वह प्रभु सबमें न्यारा है।।
वह दुष्टो का दलन करता, और भक्तों को है देता त्राण।
वह पापी के लिए निष्ठुर, व उनको खूब मारा है।।
हमारा ओ३म् सच्चिदानन्द प्रभु सब का है न्यायकर्त्ता।
इसी से न्यायी कहलाता, वह भक्तों का दुलारा है।।
हमारा ओ३म् है सर्वाधार, व सब का है महारक्षक।
वही है मुक्ति का दाता, व भक्तों को उबारा है।।
हमारा ओ३म् है निर्विकार व अवनि का पोषणकर्त्ता।
वह अनुपम औ' दयालु है, वही प्रभु सब का प्यारा है।।
हमारा ओ३म् सच्चिदानन्द प्रभु, सबका सहारा है।
वही आराध्य हम सब का, वही जग का आधारा है।।

हमारा मन शिव-संकल्पों वाला हो !

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

यजु. ३४.१

मेरा मन जो जाग्रत या स्वप्नावस्था में दूर-दूर जाता है, सब ज्योतिर्मय तत्त्वों से बढ़कर जो ज्योति देता है, उसे बुद्धिमान लोग दर्पण के समान मानते हैं, वह मेरा मन शिव-शुभ संकल्पों वाला हो।

ओ३म्
आर्य सन्देश

व्रत भारत रक्षा का लीजिए !

पुरानी कहानी है। किसी पिता की अनेक सन्तानें थीं, वे सन्तानें सदा लड़ती रहती थीं, माता-पिता का कहना अनसुना कर वे लड़ने-भिड़ने में ही लगी रहती थीं। पिता का अन्तिम समय आ गया, उन्होंने अत्यन्त दुःखी होकर अपने सब लड़कों को अपनी शय्या के पास बुलाया; बुलाकर कहा—"मेरा अन्तिम समय आ गया है। जाने से पहले अन्तिम सीख दे जाना चाहता हूं। एक अच्छी गुथी हुई मजबूत रस्सी ले आओ।" रस्सी आ जाने पर उन्होंने कहा—'सब मिलकर इस रस्सी को तोड़ो।' वे अनन्त प्रयत्न के बावजूद उस रस्सी को तोड़ न सके। इसके बाद उन्होंने अपने बेटों को कहा—यह रस्सी अलग-अलग धागों में बांट दो और अब इन धागों को तोड़ दो। क्षण भर में वे धागे टूट गए। गुथी हुई मजबूत रस्सी अलग-अलग होकर क्षण-भर में टूटकर पृथक हो गई। आज हमारे भारत की स्थिति भी विभिन्न धागों में पृथक हुई रस्सी के तुल्य है। पश्चिमोत्तर के सिख पृथक खालिस्तान चाहते हैं, असम, मिजोरम, नगादेश आदि पूर्वोत्तर के छोटे-छोटे प्रदेश भारत को भूलकर अलग-अलग अपनी खिचड़ी पका रहे हैं।

पिछले दिनों गोआ में स्थानीय जनता ने व्यापक प्रदर्शन कर माग की थी कि वहां पृथक विशाल गोमान्तक प्रदेश की स्थापना की जाए। उन्होंने वहां प्रदेश में काम कर रहे कर्नाटक के श्रमिकों के साथ ज्यादती भी की। इस स्थिति की देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कड़ी निन्दा करते हुए घोषणा की है कि समस्त देशवासियों को देश के किसी भी भाग में बिना किसी भेद भाव के कार्य करने का अधिकार है। किसी प्रदेश या क्षेत्र का स्थानीय जनता के लिए सरक्षित या सुरक्षित नहीं किया जा सकता। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, गोआ आदि विशाल क्षेत्रों में यदि बाह्य जनता को काम करने से रोक दिया जाए तो वहां के बहुत से काम ठप्प पड़ जाए। इन नगरों में तथा अनेक प्रदेशों में अधिक अधिकारों की माग निरन्तर की जाती रही है। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी तथा कई क्षेत्रीय दल भारत में सुदृढ़ केन्द्रीय शासन का अन्त कर प्रदेशों को अधिक स्वायत्त अधिकार देने की मांग कर रहे हैं। पिछले दिनों मार्क्सवादी कम्युनिस्ट दल के एक प्रवक्ता घोषित कर चुके हैं कि भारत में एक राष्ट्रीयता नहीं है, प्रत्युत यहां अनेक राष्ट्रीयताओं का आवास है।

आज स्थिति इतनी कठिन एवं गम्भीर है कि केवल केन्द्रीय शासन एवं प्रदेशों की सरकारों के भरोसे समस्या का समाधान होता दीखता नहीं। आज देश के प्रत्येक जागरूक राष्ट्र भक्त प्रजाजन को देश की अखण्डता और भारत रक्षा का व्रत एवं सकल्प ग्रहण करना होगा। अब समय आ गया है कि हम पृथकतावादी तत्त्वों को खुलकर राष्ट्रद्रोही घोषित करें और देश एवं प्रदेशों में अराजकता एवं अशांति उत्पन्न करने वाले घटकों का सयुक्त एवं सन्नद्ध होकर मुकाबला करें। चण्डीगढ़ के एक पुस्तकालय में एक बात कुछ इस प्रकार लिखी गई है—"जिंदगी की लड़ाइयां शक्तिशाली या तेज दौड़ने वालों से नहीं जीती जातीं पर जल्दी या देर में वह आदमी जीतता है जो आदमी सोचता है कि वह जीतेगा।' यहां आदमी के स्थान पर राष्ट्र शब्द का प्रयोग करें तो बात कुछ इस प्रकार समझी जा सकती है कि जल्दी या देर में वही राष्ट्र जीतेगा जो राष्ट्र सोचेगा कि हमें जीतना है। हमें न केवल जीतना है, सम्मानपूर्वक जीवित रहकर विजय पाकर निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर होना है।

चिट्ठी-पत्री

हिन्दी का विरोध राष्ट्रद्रोह

भारत वर्ष को स्वतन्त्रता प्राप्ति के ३५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं परन्तु हमारी राष्ट्र भाषा को वह सम्मान अभी भी प्राप्त नहीं हुआ है जो सवैधानिक दृष्टि से स्वीकार किया गया है। खेद है कि भाषावाद के नाम पर क्षेत्रीयतावाद की सकीर्ण भावनाओं को व्यक्त कराकर क्षुद्र राजनीतिज्ञ अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। हिन्दी हमारे देश की ही बहुसख्यक नागरिकों की भाषा नहीं रह गई है अपितु विदेशों में भी इसका व्यापक प्रचार व प्रसार हो रहा है, परन्तु जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं वे राष्ट्रद्रोह का कार्य कर रहे हैं।

—सुरेशचन्द्र शास्त्री, महामन्त्री, आर्य युवक सभा, ६२६ मुट्ठीगज, प्रयाग।

धर्माचार्यों के जघन्य अपराध

धर्माचार्यों के ये जघन्य अपराध हैं

१. जन्मजात वर्ण व्यवस्था को स्वीकार कर स्त्री जाति (मातृशक्ति अर्थात् माता निर्माता भवति) तथा शूद्रों को वेदाध्ययन से वंचित रखना।

२ स्त्री को नरक का द्वार बतलाना।

३. असत् मिथ्यावाद का प्रचार कर राष्ट्र की क्षात्र भावना का नाश करना तथा निष्कर्मण्यता को प्रोत्साहन देना।

४ अपने आपको ब्रह्म घोषित कर भयकर मिथ्या ज्ञान का प्रचार करके मानव समाज की बुद्धि भ्रष्ट करना।

५. अपने मत की स्थापना करने के लिए प्राचीन ऋषि मुनियों की निन्दा करना। —प्रो. धर्मेन्द्र धींग्रा, ओंकार कुंज, खारीवाव मार्ग, बड़ौदा-३९०००१

अकालियों की राजनीतिक मांगें ···

(पृष्ठ १ का शेष)

जा सकता, क्योंकि उन समस्याओं का समाधान करते हुए उनके बारे में सम्बन्धित राज्यों से विचार-विमर्श करना आवश्यक होगा। केन्द्र ने अकालियों की राजनीतिक मांगें स्वीकार कर ली हैं, परन्तु अकालियों ने उन धार्मिक मांगों के साथ कुछ राजनीतिक मांगें भी मिला दी हैं, फलत गतिरोध पैदा हो गया है। इतनी बात स्पष्ट है कि अकालियों की राजनीतिक मांगों के बारे में सम्बन्धित पक्षों से परामर्श किए बिना केन्द्र कोई भी निर्णय नहीं कर सकता।

राष्ट्र को एक सुदृढ़ केन्द्र की आवश्यकता

श्रीमती गांधी ने यह घोषणा भी की कि अकालियों की मांगों के बारे में समाधान प्राप्त करने के लिए वह किसी से भी चर्चा करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि आज देश को सुदृढ़ केन्द्र की अपेक्षा है। यदि केन्द्रीय शासन कमजोर होगा तो कोई भी नई उलझनें पैदा कर सकेगा। यदि देश मजबूत हो, तभी हम सामान्य भारतीय जनता के लिए कुछ कर सकते हैं। वस्तुतः केन्द्र और राज्यों के मध्य कोई संघर्ष नहीं है।

कन्या, कन्यादान और दहेज

भारतीय संस्कृति आर्य संस्कृति का ही प्रतीक है। आर्य संस्कृति ने सन्तति उत्पत्ति मे कन्या-जन्म ऐश्वर्य और गौरवमयी गृह लक्ष्मी अवतरण आध्यात्मिक सुख समृद्धि का शुभ मुहूर्त स्वीकार किया। नारी मानवीय आकांक्षाओं की केन्द्र बिन्दु 'सर्वत्र मोक्षदात्री जननी के स्वरूप मे आदरणीया ही नहीं वरन् मातृऋण से ऋणीजनो ने नतमस्तक हो प्रथम आचार्य के रूप मे स्वीकार की है। वे जानते थे कन्या भगिनी रूप मे भ्रातृत्व कि धर्म, कन्यादान मे पुत्री अर्थ पत्नी कामदात्री और माँ, जननी के आवरण मे साक्षात् मोक्ष प्रदत्ता है

कन्यादान भारतीय संस्कृति मे सर्वोत्तम गृहस्थाश्रम का प्रारम्भिक सुन्दर यज्ञमय संस्कार था। उत्तम ...ओं से अलंकृत सुन्दर परिवेश में, व्यक्तिगत सामाजिक स्वतन्त्रता का भाव बढ़ा दी है। कन्यादान मे धन की कामना ही दहेजरूपी विषधर की विकराल फुंकार है। इसने समाज के असंख्य ज्ञात, अज्ञात युवक-युवतियों की जीवन-लीला को समाप्त कर दिया है।

गम्भीर चिन्तन और मनन से मृत्यु और जीवन के अन्तंद्वन्द्व की भीषण विभीषिका का मूल कारण नारी के सम्मान, श्रद्धा और आदर का अभाव है। नारी-अपमानका मुख्य कारण समाज में नारी संख्या का बाहुल्य है। नारी बाहुल्य, समाज में पुरुषत्वहीनता कामवासना दुर्बलेन्द्रियता कामुकता और अनैच्छिक सम्भोग का कारण है। इस कामवासना को तृप्ति के लिए आकर्षण और धन की आवश्यकता पूर्ति की युक्ति दहेज की जन्म दात्री है।

कन्यादान में दिया गया धन प्रारम्भ मे देने वाले के प्रेम का प्रतीक था, आज कन्या के साथ देयधन पराकाष्ठा की सीमा का उल्लंघन है बलात् अधिग्रहण है क्योंकि पुत्र की शिक्षा का मूल्य इसी धन से सम्मानित और गौरवान्वित होता है तथा समाज में कीर्ति अर्जित की भावना अपार धन प्राप्ति मे ही व्याप्त है इसलिए दहेज प्रेममय दान नही है।

यह जानते हुए कि 'दहेज' भयकर क्षय रोग है, फिर भी समाज इसको प्रोत्साहित करता है। प्रोत्साहन मे समाज के शोषण द्वारा संचित काले धन की महत्ता है। उसके बल पर वे ... भाग्य को स्वयं अपने रूढ़िवादी, स्वार्थी माँ-बाप का सौंप कर शिक्षा और विद्वता को अपमानित करने में तनिक भी लज्जित नहीं होते। युवक-युवतियों की इस उपेक्षित प्रकृति से रूढ़िवादी धर्मान्ध धनलोलुप भावना को प्रोत्साहन स्वाभाविक और प्राकृतिक है।

बिटिया जन्म से ही उपेक्षित, तिरस्कृत, भेदभाव, की शिकार बनी ज्यों ज्यों यौवनावस्था में पदार्पण करती, त्यों-त्यों चूषित, चिन्तित विचार श्रृंखलाओं में अपने स्वप्न, कल्पनाओं और अरमानों की उड़ान उड़ती है। धन के अभाव में इस निर्धन बिटिया का कन्यादान अयोग्य वर को करना उसके अरमानो की चिन्ता को अग्नि समर्पित करना है। सुन्दर योग्य कन्या को काले कुरूप कुपात्र को देने पर उसके हृदय में क्या बीतती होगी, यह अनुभव उस बेचारी कन्या को ही है जो इसकी भुक्तभोगी है। पारिवारिक कलह और अशान्ति को जन्म, शंका और सन्देह की दृष्टि उत्पन्न कर पति-पत्नी प्रेम की आहुति स्वस्थ गृहस्थ की संरचना की भावना पर ही नहीं वरन् अनच्छिक शिशु के विकास पर प्रभाव पड़ता है। शंकित और सदिग्ध जीवन, उपेक्षा, घृणा और अपमान तथा शारीरिक यातनाओं की पराकाष्ठा पति पत्नी जीवन में विघाड के बीज अंकुरित करके मुक्ति मार्ग निरूपण को विवश करती है। सम्बन्ध विच्छेदक की वैधानिक प्रक्रिया मे लम्बी अवधि का भय शीघ्र मुक्ति पत्नी की मृत्यु अथवा पति की जीवन लीला की शीघ्र समाप्ति ही है।

कन्यादान मे दहेज देने की क्षमता का अभाव मध्यवर्गीय परिवार के पिता की चिन्ताओ का विषय है। आश्वासन और प्रलोभन से योग्य कन्या के लिए शिक्षित वर व परिवार को सम्बन्ध के लिए सन्तुष्ट तो कर लिया जाता है, किन्तु पिता की मान मर्यादा झूठ और धोखा खुलने पर धूल धूसरित हो जाती है। इस अपमान का धक्का उसके हृदय गति पर पडता है और हृदय गति में अवरोध मृत्यु शय्या की शोभा बनकर रह जाता है। इस अभागे पिता की अभागी कन्या का जीवन अस्थिर हो अनिश्चित हो जाता है। वर परिवार में वह तीखे प्रहार, कटाक्ष, फिर अश्रद्धा-उपेक्षा और अन्त में यातनाओं से सताई जाती है। भूखी प्यासी कन्या सुन्दर शरीर और जीने की आशा से निराश अहित की कामना करती, चिन्ता और शोक में तड़पती बिलखती जीवन की एक-एक घड़ी को गिनती है। पत्नी, शिशु की घृणा से, घृणित जीवन जीने की अपेक्षा मरना बेहतर समझती है। यह दिग्दर्शन 'दहेज' रहित कन्यादान संस्कार का है।

असीमित धन दहेज दिये जाने के परिणाम भी प्रायः वही है जो निर्धन की कन्या के कन्यादान में धन न मिलने के हैं। दहेज देने की व्यवस्था में जब पिता वर मांगने के लिए चिन्तित, व्याकुल अपनी पैतृक सम्पत्ति, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पारिवारिक शान्ति को गिरवी रखकर संस्कार को सम्पन्न करने की क्षमता बनता है, तब विवेकशील शिक्षित कन्या की मन:स्थली उद्वेलित हो उठती है। वह अपने जीवन को पितृ-परिवार पर संकट की घड़ी का निर्मा‍ण समझती है जब वह बेघरबार परिवार की अस्त व्यस्तता, अपने भाई बहिनों की भावी दुर्गति, मां बाप की चिन्ता के दुष्परिणामों की कल्पना करती है तो अपना जीना अभिशाप समझकर आत्महत्या कर संकट की विभीषिका को टाल देती है।

प्राय: यह भी होता है अधैर्य और निराशा से भयभीत पुरुष अपने प्राणों तक को छोड़ देते हैं। कन्यादान से पूर्व ही कन्या व परिवार को विधाता की दया का भिखारी बना देते हैं। साहसी और धैर्यवान पुरुष सब कुछ देकर भी कन्या को मुंह मांगा दहेज देकर वर मांग भरते हैं।

यह निर्विवाद सत्य है कि अपार धन दहेज में देने वाले काले धन के धनी समृद्ध, सुखी परिवार की संरचना नहीं करते, वे तो अपनी काली, कुरूपा अशिक्षित कन्या के लिए वह खरीदते हैं। यदि वह गुलाम है तो गुलाम की मां दासी और बहन सेविका से अधिक सम्मान नहीं पाती है, क्योंकि धनी की बिटिया का भाग्य विधाता और भावी निर्माता धन है। वह उसकी मालकिन की भूमिका निभाती है। पारिवारिक, पारस्परिक प्रेम और सद्भाव का अभाव सर्वत्र व्याप्त रहता है।

लेखक .
गजराजसिंह, एडवोकेट, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

परम पवित्र कन्यादान संस्कार को दहेज शब्द ने अपवित्र कर दिया है यह संस्कार कन्यावध, अथवा वध संस्कार बनकर रह गया है। दहेज रहित संस्कार जितना भयंकर है उससे भी कहीं अधिक वीभत्सपूर्ण दहेज सहित संस्कार है जिनके समान परिणाम हैं। इन जघन्य निरीह निर्दोष शिशुओं की तड़पती आत्माओं की कराहती आहें और दुखी दम्पति की आशाओं की जलती चिताओं तथा पति द्वारा पत्नी हत्या तथा पति वध की प्रचलित प्रथा का उत्तरदायित्व ही उपचार मात्र है।

हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता

उपचार केवल शासन की दण्ड व्यवस्था नहीं है। इसके लिए हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता है। पूर्व जन्मों के शुभ कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त इस मानव शरीर का सौदा करने से पूर्व यदि भयंकर परिणामों पर विचार करें तो अमानवीय जघन्य अपराधों के प्रति घृणा उत्पन्न होने से अपनी सन्तानों को पौष्टिक आहार, शुद्ध विचार और सद्व्यवहार से बलिष्ठ परिपूर्ण ब्रह्मचारी का सुयोग्य सुशील सुलक्षणा कन्या के साथ पाणिग्रहण कन्या जन्म को सफल करके नारी सम्मान की पुनः स्थापना

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेदों की वीणा बजा रहे हम किसके बल पर ?

—डा० रामनाथ वेदालंकार

स्वामी दयानन्द १९वीं शताब्दी ईस्वी के भारतीय गगन में एक महान् समाज-सुधारक, धर्म-प्रचारक और वेदोद्धारक आदित्य के रूप में उदित हुए। उनकी समस्त समाज-सुधारक-योजना वेदों का आधार लेकर चली। जो वेदानुकूल है उसे उन्होंने मान्यता दी और वेद-प्रतिकूल को त्याज्य घोषित किया। परन्तु क्या वेदानुकूल है और क्या वेद-प्रतिकूल है, इसका विवेक कैसे हो? दण्डी स्वामी विरजानन्द से अध्ययन कर चुकने के पश्चात् स्वामी दयानन्द का कार्यकाल सन् १८६३ से १८८३ तक लगभग बीस वर्ष, रहा। इस बीच के अपने व्याख्यानों, वार्तालापों और शास्त्रार्थों से वेदानुकूल का प्रचार और वेदविरुद्ध का खंडन करते रहे। सायण, महीधर आदि के वेदभाष्यों से उन्हें संतोष न था। अतः बाद में उन्होंने स्वयं चारों वेदों का भाष्य करने की योजना तैयार की।

प्रथम ऋग्वेद-भाष्य का उपक्रम करना था। किन्तु उसे आरंभ करने से पूर्व महर्षि दयानन्द ने वेद-भाष्य के नमूने का अंक प्रकाशित किया, जिसमें ऋग्वेद के प्रथम सूक्त का भाष्य किया था। उसे उन्होंने अनेक विद्वानों के पास सम्मत्यर्थ भेजा जिससे यदि कोई शंका करें तो उसका उत्तर देकर ही आगे भाष्य में प्रवृत्त हुआ जाए। इसमें कुछ मन्त्रों में अग्नि के अर्थ परमेश्वर और भौतिक अग्नि दोनों किए गए थे। अग्नि का अर्थ परमेश्वर करने पर उस समय वेदों के विद्वान् माने जाने वाले कई व्यक्तियों ने अपनी असहमति प्रकट की थी, जिनमें क्वीन्स कालेज बनारस के प्रिंसिपल ग्रिफिथ तथा संस्कृत कालेज कलकत्ता के कार्यवाहक प्रिंसिपल पं० महेशचन्द्र न्यायरत्न प्रमुख थे। पं० महेशचन्द्र के आक्षेपों का उत्तर महर्षि ने अपनी 'भ्रान्तिनिवारण' नामक पुस्तक में दिया है। क्रमशः वेद-भाष्य प्रस्तुत करने से पूर्व महर्षि ने एक विस्तृत भूमिका 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' नाम से लिखी, जिसमें अपनी वेद-विषयक मान्यताओं की विस्तार से सप्रमाण स्थापना की। यह भूमिका संवत् १९३३ (सन् १८७६) में लिखी गई। इस पर राजा शिवप्रसाद ने कतिपय आक्षेप किए थे, जिनका उत्तर स्वामी जी ने अपनी भ्रमोच्छेदन पुस्तिका में दिया है।

संवत् १९३४ मार्गशीर्ष शुक्ल ६ (सन् १८७७) को ऋग्वेद-भाष्य का आरम्भ हुआ। पश्चात् पं० गोपालराव हरि देशमुख के प्रस्ताव पर ऋग्वेद के साथ ही साथ यजुर्वेद का भाष्य करने के लिए भी स्वामी जी सहमत हो गए। यजुर्वेद-भाष्य करने के प्रस्ताव में यह कारण रहा होगा कि सर्वत्र यजुर्वेदीय कर्मकांड का अधिक प्रचार था, जिसमें पशु-बलि आदि सम्बन्धी भ्रान्तियां भी थीं। उक्त प्रस्ताव के अनुसार ऋग्वेद-भाष्य के साथ-साथ संवत् १९३४ पौष शुक्ला १३ (सन् १८७७) को वाजसनेयी माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद संहिता का भाष्य भी स्वामी जी ने प्रारम्भ कर दिया। ऋग्वेद भाष्य मण्डल ७, सूक्त ६१ मन्त्र २ तक ही हो पाया, किन्तु यजुर्वेद भाष्य सम्पूर्ण हो गया। अपनी निर्वाण-प्राप्ति से दो मास एक सप्ताह पूर्व स्वामी जी ने मुंशी समर्थदान को एक पत्र में लिखा था कि यदि ईश्वर ने चाहा तो एक वर्ष में शेष ऋग्वेद का भाष्य पूरा हो जायेगा और एक या डेढ़ वर्ष सामवेद और अथर्ववेद के भाष्य में लगेगा।

अपने वेदभाष्य के विषय में महर्षि का कथन है कि ब्रह्मा से लेकर याज्ञवल्क्य, वात्स्यायन, जैमिनी पर्यन्त ऋषियों ने जो ऐतरेय, शतपथ आदि भाष्य रचे थे, पाणिनि, पतञ्जलि यास्क आदि महर्षियों ने जो वेद-व्याख्यान और वेदांग निर्मित किए थे, जैमिनी आदियों में जो वेदों के उपांग षट् शास्त्र बनाये थे और इसी प्रकार जो उपवेद तथा वेदों की शाखाएं रची थीं, उनकी सहायता लेते हुए मैं अपने भाष्य में सत्य अर्थ का प्रकाश कर रहा हूँ, कोई भी बात अप्रामाणिक और कपोल-कल्पित नहीं लिख रहा हूं। इस भाष्य का फल क्या होगा उसका उत्तर देते हुए अपनी भाष्य-भूमिका के भाष्यकरण-शंका-समाधानादि विषय में वह लिखते हैं कि रावण, उवट, सायण-महीधर आदियों ने जो वेदविरुद्ध भाष्य किए हैं और उन्हीं का अनुसरण करते हुए इंग्लैंड व जर्मनी देश में उत्पन्न यूरोप खंड निवासियों ने अपने-अपने देश की भाषाओं में जो स्वल्प व्याख्यान किए हैं तथा उन्हीं की देखा-देखी आर्यावर्तदेशस्थ किन्हीं लोगों ने आर्यभाषा में जो व्याख्यान किए हैं और किए जा रहे हैं, वे सब अनर्थ से भरे हुए हैं, ऐसा सज्जनों के हृदयों में यथावत् प्रकाश हो जाएगा और उन टीकाओं में क्योंकि दोष अधिक है, अतः

उनका त्याग किया जा सकेगा।

महर्षि की वेद सम्बन्धी धारणाएं

वेद विषय में स्वामी दयानन्द की प्रमुख धारणाए, जो उनके ग्रन्थों से ज्ञात होती है, इस प्रकार हैं—

१ ऋग्वेद (शाकल), यजुर्वेद (वा० मा० शुक्ल यजुर्वेद-संहिता), सामवेद (राणायनीय), अथर्ववेद (शौनकीय) ये चार ही मूल वेद सहिताए हैं। इतर ११२६ शाखाए इनकी व्याख्यानभूत हैं। ब्राह्मण ग्रथ, आरण्यक, उपनिषदें वेद नही हैं, अपितु वेद-व्याख्यान-ग्रन्थ हैं। ईश्वरोक्त, अतएव स्वत प्रमाण, केवल चार वेद ही हैं, शेष वैदिक साहित्य परत-प्रमाण हैं अर्थात् वेदानुकूल होने पर ही प्रमाण हैं।

२. वेद नित्य है, प्रलय हो जाने पर भी ईश्वर के ज्ञान में रहते हैं। सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरस् नामक ऋषियों के हृदयो मे क्रमश ऋग्, यजु, साम और अथर्व वेदो का परमेश्वर ने प्रकाश किया है। वेद उस ज्ञान का नाम है। वेद की पुस्तको को वेद इस कारण कहते हैं, क्योकि उनमें वह ज्ञान लिखा रहता है।

३. वेदों में मूलोद्देशतः सब विद्याए हैं। यथा, ब्रह्मविद्या, सृष्टिविद्या भूगोलविद्या, खगोलविद्या, गणितविद्या, योगविद्या, मुक्तिविद्या, नौविमानादिविद्या, तारविद्या, आयुर्वेदविद्या, पुनर्जन्मादिविद्या, राजप्रजाविद्या, वर्णाश्रमविद्या, यज्ञविद्या, शिल्पविद्या, धनुर्विद्या, वाणिज्यविद्या, कृषिविद्या आदि।

४ वेदों मे अनेक देवों की पूजा का वर्णन नही है, प्रत्युत अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र आदि देव एक ही परमेश्वर के विभिन्न गुणो को बताने वाले नाम हैं। साथ ही वे श्लेषालकार आदि द्वारा विभिन्न क्षेत्रो मे अग्नि, सूर्य, विद्युत, आत्मा, प्राण, राजा, सेनापति, वैद्य, विद्वान आदि अर्थों को भी देते हैं।

५ वेदो के शब्द यौगिक हैं, किसी एक ही अर्थ मे रूढ़ नही है। इस कारण वे अनेक अर्थों को प्रकट करने मे समर्थ हैं। यह आग्रह करना उचित नहीं है कि लोक मे किसी शब्द का जो अर्थ है, केवल वही सर्वत्र वेद मे भी अभिप्रेत है।

६. वेदों मे किन्हीं ऋषियों, राजाओं नगरियो, नदियो आदि का इतिहास नही है। ऐतिहासिक प्रतीत होने वाले नामों का यौगिक अर्थ है।

७. वेदों में पशुबलि, नरबलि, मांस-भक्षण, पर-स्त्री-गमन, आदि अमानवोचित कार्यों का समर्थन तथा अश्लील बातें नहीं हैं। जो वेदभाष्य इनका समर्थन करते हैं वे भ्रान्त हैं।

८. वेदार्थ करते हुए पूर्वकृत विनियोगों का अनुसरण करना अनिवार्य नहीं है। उनसे स्वतन्त्र होकर भी वेदार्थ किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त वे ही विनियोग स्वीकार करने योग्य हैं, जो युक्तिसिद्ध, वेदादि प्रमाणो के अनुकूल तथा मन्त्रार्थानुसारी हैं।

९. वेद पढ़ने का अधिकार मनुष्यमात्र को है। स्त्री, शूद्र आदि को उससे वंचित रखना न्याय नहीं है।

१०. वेदों में पितृयज्ञ से जीवित पितरों की पूजा अभिप्रेत है, मृतो की नहीं।

११. ऐसे कोई देवता-विशेष वेदों को अभिमत नहीं है, जो ऊपर कहीं स्वर्ग में रहते हैं तथा जिनके असुरों से युद्ध होते हैं। न ही वेदोक्त आर्य और दस्युओं (दासो) के युद्ध से आर्य और द्रविड़ जाति के मध्य होने वाले कोई ऐतिहासिक सग्राम अभिप्रेत हैं। देव या देवता शब्द समाज में विद्वानों का वाचक है। माता-पिता, अतिथि आचार्य आदि विद्वज्जन देव हैं। इसके अतिरिक्त दिवु धातु के विभिन्न अर्थ जिनमें घटित होते हैं, वे ईश्वर, आत्मा, प्राण, इन्द्रिय, सूर्य, चन्द्र आदि भी देव हैं।

१२. वेदों के सविता, सूर्य, विष्णु आदि तथा उषा अदिति, सरस्वती आदि पुंलिगी और स्त्रीलिंग देवता जैसे किन्हीं प्राकृतिक पदार्थों के वाची हैं, वैसे ही विशिष्ट पुरुषो और स्त्रियों के वाची भी हैं। अतः वेदो मे प्राकृतिक पदार्थों के ज्ञान के साथ समाज शास्त्र का भी उत्कृष्ट वर्णन है।

वेदार्थ की अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ, अधिभूत, आदि प्रक्रियाएं पहले से ही प्रचलित थीं, जिनके अनुसार एक ही वेदमन्त्र के विभिन्न अर्थ किए जाते थे। फिर भी अधिकांश भाष्यकारों ने वेदों को याज्ञिक प्रक्रिया तक ही सीमित रखा और उनकी धारणा थी कि अग्नि, इन्द्र, अश्विनी आदि देवता याज्ञिय हवि से प्रसन्न होकर यजमान को पुत्र, पशु-धन आदि प्रदान करते हैं; यही वेदमंत्रों का प्रयोजन है। स्वामी दयानन्द ने इस कूप-मण्डूकता से हमें निकाल कर वेदों का व्यापक रूप हमारे सम्मुख प्रकट किया। वह श्लेष और वाचकलुप्तोपमा अलकारों का आश्रय लेकर प्राय. वेदमन्त्रों के पारमार्थिक और व्यावहारिक दोनो प्रकार के अर्थ करते हैं। पारमार्थिक प्रक्रिया के अन्तर्गत वह ईश्वर जीवात्मा, प्राण आदि परक अर्थ ग्रहण करते हैं और व्यावहारिक प्रक्रिया में शिल्पशास्त्र, भौतिक विज्ञान, भूगोल, खगोल, वर्णाश्रम-धर्म, राजप्रजा-धर्म आदि को प्रपंचित करते हैं। वेदमंत्रों के व्यावहारिक अर्थ करना महर्षि दयानन्द की एक विशेष देन है, जिसका प्राचीन आचार्य सकेत मात्र करके ही रह गये। दयानन्द द्वारा पल्लवित की गई इस व्यावहारिक प्रक्रिया का आश्रय लेने पर वेद की उषा केवल प्राची में छिटकने वाली प्राकृतिक उषा न रहकर गृहस्थाश्रम में ज्ञान और तेजस्विता की अपूर्व आभा के साथ जगमगाने वाली तथा अन्यों को भी ज्ञान, सदाचार आदि की ज्योति से जगमग करने वाली नारी हो जाती है। वेद की गौ विदुषी स्त्री का रूप धारण कर लेती है। वेद का अग्नि यन्त्रों तथा यानों को चलाने का साधन भौतिक शिल्पाग्नि तथा विद्वान पुरुष बन जाता है। वेद का इन्द्र राष्ट्र के सम्राट के रूप में प्रकट हो जाता है। वेद के अश्विद्वय अध्यापक-उपदेशक, सभाधीश-सेनाधीश प्राण-अपान आदि अर्थों का चोगा पहन कर मुस्कराने लगते हैं। वेद का रुद्र कैलासवासी महादेव न रहकर उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय-कर्ता परमेश्वर, प्राण, वैद्य, सेनापति आदि के चेहरों में हमारे सम्मुख प्रकट होता है। यह सब अनोखे जादूगर दयानन्द की जादुई छड़ी से ही सभव हो सका है। आज जो हम वेद-वीणा की नई-नई रागिनियां निकाल रहे हैं, वह उसी अनुपम कलाकार दयानन्द की शिक्षा का फल है। उस दिव्य कलाकार को हमारा शत-शत प्रणाम।

पता : ६/११६ फूल बाग पंतनगर (नैनीताल)

आर्य जगत् समाचार

देश के हिन्दू पंजाब के हिन्दुओं के साथ

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव कुर्सी युद्ध

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के तत्वावधान मे आयोजित ऋषि निर्वाणोत्सव पर गुड़गांव की जनता ने एक प्रस्ताव द्वारा अकालियों के १९७३ ई० के आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को धर्म युद्ध के स्थान पर सत्ता को प्राप्त करने के लिये कुर्सी युद्ध की सज्ञा दी। अकाली सच्चे गुरुओं की शिक्षा की अवहेलना कर अपनी राजनैतिक महत्त्वाकाक्षा की पूर्ति के लिए सदियों के केशधारी व सहज धारियों की मित्रता व प्रेम को वैमनस्य व घृणा में बदल रहे हैं।

राष्ट्र विरोधी कार्यों की यह सम्मेलन घोर निन्दा करता है। पजाब के ४८% हिन्दू आत्म रक्षा स्वय करें। भारत का समस्त हिन्दू समुदाय पजाब के अल्पसख्यक हिन्दुओं के आत्म सम्मान व रक्षा के लिए तत्पर है।

अकाली नेता सूझ-बूझ से काम लेकर अन्य राज्यों के हित व राष्ट्रहित में परस्पर विचार-विमर्श कर आन्दोलन त्यागने का निर्णय करें। उन्हें शाह कमीशन या १९७० के प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी अवार्ड तथा सुप्रीम कोर्ट के रावी-ब्यास जल विवाद निर्णय को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए ताकि राष्ट्र की एकता व अखण्डता सुदृढ़ हो।

उपेक्षित बंधुओं को सामाजिक न्याय मिले

स्वदेश सम्पादक श्री बाजपेयी का सत्परामर्श

खण्डवा। सप्तम जिला आर्य सम्मेलन के अवसर पर आयोजित धर्म रक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करते 'स्वदेश' के सम्पादक श्री मानकचद वाजपेयी ने कहा- 'समाज को ऊचा उठाने तथा कमजोर वर्ग को अपने साथ लेने के लिए हमें दो कार्य करने होगे। हमे अपने समाज के उपेक्षित बधुओं को सामाजिक न्याय दिलाना होगा। दूसरे जब कभी आर्थिक आवश्यकता पड़े तब तत्काल विपत्ति के समय एक दूसरे की मदद को दौड़ पड़ें।

मुख्य अतिथि श्री जयप्रकाश आर्य ने कहा कि समाज को जाग्रत करने के लिये स्वय को जगाने की आवश्यकता है।

सैकड़ों मूले जाटों ने हिन्दूधर्म ग्रहण किया

२१ नवम्बर के दिन जिला जींद के गांव पेगी में श्री हवासिह सरपच की अध्यक्षता में सैकड़ो मूले जाटो ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया तथा जाट-हिन्दू बिरादरी के साथ हुक्के पानी और रोटी-बेटी का नया सम्बन्ध स्थापित किया। इस सम्बन्ध में श्री ओम्प्रकाश और श्री रतनसिह आर्यों के प्रयत्न विशेष सराहनीय रहे।

अलगाववादी शक्तियों को कुचला जाए

रविवार २८ नवम्बर के दिन दिल्ली की भोगल, हौज खास, आदि अनेक स्थानीय आर्यसमाजों ने अपने साप्ताहिक सत्संगो के अवसर पर यह प्रस्ताव स्वीकार किया—यह आर्यसमाज भारत सरकार से बलपूर्वक माग करती है कि अकालियो से हर प्रकार की बातचीत तुरन्त बन्द की जाए, क्योंकि यह बातचीत खालिस्तान के रूप में है। आर्यसमाज केन्द्रीय एवं प्रादेशिक सरकारों से अनुरोध करती है कि देश की एकता के लिए घातक अलगाववादी शक्तियो को कड़ाई से दबाया जाए, भले ही उसके लिए आपात स्थिति क्यों न लाई जाए।

आर्यसमाजों के सतसंग

५ दिसम्बर'८२

अन्धा मुगल-प्रतापनगर—पं० रामरूप शर्मा; अमर कालोनी—पं० ज्ञानचन्द; अशोक विहार के-सी-५२-ए—पं० देवराज वैदिक मिशनरी; आर्यपुरा—पं० विश्वप्रकाश शास्त्री; आर के पुरम सेक्टर-५—स्वामी जगदीश्वरानन्द; आनन्द-विहार-हरिनगर एल ब्लाक—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; किग्जवे कैंप—प० हरिश्चन्द्र आर्य; कालकाजी डी. डी. ए. फ्लेट—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; कालका जी प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; करोल बाग—डा० रघुनन्दनसिंह; कृष्णनगर—पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; गांधी नगर—स्वामी प्रेमानन्द जी, गीता-कालोनी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II—श्री बलवीरसिंह शास्त्री; गुप्ता कालोनी—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; गोविंदपुरी—श्रीमती लीलावती शर्मा; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल'; चूनामण्डी-पहाड़गंज—पं० सत्यपाल 'मधुर' भजनोपदेशक; जगपुरा भोगल—प० तुलसीराम भजनोपदेशक जनकपुरी सी-३—पं० सत्यदेव भजनोपदेशक; जनकपुरी बी-३/२४—प० अमर-नाथ कान्त; टैगोर गार्डन—डा० सुखदयाल भूटानी; तिलक नगर—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ; ि‍मारपुर—प० सीताराम भजनोपदेशक; देवनगर—प० प्रकाशचन्द वेदालंकार, नारायण विहार—डा० रघुवीर वेदालंकार; नया बांस—कविराज बनवारीलाल शादां; नगर शाहदरा—पं० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; पंजाबी बाग—श्री [illegible]; पंजाबी बाग-एक्सटेन्शन—आचार्य हरिदेव सि० भू०; मोडल-बस्ती—स्वामी [illegible] भजनोपदेशक; महरौली—प० हरिदत्त शास्त्री; मोती-बाग—डा० [illegible]; राणा प्रताप बाग—पं० सोमदेव शास्त्री; राजौरी गार्डन—प्रो० सत्यपाल बेदार; लाजपत नगर—प० ओमवीर शास्त्री; लेखराम नगर-त्रिनगर—श्रीमती सुशीला राजपाल; विक्रम नगर—पं० कामेश्वर शास्त्री; विनय-नगर—प० रामनिवास; सराय रोहेला—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा श्रीमती कमला आर्या गायिका; सोहनगंज—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; श्रीनिवास पुरी—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक; हनुमान-रोड—पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार; हौज खास ए-२१—प० वेदपाल शास्त्री।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी का वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली। आर्यसमाज श्रीनिवास पुरी का वार्षिकोत्सव ८ से १४ नवम्बर तक हुआ। उसमें आर्य कवि प्रकाशवीर 'व्याकुल' के भजन व काव्य पाठ, श्री रामकिशोर वैद्य जी की वेद कथा हुई। चरित्र निर्माण सम्मेलन में सर्वश्री रामचन्द्र नहला, नरेन्द्र अवस्थी, देवानन्द जी पुरोहित, दयालदास, मोहनलाल, विद्यार्थी आदि के भाषण हुए। रविवार को ऋषि निर्वाण उत्सव पर पं० रामकिशोर वैद्य व श्री नरेन्द्र अवस्थी के भाषण हुए। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के 'व्यक्तित्व व कृतित्व' पर प्रकाश डाला।

कन्यादान और दहेज

.....(पृष्ठ ४ का शेष)

कर सकता है। कन्यादान को गृहस्था-श्रम का परम पवित्र प्रवेश समझकर यथा कन्या तथा वर समान गुण स्वभाव को महत्व देकर सुखी जीवन की कामना के साथ धार्मिक निष्ठा का प्रतीक मानकर, करना चाहिए। मान-वता को महान और धन को तुच्छ समझना चाहिए। युवक-युवतियों को अपने जीवन साथी को अपनी इच्छा-नुसार निश्चित करने के लिए प्रचलित सामाजिक बन्धनों को तुरन्त तोड़ देना चाहिए।

दहेज रहित संस्कार को श्रद्धा और सम्मान देना चाहिए तथा दहेज की भर्त्सना की जानी चाहिए अन्यथा, येही शिक्षित सुयोग्य समर्थ विवेकशील नव-युवक युवतियां लोक लज्जावश गुलाम की भांति जीने, गृह कलह-अशांति, उपेक्षा, तिरस्कार यातनाओं आत्म हत्याओं, हताशाओं और सिसकती बिलखती सतानों की आहों के लिए उत्तरदायी हैं तथा भ्रष्टाचार दुराचार व्यभिचार के पोषक हैं। हर व्यक्ति को इस भयकर रोग से मुक्ति पाने के लिए संकल्प करना चाहिए।

आर्यसमाज पहाड़गंज चूनामण्डी का ४६ वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पहाड़गंज-चूनामंडी, नई दिल्ली का ४६ वां वार्षिकोत्सव २९ नवम्बर से ५ दिसम्बर, १९८२ तक मनाया जा रहा है। २६ से २८ नवम्बर तक प्रातः इलाके में प्रभात फेरी की गई। २९ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक प्रात ६ से ८ बजे तक चतुर्वेद शतक यज्ञ एवं वेदोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न किया जाता है। २९ नवम्बर से ४ दिसम्बर '८२ तक रात्रि ८॥ बजे से १० बजे तक वेदकथा प्रस्तुत की जा रही है। शुक्रवार को प्रात. ११ बजे से सायम ५ बजे तक आर्य महिला सम्मेलन, शनिवार ४ दिसम्बर को रात्रि ७॥ से १० बजे आर्य युवक सम्मेलन और रविवार ५ दिसम्बर को प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति के कार्यक्रम रखे गए हैं। पूर्णाहुति के बाद १२॥ से २ बजे तक ऋषि लंगर की व्यवस्था की जा रही है।

आर्यावर्त राज्य के गठन की मांग

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के महामन्त्री श्री अनिल कुमार आर्य ने हरि-याणा सुरक्षा समिति के संयोजक स्वामी आदित्य वेश की इस मांग का समर्थन किया है कि हरियाणा, चण्डीगढ़, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर को मिलाकर आर्यावर्त नाम का एक अलग राज्य बनाया जाए तथा सारी व्यवस्था वैदिक नियमो के अनुसार लानी होगी। क्योंकि यहां बड़ी संख्या में आर्यसमाजी रहते हैं। 'आर्यावर्त' भारतवर्ष का मूलभूत नाम है, उसे ही लागू कर, पुरातन वैदिक मान्य-ताओं के अनुरूप शासन चलाया जाना चाहिए।

जब खालिस्तान बनाने की मांग उठाई जा सकती है तब 'आर्यावर्त' राज्य की मांग क्यों नहीं उठाई जा सकती। यदि सरकार आनन्दपुर प्रस्ताव स्वीकार करेगी तो शीघ्र ही संघर्ष के लिए आर्य समाजी इसके लिए कार्यक्रम घोषित करेंगे।

श्री रामलाल भाटिया का देहावसान

वसन्त विहार, नई दिल्ली-५७ के निवासी श्री रामलाल भाटिया का १३ नवम्बर १९८२ के दिन देहावसान हो गया। दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए श्रद्धांजलि सभा रविवार २१ नवम्बर के दिन डी ६/५ वसन्त विहार मे हुई।

सैकड़ों मूले जाट वैदिक हिन्दू धर्म में

जाटों और शुद्ध हुए मूले जाटों में नाते रिश्ते प्रारम्भ

समालखा (जिला करनाल) सर्वखाप सम्मेलन के पश्चात् हिन्दू संरक्षण समिति के प्रयत्नों के फलस्वरूप जाटों तथा शुद्ध हुए मूले जाटों के लड़के और लड़कियों के आपस के रिश्ते बिना किसी झिझक के करने के लिए वैद्य रत्नसिंह आर्य के प्रयत्नों के फलस्वरूप बलबीरसिंह, सत्यपालसिंह, सत्यवीरसिंह और सुभाषचन्द्र आदि के रिश्ते हो गए हैं। काफी लड़के-लड़कियों के रिश्ते आ रहे हैं।

वैद्य रत्नसिंह आर्य के प्रयत्नों से हरियाणा के गांव जोश, गांव गोरखपुर और गांव नयाणा मे सर्वश्री जिलेसिंह, श्री चन्दूलाल एव हकीम बदोह जेबड़ा की अध्यक्षता में कई सौ मूले जाटो ने स्वेच्छया वैदिक हिन्दू धर्म ग्रहण कर गांव के रिवाज के अनुसार हुक्का-पानी और नाते-रिश्ते खोल दिए।

आर्ययुवक राष्ट्ररक्षा का दायित्व निभाएं

नई दिल्ली। १५ नवम्बर के दिन कार्यक्रमानुसार बलवन्तराय मेहता विद्यालय में हुए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय युवक महासम्मेलन में, भू० पू० संसद सदस्य श्री रामचन्द्र विकल ने युवकों का उद्बोधन करते हुए उन्हें राष्ट्र रक्षा के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। देश के अन्दर भारतीय अखण्डता विरोधी ताकतें सिर उठा रही हैं, आर्य युवकों को उन्हें कुचलना होगा। देश की अखण्डता के लिए आर्यसमाज हमेशा आगे रहा है और रहेगा। उन्होंने सरकार से मांग की कि खालिस्तान की मांग करने वाले खालिस्तानियों को कुचल दें। सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद रोहतक के अध्यक्ष श्री जयवीरसिंह एडवोकेट ने युवकों से कहा कि वे सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध डटकर संघर्ष करें।

पथिक भजन सिन्धु (केसेट)

नवीन आर्य भजनों की नवीनतम धुनों एवं मनोहर संगीत से भरपूर केसेट।

गीतकार एव गायक—आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

श्री सत्यपाल जी पथिक

अपने लिए आज ही खरीदें एव अपने इष्टमित्रों, परिजनों को भेंट देकर यश के भागी बनें। मूल्य-एक केसेट ३६ रुपए मात्र।

प्राप्ति स्थान—

१. कविराज बनवारीलाल शादी १०८०२ श्री स्वतन्त्र भारत फार्मेसी (निकट फिल्मिस्तान) मानकपुरा नई दिल्ली-११०००५ दूरभाष .—५१६१४०

२. आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

३. प हुकमचन्द वेदालंकार दक्षिण दिल्ली आर्यसमाज १. लिंक रोड, जंगपुरा विस्तार, नई दिल्ली-११००१४

४. आर्य प्रकाशन ८१४ कुण्डे वालान, अजमेरी गेट दिल्ली-११०००६

५. आर्य सिन्धु आश्रम १४१, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई-

नोट—डाक से मंगवाने के लिए कृपया ३६ रुपये

पता संख्या १ या ५ पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
(अंग्रेजी) समाप्त	
आर्य सन्देश महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया—ओमप्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	

सम्पर्क करें—

अधिष्ठाता प्रकाशन वि

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष : ७ | अंक ७ | रविवार १२ दिसम्बर १९८२ | मार्गशीर्ष २७ वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

हम केन्द्र में सुदृढ़ शक्तिशाली सरकार चाहते हैं

आनन्दपुर का प्रस्ताव आर्यसमाज को अमान्य : पंजाब में हिन्दू अरक्षित

केन्द्र पंजाब के हिन्दुओं को संरक्षण दे : आर्यनेताओं द्वारा पंजाब की स्थिति के बारे में प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी को स्मरण-पत्र

नई दिल्ली । पंजाब में व्याप्त भीषण स्थिति एवं राष्ट्र विरोधी उग्र अकाली आंदोलन के बारे में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेंद्र, संसद सदस्य श्री भगवानदेव शर्मा, सीनियर एडवोकेट श्री सोमनाथ मरवाह, आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपप्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री रामचन्द जावेद आदि अनेक आर्य नेताओं ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक स्मरण-पत्र लिखकर विश्वास दिलाया है कि उग्रवादी, पृथकवादी और विघटनकारी शक्तियों को दबाने के लिए आप और आप की सरकार जो भी कदम उठाएगी, आर्यसमाज उसमें आपको पूर्ण सहयोग देगा।

पंजाब की गम्भीर समस्या का आप जिस साहस और कुशलता से समाधान करने का प्रयास कर रही हैं, वह अत्यन्त सराहनीय है और उसके लिए हम समस्त आर्य जगत की ओर से आपका धन्यवाद करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि अकालियों की उग्रवादिता के कारण स्थिति गम्भीर हो रही है। हमें आशा ही नहीं विश्वास भी है कि आपकी कुशलता और दूरदर्शिता से उलझन शीघ्र ही सुलझ जायगी।

इस संदर्भ में हम आपका ध्यान पंजाब के अल्पसंख्यकों विशेषकर हिंदुओं की चिन्तनीय स्थिति की ओर विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं। सारे देश में केवल तीन प्रदेश ऐसे हैं जिनमें हिन्दू अल्प संख्या में हैं। पंजाब उनमें से एक है। इसलिए भारत सरकार का कर्त्तव्य बन जाता है कि पंजाब के हिन्दुओं के धार्मिक और राजनीतिक अधिकारों की वैसे ही रक्षा की जाए जिस प्रकार दूसरे प्रांतों में वहां के अल्पसंख्यकों की की जा रही है। खालिस्तान का आन्दोलन आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव-हिन्दू और सिख दो कौमों के दृष्टिकोण ने पंजाब में वही वातावरण पैदा कर दिया है जो १९४७ से पहले मुस्लिम लीग ने किया था। इसके साथ हम यह भी नहीं भूल सकते कि पिछले एक वर्ष में कई हिन्दू पंजाब में गोली का निशाना बनाए जा चुके हैं। आज पंजाब में कोई हिंदू अपने आपको सुरक्षित नहीं समझता। प्रमुख हिन्दू नेताओं को धमकियां दी जा रही हैं। हमारे मन्दिरों में गऊओं के सिर काट कर फेंके गए हैं। मंदिरों मे पूजा कर रही हमारी माताओं और बहिनों का, अपमान किया गया है और एक ऐसा आतंक पैदा करने की कुचेष्टा की जा रही है कि हिंदुओं का जीना पंजाब में दूभर हो जाए।

इन परिस्थितियों में हमारा आप से निवेदन है कि हमारी निम्न मांगों पर उचित विचार कर उनका क्रियान्वयन कराया जाए:—

१. आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं होना चाहिए। वह प्रस्ताव देश के एक नए बटवारे की बुनियाद रख देगा।

२. पंजाब मे सरकारी सेवाओं में हिन्दुओं को बहुत कम अनुपात दिया गया है। १९५४ में पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा नियुक्त उच्च स्तरीय आयोग की तरह एक आयोग की नियुक्ति की जाए जो यह पता लगाए कि पंजाब की सरकारी नौकरियों में हिन्दुओं और सिखों को किस अनुपात से संरक्षण प्राप्त है। उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश को इस आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया जाए।

३. अकालियों के साथ समझौता करते समय पंजाब के हिन्दुओं के हितों और देश की एकता व अखण्डता की पूर्ण सुरक्षा की जाए।

४. अकालियों के साथ किए जाने वाले समझौते मे यह व्यवस्था होनी चाहिए कि इसके पश्चात उनकी ओर से फिर न कोई राजनीतिक मांग पेश की जायगी न वे फिर कोई नया मोर्चा लगाएंगे।

५. हिन्दी पंजाब की दूसरी सरकारी भाषा घोषित की जाए।

६. माता-पिता का यह अधिकार स्वीकार किया जाए कि वे अपने बच्चों के शिक्षा माध्यम का स्वयं फैसला करें।

७. अमृतसर-पटियाला-बुढालाडा और दूसरे स्थानों पर जो हिंदू नवयुवक गिरफ्तार किए गए हैं और जिनके विरुद्ध मुकदमे चल रहे हैं, उनके मुकदमे वापस लेकर उन्हें तुरन्त रिहा किया जाए।

८. यदि अमृतसर में दरबार साहिब क्षेत्र पवित्र घोषित किया जाता है तो जहां-जहां हिन्दुओं के मंदिर और तीर्थ स्थान हैं, उनके गिर्द के क्षेत्र पवित्र घोषित किए जाएं।

९. यदि आकाशवाणी से गुरुवाणी प्रसारित की जाए तो उसी प्रकार वेदवाणी का प्रबन्ध भी होना चाहिए।

१०. यदि अमृतसर में बीडी-सिगरेट की बिक्री बन्द की जाए तो दुकानदारों से वे दुकानें खाली न कराई जाएं। उन्हें उन दुकानों पर किसी और चीज के व्यापार का अधिकार होना चाहिए।

हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हम सिखों के विरुद्ध नहीं हैं। हमारी मान्यता है कि उनकी धार्मिक मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार होना चाहिए, परन्तु इस धार्मिक स्वतन्त्रता की आड़ मे किसी राजनीतिक स्वार्थ पूरा कराने की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

सैंकड़ों सत्याग्रहियों द्वारा गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध की मांग

दिल्ली । एशियाड के अवसर पर सिरी किले के समीप बनाए गए एशियाई खेल गाँव में एकत्र विदेशी तथा देशी खिलाड़ियों को भोजन में गोमांस का व्यवहार करने के विरुद्ध २-३-४ दिसम्बर के दिन दिल्ली के समस्त हिन्दू संगठनों ने कृषि भवन और उद्योग भवन के मध्य बोट क्लब पर सत्याग्रह किया। इस सत्याग्रह के सिलसिले में तीनों दिन सैंकड़ों आर्य हिन्दू कार्यकर्ताओं ने अपनी गिरफ्तारियां दीं। इन सभी सत्याग्रहियों ने अपने वक्तव्यों में मांग की कि सम्पूर्ण देश में गोवंश की हत्या पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाया जाए।

११५ मूले जाट पुन हिन्दू बने

रोटी-बेटी हुक्के पानी का सम्बन्ध जुड़ा

समालखा (करनाल)। बाबू ओम्प्रकाश तथा वैद्य रतनसिंह जी के प्रयत्नों से २२-११-८२ के दिन गांव बधावड मे श्री कबूलसिंह और बरखाराम ने अपनी सन्तान का शुद्ध हुए मूले जाटों से शादी-ब्याह का रिश्ता तय किया।

२१ नवम्बर के दिन जिला जींद के गांव पंका मे श्री हवासिंह सरपंच की अध्यक्षता में मूले जाटों के ११५ सदस्यों ने अपनी इच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया और उनके साथ रोटी-बेटी और हुक्के-पानी का नाता जोड दिया। कमरू, जमानू, कमालू, मुन्सफ, मामा, शेरदीन, टीटू, पलसिंह, अमरा, भोला के परिवारों के ११५ सदस्य शुद्ध हुए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति | व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

कौन मनुष्य अविद्या-शोकादि कष्टों से रहित हो जाते हैं ?

—प्रेमनाथ, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥ यजु: ४०-७

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! [यस्मिन्] जिस परमात्मा में [विजानतः] विशेष कर ध्यान दृष्टि से देखते हुए विज्ञान-युक्त जन को [सर्वाणि] सब [भूतानि] प्राणी मात्र [आत्मा एव] अपने आत्मा के तुल्य ही [सुख-दुःख वाले] विहित होते हैं [तत्र] उस परमात्मा में स्थित [एकत्वम्] परमात्मा के एकत्व को [अनुपश्यतः] योगाभ्यास द्वारा साक्षात देखने वाले योगी जन को (कः) क्या (मोहः) मूढ़ अवस्था (वा) (कः) क्या (शोकः) शोक (परिताप) होता है ? अर्थात् कुछ भी नहीं ॥

(ऋषि दयानन्द वेदभाष्य)

भावार्थ—जो विद्वान सन्यासी लोग परमात्मा के सहचारी प्राणी मात्र को अपने आत्मा के तुल्य जानते हैं अर्थात् जैसे अपना हित चाहते हैं वैसे ही अन्य प्राणियों के साथ बर्ताव करते हैं, वे एक अद्वितीय परमात्मा की शरण को प्राप्त होते हैं। उनको मोह-शोक लोभादि दोष कभी भी प्राप्त नहीं होते। और जो अपने आत्मा के अस्तित्व के स्वरूप को यथावत् जानते हैं वे सदा सुखी होते हैं।

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

अतिरिक्त स्पष्टीकरण—जो योगीजन परमात्मा के एकत्व को सब जगह देखते हैं अर्थात् यह कि ब्रह्म एक ही सब प्राणियों में अन्तर्यामी रूप से व्यापक हो रहा है और सब का स्वामी वा पालक है वे हर एक प्राणी के सुख-दुःख को अपने सुख-दुःख के समान ही समझते हैं अर्थात् सबके साथ मित्रदृष्टि (प्रेम-भाव) से देखते हैं और किसी से वैर नहीं करते। ऐसे योगीजनों को ही ब्रह्म का साक्षात्कार होता है, जिससे वे अविद्या मूढ़ावस्था वा भय शोकादि क्लेशों से रहित होकर परमानन्द को प्राप्त करते हैं।

वेद : भारत के, सभी संसार के हैं !

—भैरवदत्त शुक्ल

ईश द्वारा जो निसृत हो, विश्व का कल्याण करते,
शक्ति, ऋत, विश्वास, निष्ठा, कर्म का परित्राण करते,
एकता मय मानवोचित तेज नित्य प्रदान करते,
अघ-कलुष-कर्दम, कलह, मद, दोष को निष्प्राण करते,
वाद-मत-गत भेद-भावों से पृथक, शाश्वत सदा रह,
वेद . प्रति गृह-अडिग आधार के हैं, वेद : भारत के सभी संसार के हैं !!

'अग्नि' ने 'ऋक्', वायु ने 'यजु', देखकर जग को दिखाया,
'साम' का मधु गान पा, आदित्य ने सब को सिखाया,
वह महान् अथर्व-वैभव, अंगिरा के पास आया,
पाठ-क्रम-चेताजनों ने, श्रुत-सुघर गौरव बचाया,
आर्ष प्रिय परिपाटियों का ले भला संबल सजीला,
वेद : तन मन के, अतनु करतार के हैं ! वेद : भारत के, सभी संसार के हैं !!
भक्त हित कर्त्तव्य-पथ को, धर्मणा विस्तार देते,
वर्ण-आश्रम का व्यवस्थित, कर्मणा अधिकार देते,
विश्व-क्रीडा भूमि प', संकल्प को आकार देते,
ब्रह्म, आत्मा, प्रकृति—तीनों को सही आधार देते,
संतुलित पुरुषार्थ चारों एक में अनुस्यूत करते,
वेद जन-जन के, सुखद परिवार के हैं, वेद : भारत के, सभी संसार के हैं"
साम्य के सच्चे समर्थक, यौगिकी प्रक्रिया संभाले,
यज्ञ की निःस्वार्थ वसुधा पर सुधामय प्राण पाले,
पूत कर्मठ भव्य जीवन के बनाते ढब निराले,
सांस्कृतिक गरिमा बढ़ा, हरते जगत के पल काले,
व्यष्टि-सौम्य समष्टि का सम्यक् नियोजित रूप रखते,
वेद : यौवन के, धवल सम्भार के हैं ! वेद : भारत के सभी संसार के हैं !!

अनुचित प्रोत्साहन

—प्रो. सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी.

दिवमारुहत् तपसा तपस्वी । अथर्व १३।२।२५
(तपस्वी) तपस्वी (तपसा) तप से (दिवम् अरुहत्) ऊपर उठता है ।

एक साहित्यिक सभा में एक तरुण विद्यार्थी भाषण देने के लिए खड़ा हुआ, पर उसका भाषण जमा नहीं—वह घबरा गया। श्रोताओं ने तालियां पीटीं, पांच-पाँच वाक्य कहने के बाद ही उसे बैठ जाना पड़ा। एक व्यक्ति, जो उसकी कुर्सी के पास ही बैठे थे, उन्हें भी उस सभा में बोलने का निमन्त्रण था। अपना पसीना पोंछते हुए उसने धीरे से उनसे कहा—"यह मेरा भाषण देने का पहला मौका था।" "ऐसा" उन्होंने कहा "तब तो तुमने बड़ी हिम्मत दिखाई। मैं तो जब पहली बार बोलने को खड़ा हुआ तो अपने पहले भाषण में मुश्किल से तीन वाक्य भी ठीक से न बोल पाया था। शुरू-शुरू में तो ऐसा होता ही है, पर बाद में आदत होने से यह सब दूर हो जाता है।" "सच ?" वह उत्साह से बोल उठा। उसकी परेशानी कुछ कम हुई।"

"बिल्कुल" समीप बैठे व्यक्ति ने कहा। "जिन्होंने तुम्हारी मजाक उड़ाई, तालियां पीटीं उनमें से ऐसे कितने होंगे जो तुम्हारे जैसे यहाँ खड़े होकर इतने बड़े श्रोता समुदाय का सामना कर सकेंगे ?"

यह सुनकर उसे आश्वासन मिला। उसका वह साहस और हिम्मत जो लोगों की मजाक सुनकर गायब हो गया था धीरे-धीरे आने लगा। उसने फिर भाषण देने का अभ्यास शुरू किया और आगे चलकर वह एक बड़ा अच्छा वक्ता हो गया। मुझे भी अपने प्रारम्भिक भाषण का ध्यान आता था। आर्यसमाज बस्ती में माननीय गोकुलचन्द नारंग के सभापतित्व में शिवरात्रि का पर्व मनाया जा रहा था। मैं गुरुकुल कांगड़ी से पढ़कर अभी निकला ही था। गुरुकुल का प्रत्येक छात्र अच्छा वक्ता होता है यह आर्यसमाजियों की तथा कथित मान्यता है। मुझे बोलने को वहाँ के मन्त्री महोदय ने कहा। मेरे पूज्य पिता जी ने ज़ोर दिया। मैं भाषण के लिए बुलाया गया। सर्दी में भी मेरे चेहरे पर पसीने की बूंदें झलकने लगीं, पैर कांपने लगे। वाणी से शब्द न निकलते थे, परन्तु उस समय सभापति जी के आश्वासन तथा उत्साह भरे वचनों ने मुझे प्रेरणा दी और आज मैं आर्यसमाज के उत्सवों में अच्छा भाषण दे लेता हूं। विद्यालयों में पर्वों पर मेरे भाषण छात्र पसंद करते हैं, विभिन्न सम्मेलनों में मेरे भाषण रखे जाते हैं। इसका श्रेय उन सभापति जी को ही मैं देता हूं। इसी प्रकार उस तरुण नवयुवक ने भी पड़ोस में बैठे उस व्यक्ति का धन्यवाद किया और कहा कि यदि आपने उस दिन मुझे प्रोत्साहित न किया तो शायद मैं भाषण देना ही छोड़ देता।

सचमुच, जब लोग त्रस्त हों, पराजित हों, या शोकग्रस्त हों तभी उन्हें हमारी सहानुभूति, सहायता या प्रोत्साहन की जरूरत होती है। उस समय उनकी खिल्ली उड़ाने या उनकी परेशानी का मजा लूटने का मोह हमें रोकना चाहिए, बल्कि उन्हें सहारा देना चाहिए, उनकी हिम्मत बढ़ानी चाहिए।

—६ ए. ई. १ ओबरा (मिर्जापुर) उ० प्र० २३१२१६

देशद्रोही तत्व पूरी शक्ति से कुचले जाएं

गोरखपुर। भारत के सभी नागरिकों को भारतीय बनकर भारत में रहना चाहिए और मत-जाति के सभी भेद समाप्त कर एकता का स्वर गुंजाना चाहिए, इन शब्दों के साथ गोरखपुर के सुप्रसिद्ध नेता महन्त श्री अवैद्यनाथ ने विराट हिन्दू सम्मेलन का उद्घाटन किया।

सिसरामऊ के राज भोपाल सिंह जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सामाजिक कुरीतियां समाप्त कर हिन्दू मात्र को एकसूत्र में आबद्ध होने का आह्वान किया।

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु ने देशद्रोही तत्वों को चेतावनी देते हुए कहा कि हम किसी को भी राष्ट्र द्रोह की अनुमति नहीं देंगे। भारत के प्रत्येक नागरिक को भारत मां की वन्दना करनी होगी या देश छोड़ना होगा।

ज्योति मार्ग की ओर बढ़ें ।

ओ३म् उद्वय तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् ।
देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम ॥ १ ५०.१०

हम अन्धकार से ऊपर उठकर ज्योतिमार्ग की ओर बढ़ें । अन्तरिक्ष से उठकर सर्वोत्तम सूर्य ज्योति का दर्शन करें ।

ओ३म्

आर्य सन्देश

केन्द्र में सुदृढ़ शासन

इतिहास की सीख है कि भारत की स्वतन्त्रता एव अखण्डता केवल उसी समय सुरक्षित रह सकी, जब यहा केन्द्र में सुदृढ़ शक्तिशाली प्रतिष्ठित रहा है। अपने समय में छोटे-बड़े अनन्त राज्यो में बटे भारत देश मे श्री कृष्ण जी ने महाराजा युधिष्ठिर की अध्यक्षता मे एक महाभारत-बृहत्तर भारत की स्थापना की थी। बाद में आचार्य अमात्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को शासन सूत्र देकर भारत मे एक सुदृढ़ केन्द्रीय शासन की प्रतिष्ठा की थी। यह शासन कई पीढ़ियो तक सुरक्षित रहा। गुप्त वश के समय में भी देश मे केन्द्रीय शासन सुदृढ़ रहा। पृथ्वीराज चौहान के समय केन्द्रीय शासन पहले की तरह सुदृढ नही था, देश मे कई छोटे-बड़े शासक शासन कर रहे थे, फलत. एक बार की पराजय के बाद मोहम्मद गोरी और परवर्ती मुसलमान शासक देश पर छा गए। इन मुस्लिम शासकों मे मुगलों ने दिल्ली-आगरा के माध्यम से देश में एक केन्द्रीय शासन की प्रतिष्ठा की थी। उनके बाद अंग्रेजों का शासन प्रतिष्ठित हुआ। उन्होंने ने भी अटक से लेकर कटक तक तथा हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक देश मे एक सुदृढ़ केन्द्रीय शासन स्थापित किया था।

अंग्रेज जब गए, तब जाते-जाते उन्होंने पृथक पाकिस्तान की स्थापना कर भारत के दोनों बाजूए काट कर अलग कर दिए थे। उनकी कोशिश थी कि बचे हुए भारत मे देशी रियासतों के रूप में सैकडों अलस्टर स्थापित हो जाएं, परन्तु भला हो सरदार पटेल का जिनकी सामयिक कार्रवाई से बचा हुआ भारत एक सुदृढ़ इकाई के रूप मे प्रतिष्ठित हो गया। काश, सरदार सरीखा नेतृत्व देश को कुछ लम्बे समय तक मिलता तो सम्भवत कश्मीर तथा राज्यो के पुनर्गठन से उठी बहुत-सी समस्याएं देश के सम्मुख नही रह जातीं। आज देश के सम्मुख कई भीषण समस्याए हैं। पूर्वोत्तर तथा पश्चिमोत्तर अचलों में देश की पृथकवादी शक्तिया सिर उठा रही हैं। पिछले दिनो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा अन्य कई प्रमुख आर्य नेताओं ने देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक पत्र लिखकर उन्हें पजाब की स्थिति के बारे में सावधान किया है और केन्द्र मे एक सुदृढ़ शासन की आवश्यकता पर बल दिया है।

आज केन्द्र में एक सुदृढ़ शक्तिशाली शासन की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट, अकाली तथा द्रविड दल केन्द्र में एक निर्बल शासन स्थापित करना चाहते है। भारत का इतिहास साक्षी है कि जब-जब भारत में केन्द्र की सत्ता निर्बल हुई, तब-तब देश अनेक शासनों में बट गया और यहां विदेशियों को अपना अधिकार जमाने का मौका मिल गया। कई प्रेक्षकों का कथन है कि देश में अलगाववादी पृथकता के पक्षपाती दलों या तत्वों को विदेशियों से सरक्षण एव प्रोत्साहन मिल रहा है। ऐसी कठिन परिस्थिति में सभी दलों और राष्ट्रवादी जनता को यत्नपूर्वक इन पृथकवादी तत्वों को राष्ट्रद्रोही घोषित कर केन्द्रीय शासन की पूरी सहायता देनी चाहिए। केन्द्रीय शासन को भी इन राष्ट्रविरोधी तत्वों से कोई सौदा न करते हुए राष्ट्र समर्थक जनता के सक्रिय सहयोग से समस्या को पूरी तत्परता और दृढ़ता से सुलझाना चाहिए।

आसुरी सम्पत्ति के तीन लक्ष्य : सत्ता, संस्कृति और सम्पत्ति

—आचार्य विनोबा भावे

हमें दैवी सम्पत्ति का विकास करना है और आसुरी सम्पत्ति से दूर रहना है। आसुरी सम्पत्ति का वर्णन भगवान ने इसीलिए किया है कि हम उससे दूर रह सकें। इसमे कुल तीन बातें मुख्य हैं असुरों के चरित्र का सार सत्ता, सस्कृति और सम्पत्ति मे है। वे कहते हैं एक हमारी ही सस्कृति उत्कृष्ट है और उनकी महत्त्वाकाक्षा होती है कि वही सारे ससार पर लादी जाए। हमारी ही सस्कृति क्यों लादी जाए ? तो कहते हैं वही सबसे अच्छी है क्यो है ? क्योकि वह हमारी है। चाहे आसुरी व्यक्ति हों, चाहे असुरो से बने साम्राज्य—इन तीनो चीजों का आग्रह रखते हैं।

ब्राह्मण भी तो अपनी सस्कृति को सर्वश्रेष्ठ समझ कर सारे ससार में वैदिक सस्कृति की विजय की कामना करते हैं। 'अग्रतश्चतुरो वेदान् पृष्ठत सशर धनु.' इस तरह सज्ज होकर सारी पृथ्वी पर अपनी सस्कृति का झडा फहराओ। मुसलमान भी तो ऐसा ही समझते है कि कुरान शरीफ मे जितना कुछ लिखा है, वही सच है। ईसाई भी ऐसा ही मानते हैं। अन्य धर्मों का व्यक्ति अत्यन्त उच्च कोटि का होने पर भी स्वर्ग उसे तभी मिलेगा, जब ईसामसीह पर विश्वास कर लेता है। भगवान् के मदिर का दरवाजा उन्होंने केवल एक ही रखा है। लोग तो अपने घर मे अनेक दरवाजे और खिडकिया लगाते हैं, परन्तु भगवान् बेचारे के मन्दिर का एक ही दरवाजा रखते हैं।

सब यही मानते हैं कि मैं ही कुलीन हू श्रीमन्त हू, मेरे समान और कौन है ? पश्चिमी लोग कहते हैं कि हमारी नसों मे नार्मन लोगो का रक्त बहता है। हमारे यहा तो गुरु परम्परा है। मूल आदि-गुरु है शकर, फिर दस-पाच नाम बीच में गिनाकर अपने गुरु का नाम और फिर मैं। इस वशावलि से यह सिद्ध किया जाता है कि हम श्रेष्ठ, हमारी संस्कृति श्रेष्ठ। भाई, यदि आपकी सस्कृति सच-मुच ही श्रेष्ठ है, तो उसे अपने आचरण में दीखने दो न ! अपने जीवन में उसकी प्रभा फैलाने दो न ! परन्तु ऐसा नही होता। जो सस्कृति स्वय हमारे जीवन में नहीं है घर में नहीं है, उसे ससार भर में फैलाने की आकाक्षा रखना—यही आसुरी विचार पद्धति है।

फिर जैसे मेरी संस्कृति सुन्दर है, वैसे ही यह विचार भी है कि ससार की सारी सम्पत्ति रखने योग्य भी मैं ही हू। ससार की सारी सम्पत्ति मुझे चाहिए और मैं उसे प्राप्त करूंगा ही। वह सम्पत्ति किस लिए प्राप्त करनी है ? तो सबमें समान रूप से बटने के लिए। इसके लिए मैं स्वत अपने को धन-सम्पत्ति में गाड लेता है। अकबर ने यही तो कहा था—"ये राजपूत अभी मेरे साम्राज्य मे क्यों नहीं दाखिल होते ? एक साम्राज्य बनेगा, तो शान्ति स्थापित होगी।" वह प्रमाणिक रूप से ऐसा मानता था। वर्तमान असुरों की भी यही धारणा है कि सारी सम्पत्ति बटोरनी है। क्यो उसे फिर सबमे बाटने के लिये।

उसके लिये मुझे सत्ता चाहिए। सारी सत्ता एक हाथ मे केन्द्री-भूत होनी चाहिए। सारी दुनिया मेरे तन्त्र में आ जानी चाहिए। स्व-तन्त्र-मेरे तन्त्र-के अनुसार चलानी चाहिए। जो मेरे अधीन होगा, मेरे तन्त्र के अनुसार चलेगा, वही स्वतन्त्र। इस तरह सस्कृति सत्ता और सम्पत्ति—इन तीन मुख्य बातो पर आसुरी सम्पत्ति मे जोर दिया जाता है। (साभार- 'गीता प्रवचन' से)

अनमोल मोती

- शरीर और आत्मा के सुसस्कृत होने से धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

- सुधारक का काम है कि पहले वह अपने जीवन मे घटा कर दिखाए, फिर दूसरे से उसे पर आचरण करने के लिए कहे।

—गांधी जी

- भगवान तो सब के अन्दर हैं, उन्हें खोजने के लिए भटकने की आवश्यकता नहीं।

—रामकृष्ण परमहस

- प्रत्येक आत्मा राम; कृष्ण और बुद्ध के समान महान् बन सकती है। सभी मानव यदि चाहें तो उच्च आदर्श प्रतिष्ठित कर सकते हैं।

—विवेकानन्द

ऋषि दयानन्द की वेदविषयक अवधारणा

'आर्यसन्देश' के १६ सितम्बर १९९२ के अंक में पृष्ठ ४ पर इस लेख का पूर्वार्द्ध छपा था, यहां प्रकाशित है लेख का उत्तरार्द्ध

वेदों में इतिहास—

ऋषि दयानन्द की अवधारणा है कि वेदों में किसी मनुष्य का इतिहास नहीं है। न तो किसी देश विशेष, नदी पहाड़ तथा नगरों का ही नाम है। वेदों में आए हुए 'वशिष्ठ', 'विश्वामित्र' आदि का अर्थ नैरुक्त प्रक्रिया से एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर इन्हें व्यक्ति-वाचक न मान कर गुणवाचक माना है। उनकी इस मान्यता मे पर्याप्त बल है कि वेद तो मानव सृष्टि के आदि काल से चले आ रहे हैं—और इतिहास तो बहुत बाद की चीज है—तो फिर वेद में इतिहास कैसे आ सकता है? आचार्य 'सायण', 'स्कन्द', आदि एवं आधुनिक काल के 'सातवलेकर', 'तिलक', 'पावगी' आदि वैदिक विद्वानों तथा पाश्चात्य विद्वान 'मैक्डोनल', 'कीथ' ने मन्त्रों में आए हुए ऋषियों-नदियों के नाम को और पुराणों मे आए हुए इन्हीं नामों को लेकर यह परिकल्पना कर डाली है ये सब संज्ञावाचक शब्द वेदकालीन है-- संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास लिख डाला – जो आज भी विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है। स्वा० दयानन्द ने इस विचारधारा का प्रबल विरोध किया— उनकी दृष्टि मे वेदों को देश-काल की परिधि में नहीं बांधा जा सकता।

वेदों में मांस, द्यूत-शराब का निषेध

पाश्चात्य वैदिक चिन्तकों एवं उनके पद-चिह्नों पर चलने वाले भारतीय विद्वानों ने यह सिद्ध करने का असफल प्रयत्न किया है—वैदिक काल मे आर्य मांस शराब एवं जुए के प्रेमी थे। वेद ने तो खुले शब्दों में मांस सुरा एवं— जुए का निषेध किया है। अथर्ववेद का ८।६।२३ का प्रमाण मौजूद है। ऋग्वेद में जुआ न खेलने का निर्देश है तो ७।८६।६ में उन वस्तुओ का निर्देश किया गया है जो मनुष्यों को पतन की ओर ले जाते हैं—उन वस्तुओं मे जुए, मांस एवं शराब का उल्लेख है।

वेद में राजनीति

ऋषि दयानन्द के युग में एक तन्त्र-शासन प्रणाली थी। भारत में ब्रिटिश राज्य का प्रतिनिधि 'वायसराय' के नाम से सम्बोधित किया जाता। वह एकतन्त्र शासक था। उन दिनों किसी भारतीय प्रशासन का यह साहस नहीं था को इस शासन के विरुद्ध मुंह खोल सके। स्वामी दयानन्द प्रथम महामानव हुए हैं, जिन्होने वेदों के आधार पर एक-तन्त्री शासन के विरुद्ध लोकतंत्री शासन का समर्थन किया। संसदीय प्रणाली को ऋग् वेद से प्रमाणित किया। अपने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' ग्रन्थ में 'राजा-प्रजा विषय धर्म.' अध्याय में इसका विस्तृत विवेचन किया गया है। इस प्रकरण मे केवल राजा ही का नहीं बल्कि प्रजा का राज्य के प्रति क्या कर्त्तव्य है यह भी निरूपित किया गया है।

वेद में परा-अपरा विद्या

कई दार्शनिकों का मत है कि परा' एवं 'अपरा' विद्या का वर्णन केवल उपनिषदों में ही है—वेदों में इसका वर्णन नहीं है। ऋषि दयानन्द ने इस विचार-धारा का खण्डन किया है। वे इन दोनों विद्याओं को वेदों में मानते हैं। वह लिखते हैं—'वेदों में दो विद्याएं हैं एक अपरा और दूसरी परा। इनमें से 'अपरा' यह है कि जिससे पृथिवी से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों के गुण ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना होता है। और दूसरी 'परा' कि जिससे सर्वशक्ति-मान ब्रह्म की यथावत प्राप्ति होती है। यह 'परा' विद्या 'अपरा' विद्या से श्रेष्ठ है—क्योंकि अपरा का ही उत्तम फल 'परा' विद्या है' (ऋ. भाष्य भूमिका) 'अपरा' विद्या से मनुष्य अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं व्यक्तिगत विकास करते हुए 'परा' विद्या से 'मोक्ष' को प्राप्त करता है।

स्वामी जी ने वेद में जड़-पूजा पूजा-मृतक श्राद्ध एवं कामुकता का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया है। वेद में भौतिक विज्ञान जैसे 'वायुयान', 'विद्युत' पृथ्वी का भ्रमण—एवं खगोल विद्या का सूचक मन्त्रो को स्वीकार किया है। समग्र मानव जाति के अभ्युदय के लिए वेद है—ऐसी उनकी परिकल्पना थी।

वेद और मानव जाति

स्वामी दयानन्द के युग में यह सिद्धांत प्रबल वेग से कार्य कर रहा था कि वेद पर अधिकार जन्मना ब्राह्मणों का ही है। शूद्रों एवं महिलाओं से वेद इतने दूर रखे गए थे आज के युग में ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती। आचार्य शंकर अपने ब्रह्मसूत्र के भाष्य में लिखते हैं (गौतम स्मृति का प्रमाण देकर) 'यदि शूद्र वेद के शब्द सुन ले तो उसके कान को 'सीसा' और 'लाख' से भर देना चाहिए। शूद्र चलता-फिरता श्मशान है, अतः उसके सामने अध्ययन नहीं करना चाहिए। सदर्भ--(ब्रह्म-शांकर भाष्य-अ० १ पाद ३ सूत्र ३८) आचार्य रामानुज, स्वामी आनन्द तीर्थ, एवं वल्लभाचार्य, ने भी शंकराचार्य के ही मत का समर्थन किया है।

लेखक :
जगदीश आर्य 'सिद्धान्तरत्न'

स्वामी दयानन्द प्रथम मनस्वी हुए हैं जिन्होंने इस सिद्धान्तों की धज्जियां उड़ा दीं। इस विचारधारा के खण्डन में वह यजुर्वेद २६।२ के मन्त्र प्रमाण देकर सभी मानवों का वेदों पर अधिकार मानते हैं। ऋषि दयानन्द की इस क्रांतिकारी घोषणा का ही प्रतिफल है कि सनातन धर्म के विद्वानों द्वारा भी शूद्रों एवं स्त्रियों के वेदाध्ययन के अधिकार को स्वीकार किया गया है।

ऋषिवर ने अपने वेदभाष्य एवं शास्त्रार्थों के द्वारा वेद ज्ञान रूपी सूर्य के चारों ओर जो घने काले बादलों का धुंध छाया था, उसे विदीर्ण कर वेद-सूर्य की प्राणदायक जीवन दायिनी रश्मियों को उद्भासित किया है।

बोध-कथा

पक्का इरादा

कक्षा के सभी बच्चे खिलखिला उठे। कक्षा के शिक्षक भी एक लड़की पर व्यंग्य करते हुए बोले—"क्यों खेल-खिलाड़ियों के बारे में जानना चाहती हो। पहले अपने पैरों की ओर तो देखो। तुम ठीक तरह से चल भी नहीं सकती हो और ओलम्पिक खेलों के रिकार्ड जानना चाहती हो?" वह बच्ची कुछ नहीं बोल सकी और सारी कक्षा हंसी से गूंजती रही। अगले दिन कक्षा में मास्टर जी ने फिर उस लड़की पर व्यंग्य किया तब वह तिलमिला उठी। उसने बगल में पड़ी बैसाखी लगाई और उठते हुए दृढ़ संयमित स्वरों में कहा—"ठीक है, आज मैं अपाहिज हूं—चल-फिर नहीं सकती, लेकिन मास्टर जी, यह याद रखिए कि मन में पक्का इरादा हो तो क्या नहीं हो सकता। आप आज मुझ पर हंस रहे हैं, मेरे अपाहिज या अपंग होने पर हंस रहे हैं, लेकिन याद रखिए, यही अपंग लड़की एक दिन हवा में उड़कर दिखाएगी।" उसकी बात सुनकर उसके साथियों ने फिर खिल्ली उड़ाई।

वह दिन था वह दिन—फिर उस अपाहिज लड़की ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह प्रतिदिन चलने का अभ्यास करने लगी। कुछ ही दिनों में वह अच्छी तरह चलने लगी और धीरे-धीरे दौड़ने भी लगी। उसकी इस कामयाबी ने उसके हौसले बुलन्द कर दिए। कुछ ही दिनों में वह अच्छी धावक बन गई। १९६० के ओलम्पिक में उसने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और एक साथ तीन स्वर्ण पदक जीत कर सबको चकित कर दिया।

हवा से बात करने वाली महत्त्वाकांक्षा रखने वाली एक समय की वह अपंग लड़की थी टेनेसी राज्य की ओलम्पिक धावक-खिलाड़ी-'विल्मा ग्लोडीन रुडाल्फ।'

—नरेन्द्र

अजमेर के समीप ४ हजार मेहरात मुसलमान हिन्दू बने।

अजमेर। नगर से ५० किलोमीटर दूर दलाई कस्बे में चार हजार मेहरात मुसलमानों ने हिन्दू धर्म स्वीकार किया। बाबा रामदेव मन्दिर के निकट बारह गांवों के ८१ परिवारों ने शुद्धि समारोह में भाग लिया। इन सभी लोगों ने मुस्लिम रीति-रिवाज विवाह व सुन्नत की प्रथा त्यागने की घोषणा की।

इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में सभी धर्मान्तरित हिन्दू भाइयों ने यज्ञ में आहुतियां दीं। यह कार्यक्रम १७ अक्तूबर के दिन सम्पन्न हुआ।

जाति पांति और छुआछूत का त्याग करें।

आर्यसमाज के अन्तरंग सदस्यों, पदाधिकारियों, अधिकारियों, आर्य बन्धुओं, जब कोई भी उपदेशक, प्रचारक, व्यवस्थापक या अन्य अधिकारी जब ग्रामीण क्षेत्र में जाते हैं तो जो बन्धु अपने आर्य कहलाते उपदेशकों, प्रचारकों की जाति पूछते हैं। तथा कहते हैं कि तुम किस बिरादरी व जाति के हो, मेरे सामने भी कई बार ऐसी समस्याएं आई हैं। मैं इन ढोंगी पाखन्डी, धूर्त लोगों से अनुरोध करता हूं कि वे आर्य समाज की महान वेदी से हट जायें तथा आर्य समाज व महर्षि दयानन्द के नाम को कलंकित न करें और अपने को आर्य न कहें। शायद वे नहीं जानते कि, उपदेशक प्रचारक, हिन्दू हितों के रक्षा में अपना घर-बार छोड़ पुण्य का धर्म का कार्य कर रहे हैं। जबकि वे एक पाखण्ड फैलाते हैं। आपसे अनुरोध है कृपया अपने नगर में उपदेश का प्रबन्ध कीजिए, व्यवहार कीजिए।

—अमृतलाल नगर शुद्धि सभा [illegible]

आओ, अच्छे स्वार्थी बनें

जगनलाल-प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार

सारी दुनिया स्वार्थी है। संसार का प्रत्येक प्राणी-क्या आदमी और क्या पशु पक्षी सभी स्वार्थ के वशीभूत अपने-अपने कार्यों में रत हैं। यदि मानव में स्वार्थ की भावना नहीं हो संसार का सारा कार्य कलाप बन्द हो जावे। इस स्वार्थ की भावना के कारण ही यह संसारचक्र चलता दीख पड़ता है। और यह स्वार्थ की भावना इस दो पद देहधारी (मानव) में ही क्यों यह तो पशु-पक्षियों में क्या कुछ कम है। उदाहरण के तौर एक कुत्ता अपने स्वार्थ के कारण दूसरे कुत्ते पर अपने पास पड़े रोटी के टुकड़े के पास आने नहीं देता।

धर्मग्रन्थों में स्वार्थ की निन्दा परन्तु आध्यात्मिक जगत में इस प्रकार के स्वार्थ की भावना को हमारे धर्म ग्रन्थों में बड़ी निन्दा की गई है। यही स्वार्थ की मकानोवृत्ति सब पापों की जननी कही गई है, जो हमारे परम पद की प्राप्ति के मार्ग में एक बड़ी बाधा है और परमार्थ की पगडण्डी में एक विषम खाई के समान है, अतः यह सर्वथा त्याज्य कही गई है। स्वभावतः जिज्ञासा होती है। कि धर्मग्रन्थों में स्वार्थ त्याज्य कहा गया है, तब आओ देखें कि अच्छे स्वार्थी बनें शीर्षक की तुक क्या है?

स्वार्थ शब्द दो छोटे-छोटे शब्दों से मिलकर बना है 'स्व+अर्थ' अर्थात् आत्मिक का अपना हित। दूसरा अर्थ इसका (सु=अर्थ) अच्छा उत्तम हित है। अतः इस स्वार्थ शब्द का अर्थ हुआ अपना उत्तम हितका साधन।

संसार में हम देखते है कि विषय प्रेमी मनुष्य—स्त्री या पुरुष स्वार्थी कहलाता है। यह इन्द्रियों के भोगों के बटोरने में ही—धन दौलत, पुत्र कलत्र भोजन, वसन, मकान, दुकान कोठी कारखाना आदि के जुटाने और इन्द्रियों की प्राप्ति में लगा रहता है और इसको ही वह अपना स्वार्थ (उत्तम हित यह शुरू में बड़ा मोहक होता है, परन्तु परिणाम में विषभरा होता है। कठोपनिषद् में लिखा है—

"श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्त केतत्,
सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।"

यह तृष्णा कभी शान्त नहीं होती, हम तो समाप्त हो जाते हैं, परन्तु यह सदैव जवान बनी रहती है। नीतिकारों ने कहा भी है।

"तृष्णा न जीर्णा, वयमेव जीर्णा,
भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता।"

महाभारत कार ने भी ठीक ही लिखा है—"अन्ततो नास्ति पिपासायाः ये इन्द्रियां बहिर्मुखी होती हैं और मनुष्य को भोगों में घसीट कर ले जाती हैं कुछ समय पश्चात ये भोग हमें ऐसा जकड़ लेते हैं कि हमारा इनसे छुटकारा पाने की इच्छा होने पर भी ये हमको नहीं छोड़ते। इसीलिए स्मृतिकारों ने इन्हें 'दुरन्तः' कहा है। एक-एक इन्द्रिय के वशीभूत हुआ प्राणी नाश को प्राप्त हो जाता है, भला इस पांच हाथ लम्बा देहधारी प्राणी की (मानव) जो पांचो ही इन्द्रियों का दास है, कैसी दुर्दशा होगी—यह विचार करने की बात है। भर्तृहरि ने कैसा सुन्दर कहा है—

कुरङ्ग मातङ्ग पतङ्ग भृङ्ग मीनाः,
एता हता पञ्चभिरेव पञ्चाः।
एकः प्रमादी कथं न हन्यते,
य सेवते पञ्चभिरेव पञ्च।

योगीराज श्री कृष्ण जी ने भी गीता अध्याय २, श्लोक ६, में कुछ ऐसे ही विचार व्यक्त किए हैं भला बताए तो सही, कि ऐसे लोगों को स्वार्थी कौन कहेगा। इसमें स्वार्थ का—अपने हित का नाश ही होता है। जो अपने ऊपर विपत्ति लावे वह स्वार्थ का—अपने हित का साधक कैसे हो सकता है। वह तो तत्वतः स्वार्थी है ही नहीं, क्योंकि इसमे उसके नाश के सिवा और कुछ भी तो नहीं।

प्रायः हम कुछ भूल के कारण इस भौतिक शरीर को ही आत्मा समझ बैठे हैं और इस शरीर के पालन-पोषण की सामग्री जुटाने मे अपना स्वार्थ समझते हैं, परन्तु ऐसा स्वार्थ बिना राग-द्वेष, कपट, छल, कुटिलता और लोभ और क्रोध वैमनस्य के बिना सिद्ध होना सम्भव नहीं, अतः यह स्वार्थ कैसे जो अपने ऊपर विपत्ति लाए। इस शरीर को आत्मा मानना ही मूलत बड़ा दोष है।

वेद ने बड़े स्पष्ट शब्दों मे बताया है कि शरीर और आत्मा दो भिन्न-भिन्न चीजें हैं, इनमे से एक (शरीर) पार्थिव नाशवान, विकार वाला और अथिर स्थायी है, और दूसरा (आत्मा) अमर, अपार्थिव, शाश्वत रहने वाला है। इन दोनों के संयोग को जीवन और वियोग को मृत्यु कहते हैं। 'वायुरनिलममृत-

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत् समाचार

कोतवाली का शेष भाग मतिदास स्मारक को दिया जाए

नई दिल्ली हिन्दू रक्षा दल के सचिव श्री विश्वनाथ खन्ना ने भारत सरकार से जोरदार शब्दों में मांग की है कि चांदनी चौक दिल्ली कोतवाली का शेष आधा भाग गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को बजाय। भाई मतिदास स्मारक समिति को दिया जाए। श्री खन्ना ने एक वक्तव्य मे कहा कि यदि यह स्थान गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी दिल्ली को दिया गया तो हिन्दू समाज के साथ अन्याय होगा, क्योंकि इस स्थान पर अमर हुतात्मा भाई मतिदास का स्मारक का निर्माण अत्यावश्यक हैं। इस स्थान पर भाई मतिदास को औरंगजेब के निर्देश पर शहीद किया गया था। भाई मतिदास ने गुरु तेग बहादुर जी से पूर्व अमरत्व प्राप्त किया था। यह भी उल्लेखनीय है कि भाई मतिदास स्मारक समिति के प्रधान डा. परसराम छिब्बर इस सम्बन्ध मे भारत सरकार से मांग कर चुके हैं।

गोरखपुर में यजुर्वेद पारायण

नगर आर्य समाज साहबगंज गोरखपुर का वार्षिकोत्सव गोपाष्टमी के राष्ट्रीय पर्व पर दिनांक २० नवम्बर से २४ नवम्बर तक बिस्मिल यज्ञशाला लाल डिग्गी उद्यान साहबगंज पर मनाया गया। उसमें आर्य जगत के विद्वान ब्रह्मचारी नारायण स्वामी, पण्डित शान्तिप्रकाश (आलिम फाजिल) प० सत्यमित्र शास्त्री व्याकरणाचार्य, जोरावर सिंह भजनोपदेशक, प्रभावती देवी स्नातिका, ठाकुर महिपाल सिंह, मुन्नीलाल आर्य आदि ने भाग लिया। दिनांक २०-११-८२ के यजुर्वेद पारायण यज्ञ का शुभारम्भ श्री पण्डित द्विजराज शर्मा पुरोहित अध्यक्ष जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा ने वेद मन्त्रों से कराया। स्टेशन से महात्मा नारायण स्वामी की एक शोभा यात्रा निकाली गई जो नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई लालडिग्गी पर समाप्त हुई और वहीं पर विराट हिन्दू रक्षा सम्मेलन हुआ जिसका उद्घाटन गोरख नाथ पीठाधीश्वर पूज्य महन्त अवैद्यनाथ जी ने किया और आयोजित सहभोज में पूज्य महन्थ जी के साथ सम्भ्रान्त नागरिकों ने हरिजनों के साथ भोजन किया। शोभा यात्रा एवं सभा का संचालन रमेश प्रसाद गुप्त मन्त्री नगर आर्य समाज एवं कालेजों में होने वाली सभा का आयोजन अशोक कुमार लोहिया मन्त्री आर्य युवक परिषद एवं उमादत्त ने किया। बृजेशमणि त्रिपाठी अध्यक्ष आर्य युवक परिषद ने नगर में होने वाले गोलीकाण्डों की घोर निन्दा करते हुए अराजक तत्वों की गिरफ्तारी की जोरदार मांग सरकार से की।

लाला लाजपत की पुस्तक 'आर्यसमाज' हिन्दी मे

प्रसिद्ध आर्य नेता एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के अमर सेनानी श्री लाला लाजपतराय द्वारा सन् १९१५ ई० में लिखित तथा लन्दन से प्रकाशित आर्यसमाज—नामक अंग्रेजी पुस्तक का आर्यसमाज अजमेर ने अपनी शताब्दी के अवसर पर डा० भवानीलाल जी भारतीय द्वारा प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद करवा कर पुन: प्रकाशन करवाया है। इसमे आर्य जगत के मनीषी लेखक तथा विद्वान शिक्षा शास्त्री श्री दत्तात्रेय वाब्ले (आर्य) ने वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में आर्यसमाज विषयक १२५ पृष्ठों का परिशिष्ट भी लिखा है जो पुस्तक को और भी उपयोगी बना देता है।

इस हिन्दी अनूदित—आर्यसमाज नामक पुस्तक का विमोचन गत ३१ अक्तूबर १९८२ ई० को सायकाल एक विशेष समारोह में आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा सम्पन्न हुआ। यह पुस्तक अत्यन्त विचारोत्तेजक प्रेरणादायी, प्रासंगिक एवं आर्यसमाज पर अधिकृत पुस्तक है। ४३० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक की कीमत मात्र १२.०० रुपये रखी गई है

आर्यसमाज जमशेदपुर (बिहार) के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री बल्देव भाखरी, उपप्रधान—श्री सत्यपाल अरोड़ा, श्री राजपाल सोती, मन्त्री—डा० ओम्प्रकाश आर्य, उपमन्त्री—डा० कृष्ण नारंग, विद्यालय मन्त्री—श्री मेहरचन्द्र कुन्दरा, पुस्तकालयाध्यक्ष—डा० बुद्धसिंह।

१०८ विधर्मी वैदिक धर्म में प्रविष्ट

नई दिल्ली। आर्यसमाज राजेन्द्रनगर नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर एक मुसलमान परिवार के ६ व्यक्तियों और १०२ ईसाइयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धिसंस्कार श्री द्वारकानाथ सहगल, प्रधान मन्त्री, शुद्धि सभा ने सम्पन्न कराया। शुद्धि सभा ट्रस्ट के प्रधान श्री बहल ने शुद्ध होने वाले सभी भाइयों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया और भविष्य में उनसे हर प्रकार का सम्पर्क बनाए रख कर सभी समस्याओं के समाधान करने के लिए सुदृढ़ प्रयत्न करने पर बल दिया। स्वागताध्यक्ष पद से बोलते हुए उन्होने कहा—आज हिन्दू जाग उठा है और राष्ट्र की बिगड़ती हुई धार्मिक स्थिति से निपटने के लिए हम हर प्रकार से तैयार है।

स्त्री आर्यसमाज राजेन्द्र नगर की प्रधान एवं सदस्यों ने सभी शुद्ध हुए भाई बहनों को श्रद्धा के साथ भोजनादि से स्वागत किया।

अजमेर में विशाल शोभायात्रा एवं पुस्तकों का वितरण

अजमेर। आर्यसमाज अजमेर की स्थापना शताब्दी के अवसर पर रविवार ३१ अक्तूबर ८२ ई. को अजमेर नगर मे सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा आर्य जगत के प्रसिद्ध नेता श्री रामगोपाल जी शालवाले तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट के नेतृत्व में विशाल ऐतिहासिक जुलूस निकाला गया जिसमे २० हजार स्त्री-पुरुष आर्यजन, बालक-बालिकाए, ग्रामीण जन तथा १२ घोडे, एक हाथी, ६ बैंड, ५ ऊँट, चार भजन मण्डलिया, दो जीपें, ट्रक, बग्घी तथा आर्यवीर दलव्यायाम के प्रसिद्ध अखाड़े थे। सन्यासीगण बग्घी में सवार थे। जुलूस में हजारों ओ३म् पताकाएं, झण्डे बैनरस, प्रदर्शन पट आदि लिए हुए वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय तथा आर्यसमाज अमर रहे के नारों से पूरा अजमेर नगर गूंज उठा। नगर की जनता द्वारा बाजार में लगभग ८० हजार स्वागत द्वार बनाए गए तथा स्थान-स्थान पर फूलो से तथा फलों वितरण कर स्वागत किया गया। ख्वाजा साहब की प्रसिद्ध दरगाह के बुलन्द दरवाजे से भी जुलूस पर स्थानीय मुस्लिम समाज की ओर से फूलों की वर्षा की गई।

इस अवसर पर आर्यसमाज अजमेर की ओर से देश धर्म और हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन' नामक पुस्तिकाएं १० हजार की संख्या में निशुल्क वितरित की गईं।

राजस्थान प्रान्तीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर की स्थापना शताब्दी के अवसर पर दि. ३० अक्तूबर ८२ को सायकाल श्री छोटूसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अध्यक्षता में राजस्थान प्रान्तीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने किया। इस अवसर पर श्री रामगोपाल जी ने राजस्थान प्रान्त की विभिन्न आर्य सभाओं के ५०० प्रतिनिधियों के सम्मुख देश, धर्म और कौम पर मण्डरा रहे पेट्रो डालर, धर्मान्तरण मीनाक्षीपुरम खालिस्तान विदेशी मिशनरियों के खतरे से आगाह करते हुए संगठित होकर धर्म रक्षा में जुट जाने का आह्वान किया तब काश्मीर पुनर्वास विधेयक की कड़ी आलोचना करते हुए फारूख अब्दुल्ला की राष्ट्र घाती सरकार के खिलाफ सख्त कदम उठाने की मांग की। इस सम्मेलन का संयोजन श्री भगवती प्रसाद जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने किया।

इससे पूर्व आर्यसमाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय आर्य (वाब्ले) ने आर्य नेताओं का माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस अवसर पर आचार्य श्री भगवानदेव संसद, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती तथा प. देवरज जी के ओजस्वी भाषण एवं भजन हुए।

मीनाक्षीपुरम (तमिलनाडु) में सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिसम्बर ८२ तथा ८३ में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पहले अजमेर में और फिर दिल्ली में मनाने का निर्णय किया गया।

अन्त में आर्यसमाज अजमेर में हुई स्थापना शताब्दी के संयोजक श्री रामसिंह जी ने समस्त आर्यजनों के प्रति आभार प्रकट किया।

आर्य अध्यापिका चाहिए

'आर्य आदर्श विद्यालय (आर्यसमाज मन्दिर) आदर्शनगर दिल्ली ११००३३ के लिए नर्सरी ट्रेन्ड तथा आर्य विचारों वाली अध्यापिकाएं प्रार्थनापत्र द्वारा अथवा व्यक्तिगत रूप में २३-१२-८२ तक सम्पर्क करें।'

—महावीर मंत्री, आर्यसमाज आदर्श नगर, दिल्ली ११००३३

आर्यसमाजों के सत्संग

१२ दिसम्बर'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—स्वामी प्रेमानन्द; अमर कालोनी—डा० रघुनन्दनसिंह; अशोक विहार के-सी-१२ ए—आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार, आर्यपुरा—पं० हरिदत्त शास्त्री; कालकाजी—प० देवराज वैदिक मिशनरी; करोल बाग—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; कृष्ण नगर—डा० सुखमीदास; गांधी नगर—प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री; गीता कालोनी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश-II—प० अमरनाथ कान्त; गुड़ मण्डी—प० ईश्वरदत्त; गुप्ता कालोनी—प० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—डा० नन्दलाल; चूना मण्डी-पहाड़ गंज—पं० बलवीरसिंह शास्त्री; जंगपुरा-भोगल—प० हरिश्चन्द्र आर्य; जनकपुरी सी-III—पं० ओम्वीर शास्त्री; डिफेंस कालोनी—प० सत्यपाल 'मधुर' भजनोपदेशक; तिलक नगर—प० देवेश; तिमारपुर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; दरियागंज—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; नारायण विहार जी-२५—श्री महावीर बत्रा; नया बांस—प्रो० सत्यपाल बेदार; न्यू मोती नगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, निर्माण विहार—प० सत्यदेव भजनोपदेशक; पंजाबी बाग—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन—प० खुशीराम शर्मा; बाग कड़े खां—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—प० रामनिवास; मोडल टाउन—श्री अखिलेश भारती; महावीरनगर—प० रामरूप शर्मा; मालवीय नगर—श्रीमती गीता शास्त्री; रमेश नगर—प० गणेशप्रसाद विद्यालंकार राणा प्रताप बाग—प० कामेश्वर शास्त्री; राजा गार्डन—प्र० छविकृष्ण शास्त्री; रोहतास नगर—प० अशोक कुमार विद्यालंकार, लड्डू घाटी-पहाड़गंज—प० सीसराम भजनोपदेशक, लक्ष्मी बाई नगर ई-१२०८—श्रीमती लीलावती आर्या, लाजपतनगर—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार, लेखराम नगर-त्रिनगर—प० वेदपाल शास्त्री, लारेंस रोड—डा० रघुवीर वेदालंकार, लोधी रोड-जोर बाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, विक्रम नगर—प० सोमदेव शास्त्री, विनय नगर—कविराज बनवारीलाल शादा भजनोपदेशक, सदर बाजार-पहाड़ी धीरज—डा० सुखदयाल भूटानी, सराय रोहेला—श्रीमती सुशीला राजपाल, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा श्रीमती कमला आर्या गायिका, सोहनगंज—प० हरिश्चन्द शास्त्री शालीमार बाग—प० रविदत्त गौतम, शादीपुर—प० प्राणनाथ सिद्धांतालंकार, हौज खास—प० ओम्प्रकाश वेदालंकार, मयूर विहार—प० वेदव्यास भजनोपदेशक तथा प० ज्योतिप्रसाद ढोलक कलाकार।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

आओ, अच्छे स्वार्थी बनें (पृष्ठ ५ का शेष)

मथेव भस्मान्त शरीरम्।'

'स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्' गीता अध्याय २, श्लोक १८ में भी इस भाव को बड़ी सुन्दरता से दर्शाया है—

"अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत.

अतः आज का तथाकथित स्वार्थी मानव वास्तव में स्वार्थी न होकर अपने साथ अन्याय करके स्वयं अपने विनाश का कारण बना हुआ है। सच्चा स्वार्थी होने के लिये तो इसे आत्मा के हित की बात करनी चाहिए न कि इस पार्थिव शरीर की।

'आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेवतु.
बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च,
इन्द्रियाणि हयानाहु विषयांस्तेषु गोचरान्
आत्मेन्द्रिय मनोयुक्त भोक्तेत्याहुर्मनीषिः

अत यह भोग और संग्रह की दूषित वृत्ति हमको आत्मा के हित (वास्तविक स्वार्थ) से कोसों दूर ले जाती है। संसार से कुछ लेने की इच्छा करते ही हम भगवान से विमुख हो जाते हैं अर्थात् आत्मा का अनहित करने लगते हैं और किसी प्रकार की भी यह इच्छा बन्धन है और यह बन्धन ही प्रभु प्राप्ति में बड़ा बाधक है। मनु ने कहा है—'अर्थकामेषु असक्तानां धर्मज्ञान विधीयते।' अत इस दूषित पापमयी वृत्ति से बचने के लिए मानव के मन में प्रत्येक क्षण, हर घड़ी यह बात रहनी चाहिए कि वह यहां का स्थायी निवासी नहीं है। वह एक यात्री (बटोही) यहां विचर रहा है।

स्पष्ट है कि शरीर के स्वार्थ भोग कार्य सब दुखदायी हैं और आत्मा के स्वार्थ सदा सुखदायी होते हैं। पहले से छल, कपट, रागद्वेष, शत्रुता लाने और पाप और अन्त में नाश है, दूसरे में मित्रता, प्रेम, सरलता, आचार, भक्ति और अन्त में मोक्ष है।

इसलिए जहां तक बने विषय सुख जनित स्वार्थ का त्याग करो, अपने शरीर मन, बुद्धि और इन्द्रियों का सदुपयोग करके सब व्यवहार निष्काम भाव से करके परमात्मा के चरणों में अर्पित कर दो।

आर्यसमाज अनारकली का ५८ वां वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली। आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का ५८ वां वार्षिकोत्सव १२, १३, १४ नवम्बर के दिन मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के विज्ञान वेत्ता आर्य सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी की वेदकथा की गई। ८ से १४ नवम्बर तक नित्य प्रातः काल जैमिनी जी शास्त्री द्वारा गायत्री महायज्ञ किया गया। १२ नवम्बर को श्री कृष्णस्वरूप जी की अध्यक्षता मे दलितोद्धार सम्मेलन हुआ। १३ नवम्बर को आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में स्कूली छात्र-छात्राओं की सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता हुई। इसी दिन रात्रि को श्री क्षितीश वेदालंकार की अध्यक्षता मे कवि सम्मेलन हुआ।

१४ नवम्बर को प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। प० जैमिनी शास्त्री, प० शिवकुमार शास्त्री एव महात्मा आर्य भिक्षु के विशेष प्रवचन हुए। दोपहर पश्चात ब्र० राजसिंह की अध्यक्षता मे केन्द्रीय आर्य युवक सम्मेलन हुआ।

आर्यसमाज पंजाबी बाग में वेद प्रवचन और यज्ञ

आर्यसमाज पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६ मे १३ दिसम्बर से १६ दिसम्बर १९८२ तक प्रतिदिन रात्रि को ९॥ से १०-३० तक स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा वेद प्रवचन प्रस्तुत किए जाएंगे। इस अवसर पर रात को ८ से ८-४५ तक श्री गुलाबसिंह राघव के भजन होंगे। इन्हीं दिनों प्रात. ६॥ से ८ बजे तक स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व मे ब्रह्म ज्योतिर्महायज्ञ का आयोजन किया गया है।

आर्यसमाज बिरला लाइन्स के नए पदाधिकारी

वरिष्ठ प्रधान—श्री देशराज पराशर, कार्यकर्ता प्रधान—श्री श्यामसुन्दर आर्य, उपप्रधान—श्री विश्वनाथ कोहली, श्री देवीशरण आर्य, मन्त्री—श्री जयकृष्ण आर्य, उपमन्त्री—श्री प्रेमसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री जयप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण वैद्य, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री ओम्प्रकाश, दलपति आर्य वीर दल—श्री नन्दकिशोर आर्य।

आर्यसमाज शालीमार का दूसरा वार्षिकोत्सव

शनि-रवि ११-१२ दिसम्बर को आर्यसमाज शालीमार बाग, दिल्ली-३३ का वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा। शनिवार को ६ बजे सामवेद यज्ञ होगा। १२ बजे से ३ बजे तक श्रीमती शान्ति मोहन की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन होगा। रविवार १२ दिसम्बर को प्रात. ६ बजे यजुर्वेद यज्ञ होगा।

१० बजे स्वामी विद्यानन्द जी ध्वजारोहण करेंगे। ११ बजे से १ बजे तक सार्वदेशिक के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में राष्ट्रोत्थान सम्मेलन होगा। प्रमुख वक्ता होंगे—प्रो. भारतमित्र शास्त्री, पं. क्षितीश वेदालंकार, प. सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री सरदारीलाल वर्मा, डा० वाचस्पति उपाध्याय, प. शिवकुमार शास्त्री। मुख्य अतिथि होंगे आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दक्षिण दिल्ली की आर्यसमाजों के संगठन दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में रविवार १२ दिसम्बर को प्रातः ८ बजे से १ बजे तक आर्यसमाज डिफेंस कालोनी (सेवा नगर फ्लाई ओवर के पास) स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती करेंगे। १ बजे ऋषिलगर होगा।

आर्यसमाज कोटला में बलिदान दिवस

बुधवार १५ दिसम्बर को दोपहर १२॥ बजे २ बजे से तक उद्योग भवन की दीवार के सामने वाले पार्क में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जाएगा। प्रमुख वक्ता होंगे स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज, श्री दिनेशचन्द्र शास्त्री, संगीताचार्य, श्री गुलाबसिंह राघव, संगीताचार्य, श्री सत्यपाल 'मधुर' और श्री प्रकाशवीर 'व्याकुल'।

कुरुक्षेत्र के सूर्यग्रहण मेले पर वेदप्रचार शिविर

हरयाणा के ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगर कुरुक्षेत्र में १५ दिसम्बर '८२ के दिन सूर्यग्रहण के मेले पर गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार शिविर लगाया जा रहा है।

हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक

अकालियों द्वारा चलाए जा रहे राष्ट्र विरोधी आन्दोलन से उत्पन्न परिस्थिति का सामना करने के लिए हरयाणा के सभी दल और संगठन प्रदेश और राष्ट्र के हितों की रक्षा के लिए एक होकर डटे हुए हैं। अकाली आन्दोलन के आगामी मोर्चे एव कार्यक्रम का डटकर मुकाबला करने के लिए हरियाणा रक्षावाहिनी की प्रान्तीय स्तर की एक अत्यन्त आवश्यक बैठक रविवार १२ दिसम्बर को दोपहर बाद १॥ दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक में की जा रही है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वाटिका प्रेस १९७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। कार्यालय : १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे　वार्षिक १५ रुपये　वर्ष ७　अंक ८　रविवार १९ दिसम्बर १९८२　पौष ५ वि० २०३९　दयानन्दाब्द—१५८

मीनाक्षीपुरम में अ० भा० आर्यमहासम्मेलन आयोजित

अनेक सम्मेलनों का आयोजन : वैदिक यज्ञ एवं बिछुड़ों का मिलन

उत्तर भारत से हजारो आर्य नर-नारी बसों एव रेल द्वारा सम्मेलन मे भाग लेंगे

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आगामी ३१ दिसम्बर तथा १-२ जनवरी को मीनाक्षीपुरम में विशाल अ भा आर्य महासम्मेलन आयोजित करने की व्यवस्था कर रही है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने ४ दिस० की मीनाक्षीपुरम यात्रा के बाद आयोजित एक प्रेस सम्मेलन मे सूचना दी कि आर्य महासम्मेलन के साथ हरिजन स्नेह सम्मेलन बृहद वैदिक यज्ञ तथा बिछुडो का पुनर्मिलन आदि महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम करने की तैयारिया की जा रही हैं।

यह भी ज्ञात हुआ है कि मीनाक्षीपुरम आर्यसमाज के प्रधान श्री अनन्तराम इस आर्य महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं। यह भी विदित हुआ है कि मीनाक्षीपुरम के आर्य महा सम्मेलन मे भाग लेने के लिए हजारो की सख्या मे आर्यसमाजो के कार्यकर्ता एव प्रतिनिधि भाग लेने के लिए बसो तथा रेलो द्वारा आएगे।

मुस्लिम संसद सदस्यों का नया मोर्चा

हिन्दू संगठनों के विरुद्ध एक संगठित प्रयास

नई दिल्ली। लगभग तीन वर्ष पहले भोजन की राजनीति (डिनर पालिटिक्स) ने जनता पार्टी के टुकडे-टुकडे कर दिये थे अब लगता है कि मुस्लिम सासदो की भोजन की राजनीति भी देश की राजनीतिक व्यवस्था मे एक नया मोड देने की कोशिश कर रही है। पिछले दिनो कांग्रेस (इ) के वरिष्ठ ससद सदस्य श्री असद मदनी ने अपने निवास पर एक सर्वदलीय मुस्लिम सासदो की बैठक का आयोजन कर समस्त राजनीतिक सीमाए तोड दी है। श्री असद मदनी ने दलगत राजनीति से हटकर सभी दलो के चुने हुए मुस्लिम ससद सदस्य अपने घर आमन्त्रित किए थे। उल्लेखनीय बात यह है कि कम्युनिस्ट ससद सदस्यो को छोड कर अन्य सभी दलो के ५० से अधिक ससद सदस्य इस दावत मे शरीक हुए।

यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय ससद मे मुस्लिम ससद सदस्य लगभग ६५ हैं, उनमे ४२ लोकसभा के तथा २३ राज्यसभा के सदस्य हैं। दलीय दृष्टि से देखा जाए तो कांग्रेस (इ) के ४१ लोकदल के ६ मार्क्सवादी कम्युनिस्ट दल के ५, नेशनल कान्फ्रेंस के ५, मुस्लिम लीग के ३ जनता पार्टी अन्ना द्रमुक और कांग्रेस (एण्टोनी) के एक एक सदस्य हैं। इस बैठक मे सिंचाई राज्यमन्त्री श्री जेड ए अंसारी, रेल राज्यमन्त्री जफ्फार शरीफ विदेश राज्यमन्त्री श्री ए रहीम तथा सूचना प्रसारण उपमन्त्री श्री आरिफ मोहम्मद खान भी उपस्थित थे।

इन मुस्लिम सांसदो का एक ही स्वर था कि देश का मुस्लिम समाज इस समय गम्भीर सकट का सामना कर रहा है तथा मुस्लिमो के हित सरक्षण के लिए मुस्लिम ससद सदस्यो को एक जुट होकर प्रयास करने होंगे। बैठक का अगला दौर जनता पार्टी के ससद सदस्य सैयद शाहबुद्दीन के निवास स्थान पर हुआ। स्वय शाहबुद्दीन का कथन था कि मुस्लिम समाज की रक्षा के लिए वर्षों से खाने की मेज पर चर्चा होती रही है, लेकिन कोई ठोक रास्ता नही निकाला गया इसलिए इस बार ससद सदस्यो को मिल कर आम राय से कोई कदम उठाना चाहिए। श्री शाहबुद्दीन का यह कहना भी था कि देश के विभिन्न हिस्सो से मिल रहे पत्रो से यही निष्कर्ष निकल रहा है कि मुस्लिम समाज अब अधिक सहने को तैयार नही है और समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो लोग सडको पर अपना हिसाब चुकता कर लगे।

यह भी ज्ञात हुआ है कि इन मुस्लिम ससद सदस्यो के एक सयुक्त ज्ञापन पर मन्त्रियो को छोड कर अधिकाश सदस्यो ने तुरन्त हस्ताक्षर कर दिए। यह जानकारी भी मिली है कि ५ नवम्बर को २५ मुस्लिम सासदो के प्रतिनिधि मण्डल ने प्रधानमन्त्री को यह ज्ञापन दे दिया, इस पर ४५ संसदसदस्यो के हस्ताक्षर हैं।

विभिन्न दलो से सम्बन्धित ससद के ४५ मुस्लिम सदस्यो ने विश्व हिन्दू परिषद्, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ जैसी सस्थाओ पर प्रतिबन्ध लगाने की माग की है। इन मुस्लिम सदस्यों ने अपना एक स्मृति-पत्र ५ नवम्बर के दिन भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को सौंपा था। यह स्मरण पत्र शुक्रवार ९ दिसम्बर के दिन पत्रो को प्रसारित कर दिया गया। ज्ञात हुआ है कि इन हस्ताक्षर करने वाले मुस्लिम सदस्यो मे श्री असद मदनी श्री रफीक जकारिया श्री एफ मोहसिन श्री मसूदअली खान आदि तथाकथित राष्ट्रवादी मुस्लिम ससद सदस्य जनता दल के सैयद शाहबुद्दीन मुस्लिम लीगी श्री इब्राहीम सुलेमान सेट आदि सम्मिलित हैं।

२५ दिसम्बर को दिल्ली मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

भव्य विशाल शोभायात्रा एव सार्वजनिक सभा का आयोजन

दिल्ली। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की प्रतिनिधि सस्था आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से शनिवार २५ दिसम्बर के दिन अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का ५६ वा बलिदान दिवस सामूहिक रूप से मनाया जाएगा। सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी और महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने एक विज्ञप्ति द्वारा सूचना दी है कि उस दिन निम्न प्रकार से सम्मिलित जलूस और सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया है उसमे दिल्ली के समस्त आर्य हिन्दू स्त्री पुरुषो एव बच्चो को अधिक से अधिक गिनती मे भाग लेना चाहिए—

शनिवार २५ दिसम्बर को प्रात दस बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन से जलूस निकलेगा। जलूस श्रद्धानन्द बाजार खारी बावडी नया बास लाल कुआ चावडी बाजार नई सडक चादनी चौक फव्वारा दरीबाकला होते हुए ३ बजे दोपहर गाधी मैदान पहुचेगा। वहा एक विशाल सार्वजनिक सभा होगी उसमे प्रमुख आर्य नेता अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धाजलि प्रस्तुत करेंगे।

पत्रकार श्री रणवीर का देहावसान

नई दिल्ली। बडे दुःख के साथ यह सूचना दी जाती है कि सुप्रसिद्ध आर्य नेता स्व महात्मा आनन्द स्वामी जी के ज्येष्ठ पुत्र महान स्वतन्त्रता सेनानी एव दैनिक मिलाप (उर्दू) के सम्पादक श्री रणवीर जी का ८ दिसम्बर १९८२ के दिन गगाराम अस्पताल मे स्वर्गवास हो गया। भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी आदि प्रमुख राष्ट्रीय नेताओ ने उनके प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। उनकी स्मृति मे अन्तिम शोकसभा एव शान्ति प्रार्थना शनिवार ११ दिसम्बर १९८२ को अपराह्न ३ ३० बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे हुई।

स्वातन्त्र्य योद्धा श्री रणवीर देश के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सरदार भगतसिंह के साथियो मे से थे। उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने उनके प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा—'वह एक पक्के राष्ट्रवादी नेता और देश के सच्चे सेवक थे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

परमात्मा का स्वरूप

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपापविद्धम् ।

कवि मंनीषी परिभू. स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्य. समाभ्य ॥

॥ यजु० ४०।८॥

दीर्घतमा ऋषि, आत्मा देवता, स्वराड् जगतीछन्द, निषाद स्वर।

पदार्थ—हे मनुष्यो! [स] वह ब्रह्म (परि—अगात्) सब ओर से व्याप्त (सर्वव्यापक [शुक्रम्] शीघ्रकारी सर्वशक्तिमान् वा सब जगत् का कर्त्ता [अकायम्] स्थूल, सूक्ष्म वा कारण शरीर से रहित (अर्थात् जो कभी अवतार धारण नही करता) [अव्रणम्] अच्छेद्य (छिद्ररहित) [अस्नाविरम्] नाड़ी आदि के बन्धन से रहित [शुद्धम्] (अविद्यादि दोषरहित होने से) सदा पवित्र [अपापविद्धम्] जो कभी पापयुक्त, पापकारी अथवा पापप्रिय नही होता [कवि] सर्वज्ञ [मनीषी] (सब का अन्तर्यामी होने से) सब जीवो की मनोवृत्तियो को जानने वाला (परिभू) सर्वोपरि विराजमान दुष्ट पापियों का तिरस्कार (वा दमन) करने वाला(वा उनको यथोचित दण्ड देने वाला) [स्वयम्भू.] अनादिस्वरूप (सनातन स्वयसिद्ध) जिस की सयोग से उत्पत्ति और वियोग स विनाश वा माता-पिता गभवास, जन्म, मरण और वृद्धि नही होते (इत्यादि लक्षणो से युक्त जो सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा है वह) सृष्टि क आदि मे अपनी) [शाश्वतीभ्य] सनातन अनादिस्वरूप (उत्पत्ति वा विनाशरहित) (समाभ्य) प्रजाओ (जावो) के लिए (याथातथ्यत) यथावत् (अथात्) सब पदार्थों का (वद द्वारा) (व्यदधात्) उपदेश करता ह। वही परमश्वर तुम लोगो को उपासना करन के योग्य है)। ऋषि (दयानन्द भाष्य)

भावार्थ.—हे मनुष्यो! जो अनन्त शक्तियुक्त अजन्मा, निरन्तर सदा मुक्त, न्यायकारी, निमल, सवज्ञ, सब का साक्षी, नियन्ता, अनादिस्वरूप ब्रह्मकल्प के आरम्भ म जीवो के लिए अपने कहे वेदो द्वारा शब्द अर्थ और उनके सम्बन्ध का जनाने वाली विद्या का उपदेश न करे तो कोई भी विद्वान् न होवे और न ही धर्म, अथ, काम वा मोक्षरूप फल को प्राप्त करने मे समर्थ हो। इस लिए उसी ब्रह्म की सदैव उपासना करो॥

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

अतिरिक्त स्पष्टीकरण —

ईश्वर की स्तुति करना उसके गुणो का वर्णन करना है और उसके गुणो का वर्णन करना उसके यथार्थ स्वरूप का वर्णन करना है। वैसे तो वेदो मे ईश्वर-स्तुति के कई मन्त्र हैं, परन्तु उक्त एक ही मन्त्र (जिस का पदार्थ वा भावार्थ ऊपर दिया गया है। मे जैसा ईश्वर के बहु गुणों का वर्णन किया गया है (अर्थात् उस के महान् यथार्थ स्वरूप का वर्णन किया गया है। वैसा कोई मन्त्र नहीं है। ऋषि दयानन्द ने इस मन्त्र की व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय वा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे भी (ईश्वर की स्तुति प्रार्थनोपासना के प्रकरण मे) दी है।

इस वेद मन्त्र मे जो 'अकायम्' शब्द है उससे स्पष्ट है कि ईश्वर कभी शरीर धारण अथवा जन्म नही लेता। इस से पौराणिको के अवतार वाद अथवा मूर्त्ति-पूजा का भी खण्डन होता है।

'याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य.' की व्याख्या करते हुए ऋषि दयानन्द आर्याभिविनय मे लिखते हैं—"उस ईश्वर ने अपनी प्रजा को यथावत् सत्य, सत्यविद्या जो चार वेद हैं उनका सब मनुष्यो के परम हितार्थ उपदेश किया है। उस हमारे दयामय पिता परमेश्वर ने बड़ी कृपा से अविद्यान्धकार का नाशक वेद विद्यारूप सूर्य प्रकाशित किया है। और सब का आदि कारण परमात्मा है ऐसा अवश्य मानना चाहिए। विद्या का उपदेश ईश्वर ने अपनी कृपा से किया है, क्योंकि हम लोगो के लिए उसने सब पदार्थों का दान किया है, तो विद्यादान क्यों न करेगा। सर्वोत्कृष्ट विद्या पदार्थ का दान परमात्मा ने अवश्य किया है तो वेद के बिना अन्य कोई पुस्तक ससार में ईश्वरोक्त नही है। जैसा पूर्ण विद्यावान् और न्यायकारी ईश्वर है। वैसा ही वेद पुस्तक भी है। अन्य कोई पुस्तक ईश्वरकृत वेदतुल्य वा अधिक नहीं है।"

—०—

मांस खाना ठीक नहीं

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए. एल. टी.।

माम नाश्नीयात्। अथर्व १०।६ (३) ६।

मास नहीं खाना चाहिए। मास भक्षण की अनेक हानियां हैं। विचार एव मन को यह दूषित करता है। माम-भक्षण से मनुष्य के हृदय से दया के भाव दूर हो जाते हैं और निर्दयता अपना स्थान बना लेती है। इससे मनुष्य की शारीरिक, मानसिक आत्मिक तथा बौद्धिक शक्तियो का ह्रास होता है। मनुष्य व्यवहार में अशिष्ट और जगली बनने लगता है। पाइथागोरस, प्लेटो, अरस्तू, सुकरात, राम, कृष्ण, दयानन्द, गाधी और आर्ज बर्नार्डशा मासाहारी नही थे।

एक बार नई दिल्ली मे शाकाहारी क्लब का उद्घाटन करते हुए लोकसभा के अध्यक्ष अनन्त शयनम् आयगर ने मास-भक्षण के विरोध मे कहा—'भोजन के लिए हत्या जगली पशुओ का स्वभाव है।'

जार्ज बर्नार्ड शा एक बार एक दावत मे गए हुए थे। वहां अधिकतर वस्तुए मांस से बनी हुई थी और बर्नार्डशा मास खाते न थे। अत: उन्होने फल और सब्जियां तो ले ली और मास की प्लेटो को आगे सरका दिया।

दावत देने वाले मित्र ने आग्रह से कहा—'क्यो ये चीजें आप क्यो नहीं ले रहे हैं?'

अपनी लट्ठमार शैली मे शा बोले—'जनाब, मुझे ईश्वर ने भोजन करने को पेट दिया है, मुर्दे दफनाने का कब्रिस्तान नही।" वही मान्य श्री आयगार की बात कि भोजन के लिए हत्या जगली पशुओ का स्वभाव है कितनी उपयुक्त है। पर, यह कितनी विचित्र बात है कि विश्व मे अधिकाश मनुष्य मास भक्षी हैं और मास-भक्षण का प्रचार बढ रहा है।

—६ए. ई. १ ओबरा (मिर्जापुर) २३१२१६

बोध-कथा

उपयुक्त समय

भिक्षु उपगुप्त पीला वस्त्र पहने भिक्षा पात्र लिए मौन शान्त भाव से नगर के राजपथ से जा रहे थे। तपस्या से चमकते मुखमण्डल, स्वस्थ, बलिष्ठ भिक्षु को देखकर नगर वासी ठिठक कर रह गए। उसी समय भिक्षु उपगुप्त के अनुपम सात्विक सौन्दर्य को देखकर महानगर की सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना, अपने युग की श्रेष्ठतम सुन्दरी वासवदत्ता अभिभूत हो उठी। उसने ऐसा दिव्य तेज और सौम्य मुख का आकर्षण पहले कभी न देखा था। वह तेजी से उठी अपनी अट्टालिका से भागती हुई भिक्षु के पास पहुची। समीप पहुच कर बोली—"भन्ते, बड़ी कृपा होगी, मेरे घर पर पधारेंगे, यह मेरी सारा वैभव, मेरा घर और स्वय मैं आपकी हू। कृपया स्वीकार करेंगे।"

भिक्षु उपगुप्त ने एक क्षण के लिए सिर उठाया, उस भुवन सुन्दरी नृत्यागना की ओर निहारा। फिर दृढ शब्दो मे कहा—"मैं तुम्हारे पास आऊगा, पर अभी उपयुक्त समय नहीं है। वैसा समय आने पर स्वय पहुचूगा।"

भिक्षु उपगुप्त चले गए। वर्षों बीत गए। नगरवधू वासवदत्ता वर्षों तक उस तेजस्वी भिक्षु की खोज मे रही, परन्तु वह कहीं न मिला। समयचक्र के परिवर्तन से उस नगरवधू का सौन्दर्य, आकर्षण सब समाप्त हो गया, उसका भव्य प्रासाद, अपार सम्पत्ति और सब रूप-यौवन सब कुछ समाप्त हो गए थे। नदी के किनारे असहाय, भूखी, रुग्णा वासवदत्ता पड़ी थी, उसका शरीर रोग से दुर्गन्धमय हो उठा था। भीषण यौन रोगों के फलस्वरूप वह भीषण पीड़ा से कराह रही थी, राहगीर उसे देखते, घृणा से मुह मोड लेते। ऐसे ही समय एक भिक्षु वहां पधारे। उस असहाय नारी के समीप पहुचकर भिक्षु बोले—"वासवदत्ता, मैं आ गया हूं।" बडे कष्ट से कराहती हुई वासवदत्ता बोल उठी—'कौन?" उस भिक्षु ने कहा—"भिक्षु उपगुप्त!' पीडित वासवदत्ता ने कहा—"बहुत देर हो गई।" उपगुप्त बोला—"क्या देर हो गई?" वासवदत्ता ने उत्तर दिया—"अब मेरे पास धन-वैभव, सौन्दर्य और शरीर कुछ भी तो नहीं रह गया।" 'भद्रे, यही उपयुक्त समय है। ऐसे ही समय तुम्हें मेरी जरूरत थी। यह कहकर भिक्षु उसके उपचार में लग गए। कठिन परिश्रम, सुश्रूषा, औषध-उपचार से वासवदत्ता स्वस्थ हो गई और सच्चे धर्म मार्ग की ओर प्रवृत हुई।

— नरेन्द्र

शिवसंकल्प स्थिर रहे

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते अभीशुभिर्वाजिन इव ।

हृत्प्रतिष्ठ, यदजिर जविष्ठ तन्मे मनः शिवसकल्पमस्तु ।। यजु ३४ ६

जो चतुर सारथी की न्याई बलशाली घोडो के समान मनुष्यों की इन्द्रियो को लगाम द्वारा निरन्तर हाकता रहता है, जो हृदयस्थान मे निवास करता है, जो कभी वृद्ध नहीं होता और जो वेग मे सबसे आगे रहता है, वह मेरा हृदय शुभ सकल्पो वाला हो ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

समस्याएं अनेक : समाधान एकमात्र

ताजा समाचार मिला है कि अकाली नेता सन्त लोंगोवाल ने भारत के गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी द्वारा अकाली मांगों के सम्बन्ध मे केन्द्र से बातचीत का प्रस्ताव ठुकरा दिया है । उन्होने कहा है कि या तो हमारी मागे स्वीकार करो, अन्यथा हम अपना आन्दोलन शुरू कर देंगे । इसी तरह असम की समस्या के समाधान के लिए छात्र-नेताओं ने अपनी दिल्ली यात्रा स्थगित कर दी है और असम बन्ध तथा प्रदेश भर मे आन्दोलन छेडने का रास्ता अगीकार किया है । यह समाचार भी मिला है कि केन्द्र के अनेक दलो के मुस्लिम सदस्यों ने भविष्य मे मिल कर के कारवाई करने का निश्चय किया है । यह समाचार भी मिला है कि एशियाई खेलों के समाप्ति-समारोह के दिन मिजोरम-नृत्यो के प्रदर्शन के बारे मे भी चीन ने अपना विरोध प्रदर्शित किया है । उसकी दृष्टि मे मिजोरम एव समीपवर्ती प्रदेशों को वह भारतीय सघ का भाग अगीकार नही करता । ये सब घटनाए इगित करती हैं कि कुछ अराजक तत्त्व देश की केन्द्रीय सत्ता को कमजोर बनाने के लिए उत्सुक हैं । चीन के विरोध से यह भी ध्वनित होता है कि इस स्थिति का लाभ उठाकर वह भारत के सीमावर्ती प्रदेशो एव क्षेत्रों में अपनी नई घुसपैठ करने के लिए प्रयत्नशील है । राष्ट्र की आन्तरिक शान्ति व्यवस्था एव बाह्य सुरक्षा की इस संकटपूर्ण घडी मे अच्छा होता कि सभी राजनीतिक दल तथा प्रमुख राष्ट्रीय दल के विभिन्न तत्त्व एक ओर सयुक्त हो जाते, खेद की बात यह हैं कि न तो विरोधी पक्षो की एकता स्थापित हो रही है और न मुख्य राष्ट्रीय दल ही आन्तरिक कलह से मुक्त हो सका है ।

ये छोटी बडी समस्याएं तो सिर उठा ही रही हैं, कुछ बडे राष्ट्र हमारे पडोसी देशो की पीठ थपथपा कर हमारे उभरते स्वरूप को कुण्ठित और मर्यादित करना चाहते हैं । उनका बस चले तो वे एक महान् राष्ट्र के रूप मे हमारा अस्तित्व ही तिरोहित हो जाए । आज देश के सम्मुख जिस तरह की नानाविध उलझी हुई समस्याए उभर रही हैं, उनके समाधान का एक मात्र उपाय यही है कि सब राजनीतिक दलो को आपसी मतभेद एव वैमनस्य समाप्त कर मिल कर राष्ट्र सकट की इस घडी मे सयुक्त और सन्नद्ध होकर समस्त राष्ट्रद्रोही तत्त्वो का सामना करना चाहिए । केन्द्रीय शासन का भी यह नैतिक दायित्व एव राजनीतिक कर्त्तव्य है कि वह वर्षों से उलझी हुई समस्याओं को अब और अधिक टाले नही, प्रत्युत समस्त राजनीतिक दलों एव तत्त्वों को विश्वास एव सहयोग प्राप्त कर उन्हे तत्परता और दृढता से सुलझाए । जिस तरह ब्रिटेन, सयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी और जापान आदि देशो मे आन्तरिक सकट एव ब्राह्य आक्रमण का खतरा पैदा होने पर तथा राष्ट्र के सकट के समय जिस प्रकार सब दल एक हो जाते हैं, कुछ उसी तरह की परम्परा और परिपाटी हमारे देश मे भी प्रचलित की जानी चाहिए ।

इस समय देश के सम्मुख आन्तरिक अव्यवस्था एव बाहरी देशो के हस्तक्षेप का सकट देश के राजनीतिक क्षितिज पर मडरा रहा है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के वर्षों मे देश ने आर्थिक एव राजनीतिक क्षेत्रों मे उल्लेखनीय प्रगति की है । कई बडे राष्ट्रों की नजर मे हमारी यह प्रगति उन्हें रास नही आती । वे यहा के कुछ स्वार्थी देशद्रोही तत्त्वो को भडकाते रहते हैं । सारी स्थिति इस समय ऐसे नाजुक मोड पर पहुच गई है कि अब उसकी उपेक्षा करना सम्भव नही है । इन समस्याओं को टालते रहने से देश के अराजक तत्त्वो को उभरने का ही मौका मिल सकता है । इन अनेक समस्याओं के समाधान के लिए अब केन्द्रीय एव राज्य सरकारो को सम्भव हो तो सभी राजनीतिक दलों के सहयोग से अन्यथा आवश्यक हो तो उन्हे अपने बलबूते पर जनता का सक्रिय सहयोग लेकर स्थिति का तुरन्त समाधान करना चाहिए । विभिन्न राजनीतिक, सास्कृतिक तत्त्वो को भी देश के इस सकट के समय पूरी तत्परता और दृढता से केन्द्रीय शासन को स्थिति के समाधान के लिए सहयोग देना चाहिए ।

यज्ञ द्वारा वाक्शक्ति का विकास

ले. पं० वीरसेन वेदश्रमी

'यज्ञ करने से बोलने मे कुछ प्रगति हुई है । इशारो के बजाय आजकल बोलने का प्रयत्न करते हैं—ये शब्द यज्ञ मे भाग लेने डोंबीवली (बम्बई) से आए गोखले परिवार ने यज्ञ-समाप्ति पर अभिव्यक्त किए ।

यह यज्ञ दि २१ नवम्बर से २९ नवम्बर १९८२ तक गणपति मन्दिर, रामबाग, इन्दौर मे मेरे द्वारा सरस्वती यज्ञ नाम से सम्पन्न हुआ । यह यज्ञ अव्यक्त वाणी वाले पूना के एक बालक के लिए करना निश्चय हुआ था, परन्तु यज्ञ प्रारभ होने पर डोम्बीवली (बम्बई) से गोखले परिवार के ४ मूक व बधिर भी आ गए थे । पूना से आए उदयन जोशीकी अवस्था १८ वर्ष की थी । अस्पष्ट वाणी थी । श्रवण शक्ति मे न्यूनता थी । गोखले परिवार में श्री गगाधर गोविन्द गोखले की अवस्था ४३ वर्ष जन्म से मूक व बधिर, इन की पत्नी सौ सुचेता गगाधर गोखले की अवस्था ३६ वर्ष, कुछ-कुछ अस्पष्ट वाणी, बाधिर्य, पुत्र चेतन गगाधर गोखले की अवस्था १२ वर्ष की थी । यह भी जन्म से मूक एव बधिर था ।

यज्ञ के ३-४ दिन बाद गायत्री मत्र के उच्चारण का प्रयत्न कराया गया छठे दिन से विश्वानि देव मंत्र का, ७ वें दिवस मे पावका न सरस्वती मत्र का उच्चारण, कस्मै देवाय हविषा विधेम, यज्ञेन कल्पन्ताम् तथा कुछ लौकिक शब्दो एव वाक्यों का मराठी एव हिन्दी भाषा मे उच्चारण कराया गया । अक्षरो का एव शब्दो का उच्चारण यज्ञ की पूर्णाहुति तक उत्तरोत्तर स्पष्ट होने लगा । दर्शक गणो ने भी साश्चर्य उनके मुख से मन्त्रोच्चारण सुनकर प्रसन्नता प्रकट की ।

वेद मे—वाक् यज्ञेन कल्पताम् - यज्ञेन वाच पदवीयमायन्-वाचं ते शुन्धामि-ऋच वाच प्रपद्ये आदि वाक्य आते हैं । शास्त्रकारो ने य य कामयते काम त त वेदेन साधयेत् असाध्यो नास्ति यत्किंचित् ब्रह्मणोहि फल महत् तथा सर्वेभ्योहि कामेभ्यो यज्ञ प्रयुज्यते' आदि वाक्यो से एव आयुर्वेद की सहायता से मुझे इस प्रकार के यज्ञो द्वारा प्रयोग करने की प्रेरणा प्राप्त हुई । इस यज्ञ के द्वारा गूगो मे वाणी के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ तथा आशा है कि अन्य भी यज्ञो के परीक्षणों से और भी इस यज्ञ-विज्ञान का विकास होगा ।

वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर ४५२००७

चिट्ठी-पत्री

सवाल है हिन्दू गौ को मां क्यों कहते हैं, भैस-बकरी को क्यों नहीं ?

यह प्रश्न मुझ से कुछ मुसलमान मित्रो ने पूछा था । उन्हे मैंने बताया कि मुसलमानो का तो पहले गौ को माता मानना चाहिए क्योंकि दूध पिलाने मे ही अपनी मां को माता मानते हैं । गौ तो हिन्दू मुसलमान, ईसाई सब की माता है, क्यो कि ईश्वर के विधान के अनुकूल नारी और गौ के आचरण बहुत मिलते है ।

१ जितनी मात्रा मे माता के दूध मे विटामिन मिलते हैं उतनी ही गौ के दूध मे मिलते हैं ।

२ नारी बच्चे को अपने गर्भ मे नौ से दस महीने तक रखती है । इस तरह गौ भी बच्चे को रखती है । भैंस साढे दस से ग्यारह महीने तक तथा बकरी पांच से छह महीने गर्भ मे रखती है ।

३. यदि कोई नारी बच्चे को जन्म देकर उसी समय मर जाए, तो गौ का दूध पिलाकर बच्चे को पाल लेंगे लेकिन भैंस का दूध पिलाने बच्चा मर जाएगा । बकरी का दूध पिलाकर बच्चा पाला जा सकता है, लेकिन वह कमजोर और कायर होगा ।

४ किसी जगल मे गाय और उसके बच्चे चरते हो और शेर निकल आए तो गाय बच्चे से पहले अपनी जान दे देगी लेकिन बच्चे पर आंच नही आने देगी । इसके विपरीत भैंस और उसका बच्चा चरता हो और कोई शेर निकल आए तो बच्चे को छोडकर भाग जायगी अगर किसी नारी के बच्चे की जान का खतरा हो तो वह अपनी जान देकर उसकी रक्षा करेगी ।

५. किसी नदी में गाय की पूछ आप पकड लें तो वह आपको भवसागर पार कर ही देगी, लेकिन भैंस की पूछ पकड कर पार होना चाहेंगे तो वह बीच मे जाकर आपको डुबो देगी ।

परमात्मा ने नारी और गौ के अदर करीब-करीब समान सृष्टि की है । गर्भ मे रखने का समय, दूध के अदर पूर्ण विटामिन, प्रेम और ममता सभी बातें समान रूप से दी हैं, इसलिए गौ सारे विश्ववासियो की माता है । पुत्र को चाहिए जिस देश मे गौ माता की हत्या हो वहां की सरकार से विरोध करे और गौ माता की रक्षा करे । —विश्वम्भर आर्य, बगाली टोला, समस्तीपुर (बिहार)

श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस पर

गंगा पार गुरुकुल के अनकहे कुछ संस्मरण

सन् १६०५। मार्च मास। लगभग ६ ७ वर्ष की आयु। पिता जी—श्री हीरानन्द, डाक-तार विभाग में, तत्कालीन भारतीयों की दृष्टि से अच्छे पद पर, दृढ़ आर्य, गुरुकुल के भक्त और महात्मा मुन्शीराम – आर्यसमाज के प्रमुख नेता और संस्थापक गुरुकुल कांगड़ी के परम मित्र। गुरुकुल मे मुझे प्रविष्ट कराने के लिए दृढ़ निश्चयी, यद्यपि माताजी, दादा दादी, चारो चाचा और परिवार के अन्य सब सम्बन्धियों का कड़ा विरोध, सब शंकित कि घर से से करीब एक हजार मील दूर घने जंगल में गुरुकुल मे पढ़ने जा रहा यह बालक पता नहीं जीवित वापस आएगा या नहीं—पर पिता जी का अटल निश्चय--सरकारी नौकरी से छुट्टी न मिल सकने के कारण अपने छोटे भाई-मेरे चाचा के साथ जि० गुजरांवाला तहसील हाफिजाबाद (अब पश्चिम पाकिस्तान मे) के पिंडी महिप ग्राम से मुझे हरिद्वार से लगभग ६-७ मील दूर, गंगा पार, रेतीला मार्ग, पैदल चलकर एक ओर गंगा तट, दूसरी ओर चंडीगढ़ पर्वतमाला की उपत्यका, बीच मे हिंसक जीव जन्तु समाविष्ट घने अरण्य मे स्थित गुरुकुल—वहां मुझे प्रविष्ट कराने आए। एक दो दिन रह वापस चले गए। लाड-प्यार से पला, एक दम अकेला, सब कुछ अपरिचित, डरावना स्थान, खूब रोया। उसी समय अन्य कुछ बालक भी प्रविष्ट होने आए हुए थे—कुछ माता पिता सम्बन्धियो के साथ, कुछ मु जैसे अकेले भी।

इसी समय एक सर्वथा अपरिचित, वृद्ध, लगभग ६५ वर्षीय, करीब ६ फुट ५ इंच ऊंचा, व्यायाम, नियमित और संयमित तथा सतत तपोमय जीवन से सुगठित देहयष्टि, विशाल दीप्तिमय ललाट, गौरवर्ण स्नेह सहानुभूतिपूर्ण नेत्रो के नीचे, शुक सदृश नोकीली, खुले पुट की नासिका निश्चय सूचक मुख मुद्रा के साथ सानुपातिक होठ और चिबुक शुभ्र दाढ़ी श्मश्रुआवेष्ठित मुखारविन्द और कम्बुग्रीवा के नीचे उन्मुक्त वक्ष स्थल, दीर्घ भुजायुगल पर एक किनारे ग्रन्थिबद्ध, पीत उत्तरीय, नीचे लांग बंधी धोती पैरो मे देसी जूते—ऐसा था दिव्य, कान्तिमय, ज्योति पुंज, असाधारण, आकर्षक प्रभावी बाह्य रूप उस अपरिचित व्यक्ति का जिसने आते ही मुझे रोते हुए को गोद में बैठा, शनैः शनैः अपने दुपट्टे से मेरे आंसुओ को पोंछते हुए कहा—'पुत्र! रोओ मत। तुम्हारे माता-पिता-भाइयों की तरह यहां भी तुम्हें यह सब अपने प्यार करने वाले मिलेंगे।'

मुझे इस अजनबी की प्यार भरी गोद से बड़ी सान्त्वना मिली। उनके साथ एक अन्य महानुभाव ने मिष्ठान्न के साथ दूध पिलाया। चित्त को ढांढस मिला, चुप हो गया, शायद थकावट से सो भी गया। बाद में पता चला कि यह थे महात्मा मुन्शीराम, सब बच्चों के माता-पिता और मूर्तिमान स्नेह रूप। धीमे-धीमे समआयु के साथियो से परिचय हो गया। मुझसे ऊपर की कक्षा के छात्रों ने भी हम नए प्रविष्ट बच्चो को बहलाने और भ्रातृ भाव पैदा करने के लिए हमारे साथ खेलना-कूदना, खाना-पीना, कथा-कहानी सुनाना इत्यादि से गहरा अपनत्व पैदा कर लिया।

सातवलेकर जी की गिरफ्तारी

पिता जी केवल गुरुकुल भक्त ही नहीं, साथ ही महात्मा मुन्शीराम जी के प्रति भी अर्पित थे। प्रति वर्ष गुरुकुल उत्सव पर स्वेच्छा से व्यवस्था के लिए पहुंच जाते। एक बार महात्मा जी अपने स्वास्थ्य सुधार के लिए क्वेटा गए। पिता जी सरकारी नौकरी से अवकाश ले सर्वथा अवैतनिक रूप से गुरुकुल के संस्थापक मुख्याधिष्ठाता का काम संभाले हुए थे। इन्हीं दिनों आर्यसमाज के प्रमुख विद्वान दक्षिण हैदराबाद के पं० सातवलेकर जी वहां स्वाध्याय और छात्रो को शिक्षण देने के लिए वहां रहते थे। पंडित जी उस समय के प्रमुख फोटोग्राफर और चित्रकला विशेषज्ञ भी थे। बाद में उन्होंने लाहौर ठंडी सड़क पर अपनी दूकान खोली, उन्होने अथर्व वेद के पृथ्वी सूक्त का मराठी मे अनुवाद प्रकाशित किया था। विदेशी सरकार को इसमे राजद्रोह की गंध आई। उनके नाम के वारंट ले वहां की पुलिस जिला बिजनौर की पुलिस (जिसके अन्तर्गत गुरुकुल भूमि थी) गुरुकुल आ पहुंची। पिता जी स० मुख्याधिष्ठाता के रूप में कार्यालय मे काम कर रहे थे। वर्दी पहने पुलिस ने पंडित जी को पेश करने के लिए कहा, पिता जी ने एक दृढ़ आर्य पुरुष की तरह कहा—पंडित जी को पेश करने मे हमे कोई ऐतराज नहीं है। पर दो शर्तें हैं। यहां के नियमों के अनुसार वर्दी पहने पुलिस का प्रवेश निषिद्ध है। दूसरे उन्हें हथकड़ी गुरुकुल की भूमि में 'नहीं लगाई जा सकती, इसके बाहर ही आप लगा लें।" कठोर दमन के उस युग में पुलिस की तनिक भी, अवज्ञा एक संगीन अपराध था पर पिता जी ने साहस के साथ इन शर्तों का पालन कराया। पंडित जी को पुलिस को सौंपने से पहले सिपाहियों के साथ गुरुकुल के एक व्यक्ति को इसलिए भेजा कि वह यह तसल्ली कर ले कि बिना वर्दी और बिना हथकड़ी के थानेदार सहित पुलिस वापस आ रही है। ऐसा हो जाने पर पंडित जी को पुलिस को सौंप दिया गया। महात्मा जी को यह समाचार अविलम्ब भेजना ही था। उन्होंने पिता जी के साहस और उनकी सूझबूझ की सराहना की।

लेखक :
आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

पिता जी की मृत्यु

पिता जी बवासीर के मरीज थे, तत्कालीन सरकारी नियमों के अनुसार प्रात मे सायं तक कुर्सी पर ही बैठे काम करते साथ ही देहात मे आर्यसमाज के प्रचार के लिए जाने पर जाने पर आहार-विहार की समुचित व्यवस्था न होने से यह रोग बढ़ता ही गया। १६१२ दिसम्बर मे लगभग ४५ वर्ष की आयु में ही उनका स्वर्गवास हो गया। रिटायर होने से पहले मरने वाले को उन दिनो किसी प्रकार की पेंशन व अन्य कोई सुविधा दिए जाने का नियम नहीं था। मेरे अतिरिक्त, एक छोटा भाई और तीन छोटी बहनों सहित माता जी को कितना कष्ट आजीवन बिताना पड़ा होगा, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

आचार्यश्री की स्नेहभरी गोद में

महात्मा मुन्शीराम जी का पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक तब गुरुकुल में ही मुद्रित हो प्रकाशित होता था। उसकी एक प्रति मेरी कक्षा के अधिष्ठाता की मेज पर पड़ी थी। मैं तब छठी या सातवी कक्षा में था। उसमे चारों ओर काली रेखा के साथ, महात्मा जी के हस्ताक्षर से लिखा पिता जी की मृत्यु का समाचार पढ़ मै एकदम रोने लगा। महात्मा जी ने उसमे पिता जी को 'दृढ़ आर्य मेरे परम सहयोगी, गुरुकुल भक्त" इत्यादि कई प्रशंसनीय और अपनत्व भरे शब्दों से अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट की थी। मेरे रोने का समाचार तत्काल महात्मा जी तक अधिष्ठाता ने स्वयं जाकर कहा। आचार्यवर अपने निवास स्थान से अविलम्ब वहां पहुंचे। मुझे अपनी स्नेह भरी गोदी मे बैठा और मेरे सिर पर स्नेह भर कर स्पर्श से उन्होने कुछ इस प्रकार के शब्द कहे— 'प्यारे बालक दीनानाथ! तुम्हारे पिता जी मेरे परम मित्र, दृढ़ आर्य और पूर्णतः गुरुकुल भक्त थे। उनके वियोग से मैंने अपना एक अनन्य सहयोगी खो दिया है। तुम किसी प्रकार की अपनी पढ़ाई के बारे मे चिन्ता न करो। तुम मेहनत के साथ पढ़ते जाओ, इसमे किसी प्रकार का विघ्न नहीं पड़ेगा।' इन शब्दों के साथ मुझे प्रगाढ़ स्नेह करते हुए मेरे कक्षा-अधिष्ठाता को निर्देश दिया कि 'इस बालक का विशेष ध्यान रखें, इसको कोई समस्या हो तो मुझे बताए मैं उसको हल कर दूंगा।' पिता जी की मृत्यु से हुए अत्यन्त कष्ट तथा कुछ स्वास्थ्य की खराबी से मैं इस वर्ष परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सका। फलतः मुझे १४ वर्ष की जगह १५ वर्ष तक गुरुकुल में पढ़ना पड़ा।

महात्मा जी का प्रगाढ़ स्नेह

महात्मा जी का छात्रो से कितना अगाध स्नेह था और वह प्रत्येक छात्र के प्रति पिता और माता के अभाव को कितनी तत्परता से पूरा करते थे, इसके अनेक उदाहरण हैं। उन्होने छात्रवृत्ति की व्यवस्था कर जैसे मेरी पढ़ाई मे व्यवधान नहीं आने दिया, ऐसे ही अन्य अनेक छात्र थे। पर यह सब गुप्त ही रखा जाता था। आर्यसमाज के शिरोमणि विद्वान और लेखक, मेरे सहपाठी डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने दिल्ली के एक आर्य पत्र मे यह लिखा था कि ५ वीं या छठी कक्षा मे उनके पिता की मृत्यु हो जाने के बाद, जब उन्हे इस संस्था के छोड़ने की आशंका हुई, तब आचार्य जी ने उन्हे वैसे इस विषय में निश्चिन्त कर दिया, जैसे मुझे किया था। इसी प्रकार के अन्य भी उदाहरण हैं जो आज तक प्रकाश में नहीं आए। उन्हीं दिनों मेघ-बवाल आदि निर्धन दलित जातियों के कई बालक गुरुकुल में प्रविष्ट हुए और उन सब की शिक्षा और अन्य व्यय निःशुल्क थे।

रोता बालक आचार्य की गोद में

जब कभी कोई बालक अपने घर के लिए उदास होता, अथवा किसी प्रकार से समय होता या अन्य किसी दुर्घटना व सांप-बिच्छू के काटने से

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेद में मांसाहार निषेध

—ले० आचार्य पं० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मासाहार अनुचित समझा गया है। ससार के प्राचीनतम ग्रथ वेदों में भी मांसाहार का निषेध किया गया है। अथर्ववेद के ये कुछ प्रमाण देखिए।

अथर्ववेद का. १ में कहा है। 'मास ···नाश्नीयात्' अर्थात् मांस नहीं खाना चाहिए। अथर्ववेद कां० २० मे कहा है।—'निष्क्रव्यादमनीनशत्' अर्थात् मास खाने वाले का सर्वथा नाश करे। अथर्ववेद कां. ८ सू. ३ में कहा है—'क्रव्यादो वृष्ट्वापि धत्स्वासन्' अर्थात् मास खाने वालों को, फेंकने वाले स्थान कारागार मे बन्द कर दे। अथर्ववेद का. ८ मे ही आगे कहा है 'प्रपर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात् क्रविष्णुर्विचिनोत्वेनम्' अर्थात् हे राजन! उसके जोड़ो को कुचल डाल, मांस खाने वाला, भयकर (सिह, गीदड, गिद्ध आदि जीव) इसको चींथ डालें। अथर्ववेद का. ८ सू. ३ मे ही यहा तक कहा है कि 'सहमूराननुदह क्रव्यादः' अर्थात् मांस भक्षकों को उनके मूल सहित या मूढ़ मनुष्यों सहित भस्म कर दे। दयानन्द महाराज ने 'गो करुणा निधि' में महर्षि मनु महाराज का प्रमाण रखते हुए लिखा है 'अनुमन्ता विशसिता निहन्ताक्रय विक्रयी। संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति घातका.॥

मनु. अ. ५ श्लोक ५१॥

अर्थात् 'अनुमति मारने की सलाह देने, मांस के काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिए और बेचने, मास के पकाने, परसने और खाने वाले आठ मनुष्य घातक हिंसक अर्थात् ये सब पापकारी हैं'। इसलिए किसी को मांस का सेवन नहीं करना चाहिए।

स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी विस्तार से 'गोकरुणा निधित मे कहा है—'तुम्हारे शरीर को जिस ईश्वर ने बनाया है, क्या उसी ने पशु आदि के शरीर नहीं बनाए हैं? जो तुम कहो कि पशु आदि हमारे खाने को बनाए हैं, तो हम कह सकते हैं, कि हिंसक पशुओं के लिए तुमको उसने रचा है, क्योंकि जैसे तुम्हारा चित्त उनके मास पर चलता है, तो उनके लिये तुम क्यों नही? देखो, सिह मास खाता और सुअर वा अरणा भैसा मास कभी नही खाता, परन्तु जो सिह बहुत मनुष्यो के समुदाय में गिरे वो एक या दो को मारता है और एक दो गोली या तलवार के प्रहार से मर भी जाता है और जब जगली सुअर व अरणा भैसा जिस प्राणि समुदाय में गिरता है, तब उन अनेक सवारों और मनुष्यों को मारता और अनेक गोली बरछी तथा तलवार आदि के प्रहार से भी शीघ्र नही गिरता, और सिह उससे डरके अलग सटक जाता है, और वह सिह से नही डरता।

जिज्ञासा की जाती है कि मांसाहार न करने से पशुओ की गिनती बहुत बढ जाएगी परन्तु यह बुद्धि का विपर्यास आपको मांसाहार ही से हुआ होगा। देखो, मनुष्य का मास कोई नहीं खाता पुन. ये क्यो न बढ़ गए। और इनकी अधिक उत्पत्ति इसलिए है कि एक मनुष्य के पालन-व्यवहार मे अनेक पशुओ की अपेक्षा है। इसलिये ईश्वर ने उनको अधिक उत्पन्न किया है।

कहा जा सकता है अच्छा जो यही बात हैं तो जब तक पशु काम में आए तब तक उनका मांस न खाना चाहिए, जब बूढे हो जाए वा मर जाएं तब खाने मे कुछ भी दोष नही। ऐसा कहने पर जैसे दोष उपकार करने वाले माता-पिता आदि के वृद्धावस्था मे मारने और उनके मास खाने में हैं, वैसे उन पशुओ की सेवा न कर मार के खाने मे है। जो मरे पश्चात् उनका मास खाए तो उसका स्वभाव मांसाहारी होने से अवश्य हिंसक होके हिंसा रूपी पाप से कभी न बच सकेगा। इसलिये किसी अवस्था में मास न खाना चाहिए।

कहा जा सकता है कि फिर कुछ डाक्टर लोग मास खाने की क्यो कहते हैं। अपनी अज्ञानता, विवेक बुद्धि से न समझने के कारण वेदों ऋषियो की शिक्षा न समझने न मानने न धारण करने के कारण। देखो सुप्रसिद्ध कुछ डाक्टरो ने भी अण्डे मासादि अभक्ष्य का निषेध किया है और इनसे महान् भयकर रोगोत्पन्न कहे हैं। डा० जे० एमन विल्किज, इग्लैंड लिखते हैं। अण्डे भी हानि करने वाले हैं। आप कह सकते हैं कि ६ अण्डे से मेरे स्वास्थ्य को कोई हानि नहीं होती, परन्तु अण्डो का रासायनिक विश्लेषण तुम्हारी धारणा के विपरीत निर्णय देता है। अण्डे की जर्दी मे 'कोलेस्टरोल' नामक तत्त्व पाया जाता है जो चिकना अलकोहल (शराब) होता है। यह जिगर में एकत्र होता है और फिर रक्त-वाहिनी शिराओ मे जख्म और कड़ापन उत्पन्न करना है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत् समाचार

हिन्दुओं की समस्या केवल सामाजिक नहीं, एक राजनीतिक समस्या

पटना में दो सम्मेलन : डा० दुखनराम से अभद्र व्यवहार आर्यजनता में रोष

पटना। ७ नवम्बर के दिन स्थानीय गांधी मैदान में विराट हिन्दू सम्मेलन तीन-चार घण्टों तक हुआ। यहां एक बडे मेले की भीड़ एकत्र हुई। तीन-चार घण्टों तक आमंत वक्ताओं के भाषण सुन कर दूर-दूर से आई हिन्दू जनता यत्र-तत्र बिखर गई। लोगों के चेहरे से ऐसा आभास मिला जैसे उन्हें कोई समुचित दिशा नहीं मिली हो। इस अवसर पर यह देख कर गहरी वेदना हुई कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान एवं बिहार आर्यसमाज के प्राण डा० दुखनराम का भाषण जनता बडे धर्म के साथ सुन रही थी। जिस समय डा० साहब ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष किया, उस समय सभा के आयोजकों ने उनके सामने से माइक हटा दिया। विराट हिन्दू सम्मेलन के मच पर आयोजकों द्वारा डा० दुखन राम जैसे वयोवृद्ध आर्य नेता के साथ किए अभद्र व्यवहार से समस्त आर्यजनो मे क्षोभ की लाहर फैल गई है।

८ नवम्बर के दिन इसी गांधी मैदान मे एक दूसरी सार्वजनिक सभा हुई। सभा का प्रारम्भ श्री सियाराम निर्भय के क्रान्तिकारी राष्ट्रीय गान से प्रारम्भ हुआ। इस सभा मे २० हजार के लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर भाषण करते हुए प्रो० बलराज मधोक ने कहा—मुझे बड़ी खुशी इस बात की है कि आज डा० कर्णसिंह और श्री शकर दयालसिंह हिन्दू हितो की बात तो करने लगे, परन्तु यह समस्या केवल सामाजिक नहीं राजनीतिक भी है। हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र है, इसकी घोषणा विराट हिन्दू सम्मेलन के मच से होनी चाहिए थी, पर ऐसा नहीं हुआ। सबके लिए समान सिविल कानून, कश्मीर की धारा ३७० हटाने तथा अलीगढ मुस्लिम विद्यालय के राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध मे आवाज उठानी चाहिए थी।

आर्यसमाज मन्दिर पर कब्जा करने पर सत्याग्रह

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर द्वारा महानगर की सभी ४० आर्य समाजो की एक आम सभा आर्य समाज मन्दिर जूही मे प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे हुई। जिसमे आर्य समाज मन्दिर जूही (स्वदेशी काटन मिल के सामने) पर निटकवर्ती हाता मालिकों द्वारा कब्जा करके रिहायशी मकान बनाने का प्रबल विरोध किया गया, सत्याग्रह करने की भी घोषणा की गयी।

अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने अपने भाषण में बताया कि ४४ वर्ष पूर्व १९३८ मे हाता मालिक श्री भोलानाथ ने उक्त मन्दिर का स्थान आर्य समाज को दान कर दिया था, जिसमे सभी धार्मिक कार्य सम्पन्न होते है। आज उनके वशज मन्दिर पर कब्जा करना चाहते हैं जो कभी होने नहीं दिया जाएगा दोनों पक्षों की ओर से थाना जूही मे रिपोर्ट दर्ज हो चुकी है। श्री आर्य ने कहा कि यह केवल जूही आर्य समाज का सवाल नही अपितु समस्त आर्य जगत का सवाल है। इसके लिए हर बलिदान दिया जाएगा।

सभा में सर्व श्री रघुराज शास्त्री, जलेश्वर सिह, ओम प्रकाश आर्य, सत्यपाल, कुन्दन सिंह, ओम प्रकाश तिवारी आदि के भाषण हुए।

वृद्ध गऊ सदन का शिलान्यास

शुक्रवार १९ नवम्बर, १९८२ के दिन प्रात: १० बजे बरला बसेड़ा रोड पर तेज—लहेड़ा की भूमि पर मेरठ मण्डल के आयुक्त माननीय श्री आर० डी० सोनकर के करकमलो द्वारा एक वृद्ध गउ सदन का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। इस शुभ कार्य में ग्राम तेजलहेड़ा, बरला, खिदेड़िया, थाईखेड़ी, छमरसी; ताजपुर बसेड़ा आदि का सहयोग प्राप्त हुआ है। ग्राम तेजलहेडा ने १०० बीघा भूमि गउ सदन को दान दी है। इस गउ सदन मे वृद्ध अपंग गउओं की सेवा की जाएगी। इस गउ सदन के साथ औषधालय की स्थापना भी की जाएगी। अनुभवी वैद्य सम्पर्क स्थापित करें। कोई साधु सन्त अनुभवी स्वामी हों तो निःस्वार्थ भाव से गोसदन की सेवा करना चाहते हों तो सम्पर्क करें प्रबन्धक संस्थापक शुकदेव आश्रम एवं संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल जिला मुजफ्फर नगर। (उ० प्र०)

अन्दमान में आर्यसमाज की स्थापना

—डा० प्रशान्त द्वारा भारतीय संस्कृति की महत्ता पर बल

पोर्टब्लेयर। २८ नवम्बर के दिन पोर्टब्लेयर अन्दमान के कुछ गणमान्य व्यक्ति एकत्र हुए। दिल्ली महानगर परिषद् के भू० पू० सदस्य तथा आर्य समाज के नेता, डॉ० प्रशान्त वेदालकार वहां मुख्य अतिथि थे। डा० प्रशान्त वेदालकार ने भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए अन्दमान में आर्यसमाज की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

सभा मे डॉ० प्रशांत के साथ उनकी धर्मपत्नी डॉ० सरोज दीक्षा तथा उनकी माता सीतादेवी, पुत्र विराट् तथा पुत्री अरुणी भी थे। बच्चों ने भी कुछ कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

अन्त में डॉ० प्रशान्त वेदालकार की प्रेरणा से वहां आर्य समाज की स्थापना का निश्चय हुआ। सर्वसम्मति से श्री कृष्णचन्द्र आर्य को प्रधान बनाया गया। शेष पदाधिकारियो व कार्यकारिणी के गठन का कार्यभार उन्हीं पर सौंप दिया गया। वहां के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री परसराम ने आर्यसमाज का संरक्षक बनना स्वीकार किया।

शिक्षा निदेशक सोमदत्त दीक्षित तथा आकाशवाणी के श्री मदनमोहन मनुज ने आर्यसमाज की स्थापना को अण्डमान की आवश्यकता बताया तथा इस प्रयत्न की सराहना की।

—कृष्णचन्द्र आर्य, प्रधान, आर्य समाज, पोर्टब्लेयर (C. A. R. I.)

निजाम बाबा महात्मा मुकुन्द आर्य बने

आर्यसमाज खण्डवा में महत्वपूर्ण शुद्धि संस्कार

खण्डवा। आर्यसमाज खण्डवा जिला पूर्व निमाड़ (म० प्र०) में दि० ४-१२-८२ को व साय ६ बजे निजाम बाबा ग्राम बमनगांव खडवा निवासी फतेपुर पहवान सा बाबा की मजार का शुद्धि संस्कार उनके आवेदन-पत्र के अनुसार आ. स. खडवा के पुरोहित सुखराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री द्वारा सम्पन्न होकर उन्हे वैदिक धर्म में प्रवेश किया गया।

शुद्धिकरण के पश्चात उनकी स्वेच्छा से उनका नाम मुकुन्द आर्य रखा गया। श्री रामचन्द्र जी आर्य प्रधान आ. स. खडवा श्री गिरधारी लाल जी आर्य उप प्रधान श्री जगदम्बा प्रसाद जी मिश्र, प्रचार मत्री ने वैदिक धर्म की विशेषता पर बोलते हुए उन्हें शुभ-कामनाए दीं उर्दू मे वैदिक आर्य साहित्य भेंट किया गया।

अन्त मे श्री महात्मा मुकुन्द आर्य ने बडे गर्व के साथ उर्दू भाषा मे कहा कि बहुत समय से वैदिक धर्म मे प्रवेश की मेरी अभिलाषा थी। आज वैदिक धर्म मे दीक्षित होकर मैं अत्यन्त खुशी अनुभव कर रहा हू। उन्होने कहा सारे ससार का बनाने वाला एक ही निरकार है। हमे वैदिक धर्म को घर-घर मे जन-जन मे पहुचाने के लिये मदिर से बाहर निकलकर प्रचार करना होगा। मेरा नारा है। मादरे वतन जिन्दाबाद वन्दे मातरम वैदिक धर्म की जय हो। उपर्युक्त संस्कार मे नगर के प्रतिष्ठित गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। विश्व हिन्दू परिषद एवं अन्य सस्थाओं द्वारा सम्मान महात्मा मुकुन्द आर्य जी का पुष्पहारों द्वारा किया गया।

गुरुकुल खेड़ा खुर्द में शिक्षक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी सन् १९८३ की प्रारम्भिक तैयारियों के सदर्भ में डा० देवव्रत आचार्य (सहसचालक, आर्य सार्वदेशिक आर्य वीर दल) की शिविराध्यक्षता मे शिक्षक शिक्षण शिविर गुरुकुल खेडा खुर्द, दिल्ली राज्य में सम्पन्न हुआ। शिविर सचालक श्री अनिल कुमार आर्य ने इस अवसर पर युवकों को देश व धर्म की सेवा के लिए आह्वान किया।

श्री देवीदास आर्य को मातृशोक

कानपुर। आर्य नेता, महिला-उद्धारक व केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य की धर्म माता श्रीमती बसोरी देवी का निधन गत २२ ११ ८२ को उनके घर आर्य निवास गोविन्द नगर मे केन्सर के रोग से हो गया। उनकी आयु ६५ वर्ष की थी। दाहसस्कार वैदिक रीति से गोविन्द नगर श्मशानघाट पर हुआ। शोक सभा (शान्ति यज्ञ) आर्य समाज मन्दिर के बाहर मैदान में हुई। जिसमे हजारों लोगों ने सम्मिलित होकर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। दर्जनों धार्मिक सामाजिक, व राजनीतिक संस्थाओं ने श्री आर्य को शोक सन्देश भेजे हैं।

आर्यसमाजों के सत्संग

१६ दिसम्बर'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर —प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; अमर कालोनी—प० ब्रह्मेश्वर, अशोकविहार के-सी-५२-ए—डा० रघुनन्दन सिंह; अशोकनगर—स्वामी स्वरूपानन्द; आर्यपुरा - प्रो० सत्यपाल बेदार, आर के पुरम सेक्टर ५—श्री देवीचरण बन्सल, आर के पुरम सेक्टर ६—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, आर के पुरम सेक्टर ९—स्वामी प्रेमानन्द; आनन्दविहार-हरिनगर एल ब्लाक—प० छविकृष्ण शास्त्री; इन्द्रपुरी—प० देवराज वैदिक मिशनरी, किशनगज मिल एरिया—प० रामरूप शर्मा; किंग्जवे कैम्प—प० अमरनाथ 'कान्त', कालकाजी डी. डी. ए. फ्लेट—प० अशोककुमार विद्यालकार, कृष्णनगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री'; गाधीनगर—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, ग्रेटर कैलाश—I—पं० खुशोराम शर्मा, ग्रेटर कैलाश-II—कविराज बनवारीलाल शादा भजनोपदेशक; गुड मण्डी—प० सोमदेव शास्त्री; गुप्ता कालोनी—प० सत्यपाल 'मधुर' भजनोपदेशक, गोविन्दपुरी—प० हरिदत्त शास्त्री, चूना मण्डी पहाडगज—प० प्रकाशचन्द्र—वेदालकार; जगपुरा-भोगल—प वेदव्यास भजनोपदेशक; टैगोर गार्डन—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, तिलकनगर —ला० लखमीदास आर्य, तिमारपुर—प० बनवीरसिंह शास्त्री, दरियागज—प० हरिश्चन्द्र आर्य, नारायणविहार—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; नयाबास—वैद्य रामकिशोर; पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प० मुनिशकर वानप्रस्थ; प्रीतमपुरा—आचार्य हरिदेव सि० भू०,—बिरलालाइन्स—प० वेदपाल शास्त्री; मोडल बस्ती—पं० रामदेव शास्त्री, मोडल टाउन—प० रमेशचन्द्र शास्त्री; महरौली—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, रमेश नगर—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक तथा प० ज्योतिप्रसाद ढोलक कलाकार, राणा प्रताप बाग—प० प्रेमनाथ, राजौरी गार्डन—श्री चमनलाल आर्य, लड्डूघाटी-पहाडगज—प० ओमप्रकाश गायक, लक्ष्मी बाई नगर—प० सत्यदेव—भजनोपदेशक, लेखराम नगर—त्रिनगर—प० रामनिवास, लारेंस रोड—श्रीमती सुशीला राजपाल, विक्रमनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, सराय रोहेला—प० सीसराम भजनोपदेशक, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री तथा श्रीमती—कमला आर्या गायिका; सोहन गज—प० ईश्वरदत्त, श्री निवास पुरी—श्रीमती लीलावती आर्या, शालीमार बाग- डा० रघुवीर वेदालकार; शादीपुर खास—प० कामेश्वर शास्त्री,

—ज्ञानचन्द्र डोगरा वेदप्रचार-प्रबन्धक

स्नातक पत्रकार नवीनचन्द्रपाल का देहावसान

बम्बई। बम्बई के प्रमुख आर्य नेता एव गुरुकुल सोनगढ़ सौराष्ट्र के स्नातक श्री नवीनचन्द्र पाल का देहावसान २३ नवम्बर के दिन हृदगति के अवरोध के कारण हो गया। आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं आर्य समाज की अनेक गतिविधियो के प्राण थे। उनके निधन से एक वैदिक विचार शील पत्रकार साहित्यकार इस क्षेत्र से सदा के लिए उठ गया, फलत आर्य जगत् की एक अपूरणीय क्षति हुई है।

वेद में मांसाहार निषेध······(पृष्ठ ५ का शेष)

इगलैंड के डा० आर० जे० विलियम्स, लिखते हैं—'अण्डे की सफेदी मे 'एवीडिन' नामक तत्व होता है जो ऐग्जिमा का कारण होता है।' प्रमाण अनेक सुप्रसिद्ध डाक्टरों के मेरे पास हैं। लेख के विस्तार भय से नहीं लिख रहा हू। अत प्रत्येक आर्य कहलाने वाले को अभक्ष्य पदार्थ अडा मास मछली आदि के सेवन से बचना चाहिए। हमारे वेद ऋषि-मुनियो ने महान् निषेध किया है। आर्य कहलाने योग्य वही है जो अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करते, और वैदिक धर्म के मार्ग पर चलते हैं, आर्य सिद्धान्तो को अपने जीवन मे रखते हैं। अत आर्य बनो अनार्य नहीं। शाकाहारी बनो मांसाहारी नही। प्राचीन काल मे अडे मास मछली आदि का प्रयोग नहीं होता था। शक्ती आत्मसयम मे है। बल शाकाहार में है, अण्डे-मास मे नही।

आर्यसमाज डिफेंस कालोनी नई दिल्ली

—०—

गुरुकुल गौतमनगर में चारों वेदों का पारायण

रविवार २८ नवम्बर से गुरुकुल दयानन्द विद्यालय गौतम नगर मे चारो वेदो का पारायण आर्य जगत के विख्यात सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता मे प्रतिदिन प्रात एव साय हो रहा है। यज्ञोपरान्त विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रवचन एव आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक रेडीओ कलाकार श्री ओ३म प्रकाश वर्मा के मधुर सगीत द्वारा बहुत ही रोमाचिक एव प्रभावप्रद समय बध जाता है। इस गुरुकुल की विशेषता यह है कि इसके एक ब्रह्मचारी १५वर्षीय नरेन्द्र द्वारा पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ किया गया है जो वह धाराप्रवाह बोलता है। यह गुरुकुल दिल्ली के केन्द्र मे होते हुए भी बडा उपयोगी कार्य कर रहा है। दिल्ली की आर्यसमाजो को इस गुरुकुल को अपना कर इसकी आवश्यकताओ को पूरा करना चाहिये जिससे यह और अधिक सुचारु रूप से उपयोगी कार्य कर सके। गुरुकुल के आचार्य बडी ही लगन से इस गुरुकुल को उन्नति करने मे सलग्न है।

आर्य समाज समस्तीपुर का २० वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज समस्तीपुर का २० वा वार्षिकोत्सव १५ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद, राष्ट्र रक्षा, गौरक्षा 'आर्य नवयुवक, सास्कृतिक, महिला, समाज सुधार, आर्य परिवार परिषद, शिक्षा, विराट् हिन्दू आर्य आदि अनेक सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। इस अवसर पर द्विदेसीय आर्य सम्मेलन १८-१६ दिसम्बर के दिन आयोजित किया गया है।

एक उपाचार्या की आवश्यकता है।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान मे आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर के लिए एक उपाचार्या की आवश्यकता है। योग्यता एम ए, पी एच डी अथवा न्यून से न्यून एम ए. हो। कम से किसी शिक्षण सस्था का दस वर्ष का अनुभव हो। गुरुकुल की सारी गतिविधियो को सुचारु रूप से चलाने की दक्षता, विषयो के अधिक से अधिक ज्ञान के साथ ही साथ सस्कृत विषय मे विशेष पारगत हो। वेतन योग्यतानुसार निर्धारित किया जाएगा।

कृपया इच्छुक महिलाए सप्रमाण आवेदन पत्र इस सूचना के १५ (पन्द्रह) दिन तक आचार्या कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर ११००६० के पते पर अवश्य भेज दें।—प्रेमशील, मन्त्रिणी

गगापार गुरुकुल

(पुष्ठ ४ का शेषाश)

पीडित होता आचार्य स्वय उसकी देख-रेख मे जुट जाते। कुछ उदाहरण ।

गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर प्राय सब छात्रो के माता पिता व आत्मीय जन मिलने आते और साथ मे फल मिष्ठा न आदि लाते । मुझसे एक दो कक्षा नीचे के विद्यार्थी के पिता पहले दो दिनों तक नहीं आए। उत्सव का एक दिन ही बाकी था। वह आया तो विह्वल हो रोने लगा। महात्मा जी अपने साथ कुछ फल और मिठाई लेकर उस शिविर मे आए, जहाँ सरक्षक अपने बालको से मिलते थे। बालक को एक अध्यापक द्वारा बुलाया गया। उसने आते ही पूछा—मेरे पिता जी कहाँ है ? आचार्यवर ने उसे गोदी मे बैठा और मस्तक चूमते हुए कहा—'बेटा ! मैं तुम्हारा पिता ही नही माता भी हू।' उस मिठाई इत्यादि स्वय अपने हाथ से खिलाई। बालक खुशी के मारे फूला न समाता था।

सोते बालक की टाग के नीचे साप

महात्मा जी प्रतिदिन पहले आधी रात और फिर भोर बेला मे आश्रम का चक्कर लगाते थे। गर्मी के मौसम मे बाहर सोते हुए छात्र तख्त पर से नीच गिर जाते थे उन्हे वह चुपचाप उस बिस्तर पर लिटा देते। सर्दियों मे बहुधा रजाई से बाहर निकल उकड़ू हो सो जाते। आचार्यवर उनकी टागें सीधी कर रजाई को ओढा देते। एक बार गर्मी के मौसम मे एक छात्र नीचे गिरा और एक टाग को ऊचा कर सो रहा था। आचार्यवर आधी रात के बाद के चक्कर मे आए। स्थिति बडी गभीर थी। थोडी सी आहट पर वह' एक साप बालक को काट कही भाग जाता। महात्मा जी ने कक्षा अधिष्ठाता को जगाया हरिकेन या लैंप ले अधिष्ठाता छात्र से तनिक दूर खडा कर स्वय अपने लटठ से—जो वह सदा साथ रखते थे, साप के सिर को इतनी जोर से दबाया कि वह मर ही गया।

अपने दुपट्टे मे रोगी का वमन

इसी प्रकार ज्वर पीडित एक छात्र अस्पताल मे था। गुरुकुल का यह नियम था कि जिस कक्षा का छात्र अस्पताल में भर्ती होता उस कक्षा के छात्र क्रमश दो दो घटे रोगी की सेवा मे जागते रहते। कुछ ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि जब महात्मा जी अपने दैनिक नियम के अनुसार वहाँ आए तब वहा कोई सेवादार नही था, कम्पाउन्डर व सेवक भी नहीं था। महात्मा जी उसके पास धीमे धीमे स्नेह से उसका सिर दबाते रहे। इसी समय उसे वमन उबकाई आई। नीचे चिलमची भी नही थी। महात्मा जी ने किसी को पुकारने की अपेक्षा स्वय अपने पीले दुपट्टे मे दुर्गन्धमय वमन सभाल उसे बाहर नाली मे फेंक फिर रोगी के मुख हाथ आदि साफ कर दिए।

मेरी कई घटों तक की नक्सीर

मैं अपना भी एक अनुभव लिखता हू। बचपन मे मुझे नक्सीर बहुत आती थी—गर्मी मे और कभी कभी सर्दी के मौसम मे भी। एक बार गर्मी के मौसम में ऐसी नक्सीर आई जो कई घटे तक बन्द न हुई। गुरुकुल के अनन्य भक्त और सतत सेवा समर्पित डा० सुखदेव जी तो वहा थे।

शेष अगले अ क मे

रजि० डी (सी) ७५५

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री [illegible] द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित [illegible] मुद्रित। कार्यालय : १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन : [illegible]

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

श्रद्धानन्द बलिदान पर्व पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ७ अंक ९ रविवार २६ दिसम्बर १९८२ पौष १२ वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

चार प्रतिज्ञाएं : जो आज भी प्रासंगिक हैं

२१ मई १९२५ के दिन स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दक्षिणी कर्नाटक की आर्य-समाज मगलोर के आर्य सदस्यो को निम्न चार प्रतिज्ञाए करने की प्रेरणा दी थी। आज की परिस्थिति में भी उन प्रतिज्ञाओं को दोहरा कर उन्हें कार्यान्वित करने की कहीं अधिक आवश्यकता है।

१. तुम वैदिक पंच महायज्ञों के अनुष्ठान में प्रमाद न करोगे।

२. तुम अस्वाभाविक जातिभेद का बन्धन तोडकर वर्णाश्रम व्यवस्था को अपने जीवन में परिणत करोगे।

३. तुम अपनी मातृभूमि से अस्पृश्यता के कलक का समूल नाश कर दोगे और

४. तुम आर्यसमाज के सार्वभौम मन्दिर का द्वार मत-सम्प्रदाय-जाति-रंग आदि का कुछ भी विचार न करके मनुष्य मात्र के लिए खोल दोगे।

उस हुतात्मा संन्यासी को शतशः प्रणाम

वह वीर के समान जीए, वीर के समान मरे

वह वीरता और साहस के मूर्त्त रूप थे। वह वीर सैनिक थे। वह वीर के समान जीए और वीर के समान मरे। —महात्मा गांधी

एक नई प्रकाशकिरण की तरह

श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी सत्य मे अगाध श्रद्धा का सूचक था। वह सदा श्रद्धावान् और श्रद्धा मे ही आनन्दपूर्ण रहे। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गए थे। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक अनथक कार्यों के अमर चित्रो को आलोकित करती हुई एक प्रकाशकिरण की तरह हमारे सामने आती है। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रेरणास्पद जीवन

स्वामी जी ने जिस निष्ठा, प्रेम और दृढ़ता से जीवन भर अपने धर्म को निबाहा, वह हम सब के लिए प्रेरणास्पद है। —डा० राजेन्द्रप्रसाद

उस वीर सन्यासी का स्मरण

मैं चाहता हू कि उस वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावो को भरता रहे। —सरदार वल्लभभाई पटेल

वीरकाल की एक दिव्य विभूति

स्वामी श्रद्धानन्द भारत के वीर काल की एक दिव्य विभूति थे। भारतीय जीवन की आध्यात्मिक सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्र की सब क्रातियों मे उनका अपूर्व योगदान था। —भारत कोकिला सरोजिनी नायडू

चुनौती का दृढ़ता से सामना

स्वामी श्रद्धानन्द जी चुनौतियों का सामना सदा दृढ़ता से किया करते थे। इस सम्बन्ध की एक नहीं, अनेक घटनाएं हैं। ३० मार्च, १९१९ के दिन, भारत की राजधानी दिल्ली मे पूर्ण हड़ताल थी। तागे-ट्राम-गाडिया सब बन्द थी। ५० हजार से अधिक गिनती का जन-समूह 'ब्रिटिश हकूमत मुर्दाबाद,' 'रोलट कानून वापस' लो के नारे लगाता हुआ चादनी चौक के घन्टाघर पर पहुचा। सामने खड़े थे सगीनें ताने गोरे फौजी। जलूस के आते ही उन्होने हवाई फायर कर दिया।

इस प्रकार जलूस के आगे थे—वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द। वह गोरे सैनिकों के सामने छाती तान कर आगे बढे, गोरे फौजियो की किरचें उनकी छाती की ओर तन गई। एक गोरा फौजी बोला—'तुमको गोलियो से भून देंगे।'

पूरी निडरता से एक कदम आगे बढकर वह वीर सन्यासी बोला—"मैं खड़ा हू, गोली मारो।"

जोरदार नई धमकी के साथ कुछ और किरचें वीर सन्यासी की ओर तन गईं। बेचैन जनता भी आगे बढी, पर उस निर्भीक सन्यासी ने एक हाथ के इशारे से जनता को रोका और दूसरे से गोरों को गोली चलाने का सकेत किया। उसी समय सी० आई० डी० पुलिस का अग्रेज अफसर मि० आर्ड वहां पहुंचा। वीर सन्यासी ने उसे भी ललकारा। उस अग्रेज अफसर ने गोरी फौज को हटने का आदेश दे दिया।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

स्वामी श्रद्धानन्द जी से

—श्री शरर एम. ए

ओ तेजस्वि, ओ परिव्राट् ओ सत्यनिष्ट, ओ पूर्णकाम ।
ओ आर्य जाति की धवल कीर्ति तुझको वन्दन तुझको प्रणाम ॥
तुम आर्य धर्म के सजग प्रहरी, तुम भारत माता के सुपूत ।
तुम दयानन्द के भक्तप्रवर, तुम नवक्रान्ति के अग्रदूत ॥
तुम सत्य-अहिंसा के साधक, साधना प्रबल जीवन ललाम । तुझको वन्दन ।
किसको भूला है दिल्ली मे, असुरो का ताण्डव नृत्य प्रबल ॥
सम्मुख देखा बन्दूको को, खोला तू ने निज वक्षस्थल ।
बलिहारी उस बलि भावना के नतमस्तक थे गोरे तमाम । तुझको वन्दन'''
था कवच सगठन का तेरा शुद्धि का शस्त्र सजा कर मे ।
रण में निकला तू रणञ्जयी, रिपु दमन कर लिया पल भर में ॥
कण कण से गूंजी स्वर लहरी, जय दिग्विजयी, जय पुण्य धाम ।
तुझ को वन्दन तुझ को प्रणाम ॥

शत-शत वन्दनम्

गांधी जी के सत्य शोध की प्रबल साधना ।
महामना की भावभीनी सास्कृतिक अर्चना ॥
टण्डन जी का श्रद्धामय बहु भारती वन्दन ।
लाला लाजपत का मुखरित तेजस्वि जीवन ॥
गोखले की निज देशप्रेम की पूत भावना ।
वह स्वराज्य के लिए तिलक की सतत साधना ॥
यह सद्गुण सब चमक उठे जिस एक व्यक्ति मे ।
ईसा का प्रतिरूप, अग्रणी शक्ति भक्ति मे ॥
जिसे दे गया दयानन्द-दर्शन नवजीवन ।
उस बलिदानी श्रद्धानन्द को शतशत वन्दन ॥

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी

—कविराज बनवारीलाल 'शादा'

ऋषि दयानन्द के शिष्यों मे, प्रिय स्वामी श्रद्धानन्द हुए ।
आर्य जाति के कर्णधार, जैसे तारो मे चद हुए ॥
थे देशभक्त वो लासानी, थे आजादी के सेनानी ।
दीन-दुखियो के दुख लखकर, बहता था आखो से पानी ॥
निर्भय निर्द्वन्द्व सबल थे वह, नव क्रान्ति के अभिनेता थे ।
थे सयम मे वह भीष्म सम, आर्य अभिमानी चेता थे ॥
थे स्वतन्त्रता के दीवाने, थे मन मन्दिर के मस्ताने ।
सगीनो के आगे दिल्ली मे, वह खडे रहे सीना ताने ॥
पाप-अनाचारो मे दिन दिन, फसी जा रही जनता सारी ।
अग्रेजी प्रचार भारत मे, बहु बढता जाता था भारी ॥
ओ३म् पताका लेकर कर में, देश मे वेदप्रचार किया ।
पुन पुरातन पद्धति हो चालू गुरुकुल के लिए विचार किया ॥
गुरुकुल कागडी किया स्थापित, जो है पावन गगा के तीर ।
ऋषिभक्तो मे कर्त्तव्यनिष्ठ थे, सबसे उत्तम जन वह थे वीर ।
छूतछात ओ जातिवाद का, किया स्वामी ने बन्टाढार ।
बने विधर्मी उन्हे मिलाया, देश भारत का किया सुधार ॥
बलिदानी बनकर स्वामी ने, जीवन देश मे डाल दिया ।
वेदधर्म की रक्षा मे अपना, तन-मन-धन सारा वार दिया ॥
अमर कीर्ति हैं 'शादा' जग में, श्री श्रद्धानन्द जी स्वामी की ।
जिसने अपना जीवन देकर, नैय्या देश की थामी थी ॥

प्रधान आर्यसमाज, मोडलबस्ती नई दिल्ली-११०००५

कैसा है लोकतन्त्र !

—सियाराम 'निर्भय'

कैसा है लोकतन्त्र, कैसी आजादी । भूख से तड़पती है, देश की आबादी ॥
नेता की कुर्सी बचाते हैं गुण्डे, खाते हैं होटल मे मुर्गी के अण्डे ॥
चेहरे हैं काले, पहने हैं खादी, कैसा है लोकतन्त्र, कैसी है आजादी ॥
खून चूसते हैं, मन्त्री पद पाकर, माल लूटते हैं, शासन में जाकर ॥
ऐश करते हैं, सर्किट में आकर, पाव पीटते हैं, नौकर और चाकर ॥
बनते हैं त्यागी, पर हैं भोगवादी, कैसा है लोकतन्त्र, कैसी आजादी ॥
भूखी और नगी, जनता है निर्धन, जात और पात का भयकर है बंधन ॥
करते हैं मदिर के बाहर मे क्रन्दन, अन्दर पुजारी चढ़ाते हैं चन्दन ॥
धर्म के धरोहर हैं, करते बर्बादी, कैसा है लोकतन्त्र, कैसी आजादी ॥
घूसखोर जालिम से मत्री का पैक्ट है, मेहनत मजदूरी पर, लेबरका ऐक्ट है ॥
नीचे है रिक्शा, ऊपर मे जेट है, हन्टर है हाथ मे, सर पर तो हैट है ॥
काम करती है, पुलिस जल्लादी, कैसा है लोकतन्त्र, कैसी आजादी ॥
छाई है भारत में काफी बेकारी, बैठी तड़पती कन्या कुवारी ॥
तिलक-दहेज की गदी बीमारी, फैली है घर-घर मे काफी करारी ॥
धन के अभाव मे, होती न शादी, कैसा है लोकतन्त्र कैसी आजादी ॥
जनता गुलाम रहे, लाइसेंस हैं जारी, बिकी बढे खूब, हाकर है नारी ॥
फैल रहा रिश्वत का रोग महामारी, दगा कराते हैं मिया बोखारी ॥
आधा तो मर्द है, नारी है आधी, कैसा है लोकतन्त्र, कैसी आजादी ॥
कन्ट्रोल कोटा है परमिट सामान पर, टैक्स लगता है जनता की जान पर ॥
धूल उडती है गौरव गुमान पर, ताले लगाते हैं लेखन-जुबान पर ॥
दौलत के लोभी भी हैं समाजवादी, कैसा है लोकतन्त्र, कैसी आजादी ॥
भूख से तडपती है, देश की आबादी ॥

—मन्त्री आर्यसमाज, आरा (बिहार)

बोध-कथा

वह साहसी सेवक !

पहले महायुद्ध के दिनो की बात है। सन् १९१८ के प्रारम्भिक दिनों मे उत्तराखण्ड-गढवाल मे भयकर दुर्भिक्ष पडा । कुछ समाचार पत्रों मे उत्तराखण्ड-गढ़वाल मे दुर्भिक्ष फैलने के समाचार प्रकाशित हुए । उन दिनो गढ़वाल मे यूरोप के महायुद्ध के लिए भरती का काम जोरों पर था, उस भरती के काम में बाधा न आए, इसलिए ब्रिटिश सरकार की ओर से गढ़वाल मे दुर्भिक्ष के होने के समाचार का खण्डन किया गया । और ईसाई मिशनरियो ने गढ़वाल मे अपना मायाजाल बिछाना शुरू किया गया, उसी समय सरकार ने जमीन का नया बन्दोबस्त जारी करने तथा बद्रीनाथ-यात्रा बन्द करने का ऐलान किया । स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्थिति का जायजा लेकर गढवाल की दुर्भिक्ष पीडित जनता की सहायता की अपील की । जनता ने दिल खोल कर मदद की । स्वामी श्रद्धानन्द पहाडी जगल के रास्ते चल कर कोटद्वार पहुचे । अपने कार्य क्षेत्र मे उन्होंने पांच कैम्प खोल कर स्वयं सेवको का जाल बिछा दिया । स्वामी जी के स्थापित अन्न के भण्डारो और शिविरो के खुलने से सरकारी प्रचार ठप्प पड गया । सरकार ने स्वामी जी के बहिष्कार के लिए पौडी मे एक बडी बहिष्कार-सभा आयोजित की । स्वामी जी का सिर काट लेने की धमकिया दी जाने लगी ।

सभा के दिन सवेरे स्वामी जी दौरे से लौट रहे थे कि पौडी के कुछ सज्जन उनसे मिले । माथा टेक कर उनसे प्रार्थना की कि आप यहीं से लौट जाइए । पौडी में आपके आने से खून-खराबा हो जाएगा, महान् अनर्थ मच जाएगा । स्वामी जी नियत समय से १५ मिनट पहले ही सभा मे पहुच गए। स्वामी जी के साहस, धैर्य और आत्मविश्वास से सारी जनता उनका जय जयकार करने लगी। सेवा समिति का झण्डा उतारने के लिए सरकारी सिपाही उनके शिविर पर भेजा गया । स्वामी जी ने उससे कह दिया—"जाओ, अपने मालिक से कह दो कि यह झण्डा गोखले की आत्मा ने लगाया है, सिवा उनके दूसरा कोई इसका उतार या उतरवा नहीं सकता ।'

दुर्भिक्ष पीडित जनता के उस साहसी सेवक के इस निडर उत्तर से सरकार सहम गई । उस झण्डे को फिर आंच नहीं आई ।

—नरेन्द्र

श्रद्धा से सत्य की उपलब्धि

ओ३म् व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ यजु ३० ६

यह वास्तविक तथ्य है कि जीवन मे व्रत ग्रहण करने से व्यक्ति सन्मार्ग पर दीक्षित होता है । सन्मार्ग की दक्षिणा से जीवन में श्रद्धा की भावना का उदय होता है, फलतः सच्ची श्रद्धा से पूर्ण सत्य की उपलब्धि सम्भव है ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

अमर हुतात्मा का जीवन-सन्देश

५६ वर्ष पूर्व २३ दिसम्बर के दिन स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के उदात्त जीवन से हम कई सन्देश ग्रहण कर सकते हैं। स्वामी जी एक सामान्य मानव से महामानव बने थे, उनका प्रारम्भिक जीवन अनेक प्रकार के व्यसनो एव बुराइयो से ग्रस्त था, इसके बावजूद जब वह सत्य सकल्प लेकर आर्यसमाजी बने, तब उन्होने मांसाहार छोडकर शाकाहार का व्रत लिया, उन्होने अग्रेजी शिक्षा पद्धति के स्थान पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की प्रतिष्ठा की, उन्होंने रातो रात अपना उर्दू अखबार 'सद्धर्म प्रचारक' हिन्दी मे निकाला। उत्तर भारत के सास्कृतिक, सामाजिक एव धार्मिक जीवन मे उन्होने एक नवजीवन का सूत्रपात किया। इतना ही नही, जलियावाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद जब पजाब और उत्तर भारत मे सर्वत्र निराशा, भय और सहार की स्थिति विद्यमान थी, तब अमृतसर मे जनसेवा कर तथा अमृतसर काग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप मे उन्होने म्रियमाण देश मे नवजीवन का सचार किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी की दो प्रमुख विशेषताए थी—एक वह जो भी उदात्त सकल्प करते थे, उसे हमेशा कार्यान्वित करने की कोशिश करते थे। उनकी दूसरी विशेषता थी कि वह कभी भी सकट और चुनौती के सम्मुख पस्त नहीं होते थे प्रत्युत उस पर विजयश्री प्राप्त करते थे।

जहा तक सकल्पों को कार्यान्वित करने का प्रश्न था—बहुत कम आज के नेता ऐसे हैं जिनकी कथनी और करनी में फर्क नहीं होता। वे कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं, परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी ऐसे महामानव थे जिन्होंने जो सकल्प लिया, उसे सर्वत्र देकर भी अपनाया। आज के भोगवादी ससार मे अधिकतर लोग भोग ऐश्वर्य के रास्ते पर आकण्ठ डूबे रहते हैं, परन्तु महात्मा मुन्शीराम या स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे विरले ही लोग ऐसे होते हैं जो चलती हुई वकालत को लात मार कर समाज और जाति के उद्धार के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देते हैं। न केवल उन्होने अपने को आर्य जाति के लिए अर्पित किया, प्रत्युत अपने विद्वान सुपुत्रो को भी जाति और राष्ट्र के लिए भेंट कर दिया। स्त्री शिक्षा, गुरुकुल शिक्षा, दलितोद्धार, शुद्धि, अकाल निवारण, जनकल्याण के अनेक क्षेत्रो में वह सदा पूरी निष्ठा और शक्ति से लगे रहे। उनकी दूसरी विशेषता ने उन्हें एक सामान्य मानव से महामानव बना दिया था। वह कभी भी छोटी या बड़ी चुनौती या खतरे से डरे नहीं, उसका उन्होने पूरी दृढता और तत्परता से मुकाबला किया और सफलता पाई। १९१९ मे घटाघर, दिल्ली मे गोरे फौजियों की किर्चों और बन्दूको के सामने छाती निकाल कर अडना उनके ही बूते की बात थी।

इसी अक मे चुनौतियो एव खतरो के सामने उनके सन्नद्ध होकर डटे रहने की दो घटनाए दी जा रही हैं। गढवाल के भयकर अकाल के समय जब ब्रिटिश सरकार वहा की गरीबी का लाभ उठाकर वहा जबरन भर्ती कर रही थी, उस समय वहाँ की जनता की सेवा-सहायता कर उसमे हिम्मत पैदा करने का कार्य उन्होने किया था। वह सिपाही द्वारा धमकी दिए जाने के बावजूद अपने मोर्चे से नहीं हटे, प्रत्युत विरोधियो के गढ में पहुच कर भी उन्होंने सफलता पाई। इसी प्रकार मथुरा जन्म शताब्दी के समय पण्डो के उपद्रव एव विरोध का उन्होने ही दृढता से सामना कर सफलता पाई। आज भी देश के सम्मुख नानाविध समस्याए हैं, पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर क्षेत्रों मे अलगाववादी शक्तिया उभर रही हैं, दक्षिण भारत में पेट्रो डालर की मदद से साम्प्रदायिक शक्तिया हरिजनो का सामूहिक धर्मान्तरण करने के लिए प्रयत्नशील हैं। वर्षों पहले दलितोद्धार कर पिछड़े भाइयों का उद्धार कर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिस प्रकार देश की जनता का मार्गप्रदर्शन किया था, ठीक उसी प्रकार आज भी देश को सच्चे मार्गदर्शन की अपेक्षा है। हमे न केवल आज स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करना चाहिए, प्रत्युत हमें अपने सकल्पों को कार्यान्वित कर कथनी और करनी को एक करने तथा किसी भी चुनौती या खतरे का सामना करने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

हिन्दुओं में एकता क्यों नहीं ?

हिन्दू स्वय अपने को हिन्दू कहते कहाँ है : वे तो अपनी अनेक प्रकार की बनाई जातियाँ कहते हैं, अथवा बगाली, बिहारी, मारवाडी, पजाबी, मद्रासी मराठी या सिख कहते हैं। प्रभु की बनाई हुई तो मानव जाति है, तो फिर क्या नही हम उनके पथ पर चलते हैं। अपनी बनाई जातियो को तोडकर स्वय अपने को हिन्दू आर्य कहो, तब हिन्दू एकता की बात करो। सुनो जैसे –

केले की पात-पात में पात। कवियो की बात-बात मे बात। वैसे ही-हिन्दूओ की जात-जात मे जात। जातीयता की हीन भावनाओ को दूर होने से आत्मीयता की प्रेम भावना बढेगी। एक जाति वाले दूसरे जाति वालो को हीन दृष्टि से नही देखेंगे, तथा अपने पुत्र-पुत्रियो के अन्तर्जातीय विवाह करेंगे, तब ही हिन्दू एक होगे। आर्यसमाज, निरकारी मडल और कम्युनिष्ट पार्टी जात—पात को नहीं मानते हैं। जो नेता गण जात-पात के विरुद्ध भाषण देते हैं, परन्तु सभी अपने पुत्र-पुत्रियो के विवाह के समय अपनी जाति की खोज करते हैं फिर वे सभी जात-पात के विरोधी कैसे रहे ? सभी सस्थाओ के सदस्यो एव नेतागणो को चाहिए कि अपने पुत्र-पुत्रियो का अन्तर्जातीय विवाह गुणकर्म और स्वभाव देखते हुए करें। इस क्रांति मे युवा वर्ग जोरदार कदम उठाए। इसमे जात-पात-दहेज प्रथा तथा निर्धनता के कारण होने वाली लडकियो की आत्महत्या समाप्त हो जाएगी। विश्व हिन्दू परिषद् अथवा जो भी सस्थाए 'हिन्दू-हिन्दू एक हो' का नारा देते हैं, उन्हें अपने पुत्र-पुत्रियो का अन्तर्जातीय विवाह करना होगा, तभी 'हिन्दू-हिन्दू एक हो' का नारा सफल होगा, हम सभी मानव-जाति के हैं। मानवता को अपनाएंगे तभी हिन्दुस्तान मे एकता और अखडता बनी रहेगी।

—सूर विश्वम्भर आर्य, आर्यसभा, उपप्रधान(दरभग प्रमडल), समस्तीपुर (बिहार)

दूरदर्शन प्रसारण के कार्यक्रम

भारत सरकार ने दूरदर्शन-सेवाओ के विस्तार एव प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमो सम्बन्धी नीति व योजना तैयार करने के लिए डा० पी सी. जोशी (निदेशक आर्थिक विकास सस्थान) की अध्यक्षता मे एक कार्य दल का गठन किया है। आशा है अगला कार्यक्रम निर्धारण करते हुए निम्न तथ्यों पर ध्यान दिया जाएगा।

१ सर्वत्र मान्यता है कि देश का चारित्रिक पतन द्रुतगति से होता जा रहा है. अतएव आवश्यक है कि हम अपनी मर्यादाओ के अनुपालक राष्ट्रीय चरित्रो को यथागुण अधिकाधिक रोचकता के साथ प्रसारित करें व वैदिक शिक्षाओं का अनुसरण कराए। इसके लिए एक उच्चकोटि के वैदिक समाज सुधारक को निदेशक बनाने की प्रणाली सुनिश्चित की जाए।

२. सरकारी अफसरो व समकक्ष प्रभावपूर्ण व्यक्तियों द्वारा निरन्तर अग्रेजी के प्रयोग से अधिकाश भारतीयों का शोषण हो रहा है व सरकारी प्रावधानों का उन्हें कोई कोई फायदा नही पहुचता अत हिन्दी व भारतीय भाषाओं के ही कार्यक्रम प्रसारित किए जाएं।

३ विज्ञापन-युद्ध में लघु उद्यमियो का व व्यापारियो का शोषण प्रारम्भ हो जाता है, वे जीवित रहने के लिए या तो स्तर खराब करते हैं अथवा बड़े विज्ञापको के आश्रित होने को बाध्य होते हैं, अतएव दूरदर्शन, आकाशवाणी व समाचार पत्रों से विज्ञापन युद्ध समाप्त करके ही स्वस्थ आर्थिक विकास का अवसर दिया जाए।

४. रोचक कार्यक्रमो के नाम पर बढ़ते फिल्मी कार्यक्रमों को रोकना होगा, चूंकि फिल्मी उद्योग ने समाज की सेवा कम व नुकसान ज्यादा किया है, व दूरदर्शन भी यदि फिल्मो का पिछलगू बनता है तो अश्लीलता, अभाव, अहकार, अन्याय समाप्त न होकर केवल मनोरजन के विषय बने रहेगे।

५. एशियाई खेलो में विशेषत हाकी की हार का मुख्य कारण—खेलो के प्रति दर्शक-मनोरजन भाव मुख्य रखने के कारण हम पिछड गए व अब हमे खेलो का 'आँखो देखा हाल प्रसारण' करने का कार्यक्रम समाप्त कर देना चाहिए, व खेलो, व्यायाम-आसनो की तकनीक केवल दर्शकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत करनी चाहिए व दर्शको को पुन-पुन प्रात वेला मे उठकर व्यायाम क्रीडा आदि अपनाने पर आग्रह करना चाहिए।

—जयप्रकाश आर्य. प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज बिरला लाइन्स दिल्ली-७

स्वामी श्रद्धानन्द का सन्देश : उनके उपदेशों के माध्यम से

५६ वर्ष पूर्व २३ दिसम्बर के दिन नई दिल्ली के नया बाजार में स्वामी श्रद्धानन्द जी एक आततायी की गोलियों से वीरगति को प्राप्त हुए थे। दिसम्बर के चौथे सप्ताह में देश भर मे उनका बलिदान-पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रस्तुत है स्वामी श्रद्धानन्द जी का सन्देश: उनके ही उपदेशों के माध्यम से—

१. जीवात्मा का जीवन उद्देश्य

'इन्द्रियाणां प्रसगेन
दोषमृच्छत्य संशयम्।
सन्नियम्य तु तान्येव तत. सिद्धि नियच्छति" (मनु० २।९३)

शब्दार्थ—(इन्द्रियाणां) इन्द्रियों के (प्रसगेन) विषयो में फसने से मनुष्य (असशयम्) निश्चय से (दोषम् ऋच्छति) दोषों का भागी होता है, किन्तु (तानि एव तु) उन्हीं-इन्द्रियों के (सन्नियम्य) सयम करके (तत. सिद्धि) बाद में सफलता को (नियच्छति) प्राप्त कर लेता है।

प्रवचन आत्मा स्वभाव से दर्पण की तरह स्वच्छ है। जैसे दर्पण को जितना अधिक स्वच्छ किया जाए, अधिक स्पष्टता के साथ उसमें वस्तुओं का रूप ठीक-ठीक दिखाई देगा। अगर मैला पन उस पर आ जाए तो वस्तुओं के रूप दिखाने के अयोग्य हो जाता है। यही स्थिति आत्मा की भी है। यदि आत्मा को 'यम'—'नियम' आदि साधनो से स्वच्छ रखा जाए तो उसकी बुद्धि उग्र अर्थात् सूक्ष्म हो जाती है। वह ब्रह्मप्राप्ति के योग्य हो जाता है, किन्तु उस पर विषय-वासना का मैल जम जाए तो उसमे—ब्रह्मप्राप्ति की शक्ति नहीं रह जाती।

जीवात्मा का जीवन-उद्देश्य क्या है? इसका विचार हर समय करना चाहिए-तब वह विषयों की दासता से बडी सुगमता से स्वतन्त्र हो सकता है। विषयो मे फसने से ही सब प्रकार प्रकार के दोष आ जाते हैं। विषयो मे मनुष्य क्यों फसता है? अज्ञानता-अविद्या के कारण। परमात्मा ने अपनी अपार दया से मनुष्यों को बुद्धि नामक एक विशेष गुण दिया है।

हमारी इन्द्रियां किसी नियत समय तक उन्नति करती हैं। उसके बाद उनकी शक्ति क्षीण होने लगती है, केवल बुद्धि ही वह तत्त्व है जो निरन्तर उन्नति करता रहता है। यही नहीं, मरने के पश्चात् भी दूसरे जन्म में भी यह आगे चलती रहती है। अत. मनुष्य का यह परम कर्त्तव्य है कि 'बुद्धि' को सदा उन्नति के मार्ग पर चलाता रहे। इन्द्रियां और उनके विषय आदि केवल साधन मात्र हैं, परन्तु हम कितने मूर्ख हैं कि इन इन्द्रियों और विषयों के हम गुलाम बन जाते हैं। आंखे इसलिए दी गई हैं कि हम संसार के सारे रूपों की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को समझें और उनका ज्ञान प्राप्त कर उसे बुद्धि की उन्नति का साधन बनाए, परन्तु हम 'रूप' के दास बन जाते हैं—और 'रूप' के लिए अनेक पाप करते हैं। प्रत्येक इन्द्रिय जीवात्मा की सेवा करने के लिए बनाई गई हैं। उसे इन्द्रियों का दास बने रहने के लिए जीवात्मा को प्रदान किया गया है। किन्तु हमारी विपरीत गति है—जो दास बनाया गया—वह स्वामी बन बैठा—और जो स्वामी है वह दास बन गया। मनुष्यों के क्लेश का यही कारण है।

परमात्मा ने इस ससार को हमारे लिए स्वर्ग-धाम बनाया। हमें कर्म-योनि प्रदान कर इस स्वर्ग-धाम से पूरा लाभ लेने के लिए योग्य बनाया। परन्तु हम करते क्या हैं? हमने स्वयं अपने—कर्मों से इस स्वर्ग-धाम को नरक धाम बना लिया है। विषय सग से ही सारे दोष उत्पन्न होते हैं। गीता में भी आया है—"ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते। सगात्सजायते काम. कामात्क्रोधोऽभिजायते।" (२-६२)

अत: इन दोषों से छूटने के लिए मनुष्यों को विषयों से स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिए। यह असम्भव है कि इन्द्रियों का विषयों से जो सम्बन्ध है, वह छूट जाए—अगर छूट जाएगा—तो हम प्रत्यक्ष ज्ञान कैसे प्राप्त करेंगे—प्रत्यक्ष के अभाव में 'अनुमान' ज्ञान भी समाप्त हो जाएगे—तब तो जीवन का क्रम ही टूट जाएगा। अत. यह निश्चित है कि इन्द्रियों के साथ स्वामी—सेवक का सम्बन्ध होना चाहिये। हमें यह ध्यान रखना है कि हम 'स्वामी' हैं और 'इन्द्रियां' हमारी सेवक हैं।

हम अपने उद्देश्य को भूले हुए हैं—विषयों की सही वास्तविकता को न जानते हुए, हम उसके भोग में सुख माने बैठे हैं—इसलिए हमारे पीछे सैकड़ों दोष लगे हुए हैं—और हम पीड़ित हैं।

विषयों से छुटकारा प्राप्त करने का यत्न आज से ही प्रारम्भ कर दें—जिससे, जिस समय जीवात्मा शरीर से अलग होने लगे—उस समय हमारी कोई भी वासना सांसारिक पदार्थों में शेष न रहे। (संदर्भ—'सार्वदेशिक' (मा०) दिसम्बर, १९६३ में प्रकाशित-उपदेश के आधार पर)

२. परमात्म-चिन्तन

मित्रो उस परम पिता की अनुकूलता और उसकी आज्ञा का पालन क्या ही आनन्ददायक है? आओ हम—सब मिलकर उस बलपति के द्वार पर चलें—जिनसे उनसे बल प्राप्त करके हम योग्य हो जाएं। ससार मात्र की बुरी वासनाओं का मुकाबला करते हुए, उस सबसे महान् तेजस्वी परम पिता की स्तुति कर सकें और सृष्टि के सब पदार्थ हमारे लिए सुखदायी हो जाएं।' (सदर्भ ग्रन्थ—'स्वामी श्रद्धानन्द जी के धर्मोपदेश'—भाग—३ पृष्ठ-८)

लेखक :
जगदीश आर्य 'सिद्धान्तरत्न'

३. सत्य महिमा

"प्यारे मातृगण! आओ, दोनों समय नित्य प्रति-सध्या करते हुए ईश्वर से याचना करें और उसकी सत्ता और दया से योग्य बनने का यत्न करें कि हमारे मन वाणी और कर्म सब सत्य हों। हमारे हर प्रकार के कर्म-सत्य मय हों। सर्वदा सत्य का चिन्तन करें। वाणी द्वारा सत्य ही प्रकाशित करें और कर्मों में सत्य का ही पालन करें" (वही ग्रन्थ—पृष्ठ-१४)

४. शुभ कर्मों का गौरव

"आओ, सुख की अभिलाषा करने वालो। परमात्मा की आज्ञा मानते हुए शुभ कर्म में प्रवृत्त हो जाओ। भले पुरुषों की संगत करते हुए ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित होकर अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करो, ताकि परमानन्द की प्राप्ति हो।" (वही ग्रथ—पृष्ठ-१७)

५. जहां मृत्यु और बुढ़ापे का भय न हो

"आंखें बन्द करो। ज्ञान नेत्रों को बलपूर्वक खोलो और देखो उस अनन्त शक्ति को जिसने तुम्हारी रक्षा के लिये हाथ पसार रखे हैं। आओ पूर्ण विश्वास से उसकी गोद में—फिर तुम उस उत्तम अवस्था को प्राप्त कर सकोगे, जहां पर बुढ़ापे—और मृत्यु का भय नहीं रहता।" (पृष्ठ १०१)

६. प्रभु की व्यापकता का अनुभव

'प्रभु की सर्वव्यापकता का अनुभव'

"क्या तुम सचमुच परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हो। यदि शुद्ध स्वरूप परमात्मा को प्रत्येक स्थान पर उपस्थित होने को स्वीकार करते हुए भी तुम्हारा मन अशुद्ध है—अगर उसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के बुरे भाव अब तक उत्पन्न होते हैं—यदि तुम अपनी वाणी से निन्दा, छल और व्यभिचार के शब्द निकाल सकते हो, यदि अपने शरीर से बुरे काम कर सकते हो, तो निश्चय जानो कि तुमने अब तक उसकी सर्वव्यापकता का अनुभव नहीं किया है। केवल वाणी से कहते हो कि वह सर्वव्यापक है। (वही ग्रन्थ—पृष्ठ सं०—२०)

७. आत्मिक सूर्य का चमत्कार

"क्या तुम्हारे हृदय के अन्दर होते हुए घोर पाप करते हुए भी उस आत्मिक सूर्य का चमत्कार दृष्टिगोचर हुआ है? और क्या तुमने उस समय मार्ग दर्शक से सहायता लेने का यत्न किया है? अगर नहीं तो तुमसे बढ़कर मन्द भाग्य कौन है? किन्तु निराश मत होओ, चमत्कार फिर कभी दिखाई देगा। उस समय उस अवसर को न छोड़ते हुए अपितु बुद्धि चक्षुओं को उस दृश्य के अन्दर मग्न करके शान्त चित्त हो जाओ।" (पृष्ठ स. ३०)

स्वामी श्रद्धानन्द सन्त निर्बलों की जान था !

—स्वामी स्वरूपानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द सन्त निर्बलों की जान था।
देवता महान् था, वह देवता महान् था॥
वेदामृत हम को घोट-घोट कर पिला गया
बिछुड़े हुए भाइयों को प्रेम से मिला गया
देश धर्म हेतु जागरूक सावधान था। देवता...
सच्चे शिष्य बने दयानन्द महाराज के
विदेशी चकित थे नारे लगे स्वराज्य के
देशकाल का भी पूर्ण उनको ज्ञान था—देवता
अंग्रेजों की सेना देख मन में घबराए नहीं।
सीना खोल बढ़े पैर पीछे को हटाए नहीं।
अजब दृश्य देखा गया दिल्ली के दरम्यान था॥ देवता
देश-धर्म हेतु स्वामी मरना सिखा गया।
देश भक्त बनकर दुनिया वालों को दिखा गया।
कहे स्वरूपानन्द ऋषि सूर्य के समान था।
देवता महान् था वह देवता महान् था।

४४६ रामबाड़ा कालोनी स २, आश्रम, नई दिल्ली-१४

सत्यार्थप्रकाश और स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु

क्रान्तिदूत दयानन्द का क्रांतिकारी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' ऐसा अनुपम प्रकाशस्तम्भ अथवा रोशनी का मीनार है कि जो अगणित भूले-भटके मानवों को सुपथ दर्शा चुका है। इसके स्वाध्याय से न जाने कितनों के जीवन बदल गए। अनेक भटके हुए पथिकों के लिए यह ग्रंथ दिशासूचक बन गया था। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे ही महामानव थे कि जिन्हें बनाने में महर्षि के इस अनुपम ग्रन्थ का बहुत बड़ा योग था। मुन्शीराम एक नास्तिक नवयुवक था और ऐसा नास्तिक कि जिसे अपनी नास्तिकता पर गर्व था। बरेली में जब महर्षि दयानन्द पधारे, तब मुन्शीराम के पिता श्री नानकचन्द जी वहां नगर-कोतवाल थे, वह महर्षि दयानन्द के प्रवचनों में शान्ति-व्यवस्था बनाए रखने को नियुक्त हुए थे। उन्होंने महर्षि के दर्शन किए। वह अपने पुत्र की नास्तिक प्रवृत्ति से खिन्न थे। उन्होंने यह अच्छा अवसर समझा और अपने पुत्र से कहा कि एक वेदों के ज्ञाता सन्यासी बरेली पधारे हुए हैं एवं बहुत बड़े-बड़े लोग उन्हें सुनने को जाया करते हैं। अच्छा हो कि कल तुम भी सुनने चलो। मुन्शीराम ने पिता को स्वीकारोक्ति तो दे दी किन्तु मन में यही शंका रही कि केवल संस्कृत का ज्ञाता बुद्धि की बात क्या करेगा।

महर्षि का 'सत्यार्थप्रकाश' उन्हें सत्यमार्ग का पथिक बना गया

काश, हम भी महर्षि के इस पावन ग्रंथ को

अपना प्रेरणास्रोत बना सकते।

दूसरे दिन निश्चित समय पर पिता जी ने चलने को कहा। बेटा बेमन से साथ हो लिया। वहां जाकर देखा कि शहर के अनेक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति भाषण सुनने को उपस्थित थे। पादरी स्काट और कई अन्य यूरोपीय भी वहां उपस्थित थे। इसे देखकर मुंशीराम के मन में बड़ी उत्सुकता बढ़ी और भाषण प्रारम्भ प्रारम्भ होने की तीव्रता से प्रतीक्षा करने लगे। महर्षि दयानन्द के प्रथम दिन के उस भाषण ने ही मुंशीराम पर वह जादू कर दिया कि उनका जीवन ही बदल गया। महात्मा मुंशीराम (बाद में स्वामी श्रद्धानन्द) स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करते हुए आत्मकथा में लिखते हैं कि—'वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषि आत्मा का ही काम था।'

इतना ही नहीं, वह तो यहां तक लिखते हैं कि 'यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था, तथापि मैं मन में सोचा करता था कि यदि ईश्वर और वेद के ढकोसले को पंडित दयानन्द स्वामी तिलांजलि दे दें तो फिर कोई भी विद्वान उनकी अपूर्व युक्ति और तर्कणा शक्ति का सामना करने वाला न रहे। मुझे अपने नास्तिकपन का उन दिनों अभिमान था। एक दिन ईश्वर के अस्तित्व पर आक्षेप कर डाले। पांच मिनट के प्रश्नोत्तर में ऐसा घिर गया कि जिह्वा पर मुहर लग लग गई। मैंने कहा—'महाराज ! आप की तर्कना बड़ी तीक्ष्ण है। आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्व) है।' दूसरे दिन भी ऐसा ही कहने पर महर्षि ने उनसे कहा कि 'देखो ! तुमने प्रश्न किए मैंने उत्तर दिए—यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी मैं तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास करा दूंगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।'

सत्यार्थप्रकाश का जादू

जो मुंशीराम महर्षि दयानन्द के साक्षात्कार से भी आस्तिक नहीं बन पाया था। वही उनके विचारपुंज 'सत्यार्थ प्रकाश' के स्वाध्याय से आस्तिकता का प्रबल प्रचारक बन बैठा। पर वह कैसे ? 'सत्यार्थ प्रकाश' के गहन और गम्भीर स्वाध्याय से। उनकी आत्मकथा में इसका वर्णन इस प्रकार है — सवत् १९४१ का माघ मास और आदित्यवार का दिन है। नास्तिकपन के गढ़े से मैं निकल चुका हूं। धर्म-विषयक गहरे आन्दोलन के पश्चात् 'सत्यार्थ प्रकाश' का पाठ दिन-रात आरम्भ कर चुका हूं। अनारकली के पास रहमत खां के अहाते में एक तीन कमरों वाली कोठी के बाईं ओर के कमरे मे मैं प्रातः ६ बजे कुर्सी पर बैठा हूं। 'सत्यार्थ प्रकाश' का आठवां समुल्लास सामने खुला पड़ा है, किन्तु मैं हाथ पर सिर रखे किसी गम्भीर विचार में निमग्न हूं। इतने में कमरे का द्वार खुला और मेरे मित्र सुन्दरदास जी ने अन्दर प्रवेश किया। उनके पैर की आहट ने मुझे विचारनिद्रा से जगा दिया। यह सुन्दरदास जी रावलपिण्डी के राजक्रांति में फंसे वकील, लाला अमोलकराम के भाई आर्य जाति की उन्नति के दृढ़ पक्षपाती थे। सुन्दरदास भी जानते थे कि आस्तिक बनने के पश्चात मेरा अधिक झुकाव ब्राह्मसमाज की ओर हो रहा है। उन्होंने पूछा—'किस चिन्ता में हैं। कहिए कुछ निश्चय हुआ।' मेरी ओर से उत्तर मिला—'पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने फैसला कर दिया, आज मैं सच्चे दिल से आर्यसमाज का सभासद् बन सकता हूं।' स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज वहां 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रभाव को सुस्पष्ट शब्दों मे स्वीकार रहे हैं। इतना ही नहीं, अपनी कथा कल्याणमार्ग का पथिक की भूमिका में भावविभोर हो महर्षि दयानन्द के ऋण को स्वीकारते हैं हुए लिखते हैं कि 'मैं क्या था इसे इस कहानी मे मैंने छिपाया नहीं। मैं क्या बन गया और अब क्या हूं ? वह सब तुम्हारी कृपा का ही परिणाम है।'

'सत्यार्थप्रकाश' प्राप्ति की कहानी

श्री मुंशीराम द्वारा महर्षि के इस अनुपम ग्रंथ को प्राप्त करने की उत्सुकता भरी अत्यन्त रोचक कहानी है कि जो उन्हीं के शब्दों में देना उचित समझते हैं। 'सत्यार्थप्रकाश' को खरीदने के लिए उनके मन में कितनी उत्कण्ठा थी, इस का भान इससे पाठकों को स्वतः ही हो जाएगा। वह लिखते हैं कि 'मैं सीधा बच्छो वाली के आर्यसमाज मन्दिर की ओर 'सत्यार्थप्रकाश' खरीदने के विचार से चल दिया। विक्रयपुस्तक भण्डार बंद था। चपरासी ने कहा कि लाला केशवराम पुस्तकालय के आने पर पुस्तक मिल सकेगी। मैंने उनके घर का पता लिया और दो घन्टों की आवारागर्दी के पीछे उनका घर ढूंढ निकाला। केशवरामजी घर न थे। बड़े तार घर गए थे, क्योंकि वह तार बाबू (सिगनेलर) का काम करके ही आजीविका प्राप्त करते थे। मैं तार घर का पता लगाकर वहां पहुंचा। उस समय वह छुट्टी में जलपान के लिए घर गए थे। मैं फिर उनके घर लौटा तो वह तार घर लौट गए थे। पूछने से पता लगा कि वे डेढ़ घन्टे में ड्यूटी से लौटेंगे। मैंने वह डेढ़ घन्टा पास की गली के अन्दर गश्त में बिताया। एक सज्जन बाबू केशवराम जी के घर मे जाते दिखाई दिए। मैंने उन्हें जा घेरा। 'महाशय जी, मुझे 'सत्यार्थप्रकाश' खरीदना है। 'उत्तर मिला' निवृत्त होकर कुछ खालूं फिर आपके साथ समाज मन्दिर चलूंगा। मैंने अपना सारे दिन का इतिहास सुनाकर बाहर ठहरने की इच्छा प्रकट की। केशवजी का मुख सहानुभूति से चमक उठा और उन्होंने कहा—'महाशय जी ! चलिए पहले आपको पुस्तक दे दूं। जब तक आपका काम न कर लूं मुझे इत्मीनान न होगा।'

समाजमन्दिर मे पहुंचने पर 'सत्यार्थप्रकाश' मेरे हाथ मे रखा गया। मैंने मूल्य दिया और इस प्रकार आह्लादपूर्वक लौटा मानो बड़ा कोष हाथ लग गया है। मेरे साथी मुझे प्रातःकाल के भोजन मे सम्मिलित न देख विस्मित थे। जब मैं पहुंचा, तब सायंकाल का भोजन परसा जा रहा था, खूब भूख लगी थी, भोजन रुचिपूर्वक किया। शाम को भ्रमण के लिए गया ही नहीं, लैम्प जला, 'सत्यार्थप्रकाश' की भूमिका समाप्त कर प्रथम समुल्लास के स्वाध्याय मे लग गया।' पाठकगण, 'सत्यार्थप्रकाश' की प्राप्ति और उसके स्वाध्याय की इससे बढ़कर उत्कण्ठा और क्या हो सकती है। यही कारण था कि 'सत्यार्थप्रकाश' उनके जीवन मे अभूतपूर्व क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने मे समर्थ हो सका। जानते हैं यह कौन-सा 'सत्यार्थप्रकाश' था। यह था सत्यार्थप्रकाश का प्रथम संस्करण, जिसे आदिम सत्यार्थप्रकाश भी कहा जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी उससे इतने प्रभावित थे कि उन्होंने आदिम सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज के सिद्धान्त नामक ग्रन्थ भी लिखा था। यह ग्रन्थ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके स्वाध्याय से भी पता चलता है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज 'सत्यार्थप्रकाश' से कितने प्रभावित थे। महर्षि का सत्यार्थ प्रकाश उन्हें सत्य मार्ग का पथिक बना गया। काश ! हम भी महर्षि के इस पावन ग्रंथ को अपना प्रेरणास्रोत बना सकते।

—आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद (उ. प्र.)

आर्य जगत् समाचार

अबोहर-फाजिल्का हरियाणा को सौंपे जाएं

७० का फैसला लागू किया जाए : अन्यथा सत्याग्रह हरयाणा रक्षावाहिनी का सर्वसम्मत निर्णय

रोहतक। रविवार १२ दिसम्बर के दिन दयानन्द मठ रोहतक में अध्यक्ष प्रो शेरसिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हरियाणा रक्षा वाहिनी की आपातकालीन महत्त्वपूर्ण बैठक मे सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि आगामी २६ जनवरी १९८३ तक यदि अबोहर-फाजिल्का हरयाणा को न सौंपे गए तो सारा हरयाणा सत्याग्रह के लिए मैदान मे उतर आएगा। बैठक मे सर्वसम्मति से ये तीन प्रस्ताव स्वीकार किए गए—१. हम अकालियोंके राष्ट्रविरोधी और हरयाणाविरोधी आदोलन की भर्त्सना करते हैं। २ अकाली सिख अल्पसख्यक नहीं हैं, सविधान के ३० वें अनुच्छेद के कारण उन्हें दिए गए विशेषाधिकार समाप्त किए जाएं और अनुच्छेद ३० समाप्त किया जाए और ३. १९७० का पचफैसला लागू कर २६ जनवरी १९८३ तक अबोहर-फाजिल्का हरियाणा को और चण्डीगढ़ का भविष्य निर्धारित किया जाए अन्यथा सारा हरियाणा सत्याग्रह के मार्ग पर उतर आएगा।

अबोहर-फाजिल्का के भूतपूर्व विधायक मास्टर तेगराम ने अपने क्षेत्र मे अकालियो द्वारा किए अत्याचारों का पर्दाफाश किया। उस क्षेत्र मे पटवारी से चपरासी तक सिख हैं, फलतः जनता को अपने बच्चों को हिन्दी की शिक्षा के लिए हरयाणा या राजस्थान भेजना पड़ता है। १९७० के एवार्ड के अनुसार फाजिल्का-अबोहर हरयाणा को न मिले यह शर्म की बात है। अबोहर के महत स्वामी कृष्णदत्त ने कहा कि पजाब के काग्रेसी हिन्दू अपने स्वार्थों की बलि का बकरा बनाकर हमें पजाब मे रखना चाहते हैं, हम हरयाणे के हैं। प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, विपक्ष के भूतपूर्व नेता लाला मूलचन्द जैन ने भी सघर्ष के लिए आह्वान किया।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी, फूलचन्द शर्मा विदुर, श्री सुखदेव सिंह शास्त्री, चौ. अमरसिंह दादरी, श्री राजनारायण, बहन किरणमयी आर्या, चौ. धर्मसिंह राठी पानीपत दीवान भीमसेन जी, महा श्यामलाल आर्य गुड़गांव, कुलभूषण आर्य आदि ने हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सुझाव दिए।

राष्ट्रवादी युवक संगठित हों

नई दिल्ली। केन्द्रीय 'आर्य युवक परिषद गुरुकुल गौतम नगर मे आयोजित आर्य युवक सम्मेलन' को सम्बोधित करते हुए परिषद अध्यक्ष ब्र. राजसिंह आर्य ने देश मे राष्ट्रवादी युवकों से एक मच पर आने का आह्वान किया।

सम्मेलन मे ब्र रामपाल, प. खुशीराम शर्मा, श्री नरेन्द्र शास्त्री, श्री धर्मवीर व्यायामाचार्य, डा. देवव्रत आचार्य, प. प्रकाशचन्द्र आर्य, श्री वीरेन्द्र रिसर्च-स्कालर, श्री नरेन्द्र शास्त्री, श्री प्रेमपाल शास्त्री, श्री धर्मेन्द्र शास्त्री व राजू वैज्ञानिक आर्य युवक नेताओ ने देश मे व्याप्त अशांति व अव्यवस्था मिटाने के लिए अपने विचार रखे।

स्वामी ओमाश्रम की प्रथम पुण्यतिथि

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आगामी ९ जनवरी १९८३, साय ३ से ५ बजे आर्य गुरुकुल खेड़ा खुर्द के संस्थापक, स्वतंत्रता सेनानी व आर्य युवकों के प्रेरणा स्रोत, आर्य सन्यासी स्वामी ओमाश्रित सरस्वती जी की प्रथम पुण्य तिथि "वैदिक सत्सग" कमला नेहरू पार्क, पुरानी सब्जी मडी, दिल्ली-७ मे मनाई जाएगी।

उल्लेखनीय है कि स्वामी जी ने गांधी जी के आह्वान पर सरकारी नौकरी का त्याग कर स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लिया। आर्यसमाज के हिन्दी रक्षा, गो रक्षा आन्दोलन मे सक्रिय भूमिका अदा की।। गुरुकुल खेड़ा खुर्द, सदर बाजार व व पुल बगश आर्यसमाजों में कार्य किया। स्वामी जी के निकट सहयोगी एव आर्य समाजो के अधिकारी उनके जीवन चरित्र पर विचार रखेंगे।

मोतीलाल बनारसीदास द्वारा कन्या गुरुकुल हाथरस को १०००१) रु. का दान

प्रथम आने वाले छात्रों के लिए स्वर्णपदक की व्यवस्था

(१) दिल्ली, वाराणसी, पटना के भारतीय विद्या सम्बन्धी पुस्तकों के प्रकाशक एव विक्रेता श्रीमन्त मोतीलाल बनारसीदास ने गुरुकुल के लिये १०,००१ रु० का दान दिया है।

(२) डा० राजकुमार गुप्त, विलिग्टन, न्यूजीलेण्ड ने कन्या गुरुकुल, हाथरस की स्नातिका अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी श्रीमती स्वर्णलता शास्त्री की पुण्य स्मृति मे शास्त्री परीक्षा मे प्रथम आने वाली कन्या को प्रतिवर्ष स्वर्ण पदक एवं प्रशस्तिपत्र देने के लिये ५००१) रु. कन्या गुरुकुल को दिए हैं। यह धन स्थायी रूप से बैंक मे जमा रहेगा और इसके ब्याज से स्वर्णपदक दिया जाया करेगा। प्रशसित डाक्टर साहिब ने अपनी पत्नी की पुण्य स्मृति में प्रचलित कन्या गुरुकुल की छात्रवृत्ति निधि मे १०,०००) रु. देने का सकल्प किया है। जिसके ब्याज से एक कन्या सदा ही गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त करती रहेगी।

(३) इस वर्ष कन्या गुरुकुल के समपीपवर्ती क्षेत्रों में वायरस ज्वर का भीषण प्रकोपथ रहा। ५०० कुल वासियों मे से एक भी इस चपेट से न बच सका। अब स्थिति ठीक है और गुरुकुल के कार्य यथाविधि चल रहे हैं।

आर्यसमाज कलकत्ता का ९७वां वार्षिकोत्सव

कलकत्ता। आर्यसमाज कलकत्ता का ९७ वां वार्षिकोत्सव शनिवार २५ दिसम्बर १९८२ से २ जनवरी, १९८३ तक मुहम्मद अली (दयानन्द) पार्क में मनाया जाएगा। प्रतिदिन प्रातः ७ से ९ बजे तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ किया जाएगा। यज्ञ की पूर्णाहुति २ जनवरी को होगी। इन दिनो दोपहर के समय ३ से ५ बजे तक विभिन्न सम्मेलन होंगे, २६ दिसम्बर को आर्य सस्कृति सम्मेलन २८ दिसम्बर को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, २९ दिसम्बर को महिला सम्मेलन, ३० दिसम्बर को आर्य कन्या महाविद्यालय का प्रोग्राम, ३१ को व्यायाम, १ जनवरी को वेद सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। इस अवसर पर आर्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, इतिहास के विद्वान डा० सत्यकेतु विद्यालकार, पंजाब के भजनोपदेशक श्री बलराज और हरियाणा कीश्रीमती उषा शर्मा पधार रही हैं।

५५ मूले जाट हिन्दू आर्य बने

समालखा जिला करनाल स्थित हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति के प्रधान बाबू ओमप्रकाश एव मन्त्री श्री रतनसिंह के प्रयत्नो से २९ नवम्बर को धन्नौरी में यज्ञ हवन कर नसीबसिंह, मेहरसिंह, रामसिंह, सिहराम और रामसिंह आदि परिवारों के ५५ मूले जाट शुद्ध होकर आर्य हिन्दू बने। धन्नौरी के चार मूले जाट रामकिशन, रामसरूप, शमशेर और बाबूराम के विवाह अलक मुजफ्फरनगर की कमला, निर्मला, अमला, नमला आदि चार हिन्दू लड़कियो से करवाए गए।

सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री प्यारे लाल का स्वर्गवास

आर्यसमाज हौज खास के भू. पू. कोषाध्यक्ष तथा शाहपुर जट गांव के सक्रिय सामाजिक आर्य कार्यकर्ता श्री नेकीराम के सुपुत्र श्री प्यारेलाल का ७१ वर्ष की आयु में शुक्रवार को देहान्त हो गया। वह अपने पीछे तीन लड़के और १ लड़की छोड़ गए हैं। उनके निधन से शाहपुर जट्ट एव समीपवर्ती क्षेत्र का एक सच्चा कर्मठ कार्यकर्ता सदा के लिए उठ गया।

श्री रामचन्द्र का देहावसान

दक्षिणी दिल्ली के एक कर्मठ आर्य सज्जन एवं आर्यसमाज हौज खास और ग्रीन पार्क को निरन्तर आर्थिक सहायता देने वाले श्री रामचन्द्र जी का १६ दिसम्बर की रात्रि को ८२ वर्ष की आयु मे देहावसान हो गया। वह अपने पीछे दो लड़के, ४ लड़कियां और भरा पूरा परिवार छोड गए हैं। परमात्मा उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति देंगे तथा शोक सतप्त परिजनों को ढांढस देंगे।

चुनौती का दृढ़ता से .... (पृष्ठ १ का शेष)

मथुरा जन्म शताब्दी की बात है। जन्म शताब्दी का उत्सव चल रहा था। स्वामी श्रद्धानन्द जी उत्सव का संचालन कर रहे थे कि अचानक खबर आई कि शहर में दगा हो गया। पण्डों ने आर्यसमाजियों को पीटा है, उन पर लट्ठ चलाए हैं। समाचार सुनते ही स्वामी जी ने अपने साथियों से कहा—"तुम लोग यहाँ से न हिलना। मैं मथुरा शहर जा रहा हूं।"

घटनास्थल पर स्वामी जी के पहुंचते ही उपद्रवी उनके विशाल भव्य स्वरूप को देखकर सहम गए। उनके असाधारण शरीर, तेजस्वी मुखमुद्रा देखकर दगाई शान्त हो गए, उन्होंने हाथ जोड़ कर उस वीर संन्यासी से क्षमा मांगी। स्थिति संभाल कर ही स्वामी जी शताब्दी स्थल पर लौटे।

आर्यसमाजों के सत्संग

२६ दिसम्बर'८२

अन्धामुगल-प्रतापनगर—पं० अमरनाथ कान्त, अमर कालोनी—प्रो० सत्यपाल बेदार; अशोक विहार के-सी-५२ ए—श्री महावीर बत्रा; आर. के. पुरम सेक्टर ५—प० ओम्वीर शास्त्री; आर. के. पुरम सेक्टर ६—प० ओम्प्रकाश वेदालंकार; आर. के. पुरम सेक्टर ६—डा० सुखदयाल भूटानी; किशनगज मिल एरिया—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; किंग्जवे कैंप—प० देवराज वैदिक मिशनरी; कालका जी डी. डी. ए. फ्लेट—पं० परमेश शर्मा; कालका जी—प० ब्रह्मेश्वर; कृष्ण नगर—श्रीमती उषा शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-I—प० दिनेशचन्द्र शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II—आचार्य हरिदेव सि. भू.; गुड़ मण्डी—प० रामरूप शर्मा; गुप्ता कालोनी—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल'; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; चूना मण्डी-पहाड़ गज—प० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; जनकपुरी बी ३/२४—श्रीमती लीलावती आर्य; टैगोर गार्डन—प० मोहनलाल ऋषि भजनोपदेशक; डिफेंस कालोनी—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, तिलकनगर—डा० नन्दलाल तिमारपुर—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; दरियागंज—पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री; नारायण विहार जी-२५—प० देवेश; नया बांस—प्रो. वीरपाल विद्यालंकार; न्यू मोती नगर—श्री रोशनलाल खन्ना; नगर शाहदरा—वैद्य रामकिशोर; पंजाबी [ ] एक्सटेंशन—पं० अशोक कुमार विद्यालंकार; बाग कड़े खां—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक; मोडल बस्ती—पं० बलवीरसिंह शास्त्री; मोडल टाउन—प० रविदत्त गौतम, मोती बाग—स्वामी आचार्य रामचन्द्र; रघुबीर नगर—प० सोमदेव शास्त्री, रमेशनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, राणा प्रताप बाग—स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, राजौरी गार्डन—पं० खुशीराम शर्मा, राजा गार्डन बालीनगर—पं० वेदपाल शास्त्री, रोहतास नगर—ला० लखमीदास आर्य, लड्डू घाटी-पहाड़ गंज—पं० रामनिवास, लेखराम नगर-त्रिनगर—प. कामेश्वर शास्त्री, लारेंस रोड—श्रीमती सुशीला राजपाल, विक्रम नगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य, विनय नगर—प० हरिदत्त शास्त्री, सदर बाजार-पहाड़ी धीरज—डा० रघुनन्दनसिंह, साकेत—श्रीमती गीता शास्त्री, सराय रोहेला—पं० महेन्द्रपाल शास्त्री तथा प० ओम्प्रकाश गायक, सुदर्शन पार्क—प्रो. भारत मित्र शास्त्री तथा श्रीमती कमला आर्या गायिका, सोहन गंज—प० हीरालाल भजनोपदेशक, शालीमार बाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, हनुमान रोड—पं० प्रेमचन्द्र-श्रीधर, हौज खास ए-५८—प० सत्यदेव भजनोपदेशक, नांगल राया—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, मयूर विहार—स्वामी स्वरूपानन्द तथा प. ज्योतिप्रसाद भजन मण्डली, आर्य नगर-पहाड़गंज—प० छविकृष्ण शास्त्री, बिरला लाइन्स—पं० सत्यपाल 'मधुर',

—ज्ञानचन्द डोगरा वेद प्रचार प्रबन्धक

अण्डे व मांस का त्याग

स्वामी स्वरूपानन्द वैदिक धर्म प्रचारक ने एक पौराणिक परिवार श्री कृष्णलाल जी के निवास स्थान पुरानी सब्जी मण्डी में ८-१२-८२ के दिन उनके सुपुत्र प्रिय राजू के जन्मोत्सव के शुभावसर पर यज्ञ कराया। स्वामी जी ने प्रिय राजू को 'यज्ञोपवीत' देकर उससे व्रत कराया राजू की अण्डे मांस खाने की आदत थी। स्वामी जी ने राजू को कहा कि आज से अण्डे-मांस का त्याग करने से यह जन्मोत्सव यज्ञादि का अनुष्ठान सफल होगा। प्रिय राजू ने व्रत लिया और कहा कि आज से जीवन भर तक मैं अण्डे मांस का प्रयोग नहीं करूंगा। सभी आगन्तुक महानुभावों ने हर्ष के साथ राजू को आशीर्वाद दिया।

आर्यसमाज का पुर्नसगठन

आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति और भविष्य के सम्बन्ध में विचार कर अपनी रिपोर्ट देने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक उप समिति गठित की है जिसके निम्नलिखित सदस्य हैं।

१. श्री दत्तात्रेयजी बाव्ले (संयोजक) आर्यसमाज, अजमेर। २ श्री स्वामी विद्यानन्दजी : आर्यसमाज मोडल टाउन, दिल्ली ६। ३ श्री वीरेन्द्रजी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चोक, जालन्धर (पंजाब) ४ श्री प्रो० शेरसिंह जी एम १४, साकेत नई दिल्ली १७। ५. डा. भवानीलालजी भारतीय—अध्यक्ष दयानन्द पीठ जे. ३ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

इस विषय में अन्य कोई सुझाव हो तो कृपया निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें। दत्तात्रेय आर्य, (संयोजक) द्वारा—आर्यसमाज, अजमेर।

आवश्यकता है

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी जो अजमेर मे ३ नवम्बर से ६ नवम्बर ८३ तक मनाई जाएगी उसे सफल बनाने हेतु ऐसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है जो अजमेर मे रहकर इस समारोह को सफल बनाने मे अपना योगदान व सहयोग दे सकें। इच्छुक व्यक्ति नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें।

—मन्त्री परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम केसरगंज अजमेर

गतांक से आगे—

गंगा पार गुरुकुल के अनकहे कुछ संस्मरण

लेखक—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

लगातार सिर ऊंचा किए पानी डलवा रहे थे, महात्मा जी खबर मिलते ही तत्काल पहुंच गए। चार-पांच घंटे के बाद नकसीर बन्द हो गई और डाक्टर जी ने ऐतियात के लिए किसी दवाई के लेप से युक्त रूई की दो बत्तियां मेरी एक-एक नाक में डाल दीं। मैं सो गया। अगले दिन नींद खुली, नकसीर तो एकदम बन्द पर कमजोरी बहुत। डाक्टर जी की सिफारिश पर मेरे लिए दूध-मक्खन, फल आदि की विशेष व्यवस्था की गई, जैसा कि संस्था का नियम था। जब तक महात्माजी गुरुकुल में आचार्य-मुख्याधिष्ठाता रहे, डा० सुखदेव जी वहां चिकित्सक थे। सचमुच, उनके हाथ मे, प्रभु कृपा से बड़ी अनोखी शफा थी।

गुरुकुल मे उस समय ३०० से अधिक छात्र, उनके साथ अध्यापक-प्राध्यापक, कर्मचारी वर्ग, उनके परिवार अन्य कई विभाग, उपविभाग—एक हजार से अधिक समूचे परिसर की आबादी—जंगल में कोई आस-पास अस्पताल नहीं सिवाय कनखल-हरिद्वार के—पर प्रभु की कितनी कृपा और आचार्यवर महात्मा मुन्शीराम डा० सुखदेव सदृश पीयूषपाणि चिकित्सक—मेरे वहां १५ वर्ष के शिक्षा काल में केवल एक ब्रह्मचारी—नाम नवीनचन्द्र, कक्षा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गंगा पार गुरुकुल के संस्मरण······(पृष्ठ ७ का शेष)

छठी या ७ वीं—की मृत्यु हुई। जिस दिन छात्र की यह अकाल मृत्यु हुई, संस्था का सारा परिसर गहन शोक सागर के निमग्न हो गया। आचार्यवर महात्मा मुन्शीराम जी की तो अश्रु-धारा ऐसे बह रही थी जैसे बरसात में गंगा-जमुना की जलधाराएं। ऐसा प्रतीत होता था कि आचार्यवर के अपने परिवार का कोई बच्चा मर गया हो।

आचार्यवर दृढ़ राष्ट्रभक्त

आचार्यवर महात्मा मुन्शीराम अपने अन्तिम रक्त बिन्दु तक दयानन्द भक्त और दृढ आर्य होने के साथ कट्टर राष्ट्र भक्त थे और छात्रों को भी इसके लिए प्रेरित करते रहते। देश में जहां कहीं भी अकाल, बाढ इत्यादि दैवीय प्रकोप होते और वहां धन की आवश्यकता होती, उन दिनों जैसे—गढ़वाल, कांगडा भूचाल, उडीसा, हैदराबाद—हम ब्रह्मचारी स्वेच्छा से अपना दूध, एक समय का भोजन इत्यादि बंद कर सग्रहीत धन वहां भेज देते।

द० अफ्रीका के लिए श्रमदान . गोखले की आंखों में आंसू

दक्षिण अफ्रीका मे महात्मा गांधी के नेतृत्व मे वहां की सरकार के साथ चल रहे सत्याग्रह के लिए १९१४-१५ में देश में बड़ी हलचल थी।

इस सम्बन्ध में हम छात्रों का पोष-माघ की सर्दी में हरिद्वार में—भीमगोडा से आगे—सरकार द्वारा बनाए जा रहे दूधिया बांध पर अत्यन्त बर्फीली ठंड वायु हू-हू में प्रातः से सायं तक—महात्मा जी और सब कार्यकर्ताओं द्वारा दूध इत्यादि रहित—केवल दो समय का रोटी-दाल का सम्मिलित भोजन और श्रमदान—इससे लगभग दो हजार रुपये (उस सस्ते जमाने में) एकत्र हुए। जिस समय महात्मा जी अपने अन्य सहयोगियों सहित दिल्ली में इस आंदोलन के प्रमुख सचालक राष्ट्र नेता श्री गोपाल-कृष्ण गोखले के निवासस्थान पर पहुंचे और सामूहिक श्रमदान की कहानी आचार्य श्री के मुख से सुनी, उस समय तत्काल अपनी कुर्सी से उठ—महात्मा जी का साश्रु नयनों से आलिंगन करते हुए गद्गद् हृदय से बोले—"आज मुझे इस बात का पूरा विश्वास हो [illegible] कि जब इस देश में प्रायः सदृश [illegible] और गुरुकुल आप तपस्वी कार्यकर्ता और छात्र विद्यमान हैं, यह देश कभी चिरकाल तक पराधीन नहीं रह सकता।"

गांधी जी के बड़े भाई

गांधीजी के पास जब यह एक तपःपूत आचार्य और उसके सहयोगियों और छात्रों के श्रमदान का वृत्तांत पहुंचा और गुरुकुल के विशेष मित्र देशबन्धु सी. एफ. एण्ड्रूज से संस्था का पूरा विवरण सुना, वह अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने द० अफ्रीका से महात्मा जी को एक अत्यन्त स्नेहिल और अपनत्व भरा पत्र लिखते हुए उन्हें अपने बडे भाई के शब्दों से सम्बोधित किया। गांधी जी जब भारत वापस आए १९१५ में तब द० अफ्रीका के फिनिक्स आश्रम के बच्चों के लिए—जिसमें उनका पुत्र देवदास गांधी भी था—सर्वोत्तम स्थान गुरुकुल ही चुना। बम्बई से सीधे सबसे पहले काठियावाड़ी वेश में गुरुकुल भूमि में आते ही उन्होंने महात्मा मुन्शीराम का चरण-स्पर्श किया। उस समय वह "कर्मवीर गांधी" पुकारे जाते थे। "कर्मवीर से महात्मा" पदवी सबसे पहले आर्यसमाज द्वारा ही—महात्मा मुन्शीराम ने हरिद्वार कुम्भ मेले में एक विशाल सभा में दी"।

के. सी. ३७।बी अशोक नगर
दिल्ली-५२

रजि० डी (सी०) ७५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा बाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। कार्यालय : १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन : ३१०१५०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ७ अंक २३ रविवार ३ अप्रैल १९८३ २० चैत्र वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

आर्यसमाजें निर्वाचन ३० जून तक करें

नवयुवकों को आगे लाएं : निर्वाचित अधिकारी सच्चे आर्य हों :

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो. भारत मित्र शास्त्री ने एक परिपत्र प्रसारित कर दिल्ली भर की आर्यसमाजों को निर्देश दिया है कि ३० जून, १९८३ से पूर्व चुनाव की सारी प्रक्रिया सम्पूर्ण कर ले और यह ध्यान रखे कि निर्वाचित अधिकारी आर्यसमाज के सिद्धान्तो-आदर्शों मे पूरी निष्ठा रखने वाले सच्चे आर्य हो और मद्य-मास, सिगरेट आदि का प्रयोग न करने वाले हो, अधिक से अधिक नवयुवकों को आगे लाने का प्रयत्न किया जाए, जिससे आर्यसमाज का सगठन सुदृढ हो।

श्री मन्त्री जी ने निर्देश दिया है—आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९८३ को समाप्त हो जाएगा, इसलिए समाजों को अपने आर्थिक वर्ष का आय-व्यय, सम्पत्ति और दायित्व का लेखा तैयार कर निरीक्षक द्वारा निरीक्षण करवा कर अन्तरंग सभा द्वारा साधारण अधिवेशन मे प्रस्तुत करने हेतु पारित कराए और साधारण अधिवेशन की तिथि निश्चित कराए। १९८२-८३ मे सदस्यो द्वारा दिए गए शताश, वर्ष भर मे सत्सगो की उपस्थिति के आधार पर अन्तरग सभा स्वीकृत सदस्यों की सूची सूचना पट्ट पर लगा द और विवरण की एक प्रति दशाश, वेद प्रचार और आर्य सन्देश के शुल्क की राशि के साथ सभा को भिजवा दीजिए। स्मरण रखें कि सूची साधारण अधिवेशन से एक मास पूर्व सूचना पट्ट पर लग जानी चाहिए। सभा मन्त्री जी ने सूचना दी है कि आर्यसमाजो द्वारा सभा को भेजे गए प्रतिनिधियों की तीन साल की अवधि विगत वर्ष समाप्त हो गई थी, अधिकाश समाजों ने अपने नए प्रतिनिधि पिछले वर्ष ही भिजवा दिए थे, जिन्होने गतवर्ष प्रतिनिधियो का निर्वाचन किया था, वे इस वर्ष निर्वाचन कर अपने प्रतिनिधि भिजवा दें। स्मरण रहे कि आर्यसमाजें अपने प्रथम दस सदस्यो पर एक और उसके बाद प्रत्येक बीस सदस्यों पर एक प्रतिनिधि चुन सकती हैं। इस प्रकार तीस सभासदो पर दो, पचास पर तीन, सत्तर पर चार, नब्बे पर पाच सदस्य चुने जा सकते हैं। यह भी ध्यान रहे कि प्रतिनिधियो के निर्वाचन का अधिकार अन्तरग सभा को नही प्रत्युत केवल साधारण सभा को ही है।

प्रमुख आर्यनेता श्री नारायणदास कपूर का देहावसान

अविभक्त पंजाब और दिल्ली के पुराने नेता को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

दिल्ली। अविभक्त पजाब और दिल्ली के यशस्वी आर्यनेता आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, अ० भा० हिन्दू शुद्धि सभा के भूतपूर्व प्रधान, अविभक्त पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के भू० पू० मन्त्री कोषाध्यक्ष एव आर्यसमाज हनुमान रोड के भू० पू० उपप्रधान श्री नारायणदास जी कपूर का शुक्रवार २५ मार्च के दिन ७५ वर्ष की आयु मे ऋषिकेश मे देहावसान हो गया। शनिवार, २६ मार्च को उनके पार्थिव शरीर का अन्तिम सस्कार निगमबोध दिल्ली मे किया गया। इस अवसर पर दिल्ली के प्रमुख आर्यनेता और आर्यसस्थाओ के प्रतिनिधियो ने अपने श्रद्धापुष्प दिवगत आर्यनेता के प्रति प्रस्तुत किए।

उनकी स्मृति में दिल्ली की आर्यसमाजो एवं आर्यसस्थाओ की एक सयुक्त शोक-श्रद्धाजलि सभा रविवार ३ अप्रैल को प्रात १० बजे आर्यसमाज मन्दिर १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ मे सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी एडवोकेट की अध्यक्षता मे होगी।

गुरुकुल कांगड़ी का ८३ वां वार्षिकोत्सव

अनेक महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन

हरिद्वार। १३-१४-१५ अप्रैल के दिनो मे आयोजित हो रहा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का ८३ वा वार्षिकोत्सव एव दीक्षान्त समारोह कई दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण होगा। इसमे १५ अप्रैल के दिन भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह नव स्नातको को अपना दीक्षान्त भाषण देगे। उत्सव के दिनो मे सामवेद पारायण महायज्ञ किया जा रहा है, इसके ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती होंगे। १३ अप्रैल को आर्यसमाज के वैज्ञानिक सन्यासी डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी वेद सम्मेलन की अध्यक्षता करेगे। १४ अप्रैल को सामवेद महायज्ञ की पूर्णाहुति होगी, उसी दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन होगा। उत्सव पर उत्तर प्रदेश के मन्त्री डा० वासुदेव सिह, राज्य मन्त्री श्री शिवनाथ कुशवाहा आदि पधार रहे हैं। इस अवसर पर वैदिक विद्वान डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, हैदराबाद के उत्साही नेता वन्देमातरम् जी, परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द आदि पधार रहे हैं। ससद सदस्य भाई महावीर जी, श्री भगवान देव जी भी इस उत्सव पर पधार रहे हैं।

१५ अप्रैल को दोपहर ढाई बजे गगापार गुरुकुल की पुरानी पुण्यभूमि पर गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया है। आर्य जनता वहा जाकर देख सकेगी कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के हाथो से प्रतिष्ठित पुण्यभूमि और कांगडी ग्राम का विकास किस तरह किया जा रहा है।

क्रान्तिकारियो के गुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा का शहीद दिवस

आर्यसमाज आर्यपुरा क्षेत्र की सामाजिक सस्थाओ के सहयोग से महर्षि दयानन्द से प्रेरणा प्राप्ति कर स्वतन्त्रता सग्राम के अग्रणी, क्रान्तिकारियो के गुरु श्याम जी कृष्ण वर्मा की शहादत दिवस ३ अप्रैल रविवार को धर्मशाला, मेन बाजार सब्जी मण्डी मे धूमधाम से मनाया जा रहा है।

अमर शहीदो का बलिदान दिवस सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे अमर शहीदो की याद मे राजधानी मे अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् सब्जी मण्डी नगर की ओर से बच्चो व युवको की दौड प्रतियोगिताएं हुई। शहीदो के सम्बन्ध मे भाषण व देशभक्ति गीत के लिए कुमारी सुशीला देवी आदि सभी विजेताओ को आर्य प्रतिनिधि उपसभा के प्रधान श्री लाजपतराय ने पुरस्कृत किया और उन्होंने भावी पीढी को शहीदो से प्रेरणा लेकर रचनात्मक कार्य करने को कहा।

सरिता के विरुद्ध श्री झण्डाधारी का आमरण अनशन

नई दिल्ली। अ. भा. स्वतन्त्रता सग्राम सैनिक समिति दिल्ली के सयुक्त मन्त्री वेद पथिक प० धर्मवीर आर्य झण्डाधारी ने दिल्ली की पाक्षिक पत्रिका 'सरिता' के वेद, धर्म और भारतीय सस्कृति विरोधी रुख की ओर जनता और भारत सरकार का ध्यान खीचने के लिए रविवार २७ मार्च, १९८३ से आर्यसमाज करौल बाग, नई दिल्ली-५ मे आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया है। श्री झण्डाधारी की माग है कि 'सरिता' की जमानत जब्त की जाए और उसके सम्पादक के विरुद्ध कार्रवाई की जाए।

सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति संस्थापक - प्रभुदयाल तलवाड

वेद-मनन

परमात्मा कैसा है ?

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व. स्तभित येन नाक ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमान कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ यजु० ३२.६ ॥

ब्रह्म ऋषि, परमात्मा देवता, निचृत् त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर ।

शब्दार्थ—[येन] जिस परमात्मा ने [उग्रा तीव्र तेज वाले] [द्यौ] सूर्यादि प्रकाशमय पदार्थ (म) [पृथिवी] भूमि (को) [दृढा] दृढ वा धारण किया है, [येन] जिस जगदीश्वर ने [स्व] सुख को [स्तभितम्] धारण किया है, [येन] जिस ईश्वर ने [नाक] सर्व दु ख रहित मोक्ष अर्थात् परमानन्द को (धारण किया है) (और) [य] जो [अन्तरिक्षे] आकाश मे [रजस] पृथिव्यादि सब लोक लोकान्तरो को [विमान] विविध विशेष मानयुक्त निर्माण करता वा भ्रमण कराता है (हम लोग उस) [कस्मै] सुखस्वरूप सुखदायक [देवाय] स्वप्रकाश कमनीय सकल सुखदाता के लिए (हम) [हविषा] प्रेम भक्ति भाव वा सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें अर्थात् उसकी आज्ञा पालन करने मे सर्वदा तत्पर रहे ॥

भावार्थ—जो परमात्मा सकल जगत् का निर्माता वा धारण करने वाला है जो मुक्त स्वभाव, सर्व सुखदायक, मोक्ष साधक वा आकाश की न्याई सर्वत्र व्यापक हो रहा है और जिसने अपने अनन्त ज्ञान वा अनन्त सामर्थ्य से यह सब लोक विशेष मान से बनाये है और उनको नियम पूर्वक विशेष गति दी है उस परमेश्वर की ही हम सदा भक्ति (उपासना) करे अन्य की नही ।

सुपात्र !

यह जापान की एक सच्ची घटना है । इस शताब्दी के प्रारम्भ मे एक सामान्य परिवार का मेधावी युवक देश के एक धनी-मानी सज्जन के यहा पहुचा । श्रीमन्त का अभिवादन कर युवक बोला —'महाराज, मेरे माता-पिता नही है, मुझे अपने किसी दूसरे सम्बन्धी का सहारा भी नही है । मेरी इच्छा है कि मैं विश्वविद्यालय की पढाई पूर्ण कर लू, इस पढाई के लिए मुझे ५०० येन (जापानी मुद्राए) चाहिए' । युवक की पढने की अदम्य इच्छा, उसकी प्रतिभा, लगन, साथ ही उसके बातचीत के ढग से जापानी श्रीमन्त महोदय प्रभावित हो गए । उन्होने उस युवक को ५०० येन दे दिए ।

कुछ वर्षों के अध्ययन के बाद विद्याभ्यास पूर्ण करने के बाद अपनी मेहनत और लगन से युवक को एक अच्छा काम मिल गया । कुछ ही समय मे उसने भरण-पोषण के साथ-साथ ७०० येन की धनराशि बचा ली । वह यह धनराशि बचा कर उन जापनी श्रीमन्त के पास पहुचा । जापनी श्रीमन्त ने पूछा—'तुम कौन हो ? कैसे आए हो ?' इन वर्षों मे युवक का शरीर पुष्ट और सबल हो गया था । अच्छे परिधान एव कपडो से उसका रूप-रग ही निखर गया था । वह युवक अत्यन्त विनम्रता से बोला — श्रीमान्, मैं वही युवक हू, जिसे वर्षों पहले आपने ५०० येन की सहायता दी थी । मैं आपकी वह मूल धनराशि और उसका आज तक का सूद लाया हू । बडी कृपा होगी, यह धन आप ले लेगे ।'

जापानी श्रीमन्त ने उठ कर युवक की पीठ थपथपाई और उसे जीवन मे यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया । साथ ही कहा—'भाई मैंने पढने और आगे बढने की तुम्हारी उत्कट लालसा देखकर यह धन तुम्हे दिया था । मुझे यह वापस नही चाहिए । तुम जाओ, देखो कही तुम्हारे जैसा कोई युवक या बालक हो, जो धन की कमी या सहारे के अभाव मे परेशान हो, उसे इस धन की सहायता दे दो ।'

उस जापानी युवक ने उन श्रीमन्त के आदेश को शिरोधार्य किया । एक असहाय लगन वाले परिश्रमी युवक को धन की मदद कर दी । कहते हैं कि वह सहायता का सिलसिला अब भी चल रहा है । दर्जनो ही नही, सैंकडो युवक इसी तरह एक दूसरे की सहायता से वहा विद्यालाभ कर रहे हैं ।

—नरेन्द्र

श्रद्धयाग्निः समिध्यते

- ले० पं० सत्यभूषण वेदालंकार, एम० ए०

ऋग्वेद मे एक सूक्त आता है, जिसका नाम ही श्रद्धा सूक्त है । इस सूक्त का प्रथम मन्त्र इस प्रकार है—'श्रद्धयाग्नि सामध्यते श्रद्धया हूयते हविः । श्रद्धा भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ।' ऋ १०,१५१ १ । श्रद्धा से अग्नि प्रदीप्त होती है और श्रद्धा से ही हवि दी जाती है, आत्म-बलिदान की प्रेरणा मिलती है । सब भजनीय वस्तु के धर्म के, ऐश्वर्य के सर्वोपरि श्रद्धा को हम लोग वेदवाणी द्वारा प्रकट करते हैं । श्रद्धा का अर्थ है श्रत् सत्य धार्यते यया जिससे सत्य को धारण किया जाए वह गुण विशेष । आज कल हम आर्यजनो मे श्रद्धा का अभाव हो रहा है । वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज अपने व्याख्यानो में कहा करते थे, कि यदि आर्यसमाज का तर्क सनातनी और सनातन धर्म की श्रद्धा आर्यसमाजी अपना ले भारत का बेडा पार हो जाए ।

पाठक गण ! मैंने यह लेख एक विशेष उद्देश्य से लिखा है । इसका कारण यह है कि कुछ काल से मैं अपने प्रियतम आर्यसमाज मे एक हीनता की भावना (इन्फिरियोरिटी कम्पलेक्स) पनपती हुई देख रहा हू । आर्यसमाज के बड़े-बड़े उत्सवो, सामूहिक सत्सगो आदि मे हमारे प्रचारक एव दिग्गज व्याख्याता प्रायः आर्यसमाज की खामियो एव दुर्बलताओ का वर्णन करते हुए नही अघाते । हममे एकता नही रही, विद्वानो का आदर नही होता, पार्टीबाजी व फूट है ''आदि-आदि ।

मैं पूछता हू अवगुण किस सस्था या सोसायटी मे नही हैं । जब आप ही अपनी कमजोरिया शेष समाज के सामने खोल बैठते हैं, तब वह आपको क्या समझेगा । अत मेरा विनम्र निवेदन है कि आर्यसमाज के मच पर किन्ही वैदिक सिद्धान्तो अथवा उसकी प्रशसा पर भाषण होने चाहिए । यदि खामिया, कमिया देखनी है तो आत्मनिरीक्षण करना अभीष्ट है, तो त्रासदी मास मे अन्तरग सभा मे रख लीजिए । सबके सामने अपनी हीनता का घिनौना प्रदर्शन बन्द कर दीजिए । पूर्ण श्रद्धा को अपने जीवन मे धारण कीजिए कर्त्तव्य, निष्ठा, अटूट विश्वास को मन मे लाइए ।

आप तनिक गहराई से विचार कीजिए, कि देश जाति एव पुण्य भूमि के लिए आर्यसमाज ने क्या नही किया ? स्वदेश, भक्ति, स्वधर्म रक्षार्थ आर्यसमाज के जितने व्यक्तियो ने बलिदान दिए, मेरे विचार मे तो शायद अन्य किसी समाज ने नही दिया । पुन आप ईसाई, मुस्लिम आदि किसी समाज मे चले जाए वहां आप उनके किसी उपदेष्टा व प्रचारक से उनके ही समाज की कमिया नही सुन पाएगे । फिर आप ही क्यो यह खटराग अलापने लगे ।

अत स्वय आर्य बन कर सत्य मे श्रद्धा की आहुति डाल कर स्वामी श्रद्धानन्द जी के समान श्रद्धामय जीवन बनाइए तभी आर्यसमाज की श्री वृद्धि एव प्रगति हो सकेगी । अन्यथा तो 'बडे बेआबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले' की उक्ति चरितार्थ होगी ।

—ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-११००१६

गीता आज भी प्रासंगिक !

जैसलमेर (राजस्थान) रविवार २० मार्च के दिन एक सार्वजनिक सभा मे भाषण देते हुए ससद सदस्य डा० कर्णसिह ने कहा —'गीता एक ऐसा शास्त्र है, जिसका उपदेश श्री कृष्ण ने सघर्षमय परिस्थिति मे दिया था और इसीलिए तनाव और मनमुटाव से ग्रस्त विश्व के लिए आज भी प्रासगिक है । श्रीमद् भगवद् गीता न केवल हिन्दुओ के लिए प्रत्युत सम्पूर्ण मानव मात्र के लिए एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बन गई है ।' उन्होने श्रीकृष्ण की उस प्रसिद्ध उक्ति का हवाला दिया कि ईश्वर सभी प्राणियो मे निवास करता है । इस उदात्त सिद्धान्त के प्रकाश मे अस्पृश्यता का व्यवहार हास्यास्पद है ।

आर्यसमाज नरेला का ५३वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नरेला का ५३ वा वार्षिकोत्सव दिनांक २-३ अप्रैल, १९८३ को मनाया जा रहा है । इस अवसर पर साधु, सन्यासी, महात्मा, केन्द्रीय मन्त्री एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं ।

मातृभूमि का वन्दन !

ओ३म् यावत् तेऽभि विपश्यामि भूमे सूर्येण मेदिना ।
तावन्मे चक्षुर्मा मेष्टोत्तरामुत्तरा समाम् ॥ अथर्व १२-१-३३

मातृभूमि, मैं लखू जहा तक तव विस्तारा,
देखू ज्ञान प्रकाश मोदप्रद दिनकर द्वारा ।
वर्ष-वर्ष मे बढे आयु का पूर्ण पसारा,
हो न इन्द्रिया शिथिल स्वस्थ तन रहे हमारा ॥

ओ३म्
आर्य सन्देश

इतिहास से सीख लीजिए

बृहस्पतिवार ता० २४ मार्च के दिन भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने घोषणा की है कि केन्द्र और प्रान्तो के सम्बन्धो पर विशेषत प्रान्तो की आर्थिक स्थिति मजबूत करने के विषय मे सारी स्थिति का मूल्याकन करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय के एक भूतपूर्व न्यायाधीश की अध्यक्षता मे एक आयोग गठित किया गया है । इस आयोग के गठन की सूचना मिलने पर समस्त गैर काग्रेसी मुख्यमन्त्रियो एव समस्त विरोधी नेताओ ने हार्दिक प्रसन्नता अभिव्यक्त की है । जहा तक सिद्धान्त का प्रश्न है, वहाँ कहा जा सकता है कि देश के उज्ज्वल वर्त्तमान और उज्ज्वल भविष्य के लिए सशक्त केन्द्र और स्वावलम्बी सुदृढ प्रदेश अपेक्षित हैं । कमजोर, शक्तिहीन एव अपनी छोटी-बडी प्रत्येक समस्या के सुलझाने के लिए केन्द्र का मुह जोहना उचित नही कहा जा सकता । इस दृष्टि से प्रदेशो की आर्थिक स्थिति मजबूत करने वाले प्रत्येक प्रयत्न का स्वागत करना होगा, इस सम्बन्ध मे प्रस्तावित आयोग की भूमिकासे प्रदेशो का आर्थिक स्वावलम्बन बढे और वे सशक्त केन्द्र के पूरक हो तो किसी को क्या आपत्ति हो सकती है, परन्तु खेद है कि स्थिति ऐसी नही है । कश्मीर खतरे मे है, विभाजन के तुरन्त बाद से पाकिस्तान की वक्र-दृष्टि उस प्रदेश पर रही है । कश्मीर के स्वर्गीय मुख्यमन्त्री एव उनके सुपुत्र वर्त्तमान मुख्यमत्री राज्य मे विदेशी नागरिको को यत्नपूर्वक लाने मे सलग्न हैं ।

पश्चिमोत्तर प्रदेश मे अलगाववादी अकाली समस्त धार्मिक मागे मागने के बावजूद प्रदेश के लिए अधिक अधिकार, नदियो का पानी प्रदेश के लिए सुरक्षित रखने की माग कर रहे है । इसी के साथ देश के पूर्वोत्तर अचल के असम और नागालैण्ड जल रहे हैं । पिछले दिनो ४ दक्षिणी राज्यो के मुख्यमत्रियो ने पृथक् सम्मेलन कर एक पृथक सगठन बनाने की जोड-तोड की है । समय-समय पर प० बगाल, तमिलनाडु, आन्ध्र, कर्नाटक के मुख्यमन्त्री राज्यो के लिए अधिक अधिकारो की माग करते रहे हैं । साम्प्रदायिक्ता का विषवमन अलग हो रहा है । केरल का एक मुस्लिम बहुल जिला मिनी पाकिस्तान के रूप मे पृथक् उभर रहा है । यदि इस समय केन्द्र मे सुदृढ शासन न होता और बाहरी सीमावर्त्ती अचलो मे भारत की फौजो की सैनिक छावनी मौजूद न होती तो देश खण्ड-खण्ड हो जाता । इस समय देश मे उभर रही अलगाववादी ताकतो और देश की एकता को खण्डित करने वाली विदेशी साम्राज्यवादी ताकतो के घृणित इरादो को चकनाचूर करने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि देश के समस्त प्रदेश एव राष्ट्रवादी जनता राष्ट्र, सस्कृति एव भारतीयता की सुरक्षा एव सरक्षण के लिए सन्नद्ध और सयुक्त हो जाए । इस सम्बन्ध मे थोडी-सी भी असावधानता एव आलस्य से देश का अस्तित्व ही खतरे मे पड सकता है ।

नई ऐतिहासिक साक्षिया उभर कर आ रही हैं जिनसे मालूम पडता है कि पाकिस्तान के कथित जनक जिन्ना भारत विरोधी चर्चिल के इशारे पर देश के बटवारे की माग कर रहे थे । इस प्रकार के प्रमाण भी मिले हैं कि यदि अग्रेज सेनापति और प्रशासक चाहते तो विभाजन के समय खून का एक कतरा भी नही गिरता, परन्तु उन दिनो पश्चिम मे खून की नदिया बह गई । यह सब इसलिए हुआ क्योकि अग्रेज भारत छोडते समय देश को निर्बल एव परावलम्बी बनाना चाहते थे । इस प्रकार के समाचार भी प्रकाशित हो रहे हैं कि अमेरिका और ब्रिटेन नही चाहते कि भारत शक्तिशाली, स्वावलम्बी और महान् बने । अपने कुत्सित लक्ष्य की पूर्ति के लिए ये साम्राज्यवादी भारत के पडोसियो को शस्त्रास्त्रो की मदद कर रहे हैं, वे अलगाववादी अकालियो, पूर्वोत्तर प्रदेश के राष्ट्रद्रोही तत्त्वो की आर्थिक मदद कर रहे हैं । यह स्थिति अत्यन्त भयावह है । इतिहास की सीख है कि जब-जब भारत मे केन्द्रीय सत्ता कमजोर हुई, देश के टुकडे-टुकडे हो गए और विदेशी ताकतों को भारत मे अपनी स्थिति सुदृढ करने का अवसर मिल गया । केन्द्र और प्रान्तों की स्थिति का पुनर्मूल्याकन करने वाले आयोग की नियुक्ति से देश मे केन्द्रीय शासन निर्बल न हो जाए, इस सम्बन्ध मे समय रहते सभी राष्ट्रप्रेमी तत्त्वो को सावधान होकर एक और सयुक्त हो जाना चाहिए । आर्यसमाज ने अपने जन्म मे ही देश मे स्वराज्य के आन्दोलन मे योगदान किया था । आज देश की एकता एव अखण्डता पर आने वाले सम्भावित सकटो के निराकरण के लिए हमे अपने दायित्व को निबाहने के लिए प्रस्तुत हो जाना चाहिए ।

चिन्तन के लिए सन्तों के अमर वचन

संसार क्षणभगुर और अनित्य है । यहा एक पल का भी भरोसा नही है । जो कुछ भी कल्याण का काम करना है, तुरन्त कर लो । - दादू जी

चित्त से निरन्तर परमात्मतत्त्व का चिन्तन करते रहो । अनित्य धन दौलत की चिन्ता छोड दो और साधु सगत करके व सागर से तरने के लिए नौका का स्वरूप समझो । शकराचार्य

जल मे नाव रहे तो कोई हानि नही, परन्तु नाव मे जल नहीं रहना चाहिए । साधक ससार मे रहे तो कोई हानि नही, परन्तु साधक के भीतर ससार नही रहना चाहिए । –रामकृष्ण परमहस

राग के समान आग नही, द्वेष के समान भूत (पिशाच) नही, मोह के समान जल नही, और तृष्णा के समान नदी नही । –महात्मा बुद्ध

ईर्ष्या, लोभ, क्रोध और अप्रिय व्यग्य कटु वचन इन सबसे सदा अलग रहो; धर्म प्राप्ति का यही मार्ग है । – सन्त तिरुवल्लूर

'मैं' और 'मेरा' इन दो शब्दो मे ही सारे जगत् के दुख भरे हैं । जहा 'मैं' 'मेरा' नही है, वहा दुख का अत्यन्त अभाव है । —स्वामी रामतीर्थ

सच्चा विरक्त उसी को कहना चाहिए जो मान के स्थान से सदा दूर रहता है, जो सत्सग मे स्थिर रहता है, मान के लिए कदापि नही तरसता और अपना कोई नया समुदाय नही चलाता । —सन्त एकनाथ

जो बीते हुए का स्मरण नही करता, मिटे हुए की इच्छा नही रखता अन्तकरण मे मेरु के समान अचल रहता है वही निरन्तर सन्यासी है ।
—सन्त ज्ञानेश्वर

जब काल सुमेरु जैसे पर्वतों को जला देता है । बडे-बडे सागरो को सुखा देता है । पृथ्वी का नाश कर देता है, तब हाथ के कान की कोर के समान चचल मनुष्य तो किस गिनती मे है । —भर्तृहरि

जिससे सब जीव निडर रहते हैं और जो सब प्राणियो मे निडर रहता है, वह मोह से छूटा हुआ सदा निर्भय रहता है । —महर्षि व्यासदेव

सग्रहकर्त्ता –चमनलाल, प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार

चिट्ठी-पत्री

निर्माण शताब्दी दिल्ली या अजमेर विवाद क्यो ?

१४ मार्च १९८३ को मार्क्सवाद के जन्मदाता कार्लमार्क्स की मृत्यु शताब्दी मनाई गई । वह जर्मनी मे उत्पन्न हुए, परन्तु अपने विचारो के कारण उन्हें जर्मनी को त्यागना पडा और ब्रिटेन ने उन्हे शरण दी । अन्तिम समय तक वह लन्दन मे ही रहे और लेखन-कार्य भी लन्दन मे ही किया । हाईगेट (लन्दन) के श्मशान मे उन्हें दफनाया गया । १४ मार्च को उनकी कब्र पर अनेक कम्युनिस्ट देशो के प्रतिनिधियो ने फूलमालाए चढाई । सायकाल श्मशान मे ही ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी ने जलसे का आयोजन किया । बी बी सी लन्दन टेलीविजन के रिपोर्टर के अनुसार मात्र ३०० व्यक्तियो की उपस्थिति थी । ब्रिटेन जैसे ७ करोड की जनसख्या के देश मे केवल १७०,०० कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं ।

मार्क्सवाद के अनुयायियो ने यह विवाद खडा नही किया कि सारे विश्व के कम्युनिस्ट लन्दन मे जाकर ही उनकी शताब्दी मनाई । फिर यह विवाद आर्यसमाज मे क्यो ? मुख्य प्रश्न तो यह है कि आर्यसमाज अपनी सामूहिक शक्ति और सगठन का सुन्दर उदाहरण सुविधापूर्वक कहा पर कर सकता है ?

—कृष्ण चोपडा, बरमिंघम (यूनाइटेड किंगडम)

महान् गुरुदेव महर्षि दयानन्द

—आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य

सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में सफलता न मिलने पर देश मे उदासी और निराशा की लहर दौड गई। सब देशवासी ऐसा अनुभव करने लगे थे कि अब स्वतन्त्र होना असम्भव है। चारो ओर निराशा की काली घटा छाई हुई थी। लोग समझ बैठे कि शायद परमात्मा ने भारतवासियो को विदेशियो का गुलाम बनने के लिए ही पैदा किया है। ऐसी स्थिति मे राष्ट्र के महान् देशभक्त सपूतों ने देश पर छाई हुई उस निराशा और उदासी की काली घटा को चीर कर राष्ट्र एव जाति को जगाने का पुण्य कार्य किया। उनके प्रात स्मरणीय नाम देश के इतिहास मे स्वर्णाक्षरों मे लिखे जाएगे। महर्षि दयानन्द उन दिव्य विभूतियो मे से एक थे, जिन्होंने सदियो की गुलामी मे पडे हुए देश को स्वाधीनता का सदेश दिया। सर्वप्रथम स्वराज्य मन्त्र का शंखफूंकने वाले आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का जन्म सन् १८२४ मे टंकारा (गुजरात) मे तथा निर्वाण सन् १८८३ मे दीपावली के पवित्र पर्व पर अजमेर मे हुआ था।

महर्षि दयानन्द जब कार्यक्षेत्र मे उतरे, उस समय देश अराजकता की ओर अग्रसर हो रहा था। राष्ट्रीय शक्ति छिन्न-भिन्न हो रही थी। मुगल-साम्राज्य अपनी अन्तिम घडिया गिन रहा था। राजस्थान के राजे-महाराजे आपस मे राग-द्वेष मे बुरी तरह फसे हुए थे। सिन्धिया और पजाब के महाराजा रणजीतसिंह विषम परिस्थितियों में अंग्रेजो से टक्कर ले रहे थे। उस समय की धार्मिक, सामाजिक एव राजनीतिक अवस्था बहुत ही बिगडी हुई थी। लोग धर्म-कर्म भूल चुके थे। शिक्षा का पूर्ण अभाव था, विदेशी सत्ता का बोलबाला था। ईसाई और मुसलमानो ने अनेक प्रकार के हथकडे चला कर आर्य जाति को समाप्त करने का षडयन्त्र चला रखा था। मूर्ति-पूजा, मृतक-श्राद्ध, बाल-विवाह,बहुविवाह बहुदेवतावाद, छूत-छात, अस्पृश्यता, सम्प्रदायवाद, मतान्धता' हृदय की सकुचितता, अवतारवाद, जन्मगत वर्णव्यवस्था आदि अनेक कुरीतियो ने घर कर रखा था। इन तमाम पाखण्डी पोपलीलाओं की महर्षि दयानन्द ने युक्तियो प्रमाणो और तर्क के तीरो से पोल खोल कर मानव समाज को वेद के आधार पर वास्तविकता का ज्ञान दिया।

महर्षि दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध मे जब वेदमन्त्रों के आधार राष्ट्र में स्वराज्य का सदेश दिया, सय राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था। सन् १९१६ की कांग्रेस मे लोकमान्य बाल गगाधर तिलक ने—'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, की घोषणा की थी। सन् १९२९ मे लाहौर कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य को अपना ध्येय बनाने का प्रस्ताव स्वीकृत किया। परन्तु महर्षि दयानन्द ने तो बहुत पहले अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे स्वराज्य की घोषणा करते हुई लिखा था 'विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यो न हो, परन्तु उसकी स्वदेशी राज्य से तुलना नही हो सकती।' इस प्रकार हमे ऋषि के समस्त ग्रन्थो मे स्वदेश-भक्ति, देशप्रेम, एकता, सगठन तथा स्वाधीनता आदि के विचार मिलते हैं। तभी तो श्रीमती एनी बेसन्ट ने एक बार ऋषि को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा था—'ऋषि दयानन्द ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होने भारतवासियो के लिए स्वराज्य के पावन पवित्र मन्त्र की घोषणा की थी।' महर्षि के शिष्यो में श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द आदि अनेक अनुयायियो ने राष्ट्र की जो महती सेवा की है—वह सर्वविदित है।

खादी का प्रथम प्रचारक भी महर्षि दयानन्द जी को ही कहा जा सकता है। उन्होने अपने ग्रन्थो मे अनेक स्थानो पर स्वदेशी वस्त्रो का महत्त्व प्रतिपादित किया है। वह स्वय भी शुद्ध स्वदेशी वस्त्र पहनते थे और सम्पर्क मे आने वाले व्यक्तियो को भी यही प्रेरणा देते थे।

स्त्री-शिक्षा के भी वह प्रबल समर्थक थे। उनके सामने प्राचीन भारत की विदुषी स्त्रियो का इतिहास था, गार्गी, मैत्रेयी, भारती-जैसी सती साध्वी-विदुषी देवियो के कारण भारत माता का मस्तक सदा ऊचा रहा है। वह स्त्रियो को पुरुषो के समान शिक्षा दिलाने के पक्ष मे थे। महाराजा मनु के इन विचारों से वह पूर्णतया सहमत थे कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जहाँ स्त्रियो की पूजा होती है—वहा देवता रमण करते हैं। यही कारण है कि उनके शिक्षा-सम्बन्धी विचारो को ध्यान में रखते हुए उनके अनुयायियों ने अनेक स्थानो पर बालक बालिकाओ के लिए अलग-अलग गुरुकुल एव विद्यालय स्थापित करके स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया और कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात में होने के कारण उनकी मातृ-भाषा गुजराती थी। फिर भी उन्होने देश की एकता को ध्यान मे रखते हुए हिन्दी तथा संस्कृत को ही अपनाया। उन्होने अपने समस्त ग्रन्थ सस्कृत और हिन्दी में ही लिखे। हिन्दी को अपनाने में अपने राष्ट्र की एकता के दर्शन किए। यही कारण है कि—आर्यसमाज के नियम-उपनियम बनाते हुए लिखा गया—'हर एक आर्य को, आर्य भाषा हिन्दी का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।'

वह सस्कृत के महान् पण्डित थे। पहले वह सस्कृत मे ही उपदेश करते थे। परन्तु उन्होने यह अनुभव किया कि जन साधारण इस देव-भाषा को नही समझते, तभी उन्होने जन-साधारण की भाषा हिन्दी को अपनाया। उनकी लगभग २७ पुस्तको मे सत्यार्थप्रकाश, सस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा वेद भाष्य धार्मिक, सामाजिक एव राजनीतिक क्षेत्र मे अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। इन ग्रन्थो से अनेक राष्ट्रीय नेताओ एव साधारण कार्यकर्त्ताओ ने प्रेरणा लेकर कार्य किया है। एक बार गांधी जी ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था—'उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत पडा। मैं जैसे-जैसे प्रगति करता हू, वैसे-वैसे मुझे महर्षि दयानन्द जी का बताया हुआ मार्ग दिखाई देता है। महर्षि दयानन्द जी के जीवन की प्रमुख घटना उनका महान् उपकार, आर्यसमाज की स्थापना है।' जिसकी स्थापना सन् १८७५ मे सबसे प्रथम बम्बई में हुई थी। आर्यसमाज के नियम सार्वभौम हैं। जाति, मत, सम्प्रदाय एव प्रान्त देश से ऊपर हैं। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति का संदेश देता है—यह समाज। इस समाज की देश-विदेश में हजारो शाखाएं हैं जिनके द्वारा अनेक गुरुकुल, कालेज, कन्या विद्यालय, अनाथालय, विधवाश्रम, कल्याण केन्द्र, औषधालय अस्पताल संन्यास आश्रम,यौगिक साधनाश्रम, सेवा केन्द्र उपदेशक विद्यालय आदि उपकार के कार्यों द्वारा मानव जाति की महती सेवा की जा रही है। महर्षि दयानन्द सचमुच युग-प्रवर्तक महान् मनीषी क्रान्तिद्रष्टा, अनाथो के नाथ, राष्ट्रीय आंदोलन के सर्वप्रथम सूत्रधार थे।

दीपावली की रात्रि में इस दिव्य पुरुष के जीवन का दीपक बुझ गया। ऐसे महापुरुष के लिए महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था—'मेरा सादर प्रणाम है उस महान् गुरुदेव दयानन्द जी को, जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास मे सत्य और एकता को देखा। जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति मे लाना था।

आर्य भवन, जोर बाग,
नई दिल्ली-११०००३

गतांक का शेष

८ अगस्त १९८२ को केन्द्रीय आर्यसभा, बम्बई द्वारा आयोजित 'वेदार्थ परिगोष्ठी' में प्रस्तुत शोध-पत्र के कुछ अंश

वेद में नारी का स्वरूप

सुमगली प्रतरती गृहाणा सुशेवा पत्ये श्वशूराय
शम्भू स्योना श्वश्र्वे प्रगृहान् विशेमाम्॥
अथर्व १४/२/२६

घर का मगल करने वाली गृहाश्रम रूपी नैया को खेने वाली पति को आनन्दित करती हुई सास ससुर का कल्याण करने वाली सुखकारिणी, तू इस गृह में प्रवेश कर। इस मन्त्र मे स्पष्ट रूप से नारी को गृहस्थ रूपी नैया की खेवनहार कह कर सबोधित किया गया है। गृहिणी अपने गौरव की उदघोषणा इन शब्दो मे करती है -

अह केतु रह मूर्धाह मुग्रा विवाचिनी
ममेदनु क्रतु पति. सेहानाया उपाचरेत्॥
ऋ. १०/१५९/२

मैं घर की ध्वजा हू, मैं घर में सिर की तरह प्रमुख हूं, मैं तेजस्विनी वाणी बोलने वाली हू। पति मुझ अनुगामिनी के ज्ञान और कर्म के अनुकूल आचरण करे।

मम पुत्रा. शत्रु. हणोअथो मे दुहिता विराट,
उताहमस्मि सजया पत्यो मे श्लोक उत्तम
ऋ १०/१५९/३

मेरे पुत्र शत्रुघाती हैं, मेरी कन्या तेजस्विनी है, मैं विजयिनी हूं पति मेरी प्रशंसा करता है। स्त्री को कैसे गुणों वाले पति की इच्छा नहीं करनी चाहिए इस बात का दिग्दर्शन इस मन्त्र मे है—

असुन्वन्तमय जमा न मिच्छ स्तेनस्येत्या-
मन्विहि तस्करस्य,
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि
निऋते तुभ्यमस्तुय॥ यजु. १२/६२

हे स्त्रियो! तुम लोगो को चाहिए कि पुरुषार्थ रहित, चोरो के समान पुरुषों को अपना पति मत बनाओ। जैसे पृथ्वी अनेक उत्तम पदार्थों के दान से मनुष्यो को सयुक्त करती है वैसी होओ। ऐसे गुणों वाली! तुमको हम नमस्कार करते हैं।

वास्तव में नर और नारी एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों मिल कर इस सृष्टि रूपी उद्यान को सुविकसित करते हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महर्षि दयानन्द का धर्मस्वरूप निरूपण

महर्षि दयानन्द के जन्म के समय देश की दशा चिन्ताजनक थी। लोग बहुत दुखी थे। धर्म और सत्य का लोप होता जा रहा था। अधर्म और असत्य की वृद्धि होती जा रही थी। मूर्तिपूजा के पाखंड का बहुत प्रचार था। अविद्या का अधिक प्रचार था। स्त्रियो की दशा तो अत्यन्त घृणा के योग्य थी। पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह इत्यादि कुप्रथाएँ थीं। वे न तो वेद शास्त्रो को पढ़ने-पढ़ाने में समर्थ थीं और न ही उनके लिए समाज मे उचित स्थान ही थी। जाति प्रथा का प्रचार बहुत प्रबल था। लोग अनेक प्रकार से ईश्वर को मानते थे। ऐसे समय धर्म के उद्धार के लिए एक महान् आत्मा की आवश्यकता थी, जो इस प्रकार के समस्त दुर्गुणो का विरोध करे। ऐसे ही समय मे उन्नीसवी शताब्दी मे महर्षि दयानन्द नाम से एक महात्मा ने टकारा नगरी मे जन्म लिया।

सर्वप्रथम तो हमे यह विचारना है कि धर्म क्या है ? जो वेद शास्त्र में सत्य धर्माचरण की प्रेरणा होती है वह धर्म कहलाता है वैशेषिक दर्शन में कणाद मुनि ने कहा—

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्म

जहाँ सांसारिक उन्नति अर्थात् धन, इष्टमित्र, पत्नी, पुत्रादि हैं पारलौकिक सुख वह है जिस को मोक्ष, सुख कहते हैं वह ही धर्म है।

मनुस्मृति मे भी मनु महाराज ने ने धर्म के लक्षणो को कितने सुन्दर शब्दो मे वर्णित किया है।

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं
शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो
दशक धर्म लक्षमणम् ॥

महर्षि दयानन्द ने कहा कि ईश्वर एक है वही बार-बार जगत की सृष्टि, पालन और सहार करता है। वह आकार से रहित हैं। इसलिए शारीरिक दुःख से वह पृथक् है। ईश्वर सर्वज्ञ स्वयभू एव सर्वव्यापक हैं। इस ससार मे जो कुछ भी चेतन वा जड़ वस्तु है उन सब मे ईश्वर निवास करते हैं।' इसलिए ईश्वर का जन्म या मरण नहीं होता है। वेद में भी कहा है कि ईश्वर का अवतार नहीं होता है। जिसकी महिमा अपरम्पार है, प्रमाण है

न तस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महद्यशः। यजु० ३-२-३

जिस परमेश्वर का नाम स्मरण कीर्तिकार है, उसकी प्रतिमा अर्थात् परिमाण नहीं है। मूर्ति ईश्वर नहीं है इसलिये उसकी पूजा निरर्थक है।

देवता शब्द के अर्थ होते हैं प्रकाश कर्त्ता तथा सत्योपदेश कर्त्ता। माता-पिता, आचार्य ये तीन मूर्तिवान् देवता हैं। सूर्य, नक्षत्रसमूह, ये प्रकाश युक्त देवता हैं। जो विद्वान् सत्योपदेश करते हैं वे भी देवता कहे जाते हैं।

यज्ञ के भी तीन अर्थ होते हैं। देव पूजा, दान और सगतिकरण। देव पूजा का अर्थ इस प्रकार है कि जो-जो गुण, कर्म, स्वभाव परमेश्वर मे हैं, उसके अनुसार मनुष्य अपना जीवन-यापन करे। दान का अर्थ विद्यादान है। सगतिकरण का अर्थ इस प्रकार है कि जो विद्वान् पुरुष हैं उनका आदर-सत्कार करके सत्योपदेश से उचित लाभ करना।

'प्राचीन काल मे गार्गी, मैत्रेयी इत्यादि बहुत-सी स्त्रिया विदुषी स्त्रियां थी इसलिए ऋषि दयानन्द ने कहा। नारी तो सब प्राणियो की जीवन-दात्री होती है। मनुस्मृति मे मनु महाराज ने भी कहा है

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'

लेखक :
घनश्याम आर्य 'निडर'
सिद्धान्ताचार्य
स्नातक, उपदेशक विद्यालय
टकारा, (गुजरात)

अर्थात् जहा नारियां पूजी जाती हैं वहा पर देवता रमण करते हैं।

अत वेदो को पढने-पढाने मे प्रत्येक प्राणी का अधिकार है। उसने कहा कि प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का पुत्र है इसलिए जातिप्रथा व्यर्थ है।

महर्षि ने वेद-भाष्य किया। महर्षि के जन्म से पूर्व अनेक वेद-भाष्यकार थे। वे कहते थे कि जो यज्ञ मे पशुओ की बलि देता है वे सब स्वर्गलोक मे जाते हैं। परन्तु ऋषि ने कहा कि अगर इस प्रकार हैं तो यजमान अपने माता-पिता को मार कर क्यो नहीं स्वर्ग प्राप्त कर लेते। अत वेद शास्त्र मे भी जीव हिंसा नही है, जीव हिंसा से ईश्वर प्रसन्न नही होता है।

ऋषि दयानन्द इधर-उधर घूम करके अनेक स्थानो मे मूर्तिपुजा के सम्बन्धी शास्त्रार्थ किए। उन्होंने कहा कि मूर्ति जड है। उन्होंने अनेक प्रकार से दुःख सहकर मनुष्यो को को सत्योपदेश दिए।

ऋषिवर के विचारो से अनेक विद्वान् प्रभावित थे। जैसे हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, अमर शहीद प० लेखराम, आर्य समाज के दीवाने लाला हंसराज और गुरुदत्त जी अन्य लोगो ने भी वैदिक धर्म के लिए अपने प्राणो की आहुतिया दी।

यतिवर ने कहा कि वेद ईश्वर के रचित हैं, अतः उसके प्रमाण अटल है। उनका स्वरचित सत्यार्थ प्रकाश एक उच्च कोटि का ग्रन्थ हैं। वह एक निर्भीक ओजवान् विद्वान तथा धार्मिक, सामाजिक एव आत्मिक क्षेत्र मे क्रान्तिकारी थे। उन्होंने आर्य समाज नाम की क्रान्तिकारी सस्था की स्थापना की जिसने राष्ट्र के जीवन में अपूर्ण जागरण किया।

आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

अस्तेय

—पद्मावती तलवाड़

एक बार व्यापारियो का समुदाय डाकुओ द्वारा लूट लिया गया। एक व्यापारी अपने धन को लेकर भागता हुआ उस डेरे मे जा पहुचा, जहा डाकुओ का सरदार फकीर के वेश मे माला लिए बैठा था। व्यापारी ने कहा, 'मैं बडी विपत्ति मे पड़ गया हू। मारा धन डाकू लूट रहे हैं। इसे आप अपने पास रख लें, बाद मे मैं इसे ले जाऊगा।' सरदार ने कहा, 'उस कोने मे रख दो।' धन की थैली रखकर व्यापारी चला गया, परन्तु जब कुछ घण्टो के बाद वह उस थैली को लेने के लिए डेरे मे घुसा, तब क्या देखता है कि डाकू लूट के धन को बाट रहे है। व्यापारी डाकू के पास ही धन रखने की अपनी भूल पर मन ही मन पछता रहा था। वह धीरे से जब वहा से जाने लगा, तब सरदार ने पुकारा, 'यहा कैसे आया था ?' व्यापारी ने काँपते हुए कहा, 'मैं अपने धरोहर वापिस लेने आया था, पर मुझसे भूल हो गई, मैं अभी यहा से जा रहा हू।'

सरदार ने कहा—रुको अपनी थैली लेते जाओ वह उसी जगह पडी है। व्यापारी को विश्वास नही हो रहा था उसने तिरछे नेत्रो से देखा सचमुच उसकी थैली जहा की तहाँ रखी हुई थी। उसने थैली उठा ली और खुशी-खुशी चला गया। यह क्या किया आपने डाकुओ ने सरदार से पूछा, इस प्रकार हाथ का माल वापिस करना कहा तक उचित है ? तुम लोग ठीक कहते हो—सरदार ने हसते हुए शान्त स्वर मे उत्तर दिया। किन्तु वह आदमी मुझे ईश्वर भक्त और ईमानदार समझ कर अपना धन सुरक्षित समझ मेरे पास रख गया था। इस वेश की रक्षा करना और विश्वासघात से बचना मेरा परम धर्म है। ईश्वर करे मेरा यह स्वभाव आजीवन बना रहे। डाकूओ का यही सरदार आगे चल कर फजल अयाज नामक प्रसिद्ध महात्मा हुआ।

आर्यों (हिन्दुओं) को शस्त्र रखने का अधिकार

नई दिल्ली। आर्यसमाज की प्रगतिशील युवा सस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने अपनी धार्मिक घोषणा करके समस्त आर्यों, हिन्दुओ को तलवार, १२ इंच कृपाण, त्रिशूल, बल्लम, भाला, गदा, धनुष-बाण, फरसा, आदि रखने का धार्मिक अधिकार प्रदान किया है।

परिषद के महासचिव श्री अनिल कुमार आर्य ने आर्य समाज कबीर बस्ती में आयोजित युवक गोष्ठी में 'आर्य' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम, श्रीराम, कर्मयोगी श्रीकृष्ण, शिवजी, हनुमान, माता दुर्गा, महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि को जो अपना पूर्वज स्वीकार करता है, उनको इन धार्मिक चिह्नो को धारण करने का अधिकार दिया जाता है।

उन्होंने शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, चारो शकराचार्यों व सनातन धर्म महासभा के अधिकारियो मे माग की है कि है वे भी इन धार्मिक अधिकारो की घोषणा करें।

गोवध-गोभक्षण करना पाप

—महात्मा गाधी

मेरे मन मे गोरक्षा कोई सीमित चीज नही है। मैं गोरक्षा की प्रतिज्ञा करता हू, जिसका यह अर्थ नही कि हिन्दुस्तान की ही गायो को बचाने का नियम रखू गा। मेरा धर्म यह सिखाता है कि मुझे अपने आचरण से बता देना चाहिए कि गोवध या गोभक्षण करना पाप है और इसे छोड़ देना चाहिए।
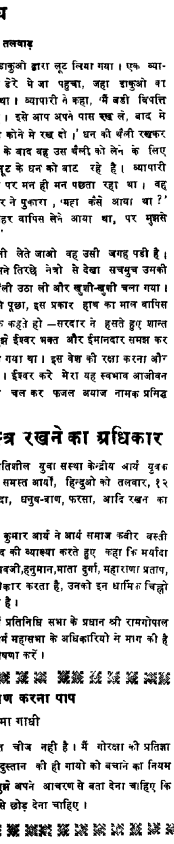
आर्य जगत् समाचार

भारतीय क्रान्ति में आर्यसमाज का योगदान

भारत-ब्रिटेन मैत्री में पाल परिवार का योग :

लन्दन में शिवरात्रि तथा ऋषिबोधोत्सव

लन्दन । आर्यसमाज के तत्त्वावधान मे १३ फरवरी १९८३ को ऋषिबोधोत्सव बड़े उल्लासपूर्वक लन्दन के वन्देमातरम भवन में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध भारतीय उद्योगपति श्री स्वराज पाल व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अरुणा पाल थे। अवसर पर आयोजित बृहत यज्ञ के ब्रह्मा प० विप्रबन्धु तथा यजमान श्री कुमार परिवार थे।

यज्ञोपरान्त समारोह के अध्यक्ष प्रो सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज ने श्री स्वराज पाल का परिचय देते हुए बताया कि जालन्धर का यह आर्य परिवार प्रारम्भ से ही वैदिक संस्कृति का उपासक रहा है। श्री स्वराज पाल के दादा जी को महर्षि दयानन्द जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तभी से यह सम्पूर्ण परिवार कर्तव्यनिष्ठ आर्य हैं। जहा इस परिवार मे एक ओर भारत के उद्योग मे अपना उच्च स्थान बनाया है वहा श्री स्वराज पाल श्री ब्रिटेन के प्रमुख उद्योगपतियो की श्रेणी मे आते हैं। श्री पाल अर्थोन्नति के साथ-साथ भारत ब्रिटेन मैत्री भूमिका मे भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है। श्री स्वराज पाल के प्रयत्नो से ही सुप्रसिद्ध कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में जवाहर लाल नेहरू चेयर की स्थापना हुई जिसके लिये श्री स्वराज पाल प्रति वर्ष तीस हजार पौण्ड दान देते हैं। तत्पश्चात समीर चड्ढा व मोना गाजरी ने श्रीमती स्वराज पाल का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। अरुण व ऐंजिला कोछड़ ने ऋषि बोधोत्सव पर अंग्रेजी मे लघु नाटिका प्रस्तुत की जिससे प्रभावित होकर श्री पाल ने उन्हें पुरस्कृत किया। पुनीता गाजरी ने अंग्रेजी मे अपने विचार प्रकट किए तथा मोना गाजरी ने गीताजलि मे से एक कविता सुनाई। उपप्रधान श्री धर्मवीर पुरी की उर्दू मे स्वरचित कविता ने सबका मन मोह लिया।

वैदिक सिद्धान्तों पर बल दो

नामों के साथ जाति न लगाए

अजमेर। आर्यसमाज अजमेर की अन्तरग सभा ने सर्वसम्मति से निश्चय किया कि नए आर्थिक वर्ष से आर्यसमाज मे उन्ही सदस्यो की सदस्यता मान्य की जाए, जो समाज की सदस्यता के लिए निर्धारित साप्ताहिक सत्सगो मे उपस्थित हो, एव आय का शताश मासिक चन्दा देते हो तथा खास तौर पर आर्यसमाज के सविधान मे जो वैदिक सिद्धान्तो की मान्यता सम्बन्धी शर्तें हैं, उन्हे अनिवार्य रूप से क्रियान्वित करते हो। अक्तूबर, १९८२ मे अजमेर आर्यसमाज की शताब्दी के अवसर पर जात-पात निषेध सम्मेलन मे लगभग सौ सदस्यों ने अपने नाम के आगे आर्य लिखना अथवा जातिसूचक उपनाम न लिखने का प्रण लिया था। इससे प्रेरणा लेकर आर्यसमाज के सदस्यो एव पदाधिकारियो की सूची मे उनके जाति वाचक उपनामो का उल्लेख न किया जाए।

श्री देशराज बहल अस्वस्थ

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर समिति दिल्ली के महामन्त्री श्री देशराज जी बहल १४-३-८३ को गगाराम अस्पताल मे दाखिल किए गए। १५-३-८३ को उनके घुटने का अपरेशन हुआ। वह गगाराम हास्पिटल के पेइंग बार्ड रूम नं०—११६ मे स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। और मार्च के अन्त तक अस्पताल मे रहेंगे।

आर्यकन्या महाविद्यालय बड़ोदरा की बाला सभा का ५८ वा वार्षिकोत्सव

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदरा के अन्तर्गत आर्य बाला सभा का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव २५-२६-२७ मार्च, १९८३ को मनाया गया। संस्था की १२५ स्नातिकाओ ने आजन्म कौमार्य व्रत धारण किया है। और वे समाज के विभिन्न क्षेत्रो मे सेवा वा शिक्षा प्रसार का कार्य कर रही हैं। २४ मार्च के दिन शाम को ४ बजे उत्सव का प्रारम्भ शोभा यात्रा से हुआ। तीनों दिन प्रातः काल बृहद् यज्ञ हुआ। इस अवसर पर अनेक सन्यासी, महात्मा, विद्वान्, संस्कृति प्रेमी आर्य नेता आदि पधारे उत्सव पर पुरातन छात्रा सम्मेलन, सरस्वती सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, हिन्दू संस्कृति रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

२७१ ईसाई और ३८ मुस्लिम भाई वैदिक धर्म में

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा (दिल्ली) के उपदेशकों के धर्म प्रचार से आकर्षित होकर ग्राम हरदासपुर जिला—बरेली, मे २७१ ईसाई पुरुष, स्त्री, बच्चों को आर्यसमाज बरेली आंवला, चन्दोसी, रामपुर, की साक्षी मे तथा विश्व हिन्दू परिषद्, भारतीय जनसघ, जिला आर्य सभा बिलारी के गणमान्य महानुभावों, सनातन धर्म के संन्यासी महात्माओं की उपस्थिति में यज्ञ पर श्री द्वारकानाथ सहगल प्रधान मंत्री शुद्धि सभा ने वैदिक शुद्धि पद्धति से शपथ दिलाई। श्री रामजी दास आकंचन आवला ने शुद्धि संस्कार किया। श्री साहू जगदीश शरण अग्रवाल बरेली की अध्यक्षता में बृहत सभा हुई। लगभग ६०० महानुभावो की सभा में अनेक विद्वानो और संन्यासियो के प्रवचन हुए। श्रीमती वैष्णो देवी ने दो दिन महिलाओं मे धर्म प्रचार किया, जिससे ग्रामीण महिला वर्ग बहुत प्रभावित हुआ।

३८ मुस्लिम व्यक्तियों के परिवारों के सभी स्त्री, पुरुष-बच्चों ने आर्यसमाज कासगज जिला—एटा के श्री श्रीराम आर्य के प्रयत्न से शाखा शुद्धि सभा ओमनगर एटा के सभी अधिकारियो के सहयोग में स्वामी ज्ञानानन्द जी तथा ओमप्रकाश जी शर्मा द्वारा सौलंकी राजपूत जाति के श्री मदन सिंह, बाबू सिंह, शेर सिंह, श्री गिरधारी सिंह नाम घोषित करके शुद्धि संस्कार किया। आर्यसमाज कासगंज ने सभी के लिए जलपान आदि की व्यवस्था की।

यह आयोजन ग्राम—जलालपुर जिला—एटा में दिनाक ६-३-८३ को सम्पन्न हुआ इसका श्रेय श्री ठा० अमर सिंह उपदेशक व ठा० श्रीराम आर्य कसगज को हैं। इन परिवारों की सूची इस प्रकार है—श्री मदनसिंह के परिवार में ५ व्यक्ति, श्री नारायण सिंह के परिवार में ६ व्यक्ति, श्री बाबू सिंह के परिवार में ९ व्यक्ति; श्री शेरसिंह के परिवार में, ९ व्यक्ति, श्री गिरधारी सिंह के परिवार मे, ९ व्यक्ति।

आर्यसमाज खडवा में एक ईसाई परिवार की शुद्धि

आर्यसमाज खण्डवा जिला पूर्व निमाड म० प्र० मे दि० २०-३-८३ को सायं ६॥ बजे साप्ताहिक सत्संग में श्री रामलाल सिंगले-ग्राम सिरपुर इ धारिया के आवेदन-पत्र के अनुसार, सपरिवार उनका शुद्धिकरण संस्कार वैदिक पद्धति से समाज के पुरोहित सुखराम आर्य द्वारा सम्पन्न किया गया। शुद्धि के पश्चात् उनका पूर्व नाम रामलाल, पत्नी सुभद्रा बाई एव पुत्री सविता ही रखा गया।

इस शुभावसर पर समाज के प्रधान श्री रामचन्द्र जी आर्य, मन्त्री कैलाशचन्द्र जी पालीवाल, एव श्री जगदम्बा प्रसाद जी मिश्र प्रचार मन्त्री ने, शुद्ध हुए परिवार को आशीर्वाद देते हुए उन्हे वैदिक आर्य साहित्य भेंट किया गया। श्री रामलाल जी के हाथ से प्रसाद वितरण किया गया।

आर्यसमाज पश्चिमपुरी (जनता क्वार्टर) के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री जगन्नाथ नन्दा, उपप्रधान श्री बी० एन० सहदेव, उपप्रधान—श्रीमती सुशीला देवी, मन्त्री—श्री विश्व नाथ आर्य, उपमन्त्री—श्री जयदेव अरोड़ा, उपमन्त्रिणी श्रीमती कमलेश चड्ढा, प्रचारमन्त्री—श्री अनन्तराम मिश्र, कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द्र, पुस्तकाध्यक्ष श्री के० सी० भूटानी।

ट्रस्ट जैसी ५० संस्थाओं से राजधानी में कायाकल्प सम्भव

स्वास्थ्य सेवाओं पर बल दें दिल्ली विकास प्राधिकरण के श्री खन्ना

श्रीमती चन्नन देवी नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय सुभाष नगर नई दिल्ली के छठे नि:शुल्क नेत्र शिविर का उद्घाटन करते हुए दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री हरीश खन्ना ने कहा कि महाशय चून्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट जैसे काय करनेवाली संस्थाएं यदि ५० भी दिल्ली में निकल आएं तो दिल्ली का कायाकल्प हो सकता है। उन्होंने नेत्र चिकित्सालय के प्रबन्धकों से प्रार्थना की कि वे आंखों के साथ-साथ लोगों की स्वास्थ्य सुरक्षा के संबंध में भी जानकारी दें। उन्होंने कहा कि श्रीमती चन्ननदेवी आयसमाज नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय के काय को देखते हुए इसको भूमि देने में प्राथमिकता दी गई है और दिल्ली के उपराज्यपाल ने इस सबंध में तमाम रुकावटें दूर कर दी हैं। चिकित्सालय के निर्माण का काय भी आरम्भ हो चुका है उसके साथ साथ एक अस्थायी चिकित्सालय बनाने की भी आज्ञा दे दी गई है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि चिकित्सालय के प्रबन्धक दो मास के अन्दर वहाँ अस्थायी निर्माण करके नेत्र रोगों का उपचार शुरू कर देंगे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले जी ने भी श्री खन्ना को विश्वास दिलाया कि दिल्ली प्रशासन एवं भारत सरकार को महाशय चून्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट से जो आशाएं है वह पूरी करेगा। दिल्ली में अन्धापन निवारण के लिए यह ट्रस्ट कोई कसर उठाकर नहीं रखेगा।

देव-यज्ञ

—कविवर 'प्रणव शास्त्री एम० ए०

यह देव यज्ञ पवित्रतम प्रिय ज्ञानियों का कर्म है।
उपकार की शुचि भावना का मन्त्र मञ्जुल मर्म है ॥१॥
घृत अन्न मधु मिष्ठान्न जो है रोग नाशक औषधि।
सुरभि धारक पुष्टि कारक हो जाते हैं जो सुधी ॥२॥
आम्रादि समिधा युक्त गृह में तीव्र पावक ज्वाल में
श्रुति-मन्त्र पढ़कर दे रहे हैं आहुति तत्काल में ॥३॥
अति सूक्ष्म रूप अनूप होकर प्रबल शक्ति धारती।
वह वायु-मण्डल शुद्ध करती दोष दुष्ट निवारती ॥४॥
हो वृष्टि सुखकारक सदा ही अन्न के भण्डार हो।
सब भांति स्वस्थ प्रसन्न मन धनधान्य के आगार हो ॥५॥
यज्ञ से जड़ जंगमों का हो रहा उपकार है।
संसार मय है यज्ञ तो यह यज्ञमय संसार है ॥६॥
दीर्घ आयु प्राणपोषण यज्ञ से बढ़सम्पन्नता।
यजमान का ऐश्वर्य बढ़ता और प्रसन्नता ॥७॥
यज्ञ से गौ अश्व मिलते ब्रह्मवर्चस प्राप्त हो।
यज्ञ का करना कराना मानवों में व्याप्त हो ॥८॥
यज्ञ से वातावरण में सुरभि का आधान है।
वृष्टि जल की धार में भी स्वास्थ्य का सामान है ॥९॥

फीरोजाबाद (उ० प्र०)

आर्य भजनीक तथा उपदेशक ध्यान दें

यदि आप अपना अपना कार्य करते हुए, बिना कुछ व्यय किए तथा बिना अतिरिक्त समय लगाए सम्मान कम से कम ३०० रुपए प्रतिमाह की निश्चित अतिरिक्त आय करना चाहे तो पत्र लिखें। पत्र-व्यवहार गुप्त रहेगा।

—महेन्द्रपाल शास्त्री

फोन ७४४७० ए०, फेस-२ अशोक विहार दिल्ली ५२

आज के युवक शहीदों से प्रेरणा लें

दिल्ली २० मार्च के दिन अमर शहीदों के ५२ वें शहीद दिवस पर आयोजित बाल भवन रेलवे पार्क प्रताप नगर (आर्य युवक) के कार्यक्रम में अध्यक्षता करते हुए आर्य नेता लाजपत राय (प्रधान आर्य प्रतिनिधि उपसभा सब्जी मण्डी) ने युवकों को शहीद भगत सिंह राजगुरु सुखदेव के जीवन से शिक्षा लेने का आह्वान किया। उन्होंने बताया-सशस्त्र क्रान्तिकारियों ने विदेशी दासता के विरुद्ध संघर्षपूर्ण आन्दोलन किया जिससे अंग्रेजों को छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। उन्होंने युवकों को शहीदों के सपने को साकार करने के लिए देशमें व्याप्त सामाजिक कुरीतियां व विषमताओं के विरुद्ध जन जन में चेतना उत्पन्न करने का सन्देश दिया।

परिषद की ओर से स्वामी दयानन्द वर्ग तथा नेता जी सुभाष वर्ग के युवकों की भी आर्यसमाज लेख नगर त्रिनगर तथा आयसमाज रानी बाग शकूर बस्ती युवक गोष्ठियों का शहीदों की स्मृति में आयोजन हुआ।

महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का ७६वां उत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ७६ वां वार्षिकोत्सव १२-१८ अप्रैल १९८३ को मनाया जाएगा। इस अवसर पर आय सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन सव धर्म सम्मेलन कवि सम्मेलन आयुर्वेद सम्मेलन आदि अनेक शिक्षाप्रद सम्मेलन आयोजित किए गए हैं।

यज्ञभवन में सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

स्वर्गीया पूज्य माता रामप्यारी जी की प्रेरणा के अनुसार बृहस्पतिवार, ३१ मार्च १९८३ प्रात से रविवार ३ अप्रैल प्रात तक पूज्य स्वामी जीवनानन्द जी व पं० लखपति जी शास्त्री द्वारा यज्ञ भवन जवाहर नगर दिल्ली ७ में सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ सम्पन्न होगा। प्रतिदिन प्रात ५.१५ से ७.१५ तक और साय ४ से ६ बजे तक यज्ञ होगा। प्रात ७.१५ से ८.१५ तक और ६ से ७ तक भजन तथा उपदेश होंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार ३ अप्रैल १९८३ को प्रात ११ बजे होगी। इन दिनों पूज्य महात्मा वासुदेव चैतन्य वानप्रस्थी ज्वालापुर (हरिद्वार) के मनोहर उपदेश होंगे।

वेद म नारी का स्थान (पृष्ठ ४ का शेष)

ब" मे स्त्री वा ऋक और पुरुष को साम की उपमा दी गई है। पुरुष का द्यौ और स्त्री का पृथ्वी के नाम से पुकारा गया है ब्रह्माड मे जो काय सूय और पृथ्वी करत हैं वही काय मानव जीवन मे स्त्री और पुरुष को करना है। दोनो मिलकर अपनी सन्तान के रूप मे नतन निर्माण करते है और त्याग भाव से उनका पालन पोषण करते है। नारी शस्यश्यामला पृथ्वी का रूप है ता नर देदीप्यमान सूय की तरह प्रकाश और जीवन को उत्कीर्ण करने वाला शक्ति पुज है। सूय यदि प्रचण्ड हा जाता है तो धरती पर हाहा कार मच जाता है और पृथ्वी डोलने लगती हे तो भी सवनाश का दश्य उपस्थित हा उठता है।

वैदिक नारी माता निर्माता विद्या वती सरस्वती पहले है स्त्री पत्नी भामिनी पीछे। स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ कहकर ऋग्वेद मे नारी का गान किया गया है। विधाता का नाम ब्रह्मा इसी लिए है कि वह सृष्टि की सचालिका है। ब्राह्मणी के रूप मे वह वेदवती यज्ञवती है। ब्रह्मचर्याश्रम मे अपने बल का सचय करन का उसे पूण अधिकार है। क्षत्रिया क रूप मे वह सै य सचालन करती हुई न्यायाधीश के रूप मे आधी सष्टि का न्याय करती हुई सम्राज्ञी के रूप मे पृथ्वी पर आधिपत्य करती हुई दष्टि गोचर होती है तो गृहस्थाश्रम मे पत्नी व माता बन कर समाज के निर्माण मे योग देती है। वश्य पति की पत्नी बन कर कृषि करती है अन्न उपजाती हैं पशुओ की सेवा करती हैं तो दूसरी आर वानप्रस्थिकी बन कर ईश्वर की उपासिका के रूप मे कठोर श्रम करके अपने अबला नाम को निरथक करती हुई पत्थर भी फोडती है और देश का उत्पादन बढाने मे श्रमिक वग से जुटी दृष्टिगोचर होती है। दूसरी ओर गार्गी मैत्रेयी की तरह वीतराग होकर ब्रह्म वादिनी भी बन सकती है। यह है नारी का वैदिक स्वरूप। सुवर्ण और आश्रम दोनों ही व्यवस्थाओं मे वह सह भागी है। नारी की महत्ता के लिए मन्त्रावली प्रस्तुत हुई है उसे पढ पढ कर अनायास ही ऋषि ऋण के भार से मस्तक नत हो उठता है। उस उपवन से कुसुम सचय करना भी बहुत बडी समस्या है। सभी कुसुम अपनी ओर आकृष्ट करते से प्रतीत होते हैं। यजुर्वेद के आठवें अध्याय को त्रियालीसवें वेद मन्त्र मे नारी को बड़ ही प्यारे नामों से सबोधित किया गया है। विश्व के महान् साहित्यिक ग्रन्थो मे नारी के जो सबोधन हैं वे इस मन्त्र के सम्मुख फीके से प्रतीत होते हैं—

> इड रन्ते हव्ये काम्य चन्द्र ज्योते दिते
> सरस्वति महि विश्रुति।
> एता त अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृत ब्रूतात।

(इडे) प्रशसा करने के योग्य (रन्ते) रमण करने के योग्य (हव्ये) स्वीकारने योग्य (काम्ये) मनोहर स्वरूप वाली (चन्द्र) अत्यन्त आनन्द देने वाली (ज्योते) श्रेष्ठ शील से प्रकाशमान अदिति आत्मा के स्वरूप से कभी विनाश को प्राप्त न होने वाली (सरस्वती) प्रशसित विज्ञान वाली बुद्धि मती (महि) पूज्यतम (विश्रुति) अनेक अच्छी बातें और वेद जानने वाली (अघ्न्ये) तिरस्कार व ताडना न करने योग्य ये तेरे नाम हैं। (देवेभ्य) उत्तम गुणों के लिए (मा सुकृत ब्रूतात मुझ को उत्तम उपदेश किया कर।

प्रभु परमात्मा ने नारी जाति मे इन गुणो से भरपूर होकर अपनी महिमा को प्राप्त करने का सन्देश दिया है।

वैदिक रीति से शुभ विवाह

श्री ललित कुमार के सपुत्र चि० श्री सुधीर कुमार एव स्वर्गीय ब्रह्मदेव प्रसाद की सपुत्री रजू कुमारी का शुभ विवाह ता० ४ मार्च को आय वैदिक विधि से सादगी पूण ढग से सम्पन्न हुआ। कन्या और वर पक्ष की ओर से कोई भी लेन देन दहेज या आडम्बर की रस्म नहीं की गयी। आयसमाज दरभगा के प्रधान कु० दत्त लाल कपाही जी और मन्त्री श्री उपेन्द्र विद्यालकार और कोषाध्यक्ष रामाशीष प्रसाद सहित अनेक आर्य नेता उपस्थित थे। पुरोहित श्री पटेल जी ने विवाह सम्पन्न कराया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भारतिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गाधीनगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपए   वर्ष ७ अंक २४   रविवार १० अप्रैल १९८३   २७ चैत्र वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

प्रस्तावित बूचड़खाने-गोवंश-हत्या पर रोक लगाओ

राष्ट्रपति ज्ञानी जेलसिंह से आर्यसमाज के शिष्टमंडल की मांग

राष्ट्रपति द्वारा व्यक्तिगत सहमति : वैदिक साहित्य को सराहना : आर्यनेताओं का शिष्टमण्डल राष्ट्रपति से मिला

नई दिल्ली। बृहस्पतिवार ३१ मार्च के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे आर्य नेताओ के एक शिष्टमण्डल को राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने राजधानी मे निर्मित होने वाले यान्त्रिक बूचडखाने की योजना को रद्द करने की माग पर अपनी सहमति प्रकट की और गोहत्या बन्दी कानून के सम्बन्ध मे कहा कि वह प्रधानमन्त्री जी से इस सम्बन्ध मे विचार-विमर्श करेंगे। सार्वदेशिक सभा के शिष्टमण्डल की ओर से सभा के अध्यक्ष श्री शालवाले ने राष्ट्रपति जी को सूचना दी कि दिल्ली के पटपडगज इलाके मे २८ करोड रुपयो की लागत से बनने वाले यान्त्रिक बूचडखाने के समाचार से दिल्ली की जनता में बडी बेचैनी फैल रही है और धर्मप्रेमी जनता को इस समाचार से बडा आघात पहुंचा है। उन्होंने यह माग भी की कि केन्द्र सरकार को सम्पूर्ण गोवश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगा कर आचार्य विनोबा भावे की अन्तिम इच्छा की पूर्ति करनी चाहिए। इसके लिए सविधान में संशोधन होना आवश्यक है और उक्त बूचडखाने की योजना तुरन्त रद्द कर दी जाए।

राष्ट्रपति भवन मे शिष्टमण्डल के साथ राष्ट्रपति से भेट कर श्री शालवाले ने राष्ट्रपति को चारो वेदो का हिन्दी भाष्य एव वैदिक साहित्य भेट किया। राष्ट्रपति ने वैदिक साहित्य की भूरि-भूरि प्रशसा की। श्री शालवाले ने असम नागालैंड, त्रिपुरा आदि राज्यो मे आदिवासियो एव अनुसूचित जातियो मे आर्यसमाज द्वारा किए जा रहे सेवा-कार्यों से भी राष्ट्रपति को अवगत कराया। राष्ट्रपति ने कहा कि यह राष्ट्र और राष्ट्रवासियो के लिए गौरव की बात है कि आर्यसमाज अपनी परम्परा के अनुसार राष्ट्र की सेवा, एकता और सस्कृति की रक्षा मे लगा हुआ है।

शिष्टमण्डल मे सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान आचार्य पृथ्वीसिह आजाद, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, श्री पृथ्वीनाथ शास्त्री, श्री मरदारीलाल वर्मा एव गुरुकुल कागडी के कुलपति श्री बलभद्र हूजा भी सम्मिलित थे।

पटपड़गंज के बूचड़खाने का निर्माण तुरन्त रोका जाए

चुनाव मे दिए आश्वासन पूरे किए जाए श्री शालवाले का प्रधानमन्त्री को पत्र उपराज्यपाल श्री जगमोहन से शिष्टमण्डल की भेट

दिल्ली। पटपडगज क्षेत्र मे २८ करोड की लागत से बनने वाले यान्त्रिक बूचडखाने के विरोध मे दिल्ली की जनता मे बडी बेचैनी फैल रही है। इस सम्बन्ध मे बढते हुए जन-असन्तोष को अभिव्यक्त करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से पत्र लिखकर ध्यान खींचा है कि इस बूचडखाने के समाचार से दिल्ली की जनता मे बडी बेचैनी फैल रही है। समूचे भारत की जनता सम्पूर्ण गोवश की हत्या पर केन्द्र सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाने की माग कर रही है। यह कार्य हो जाने पर देश की ८५ प्र० श० जनता आपके प्रति कृतज्ञ होगी। यह कार्य आपके समय मे हो जाना चाहिए।

श्री शालवाले ने यह सूचना भी दी है कि ऐसा न होने पर जनता नए बूचडखाने का निर्माण किसी भी अवस्था मे स्वीकार नही करेगी। आपने कुछ दिन पूर्व दिल्ली महानगर परिषद और दिल्ली नगर निगम के समय चुनाव अभियान के समय शाहदरा की आम सभा मे घोषणा की थी कि पटपडगज मे बूचडखाना नही खुलेगा। इसी प्रकार के आश्वासन श्री एच० के० एल० भगत और श्री बूटासिह ने भी दिए थे। मैं नही चाहता कि इस सम्बन्ध मे कोई आन्दोलन खडा हो। श्री शालवाले ने प्रधानमन्त्री से अनुरोध किया हैं कि उन्हे स्वय हस्तक्षेप कर प्रस्तावित बूचडखाने का निर्माण रुकवा देना चाहिए।

उपराज्यपाल श्री जगमोहन का आश्वासन

इसी प्रस्तावित बूचडखाने की योजना रद्द कराने लिए दिल्ली के नागरिको का एक शिष्ट मण्डल, जिसमे श्री रामगोपाल शालवाले, जैन मुनि श्री सुशीलकुमार श्री नेमचन्द जैन, श्री जगदीश अबरोल, नामधारी नेता आदि थे, दिल्ली के उपराज्यपाल श्री जगमोहन से मिला। शिष्टमण्डल ने उपराज्यपाल को सूचना दी कि प्रस्तावित बूचडखाने से यमुना पार की जनता बहुत बेचैन है, पिछले चुनाव मे प्रधानमन्त्री ने शाहदरा की जनसभा मे घोषणा की थी कि यह बूचडखाना नहीं बनेगा। श्री शालवाले और मुनि सुशील कुमार ने उपराज्यपाल से इस योजना को रद्द करने की माग की। उपराज्यपाल श्री जगमोहन ने आश्वासन दिया कि जनता सरकार की माग पर गम्भीरता से विचार करेगी।

आर्यसमाजें प्रस्ताव स्वीकृत करें

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल, सभा मन्त्री श्री सूर्यदेव ने एक पत्र निकाल कर दिल्ली भर की आर्य समाजो से अनुरोध किया है कि वे प्रस्तावित बूचडखाने का निर्माण रोकने के लिए प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से अनुरोध करें।

आर्यसमाज दीवान हाल का ९८ वां वार्षिकोत्सव

अनेक सम्मेलनों का आयोजन राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का उद्घाटन गृहमन्त्री करेंगे

आर्यसमाज दीवान हाल का ९८वा वार्षिकोत्सव ८, ९, १० अप्रैल १९८३ को लालकिले के सामने विशाल भव्य पण्डाल मे मनाया जाएगा। इस अवसर पर ४ अप्रैल से ७ अप्रैल तक रात्रि को ८ से ९॥ बजे तक आर्यजगत् के विद्वान प० शिवकान्त जी उपाध्याय वेद प्रवचन करेंगे। उत्सव के दिनो मे ८ से १० अप्रैल तक प्रतिदिन प्रात ७॥ और साय ५॥ बजे प० राजगुरु शर्मा के ब्रह्मत्व मे सामवेदीय महायज्ञ किया जा रहा है। शुक्रवार ८ अप्रैल, १९८३ को 'विश्व को महर्षि दयानन्द की देन' तथा 'पाश्चात्य सभ्यता भारतीयता के लिए घातक' विषयो पर क्रम से स्कूलो और कालेजो के छात्र-छात्राओ की भाषण-प्रतियोगिता होगी। इसी दिन आर्य कवि सम्मेलन प० क्षेमचन्द्र सुमन की अध्यक्षता मे होगा। प्रमुख कविगण भाग ले रहे हैं। इस उत्सव पर आर्य महिला सम्मेलन, अछूतोद्धार, गोरक्षा सम्मेलन राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है। राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का उद्घाटन भारत के गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी करेंगे।

सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक प्रद्युम्नलाल तलवाड

वेद-मनन

परमात्मा सर्वोपरि विराजमान है

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

ऋ. १०।१२१।१०

हिरण्यगर्भ प्राजापत्य ऋषि, क देवता, निचृत् त्रिष्टुप् छन्द वा धैवत स्वर।

शब्दार्थ—[प्रजापते] हे सब प्रजाओ के स्वामी पालक ईश्वर ! [त्वत्] आपसे [अन्य] भिन्न दूसरा कोई [एतानि] इन [ता] उन [विश्वा] सब [जातानि] उत्पन्न हुए जडचेतनादि पदार्थों को [न] नहीं [परिबभूव] तिरस्कार करता है और इन पर सर्वोपरि विराजमान हैं और अध्यक्ष हैं। [यत्कामा] जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग [ते] आपका [जुहुम.] आश्रय लेवें और वाञ्छा करें [तत्] वह-वह [न] हमारी कामना [अस्तु] सिद्ध हो (और) [वयम्] हम लोग [रयणाम्] विद्या सुवर्णादि धनैश्वर्यों के [पतय:] स्वामी [स्याम] हों।

भावार्थ—परमात्मा सर्वत्र व्यापक और सब पदार्थों वा जीवो के ऊपर विराजमान हो रहा है। उसी की उपासना करनी सब को योग्य अन्य किसी की नही। जीव उसी की कृपा वा सहायता से और उसकी वेदोक्त आज्ञा पर चल कर ही ऐहिक वा पारमार्थिक सुख का लाभ कर सकता है।

बोध-कथा

ताजे गुलाब जैसी ताजगी !

भारतीय दूरदर्शन या टेलीविजन का पहला कार्यक्रम था। टेली क्लब के सदस्य एव कुछ आमन्त्रित मेहमान आए हुए थे। प्रोड्यूसर श्री देशपाडे ने कार्यक्रम की पूरी तैयारी की हुई थी, पर सारा कार्यक्रम जम नही रहा था। सब बेचैन हो रहे थे। उसी समय अचानक एक वृद्ध सज्जन कार्यक्रम की नीरसता को खत्म कर घने काले बादलो से एक चमकती हुई ज्योति की तरह वहा आमन्त्रित प्रधानमन्त्री नेहरू जी से पूछ उठे—"पण्डित जी, आप ७० वर्ष से ऊपर के हो गए और मैं भी ७० से ऊपर की उम्र का हू, लेकिन पता नहीं क्या कारण है कि आप तो ताजे गुलाब के फूल जैसे तरो-ताजा दीख रहे हैं और मैं एक गिरते पीले सूखे पत्ते की तरह ?"

इस अटपटे सवाल से एक क्षण के लिए प० जवाहरलाल नेहरू सटपटा से गए। एक तरह की उलझन उनके चेहरे पर दिखाई दी, परन्तु तुरन्त सम्भल कर हसते मुख से आकाशवाणी के स्टूडियो की दीवारो को लाघ कर समाज और युग को पुकारते हुए युगपुरुष के रूप मे बोल उठे—"शायद तीन बातें हैं, जिनसे मैं बूढा नही हुआ। पहली बात तो यह है कि सब बच्चो मे बच्चों की तरह मैं हिल-मिल जाता हू। शायद दूसरी बात यह है कि मेरा मन आस-पास की छोटी चीजो मे नही उलझता, सदा हिमालय मे रम जाता है, हिमालय की बर्फीली चोटियो, उसके घने जगलो और वहा की निर्मल हवा से मुझे सदा नए प्राण मिलते हैं, और शायद तीसरी बात यह है कि मैं छोटी-छोटी और ओछी किस्म की बातो से ऊपर उठ सकता हू। उनका मेरी बुद्धि या प्रतिभा पर कोई असर नही पडता। मैं जिंदगी दुनिया और सब सवालो को ऊची नजर से देखने की कोशिश करता हू, इसलिए मेरी सेहत और विचार ढीले-ढाले नही होते।"

शायद ये ही तीन कारण थे कि ७० वर्ष से अधिक उम्र होने के बावजूद प० नेहरू बूढे नही हुए थे और ताजे गुलाब के फूल जैसे ताजे दीख पड़ते थे।

— नरेन्द्र

ज्ञान-धारा प्रशस्त करो !

—स्वामी डा० सत्यप्रकाश सरस्वती

[रविवार १३ मार्च, १९८३ के दिन रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी (उ० प्र०) में दिए दीक्षान्त अभिभाषण के आवश्यक अंश]

माता-पिता के कुल से भी अधिक महत्त्व का यह आचार्य-कुल या गुरुकुल का होता है। आपके यश के साथ ही गुरुकुल का यश है। जो उपाधि आपने प्राप्त की है, उसकी अपनी आन है। आपसे हम आशा भी करते हैं कि आपके आचार्य-कुलो की यह अन्तिम उपाधि नहीं है, स्नातक उपाधि से अन्य उच्च उपाधियो को प्राप्त करने का द्वार प्रशस्त होता है। फिर इन उपाधियों के मार्ग से आपको जन-सेवा के अनेक अवसर प्राप्त होगे। अनेक पदों पर सुशोभित होकर आप मानव-सेवा में रत होगे। आपका आज का पढ़ा हुआ, जीवन में आपको ऊँची सफलताएं दे—मेरा आशीर्वाद। इसी का नाम उपनिषद् के अनुवाक्यों में 'तेजस्विनावधीतमस्तु' है। आप और आपके आचार्यों दोनो ने मिलकर अध्ययन किया है। मेरा यह अनुभव है कि जब आचार्य प्रत्यक्ष रूप मे शिष्यों को पढ़ाता है, तो परोक्ष-पक्ष में उसका अध्ययन होता है और साथ-साथ उसकी पुनरावृत्ति भी होती है। आचार्य-कुल वस्तुतः विद्या के आदान-प्रदान का केन्द्र है। ज्ञान के विकास का कोई चरम बिन्दु नहीं है, इसकी कोई सीमा नहीं है। उपनिषद् वाक्य मे जब ये शब्द आए 'तेजस्विनौ-अधीतम्-अस्तु', हम लोगो का (गुरु और शिष्य का) परस्पर पढ़ा हुआ, तेजस्वी हो, तो उनका भी यही अभिप्राय है। आपका पढा-लिखा आपके हित मे हो, आपके समाज या देश के हित मे और साथ ही साथ ज्ञान के विकास और विद्या की वृद्धि के हित मे हो। गणमान्य विश्वविद्यालयो की दृष्टि से यह अन्तिम तीसरी बात पहली दो बातों की अपेक्षा भी अधिक महत्त्व की है। शास्त्र अस्थिर और अस्थायी होता है; इसमे निरन्तर विकास होना चाहिए। प्रभु की कला प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन किसी एक व्यक्ति, एक समाज और एक युग की नही है। मनुष्य ने बड़ी तपस्या से ज्ञान की धारा आज तक न केवल जीवित रखी, उसके क्षेत्र को भी उसने प्रशस्त किया है। यह काम गुरुकुलों, ऋषिकुलो, आश्रमो, विश्वविद्यालयो और अनुसन्धान मे तल्लीन सस्थाओं के माध्यम से हुआ है। स्नातकोत्तर महाविद्यालयो के लिए वह दिन स्वर्णिम होगा, जब हम सुनेगे कि उनके किसी छात्र ने कला, साहित्य, शिल्प, विज्ञान, ज्ञान के किसी भी क्षेत्र मे अन्तर्राष्ट्रीय योगदान किया है। मैंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे अकित एक प्रशस्त शिलालेख देखा था, जिनमे उन पुराने स्नातकों के नाम थे, जिन्होने मानव-जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे नए युग का निर्माण किया था, या मनुष्य को नई प्रेरणा दी थी।

दीक्षान्त समारोहो या कन्वोकेशनों की पुरानी परम्परा रही है। गुरुकुल से बिदा होते हुए आचार्य जिन शब्दो मे अपने अन्तेवासियों को आशीर्वाद, सन्देश और अनुशासन देता है, उसका आदर्श रूप तो तैत्तिरीय उपनिषद् की शिक्षा वल्ली में है। माता-पिता और आचार्यों का आपने स्नेह पाया है, पुराने ऋषि परम्परा के आचार्यों की विनम्रता थी—वे आपसे कहते थे कि प्रत्येक मानव में दुर्बलताएं भी होती हैं। आचार्यों में भी दुर्बलताएं हो सकती है, पर उनके सच्चरित्रो को ही जीवन में अपनाना, उनकी निर्बलताओं को नहीं। आप मे भी दुर्बलताएं थीं, पर माता-पिता और आचार्य ने आपकी दुर्बलताओ की उपेक्षा करते हुए भी आपको स्नेह दिया था।—स्नेहवश आपके हित मे आपकी भर्त्सना भी की थी। आप जब जीवन मे प्रवेश करेंगे, आपको अपने आचार्यों की निश्छल भर्त्सनाएं बड़ी मीठी लगेंगी। आप में से जो भी कोई इस विद्यालय को आज या कभी छोड़े, तो मन मे कोई कटुता न ले जाए। यह विद्यालय आपका घर है, दरिद्र हो या धनाढ्य। यह स्मरण रखना चाहिए कि गुरुकुलो, विद्यालयो या विश्वविद्यालयो की शोभा उनके दारिद्र्य मे है, न कि उनकी विलासिता मे। तपस्या और विद्यानुराग पर्यायवाची शब्द हैं। आज तपस्या पूर्वक तुम विद्यार्थी रहे, तो शायद आगे कभी जीवन मे तुम्हें सुखार्थी बनने का भी अवसर मिले। आगे के जीवन में तुम्हें सकटों से जूझना पड़ेगा, और सम्भवतया जीवन के समस्त सघर्षक्षेत्रों मे विजय तपस्वी और पुरुषार्थी की ही होती है। शायद तुम्हे दूर के भविष्य के लिए निकट के वर्तमान को सदा निछावर करना पड़े—इन सब स्थितियो को सुख से झेल लेने के लिए मेरा तुम्हें आशीर्वाद।

पाश्चात्य देशों में कन्वोकेशन का रिवाज धर्माचार्यों की काउन्सिलों से आरम्भ हुआ। विभिन्न श्रेणियों के पुरोहितों, पुजारियो की अलग-अलग पोशाक होती थी। धर्मसंघों की बैठकें समय समय पर विभिन्न प्रश्नो पर निर्णय के लिए बुलाई जाती थीं। इग्लैण्ड, जर्मनी, इटली और फ्रांस के विश्वविद्यालय धार्मिक आस्थाओं की

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ओ३म् यतो यत समीहसे ततो नो अभय कुरु ।
श न कुरु प्रजाभ्य अभय न पशुभ्य' ।।यजु. ३६.२२

हे प्रभो, आपकी सर्वत्र गति है, हम सर्वत्र आपके आश्रय मे भयरहित हो । हमें जो कुछ भी प्रिय है—हमारे परिजन एव सभी प्राणी सदा आश्वस्त भय-रहित रहें ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

नया वर्ष : नया संकल्प

बात कुछ विचित्र-सी लगेगी परन्तु है सौ टका सच्ची कि सृष्टि की काल-गणना क्रम १ अरब ९७ करोड २९ लाख ४९ हजार ८३ वर्षों का पक्का लेखा-जोखा रखने के बावजूद हमारे देश में एक राष्ट्र व्यापी सर्वसम्मत राष्ट्रीय सवत् प्रचलित नहीं है । कोई चैत्र मे वर्ष का आरम्भ करता है तो कोई वैसाख मे, कोई किसी विशिष्ट ऋतु से अपने वर्ष का प्रारम्भ करता है तो कोई दीयो के ज्योतिपर्व से । यह भी कितनी दु खद स्थिति है कि कुछ वर्ष पूर्व तक देश के व्यापारिक खातो मे देसी तिथियो और वर्षगणना का प्रचलन था, परन्तु पिछले वर्षों मे व्यावसायिक व्यवहार मे अ ग्रेजी सन् वर्षगणना की महत्ता व्याप्त हो गई है । देश मे राष्ट्रीय काल गणना प्रारम्भ करने की माग पर सरकार ने ध्यान भी दिया तो उसने एक ऐसी कालगणना प्रारम्भ की जो राष्ट्रीय पराभव की सूचना देती है अथवा यदि वह बात सन्दिग्ध हो तो उसके विदेशी उद्भव से राष्ट्रीय सम्मान को क्षति अवश्य पहुंचती है । उत्तरी भारत मे विक्रमी सवत् शताब्दियो से प्रचलित है, वह परम्परा और सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से भारत की वीरता और यशोगाथा की अमर ज्योति है, परन्तु हमारे तथाकथित आधुनिक विचारको और इतिहासज्ञो को भारत के यश की कहानी और अमर स्मारक कभी रास नही आते । वे इसकी प्रामाणिकता और इसके अमर नायक विक्रम के उस समय के अस्तित्व को ही प्रश्नचिह्न लगा देते हैं । ये आलोचक ऐसे लोग हैं जो ईट-पत्थरो और मिट्टी के प्रमाणो के बिना इतिहास और मानव की पुरानी कहानी स्वीकार नही करते ।

भारत ही नही, एशिया और ससार के विस्तीर्ण क्षेत्रो मे श्री राम, श्री कृष्ण, म० बुद्ध के शिष्यो और भक्तो ने अपने देश के महापुरुषो की अमर गाथा पत्थरो की मूर्त्तियो, जन कलाओ एव साहित्य मे अमर कर दी है । आज आवश्यकता यह है कि अमेरिका की मयभूमि, इण्डोनेशिया, इण्डोचीन, बाली, मगोलिया, चीन जापान, म० तुर्किस्तान आदि अनेक स्थानो के प्राचीन शिलालेखो, स्मारको, साहित्य में बिखरे हुए भारत के स्मृति चिह्नो और उसकी सस्कृति के प्राचीन सम्पर्कों को खोज कर उन्हें लेखबद्ध किया जाए । प्रागैतिहासिक काल से भारतीय सस्कृति के ध्वजवाहक देश देशातर-द्वीप-द्वीपान्तर मे अकेले या समूहो मे मानव सस्कृति के अभ्युदय और वसुधा के सुख-कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे हैं । पश्चिमी धर्मो और सस्कृति के प्रचारक धर्म और व्यापार के साथ शक्ति, लोभ, षडयन्त्र और धोखे का प्रयोग करने मे भी सकुचित नहीं हुए हैं, परन्तु भारतीय सस्कृति और धर्म के सन्देशवाहक केवल आत्मबल की शक्ति पर अकेले ही अज्ञान, कुरीतियो, अधर्म एव अभाव और कष्टो को दूर करने मे लगे हैं और यत्र-तत्र-सर्वत्र जाकर यशस्वी हुए हैं । हमें यत्न करना चाहिए कि भारतीय सस्कृति एव यशस्वी इतिहास की यशोगाथा के प्रतीक एक सच्चे राष्ट्रीय गौरव के चिह्न सौर विक्रमी सवत् जैसे किसी वर्ष को एक स्वर से अपना राष्ट्रीय सवत् स्वीकार करे ।

ऐसा राष्ट्रीय संवत् स्वीकार करने के बाद मनसा, वाचा-कर्मणा अपने मन, वाणी और कर्म से ऐसी कालगणना को अ गीकार कर अपने सास्कृतिक राष्ट्रीय जीवन में उससे तादात्म्य स्थापित करे । हम ससार भर की प्रमुख भाषाओ मे निकलने वाले विश्व के समस्त ज्ञान-विज्ञान के अमूल्य ग्रन्थो और आविष्कारो को अपनी भारतीय भाषाओ में आत्मसात् कर देश को प्रत्येक दृष्टि से सशक्त, सम्पन्न स्वावलम्बी और महान बना सकें, उसके लिए प्रत्येक देशवासी को नए वर्ष के मंगलमय अवसर पर कुछ संकल्प ग्रहण करने चाहिए । उन्हें व्रत लेना होगा कि हम राष्ट्र के सर्वांगीण अभ्युदय के लिए विश्व के वाङ्मय एव ज्ञान-विज्ञान के अनत-कोष से सब कुछ ग्रहण करते हुए जो भी अपना-पराया श्रेष्ठतम है, सत्य है, शिव है, सुन्दर है, उसे ग्रहण करेंगे । उससे स्वदेश की समुन्नति तथा उसकी भाषाओं, सस्कृति, प्राचीन वैदिक मानव धर्म की समुन्नति एव अभ्युदय के लिए व्यक्तिगत सामाजिक एव राष्ट्रीय प्रयत्नो को सगठित करने का सकल्प कार्यान्वित करेंगे । स्वाधीनता प्राप्ति के इतनो वर्षों के बाद देश मे जिस तरह भ्रष्टाचार, स्वार्थ एव विषमता बढ रही है, उसके मूल मे परोपकार, त्याग, बलिदान आदि के स्थान पर स्वार्थ, भोग एव अनाचार को प्रश्रय देना है । जब तक हमारी कथनी और करनी एक न होगी, जब तक हम दूसरों से जिस आचरण की अपेक्षा करते है उसे स्वत न करेंगे, तब तक स्थिति मे बुनियादी परिवर्त्तन नही आएगा । नए वर्ष के साथ हमे नया सकल्प लेना होगा कि हम मन-वचन-कर्म से, सच्चे आर्य मानव बनने का प्रयत्न करेंगे ।

चिट्ठी-पत्री

सोमरस के नाम से शराब का प्रचार न करें

५ फरवरी के 'डेली' समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ है कि महाराष्ट्र सरकार ने सोमरस डिस्टीलर्स के नाम से शराब की फैक्टरी खोलने का लाइसेन्स दिया । यह कितने आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो सरकार मद्यनिषेध का प्रचार करती है और दूसरी ओर नवीन फैक्टरी खोलने की अनुमति दे रही है । शराब एक ऐसी वस्तु है जिससे मनुष्य की शारीरिक और मानसिक स्थिति असन्तुलित ही नही होती वह उसको विनाश के कगार पर पहुचा देती है ।

'सोमरस' के नाम पर लाइसेन्स देना सरासर वेदादि शास्त्रो एव भारतीय संस्कृति के साथ अन्याय एव घोर अपमान करना है । वेदो मे कही पर भी 'सोम' शराब जैसे मादक द्रव्य के लिए प्रयुक्त नही हुआ । 'सोम' शब्द का अर्थ (सवति ऐश्वर्यवान् भवति) अर्थात परमात्मा, चन्द्रमा, ओषधि तथा शीतलता एव शान्ति के प्रदान करने वाले को 'सोम' कहा गया है । इस प्रकार परमात्मा के वाचक 'सोम' शब्द को शराब के साथ जोडने से करोडो हिन्दुओ की भावनाओ को ठेस पहुचेगी । वेद के किसी भी प्राचीन भाष्यकार ने 'सोम' शब्द का अर्थ शराब नही किया है, महर्षि दयानन्द ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से ब्राह्मण, निरुक्त, निघन्टु आदि ग्रन्थो के प्रमाण देकर 'सोम' शब्द को वास्तविक अर्थ मे प्रस्तुत किया जैसा कि ऊपर दिया गया है ।

कितने दुःख की बात है कि महर्षि दयानन्द ने सौ वर्ष पूर्व जिन वास्तविक अर्थों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया था, भारत के स्वतन्त्र होने के बाद भी हम पाश्चात्य विद्वानो द्वारा किये हुए अर्थों का परित्याग नही कर सके और ऋषि दयानन्दकृत सत्य अर्थों को स्वीकार नही कर पाए । 'सोम' जैसे पवित्र शब्द को शराब की फैक्टरी के साथ जोड कर हम अपनी सभ्यता, सस्कृति एव ईश्वरीय ज्ञान वेद पर स्वय कुठाराघात कर रहे हैं । कही ऐसा न हो आने वाली पीढी कुछ समय के पश्चात यह न समझने लगे कि 'सोम' शब्द का अर्थ शराब होता है ।

'सोमरस' शब्द के साथ शराब निर्माण फैक्टरी के खोलने की अनुमति देना करोडो आर्यों (हिन्दुओ) की धार्मिक भावनाओ का अपमान करना है । 'सोमरस डिस्टीलर्स' के प्रवर्तको से प्रार्थना है कि वे भारतीय सस्कृति एव सभ्यता को ध्यान में रखते हुए अपनी फैक्टरी के नाम मे परिवर्तन करे, अन्यथा आर्य (हिन्दू) समाज को जन आन्दोलन के लिए बाध्य होना पडेगा ।

—कैप्टन देवरत्न आर्य, महामन्त्री, आर्यसमाज शान्ताक्रुज बम्बई

चिन्तन की चांदनी में

—कन्हैयालाल मिश्र

एक गाधीवादी सज्जन अपने घर मे बैठे सूत कात रहे थे । उनके एक प्रगतिवादी मित्र सिगरेट का धुआ उडाते हुए आ पहुचे और चर्खे को देखकर बोले, "तुम्हारे कातने से क्रान्ति हो जाएगी क्या ?"

कातते ही कातते उन्होने कहा—"ना मेरे कातने से नही, क्रान्ति तो तुम्हारे सिगरेट पीने से ही होगी ।"

नहले पर बडा करारा दहला था—सिगरेट बाबू झेपे, मैंने दोनो की बात सुनी, तो मन चिन्तन मे डूब गया । तब सोचा हम जब किसी पर व्यग्य करते है, तो उसकी चोट का अनुभव नही कर पाते, वज्रहृदय बने रहते हैं । पर जब व्यग्य की चोट स्वय हम पर पडती है, तब हमारी निर्ममता का बाध पलक मारते टूट जाता है । यह कितनी विचित्र बात है ।

प्रद्युम्नलाल तलवाड, १-२०८ अशोक विहार, फेज-१ दिल्ली-५

भारतीय इतिहास का स्वतन्त्रता संघर्ष काल (७१२ ई० से १९४७ ई० तक)

महाभारत काल तक भारत का चक्रवर्ती साम्राज्य था। ससार का गुरु यह देश सोने की चिड़िया के नाम से पुकारा जाता था, किन्तु कौरव-पाण्डवो के विनाशकारी युद्ध मे देश के बहुत से विद्वान-बलवान योद्धा बलिदान हुए। उस युद्ध के बाद भारतीय समाज मे अविद्वानो ने पाखड को और बलहीन शासको ने मतभेदो को जन्म दिया। वाममार्ग फैला। धर्म और राजनीति मे निकृष्ट व्यक्तियो का प्रभाव बढने के कारण जैन और बौद्ध धर्मो का प्रादुर्भाव हुआ। अहिंसा का पालन अधिक होने के कारण क्षात्र धर्म प्राय समाप्त हो गया। स्वामी शकराचार्य जी के प्रशसनीय प्रयास से भारतीय समाज मे पुनर्जागरण हुआ। गुप्त शासको एव बाद मे महाराजा हर्षवर्द्धन ने भारत को सगठित कर शक्तिशाली बनाया, किन्तु हर्षवर्द्धन की मृत्यु के बाद भारत खडित हो गया। और अन्त मे विश्व शिरोमणि भारत पराधीन हो गया और सघर्षकाल से गुजरने लगा। भारत के शासक और समाज आपसी फूट और जाति-पाति के कारण एक दूसरे से ईर्ष्या करने लगे। राष्ट्र और सस्कृति के आपत्ति-काल मे एक दूसरे का साथ न देकर शत्रु का साथ देने लगे।

७१२ ई० में मुहम्मद बिन कासिम ने भारत पर आक्रमण किया। राजा दाहिर का न किसी राजा ने और न भारत के बौद्ध लोगो ने साथ दिया। राज्य मिलने के लालच मे राजा के मत्री बौद्धराज ने रात को किले के दरवाजे खोल दिए और फिर शत्रु ने सोए हुए भारतीय वीरो को गाजर-मूली की भाति कत्ल कर दिया। राजा दाहिर भारत के सम्मान की रक्षार्थ युद्ध मे मारा गया, उनकी रानी सती हुई। सत्रह वर्ष से ऊपर की आयु वालो को इस्लाम धर्म स्वीकार न करने पर कत्ल कर दिया गया। मुलतान, देवलपुर, जयपुर, कराची, बालोर के मन्दिर तोड़ कर मस्जिदें बनवाई। लाखों को कैद किया। तीन सौ तीस मन सोना दमिश्क पहुचाया। भारतीयो ने थोडे ही समय मे अपने को सभाल लिया और भारत अरबो से मुक्त हो गया।

गजनी के लुटेरे भूखे शासक ने भारत पर ९९९ ई० से १०२६ ई० तक सत्रह आक्रमण किए। कई हजार मन्दिर गिराए, अनेक हिन्दुओ का वध किया, हजारो को मुसलमान बनाया। चार हजार ऊटो वा घोडो पर चार हजार मन के लगभग सोना, चांदी, जवाहरात लाद कर गजनी ले गए। जहा ससार भर के लोग भारत की अतुल सम्पदा को देखने के लिए इकट्ठे हो गए। २७ वर्ष के निर्मम अत्याचार सहन करने के पश्चात फिर भारतीय विदेशी प्रभाव से मुक्त हो गए।

११९१ ई० मे मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण करने प्रारम्भ किए। वह पृथ्वीराज से पराजित हुआ। कई बार पराजित होने पर बराबर आक्रमण करता रहा। और १२०६ ई० मे कन्नौज के राजा जयचन्द की सहायता से भारत मे मुस्लिम राज्य स्थापित करने मे सफल रहा और हिन्दुओ के राजा यशपाल को प्रयाग के किले मे बन्द कर दिया। तीन-चार लाख हिन्दुओ के जनेऊ तोड़े— उन्हे ताबीज पहनाए। मुट्ठी भर आक्रमणकारियो के सामने फूट की महामारी से ग्रस्त विशाल भारत ने पराधीनता स्वीकार कर ली।

(१२०६ ई० से १२१० ई०) कुतुबुद्दीन ऐबक ने पचास हजार हिन्दुओ का धर्म-परिवर्तन कर मुसलमान बनाया। बिहार मे एक लाख हिन्दुओ का वध किया, जिनमे ब्राह्मण अधिक थे। कालिन्जर, मेरठ, दिल्ली, कोहल मे मन्दिर तोड कर मस्जिद बनवाई।

१२१२ ई० से १२३५ ई०) इलतुमिश ने उज्जैन, भेलसा का तीन सौ वर्ष पुराना महाकाल का मन्दिर तुडवाया और विक्रमादित्य की मूर्ति को दिल्ली की जामा मस्जिद के सामने गड़वाया। (१२९६ ई० १३१६ ई०) अलाउद्दीन ने कर्नाटक मे सभी मन्दिरो को मस्जिद बनवाया। चित्तौड़ के मन्दिर गिराए। राजा के आदेश के बिना विवाह नही हो सकते थे। रानी पद्मिनी का का जौहर अमर है। (१३२५-१३५१) मुहम्मद बिन तुगलक कन्दोज के मन्दिर तोडकर दो हजार हाथियो व १३ हजार बैलो पर सोना लाद कर ले गया। (१३९८ ई०) तैमूर ने एक लाख हिन्दू कैद किए और फिर उनकी हत्या की। मन्दिरो के स्थान पर मस्जिदें बनायी। बनारस के २२ हजार हिन्दुओ का मकान मे बन्द करके आग लगा दी। जम्मू के राजा को मुसलमान बनाया। ऐसे समय मे भारत के महान सन्तो ने एक व्यवस्थित भक्ति आदोलन से हिन्दू धर्म की रक्षा की। इनमे रामानुजाचार्य, नामदेव, रामानन्द, गुरु नानक, जयदेव, चैतन्य महाप्रभु, बल्लभाचार्य, मीराबाई, तुलसीदास, सूरदास आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

(१५३०-१५५५ ई०) हुमायू और शेरशाह ने बनारस जैसे पवित्र हिन्दू, तीर्थ को दो बार रौंद डाला तथा अनेक मन्दिरो को मस्जिदो मे परिवर्तित किया किन्तु पूरनमल और मारवाड के राजा मालदेव, कालिजर के कीरतसिह व खोखरो के सघर्षपूर्ण योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। चित्तौड के राणा सागा के बलिदान की कहानी अमर है।

(१५५६-१६०५ ई०) अकबर के समय में हेमू, गोडवाना की रानी दुर्गावती, चित्तौड के राणा प्रतापसिह का अद्भुत साहस और त्याग प्रेरणा स्रोत हैं। रणथम्भौर के शासक सुरजन, कालिजर के राजा रामचन्द्र, कश्मीर के भगवानदास के सघर्ष उल्लेखनीय हैं। अकबर ने चित्तौडगढ मे लिंगदेव मूर्ति तोडी।

(१६०६-१६२७ ई०) जहागीर ने मानसिंह के मन्दिर को मस्जिद बनवाया। पुरोहितो की सामूहिक हत्या की।

लेखक :

श्री मांगेराम आर्य

प्रधान—आर्यसमाज बाकनेर, दिल्ली

(१६२७-१६५८ ई०) शाहजहा ने भी सारे जीवन भर हिन्दुओ को बुरी दृष्टि से देखा। हिन्दुओ की सम्पत्ति लूटने और मन्दिरो को मस्जिदो का रूप देने मे लगा रहा।

(१६५८ ई० से १७०७) औरगजेब ने बनारस, मथुरा, अजमेर और अहमदाबाद मे (१६७९-८०) एक ही वर्ष मे ६०४ मन्दिर गिरवाए। अनेक मस्जिदें बनवाईं। बिहार के राजा प्रेमनारायण खरक कबीले के सरदार खुशहालसिंह, मथुरा के गोकल जाट नेता, नारनौल और मेवात के सतनामियो, मेवाड के राजा जयसिंह, पूज्य गुरु गोविन्दसिंह और बन्दा बैरागी, प्रात स्मरणीय छत्रपति शिवा जी का स्वतन्त्रता सघर्ष सदा अमर रहेगा। माता जीजा बाई और गुरु रामदास का भारत सदा ऋणी रहेगा। मुसलमान काल मे अनुमानतया ५० हजार मन सोना भारत से बाहर ले जाया गया, ३० हजार मन्दिर तोडे गए, २० लाख हिन्दू कत्ल किए गए और २० लाख हिन्दुओ का धर्म-परिवर्तन किया गया। अग्रेज शासन भारत में स्थापित हुआ और सघर्ष का दूसरा रूप प्रारम्भ हुआ। ईसाइयत का दौर शुरू हुआ। हिन्दुओं को ईसाई बनाया जाने लगा। मन्दिर तोड़े गए। मद्रास और गोवा में ईसाई अत्याचार चोटी पर था। मलाबार तट पर सन् १५५९ में लूई डी० मल्लू ने तलवार और आग की वर्षा कर सभी नगर और ग्राम नष्ट कर दिए। हिंदुओ को बलात् ईसाई बनाया।

(१७४७-१९४७ ई०) 'फूट डालो और राज्य करो।' अग्रेजो का मूल मंत्र था। भारतीय राजाओं को आपस मे लडाकर, जनता में पक्षपात की भावना भर कर अग्रेजो ने भारत में अपने राज्य की नींव पक्की कर ली। इस काल मे आमेर के राजा सवाई जयसिंह भरतपुर के जाट राजा सूरजमल, अवध मे रुहेलो ने, पजाब मे सिखों ने, महाराष्ट्र मे मराठो ने अपने स्वतन्त्रता प्रेम का अविस्मरणीय परिचय दिया। १८४९ ई० के लगभग समस्त भारत अग्रेजों के अधीन हो गया। राजनीतिक परतन्त्रता के साथ-साथ भारतीयो का धार्मिक और आर्थिक शोषण भी किया गया। अग्रेजों के इस अत्याचार के कारण ही १८५७ ई० मे भारतीयो ने प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध छेड दिया। निश्चित समय से पहले युद्ध के छिडने से, नेता, धन और युद्ध सामग्री की कमी के कारण हम इस युद्ध मे असफल हुए, किन्तु इस युद्ध ने भारतीयो मे राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत कर दी। सगठन की भावना पैदा हुई। स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द आदि धार्मिक व सामाजिक नेताओ ने स्वतन्त्रता सघर्ष को बल दिया। १८८५ से १९४७ तक स्वतन्त्रता सघर्ष मे लोकमान्य तिलक, गोपालकृष्ण गोखले श्याम कृष्ण वर्मा, ला० लाजपत राय, वीर सावरकर, सरदार भगतसिंह व उनके साथी, वीर सुभाषचन्द्र बोस, पं० जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, महात्मा गांधी आदि देश भक्तों ने बढ़-चढकर भाग लिया। स्वतन्त्रता सघर्ष किसी न किसी रूप में हर समय जारी रखा। त्याग और बलिदान से भारतीय इतिहास भरा पड़ा है। फासी के तख्तो को सजाने वालो की अमर कहानी है। जेलो मे असह्य कष्ट सहने वालो में, फांसी पर झूलने वालो मे अधिक सख्या देव दयानन्द के शिष्यो की थी।

१५ अगस्त, सन १९४७ ई० के पश्चात भी सघर्ष ने नया रूप धारण कर लिया। देश मे अत्याचार और भ्रष्टाचार के कारण देश की साधारण जनता की दशा शोचनीय है। परिश्रमी और ईमानदार का जीवन दुःखी है। अत इन दो महान शत्रुओं (अत्याचार और भ्रष्टाचार) के विरुद्ध सघर्ष शेष है। अनुमानतया यह संघर्ष आगामी १९-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आचारहीन को चुनने से राष्ट्र का पतन

आज हमारे और हमारे राष्ट्र के जीवन मे मत (वोट) का बडा महत्व है। लोक सभा, विधान सभाओ आदि के लिए विधायको के निर्वाचन के लिए जनता का मत देने का काम एक बड़ा भारी दायित्व है। अपना वोट (मत) न देने, अथवा देने परन्तु किसी अयोग्य आचारहीन वा योग्य आचारवान व्यक्ति या पार्टी के पक्ष मे मत देने से किसी राष्ट्र का कलेवर ही बदला जा सकता है। किसी अयोग्य प्रत्याशी (उम्मीदवार) या पार्टी को वोट देने से बडे-बडे राष्ट्र नष्ट हो सकते हैं और किन्ही राजनीतिक पार्टियों का नाम तक समाप्त हो जाता है और जनता का जीवन अराजकता फैलने के कारण और राष्ट्र विरोधी तत्वो के पनपने के परिणाम-स्वरूप अस्त व्यस्त हो जाता है। दूसरी ओर योग्य आचारवान व्यक्तियो, पार्टी के पक्ष में वोट-मत देकर और उनको सफल बना कर बिगड़े देश को सबल, समृद्ध और सम्पन्न और खुशहाल बनाया जा सकता है और इसके परिणाम-स्वरूप जनता जनार्दन के जीवन का नक्शा ही बदल जाता है। लोग सुख की नीद सोने लगते हैं। राज्य व्यवस्था बडे सुन्दर ढग से चलने लगती है और प्राजन महाराजा अश्वपति तथा मर्यादा पुरुषोत्तम राम के राम राज्य मे जैसे रहने के स्वप्न लेने लगते हैं। वास्तव मे योग्य आचारवान, निस्वार्थी लोगो को वोट देने से ही ऋषि कोटि के नेतागण तथा योग्य शासको का उपलब्ध होना सम्भव होता है, जो अपनी योग्यता, शुद्धाचरण और देशभक्ति और जनसेवा की भावना से कार्य करके राष्ट्र में बल (राष्ट्र की भौतिक शक्ति, देशवासियो के शारीरिक बल, उसके पुलिस और सैन्य शक्ति, शासनचक्र के तेज और सामर्थ्य को) और ओज (आत्मिक शक्ति, राष्ट्र के लोगो के मानसिक बौद्धिक तथा आत्मिक बल, उनकी बुद्धिमत्ता, नैतिकता तथा ज्ञान विज्ञान) को पैदा कर देते हैं। ऐसे ही बलशाली तथा ओजस्वी राष्ट्र की नीतियों और राज्य व्यवस्था के आगे देश-विदेश के विद्वान ज्ञानी जन तक नतमस्तक होते हैं और बडी सराहना करने लगते हैं। यही तो वेद में कहा गया है—

"भद्रमिच्छन्त ऋषय
स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जात,
तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।"

भारत को छोड़कर विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र प्रणाली अपनाने वाले देश सयुक्त राष्ट्र अमेरिका के स्वर्गीय राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने वोट (मत) का महत्व जताते हुए एक बार कहा था "एक मतपत्र एक गोली से अधिक शक्तिशाली है, क्योकि पिछले से कुछ की ही हत्या होती है, परन्तु पहले से सारे देश का पतन हो सकता है।" एक-एक वोट केवल वोट के असावधानता और विचारपूर्वक न देने के कारण बडे-बडे भयंकर परिणाम हो जाते हैं। इस लिए वोट का सही और विचारपूर्वक योग्य प्रत्याशी को देना ही देश की सच्ची सेवा है।

लेखक :
चमन लाल
प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार

हमारे देश मे भी प्रजातन्त्र प्रणाली की व्यवस्था है। सौभाग्यवश यही शासन पद्धति प्राचीन काल से इस विशाल देश मे चलती आ रही है। प्राप्त जानकारी के आधार पर यह लोकतन्त्र व्यवस्था मध्यकाल के लगभग एक सहस्र वर्षों (नन्द, मौर्य, गुप्त, मुस्लिम तथा अंग्रेजो के शासन काल) को छोडकर प्राचीन वैदिक काल मे लेकर चौथी पाचवी शताब्दी तक इस देश मे प्रचलित रही है। और वास्तव मे यही शासन प्रणाली भारत मे प्राचीनतम है। सभवत. इसी आधार पर हमारे सविधान निर्माताओ ने इस प्रणाली का इस देश के लिए उपयोगी मान कर चुना हो। परन्तु यह कटु सत्य है कि वर्तमान मे चल रही प्रजातन्त्र प्रणाली जनमत का मजाक बन कर रह गई है। भ्रष्टाचार जात-पात, भाईचारा, दलबदल आयाराम गयाराम और पैसे के दुरुपयोग ने इस पवित्र शासन पद्धति को सारहीन निरर्थक और लगडी करके रख दिया है। मतदाता और प्रत्याशियों की योग्यता का कोई विशेष स्तर भी तो निश्चित नही है। सिवाय इक्कीस वर्ष की आयु व्यवस्था के। इसी लिए यह प्रणाली पैसे के प्रयोग के कारण व्यवसायिस्मिका बन कर रह गई है। जात-बिरादरी, मजहब मिन्नत, लोभ लालच, झूठे आकर्षक वायदे, कही-कही तरह-तरह की धमकियो से अधिकतर बेचारे अशिक्षित ग्रामीण तथा झुग्गी-झोपडी वालो से वोट लेना एक साधारण-सी बात हो गई है। मतदाताओ को मूक पशुओं की तरह वोट देने पर बाध्य किया जाता है। पैसे का बोलबाला है—'पैसा दो', 'वोट लो।' इस प्रकार तथाकथित जनता द्वारा चुने गए विधायक रुपये पैसे और कुर्सी पदों के लालच मे दलबदल करने से लेशमात्र भी नहीं लजाते, और जनता के पास ऐसा कोई साधन भी तो नही है कि जिसके आधार पर इन निर्लज्ज विधायको को दुबारा चुनाव लडने के लिए विवश किया जा सके। इस प्रकार लोभ-लालच देकर इन 'आयाराम गयाराम' की सहायता से राजनीतिक पार्टी सत्ता हथियाने मे आसानी से सफल हो जाती है और जनता असहाय-सी देखती रह जाती है। इस प्रकार राजनीति इतनी दूषित और गन्दी हो गई है कि कोई भी बुद्धिजीवी आत्म सम्मान वाला व्यक्ति इस स्थिति को देखकर सन्तुष्ट नहीं है और साथ ही पख कटे पक्षी की तरह तडप-तडप कर अन्दर ही अन्दर घुल रहा है। अत राजनीति को सब के लिए उपयोगी और स्वस्थ बनाने के लिए इसमे अविलम्ब कुछ सुधार लाने की अत्यावश्यकता है। सर्वप्रथम मतदाता तथा प्रत्याशी के लिए कुछ योग्यता का स्तर निश्चित करना चाहिए ताकि सही और आचारवान योग्य व्यक्ति ही चुने जाए, दूसरा रुपये पैसे देने लेने वालों को दोषी घोषित करने का विधान हो, तीसरा—आयाराम गयाराम और दलबदल करने वालो को प्रोत्साहन न दिया जाए, और इन पर प्रतिबन्ध लगाया जाए, तथा समाज ऐसे लोगो को किसी तरह का सम्मान न दे, इनका सामाजिक बहिष्कार किया जाए। इस प्रकार वर्त्तमान राजनीति में कुछ सुधार की आशा की जा सकी है नही तो यह राजनीति एक तमाशा मात्र है और साक्षात जनता का घोर अपमान है।

अत. मतदाताओको किसी भी चुनाव मे मत देते समय बडे सतर्क और सावधान होने की आवश्यकता है। उन्हे गम्भीरतापूर्वक विचार कर किसी प्रलोभन मे आये बिना स्वतन्त्रतापूर्वक अपने कीमती वोट का प्रयोग करना चाहिए। यही देश की सच्ची सेवा और देश भक्ति है। देश के गौरव को बढ़ाने वाली नीतियो और जनता के हितो के कार्यक्रमो को दृष्टि मे रखकर आचारवान योग्य व्यक्ति को वोट देना ही सच्ची मानवता भी है।

धैर्य के धनी

—पदमावती तलवाड

एक था लडका निहायत बुद्धू। अपनी अज्ञानता के कारण वह कदम-कदम पर अपमानित होता। इस अपमान ने उसे बहुत निराश कर दिया। एक दिन वह अपने विद्यालय से भाग निकला, कभी न लौटने के विचार से। कुछ आगे बढने पर वह एक कुए पर पानी पीने गया। वहा गाव की औरतें पानी भरने के लिए आती। कुए से पानी खींच कर वे घडे को पत्थर पर रख देती। उस बालक ने देखा कि कुए की जगत पर रस्सी की रगड से निशान पड गए हैं। बालक के मन मे एक आशा की किरण चमकी और उसने सोचा जब मुलायम रस्सी की बार-बार और मिट्टी के घडे से भी पत्थर जैसी कठोर वस्तु पर निशान और गड्ढे पड सकते हैं तो सच्ची लगन निरन्तर परिश्रम से कोई भी व्यक्ति विद्वान बन सकता है। वह लौट पडा उसने धैर्य और लगन से पढाई शुरू की। यही बालक बडा विद्वान सिद्ध हुआ और इसने देवगिरि नरेश के दरबार की शोभा ही नही बढ़ाई, बल्कि अपनी अपूर्व प्रतिभा और पाण्डित्य से 'मुग्ध बोध' नामक सस्कृत का व्याकरण ग्रन्थ भी तैयार किया। यही सस्कृत का विद्वान बोपदेव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यदि निराश होकर घबरा जाता तो जीवन मे कुछ न कर पाता, परन्तु, उसने धैर्य से लगन से विश्व को एक अद्भुत देन दी।

—आई २०८ अशोक विहार, दिल्ली-५२

शैक्षणिक क्षेत्र मे गुरुकुल कागडी का सम्मान

हरिद्वार। गुरुकुल कागडी एव आर्यजगत् के लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कोर्ट (सीनेट) का सदस्य मनोनीत किया है।

यह भी उल्लेखनीय है कि गुरुकुल के सस्कृत विभाग के रीडर डा० निगम शर्मा और वेद विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डा० भारतभूषण पूना के एक अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन मे भाग लेने गए और वहा उन्होने अपने विद्वतापूर्ण लेख पढे। डा० विनोदचन्द्र सिन्हा ने जनवरी ८३ मे मथुरा सग्रहालय शताब्दी समारोह मे 'मथुरा कला की प्रमुख उपलब्धिया' शीर्षक अपना शोध-लेख पढा।

पिछले दिनो भारतीय विश्वविद्यालय सघ द्वारा कानपुर मे आयोजित ५८ वें वार्षिक समारोह मे गुरुकुल विश्वविद्यालय की ओर मे उसके कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा तथा कुल सचिव डा० जबरसिंह सैंगर सम्मिलित हुए।

आर्य जगत् समाचार

नव संवत्सर शोभा यात्रा में सम्मिलित हों

आगामी १४ अप्रैल, १९८३ को दोपहर १ बजे एक विशाल नव सम्वत् शोभा यात्रा गाधी मैदान से प्रारम्भ होकर दीवान हाल, गौरी-शकर मन्दिर, साइकिल मार्केट, दरीबा, चादनी चौक, नई सडक, चावडी बाजार, लाल कुआ, नया बास, खारी बावडी, चादनी चौक, फव्वारा होते हुए साय काल गाधी मैदान मे एक विराट सार्वजनिक सभा मे बदल जाएगी। इस शोभा यात्रा मे हिन्दू समाज के सभी सगठन व सस्थाए सम्मिलित होगी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक वक्तव्य मे आर्य सस्थाओ एव आर्य जनता से अनुरोध किया है—इसी दिन आर्यसमाज का भी स्थापना दिवस धूमधाम मे मनाया जाता है, इसलिए दिल्ली की आर्यसमाजो को इस शोभा यात्रा मे नाम पट्टो और ओइम् ध्वज के साथ भाग लेना चाहिए।

आर्य महासम्मेलन व आर्यसमाजों में युवा शक्ति का संगठन

युवक कार्यकर्ताओं व आर्यसमाज के अधिकारियों की बैठक

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य की मासिक बैठक आगामी १७ अप्रैल रविवार साय ४ बजे महाशय धर्मपाल (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा) की अध्यक्षता मे आर्यसमाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी मे होगी। आर्यसमाज के कार्य-कर्ताओ व अधिकारियो की इस विशाल बैठक मे उत्तरी दिल्ली जिले के "आर्य महासम्मेलन" व आर्यसमाज मे युवको को प्रोत्साहन देने पर मुख्य विचार होगे।

आर्य केन्द्रीय सभा की आवश्यक बैठक

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो, आर्य सस्थाओ, डी० ए० वी० स्कूलो तथा आर्य युवको की आवश्यक बैठक दिनाक १७-४-८३ रविवार साय ४ बजे से आर्य समाज कबीर बस्ती पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली ११०००७ मे बुलाई गई है। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने समस्त आर्य बन्धुओ से अनुरोध किया है कि अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर सगठन शक्ति का परिचय दे।

महात्मा हसराज स्मृति फुटबाल टूर्नामेन्ट व दौड

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान मे १० अप्रैल १९८३ रविवार प्रात ७ बजे से हसराज कालेज जवाहर नगर, दिल्ली-७ मे श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा की देखरेख मे फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया है विजेता टीम को १७ अप्रैल को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम मे प्रात ९ बजे शील्ड प्रदान की जायेगी। १५ वर्ष तक के युवको की दौड भी होगी। उन्हे भी पुरस्कार दिए जायेंगे। प्रति स्पर्द्धा मे आर्य समाज से सम्बधित सभी सस्थाए आमन्त्रित हैं। श्री प्रेमनाथ चड्डा (सभा प्रधान) तथा अनिल शर्मा (निगम पार्षद) को आमन्त्रित किया गया है।

आर्यसमाज अशोक विहार में होली महोत्सव

आर्यसमाज अशोक विहार मे सोमवार दिनाक २८-३-८३ को और मगलवार दिनाक २९-३-८३ को होली (नव शस्येष्टि) का बृहद यज्ञ और मगल मिलन का हास्यरस का रगारग कार्यक्रम बडा सफल रहा। सैकडो स्त्री-पुरुषो ने इस प्रोग्राम मे भाग लिया। हास्यरस के तरह-तरह के कार्यक्रम रखे गये थे। लोगो पर बडा अच्छा प्रभाव पडा। दोनो ही दिन यज्ञशेष के रूप मे शुद्ध घी के हलवे का प्रसाद वितरण किया गया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह दिनाक ३, ४, ५, और ६ नवम्बर १९८३ को अजमेर मे दीपावली पर विश्रामस्थली, पुस्कर रोड पर मनाया जाएगा।

२५ मुस्लिम धर्मावलम्बी आर्य धर्म में

शुद्धि सभा द्वारा आर्यसमाज हनुमान रोड मे शुद्धि अभियान

रविवार ३ अप्रैल '८३ को ११ बजे आर्यसमाज हनुमान रोड मे २५ सदस्यो वाले दो मुस्लिम परिवार शुद्धि द्वारा आर्य धर्म मे प्रविष्ट किए गए। यह आयोजन शुद्धि सभा की ओर से आर्यसमाज हनुमान रोड की ओर से किया गया था हवन यज्ञ और शुद्धि का सस्कार प० रूपकिशोर जी शास्त्री ने कराया। इसमे अनेक आर्य समाजो के अधिकारी और २०० के लगभग आर्य महानुभाव सम्मिलित हुए। आर्य महानुभावो ने स्वेच्छा से व्यक्तिगत शुद्धि सभा को बहुत-सा दान दिया। शुद्धि आदि के कार्यक्रम के पश्चात् आर्यसमाज हनुमान रोड की ओर से इस अवसर पर उपस्थित भाई-बहिनो के लिए प्रतिभोज का प्रबन्ध किया गया।

१७ अप्रैल को तालकटोरा गार्डन में

महात्मा हंसराज दिवस

आर्य प्रादेशिक सभा, डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी, आर्य केन्द्रीय सभा, समस्त डी. ए. वी सस्थाओ एवं अन्य आर्य सस्थाओं की ओर से प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस समारोह रविवार, १७ अप्रैल ८३ को नई दिल्ली के तालकटोरा गार्डन इण्डोर स्टेडियम मे प्रात ९ से १२ बजे तक भारत सरकार के सूचना एव प्रसारण मन्त्री माननीय श्री एच. के. एल भगत की अध्यक्षता मे मनाया जाएगा। महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी के पधारने की भी पूर्ण आशा है। श्रम मन्त्री श्री धर्मवीर, उप स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण मन्त्री बहिन बहिन कुमुद जोशी, डी.ए.वी कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो. वेदव्यास, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल 'आर्य जगत्' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार, प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति इस समारोह मे पधारेंगे।

प्रात. ९ से ९ ४५ तक यज्ञ होगा। ठीक १० बजे सभा आरम्भ होगी। इस समारोह के अवसर पर कुलाची हसराज माडल स्कूल अशोक विहार एव हसराज माडल स्कूल पजाबी बाग के छात्र-छात्राओ के रोचक सास्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन भी होगा।

योगाचार्य नारायणदास कपूर को श्रद्धांजलि

आर्यविद्वानों एव आर्यजनों द्वारा श्री कपूर का मूल्यांकन

आर्य केन्द्रीय सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य-समाज हनुमान रोड एव अन्य अनेक आर्य सस्थाओ के भूतपूर्व प्रधान श्री योगाचार्य नारायण दास कपूर के निधन पर रविवार ३ अप्रैल १९८३ को प्रात १० बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड मे श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट की अध्यक्षता मे एक शोक सभा हुई।

इस अवसर पर अनेक आर्य विद्वानो और नेताजनो ने कपूर जी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। वक्ताओ मे श्री सरदारीलाल वर्मा उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री हसराज चोपडा उप प्रधान आर्यसमाज हनुमान रोड, श्री सत्यपाल मलीन, श्री नवनीत एडवोकेट, श्री तिलकराज मल्होत्रा, श्री द्वारिकानाथ, श्री झण्डा-धारी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन वक्ताओ ने श्री कपूर जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वह एक प्रसिद्ध योगाचार्य, एक अच्छे प्रशासक, सुधारक एव प्रचारक थे। हिन्दू समाज का सगठन, शुद्धि आन्दोलनो को जोर-शोर से चलाना उनके जीवन लक्ष्य थे और उनका सम्पूर्ण जीवन शुद्धि, पवित्र और सत्य पर निर्भर था।

आर्यसमाज लोधीरोड-जोरबाग का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लोधी रोड-जोर बाग नई दिल्ली का ४० वा वार्षिकोत्सव २४ अप्रैल से १ मई, १९८३ तक सैन्ट्रल पार्क, लोधी रोड नई दिल्ली मे मनाया जायगा। इस अवसर पर विशाल गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया है। कथा प्रो. अशोक कुमार वेदालकार प्रस्तुत करेंगे। इस अवसर पर विशाल शोभा-यात्रा एव महिला सम्मेलन के कार्यक्रम भी होगे।

शुद्धिकरण और विवाह

२२ मार्च १९८३ को आर्यसमाज हनुमान रोड ने श्री रूपकिशोर शास्त्री की अध्यक्षता मे दो युवतियो (एक मुस्लिम और एक ईसाई) की शुद्धि के बाद उनका विवाह दो सुशिक्षित रोजगार मे लगे नवयुवको के साथ कर दिया। उन दोनो प्रसन्न नवविवाहित वर-वधुओ को समाज के अधिकारियो ने आशीर्वाद दिया।

१००० आर्य युवकों द्वारा सामूहिक प्रतिज्ञा का निश्चय

केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने ३, ४, ५, ६ नवम्बर, १९८३ को महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर दीपावली के दिन अजमेर में १३ वर्ष में से ४८ वर्ष के १००,० आर्य युवको द्वारा एक वेष मे पथ सचलन कर अज्ञान, अन्याय और अभाव का दूर करने की सामूहिक प्रतिज्ञा करने का सकल्प किया है।

आर्यसमाज नया बांस का वार्षिकोत्सव एवं यज्ञ

आर्यसमाज नया बास का ६२ वा वार्षिकोत्सव ८, ९, १० अप्रैल १९८३ को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ३१ मार्च से १० अप्रैल तक प्रात ७॥ से ९ बजे तक यजुर्वेदीय ब्रह्म पारायण यज्ञ किया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा हैं श्री रामकिशोर जी वैद्य। ३१ मार्च से ७ अप्रैल ८३ तक रात्रि ८-४५ से ९-४५ तक युगपुरुष श्रीराम एव योगिराज श्रीकृष्ण के वैदिक स्वरूप पर युवा वक्ता प्रो वीरपाल विद्यालकार के प्रवचनो की श्रृ खला। ८ अप्रैल को रात्रि ८ बजे से प्रो० उत्तमचन्द्र शरर की अध्यक्षता मे कवि-सम्मेलन होगा।

आर्य स्त्री समाज नया बास का २५ वा वार्षिकोत्सव शनिवार ९ अप्रैल को दोपहर १ से ५ बजे तक होगा। १ से दो बजे तक श्रीमती शान्ति देवी अग्निहोत्री के ब्रह्मत्व मे यज्ञ होगा। २ से तीन ३ तक सगीत। ३ से ५ बजे तक श्रीमती प्रेम शील महिन्द्रू की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन होगा। श्रीमती उषा शास्त्री और श्रीमती प्रकाश आर्या भाषण देगी।

रविवार १० अप्रैल को प्रात ९॥ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति एव प्रवचन प्रो० उत्तमचन्द्र शरर का। मध्याह्न २ बजे से ५ बजे तक प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता राष्ट्रीय एकता सम्मेलन होगा, जिसमे प० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० प्रशान्त वेदालकार, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डा० बनारसी सिंह आदि के प्रवचन होगे।

आचार्य मित्र जीवन की सुपुत्री अपराजिता का शुभ विवाह

नई दिल्ली। बम्बई के सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान आचार्य मित्र जीवन (भूतपूर्व नासिरुद्दीन कमाल) की सुपुत्री अपराजिता शुभ विवाह रविवार २० मार्च को आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल मे श्री रविशकर सुपुत्र श्री जगदीशचन्द्र आर्य (पुरोहित आर्यसमाज कृष्णनगर) से सम्पन्न हुआ। श्री पण्डित शिवकान्त उपाध्याय ने वैदिक रीति से विवाह सस्कार सम्पन्न कराया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले एव सभा के कोषाध्यक्ष एडवोकेट श्री सोमनाथ, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने वर-वधू को आशीर्वाद तथा डा० मित्र जीवन और प० जगदीशचन्द्र को बधाई दी।

ज्ञानधारा प्रशस्त करो ··(पृष्ठ २ का शेष)

की शिक्षा के लिए ही खोले गए थे। बाद को यूरोप मे 'विज्ञान' का युग आया और नई क्रान्ति उत्पन्न हुई। फलत विश्वविद्यालयो का रूप भी बदल गया। आज विश्वविद्यालयो मे दर्जनो प्रकार के विषयो की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध है। सभी विषयो मे बडी तेजी से प्रगति हो रही है। जिन पुस्तकालयो मे सहस्र पुस्तकें थी उनमे आज ५ लाख पुस्तके भी कम समझी जाती हैं। विचित्र गति से बढ़ते हुए ज्ञान-विज्ञान को आत्मसात् करने के निमित्त विद्यार्थी के लिए ८-१० वर्ष से अधिक का समय नही है। पुराने विद्यार्थी के पास वेद-वेदाग के अध्ययन के लिए १५-२० वर्ष थे, और आज भी विद्यार्थी को इतने ही वर्षों तक आज के ज्ञान को आत्मसात् करना है। अत हमे शिक्षा के तन्त्र को नए ढग मे ढालना पड रहा है। सब व्यक्ति सब विषय नहीं पढ सकते—उच्चतर शिक्षा के लिए सबको अपनी रुचि और योग्यता के विषय चुनने पडते हैं। भारतीय विद्यार्थियों ने इस दिशा मे अच्छी सफलता प्राप्त की है। मुझे अपने विद्यार्थी-स्नातको पर गर्व रहा है। देश स्वातन्त्र्य के अनन्तर इन्हे विज्ञान, कला-कौशल और शासन के क्षेत्र मे अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई। आप आत्मविश्वास पूर्वक जीवन में प्रवेश करें। यदि आप मे आत्मगौरव और आत्मविश्वास है, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी। जो कुछ भी यहाँ आपने सीखा है, उसे अकिंचन न मानें। जीवन की आधारशिला बनने के लिए इतनी शिक्षा बहुत काफी है। विद्योपार्जन में कभी प्रमाद नही कीजिएगा। अपने ज्ञान को नित्य नया बनाने के लिए सदा उद्यत रहिएगा।

सब बाते किताबो के द्वारा ही पढायी जा सकती। कालेज मे आप ५-६ घटो के लिए आते हैं, किन्तु समाज के वातावरण मे आपको बहुत-सा समय बिताना पडता है। पुराने गुरुकुलो की तरह अब आप को समाज से अलग करके नहीं रखा जा सकता। जिस देश मे रेडियो और टेलीविजन हो, उसके विद्यार्थी निर्लिप्त होकर कैसे रह सकते हैं? आज तो सेना के सिपाहियो से भी कोई बात छिपाकर नही रखी जा सकती है—उन्हे बैरको मे कैद नहीं रखा जा सकता, और न विद्यार्थियों को छात्रावासो की चहारदीवारी के भीतर अनुशासित करके हम रख सकते हैं। यह समाचार-पत्रो का युग है। पाठ्य पुस्तको की अपेक्षा ये समाचार-पत्र आपके मनोबल को गिराते, उठाते, निरन्तर झकझोरे देते रहते हैं। टेलीविजन से प्रसारित क्रिकेट मैचो की आलोचनाएँ दिन-रात आपको उत्सुकता के नए क्षेत्रो मे व्यक्त और अनुरत करती रहती है। आजके विद्यार्थी को जीवन के इस कोलाहल मे रह कर ही पढाई के लिए समय निकालना है। इन नई समस्याओ का समाधान आपको ही निकालना पडेगा। सावधानी से आप ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जिसमे आपका वर्तमान और भविष्य दोनों उज्ज्वल हो। आपमे बहुत से स्नातकोत्तर कक्षाओ के विद्यार्थी हैं। आप ऐसे विद्वान यदि समस्याओं को नहीं समझगे, और उनका समाधान नहीं निकालेंगे, तो कही ऊपर से समाधान निकालने वाला महामानव तो नही आएगा। महा-मानव भी तो आप ही हैं आपमे से प्रत्येक महामानव की पात्रता रखता है। विद्यार्थी जीवन को विक्षुब्ध करने के लिए आज अनेक षड्यन्त्र रचे गए हैं। ये आपको फुसलाकर आपको जोश दिलाकर, आपकी प्रशसा करके मार्ग से डिगाने के लिए बराबर प्रयत्नशील हैं। १८ वर्ष से २२ वर्ष की आयु मनुष्य जीवन मे बडे महत्त्व की है। यदि आयु के ये ४-५ वर्ष आपके उछलकूद मे, बहकाने और पथभ्रष्ट होने में बिता दिए तो फिर भविष्य मे इतना बराबर पछताना रहेगा। आप अपने विद्यार्थी सगठनो को नई दिशा दे, जिससे कोई भी बाहरी प्रवृत्ति आपको तपस्यापूर्वक अध्ययन करने में बाधक न हो। समाज मे अनेक अनैतिक तत्त्व प्रवेश कर गए हैं। प्रयत्न कीजिए कि ये तत्त्व आपको विकृत न करें। नये समाज की अनैतिकता के सम्बन्ध मे मैं आलोचना नही करना चाहता। सभी स्वीकार करते हैं कि समाज मे अनैतिकता है। सभी को शिकायत है, इससे सभी तग हैं—पर दूर कौन करेगा? आपके सामने मैं यह समस्या इसलिए रख रहा हू, कि आपको भी इन्ही तत्त्वो से सघर्ष करना पडेगा। जो आज वृद्ध हैं, वे ३० वर्ष पूर्व आपके से ही युवक थे। आप भी एक दिन युवक से वृद्ध बनेंगे। युवकों और वृद्धो के बीच सघर्ष की कल्पना ही नही करनी चाहिए। सावधानी से जीवन की यथार्थता को स्वीकार करें, और समस्याओ को आगे उलझाने की बाते छोड दे। आज के जीवन मे हमे पिछले जीवन की अपेक्षा अधिक अनुशासन की आवश्यकता होगी। यह अनुशासन कोई दूसरा आप पर आरोपित करे। उससे पूर्व आप स्वय अपने को अनुशासित करने को उद्यत रहें। ऐसा करने मे ही का माधुर्य और सौन्दर्य है। कुलपति, प्राचार्य, आचार्य या राष्ट्रपति या प्रधानमत्री की ओर से आरोपित अनुशासन मे कटुता और कुरूपता होती है। ऊपर से आरोपित अनुशासन मे विवशता है, और उसकी सफलता मे सन्देह रहता है। पुराने गुरुकुलो का विद्यार्थी अपनी ओर से इन अनुशासनो को स्वीकार करता था। इस स्वीकारने का नाम ही व्रती होना है। सत्य का व्रती होना, उस व्रत के लिए तपस्वी होना, और फिर दीक्षित होना-यह हमारे देश की पुरानी परम्परा है। मैं यह कोई बात पुराने युग की नही कह रहा हू। मैंने ससार के कतिपय देशो के अत्युच्च विश्वविद्यालय देखे हैं जिनमे विद्यार्थियो का जीवन बिना बाह्य-अनुशासन के स्वय अनुशासित है।

होली महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद-दिल्ली प्रदेश की ओर से 'होली महोत्सव' राजधानी के विभिन्न स्थानो पर धूमधाम व सादगी से सम्पन्न हुआ। युवको ने चन्दन, अबीर, गुलाल, फूलों से समाज के सभी वर्गों से होली खेली, पवित्रता व शिष्टाचार से त्योहार मनाया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् विक्रान्त नगर के युवकों ने क्षेत्र के झुग्गी-झोपड़ी निवासियों को गुलाल के टिक्के लगाए व आपस मे प्रेम से गले मिले।

गुरु तेगबहादुर नगर, मुखर्जी नगर, करौल बाग, यूसुफ सराय, रानी बाग, तिलक नगर आदि के युवकों ने भी 'होली' पर्व परम्परागत उत्साहपूर्ण वातावरण मे मनाया। आर्य युवक मण्डल, कबीर बस्ती के युवको ने इस अवसर पर पुरानी सब्जी मण्डी मे 'होली यज्ञ' रचाया।

एक समारोह मे परिषद् अध्यक्ष ब्र. राज सिंह आर्य ने राष्ट्र के नागरिको को आपसी प्रेम व सदव्यवहार से समाज मे व्याप्त कुरीतियो के उन्मूलन पर बल दिया। सभा का आयोजन आर्य समाज पुलबंगश ने किया, जिसमे क्षेत्रीय आर्य समाजो के अधिकारियो ने भी 'फूलो की होली' खेली व सामूहिक अल्पाहार किया। स्थानीय तथा मौहल्ला निवासियो ने व सामाजिक कार्यकर्ताओ ने घर-घर मे जाकर एक दूसरे को चन्दन के तिलक लगाये व फूल बरसाए।

आर्यसमाज विनयनगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज विनय नगर सरोजिनी नगर नई दिल्ली का वार्षिक उत्सव २ मई से ८ मई ८३ तक सरोजिनी मार्किट पार्क (पजाब नेशनल बैंक के सामने) मनाया जाएगा। प्रात काल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती होगे। रात्रि को स्वामी जी वेद-कथा करेगे। ६, ७ व ८ मई को वार्षिकोत्सव होगा। जिसमे अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलनो का आयोजन किया गया है बहुत से विद्वान्, सन्यासी, आर्यनेता पधार कर अपने विचार रखेंगे।

भारतीय इतिहास का स्वतन्त्रता संघर्ष… (पृष्ठ ४ का शेष)

२० वर्ष तक चलेगा। सन् २००७ ई० के आसपास इस सघर्ष मे परिश्रमी और ईमानदार लोगो की पूर्ण विजय होगी। फिर से भारत ससार का सर्व शक्तिशाली एव सम्पन्न देश बन जाएगा।

इस सघर्ष मे हजारो उत्साही सस्कृति एव देश प्रेमी युवको को अग्रसर होना होगा। देश की युवा पीढी को नेतृत्व करना होगा। और भारत का विश्व में मान-सम्मान बढ़ाना होगा। अतीत मे हुई लूट, कत्ल व शोषण के इतिहास को समाप्त कर प्यार, सगठन और सम्पन्नता का इतिहास लिखना होगा। भारत में ही नही बल्कि समस्त संसार मे बन्धुत्व और मैत्री का वातावरण उत्पन्न करना होगा। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चल कर भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करें। स्वतन्त्रता संघर्ष में जिन वीरो ने अपने रक्त से इस पवित्र भारत भूमि को सींचा है उस पुनीत रक्त का सम्मान बढाते हुए मिली हुई स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है। महामारी 'फूट' के कारण ही विदेशी शक्तियो ने हमारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक शोषण किया है। आज भी राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने के लिए विदेशी शक्तिया पजाब, आसाम, कश्मीर, पूर्वी-उत्तरांचल प्रदेशो मे सक्रिय हैं। अतीत के भयंकर विनाश की पुनरावृत्ति नही होनी चाहिए। आइये! एकता के सूत्र मे बंधकर सभी भारतीय अपने खोए गौरव को प्राप्त कर सकें।

रजि० नं० डी० (सी०) ७४६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय : १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष ७ अंक २५ | रविवार १७ अप्रैल १९८३ | ३ वैसाख वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव

आर्यों के सर्वश्रेष्ठ मेले पर भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह दीक्षान्त भाषण देंगे

सामवेद पारायण महायज्ञ एवं अनेक सम्मेलनों की धूम : १३-१४-१५ अप्रैल, १९८३ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भवन में

हरिद्वार। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का ८३ वा वार्षिकोत्सव इस वर्ष गगा की नहर पर अवस्थित गुरुकुल भूमि मे १० अप्रैल १९८३ से सामवेद पारायण महायज्ञ द्वारा प्रारम्भ हो चुका है। इस महायज्ञ के ब्रह्मा हैं स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज। उत्सव के अवसर पर प्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गोपाल शालवाले, आर्य प्रतिनिधि पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, ससदसदस्य डा० भाई महावीर, आचार्य भगवान देव जी आदि पधारेगे।

१३ अप्रैल के दिन दोपहर ३ से ५ बजे तक आर्यसमाज के वैज्ञानिक सन्यासी डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन होगा। मुख्य अतिथि होगे उ० प्र० सरकार के मन्त्री डा० वासुदेवसिंह। इस अवसर पर डा० सत्यव्रत सिद्धातालकार, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, स्वामी ओमानन्द जी, डा० रामनाथ वेदालकार, प० सत्यानन्द वेदवागीश भाषण देगे। उद्घाटन भाषण देगे डा० सुधीर कुमार गुप्ता।

१४ अप्रैल के दिन दोपहर ३॥ से ५॥ बजे तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन होगा। मुख्य अतिथि होगे उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मन्त्री श्री शिवनाथसिंह कुशवाह, उद्घाटन भाषण देगे हैदराबाद के श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम। मुख्य वक्ता होगे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, प्रो० वेदव्यास जी कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री।

१५ अप्रैल को प्रात: ९॥ से १२ बजे तक दीक्षान्त समारोह होगा। भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी दीक्षान्त भाषण देगे।

दोपहर को २॥ से ५ बजे तक पुण्यभूमि गुरुकुल कागडी मे गुरुकुल के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन होगा। उद्घाटन भाषण सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले देगे। प्रमुख वक्ता होगे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री उत्तमचन्द शरर, डा० रामनाथ जी वेदालकार, डा० गगाराम [illegible], ब्र. आर्य नरेश, श्री रामचन्द्र जावेद, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह।

१४ अप्रैल को सामवेद महायज्ञ की पूर्णाहुति होगी। उत्सव के मुख्य कार्यक्रम विश्वविद्यालय भवन [illegible] सम्पन्न होगे। उत्सव पर रत्नसिंह जी, खतौली वाले प० ओम्प्रकाश जी, भजनोपदेशक वीरेन्द्र जी वीर, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री वेदव्यास जी की मण्डली पधार रही है।

भारत के राष्ट्रपति को वैदिक साहित्य की भेंट
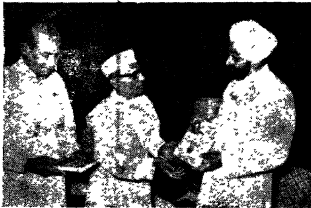
सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह को वैदिक साहित्य भेट करते हुए। साथ मे खडे हैं श्री पृथ्वीराज शास्त्री।

सुश्री मंजु का उद्धार और विवाह

युवक सन्तसिंह का साहस : आर्यसमाज एवं पुलिस का सहयोग

नई दिल्ली। [illegible] अप्रैल १९८३ के दिन आर्यसमाज हनुमान रोड मे महाराष्ट्र की युवती मजु का शुभ विवाह मेरठ निवासी श्री सन्तसिंह के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य समाज हनुमान रोड के यशस्वी प्रधान श्री राममूर्ति कैला ने कन्यादान किया और श्री प० रूपकिशोर शास्त्री ने वैदिक रीति मे विवाह कराया। इस अवसर पर प्रधान श्री कैला जी, सभा मन्त्री श्री खैरातीलाल भाटिया श्रीराम शर्मा श्री सुभाष विद्यालंकार आदि अधिकारियो ने दम्पति को अपना आशीर्वाद दिया।

स्मरण रहे कि लगभग डेढ वर्ष पूर्व किसी निकट सम्बन्धी ने महाराष्ट्र की कुमारी मजु को गलत तत्त्वो के हाथ वेच दिया था। उससे डेढ वर्ष तक जी० बी० रोड पर वेश्यावृत्ति करवाई गई, वहा नवयुवक श्री सन्तसिंह उसके सम्पर्क मे आया। मजु ने उसे अपनी दर्दनाक नारकीय जीवन की कहानी सुनाई। युवक प्रभावित हुआ, उसने कमला मार्केट के पुलिस अधिकारियो के माध्यम से लडकी को जी० बी० रोड से निकलवाया और इस प्रकार लडकी के नारकीय जीवन का अन्त हुआ। उसके उद्धार मे युवक सन्तसिंह को पुलिस अधिकारी श्री कण्ठ तथा आर्यसमाज हनुमान रोड के अधिकारियो का विशेष सहयोग मिला।

आर्यसमाज का यशस्वी कार्य

सार्वदेशिक के प्रधान शालवाले का भाषण

नई दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य एव आर्यसमाज दीवान हाल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एकता सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आर्यसमाज एक राष्ट्रीय सस्था है। उसने देश के स्वाधीनता सग्राम मे अग्रणी भाग लिया था। आज भी देश की अखण्डता, एकता, भावात्मक एकता, आर्थिक प्रगति और सामाजिक सुधारो के लिए प्रयत्नशील हैं।

इस अवसर पर श्री अमरेश आर्य, इन्दौर के प० राजगुरु शर्मा, प्रधान म० भारत आर्य प्रतिनिधि सभा ने सामयिक परिस्थित पर उद्‌बोधक भाषण दिए।

सम्मेलन मे एक प्रस्ताव पारित कर पटपडगज रोड पर प्रस्तावित यान्त्रिक बूचडखाने की योजना को रद्द करने की माग की गई।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति | व्यवस्थापक प्रद्युम्नलाल तलवाड

वेद-मनन

परमात्मा कैसा है ?

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।यजु०३२।१०

स्वयम्भु ब्रह्म ऋषि, परमात्मा देवता, निचृत् त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर ।

शब्दार्थ—(हे मनुष्यो !) [स] वह परमात्मा [न] हमारा [बन्धु] भ्राता के समान मान्य, सहायक वा सुखदायक [जनिता] सब जगत् का उत्पादक वा पालन करने वाला पिता (तथा) [स] वह [विधाता] विविध जगत् का धारण करने वाला तथा सब कामो का पूर्ण करने वाला, [विश्वा] सब [भुवनानि] लोक लोकान्तरो (वा) [धामानि] जन्म, नाम वा स्थानो को [वेद] जानने वाला है (और) [यत्र] जिस [तृतीये] जीव वा प्रकृति से भिन्न विलक्षण तीसरे अर्थात् सासारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्द युक्त (ब्रह्म) (वा) [धामन्] मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा मे [देवा] धर्मात्मा विद्वान लोग [अमृतम्] मरणादि दुःख से रहित मोक्ष पद को (पूर्णानन्द परमात्मा को [आनशाना] प्राप्त होके [अध्यैरयन्त] सर्वत्र स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं ।

भावार्थ जिस शुद्धस्वरूप परमात्मा मे योगी विद्वान लोग मुक्तिसुख को प्राप्त करके सदा आनन्द मे रहते हैं वह ही सर्वज्ञ, सर्वजगदुत्पादक, सर्वदा हमारी सहायकारी, गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है हम सब को मिल के उसी की उपासना-भक्ति करनी चाहिए अन्य किसी की नहीं ।

बोध-कथा

सत्य का संकल्प !

कक्षा के विद्यार्थियो के अंग्रेजी ज्ञान की परीक्षा के लिए शिक्षा विभाग के अंग्रेज इन्सपेक्टर आए हुए थे । उन्होने कक्षा के सब विद्यार्थियो को एक-एक कर पाच शब्द लिखाए । अचानक कक्षा के अध्यापक ने बालक मोहनदास की कापी देखी उसमे एक शब्द गलत लिखा हुआ था । अध्यापक ने इशारा किया, अपना पैरा बालक मोहनदास को छुआया और इशारा किया कि पास के लड़के की कापी से वह अपना गलत शब्द ठीक कर ले । उन्होंने इशारे कर दूसरे बालकों को समझाया, सबने अपने शब्द ठीक कर लिए, पर बालक मोहनदास ने कुछ नहीं किया । इन्सपेक्टर के जाने पर अध्यापक ने बालक को डाटा और कक्षा के सामने झिड़का कि 'इसने इशारा करने पर भी अपना शब्द ठीक नही किया । कितना मूर्ख है !'

बालक मोहनदास ने कहा—'अपने अज्ञान पर पर्दा डालकर दूसरे की नकल करना सचाई नही है ।' 'तुमने सत्य का यह व्रत कब लिया, कैसे लिया ?'—बालक मोहनदास ने उत्तर दिया—'राजा हरिश्चन्द्र के नाटक को देखकर, जिन्होने अपने सत्य की रक्षा के लिए पत्नी, पुत्र और स्वय को बेच कर भी कष्ट सहकर भी सत्य की रक्षा की थी ।' मित्र बोल उठे—'मोहनदास नाटक तो नाटक होता है, उसे देख कर किसी आदर्श मे बधकर जीवन मे घटाना ठीक नहीं' । 'ऐसा न कहो, मित्र, पक्के इरादे से सब कुछ हो सकता हैं । मैंने उसी नाटक को देखकर जीवन मे सत्य पर चलने का निश्चय किया था । मैं सत्य की अपनी टेक कैसे छोड दू ।"

बाल्यावस्था मे सत्य का सकल्प करने वाला यही बालक बडे होकर महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गाधी के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

- नरेन्द्र

सभ्यता-संस्कृति एवं पीड़ितों के लिए समर्पित महात्मा हंसराज जी

—सुशीलादेवी विद्यालकृता

भरा नही जो भावो से जिसमे बहती रसधार नही ।
वह हृदय नही है पत्थर है जिसमे स्वधर्म का प्यार नही ।।

स्वदेश, स्वधर्म, अपनी सभ्यता व सस्कृति के प्रति गौरव से ओत-प्रोत हृदय दीन-दुखियो, दलितो, पीडितो की सेवा के लिए समर्पित जीवन । भूकम्प, अकाल महामारी पीडितो की सहायता के लिए तडपता हुआ अनथक व्यक्तित्व, नई पीढी मे नवचेतना भरने की आशा और उत्साह आलोडित जीवन ! ऐसे थे महात्मा हसराज जी । 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' आपका बचपन भी निर्भीक बचपन था । वह लिखते हैं कि वह बच्चे थे । लाहौर मे महर्षि दयानन्द पधारे । साथियो से सुना—यहा एक सन्यासी आया है जो ईसाइयो से पैसा लेकर हिन्दुओं के विरुद्ध उपदेश करता है । महात्मा जी लिखते हैं कि उन्हे नही पता था कि वही स्वामी दयानन्द हैं । दयानन्दी रग तो बाद मे चढा । जब चढा तब, ऐसा चढा कि जीवन पर्यन्त न उतरा । साथी ईसाई थे या मुसलमान । जो हिन्दुओ को चोर गवार तथा अन्य धर्मावलम्बियो को शरीर और ईमानदार कहते थे । वह मिशन स्कूल के विद्यार्थी थे । हेडमास्टर थे रामचन्द्र । रीडर मे लिखा हुआ था । प्राचीन लोग मूर्ख थे । क्लास मे हैडमास्टर पढा रहे थे । हसराज जी ने पूछा । पिता को अनुभव ज्यादा होता है या पुत्र का ? मास्टर ने उत्तर दिया, पिता का । फिर हमारे बाप-दादा मूर्ख कैसे हो सकते हैं ? हसराज ने पूछा । मास्टर ने आगे पढ़ा—प्राचीन हिन्दुओ को ईश्वर का ज्ञान नही था । वे अग्नि, वायु, सूर्य जल की पूजा करते थे । हसराज जी उत्तेजित हो उठे । कहा, यह गलत है । हमारे पूर्वजो को ईश्वर का ज्ञान था ।

मास्टर—रीडर मे ऐसा लिखा है, इसलिए सच है ।

हसराज—रीडर बनाने वाले की बेवकूफी है जो उसने ऐसा लिखा है ।

हैडमास्टर ने बेंतो की सजा दी । और स्कूल से निकाल दिया । इन सब बातो का हसराज जी के मन पर प्रभाव पडा । उन्हे अपने धर्म, अपने पूर्वजो के सम्बन्ध मे जानने की इच्छा जाग्रत हुई । उन्होने आर्य समाजो के सत्सगो मे जाना आरम्भ कर दिया ।

लाहौर आर्यसमाज के प्रधान थे लाला साई दास जी । वह सदा ही नए-नए चेहरो की खोज मे रहते थे । बच्चो मे वैदिक धर्म के प्रति आस्था पैदा करना उनका ध्येय था । उन्होने घोषणा की जो विद्यार्थी सध्या याद करके सुनाएगा उसे २) रु० इनाम मिलेगा । महात्मा जी ने सध्या याद की । सुना दी । २) रु० इनाम प्राप्त कर लिया । आज २) रु० कुछ नही । उस जमाने मे २) रु० बहुत बडी चीज थी । इन छोटी-छोटी बातो का भी बहुत महत्त्व होता है । इन्ही से प्रेरणा प्राप्त करते-करते वह एक सजग नेता व आर्य सस्कृति के सजग प्रहरी बन सके ।

बी० ए० उत्तीर्ण किया । नौकरी के लिए दरवाजे न खडकाये । सकल्प था ऋषि दयानन्द के मिशनरी बनकर उनके कार्यों को पूरा करने का ।

वह महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे, वैदिक सस्कृति के पुजारी । लाला साई दास जी ने लालचन्द जी के साथ मिलकर दयानन्द एग्लो वैदिक कालेज की स्थापना की योजना बनाई । आर्य युवक ईसाइयो के प्रभाव से बचे । स्कूल, कालेज या तो सरकारी थे या मिशनरी । उस समय कालेज बनाना साधारण कार्य नही था, परन्तु 'उद्योगिन पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मी' 'गाड सेल्स प्लेयर्स, हार्ड वर्क इज द प्राइस ।' भगवान खुशिया बाटता है । मेहनत, पुरुषार्थ ही उनकी कीमत है । डी० ए० वी० सफलतापूर्वक चलने लगे । लोग वाह-वाह कर उठे ।

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा का उद्देश्य क्या है ? शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है । परन्तु तब शिक्षा का उद्देश्य ईसाई बनाना था । काले अंग्रेजो की एक ऐसी श्रेणी तैयार करना जो रग रूप मे भारतीय हो परन्तु दिल, दिमाग रहन-सहन, सोच विचार मे अंग्रेज हो । महात्मा हसराज जी ने इस शिक्षा प्रणाली से टक्कर लेने के लिए ही डी० ए० वी० कालेज खोलने का सकल्प किया था । वह युवको के दिल-दिमाग को वैदिक सस्कृति के रग मे रगना चाहते थे, घटना रावलपिंडी की है । दो छात्र ईसाई बनना चाहते थे । महात्मा जी वहा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हम सबका कल्याण करें

ओ३म् स. न· पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा न स्वस्तये ।।ऋग्वेद १ १ ९

हे परम पिता, आप हमारे मार्ग प्रदर्शक हैं, आप हम सब पुत्र-पुत्रियो के उपास्यदेव हैं । आप हम सब का कल्याण करें । हम सब पर कृपादृष्टि रखें ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

राष्ट्र और राष्ट्रीय संस्कृति की सुरक्षा

हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थो मे अपने भारत देश की बडी उदात्त व्यापक परिभाषा की गई है । 'उत्तर यत्समुद्रस्य हिमवद्क्षिण च यत् । वर्ष यद् भारत नाम यत्रेयं भारती प्रजा ।।' हिमालय की पर्वतशृखला के दक्षिण मे और दक्षिणवर्त्ती महासमुद्र के उत्तर मे अवस्थित पृथ्वी प्रदेश का नाम भारत है और उसकी प्रजा भारतीय है । एक दूसरे प्राचीन ग्रन्थ मे कहा गया है कि प्रजा का भरण करने से मनु का देश भारत कहा जाता है । अनन्त शताब्दियो से हमारे धर्म ग्रन्थो एव परम्परा से भारत भूमि मे जन्म लेना बडे पुण्य और सौभाग्य का विषय समझा जाता है । हमारे देश के तीर्थ, धर्म स्थान एव पवित्र नदिया सारे देशवासियो के पवित्र एव दर्शनीय स्थान हैं । देश के चारो धामो की यात्रा किए बिना सामान्य भारतीय अपने बुढापे की सार्थकता स्वीकार नही करता । हमारे देश मे चारो धाम की यात्रा करना, प्रत्येक तीर्थ पर जाकर मुख्य पवित्र नदियो मे स्नान करना पुण्य कार्य समझा जाता है । खेद है कि पिछले वर्षों मे हमारे देश की राजनीति, मे प्रदेशो की महत्ता ऐसी बढती जा रही है कि लोग देश, राष्ट्रीय सस्कृति के स्थान पर अपने प्रदेश की भाषा एव विशिष्टता पर बल देने लगे हैं । इतना ही नही, पश्चिमी सभ्यता एव सस्कृति मे दीक्षित लोगो को पश्चिमी इतिहास कारो ने यह बतलाने की कोशिश की है कि भारत की कोई अपनी भौगोलिक इकाई और सस्कृति नही है ।

पिछले दिनो देश के कुछ दक्षिणी राज्यो ने आर्थिक आधार पर अपनी समस्याओ को सामूहिक रूप से सुलझाने के लिए एक पृथक सगठन बनाने का प्रयत्न किया है । तेलुगु देसम के नेता एवं आन्ध्र के मुख्यमन्त्री श्री एन. तारक रामाराव घोषित किया है कि वह देश भर के सभी मुख्यमन्त्रियो को प्रदेशो की सामूहिक विशिष्ट समस्याओ के समाधान के एकत्र और सगठित करना चाहते हैं । विरोधी दलो के अधिकाश नेता भी इन्ही स्वरो मे बोल रहे हैं । पूर्वोत्तर क्षेत्र मे असम तथा पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे पजाब की स्थिति विक्षुब्ध है । कई विदेशी पत्रो मे इस प्रकार के सवाद प्रकाशित हो रहे है कि पश्चिमी बडे राष्ट्र नही चाहते कि भारत एक शक्तिशाली महान् एव स्वावलम्बी राष्ट्र के रूप मे विश्व राजनीति मे उभरे, फलत वे देश के पृथकतावादी तत्त्वो को प्रश्रय देकर भारत स्थिति को निर्बल करना चाहते हैं कि देश फिर उसी तरह खण्ड-खण्ड हो जाए, जिस तरह अग्रेजो के आने के समय केन्द्रीय मुगल सत्ता के निर्बल होने पर भारत देश की परिस्थिति थी । ऐसे सकट के समय प्रत्येक स्वाभिमानी देशभक्त राष्ट्रजन का नैतिक दायित्व है कि वह राष्ट्र और राष्ट्रीय सस्कृति को सुरक्षा के लिए अपने तन-मन-धन सर्वस्व की बाजी लगाने का दृढ सकल्प कर ले ।

पिछले महायुद्ध मे पराजित होने के बाद जर्मनी और जापान दोनो देश नष्ट-भ्रष्ट हो गए थे । दोनो, की जनताने पूरी निष्ठा और देश भक्ति से अपने उद्योगो, नगरो और व्यापार-वाणिज्य का नव निर्माण किया है । जापान का उदाहरण लीजिए १९४५ की गर्मियो मे जापान खण्डहरो का स्तूप बन गया था । १ करोड के लगभग जापानी युद्ध मे मारे गये थे, सर्वत्र मास के लोथडे ही दिखाई देते थे, शहरी आबादी आधी रह गई थी, भारी प्रजा दीन-हीन और क्षतविक्षत हो गई थी, आज अपनी लगन, परिश्रम, उत्कट देशभक्ति से जापान ससार का एक सर्वाधिक अग्रणी औद्योगिक राष्ट्र बन गया है । यह सब तब है, जब जापान अपने उद्योगों के लिए सारा कच्चा सामान विदेशो से मगाता है । इसकी तुलना मे हमारे भारत देश मे ६७ से ७० करोड की जनसख्या है, अपार प्राकृतिक सम्पदा और साधन हैं । यदि इनका केन्द्रीय और प्रादेशिक शासन समुचित उपयोग करे तो कुछ ही समय मे देश के सारे अभाव और विषमता का अन्त हो सकता है । हा यह सब कुछ हो सकता है । परन्तु इस सब को करने के लिए । शक्ति से परिपूर्ण दृढ सकल्प गहरी लगन और लम्बे अध्यवसाय की आवश्यकता है । राष्ट्र और राष्ट्रीय सस्कृति की सुरक्षा केवल नारो के बल पर होनी सम्भव नही है, इसके लिए तो दृढ व्रती कोटि-कोटि भारतीय जनता का अहर्निश भगीरथ प्रयत्न अपेक्षित है । 'करो या मरो का दृढ संकल्प एव अध्यवसाय ही लक्ष्य की प्राप्ति मे सहायक हो सकता है ।

चिट्ठी-पत्री

राष्ट्रनिर्माण मे आर्यसमाज का यशस्वी योगदान

राष्ट्र निर्माण मे जिन व्यक्तियो का प्रमुख योगदान रहा है उनमे महर्षि दयानन्द सरस्वती अग्रणी थे । विद्याध्ययन पूर्ण करके जब वह कार्य क्षेत्र मे आए तब राष्ट्र की स्थिति अत्यन्त दयनीय एव भयानक थी । भारत अग्रेजी शासको मे पदाक्रान्त था, पारस्परिक वैमनस्य के कारण स्थानीय राजा महाराजा फूट के रोग से ग्रस्त थे । उन्हे राष्ट्रीय हित की कोई चिन्ता नही थी । ईश्वर और धर्म के नाम पर मनुष्य पशुओ की मौत मर रहा था, ऊच नीच छुआछूत का सर्वत्र बोलबाला था । नारी जाति को शूद्र कहकर शिक्षा मे वचित रखा जाता था । बालविवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह, सती प्रथा आदि अनेक कुरीतियो के कारण राष्ट्र त्रस्त था ।

१८५७ की क्रान्ति के असफल हो जाने के कारण अग्रेज शासन ने जहा पूरी तरह से इस देश मे अधिकार किया हुआ था वहा सामाजिक दृष्टि से भी हमारा भारत पर्याप्त दुर्बल हो चुका था । ऐसी विकट परिस्थितियो मे राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिए महर्षि दयानन्द ने '*स्वराज्य सर्वोपरि है*' का उदघोष किया । राजा महाराजाओ को एकता के सूत्र मे बाधकर धर्म और ईश्वर के नाम पर होने वाली विविध कुरीतियो को दूर किया । जन्मगत ऊच नीच को वेद विरुद्ध घोषित कर समाज मे फैली भयकर कुरीतियो के विरोध मे आवाज उठाई और उन्हे दूर किया । राष्ट्र के निर्माण मे बाधक इन कुरीतियो को सदा-सदा के लिए समाप्त करने के उद्देश्य से सन् १८७५ मे उन्होने बम्बई नगरी मे सर्वप्रथम आर्य-समाज की स्थापना की आज से १०० वर्ष पूर्व सन् १८८३ मे दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण हुआ और उनके पश्चात आर्यसमाज ने राष्ट्र निर्माण के हर क्षेत्र मे अतुलनीय प्रयास किया । महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्तो ने प्रेरणा पाकर श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल भाई परमानन्द, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर, मदनलाल ढींगरा आदि ने विदेशो मे जाकर भारतीय स्वाधीनता के लिए सघर्ष किया एव जन-जागृति पैदा की । पजाब केसरी लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, चौधरी रामभज दत्त, चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, रोशनसिंह, ब्रह्मचारी रामप्रसाद बिस्मिल सुखदेव आदि अगणित क्रातिकारियो ने आर्यसमाज से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन मे अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया और शहीद हो गए ।

शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के बाद आर्यसमाज का बजट ही सर्वोपरि रहा है । स्त्री शिक्षा अन्तर्जातीय विधवा विवाहो की शुरुआत भी आर्यसमाज ने ही की, बहु-विवाह, बाल विवाह एव सती प्रथा को रोक कर 'यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' का उदघोष किया । भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात आर्यसमाज का कोई भी कार्यक्रम शेष नही रहा जिसे भारतीय सविधान मे स्वीकार न किया गया हो । अस्पृश्यता को आज अवैध माना गया है आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने १८७५ ईस्वी मे ही उसके विरुद्ध आवाज उठाई । अनेक अछूत (शूद्र) कहलाने वाले व्यक्तियो को आर्यसमाज ने विद्वान और पण्डित बनाकर उनका सम्मान किया और आज भी करता आ रहा है ।

श्री धर्मवीर और श्री चन्द्रकान्त आर्यसमाज अजमेर से निष्कासित

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति देहली के मन्त्री तथा दयानन्द कालिज अजमेर मे सस्कृत प्राध्यापक श्री धर्मवीर द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण को अस्वीकार कर के आर्यसमाज अजमेर की अन्तरग सभा ने उन्हे दिनाक १३ मार्च ८३ को सर्वसम्मत निश्चय के अनुसार समाज के हित मे और उनकी अनुशासन विरोधी गतिविधियों के कारण अपनी सदस्यता से पृथक् कर दिया है । इसी प्रकार श्री चन्द्रकान्त शास्त्री की सदस्यता भी समाप्त कर दी गई । —रामसिंह, मन्त्री आर्यसमाज, अजमेर

'आर्यसन्देश' से होता दर असल सद्ज्ञान का प्रचार

आपने मेरी रचनाए को प्रकाशित करने रहकर मुझे अधिक उत्साह एव निष्ठा से लिखते रहने की दिशा मे प्रेरित किया है । आप मे मैं यही कहूगा—

आर्य सन्देश से दरअसल, होता सद्ज्ञान का प्रचार ।
भाता मुझे सबसे अधिक, इसमे निहित वेदो का सार ।।
काव्य के रग मे भिगोकर, मैं रखता हृदय के तुच्छ विचार ।
प्रकाशित करने के लिए, आपका बहुत-बहुत आभार ।।

—मोहनलाल शर्मा 'रश्मि' ६०७/ए फ्रीलैण्ड गज,दाहोद (गुजरात)३८९१६०

सन् १९२३ से आज तक के सस्मरण

दिल्ली में आर्यसमाज के निरन्तर बढ़ते चरण

यह बात नि सकोच कही जा सकती है कि आर्यसमाज ने अपने जन्म काल से इस एक शताब्दी की अवधि मे जो चमत्कारी सफलता प्राप्त की है, विश्व के इतिहास मे,सम्भवत अन्य किसी धार्मिक-सामाजिक सस्था ने उपलब्ध नही की।

आर्यसमाज की एक अन्य विशिष्टता है जो अपने आप मे,धार्मिक इतिहास की दृष्टि से अनूठी है। विश्व के जितने प्रमुख सगठन है—प्राय वे सब राजाओ व अन्य समृद्ध वर्गों की छत्रछाया मे पले-पोसे और विकसित हुए हैं। बौद्ध मत को अशोक सम्राट का जैन मत को राजा महावीर का,मध्यकाल के हर्षवर्धन राजा भोज इत्यादि द्वारा पौराणिक हिन्दू मत को इस्लाम को, मध्य एशिया के खलीफाओ और बादशाहो तथा भारत मे तो अकबर से लेकर औरगजेब सहित अन्तिम बादशाह बहादुरशाह जफर का यूरोप मे ईसाइयत को रोमन सम्राट् कास्टन्टाईन के द्वारा राज्य धर्म बनाने—जिसका आधुनिक रूप रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय और इसकी दूसरी शाखा प्रोटेस्टेंट, जो ब्रिटेन, अमेरिका तथा अन्य कुछ यूरोपीय देशो का राजधर्म है उसे ब्रिटेन के राजा हैनरी अष्टम द्वारा अपनाया जाना—इत्यादि अन्य कई मत मतान्तर भी इसी श्रेणी मे आते है। यह समस्त नृपति गणो और समृद्ध व्यक्तियो के प्राय हिंसात्मक व अन्य प्रकार के अनेक विध प्रलोभन-आकर्षणो की प्रेरणा सहायता से फैले। पर आर्यसमाज का प्रवर्त्तक एक लगोट बन्द अकुतोभय, मोक्ष का आनन्द त्याग मात्र सर्वभूतहिताय--त्याग, तप अहिसा, शत्रु के प्रति स्नेह—इत्यादि दैवीय गुण सम्पत्तिशील महर्षि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित किया गया। इस सस्था का नाम भी किसी व्यक्ति अवतार गुरु, पैगम्बर पर नही,केवल उत्तम, श्रेष्ठ सद्गुणयुक्त, विनम्र, सेवारत, व्यक्तियो के सगठन इसी अर्थ का द्योतक है।

दिल्ली के १९२३ के सस्मरण

दिल्ली देश की राजधानी है। लगभग ७० लाख की इस महानगरी का धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, व्यापारिक औद्योगिक इत्यादि विभिन्न दृष्टियो से नि सन्देह बडा महत्व है। हमे तो केवल आर्यसमाज की दृष्टि से आज यहा विचार करना है। हम दिल्ली मे १९२३ मे प० इन्द्र विद्यावाचस्पति के सम्पादकत्व मे राजधानी से प्रकाशित दैनिक हिन्दी 'अर्जुन' में स० सम्पादक के रूप मे जब आए तब दिल्ली की आबादी करीब डेढ़-दो लाख थी। नई दिल्ली—जिसका नाम उस समय रायसीना था—अभी ठेकेदारो और इन्जीनियरो के नक्शो पर ही था। अजमेरी गेट से रायसीना २-२॥ आने मे इक्के जाते थे। करौल बाग जाने के लिए इक्के वाले तैयार नही होते थे क्योकि रास्ते मे लुटेरे रहते थे। आनन्द पर्वत क नाम काला पहाड था और करौल बाग आने के लिए घनी पहाडियो को पार करना होता था। उस समय अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जीवित थे और दिल्ली के तत्कालीन सर्वोत्तम समझे जाने वाले'नया बाजार (अब श्रद्धानन्द बाजार) स्थित सार्वदेशिक सभा भवन मे रहते थे। उन्ही की [illegible] से इसी बाजार से ला देशबन्धु गुप्त के सम्पादकत्व मे उर्दू दैनिक 'तेज' [illegible] हिन्दी दैनिक 'अर्जुन' प्रकाशित [illegible] थे। दोनो के कार्यालय एक सा[illegible] इमारतो मे पृथक्-पृथक् थे। [illegible] उर्दू का गढ था। हिन्दी के प्रमुख [illegible] दैनिक थे। आर्यसमाज का 'अर्जुन' और पौराणिको का 'ससार'। 'अर्जुन' [illegible] के पर्याप्त समय के बाद 'संसार' [illegible] । बिक्री की दृष्टि से 'अर्जुन' पर्याप्त आगे था। 'अर्जुन' से कुछ वर्ष पहले स्वामी श्रद्धानन्द जी के बडे पुत्र [illegible]श्चन्द्र विद्यालकार के सम्पादकत्व [illegible] 'विजय' दैनिक राजधानी के इसी नया बाजार से निकलता था। वह प्रथम [illegible]युद्ध का समय था। 'विजय' सभवतः [illegible] का उल्लेखनीय प्रथम दैनिक प[illegible] जिसकी इतनी बिक्री थी कि नगर के सैकडो लोगो को निराश होना पडता था। शाम को ही सैकडो लोगो की भी[illegible] मे जमा हो जाती। उन दिनों [illegible] मशीन तो शायद भारत के किसी [illegible] के पास नही थी। ट्रेडल या फ्लैट मशीन पर ही प्रायः हाथ से चला कर दैनिक छपते थे। अग्रेजी की कहावत 'गर्म रोटियो की तरह 'विजय' निकलता पर जनता की भूख पूरी न कर पाता। दिल्ली की मुस्लिम परस्त गोरी सरकार की पत्र पर सदा वक्र दृष्टि रहती। हरिश्चन्द्र जी उग्र क्रान्तिकारी विचारो के थे। युद्ध जोरो पर था। मथुरा के राजा महेन्द्र प्रताप विदेश-यात्रा पर जब गए तब हरिश्चन्द्र जी भी निजी सचिव के रूप मे उनके साथ ही गए। यद्यपि यूरोप जाकर विचार भेद के हेतु उनसे पृथक् हो गए और आज तक वापस भारत नहीं आए। सुना जाता है विदेश में ही उन की मृत्यु हो गई।

'विजय'-'अर्जुन' दैनिको के अतिरिक्त महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) द्वारा जालन्धर मे सस्थापित 'सद्धर्म प्रचारक' पहले उर्दू मे, आर्यसमाज का एक मात्र साप्ताहिक बिना घाटे के चलता रहा, एक ही रात मे उर्दू के बदले हिन्दी मे प्रारम्भ, फिर जालन्धर से गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी मे और स्वामी जी के सन्यासी होने के बाद दिल्ली निवासी कट्टर आर्यसमाजी और स्वाध्यायशील मास्टर लक्ष्मण जी द्वारा बाजार सीताराम, दिल्ली मे हिन्दी साप्ताहिक के रूप मे कई वर्ष तक चलता रहा। कुछ आर्य विद्वानो द्वारा दिल्ली से हिन्दी साहित्य भी विशेषत धार्मिक—प्रकाशित होने लगा। सक्षेप मे राजधानी में हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य प्रकाशन के बीजवपन का श्रेय एक मात्र आर्यसमाज को ही है।

दिल्ली मे दूसरे दशक के प्रमुख आर्यसमाज—शास्त्रार्थ युग

बीसवी सदी के दूसरे दशक के मध्य तक राजधानी की मुख्य व एक मात्र आर्यसमाजें चावडी बाजार (इसमे आर्य पुत्री पाठशाला भी थी) बाद मे कालेज पार्टी की आ. स. सीताराम बाजार मे, शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी के नेतृत्व मे सदर बाजार, दरियागज मे आर्य अनाथालय के अन्तर्गत—और आस. नया बास ये ही प्रमुख आर्यसमाजे थी। दीवान हाल आर्य समाज अभी स्थापित नही हुआ था। खारी बावडी, सदर बाजार, नई सडक, चादनी चौक, चावडी बाजार, सीताराम बाजार लाल कुआ, फतेहपुरी इत्यादि यही व्यापार के मुख्य केन्द्र थे। केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियो का उपनगर केवल तिमार पुर ही था। नगर की चारदीवारी से बाहर यही एक समाज था। मुझे याद है, स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदेश से मैं यहा दो-ढाई आने किराया दे इक्के पर चांदनी चौक से उपदेश देने गया था। उपदेशक को दक्षिणा या मार्गव्यय इत्यादि देने का चलन नही था। यमुनापार शाहदरा बस्तियो मे भी एक सामान्य समाज था। आर्यसमाज के उत्सव विशेषत चावड़ी बाजार के जामा मस्जिद के सामने परेड के मैदान मे होते थे। रात के ११-१२ बजे तक कार्यक्रम चलते। शास्त्रार्थ और मुबाहसे शान्तिपूर्वक होते। कभी कोई झगडा दगा-फिसाद नहीं होता। पौराणिक मुस्लिम व अन्य मतावलम्बी बड़ी सख्या में आते। चांदनी चौक फव्वारे पर देहलवी जी तथा अन्य आर्य विद्वानों के माध्यम शका समाधान प्रतिदिन सायकाल होते। सीताराम बाजार आर्यसमाज के उत्सव रामलीला मैदान मे होते। ऋषि निर्वाण पर्व रामलीला मैदान अथवा कम्पनी बाग (अब गांधी मैदान) मे होते।

दिल्ली में हिन्दू-मुस्लिम दंगे

विशेषत दिल्ली और भारत के अन्य नगरो मे हिन्दू-मुस्लिम दगों का प्रारम्भ उन्ही दिनो हुआ। गांधी जी द्वारा एक वर्ष मे स्वराज्य प्राप्ति की घोषणा और एक करोड रुपए इकठ्ठा करने के साथ-साथ खिलाफत को जोड देने और गाधी जी द्वारा सन् १९२४ मे दिल्ली में आमरण अनशन गांधी जी के अत्यन्त निकट मौलाना मोहम्मद अली और शौकतअली दोनों भाइयो पर कट्टर मुसलमान,हकीम अजमल

लेखक
आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

खा, ख्वाजा हसन निजामी इत्यादि मुस्लिमो का गहरा प्रभाव था। मौलाना मोहम्मद अली के अग्रेजी साप्ताहिक 'कामरेड'मे उत्तेजक, पक्षपात पूर्ण हिन्दू विरोधी लेख धडल्ले से प्रकाशित होते एक करोड़ रुपए स्वराज्य फड का अधिकाश तथाकथित गाधी भक्त मुल्ला-मौलाओ की ही जेब मे गया। इतनी बडी राशि का हिसाब-किताब कभी प्रकाश मे नही आया।

आर्यसमाज का वर्चस्व और गौरव

आर्यसमाज की दृष्टि से आज राजधानी में छोटी-बड़ी आर्यसमाजें और उनके अपने मन्दिरो-भवनो की सख्या २००-२५० के लगभग है। कई मन्दिर तो काफी आलीशान हैं, जैसे सार्वदेशिक, भवन (महर्षि दयानन्द भवन) दीवान हाल, नया बास, बिडला मिल, शक्ति नगर, मन्दिर मार्ग, पजाबी बाग, मोडल टाउन, ग्रेटर कैलाश, कालका जी, लाजपत नगर, पहाडगज इत्यादि अनेक मदिर हैं। अब आर्यसमाज द्वारा सचालित दर्जनो शिक्षा सस्थाएं व अन्य सार्वजनिक सस्थाए हैं। तीन साप्ताहिक,कुछ मासिक समाचार पत्र और साहित्य प्रकाशन सस्थाए हैं।

राजधानी की आर्यसमाजों का एक विशेष उल्लेखनीय आर्ययुवको का सगठन है जिसके अन्तर्गत शिविर, वाद-विवाद प्रतियोगिता, योगासन व्यायाम प्रदर्शन इत्यादि युवक निर्माण के कार्यक्रम चलते रहते हैं। दिल्ली राज्य और दिल्ली के पृथक-पृथक संगठन हैं। राजधानी और देश की आर्यसमाज और उसकी विभिन्न

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज स्थापना दिवस का दिव्य सन्देश हिन्दू जगत की रक्षा

युग-पुरुष, युग-प्रवर्तक एव महान समाज-सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्दजी महाराज के हिन्दू जाति पर ही नही, अपितु सारे देश पर अनेक, अनगिनत महान उपकार हैं, परन्तु उनमें से आर्य-समाज की स्थापना करके उसके द्वारा धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक. शैक्षणिक तथा नैतिक क्षेत्रों में सुधार करके महत्तम उपकार किए हैं। वेद प्रचार के लिए अन्धविश्वास, रूढ़ियों और अज्ञान से मुक्ति पाने के लिए मतमतान्तरो और छूआछूत के भेदभाव के भूत को भगाने के लिए अनेक देवी-देवताओ के स्थान पर एक सर्वनियन्ता निराकार की पूजा का प्रचार करने के लिए, हिन्दू जाति मे फैली अनेक सामाजिक कुरीतियो को दूर करने के लिए, बाल विधवाओ के पुनर्विवाह के प्रचार के लिए, अनाथ बच्चो की रक्षा के लिए, स्त्री जातिके सम्मान के लिए दलितोद्धार के लिए, गौ माता और यज्ञोपवीत की रक्षा के लिए भोली-भाली जनता को ईसाई मुसलमान बनने से बचाने के लिए प्राचीन ऋषि-मुनियो को वैदिक मान्यताओ के प्रचार के लिए देश को विदेशी सत्ता की बेडियो से मुक्त कराने के लिए राष्ट्र और देश को सुरक्षित, सुदृढ और सशक्त बनाने के उद्देश्य से वेद के आधार पर एक सार्वभौम सगठन की सर्व प्रथम बम्बई नगर मे१८७५ मे स्थापना की जिसका नाम था 'आर्य समाज'। देशोद्धार की दृष्टि से इसका कार्यक्रम चहुमुखी था और यह लहर सारे देश मे एक प्रचण्ड अग्नि की तरह से व्याप गई। सभी वर्गों के लोग इसके समाज-सुधार के कार्यक्रमो मे भाग लेने लगे। आर्यसमाज का यह प्रारम्भिक काल इसका स्वर्ण युग ही था। महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, प. लेखराम, प. गुरुदत्त विद्यार्थी, ला. लाजपत राय भाई परमानन्द जैसे सहस्रो नौजवान घरबार जात-बिरादरी कुछ भी चिन्ता न करके इस अग्नि में कूद पडे। सब विघ्न-बाधाओं और सामाजिक तथा सरकारी रुकावटों के बावजूद सभी क्षेत्रो में फैली कुरीतियों से उलझ पडे। परन्तु ऐसे निडर रहे कि जिधर भी जिस क्षेत्र में राजनीतिक हो या सामाजिक, धार्मिक हो या शैक्षणिक में कदम रखा, सफलता देवी मानो पहले ही से इनका स्वागत करने के लिए आरती लिए खड़ी हो। स्वामी जी महाराज ने अपने जीवन काल में और उनके पश्चात् थोड़े से समय मे आर्यसमाज के दीवानों ने सदियों से गाढ़ निद्रा में अलसाए देश को हिन्दू जाति को ऐसा जाग्रत कर दिया विधर्मियों के छक्के छूट गए और और अपने-अपने मतों की अनेक अयुक्ति-सगत मान्यताओ को छोड ने अथवा नया रूप देनेके लिए विवश हो गए। इस प्रकार देश हिन्दू-जाति जीवन सभी क्षेत्रो मे प्रकाश की ओर बढती दिखाई देने लगी। अत यह सत्य ही है कि यदि महर्षि समाज की स्थापना न करते और प्रारम्भिक काल के नौजवान ऋषिभक्त इसमे जान की बाजी लगा कर कार्यक्षेत्र मे न कूदते, तो आज देश की क्या दशा होती, यह कल्पना से बाहर की बात है।

परन्तु खेद है कि मूल रूप मे जागरूक होने पर यह सस्था भी कुछ समय से कुछ निदिया-सी गई है। चौकस और सचेत रहने रहने के स्थान पर यह स्वय कुछ अलसाने-सी लगती है।

'बडे शौक से सुन रहे थे
जमाने वाले दास्ता मेरी
मगर अफसोस सुनने वाले ही सो गए।'

यह उक्ति आज की समाज की अवस्था पर पूरे तौर से लागू होती है।

आर्यसमाज के प्रचार कार्य मे ढली आने का बहुत से कारणो मे से एक कारण यह भी हुआ कि बहुतो की यह कुछ गलत-सी धारणा हो गई कि आर्य-समाज की अब कुछ आवश्यकता नही रही क्योकि इसके द्वारा चलाए गए बहुत से कार्यक्रम तो सरकार ने अपना लिए और अनेक जनता ने स्वय अपने हितकारी समझ कर बिना किसी सकोच के स्वय अपना लिए और कुछ समय के प्रभाव से हमारे जीवन के अग बन गए या बनते जा रहे हैं। राजनीतिक क्षेत्र मे तो अद्भुत प्रगति हुई—सहस्र वर्ष की विदेशी सत्ता की दासता से मुक्ति पा ली है। तो समाज की अब कुछ विशेष आवश्यकता नही रह गई। परन्तु यह कहना उनका भ्रम है। याद रहे आर्यसमाज एक आन्दोलन है, कोई सामयिक सस्था नही है काग्रेस जैसी। जिस के सम्बन्ध मे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी, ने कहा था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् काग्रेस की कोई आवश्यकता नही रही।

इस शिथिलता का परिणाम यह हुआ कि समाप्त प्राय कुछ अराष्ट्रीय और समाज विरोधी तत्त्व फिर से उग्र रूप मे उभर हमारे सामने आ खडे हैं। अशिक्षित जनता फिर से अनेक सामाजिक कुरीतियो और रूढियो में ग्रस्त हो गई हैं, एक निराकार भगवान की पूजा के स्थानपर अनेक देवी-देवताओं की मिथ्या पूजा होने लगी, अछूतो और तथाकथित हरिजनो पर सवर्णों के अत्याचार ने उग्र रूप धारण कर लिया है और विधर्मी लोग इस स्थितिका अनुचित लाभ उठाकर हरिजनो, अछूतो को लोभ लालच देकर उनका धर्मान्तरण करने पर तुले हुए है। किन्ही राजनीतिक कारणो से समाज का ध्यान इस कार्य मन्द पडा हुआ है और सरकार धर्म-निरपेक्षता की आड मे इसओर उदासीन है। इस कारण ईसाई मुसलमानो की अनेक सस्थाए विदेशी विपुल धनराशि और अरब देशोके पेट्रोडालर की सहायता से यह धर्मांतरण का काम बडी तीव्र गति से कर रही हैं। कुछ समय हुआ हैदराबाद में हुई मुस्लिम कान्फ्रेंस और लन्दन स्थित मुसलमानो की जमायती ने कुछ ऐसे प्रस्ताव पास किए हैं कि शीघ्रातिशीघ्र पेट्रोडालर की मदद से निम्न वर्गों के भोलेभाले अशिक्षित हिन्दुओ को लोभ-लालच तथा धर्मकिया देकर अधिक से अधिक मुसलमान बनाया जाए। यदि मुसलमानो की ये धर्मान्तिरण की योजना मफल हो जाती है तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है

लेखक
चमन लाल
प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार

कि आज हिन्दुस्तान मे हिन्दू बहुसख्यक होता हुआ कुछ समय पश्चात् अल्पसख्यक हो जाएगा और यहा के मुसलमान पाकिस्तान और बागला देश की मदद से इस बचे-कुचे ऋषि-मुनियो के देश को मुस्लिम देश की घोषणा माँग की करेगे। अत यह धर्म-परिवर्त्तन का प्रश्न एक साधारण धार्मिक प्रश्न न होकर एक देशव्यापी राजनीतिक षडयन्त्र है। जिसकी रोकथाम की अत्यन्त आवश्यक है। स्मरण रहे कि मुसलमान अरब देश के अलावा विश्व के लगभग ५२ देशो मे फैले हुए हैं। जिसकी कुल संख्या अन्दाज ८० करोड है जबकि हिन्दुओ का यही (हिन्दुस्तान) देश है। विश्व भर मे, जहा ये लोग स्वतन्त्रतापूर्वक रहकर अपने ऋषि-मुनियो की मान्यताओ के अनुकूल जीवन-यापन कर सकते हैं और इस भूखण्ड अपनी मातृभूमि कहने मे गर्व गर्व अनुभव कर सकते।

आर्यसमाज का कर्त्तव्य

हिन्दू समाज (हिन्दू जाति) एक विशाल परिवार के समान है। जिसके सदस्य अपने-अपने विचारो और मान्यताओ के अनुसार बौद्ध, जैन, पौराणिक, वैष्णव, शैव तथा आर्यसमाजी आदि के रूप मे मिलजुलकर इसकी शोभा बढा रहे हैं। परन्तु यह कहना अनुचित न होगा कि इनमे आर्यसमाज ही एक ऐसा जागरूक और देश हितकारी सस्था है जो अपने जीवन के आरम्भ से ही इस विशाल परिवार की रक्षा के लिए एक पुलिसमैन की तरह प्रहरी का काम कर रही है। जब-जब और जहा-जहा भी इस जाति के किसी भी अग पर किसी ने चोट की या विधर्मियो ने किसी के देवी-देवता को कुदृष्टि से देखने की कोशिश की, आर्यसमाज ने ही उनको मुहतोड उत्तर दिया और रक्षा की। आज यह धर्मान्तरण का षडयन्त्र समस्त हिन्दू जाति को एक चैलेन्ज है और यही अवसर है कि वर्षों से चले आ रहे जातपात, छुआछूत और ऊचनीच के भीषण रोग से छुटकारा पावे। आज समाचार-पत्रो मे इसकी बडी चर्चा है। आर्य-समाज पूरी तरह सतर्क है। इस चैलेन्ज का मुकाबला करने के लिए। आज तक आर्यसमाज की उपलब्धियां—हिन्दू जाति की सेवा मे महान है। सहस्रो आर्यवीरो ने इसकी रक्षा हेतु पिछले १०८ वर्षों मे अपने प्राणो की आहुतिया दी और आज भी उसी तरह से तैयार है और बडी से बडी आहुति देश और जाति की रक्षा के लिए तुच्छ समझता है। आज आर्य समाज का पवित्र स्थापना दिवस है। इस वर्ष इस दिनका एक मात्र पवित्र सन्देश यही होगा कि हर हिन्दू आर्य नौजवान समय की नाजुकता को पहचाने और तन-मन-धन से सब आपसी भेद-भावो को भुलाकर इस देश-सेवा मे एक जुट जायें। साथ ही सब अपने को हिन्दू कहने वालो से मेरा करबद्ध अनुरोध है कि वे सब अपने-अपने स्थान पर बैठ जिस किसी रूप मे हिन्दू के हितो की रक्षा करे और धन से भी आर्यसमाज के हाथ मजबूत करे ताकि सब मिल कर विधर्मियो की सब योजनाओ को विफल कर दो। प्रभु सुमति सामर्थ्य दे।

दिल्ली मे आर्यसमाज के निरन्तर बढते चरण (पृष्ठ ४ का शेष)

सम्मेलन, महासम्मेलन इत्यादि समारोहो द्वारा राष्ट्र के नवजीवन और नव प्राणशक्ति स्फूर्ति और प्रेरित करने का सतत प्रयास वस्तुत स्तुत्य और प्रशमनीय है। महिला समाजो का पृथक सगठन है और एक गुरुकुल तथा महिला आश्रम और अन्ध महाविद्यालय है।

देश मे इस समय धर्मान्तरकरण का पेट्रोडालर और अमेरिकी-यूरोपीय देशो से प्राप्त विशाल धन प्रलोभन का मुकाबला हिन्दू जनता के पूर्ण महयोग से आर्यसमाज ही कर रहा है।

के. सी ३७/बी, अशोक विहार,
दिल्ली-५२

आर्य जगत् समाचार

चरित्र-निर्माण एवं सामाजिक कुरोति-निवारण में आर्यसमाज की भूमिका महत्त्वपूर्ण

—ससद सदस्य आचार्य भगवानदेव

बम्बई। आर्यसमाज सान्ताक्रुज एव बम्बई की अन्य आर्यसमाजो की ओर से किए स्वागत का उत्तर देते हुए समद सदस्य आचार्य भगवानदेव ने कहा—विश्व मे चरित्र निर्माण एव सामाजिक कुरीतिया दूर करने का कार्य आर्यसमाज जैसी सस्था ही कर सकती है। मैंने अपने जीवन की शुरूआत और चरित्र का निर्माण बचपन से ही आर्यसमाज मे झाडू और आर्यवीर दल मे भाग लेकर किया है।

उन्होंने कहा—आर्य का अर्थ श्रेष्ठ और उत्तम पुरुष होता है। हर आर्य का जीवन एक जलती हुई मशाल की तरह होना चाहिए, जिससे उसके आसपास व सम्पर्क मे आने वाले व्यक्ति प्रकाश प्राप्त कर सकें। हम स्वय का चरित्र निर्माण कर सकें। हम स्वय का चरित्रनिर्माण कर राष्ट्र के हर नागरिक के सम्मुख उदाहरण प्रस्तुत कर राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण कर सकें।

ससद सदस्य आचार्य भगवान देव की अध्यक्षता मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव स्वीकृत कर भारत सरकार से माग की कि जिस प्रकार कोली वाडा का नाम बदला गया है, उसी प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी-वर्ष पर महर्षि दयानन्द द्वारा की गई सामाजिक एव राष्ट्रीय चेतना के फलस्वरूप उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उनकी स्मृति मे सान्ताक्रुज रेलवे स्टेशन का नाम महर्षि दयानन्द नगर किया जाए।

संस्कृत जनसाधारण की भी भाषा

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे सस्कृत समारोह का आयोजन

बम्बई। महाराष्ट्र विधान परिषद् के सदस्य श्री प्रभु देवलेकर की अध्यक्षता मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे उन विद्यार्थियो को प्रमाणपत्र एवं पारितोषिक वितरण किए गए, जिन्होने भारतीय विद्या भवन की अक्तूबर में की परीक्षाओ मे सफलता प्राप्त की। प्रमाण-पत्र भारतीय विद्या भवन के सरल सस्कृत विभाग के परीक्षा अधिकारी श्री प्रकाशचन्द जी त्यागी के कर-कमलो द्वारा वितरित किए गए। समारोह की सम्पूर्ण कार्यवाही सस्कृत भाषा मे हुई। अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री मधु देवलेकर ने कहा कि आज इस समारोह मे बैठकर मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि सस्कृत प्राचीन ऋषि-मुनियो की ही भाषा नही है, जैसा कि हम सुनते आए है अपितु यह तो जनसाधारण की भाषा है।

आर्यसमाज के महामन्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि हमने रजत जयन्ती वर्ष पर २०० व्यक्तियो को सस्कृत पढाने का सकल्प किया था। पिछले दो वर्ष मे २२८ व्यक्तियो को सस्कृत भाषा का ज्ञान कराया गया। इस आर्यसमाज के इतिहास मे यह एक बडी उपलब्धि है।

आर्यसमाज गोडिहारी (नेपाल तराई) मे बृहद गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज गोडिहारी (नेपाल तराई) मे चम्पारण जिला आर्यसभा के तत्वावधान मे 'जयन्ती महायज्ञ' १६ मार्च से २० मार्च तक बहुत ही धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य प० रामानन्द शास्त्री, प० गगाधर शास्त्री, प० भगवान शर्मा, प० रामदेव शर्मा, डा० सुवश जी, श्रीमती विद्यावती देवी, श्रीमती माधुरी देवी, श्री रामचन्द्र नेपाली, प राधाकान्त द्विवेदी, स्वामी ईश्वरानन्द आदि उपदेशक, उपदेशिकाए, भजनोपदेशक एव चम्पारण जिला आर्यसभा के अधिकारीगण पधारे थे। पाच रोज तक लगातार कार्यक्रम के अनुसार गायत्री महायज्ञ एव विद्वानो के उपदेश होते रहे। हजारो की सख्या मे स्त्री-पुरुष (नेपाल आदि) के विभिन्न ग्रामो से आते थे। एव बडी श्रद्धा के साथ यज्ञ मे सम्मिलित होते थे और विद्वानो के उपदेश सुनते थे। शका-समाधान भी विद्वानो द्वारा होता रहा। पचासो की सख्या मे लोगो ने यज्ञोपवीत धारण किए। जिसमे सोलह स्त्रियो ने भी यज्ञोपवीत लिया। तथा मद्य, मास, बीडी सिगरेट छोडने की प्रतिज्ञा की।

दिल्ली में बूचड़खाना बनाने का विरोध

आर्यसमाज आन्दोलन करेगा

कानपुर। केन्द्रीय आर्यसभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने उत्तरप्रदेश व दिल्ली प्रशासन द्वारा २८ करोड रुपए लागत से बनाए जाने वाले विशाल बूचड़खाने की तीव्र निन्दा की है। जिनमे दस हजार निर्दोष गायो और दूसरे पशुओ के सामूहिक दैनिक वध करने की योजना है। यह भारतीय सस्कृति के साथ खुला मजाक है।

श्री आर्य ने कहा है कि भारत महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानन्द, महात्मा गाधी सरीखे महापुरुषो का देश है तथा अहिंसा हमारी सस्कृति का अभिन्न अग है। भारत देश शान्ति व विश्व-बन्धुता का सन्देशवाहक रहा है। ऐसे महान् राष्ट्र की राजधानी मे दस हजार पशुओ का सामूहिक दैनिक वध निन्दनीय है।

दिल्ली के हाल के चुनाव मे स्वय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी व अन्य केन्द्रीय मन्त्रियो ने सार्वजनिक रूप से स्पष्ट घोषणा भी की थी कि वह बूचडखाना स्थापित नही होगा। ऐसी स्थिति मे अब बूचडखाना की स्थापना भारत के बहुमत की धार्मिक भावनाओ का अनादर होगा। अत सरकार इस प्रस्तावित योजना को रद्द करे वर्ना आर्यसमाज व हिन्दू समाज इसके विरुद्ध आन्दोलन करेगा।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में युवक आगे आएं

प्रेमनाथ चड्ढा का आह्वान

महात्मा हसराज की स्मृति मे 'युवक रैली'

दिल्ली १० अप्रैल (रविवार)। आर्य युवको की एक विशाल रैली को सम्बोधित करते हुए प्रिंसिपल जी. बी. चोपडा ने युवको को महात्मा हसराज के जीवन से शिक्षा लेने का आह्वान किया। उन्होने अपने सन्देश मे कहा कि प्रत्येक समाज व सस्था अपने महान् पुरुषो की स्मृति मे स्मारक बनाती है, देश के आर्य-समाजियो ने भी उसी कडी मे राष्ट्र की भावी पीढी के निर्माणार्थ दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक स्कूल व कालेजो के माध्यम से भारत की स्वतन्त्रता व सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रेमनाथ चड्ढा ने ध्वजारोहण करते हुए अपने उद्घाटन भाषण मे 'ओ३म्' ध्वज का महत्त्व समझाया। उन्होने कहा कि 'ओ३म्' जो है वह शाश्वत है। युवको को प्रत्येक प्रतिस्पर्द्धा मे आगे आना चाहिए।

महर्षि दयानन्द की फिल्म देखिए

दिनाक १४, १६-४-८३ को रात्रि के समय स्वामी दयानन्द सरस्वती पर सूचना प्रसारण मन्त्रालय द्वारा निर्मित लघु चित्र (समय २० मिनट) दूरदर्शन द्वारा प्रदर्शित किया जा रहा है जिन आर्य सज्जनो के पास अपने वीडियो कैसेट रिकार्डर हैं, वे यदि रिकार्ड करना चाहे तो रिकार्ड भी कर सकते हैं।

—राजेन्द्र दुर्गा मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

मीनाक्षीपुरम की कहानी : दूसरों की जुबानी

—हरप्रकाश आहलूवालिया, प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज अशोक विहार

मीनाक्षीपुरम के विषय मे पाठको ने पत्रो में बहुत कुछ पढा होगा और कई आकड़े भी देखे होगें। यह भी पढा होगा कि जितने परिवार मुसलमान हो गए थे, उनमे से अधिकाश वापस हिन्दू धर्म मे आ गए है, इसी सदर्भ मे दिल्ली की प्रसिद्ध पत्रिका 'इन्डियां टूडे' के १५ मार्च वाले अक में मीनाक्षीपुरम पर एक लेख श्री राज चणगप्पा का लिखा हुआ प्रकाशित हुआ है जिस मे ने कुछ नये आकडे और तथ्य उभरे है पाठको की जानकारी के लिए उस लेख मे से कुछ अश यहा दिए जा रहे है।

श्री राज ने गरीब हरिजनो को वापस हिन्दू धर्म मे लाने के प्रयत्नो का श्रेय आर्यसमाज को दिया है। उन्होने लिखा है कि आर्यसमाज ने वहा के टूटे हुए काली मन्दिर को पुनः बनवा लिया है। उसमे से दिन मे पाच बार गायत्री मन्त्र का उचारण होता है श्री नारायण स्वामी आर्य समाज मधुरई से प्रति सोमवार को मीनाक्षीपुरम आते है और जो नव-मुसलमान अपने धर्म मे पुनः प्रवेश करना चाहें वह उन्हें शुद्ध करते हैं। श्री राज ने यह भी लिखा कि यद्यपि आर्यसमाज का यह कहना है के जो २०० परिवार वहा मुसलमान हो गए थे, उन मे ३० परिवार वापिस हिन्दू धर्म में आ गए है किन्तु उन्होंने श्री अनन्त राम सेशन जो कि आर्यसमाज के प्रतिनिधि पनपोली गाव मे रहते है का हवाला लेकर लिखा है कि अभी बहुत कम सख्या मे वापसी हुई है, लेकिन श्री सेशन ने आशा व्यक्त की है कि जैसे ही शोर-शराबा कम हो जाएगा सब परिवार वापस हिन्दू धर्म मे आजाएगे।

श्री राज ने लिखा है कि वहां धर्म एक व्यापार की चीज बन गई है। उदाहरणत उन्होने श्री सुबया मुध स्वामी का वर्णन किया है जो कि पाच साल पहले ईसाई बन गए थे, क्योंकि उन के पाव मे चोट आ जाने से ईसाईयो ने उनके कामकाज मे सहायता की थी, लेकिन उन का कहना है जब सब गाव मुसलमान हो गया, तब वह भी मुसलमान हो गए क्योंकि वहा के मुसलमान नेताओ ने उन्हे तीन हजार रुपए देने का वचन दिया था। उन का यह भी कहना है कि उन को इस्लाम से कोई लगाव नही है ना ही उन का कुछ ज्ञान है। वह कभी मस्जिद मे भी नही गए, केवल यह शर्त उन्होने मानी थी, कि वह मुसलमानी टोपी पहनेंगे और अपना नाम सुलेमान रखेंगे लेकिन छ महीने के बाद ही जब उन्होने देखा कि इस्लाम मे कुछ नही है तो वह पुनः इसाई हो गए लेकिन जब दो मास पहले आर्यसमाज की प्रेरणा से वह अपनी धर्मपत्नी और तीन बच्चो सहित वापस हिन्दू धर्म मे आ गए है और उन्होने वहां के हरिजन नेता श्री सुबानो जो कि बाकी हरिजनो के साथ मुसलमान नही हुए थे, को कहा कि वे चार और परिवारों को पुन हिन्दू धर्म मे ला सकते हैं यदि (दो हजार रुपए) प्रति परिवार दिया जाए। श्री राज का यह भी कहना है कि उन्होने जो खोज वहां की है उस से उन्हे विश्वास हो गया है कि वहा के हरिजनो का यह कहना कि 'वह इस्लाम मे इसलिए आए है कि वहाँ बराबरी का सलूक होता है और स्वर्ण हिन्दूओ के दुर्व्यवहार और पुलिस के अत्याचार से बचने के लिए इस्लाम कबूल किया है' केवल एक ढोग है। श्री राज के अनुसार धर्म परिवर्तन का असली कारण यह था कि पास के नदी मे से दो हत्या किए गए लोगो की लाशे निकली और साथ ही नकली नोट बनाने की मशीन भी वहा से निकली थी जिस के कारण पुलिस ने कुछ हरिजनो को जिन पर इस बात का सन्देह था को पकड लिया और पुछताछ मे उन को तग भी किया गया इसी कारण इस आरोप से बचने के लिए हरिजन मुसलमान हो गए।

यह केस अभी भी अदालत मे चल रहा है और ग्यारह आदमी जमानत पर हैं। अन्त मे श्री राज ने यह भी लिखा है कि आर्यसमाज को अब यह विश्वास हो गया है कि यह धर्म-परिवर्तन सब पैसे का खेल है (और इस पैसे के खेल मे हिन्दू, मुसलमानो का मुकाबला कैसे कर सकते हैं जिनको अरबो रु० अरब देशो से मिल रहा है—लेखक) इसलिए उसको कोई अन्य रास्ता निकालना पडेगा इसलिए उन्होंने एक छोटा-सा विद्यालय वहा खोल दिया है जिसमे २० हरिजन बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं वह एक और बडा विद्यालय एक लाख रुपये की लागत से भी खोल रहे है और एक मन्दिर भी बनवाना चाहते है जिसमे धार्मिक चर्चा हो सके और हरिजनो को अपने धर्म का पूरा ज्ञान हो सके।

इस लेख को पढ़ने के बाद निश्चय ही हम आर्यसमाजी इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि आर्यसमाज ने इतने बडे काम करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया है और वह भी दक्षिण भारत मे जहाँ के आर्यसमाज का कोई विशेष प्रचार नहीं था। लेकिन आर्यसमाज समस्त हिन्दू जनता की उदारता और सहयोग के बिना यह काम पूरा कर सकता है? क्या ही अच्छा हो यदि हम सब हिन्दू यह प्रश्न अपने आप पूछे और इसका उत्तर ढूढने का प्रयत्न करें क्योकि इस प्रश्न के उत्तर पर ही आर्यसमाज की सफलता और हिन्दू धर्म और देश का भविष्य निर्भर करता है।

फुटबाल के मुकाबले में पं० गुरुदत्त दल विजयी

नई दिल्ली। १० अप्रैल के दिन शिक्षा शास्त्री महात्मा हसराज की स्मृति मे फुटबाल व दौड प्रतियोगिताए हसराज कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय मे आयोजित हुई।

फुटबाल प्रतिस्पर्द्धा मे प० गुरुदत्त टीम ने पजाब केसरी टीम को हरा कर 'महात्मा हसराज स्मृति विजयोपहार' जीत लिया। सेमी-फाइनल मे पजाब केसरी टीम ने स्वामी श्रद्धानन्द टीम को ४-३ से हराकर दूसरी शील्ड जीती। अन्य प्रतिस्पर्द्धा में पजाब केसरी टीम(गुरुतेग बहादुर नगर)ने शहीद भगत सिंह टीम (विक्रान्त नगर) को ४-० से हराया। स्वामी श्रद्धानन्द टीम (गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ) न शहीद आजाद टीम (बाग कडे खा) को १-० से हराया। प० गुरुदत्त टीम (जहागीर पुरी) ने नेता जी सुभाष टीम (रानी बाग) को ६-० से हराया। शहीद ऊधम सिंह टीम (सब्जी मण्डी ने सरदार पटेल टीम (पटेल नगर) को ४-२ से हराया।

तरुणो की दौड प्रतियोगिताओ मे श्री प्रकाश (पटेल वर्ग), श्री बालकृष्ण (श्रद्धानन्द वर्ग), श्री सुरेन्द्र (गुरुदत्त वर्ग) प्रथम, द्वितीत, तृतीय रहे। किशोर वर्ग मे श्रद्धानन्द वर्ग के श्री वीरदेव, श्री रविन्द्र (भगतसिंह वर्ग), श्री सजय (दयानन्द वर्ग) विजयी रहे।

सभ्यता-संस्कृति एवं पीड़ितों के लिए समर्पित......

(पृष्ठ २ का शेष)

गए। उन दिनों उनकी दाढ़ी थी। विद्यार्थियों ने मजाक उड़ाया "दाढ़ी वाले प्रिंसिपल का भाषण होगा, परन्तु जब महात्मा जी का भाषण हुआ। हृदय से निकला प्रत्येक शब्द जादू का-सा असर करने लगा। दोनो युवक ईसाई बनने से बच गये। इनमे से एक था – जो बाद में स्वामी सत्यानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए चौधरी वेदव्रत।

महात्मा जी की अध्यक्षता मे एक शास्त्रार्थ हुआ। पौराणिक पंडित स्वामी दयानन्द को गालिया देने लगा। महात्मा जी रो पड़े। इतनी अनन्य भक्ति थी स्वामी जी के प्रति। कहने लगे जिस हिन्दू जाति के लिए स्वामी जी ने तन, मन, धन सब कुछ होम कर दिया, वह जाति उस महापुरुष के प्रति ऐसा व्यवहार करे।" सच्ची तडप थी दिल मे। युवको में बेकारी थी। उसके लिए भी महात्मा जी ने प्रयत्न किया। 'दयानन्द पाली टैकनिकल इस्टीट्यूट, मेहरचन्द टैकनिकल इस्टीट्यूट, आयुर्वेद, दर्जी, ओवरसियर की कक्षाए चलवाई।

उन दिनो दो गुट थे आर्यसमाज के। कालेज गुट और गुरुकुल गुट। स्वामी श्रद्धानन्द और हंसराज दोनों के नेता थे। [illegible] देवयोग से दोनों नेता मंच पर उपस्थित थे। स्वामी मुनीश्वरानन्द जी की हार्दिक इच्छा थी दोनो दल एक हो जाएं। मुनीश्वरानन्द जी ने कहा, देखते क्या हो? उठो और गले मिलो। दोनो खडे हो गए। महात्मा हंसराज जी ने कहा—स्वामी श्रद्धानन्द मेरे पूज्य हैं। मैं तो उनके चरण ही छू सकता हूँ। चरणो में गिर गए। स्वामी श्रद्धानन्द ने उन्हें उन्हें उठाकर गले से लगा लिया। सारी जनता की आंखें आँसू बहाने लगी। नम्रता और प्यार मे विरोध को समाप्त करने की महान शक्ति है। आज भी आर्यसमाज को ऐसे ही तप पूत, ध्येयनिष्ठ, समर्पित तेजस्वी नेताओं की आवश्यकता है।

उस महान आत्मा के अदृष्ट चरणो में एक श्रद्धांजलि।

—१६, ७४/६ ईस्ट मारेडपली, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

आर्यसमाज माडल टाउन, दिल्ली-९ का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज माडल टाउन का २६ वां वार्षिकोत्सव २५ अप्रैल से १ मई १९८३ तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर भजन प० सत्यदेव स्नातक के होंगे और उपदेश ब्र० नरेश आर्य, श्री अखिलेश भारती और गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य श्री रामप्रसाद जी वेदालंकार आदि विद्वान देंगे।

आर्यसमाज गन्नौर शहर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गन्नौर शहर (सोनीपत) हरियाणा का २६ वां वार्षिकोत्सव १० जून ८३ से १२ जून-१९८३ तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर अनेक साधु संन्यासी, महात्मा, विद्वान संगीतज्ञ एवं भजनोपदेशक पधारेंगे।

आर्यसमाज मऊनाथ भंजन (आजमगढ) के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री भगवती राय; उपप्रधान—श्री विद्याभूषण, श्री ओम्प्रकाश आर्य, मन्त्री—श्री द्विजेन्द्रकुमार, उपमन्त्री—श्री रामदास, श्री उदयप्रताप कोषाध्यक्ष—श्री राजबहादुर प्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष—श्री ब्रह्मदेव, आयव्यय निरीक्षक—श्री राजेन्द्रराय एडवोकेट।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री [illegible] द्वारा सम्पादित एवं [illegible]
गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय : १५ हनुमान रोड नई दिल्ली [illegible]

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष . ७ अक २७ | रविवार १ मई, १६८३ | १८ बैसाख वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५८

देश की चुनौतियों का सामना : केवल आर्यसमाज द्वारा सम्वभ

बुनियादी समस्याओं को आर्यसमाज सुलझाए : उत्तरी आर्य महासम्मेलन का सफल अधिवेशन : नेताओं का उद्बोधन : विशाल शोभायात्रा

२३ से २५ अप्रैल तक गुजरांवाला टाउन, दिल्ली में सफल विशाल आर्य महासम्मेलन

दिल्ली। २३ से २५ अप्रैल १६८३ तक उत्तरी दिल्ली के माडल टाउन के सम्मुख गुजरांवाला टाउन के विशाल मैदान मे विराट आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समाजोत्थान, जनजागृति, कविता आदि अनेक सम्मेलन किए गए। इन सम्मेलनो मे तथा उत्तरी दिल्ली के अनेक उपनगरो मे निकली विशाल शोभा-यात्रा में जनता ने बडी संख्या मे भाग लिया।

समाजोत्थान सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने कहा—सौ सालो मे आज पहली बार देश की सामान्य स्थिति में जितनी गिरावट आई है, इससे पहले कभी नहीं आई थी। पहले भाई पीते थे, अब बहनें भी पीती हैं। रिश्वत और भ्रष्टाचार बहुत अधिक बढ गया है, उत्तर मे तो नही परन्तु दक्षिण में छुआछूत बहुत अधिक है, आर्यसमाज ही इन सब समस्याओ का समाधान कर सकता है, आज बच्चियो बहुओं और को जलाया जा रहा है, व्यक्ति से समाज बनता है, समाज से राष्ट्र बनता है। आर्यसमाज देश के सम्मुख उपस्थित समस्याओं और चुनौतियो का दृढता से सामना करे।

वीरेन्द्र रत्नम जी ने जनता से प्रतिज्ञा कराई कि मास खाना, अण्डा खाना, शराब पीना, असत्य बोलना, रिश्वत और दहेज लेना और देना पाप है। महात्मा प्रेमभिक्षु जी, डा० रघुवीर, श्री प्रेमशील महिन्द्र आदि ने सामयिक भाषण दिए। सम्मेलन के मुख्य अतिथि दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री जगप्रवेश ने आर्य-समाज के कार्यक्रम की सराहना की और आशा प्रकट की कि छुआछूत उन्मूलन एव समाजोत्थान मे आर्यसमाज यशस्वी योग-प्रान करेगा।

जनजागृति सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मंत्री श्री हरिकिशनलाल भगत ने कहा आज देश मे अनेकता मे एकता है। हमें देश की इस एकता को कायम रखना होगा। आर्यसमाज का पुराना अच्छा इतिहास है, उसके पास अच्छे प्रचारक और अच्छी संस्थाए हैं, हमे भारत की वैचारिक एकता को सुदृढ कर भारत की एकता को सुदृढ़ करना होगा। ससार सन्तो, विचारकों और महात्माओ की पूजा और सम्मान करता है। आर्यसमाज नहीं होता तो उत्तरी भारत में सुधार का कार्यक्रम नहीं होता, ये शिक्षा सस्थाए नहीं होतीं। आज भी आर्यसमाज को सामाजिक उत्थान, एकता, प्रगति, युवाओं के संगठन, हरिजन कल्याण आदि कार्यक्रमो को अपना कर देश की प्रगति मे सक्रिय योग देना चाहिए।

भूनपूर्व ससदसदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री ने कहा सच्ची वैदिक अहिंसा सिखलाती है कि जैसा शत्रु हो वैसे शस्त्र का इस्तेमाल किया जाए। साप को लाठी से और बिच्छू को ईट या पत्थर से नष्ट किया जाता है, इसी प्रकार आततायी शत्रुओ को प्रेम से नही प्रत्युत शक्ति से ही नियन्त्रित किया जा सकता है। भूतपूर्व संसदसदस्य श्री बलराज मधोक ने कहा आज मिजोरम, नागालैण्ड और पजाब से अलगाव की आवाज उठ रही है, परन्तु व्यापक हिंसा के बावजूद असम से अलगाव की आवाज नही उठी है। हमे समझना होगा कि यदि हिन्दू कमजोर होंगे तो भारत भी कमजोर हो जाएगा, एक समय अफगानिस्तान, पश्चिमी पजाब और पूर्वी बगाल भारत के भाग थे, परन्तु विधर्मी होते ही वे भारत से कट गए। इसी प्रकार हमे हृदयगम कर लेना होगा कि देश मे यदि जनता का धर्मपरिवर्तन हो जाता है तो उसकी राष्ट्रीयता भी बदल जाती है।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने हिन्दू जनता को समय रहते सावधान होने का आह्वान किया। इस अवसर पर आर्य-प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने पंजाब की भीषण परिस्थिति से समय रहते सगठित होने की अपील की।

हरिजन नेता श्री चिन्तामणिजी ने कहा—इतिहास मे ताज, तिजौरी और तलवार का आदर किया जाता है, परन्तु आर्य-समाज ने विचार की क्राति की है। उसने समाज सुधार की जो क्रान्ति की थी उसे बढाना होगा। श्री वेदप्रकाश शास्त्री ने सच्चे जनजागरण को समझने की अपील की। सम्मेलन की अध्यक्षता गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा ने की।

जनजागृति सम्मेलन मे सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि भारत मे जाति-वाद, प्रान्तवाद, बलात धर्मान्तरण, छुआछूत, भ्रष्टाचार, गुरुडम, अलगाववादी प्रवृत्तियो का सगठित विरोध करते हुए मानवमात्र के कल्याण एव जनजागरण व कल्याण के लिए निरन्तर कार्य करेंगे तथा पजाब, असम और अन्य स्थानो पर अलगाववादी ताकतो का पूरी शक्ति से मुकाबला करेंगे।

विशाल शोभायात्रा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे २३-२४-२५ के दिन उत्तरी दिल्ली मे आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। रविवार के दिन २।। बजे से एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। इस शोभा-यात्रा मे विद्यालयो के बच्चो ने बडी सख्या मे भाग लिया। शोभायात्रा कमला नेहरू पार्क से शुरू होकर घण्टाघर रूपनगर, राणा प्रताप बाग, किंग्सवे कैम्प और माडल टाउन होती हुई गुजरावाला टाउन पहुची। शोभायात्रा मे दहेज और स्त्रियो के प्रति किए जाने वाले अत्याचारो तथा अलगाववादी ताकतो के विरुद्ध नारे लगाए गए।

ओ३म् की पताका की महत्ता

प्रात गुजरावाला टाउन मे ओ३म् की पताका लहराते हुए स्वामी विद्यानन्द जी ने समाज को अधिक सगठित और सशक्त बनाने का आह्वान किया और कहा कि विघटनकारी तत्वो को आश्रय न दिया जाए। वक्ता ने ओ३म् की पताका के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जनता को ओ३म् की पताका के आरोहण एवं ध्वज बन्दन के कार्यक्रम के समय महापुरुषों की जय के नारे लगाने के स्थान पर केवल वैदिक धर्म की विजय के नारे लगाने चाहिए।

कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय ने इस अवसर पर महर्षि दयानद सरस्वती को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि समाज-कल्याण के लिए आर्य-समाज सदैव ही अग्रणी रहा है।

शनिवार की रात को सम्मेलन मे एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। श्री क्षेमचन्द्र सुमन की अध्यक्षता मे सारस्वत मोहन मनीषी, श्री सत्यपाल वेदार, नाज सोनी, राणा गन्नौरी, मनव्वर मरहद्दी, श्री जगदीश साधक प्रकाशवीर व्याकुल आदि कवियो ने अपनीभावपूर्ण रचनाए प्रस्तुत की।

विदर्भ के लाखों आदिवासी हिन्दुओं के इस्लामीकरण का षड्यन्त्र

आर्य नेता लाला रामगोपाल शालवाले का प्रेस वक्तव्य : धर्मपरिवर्तित लोगों को सरकारी अनुदान बन्द करो।

नागपुर। मध्यप्रदेश एव विदर्भ के पर्वतीय अचलो तथा आदिवासी क्षेत्रो का दौरा करने के अनन्तर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव श्री रामगोपाल शाल-वाले ने बताया कि दक्षिण भारत मे पेट्रो डालर के बल पर गरीब हरिजनो का धर्म परि-वर्तन करने एव भारत में इस्लामीकरण के आन्दोलन के पश्चात् अब मध्यप्रदेश एव विदर्भ स० ८ लाख भीलो मे आदिवासियो तथा हरिजनो को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र प्रारम्भ किया जा रहा है। जगलो की छोटी-छोटी बस्तियो मे बसे हुए इन गरीब भीलो को इस्लामीकरण की लपेट मे लेकर देश का नक्शा बदलने की घृणित चालें चली जा रही हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादक – नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड

वेद-मनन

ईश्वर, हमें पापों से छुड़ाइए और प्रज्ञान को प्राप्त कराइए

—प्रेमनाथ, सभा-प्रधान

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्ति विधेम ॥

॥ यजु० ४० । १६ ॥

दीर्घतमा ऋषि, आत्मा देवता, निचृत्, त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर।

शब्दार्थ— [अग्ने] हे स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप सब जगत्, के प्रकाश करने हारे करुणामय जगदीश्वर । [देव] हे दिव्यस्वरूप सकल सुखदाता परमेश्वर ! [विद्वान्] हे सम्पूर्ण विद्यायुक्त सब को जानने हारे परमेश्वर ! (आप कृपा कर के) [अस्मान्] हम लोगो को [राये] विज्ञान व धन राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए [सुपथा] अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगो के मार्ग से [विश्वानि] सम्पूर्ण [वयुनानि] प्रज्ञानो वा उत्तम कर्मों को [नय] प्राप्त कराइए (और) [अस्मत्] हम से (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त [एनम्] पापाचरण को [युयोधि] दूर कीजिए। (इसलिए हम लोग) [ते] आप की [भूयिष्ठाम्] बहुत [नम उक्तिम्] नम्रतापूर्वक प्रशसा (स्तुति) [विधेम] (सदा) किया करें।

भावार्थ—कोई भी मनुष्य परमात्मा की सत्य प्रेम-भक्ति बिना योगसिद्धि को प्राप्त नही हो सकता। जो मनुष्य सत्य भाव से परमेश्वर की उपासना करते, यथा शक्ति उसकी आज्ञा का पालन करते और सर्वोपरि सत्कार के योग्य परमात्मा को मानते हैं उनको दयालु ईश्वर पापाचरण मार्ग से पृथक् कर धर्मयुक्त मार्ग मे चला के विज्ञान देकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करने के लिए समर्थ करता है। इससे एक अद्वितीय ईश्वर को छोड कर किसी अन्य की उपासना कदापि न करें॥

बोध-कथा

कभी घमण्ड न करो

विदेशी आक्रान्ताओ के बर्बर अत्याचारो से त्रस्त भारतीय जनता के उद्धार के लिए माता जीजाबाई ने बालक शिवाजी को बचपन से ही तैयार किया था। फलत. बारह वर्ष की कच्ची उम्र मे ही शिवाजी ने बीजापुर सुल्तान के दरबार मे शीश झुकाने से इन्कार कर दिया। शिवाजी ने अपनी तेजस्विनी माता जीजाबाई तथा समर्थ गुरु रामदास की प्रेरणा से स्वराज्य की स्थापना के लिए भगीरथ प्रयत्न प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम उन्होने तोरण का किला जीता, फिर एक के बाद दूसरे किले जीते। इन किलो को जीतने से उनमे अभिमान का सचार हो गया। एक दिन सुबह का समय था। वह पवत के शिखर पर खड़े थे, नीचे मैदान मे उनकी बड़ी सेना परेड करती हुई दिखाई दे रही थी। उसे देखकर राजा शिवाजी का मन घमण्ड से चूर हो गया। उस समय सामने उन्हे अपने गुरु रामदास भी दिखाई नही दिए। शिवाजी के माथे पर उभरती रेखाओ और आखो की रगत से गुरु रामदास जी ने शिष्य शिवाजी के घमण्ड का भाप लिया। गुरु ने पूछा—"क्या बात है ?" शिवाजी ने सेना की लम्बी पक्तियो को दिखाया और कहा—"देखिए अब तो हमारी शक्ति कुछ बन गई है।" गुरु जी बोले—"नही, यह तुम्हारा अहकार है।"

गुरु रामदास शिवाजी को लेकर उन्हे घुमाने ले गए। एक स्थान पर पहुच कर उन्होने कहा—"शिवा, इस पत्थर को खुदवाओ।" शिवाजी का आदेश होते ही मजदूरो ने घनो की मार से पत्थर तोड़ दिया। पत्थर हटाया गया। उस पत्थर के नीचे से एक पीला जीवित मेढक निकला। गुरु रामदास ने कहा—"शिवा, देखा इस मेढक को कौन खुराक देता है, उसे कौन भोजन देता है ? कौन इसका रखवाला है ? इस पत्थर के नीचे भी इसे कौन सुरक्षित रखता है ? जिसने इस मेढक को जिदा रखा है, उस भगवान् की शक्ति का सहारा लो। तुम्हारा कुछ नही है।"

शिवाजी का वह क्षणिक घमण्ड चूर-चूर हो गया और वह श्रद्धा से समर्थ गुरु रामदास के चरणो मे गिर पड।

— नरेन्द्र

ऋषि वर दयानन्द की जय

—भैरव दत्त शुक्ल

बोलो दयानन्द की जय! ऋषिवर दयानन्द की जय!!
रूढ़ि-स्वैरिणी की अलको मे, उलझ गए जन शिव मति वाले,
अन्धकार-जड़ता में खोकर, शील-विहीन हुए मतवाले,
सजे झूठ को सत्य मानकर, गए अनर्थ अर्थ मे पाले,
अपनो का सर्वस्व छीन कर, बन बैठे सारे दिल काले,
उस वेला मे जो दिखलाए, निडर बने आगे बढ आए,
लिया 'ओ३म्' का प्रबल सहारा, हर मोर्चे पर मिली विजय!
बोलो दयानन्द की जय! ऋषिवर दयानन्द की जय!!
ब्रह्मचर्य का बल अकूत ले, योग-क्रिया का सम्बल पाला,
भौतिकता का परिसर तजकर, दिव्य शक्ति-नवनीत निकाला,
अन्धकार की सत्ता छीनी, चारो ओर बढा उजियाला,
राख सदृश अस्तित्व खरा कर, अणु-अणु मे पनपा दी ज्वाला,
शास्त्रार्थों के शर सन्धाने, तर्कों के बहु भाले ताने;
ज्ञान-तत्त्व फिर से अगड़ाया, भागा कलुष, विकार, अनय!
बोलो दयानन्द की जय! ऋषिवर दयानन्द की जय!!
नियम—दशति की टेक लगाकर, ऐसा आर्यसमाज बनाया,
गुमराहो को राह दिखाने, जो दिनकर-सा बनकर आया,
मत-मजहब की कमिया खोजी, सही धर्म का रूप दिखाया,
शान्ति-मिलन के साधन खोजे, दृढता का उद्यान सजाया,
फिर 'सत्यार्थ-प्रकाश' आ गया, प्रज्ञामय उल्लास छा गया,
भला 'त्रैत'—प्रासाद जुड़ गया, क्यो फिर आत्मा हो न अभय,
बोलो दयानन्द की जय! ऋषिवर दयानन्द की जय!!
सायण, उव्वट और महीधर, के पाले सब विषधर कुचले,
मोक्षमूलरी व्याख्याओ के, बेढब ढब क्षण मे ही बदले,
जड पूजा निस्सार सिद्ध की, तजकर पुराण-पोखर गदले,
जो भी दिये प्रमाण, आज तक राहो से कभी न भूल टले,
जाग्रत की नैरुक्त प्रणाली, यौगिकता की धाक जमा ली।
वेद-सिन्धु का अवगाहन कर, भाष्य रचा शिवसत्य-सुछविमय!
बोलो दयानन्द की जय! ऋषिवर दयानन्द की जय!!
कितना भी हो भला सुदृढ पर, दुखद विदेशी शासन होता,
उन्नति उसे न मिलने पाती, अकर्मण्य रहकर जो सोता,
सस्कारो का रूप सही राज, ढोगी रोगी बनकर रोता,
यज्ञ-दान के आशय भूले, मानव मनन-पठन तक खोता,
ऐसी बातें बहु बतलाकर, राष्ट्रियता दधि मे नहलाकर,
कायरता की मूल उखाडी, बने व्यक्ति सब सजग धनजय!
बोलो दयानन्द की जय! ऋषिवर दयानन्द की जय!!
साहस, प्रेम, धैर्य का सम्बल, लेकर प्यारे आर्यो! आओ!
ऋषि-ऋण अभी चुकाना बाकी, व्यवहारो से उसे चुकाओ!
कलुषित राजनीति-छल तज कर वैदिक राजनीति अपनाओ!
त्रुटियो का विस्तार रोककर, दृढ 'राजार्य-सभा' पनपाओ!
तभी देश का तिमिर छटेगा, भ्रष्टाचारी कलुष हटेगा,
विघटन का दुर्भाव रोक कर, जाग्रत होगी सबल विनय!
बोलो दयानन्द की जय! ऋषिवर दयानन्द की जय!!

सच्चे ब्रह्म को जान

ओ३म् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो सूर्योऽजायत।
श्रोताद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ यजु ३१-१२

मन से चन्द्रमा है, नयनो से सूर्य है, कान से वायु-प्राण, उनके मुख से जन्मी अग्नि है, इस प्रकार उसी सच्चे ब्रह्म को जान।

आर्य सन्देश

श्री राम और श्री कृष्ण के सन्देश

बृहस्पतिवार २१ अप्रैल के दिन भारत की राजधानी और देश मे ही नही, प्रत्युत सारे ससार के श्री राम भक्तो ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का स्मरण किया तथा उनके सन्देश को जीवन मे अपनाने का व्रत लिया। वर्ष मे एक बार इसी तरह गीतोपदेष्टा श्रीकृष्ण का हम स्मरण करते हैं और उनके प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करते हैं। श्रीराम और श्रीकृष्ण भारतीय राष्ट्र और सस्कृति के अमर प्रतिष्ठाता और पुरस्कर्त्ता हैं। दोनो के नाम और उनके अमर कृतित्व से न केवल भारत भूमि प्रत्युत ससार के अनेक देशो की जनता अनुप्राणित होती है। उस दिन दिल्ली मे रामनवमी की विशाल सार्वजनिक सभा का उद्बोधन करते हुए ससद सदस्य श्री कर्णसिंह ने ठीक ही कहा है कि श्री राम का नाम केवल भारत की सीमाओ मे ही नही बधा हुआ है, इण्डोनेशिया, मारीशस तथा अन्य अनेक देशो में श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। त्रेता के श्री राम का प्रातः स्मरणीय लोकोत्तर चरित्र जहां एक आदर्श प्रजा-वत्सल शासक का स्मरण कराता है, वहा उसमे अन्यायी राजा रावण के सहारक, भारत के बृहत्तर भाग मे शान्ति एवं व्यवस्था प्रतिष्ठित करने वाले अद्वितीय योद्धा, पिता-माता के आज्ञापालक आदर्श चरित्र की भी याद हो उठती है।

श्री राम की तरह ही श्री कृष्ण ने भी भारत के जनजीवन मे नवप्राणो का सचार किया था। उन्होने विभक्त, विघटित भारत को महाभारत के रूप मे बृहत्तर भारत के रूप मे परिणत किया था। उन्होने किंकर्तव्यविमूढ हताश अर्जुन मे नव उत्साह एव प्राणो का सचार किया था और गीता का अमर सन्देश दिया था। भारत के सास्कृतिक जन-जीवन मे श्री राम और श्री कृष्ण से सदा प्रेरणा मिलती रही है, आज वर्त्तमान काल में मिल रही है और भविष्य में भी उनसे प्रेरणा मिलती रहेगी। खेद का विषय यही है कि हमारे तथाकथित धर्म निरपेक्ष शासन मे प्रति वर्ष हमारे सास्कृतिक धार्मिक पर्वों का अवमूल्यन होता जा रहा है। पहले वसन्त पचमी, वैशाखी, रामनवमी आदि अनेक पर्वों पर सरकारी छुट्टिया होती थी, परन्तु धीरे-धीरे इन सास्कृतिक पर्वों की छुट्टिया कम होती जा रही है। जब बहुसख्यक जनता की ओर से इन पर्वों पर छुट्टिया न होने की बात कही जाती है, तब सामान्यतया कहा जाता है कि दूसरे देशो की तुलना मे हमारे देश मे बहुत अधिक छुट्टिया होती हैं, पर इसी के साथ अल्पसख्यको के नाम पर दूसरे सम्प्रदायो की छुट्टिया नित नई दी जाती है।

हमारे देश मे होली-दीवाली का जितना महत्व है, उतना ही श्री राम और श्री कृष्ण के व्यक्तित्वों की भी महत्ता है। राष्ट्रीय एव सास्कृतिक जीवन मे इन मुख्य पर्वों और इन महापुरुषो की सदा गरिमा बनी रहेगी। आज की समस्याओ के समाधान मे भी दीवाली और होली के स्नेह और एकता का मूल मन्त्र अपनाने के साथ देश के निर्माण और एकता की प्रतिष्ठा मे श्री राम और श्री कृष्ण के सन्देशो को जीवन मे लाना होगा। जिस प्रकार श्री राम ने उत्तर से चलकर दक्षिण की वन्य जातियो का हृदय जीता था, जिस प्रकार श्री कृष्ण ने जरासध, कस, कौरवो का सहार करवा कर एक महान् भारत की एकता प्रतिष्ठित की थी, उसी प्रकार हमे आज देश की एकता, अखण्डता के लिए प्रयत्न करना चाहिए। अलगाववादी शक्तिया देश को खण्डित करने के लिए प्रयत्नशील हैं। विदेशी साम्प्रदायिक शक्तिया देश को निर्बल एव खण्डित करने के लिए नित नए षड्यन्त्र कर रही हैं। देश का इतिहास साक्षी है कि जब-जब केन्द्र मे शक्ति कमजोर हुई तब-तब भारत खण्ड-खण्ड हो गया, आज पुन देश मे ऐसी परिस्थितिया न उभरें, इसके लिए समय रहते हमे सचेत सावधान और सन्नद्ध होकर देश को सयुक्त, महान् और शक्तिशाली बनाने का सुदृढ़ सकल्प करना होगा।

चिट्ठी-पत्री

श्रद्धानन्द-संस्मरण-स्मारिका का प्रकाशन

श्रद्धानन्द शिशु विहार मेरठ की ओर से 'श्रद्धानन्द सस्मरण स्मारिका' का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमे स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य मे शिक्षा ग्रहण करने वाले गुरुकुल विश्वविद्यालय के पुराने स्नातको, स्वामी जी के विविध क्षेत्रो के सहयोगियों तथा उनके निकट सपर्क मे आने वाले व्यक्तियो के स्वामी जी के जीवन से सबधित सस्मरण प्रकाशित किए जायेंगे। कुछ लोगो से सस्मरण प्राप्त हो चुके हैं, पर पतो के अभाव मे बहुत से लोगो से सपर्क स्थापित नही किया जा सका है। अत जो लोग किसी न किसी रूप मे स्वामी जी के सपर्क मे रहे हैं वे अपने सस्मरण निम्नलिखित पते पर यथाशीघ्र भिजवाने का कष्ट करें। यदि किसी सज्जन के पास स्वामी जी के समकालीन व्यक्तियों के प्रकाशित-अप्रकाशित सस्मरण, स्वामी जी के पत्र या फोटो हो तो वे उन्हे भी भेजने की कृपा करें।

—डा० विनोदचन्द्र विद्यालंकार
सपादक, श्रद्धानन्द सस्मरण-स्मारिका
१।११६ फूलबाग पतनगर (नैनीताल) पिन—२६३१४५

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी हरिद्वार प्रगति के नए आयाम

—बलभद्रकुमार हूजा
कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय

[१५ अप्रैल, १९८३ के दिन गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह को दीक्षात भाषण के लिए आमन्त्रित करते हुए दिए गए स्वागत भाषण के आवश्यक अश]

विभिन्न स्तर के समुदायो मे वेद प्रचार और ज्ञान-विज्ञान के विस्तार हेतु गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा पाच पत्रिकाए और 'गोवर्द्धन ज्योति' प्रकाशित की जा रही है। लक्ष्य बोध रहे, इसका प्रतीक 'ध्रुव' है। ध्रुव दृढता का भी प्रतीक है। फिर है 'प्रह्लाद', जो ओज, तेज, दृढ सकल्प और तरुणाई का प्रतीक है। फिर है 'आर्यभट्ट'। इस पर आरूढ होकर 'प्रह्लाद' ध्रुव की ओर बढ रहा है, वैदिक पथ का अनुसरण करते हुए। 'गुरुकुल पत्रिका' इस यात्रा का उद्घोष करती है। 'गोवर्द्धन ज्योति' गुरुकुल का पथ प्रशस्त करती है।

यह ज्योति क्या है? यही न, कि गोवर्द्धन पर्वत की शरण मे आए सभी स्त्री-पुरुष अपने-अपने डण्डे व उगलिया उठायें, गोवर्द्धन को छत्रवत् धारण करें। तभी अतिवृष्टि से बचाव होगा। प्रजातन्त्र मे सभी का कर्तव्य है कि सभी अपने धर्म का पालन करें। आइए, हम स्वय अपने गुरु बनें। अपनी दिव्याग्नि जलाए। 'आत्म-दीपो भव' का आर्य सन्देश सुने। अपना दायित्व समझें। हम गोवर्द्धनधारी बनें, यही 'गोवर्द्धन ज्योति' का सन्देश है।

गत वर्षों में अनुसन्धान के क्षेत्र मे वेद, सस्कृत, हिन्दी और प्राचीन भारतीय इतिहास विभागो द्वारा विशेष कार्य हुआ है। उदाहरण के लिये अनुसन्धान के कुछ विषयो का उल्लेख इस प्रकार है—

१ वैदिक मानवतावाद, २ महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य मे समाज का स्वरूप, ३. वेदो मे वर्णित सस्थाए, ४. प्राचीन भारत मे धर्मनिरपेक्षता, ५ प्राचीन भारत मे जनमत, ६ हिन्दी-व्याकरण का उद्गम और विकास, ७ इन्द्र विद्यावाचस्पति और उनकी साहित्य साधना, ८. मध्यकालीन हिन्दी साहित्य मे वैदिक परम्परा, ९ प्रेमचन्द साहित्य पर आर्यसमाज का प्रभाव, १० भारत और कम्बुज के सम्बन्ध।

सितम्बर १९८२ मे, वैदिक शिक्षा प्रणाली पर गुरुकुल कागडी मे एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयो से उच्च कोटि के विद्वान् इसमे सम्मिलित हुए। वैदिक शिक्षा प्रणाली से ही देश का उद्धार सम्भव है ऐसा मत सभी विद्वानो ने प्रकट किया। इस कार्यशाला मे परीक्षा प्रणाली मे सुधार और पाठ्यक्रम को सशोधित करने पर भी विशेष बल दिया गया। अपने उद्घाटन भाषण मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह ने भारत के नव-जागरण के आन्दोलन मे ऋषि दयानन्द की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि आज देश को गुरुकुल के मार्गदर्शन की आवश्यकता है, क्योकि उसके पास एक अमूल्य निधि है। वेद प्रकाश पुज है। उन्होने आशा व्यक्त की कि गुरुकुल विश्वविद्यालय से ऐसी ज्योति प्रस्फुटित होगी जो न केवल देश अपितु विश्व का मार्ग प्रशस्त करेगी।

पिछले वर्ष सोवियत यूनियन, इटली जर्मनी, इण्डोनेशिया तथा मैक्सिको के विद्वान् तथा राजनेता गुरुकुल पधारे। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अत्यन्त ही प्रभावित होकर इस देश से लौटे है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के मुख से वेदमन्त्र

(शेष पृष्ठ ६)

आर्यसमाज : सिद्धान्तों के अनुरूप व्यापक संगठन करो

—डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार

आर्यसमाज एक सगठन है और एक सिद्धान्त भी। सगठन के स्तर पर आर्यसमाज महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट नियमो के आधार पर मनुष्य मात्र की उन्नति करने का प्रयत्न करता है। और सिद्धान्त के आधार पर ससार का कोई भी व्यक्ति, किसी भी देश, जाति, धर्म (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन) का मानने वाला हो, यदि सच्चे अर्थों मे धार्मिक और सच्चरित्र है, परोपकार उसका लक्ष्य है तो वह भी आर्यसमाज का ही एक अग है। आर्यसमाज एक सगठन अथवा सस्था के अतिरिक्त एक विचार और एक जीवनदर्शन है, जिसे अपना कर मनुष्य, मनुष्य मात्र की सेवा कर सकता है। सगठन का अग बनने का लाभ है कि सब मिलकर अपने उद्देश्य को पूर्ण करें। किन्तु यदि कोई आर्यसमाज सगठन का अग बिना बने ससार का उपकार करने मे प्रवृत्त होता है अथवा किसी अन्य सगठन का सदस्य बनकर श्रेष्ठ कार्य कर रहा है तो वह भी आर्यसमाज का ही कार्य है।

आर्यसमाज सगठन की एक विशेषता का उल्लेख आवश्यक है। इसके सदस्य गरीब-अमीर सभी हो सकते हैं। इसमे अपनी आय का शताश देने का नियम है। १०० रुपए कमाने वाला १ रुपया तथा एक सहस्र रुपए कमाने वाला १० रुपए देगा, और दोनों ही समान रूप से आर्य समाज के विकास मे भाग लेंगे। अन्य धार्मिक सगठनो की तरह सहस्रो रुपये का चन्दा देकर ट्रस्टी बनने और उस मन्दिर अथवा सगठन पर अपना प्रभुत्व रखने का विधान इस सस्था मे नही है।

लक्ष्य : विश्व का कल्याण

महर्षि दयानन्द ने ससार के प्रत्येक प्राणी का समान रूप से कल्याण करने की भावना से आज से १०८ वर्ष पूर्व, १० अप्रैल १८७५ को बम्बई मे आर्यसमाज नामक सस्था का निर्माण किया था। आर्यसमाज के नियमो मे छठा नियम है—ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। नवा नियम है—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। समाजवाद की सच्ची परिभाषा के आधार पर मनुष्य मात्र की उन्नति करने का इसमे सन्देश है।

ऋषि दयानन्द ने ससार के धर्मों मे परस्पर मतवैभिन्य एव द्वेष-भाव को देख कर धर्म के सार्वभौमिक, सार्वकालिक एव सर्वमान्य रूप को स्थापित करने का प्रयत्न किया था। सत्य, ईमानदारी, सयम, त्याग, सेवा, परोपकार, ईश्वर, विश्वास आदि धर्म के वे मूल तत्व है, जिनसे किसी का कोई विरोध नही है। महर्षि ने लिखा कि जो बात सबके सामने मान्य है उसे मानता हूं, अर्थात् जैसे सत्य बोलना सबके सामने अच्छा, और मिथ्या बोलना बुरा है, ऐसे सिद्धान्तो को स्वीकार करता हू और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगडे हैं, उन्हे मैं पसन्द नही करता, क्योकि इन्ही मत वालो ने अपने मतो का प्रचार कर मनुष्यो को फसा के परस्पर शत्रु बना दिए है। अत आवश्यकता है इस बात की कि जो बातें एक-दूसरे से विरुद्ध पाई जाती हैं, उनको त्यागकर, परस्पर प्रीति से वर्तें। आर्यसमाज का सातवा नियम है—सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए। इस प्रकार धर्म की वैज्ञानिक और बुद्धिसगत व्याख्या सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने की।

भारतीय मतों का आधार वेद

ऋषि दयानन्द ने भारतवर्ष के विभिन्न मतमतान्तरो को भी सगठित करने का प्रयत्न किया था। इस देश के प्रत्येक सम्प्रदाय की वेद पर अटूट आस्था है, अत सब वेद को ही अपना धर्मग्रन्थ मानें। जैन धर्म भले ही वेद और ईश्वर के विषय में चुप रहे, किन्तु उनके सिद्धान्तो के मूल मे वैदिक सिद्धान्त ही है। उसी सच्चरित्रता, अहिंसा और मनुष्यमात्र मे समबुद्धि का वे उपदेश देते है, जो वैदिक धर्म मे प्रतिपादित है। अत वेद को धुरी बनाकर सभी सम्प्रदाय चक्र मे आरे के समान केन्द्रित हो और मनुष्य मात्र को आगे ले जाने मे सहायक बनें। महर्षि दयानन्द ने न केवल उस समय हिन्दू धर्म के इन सम्प्रदायो पर हो रहे आरोपो का उत्तर दिया, वरन् इनमे आत्मगौरव भी जाग्रत किया जो हिन्दू अपने धर्म के प्रति हुए आक्षेप को नपुसक बनकर सुन लेता था, महर्षि के प्रयत्नो से वही इसके लिए अपने प्राणो की बाजी लगाने के लिए खड़ा हो गया।

यज्ञ (परोपकार) की भावना

महर्षि दयानन्द ने अन्धविश्वासो व जडमूर्त्ति पूजा का विरोध कर मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा का नया सदेश दिया। जिस देश मे करोड़ो की सख्या मे दीन-हीन जन हो, अनाथ और दलित लोग हो, वहा उनकी उन्नति करने के स्थान पर किसी पत्थर की पूजा करना, उस पर धनादि का चढाना, महर्षि को बेतुका प्रतीत होता था। वह कहते थे कि पूजा ही करनी है तो किसी अनाथ और दलित की करो। माला, पुष्प और धन ही चढाना है तो जडमूर्त्ति की अपेक्षा किसी सजीव प्रतिमा (मनुष्य पर चढाओ। दीन-हीन जन भी उसी प्रभु का पुत्र है, जिसके तुम हो। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होने सब कर्मकाण्डो को छोड़कर यज्ञ अथवा हवन करने की प्राचीन परम्परा का पुन प्रचलन किया। यज्ञ मे जिस प्रकार घृत एव सामग्री आदि की आहुति पडकर नष्ट नही होती, वरन् अग्नि उस घृत एव सामग्री की सुगन्धि से सम्पूर्ण वायुमण्डल को स्वास्थ्यवर्द्धक बनाती है, और वह स्वास्थ्यवर्द्धक वायु मनुष्य-मात्र, गरीब-अमीर, दलित, ब्राह्मण- सभी को समान रूप से उपयोगी सिद्ध होता है। उसी प्रकार मनुष्य को भी अपना जीवन परोपकार मे लगाना चाहिए। यज्ञ केवल धार्मिक कृत्य ही नहीं है, वरन् परोपकार का एक प्रकार है, और मनुष्यो को परोपकारी बनने की प्रेरणा देता है। जो मनुष्य यज्ञ और हवन करके भी शोषक और निष्ठुर है, वह महा अज्ञानी और पापी है। वह यज्ञ की भावना को नष्ट करता है। केवल आर्य सभासद बनकर यज्ञ करने मात्र से कोई श्रेष्ठ पुरुष नही बन जाता।

महर्षि दयानन्द को सबसे बडा कष्ट इस बात का था कि मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु है। मनुष्यो मे परस्पर द्वेषवृत्ति है। ऊच-नीच की भावना है। धनी-निर्धन और शिक्षित-अशिक्षित का भेद है। महर्षि ने इस दुर्भावना पर कुठाराघात किया।

शिक्षा का समान अवसर

ऊच-नीच की वृत्ति को समाप्त करने के लिए वह आवश्यक समझते थे कि मनुष्य मात्र को उन्नति के समान अवसर मिलें। उन्नति के समान अवसर का अर्थ है—प्रत्येक को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना। महर्षि दयानन्द के अनुसार इसमे राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पाचवें अथवा आठवें वर्ष के आगे कोई अपने लडके, लडकियो को घर मे न रख सके। पाठशाला मे अवश्य भेज देवे। जो न भेजे वह दण्डनीय हो। दयानन्द ने यह भी कहा कि एक जैसे वातावरण मे ही सब बालक चाहे निर्धन की सन्तान हो चाहे धनी की—शिक्षा प्राप्त करें। सबको तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिए जाए, चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान हो। तभी हम ऊच-नीच की भावना को समाप्त कर सकेंगे। वर्णव्यवस्था को गुण-कर्मानुसार मानने का अर्थ यही है कि सभी को शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर दिए जायें। जब शूद्र, ब्राह्मण, राजा और पूजीपति सभी के पुत्र समान स्थान पर शिक्षा प्राप्त करेंगे तभी देश मे सच्चा समाजवाद आएगा।

आर्यसमाज ने इस दिशा मे पर्याप्त प्रयत्न किया है। लड़के और लडकियो के ६० से अधिक गुरुकुल स्थापित किए, जहां सबको समान रूप से शिक्षा प्राप्त होती है। ३०० के लगभग सस्कृत विद्यालय और धर्मार्थ औषधालय तथा ४०० के लगभग अन्य केवल दलित जातियो के लिए पाठशालायें खोलकर शूद्रो की उन्नति की चेष्टा की। ५०० के लगभग महाविद्यालय और माध्यमिक विद्यालय, २००० प्राथमिक और निम्न माध्यमिक विद्यालय स्थापित कर अज्ञान से दूर करने का प्रयत्न किया है। १२ से अधिक तकनीकी सस्थायें देश मे शिल्प की शिक्षा का प्रसार कर रही हैं। इन सब सस्थाओ में ५ लाख से अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जिन पर प्रतिवर्ष ७ करोड रुपये व्यय होते हैं। शिक्षा के प्रसार का जितना कार्य आर्यसमाज ने किया है, उतना कोई भी सस्था नही कर सकी। महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी वर्ष मे हमे यह निश्चय करना है कि देश का एक भी निर्धन और दलित की सन्तान ऐसी न हो, जिसे शुद्ध वातावरण मे पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर न मिले। महर्षि दयानन्द के आदेश पर स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज ने जो कार्य आरम्भ किया था, उसे हमने दुगने वेग से पूरा करने मे जुटना है।

आर्यसमाज ने वेद, दर्शन, व्याकरण भाषाविज्ञान, समाजशास्त्र, आयुर्वेद आदि विषयो के ज्ञान के विस्तार मे अभूतपूर्व कार्य किया है। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के लुप्त पृष्ठ पाठको के सम्मुख रखे हैं। सस्कृत और हिन्दी को पूरे भारत मे सम्मानपूर्ण स्थान दिलाया है। हिन्दी लेखन एव हिन्दी पत्रकारिता के विकास मे महान् योगदान किया है। अभी भी हमे इस दिशा मे पर्याप्त परिश्रम करना है।

असीमित उपयोग पर प्रतिबन्ध

वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या है, जीवन में कोरे भौतिकवादी दृष्टिकोण के पनपने की। नास्तिकता और तज्जन्य दुश्चरित्रता, अराजकता आदि दुर्गुणो के सर्वत्र छाए जाने की। महर्षि ने जहा कोरे निवृत्ति मार्ग का खण्डन किया, वहा कोरी भौतिकवादी दृष्टि का भी विरोध किया। एक सतुलित दृष्टिकोण के आधार पर भोग के साथ त्याग और सयम का पाठ पढाया। इस दृष्टिकोण को व्यावहारिकरूप देने के लिए आश्रम प्रणाली पर बल दिया १०० वर्ष की दीर्घ आयु तक परोपकारमय कार्य करने की प्रेरणा देने के साथ उन्होने २५ से ५०-५५ वर्षों की आयु तक मनुष्य के लिए सासारिक पदार्थों का उपयोग करने की व्यवस्था की। उनका मत था कि इस आयु मे एक भी मनुष्य ऐसा न हो जो सासारिक जीवन का आनन्द न ले सके। अर्थात् इस आयु मे एक भी व्यक्ति बेकारी का दुख न भोगे। यह तभी सभव है जब व्यक्ति ५०-५५ वर्ष की आयु के उपरान्त आजीविका से छुट्टी ले ले। न व्यापार करे न राजनीति मे उच्च पद पर आसीन हो। केवल उदरपूर्ति के साधन लेकर अपने ज्ञान और अनुभव से देश एव विश्व का कल्याण करे। यह वस्तुत सीमित उपभोग एव समान वितरण की व्यावहारिक व्यवस्था है। यदि राजकीय सेवा कार्यों मे सेवानिवृत्ति का सिद्धान्त समझ मे आता है, तो व्यापार एव क्रियात्मक राजनीति के क्षेत्र मे यह सिद्धान्त लागू क्यो नही होता?

सुदृढ़ राज्यव्यवस्था

महर्षि दयानन्द मनुष्य समाज की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मानवता की रक्षा के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम से प्रेरणा लें

जिस प्रकार अथाह समुद्र मे भटकते हुए जलपोतो को प्रकाश स्तभ लाइट हाउस मार्ग दर्शक करता है और उन्हे डूबने से बचाता है, ठीक इसी प्रकार महान् आत्माओ के जीवन न जाने कितने लोगो के जीवन बनाने मे सहायक होते हैं। महापुरुषो की शृखला मे त्रेतायुग मे अयोध्या के महाराजा दशरथ के घर माता कौशल्या की कोख से प्रात स्मरणीय मर्यादा पुरुषोत्तम का जन्म हुआ। रामजी का बालपन से ही प्रखर प्रज्ञा और महान् व्यक्तित्त्व के धनी थे। श्री रामजी का जीवन सचमुच उस चमकीले हीरे के समान है जो हर ओर से चमकता है, उनके जीवन पर जिस पहलू पर दृष्टिपात करे, वही जाज्वल्यमान और चमकाता हुआ दृष्टि-गोचर होता हैं। उनका जीवन एक सुन्दर सुगन्धयुक्त खिले हुए गुलाब के फूल की मानिन्द है जो स्वय तो खिला हुआ है ही, औरो के जीवनो को भी सुगन्धित करता है और चहु ओर अपनी खुशबू बखेरता है। यही कारण है आज लगभग नौ लाख वर्ष बीतने पर भी उनका जीवन आज भी मानवसमाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। राम नाम सब शब्दो, सब अर्थों एव सब नामो—'रा, तथा' 'म' इन दो अक्षरो से व्याप्त है। एक स्थान पर लिखा भी है कि गणित की दृष्टि से भी 'राम' शब्द की वैज्ञानिकता दर्शायी गई है किसी नाम के अक्षरो को चार से गुणा करके उसमे पाच को जोड कर दुगना करें और इसको आठ से भाग करें तो 'रा' और "म' के सूचक दो ही शेष रहेंगे—जैसे "सावन"—इसमे तीन अक्षर है—तीन को चार से गुणा किया तो बारह हुए। इसमे पाच को जोड़ा तो सत्रह(१७) हुए, इसको दो से गुणा किया ता चातीस (३४) हुए, इसको आठ से भाग किया तो शेष (दो) रहे—लिखा भी है

नामचतुर्गुण, पचयुत द्विगुणीकृत वसु लेख।
रोम्यो नाम सब जगत मे तुलसी यही विसेख ।।

ऐसे राम के विशद जीवन की यशोगाथा हमारे राष्ट्र चेतना का एक महान् स्रोत बना हुआ हैं। क्या धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, परिवर्तन के व्यवहार माता, पिता का आज्ञापालन, भाई-भाई के आपसी प्रेम, गुरु तथा वृहद जनो की सेवा, प्रजा वात्सल्य, शरणागतो को रक्षा आदि इसी प्रकार जीवन के किसी भी क्षत्र मे किसी भी दृष्टिकोण से देखें, उन्होने एक ऐसी अद्भुत मर्यादा स्थापित की कि जिसको पार करना सम्भव ही नही, इसी-लिए वह आप्त पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। इस महानता का एक विशेष कारण उनके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे "सदाचार" व्यापा था—वह सदाचार के पुतले थे। उनका चरित्र विश्व मे सर्व-श्रेष्ठ आदर्श चरित्र है। और उनका जीवन सदाचार की सर्वाङ्ग प्रतिमा है। नित्य नवीन-जीवन मे उल्लास की उपलब्धि उनके चरित्र के मनन करने तथा उसको स्वय मे उतारने से होती है। राम का जीवन शिक्षाओ से भरा पडा है। आज भी हम राम के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने राष्ट्र, समाज और स्वय को ऊचा आदर्श उपस्थित कर सकते हैं। "अनेक ऐसी सामाजिक एव राजनीतिक कुरीतिया तथा न्यूनताए हैं जो हमारे राष्ट्र और समाज को अन्दर ही अन्दर घुन की तरह खा रही हैं, हम राम के जीवन से प्रेरणा लेकर महान सुधार कर सकते है।"

पराक्रम और विनयशीलता (निरभिमानता) इन दोनो का एक स्थान पर रहना साधारण बात नही है, जहा पराक्रम होता है वहा प्राय अभिमान आ जाता है और पराक्रमी पुरष स्वय अपने गौरव और शक्ति का वर्णन करने लगते हैं। परन्तु श्री रामजी मे इनका विचित्र योग मिलता है। उग्र परशुराम के रोबीले शब्दो को सुनकर महात्मा राम आत्म-परिचय देते हुए कितनी विनम्रता से कहते हैं—

राम मात्र लघु नाम हमारा,
परसु सहित बड नाम तोहारा ।।"

छूआछूत-ऊच नीच, जात पात की भावना राम के समय मे न थी और न ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम इन सामाजिक कुरीतियो मे विश्वास ही करते थे। वन यात्रा मे नीच निम्न जाति की शबरी के बेर खाने की बात कौन नही जानता। एक प्रसग मे पूछने पर भोजन मे स्वाद कैसा है, तो श्री राम ने बडी शलीनिता से शबरी के बेरो का प्रशसा इस प्रकार की—

घर गुरुगृह, प्रिय सदन सासुरे गई
जब जह पहुनाई
तब तह काई सबरी के फलन की
रुचिमाधुरी न पाई।

आज सारा राष्ट्र इस छूआछूत के भयङ्कर रोग के कारण पडा अशान्त और चिन्तित है। सरकारी कानून के होते हुए भी अछूतो तथा कथित हरिजानो पर सवर्णों के अमानुषिक अत्याचार दिन प्रतिदिन बढते जा रहे हैं, जिस कारण वे अपने आपको हिन्दू समाज रहना सुरक्षित नही समझते, इस दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति का अनुचित लाभ उठाकर विदेशी मुद्रा और विपुल पैट्रो डालर की मदद से इन साधन हीन लोगो का लोभ लालच देकर धर्मान्तिरण करने मे लगे हैं। धर्मान्तिरण की आड मे यह एक राजनीतिक षडयन्त्र भी है। सरकार भी इसकी नितान्त उपेक्षा कर रही है। याद रहे यदि विधर्मियो की इस कुचेष्टा को समय रहते रोका न गया तो सारे राष्ट्र हिन्दू जाति के लिये उसके परिणाम बडे घातक सिद्ध हो सकते हैं। अत श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेकर ऊच नीच, जाति-पाति के सब भेद भाव भुलाकर इस सामाजिक कलङ्क को हर प्रकार से पूर करने का भरसक प्रयत्न करें। बडे-बड समारोह करके, उनकी बस्तियो मे जाकर उनके दुखदर्द मे शामिल होकर, उन भाइयो को विश्वास दिलाए, कि वे सब हिन्दूसमाज के अभिन्न अङ्ग हैं। इसप्रकार हमविधर्मियो की योजनाओ को विफल करके जाति की रक्षा करें।

महान भोगीराज—गीता में आया है—"समत्व योग अच्यते"। अर्थात् हर्ष विषाद, सुख दुख, लाभ हानि, अनुकूल व प्रतिकूल स्थितियो मे एक सम रहना योगी का महान् गुण है। रामचन्द्र जी इमकी साक्षात मूर्ति थे। महर्षि वाल्मीकि जी लिखते हैं कि राज्याभिषेक की सूचना से धर्मात्मा राम के चेहरे पर किसी प्रकार का विकार दिखाई नहीं देता था—

न वन गन्तुकामस्य त्यजतश्च वसुन्धराम्।
मर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रिया।।
सर्वों ह्यभिजन श्रीमाञ्श्रीमत
सत्यलादिन ।
नालक्ष्यत रामस्य किंचिदाकारमानने ।।

भ्रातृभाव मे भरे राम-राम भरत एव लक्ष्मण के आपसी नि स्वार्थ के प्रेम प्रीति का उदाहरण ससार के इतिहास मे कही भी नही मिलेगा। कैसा था वह युग जब राम और भरत ने एक विशाल चक्रवर्ती को गेन्द बनाकर निस्सकोच एक दूसरे की तरफ फैंक दिया और लक्ष्मण अपने आप ही स्व इच्छा से राम के साथ चौदह वर्ष बन यात्रा के लिए तैयार हो गये। परन्तु आज स्थिति ऐसी है कि एक एक पैसे के वास्ते लोन के वशीभूत होकर लोग दूसरे का खून बहा रहे है और दिन दहाडे लूट मार और डाके मार रहे है। योग्यता के आधार पर सम्मान देना-महात्मा राम का योग्यता के आधार पर लोगो को सन्मान देने का वडा पवित्र स्वभाव था। किसी तरह का भाई चारा-वाद तथा ऊच नीच का भाव उनके राज्य मे न था और नही किसी को एक दूसरे से जलन ही थी।

सयमी जीवन—राम बडे सयमी और नियमित जीवन करने वाले आदर्श राजा था। अपने जीवन मे दो ही वीर पुत्रो लव और कुश को जन्म दिया। वह लोक रजन को हो आत्मरजन मानते थे। प्रजा के हित मे एक साधारण धोबी के कुछ कहने पर अपनी प्रिय पत्नी जिसके लिए उन्होने रावण के साथ घोर युद्ध किया त्यागने मे लेशमात्रा भी नही झिझके। किष्कन्धा का राज्य और लका की सम्पदा बालि के वध के पश्चात् और रावण को युद्ध मे परास्त करने के बाद बडी सुगमता से अपने राज्य मे मिला सकते थे, परन्तु दोनो ही निष्कण्टक राज्यो के उनके उत्तरा-धिकारियो को सौप दिया था—कैसा विशाल था हृदय उनका।

इन्ही और इसी प्रकार के अनेक सदाचार पूर्ण गुणो के कारण वह हमारे हृदय सम्राट न हुए हैं। करोडो लोग आज भी भारत मे ही नही अपितु विदेशो मे भी उनकी पूजा करते है। इस वर्ष एक व्रत लें—राम के जीवन के गुणो को अपना कर अपने स्वराज्य को राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के स्वप्नो का राम राज्य बनाने का भरसक प्रयत्न करेंगे। यही सच्ची श्रद्धा-जलि इस वर्ष उन महान देवपुरुष राम के प्रति होगी।

चमनलाल
प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार

गंगा और राम-कृष्ण के प्रति श्रद्धा

मुस्लिम गूजरों की मान्यता : गोहत्या पाप

हरद्वार। जम्मू-कश्मीर गूजर कान्फ्रेंस के अध्यक्ष चौ० गुलजार अहमद ने हरिद्वार के गूजर-सद्भाव सम्मेलन मे भाग लेने के बाद यहा प्रेस प्रतिनिधियो से कहा—मुस्लिम गूजर गगा तथा रामकृष्ण के प्रति अगाध श्रद्धा रखते हैं तथा हमारी सस्कृति भारतीय संस्कृति है। उन्होने यह सूचना भी दी कि मुस्लिम गूजर गोहत्या को भारी पाप मानते हैं और गोमाता की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहते है। उन्होने यह भी कहा कि जम्मू-कश्मीर के मुस्लिम गूजर अन्य मुसलमानो की तरह चचेरी बहन से शादी नही करते और हम एक गोत्र मे भी विवाह को गलत मानते है। इन मुस्लिम गूजरो ने हरिद्वार मे श्रद्धापूर्वक गगा स्नान किया तथा मन्दिरो के दर्शन किए।

प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं० चारुदेव शास्त्री का अभिनन्दन

२७-३-८३ को पजाब सरकार ने प० चारुदेवजी शास्त्री को 'शिरोमणि साहित्त-कार' के रूप मे सम्मानित किया। इस अवसर पर प० जी को सरकार की ओर से ५१००) एक दुशाला तथा एक सुवर्ण पदक प्रदान किया गया। ८७ वर्षीय प० इससे पूर्व भी कई बार इस प्रकार का सम्मान प्राप्त कर चुके है। प० चारुदेव जी का जन्म ८-५-१८९७ को पजाब के अद्रिया पुर ग्राम मे हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा डी० ए० वी० स्कूल लाहौर मे हुई। एम० ए० मे सुवर्णपदक प्राप्त करके चारुदेव जी १९२१ तक डी० ए० वी० कालेज जालन्धर तथा १९४७ तक डी० ए० वी० कालेज लाहौर मे अध्यापन करते रहे। इसी समय उन्होने आर्य समाज के उपदेशक के रूप मे भी कार्य किया। प० जी उच्च-कोटि के लेखक एव कवि है। अबतक उनके १४ ग्रन्थ तथा १३ लेख प्रकाशित हो चुके है। प० जी की साहित्य सेवा के कारण १९६५ मे अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन की सुवर्ण जयन्ती मे तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने आपको 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित किया था। १९७३ मे प० जी की हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य मे तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष श्री गुरुदयालसिंह ढिल्लो ने आपको अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया था १९८१ मे उत्तरप्रदेश सरकार ने विशिष्ट विद्वान् होने के नाते आपको १५०००) का पुरस्कार देकर सम्मानित किया। १९८१ मे ही आपकी विद्वत्ता के कारण बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने आपको सम्मानित डी० लिट् की उपाधि प्रदान की है। प० जी जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी गुजराती, मराठी आदि भाषाओ पर भी अधिकार रखते है। आप आर्य विचार धारा के विद्वान् है। आपका नवीनतम ग्रन्थ 'भागवत भाषा परिच्छेद' आर्य समाज की दृष्टि से भागवत की मुक्ति मुक्त समालोचना है।

आर्य जगत् समाचार

विघटनवादी ताकतो का मुकाबला करें

राष्ट्रवाद का सच्चा रूप आर्यसमाज ने रखा : सूचना मन्त्री

— श्री भगत का आह्वान

नई दिल्ली। 'राष्ट्रवाद का सही रूप उपस्थित करने वाली आर्यसमाज जैसी सस्था ही इस देश को एकता का सही पाठ पढा सकती है। इसलिए मैं समस्त आर्य जनता से आग्रह करूगा कि वह विघटनकारी शक्तियो का मुकाबला करने के लिए सरकार को पूरी तरह सहयोग दे।" ये शब्द तालकटोरा स्टेडियम मे महात्मा हसराज जन्म दिवस के अवसर पर केन्द्रीय सूचना मन्त्री श्री हरिकृष्णलाल भगत ने कहे।

श्री भगत ने जलियावाला बाग की घटना का उल्लेख करते हुए उसमे महात्मा हसराज जी की प्रमुख भूमिका पर भी प्रकाश डाला। उन्होने सरकार के पोलिटिकल डिपार्टमेंट की गुप्त रिपोर्टों के आधार पर उक्त तथ्य का वर्णन किया जो अभी तक इतिहास-लेखको की दृष्टि से प्राय ओझल रहा है।

नई चेतना जाग्रत करो

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल वान प्रस्थ ने महात्मा हसराज जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि आर्यसमाजने सदा सत्य का पक्ष लिया है और असत्य का विरोध किया है। देश मे जब भी कभी सकट आया तब आर्यसमाज के सेवको ने सदा आगे बढकर उसका सामना किया। मीनाक्षीपुरम् का उदाहरण देते हुए उन्होने कहा कि जब और सस्थायें जबानी जमा खर्च करके रह गयी, तब एक मात्र आर्यसमाज ही एक ऐसी सस्था थी जिसके सेवको ने मीनाक्षीपुरम् महासम्मेलन का आयोजन किया और समस्त हिन्दू समाज मे नई चेतना जाग्रत की।

उन्होने अकालियो के राष्ट्रविरोधी आन्दोलन की चर्चा करते हुए कहा—यदि उन्हे अपने गुरुओ से और सिख मत के प्रवर्तक गुरु नानक से प्रेम है तो पाकिस्तान मे विद्यमान ननकाना साहब को सिखो को देने के लिए जरनल जिया से माग करनी चाहिए।

प्रसिद्ध इतिहास डा० सत्यकेतु विद्यालकार और प्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार ने आर्य समाज की समस्त बिखरी हुई शक्तियो को एकत्र करके सारे देश मे ऐसा माहौल तैयार करने की प्रेरणा की जिससे समाज मे पूजीपतियो और सत्तासीनो का नहीं, बल्कि त्यागी तपस्वी विद्वानो का आदर हो।

कासगंज में ८ मुसलमान हिन्दू बने

आर्यसमाज कासगज द्वारा आयोजित शुद्धि समारोह मे १२ अप्रैल, १९८३ को श्री उपेन्द्रदत्त शर्मा के पौरोहित्य मे इन मुसलमानो ने वैदिक धर्म ग्रहण कर ये नए नाम स्वीकार किए रियाजुद्दीन का राजवीर रखा गया, शेरखा का नाम शिशुपालसिह रखा गया, अनीसा बेगम गीतादेवी बनी, गुड्डी का नाम प्रभा हुआ, माजीद खा महेन्द्रसिह बने, आमना बेगम वेदवती बनीं, आयशा बेगम पूनमदेवी बनी।

शुद्धिसस्कार के बाद पूनमदेवी का विवाह गिरीशचन्द्र जी के साथ उसकी इच्छानुसार सम्पन्न हुआ। यह सारा कार्य श्री राम आर्य मन्त्री आर्यसमाज कासगज के प्रयत्नो से पूर्ण हुआ।

आर्यसमाज स्थापना-दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज का १०८वा स्थापना दिवस आर्यसमाज भवन केसरगज अजमेर मे डा० सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष दयानन्द शोधपीठ दयानन्द कालेज अजमेर की अध्यक्षता मे समारोहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर श्री दत्तात्रेय आर्य, श्री बुद्धिप्रकाश आर्य, श्री आचार्य गोविन्दसिह जी, श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा आदि के आर्यसमाज की सेवाओ, कार्यों, सिद्धान्तो और मन्तव्यो पर प्रेरणादायी व्याख्यान हुए। श्री रामचन्द्र जी आर्य श्री अनन्तराव दयानन्द बाल मदन की भजनमण्डली, सुगन कवर तामरा आर्य कन्या विद्यालय की छात्राओ के भजन गायन हुए। इससे पूर्व आर्यसमाज स्थापना दिवस एव नवसंवत्सर के उपलक्ष्य मे विशेष यज्ञ हुआ।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी . प्रगति के नए आयाम

(पृष्ठ ६ का शेष)

सुनकर वे अत्यन्त ही मुग्ध हुए।

पिछले कुछ समय से विश्वविद्यालय मे आरम्भ की गई योग शिक्षा भी आकर्षण का प्रबल केन्द्र बन गई है। योग कक्षाए वयस्को के लिये तथा विद्यालयो के ब्रह्मचारियो के लिये पृथक् रूप से चलायी जा रही हैं।

गुरुकुल का सग्रहालय और पुस्तकालय भी उत्कर्ष के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर हैं। ज्ञान की सुरक्षा और इसके प्रसार मे इनका महत्व सुविदित है। स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से गुरुकुल संग्रहालय की स्थापना बीसवी शती के प्रथम दशक मे गंगापार पुण्यभूमि पर की गयी थी। वह छोटा-सा पौधा अब विशाल वट-वृक्ष बन गया है।

गुरुकुल के पुस्तकालय मे एक लाख से ऊपर पुस्तकें हैं। इनमे दुर्लभ पाण्डुलिपियो का अच्छा संग्रह है।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओ के लिये इस पुस्तकालय मे आवश्यक पुस्तको का सग्रह किया गया है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे बहुत से स्नातक जो भारतीय प्रशासनिक सेवा, प्रान्तीय सिविल सेवा, सेना, इन्जीनियरिंग, स्वास्थ्य शिक्षण सस्थानो तथा बंको मे नियुक्तिया प्राप्त करने मे सफल हुए हैं, इन्हें इस पुस्तकालय से यथेष्ट सहायता मिली है। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय द्वारा ऐसे छात्रो के लिए जो शिक्षा के आर्थिक बोझ को नही उठा सकते, आर्थिक रोजगार योजना भी क्रियान्वित की गई है, जिसके अन्तर्गत छात्रो को पुस्तकालय मे दैनिक कार्य करने के बदले मे आर्थिक अनुदान दिया जाता है।

गुरुकुल पुस्तकालय मे सग्रहीत हजारो दुर्लभ पुस्तको पत्रिकाओ आदि को माइक्रोफिल्मिग द्वारा सरक्षित करने का कार्य नेहरू मैमोरियल म्यूजियम एव लाइब्रेरी दिल्ली के सौजन्य से किया जा रहा है। गुरुकुल के वैभवपूर्ण इतिहास का स्मरण दिलाने वाले सद्धर्म प्रचारक, श्रद्धा, आर्य आदि पत्रो का सरक्षण माइक्रोफिल्मिग द्वारा सम्पन्न हो चुका है। इस सहयोग हेतु हम नेहरू मैमोरियल म्यूजियम एव लाइब्रेरी के आभारी है।

१९८१ मे इस सस्था की जन्म स्थली ग्राम कागडी को पूर्ण रूप से विकसित करने का सकल्प किया गया। बिजनौर के जिलाधिकारियो की सहायता से यह कार्य तीव्र गति से आगे बढ रहा है। वृक्षारोपण के अतिरिक्त सडको को पक्का करने का काम चल रहा है। घरेलू उद्योग-धन्धे वहा प्रारम्भ किये जा रहे है। इस वर्ष दो गोबर गैस प्लान्ट और पाच निर्बल आवास बनकर तैयार हो चुके। स्टेट बैंक व न्यू बैंक आफ इण्डिया द्वारा कागडी ग्राम निवासियो को आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। ग्राम का नव-युवक मगल दल ग्राम विकास मे पूरी आस्था के साथ जुटा हुआ है।

कुछ ही माह पूर्व राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व को देखते हुए शिक्षा मन्त्रालय के सहयोग से इस कार्यक्रम को विश्वविद्यालय मे भी आरम्भ करा दिया गया है। इस योजना के अन्तर्गत दिसम्बर १९८२ मे एक दस दिवसीय शिविर का आयोजन कागडी ग्राम की पुण्य भूमि मे किया गया। शिविर वासियो ने समर्पण भावना से कागडीग्राम मे सडको के निर्माण वृक्षारोपण, आर्थिक विकास तथा परिवार कल्याण की दिशा मे अनेक कार्य किये। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय द्वारा एक लघु शाखा के रूप मे वहा पर गोवर्धन पुस्तकालय की स्थापना की गई है।

इस शृखला मे हमारे अङ्गभूत महाविद्यालय कन्या गुरुकुल देहरादून की कन्याओ ने भी अपने समीपस्थ तपोवन मे राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत एक सफल शिविर का आयोजन किया।

विश्वविद्यालय का विद्यालय-विभाग भी गुरुकुल परम्परा के अनुरूप प्रगति के पथ पर अग्रसर है। प्रात ब्राह्म मुहूर्त मे विद्यालय के ब्रह्मचारियो द्वारा वैदिक मन्त्रो का पाठ परिसरवासियो मे स्फूर्ति भर देता है। मन्त्रपाठ के पश्चात् ब्रह्मचारी योगाभ्यास के कार्यक्रम मे सम्मिलित होते हैं। तत्पश्चात् दैनिक यज्ञ की सुगन्धि से विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण क्षेत्र भर जाता है। विद्यालय के कार्यक्रम मे वरिष्ठ ब्रह्मचारियो को प्रतिदिन एक वेदमन्त्र अर्थ सहित पढाया जाता है। जब सौ से अधिक मन्त्र इस प्रकार पढा दिये जाते हैं तब उन्हे गोवर्द्धन ज्योति के रूप मे प्रकाशित कर दिया जाता है। इस वर्ष इस पुस्तिका का विमोचन गोवर्धन-जयन्ती के अवसर पर १९ मार्च को किया गया। इस अवसर पर स्थानीय विद्यार्थियो की वार्षिक वेदपाठ प्रतियोगिता का भी शुभारम्भ किया गया।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी का १३वां वार्षिकोत्सव

सभी सज्जनो को विदित किया जाता है कि 'पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी' का १२वा वार्षिकोत्सव दि० २७, २८, २९ मई १९८३ तदनुसार ज्येष्ठ कृ० १, २, ३ शुक, शनि, रवि को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाना निश्चित हुआ है।

वार्षिकोत्सव का विशेष आकर्षण २८ दि० की रात्रि में आयोजित भव्य दीक्षान्त समारोह होगा। शेष, प्रतिवर्ष की भाति कार्यक्रम अत्यन्त रोचक एव आकर्षक होंगे ही। इस अवसर पर अनेकों महात्मागण और विद्वज्जन पधार रहे हैं। कृपया इस महोत्सव में सभी सज्जन पधार कर पुण्य के भागी बनें। सुअवसर का लाभ उठायें।

गोवर्द्धन पुरस्कार

वैदिक वांगमय की सेवा के लिए

वेदिक विद्वान् पं० विश्वनाथ विद्यालंकार पुरस्कृत

हरिद्वार। १३ अप्रैल, १९८३ के दिन वेदो के उद्भट विद्वान् एव गुरुकुल कागड़ी के यशस्वी स्नातक विद्यामार्त्तण्ड प० विश्वनाथ विद्यालकार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा द्वारा श्री गोवर्द्धन शास्त्री पुरस्कार १९८३ से पुरस्कृत किए गए। इस अवसर पर प० विश्वनाथ जी का अभिनन्दन करते हुए श्री हूजा ने निम्न शब्दों मे उनकी प्रशस्ति की

आर्यसमाज तथा वैदिक साहित्य के क्षेत्र में आप द्वारा की गई रचनात्मक सेवाओ को दृष्टि मे रखते हुए श्री गोवर्द्धन शास्त्री पुरस्कार १९८३ से आपको समलकृत करने का निश्चय किया गया है। वेद के अध्ययन, अध्यापन तथा उच्चतर चिन्तन-मनन के परिणामस्वरूप लगभग ११ प्रौढ कृतियो से भगवती भारती का भव्य भण्डार भरकर जो आदर्श आपने प्रस्तुत किया है। गुरुकुल कागड़ी मे २८ वर्ष अध्यापन करने के बाद १९४२ मे आप सेवामुक्त हुए। आपका सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल रहा और आज भी वैसा ही पवित्र किन्तु क्रियाशील जीवन जी रहे हैं।

१९१४ ई० मे कुल पिता स्वामी श्रद्धानन्द जी के श्री चरणो मे बैठकर अत्यन्त प्रतिभाशाली ब्रह्मचारी के रूप मे आपने विद्यालङ्कार परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त कर जहा भावयित्री प्रतिभा का परिचय दिया। काव्य और शास्त्र, वैदिक तथा लौकिक, दर्शन और विज्ञान, मीमासा और व्यावहारिक जीवन दर्शन सभी ज्ञान-विज्ञानोन्मुख विद्याओ पर आपका साधारण अधिकार है।

मनु प्रभृति वेदज्ञो द्वारा विहित विधियो के मूल की गहराई मे जाकर यदि आपने वैदिक गृहस्थाश्रम वैदिक जीवन तथा वैदिक पशुयज्ञ मीमासा जैसी पुस्तकें लिखी तो सूत्र साहित्य के मर्म को हृदयगम कर 'सन्ध्या रहस्य' जैसी उपयोगी उपासना प्रधान रचना की रचना भी की। प्रजापति ने अभिषुत सोम तथा टपकते हुए दुग्ध का वेद द्वारा जी भरकर पान किया तो आपने भी सामवेद के आध्यात्मिक भाष्य द्वारा उसी दुग्ध का जीवनोपयोगी आस्वाद साधको, विचारको तथा उपासको को कराया। आपके इस परिश्रम को देखकर एक बार पुन. कहा जा सकता है कि—"वेदेन रूपे व्यपिबत सुतासुतौ प्रजापति।" तैत्तिरीय आरण्यक के 'स्वाध्यायोऽध्येतव्य' के रहस्य को समझाने के लिये ही आपने यजुर्वेद स्वाध्याय की रचना की। यज्ञ और पशु बलि की निर्मम तथा अवैदिक परम्परा का खण्डन करते हुए पशु यज्ञ समीक्षा लिखकर यज्ञो के सात्विक स्वरूप तथा उनके उपयोगी पक्ष की स्थापना कर आपने मानवतावाद का उद्घोष किया। अथर्ववेद परिचय तथा अथर्ववेद भाष्य भी ऋषि दयानन्द की दृष्टि के पोषक किन्तु मौलिक ग्रन्थ हैं। तात्पर्य यह है कि वेदत्रयी का मथन कर वेदानुसधान के युग मे अध्ययन, विवेचन, प्रतिपादन तथा विश्लेषण की जो तकनीक महर्षि दयानन्द ने प्रतिष्ठित की थी, उसे वेदागो तथा व्यावहारिक युक्तियो के सदर्भ मे अपनी कृतियो द्वारा आपने व्यापक आधार दिया। वेद मे प्रवेशार्थियो के लिये बाल ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखकर जहा आपने वेदाध्ययन की दिशाओ का उद्घाटन किया, वहा बाल सत्यार्थ प्रकाश द्वारा सुकुमार मति के पाठको को सच्चे ज्ञान का परिचय कराया।

इस प्रकार बालको से लेकर प्रौढ विद्वानो तथा विचारको के लिये समान रूप से लेखन का कार्य आप जैसे सिद्धहस्त लेखकों तथा मनीषियो के ही बुद्धिबल की बात है।

आर्यसमाज विनयनगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज विनयनगर (सरोजनीनगर) नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव व उत्सव की तिथिया बदल गई हैं। अब उत्सव २६ अप्रैल से १ मई तक निम्नलिखित कार्यक्रम के अनुसार हो रहा है। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ मगलवार २६ अप्रैल से रविवार १ मई १९८३ तक समय. प्रात: ६ से ७-३० बजे। ब्रह्मास्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती है। वेद कथा २६ अप्रैल से २९ अप्रैल तक हो रहा है। रवि समय ८ से १० बजे, स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज द्वारा। उत्सव ३० अप्रैल ८३,के रात्रि ८ बजे होगा। चरित्र निर्माण सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी महाराज होगे। राष्ट्रीय एकता सम्मेलन समय रविवार १ मई ८३, प्रात १० बजे। अध्यक्ष लाला राम गोपाल शाल वाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य, प्रतिनिधि सभा होगे।

आर्यसमाज बांकानेर के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री मागेराम आर्य
उपप्रधान—श्री ओम्प्रकाश गुप्त
मन्त्री—श्री मेहरलाल पवार
उपमन्त्री—श्री रामकरण
कोषाध्यक्ष—श्री हवा सिंह
पुस्तकाध्यक्ष—श्री जिले सिंह
लेखा निरीक्षक—प० मुशीलाल

श्री राम राष्ट्रवाद के सबसे जागरूक प्रहरी

हम श्री राम का सन्देश जीवन में अपनाएं : दिल्ली में रामनवमी पर्व पर एकता का आह्वान

नई दिल्ली। रामनवमी के अवसर पर बृहस्पतिवार २१ अप्रैल के दिन रामलीला मैदान मे आयोजित एक विशाल सार्वजनिक सभा मे सनातन धर्म, आर्य समाज, जैन, बौद्ध, हरिजन नेताओ ने एक स्वर से हिन्दू समाज की एकता की घोषणा की और कहा कि श्री राम इस देश की सस्कृति के प्रतीक और शक्ति के स्रोत है। सभी वक्ताओ ने इस बात पर बल दिया और चिन्ता प्रकट की कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के इस देश मे आज मर्यादाओ और अनुशासन को भग किया जा रहा है। श्री राम ने उत्तर और दक्षिण को एक राज्य में जोडा। सत्ता को त्याग कर जनसेवा का व्रत लिया और समाज से छुआछूत और छोटे-बडे का भेद मिटाया, लेकिन उन्ही के देश मे आज विघटनकारी तत्व उग्र हो रहे हैं तथा हरिजनो को सताया जा रहा है।

ससद सदस्य डा० कर्णसिंह ने कहा—नैतिक आदर्शो ने ह्रास के कारण ही हमारा समाज आज दहेज, भ्रष्टाचार एव छुआछूत जैसी कुरीतियों से ग्रस्त हो रहा है। इन कुरीतियो का उन्मूलन करने के लिए सबको एक हो जाना चाहिए। श्री राम का नाम केवल भारत की सीमाओ मे ही नहीं बधा हुआ, प्रत्युत इण्डोनेशिया मारीशस तथा अन्य अनेक देशो मे श्री राम का नाम पूर्ण श्रद्धा के साथ लिया जाता है। समस्त जनता को सगठित होकर एकता ही शक्ति का उपयोग समाज और देश के नवनिर्माण के लिए करना चाहिए, विध्वस और विनाश के लिए नही।

मुनि श्री राकेश ने कहा जबतक सास्कृतिक और आध्यात्मिक महापुरुषो के सन्देश घर-घर मे नही पहुचते, तबतक राष्ट्र की अखण्डता सुरक्षित नही रह सकती। मुनिश्री हरमिलापी महाराज ने श्री राम को राष्ट्रवाद का सबसे जागरूक प्रहरी घोषित किया और कहा कि उनके त्याग और तपस्या को आज हर राजनेता को अपना आदर्श बनाना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने कहा कि आज देशभक्ति की भावना दूर होती जा रही है और कुर्सी भक्ति का बोलबाला हो रहा है। यह श्री राम के आचरण के बिल्कुल विरुद्ध है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

उन्नति के लिए एक सुदृढ राज्य व्यवस्था के समर्थक थे। उनका राज्य व्यवस्था का आधार प्रजातन्त्र था। उनके प्रजातन्त्र की भित्ति विकेन्द्रीकरण की नीव पर खड़ी थी। उन्होने सम्पूर्ण व्यवस्था को चलाने के लिए तीन सभाए स्थापित करने का परामर्श दिया। शिक्षा के प्रसार के लिए विद्यार्य, रक्षा एव अर्थ के लिए राजार्य तथा न्याय और समाजोन्नति के लिए धर्मार्य सभा स्वतन्त्र रूप से भी काम करे। साथ ही राज्य के लिए सविधान आदि तीनो मिलकर बनाये। इसी प्रकार [illegible] केन्द्र को शक्तिसम्पन्न बनाने का परामर्श देकर भी प्रदेशो को स्वतन्त्र रूप से विकास का अवसर दिया। प्रदेश भी अपने शासन को ग्राम राज्य एव पचायतो से चलाए। राज्य मे व्यापार की उन्नति हो। विदेशो से व्यापार की व्यवस्था हो। रक्षा के लिए राज्य मे आधुनिकतम शस्त्रास्त्र से सुसज्जित पर्याप्त सेना हो। सामाजिक अन्याय को दूर करने के लिए स्वतन्त्र और निष्पक्ष न्याय व्यवस्था हो। प्रजा और शासक मे पिता पुत्रवत् सम्बन्ध हो, आदि अनेक सिद्धान्त आज भी उपयोगी हैं। (देखिए मेरी पुस्तक राज्य व्यवस्था)

देश की स्वतन्त्रा व उन्नति

महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज मे देश की स्वतन्त्रता व उन्नति का महान् प्रयत्न किया। अनेक क्रान्तिकारियो ने आर्यसमाज से प्रेरणा प्राप्त कर अपने प्राणो की आहुति दी। अन्धविश्वास, ऊच-नीच एव अत्याचार के विरुद्ध अनेक आन्दोलन चलाए। आज भी आर्यसमाज को अत्याचार के विरुद्ध जागरूक रहना है।

नारी का सम्मान इस देश मे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज द्वारा स्त्रियो को समानता एव सम्मान दिलाने, स्त्री शिक्षा के लिए क्रान्तिकारी कदम उठाने, विवाह मे युवा-युवतियो को स्वयवर का अधिकार देना, बाल-अनमेल-वृद्ध और बहुविवाह, दहेज आदि का विरोध तथा विधवा विवाह का समर्थन आदि कार्यों का स्मरण आवश्यक है। आर्यसमाज द्वारा स्थापित लगभग २०० वनिताश्रम महिलाओ की सेवा कर रहे है। अभी भी हमारे देश की नारी दीन-हीन अशिक्षित है। अनेक प्रकार के अत्याचार सहती है। आर्यसमाज को इस दिशा मे और अधिक क्रान्तिकारी कदम उठाने है।

१०० वर्ष का काम और भविष्य के लिये सकल्प

इस समय ५००० आर्यसमाजे, (जिनमे से ५०० के लगभग विदेशो मे हैं), २०० प्रान्तीय व जिला उपसभाये, ५०० आर्यवीर दल की शाखायें, २०० आर्यकुमार सभाये, अनेक अनाथाश्रम, ३०० छोटी बडी पत्र पत्रिकाए आयसमाज के लक्ष्य को पूर्ण करने का प्रयत्न कर रही है। इन १०८ वर्षों मे आर्यसमाज ने बहुत काम किया है, फिर भी परिमित वै भूत अपरिमित भव्यम् [ऐतरेय ब्राह्मण] अभी बहुत थोडा किया है। इससे हमे बहुत अधिक करना है। जब तक इस देश का एक भी व्यक्ति अशिक्षित है अन्याय से प्रताडित है, भूख और रोग से पीडित है, तब तक आर्यसमाज को अपने को जारी रखना है।

अन्त मे मैं महर्षि दयानन्द का एक वाक्य उद्धृत करता हू — मेरे शिष्य सभी आर्यसामाजिक है। वे ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्ही के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथो की सफलता अवलम्बित है। हमे विश्वास है कि महर्षि निर्वाण के १०० वर्ष पूरे होने पर, देश की विषम समस्याओ का अन्त करने के लिए, दयानन्द के शिष्य दुगने उत्साह से कर्मक्षेत्र मे कूदेगे।

७१.२, रूपनगर, दिल्ली—७ हसराज कालिज, दिल्ली—७

(पृष्ठ १ का शेष)

श्री शालवाले ने पत्रकारो को बताया कि जिन आदिवासियो, गिरिजनो, हरिजनो को बलात् मुसलमान बनाया गया है वे लोग धर्मपरिवर्तन के पश्चात् भी सरकारी अनुदान ले रहे है जबकि उन लोगो ने अपने सरकारी नाम हिन्दू तथा घरेलू नाम इस्लामी रखे हुए है। श्री शालवाले ने सरकार से माग की है कि इसकी [illegible] जाच कराई जावे। जो लोग अपनी पुरानी परम्परा को छोडकर धर्मपरिवर्तन कर चुके हैं उनको पिछडे वर्गों के नाम पर सरकारी सहायता लेने का कोई अधिकार नही।

श्री शालवाले ने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की प्रधान श्रीमती कौशल्यादेवी तथा सभा के अन्य अधिकारियो ने उन क्षेत्रो मे दयानन्द सेवाश्रमो की स्थापना का दृढ सकल्प किया है। सोनाला ग्राम मे चार दिवसीय कार्यकर्ता सम्मेलन का समापन यजुर्वेदीय महायज्ञ तथा वैदिक शिविर की पूर्णाहुति पर हजारो आदिवासी भीलो तथा हरिजनो भाइयो को यज्ञोपवीत दिये गए।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने नव दीक्षित बन्धुओ को वस्त्र आदि देकर उनको अपने प्राचीन धर्म मे दीक्षित किया कार्यकर्ता सम्मेलन के समापन समारोह के अवसर पर सोनाला ग्राम को इस क्षेत्र मे शुद्ध कार्यक्रम की गतिविधि को जारी रखने के लिये आर्यसमाज की विधिवत स्थापना की गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा न० २ गाधीनगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन [illegible]

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष ७ अंक २८ | रविवार ८ मई १९८३ | १८ बैसाख वि० ०४० | दयानन्दाब्द—१५८

राष्ट्रोत्थान में आर्यसमाज की प्रमुख भूमिका
नगरपालिका के अनेक काय आर्यसमाज द्वारा

बम्बई के महापौर द्वारा आर्यसमाज के योगदान की प्रशंसा

बम्बई। आयसमाज सान्ताक्रुज मे बम्बई की समस्त आर्यसमाजो द्वारा बम्बई महानगर पालिका के नव निर्वाचित महापौर माननीय श्री मनमोहन सिंह जी वेदी की अध्यक्षता में २४ अप्रैल के दिन महात्मा हसराज जन्मदिवस मनाया गया। इस अवसर पर समस्त आर्यसमाजो की ओर से महापौर निर्वाचित होने पर श्री वेदी का सम्मान व स्वागत भी किया गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे महापौर ने कहा कि महात्मा हसराज त्याग और तपस्या की मूर्ति थे। हम उनका जन्मदिन उनके द्वारा किए गए कार्यों को आगे बढाकर मनाए। आर्यसमाज के कार्यों की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए उन्होने कहा पीडितो की सेवा मे अछूतोद्धार कष्ट मे फसी अपनी बहनो को दुष्टो के चगुल मे छुडाने मे शिक्षा क्षेत्र मे एव सामाजिक कुरीतियो को दूर करने मे आर्यसमाज का राष्ट्र मे महत्वपूर्ण योगदान है।

इस अवसर पर उन्होने बम्बई क्षेत्र मे श्री एम के अमीन द्वारा की गई सेवाओ की प्रशसा की और घोषणा की कि आर्य समाज फोर्ट के द्वारा श्री अमीन जी ने जो सामाजिक सेवा की उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु शीघ्र ही महानगर पालिका की ओर से उनके नाम पर एक मार्ग का नाम रखने की घोषणा हम करने वाले हैं।

उन्होने कहा बम्बई की आबादी अब ८५ लाख हो गई है। बहुत सारे ऐसे काय जो नगर पालिका को करने चाहिए वे काय आज बम्बई नगरी मे आर्यसमाज कर रही है। आयसमाजो द्वारा रुग्ण वाहिका का सचालन उनमे महत्वपूर्ण है। मैं सबको धन्यवाद देता हू और विश्वास दिलाता हू महानगर पालिका से सम्बन्धित कोई भी काय होगा तो मै उसके लिए सदा तैयार रहूगा। उन्होने लिंकिंग रोड और जुहू रोड के क्रासिंग को आर्य समाज चौक बनाने के प्रस्ताव को क्रियान्वित करने का आश्वासन भी दिया।

इस अवसर पर उन्हे आयसमाज सान्ताक्रुज की ओर से वैदिक साहित्य भी भेंट किया गया। आयसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने समारोह के सयोजक पद से बोलते हुए कहा कि त्याग और तपस्या सादा जीवन और उच्च विचार एव चरित्र निर्माण का उदाहरण देते हुए किसी विद्वान ने कहा था 'महात्मा गाधी आधुनिक भारत के हसराज हैं। हसराज जी को इससे बडी श्रद्धान्जलि और क्या हो सकती है।

डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार का सम्मान
राष्ट्रपति द्वारा नए ग्रन्थ का विमोचन

नई दिल्ली। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के भू०पू० उपकुलपति एव वतमान विजिटर भू०पू० ससद सदस्य वैदिक सस्कृत विद्वान डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार की 'ब्रह्म मेडिटेशन एण्ड ट्रू सूक्त ऑफ योग' शीर्षक नई पुस्तक का विमोचन आगामी ८ मई १९८३ के दिन भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि डा० सत्यव्रत जी की विद्वता के कारण राष्ट्रपति सजीव रेड्डी ने उन्हें १९८२ मे वैदिक मूर्धन्य विद्वान के रूप में आजीवन ५००० रुपए की वार्षिक राशि प्रतिवर्ष भेंट देने का आदेश दिया था। वैदिक विचार धारा का वैज्ञानिक विश्लेषण करने वाले अनेक ग्रन्थ के लिए भारत सरकार ने उन्हें दस हजार रुपए का पुरस्कार दिया था। उन्हे समय-समय पर पजाब, उत्तर प्रदेश और दिल्ली अकादमियों ने सस्कृत विद्वान और सेवाओ के रूप में सम्मानित किया है। समाजशास्त्र मानवशास्त्र, मनोविज्ञान शिक्षाशास्त्र, उपनिषद्, गीता वैदिक सस्कृति पर उनके ३६ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। बुढापे से जवानी की ओर और हामियोपैथी पर लिखे उनके कई ग्रन्थ बहुत लोकप्रिय हो गए हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि ८६ वर्ष की उम्र मे भी उनमे युवको जैसा उत्साह और पुराने ऋषियो जैसी उत्कट साधना देखने को मिल रही है।

उत्तर दिल्ली का आर्य महासम्मेलन

आय महा सम्मेलन पर आयोजित जनजागृति सम्मेलन मे भाषण देते हुए मुख्य अतिथि केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मन्त्री श्री हरिकृष्णलाल भगत।

उत्तरी दिल्ली के आय महा सम्मेलन की शोभा ... (... मे दाए) डा प्रशान्त वेदालकार श्री सूयदेव श्री सरदारी ... श्री लाजपतराय श्री राममूर्त्ति कैला श्री जगदीश सक्सेना आदि अनेक आय नेता एव कायकर्ता।

जलालुद्दीन जयदेव आर्य बने

आय समाज ओबरा। ७ अप्रैल १९८३ को आयसमाज ओबरा के तत्वावधान मे श्री जलालुद्दीन खा ने वैदिक धम की विशेषताओ से प्रभावित होकर इस्लाम धम का परित्यागकर श्री नन्दकिशोर सिंह तथा श्री द्वारिका प्रसाद जी के पौरोहित्य मे अपने पुराने धर्म-वैदिक धम (हिन्दू धम) को स्वीकार किया। इस अवसर पर उपस्थित पाच हजार से भी अधिक नागरिको के समक्ष शुद्धि के बाद माला बनर्जी नामक कन्या से उनका विवाह सस्कार भी सम्पन्न हुआ। कन्या प्रतिग्रहण का काय श्री टी० एन० शुक्ला एव उनकी पत्नी ने धर्मपिता एव माता के रूप मे कराया। श्री प० सुरेशचन्द्र वेदालकार ने शुद्धि एव विवाह सस्कार मे आए मन्त्रो की अत्यन्त भावपूर्ण शब्दो मे व्याख्या प्रस्तुत की जिसे जनता मन्त्र मुग्ध होकर सुनती रही और इस वैदिक पद्धति का जनता पर व्यापक प्रभाव पडा। श्री आर० डा० शर्मा श्री कपिलदेव आर्य और श्री रामयश पुष्पजीवी श्री रामेश्वर सिंह श्री गुलाबसिंह एव श्री कैलाशनाथ ने इस कार्य मे बहुत सहयोग प्रदान किया। उपस्थित भारी जनसमूह ने इस अवसर पर वर वधू को हार्दिक आशीर्वाद दिया।

सम्पादक—[illegible] विद्यालंकार

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो

—प्रेमनाथ, सभा-प्रधान

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गम ज्योतिषा ज्योतिरेकन्तन्मे मन शिव-सङ्कल्पमस्तु ॥

॥ यजु० ३४।१॥

शिवसङ्कल्प ऋषि, मन देवता, विराट् त्रिष्टुप्, छन्द, धैवत स्वर।

शब्दार्थ—(हे दयानिधे जगदीश्वर! आप की कृपा से) [यत्] जो [दैवम्] दिव्य गुणयुक्त आत्मा का मुख्य साधन [दूरङ्गमम्] दूरगमनशील अर्थात् दूर-दूर जाने का जिसका स्वभाव ही है [ज्योतिषाम्] शब्दादि विषयो का प्रकाश करने वाली इन्द्रियों का 'वा सूर्यादि सब प्रकाशको का) [ज्योति] प्रकाशक (मन के योग के बिना किसी पदार्थ का कभी प्रकाश नही होता) [एकम्] एक (ही) असहाय [जाग्रत] जाग्रत अवस्था मे अर्थात् जागते हुए मनुष्य का [दूरम्] दूर-दूर [उदैति] भागता है [उ] और [तत्] वह ही [सुप्तस्य] सोते हुए मनुष्य का [तथैव] वैसे ही [एति] सुषुप्ति मे दिव्य आनन्द को प्राप्त होता वा स्वप्न मे दूर-दूर जाता वा व्यवहार करता है [तत्] वह [मे] मेरा [मन:] 'बडा चचल वेग वाला' मन (सङ्कल्पविकल्पात्मक) [शिवसङ्कल्पम्] कल्याणकारी धर्मेच्छायुक्त अर्थात् अपने और दूसरे प्राणियो के अर्थ कल्याण का सङ्कल्प करने हारा [अस्तु] होवे॥

भावार्थ—जो मनुष्य परमेश्वर की वेदोक्त आज्ञा का सेवन और विद्वानो का सङ्ग करके अनेकविध सामर्थ्ययुक्त मन को शुद्ध करते हैं जो 'मन' जाग्रत अवस्था मे विस्तृत व्यवहार करने वाला और वही सुषुप्ति अवस्था मे शान्त होता है, जो वेग वाले पदार्थों में अति वेगवान ज्ञान का साधन होने से इन्द्रियो का प्रवर्तक है उस 'मन' को जो वश में करते हैं वे 'मनुष्य' अशुभ व्यवहार को छोड कर शुभाचरण मे मन को प्रवृत्त कर सकते हैं।

मन क्या है—न्याय शास्त्र में कहा है "युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिमनसो लिङ्गम्" अर्थात् जिस से एक काल मे दो पदार्थों का ग्रहण अथवा ज्ञान नही होता उसे मन कहते हैं।

मन जड पदार्थ है और आत्मा का साथी वा मुख्य साधन है। वह सूक्ष्म शरीर का सङ्ग होने से जन्म-मरण के समय भी जीव के साथ रहता है। समाधि अवस्था मे इस की वृत्तियो का निरोध होता है और और उस को योग कहते है।

जब इन्द्रिया अर्थों मे, मन इन्द्रियो मे और आत्मा मन के साथ सयुक्त होकर प्राणो को प्रेरणा करके अच्छे वा बुरे कर्मों मे लगाता है, तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय अच्छे कर्मों के करने मे भीतर से आनन्द, उत्साह और निर्भयता और बुरे कर्मों के करने मे भय, शङ्का वा लज्जा उत्पन्न होती है, वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो इस शिक्षा के अनुकूल वर्त्तता है, वह मुक्तिजन्य सुखो को प्राप्त होता है और जो इस के विपरीत वर्त्तता है वह बन्धजन्य दु:खो को भोगना है।

हम भारतीय कहलाते हैं!

—श्रीमती सावित्रीदेवी

वैसे तो हमको आर्य सभ्यता, प्राणों से भी प्यारी है।
पर अनुशासन मानें, इसमें होती 'इन्सल्ट' हमारी है॥
फिर अब तो हम आजाद हुए, क्या अब भी दबकर बात करें?
आजादी का मतलब ही यह, चाहे जितना उत्पात करें॥
कैसा विधान, क्या राज्य व्यवस्था, नियम बने हैं अब भी क्या?
अब भी शासन का सूत्र बना, मर्यादा पालें अब भी क्या?
हमको तो अपनी गवर्नमेंट के काम न बिल्कुल भाते हैं। हम भारतीय कहलाते हैं॥
हिन्दी भाषा है सर्वश्रेष्ठ, हमको इससे इनकार नहीं।
पर अंग्रेजी से अधिक हमे, अपनी भाषा से प्यार नही॥
हम नहीं प्रियतमे कहते, हमको डार्लिङ्ग अच्छा लगता है।
वह 'माई डियर' नहीं कहें तो लज्जित होना पड़ता है॥
क्या पढ़-लिखकर भी पार्टीज मे, 'नानसेंस' हम कहलाएं।
कुछ आता-जाता नहीं हमे, अपना मजाक यह उड़वाएं॥
मम्मी-डैडी-अंकल कहना, हम बच्चों को सिखलाते हैं। हम भारतीय कहलाते हैं॥
हम आर्यसंस्कृति के पोषक, पर अपना वेश नहीं भाता॥
बिन पैण्ट-कोट और टाई के, हमसे न कहीं जाया-आता॥
मुख मे हो अगर सिगार नहीं, तो रहती है यह बेचैनी।
कैसे कहलाएं सभ्य 'मित्र' कैसे पाएं ऊंची श्रेणी॥
बिन ड्रैस सूट पहने, हम कैसे जाए डिनर पर बतलाओ।
कहलाए कैसे 'एडवांस' बिन 'बाल डान्स' के समझाओ॥
बिन काटे चम्मच और छुरी के लंच नहीं ले पाते हैं। हम भारतीय कहलाते हैं॥
हम स्वप्न देखते लन्दन के, रहते हैं दिल्ली में तो क्या।
हम खोटे पीतल के सिक्के, लगते हैं कुन्दन के तो क्या॥
है नहीं 'बैंक बैलेन्स' मगर रखते हैं ऊपर से ठाठ-बाट।
क्लब जाना है अति आवश्यक, किसने बतलाया वेदपाठ॥
'गुड मौर्निङ्ग' 'गुड ईवनिंग' कहते, हम नहीं 'नमस्ते' करते हैं।
तुलसी-कबीर को क्या जानें, हम शेक्सपियर पर मरते हैं॥
हम हॉय-हॉय कहकर मिलते हैं, बॉय-बॉय कह जाते हैं। हम भारतीय कहलाते हैं॥

जवाहर नगर, मेरठ (उ०प्र०)

बोधि-कथा — परदुःख कातरता

उन दिनो गाधी जी द० अफ्रीका से आए थे। द० अफ्रीका के सफल आन्दोलन के बाद स्वदेश मे अपनी दु:खी जनता की समस्याओ का अध्ययन कर रहे थे। उन्हीं दिनों बिहार के चम्पारण क्षेत्र मे नील की खेती करने वाले और जमींदारों के शोषण अत्याचारों की जाच के लिए वह चम्पारण पहुचे, प्रतिदिन उनके पास दर्जनों पीड़ित [illegible] मजदूर इकट्ठे हो जाते थे। एक दिन कोढ़ रोग से पीड़ित एक खेतिहर मजदूर भी आ गया। दिन भर का काम खत्म कर जब गांधी जी अपने ठिकाने के लिए वापस लौटे, तब उनके साथ कई मजदूर भी साथ चल पडे। उस रोगी के घाव खुल गए। पैर सूज गए थे। उसे चलने मे असह्य वेदना हो रही थी, लेकिन न जाने किस प्रकार आत्मशक्ति के बल हो। वह चलता जा रहा था। रास्ते में चलते-चलते उसके पैरों के सभी पीवड़ी गिर गए। घावों से खून रिसने लगा। उसके लिए चलना दुभर हो गया, दूसरे सभी साथी गांधी जी के साथ आगे बढ़ गए। किसी ने भी उस कुष्ठरोगी मजदूर की ओर ध्यान नहीं दिया।

शाम को ठिकाने पर पहुच कर गांधी जी प्रार्थना के लिए बैठे तो गांधी जी ने उस कुष्ठरोगी मजदूर को नहीं देखा। गांधी जी ने पूछा—"वह मजदूर कहां गया?" सभी मजदूर बोले—"उससे चला नहीं जा रहा था, अत वह रास्ते में एक पेड़ के नीचे बैठ गया था।" गांधीजी खड़े हो गए। उन्होंने हाथ में हरीकेन बत्ती ली और [illegible] चल पड़े। वह रात के अन्धेरे में एक पेड़ के नीचे बैठा राम-राम का [illegible] था। गांधीजी को देखकर वह प्रफुल्ल हो उठा। गांधीजी बोले, "भाई, तुम से चला नहीं जाता था तो मुझसे कहते।" गांधीजी ने उसके खून से [illegible] अपनी चादर से [illegible] उसके घावों पर बांध दी और उसे सहारा देकर अपने ठिकाने ले आए। [illegible] उन्होंने उसके पांव साफ किए और [illegible] पर पट्टी बांध दी। [illegible] उसके बाद [illegible] प्रार्थना शुरू की।

उस ज्योतिर्मय का आशीर्वाद !

ओ३म् यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्।
स्युष्टे सत्या इहाशिषः ॥ ऋग्वेद ८·४४·२३

हे ज्योतिर्मय, मैं तुम मय हो जाऊं और आप मुझमे सदा ओत-प्रोत रहें। आपके समस्त आशिष सदा हमें सन्मार्ग पर प्रवृत्त करें।

आर्य सन्देश

जैसा शत्रु हो, वैसा शस्त्र लो !

वैदिक संस्कृति, श्रीकृष्ण और चाणक्य के देश मे आज के शासक किंकर्तव्य-विमूढ़ दिखाई देते हैं। देश के कई अचलों में विशेषत. पूर्वोत्तरी एव पश्चिमी अचलो मे हिंसा और अराजकता का ताण्डव नृत्य हो रहा है, अमृतसर के स्वर्णमन्दिर के द्वार पर [illegible] प्रभाग के सर्वोच्च पुलिस अधिकारी को दिन-दहाड़े गोलियो से भून दिया गया। वर्षभर मे सैकड़ो हिंसक घटनाए हो चुकी हैं, देश के प्रमुख राजनीतिज्ञों और जननेताओ को धमकी भरे पत्र दिए जा रहे हैं। सिखों की सभी धार्मिक मांगे मान लेने के बावजूद अकाली नेता स्वर्णमन्दिर से विश्व भर के सिखो का धार्मिक युद्ध करने के लिए आह्वान कर रहे हैं। इन सब हिंसक कारंवाइयो एव उत्तेजनात्मक गतिविधियो के बावजूद बृहस्पतिवार २८ अप्रैल के दिन केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने कहा है कि सात दिन के अन्दर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अधिकारी पुलिस अधिकारी के कथित हत्यारे तथा दूसरे घोषित अपराधियों को सौंप दें अन्यथा शासन को समुचित कार्यवाही करने के लिए विवश होना पड़ेगा। गृहमन्त्री ने जैसा वक्तव्य दिया है वह किसी उपदेशक या सन्त के द्वारा दिया जाता तो उसकी सार्थकता थी, एक सावधान एव कर्तव्यपरायण प्रशासन द्वारा इस तरह की बात कहना शोभाजनक नही है।

नीति की सीख है कि जैसा शत्रु हो, उससे वैसे शस्त्र का व्यवहार किया जाए, जो तत्व जान-बूझकर हिंसक कार्यवाही करने के लिए तुले दीखते है, उनसे शान्ति और सद्व्यवहार की बात करना व्यावहारिक नही है। दूसरो का आदर-सम्मान करो, हमे जीवन में सांप और बिच्छू की वृत्ति नहीं अपनानी चाहिए, परन्तु जो कोई हमसे साप और बिच्छू जैसा व्यवहार करे उन्हे दूध पिलाकर या उनकी उपेक्षा कर हमे उन्हे शान्त नहीं कर सकते। इसी तरह कोई हमारे गाल पर एक चपत मारे, तो उसके सामने दूसरे चपत के लिए दूसरा गाल सामने करना मूर्खता है, प्रत्युत ईंट का जवाब पत्थर से देना ही व्यावहारिक नीति है। साप आए तो उसे पत्थर मारना ठीक नहीं क्योंकि पत्थर से टेढ़े चलते चक्कर खाते साप का निवारण सम्भव नही, परन्तु उसे लाठी के एक वार से उसका अंग-भंग किया जा सकता है। इसी प्रकार बिच्छू को भी लाठी पीट कर नियन्त्रित नहीं किया जा सकता, प्रत्युत उसे घन, पत्थर या ईंट के एक प्रहार से चकनाचूर किया जा सकता है। झूठी अहिंसा से व्यक्ति-समाज और राष्ट्र मे कायरता का सचार होता है, मध्ययुग में कथित अहिंसा का व्रत लेने वालो ने आततायियो का समुचित उत्तर न [illegible] पलायनवृत्ति को ही बढ़ाया है। खेद है कि आज भी हमारे शासक उसी झूठी [illegible] नीति का अवलम्बन कर रहे हैं।

नीति का परामर्श है कि 'आततायिनमायान्तं हन्यादेव अविचारयन्' आततायी या आक्रान्ता की हत्या बिना विचार किए करना ही सर्वोत्तम है। आज जो तत्त्व देश की आन्तरिक व्यवस्था से खिलवाड़ कर रहे हैं, उनकी उपेक्षा करना किसी तरह उचित नहीं है। वेदों में मन्त्रो में सीख दी गई है कि हमें सांप और बिच्छू की वृत्ति नही अपनानी चाहिए, यदि कोई तत्त्व ऐसी नीति अपनाएं तो हमे उनके साथ यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए। आर्यसमाज के सातवें नियम में कहा गया है—'सबसे प्रीति-पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बरतना चाहिए।' सज्जनों के साथ प्रीतिपूर्वक और धर्मानुसार व्यवहार करो, परन्तु शठ, धूर्त या आततायी के साथ यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए। दुष्ट कौरवों का निकन्दन करने के लिए नीतिज्ञ श्रीकृष्ण ने प्रत्येक परिस्थिति के अनुसार कार्य करने का परामर्श दिया था। दुर्योधन, कर्ण आदि के साथ यदि उन्हीं की भाषा में व्यवहार न किया जाता तो पाण्डवों को कभी विजयश्री नहीं मिलती। इसी प्रकार [illegible] को सत्तारूढ करने एवं विदेशी आक्रमणकारियों को हराने में भी नीतिज्ञ [illegible] ने साम-दाम-दण्ड-भेद सभी उपायों को उचित और व्यावहारिक माना था। [illegible] की आन्तरिक स्थिति से खिलवाड़ करने वाले अलगाववादी तत्वो तथा देश [illegible] करने की इच्छुक विदेशी शक्तियों का सामना उसी स्थिति में सम्भव [illegible] हो, उसके नियन्त्रण के लिए उपयुक्त शस्त्र के प्रयोग का [illegible]।

चिट्ठी-पत्री

आर्यसमाज की शक्ति बढ़ाइए : समग्र वैदिक क्रान्ति करें !

शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति के मुख्य उद्देश्य से विश्व समर्पित वैदिक आन्दोलन 'आर्य समाज' कोई सम्प्रदाय नही है। इसकी मान्यता है कि ऋषियो के देश भारत के उद्भव से ही समस्त विश्व का अभ्युदय सभव है। आर्य समाज ने अपने जन्मकाल से ही अग्रणी बनकर समग्र सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात करने हेतु बलिदानो की शृखला बनाई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त राजनीतिक पक्ष के नेताओ ने राष्ट्रीय एव सामाजिक नीति प्रचलन मे अग्रणी सामाजिक सस्था आर्यसमाज के दृष्टि-कोण की नितान्त उपेक्षा की। अस्पृश्यता, गोहत्या, विदेशी भाषा, असमान व अभारतीय शिक्षा, मासाहार, मादक द्रव्य, अश्लीलता, नारी शोषण, बलात धर्मान्तरण आदि दुराग्रहो के विरोध मे आर्यसमाज को मजबूरन अपनी शक्ति अपव्यय करनी पडी है और इसलिये उनके अन्य सृजनात्मक कार्य विलम्बित होते जा रहे है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान शताब्दी वर्ष १९८३ मे निम्न परिप्रेक्ष्य मे आर्य समाज का महत्व परिलक्षित होता है। विडम्बना है कि साम्प्रदायिकता समाप्ति हेतु हमने जो धर्म सस्कृति से पलायनवादी धर्मनिरपेक्ष राजनीति अपना रखी है, उस निरपेक्षता ने अशिक्षा-अन्याय-अभाव से मुक्त समाज रचना मे सहायक धर्माचरण प्रवृत्ति का अवमूल्यन किया है। प्रत्येक क्षेत्र मे विशेष-विशेष अधिकार हस्तगत करने हेतु (किंतु राष्ट्रीय एव सामाजिक कर्त्तव्यो से विमुख) वर्गो उपवर्गो मे समूचा समाज विभक्त होता जा रहा है। नित नवीन सम्प्रदायो यथा-प्रान्तीय, जातीय, धार्मिक, छात्र, शिक्षक श्रमिक, व्यापारी, विज्ञापनो [खर्चीले] से एकाधिकारी मनोवृत्ति, भाषायी (विदेशी) शोषण इत्यादि छोटे-छोटे दायरो की सस्थाओ का जाल बनता जा रहा है।

सरस्वती पुत्र महर्षि दयानन्द ने मनु की शुद्ध धर्म की व्याख्या मे सभी सम्प्रदायो की मूल भावना का आश्रय लिया है—

धृति। क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकम् धर्म लक्षणम् ॥

धैर्य, क्षमा, शरीर-इन्द्रियो-मन पर सयम, चोरी न करना, पवित्रता [बाहर व भीतर], अपरिग्रह, अहिंसा, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना धर्म के दस लक्षण है। इसी धर्म-चक्र को राष्ट्रीय ध्वज मे भी स्थान प्राप्त है। अतएव भारतवासियो के लिए समस्त सकीर्ण, सम्प्रदायों, मजहबो, क्षुद्र स्वार्थी उद्देश्य सगठनो के स्थान पर भारत के गौरव एव सास्कृतिक पूर्वज आदर्श महाराजा रामचन्द्र व योगीराज श्रीकृष्ण से पुन-सम्बन्धो को सर्वाधिक महत्व देने के लिए आर्य सस्कार ग्रहण करने होगे, व अधिकार के साथ-साथ कर्त्तव्य का मिश्रण केवल आर्यसमाज आन्दोलन की सफलता पर निर्भर है आर्यसमाज का इस 'दृष्टि से कोई वर्तमान विकल्प नही है। ज्यो-ज्यो आर्यसमाजो मे लोकशक्ति बढ़ेगी त्यो-त्यो इदन्न मम' भाव [यह मेरा नही सबका है] से क्षुद्र स्वार्थो का शमन होगा व आर्य समाज के विविध वैदिक समाजवाद के रचनात्मक कार्यों के अन्तर्गत सबकी उन्नति से ही निज उन्नति का समग्र क्रान्ति का स्वप्न पूर्ण किया जाएगा।

जयप्रकाश आर्यबन्धु ५५६१/४ न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली ७

सुन्दर महासम्मेलन विशेषांक

'आर्य सन्देश' का महासम्मेलन विशेषांक मिला। बहुत सुन्दर निकला है। लेख बहुत अच्छे लगे। 'आर्य सन्देश' आते ही मैं तो मुख्य लेख और 'बोधकथा' पहले पढ लेती हूं।

—ईश्वर देवी [सुप्रसिद्ध आर्य नेत्री एव धर्मपत्नी स्व० पं० कृष्णचन्द्र विद्यालकार]
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७

उच्चकोटि के विद्वानों के लेख

'आर्यसन्देश' का आर्य महासम्मेलन विशेषाक पढकर हृदय गद्गद् हो गया। आपने इस बार बहुत ही अच्छे कोटि के विद्वानों के लेख प्रकाशित करके आर्यसंसार को नवीन विचार दिए हैं। अगर इसी प्रकार के विशेषांक यदि साल मे एक-दो निकले तो 'आर्यसन्देश' अपना स्तर ऊंचा रख सकेगा।

—शिवप्रसाद गुप्त, प्रधान आर्यसमाज, सोहनगज, दिल्ली—७

आर्यसमाज कृष्णनगर भिवानी के नए पदाधिकारी

प्रधान—रामनारायण जी चादना, आर्य, उप-प्रधान—वैद्य उजागर राम, मेहता मोहनलाल, मन्त्री—श्री जगदीश चन्द्र उपमन्त्री—श्री नाथूसिंह यादव, कोषाध्यक्ष—महाशय चन्द्रभान गनोत्रा, पुस्तकाध्यक्ष—लाजपतराय महतानी।

संध्या का आध्यात्मिक महत्व

सध्या का आध्यात्मिक महत्व यह है कि हमारी चेतना मे रूपान्तर लाती है। निम्न चेतना से ऊर्ध्वंतर चेतना की ओर अभिमुख करती है। केवल मन्त्रो का उच्चारण मात्र सध्या नही कहलाता। केवल मात्र मन्त्रो का उच्चारण 'हनुमान चालीसा' 'दुर्गा स्तोत्र' और सुखमणि' पाठ आदि प्रक्रिया के समान हो जाता है। सध्या मे चार अगो पर ध्यान देना या अनुसरण करने की अत्यन्त उपादेयता होती है। आसन, प्राणायाम, एकाग्रता, और मनन तथा चिन्तन। सध्या का अर्थ भी यही है सम्यक् ध्यान और चेतना की एकाग्रता का अभ्यास है। अपने सभी अगो को उसी ध्यान की चेतना के साथ जोडना है। अगस्पर्श की क्रिया अगो के कार्य में सचेतन होने की क्रिया है तथा सम्बन्धित अगो के चेतना केन्द्रो (चक्रो को जाग्रत करने की क्रिया है) जिसमे विभिन्न अगो को दिव्य चेतना के साथ सयुक्त करके इन इन्द्रियो और अगो मे तथा उनके चेतना केन्द्रो मे शक्ति के आरोहण और अवरोहण का ध्यान किया जाता है। साथ ही इन इन्द्रियो और अगो के भौतिक आधिदैविक और आध्यात्मिक रूपो का सकेत भी मिलता है। यह व्यष्टि योग और दैवीयोग के समन्वय का और व्यष्टि का समष्टि पुन ब्रह्म मे लीन होने का सकेत तक है। प्राणायाम और एकाग्रता के द्वारा हमारे प्राण सूक्ष्म हो जाते हैं और वह समष्टि प्राण मे प्रवेश करके वहा से सोम प्राण को लेकर शीघ्रता से हमारे शरीर मे वापिस लौट आते हैं। 'पीत्वा-पीत्वा अम्बर पीयूष प्रत्यावर्तन वेगेत) इसका सकेत केनोपनिषद् मे मिलता है। ओ प्राणो प्राण ओ वाक् वाक् का अभिप्राय है—वह अमृत पीयूष हमारे वाक् और प्राण मे असीम शक्ति प्रदान करे।

वाक् वाणी भी है और मूल आद्या प्राण शक्ति और अभिव्यक्ति शक्ति भी।

हम देखते हैं कि 'सन्ध्या के प्रथम मन्त्र मे आचमन करने का आदेश है। तीन बार आचमन करके फिर सभी अगो पर जल का स्पर्श करना। जल केवल बाह्य प्रतीक है। इसका अभ्यान्तरिक अर्थ आनन्द है। 'ओ नमो देवी रभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शयोरभिस्नवन्तु न।" जब हम इस मन्त्र पर गम्भीर चिन्तन करते है। तब खुलकर इस मन्त्र का उच्चतर आध्यात्मिक महत्व हमारे समक्ष आ जाता है। पहले देवी और आप। शब्दो पर विचार कीजिये।

'देवी शब्द—प्रथम विभक्ति के बहुवचन मे देव्य के स्थान मे देवी शब्द यह वैदिक प्रयोग है। देवी शब्द शक्ति, ज्योति एव मातृशक्ति का द्योतक है और 'आप्लृ व्याप्तौ' धातु से बना है। यह देवी का विशेषण है। शक्ति व तेज सदा दिव्य होते हैं। विराट विश्व के कण-कण मे भागवत तेज व्याप्त है। इन दोनो पदो का मिश्रित भाव यह है कि विश्वम्भर भगवान शक्ति, ज्योति और आनन्द के रूप मे कण-कण में व्याप्त है। यह देवी अर्थात् आद्या शक्ति द्युलोक मे ऋतम् सत्यं बृहत् के रूपो मे व्यापक मातृवत् हमारा पालन-पोषण और सरक्षण कर रही हैं। वे ही जलो मे रस के रूप मे अन्तरिक्ष मे मातरिश्वा के रूप मे अग्नि मे ज्योति और उष्णता के रूप मे वायु मे गति के रूप मे पृथ्वी मे "रयि" के रूप मे विद्यमान है।

सुशीला राजपाल

—सिद्धान्तविदुषी

निघण्टु मे आप शब्द से अन्तरिक्ष चारी सूर्य-चन्द्र नक्षत्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, विद्युत, रवि रश्मि एव धरातल पर उपलब्ध जल धारा के रूप मे हृदयाकाश समुदित होने वाली ज्ञानधारा के रूप मे मस्तिष्क मे उपजाने वाली बौद्धिक विचारधारा के रूप मे व्याप्त है। यह देवी वेद की उषा है। सत्या सत्येभि महती महद्भि देवी देवेभि. (७, ६५, ७) उषा अपनी सत्ता मे देवो के साथ सच्ची है और महान देवो के साथ महती है। उषा आनन्द को लाने वाली है। तू ऊर्ध्वलोक से सप्त सिन्धवः के रूप मे सात प्रकार के आनन्दमय मे अधम लोक (मन, प्राण और शरीर) मे अवतरित होती है। और हमारे सभी अगों का आनन्द से परिप्लावित कर देती है। वाक्-वाक् में तेरे आनन्द की धारा मे प्रवाहित हुई, फिर कण्ठ हृदय और नाभि केन्द्र पादादि तक ओज और बल से सपुट कर देती है।

सध्या के लिए तीन आसन-सिद्धासन, पद्मासन और सुखासन जरूरी हैं। अपनी सुविधावश साधक या साधिका किसी भी आसन से बैठ सकती है। जब आसन जम जाए तब प्राणायाम करना चाहिए, हमारा अपान प्राण सदा नाभि केन्द्र से लेकर पाद तक मलिन और विकारग्रस्त रहता है। जब हम अपान प्राण को उत्थित करते हुए प्राण मे सचरित कर देते हैं, यदि निरन्तर यह प्रक्रिया चलती रहे तो अपान प्राण शुद्ध होकर धीरे-धीरे ऊर्ध्व लोक मे (अर्थात् शिर मे जाकर) रेतस् हो जाता हो। ओज के रूप मे हमारी समस्त इन्द्रियो को ओज प्रदान करता है। दूसरा लाभ काम, क्रोध, लोभ आदि वासनाओ पर विजय होती जाती है। हमारी वासनाओ का केन्द्र सब का शस (Subconscous) अर्थात् अवचेतना जो कि नाभि केन्द्र के निचले स्वरो मे पाया जाता है प्राण शक्ति जब अपान प्राण को शुद्ध करता रहता है, निरन्तर प्रक्रिया द्वारा तब हमको सफलता मिलती है। तीसरा लाभ प्राणायाम के द्वारा हमारी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

चाकलेट का राज रोग

डॉ० रवीन्द्र अग्निहोत्री

नई सभ्यता के प्रसार के साथ नई-नई चीजों का भी प्रचलन बढ़ रहा है। चूंकि इस सभ्यता पर धनीवर्ग का वर्चस्व छाया हुआ है अत महगी चीजों का उपभोग करना सभ्य होने का प्रमाण माना जाने लगा है। पिछले कुछ समय से अपने देश में उचित-अनुचित सभी उपायों से बटोरे हुए धन से बने नवधनिक वर्ग के लोगों की संख्या मे बेशुमार वृद्धि हुई है, अत नई-नई चीजें भी बाजार में खूब आ रही हैं। ये चीजें प्रकृतिप्रदत्त नहीं, कृत्रिम रूप से कारखानो मे तैयार की जा रही हैं। ऐसी ही एक चीज है—चाकलेट। बच्चों को जहलाने के लिए टाफी, चाकलेट आदि चीजो का खूब प्रयोग किया जा रहा है। एक बडी कम्पनी तो अपने विज्ञापनो मे बडी आकर्षक मुद्रा मे यह सुझाव देती है कि कभी-कभी जो काम बातो से न बन पाए, वह हमारी चाकलेट से बन जाए।

बच्चों का मुख्य आहार है, पर जब उन्हे दूसरी चीजो का स्वाद मिलने लगता है, तब उनमे सामान्यतया दूध के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है। सूरदास ने भी बाल कृष्ण से कहलाया है, 'काचो दूध पियावत पचि-पचि, देत न माखन-रोटी।' समस्या होती है कि बच्चो की दूध के प्रति अरुचि कैसे दूर की जाए? तब लोग दूध को स्वादिष्ट बनाने के लिए दूध मे चीजें मिलाना शुरू कर देते हैं। चाकलेट भी इस श्रेणी मे है। इन चीजो का शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है—यह जानने की हम कोशिश ही नहीं करते। हम तो अपने, और अपने बच्चो के शारीरिक और मानसिक स्वाष्थ्य की जिम्मेदारी इन कम्पनियो को सौप देते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि ये व्यावसायिक कम्पनियो हैं, जिन्हें अपने सामाजिक उत्तरदायित्व की लेशमात्र भी चिन्ता नही है। इनकी चिन्ता का केवल एक विषय है—धनोपार्जन। इसलिए वे तरह-तरह के विषो को भी आकर्षक रूप देने मे हिचकिचाती नहीं। चाकलेट भी इसी प्रकार का एक विष है।

वैज्ञानिको ने चाकलेट का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है और उन रसायनो की जाच की है जिनसे यह बनती है। इनमे एक रसायन है 'फिनाइल एथिलेमाइन'। यह रसायन 'मोनो एमीन्स' रसायन श्रेणी मे आता है। फिनाइल एथिलेमाइन शरीर में पहुचकर जो रासायनिक क्रिया शुरू करती है उसके कारण हमारे फेफडो से एक पदार्थ रिसने लगता जो रक्त के द्वारा सारे शरीर मे फैल जाता है। सामान्यत इसके प्रभाव से गर्दन के रास्ते मस्तिष्क को आक्सीजनयुक्त शुद्ध रक्त ल जाने वाली नसें सिकुडने लगती हैं। इन रक्त धमनियो के सिकुडने से मस्तिष्क को पूरी मात्रा में आक्सीजन और रक्त नही पहुच पाता। मस्तिष्क को जब आक्सीजन कम मिलेगी, शुद्ध रक्त कम मिलेगा, तब तरह-तरह के रोग हो सकते हैं। सिर दर्द से लेकर ब्रेन हैमरेज तक हो सकता है। यह सब इस पर निर्भर करता है कि आपने कितनी चाकलेट खाई, और आपके शरीर मे मोनो एमीन्स रसायन का उपापचय/मेटाबालिज्म/ किस तरह होता है। जितने भी विष हैं उनका प्रभाव नशीला होता है। इसीलिए उनका सेवन बार-बार करने की इच्छा होती है। चाकलेट के बारे मे भी कहते हैं कि इसका स्वाद एक बार जीभ पर चढ जाए, तो सरलता से उतरता नही। शायद यही कारण है कि बूढे तक चाकलेट का 'नशा' करते देखे गए है, पर इसके परिणाम कितने भयकर हो सकते हैं इसका एक ताजा उदाहरण सामने आया है। अभी ८ जनवरी के द ट्रिब्यून मे एक छात्र की मृत्यु का समाचार छपा था। वह चडीगढ मे इजीनियरिंग के अन्तिम वर्ष का विद्यार्थी था। डाक्टरो ने बताया कि उसकी मृत्यु ब्रेन हैमरेज से हुई, जो इस कारण हुआ कि वह लडका चाकलेट खाता था।

इस घातक विष से बचिए और बच्चो को बचाइए।

२५—जयश्री, ७५ वरली-सी फेस रोड, बम्बई ४०००२५

ध्यान करो

कवि बनवारी लाल 'शादा'

आर्य बन्धुओ अब तो चेतो, देश-धर्म का ध्यान करो।
वेदप्रचार करने की घर-घर। तन-मन-धन कुर्बान करो॥
ऊच-नीच का भेद मिटाकर। अपना सबको मीत करो॥
गाओ मिलकर गीत प्रेम के। भाई-भाई प्रीत करो।
बहुत दिवस गफलत मे सोये। ऐसी अबना भूल करो॥
लाख बातो की बात है इक। शूलो को भी फूल करो॥
अनुयायी बनकर वेदो के। देश का फिर उत्थान करो॥
ऋषि दयानन्द श्रद्धानन्द सम। पैदा वीर विद्वान करो॥
अवसर समझो मजिल जानो। बीते समय का खेद करो॥
दुखियो का दुख दर्द मिटाओ। ना अपनो से भेद करो॥
देश धर्म हित जीना-मरना। धर्म के हरदम काम करो॥
धर्म के रक्षक बन बलिदानी। 'शादा' जग मे नाम करो॥

प्रधान—आर्यसमाज, मौडल बस्ती, नई दिल्ली-५

दहेज प्रथा अभिशाप या वरदान ?

—प्रकाशवती शास्त्री

मेरे लेख के शीर्षक को पढते ही पाठक भडक उठेंगे। यह कैसा क्रातिकारी शीर्षक है? वर्तमान समाज की विचारधारा के सर्वथा विपरीत। सभी पत्रो मे आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि सभी साधनो में तो इसे अभिशाप बताया जा रहा है। नित नई दुखद घटनाए सुनी जा रही हैं। त्राहि-त्राहि मची हुई है।

मैं कहती हू कभी आपने यह भी विचारा है कि दहेज शब्द की व्युत्पत्ति क्या है। दहेज शब्द उर्दू भाषा का है जो हिन्दी के दायज शब्द का ही परिवर्तित रूप है। दायज का अर्थ है देने योग्य। मनुस्मृति मे आठ प्रकार के विवाहों का विधान है जिन मे प्रथम चार को ही श्रेष्ठ माना गया है। इन चारों विवाहों में कन्या को अलकृत करके, वर का सम्मान करके, देने का आदेश है। उनका आशय है कि श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभावकारी कन्या को वैसे ही गुण कर्म स्वभाव वाले वर को जब सौंपा जाए तब कन्या अलंकृत होनी चाहिए। उसके साथ ही उपहार रूप में उसके भावी जीवन के लिए कुछ सुखोपयोगी वस्तुएं भी होनी चाहिएं। क्यों जी, आप अपने घर की दुलारी को खाली हाथ ही विदा करना चाहेंगे? माता-पिता के घर से प्रथक् होने का दुख भी तो उसे कम नहीं। कौन माता-पिता अपनी कन्या को अपने प्रेम के प्रतीक वस्त्राभूषण तथा अन्य सुन्दर वस्तुए न देना चाहेंगे। यह तो उनकी वर्षों-वर्षों की अभिलाषा है। इसके अतिरिक्त मनुस्मृति के विधान के अनुसार यह कन्या का 'स्त्रीधन' माना गया है। कन्या का अपने पिता की चल सम्पत्ति पर जो अधिकार है वह भी तो उसने लेना है। इसी अधिकार को सामान्य भाषा मे भाग कहा जाता है। कन्या अपना भाग लेती है। माता-पिता अपनी सामर्थ्य के अनुसार कन्या को जो कुछ देते हैं वही तो उसका भाग होता है। मनु भगवान इसे ही 'स्त्रीधन' कहते हैं, जिस पर कन्या का पूरा-पूरा अधिकार होता है। वर-पक्ष यदि आवश्यकतावश उस धन का प्रयोग कन्या की सहमति से ही कर सकते हैं। कन्या प्राय सयुक्त परिवार मे ही जाती है। हिंदू-विवाह मे केवल कन्या और वर का सम्बन्ध ही नहीं अपितु एक परिवार का दूसरे परिवार से सम्बन्ध हो जाता है। फलस्वरूप कन्या का धन अपना होते हुए भी परिवार का धन हो जाता है। तनिक विचारिए कन्या अपने ससुराल मे जाकर वहा की सभी वस्तुओ को पा लेती है। सास-ससुर का दुलार और पाती है, ननद-देवरो का प्यार पति के ऊपर अधिकार। अत यदि वह अपना सारा धन स्वेच्छा से समर्पित कर देती है तो क्या हानि है।

देने और लेने की मर्यादा

पर क्या करे इस लोभ-कूकर का यह सारे सम्बन्धो को बिगाड़ कर रख देता है।

देने और लेने की भी एक मर्यादा है, एक गरिमा है जिसे बनाए रखना दोनो पक्षो के लिए अनिवार्य है। देने-लेने की मर्यादा का आदर्श वही होना चाहिए जो महात्मा कबीर ने गुरु-शिष्य के सम्बन्ध मे लिखा है। उन्होंने लिखा है—

शिष्य तो ऐसा चाहिए,
गुरु को सब कुछ दे।
गुरु तो ऐसा चाहिए,
शिष्य से कुछ न ले।

लीजिए हो गया निर्णय दहेज देना चाहिए या नही लेना चाहिए या नहीं।

अन्यत्र भी लिखा है—

बिना मागे दिया दान अमृत है, माग कर लिया पानी है और खींचातानी से प्राप्त वस्तु रक्तपान है।

अब आप ही निणय कर लीजिए कि दहेज लेना चाहिए या नही देना चाहिए या नहीं और कैसे? लेना-देना चाहिए और यह भी समझ लीजिए कि दहेज-प्रथा वरदान से अभिशाप कैसे बन गई? आज के युग मे मानव की बढती हुई धन-लिप्सा ने जैसे अन्य क्षेत्रो मे भ्रष्टाचार को जन्म दिया है उसी प्रकार से दहेज-प्रथा को भी विकृत बना दिया गया है। इसे व्यापार मान कर धन-प्राप्ति का साधन मान लिया गया है।

इस लिए वेद मे लिखा है

मा गृध कस्यस्विद्धनम्

किसी के भी धन को लालच की दृष्टि से न देखो यह पाप है पतन का कारण है।

इस विषय का एक पक्ष और भी है। दहेज सम्बन्धी प्रकाशित सभी घटनाए सच नही होतीं। लगता है हिन्दू जाति को बदनाम करने का आदोलन-सा चल पडा है। कभी-कभी मद्यपान तथा अन्य कारणो से हुए घरेलू झगड़ो के फलस्वरूप हुई हत्याओ और आत्महत्याओ को भी दहेज के साथ ही जोड दिया जाता है। निस्सन्देह दहेज-प्रथा के वरदान रूप को सुरक्षित रखने के लिए वेद की शिक्षा परमावश्यक है।

१४ जैन मदिर, राजा बाजार, नई दिल्ली।

आर्य जगत समाचार

राष्ट्र नेता श्री श्यामजी कृष्ण से प्रेरणा लें

श्यामजी कृष्ण वर्मा की जयन्ती पर कार्यक्रम

दिल्ली। विदेशो में स्वतन्त्रता सग्राम के सघर्ष को तीव्र गति देने वाले तथा क्रान्तिकारियो के प्रणेता श्यामजी कृष्ण वर्मा को श्रद्धाजलि देते हुए आर्य नेता डा० गणेशी लाल वर्मा ने कहा—श्यामजी कृष्ण वर्मा का दृष्टिकोण वैज्ञानिक व युक्तियुक्त था। भारत की स्वाधीनता के पक्ष मे लदन, पेरिस जेनेवा मे उन्होने अनवरत प्रचार किया विदेशो मे जिससे अनक भारत समर्थक सभाए हुई। राष्ट्रीय सघर्ष मे विश्व जनमत की उपयोगिता पर उन्होने सर्वप्रथम बल दिया।

श्री गोपाल गोडसे ने इस महान देशभक्त का पुण्य स्मरण करते हुए युवा वग को राष्ट्र निर्माण का आह्वान किया। उन्होने कहा—वीर सावरकर, मदनलाल, ढींगडा, सरदार सिंह राणा, मैडम कामा आदि युवा विप्लवी उनके पद चिह्नो पर चले। आज देश मे उठ रहे अलगाववादी, पृथकतावादी तत्वो के विरुद्ध भारतीय युवकों को फिर सघर्ष करना होगा।

श्री वीरेन्द्र कुमार श्री श्याम सुन्दर आर्य नेताओ ने अपने विचार रखे। सभा के अध्यक्ष व गुरुकुल कागडी के भूतपूर्व कुलपति डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने भारत सरकार से माग की कि पैरिस विश्वविद्यालय मे श्यामजी कृष्ण वर्मा का निजी साहित्य व पत्रसग्रह सरकार अपने अधीन लेकर के हस्तलेखो व साहित्य पर अनुसधान करे।

दिल्ली से गैरकानूनी रूप में गोवंश का लदान

: गोभक्तो के साथ जबरदस्ती : श्री शालवाले द्वारा रेल अधिकारियों एवं पुलिस की भर्त्सना

दिल्ली। किशनगज रेलवे स्टेशन के मालगोदाम से दूध देने वाली गाएँ, अच्छे बैल, बछडे और बकरियो से लदी हुई बोगियो को ३० अप्रैल की रात्रि में पुलिस द्वारा गौ सेवा सघ के कार्यकर्ताओं को जबरदस्ती हटाकर रेल अधिकारियो की मिली भगत से बम्बई व कलकत्ता के लिए रवाना कर दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि ३० अप्रैल को दो बजे मध्यान्ह वे स्वय गोभक्तो की टोली के साथ किशनगज रेलवे स्टेशन गए और गोवश से लदी बोगियो को रोकने के लिए स्टेशन मास्टर और पुलिस अधिकारियो से प्रार्थना की। उन्हें आश्वासन दिया गया था कि लदान रोक दिया गया है। उन्होने इस अवैध कार्रवाई पर पुलिस और रेल अधिकारियो की भर्त्सना की।

श्री शालवाले ने कहा हरियाणा से एक राज्य से दूसरे राज्य के लिए गोवश के लदान पर रोक होने के बावजूद हरियाणा से अवैध तरीको से यह कार्य जारी है। इसके अतिरिक्त दिल्ली के अतिरिक्त जिला जज श्री अरुण एम माथुर द्वारा उत्तर रेलवे के जनरल मैनेजर को २७।४ ८३ को गोहत्या अधिनियम १९६६ की धारा ३ (१) के अन्तर्गत दिल्ली और नई दिल्ली से भारत के किसी भी भाग के लिए गोवश का लदान न करने के आदेश के बावजूद मिली भगत से यह सब काम हो रहा है। उन्होने इस सम्बन्ध मे प्रधान मत्री, हरियाणा के मुख्यमन्त्री एव दिल्ली के राज्यपाल को पत्र लिखकर जाच की माग की है।

श्री शालवाले ने सरकार का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि जो लोग कानून का पालन करते हैं और कराना चाहते हैं, उनकी अवहेलना और अपमान किया जाता है इसके बावजूद जो लोग गुण्डागर्दी विद्रोह कानून की अवज्ञा, और राष्ट्र विरोधी काम करते हैं, सरकार उनके सामने झुकती है। उन्होने कहा सरकार के आश्वासन एव मजिस्ट्रेट के आदेश के बावजूद जिन सरकारी कर्मचारियो ने कानून का उल्लघन किया है, उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाही की जाए।

लुधियाना मे आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे १४ अप्रैल से २४ अप्रैल १९८३ तक चारो वेदो के शतक का पारायण यज्ञ किया गया। पूर्णाहुति २४ अप्रैल के दिन सम्पन्न हुई। प० वेदप्रकाश शास्त्री यज्ञ के पश्चात प्रतिदिन वेदमन्त्रो की व्याख्या किया करते थे। यज्ञ के बाद १५ यजमानो को आशीर्वाद दिया गया। पूर्णाहुति के बाद विशिष्ट कार्यक्रम मे आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक प० रामनाथजी प० वेदप्रकाश जी शास्त्री तथा प० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री ने आर्यसमाज स्थापना दिवस पर सामयिक भाषण दिए।

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर के नए पदाधिकारी

प्रधान बाबू देवेन्द्र स्वरूप एडवोकेट, उपप्रधान डा० बालमुकुन्द, प्रो० शीतलचरण, मन्त्री-डा० विजयपाल शास्त्री, उपमन्त्री-श्री रामबहादुर कोषाध्यक्ष-श्री हीरालालजी, पुस्तकाध्यक्ष-प्रा०लक्ष्मीधर।

आर्यमहासम्मेलन की शोभा यात्रा मे बिडला स्कूल का योग

बिडला आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल बिडला लाइन्ज दिल्ली-७ की प्रबन्धक-समिति प्रधानाचार्या एव अध्यापिका वर्ग ने विद्यालय की सभी छात्राओ के साथ रविवार दिनाक २४-४ ८३ को आर्य महासम्मेलन की शोभा-यात्रा मे भाग लिया। इस शोभा यात्रा के मुख्य आकर्षक केन्द्र बिन्दु थे —

छात्राओ द्वारा बान्सुरी वादन, रिंग ड्रिल, डम्बल ड्रिल तथा छात्राओ द्वारा सामूहिक भजन।

आर्यसमाज महरौली के नए पदाधिकारी

प्रधान-श्रीसोहन लाल, उपप्रधान डा० कृष्णलाल, श्री सुभाषचन्द्र कुमार, श्री बनवारीलाल गुप्त, मन्त्री—श्री सुशील कुमार आर्य उपमन्त्री-श्री मदन लाल मुखी कोषाध्यक्ष-श्री पुरुषोत्तम दास मुखी, आय व्यय निरीक्षक-श्री प्रेमनाथ चौधरी।

आर्यसमाज नैरोबी, केन्या, पूर्वी अफ्रीका के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री एम० के० भल्ला, उपप्रधान—श्री पी० एस० सूद मन्त्री—श्री एस० के० वर्मा, उपमन्त्री— श्री बी० के० वर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री डी०आई० कपिला कोषाध्यक्ष—श्री बी० के० घई।

अखिल भारतीय लेख-प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य मे आर्य युवक परिषद् की ओर से, 'विश्व को आर्य कैसे बनाए' विषय पर एक लेख प्रतियोगिता पर ५००), ३००) और २००) के तीन पुरस्कार नवनीतलाल सत्यप्रिया' धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से दिए जाएगे। लेखक अपने लेख २० फुलस्केप पृष्ठो मे १४ जून तक आर्य युवक परिषद् १६५४, कूचा दखिनीराय, दरियागज, नई दिल्ली-२ के पते पर भेज सकते हैं।

आर्यसमाज 'अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख्य आर्यसमाज—आर्यसमाज "अनारकली का वार्षिक अधिवेशन रविवार २४ अप्रैल को श्री शान्ति नारायण जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम मत्री जी द्वारा १९८२-८४ के लिए बजट प्रस्तुत किया गया। अगले वर्ष के लिए श्री शान्ति लाल जी सूरी प्रधान तथा श्री रामनाथ जी सहगल मत्री नियुक्त किए गए। इन्हें अधिकार दिया गया कि अन्तरग सभा बना लें।

अमृत बिन्दु

सग्रहकर्ता – श्री चमनलाल

- ऐसी बोली बोलने का अभ्यास करो, जिससे प्रेम की वृद्धि हो और द्वेषरूप अग्नि शान्त हो जाए।
- धर्म शास्त्रो का अध्ययन, अन्तकरण की पवित्रता, और भगवान की भक्ति—ये सद्विचार और श्रेष्ठ निश्चय के कारण हैं।
- सुख-दु खादि के प्राप्त होने पर उनको भगवान का मङ्गल विधान समझकर हर समय परम सन्तुष्ट रहना चाहिये।
- साधक का ईश्वर पर जितना प्रबल विश्वास होगा, उतना ही वह पाप से बचेगा।
- जीव जिस समय सच्चे हृदय से भगवान की कृपा का अनुभव करने के लिए उद्यत होता है, उसी समय उनकी अनन्त कृपा का अनुभव करने लगता है।
- विवेक दृष्टि से देखा जाए तो ससार के किसी भी पदार्थ मे सुख ही नहीं, यत्किंचित् जो सुख प्रतीत होता है वह भी परिणाम मे दु ख ही होता है।
- स्वार्थरहित दूसरो की सेवा करने से ही शास्त्रो की बातें पढने-सुनने मे रस देने वाली होती हैं अन्यथा ये सब बातें कोरी रह जाएगी।
- कामातुर मनुष्य ही अन्धा है। जो सदा सन्तुष्ट है, वही यथार्थत धनी है। अनियन्त्रित इन्द्रिया ही मनुष्य की शत्रु हैं। विषयो का अनुराग ही बन्धन है।
- स्नान और ईश्वरोपासना किये बिना भोजन नहीं करना चाहिए।
- जब तक कामना है, तब तक चिन्ता नहीं मिट सकती।
- भगवान को पूरी शक्ति से अपनी ओर आकर्षित करने का सुगम उपाय है—उनकी ओर अपनी पूरी शक्ति से आकृष्ट होकर चल पडना, उनकी साधना मे लग जाना।
- विषय चिन्तन सर्वनाश की जड है और भगवच्चिन्तन है—दुखो से छूटने का मूल मन्त्र।
- अन्य वस्तुएं बेजार होने पर पुन प्राप्त की जा सकती हैं, पर गया समय फिर वापस नहीं लौटता। अत एक क्षण भी निरर्थक नष्ट न हो, यह सतत ध्यान रखना चाहिये।
- सन्तों को सत्य सिद्धान्त इतना प्यारा होता है कि वे आवश्यकता पडने पर प्राण तक छोड सकते हैं, परन्तु सिद्धान्त नहीं।
- जो जीवन दूसरों के लिये उपयोगी हो जाता है, उसका परिणाम अपने लिए भी उपयोगी होता है।
- जिन स्थानों, दृश्य, साहित्य, मित्र-विचार, बात अथवा घटनाओं से मन में बुरे दुष्ट भावो की उत्पत्ति होती है, वे सभी कुसङ्ग हैं।
- भोजन स्वास्थ्य रक्षा तथा पवित्र मन के निर्माण हेतु करना चाहिये, स्वाद तथा केवल शरीर को पुष्ट बनाने के लिये नहीं।

[illegible]

आर्यसमाजों के सत्संग

८ मई, १९८३ रविवार के कार्यक्रम

आनन्द विहार—हरिनगर एल ब्लाक—प० सत्यपाल जी मधुर एवं महात्म रामकिशोर जी वैद्य महोपदेशक; कालकाजी—प० रामरूप शर्मा, ग्रीन पार्क—डा० रघुनन्दनसिंह जी; ग्रेटर कैलाश न० १ कवि सत्यपाल बेदार, गुडमण्डी—प्रो० वीरपाल जी वेदालंकार; गोविन्दपुरी—आचार्य दिनेशचन्द पाराशर, गोविन्द भवन, दयानन्द वाटिका—पं०सोमदेव शर्मा शास्त्री, चूनामण्डी, पहाड़गंज आचार्य हरिदेवत तर्क केशरी; भोगल—पं० महेशचन्द्र भजनोपदेशक, जनकपुरी सी—३ प० रामनिवासजी; मयूर विहार—पं० तुलसीराम आर्य; मोडलबस्ती—ओमप्रकाश गायक, महावीर नगर—सुखीराम शर्मा; मोतीबाग, पं० सत्यदेव स्नातक 'रेडियो कलाकार', राजौरी गार्डन, जय भगवान मण्डली—बाली नगर—हरिदत्त वेदाचार्य, रोहतास नगर—विश्राम आर्य, लक्ष्मीबाई नगर—बलवीर जी; त्रिनगर—प० कामेश्वर शास्त्री, विनयनगर—[illegible] महोपदेशक; सदरबाजार—पहाड़ी धीरज प० ओमप्रकाश शास्त्री; शालीमार बाग—प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य; शादीपुर—मनोहरलाल ऋषि; तिलक नगर—श्री चमनलाल जी, दरियागंज—नन्दलाल निर्भय; नारायणविहार,-डा० सुखदयाल भूटानी, मायलराया, प० ओमवीर शास्त्री; निर्माण विहार—प० विद्याव्रत शास्त्री; बाग कड़ेशां—प० हरिदत्त वेदाचार्य; हौजखास, प० बन्धेश्वर आर्य, रघुवरपुरा न० २—पं० शीशराम भजनोपदेशक, आनन्दविहार—हरिनगर—प० ज्योतिप्रसाद ढोलक वादक; फरीदाबाद सैक्टर २२—प०चुन्नीलाल आर्य; भीमनगर—गुड़गांव—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; बोट क्लब—व्याकुल कवि सुदर्शनपार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, गांधी नगर—पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री।

'स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, व्यवस्थापक' वेद प्रचार

पंडिता राकेशरानी की हत्या का एक और प्रयास

नई दिल्ली। दयानन्द संस्थान की अध्यक्षा पंडिता राकेश रानी की हत्या का प्रयास फिर विफल हो गया। कई दिनों से कुछ सदिग्ध व्यक्ति वेद मन्दिर व संस्थान कार्यालय के आसपास चक्कर लगा रहे थे। २२ अप्रैल की रात्रि को लगभग ४ बजे प्रातः दो व्यक्ति कार्यालय मे दीवार फांद कर घुसे और एक व्यक्ति ने भीतर हाथ डाल कर दरवाजा खोलने का प्रयास किया। कमरे में प्रकाश था, फिर भी आक्रमक ने उन्हे अकेला समझकर आक्रमण का प्रयास किया। किन्तु अन्य जाग्रत व्यक्तियों द्वारा हाथ देख लेने पर शोर मच गया और आक्रमक भाग गए।

पुलिस कमिश्नर, गृह सचिव व एस० एच० ओ० को घटना से सूचित कर दिया गया है। स्मरण रहे कि शासन ने पंडिता राकेशरानी पर २१ अभियोग चला रखे हैं और पहले भी दो बार उनकी हत्या के प्रयास किए जा चुके हैं।

[illegible] सात्विक अन्तर्जातीय विवाह

कु० [illegible] चौधरी, पत्रकार स्टेट्समैन का पाणिग्रहण संस्कार श्री अरुणकुमार [illegible] शास्त्री से पं० [illegible] के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस पावन [illegible] जन्ममूलक जातिपांति [illegible] को तिलांजलि दे [illegible] स्थापित किया गया। वर-वधू के माता-पिता, [illegible] [illegible] आशीर्वाद [illegible] उपस्थित [illegible]

ईसाई युवती का वैदिक धर्मग्रहण एवं विवाह संस्कार

आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी मे १३-४-८३ को सायंकाल आकलैण्ड (न्यूजीलैण्ड) की ईसाई युवती डेविस एनिटे वैदिक धर्म मे दीक्षित हुई। शुद्धि सस्कार पं०सुमेधा मित्र वेदालकार तथा प०ज्वलन्त कुमार शास्त्री [प्रवक्ता सस्कृत अमेठी डिग्री कालेज] ने कराया। शुद्धि के बाद 'अनीता" नाम रखा गया एवं उसका विवाह श्री व्रतीन्द्र कृष्ण चैटर्जी नामक युवक से पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। शुद्धि एव विवाह सस्कार में आर्यसमाज लल्लापुरा के पदाधिकारी तथा सदस्यगण एव वाराणसी के प्रतिष्ठित नागरिक भी अच्छी सख्या मे उपस्थित थे।

आर्यसमाज झण्डेवालान एक्सटेन्शन का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज झण्डेवालान ऐक्सटेन्शन नई दिल्ली-५५ का तीसरा वार्षिकोत्सव ७-८ मई को झण्डेवालान एक्सटेन्शन पार्क के पूर्वी द्वार के पास मनाया जाएगा। शनिवार को दोपहर १ से ५ बजे तक प्रान्तीय आर्य महिला सभा की अध्यक्षा श्रीमती शान्तिदेवी मलिक की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन होगा। इसमें अनेक विदुषी महिलाएं भाषण देंगी और पन्नालालजी पीयूष के भजन होंगे।

रविवार ८ मई को प्रात. १०-३० बजे पं० [illegible] श्रीधर के ब्रह्मत्व में यज्ञ होगा। १०-३० से राष्ट्र सम्मेलन होगा। दोपहर को माता भिरावा बाई तथा डा० [illegible] आर्य की ओर से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई है।

आर्यकुमार सभा द्वारा अपने क्षेत्र में विस्तृत वेदप्रचार का कार्यक्रम

३४वें वार्षिकोत्सव पर घर-घर प्रतियोगिताएं एवं वेदोपदेश

आर्यकुमार सभा किंग्जवे का ३४वा स्थापना-दिवस २४ अप्रैल, १९८३ को दोपहर ४ बजे सभा के वाचनालय विजय नगर में मनाया गया। प्रारम्भ मे आर्य धर्मार्थन्यास के डा० कृष्णलाल कपूरिया ने ध्वजारोहण किया और ब्रह्मचर्य पर जोर दिया। यज्ञ के पश्चात् प्रो० डा० कृष्णकुमार गोस्वामी ने कहा आर्यकुमार सभा वैदिक सस्कृति की रक्षा कर रही है।

आर्यकुमार सभा अपने ३४वें वार्षिकोत्सव के अवसर १४ अप्रैल से १९ मई तक अपने क्षेत्र के विशिष्ट नागरिको एवं सार्वजनिक स्थानो पर सन्ध्या-प्रतियोगिता, खेल प्रतियोगिता, आशुभाषण प्रतियोगिता एवं वेदोपदेश के व्यापक कार्यक्रमो की व्यवस्था कर रही है। इन कार्यक्रमो मे स्वामी सत्यपतिजी, पण्डित सत्यकाम वेदालकार, ब्रह्मचारी राजसिह आर्य, श्री बलजीत आदि के वेदोपदेश या सामयिक प्रवचन हो रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि आर्यकुमार सभा किंग्जवे दिल्ली की आर्यकुमार सभाओं मे एक सर्वाधिक सक्रिय सस्था है। सभा प्रतिवर्ष धार्मिक परीक्षा का आयोजन करती है, विगत परीक्षा मे १९१ विद्यार्थी बैठे थे, जिनमे १८५ सफल हुए। सभा विद्यालयो के योग्य विद्यार्थियो को १० और १५ रुपए मासिक छात्रवृत्ति देती है। अबतक ३५४०५ रु० की छात्रवृत्तिया दी जा चुकी हैं। इस वर्ष ३६ छात्र-छात्राए छात्रवृत्तियो से लाभ उठा रहे हैं। सभा निर्धनो एव विधवाओ की सहायता करती है। गत वर्षों मे सभा २७५९० रु०की सहायता कर चुकी है। सभा २१ मार्च १९५९ से आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय चला रही है। प्रतिदिन प्रात १० बजे से १ बजे तक डा० कृष्णलाल कपूरिया रोगियो की सेवा करते है। सभा के प्रकाशन विभाग का उद्देश्य वैदिक साहित्य का प्रचार करना है। सभा का प्रकाशन विभाग अपने सदस्यो और जनता को ९१ पुस्तकें भेंट कर चुका है। इस समय इन प्रकाशनो की २८७७०० प्रतिया प्रकाशित की जा चुकी हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि सभा को १००रु० देने वाले ३९६ आजीवन सदस्य हैं।

संध्या का आध्यात्मिक महत्व

(पष्ठ ४ का शेष)

सूक्ष्म नाडिया म अवरुद्ध मैल जमा हुआ या रक्त म प्रवाह आ जाता हे निरन्तर प्राणा याम के द्वारा नाडियो मे रक्त का शोधन हाता रहता है। जिससे हम ब्लडप्रशर आदि रोगो से मुक्त हो जाते हैं।

एकाग्रता मे मदद

आसन और प्राणायाम हमारी मन की एकाग्रता मे सहायक होते है। एकाग्रता सध्या का तीसरा अङ्ग है। हम व्यावहारिक दृष्टि से देखत हैं कि किसी भी कुन काय मे बिना एकाग्रता के सफल नही हो सकन कवल वाणी द्वारा मत्रो के उच्चारण मात्र से सध्या के गभीरात्मक और उच्चतर लाभो को कैसे प्राप्त कर सकत हैं? यथा घोडा बिना लगाम के पकड हुए सवारी को नीचे गिरा देता है और वह अपनी तीव्र टापा के साथ छलाग मारता हुआ विपरीत दिशा की ओर चला जाता है। ठीक सध्या करन समय हमारी मानसिक स्थिति घोड की तरह होती है। इसीलिए इन मत्रो के भीतर जो आनन्द शक्ति ज्ञान और शान्ति निहित होती है वह अभिव्यक्त होकर हमे प्रकाश नही देती। यही कारण है, आयसमाज के सत्सङ्गो मे यज्ञ और सध्या के समय सदस्यो की कम उपस्थिति होती है।

चिन्तन सध्या का चौथा अङ्ग है। चिन्तन एक प्रकार की ओजमय और प्रशान्त अग्नि है। जैसे भौतिक अग्नि अन्धकार को दूर कर देती है इसी प्रकार चिन्तन अग्नि अज्ञानग्रस्त मनोवृत्तियो के अन्धकार को दूर करती हुई जातवेदा अग्नि को जाग्रत करती है। जब आत्मा के भीतर जातवेदा अग्नि जाग्रत हो जाती है तब [illegible] व्यक्ति के हृदय मे मन्त्रो के अर्थों के भीतर गुह्य सत्य का प्रकाश देती है। सध्या के विषय म जो मैंने विचार सूत्र रूप म अभिव्यक्त किए है यह मेरा अनुभूत विषय है। जब मैंने चार अङ्गो पर ध्यान देत हुए सध्या की तो मेरा जीवन सध्यामय बन गया।

एन—१३ पश्चिमी पटेल नगर,
नई दिल्ली ११०००८

सन्यासाश्रम में प्रवेश

केन्द्रदीय आर्य सभा अमृतसर के प्रबन्ध मे एक समारोह हुआ जिसमे श्री मथुरा दास जी वानप्रस्थ नवाकोट, अमृतसर ने श्री स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर से सन्यासाश्रम की दीक्षा १७ अप्रैल १९८३ को ली स्वामी जी महाराज ने उनका नाम स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती रख दिया। इस प्रकार का यह सन्यासाश्रम दीक्षा सस्कार आम जनता के सामने पहली बार ही अमृतसर मे हुआ जनता की उपस्थिति बहुत अधिक थी, इस अवसर पर पूज्य स्वामी सुमेधा नन्द जी चम्बा, पूज्य स्वामी वेदानन्द जी रोपड, पूज्य स्वामी सोमानन्द जी ने भी व्याख्यान तथा उपदेश दिए और लोगो को बताया कि सन्यास कब और क्यो लिया जाता है सन्यासी के क्या कर्तव्य है। नये बने सन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती को सारे अमृतसर जिले की समाजों की और अभिनन्दन पत्र भी भेंट किया गया। यह सारा कायक्रम आय समाज पुतलीघर नगर मे हुआ और बहुत प्रभावशाली रहा। बाद मे सबका मिलकर प्रीति भोजन भी हुआ।

दो आय कार्यकर्त्रियो का स्वर्गवास

आय स्त्री समाज हनुमान राड की प्रधाना— दिनाक ८ माच १९८३ (लक्ष्मी देवी) और मत्रिणी —दिनाक २३ फरवरी १९८३ (सावित्री देवी) इस असार सस्सार को छोड गई है।

कृपया इसकी सूचना अपने पत्र मे प्रकाशित कर दें। सधन्यवाद

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा [illegible]
गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, [illegible]

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपए   वर्ष ७ अंक २६   रविवार १५ मई, १९८३   २५ बैसाख वि० २०४०   दयानन्दाब्द—१५८

वर्त्तमान अकाली मोर्चा वास्तव में खालिस्तान का संघर्ष

सिख अपना स्वतन्त्र सार्वभौम राज्य चाहते हैं : पहल अकाली दल के हाथ से निकली

कथित खालिस्तान के कथित महामन्त्री बलवीर सिंह सन्धु का वक्तव्य

नई दिल्ली। मिस्र के एक दैनिक अखबार अल-अहराम को एक भेंट मे प्रधान-मन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने पंजाब के वर्तमान अकाली आन्दोलन को १९८० मे पिछले चुनावो मे हुई उनकी हार के फलस्वरूप राजनीतिक उद्देश्यो से प्रेरित कहा है। स्पष्ट है कि अकाली प्रदेश मे सत्ता प्राप्ति को शान्त कानूनी ढंग से प्राप्त करने मे असमर्थ रहे हैं, फलस्वरूप अब वे उसे हिंसक तरीको को अपनाकर पूर्ण करना चाहते है। पिछले दिनो प्रतिबन्धित संगठन खालिस्तान के तथाकथित महामन्त्री श्री बलवीर सिंह सन्धु ने अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के अहाते मे अवस्थित गुरुनानक निवास के कमरा न० ३२ मे अपना प्रधान शिविर बनाया हुआ था। इसी के साथ इस गुरुनानक निवास तथा अन्य समीपस्थ सरायों और धर्मशालाओं में अनेक प्रतिक्रियावादी हिंसक नक्सलवादी अड्डा जमाकर बैठ गए थे। शुक्रवार ६ मई के दिन जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के प्रतिनिधि गुरुनानक निवास का निरीक्षण करने गए तब बलवीर सिंह सन्धु तथा दूसरे हिंसक आतकवादियो ने अपने पुराने अड्डो को छोडकर मन्दिर की विस्तीर्ण सीमा मे अवस्थित नए छिपे ठिकानो मे आश्रय ले लिया। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनो सिखो की राजनीतिक मांगें मांगने के बावजूद अकालियो के उग्र रवैये मे कोई परिवर्तन नही आया है। भिण्डरावाले ने पिछले दिनो एक वक्तव्य मे कहा था कि वह खालिस्तान के विरुद्ध नहीं हैं। वह संसार भर के सिखो की सहायता और सहानुभूति का दावा करते हैं। यदि समय रहते शान्तिप्रिय सिखो ने उग्र राष्ट्रविरोधी तत्त्वो का खुलकर विद्रोह नहीं किया तो स्थिति कितनी भयकर हो सकती है, यह पिछले दिनो अमृतसर के स्वर्ण-मन्दिर के एक कमरे मे आश्रय लिए हुए कथित खालिस्तान के कथित महामन्त्री बलवीर सिंह सन्धु के एक भेंट वार्ता मे दिए वक्तव्य से स्पष्ट हो जाता है।

इण्डियन एक्सप्रेस प्रतिनिधि का विवरण

अमृतसर। प्रतिबन्धित संगठन खालिस्तान के तथाकथित महामन्त्री श्री बलवीर सिंह सन्धु ने गुरु नानक निवास मे बुधवार ४ मई, १९८३ के दिन इण्डियन एक्सप्रेस के प्रतिनिधि से भेंट मे यह [illegible] प्रकट किया कि भारत मे एक पृथक् सिख राज्य का निर्माण होकर रहेगा। उन्होंने बतलाया कि हालात अब [illegible] स्थिति पर पहुंच गए हैं कि अब सिख [illegible] नहीं हो सकेगी, चाहे अकाली [illegible] केन्द्र से समझौता करना मंजूर कर लें। अब फैसला सिख जनता का होगा [illegible] स्थिति [illegible] है जैसी कि आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव मे वर्णित की गई है।

पिछले दिनों बलवीर सिंह सन्धु से कई विदेशी पत्रकार मिल चुके हैं। गुरु नानक निवास मे उनकी उपस्थिति पर संसद मे काफी चर्चा भी हो चुकी है। सन्धु ने इण्डियन एक्सप्रेस के प्रतिनिधि श्री सजीव गौर कहा—खालिस्तान' असली मकसद है और सिख अपना मकसद पाए बिना शान्त नही बैठेंगे। सिख अपना स्वतन्त्र सार्वभौम राज्य चाहते हैं और आखिर में वे उसे पाकर रहेंगे।

जब उन्हे कहा गया कि शिरोमणि अकाली दल खालिस्तान की मांग के पूर्ण विरोधी हैं तो एक-आध मिनट आंखें बन्द कर सन्धु ने कहा अब मामला उनके हाथ मे नहीं रह गया है और यह बात अकाली नेता भी जानते हैं कि सिख जनता उन्हें माफ नही करेगी क्योकि वे भली प्रकार जानते हैं कि जब तक उनकी हर मांग को स्वीकार किए बिना, जिसमे आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव के अनुसार सिखो के लिए विशेष अधिकार की मांग सम्मिलित है आन्दोलन को यदि वापस ले लिया जाता है। सन्धु साथ ही बोले— क्या आप समझते हैं कि क्या केन्द्र आनन्दपुर साहिब की मांगे स्वीकार कर लेगा? शायद सरलता से नही। यही कारण है कि मेरे ख्याल मे वर्तमान अकाली मोर्चा वास्तव मे खालिस्तान का ही संघर्ष है और अकाली नेता इस स्थिति मे नही हैं कि वे उसे वापस ले लें। वे भली प्रकार जानते है कि यदि वे निजी फायदो के लिए केन्द्र से समझौता कर लेंगे तो सिख जनता उन्हे पत्थर मारेगी और ठुडडे लगाएगी। आज जैसे हालात मे वर्तमान अकाली आन्दोलन ने पृथक् स्वतन्त्र सिख राज्य के संघर्ष का स्थान ले लिया है।

महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर में ही होगी

सार्वदेशिक, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभाओं, परोपकारिणी, आर्य प्रादेशिक तथा निर्वाण स्मारक न्यास का संयुक्त निर्णय

अजमेर। रविवार ८ मई के दिन आर्यसमाज केसरगंज अजमेर मे आयोजित सभा मे सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि आगामी दीवाली के अवसर पर महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह संयुक्त रूप से अजमेर मे मनाया जाएगा। इस सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने की। सभा मे सार्वदेशिक के उपप्रधान श्री मुल्कराज भल्ला, सभा कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ एडवोकेट प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास, संसद सदस्य आचार्य भगवान देव ने भाग लिया। बैठक मे दिल्ली से आए महानुभावो के अतिरिक्त राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट बम्बई के कैप्टन देवरत्न आर्य आर्यसमाज केसरगंज के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय तथा निर्वाण स्मारण ट्रस्ट के श्री भूदेव आदि भी उपस्थित हुए। राजस्थान सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह आचार्य दत्तात्रेय जी के बुलाने पर परोपकारिणी सभा के श्री [illegible] शारदा भी पहुंच गए। उपस्थित सज्जनो ने हर्ष-ध्वनि मे निश्चय किया कि इन सबको महर्षि निर्वाण शताब्दी मिल जुलकर मनानी चाहिए इसी मे आर्यसमाज का यश और गौरव है।

इसी अवसर पर सभा प्रधान श्री शालवाले ने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी कार्यालय का विधिवत् उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री शरण जी शारदा, श्री छोटूसिंह एडवोकेट, संसद सदस्य श्री भगवान देव प्रो० वेदव्यास एवं अन्य प्रमुख नेता उपस्थित थे।

आर्यसमाज हनुमान रोड की यज्ञशाला का उद्घाटन

उद्घाटन अमर स्वामी जी महाराज द्वारा सम्पन्न होगा

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली—१ की नवनिर्मित यज्ञशाला का उदघाटन रविवार, १५ मई १९८३ को प्रात ९॥ अमर स्वामीजी महाराज के कर कमलो द्वारा होगा। उद्घाटन के पश्चात् उपस्थित सभी भाई-बहन सम्मिलित प्रीतिभोज मे भाग लेंगे। आर्यसमाज के प्रधान श्री राममूर्तिजी कैला तथा सभा मन्त्री श्री सैरायतीलाल भाटिया ने आर्य बन्धुओ से अनुरोध किया है कि वे सपरिवार पधारकर धर्मलाभ उठाए और उत्सव की शोभा बढाए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड

मन का वशीकरण

—प्रेमनाथ, सभा-प्रधान

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञ कृण्वन्ति विदथेषु धीरा.।
यदपूर्व यक्षमन्त प्रजाना तन्मे मन शिवसङ्कल्पमस्तु॥ [यजु० ३४।२।

शिवसकल्प ऋषि, मन देवता, त्रिष्टुप् छन्द वा धैवत स्वर।

पदार्थ—[हे परमेश्वर] [येन] जिस (मन) के द्वारा [अपस] सदा कर्मनिष्ठ [मनीषिण] मन का दमन करने वाले (धर्मयुक्त विद्वान लोग वा) [धीरा] ध्यान करने वाले बुद्धिमान लोग [यज्ञे] अग्निहोत्रादि, धर्मसयुक्त व्यवहार अर्थात् परोपकारादि कर्म वा योगाभ्यास रूप यज्ञ मे (वा) [विदथेषु] विज्ञान सम्बन्धी या युद्धादि व्यवहारो मे [कर्माणि] (अत्यन्त इष्ट) कर्मों को [कृण्वन्ति] करते हैं (और) [यत्] नो [अपूर्वम्] अपने अनुत्तम गुण-कर्म-स्वभाव वाला अर्थात् अपूर्व सामर्थ्ययुक्त (वा) [प्रजानाम्] प्राणिमात्र के [अन्त] भीतर [यक्षम्] पूजनीय (हो रहा है) [तत्] वह [मे] मेरा [मन] मन (मनन विचारात्मक) [शिवम्] धर्मेष्ट अर्थात् सदा धर्म-कर्म करने की इच्छायुक्त [अस्तु) होवे।

भावार्थ—मनुष्यो को चाहिए कि परमेश्वर की उपासना, सुविचार, विद्या और सत्सग से अपने अन्त करण को अधर्माचरण से निवृत्त कर धर्म के आचरण मे प्रवृत्त करें।

(ऋषि भाष्य)

मन क्या है—कठ उपनिषद् मे मनादि के विषय मे निम्न प्रकार से कहा है—
आत्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथि विद्धि मन प्रग्रहमेव च॥

अर्थात् यह शरीर एक रथ है जिसमे आत्मा रथी वा बुद्धि सारथि है और मन (इन्द्रियरूप घोडों की) लगाम है। यदि मन को वश मे न किया जाए तो मन वा इन्द्रिया अधर्माचरण मे प्रवृत्त हो जायेंगी और आत्मा दुख का भागी होगा। मन द्वारा ही मनुष्य किसी कार्य के करने अथवा न करने का सकल्प अथवा विकल्प करता है अतएव इसको मननशील संकल्प-विकल्पात्मक कहा गया है। इसी द्वारा मनुष्य किसी बात का स्मरण करता है, इसलिए इसको स्मरणात्मक चित्त भी कहा गया है। मनुष्य को शुभ कामो के प्रति सकल्प का अशुभ कामो के प्रति विकल्प करना चाहिए। और मन द्वारा धर्म वा ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए। शतपथ ब्राह्मण मे मन की परिभाषा इस प्रकार की है—"काम सकल्पो विचिकित्सा श्रद्धाऽश्रद्धा धृतिरधृति र्ह्रीर्धीर्भीरित्येत् मन एव तस्मादपि पृष्टत उपस्पृष्टो मनसा विजानाति॥

अर्थात् मनुष्य को मन द्वारा काम अर्थात् शुभ गुणो की इच्छा, सकल्प अर्थात् उनकी प्राप्ति के लिए अनुष्ठान की इच्छा, विचिकित्सा अर्थात् ठीक निश्चय करने के लिए सयमो का करना (और उनकी निवृत्ति करना) श्रद्धा अर्थात् ईश्वर वा सत्य धर्मादि ऊपर अत्यन्त विश्वास रखना अश्रद्धा अर्थात् नास्तिकत्व वा अधर्म के ऊपर सर्वथा अनिश्चय रखना, धृति अर्थात् सुख-दुख प्राप्त होने पर भी ईश्वर वा धर्म पर अत्यन्त निश्चय रखना ही अर्थात् असत्याचरण मे लज्जा करना, धी अर्थात् शुभ गुणो को शीघ्र धारण करना भी (भय) अर्थात् पापाचरण ईश्वराज्ञा भग करने से सदा डरना कि ईश्वर हमे सर्वत्र देखता है। यह सब धर्म मन का ही है।

संसार कर्ममन्दिर है

—[illegible]

श्रमिक घर लौट रहा था। माथे पर स्वेद बिन्दु मुक्ता की तरह झलक रहे थे। हाथ-पाव धूल से सने थे। आनन पर भी धूलिकणों का साम्राज्य था, पर होठों पर उज्ज्वल मुस्कराहट थी और पावो में गति !

राह चलता एक युवक विस्मित-सा उसकी ओर देखने लगा। वह युवक सुशिक्षित कहलाता था और सुसभ्य वेशभूषा मे आफिस से घर लौट रहा था। युवक की उत्सुकता मूक न रह सकी पूछ ही लिया। भैया! तुम एक मजदूर हो साधारण मजदूर, कठिन परिश्रम करके आए हो। दिन भर मिट्टी-पत्थर से जूझते रहे हो। ये धूल भरे वस्त्र और थका शरीर इसका साक्षी है, पर मुख पर मुस्कराहट तो प्रभात पुष्प की तरह तरोताजा है। तब श्रमिक ने उसी सहज मुस्कान से उत्तर दिया—बाबूजी इस मुस्कान का रहस्य मुझ से नहीं, उस डूबते सूर्य से पूछो। मैं तो रोज सुबह उससे मुस्कराहट बटोर कर ले जाता हूं। दिनभर में काम में डूबा रहता हूं। वह भी न जाने कितनी गिरि-कन्दराओं नदी-नालो को पार करता हुआ प्रकाश लिए भागता रहता है। दोपहर भर मैं श्रम में तपता रहता हूं, वह धूप में तपता है। साझ होती है तब मैं अपने घर लौटता हू। वह भी अपने घर लौट पडता है। पर मैं रोज ही देखता हूं कि डूबते समय भी उसके मुख पर वही प्रभात की अरुण मुस्कराहट हसती रहती है। तब भला मैं भी क्यो न मुस्कराऊं।

युवक निरुत्तर हो गया। श्रमिक की उजली मुस्कान मे उसने पढ़ लिया कि संसार एक कर्ममन्दिर है और हमारा जीवन इसमे गाया जा रहा एक मधुर गीत।

आई २०८ अशोक विहार, फेज १, दिल्ली-५२

५ पदयात्री दल अजमेर शताब्दी पर पहुंचेंगे

विरक्तों ब्रह्मचारियों के लिए पृथक् लंगर यतिमण्डल के निर्णय

दिनाक २४ एव २५ अप्रैल। १९८३ को वैदिक साधनाश्रम तपोवन देहरादून मे वैदिक यति मण्डल के तृतीय अधिवेशन चार महत्वपूर्ण बैठके क्रमश श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, श्री पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती, श्री पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती एव श्री महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। ऋषि निर्वाण शताब्दी समारोह के सम्बन्ध मे विस्तार से चर्चा हुई।

एक प्रस्ताव मे यह निर्णय लिया गया कि शताब्दी समरोह से पन्द्रह दिन पूर्व यति मण्डल की ओर से श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, दिल्ली, श्री स्वामी सुमेधा नन्द चम्बा, श्री स्वामी रूद्रवेश हरियाणा, श्री ब्र० आर्य नरेश एव श्री ब्र० योगेन्द्र पुरुषार्थी ज्वालापुर के नेतृत्व मे पाच पद-यात्रियो की टोलिया पाच भिन्न-भिन्न स्थानों से अजमेर को केन्द्र मानकर नगरो, ग्रामों में प्रचार करते हुए अजमेर पहुंचेंगे। प्रत्येक टोली मे कम से कम १० पद यात्री सम्मिलित होगे।

एक प्रस्ताव मे यह भी पारित हुआ कि सन्यासियों, वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों एव विद्वानो, उपदेशको के लिए अलग लगर लगाया जायेगा। यह भी निश्चय हुआ कि इस लगर एव चतुर्वेद परायण यज्ञ जो एक मास तक चलेगा उसका प्रबन्ध यति मण्डल अपने हाथ मे लेगा, इस अवसर पर २४०४ रुपय इन कार्यो के लिए नकद प्राप्त हुए तथा १८,६९६ रुपये के वचन प्राप्त हुए। जिसमे प्रमुख रूप मे ५१०० रुपये दयानन्द मठ के सन्यासी एकत्रित करके देंगे ५१०० रुपये श्री स्वामी [illegible]नन्द जी महाराज. ५१०० रुपये श्री ब्र० नन्द किशोर जी ज्वालापुर, १००१ रुपये श्री ब्र० आर्य नरेश जी, ५०१ रुपये श्री शाम लाल सर्राफ आर्य समाज ५०१ रुपये श्री रमेश भाटिया पानीपत ने देना स्वीकार किया। नकद दान देने वालो मे प्रमुख श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती रहे जिन्होने १००१ रुपये दान दिया।

अभिनन्दन समारोह

१५ मई को ११ बजे पूर्वाह्न में प्रसिद्ध आर्यसन्यासी श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा का सार्वजनिक अभिनन्दन होगा। इस अवसर पर श्री स्वामी जी को एक बृहद् अभिनन्दन ग्रन्थ तथा नई जीप भेंट की जायेगी। आर्य जनता से निवेदन है कि भारी संख्या में पधार कर यथासामर्थ्य स्वामी जी के प्रति आभार प्रदर्शित करें

सच्चे अमरत्व की प्राप्ति

ओ३म् विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥ यजु ४०-१४

जो विद्या और अविद्या का साथ-साथ ज्ञान कर लेता है, वह भौतिक ज्ञान से मृत्यु पर विजय पाकर विद्या से अमरत्व प्राप्त करता है।

ओ३म्

आर्य सन्देश

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा !

भारत के जगतविख्यात स्मृतिकार मनु महाराज ने अपनी 'मनु स्मृति' मे राजधर्म का वर्णन करते हुए कुछ ऐसी शाश्वत लोकोपकारी बातो का वर्णन किया है जिनका यदि आज भी ठीक तरह से अनुसरण किया जाए तो देश को आन्तरिक अव्यवस्था दुरवस्था एव अशान्ति से उन्मुक्त किया जा सकता है। स्मृतिकार मनु ने लिखा था—'दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति। दण्ड. सुप्तेषु जागर्ति दण्ड धर्मं विदुर्बुधा।' सुव्यवस्थित एवं सुदृढ शासन व्यवस्था के प्रतीक 'दण्ड' द्वारा ही किसी राष्ट्र की प्रजा का सम्यक् शासन होता है और दोषहीन, न्यायपूर्ण परन्तु कडी शासन प्रणाली से ही प्रजा और राष्ट्र की रक्षा सम्भव है। सोती हुई, असावधान प्रजा का भी निरन्तर जागरूक प्रजा का रक्षक राष्ट्र का शासन दण्ड ही सरक्षण करता है, इसलिए पुराने बुद्धिमान् लोग 'दण्ड' को ही धर्म कहते हैं। इसी स्मृतिकार ने यह भी कहा था—'यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा। प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता च साधु पश्यति।' जहा निरन्तर पापों का निवारण करने वाला कठोर दण्डशासन सतत जागरूक रहता है, वहाँ प्रजा कभी दु खी नहीं होती।

सस्कृत के महाकवि कालिदास ने शासक को राजा की सज्ञा इसलिए दी कि वह प्रजा का रंजन करता था। जब शासक प्रजा को सुखी करे, तब प्रजा शासक का गुणगान करती है, परन्तु जब शासन अपने कर्त्तव्य से पराङ्मुख हो जाए और जनता दु खी हो जाए तो सारा तन्त्र ही नष्टभ्रष्ट हो सकता है और सर्वनाश सम्भव है। अनेक वर्षों की आर्थिक, राजनीतिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे जिस प्रकार की अराजकता भड़क रही है, जिस प्रकार सामान्य जनजीवन अरक्षित और सकटग्रस्त हो रहा है, यदि समय रहते स्थिति का समाधान नहीं किया गया तो देश मे आन्तरिक अव्यवस्था के विस्फोट के साथ बाह्य आक्रमण का खतरा भी उभर सकता है। पिछले दिनो अमृतसर के स्वर्णमन्दिर मे आराधना कर मन्दिर का प्रसाद लेकर मन्दिर की ड्योढी लाघते हुए एक प्रमुख पुलिस अधिकारी को गोलियो से भून दिया गया। ठीक छह दिन बाद लगभग उसी स्थान पर एक चिथड़े पहने हुए भिखारी को सोते हुए मार डाला गया। इस भिखारी का देश और प्रदेश की राजनीति से कोई मतलब नहीं था, वह तो अपनी शारीरिक भूख के निवारण के लिए मन्दिर के दर्शनार्थियो की श्रद्धा एव दान पर आश्रित था। उस बेचारे को भी आतकवादियों ने भून दिया। यह सम्वाद भी प्राप्त हुआ है कि स्वर्णमन्दिर में हथियारबन्द नक्सल पन्थी बडी गिनती मे एकत्र हो गए हैं, वे यह मौका देख रहे हैं कि थोड़ी-सी भी अव्यवस्था फैले तो वे शस्त्रो एव आतक का सहारा लेकर सशस्त्र क्रान्ति कर दें।

संसार के इतिहास की और नीति की सीख यही है कि घुटने टेककर कायरता या भीरुता से देशों या सगठनो मे अनुशासन नही चलता। अनुशासन, एव व्यवस्था के लिए शासन का दबदबा होना चाहिए। पिछले कुछ समय की घटनाओ से शासन के इस दबदबे को क्षति पहुंची है। कुछ वर्ष पूर्व भी इसी तरह पजाब मे एक पुलिस अधिकारी को धार्मिक स्थान में मार डाला गया, उस समय शासन ने अपने उत्तरदायित्व को निबाहने में आगा-पीछा नहीं किया था। यह ठीक है कि सामान्य परिस्थिति मे धार्मिक स्थानो पर पुलिस को व्यर्थ में वहां घुसना नही चाहिए, परन्तु जब ये पूजास्थान अपराधियों के आश्रयस्थल बन जाए तो उन अपराधियो की पकड-धकड के लिए एव पूजास्थलों को अपराधियों के प्रभाव से उन्मुक्त कर उन्हें प्रार्थनास्थल बने देने रहने के लिए शासन को उसी तरह की कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए जैसी कि पुराने पजाब मे ऐसी ही परिस्थिति आने पर तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री प्रतापसिंह कैरो ने की थी। उन्होने अपराधियों के आश्रयस्थल बने गुरुद्वारे के साथ लगे यात्री-निवास पर एक सम्पूर्ण सिख सिपाही पुलिस दल भेज कर आनन-फानन में अपराधियों को पकड़ लिया था। स्थिति अधिक न बिगड़े और समय रहते आतंकवादियों एव हिंसक तत्वो को समूल नष्ट करने के लिए केन्द्र एवं प्रादेशिक कानून एवं व्यवस्था के सरक्षकों को त्वरित विद्युत् गति से कार्यवाही करनी चाहिए। इसी के साथ विवादग्रस्त विषय पंच फैसले के लिए छोड़े जा सकते हैं, परन्तु किसी भी परिस्थिति में राष्ट्र विरोधी अराजक तत्त्वों को देश की स्वाधीनता से खिलवाड़ करने की छूट नहीं देनी चाहिए। केन्द्रीय एव प्रादेशिक शासनो को यह समझ लेना होगा कि इतिहास और कालपुरुष कभी भी प्रमाद, आलस्य एव कायरता को सहन नहीं करते। समय पर अराजकता, अव्यवस्था और हिंसा का निवारण करना एक सशक्त शासनतन्त्र का बुनियादी कर्त्तव्य है।

गायत्री महामन्त्र या 'गुरुमन्त्र'

ओ३म् भूर्भुव स्व तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात्।

शब्दार्थ ओ३म् —सर्वरक्षक परमात्मा, भू —प्राणो से प्यारा, भुव —दु ख विनाशक; स्व—सुखस्वरूप है; तत्—उस, सवितु—उत्पादक, प्रकाशक, प्रेरक, देवस्य—देव के, वरेण्य—वरने के योग्य, भर्ग —शुद्ध विज्ञानस्वरूप का धीमहि—हम ध्यान करें। य —जो, न.—हमारी, धिय —बुद्धियो को प्रचोदयात्—शुभ कार्यो मे प्रेरित करें।

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें

ओङ्कार प्रभु तेरा नाम, गुण गावें ससार तमाम।
प्राणस्वरूप प्राणो से प्यारा, दूर दुखो के करने हारा।
सुखस्वरूप सुखो का दाता, अन्त न कोई तुम्हारा पाता।
सारे जग को पैदा करता, सब से उत्तम पाप का हर्ता।
हे ईश्वर हम तुझे ध्यावें, पाप कर्म के पास न जावें।
बुद्धि करो हमारी उज्ज्वल, जीवन होवे हमारा निर्मल।

भेंटकर्ता— अमरनाथ खन्ना, म० न ७८९, सैक्टर-१५, फरीदाबाद

चिट्ठी-पत्री

नारी स्वयं में संस्कृति है

श्रीमती महादेवी वर्मा, हिन्दी कवयित्री

नारी अपने आप मे सस्कृति है। जो स्त्री पढी-लिखी नही है, बिल्कुल ग्राम्य है, वह आदमी के अधिक निकट है। नारी-मुक्ति के आन्दोलन की बातें की जाती हैं, लेकिन उसके लक्ष्य के बारे में कोई स्पष्ट नहीं है। अगर स्त्रिया पुरुषो के साथ नही रहना चाहतीं तो न रहे। बहुत पहले भी भारतीय नारिया ब्रह्मवादिनी हुआ करती थीं, जो पुरुषो से अलग रहा करती थीं, लेकिन पुरुषो को शत्रु कैसे कह सकती हैं। अगर पुरुष शत्रु हैं तो उनको अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वे नाना प्रकार के उपाय क्यो करती हैं ?

इस देश मे सामाजिक सुधार एव नारी के अभ्युदय के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती और राजा राममोहन राय ने बहुत कुछ किया। इस मातृभूमि मे नारी गरिमा की प्रतिष्ठा महात्मा गाधी ने भी, जिन्होने स्त्रीमात्र को सस्कृति की सज्ञा प्रदान की।

इससे अधिक वेदना क्या होगी ?

एक दिन का वर्णन है कि स्वामी दयानद सरस्वती बैठे-बैठे लेट गए और फिर उठ कर टहलने लगे। एक भक्त ने विनयपूर्वक पूछा— महाराज क्या वेदना हो रही है ! उन्होने एक लम्बी सांस भर कर कहा—भाई ! इससे अधिक हृदय विदारक दारुण वेदना और क्या हो सकती है ! कि विधवाओ की दु खभरी आहो से, अनाथो के निरन्तर आर्तनाद से गो-वध के जघन्य पाप से इस देश का सर्वनाश हो रहा है !

ये थे उद्गार जो स्वामी जी को निरन्तर सताये रहते थे ! और वह दुखी होते थे !

—प्रद्युम्न तलवाड़ १। २०८ अशोक बिहार फेज-१, दिल्ली-५२

प्रेरणाप्रद विशेषांक

'आर्यसन्देश' का महासम्मेलन अक देखा। अक अच्छा तैयार हुआ है। इसके लिए मेरी बधाई स्वीकार करें। सभी लेख पठनीय और मननीय है। माननीय पुरुषोत्तम नागेश ओक का जामा मस्जिद के बारे मे लेख इस प्रेरणाप्रद विशेषांक की एक और विशेषता है। श्री ओक ने भारत के इतिहास के विषय मे अनेक महत्वपूर्ण अनुसन्धान किए हैं। मेरा विचार है कि उनकी खोजो पर आधारित लेखो की यदि एक शृखला 'आर्यसन्देश' में दी जाए तो इससे बडा लाभ होगा।

—डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री,
जयश्री, फ्लेट नं० २५, ७५, वरली सी फेस रोड, बम्बई—४०००२

आर्यसन्देश का कमाल

'आर्य सन्देश' का आर्य महासम्मेलन विशेषाक मिला। विशेषाक वास्तव मे आकर्षक एवं प्रभावशाली था। सभी लेख शिक्षाप्रद एव पठनीय थे। सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्व रहा। श्री सुरेशचन्द्र वेदालकार का 'आर्यसमाज क्या करे' शीर्षक लेख विशेष रूप से पठनीय रहा। बाकी सभी लेख अच्छे थे। यह पत्र अपने विशेषांकों की परम्परा अच्छे ढग से निभा रहा है। यह अक भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। इस विशेषाक की सफलता के लिए पत्र के सम्पादक विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

—रामकुमार आर्य, ग्राम पोस्ट—दुल्लागढ गोहाना (सोनीपत) हरि०

(भाव चित्र)

तिराहा

भारत ही नही, वरन् सम्पूर्ण एशिया, अफीका, अमेरिका प्रभृति महाद्वीपो की विकासोमुख, पतित और अध पतित जनता आज ऐसे स्थान पर खडी है जिससे सर्वथा विपरीत दिशाओ की ओर तीन राहे जाती हैं। वास्तविक लक्ष्य विस्मृति के गहन अधकार मे खो जाता है। लक्ष्य-पूर्ति मे उपादेय-आवश्यक उपादान अशक्त-जर्जर-से बने बिखराव के शिकार बन जाते हैं। सशय प्रतिबिम्ब हावी होकर कर्मों को निष्फल और निरर्थक बनाने मे व्यापृत दिखाई पडता है।

एक राह पर केवल अपने स्वार्थ जगते-उभरते हैं। श्वास-प्रश्वास पलते-पनपते हैं, अपने शरीर, इद्रिय-समूह, वेगो-सवेगो की आवश्यकता-पूर्त्ति के साधन सचित एकत्र किए जाते क्रीत-विक्रीत होते और चिरन्तन सनातन रूप मे बनाए-पनपाए परिग्रह के प्रबल प्रयास कार्यान्वित किए जाते हैं।

वहा औरो की चिन्ता करना मूर्खता का परिचायक माना जाता है, दान-परोपकार की खुली खिल्ली उडाई जाती है, पुण्य कर्मों का उद्दाम उपहास किया जाता है और शिव उपादानो का अन्त करने का आयोजन सम्पन्न होता है। छोटे-बड़े की मर्यादा से रहित, शिव आशव प्रवृत्ति जन्म विवेक से हीन एक-दूसरे के दमन-नियत्रण से सपृक्त और पारस्परिक शोषण से भरपूर कार्यों का नग्न नृत्य परिचालित होना इस राह की प्रमुख विशेषता है।

दूसरी राह पर अनजाने-अपरिचित आकाश-कुसुम जैसे सर्वथा घोर पलायनोन्मुख लक्ष्य की पूर्ति मे लग-खपकर जीवित-जाग्रत ससार का मिथ्या घोषित किया जाने लगता है; शारीरिक विकास पर ध्यान देना तो दूर की बात है, उसे नितान्त घृण्य-अपवित्र, पीव-विष्ठा-मूत्र का भण्डार बेकार मानते हुए लोग अपनी इन्द्रियो को धोखाधडी करने वाली शक्तिया समझकर नकारते हैं। प्रकृति के उपकरणोकी निन्दा-बुराई करना अपना सुकृत समझने लगते हैं। उन्हे धरती के ठोस परिवेश की चिंता कुछ भी नही सताती, लेकिन अनजान-अपरिचित पर लोक, स्वार्थ और मुक्ति, निर्वाण प्रभृति की अवास्तविकता के लुभावने लेबिल खोजने की मृग-मरीचिका से अतिशय प्रीति होती है। उनका सारा चिन्तन इन्ही लेबिलो के इर्द-गिर्द मडराता रहता है।

तीसरा रास्ता समन्वय-सन्तुलन का है। उसमे सहज स्वाभाविक मर्यादा तो होती है किन्तु कठोर नियन्त्रण नही दिखाई पड़ता। ससार को एक ठोस सच्चाई मानते हुए समग्र प्राकृतिक साधनो का समुचित सवर्द्धन-विकास किया जाता है पर उसी को सब कुछ स्वीकार नहीं किया जाता, आत्मा की असीम शक्ति और इयत्ता का परिचय, सदुपयोग और अवलम्बन अगीकार किया जाता है किन्तु भौतिकता की सर्वथा उपेक्षा नहीं होती तथा समग्र ससार की नियामिका-विधायिका शक्ति पर सम्पूर्ण आस्था रखते हुए भी रूढिवाद पर कोरे अन्ध-विश्वास का परिपाक नही किया जाता। उस पर आत्मा, परमात्मा और प्रकृति के समस्त उपादान अशेष दृढता एव विशेष निष्ठा के साथ अपने समझे जाते हैं, सभी के लिए समान रूपेण उन्नति एव विकास के अवसर होते हैं, सहज आश्रम की क्रमिक पीठिका, पर कर्म-वरण करने का समान अवसर प्रदान किया जाता है, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय की परिपूर्ति का सहज सकल्प सजोकर प्रत्येक मानव समग्र ससार के दिग् दिगन्त मे 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' दृष्टि का पावन प्रसार करना अपना पुनीत कर्त्तव्य स्वीकार करता है। सघटन का सम्बल लेकर समान रूपेण प्रगति करते हुए सभी मानव साम्य की अवतारणा मे लगे रहते हैं।

एक चिन्तन : तीनों राहों के बारे में

पहली राह सर्वनाश की सहेली है। उसमे बैर का विकास होता है, दमन-उत्पीडन की धूम मच जाती है, कलह-युद्ध का अट्टहास गूजने लगता है, हिंसा रक्त-पात का बोल-बाला होता है, व्यभिचार-दुराचार की दुरभि सधिया पनपने लगती है और भ्रष्टाचार का विषय चारो ओर घुल-सा जाता है। व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य की आड मे स्वैराचार अपनाने की होड़-सी जाग उठती है। किसी को भी शाति नही मिलती, सन्तोष की सही अनुभूति नही होती और सुस्थिरता का विधान दृष्टिगत नहीं होता।

दूसरी राह मानव-विकास, सासारिक प्रगति, तत्त्वो-उपादानो के शोध अन्वेषण के वातायन रुद्ध कर देती है। उसमे तर्क के तीखे तीर चलाना पाप समझा जाता है, तथाकथित मत-प्रवर्तको पर सर्वतोभावेन एव सर्वात्मना आस्था रखना परम कर्त्तव्य मान लिया जाता है। प्रलोभन, छलावे, चमत्कार आदि का आश्रय लेकर मानव-मनीषा में विभ्रम-दिग्भ्रम उत्पन्न करते रहना इस राह का प्रमुख वैशिष्टय और महनीय गुण है।

तीसरी राह विकास के समस्त सोपान झलकाते हुए प्रत्येक अणु-परमाणु, तृण-तरु पल-प्रहर, व्यक्ति-शक्ति की व्यष्टिपरक समष्टिपरक महीय-सी प्रगति की छवि का विस्तार करती है। उसमें सुख-दुःख के समग्र व्यूह बन-बिगड़ कर आते-जाते रहते हैं फिर भी मति पर कलुष-कर्दम का आरोप नहीं हो पाता, मोड़-रुझान उपस्थित होकर खिसक जाते हैं लेकिन कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र भयाक्रांत नहीं होता और विभिन्न पड़ावो एव विविध ठहरावो से गति-प्रगति पर प्रश्नचिह्न नही लग पाते।

असली राह का अवलम्बन

पहली राह यूरोप की है, दूसरी राह मध्य एशियाई भू-खण्ड के कुछ क्षेत्रो और अफ्रीकी प्रदेशो में से होकर गुजरती है और तीसरी राह विशुद्ध-विकसित भारतीय इस अर्थ मे ही नही है कि वह भारत की है वरन् इस माने मे भी कि वह 'जियो-जीने दो', 'खिलाओ फिर खाओ', 'हर क्यारी मे प्रत्येक सुमन को उन्मुक्त हास्य बिखेरने दो', 'वसुधैव कुटुम्बकम्' प्रभृति उपदेशो-सदेशो का उद्घोष ही नहीं गुजित करती, वरन् युग-युग तक उन्हे व्यवहार के निर्मम-निष्पक्ष निकष पर कस कर खड़ा सिद्ध कर चुकी है। उसमे समता है, सद्भाव है और है सघटन।

भैरवदत्त शुक्ल

तीसरी राह ही असली राह है। इसमें आत्म-चिन्तन की खुली छूट है, आत्म-दर्शन का सही परिवेश है और ज्ञानालोक का शाश्वत विश्वास विकास प्राप्त होता है। इसी राह पर चलकर श्रम की गरिमा का बोध होता है, स्वाध्याय की महत्ता किलकने लगती है, कर्त्तव्य-निष्ठा की अनुभूति प्रखर हो उठती है, अविचल पारस्परिक सहयोग का पवित्र परिसर पुलकता है और सद्भाव एव समन्वय की आधार शिला विनिर्मित करने का मुक्त अवसर मिलता है।

हमे विचार करना है और सही निर्णय लेना है कि क्या हम इसी तिराहे पर खडे रहेंगे ? या किसी न किसी राह पर चलने की इच्छा पा लेंगे। यदि राह पर चलने की इच्छा जगेगी भी तो किस राह पर चलेंगे ? हम सशयग्रस्त हैं, दुविधा मे खोए हुए हैं, हमारा विवेक सो गया है और प्रभावहत प्रभ-सा मालूम पड़ने लगा है। इसीलिए हम बोलना चाहते हुए भी बोल नही पाते, कदम उठा तो लेते हैं, परन्तु आगे रखने मे एक अजीब-सी हिचकिचाहट के आ जाने की वजह से उसे आगे रखने मे सर्वथा असमर्थ रहते हैं। प्रगति की चर्चा तो जोर-शोर से करते हैं लेकिन 'मति' के जाल-जाल मे खो जाने के कारण कुछ भी कर-धर नही पाते। हमारी शक्ति असीम है, हमारे साधन प्रचुर हैं, पर हमारा आत्म-बल अत्यन्त क्षीण है।

कारण यह है कि हमारे दिमागों में विदेशी विचारों का जमघट जुड़ा हुआ है, हमारी सस्कृति पर परकीय हेय तत्त्वों की छाप लगी हुई है और हमारी अपनी सभ्यता एव प्रगति औरो की नकल मालूम पड़ने लगी है। हमारा विवेक इतना अज्ञानपूर्ण है कि वह असल और नकल का फर्क पहचान नहीं पाता। इसीलिए हमारे बाजारों मे विदेशी माल मिलता है या विदेशी पौधों बीजो की कलम मिलती है। भारतीय माल तो कही खोजे नही मिलता और अगर कभी-कभार मिल भी जाता है, तो उसमें मिलावट होने की आशंका बनी रहती है या खराबी-घटियापन होने की अधिक सभावना पाई जाती है। हमारी अभिव्यक्ति-शैली पर परकीय विजातीय तत्त्व हावी हैं और सस्कृति की चाल-ढाल में औरो का अन्धानुकरण और उधारवादिता का बोल-बाला है।

इस तिराहे पर खडे होकर भी यदि हममे प्रेरणा का जागरण न हुआ, चेतना करवटें न ले सकी और प्रगति के प्रति प्रेम-भाव पैदा न हो सका तो हमे खुदी की खोट का पता लगाना ही पडेगा। गन्तव्य की पहचान किए बगैर हम कुछ भी तो नहीं कर सकते। तनिक भी असावधानी हुई नही कि हम कर्तव्यच्युत होकर अधोगमन के लिए मजबूर हो सकते हैं। वस्तुतः तिराहे से दिग्भ्रम की आशका उभरने के बावजूद हमे आत्मालोचन की सहज क्षमता उपलब्ध हो जाती है। यदि हमारे सस्कार पवित्र हैं, अपनापा क्षुद्र स्वार्थों से मुक्त और व्यापकता से सपृक्त है तो पतन होने पर भी सभलने की सामर्थ्य अर्जित करना कठिन नही हो सकता। जब हमें अन्तर्निहित सामर्थ्य का बोध हो जाएगा तब हम अपने पौरुष से पराङ्मुख नहीं बने रह सकते। पुरुषार्थ का प्रबल अवलम्बन लेते ही पलायनवाद टिक नही सकता। इस दृष्टि से यह तिराहा जिस वस्तुस्थिति का जनक है, वह निर्मम निकष के सामने झगड़ा कर खड़ी हो सकती है। हमारा दायित्व है कि हम इस निकष पर कसे जाने के लिए सन्नद्ध-तत्पर हो जाएं। यह सन्नद्धता-तत्परता हमें अपने लक्ष्य की ओर आकृष्ट कराने में सफल होगी। जरा-सी चूक पर हम पहली या दूसरी राह पर चल कर अपना अहित कर लेंगे।

महाराजा अग्रसेन विद्यालय,
पो०—तिकुनिया, जि०—खीरी (उ०प्र०)

आर्यसमाज विनयनगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज विनयनगर, सरोजिनी नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ३० अप्रैल और १ मई को मनाया गया। ३० अप्रैल को चरित्र निर्माण सम्मेलन श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे हुआ। श्री पं० [illegible] वेदालंकार, श्री स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती व अन्य विद्वानों ने अपने विचार रखे। १ मई को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन श्री सा० राम-गोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में हुआ। आचार्य भगवान देव जी संसद सदस्य व अन्य आर्यनेताओं के भाषण हुए।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ २१ अप्रैल से १ मई तक श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में हुआ, [illegible] बेदियां बनाई गई जिसमें [illegible] (हिन्दू) [illegible] भाग लिया।

उत्तरप्रदेश में छोटा पाकिस्तान बनाने की योजना

—वेदमुनि परिव्राजक

अध्यक्ष, वैदिक संस्थान, नजीबाबाद, (उ०प्र०)

उत्तरप्रदेश के सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बदायू, बरेली, शाहजहांपुर, मुजफ्फर नगर, मेरठ, बुलन्दशहर और अलीगढ जिलो में ३३ प्रतिशत मुस्लिम आबादी है और १८ प्रतिशत हरिजन।

अरब राष्ट्रो से आने वाले चार अरब रुपयों के बल पर इन जिलो के हरिजनो को मुस्लिम बना कर छोटा पाकिस्तान बनाने की योजना कार्यान्वित करने के प्रयत्न हो रहे हैं। यद्यपि अभी तक आर्यसमाज के जागरूक होने के कारण मुसलमानो को सफलता नहीं मिली है, फिर भी हरिजनो के जन-जागृति और इस क्षेत्र के हिन्दू समाज मे नवचेतना लाने के लिये अथक प्रयत्न और परिश्रम की आवश्यकता है।

भारत के सभी प्रबुद्ध जन जानते हैं कि मुरादाबाद का एक मुसलमान धनपति मुरादाबाद नगर के चारो ओर सात मुस्लिम कालोनिया बसा रहा है और दो मुस्लिम विश्वविद्यालय मुरादाबाद-रामपुर और मुरादाबाद-दिल्ली मार्ग पर बना रहा है। इसी व्यक्ति के यहां सन् १९७१ में एक पाकिस्तान का चित्र भी पकड़ा गया था। उस चित्र मे उत्तरप्रदेश के शाहजहांपुर और अलीगढ जिलो तक का क्षेत्र दिखाया गया था।

दिल्ली शाही मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी पिछले दिनो यह घोषणा कर ही चुके हैं कि 'मुसलमान भारत का वफादार नही हो सकता।' राष्ट्रवादी कहे जाने वाले किसी भी मुसलमान ने इमाम बुखारी के इस वक्तव्य का विरोध नही किया। इसका अर्थ यह है कि सभी मुसलमान भारत के साथ गद्दारी को तैयार हैं।

भारत के किसी राजनीतिक दल ने भी इस विषय पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट नही की है, इसलिए हम राष्ट्रभक्त हिन्दुओ से यह कहना चाहते हैं कि यदि भारत मे दूसरा पाकिस्तान बनने से रोकना है तथा एक बार फिर राम-कृष्ण की सन्तानो के रक्त की नदी प्रवाहित नही होने देनी और सीता-द्रौपदी की लाज उतरने से बचानी है तो इस कार्य में पूरी शक्ति से सहयोग कीजिए। आर्यसमाज एव वैदिक सस्थान आदि सस्थाए जन-जागरण का कार्य प्रारम्भ कर चुकी हैं, आप इन सस्थाओ से सम्पर्क स्थापित कर अपना दायित्व पूरा करें।

बोध-कथा सच्ची दया !

सच्चे शिव की खोज मे युवक मूलशकर ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य बनकर ज्ञानार्जन के लिए किसी अच्छे गुरु से दीक्षा ग्रहण करने के लिए देशाटन कर रहे थे कि एक दिन उन्होने देखा कि कुछ लोग गाजे-बाजे के साथ जा रहे थे। उनके पीछे रोती-बिलखती सफेद वस्त्र पहने एक दुखी औरत जा रही थी। ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य ठिठक गए। उन्होने उस रोती औरत को पुकारते हुए कहा— 'मा, क्या बात है? क्या कष्ट है जो तुम ऐसे बिलख-बिलख कर रो रही हो?" उस औरत ने कहा—"मैं एक अभागी विधवा हूं। ये लोग मेरे इकलौते लड़के को देवी की बलि बनाना चाहते हैं। मेरी किसी पुकार अनुनय-विनय का इन पर कोई असर नही हुआ।" उस दुःखी मा के साथ ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य मन्दिर पहुचे। वहां देवी की मूर्ति के सामने एक छोटे-से अबोध बच्चे को जबर्दस्ती लिटाया हुआ था। बच्चा चीख-पुकार कर रहा था पर किसी पर कोई असर नहीं हो रहा था। मन्दिर मे अन्दर पहुच कर ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य ने उन सबको डांटा-ललकारा और कहा—"इस बच्चे और विधवा नारी पर क्यो अत्याचार करते हो?" वे ढोंगी बोले— "हमे तो देवी को बलिदान देना है, यह बच्चा बचाना चाहते हो तो खुद की बलि दो।' कहते हैं कि एक क्षण का सकोच किए बिना उस दयालु युवक ने अपनी गर्दन बलिस्थान पर रख दी। वे सब ढोंगी जन हर्ष मे चिल्ला उठे। वे आगे कुछ करते इससे पहले ही शोर सुनकर वहां कम्पनी के कुछ सिपाही आ गए। उन्होंने सारा माजरा देखकर उन ढोंगियो को ललकारा। वे अपनी सारी पूजा-सामग्री और हथियार छोड़ कर भाग निकले। उस मां ने उस ब्रह्मचारी के पैरो मे सिर नवा दिया और उनकी दया के लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

कहते हैं कि इसी घटना के बाद स्वामी पूर्णानन्द जी ने ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य को दीक्षा देकर दयानन्द नाम दिया था और अपनी शिक्षा पूर्ण करने के लिए अपने शिष्य प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द के पास जाने का परामर्श दिया था।

—नरेन्द्र

सिख भाइयो, समय रहते जाग जाओ

नांदेड महाराष्ट्र में सिखों के दसवें गुरु श्री गोविन्दसिह का स्वर्गवास हुआ था। वहां से सरदार नरेन्द्रसिंह 'यात्री' लिखते हैं—

२२ अक्तूबर प्रात काल साढे तीन बजे थे, मैं गुरुद्वारा श्री नादेड साहिब की सराय मे सो रहा था। अचानक श्री गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने दर्शन दिए और कहना आरम्भ किया—

आज मेरे नाम की आड़ मे वास्तव मे मुझे बदनाम करने के लिए जो अकाली और उनके अनुयायी तथाकथित सिख लोग खालिस्तान का नारा लगा रहे है और मेरी प्यारी गौओ को मार कर नष्ट कर रहे हैं तथा मुझमे श्रद्धा रखने वाले हिन्दुओ को भी बडी बेरहमी से मारकर उन्हे पजाब से उजाड़ना चाहते है। वे लोग मेरे सबसे बडे शत्रु हैं, ऐसे ही लोगो ने सबसे पहले मेरे साथ गद्दारी की, जिससे कि मुझे पजाब छोडकर यहा नादेड़ मे बसना पडा, फिर १८५७ के सग्राम मे गद्दारी की, जिससे कि हिन्दुस्तान तब आजाद न हो सका और अब ये फिर हिन्द के टुकडे करना चाहते हैं। इनको अब सावधान हो जाना चाहिए। खेद है कि मैंने जिन सिखो को हिन्दू धर्म तथा हिन्दुस्थान की रक्षा के लिए खालसा फौज मे सजाया था, आज वे ही उसके घातक हो रहे हैं।

जिस हिन्दू को गोमास भक्षक व्यभिचारी झूठे पापी मुसलमानो के पजे से छुडाने के लिए मैंने अपने पिता का अपने पुत्रो का और यहा तक कि अपना तथा अपने परम योद्धा वीर बन्दा वैरागी का बलिदान दिया था, आज ये सिख मेरे इस पवित्र हिन्द मे अपनी कुर्सी के लोभ मे केवल खालिस्तान का ही नारा नही लगा रहे, अपितु ये दुष्ट लोग गुरु-घर का विनाश करने वाले इमाम बुखारी जैसे देश के गद्दार गोभक्षको को अपना ग्यारहवा गुरु मानकर श्री आनन्दपुर साहिब तथा श्री हरमिन्दर साहिब मे बुलाकर उससे आशीर्वाद लेकर मेरा तथा उन पवित्र स्थानो का अपमान करके 'गुरु-घर' से घोर गद्दारी भी कर रहे हैं।

मेरी यह वाणी उन सब मेरे तथा ग्रन्थ साहिब के नाम की आड लेकर पजाब मे दुष्टता करने वाले तथाकथित सिखो तक पहुचा देना और उन्हे यह कह देना कि यदि तुमने शीघ्र गौओ का वध करना, मन्दिरो को दूषित करना तथा गुरुद्वारो मे 'गुरु-घर' के घातको, गोभक्षको तथा लुटेरो की सन्तानो को बुलाना और हिन्दू देश मे मेरा नाम **बदनाम करने के लिए खालिस्तान का नारा लगाना न छोडा** तो मैं उन देशद्रोही, गुरुद्रोही **एव गुरु-साहिब का अपमान करने वाले** लोगो को शीघ्र प्रकट होकर गाजर-मूली की तरह मिट्टी मे मिला दूगा। यदि तुमने मेरे इस 'फरमान' को शीघ्र सब सिखो तक नही पहुचाया और इसे दबाने का प्रयास किया तो तुम्हारा भी सत्यानाश कर दूगा।' इतना कहकर गुरु महाराज ओझल हो गए।

अत इसके साथ ही मैं सभी भाइयो को यह बता देना चाहता हू कि ये कुर्सी के भूखे चन्द राजनीतिक अकाली लोग न तो हम सब धर्मप्रेमी सिखो के गुरु हैं और न ही पूज्य ही हैं। अत इनका श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की मान्यता के विरुद्ध सिखो के लिए मास खाने को धर्म की बात बताना तथा अन्य गोहत्या एव खालिस्तान आदि राष्ट्रघातक कार्यों मे कभी भी सहयोग नही देना चाहिए। इसी से हम गुरु महाराज की आत्मा को सच्ची शान्ति दे सकते हैं और सच्चे सिक्खो को अपमानित होने से बचा सकते है।

"वैदिक ज्योति लेकर में अज्ञान मिटा दो"

लेखक नन्दलाल 'निर्भय' सिद्धांत शास्त्री, (भजनोपदेशक)

आर्य वीरो जग मे वैदिक, नाद गुजा दो। महर्षि का स्वप्न उठो, साकार करा दो।।
वैदिक पथ को भूल गई ये, दुनिया सारी। अन्धकार मे भटक रहे हैं, सब नर-नारी।।
दिन पर दिन बढ रहे धरा पर, भ्रष्टाचारी। गुण्डे सिर पर चढे दुखी हैं, सज्जन भारी।।
सकल विश्व को मानवता का, पाठ पढा दो।।

अवतारों की आधी भूमण्डल पर छाई। पाखण्डियो ने भोली जनता, है बहकाई।।
खुद ईश्वर बन रहे धूर्त, जालिम, अन्याई। दुखियाओ की चीत्कार, दे रही सुनाई।।
वैदिक ज्योति लो कर मे, अज्ञान मिटा दो।।

भारत मा के पुत्र-पुत्रिया बने विधर्मी। यवन, ईसाई बने करोडो, बढे कुकर्मी।।
गाली देते ऋषियो को, धारी बेशर्मी। मा, बहिनो की लाज रही लुट, छोडो नर्मी।।
मानवता के हत्यारो के, शीश उड़ा दो।।

स्वामी श्रद्धानन्द बनो, शुद्धि अपनाओ। प० लेखराम बन जग को, वेद पढाओ।।
वीर लाजपत बनो विधर्मी,राज्य हिलाओ। भगत सिंह, बिस्मिल बन, दुष्टो से भिड जाओ।।
महर्षि का ऋण हे वीरो, आज चुका दो।।

ग्राम बहीन (फरीदाबाद)

आर्य जगत् समाचार

अजमेर में एक ही समारोह मनाएं

अजमेर की समस्त आर्यसमाजों द्वारा परोपकारिणी सभा से अपील

अजमेर की समस्त आर्यसमाजो के मन्त्री अथवा प्रतिनिधियो एवं नगर के अन्य आर्यजनो की श्री दत्तात्रेय जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक मे परोपकारिणी सभा के नाम अपील की गई कि अब जबकि समस्त आर्यसमाजो की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली ने ३, ४,५,६ नवम्बर ८३ को अजमेर मे ही शताब्दी मनाने की घोषणा की है ऐसी स्थिति मे परोपकारिणी सभा को सार्वदेशिक सभा के साथ मिलकर ही निर्वाण शताब्दी समारोह का आयोजन करना चाहिए।

बैठक में यह भी अनुरोध किया गया कि सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रतिनिधियों की एक उच्च स्तरीय समिति गठित की जाए जो आर्थिक, नीति संबधी समस्त आर्य संचालन सम्बन्धी व्यवस्थाए करे। इस सम्बन्ध मे अब तक गठित समितियो को भग कर दिया जाए।

दरभंगा आर्य-समाज में अन्तर्जातीय विवाह

दिनाक ८-४-८३ को स्व० हरिहर प्रसाद की पुत्री विभारानी (एम०ए०) शुड़ी निवासी मधुवनी का पाणिग्रहण सस्कार श्री सुखदेव नारायण के पुत्र अजय ब्रह्मात्मक (एम०ए०) कायस्थ निवासी सहरसा के साथ आर्यसमाज मन्दिर मे अत्यन्त सादे समारोह में हर्ष उल्लास सहित दहेज का लेन-देन बिना शहर के अब-गणमान्य आर्य व्यक्ति और समाज के पदाधिकारी समक्ष पुराहित श्री पटेल जो ने वैदिक विधि से सम्पन्न कराया। देश मे दहेज प्रथा की कड़ी निन्दा करते हुए मन्त्री उपेन्द्र विद्यालकार ने दहेज विरोधी अभियान में समाज के सहयोग की अपील की। कोषाध्यक्ष रामाशिष प्रसाद ने वर-वधू को प्रतिज्ञा कराके आजीवन उनके सुख की कामना की।

पंडिता राकेश रानी फिर गिरफ्तार

नई दिल्ली ३ मई। करौलबाग के इन्सपेक्टर श्री रामसिंह चौहान ने पडिता राकेश रानी, अध्यक्ष दयानन्द सस्थान को धारा १५३-ए, २९५-ए के अन्तर्गत जनज्ञान के अगस्त से दिसम्बर, १९८२ तक के पांच अकों मे लिखे सम्पादकीय लेखों के आधार पर गिरफ्तार किया। बाद ने निजी मुचलके व जमानत पर उन्हें रहा कर दिया गया। तीन प्रेस वाले भी इस केस में गिरफ्तार किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि श्रीमती राकेश रानी की २१ वीं गिरफ्तारी थी।

श्री देवीदास आर्य को पुत्री शोक

कानपुर। सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य की ३२ वर्षीय पुत्री श्रीमती रानी देवी का ब्रेन हेमरेज के कारण गत २९ अप्रैल ८३ की देहावसान हो गया। केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर, आर्य समाज गोविन्द नगर, उत्तर प्रदेश सिन्धी सभा, भारतीय जनता पार्टी, आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्द नगर, विश्व हिन्दू परिषद आदि सस्थाओं ने शोक प्रस्ताव पारित कर श्री आर्य के साथ सहानुभूति प्रकट की है।

पन्तनगर में योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गोविन्द वल्लभ पन्त कृषि एव औद्योगिक विश्वविद्यालय पन्तनगर नैनी मे १२ से २१ अप्रैल तक योग प्रशिक्षण चला। योगाचार्य डा० देवव्रत आचार्य पी एच डी. प्रधान सह सचालक सार्व० आर्य वीर दल द्वारा आसन प्राणायाम एवं यौगिक क्रियाओ का प्रशिक्षण दिया गया। इसी के साथ आचार्य जी ने यौगिक क्रियाओं द्वारा चिकित्सा भी बताई। इसमें ३०० के लगभग विद्यार्थी, अध्यापकों एव कर्मचारियों में प्रशिक्षण लिया।

कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली का रजत जयन्ती समारोह

१३-१४-१५ मई १९८३ को विशेष उत्साह से मनाया जा रहा है। १५ मई को १०० मन गोघृत से चल रहे वार्षिक यज्ञ की पुर्णाहुति होगी। गुरुकुल की छात्रायें शारीरिक व्यायाम आसन, लाठी, तलवार मोगरी, जूडो कराटे स्तूप निर्माण आदि का प्रदर्शन करेंगी। दिल्ली की आर्यसमाजों से बसें इस महोत्सव में भाग लेने जा रही है। आर्य जनता से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

नारी जगत

महान योद्धा वीर शिवाजी की महत्ता और न्याय निष्ठा

छत्रपति शिवाजी एक वीर योद्धा के साथ-साथ बड़े ही न्याय प्रिय महापुरुष थे। उन्होंने अपने सैनिकों को स्पष्ट रूप से चेतावनी दी हुई थी कि युद्ध के समय न निर्दोष लोग के साथ अन्याय होने पाए न नारियो का ही अपमान हो।

शिवाजी की सेना की टुकडी एक बार कर्नाटक युद्ध से लौट रही थी कि रास्ते में विलारी नगर पर कुछ मराहटा सैनिको ने हमला बोलकर लूटपाट शुरू कर दी। विलारी के सैनिकों ने मराहटों से ठटकर लोहा लिया और उनको मुह की खानी पड़ी।

मराठा सेनापति साकूजी गायकवाड़ नें पीछे से सेना बुलाकर विलारी पर जबरदस्त हमला कर दिया। विलारी की महारानी सावित्री बाई ने अपने सैनिकों को आदेश दिया मराठा सैनिकों ने छत्रपति शिवाजी के महान आदेशों की अवहेलना करके ही लूटपाट की है। अत: उनके अत्याचारों का डटकर प्रतिकार किया जाना चाहिए।

मराठा सैनिकों व विलारी के सैनिको में युद्ध छिड़ गया। पूरे चार सप्ताह तक दोनों ओर से तलवारे खनखनाती रही। अन्त में मराठा सैनिकों ने तोपों से हमला करके विलारी के दुर्ग को नष्ट कर दिया। और महारानी सावित्री बाई को गिरफ्तार कर लिया गया। सेनापति साईजीं गायकवाड़ ने क्रोध से तमतमाते हुये अपने सैनिकों को दिया इसने शिवाजी के सैनिको का अपमान कराया है। उन्हें युद्ध की चुनौती दी है। आदेश अत इस रानी की पीठ पर कोड़े लगाये जाए।

मराठा सैनिको को छत्रपति शिवाजी की नारी का अपमान न करने की चेतावनी का ध्यान आया तो वे काप उठे। किन्तु सेनापति के आदेश से रानी पर कोड़े बरसाने ही पड़े। कोडों की मार से रानी की पीठ पर खून बहने लगा।

मराठा सेना रानी को बन्दी बनाए हुये वापस लौट आये। बन्दी रानी को शिवाजी के सामने उपस्थित किया गया।

छत्रपति ने एक अबला नारी को रस्सी में जकड़े हुये कराहते देखा तो क्रोध से उनके आखें लाल हो गई उन्होने तुरन्त सेनापति साकूजी को बुलाकर क्रोध से कहा मैंने तुम्हें विदेशी आतंकवादियों से जूझने के लिए भेजा था। अपने भाइयों को लूटने के लिए नही फिर तुमने ही रानी सावित्रा बाई के साथ दुर्व्यव्यवहार करके मेरे नाम पर भारी कलङ्क लगाया है। यह सावित्री देवी का अपमान ही साक्षात मेरी मां का अपमान है। और इस नारी-अन्याय के अपराध में मैं तुम्हारी दोनों आंखें फोड़ डालने का आदेश और दण्ड देता हूं। तमाम सैनिक शिवाजी का क्रोध देख थर-थर कापने लगे।

शिवाजी सिहासन छोडकर रानी सावित्री बाई के चरणों पर गिर पड़े और उन्होने कहा, मा मेरे सैनिको ने तो तुम्हारी प्रजा व तुम्हारे साथ और आपके परिवार के साथ अन्याय किया है। उसके लिए मैं भारी लज्जित हूं। मुझे क्षमा करो।

रानी सावित्री बाई क्षत्रपति की महात्ता व न्याय निष्ठा देखकर दंग रह गये। उन्होंने तुरन्त शिवाजी को उठा लिया।

रानी ने कहा—बेटा शिवाजी! मैं जानती थी कि तुम महान् हो। और प्रत्येक नारी के प्रति तेरे हृदय मे भारी श्रद्धा है किन्तु ये सैनिक विजयोन्माद में गलती कर बैठे। अब तू सेनापति को मेरे कहने से क्षमा कर दे।

महारानी, मेरे सैनिकों द्वारा नारी व प्रजा पर अत्याचार किये जाने से तो मेरे हिन्दू पदपादशाहों की स्थापना के महान आदर्शों की हत्या है। मैं ऐसे अत्याचारी सेनापति को कदापि क्षमा नहीं करूंगा। अन्याय का दण्ड उसे भोगना ही पड़ेगा।

एक बार की बात है। कुछ सैनिकों ने एक दुर्ग पर हमला करके दुर्ग को अपने हाथ में ले लिया। उस दुर्ग में एक मुस्लिम अत्यन्त सुन्दर बाला भी उनके हाथ लगी। सेनापति ने उसे शिवाजी के समक्ष उपस्थित करके राजरानी बनाने की विनय की। सेनापति की बात सुनकर शिवाजी ने कहा सेनापति तुम्हें धिक्कार है। तुम्हारा धर्म परनारी के हरण का नहीं पर नारी का रक्षा करना है।

फिर वे उस रमणी को देखकर बोले माता रूप के वशीभूत होकर मेरे सैनिक तुम्हें यहां ले आये हैं। इसके लिए मुझे क्षमा कर दें तुम्हारे सुन्दर रूप को देखकर मेरे मन में तो यह भाव उठ रहा है कि यदि मैं तुम्हारे गर्भ से जन्म ग्रहण करता तो मेरा रूप अधिक सुन्दर होता। इसी भाव को भी मन्कूलजी ने कविता के रूप में लिखकर यूं प्रकट किया है।

शिवा शिविर से सेना पति। सुन्दर यौवन बाला लाया॥
जन्म तुम्हीं से यदि मैं पाता। तो होता सुन्दर छविमान॥
साश्रु नयन बस गदगद बोले। जग में शिवा चरित्र महान॥

रामकिंकर गुप्ता

मकान नं० ११५ [illegible] गली, नं० ५ [illegible] दिल्ली-[illegible]

हिन्दू धर्म अंगीकार करने वाली आयरिश महिला श्रीमती (डा०) एनी बीसेण्ट

—राजीव दुबे, एम० ए०

डा० एनी बीसेण्ट एक आयरिश महिला थीं। आपका जन्म इगलैंड मे एक डाक्टर परिवार (१८४७-१९३३) में हुआ था। वह एक विदुषी महिला थीं। उनकी शिक्षा-दीक्षा इग्लैंड और जर्मनी मे हुई थी। उनका विवाह एक ईसाई पादरी से हुआ, लेकिन धर्म सम्बन्धी मतभेद होने के कारण उन्होंने तलाक दे दिया। १० मई १८८९ को वह "थियोसोफिकल सोसायटी" की सदस्या बनीं।

१८९३ मे वह भारत चली आयीं तथा उन्होंने भारत को अपनी मातृभूमि के रूप में स्वीकार किया तथा हिन्दू धर्म ग्रहण किया। भारत में आकर वह सामाजिक शैक्षिक कार्यों मे सलग्न हुई तथा धर्म और भारतीय समाज का बड़ी निकटता से अध्ययन किया। भारत में रहते हुए उन्होंने "वैदिक" और 'औपनिषदिक' सिद्धान्तो का प्रचार किया। उन्होंने इगलिश भाषा में 'भगवद्गीता' का अनुवाद किया। सन् १८९८ मे उन्होने बनारस में 'सेन्ट्रल हिन्दू कालेज' और [illegible] की स्थापना की जो आगे चलकर 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' के रूप मे विख्यात हुआ। १९१० तक वह "थियोसोफिकल सोसाइटी' की अध्यक्षा बनीं।

राष्ट्रीय आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए उन्होने होमरूल के सगठन का खूब प्रचार किया। उनका कहना था कि होमरूल भारत का मौलिक अधिकार है, इसे प्राप्त करना ही है। १९१७ ई० मे वह काग्रेस की अध्यक्षा बन चुनी गयीं। उनका कहना था "मैं भारत मे जगने वालो का काम कर रहा हू और सब सोने वालो को जगा रही हू ताकि वे उठ बैठें और मातृभूमि के लिए कार्य कर सकें।" 'होमरूल आन्दोलन' के विषय मे कहा जाता है कि शुद्धत. एक सवैधानिक और प्रचारात्मक आदोलन था, जिसने देश में लहर पैदा की तथा इस आंदोलन ने जनता मे 'स्वशासन' की माग के लिए बड़ी चेतना उत्पन्न की। तिलक के पत्रो 'दैनिक केसरी' 'साप्ताहिक मराठा' ने भी महाराष्ट्र में डटकर प्रचार किया। होमरूल आंदोलन का उद्देश्य था कि भारत ब्रिटिश साम्राज्य उपनिवेश रहते हुए अपने मामलों में पुरी तरह स्वाधीन हो। वह भारत के लिए ऐसी शासन विधान चाहती थीं कि जिसमें थोड़े समय के अन्दर ही भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता देने की व्यवस्था थी। इसीलिए आपने सन् "१९१९ के सुधार अधिनियम" को "अपूर्ण तथा निराशाजनक" बतलाया।

गांधीजी द्वारा चलाए गए "असहयोग आंदोलन" के कार्यक्रम से वह असहमत थीं। १९२० में उन्होंने कांग्रेस को छोड़कर उदारवादियों में मिल गईं। आप भारत से ब्रिटेन से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं चाहती थी, परन्तु विदेशी माल के बहिष्कार आदोलन के विरोध मे थीं। अपनी रचनाओ मे उन्होने हिन्दुत्व का गौरव मान किया और भारतीय सभ्यता को आधुनिक युग की बरसाती सभ्यताओं से अधिक श्रेष्ठ मानकर अभिमन्त्रित किया। वह जन्म से अग्रेज किन्तु स्वेच्छा से भारतीय थीं। वह नंगे पैर अमरनाथ की यात्रा तथा वहा के शीतल जल में स्नान करके मन्दिर मे घुसी तभी से हिन्दू धर्म वाले अपने धर्म की उच्चता को समझ सके। एनी बीसेण्ट ने समूचे हिन्दू धर्म का विकास मे रुचि ली, जिसमे वेद, उपनिषद पुराण, महाकाव्य, कथावार्ता आदि सभी सम्मिलित थे। १९१० के बाद एनी बीसेण्ट की ख्याति धर्म मे घटने लगी, उसका कारण यह था कि वह कहती थी कि कृष्ण मूर्ति के व्यक्तित्व मे एक क्राइस्ट अवतार होने लगा है थियोसोफिस्ट लोगो ने उन्हें देवा विरोधी से विभूषित किया। वह धार्मिक तथा राजनीतिक दोनो ही क्षेत्रो मे स्वतन्त्रता की पोषक थी। उनका यह दृढ विश्वास था कि मनुष्य की आत्मा का प्रधान तत्व स्वतन्त्रता ही है जिसकी प्राप्ति कठोर अनुशासन और आत्मसयम से ही हो सकती है।

श्रीमती एनी बीसण्ट मे एक समाजवादी के रूप मे अपना जीवन प्रारम्भ किया था, प्रतिस्पर्धा अथवा प्रतिद्वदिता पर आधारित व्यक्तिवाद के स्थान पर सहयोग मूलक समाज की स्थापना करना चाहती थीं। उन्होने समाजवाद को अमिजात्यवतीय समाजवाद कहा गया है। डा० एनी बीसेण्ट ने भारतीय नारी को जाग्रत करने का सराहनीय प्रयत्न किया। उनके सहयोग से भारतीय नारी अपनी स्वतन्त्रता, अपने अधिकार और अपने उचित स्थान को पाने के लिए अग्रसर हुई। अपने भाषणो मे कहा करती थी कि जहा स्त्रियो का आदर होता है वहा देवता निवास करते हैं जहा नही होता वहा समस्त कर्म व्यर्थ होते हैं। उनके राजनीतिक जीवन मे आध्यात्मिक आदर्श छिपे हुए थे। उनका कहना था कि भारतीय राष्ट्रवाद नैतिकता और विवेक के आदर्श पर आधारित होना चाहिए। वह पूर्व और पश्चिम मे समन्वय स्थापित करना चाहती थी। उनकी कामना थी कि भारत के आध्यात्मिक आदर्शों और ब्रिटेन को मौलिक व वैज्ञानिक प्रगति में सहज सामजस्य स्थापित हो। इसमे कोई सन्देह नहीं कि डा० बीसेण्ट के जिस प्रेम, ज्ञान, दृढ़ता, चेतना को जाग्रत किया उसके लिए भारतीय नारी उनके प्रति चिरऋणी रहेगी।

डा० एनी बीसेण्ट, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की महान विभूति थीं। उन्होने अपने जीवन मे अन्तकाल तक भारत की भलाई के लिए ही कार्य किया। भारतवर्ष के धार्मिक शैक्षणिक और सामाजिक पुनजागरण के लिए किए गए उनके कार्य स्मरणीय हैं। १९१६ से १९१९ तक भारतीय राजनीतिक आकाश मे वह एक उज्ज्वल सितारे की तरह चमकती रही।

प० जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में 'एनी बीसेण्ट का प्रभाव शक्तिशाली था और उन्होने मध्यवर्गीय हिन्दू जनता मे उनके आध्यात्मिक एव राष्ट्रीय गौरव का विश्वास बैठाया।

अध्यक्ष गौर छात्र परिषद् एव युवक काग्रेस, सागर विश्वविद्यालय, सागर,

प. हरपाल जी शास्त्री दिवंगत

अत्यन्त खेद का विषय है कि प हरपाल शास्त्री, वेद वाचस्पति, आर्य महोपदेशक का दिनाक १९-४-८३ मंगलवार को प्रात २ बजे आकस्मिक हृदय गति अवरुद्ध हो जाने के कारण निधन हो गया। शास्त्री जी सस्कृत के प्रकाण्ड पडित थे, वाणी मे मधुरता एव तेज था। अपने जीवन मे उन्होंने हजारो वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न कराए।

अन्तिम सस्कार डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सचालक सार्व० आर्यवीर दल, डा० विनोद चन्द विद्यालकार, स्वामी रुद्रवेश जी, ब्र. ध्रुव देव जी, प्रेम जी हल्द्वानी, श्री बाक लाल जी कसल प्रधान आर्य समाज नैनीताल द्वारा सम्पन्न हुआ। 1/८४ गांधी भवन, विनोद कक्ष सुभाष भवन पन्त नगर मे विद्यार्थियां ने भी शान्ति यज्ञ एव शोक सभा का आयोजन किया। IV/२०३१ पन्तनगर मे शास्त्री जी के वतमान निवास पर २९/४/८३ को एक बहुत बड़ी शोकसभा एव शान्ति यज्ञ का आयोजन हुआ। इसम उनके पुत्र श्री नरेन्द्र देव आर्य ने प्रति मगलवार को यज्ञ करन एव उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का सकल्प किया।

आर्यसमाज का वर्चस्व और गौरव

—दीनानाथ सिद्धातालकार

आयसमाज की दृष्टि से आज राजधानी मे छोटी बडी आयसमाज और उनके अपने मन्दिर भवनो की सख्या २०० २५० के लगभग है। कई मन्दिर तो काफी आलीशान है जैसे सावदेशिक भवन (महर्षि दयानन्द भवन) दीवान हाल नया बास बिडला मिल शक्ति नगर मन्दिर माग पजाबी बाग मोडल टाऊन ग्रटर कैलाश कालका जी लाजपतराय नगर पहाड गज इयादि अनेक मन्दिर हैं। अब आयसमाज द्वारा सचालित दजनो शिक्षा सस्थाए व अन्य सावजनिक सस्थाए हैं। तीन साप्ताहिक कुछ मासिक समाचार पत्र और साहित्य प्रकाशक सस्थाए हैं।

राजधानी की आयसमाजो का एक विशेष उल्लेखनीय आय युवकों का सगठन हैं जिसके अन्तर्गत शिविर वाद विवाद प्रतियोगिता योगासन व्यायाम प्रदशन इत्यादि युवक निर्माण के कायक्रम चलते रहते हैं। दिल्ली राज्य और विभिन्न नगर क्षत्रोके पृथक पृथक सगठन है। राजधानी और देश की आय समाज और उसकी विभिन्न सस्थाओ द्वारा शताब्दी अद्ध शताब्दी सम्मेलन महासम्मेलन इत्यादि समारोहो द्वारा राष्ट्र मे नवजीवन और नव प्राण शक्ति स्फुरित और प्रदित करने के सतत प्रयास वस्तुत स्तुत्य और प्रशंसनीय हैं। महिला समाजों का पृथक सगठन है और एक गुरुकुल तथा महिला आश्रम और एक महाविद्यालय हैं।

देश में इस समय धर्मान्तर करण का पैट्रोडालर और अमेरिकी ईसाई देशो से प्राप्त विशाल धन और प्रलोभन का मुकाबला हिन्दू जनता के पूण सहयोग से आय समाज ही कर रहा है।

के सी ३७ बी अशोक बिहार
दिल्ली— ५२

विनम्रता का महत्व

पानी से भरे घडे के ऊपर एक कटोरी रखी थी। कटोरी ने घडे से शिकायत करते हुए कहा—तुम प्रत्येक बतन को जो तुम्हारे पास आता है अपने शीतल जल से भर देते हो। किसी को खाली वापस नही जाने देते परन्तु मुझ कभी नहीं भरते जबकि मैं सदा तुम्हारे साथ रहती हू। इतना पक्षपात तो तुम्हे शोभा नही देता।

घड ने शान्त स्वर मे उत्तर दिया—इसमे पक्षपात की कोई बात नही। अन्य सब बतन मेरे पास आकर विनीत भाव से झुकते हैं जिसमें मैं उन्हे शीतल जल से भर देता हू। परन्तु तुम घमड से चूर सदा मेरे सिर पर सवार रहती हो इसलिए मैं तुम्हें नहीं भर सकता। यदि तुम भी नम्रता से झुकना सीखो तो तुम भी कभी खाली नहीं रहोगी।

—प्रद्युम्न तलवाड आई २०४ अशोक बिहार फेज। दिल्ली ५२

सुभाषभवन मे शान्ति यज्ञ

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एव प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पन्तनगर मे डा० हिम्मत लाल सेठ बग्गा (बडौत) के निधन पर १०-४-८३ को I/८४ और २० ४ ८३ को सुभाष भवन में शान्ति यज्ञ एव शोक सभा हुई। प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति एव शोक सन्तप्त परिवार एव सम्बन्धियो को इस दुख को सहन करने की प्रार्थना की गई।

डिप्टी जेलर श्री खिलाडी सिंह मेरठ की हत्या पर विनोद कक्ष सुभाष भवन मे २० ४-८३ को शान्ति यज्ञ एव शोक सभा मे उनकी आत्मा की शान्ति एव सद्गति प्रार्थना तथा इस दारुण दुख को परिवार को सहन करने की प्रभु से प्रार्थना की गयी। यज्ञ स्वामी रुद्रवेश जी एव श्री ध्रुवदेव द्वारा सम्पन्न हुआ।

रजि० न० डी० सी० 759
साप्ताहिक आर्य सन्देश नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा आदित्य प्रेस २६७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड नई दिल्ली, फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ७ अंक ३० रविवार २२ मई १९८३ ११ ज्येष्ठ वि० २०४० दयानन्दाब्द—१५८

हिन्दू तीर्थों के समीप ईसाई तीर्थ स्थापना की योजनाबद्ध चाल

केरल मे राजनीतिक अस्थिरता करने का नया प्रयास

विदेशी शक्तियों का नया नियोजित प्रयास नीलक्कल विवाद की पृष्ठभूमि

त्रिवेन्द्रम। केरल के प्रमुख हिन्दू तीर्थ शबरीमलै को जाते हुए तीर्थयात्री मार्ग मे ऊची पहाडी पर बसे नीलक्कल मे एक प्राचीन शिवमन्दिर के पास सरकारी भूमि का अतिक्रमण कर वहा ईसाई अपना गिरजाघर स्थापित करने का योजनाबद्ध प्रयास करते दिखाई देते हैं। केरल के दो अन्य प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थों गुरुवायूर (श्री गुरुवायूरप्पन श्रीकृष्ण का वास) तथा आदि शकर के जन्मस्थान कालडी मे ईसाई तीर्थस्थान स्थापित किए जा चुके है। शबरीमलै पर भी काफी समय से उनकी कुदृष्टि है। १९६९ और १९७२ मे भी नीलक्कल मे एक बार कालिक्कवीजि (मन्दिर) के निकट तथा दूसरी बार पहाडो पर करीब तीन फर्लांग ऊपर चढ कर चर्च या गिरजाघर बनाने का प्रयास किया जा चुका है जब इसके लिए अनुमति मागी गई तो तत्कालीन सरकार ने दावे की जाच के लिए आयोग नियुक्त किया जिसकी प्रतिकूल रिपोर्ट मिलने पर बात वहीं आई गई हो गई अब इस नए सिरे से बडे नाटकीय ढग से गाजे-बाजे के साथ उठाया जा रहा है।

कोई ऐतिहासिक प्रमाण नही

नीलक्कल विवाद का प्रारम्भ २२ मार्च १९८३ के दिन हुआ। उस दिन कैथोलिक कांग्रेस ने दावा किया कि राज्य कृषि निगम के दो ईसाई मजदूरों को नीलक्कल मे एक क्रूस (क्रास) मिला है। जिस स्थान पर क्रूस प्राप्ति की बात कही जाती है वह दो प्राचीन मन्दिरो नीलक्कल महादेव मन्दिर और पल्ली आराकावू देवी मन्दिर के बीच मे है। अगले ही दिन दो पीरों में आकर कुछ व्यक्ति उस क्रूस की पूजा के लिए पहुच गए। कृषि-निगम के अधिकारियो ने इसे अपनी भूमि पर अतिक्रमण मानकर इस पर आपत्ति की। ईसाइयो की ओर से दावा किया जा रहा है कि क्रूस का मिलना इस स्थल के ईसाइयो के प्राचीन सास्कृतिक केन्द्र होने का प्रमाण है। वे उसका सम्बन्ध ५ ईसवी मे सैंट टामस द्वारा सात गिरजो के निर्माण कराए जाने की कथा से जोडते हैं परन्तु इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नही हैं। अनेक प्रमुख इतिहासकार जिसमे इतिहासकार भी है इस कोरी कल्पना ठहरा चुके है। इस क्षेत्र मे ईसाइयो की सख्या नगण्य है।

पाया गया क्रूस एकदम नया

कहते है कि जिस समय कथित क्रूस मिला वहा लगभग ७० ८० मजदूर काम कर रहे थे लेकिन दो ईसाइयो का छोड कर किसी अन्य मजदूर को वह दिखाई नही दिया। क्षेत्र मे रहने वाले सभी वर्गों के लोगो का कहना है कि पाया गया कथित क्रूस एकदम नया था उस पर मिट्टी तक नही लगी थी और छैनी के ताजे निशान भी नही मिटे थे। उसके प्राचीन होने का तो कोई सवाल ही पैदा नही होता। शीघ्र ही इस घटना ने राजनीतिक रग लेना शुरू कर दिया। ७ मार्च का क्रूस अकस्मात गायब हो गया उसके बाद अखिल भारतीय कैथोलिक कांग्रेस के तत्त्वावधान मे नीलक्कल चर्च सघर्ष परिषद का गठन किया गया। उक्त स्थल पर एक कच्चा शेड भी डाल दिया गया। जिसका एक भाग चर्च के निर्माण के लिए अलग रख छोडा गया। काजिरापल्ली से एक लकडी का क्रूस लाकर वहा स्थापित किया गया। शेड पर कोई पन्द्रह आदमी अधिकार किए हुए है वे वहा नित्य प्रार्थना करते है

यह घटना सरकारी भूमि के अतिक्रमण की तो है ही इससे उस क्षेत्र मे भारी साम्प्रदायिक तनाव भी पैदा हो गया है। वैसे इस घटना पर अधिक ध्यान देने की जरूरत नही थी लेकिन जब कुछ विदेशी शक्तिया हमारे देश मे अशान्ति फैलाने तथा साम्प्रदायिक वैमनस्य भडकाने मे प्रयत्नशील है तब इसका विशेष महत्त्व है। पूर्वाचल मे मिशनरियो ने जो कुछ किया और आज पजाब मे जो कुछ हो रहा है तब यह घटना केरल मे राजनीतिक अस्थिरता का प्रयास मालूम पडती है।

८ मई १९८३ को अजमेर मे निर्वाण शताब्दी की सयुक्त बैठक मे भाषण करते हुए। कैप्टन देवरत्न आर्य चित्र मे दिखाई दे रहे है सर्वश्री सोमनाथ एडवोकेट राम गोपाल शाल वाले (वानप्रस्थ) प्रो० वेदव्यास मुलखराज भल्ला तथा आचार्य भगवान देव ससद सदस्य

सम्पादक—[illegible]

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड

वेद-मनन

मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो

—प्रेमनाथ, सभा-प्रधान

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृत प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु ॥ यजु० ३४।३

शिवसकल्प ऋषि, मन देवता, स्वराट् त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर।

शब्दार्थ —हे जगदीश्वर ! [यत्] जो (मन) [प्रज्ञानम्] उत्कृष्ट ज्ञानयुक्त अर्थात् विशेषकर ज्ञान का साधन बुद्धि-स्वरूप [उत्] और [चेत] स्मृति का साधन, [धृति] धैर्यस्वरूप (वा निश्चयात्मक वृत्ति) [च] वा (लज्जादि कर्मों का हेतु) (यत्) जो (प्रजासु) मनुष्यो के (अन्त) भीतर (अन्त करण मे आत्मा का साथी होने से) (अमृतम्) नाशरहित (ज्योति) प्रकाशयुक्त है, (यस्मात्) जिसके (ऋते) बिना (किंचन) कोई भी (कर्म) कार्य (न क्रियते) नही किया जाता है (तत्) वह (मे) मेरा (मन) (सब कामो का साधन रूप) मन (शिवसल्पम्) (सदा) शुभ गुणो की इच्छा वाला अथवा कल्याणकारी आप (परमात्मा) मे इच्छा रखने वाला (अस्तु) होवे ॥ (ऋषि भाष्य वा सत्यार्थ प्रकाश)

भावार्थ —परमात्मा उपदेश करता है—हे मनुष्यो ! जो अन्त करण, बुद्धि, चित्त और अहकार रूप वृत्ति वाला होने से चार प्रकार से भीतर प्रकाश करने वाला, प्राणियो के सब कर्मों का साधक नाशरहित मन है उसको न्याय वा सत्याचरण मे प्रवृत्त कर पक्षपात, अन्याय और अधर्माचरण से तुम लोग निवृत्त करो ॥ (ऋषिभाष्य) ॥

अतिरिक्त मन की व्याख्या—मन की एकाग्रता से ही विद्या को ग्रहण कर सकता है और गूढ प्रश्नो, समस्याओ वा शङ्काओ का समाधान कर सकता है, अतएव इस वेदमन्त्र मे इस 'प्रज्ञानम्' अर्थात् ज्ञान का साधन कहा गया है। मन की एकाग्रता से ही मनुष्य बहुत पुरानी बातो को भी स्मरण कर लेता इसलिये इसे 'चेत' कहा गया है। मन के बलवान होने से ही मनुष्य को धैर्य होता है अतएव इसे धृति कहा गया है। इसी मन के योग से ही सब मनुष्य की सब इन्द्रिया अपने अपने काय करने मे समर्थ होती हैं। इसके योग के बिना मनुष्य कानो से नही सुन पाता और आखो से नही देख पाता। सब इन्द्रियो का प्रकाशक होने से इसे 'ज्योति' कहते हैं। जीवात्मा जब मृत्यु समय शरीर छोड़ता है, तब मन उसके साथ जाता है। यह जीवात्मा के सूक्ष्म शरीर का अग है और इसे "अमृतम्" जीवात्मा का नाशरहित साथी कहा गया है। सब मनुष्यो को चाहिए कि इस मन को सदा धर्माचरण मे प्रवृत्त करने का अभ्यास करते रहें और इसकी सिद्धि के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते रहें।

बज उठा बिगुल !

—मोहनलाल शर्मा 'रश्मि'

वीर गर्जना दयानन्द की, याद हमे फिर आई है।
आर्यभूमि पर सकट की बदली फिर से मडराई है ॥

देश-धर्म की रक्षाहित आज सजग हो जाए हम।
वैरभाव की यह पावक, किसने देखो सुलगाई है ॥

जुल्मो के आगे झुके नही, वीर कभी इस भूमि पर।
श्रद्धानन्द से सन्तो ने यहा, सीने पर गोली खाई है ॥

प्रताप, शिवा, आजाद, भगत के उन बलिदानो की।
क्रान्ति-कथा वह अभी साथियो हमने नही भुलाई है ॥

इस ऋषि-मुनियो के सुन्दर पावन आर्य देश मे।
'ओम्' पताका आर्य वीरो ने मिलकर फिर फहराई है ॥

त्याग, प्रेम और सेवा के पथ को फिर से अपनाए।
दूर करें हम आज उसे जो, मन में मलिनता छाई है ॥

जो चल पडा कारवा देखो ये आज कही फिर रुके नही।
मिल रहे कदम से आज कदम, देता हमको दिखलाई है ॥

फैल सके ना द्वेषभाव का यह जहर कही भी।
बज उठा बिगुल अब 'रश्मि' सत्य की ज्योति जगाई है ॥

९०७।ए, फा लैंड गंज, दाहोद (गुजरात)

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली की नव निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन सम्पन्न-

रविवार १५-५-८३ को प्रात ९-३० से ११-३० बजे तक इस नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह पूर्वक सपन्न हुआ। उद्घाटन आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी शास्त्रार्थ महारथी पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी के करकमलो द्वारा हुआ। यज्ञ के यजमान आर्यसमाज के प्रधान श्री राम मूर्ति जी कैला उपप्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा एव श्री राम शर्मा थे। प० शिवा कान्त उपाध्याय, प० रूप किशोर शास्त्री, एव पूज्य स्वामी जी यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डालते हुये बताया कि "यज्ञो वै श्रेष्ठतम" कर्म अर्थात् यज्ञ ही सर्व श्रेष्ठ कर्म है इससे श्रेष्ठ कर्म अन्य कोई नहीं।

इस अवसर पर लाला हसराज जी गुप्त ने आर्यसमाज मन्दिर मे यज्ञशाला के अभाव की पूर्ति पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। इस उपलक्ष मे दान देने वालो की सूचि समाज के मन्त्री जी द्वारा सुनाई गई एव उनका धन्यवाद किया गया। कार्यवाई की समाप्ति पर सभी उपस्थित बहिन-भाईयो ने प्रीति भोज किया।

बोध-कथा

मजबूरी !

भारतीय राजनीति मे लिबरल (उदार) के रूप मे सुप्रसिद्ध श्री निवास शास्त्री उन दिनो मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे। वह न केवल नाम से उदार थे, व्यवहार मे भी उनकी उदारता देखते ही बनती थी। विश्वविद्यालय के प्राध्यापक अनुशासनहीनता या किसी भूल के कारण किसी छात्र को जब कोई दण्ड देते तब छात्र उपकुलपति के पास पहुचते और भविष्य मे भूल न करने का वचन देकर अपना दण्ड या जुर्माना माफ करवा लेते थे। उपकुलपति की इस उदारता से विश्वविद्यालय के अध्यापक तग आ गए। एक दिन वे शिष्टमण्डल के रूप मे उपकुलपति के पास पहुचे और शास्त्री जी से बोले—'आपकी इस उदारता से सस्था में अनुशासनहीनता बढ रही है, छात्र आपकी बात को छोडकर दूसरे किसी की बात सुनते ही नही हैं।" शास्त्री जी ने सारी बात सुनी। सुनकर बोले—"आप लोग बात तो ठीक कहते हैं परन्तु मेरी भी मजबूरी है।" प्राध्यापक बोल उठे—"कैसी मजबूरी ?"

कुछ सतय चुप रहकर श्री निवास जी बोले—"मैं अपना बचपन नही भूल पाता। मेरे पिता स्वर्गवासी हो गए थे। घर मे मेरी अकेली विधवा मा थी, घर मे घोर दरिद्रता थी, उन दिनो स्कूल की फीस कम होती थी, परन्तु मेरी मा मेरी पढाई की फीस भी बडी कठिनाई से जुटा पाती थी। वह मेरे लिए नए कपड़े भी नही सिलवा सकती थी। एक दिन घर मे बिल्कुल पैसे नही थे, पैसे न होने से साबुन न खरीदा जा सका, लाचार होकर मुझे मैले कपडो मे ही विद्यालय जाना पडा। मैले कपडो की लाज के कारण मैं एक कोने मे दुबका बैठा था। कक्षा मे आते ही शिक्षक ने कक्षा के सब बच्चो को देखकर मेरे मैले-कुचेले कपडे देखे और मुझ से कहा—'खडे हो जाओ। शर्म नहीं आती, इतने मैले कपडे पहनकर विद्यालय आ गए, तुम पर आठ आना जुर्माना किया जाता है ! मुझे अपना अपमान तो भूल गया, मुझे सारी चिन्ता इसी बात की थी जो मा सस्ते के जमाने मे एक आने की साबुन की बट्टी नही खरीद सकी, वह जुर्माने के आठ आने कैसे देगी। उसी समय से बड़े होकर भी मै वह घटना नहीं भूल पाता, छात्रो से स्थिति समझे बिना उन्हे दण्ड देना मुझे इसीलिए रास नही आता।"

सारी बात सुनकर प्राध्यापक सिर झुकाकर चले गए। —नरेन्द्र

प्रभु की मैत्री !

ओ३म् त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायत ।
न रिष्येत् त्वावतः सखा ॥ ऋग्वेद १,९१,८

इस जगती के सच्चे नियन्ता, तुम हमारी पापियों से रक्षा करो। जो आपसे सच्ची मैत्री कर लेते हैं, वे कभी भी नष्ट नहीं होते।

नए खतरे : नई सावधानताएं

देश की राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश के पूर्वांचल मे मिशनरियों ने जो कुछ किया है और राष्ट्र के पश्चिमोत्तर अचल में विशेषत पजाब मे जो कुछ हो रहा है, उसके बाद भारतभूमि के केरल क्षेत्र मे विदेशी शक्तिया जो कुत्सित खेल कर रही हैं, उससे समय रहते न केवल शासन को प्रत्युत समस्त भारतीय जनता को सचेत, सन्नद् और सगठित हो जाना चाहिए। केरल मे कृष्ण निवास गुरुवायूर मे और आदि शंकराचार्य के जन्मस्थान कालडी मे अवस्थित हिन्दू तीर्थों के समीप ईसाई यत्नपूर्वक अपने ईसाई तीर्थ स्थापित कर चुके हैं, अब उनका प्रयत्न है कि एक ऊची पहाडी पर विद्यमान नीलक्कल मे तीसरा ईसाई तीर्थ स्थान स्थापित किया जाए। हमारा देश संविधान की दृष्टि से धर्मनिरपेक्ष है, देश मे बहुसख्यक हिन्दू जनता रहने के बावजूद यहां विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को अपने-अपने धर्म मे विश्वास एव अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वाधीनता है। इस धर्मनिरपेक्षता का यह अर्थ भी नहीं है कि स्वार्थी साम्प्रदायिक तत्त्व देश में अपनी धर्मान्धता एवं साम्प्रदायिक प्रसार मनमाने ढंग से कर ले।

देश की राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के बाद अधिक समीचीन तो यही होता कि जिस तरह से हम अंग्रेजो की राजनीतिक पराधीनता से मुक्त हो गए हैं, उसी प्रकार, आर्थिक, शैक्षणिक, भाषाई, सांस्कृतिक पराधीनता से भी पूरी तरह मुक्त हो जाते। खेद है कि अपने सांस्कृतिक लक्ष्य स्पष्ट न होने और अनेक राजनीतिक उलझनों मे उलझे होने के कारण इस समस्या पर हम यथोचित ध्यान नही दे सके। हमारी इस असावधानता का ही परिणाम है कि ईसाई मिशनरी रोग निवारण, शिक्षाप्रसार, जनजातियो के कल्याण के नाम पर देश के पूर्वांचल एव आदिम जातियो के क्षेत्रों मे व्याप्त हो गए हैं। केरल से आए एक नए समाचार से स्पष्ट है कि अब वे शिक्षा की दृष्टि से जागरूक केरल में भी अपना व्यापक प्रचार एव प्रसार करने के लिए कृत सकल्प दीखते हैं। हमारी असावधानता का जहा ईसाई लाभ उठा रहे हैं, वहा उससे मुसलमान और अकाली तत्त्व भी पूरा लाभ उठा रहे हैं। अब समय आ गया है जब राष्ट्रवादी भारतीय जनता को स्पष्ट कर देना होगा कि इस देश का वही सच्चा नागरिक एव प्रजाजन हो सकता है जो मन-वचन कर्म से मातृभूमि भारतभूमि के प्रति वफादार हो, जो हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक तथा अरब सागर से बगाल की खाडी तक फैले विस्तीर्ण देश को अपनी पुण्यभूमि मातृभूमि समझकर उसके प्रति न केवल शब्दो से प्रत्युत प्रत्येक दृष्टि से वफादार हो।

जिस प्रकार चीन का ईसाई, मुसलमान, बौद्ध तथा दूसरे धर्मो पर आस्था करने वाला चीनी देशवासी पहले चीन के प्रति वफादार है, उसी प्रकार अपने-अपने धर्म को मानने वाले प्रत्येक भारतवासी को मातृभूमि भारत के प्रति अपनी वफादारी घोषित करनी होगी, प्रत्युत अपने कार्यों और जीवन से उसे भली प्रकार प्रमाणित करना होगा। साम्यवादी शासन की प्रतिष्ठा होते ही उस देश की सरकार ने विदेशी मिशनरियो के कार्यों पर रोक लगा दी थी। आज कुछ इसी तरह की पाबन्दी हमारे देश मे अपेक्षित है। प्रलोभन, भय, दबाव अथवा दरिद्रता का लाभ उठाकर विदेशी शक्तियो को जनता के धर्मान्तरण का मौका नहीं दिया जाना चाहिए। यह वोटों का युग हैं, हिन्दुओ से एक प्रतिशत अधिक बहुमत पाकर पजाब मे सिख किस तरह का रवैया धारण कर सकते हैं, ऐसी स्थिति सम्पूर्ण देश में न आए इसके लिए शासन को तो सावधान होना ही पड़ेगा, साथ ही आर्यसमाज सरीखे प्रगतिशील जागरूक संगठन एव समस्त आर्य हिन्दू जनता को सचेत, सन्नद् एवं संगठित हो जाना चाहिए। हमारी अपनी शक्ति ही हमारा एक-मात्र अवलम्ब है, इस कटु जीवन तथ्य को हमें हृदयंगम कर लेना चाहिए। चाहे आन्तरिक अव्यवस्था को दूर करने का प्रश्न हो अथवा बाहरी राजनीतिक, सैनिक और सांस्कृतिक आक्रमण से सुरक्षा का प्रश्न हो, हमें केवल अपनी ही शक्ति पर भरोसा कर भविष्य की नीति का निर्धारण करना चाहिए।

दुश्चरित का त्याग एवं सुचरितों में प्रीति करें।

दुश्चरितो का त्याग करने एव सुचरितो का आचरण करने से ही एक समय भारत भूमि के लोगो का यश पृथ्वी भर मे फैला था।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन ।
स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा । (मनु—२-२०)

इस जीवन मे अभ्युदय एव देहान्तर के बाद सच्ची मुक्ति अच्छे चरित्र से ही सम्भव है।

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहित ।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ॥

दुश्चरित्र से विरत न होने वाला, मन और इन्द्रियो को सयम मे न रखने वाला, चित्त की स्थिरता का अभ्यास न करने वाला एव विक्षिप्त मनवाला मनुष्य केवल बुद्धि-बल से आत्मा को प्राप्त नही कर सकता।

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मन ।
किं नु मे पशुभिस्तुल्यं किं वा सत्पुरुषैरिति ॥

मनुष्य प्रतिदिन अपने चरित्र की परीक्षा करे कि वह मुझ मे पशुओ के तुल्य कितना है और कितना सत्पुरुषो के तुल्य है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनु वर्तते ॥ (गीता)

जिसका आचरण श्रेष्ठ होता है, वही श्रेष्ठ पुरुष गिना जाता है, अतएव स्वय श्रेष्ठ बनो और अपना आचरण दूसरो के लिए प्रमाण कर दो।

भद्रं कर्णेभि शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायु ॥

यजनीय देवो, हम कानों से भद्र का ही श्रवण करें, आख आदि इन्द्रियो से भद्र को ही देखे, और अनुभव करें। अपने दृढ़ अगो से अपने सुदृढ शरीरो से सदा स्तुति-पूजा करते हुए हम ईश्वर प्रदत्त आयु प्राप्त कर लें।

यदन्तरं तद् बाह्यं यद् बाह्यं तदन्तरम्। (अथर्व २·३०·४)

जो तेरे अन्दर हो, वही बाहर हो और जो बाहर हो, वही अन्दर हो।

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं।
बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥ (यजु ३६·२)

मेरी आख आदि बाह्य इन्द्रियो के जो दोष हैं, उनकी जो त्रुटि और न्यूनता है, मेरे हृदय, मन या बुद्धि का जो दोष है, उन सब को बृहत् विश्व के ज्ञानमय रक्षक परमेश्वर ठीक कर दे।

परि माग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृता अनु ॥ (यजु ४ २८)

मेरे जीवन यज्ञ के अग्रणी अग्निदेव परमेश्वर, आप मुझे दुश्चरितो से सब ओर से दूर कर सुचरितो मे मेरी प्रीति और भक्ति करें। मैं उनका ही सेवन करूं।

चिट्ठी-पत्री

'नमस्ते' की व्याख्या : हृदय, हाथ और हाथ द्वारा स्नेहाभिव्यक्ति

आर्य लोग दोनो हाथ जोडकर तथा उन्हे हृदय के निकट लाकर नतमस्तक हो 'नमस्ते' का उच्चारण करते है। इन क्रियाओ का अभिप्राय यह है कि हम 'नमस्ते' के द्वारा अपने हृदय, हाथ तथा मस्तिष्क—तीनो की प्रवृत्तियो का सयोजन करते है। हृदय आत्मिक शक्ति का प्रतीक है, भुजाए शारीरिक बल की द्योतक है तथा मस्तिष्क मानसिक शक्ति का केन्द्र है। इस प्रकार 'नमस्ते' के उच्चारण तथा इसके साथ थोडा मस्तक झुकाकर दोनो हाथो को जोडते हुए हम इन भावो को अभिव्यक्त करते है—सम्पूर्ण शारीरिक बल की द्योतक अपनी भुजाओ, सम्पूर्ण मानसिक शक्ति के केन्द्र अपने मस्तिष्क और सम्पूर्ण आत्मिक शक्ति एव सच्चे स्नेह के प्रतीक अपने हृदय से मैं आप में अन्तर्निहित आत्मतत्त्व के प्रति मैं अपना स्नेह एव सम्मान अभिव्यक्त करता हूं।

याज्ञवल्क्य मैत्रेयी का अध्यात्म विकास प्रेरक संवाद

वैदिक युग के ऋषियो द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अवलम्बन करते हुए उपनिषद् काल के तपस्वियो ने जीवन के जिस लक्ष्य को सर्वश्रेष्ठ कहा है वह है 'यज्ञ'। यजुर्वेद के १।१ के अनुसार जहा यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है, वहा इमी वेद के १८।२९ मत्र मे प्रभु आदेश देते हैं 'आयुर्यज्ञन कल्पताम्' ऋषि दयानन्द के आर्याभिविनय' मे किए गए अर्थ के अनुमार 'यज्ञ-यज्ञनीय जो सब मनुष्यो का पूज्य इष्टदेव परमेश्वर उसके अर्थ अति श्रद्धा से सब मनुष्य सर्वस्व समर्पण दयावत् करें। छान्दोग्य उप० २।३४ ।१ से १३ तक इस जीवन यज्ञ को तीन भागो मे बांटा गया है--(१) आयु के पहले भाग २४ वर्ष, 'वसु' नाम से प्रात सवना व (२) ३३ वर्ष 'रुद्र' नाम से मध्यदिन सवना (३) ४८ वर्ष 'आदित्य' नाम से 'विश्वदेव' तृतीय सवन—इस प्रकार तीनो सवनो की कुल आयु १०८ वर्ष (१०८ व इसी सख्या से, प्राय योगीजन व महात्माओ को आभूषित किया जाता है) प्राप्त करता हुआ द्यु-लोकवत्, तेजोमय हो जाता है। 'सत्यार्थ प्रकाश', तृतीय समुल्लास मे ऋषि दयानन्द के शब्दो मे—"अखडित ब्रह्मचर्य सेवन करके पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढायें, वैसे तुम भी बढाओ। छ० उप० ४।१६ मे इस समूची सृष्टि को यज्ञरूप अभिव्यक्त करते हुए यज्ञ को उच्चतम गौरव पद पर अधिष्ठित कर दिया। उपनिषद् के शब्दो मे सृष्टि मे जो कुछ पावन कार्य हो रहा, वह 'यज्ञ' ही है। यह गतिशील है। गति ही ससार मे पवित्रता का हेतु है, यही तो 'यज्ञ' है। इसके दो कार्य हैं--'वाणी' और 'मन । यज्ञ मे 'ब्रह्म' वाणी का प्रयोग नही करता, 'मन' द्वारा ही यज्ञ के कार्य का सस्कार व परिमार्जन करता है। होता, अध्वर्यु, उद्गाता—तीनो मन' का प्रयोग न कर 'वाणी' द्वारा ही 'ऋचा-पाठ' करते हैं। इसी प्रकार सृष्टि-यज्ञ अर्थात् गतिरूप यज्ञ का कुछ लोग 'मन' के द्वारा और कुछ 'वाणी' द्वारा अनुष्ठान करते हैं।

सर्वोत्तम यज्ञ 'अध्यात्म यज्ञ' —गीता

इसी परिप्रेक्ष्य मे श्री कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय मे २८-३३ तक के श्लोको मे (१) 'द्रव्य यज्ञ' (२) 'तपो यज्ञ' (३) 'योग यज्ञ' (४) 'ध्यान यज्ञ' (५) 'ज्ञान यज्ञ - इन पाच प्रकार के यज्ञो के साथ आदान-प्रदान निरोध स्वल्प और नियत आहर इत्यादि यज्ञ के विविध अग बताते हुए स्पष्ट घोषणा कर दी हैं सब प्रकार के द्रव्यमय यज्ञो मे श्रेष्ठ 'ज्ञान यज्ञ ही है। क्योकि—हे अर्जुन ! जीवन के सारे कर्म ज्ञान मे ही परिसमाप्त हो जाते हैं। ज्ञान से अभिप्राय पुस्तकीय ज्ञान व मौलिक ज्ञान से नही किन्तु आध्यात्मिक ज्ञान' से ही है।

अग्रतम ऋषि याज्ञवल्क्य शब्द् का अर्थ

उपनिषद् कालीन यज्ञ के इस स्वरूप के साथ कर्मकाड तक सीमित न कर उसे अध्यात्म ज्ञान द्वारा ब्रह्म साक्षात्कार तक पहुचने और उसके साधनो का वर्णन करने वाले जो ऋषि हुए, उनमे अग्रतम और पूर्णत समर्पित याज्ञवल्क्य ऋषि थे। जिनके कई प्रवचन याज्ञवल्क्य— जनक व अपनी पत्नी मैत्रेयी के साथ हुए सवादो मे 'बृहदारण्यक उप०' मे अकित है। ऋषि का याज्ञवल्क्य यह नाम ही स्वय एक सार गर्भित अर्थ का द्योतक है। मूल शब्द है 'यज्ञ' और 'वल्क'। 'यज्ञ शब्द को 'क्ञ्' प्रत्यय होने से 'यज्ञ' और 'वल्क' शब्द को तद्धित प्रत्यय से वाल्क्य' रूप हो गया। यज्ञ' शब्द की तो व्याख्या हम पहले ही कर चुके हैं। 'वल्क' का अर्थ 'वृक्ष की छाल' अभिप्राय यह वह श्रेष्ठ और वरेण्य व्यक्ति जिसका समूचा आपाद मस्तक जीवन (शरीर-मन आत्मा सहित) यज्ञ के मध्य स्वरूप से समावृत है—वही ऋषिवर, यज्ञरूप याज्ञवल्क्य है।

जनक की सभा मे याज्ञवल्क्य

इसी उपनिषद् के अनुसार जनक राजा द्वारा आयोजित महान् यज्ञ, अनेक प्रमुख और उच्च विद्वानों और विदुषी गार्गी सहित, की उपस्थिति, दक्षिणा के लिए जनक द्वारा स्वर्ण मण्डित सींगो वाली एक सहस्र गौओ को सर्वोत्तम विद्वान् को भेंट मे देने की व्यवस्था, याज्ञवल्क्य द्वारा अपने शिष्यो को इन गौओ को हाककर ले जाने का आदेश, विद्वत् सभा मे ऋषि के इस कार्य पर खलबली, याज्ञवल्क्य द्वारा प्रश्नोत्तर का खुला आह्वान विद्वानो द्वारा पूछे गए प्रश्नो का युक्तिसगत समाधान, याज्ञवल्क्य द्वारा अन्त मे गार्गी द्वारा पूछे गए दो 'प्रति-प्रश्नो' का युक्तिसगत उत्तर प्राप्त कर गार्गी की यह घोषणा 'हे विद्वानो। याज्ञवल्क्य अद्वितीय विद्वान् और ब्रह्मर्षि हैं, वह अजेय हैं।' यह विस्तृत प्रश्नोत्तर तथा यज्ञ भक्त जनक द्वारा गुरु पद प्रतिष्ठित इत्यादि—यह समूचा विवरण इस उपनिषद मे अकित है। ऋषि का सार रूप मे कथन है कि विश्व मे व्याप्त बहुविध, बहुमुखी, अदृश्य, सूक्ष्म शक्तियो के एकसाथ सूत्रधार ब्रह्म का सान्निध्य, सामीप्य और प्रत्यक्ष दर्शन यज्ञमय जीवन द्वारा तथा आत्मज्ञान प्राप्ति—यही आनन्द और मोक्ष का मार्ग है।

याज्ञवल्क्य मैत्रेयीका अनुपम संवाद

इसी उपनिषद् के ३।४, ५ के अनुसार जब ऋषि याज्ञवल्क्य तुरीय आश्रम में प्रविष्ट होने लगे, उन्होंने अपनी पत्नी मैत्रेयी को यथेष्ट लौकिक धन-सम्पदा मागने का वर दिया। इस अवसर पर पति-पत्नी के मध्य हुआ सवाद और अन्त मे ऋषि द्वारा दिया गया अनुपम अमूल्य उपदेश विश्व के आध्यात्मिक साहित्य में आज के चौराहे पर खडे दिग्भ्रान्त अहर्निश भोगमय जीवन मे आकठ-लिप्त मकडी के स्वरचित जाल की तरह चिन्ता, निराशा, आत्महत्या इत्यादि की घूमन-घेरियो में ही हर क्षण फसे मानव के लिए प्रतिक्षण ज्योति स्तम्भ की तरह प्रकाश प्रेरणा और आत्म-विश्वास तथा शक्ति प्रेरक है! सक्षिप्त मे यह उपदेश इस प्रकार है—

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

मैत्रेयी की एक मात्र आकांक्षा अमृतत्व

याज्ञवल्क्य—हे प्रिये ! मैं अब सन्यास आश्रम मे प्रवेश कर रहा हू। तुम यथेच्छ वर भोग लो, सासारिक वैभव, धन सम्पत्ति, सन्तान इत्यादि का—

मैत्रेयी— ऋषिवर, अगर यह सारी पृथ्वी वित्त से पूर्ण मुझे प्राप्त हो जाए, तो क्या मेरे जीवन की सब आकाक्षायें पूरी हो जायेंगी और मुझे अमृत (मोक्ष) व अमरता प्राप्त हो जाएगी ?

याज्ञवल्क्य—प्रिये ! ऐसा तो सम्भव नही। जैसे अन्य साधन-सम्पन्न व्यक्ति अमन-चैन से रहते हैं, तुम भी वैसी ही हो जाओगी।

मैत्रेयी—भगवन् ! जिस वस्तु को प्राप्त कर मैं अमृत पद प्राप्त नहीं कर सकती, उसे लेकर मैं क्या करू ? ऋषिवर ! मुझे तो अमृतत्व प्राप्त करने का ही मार्ग बताइए।

ऋषि का पत्नी को उपदेश

पत्नी के इस प्रबल आग्रह पर ऋषि याज्ञवल्क्य ने जो उपदेश दिया, सचमुच, वह बडा ही मार्मिक अन्त स्पर्शी चिर-स्थायी, और आत्म उद्बोधक है। ऋषि कहते हैं—

(१) पति-पत्नी एक-दूसरे को केवल इसे दाम्पत्य सम्बन्ध से प्रिय नही होते, पर तभी तक प्रिय हैं जब पति को पत्नी से और पत्नी को पति से आत्मसन्तुष्टि होती है। क्या जीवित काल में ही दोनों के नाते सर्वथा टूट नहीं जाते भले ही प्रेम और पसन्दगी का विवाह हो।

(२) पुत्र केवल पुत्र होने के नाते प्रिय नहीं होता पर आत्म कामना की पूर्ति तक ही प्रिय होता है। जब सन्तान मर जाती है, तब माता-पिता के लिए तो वह पुत्र व पुत्री है, पर इस मृत सन्तान से भला कोई प्यार करता है।

(३) इसी प्रकार वित्त सम्पत्ति गुरु-शिष्य, भाई-बहिन, माता-पिता, देवत्व समस्थ भूत, आदि आदि। यह सब तभी तक प्रिय प्रतीत होते हैं, जब इनसे अपना कोई हित, स्वार्थ, आकांक्षा एक शब्द मे आत्म कामनायें—पूरी होती रहती हैं। ऐसा न होने पर हम उन्हे अपने जीवन मे से दूध मे से मक्खी निकाल फेंकने की तरह सम्बन्ध विच्छेद कर लेते हैं। ऋषिवर ज्ञाज्ञवल्क्य अन्त में पत्नी मैत्रेयी से कहा।

एक मात्र मार्ग

आत्म व अरे द्रष्टव्य श्रोव्य मन्तव्यष्टते निदिध्यासितव्य मैत्रेयी ! आत्मनो व अरे दर्शनेन, श्रवणेन, मत्या विज्ञानेन इदं सर्वविदितं भवति।

अर्थात्—हे मैत्रेयी ! वह आत्मा ही द्रष्टव्य श्रोतव्य, मन्तव्य और परब्रह्म की भक्ति से ध्यान-चिन्तन-मनन करने योग्य है। इस आत्मा के, ब्रह्म की कृपा से, देखने-सुनने, समझने और ध्यान-चिन्तन से जीवन की सब गाठें खुल जाती हैं।

हे मानव ! इस अमूल्य और दुर्लभ देह को प्राप्त कर इस कटकाकीर्ण और समस्यापूर्ण ससार के आह्लाद प्रसन्नता से जीना चाहते हो जो परब्रह्म परमात्मा की भक्ति, उपासना और समर्पण की उत्कट भावनाओ आत्म, चिन्तन और दर्शन का एक मात्र मार्ग साधना का ही है। "नान्य: पन्था विद्यते अयनाय" मोक्ष का अन्य मार्ग नही है।

के० सी० ३७ बी, अशोक विहार दिल्ली-५२

शहीद बिस्मिल की बहन को आजीवन सहायता

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश की कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव मे शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की बहन व स्वतन्त्रता सेनानी श्रीमती शास्त्री देवी को आजीवन सरक्षण देने का सुझाव रखा है। एक भेंट पत्र में उनसे अनुरोध किया गया कि वह परिषद् के मुख्यालय आर्यसमाज कबीर बस्ती में जीवनपर्यन्त रहें, जहां उनके खान पान व आवास की सुन्दर व्यवस्था की जाएगी। आर्य युवकों का एक प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही इस सदर्भ में श्रीमती शास्त्री देवी से पुन भेंट कर कारगर कदम उठाएगा।

परिषद् के महासचिव श्री अनिल कुमार आर्य ने स्वयसेवी सस्थाओं व सामाजिक कार्यकर्ताओ को आह्वान किया कि वे देश के लिए शहीद हुए परिवारजनों को हर प्रकार का सहयोग दें। न कि सरकार से मांग करें या प्रदर्शन करें। उल्लेखनीय है कि श्रीमती शास्त्री देवी अपनी वृद्धावस्था में उत्तम नगर क्षेत्र में चाय की दुकान चला रही हैं।

धन के दो रूप

दो-दो अक्षरों वाले तीन शब्द अपने स्वरूप में देखने में बडे सुहाने और सुनने मे कानों को बडे मनोहर और सुरीले लगते हैं, परन्तु अपने व्यापार में ये इतने भयानक उत्पातक हैं कि जो मनुष्य को जन्म से मरण पर्यन्त नचाए रहते हैं। पर यदि वह इनको वश मे करके इनका दास न होकर इनका स्वामी बन जाता है, तो वह एक आदर्श पुरुष बनकर सफल मनोरथ हो जाता है परन्तु इसके विपरीत यदि वह दुर्भाग्य वश इनका स्वामी न बनकर वशीभूत हो इनके इशारो पर नाचने लगे, तो बस महती विनष्टि ही होगी और दु.खो और वासनाओ के गर्त मे गिर कर जीवन भर भटकता ही रहेगा। हमारे ऋषि-मुनियों और धर्माचार्यों ने प्राचीन धर्म ग्रन्थो में इनके सम्बन्ध मे बहुत कुछ विस्तार से लिखा है और वेदो मे भी इनका बहुत कुछ वर्णन किया गया है। इनके सम्बन्ध मे किसी ने सत्य ही कहा है।

दो अक्षरो का मेरा नाम।
करता हूं उत्पात् महान॥

ये दो-दो अक्षरो वाले अद्भुत शब्द "धन," "माया" और 'मन' हैं। धन और माया तो साधारणतया पर्यायवाची हैं और मन से तो सब ही भलीभांति परिचित ही हैं।

कुछ दिन हुए हमारा धोबी कपडे धोकर लाया और उस समय संयोग वश मैं घर पर ही था। मैंने जब पास रखे कपड़ों पर दृष्टिपात की और उनको हाथ से छूकर बोला "मोहन भय्या। (धोबी का नाम) इस बार तो कपड़े कुछ करारे नही हैं लिस्से-लिस्से से हैं न और इनकी पहली चमक दमक ही है।" धोबी बोला, "बाबू जी। इस बार बरसात के कारण इनको माया (माड् कलफ) नहीं लग पाया, इसीलिए ये लिस्से-लिस्से और बेचमक से हैं। अगली बार जब वह फिर कपड़े लाया तो वे बडे सुन्दर और करारे थे। धोबी स्वयं ही बोला, "देखो बाबू जी इस बार माया (कलफ माड) लगने से ये कैसे सुन्दर और करारे दीख रहे हैं।" मैंने कहा, "हां भाई! अब मैं समझा कि यह माया ही है कि जिसके सम्पर्क मे आने से ये कपड़े इतने सुन्दर और सुहाने लगते हैं।" परन्तु जब मैं अगले दिन उन कुर्ते और पाजामे की तह को खोलकर पहनने लगा तो सच मानिए वह कपडे जो अधिक माया (माड) लगने के कारण चिपक से गये थे तह खोलने के प्रयास मे कई जगह से फट गए और मैं स्तब्ध-सा रह गया। सम्भवत ऐसा अनुभव आप में से बहुतो का होगा। यह एक अनुभव की बात है और वास्तविकता है, परन्तु इसके पीछे एक और वास्तविकता छिपी है। सचमुच यह माया (धन) ही किसी भी मनुष्य को मान और सत्कार का पात्र बनाती हैं। और इसी माया को पाकर लोग सभा, सोसाइटी मे शोभा और मान पाते है। किसी भी आदमी का मूल्याकन इसी माया के द्वारा ही होता है।

माया तेरे तीन नाम
परसु परसा और परसराम

निससदेह है यह माया बडी चाहने योग्य वस्तु। परन्तु जब यह अधिक मात्रा मे किसी मनुष्य के पास कुछ अधिक परिश्रम किए बिना आ जाती है तब उस मनुष्य के दिमाग का भला कोई अन्दाजा लगा सकता है वह अकड कर चलता है और किसी से सभ्यतापूर्वक बात तक भी नहीं करता और इतना अभिमानी और दुष्वृत्तियो वाला हो जाता है कि एक सभ्य मनुष्य उससे बात करने से भी कतराता है। सौजन्यता और शालीनता उसके पास तक नहीं फटकते और यही समझने लगता है कि ससार में उसके समान संभवत और दूसरा कोई मनुष्य है ही नही पुराणो में लक्ष्मी का वाहन उल्लू बताया है और यह सत्य ही है। कि माया के प्रचुर मात्रा मे प्राप्त होने पर मनुष्य उल्लू का-सा व्यवहार करने लगता है। धन ऐश्वर्य मदमत्त मनुष्य को धर्म-अधर्म का ज्ञान ही नहीं रहता था। धनियो का अग्रणी कुबेर कुत्सित शरीर वाला बतलाया गया है। धन का मद सभी के स्वभावों को विकृत कर देता है। परन्तु साथ ही साथ यह है भी बडी चंचल। किसी के पास चिरकाल तक रहने का इसके स्वभाव के सरासर विपरीत है। यह छाया के समान चचल और अस्थायी है आज यहा कल वहा। इसीलिये वेद मे एक स्थान पर आया है 'कस्यस्विद्धनम्' अर्थात् यह धन किसी का भी नहीं है। यह रथचक्र के अरे के समान चचल है एक क्षण मे ऊपर और दूसरे क्षण मे नीचे। ऋग्वेद में एक स्थान पर यह भाव बड़ी सुन्दरता से व्यक्त किया है।

"आहि वर्तन्ते रथ्येव चक्राऽन्यनन्मु
प्रतिष्ठान्त राम"।

इसकी चचलता को ही देखकर किसी नीतिकार ने इसको वेश्या से भी उपमा दी है। जैसे वेश्या किसी एक की होकर नही रहती, चाहे उसे कितना ही प्यार और धन का लोभ क्यो न दिया जाए, ठीक इसी प्रकार यह माया (धन-दौलत) भी किसी एकके पास चिरकाल तक नही रहती। एक मनोरजक बात है कि कई साधारण भोली-भाली युवतिया लक्ष्मी की चचलता को हेय समझकर अपना नाम लक्ष्मी रखना भी पसन्द नही करती। कहते हैं कि एक सास प्यार के कारण अपनी नई नवेली पुत्रवधू को लक्ष्मी कहकर पुकारने लगी, तो नवयुवती ने बडे खिन्न होकर अपनी सास से कहा—'माता! मुझसों क्या दोष भयो जो लक्ष्मी नाम धरो वह कुत्तिया (लक्ष्मी) तो घर-घर फिरे, मैं तो घर मे ही रहूं।

परन्तु यह सोचना वृत्ति और चचल स्वभाव लक्ष्मी (माया धन) जीवन की मौलिक वस्तुएं जुटाने का एक आवश्यक अनिवार्य-साधन है। और इसी कारण सभी छोटे-बडे इसकी लालसा करते हैं। मदा से ही और विशेषकर इस युग में सारे ससार मे एक ही आवाज सुनाई देती है—"रोटी,कपडा और मकान" वस्तुत इन ही तीनो चीजो मे मनुष्य की मूलत सभी आवश्यकताओ का समावेश हो जाता है प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे इसीलिए सभी प्राणी, देश व राष्ट्र इसके जुटाने मे लगे हैं। यह मानव व राष्ट्र की आवश्यक्ताओ का केन्द्र विन्दु है। सारा ससार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस दो अक्षरो वाली (माया, धन) वस्तु के जुटाने की होड मे लगा है। कुछ पाश्चात्य लेखको का मत है कि मसार मे जितने भी छोटे-बडे युद्ध अब तक हुए हैं चाहे वे यूरोप में फ्रास और इग्लैण्ड के बीच हुए हो, या अमेरिका और जापान रूस और जर्मनी के बीच हुए हो, या चीन और जापान के बीच हुए हो, या भारत और पाकिस्तान और चीन के बीच हो या महाभारत काल मे कौरव पाण्डवो के बीच हुए हो—ये सब धन माया के कारण ही थे या यू कहिए कि ये सब राजनीतिक युद्ध न होकर आर्थिक सग्राम थे। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि महमूद गजनबी ने तो मुर्दों के मुह से भी रुपया निकालने मे भी जरा सकोच नही किया था। "हमारे धर्म ग्रन्थो मे भी कही धन की निन्दा नही की गई है। अपितु इसको जुटाने और इसके स्वामी बनने की प्रार्थनाएँ की हैं "वय स्याम पतयो रयिणाम"। हमारे पूर्वजो ने निर्धन होना पाप बतलाया है। दरिद्रता निर्धनता एक सामाजिक कलक है और महा अभिशाप भी। वर्तमान मे गुट निरपेक्ष जैसे महा सम्मेलन इस धन की दृष्टि से ही तो किए जाते है। तो भी हमारे ऋषियो ने इस माया धन को येन केन प्रकार से प्राप्त न करके केवल सत्य, न्याय और सरल मार्ग से प्राप्त करने का विधान किया है। प्रार्थना के ८वें मे ही आया है अग्ने नय सुपथा राये।' मनु महाराज ने भी धन की शुद्धि मानी है--"योऽर्थे शुचिर्हि स शुचि न मृद्वारि शुचि शुचि" इसी दृष्टिकोण से आचार सत्याचार की तुलना मे धन को निम्न श्रेणी की वस्तु कहा गया है। अंग्रेजी भाषा मे इस भाव को बडे मुन्दर ढग से व्यक्त किया गया है।

जब चरित्र जाता है, सबकुछ खत्म हो जाता है, जब स्वास्थ्य जाती है, कुछ नष्ट हो जाता है, परन्तु जब सम्पत्ति नष्ट होती है, कुछ भी नष्ट नही होता इसीलिये तो हमारे ऋषियो ने धर्म ग्रन्थ मे इस भौतिक धन माया को इतना महत्व नही दिया जितना कि पाश्चात्य देशो ने इसको महत्व दिया है जिस कारण वहा सब कुछ होते हुए भी अशान्ति का वातावरण बना हुआ है और कोई भी अपने को सुरक्षित नही समझता सब एक दूसरे को हडप करने के नए-नए साधन जुटाने मे लगे हैं। परन्तु हमारे पूर्वजो ने इसको जीवनोपयोगी जानकर भी इसकी निस्सारता को समझा है। वेदो में दो प्रकार के धनो का उल्लेख है एक "अल्प धन" और दूसरा "महान धन" और अल्प धन सासारिक धन के साथ-साथ महान धन (ज्ञान धन) की भी प्रार्थना की गई हैं—

अर्थात् आन्तरिक धन-ज्ञान धन ही महान धन है और इसकी तुलना मे यह सासारिक धन (माया) अल्प धन कहा गया है। यह अल्प धन तो केवल जीवन निर्वाह के लिए, सासारिक व्यापार चलाने और शारीरिक और सामाजिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये है। परन्तु आत्मोन्नति के लिए तो महान धन—ज्ञानधन की आवश्यकता है। इसीलिये वेद में दोनो ही प्रकार के धनो के लिए प्रार्थना की गई है।

हमारे ऋषियो ने मानव जीवन को 'द्वि चक्र वाहन' कहकर पुकारा है अर्थात् दो पहियो वाला रथ-सवारी जिसका एक पहिया भौतिकता और दूसरा आध्यात्मिकता है परन्तु दुर्भाग्य वश मनुष्य गलती से भोग मार्ग को अपना कर ज्ञान और विचार शक्ति खो बैठा है। भौतिक-अभ्युदय की सामग्री जुटाने मे ही उलझ गया, जीवन वाहन के दूसरे अङ्ग आध्यात्मिकता-नि श्रेयस को भूल गया। प्रेय मन्त्र मार्ग को अपनाकर श्रेय मार्गसे कोसो दूर होता चला गया। और प्रकृति के चकाचौंध मे ऐसा फसा कि इसने अल्प धन वाह्य धन को जुटाने को ही जीवन का एक मात्र लक्ष्य बना लिया। इसीलिए हम सब दु खी है, अशान्त है।

अत जीवन की मफलता के लिए, सुख और शान्ति प्राप्त करने के लिए जीवन के दूसरे पहलू आध्यात्मिक पहलू की ओर भी ध्यान देना होगा। क्योकि ज्ञान धन ही प्रभु की ओर ले जाने में सहायक होता है। प्रभु कृपा करें कि हम दोनो प्रकार के धनो के प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

—चमनलाल
प्रधान, आर्यसमाज, अशोक विहार

सूचना

आर्यसमाज गाधी नगर दिल्ली का वार्षिक उत्सव ६ जून से १२ जून १९८३ तक होगा। जिसमें प्रो० उत्तम चन्द्र जी शरर, वैद्य राम किशोर, महात्मा वेद मित्र चमनलाल शास्त्री पधार रहें हैं तथा भजन श्री सत्यपाल मधुर के हुआ करेंगे।

आर्य जगत् समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अजमर मे हो निर्वाण शताब्दी का आयोजन

सर्वसम्मत निश्चय- अजमेर में निर्वाण शताब्दी के कार्यालय का उद्घाटन

अजमेर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले द्वारा ३, ४, ५, ६ नवम्बर ८३ को मनाए जा रहे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह समिति के कार्यालय का उद्घाटन वेद मन्त्रो के उच्चारण एव जयघोषो के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सासद श्री आचार्य भगवानदेव, डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास, सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह, आर्य प्रादेशिक सभा पजाब के उप प्रधान श्री मुल्कराज भल्ला, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिह, बम्बई आर्यसमाज साताक्रुज के महामन्त्री केप्टन देवरत्न आर्य, दयानन्द वैदिक शोधपीठ अजमेर के अध्यक्ष डा० सुदर्शनदेव आचार्य, आर्यसमाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय आर्य, राजस्थान प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारीगण एव अतरग सभासद, अजमेर नगर एवं जिले के समस्त आर्यसमाजो के प्रतिनिधि तथा परोपकारिणी सभा के मत्री श्री श्रीकरण शारदा आदि गणमान्य आर्यजन उपस्थित थे।

इससे पूर्व आर्यसमाज अजमेर मे आयोजित शताब्दी समारोह समिति की बैठक श्री रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। जिसमे विभिन्न आर्य वक्ताओ ने अजमेर मे ही सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोहपूर्वक मनाने का सर्वसम्मत निश्चय किया और इसके लिए ११ सदस्यो की एक उच्चस्तरीय समिति बनाने का निश्चय हुआ। इस अवसर पर अजमेर नगर एवं जिले के आर्यजन भारी सख्या मे उपस्थित थे। इससे पूर्व प्रात अजमेर की समस्त आर्यसमाजो के प्रतिनिधियों द्वारा आर्य नेताओ का स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया।

धार्मिक क्रांति के लिए कटिवद्ध होने का आवाहन

अ० भा० सन्त सम्मेलन रामेश्वर धाम के निर्णय

नई दिल्ली, राजस्थान एव मध्य प्रदेश के वीरो ने गोवश रक्षा के लिए सदा अपूर्व सग्राम किये हैं। परन्तु विधि की विडम्बना है। आज इन्हीं प्रदेशों से गोवश ले जाकर हत्या की जा रही है। तथा गोमाम रेल एव सडको द्वारा ले जाया जा रहा है। उक्त शब्द यहा से अनुमान २५० किलोमीटर दूर घोर जंगल मे त्रिवेणी तट पर रामेश्वर धाम म०प्र० मे हुए परिषद के अध्यक्ष प० पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने कहे।

स्वामी श्री हरि जी ने घोषणा की कि आगामी २५ जुलाई १९८३ से भारत मे गोवश रक्षार्थ व्यापक आन्दोलन आरम्भ होगा।

उक्त सम्मेलन मे भारत के विभिन्न प्रदेशो से साधु सन्त एवं भक्तजन बडी सख्या मे चम्बल नदी के दोनो तटो पर एकत्र थे। गम्भीर विचार मथन के पश्चात यह निर्णय हुआ कि इस बार आन्दोलन का नेतृत्व त्यागीतपस्वी पूज्य साधु सन्तो के हाथ मे रहे। इस पाच दिवसीय अ० भा० सन्त सम्मेलन एव यज्ञ का आयोजन पूज्य परमहस जी की अध्यक्षता मे पूज्य स्वामी श्री रामानंद सरस्वती एव त्यागी बाबा जी द्वारा हुआ।

ईसाई नेता द्वारा गोवंश हत्या बन्द करने की अपील

नई दिल्ली। ईसाई नेता जार्ज फर्नाडीज ने केन्द्रीय कृषि मत्री राव वीरेन्द्रसिह को प० स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी का पत्र सलग्न कर गोवश हत्या बन्द करने की दिशा मे आवश्यक कार्यवाही करने को लिखा है। इस पत्र मे श्री जार्ज फर्नाण्डीज ने कृषिमन्त्री राव वीरेन्द्र सिह से कहा है कि कृषक परिवार से सम्बधित होने के नाते आप स्वय इस देश मे पशु धन के महत्व से भली भाति परिचित हैं। उसमे भी गोवंश का अति महत्व पूर्ण स्थान है। आशा है कि, गोवश की हत्या बन्द करवाने की दिशा में आवश्यक कार्यवाही करेंगे।

पढ़े-सुने पर सच्चा आचरण करो राष्ट्ररक्षार्थ-वाहिनी बनाओ

आर्यसमाज फरीदाबाद का उत्सव

आर्यसमाज सैक्टर २२, फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव २ मई से ८ मई तक धूमधाम से मनाया गया। वेद कथा मे धार्मिक उपदेश के अतिरिक्त आचरण सुधारने पर बल दिया गया। आचार्य सोनेराव जी शास्त्री ने कहा कि न पढने से पढना अच्छा, न सुनने से सुनना अच्छा और सबसे अच्छा है पढ़े व सुने हुए को आचरण में लाना। पारिवारिक सत्सगो मे गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने, पति-पत्नी सम्बन्धो को मधुर बनाने तथा बच्चो का निर्माण करने के लिये सरल साधन बतलाए।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मे राष्ट्र की वर्तमान समस्याओ पर खुलकर विचार किया गया। आचार्य सत्यप्रिय जी आचार्य सोनेराव जी, सरदार कुलबीर सिंह जी, ब्रह्मचारी राजसिंह तथा प्रोफेसर शेरसिंह ने पंजाब व असम की समस्या के लिए सरकार को दोषी ठहराया। सरकार की अग्रेजो द्वारा ली गई 'बांटकर राज्य करने की नीति' का विरोध किया गया। सरकार से मांग की गई कि विघटनकारी तत्वो से निपटने तथा अपराधियो को धार्मिक स्थलों से निकालने के लिए सख्ती से निपटा जाए तथा आर्यसमाज की एक सेना तैयार की जाए जिसे सैनिक प्रशिक्षण देकर स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रखा जाए। भजनो के माध्यम से प० चूनीलाल जी ने तथा सुशीला राजपाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समापन समारोह मे आचार्य सोनेराव शास्त्री ने सत्यप्रिय जी के भाषण का तुरन्त धाराप्रवाह सस्कृत में अनुवाद सुनाकर सबको चकाचौंध कर दिया। प्रीतिभोज के साथ उत्सव सम्पन्न हुआ।

स्वातन्त्र्ययोद्धा सावरकर की जन्म शताब्दी

दिनांक २२-५-८३ रविवार दिन ११ बजे हिन्दू महा सभा भवन मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे वीर सावरकर जी की शताब्दी वर्ष पर हिन्दू महा सभा भवन मे जन्म शताब्दी का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमे ९ हिन्दू बन्धुओ एव बहनो का अभिनन्दन किया जाएगा इस अवसर पर सर्वश्री वेदव्यास एडवोकेट, लाला रामगोपाल (शाल वाले) वान प्रस्थी श्रीमती सिन्धु, गोडसे, श्री के० नरेन्द्र आदि नेता सावरकर जी के जीवन पर अपने विचार प्रकट करेंगे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रामलाल असड़ी निगम पार्षद करेंगे।

आदिवासियों को ऋण की जगह पांच हजार रुपये का अनुदान बैल गाड़ियों के लिए दो

नई दिल्ली। आदिवासियो को दी जाने वाली सहायता में बढोत्तरी की जाए। अ० भा० गो सरक्षण परिषद के अध्यक्ष स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करते हुए बताया कि ६ मई १९८२ सायंकाल सवाआठ बजे विज्ञापन कार्यक्रम मे आकाशवाणी दिल्ली ने घोषणा की—कि १२० आदिवासियो को सरकार ने बैल गाडी खरीदने के लिए १००० रुपये ऋण के रूप मे दिया है। जब कि १००० रुपये में एक बैल भी नही मिलता बैल गाड़ी कैसे चलेगी?

श्री हरि जी ने बताया कि २६ मई १९८२ को गो सम्बन्धी सलाहकार परिषद मे विचार हुआ था कि जिनके पास पाच एकड से कम भूमि है उन्हें एक गाय एव २ बैल अनुदान मे दिए जायें। स्वामी जी ने सरकार से प्रश्न किया कि अनुदान की बजाये इतना कम ऋण देने से देश की गरीबी कैसे दूर होगी? स्वामी जी ने कहा कि ऋण की बजाय यह अनुदान कम से कम पाच हजार रुपया होना चाहिए।

महर्षि निर्वाण शताब्दी पर एक लाख सचित्र ट्रैक्टों का प्रकाशन

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम तथा योगेश्वर श्री कृष्ण के जीवन पर हजारों ट्रैक्ट व पोस्टर प्रकाशित करने के पश्चात् अब आर्यसमाज के संस्थापक, क्रान्तिकारी आचार्य महर्षि दयानन्द के जीवन पर सचित्र १लाख ट्रैक्ट आगामी ग्रीष्मकालीन अवकाश मे प्रसारित होंगे।

आर्यसमाज के लेखको, शोधकर्त्ताओं बुद्धिजीवियों से अनुरोध है इस ट्रैक्ट को अधिकाधिक आकर्षक बनाने हेतु केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के कार्यालय आर्यसमाज कबीर बस्ती, दिल्ली—७ के पते पर मूल्यवान् सुझाव व चित्र भेजें।

मानसा आर्यसमाज के प्रधान कुन्दनलालजी का स्वर्गवास

'आर्यसमाज मानसा (जिला भटिंडा) के प्रधान श्री कुन्दनलाल जी का स्वर्गवास २८-४-८३ को हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे व परिवार के सदस्यों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

प्रेषक: [illegible], सदस्य—आर्यसमाज, मानसा।

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार, २२ मई, १९८३ के कार्यक्रम अमर, कालोनी प. दिनशचन्द्र शास्त्री; अशोक विहार,प्रो० वीरपाल विद्यालकार; आर के पुरम् सैक्टर ५ प.ओम्वीर शास्त्री, आर. के. पुरम सेक्टर ६ प० ओम प्रकाश वेदालकार, आनन्द बिहार हरिनगर एल ब्लाक कवि व्याकुल जी, आर्यनगर पहाड गंज पं.रामरूप शर्मा, किंग्जवेकैम्प प. रोशन लाल जी; कालका डी डी.ए. फ्लेट प. देवेश महोपदेशक; करौल बाग कविराज प्रो० सत्यपाल बेदार, गाधी नगर पण्डित तुलसीराम भजनोपदेशक, ग्रेटर कैलास २ प. देवराज वैदिक मिशनरी, गुडमण्डी, प०विद्याव्रत शास्त्री-गुप्ता कालोनी पं.मनोहरलाल ऋषि; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका, प.ओम प्रकाश शास्त्री, चूना मण्डी पहाडगज प सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, जगपुरा-भोगल पं प्रेमचन्द श्रीधर महोपदेशक, जनकपुरी सी-३ पं. बन्वेश्वर शास्त्री; जनकपुरी बी-३/२४-आचार्य छविकृष्ण, टैगोर गार्डन डा. रघुनन्दनसिंह, डिफेन्स कालौनी प प्रकाशचन्द्र वेदालकार-दरियागज-प-रामनिवास जी; नयावॉस आचार्य विक्रमसिंह शास्त्री; नागलराया क्षीशराम भजनीक, नया मोतीनगर-श्रीमती सुशीला राजपाल नगर, शाहदरा ओम प्रकाश गायक; पजाबी बाग प. सत्यभूषण वेदालकार पजाबी बाग विस्तार आचार्य हरिदेव जी, बाग कडेसॉ बलवीर जी, बिरला। लाइन्स प अमरनाथ कान्त मयूर, विहार जय भगवान जी, माडल बस्ती-आचार्य नरेन्द्र जी, माडलटाउन प. रविदत्त गौतम महावीर नगर, प हरिदत्त वेदाचार्य, मोती बाग प हरिश्चन्द्र आर्य, रघुवीरनगर प. सोमदेव शर्मा, रमेशनगर प नन्दलाल निर्भय, राणा प्रताप बाग प. ईश्वरदत्त जी, राजौरी गार्डन प. रमेशचन्द वेदाचार्य; रोहतास नगर-पं. कामेश्वर शास्त्री; लड्डू घाटी, प० महेशचन्द भजनीक; विक्रम-नगर पं. खुशीराम शर्मा सदर बाजार पहाड़ी धीरज विद्याराम आर्य सराय रोहेला प. प्रकाशचन्द्र शास्त्री, सुदर्शन पार्क प्रो. भारत मित्र जी शास्त्री; शालीमार बाग प. सत्यपाल 'मधुर' हौजखास प. देव शर्मा शास्त्री; हनुमान रोड श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा रघुबरपुरा पं. हरिश्चन्द्र जी आर्य; वोट क्लब कवि व्याकुल जी विनयनगर प. चुन्नी लाल भजनोपदेशक; स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती; व्यवस्थापक, वेदप्रचार.

मघावा जा, अमृतसर क प० सत्यपाल जा पाथक आद आय विद्वान् पधार रह ह। अन्तिम दिन विद्यार्थिनियो के वीरतापूर्ण चमत्कारी कार्यक्रम दिखलाए जाएगे।

गुरुकुल करतापुर में नया प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतापुर (पंजाब) में जून १९८३ से नया प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश के लिये कम से कम कक्षा ५ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। प्रवेश नियम नि शुल्क मगावें।

इस गुरुकुल की विशेषतायें

१—योग्य एव प्रशिक्षित अध्यापक वर्ग, उत्तम निवास व्यवस्था नि.शुल्क शिक्षा।

२—गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित।

३—धर्म शिक्षा व सस्कृत अनिवार्य, गणित, हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध।

४—सात्विक, पौष्टिक भोजन, निजी गोशाला, पवित्र वातावरण।

सुखदेव राज शास्त्री

आयसमाज तीमारपुर का वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज तीमारपुर का वार्षिक निर्वाचन ता० १५-५-८३ को श्री वीरेन्द्र प्रताप जी की अध्यक्षता में निम्न लिखित सम्पन्न हुआ।

१—प्रधान—चौ० भीमसिंह जी।

२—उप-प्रधान-चौ० चन्दन सिंह और श्री कृष्ण लाल पोपली।

३—मन्त्री—श्री रामेश्वर दास

४—उप-मन्त्री—श्री रनवीर सिंह जी, और श्री विमल कान्त शर्मा।

५—को-अ०—श्री सुभाष सूद।

६—पु० अ०—श्री आनन्द प्रकाश।

कन्या गुरुकुल नरेला का रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल नरेला का रजत जयन्ती समारोह १३ से १५ मई १९८३ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। रविवार १५ मई को प्रात. बृहद यज्ञ की पूर्ण आहूति हुई जिसमे पाच यज्ञ कुन्डो पर यज्ञमान परिवार बड़ी श्रद्धा एव प्रेम से बैठे थे। यज्ञोपरान्त १२ बजे से २ बजे तक ऋषि लगर का प्रबन्ध था। २ बजे से कन्या गुरुकुल के संस्थापक स्वामी ओमानन्द सरस्वती के अभिनन्दन समारोह का कार्यक्रम था जिसमे भाग लेने के लिये देश के विभिन्न प्रान्तो से आर्य सन्यासी एव विद्वान पधारे थे। स्वामी जी के श्रद्धालुओ द्वारा उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया एव उनके द्वारा किये गये कार्य की भूरि-भूरि प्रशसा की गई एव फूल मालाओ द्वारा उनका अभिनन्दन किया गया। स्वामी जी को कार्य करने मे कठनाई उत्पन्न न हो और यातायात की सुविधा रहे तदर्थ स्वामी जी को एक नई जीप उपलब्ध कराने के लिये जनता ने दिल खोलकर दान दिया। प्रोफैसर शेरसिंह जी ने इस निमित १ लाख की अपील की।

रजि० न० डी० सी० 759
साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा कम्प्यू
गाधीनगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५, हनु

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष ७ अंक ३१ | रविवार २९ मई, १९८३ | १८ ज्येष्ठ वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५८

लोक सभा में आचार्य भगवान देव का भाषण

सिक्खों ने सदियों तक हिन्दू धर्म की रक्षा की है आज अलग क्यों ?

सिख धर्म के जन्मदाता गुरु नानक देव जी थे। वह इन्सानियत का पैगाम देते हुए पंजाब से लेकर मक्का मदीना तक पहुचे। बडे-बडे राजा महाराजा सुल्तान और बादशाह उनकी प्रेम की वाणी को सुनकर प्रभावित हुए और सिख धर्म संसार मे छा गया और प्रेम से छा गया। एक तो वह सन्त थे और दूसरे वह सन्त है जो आजकल स्वर्ण मंदिर मे बैठे हुए हैं और जो शस्त्र लेकर शैतानियत करके शासन करना चाहते हैं। गुरुनानक देवजी के साथ बाला और मर्दाना दोनो गए थे। मैं गृह मन्त्री जी को सुनाना चाहता हू—क्योंकि बहुत प्रसिद्ध बात है। उनको शायद मालूम भी होगी। एक शैतानो की नगरी उनको मिलती। गुरु नानक ने उनको आशीर्वाद दिया, बसे रहो। जो अच्छे आदमी थे उनको कहा कि उजड जाओ। मुझे लगता है गृह मन्त्री ने भी निश्चय कर रखा है कि शैतान स्वर्ण मंदिर मे बसे रहे, वही बंद रहे, जेल मे रहेंगे तो उनको रोटिया खिलानी पडेंगी लेकिन मंदिर मे रहकर कडाह प्रसाद वही का खाते रहें। परन्तु यह बात चलेगी नही।

हिन्दू गुरु ग्रन्थ साहब को मानते है, गुरुओं को मानते हैं। लेकिन वे दाढी खजर नही रखते, बाल नही रखते। यह प्रसिद्ध बात है कि पैसा कई गुरुद्वारो मे हिन्दुओ का चढता है और कडाह प्रसाद सरदार लोग खाते है क्योंकि हिन्दू व्यापारी लोग श्रद्धा से वहा पैसा चढाते हैं। मैं सब सिखो की बात नही करता हू। लेकिन जो वहा बैठे हैं वे इस तरह की शैतानियत कर रहे हैं, जो उग्रवादी सिख हैं, उनकी बात मैं कर रहा हू।

दूसरी बात यह है कि आज उन लोगों की श्रद्धा गुरुद्वारे के प्रति ऐसे उग्रवादियों के कारण घट गई है गुरुद्वारो मे उन्होने जाना बन्द कर दिया है। डपुटेशन गृहमन्त्री प्रधान मन्त्री तथा राष्ट्रपति जी से मिला भी है और उनसे कहा है उन्होंने कि हमारी श्रद्धा मत तोडो। वहा जो इस तरह के चन्द लोग बैठे है सिख भाईयो को चाहिए

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली की नवनिर्मित यज्ञशाला (उद्घाटन) स्मृति पत्थर का अनावरण करते हुए महात्मा अमरस्वामी जी।

शुद्धि एवं विवाह संस्कार

उच्च शिक्षा प्राप्त, अच्छी नोकरी वाले एक नौजवान मुस्लिम युवक ने ५ मई १९८३ को आर्य समाज हनुमान रोड में युवा विद्वान् श्री रूपकिशोर शास्त्री एम० ए० एम० फिल० रिसर्च स्कॉलर की अध्यक्षता में स्वेच्छा एवं प्रसन्नता-पूर्वक वैदिक धर्म की दीक्षा ली। पूर्वनाम श्री शेख अमीरुद्दीन बदलकर श्री अमित कुमार रखा गया।

फिर १५ मई ८३ को इस नवदीक्षित युवक का एक सुशिक्षित कार्यरत रेणुका नन्दा नामक कन्या से विवाह संस्कार करा दिया गया। इस अवसर पर दोनो प्रसन्न थे। आर्य समाज की ओर से दोनो को शुभाशीर्वाद।

खैरातीलाल भाटिया
मन्त्री
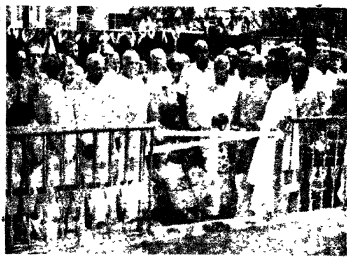
आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली की नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन महात्मा अमरस्वामी कर रहे हैं।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन मेरा मन शिवसंकल्प हो !

—प्रेमनाथ सभा प्रधान

येनेद भूत भुवन भविष्यत्परिगृीतममृतेन सवम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मन शिवसल्पमस्तु।।

शिवसकल्प ऋषि, मन देवता, त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर।

शब्दार्थ—हे जगदीश्वर ! [येन] जिस [अमृतेन] नाशरहित परमात्मा से युक्त रहने वाले, [भूतम्] व्यतीत हुआ, [भुवनम्] वर्तमानकाल सम्बन्धी (वा) [भविष्यत्] भविष्य मे होने वाला [इदम्] यह [सर्वम्] सब कुछ (त्रिकालस्थ व्यवहार) [परिगृहीतम्] सब ओर से जाना जाता है (अर्थात् जिससे सब योगी लोग इन सब भूत, भविष्यत् वा वर्तमान व्यवहारो की जानते है और जो नाशरहित परमात्मा के साथ मिल के जीवात्मा को त्रिकालज्ञ करता है) (वा जो) [सप्त होता] पाच ज्ञानेन्द्रिय, बुद्धि और आत्मायुक्त रहता है (तथा) [येन] जिसके द्वारा [यज्ञ] योगरूप यज्ञ [तायते] विस्तृत किया जाता है अर्थात् बढाया जाता है (तत्) वह [मे] मेरा [मन] मन (योग युक्त वित्त) शिव सकल्पम्] अविद्यादि क्लेशो से पृथक् होकर शिव [मोक्षरूप] सकल्प [इच्छा] वाला [अस्तु] होवे।।

(ऋषिभाष्य वा सत्यार्थप्रकाश)

भावार्थ—परमात्मा उपदेश करता है कि—हे मनुष्यो ! जो चित्त (मन) योगाभ्यास के साधन और उपसाधनो स सिद्ध हुआ, भूत, भविष्यत, वर्तमान तीनो कालो का ज्ञाता, सब सृष्टि का जानने वाला व कर्म, ज्ञान और उपासना का साधन है उसका मह कल्याणप्रिय करो।।

(ऋषि भाष्य)

अतिरिक्त मन व्याख्या—मनुष्य अधिक काल व्यतीत होने पर भूत की बातो को भूल जाता है और पिछले जन्म की बातो का तो उसको कुछ पता ही नही रहता। भविष्य के विषय मे भी उसका अपनी विद्या वा ज्ञान के अनुकूल अनुमान ही होता है। परन्तु योगी लोग परमात्मा के योग से भूत, भविष्यत वा वर्तमान तीनो कालो की बातो को जान लेते हैं। योगीराज कृष्ण भी गीता मे अर्जुन को कहते हैं—

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानितव चार्जुन।
तान्यह जानामि न त्व वरेश्व परन्तप।

अर्थात् हे अर्जुन मेरे वा तेरे बहुत जन्म हो चुके हैं परन्तु मैं उनका जानता हू और तू नहीं उनको जानता।

योगशास्त्र के साधनपाद वा विभूति पाद मे लिखा है कि योगी के पूर्व जन्मो का ज्ञान हो सकता है।

योग भी एक यज्ञ ही कहा जाता है और इसकी विस्तार मन द्वारा ही होता है क्योकि मन ही सब चित्त वृत्तियो को रोक कर आत्मा को अविनाशी अमृत परमात्मा से मिलाता है।

मन को "सप्त होता" कहा गया है क्योकि यह पाच ज्ञान इन्द्रियो, बुद्धि वा आत्मा से युक्त रहता है। आत्मा जब यह स्थूल शरीर छोडता है तो इसके साथ सूक्ष्म शरीर जाता है अर्थात् पाच प्राण, पाच ज्ञान इन्द्रिया, पाच तन्मात्रायें, बुद्धि वा मन।

'शिव' के अर्थ कल्याण के है सर्वोत्तम कल्याण तो मोक्ष ही है। बिना सकल्प वा प्रयत्न के किसी वस्तु की प्राप्ति नही होती। अत मोक्ष के लिए उत्कट सकल्प और परम पुरुषार्थ होना चाहिए। अर्थात् मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए मुमुक्षु, ज्ञानी वा योगी बने।

प्रेमनाथ सभा प्रधान

बोध-कथा ईमानदारी !

दिल्ली का एक बादशाह था। वह जनता के सुख-दुख का सदा ख्याल रखता था। प्रजा के सुख-दुख का ख्याल रखने के कारण ही उसे एक दिन अधिक रात बीतने पर भी नींद नहीं आई। वह राज्य की उन्नति के लिए बेचैन होकर घूमने लगा। अचानक उसकी नजर अपने शाही खजाने की ओर गई। खजाने की इमारत से रोशनी आ रही थी। उसने पहरेदार को आवाज लगाई। पूछा—"खजाने में रोशनी क्यो है ?" पहरेदारो ने खजाने की ईमारत मे जाकर पता लगाया तो मालूम हुआ कि खजाची साहब कुछ हिसाब-किताब कर रहे हैं। बादशाह स्वय खजाने मे पहुच गए। वहां जाकर पूछा—"खजाची जी ! यह क्या कर रहे हो ?" खजाची ने जवाब दिया—"कुछ हिसाब लगा रहा हूं।" बादशाह ने कहा—"इस आधी रात को हिसाब लगाने की क्या जरूरत है ? हिसाब मे क्या कुछ बढ़ा है या कुछ घट गया है ?"

खजाची ने जवाब दिया—"हिसाब कुछ बढ गया है।" बादशाह ने कहा—"हिसाब मे कुछ बढ गया है तो चिन्ता क्यो करते हो ? कल दिन मे आकर देख लेना कि हिसाब क्यों बढ़ गया है।" खजाची ने जवाब दिया—"हजूर, ऐसा नहीं हो सकता। पता नहीं, किस गरीब का गलत पैसा हमारे खजाने मे आ गया है, ऐसा न हो कि उसकी हाय हमारे खजाने मे आग लगा दे, उसके पहले ही मेरी कोशिश है कि उसका पैसा अलग निकाल कर अलग जमा कर दें। हजूर, मेरी कोशिश है कि शाही खजाने मे एक पैसा भी गलत ढग से जमा न किया जाए।"

बादशाह अपने खजाची की कर्त्तव्यपरायणता से खुश होकर सोने चले गए।

—नरेन्द्र

आज देश को बड़ी जरूरत

कवि० बनवारी लाल 'शादा'

आज देश को बड़ी जरूरत। त्यागी सच्चे विद्वानों की।।
सर्वस्व अपना अर्पण कर दें। देश को वीर जवानो की।।
तन मे जिनको जोश भरा हो। ब्रह्मचर्य बल की शक्ति हो।।
फडक उठे भुजायें दोनो। देश प्रेम की भक्ति हो।।
नगर-नगर और गाव सुधारें। चोर जार का नाम न हो।।
भ्रष्टाचार रिश्वत को मेटें। झूठ-पाप के काम न हो।।
पाप पाखण्ड किलो को तोडे। भेद की ढादें दीवारें।।
ईसाई मुस्लमा बने न कोई। छूत की तोडे मीनारें।।
वेदप्रचार करें देश में। मेटें सारी बीमारी।।
राम-कृष्ण-दयानन्द-गाधी। पैदा होवें व्रतधारी।।
'शादा' सुख वैभव को त्यागें। दीन दुखी के दुख हरें।
देशद्रोही कोई नजर न आये। देश धर्म के काम करें।।

प्रधान आर्यसमाज, मॉडल बस्ती, शीदीपुरा, नई दिल्ली-५

चयन के पत्ते-पत्ते पर तेरी है दासतां अब तक

ले०—'सत्यभूषण' वेदालंकार एम० ए०

हे कोटि-कोटि पतित जनोद्धारक, अनुपमेय तप पुज प्रसारक, दास्यदैन्योन्मूलक, सर्वप्रथम स्वजातीयगौरवगरिमोन्नायक, दुरितदोषदुर्भविदुराग्रह संहारी, सत्यव्रतधारी, स्वातन्त्र्यसिहनादोद्घोषकारी, पच सहस्राब्दावन्तरप्रकटितानुपम महिमामडित महर्षि पदधारी, साक्षात् आदित्य ब्रह्मचारी, दयानन्दनाम प्रथितयश प्रसारी, विविध मतसं प्रदायपाखंडकुलक्षण वेदशास्त्रानुकूलतर्ककुठारदलनविध्वसकारी, आज हम अबोध अज्ञान गर्तमज्जित दोष पारावार पूरित, जन आपकी उस महामहिमा का वर्णन किन शब्दों मे करें ? धन्य है महर्षि ! कहते हैं कि शिवशकर ने तो देवो की रक्षार्थ एक ही बार विषपान किया था, पर आपने १८ बार विष पान कर भी उफ तक न की। क्या गालियां, क्या पत्थर सर्प आदि। कितने ही अत्याचार आपकी ही जाति के लोगो ने आप पर अगणित बार किए, पर आप मुस्कराते ही रहे। और यही गुनगुनाते रहे, "निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात् पथ प्रविचलन्ति पदं न धीरा ।। "नीतिनिपुणजन निन्दाकर लें अथवा करें प्रशसा, धन-दौलत आए या जाए, हे मृत्यु की शंका।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सदाचार से प्रगति-पथ

ओ३म् परि माग्ने दुश्चरिताद् बाधस्व। आ मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषा उदस्थाम् अमृतां अनु ॥ यजु ४ २८

सर्वाग्रणी भगवन्, आप सबके नियन्ता हैं। मुझे दुश्चरित से पृथक् करो और सर्वत्र सदाचार का भागी बनाओ। मैं आपकी अमर दिव्य शक्तियो का अनुसरण करू और इस प्रकार उत्तम आयु एव सदाचार से प्रगति-पथ पर अग्रसर हो सकू।

ओ३म्
आर्य सन्देश

स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी
मिलकर मनायें, वेद प्रचार करें

स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी इस वर्ष अजमेर मे सामूहिक रूप से मनाई जा रही है। स्वामी जी ने अपना समस्त जीवन सच्चे शिव की खोज मे लगाने के बाद जो भी उन्हे प्राप्त हुआ, उसको केवल अपने तक ही सीमित न रख कर, जनसाधारण तक पहुचाने तथा उनकी भलाई मे अपने जीवन की आहुति तक दे दी।

स्वामी ने अपने स्वीकार पत्र मे वेद प्रचार को महत्ता दी है। [वेद प्रचारको को वेद प्रचार देश-देशान्तरों तथा द्वीप-द्वीपान्तरो मे हो।]

इस एक ही वाक्य मे ऋषि की भावनाओ का निचोड है। आर्यसमाज के तीसरे नियम मे उन्होने वेद तथा उसके प्रति आर्यों के कर्तव्य का निदेश कर दिया है।

अब हमें देखना है कि स्वामीजी के बाद के इन १०० वर्षों मे हमने इस ओर कितनी प्रगति की है। वैसे देखा जाए तो आर्यसमाज का प्रचार हमारे पौराणिक भाईयो तथा भारतीय सरकार द्वारा भी किया जा रहा जबकि उन्होने स्वामीजी की बहुत सी बातो को न मानते हुए भी अपने व्यवहार पर परिनित कर लिए हैं जैसे स्त्री शिक्षा, छुआछूत का उन्मूलन, जातिगत व्यवसायो को छोड़कर आजकल काफी भाई आजीविका हेतु अन्य कामो मे रत हैं।

परन्तु आज का विषय है कि वेद प्रचार की दशा मे हमारी क्या प्रगति रही है। अभी तक वेद प्रचारको की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। आज जो भी आर्यसमाज के प्रचारक हैं वे भी ठीक प्रकार से प्रचार न करके इधर-उधर की बातो में ही समय पूरा करते दिखाई देते हैं। इससे स्पष्ट है कि वेद का अध्ययन अभी अधूरा है। इसके लिए हमे जो वर्तमान उपदेशक हैं उनके लिए दो या तीन मास का लघुशिका कार्य कर्म अथवा शिविर लगाकर उनके ज्ञान तथा प्रचार शैली को नवीनतम वैयक्तिक खोजो तथा शोधन को ध्यान मे रखते हुए अल्पकालीन नवीकरण कर दिया जावे दूसरी ओर एक समय सीमा रेखा बाधकर प्रचारक विद्यालयो मे प्रचारक तय्यार किए जावे जो ४।६ वर्ष का हो।

वेद प्रचारक विद्यालय अभी भी कई स्थानो पर कार्य कर रहे है। आधुनिक सुविधाओं के अभाव में तथा सुनयोजित रूप मे न होकर एक रूप मे चलने के कारण उनकी वह आउटफुट नहीं जो आजकल को आवश्यकता।

प्रचार विधियो मे भी काफी सुधार हुए हैं—टेपरिकार्ड द्वारा भाषण तैयार करके समाजो मे तथा जो सम्पन्न व्यक्ति चाहे वे यथा समय सुन सकते हैं। वीडियो फिल्म के साधन द्वारा हम छोटे-छोटे चित्र बनवाकर समाजो मे ग्राम प्रचार के समय तथा अन्य विशेष अवसरो पर उन्हें प्रदर्शित कर आज के आधुनिक युग मे इन साधनो का प्रयोग कर सकते हैं।

वेद, जी स्वामी जी को उस समय भारत मे नहीं मिले थे और जर्मनी से मगवाने पडे थे, अब यहा कई सस्थाओ द्वारा भिन्न-भिन्न रूप-रग से सुसज्जित ढग से छपे हैं और उनके नित नए सस्करण छप रहे हैं जो इस बात का द्योतक है कि जनता (अर्य एव अन्य) में यह जानने की उत्सुकता है कि वेद क्या है? उनमे क्या लिखा है? लोगो मे भ्रान्तिया सरिता आदि पत्रिकाओ द्वारा फैलाई जा रही हैं उनका समाधान करने हेतु भी आजकल लोग वेद खरीदते और पढते हैं। वेद की अन्य भाषाओ मे भी प्रकाशन की आवश्यकता है। वेद प्रतिष्ठान द्वारा ऋग्वेद का अग्रेजी मे आठ मडलो का दस भागो में प्रकाशन हो चुका है तथा सार्वदेशिक सभा भी ऋग्वेद के दो भाग अग्रेजी मे छप चुके हैं इनकी भी भारी खपत है। केवल आवश्यकता इस बात की है कि लोगो को अधिक से अधिक जानकारी दी जावे कि अब वेद अग्रेजी तथा हिन्दी दोनो भाषाओ मे उपलब्ध है। देखने में आया है कि जब लोग कही किसी के घर पर अथवा दुकान पर अथवा किसी मार्ग में ले जाते हुए वेदो को देखते हैं तो कह उटते हैं हमारे अहो भाग्य वेद जिनके बारे मे अभी तक सुनते आये थे आज देखने को मिले और वे यत्न करते हैं कि वेद के पृष्ठों को उलट-पलटकर मन्त्रो के अर्थ पढते हैं। कई जगह तो देखा गया है कि लोग पूछताछ करते हैं कि कहा मिलते हैं? कितने के मिलते हैं? क्या उन्हे भी मिल सकते है? और कई लोग तो जिनके पास सामर्थ्य है इतने उत्सुक है कि वे तुरन्त वेद भाष्य के लिए अपने आदेश उसी व्यक्ति को देते देखे गए है जिनके द्वारा उनको वेद भगवान् के दर्शन हुए है। आवश्यकता अब इस बात की है इस बढती महगाई मे वेद तथा अन्य वैदिक साहित्य न केवल उचित और सस्ते मूल्य पर प्रकाशित किया जावे बल्कि जनता को प्रचारित भी किया जावे कि अब वेद उपनिषद्, दर्शन सुगमता से मिल रहे है।

वेद शतक की भी काफी माग रही है। जो सज्जन पूरा वेद एक बार देखकर डरते हैं या सोचते हैं कि वे वेद नही पढ सकते उनके लिए वेदो के सौ सौ मन्त्रो के शतक भी देश-विदेश की भाषाओ मे उपलब्ध कराये जा सकते है। इससे जहा वेदो का प्रचार होगा वहा लोगो की रुचि भी वेद के प्रति बढ सकती है यह जब होगा जब वेद मन्त्रो का चयन सुरुचि पूर्वक हो। इस परियोजना मे हिन्दी से आरम्भ करके अग्रेजी तथा भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओ मे प्रतिनिधि सभाओ की ओर से प्रकाशन हो तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा विदेशी भाषाओ मे न केवल प्रकाशन बल्कि प्रमारण हो। फिर देखें कैसे वेद का प्रचार जैसा स्वामी दयानन्द चाहते थे क्यो नही होता?

साधन—किसी भी परियोजना के लिए तन, मन, धन तीन तत्वो की आवश्यकता होती है। तन मे कार्य करने की शक्ति आती है अनुभव मे आया है कि हमारे देश मे यही शक्ति सर्वाधिक मात्रा मे सुलभ है। अब शिक्षा का प्रचार होने के बाद तो शिक्षित नवयुवक भी चारो ओर काम की तलाश मे घूमते नजर आते है। अब ऐसे भी शिक्षित युवक है, जो शोध करने के बाद अपना व्यवसाय से बचे समय को समाज सेवा मे लगाना चाहते हैं।

मन—तो बहुतो का करता है कि वेद प्रचार हो तथा सामाजिक कुरीतिया जो स्वामी दयानन्द भारत से ही नही ससार भर से दूर करना चाहते थे, दूर हो। परन्तु अपना सहयोग इस विषय मे अनेक कारणो से दे नही पाते। उनको भी इस कार्य मे सम्मिलित किया जा सकता है—और यह योजना बनाकर कार्य करने से ही हो सकता है।

धन—इसकी समस्या तो आज विकसित देशो के सामने भी है। परन्तु यह समस्या इतनी बडी नहीं है जितना कि इसको तूल किया जाता है। कार्य आरम्भ होने के बाद देखने मे आया है कि न जाने कहा-कहा से दानी परोपकारी सज्जन निकल आते है और आशा से भी अधिक धन मिल जाता है।

जब यह तीनो अभावो का हल है तो समस्या क्या है कि काम होता नही? मन सबका करता है कि प्रचार हो, कार्य करने को भी लोग उत्सुक है, धन देने वाले भी है। फिर तो बात रहती है केवल तीनों के समन्वय की। धनी लोग सोचते है कि धन किसको किस कार्य के लिए दिया जावे? कार्य कर्ता लोग सोचते हैं कि क्या कार्य किया जावे? और यदि कोई कार्य किया भी जावे तो धन कहा से आवेगा? इसी उधेड-बुन मे समय निकल जाता है। आखिर हर समाज अथवा सभा का निर्वाचन एक साल के लिए ही तो होता है। यदि कार्य का शुभारम्भ हो जाता है तो कार्य आधा ही नही पूरा भी अवश्य होगा, आवश्यकता केवल है दृढ निश्चय की तथा कार्यहेतु योजना बना कर आगे चलने की।

हम आशा करते हैं कि स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी मत्र आर्य भाई मिलकर मनायेंगे तथा अपने सगठन का परिचय देंगे तथा ऋषि के अधूरे काम को पूरा करने मे अपनी शक्ति को लगायेंगे।

वेदादि शास्त्रों का अर्थज्ञान सहित अध्यन हो

मनुष्य लोग वेदार्थ जानने के लिये अर्थ योजना सहित व्याकरण अष्टाध्यायी धातुपाठ, उणादिगण, गणपाठ और महाभाष्य, शिक्षा, कल्प निघण्टुनिरुक्त, छन्द और ज्योतिष ये छ वेदो के अग। मीमासा, वैशेषिक, न्याय, योग, साख्य और वेदान्त ये छ शास्त्र जो वेदो के उपाग, पर्थात् जिनसे वेदार्थ ठीक-ठीक जाना जाता है। तथा ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ये चार ब्राह्मण, इन सब ग्रन्थो को क्रम से पढ़ के, अथवा जिन्होने उन सम्पूर्ण ग्रन्थो को पढ के जो सत्य वेद व्याख्यान किये हो उनको देख के वेद का अर्थ यथावत् जान लेंगे। क्योकि वेदो को नही जाननेवाला मनुष्य परमेश्वरादि सब पदार्थविद्याओ को अच्छी प्रकार से नही जान सकता। और जो जो, जहा-जहा भूगोलो या पुस्तको अथवा मन मे सत्यज्ञान प्रकाशित हुआ है और होगा वह सब वेदो मे से ही हुआ है। क्योकि जो जो सत्य विज्ञान है सो सो ईश्वर ने वेदो मे धर रखा है। इसी के द्वारा अन्य स्थानो मे भी प्रकाश होता है। और विद्या के बिना पुरुष अन्धे के समान होता है। इससे सम्पूर्ण विद्याओ के मूल वेदो को बिना पढे किसी मनुष्य को यथावत् ज्ञान नहीं हो सकता। इसलिए सब मनुष्यो को वेदादि शास्त्र अर्थज्ञान सहित अवश्य पढ़ने चाहिए।

—**महर्षि दयानन्द सरस्वती**।

८ अगस्त १९८२ केन्द्रीय आर्य सभा, बम्बई द्वारा आयोजित 'वेदार्थ परिगोष्ठी' मे प्रस्तुत शोध-पत्र

वेदों में संगीत

—मदन लाल व्यास

वैदिक सभ्यता और सस्कृति को लेकर ही वैदिक युग का निर्माण हुआ था। फिर भी ऋग्वैदिक युग ही विशेपतया वैदिक युग का भान कराता है। वैदिक साहित्य अथवा सहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद, धर्म श्रौत्र और कल्पसूत्र, शिक्षा और प्रातिशाख्य मे आभ्युदयिक और आभिचारिक प्रयोग के अनुसार गान का अनुशीलन होता था। गान के साथ नृत्य और वाद्य भी रहते थे। अत वैदिक युग मे सगीत का परिपूर्ण विकास था, यद्यपि 'सगीत' के बदले गान, उद्गान, उद्गीति, स्तोत्र आदि शब्दो का व्यवहार दिखाई देता है। ऋक्, यजु, साम, अथर्व और विभिन्न ब्राह्मणग्रथो मे विचित्र प्रकार के वाद्य-यत्रो का विवरण मिलता है। कई वर्णनो मे पता चलता है कि सामगान मे नृत्य का समावेश था। उस समय मे गीत के अलावा पृथक् रूप से नृत्य का अनुशीलन होता था।

वेदो मे दुन्दुभि आदि चर्मवाद्यो, तारयुक्त वीणा, वेणु आदि का उल्लेख भी मिलता है। दुन्दुभि पशु के चर्म से तैयार होती और भूमि दुदन्दभि भूमि मे खड्डा खोदकर तथा उसके मुह को पशु चर्म आवृत कर। युद्ध, विपद की घोषणा के लिए दुन्दुभि का प्रयोग होता था। ऋग्वेद (१।२८।५) मे है—"यच्चिद्धि त्व गृहे इहद्युमत्तम वद जयतामिव दुन्दुभि।"

ऋग्वेद मे 'गर्गर' नामक एक वाद्य का उल्लेख है। ८।६९।९ ऋक् के मत्र मे गर्गर के अलावा 'पिंग' वाद्य का भी विवरण मिलता है। गर्गर के सम्बन्ध मे सायण ने कहा है—'गर्गरो गर्गरध्वनियुक्तो वाद्यविशेष।' 'पिंग' वाद्य धनुर्यंत्र है, इसे रावणास्त्र भी कहते हैं। धनुर्यंत्र पिंगल या नीलाभ ताम्रवर्ण के अन्त्र (नाडी) से तैयार होता था, इसलिए इसे 'पिंग' कहा जाता है। यह पिंग-धनुर्यंत्र परवर्तीकाल मे रूप परिवर्तन कर 'बाहुलीन' या 'बेहाला' नाम से परिचित हुआ।

वेद मे 'आघाटि', 'घाटलिका,' 'काण्डवीणा' 'नाडी', 'वनस्पति' आदि का उल्लेख है।

ऋग्वेद मे शतनत्रीवीणा का उल्लेख है एव इससे पता चलता है कि सामगो मे विभिन्न वीणाओ एव शततत्रीवीणा का प्रचलन था। सायण ने 'वाण' का अर्थ किया है—शततत्रीयुक्त वीणा। इसी प्रकार धातु का अर्थ है सप्तस्वर।

अथर्ववेद के नृसूक्त मे वाण' या वीणासह नृत्य का उल्लेख है—"को वाणम् को नृत्यो दधौ (अथर्व १०-२-२७)।" 'धातु' का अर्थ है 'नाद' या 'स्वर' ऋग्वेद के १।११७।४ मत्र मे वीणा का उल्लेख मिलता है।

सामवेद या सामसहिता मे नृत्य, गीत और वाद्य का उल्लेख मिलता है। सामवेद के २।१।४ मत्र में है—"अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षार गाव, अरमिन्द्रस्य धम्ने।" यहा गान का सामगान की बात स्पष्ट रूप से कही गयी है। सामवेद के ३।१२।१ मत्र मे नृत्य के साथ-साथ गान की बात है "गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किण, ब्रह्माणस्त्वा शतद्रुतउद्वशमिव येमिरे।" साम के ४।४।८ मत्र मे 'बृहद्साम' का उल्लेख है—"इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्।"

शुक्लयजुर्वेदकाण्वसहिता एव कृष्ण-यजुर्वेद मे नृत्य, गीत और वाद्य का उल्लेख है। शुक्लयजुर्वेदकाण्वसहिता के द्वितीय विवेक ११ वें अध्याय ५ वें अनुवाक मे रथन्तर, बृहद, वैरूप, रैवत आदि सामो का भिन्न-भिन्न ऋतुओ मे गान करने की विधि है—७।७८।३। ऋक मे अप्सरा को 'सोमरस प्रष्तुतकारिणी' कहा गया है। साधारणतया 'गन्धर्व' और 'अप्सरा' शब्दों के उल्लेख से नृत्य, गीत और वाद्य की धारणा ही बनती है।

शुक्लयजुर्वेद (२।१७।५) मे 'दुन्दुभि' वाद्य का उल्लेख है—"नम. श्रतेरपि श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाऽनन्याय चेति"। कृष्णयजुर्वेद (७।५।९।२९) मे है—"दुन्दुभिन् समन्घौति।" शुक्लयजु के अन्तर्गत बाजसनेयी सहिता मे है—'सुत' गायक और 'सैलूश' अभिनेता है। सुत नृत्य के साथ और सैलूश गान के साथ सम्पृक्त हैं। अथर्ववेद के १० वें काण्ड, ७ वे सूक्त मे नृत्य का उल्लेख है—"तन्त्रमेक युवती विरूपे अभ्याक्राम वयतः"।

वैदिक युग में सामग अधिकतर विभिन्न सत्रो या यज्ञो का अवलम्बन कर ही ऋक्मत्रो का गान करते थे। दीर्घकाल से जिन सब यागो का अनुष्ठान होता था उन्हें कहा जाता था 'सत्र'। यज्ञपरिभाषा-सूत्र मे यह विवरण दिया गया है कि किस यज्ञ मे कौन से सामगान की विधि है और किस भाग मे मद्र, मध्य एवं तार (उच्च) स्वर मे गान होगा। साम के गायकों को कहा जाता था उद्गाता, क्योंकि उद्गान ही साममगीत का रूप था उद्गाता को सामग भी कहा जाता था।

सामवेदीय 'आर्षेयब्राह्मण' और अथर्ववेदीय 'गोपथ-ब्राह्मण' में यागयज्ञ का वर्णन है और साथ-साथ विभिन्न यागों में सामगान का परिचय है। विभिन्न यज्ञों और यज्ञों में विभिन्न प्रकार के गान या सामगान करने की रीति थी। भिन्न-भिन्न ऋचाएं लेकर एक-एक साम की सृष्टि होती थी। प्रत्येक यज्ञकर्म के लिए पृथक-पृथक मन्त्र थे। याग-यज्ञ मे मत्र सार्थक होते थे। ऋक्, यजु और साम ये तीन प्रकार के वेद-मत्र हैं। इसीलिए एकाधिक ऋत्विक या याजक की आवश्यकता होती थी। ऋत्विक उच्चस्वर मे मंत्रपाठ करते थे। ऋग्वेदी प्रधान याजक का नाम है 'होता'। होता यज्ञ मे देवता का आह्वान करते थे। जो यज्ञ मे आहुति देते थे वे थे अध्वर्यु। सामगान के लिए ऋत्विक का नाम है उद्गाता। ऋत्विक, होता और उद्गाता का परिचालना करने के लिए प्रधान ऋत्विक का नाम है ब्रह्मा।

यज्ञ या याग मे सामगान किया जाता था किन्तु इष्टियाग मे सामगान की विधि नही थी। सोमयाग मे औदुम्बरीशाखा का स्पर्श कर उद्गाता और उनके सहयोगी सामगान करते थे। केवल सामगान ही नही, बल्कि समस्त सगीत-सृष्टि का उत्स सामवेद है। ऋक्मन्त्रो को स्वरो मे लीलायित कर गान किया जाता था, इसी मे सामवेद की सृष्टि और सार्थकता है। साम को वाक् और प्राण की समवेत मूर्ति कहा गया है। 'वाक' शक्ति या प्रकृति और 'प्राण' शिव या पुरुषरूप में कल्पित हैं। शिव-शक्ति के इस मिलन को ही दार्शनिको ने सगीत-सृष्टि का कारण कहा है।

साम को प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव और निधन इन पाच अशो मे विभक्त किया है। महाराज नान्यदेव ने इन्ही पाच अशो को बाद मे गन्धर्व गान के पाच अग—शुद्धा, भिन्ना, गौडी, वेसरा और साधारणी कहा है। ये पाच अग पाच रागगीतिया है।

सामगान के स्वर गन्धर्व और अभिजात देशी सगीत के स्वरों से ग्राम और विकास में भिन्न हैं। सामगान के सात स्वरो के नाम हैं क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वार्य। सामगान में साधारणतया तीन और चार एवं प्रधानतः पांच स्वरों का व्यवहार होता था। छह और सात स्वरों का भी व्यवहार था—यह बात स्वामी प्रज्ञानानन्द ने अपने बंगला ग्रंथ 'भारतीय सङ्गीतेर इतिहास' में सिद्ध की है। सामगान का नाम है वेदगान या वैदिक गान। (१) उदात्त-उच्चस्वर। (२) अनुदात्त और उदात्त-निम्नस्वर और उच्चस्वर। (३) अनुदात्त, स्वरित और उदाद-निम्न और उच्च स्वर की समतारक्षा के लिए समाहार स्वरूप में स्वरित, इसके बाद सामगान के प्रथमादि स्वर। (४) प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और मन्द-पाच स्वर। (५) क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र-छह स्वर; (६) क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द, अतिस्वार्य-सातस्वर।

क्रुष्टादि प्रधान होने पर इनके नाम प्रकृति स्वर हैं। इनके अलावा जात्य, अभिनिहित, प्रश्लिष्ट आदि और सात (किसी-किसी शिक्षा के आठ) विकृत स्वरों का व्यवहार होता था। ये शेषोक्त सात स्वर सामगान में उच्चारण भेद बताते हैं। यहां उल्लेखनीय है कि नारद की स्वर-सज्जा का सायण की स्वरसज्जा से मेल नही है। यहा यह भी उल्लेखनीय है कि वैदिक युग मे तीन ग्राम और तीन ग्राम अनुयायी स्वरो का अनुशीलन था। वैदिक युग के गान (सामगान) का पूर्ण परिचय पाने के लिए ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, शिक्षा एव प्रातिशाख्य मे उल्लिखित सामगान विषयक तथ्यो को समझना होगा। यद्यपि ये ग्रथ बाद मे रचित हैं, फिर भी इनसे अधिक तथ्य स्पष्ट होते हैं।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

शुद्धि सभा भवन, ६९४९, बिरला लाइन्स, सब्जी मंडी, दिल्ली-७

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली द्वारा गत वर्ष १९८२ मे ४६७२ ईसाई और ३७८ मुसलमानो को वैदिक हिन्दू धर्म की दीक्षा देकर ५ सहभोज जिसमे हजारो व्यक्ति सम्मिलित हुए और २ कन्याओ का विवाह देहाती क्षेत्र मे कराया गया। एक आगरा के इस्तरा ग्राम मे एक मन्दिर का निर्माण कराया गया। वर्ष १९८३ के गत ४ मासों मे ५८५ ईसाई और ४२ मुसलमानो के ७ परिवारो को वैदिक धर्म की दीक्षा दी गयी।

शुद्धि सभा के अन्तंगत दो पाठशालायें कस्बा बड़ौत जिसमे ३५० बच्चे, कस्बा दोराला जिसमें लगभग १५० बच्चे विद्याध्ययन कर रहे हैं। ग्राम मोसमपुर, जिला मुरादाबाद में श्री गुरुसहाय जी द्वारा दान दी गयी दो बीगा जमीन की रजिस्ट्री पाठशाला के लिए हो गयी है। शुद्धि सभा की चार शुद्धि शाखायें हैं, शुद्धि सभा शाखा ओयनगर, जिला—एटा, बदायू, कासगंज, एवं बरेली जो शुद्धि सभा का कार्य कर रही हैं।

धंधा मॉडलिंग का

—सावित्री रस्तोगी

मॉडलिंग का सीधा सम्बन्ध कला से है और कला क्या अविभाज्य अंग है उपयोगिता। अगर कला अपने उपादेय पक्ष को भुला दे तो वह कला नहीं उसका ककाल मात्र है।

मॉडलिंग का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसमे बूढे, बच्चे, स्त्री-पुरुष, विवाहित अविवाहित, यहा तक कि पशु-पक्षी तक सब आ जाते हैं। दुर्भाग्य से आज हम उसके महत्त्व को भूलते जा रहे हैं और मॉडलिंग शब्द से जुड गया है एक कमसिन सुन्दरी का चित्र, जिसने नारी को खुले चौराहे पर लाकर बिठा दिया है।

पान-तम्बाकू, बीडी सिगरेट, ब्लेड, दवा, आदि वस्तुए जिनसे नारी का सीधा सम्बन्ध नहीं है उनके विज्ञापन मे भी नवयौवना सुन्दरी का चित्र जड दिया जाता है। घी, तेल, वनस्पति, साबुन, चूरन, चटनी, पापड, अचार, क्रीम-पाउडर पर्स, चप्पल, साडी दुपट्टे, शाल-दुशाले, कोई भी चीज ऐसी नहीं जो इस मॉडलिंग से अछूती रही हो। सिनेमा, नाटक, नृत्य, सगीत, की तो बात ही क्या है। तरह-तरह के पोज देकर आकर्षक व अश्लील ढग से लडकियो को बैठाकर नग्न प्रदर्शन की बहुलता को समेटे यह धन्धा अच्छा-खासा भानमती का पिटारा बन गया है।

पिकासो और हैब्बार जैसे प्रमुख चित्रकारो ने कला की दृष्टि से मॉडल बनाने आरम्भ किए थे। उनका ध्येय था—जीवन की अनन्त विधाओ को मानव मात्र के मानस-पटल पर उतारना, सूक्ष्म प्रवृत्तियो का चित्रण करके चिन्तन को राह देना, एक ऐसी तस्वीर बनाना जो अनकहे ही अपनी कहानी कह दें। इसके लिए उन्हे घोर परिश्रम और अथक साधना करनी पडती थी। जीवन की अनमोल घड़ियों को गलाकर कलाकार सारे जन समाज के लिए पाथेय तैयार करता था।

आज के चितेरो का ध्येय मानवीय अनुभूतियो को स्पर्श करना और सामाजिक चेतना को जाग्रत करना नहीं केवल धन्धा करना है। एक ऐसा व्यापार जिसमे कला की चिता भले ही जले किन्तु अपना घर भर जाये।

कितनी ही महिलाओ और कुमारियो ने भी इसको बहुत प्रोत्साहन दिया है इसके कई कारण हैं किसी को तो मजबूरी में इसे अपनाना पडता है। बढती हुई मसगाई, बेरोजगारी, अन्धाधुध घरेलू व्यय, और पारिवारिक उलझनो के कारण उन्हे इस क्षेत्र मे आने की विवशता हो जाती है, किन्तु कई अपने शौक पूरे करने और प्रसिद्धि पाने की आकांक्षा लेकर इस क्षेत्र मे आती हैं। ग्लैमर के चक्कर मे पडकर पैसा, नाम, विज्ञापन मे छपे हुए चित्र, उन्हें प्रभावित किए बिना नहीं रहते। पाश्चात्य सभ्यता का बढता हुआ प्रभाव, नित्य नए आधुनिक फैशन के वस्त्र, शृगार प्रसाधन, सैर सपाटे, पिकनिक, सिनेमा आदि सब मिलकर उनके आन्तरिक शील को दबोच लेते है। शालीनता और सतीत्व जैसे शब्द उनके कोष मे नही रहते। भौतिकवाद की चकाचौंध उन्हे भ्रमित कर देती है और लक्ष्य से दूर ले जाकर पटक देती है। जीवन की सरल सुन्दर जानी-पहचानी राह एक प्रश्न चिह्न छोड़कर अधेरे में खो जाती है तब होता है उन्हें अपनी भूल का अहसास।

मैं इस कला के विरोध मे नही हू, इसके स्वरूप को निखारने और सवारने के लिए वैचारिक क्रान्ति करनी होगी मॉडलिंग बुरी नही किन्तु तब जब उसके कलात्मक पक्ष की हम सब रक्षा कर सकें। हमारा ध्येय मन बहलाव न होकर उत्कृष्ट कृति का सृजन हो।

आज आवश्यकता है व्यापक जन चेतना जाग्रत करने की। जिससे यह कला चौराहे की गन्दगी से उबरकर अपने वास्तविक रूप मे प्रतिष्ठित हो सके। इस पर अर्घ्य चढाने वाले लोग विकसित विचार धारा को लेकर आगे बढें और त्यागमय जीवन अपना सकें।

मेरा तो अटल विश्वास है—

वह कला नही, गतिहीन करे जो जीवन।
वह साधक क्या, जो छुए न जीवन दर्शन ॥
बढ़िया मॉडल कैसे उसको कह दें हम।
मतिहीन करे जो मानव का चचल मन ॥

द्वारा ज्ञानलोक प्रिन्टर्स, जवाहर नगर
मेरठ कैन्ट उ० प्र०

(पृष्ठ २ का शेष)

ज्ञात नहीं नश्वर जीवन का होवे कब अवसान।
किन्तु धीर नर-पुंगव अविचल न्याय मार्ग पर हों बलिदान ॥

कोई वित्तविहारी, कोई कीर्ति कौमुदी लालसाप्रसारी, कोई उच्चपदाकाक्षी, कोई कान्ताचारी बना, पर हमारे महर्षि आदि से अन्त तक बने, केवल अखड आदित्य ब्रह्मचारी। सत्य की खोज में कभी अलखनन्दा के हिमखडो से शरीर का मोहत्याग जा टकराया, तो कहीं लोकहितार्थ राव कर्णसिह की खड्ग के दो खड कर विशाल सांड के सींगो को मोड़, हालाहल विषपान कर आततायी को भी मुक्त कर अपनी अतुलनीय साधना का परिचय दिया स्वजीवनोत्सर्ग कर मानवता बन्धुत्व एव सर्वभूतहित मैत्री का पाठ पढाया और अन्तिम वेला में "प्रभो, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की' कहकर वेद मंत्रों का उच्चारण कर महाभियान किया। अत' कोटि-कोटि कंठों से बरबस यह स्वर अनायास ही फूट पड़ता है—न भूले हैं न भूलेंगे, तेरी सरगर्मिया अब तक।
चमन के पत्ते-पत्ते पर है तेरी दासतां अब तक।"

वेद के दो गूढ़ प्रश्न : उनके सरल उत्तर

—स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वति

बालादेकमणीयस्कमुतेक नैव दृश्यते।
तत परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया॥ (अथर्व १०।४।१८)

एक तत्व है जो बाल से भी सूक्ष्म है और एक ऐसा हे जो दिखाई देता ही नही। परन्तु जो बाल से भी सूक्ष्म मेरा प्यारा देवता है वह उसका आलिगन किए हुए है। यह बाल से भी सूक्ष्म तत्त्व क्या है ? वह तत्त्व कौन-सा है—जो है, परन्तु दिखलाई नही देता ? और वह बाल से भी सूक्ष्म प्यारा देवता उसका आलिगन किस प्रकार किये हुए है ? यह त्रिमुखी समस्या है जिसका समाधान हम करना चाहते है। मन्त्र मे आये दो मे से एक की जानकारी होने पर दूसरे का जानना सुलभ होगा। उपनिषद् मे एक का वर्णन आया है।

बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।
जीवो भाग स विज्ञेय, स चानन्त्याय कल्पते ॥

बाल के अग्रभाग के सौ टुकड़े करो और उनमे से एक टुकडे के सैकडो भाग करो। उस अत्यन्त सूक्ष्म भाग को जीव की परिभाषा समझो, और इस प्रकार के जीव हैं भी असख्य और हैं भी अविनाशी। उपनिषद् के इस मन्त्र मे आए हुए 'बाल से भी सूक्ष्म' तत्त्व का नाम स्पष्ट शब्दो मे प्रकट कर दिया है और वह नाम है जीव। जीव का नाम सुनते ही हमे इसके उस साथी का नाम जानने मे कोई कठिनाई न होगी, जिसे वेद ने न दीखनेवाला कहा है, और जिसका यह आलिगन किये हुए है।

'तयोरन्य पिप्पलं स्वाद्वत्ति।' उन दोनो मे से एक उस प्रकृतिरूपी वृक्ष के कर्मफलरूप फलो का उपभोग करता है। परन्तु इसमे प्रकृति का नही, एक ऐसे तत्त्व का वर्णन किया जा रहा है, जिसका कि यह आलिंगन अवश्य किए हुए है परन्तु न तो उसके रस का आस्वादन कर पाया है और न उसे देख पाया है। उपनिषदो मे प्रकृति के स्वादु फल का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त एक दूसरे रसवान् तत्त्व का भी वर्णन किया है—

"रसो वै स। रस ह्येवायं, लब्ध्वा आनन्दी भवति।"
(वह रसरूप है, इसको प्राप्त करके यह जीव आनन्दी होता है।)

उपनिषद्कार ने वहा आनन्दरसरूप तत्त्व का नाम लिया है, 'नित्य विज्ञानमय आनन्द ब्रह्म' (नित्य विज्ञानरूप, आनन्दरूप ब्रह्म है।) इस वाक्य मे आनन्द का सम्बन्ध ब्रह्म से जोड़ा गया है। जिस प्रकार आत्मा के कर्मों का एक फल प्रकृतिरूपी वृक्ष के अनेक फलों का उपभोग है, इसी प्रकार ब्रह्मानन्द रूपी फल की प्राप्ति भी उसके कुछ विशिष्ट कर्मो का फल मानी गई है। यह वह ही ब्रह्मतत्व हैं जिसका आलिंगन तो जीव ने किया हुआ है, परन्तु उसके आनन्दरूप फल का उपभोग तो दूर की बात है, अभी तो वह उसका दर्शन करने मे समर्थ नही हो पाया है। हमने यह जान लिया कि इस मन्त्र मे बाल से भी सूक्ष्म जिसे कहा गया है वह जीव है। और वहा जिसे न दीखनेवाली शक्ति कहा गया है वह ब्रह्म है। ब्रह्म व्यापक हैं और जीव एक देशी, इसलिए इस एक देशी का व्यापक ब्रह्म के साथ सयोग अर्थात् आलिंगन भी अनिवार्य ही है। अब प्रश्न यह ही शेष है कि "जब यह उससे सयुक्त ही है तो उसे देख क्यो नही रहा ?" समस्या के इस एक अंश का समाधान रूप ही हम एक दूसरी समस्या को उपस्थित करना चाहते हैं। वह समस्या निम्नलिखित है—

"पञ्चवाही वहत्यग्रमेषां, पृष्ठयो युक्ता अनु सं वहन्ति।
अयातमस्य दृश्ये न यातं, परं नेदीयो अवरं दवीय ॥"
(अथर्व का अ० ४ स० ८)

(एषाम्) इन गाडियो मे से (अग्रम्) प्रधान इजनरूप गाडी (पचवाही वहति) पाच शक्तियो के समुदायरूप गाडी को लिवा जा रहा है। (पृष्ठयो युक्ता) पीछे चलनेवाली गाडी जुडी हुई (अनु सं वहन्ति) इसके पीछे-पीछे भार लिए जा रही है। (अस्य) इसका न तो चलना दिखाई देता है और न चलना (पर नेदीय अवर दवीय) इतना अवश्य है कि जो परे था वह समीप आ रहा है और जो समीप था वह दूर हो रहा है।

यह है वह दूसरी समस्या जिसमे अपना भी और पहली समस्या का भी समाधान है। हमारा प्रधान अन्त करण रूप इजन पाच ज्ञान इन्द्रियो से गाडी को लिए जा रहा है। कर्मेन्द्रिया और पाच प्राण रूप गाड़िया इनके पीछे जुडी हुई पीछे-पीछे चल रही है। इसका चलने और न चलने का कुछ भी पता नहीं चल रहा। इतना अवश्य है कि जो दूर था वह समीप आ रहा है और जो समीप था वह दूर जा रहा है। हमारी यह आलकारिक गाड़ी आध्यात्मिक गाड़ी है और आध्यात्मिक गाडी ही चाल का पता लगाने मे आंखें तो समर्थ हैं नही आखों का काम भौतिक पदार्थों का देखना है आध्यात्मिक पदार्थों का देखना उसका काम नहीं है। ज्ञान आदि आध्यात्मिक पदार्थ उनकी पहुच से बाहर है। हमारी आन्तरिक आंखें अन्त करण की आखें हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत् समाचार

श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को बधाई

श्री वीरेन्द्र जी ने पिछले दिनों पटियाला मे हुई घटनाओ के बारे मे न्यायीक जाच कराने की माग की थी। और उसके अस्वीकार होने की हालत मे २० मई से भूख हडताल करने का ऐलान किया था। इनकी इस घोषणा से सारे पजाब मे बेचैनी पैदा हो गई थी और सारे पजाब के आर्यों (हिन्दुओ) ने उनकी इस माग की पूरे जोर से अनुमोदन किया था। इसी की परिणामस्वरूप पजाब के मुख्य मन्त्री महोदय ने उनकी इस माग को स्वीकार कर लिया है और मध्य प्रदेश के अवकाश प्राप्त न्यायधीश श्री दुबे को पटियाला मे हुए २ मई की घटनाओ का और अकालियो के 'रास्ता रोको' आन्दोलन से पैदा होने वाले स्थिति की जाच सौंप दी है। आशा है इस जाच आयोग द्वारा जो तथ्य सरकार के सामने आयेंगे सरकार उन पर ध्यानपूर्वक गौर करेगी और आगे इस प्रकार की घटनाओ की रोकथाम का प्रबन्ध करेगी।

हम श्री वीरेन्द्र जी को उनकी इस सफलता पर बधाई देते हैं तथा साथ ही उनके इस निर्णय से उत्पन्न होने वाले हिन्दू सगठन पर भी सन्तोष प्रकट करते हैं और आशा करते हैं पजाब की हिन्दू भविष्य मे भी अपनी समस्याओ को इसी प्रकार मिलकर समाधान सफलतापूर्वक करते रहेगे।

(पहले पृष्ठ का शेष)

कि वे स्वय पहल करें और गुरुद्वारे से इस प्रकार के तत्वो को निकाले।

सुब्रह्मण्यम स्वामी जी वहा गए जिन्होने यहा यह सवाल खड़ा किया और उन्होने कहा कि लौंगेवाल कहते हैं कि खालिस्तान हमको नही चाहिए। तो फिर क्या चाहिए? उपाध्यक्ष जी, १९५६ से लेकर आज तक पजाब की समस्या के साथ मैं भी खड़ा हुआ हूं जब मास्टर तारासिंह और फतेहसिंह जी ने पजाबी सूबा के लिए आन्दोलन चलाया। आर्यसमाज की तरफ से भाषा के आधार पर जो हिन्दुओ की भाषा हिन्दी थी आर्यसमाज ने आन्दोलन चलाया जिसमे गिरफ्तार करके ४ दिन मुझे चडीगढ जेल मे रखा गया, उसके बाद साढे तीन महीने जालन्धर जेल मे रहा। तब से मैं इसके इतिहास को जानता हू। परन्तु कुछ लोगो ने जो पजाब के अदर परिस्थिति पैदा कर दी है, हिन्दू और सिख भाई जो सदियो से साथ रहे और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए जो बलिदान किया उसको मैं दोहराना नहीं चाहता, उस आन्दोलन के आधार पर पजाब का बटवारा हो गया। पजाब गुरुमुखी भाषा-भाषी होगा। तो फिर खालिस्तान की कौन-सी बात रह गई?

जहा तक बात करने का सवाल है, यह विशेष घटना जो गत वर्ष २६ अप्रैल को घटी, मरी हुई गाय की गर्दन मन्दिद में रख दी गई, प्रधान मत्री ने उसी दिन तत्कालीन गृह मत्री, श्री जैलसिंह को आदेश दिया और उनके साथ हमे भी भेजा, नारायण दत्त तिवारी जी को भेजा, और गिरधारी लाल जी को, जो सनातन धर्म के चेयरमैन हैं, उनको भेजा। हम विशेष प्लेन से वहा गए और उसी दिन रात को ९ बजे पहुच कर ११ बजे मन्दिर और गुरुद्वारे पर गए। वहां जो स्थिति पैदा की सिर्फ अकाली उग्रवादी उसके लिए जवाबदार नहीं हैं, बल्कि दूसरे भी सकीर्ण साम्प्रदायिक विचारधारा वाले हैं जो होड मे लगे हुए हैं। जो वहा पर हिन्दुओ के द्वारा जलूस निकालना चाहते हैं तो उसकी प्रतिक्रिया होती है जिसका प्रभाव पटियाला मे भी पडा। और उस दिन जो झगड़ा हुआ, उसमे विस्तार से जाने का समय नहीं है, परन्तु वहा पर हिन्दू और सिख जो विदेशी ताकतों से मिल कर काम कर रहे हैं।

मेरा आक्षेप है सुब्रह्मण्यम स्वामी जी के ऊपर जो उन्होने आज यहां पर बयान दिया है, उसने पजाब की आग मे घी डालने का काम किया है और उसकी प्रवृत्तियो पर हमे सदेह हुआ है कि उनकी गतिविधिया देश के लिए खतरनाक साबित होंगी। उनका सम्बन्ध जिन-जिन लोगो के साथ है, चाहे गंगासिंह हो, जगजीत सिंह हो चाहे लाल डेंगा और फौजी का लन्दन वाला गठबन्धन हो और उसके साथ उनकी क्या साठगाठ चल रही है, वहा यह जा सकते हैं और कोई नही जा सकता है। मैं पूछना चाहता हू लोंगेवाल ने फरमान निकाला वहा पर कोई बन्दूक नहीं रख सकता। २४ घटे मे ही लोंगेवाल को वह वक्तव्य वापस लेना पड़ता। क्या चलती है उसकी स्वर्ण मन्दिर मे? कुछ नहीं। वहा लोगेवाल कुछ कहता है, तलवन्डी कुछ कहता है, बादल कुछ कहता है। किस पर विश्वास किया जाय? धर्म के स्थान पर शैतानियत का काम हो रहा है। और आप जो बयान दे रहे हैं, मैं बागड़ी जी को बधाई देता हू उन्होने उसी समय उनको टोका, क्योंकि इस तरह प्रोत्साहन देना देश के साथ गद्दारी है।

जो पंजाब का बटवारा हुआ, हरियाणा का हुआ, और यह भी बता दू अकालियों को प्रोत्साहन जनता पार्टी के समय दिया गया, क्या यह बात सच नहीं है कि १९७७ में जो पंजाब सरकार ने हरियाणा सरकार से आपस में पानी के सम्बन्ध मे समझौता किया, और हरियाणा ने पैसा भी दिया, श्री बादल ने उसको स्वीकार भी किया, और आज बादल उस नहर को खुदवाने के लिये बाधा खडी करना चाहते हैं। इस तरह के शैतानो को प्रोत्साहन नही दिया जा सकता। चन्द लोग भारत के भाग्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते।

किसने दरवाजा बन्द किया भारत सरकार से बात करने के लिये? प्रधान मत्री के पास प्रात.काल से लेकर शाम तक प्रतिनिधि मण्डल मिलते रहते हैं। हर बार बुलाया गया है, बातचीत होती रही है प्रधान मंत्री की, गृह मत्री की। प्रधान मत्री और गृह मत्री ने भी कोई दरवाजा बन्द नही किया, हमेशा बात के लिये बुलाया। बात किस बात पर करनी है? यह ठीक है, कि राजनीति का दाव-पेंच खेला जा रहा है, कोई नहर का या जमीन का मामला नही है।

इन्द्रवेश जी ने कहा कि वहा खालिस्तान बनायेंगे। यहा भगतसिंह ने जो शहादत दी थी 'भारत माता की जय' कहकर, क्या इसलिये कि खालिस्तान बनेगा? क्या वह सिख नहीं था? यह अलग बात है कि बाद में वह आर्यसमाजी बन गये और उसके चाचा अजितसिंह सरदार थे, दारासिंह जो उसके चाचा थे। लाला लाजपतराय आर्यसमाजी नेता, हिन्दुओ के नेता ने देश को मिलाकर आजादी प्राप्त की थी इसलिये कि आगे चलकर ऐसे लोग देश का बटवारा करायेंगे?

तलवन्डी, बादल और जरनैलसिंह दिल्ली की तरफ देखते हैं, शरारत करते हैं, उनका ध्यान कभी रावलपिंडी और नानकाना साहब की तरफ क्यो नही जाता जहा के लिये उनको पासपोर्ट लेना पड़ता है? हिन्दुस्तान की राजगद्दी और बडे से बडा दर्जा ज्ञानी जैलसिंह जी को दिया जो कि सरदार हैं। हमारे राष्ट्रपति हैं। इस पालियामेट को चलाने का काम ससदीय कार्य मत्री श्री बूटासिंह के पास है जिसके आधार पर यहा कार्य बनता है। रिजर्व बैंक का गवर्नर एक सिख को बना दिया, एयरफोर्स का जनरल एक सिख को बना दिया। हम सारे हिन्दुस्तान का तख्त और ताज सिखो को देना चाहते हैं, उनको जिनमे योग्यता हो, जो देशभक्त हो।

गद्दारों को प्रोत्साहन नहीं मिल सकता। ये कुए के मेढक बनना चाहते हैं। ये सावधान हो जायें, हिन्दुओं को झिझोड़ने की कोशिश न करें। एक बात हमारे विरोधी भाई ने कही कि वीरेन्द्र जी जो पुराने काग्रेसी हैं, मेरी उनसे बात हुई है। वह मजबूर हो गये हैं कि उन्हें अनशन करना पड़ेगा।

मैं गृह मत्री से कहना चाहता हू कि अगर वीरेन्द्र जी ने अनशन किया तो पंजाब की स्थिति विचित्र बन जाएगी? उस पर ध्यान देना पड़ेगा। मैं इस हाउस के माध्यम से उनसे प्रार्थना करता हूं, वह मेरे दोस्त हैं, ३० साल से साथ काम कर रहे हैं कि वह इस तरह का कदम न उठायें, आप भी उनको विश्वास दिलाइए कि जो पटियाला मे हुआ है, उस कांड पर जो वहा की जनता चाहती है, उसको सतोष देने के लिए आप वहा जाइए। गृह-सचिव वहा गए। उन्होने अच्छा पार्ट अदा किया है। मेरी प्रार्थना है कि आप भी जाइये और उनको आश्वासन दीजिये। आर्यसमाजियो की पजाब मे बहुत बड़ी शक्ति है, गाव-गांव मे आर्यसमाजी हैं, ४८ प्रतिशत हिन्दू पजाब मे हैं, उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। यदि आर्यसमाजी बिगड गये तो स्थिति विचित्र बन जाएगी। वह बिगडेंगे नही, यह हमे विश्वास है, परन्तु वीरेन्द्र जी को आपको आश्वासन देना पडेगा कि इस तरह का कोई कदम नहीं उठाइये जिससे हिन्दू और सिख आपस मे युद्ध करें, कत्लेआम करें और खून की नदिया बहे, पजाब की नदियो मे हिन्दू और सिखो का खून न बहे, इस बात की तरफ आपको ध्यान देना पडेगा।

जहा तक चण्डीगढ़ का सवाल है, उसके बारे मे कहना चाहता हू कि उसको केन्द्रशासित रहने दिया जाये। आप इसकी स्पष्ट घोषणा कीजिये। यदि आपने कोई कदम उठाया तो हरयाणा मे असतोष पैदा हो जायेगा। हिमाचल का भी तो अधिकार है, पानी का वहा भी झगड़ा है। आपको इसका भी फैसला करना पडेगा।

चण्डीगढ की प्रजा से आप अभिप्राय मागिये और लोकशाही से जो अभिप्राय: वह दें उस आधार पर चण्डीगढ का आप फैसला कीजिये।

एक बात अन्त में मैं यह कहना चाहता हू कि वहा जो स्थिति आज है, वह बहुत भयकर है और विचित्र है। उसको सतोष दिलाने के लिये, आग को बुझाने के लिये एक ही मार्ग मेरी दृष्टि मे है। ससद कल समाप्त हो रही है, परसो के बाद कोई भी दिन आप निश्चित कर लें। लोक सभा के स्पीकर माननीय श्री बलराम जाखड, जो इस सदन के अध्यक्ष हैं, जिसमे सब पार्टी के लीडर हैं, उनके नेतृत्व मे सारी पार्टी के लीडर हम सब साथ [illegible] कर चण्डीगढ चलें शाति और अहिंसा का कारवा बनाते हुए स्वर्ण मदिर मे जायें। हम चाहते हैं कि वहा गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ सुनें, गुरुवाणी का पाठ सुनें और वहा का कडा प्रसाद खाकर प्यार का कारवा बनायें।

हिन्दू सिखो के बीच मे, जो एक मा बाप की औलाद हैं, उनमे बटवारा न हो। उसके लिये हर सभव कोशिश की जाये और मेरी प्रार्थना है कि आप विचार कर निर्णय करें कि लोकसभा के स्पीकर के साथ हम सब पार्टी के लीडर एक जलूस बनाकर पैदल शाति-कूच करते हुए चण्डीगढ़ पहुचे। अगर मेरी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्यार के कारवां के सामने उन शैतानों के सिर झुक जायेंगे और हिन्दुस्तान अखण्ड रहेगा।

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार २९ मई ८३ को साप्ताहिक सत्संग

अशोक विहार—प० दीनानाथ सिद्धान्तालकार, आर० के० पुरम् सैं०-५—प्रकाशवीर व्याकुल, आर्यनगर-पहाडगज—प० हरीशचन्द्र आर्य, किंग्जवे कैम्प—प० रामनिवास; कालका जी डी० डी० ए०—प सत्यभूषण वेदालकार, कृष्णनगर—प० टेकचद्र; गाधीनगर—प० वेदव्यास जी, गीताकालोनी—प० महेशचन्द्र भजन-मण्डली, ग्रीन पार्क—पं० कमलेश्वर शास्त्री, ग्रैटर कैलाश I—प० बन्धेश्वर आर्य, ग्रेटर कैलाश II—प० ओमप्रकाश वेदालकार; गुप्ता कालोनी—प० खुशीराम शर्मा; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—प्र० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री; जगपुरा भोगल—प० ओम्प्रकाश शास्त्री; जनकपुरी—सी-३, प० मुनिशकर वानप्रस्थी, जनकपुरी बी-३।२४—श्रीमती सुशीला राजपाल; टैगौर गार्डन—प० ओमवीर शास्त्री, तिलक-नगर—महात्मा रामकिशोर वैद्य, तिमारपुर—प० चमनलाल जी, दरियागज—डा० सुखदयाल भूटानी, नया वास—प्रो० सत्यपाल वेदार, नगर शाहदरा—प० अमरनाथ कान्त, पजाबी बाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, पजाबीबाग एक्टेन्शन—प०रमेशचन्द्र वेदाचार्य, बिरला लाईन्स—आचार्य रामचन्द्र जी शर्मा, मयूर विहार—प० मनोहर लाल ऋषि, माडल बस्ती—हरिदत्त वेदाचार्य, माडल टाउन—डा० रघुवीर वेदा-लकार, मोतीबाग—श्रीमती प्रकाशवती बग्गा, रमेशनगर—प० श्रीराम भजनो-पदेशक, राणाप्रताप बाग—डा० रघुनन्दन सिंह, राजोरी गार्डन—प० देवराज वैदिक मिशनरी, बालिनगर—प० विद्याराम, लाजपतनगर—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री विक्रमनगर—प० रामरूप शर्मा, सदर बाजार—पहाडी धीरज—प० देवेश जी, सराय रुहेल्ला—पं० देवशर्मा शास्त्री, सुदर्शनपार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, शाली-मार बाग—प० चुन्नीलाल जी, भजनोपदेशक, हौजखास—सत्यपाल मधुर भजनो-पदेशक वोटक्लब पं० प्रकाशचन्द्र, ।

स्वामी स्वरूपानन्द, प्रबन्धक वेद प्रचार विभाग,

'अकाली आन्दोलन अव्यवहारिक'

राजेश्वर आर्य, एडवोकेट

पजाब मे चल रहा अकाली आन्दोलन एक अज्ञानता भरा अव्यवहारिक कदम है जो चन्द स्वार्थी व सत्तालोलुप नेताओ द्वारा सचालित किया जा रहा है। आन्दो-लनकारी नेताओ द्वारा सिक्खो को, हिन्दुओ से एक अलग कौम मानना उनकी भयकर भूल है। वास्तव मे गुरुओ ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही सिक्खो की विजय वाहिनी का निर्माण किया था। औरगजेब के शासनकाल मे जब हिन्दुओ को जबरदस्ती मुसलमान बनाया जाने लगा और कश्मीर के ब्राह्मणो ने गुरु तेग-बहादुर जी से इस सम्बन्ध मे बातचीत किया तो गुरु तेग बहादुर स्वय मुगल सम्राट के समक्ष उपस्थित हुए इसलिए कि औरंगजेब द्वारा दबाव पडने पर भी वे मुसलमान नही बनेंगे और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणो का बलिदान देकर अन्य धर्म गुरुओ तथा हिन्दुओ मे वीरता व जागृति उत्पन्न करेंगे। ऐसा ही हुआ। हिन्दू धर्म की रक्षा मे गुरु तेगबहा-दुर को शहीद होना पड़ा। तदुपरात गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपने महान पिता के मार्ग का अनुसरण कर सिक्खो की बलि-दानी सेना का निर्माण किया। इस सेना के लिए प्रत्येक हिन्दू परिवार से एक नव-जवान को लेकर सिक्ख बनाया गया। इतिहास साक्षी है कि गुरु गोविन्दसिंह ने इसी सेना के बल पर मुगलों की सेना के छक्के छुडा दिए, और उनके दो पुत्रो—जोरावरसिंह व फत्तेसिंह ने हिन्दू (वैदिक) धर्म की रक्षा मे अपने को दीवालो मे चुनवा कर धर्म की वेदी पर प्राण समर्पित कर दिए। इस प्रकार सिक्खों का निर्माण हमारे गुरुओ ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही किया था। गुरुओ द्वारा लिखित ग्रन्थो मे सर्वत्र वेद, राम-कृष्ण तथा अन्य हिन्दू, देवी-देवताओ की ही चर्चा है। किसी अन्य की नही। लेकिन इन ऐतिहा-सिक तथ्यो को नकार कर हमारे सिक्ख भाइयो को कुछ स्वार्थी राजनेता, अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति हेतु गुमराह कर रहे हैं और राष्ट्र की अखण्डता के लिए संकट पैदा कर रहे हैं।

मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

आर्यसमाज अशोक विहार, फेज २, दिल्ली का वार्षिक चुनाव

आचार्य श्री दीनानाथ सिद्धान्तालकार की अध्यक्षता मे निम्न चुनाव सर्वसम्मति से हुए—

(१) प्रधान—श्री रामशरण दास सलूजा (२) वरिष्ठ उपप्रधान श्री जग-दीश शरन सकरेजा (३-४) उपप्रधान—श्री प्रकाशदेव भडारी और श्री विमल कुमार महता (५) मत्री—श्री हरिकृष्ण सुनेजा (६) उपमत्री—श्री सुजानसिंह (७) प्रचार मत्री—श्रीप्रकाशनाथ (८) कोषाध्यक्ष—श्री बलदेव सचदेवा (९) निरीक्षक—श्री कृष्ण कुमार सहगल।

सूचना

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी जी के २० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत इस नए वर्ष मे ढाई हजार आप्रेशन, प्रधान मन्त्रीजी के ६६ वें जन्मदिन तक ६६,००० बच्चो के स्कूलो मे जा-जाकर नेत्र परीक्षण और दिल्ली के देहातो के ६६ ग्रामो मे जा-जाकर नेत्र रोगियो का उपचार किया जायेगा। यह घोषणा आज महाशय चुन्नी लाल धर्मार्थ ट्रस्ट के प्रधान, दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य नेता महाशय धर्मपाल जी ने एक प्रेस वक्तव्य मे की है।

आपने कहा है कि इसकी जानकारी ३ मई को जब प्रधान मन्त्री जी ने श्रीमती चन्ननदेवी नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय के अधिकारियो एव कर्मचारियो को अपने निवास स्थान पर बुलाकर आशीर्वाद दिया था, दे दी गयी थी। आपने कहा कि प्रधान मन्त्री जी का २० सूत्री कार्यक्रम किसी सस्था का नही बल्कि एक राष्ट्रीय कार्य-क्रम है, जिसमे प्रत्येक भारतीय को सहयोग देना चाहिए।

महाशय धर्मपाल ने घोषणा की कि आर्यसमाज २० सूत्री कार्यक्रम को लागू करने मे कोई कसर उठाकर नही रखेगा। इसी २० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा बनाए जा रहे जनकपुरी मे १०० बिस्तरे के विशाल चिकित्सालय, जिस पर २ करोड रुपए खर्च आने का अनुमान है, साढे चार लाख रुपए अतिरिक्त व्यय करके एक २५ बिस्तरे का अस्थाई चिकित्सालय बना दिया है जो जुलाई के प्रथम सप्ताह मे अपना कार्य आरम्भ कर देगा। और यह चिकित्सालय २० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत इस वर्ष बिल्कुल नि शुल्क कार्य करेगा।

ओमप्रकाश आर्य
(ट्रस्ट सचिव)
श्रीमती चन्ननदेवी आर्य समाज
नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय,
सुभाष नगर नई दिल्ली-११०००
फोन ५३७८८२-३५५६७

वेद के दो गूढ़ प्रश्न : उनके सरल उत्तर

(पृष्ठ ५ का शेष)

'परं नेदीयो अवरं दवीय ।' "दूरवाले समीप आ रहे हैं और समीपवाले दूर जा रहे हैं।"

इस वाक्य का यदि हम सीधा-सा अर्थ यह ले लें कि दूर के पदार्थ समीप आ रहे हैं और समीपवाले दूर जा रहे हैं तो गाड़ी की चाल का पता लगाना हमारे लिए कठिन न रह जाएगा। प्रकृति का जीव से भोग्य और भोक्ता का सम्बन्ध है, परन्तु गौण सम्बन्ध है। जीव का चैतन्य गुण है और प्रकृति का जड़ है। इसलिए प्रकृति से जीव का गुण की समतावाला सम्बन्ध नही है। जिस प्रकार प्रकृति से उसका सम्बन्ध है उसी प्रकार जीव का ब्रह्म से भी सम्बन्ध है, परन्तु ब्रह्म से उसका गुण के द्वारा सम्बन्ध है। ब्रह्म भी चेतन है और जीव भी। ब्रह्म ज्ञान का भडार है और जीव अल्प ज्ञानवाला है। ज्ञान की शक्ति उसे ब्रह्म से ही मिल सकती है, प्रकृति से नही। जीव की वास्तविक गति है उसका ब्रह्म की ओर जाना। उसके शरीर, इन्द्रिय, प्राण, मन आदि उसे ब्रह्म की ओर ले जा रहे हैं [illegible] रही है। परन्तु [illegible] ओर है। हम अपने एकमात्र साधन अन्त करण के ऊपर प्रकृति के अनेक चित्र खींचते चले जा रहे हैं। इसलिए पाठ यह ही पढ रहे है। 'पर नेदीय' जो प्रकृति गुण से हमसे सर्वथा दूर है वह ही सस्कारो के रूप मे हमारे अन्त करण मे इकट्ठी होती जा रही है। और इस प्रकृति का पर्दा पड जाने से हमारी समीपी ब्रह्मसत्ता हमारे अन्त करण की आखो से ओझल होती जा रही है। यही कारण है कि इस प्रकृति अथवा अज्ञान के पर्दे के कारण हमे अपने ज्ञान की गाडी की चाल का पता नही लग रहा। जिस प्रकार हम अधेरे मे कुछ नहीं देख सकते। इसलिए अपनी गति को देखने के लिए हमे प्रकृति के प्रभाव को दूर कर ब्रह्म के प्रभाव की छाप अन्त करण पर लगानी होगी। (वेद प्रकाश से साभार)

आदर्श विवाह

आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर मे श्री राकेश कुमार अग्रवाल का विवाह सस्कार कुमारी गौरी भट्ट के साथ वैदिक रीति अनुसार सम्पन्न हुआ। [illegible] पक्ष ने दहेज बिल्कुल नहीं लिया। [illegible] इन्जीनियर हैं।

निर्धन व असमर्थ विद्यार्थियों की सहातार्थ

(पुस्तक संग्रह अभियान)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने राजधानी में कमजोर वर्ग के निर्धन व जरूरतमन्द विद्यार्थियो की सहातार्थ 'पुस्तक संग्रह अभियान' चलाया है, जिसके अन्तर्गत परिषद् के कार्यकर्ता घर-घर जाकर पाठ्य पुस्तकें व अन्य साहित्य एकत्रित करेंगे।

परिषद् के महासचिव श्री अनिल कुमार आर्य ने एक वक्तव्य मे कहा कि सग्रहित, 'पुस्तक कोष' मे आठवी कक्षा तक के विद्यार्थियो को नि शुल्क पुस्तकें ग्रीष्मकालीन छुट्टियों के दौरान एक समारोह आयोजित कर प्रदान की जायेगी, इस योजना के अन्तर्गत [illegible] कक्षा से बी० ए०, एम० ए० तथा [illegible], साहित्य, (मुफ्त) में एक 'विशाल पुस्तकालय' भी स्थापित किया जायेगा, जिससे युवक अध्ययन व शोध कार्यों हेतु प्रयोग कर सकेंगे।

उन्होंने राजधानी निवासियों से अनुरोध किया कि वे 'पुस्तक संग्रह अभियान' हेतु नई व पुरानी पुस्तकें दान कर, देश के भावी कर्म वाले को शिक्षित बनायें।

चन्द्रमोहन आर्य
(कार्यालय मंत्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित [illegible] प्रेस २५७४ [illegible]
गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपए   वर्ष . ७ अक ३२   रविवार ५ जून' १९८३   २३ ज्येष्ठ वि० २०४०   दयानन्दाब्द—१५८

समानो ये सुवृधो यज्ञमाययुः

(मंत्र की कविता द्वारा प्रार्थना)

यह पतित जीवन छुड़ा हमको महान बनाइए

पतितपावन नाम अपना सत्यकर दिखलाइये।
यह पतित जीवन छुडा हमको महान बनाइये।।

दिव्य जीवन हो हमारा, प्रेममय व्यवहार हो।
यज्ञमय जीवन बनाकर स्वार्थ भाव भगाइये।

छोडकर हम दुर्गुणो को श्रेष्ठता धारण करें।
नित्यप्रति उन्नति करें हम श्रेय मार्ग दिखाइये।।

हो सरल जीवन हमारा, छोड दें अभिमान को।
सौम्यता शालीनता और नम्रता सिखलाइये।।

हे दयामय! नाथ बस यह प्रार्थना है आपसे।
यह पतित जीवन छुडा, हमको महान बनाइये।।

—सोमदत्त विद्यालंकार
१।३११ नया राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

राष्ट्रीय एकता के लिये धर्म-यात्राओं का आयोजन

विश्व हिन्दू परिषद् का राष्ट्रीय एकात्मता अभियान

नई दिल्ली विश्व हिन्दू परिषद् ने राष्ट्रीय एकता के लिए 'एकात्मता यात्रा का' एक अभितव आयोजन किया है। इस योजना के अन्तर्गत एक यात्रा गगासागर से सोमनाथ तक दूसरी हरिद्वार से रामेश्वरम् तक लगभग तीन-तीन हजार किलोमीटर का मार्ग तय करेगी।

यह यात्रा सुसज्जित ट्रको पर विशाल कलशों में गगाजल लेकर चलेगी। इन ट्रको के साथ साधु-सन्तो की मण्डलिया एव धर्माचार्य चलेंगे, जो मार्ग मे हिन्दू धर्म, राष्ट्रीय एकता और देश की अखण्डता के लिए गाव-गाव, नगर-नगर में प्रचार करते रहेंगे। ये दोनो यात्रायें दिनाक १६ नवम्बर, १९८३ को देवोत्थान से प्रारम्भ होंगी और १६ दिसम्बर को गीता-जयन्ती के अवसर पर सोमनाथ एव रामेश्वरम् मे समाप्त होगी। ये यात्राए प्रतिदिन १०० किलोमीटर का मार्ग तय करेगी और हर २५ किलोमीटर के अन्तर पर एक विश्राम-स्थान होगा; जहां विशाल सभाओं का आयोजन किया जाएगा। आस-पास के सारे क्षेत्र से हिन्दू समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों और सम्प्रदाओ के घटक अपने-अपने स्थानो से जलकुम्भ लाकर कलशो मे डालेंगे और उनमे से अपने-अपने स्थानो पर मन्दिरो एव ग्रामवासियो के अभिषेक के लिये गंगाजल ले जायेंगे। लगभग ढाई लाख ग्रामो से २० करोड़ लोग इस कार्यक्रम में भाग लेंगे।

विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में जो मई के मध्य में हरिद्वार में सम्पन्न थी, उपस्थित सभी धर्माचार्यों ने इस योजना को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग देने का निश्चय किया।

महर्षि निर्वाण शताब्दी संयुक्त रूप से अजमेर में मनायेगी।

दिल्ली में आर्य नेताओं का स्तुत्य सामूहिक निर्णय

नई दिल्ली। दिनाक २५ मई १९८३ को मध्याह्न १२ वजे आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग के समाज भवन मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज, प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री वेदव्यास जी, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह जी और स्वामी सत्यप्रकाश जी की एक बैठक महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर के सम्बन्ध मे हुई।

सर्वसम्मति से यह निर्णय किया गया कि आगामी दीपावली के अवसर पर ३,४ ५,६ नवम्बर की यह महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी सम्मिलित रूप मे अजमेर मे एक ही मच पर मनाई जायेगी।

आर्य जनता से प्रार्थना है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी को सफल करने के लिए तन-मन और धन से सहायता करें। धनराशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' महर्षि दयानन्द, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ और परोपकारिणी सभा अजमेर' को भेजें

१२५ मूले जाट पुनः हिन्दू बने

हरियाणा के दो गावों में शुद्धि समिति की सफलता

समालखा। हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा, समालखा जिला करनाल के तत्वावधान मे २० मई, १९८३ को प्रात गाव कलासर मे आर्यसमाज कलासर के प्रधान श्री दुलीचन्द जी की अध्यक्षता मे यज्ञ-हवन हुआ और आर्यसमाज मतलोडा के प्रधान श्री रामजीलाल और शुद्धि समिति समालखा के महामन्त्री श्री रतनसिह के प्रयत्नो से मुसद्दी पुत्र अर्जुन, ज्ञानचन्द्र पुत्र मुसद्दी, बचना पुत्र मुसद्दी, रतनसिह पुत्र मुसद्दी, राजू पुत्र मुसद्दी और सेवा पुत्र ज्ञान व सेवा पुत्र ज्ञान आदि मूले जाटो के परिवारो के १९ सदस्यो के साथ स्वेच्छया वैदिक धर्म ग्रहण किया। गाव के भू० पू० सरपच श्री ज्ञानचन्द्र भी मौजूद थे।

२० मई को ही जिला जींद के गाव खेडी मडील मे दोपहर बाद यज्ञ-हवन हुआ। आर्यसमाज मतलोडा के प्रधान श्री रामजी लाल और हिन्दू आर्य समिति समालखा के महामन्त्री श्री रतनसिह के प्रयत्नो से अनेक मूले जाट परिवारो के १०६ सदस्यो ने स्वेच्छया वैदिक हिन्दू धर्म ग्रहण किया। छज्जू पुत्र टीटू का नाम छज्जूराम रखा गया। परिवार के सदस्य दो हैं। ताजा पुत्र छज्जू का नाम तेजराम रखा गया। उनके परिवार के सदस्य २० हैं। सीपा पुत्र छज्जू का नया नाम सुबासिह रखा गया, उनके परिवार मे ९ सदस्य है, बशीर पुत्र छज्जू का नाम सूरतसिह रखा गया, उनके परिवार के सदस्य ९ हैं। ८ सदस्यो के रिसाला पुत्र छज्जू का नाम रिसालसिह रखा गया। पहले परिवारो की तरह सात सदस्यो के मिज्जा पुत्र छज्जू ने मेघराज नाम से अपना पूर्व धर्म ग्रहण किया। पन्द्रह सदस्यो के प्रेमा पुत्र शिला ने भी प्रेमसिह नाम लेकर हिन्दू धर्म ग्रहण किया। दिनू पुत्र साथ ९ दीनदयाल नाम के सामने सदस्यो के परिवार के साथ हिन्दू धर्म ग्रहण किया। इसी प्रकार दीपा नम्बरदार ने दलीपसिह, रामचन्द्र पुत्र सोहन ने रामचन्द्र, शेरदीन पुत्र जूसब ने शेरसिह, जोधा पुत्र छज्जू ने जोधासिह नाम के साथ अपने ९, ८, ७, ७ और सदस्यो के परिवारो के साथ आर्य हिन्दू धर्म ग्रहण किया। गाव मे कुल १०६ मूल जाट हिन्दू बने।

अपने व्यक्तिगत, सामाजिक एव राष्ट्रीय कामकाज मे हिन्दी और भारतीय भाषाओं का प्रयोग करें।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक—मथुराप्रकाश तलवाड़

वेद-मनन

मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो ।

—प्रेमनाथ सभा प्रधान

यस्मिन्नृच साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवारा ।
यस्मिञ्चित्तꣳ सर्वमोत प्रजानाम् तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु ।।

।।यजु० ३४ ।५।।

शिवमकल्प ऋषि, मन देवता, त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर ।

शब्दार्थ—हे परम विद्वान् परमेश्वर! [यस्मिन्] जिम (मन) मे [रथनाभाविव] जैसे रथ के बीच (धुरा मे) [अरा] आरे (लगे होते है वैसे) [ऋच] ऋग्वेद, [साम] सामवेद वा [यजूषि] यजुर्वेद [प्रतिष्ठिता] सब ओर से स्थित (होते है) वा [यस्मिन्] जिस (मन) मे (अथर्व वेद भी प्रतिष्ठित होता है) (वा) [यस्मिन्] जिस (मन) मे [प्रजानाम्] प्राणियो का [सर्वम्] ममग्र [चित्तम्] सर्व पदार्थ सम्बन्धी ज्ञान [श्रोतम्] (सूत मे मणियो के समान) ओत-प्रोत (सयुक्त है [तत्] वह [मे] मेरा [मन] मन (शिवसकल्पम्) कल्याणप्रिय, कल्याणकारी वा वेदादि सत्यशास्त्रो के प्रचाररूप सकल्प वाला (अस्तु) होवे ।। (ऋषि भाष्य वा सत्यार्थ प्रकाश)

भावार्थ—ईश्वर उपदेश करता है कि—हे मनुष्यो! तुम लोगो को चाहिए कि जिम मन के स्वस्थ रहने से ही वेदादि का पठन-पाठन व्यवहार हो सकता है और जो मन सब वेदविद्या का आधार है और जिममे सब व्यवहारो का ज्ञान मचित होता हे उम अन्त करण (मन) को विद्या और धर्माचरण से पवित्र करो ।। (ऋषि-भाष्य)

अतिरिक्त मन व्याख्या—पावनीय धातुपाठ मे मनधातु के अर्थ दिए है—मन ज्ञाने अतएव मन के अर्थ न केवल सकल्प-विकल्पात्मक अथवा स्मरणात्मक है किन्तु धारणावाली बुद्धि भी है। मन चतुष्टय है अर्थात्—अन्त करण बुद्धि, चित्त वा अहकाररूप है। जब तक मन अथवा बुद्धि का योग न हो विद्या का ज्ञान प्राप्त नही हो मकता है। मन के योग से ही ऋषि लोग चारो वेदो का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं जैमे पहले ब्रह्मा ने किया और फिर मनु आदि ने भी और आधुनिक युग मे ऋषि दयानन्द ने भी। इम मन के योग से ही स्मृतिमानो को चारो वेद स्वर मात्रा सहित कण्ठस्थ हो जाते है। इमीलिए इस वेदमन्त्र मे कहा है कि चारो वेद मन मे प्रतिष्ठित होते हैं जैसे रथ के मध्य मे धुरा मे आरे लगे रहते हैं।

मन का वशीकरण

सुषारथिर्र॰ "यूवा॰निव यन्मनुष्यान्ने-
नीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठ यदजिरज्जाविष्ठ तन्मे मन
शिवसङ्कल्पमस्तु ।।

शिवसङ्कल्प ऋषि, मन देवता, स्वराट् त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर ।

शब्दार्थ—हे सर्वनियन्ता इश्वर! (यत्) जो (मन) [मनुष्यान्] मनुष्यो को (नेनीयते) शीघ्र इधर-उधर घुमाता है (अश्वानिव) जैसे घोडो को (सुषारथि) अन्दर (चतुर) सारथि (लगाम से सब ओर से चलता है) वा (अभिशुभि) रस्सियो से [वाजिन इन] (चतुर मारथि) जैसे वेग वाले घोडो को (वश मे रखता है वैसे बुद्धिमान मनुष्य मन द्वारा इन्द्रियो को वश मे रखता है। (वा) (यत) जो (मन) (हृत्प्रतिष्ठम्) हृदय मे प्रतिष्ठित (स्थित) [अजिरम] वृद्धादि अवस्था रहित (वा) [जाविष्ठम्] अत्यन्त बेगवान् (है) [तत्] वह [मे] मेरा [मन] मन [शिवसङ्कल्पम्] मङ्गलमय नियम मे इष्ट अर्थात् सब इन्द्रियो को अधमोचरण से रोक करे सदा धर्म पथ मे चलाने वाला) [ग्रस्तु] होवे ।।

भावार्थ—विद्वान् मनुष्य मन को अपने वश मे रखता है जिससे उसका मन वा इन्द्रिया विषयो से आसक्त नही होती जैसे एक चतुर सारथि लगाम से घोडो को वश मे रखता है और उनको कुमार्ग नही चलने देता। जो मन शुद्ध हुआ? सुखकारी और अशुद्ध हुआ? दुखकारी होता है जो जीता हुआ सिद्धि को और न जीता हुआ असिद्धि को देता है वह मन सब मनुष्यो को अपने वश मे रखना चाहिए।

अतिरिक्त मन वशीकरण विषय—पातन्जल योगदर्शन के ममाधि पाद के १२ वे सूत्र मे चित्त अर्थात् मन के निरोध का उपाय यह दिया है—

"अभ्यासवैराग्यभ्यान्तन्निरोध"

अर्थात् अभ्यास वा वैराग्य से चित्त-वृत्तियो का निरोध हो जाता है।

गीता के छठे अध्याय का पैतालीसवा श्लोक भी इम प्रकार है—

"असशय महाबाहो दनिग्रह चलम् ।
अध्यासेन तु कौन्तेय वैराग्यान च गृह्यते"

अर्थात् हे अर्जुन यह मन बडा चचल कठिन से वश मे आने वाला है। इसका उपाय अभ्यास वा वैराग्य है।। अभ्यास कहते है सतत् यत्न करो। और वैराग्य कहते हैं विषयो से विरक्ति को।

किसी भी कार्य के लिए जब निरन्तर अभ्यास किया जाता है तो वह कुछ काल पश्चात् सुगम हो जाता है। जैसा शीतकाल मे जिनको ठण्डे जल से नहाने का अभ्यास हो जाता है उनको फिर इसमे कोई कठिनता नही होती।

यदि किसी मनुष्य को पता लग जावे कि अमुक कार्य उसको बहुत हानि पहुचायगा तो वह उसको छोड देता है जैसा कि मनुष्य किमी बडे रोग मे डाक्टर की सलाह पर अपने प्रिय स्वादिष्ट पदार्थों को भी छोड देता है वैसे जिस मनुष्य को विषयासक्ति के दोषो का ज्ञान हो गया है और ईश्वर से प्रेम हो गया है उसको मन के वश मे करने की कठिनता नही होती।

उपर्युक्त दो साधनों अर्थात् अभ्यास वा वैराग्य के अतिरिक्त एक तीसरा साधन ईश्वर प्रार्थना है। इससे मनन के निरोध मे ईश्वर की सहायता मिलती जो ऐसे कार्य के लिए आवश्यक है। परन्तु किसी कार्य मे ईश्वर सहायक तभी होता जब मनुष्य स्वय उस कार्य के लिए पूरा पुरुषार्थ करता है। अभ्यास वा वैराग्य के बिना केवल प्रार्थना लाभकारी नहीं हो सकती ।।

बोध-कथा

कभी गर्व न करो

केन उपनिषद् की कहानी है। एक बार देवो और दानवो मे भीषण लडाई हुई। युद्ध मे देवता विजयी हो गए। अपनी विजय के फलस्वरूप देवता गर्व मे चूर हो उठे। उनका ख्याल था कि यह विजय उनकी अपनी है, यह महिमा तो हमारी ही है। ब्रह्म को देवताओ का यह अभिमान व्यर्थ-सा लगा। वह तेज का स्वरूप धारण कर देवताओ के सम्मुख जा खडे हुए। उसने अग्निदेव से पूछा—"तू कौन है?" अग्निदेव ने उत्तर दिया—मैं हू अग्नि, जानवेदस्। सब पदार्थों के अन्दर मैं ही हू। उष्मा या गर्मी के रूप मे सब पदार्थों का शासन करने वाला। अच्छा तुम मे कितनी ताकत हैं? 'पृथ्वी पर जो कुछ है, उसे मैं भस्म कर सकता हू।" उस तेज पुन्ज ब्रह्म ने एक तिनका अग्नि के सामने रख दिया और कहा—"जरा, इसे तो जलाओ। सारी ताकत लगाने के बावजूद अग्नि उसे छोटे-से तिनके को नही जला सका।

उसके बाद वायुदेव आए। उन्हे आकाश और पृथ्वी म अपनी सचारशक्ति पर बडा गर्व था। उन्हें अभिमान था कि पृथ्वी पर जो कुछ है, उसे वह उडा सकते हैं। वह भी उस छोटे-से तिनके को नही उडा सके। निराश पराजित होकर सब देवता अपने शासक इन्द्र के पास पहुचे। और सारी घटना सुनाई। यह सब सुनकर देवराज इन्द्र जब उस तेज के पास पहुचे, तब वह अन्तर्ध्यान हो गया। वहा प्रकट हुई उमा। इन्द्र ने पूछा—हे, देवि, वह तेज पुञ्ज कौन था? देवी ने उत्तर दिया—इन्द्रदेव वह तेज ही तो ब्रह्म था। उमी की सत्ता से सारा जगत् बना है और अनादिकल से चलता चला आ रहा है, वही वह ब्रह्म है, जगत् का सारा उत्कर्ष और क्षमता उसी ब्रह्म की है, तुम देवताओ को जो विजय मिली, वस्तुत वह तुम्हारी नही थी ब्रह्म की क्षमता से तुम्हे वह विजय मिली, तुम्हे व्यर्थ का गर्व हो गया कि तुम्हारे अपने परिश्रम से विजय मिली। तुम्हारी शक्ति और क्षमता चूर-चूर हो गई।

—नरेन्द्र

ऋतुएं हमें फल देने वाली हों !

ओ३म् ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्त शिशिरो वसन्त ।
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम् ॥ अथर्व १२.१ ३६

हे पृथ्वी, ग्रीष्म, और वर्षा, शरद् और हेमन्त, शिशिर और वसन्त—ये छहो ऋतुए, दिन-रात और वर्ष—सब हमे फल देने वाले हो।

आर्यसमाज का उद्देश्य

स्वामी दयानन्द के समय मे ही आर्यसमाज का उद्देश्य छठे नियम के अनुसार भारत मात्र का ही नही ससार का उपकार करना है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

उद्देश्य तो बडा ही अच्छा है, आर्यसमाजो की सख्या भी ससार भर मे ६००० के ऊपर ही है। फिर भी आजकल लोग कहते-सुने जा रहे हैं कि आर्यसमाज का अब वह प्रचार नही जो आरम्भ के दिनो मे था। आजकल लाऊड स्पीकर, यातायात तथा प्रचार के अन्य साधनो मे भी विज्ञान के इस युग मे आर्यसमाज का प्रचार न होना अखरता भी है। आर्यसमाज के उद्देश्य मेमबसे पहली बात है शारीरिक उन्नति करना। आर्यसमाजो के भवन तो सर्वत्र नजर आते हैं परन्तु प्राय सप्ताह में एक या दो यज्ञघटे तथा प्रवचन के लिए ही खुलते हैं। भवनो के निर्माण मे काफी उत्साह समाज के कार्यकर्त्ताओं का है। जमीन लेते है भवन बनवाने हेतु धन इकट्ठा करके भवन भी बन जाते हैं परन्तु प्रचार फिर भी नही हो रहा है। क्योकि समाजें खुलती नहीं ताले ही लगे दिखाई देते हैं। सदस्यो की सख्या भी कम ही है। आवश्यकता है कि समाजो के उद्देश्यो पर ध्यान रखते हुए समाज की गतिविधियो को बढ़ाया जावे।

शारीरिक उन्नति—जब शारीरिक उन्नति द्वारा ससार का उपकार करना चाहता है इसमे व्यायामशाला अवश्य ही जहा पर युवक, जाकर व्यायाम कर सकें। योग आदि सिखाने का प्रबन्ध हो सकता है। आधुनिक खेलकूद, फुटबाल, हाकी, क्रिकेट, एथलीट, जिमनाप्टक का सामान भी यदि समाजें उपलब्ध कराके स्पोर्ट्स क्लब चालू कर सकती है। सामान तो समाज मे रखा जाये तथा जो खेल मैदान मे खेले जाने वाले हैं उनको बाहर किसी पार्क, मैदान मे खेल सकते हैं। शिक्षकों को व्यवस्था समाज द्वारा अपने सदस्यो मे से या फिर किसी स्कूल के माध्यम तथा सहयोग से की जा सकती है। परन्तु आर्यसमाज मे उद्देश्यो मे शारीरिक उन्नति का प्रथम स्थान होते हुए भी इस ओर कितनी समाजो का ध्यान गया है और इस ओर क्या प्रगति हो रही है। देखा जाये तो आत्मिक उन्नति भी तब ही हो सकती है जब हमारा शरीर ठीक होगा। शरीर के लिए व्यायाम आवश्यक है। और आज तो जब कि लोग अधिकतम कार्यालयो अथवा व्यवसाय मे व्यस्त होते है उन्हे एक स्थान पर बैठकर कार्य करना पडता है तो और भी आवश्यक है।

योग का प्रचार विदेशो मे तो बहुत हो रहा है परन्तु अपने देश भारत मे क्यो नहीं ? विदेशों मे योग सीखने के लिए लोग बहुत उत्सुक हैं तथा भारी खर्चा करके भी योग सीखते हैं। आजकल के नवयुवको की रुचि जूडो कराटे की ओर भी बढ रही है। इस प्रकार की गतिविधि समाजो मे आरम्भ करने से युवको का आर्यसमाज की ओर झुकाव होगा और समाज को ये नए उत्साही युवक कार्यकर्त्ता भी मिलते रहेंगे।

ग्रीष्म अवकाश मे विद्यार्थियो के लिए विशेष कार्यक्रम, योग-प्रशिक्षण ध्यान, हाबी पुस्तकालय आदि की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा सकती है ताकि बालको को सुरुचि पूर्ण साहित्य मिल सकें।

आत्मिक—आत्मिक उन्नति के नाम पर समाजो मे प्रात सन्ध्या यज्ञ तथा प्रवचन का कार्यक्रम प्राय हर समाज मे होता है। (आज के इस व्यवस्तता के युग मे प्राय देखने मे आता है कि संध्या तक करने का अवकाश समय अभाव के कारण लोगो को मिलता नहीं। और जल्दी मे दो मिनट बैठकर मत्र पाठकर भी लिया तो क्या उससे मन, आत्मा को कोई लाभ हो सकेगा ?)

क्या आत्मिक उन्नति के केवल यही साधन है ? मनुष्य का लक्ष्य तो है मोक्ष। और मोक्ष नाम आत्मा और परमात्मा के योग अथवा मिलन का। आसन तो योग के आठ साधनो में से केवल एक है जो शरीर को ठीक रखने का हेतु है। प्राणायाम से मन वश मे होकर ध्यान लगता है उस प्रभु मे जिससे मिलने का सबके मन मे मिलने की कामना रहती है। परन्तु क्या हमे आता है, प्राणायाम कैसे होता है ? क्या हमें मालूम है कि ध्यान किसे कहते हैं ? और ध्यान कैसे किया जाता है ? ध्यान करने के लाभ भी अब हम नही जानते। जितने भी आजकल के मनमत्तान्तर हैं इसी ध्यान की आड मे जनता को अपनी दुकानो की ओर खीचकर लूट मचा रहे है। किंतु खेद है आर्यसमाजका इस ओर कोई ध्यान नही है इस कार्य के लिए। **ध्यानयोग शिविर**—लगाने की परम आवश्यकता है। इसमे लोगो का आकर्षक समाज की ओर अधिक होगा। क्योकि समाज के कार्यकर्ताओंर मे कोई काम करते नही, सत्सग आदि का सचालन तो सेवक, पुरोहित यदि कोई है तो) उनके द्वारा ही हो जाता है फिर मन्त्री प्रधान क्या करें ? An idle mind is derils works इस अग्रेजी मे में लोकोक्ति के आधार पर हम एक-दूसरे को छोटी-छोटी बातो पर उलझ जाते हैं जिसमे प्रचार के कार्य मे बाधा होती है।

चिट्ठी-पत्री

आर्य सन्देश का सम्पादन बड़ी उत्तमता से

निस्देन्ह 'आर्य सन्देश' का सम्पादन आप बडी उत्तमता से कर रहे हैं। आपके सामयिक सम्पादकीय और प्रेरक 'बोधकथा' के अतिरिक्त अन्य लेख भी प्राय बडे ही उद्बोधक रहते हैं। इस साधु प्रयास और पुरुषार्थ के लिए अनेकश धन्यवाद !

—प्रेमभिक्षु प्रधान सम्पादक, तपोभूमि मासिक' मथुरा.

श्री जगदीश आर्य मन्त्री आर्यसमाज सासाराम अस्वस्थ

□ आर्य पत्र-पत्रिकाओ के चिरपरिचित और प्रतिष्ठित लेखक श्री जगदीश आर्य सिद्धात रत्न, मत्री आर्यसमाज सासाराम, लगभग पिछले दो माह से श्वास रोग से पीडित रोग शैया पर पड़े हुए है। गत दो मई को तो १२ घटा बेहोश रहे। आक्सीजन दिया गया और चार बोतल पानी चढाना पडा, तब कही जाकर प्रभु की कृपा से वह होश मे सके। अभी भी उनकी दशा अच्छी नही है। वह काफी कमजोर हो गए हैं। उनके आर्य मित्रो एव शुभचितको के रोज ही २-३ पत्र आ रहे है। काफी पत्र जमा हो गए है। मन्त्री जी अभी भी पत्रोत्तर देने की स्थिति मे नही हैं। अत मत्रीजी की इच्छानुसार उन सभी शुभ चितको और उनके मित्रो से उत्तर न देने के लिए क्षमा-याचना चाहता हू तथा इनके स्वास्थ्य लाभ की उनसे शुभकामनायें चाहता हू।

सम्पर्क सूत्र — अजय सिन्हा, स्वतन्त्र पत्रकार व लेखक, तकिया व्यापार मडल सासाराम ८२१११५ (बिहार)

राष्ट्रपति महोदय का हिन्दी प्रेम

८ मई, १९८३ को डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार की अग्रेजी पुस्तक "फ्राम ओल्ड एज थ्रू यूथ थ्रू योग" का विमोचन करते हुए महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने कहा कि हमारे मैडिकल कालेजो मे अभी तक अग्रेजी मे ही शिक्षा दे रहे है। उन्होने रूस और चीन का उदाहरण देते हुए कहा कि वहा पर रूसी और चीनी भाषा मे शिक्षा दी जाती है। भारतवर्ष मे ऐसा क्यो नही होता।

यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि राष्ट्रपति महोदय के सभी भाषण हिन्दी मे होते हैं।

अभी हाल ही मे शिलाग वि० वि० की आधारशिला और मिजोरम के दौरे मे भी उन्होने हिन्दी भाषा मे भाषण दिया। २० वर्ष बाद राष्ट्रपति भवन मे हिन्दी का प्रवेश हुआ है। यह बहुत सन्तोष का विषय है। अलबत्ता श्री जैलसिंह यह अवश्य कहते है कि हिन्दी भाषा मे सभी प्रान्तीय भाषाओ के आम बोलचाल के शब्दो का समावेश होना चाहिए।

स्वामी दयानन्द ने जो कि गुजराती थे, बगाली श्री केशवचन्द के परामर्शानुसार अपना कार्य हिन्दी मे करना शुरू किया। श्री जैलसिंह ने पजाबी होते हुए सारा कार्य हिन्दी मे करना शुरू कर दिया। अभी हाल ही मे उन्होने श्री निवारी जी के अग्रेजी मे भाषण देने पर एक मीठी चुटकी ली। आशा है हमारे विद्वतजन और नेतागण श्री जैलसिंह का अनुकरण करेंगे।

"येनगहता महाजन स पन्य

बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति
गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी

पंजाब की भाषा के सम्बन्ध में फैलाई जा रही भ्रान्तियां

पंजाबी भाषा की आड़ में पंजाब में हिन्दुओं और हिन्दी भाषा पर आघात

—लेखक प० दुर्गादास संपादक—आर्यगजट, नई दिल्ली—२

चन्द दिन हुए मुझे दिल्ली से निकलने वाली एक हिन्दी मासिक पत्रिका सचेतना का सितम्बर १६८२ का अक मिला और देखा कि इसमे पजाब के आर्यसमाजियो के विरुद्ध एक जहरीला सम्पादकीय लिखा गया है। आप इसका उत्तर दें। इस पत्रिका के सम्पादक कोई महीपसिह नाम के व्यक्ति हैं। जो वैसे हिन्दी के नाम पर पल रहे है और टी० वी० वालो से बडी-बडी रकमे डकार रहे हैं। इनके सम्पादकीय को पढकर ऐसा लगा कि वे दिल्ली मे बैठे दूसरे भिडरवाला बन रहे है और इन्हे नही भा रहा कि पजाब मे हिन्दी का नामलेवा हो। एक हिन्दी पत्रिका निकालने वाले का तो खुश होना चाहिये था कि जहा पजाब मे हिन्दी का गला घोटा जा रहा है—ऐसे भी गैरतवाले और आख रखने वाले लोग हैं जो वहा हिन्दी के साथ हो रहे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठा रहे है और इसकी रक्षा के लिये कटिबद्ध हैं। लेकिन इनके पेट मे तो मरोड उठ रहा है कि पजाब मे हिन्दी का नाम क्यो लिया जा रहा है। इनके लेख का शीर्षक है 'हिन्दी के ये नासमझ पहरोईये" जो जाहिर करता है कि इनके दिमाग मे साम्प्रदायिक सकीर्णता का कितना भूसा भरा है। जिसकी सड़ाद ने इनका विवेक छीनकर यह उबाला दिया कि वे दूसरो को नासमझ कहे। दूसरो के लिये ऐसे घटिया शब्द वही कह सकता है जो बुरी तरह अपने मजहबी और साम्प्रदायिक सकीर्णता मे डूबा हुआ हो। गुरु उसे यही तो सिखाता है कि दूसरो की सही और सच्ची बात भी उनको अखरती है और उनकी कूप-मण्डूक मनोवृत्ति उनकी समझ पर ताला लगा देती है कि उनके कुए से बडी भी कोई समुन्द्र नाम की विशाल वस्तु हो सकती है। यह भाई अगर अपने इस मजहबी तास्सुब (सकीर्णता) से ऊपर उठकर अपने मस्तिष्क को विशाल बनाकर देखें तो उनको अनुभव होगा तो वे तो अनजाने ही अपना अलग कुआ बनाकर इसमे सडाद भर रहे हैं और नाहक विशाल समुद्र को कोस रहे हैं।

पजाब के आर्यसमाजियो का यह दृढ विश्वास और अडिग मत है कि उनकी मातृभाषा हिन्दी है। यह तब से है जब पजाब नाम की कोई चीज पिक्चर मे न थी और न ही पजाबी का जन्म हुआ था, यह महर्षि दयानन्द की देन है कि उन्होने देशवासियो को यह विचार दिया कि देश मे एकता लाने के लिये सबकी एक भाषा हो और उसकी लिपि देवनागरी हो। इस जैसी (साइटिफिक) वैज्ञानिक लिपि किसी और भाषा को नसीब नही हुई जबकि तमाम लिपिया इसके बाद बनी और कोई इसकी बाट तक न पहुच सकी। यह पजाब के आर्यसमाजी ही थे जिन्होने अग्रेजो के समय मे सबसे पहले हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे अपनाने के लिये आवाज उठाई। और अपने दयानन्द स्कूलो कालिजो और गुरुकुलो मे हिन्दी को माध्यम की भाषा बनाया। देश विभाजन से पहले पजाब मे उर्दू और हिन्दी मे तो सघर्ष था लेकिन पजाबी कही अस्तित्व मे न थी और जिसे आज पजाबी कहा जाने लगा है, वह हिन्दी से अलग कोई स्वतन्त्र भाषा नही बल्कि इसका एक रूप है एक लहजा है एक बोली है। (Dilect) है जो दस-दस मील के बाद बदला मिलता है।

यह तगदिल अकाली आर्यसमाजियो पर आरोप लगाते हैं कि वे अपनी मातृभाषा हिन्दी कहते हैं तो झूठ बोलते हैं। हम उनसे पूछते है कि भाई बताओ तुम खुद कहा खडे हो—मातृ और भाषा दोनो ही हिन्दी के शब्द हैं। इन दोनो शब्दो को सामने रखकर यही कहा जा सकता है कि हमारी वही भाषा है कि जिसके ये दोनो शब्द हैं यानी "हिन्दी भाषा" झूठ तो तुम बोलते हो जो इस सच्चाई को अपना नही रहे। आखिर तुम क्या कहोगे कि ये किस भाषा के शब्द हैं। तुम्हे भी यह मानना होगा कि ये हिन्दी के ही शब्द हैं। अगर तुममे यह कहने का साहस नहीं तो यही कहोगे कि ये पजाबी के शब्द है। हम भी तो यही कहते हैं कि पजाबी हिन्दी है इसके अलावा और कुछ नही। यह एक हकीकत है कि पजाबी का अपना कोई शब्दकोश नहीं। एक पजाबी की पुस्तक ले ले उसमे से हिन्दी के शब्द निकाल दें तो बाकी रह क्या जाता है? इसे गुरुमुखी लिपि मे लिखकर अलग भाषा कह लो हिन्दी शब्दो के बिना चलोगे कैसे? यह कितना मजाक है कि ये लोग जिस पर बैठे हैं उसी की जडें काट रहे हैं। आखिर पजाबी है क्या? पजाबी फारसी का शब्द है। फिर इसका अस्तित्व क्या है? ये लोग शब्द बोलेंगे हिन्दी के, या हिन्दी शब्द को बिगाड कर, जैसे एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी पूणमासी, अमावस्या, सक्रान्ति, ये भाई बतलाए कि इनके पास इनके पर्यायवाची शब्द, कौन-से है। यही कहेगे कि कास्ती, द्वास्ती, त्रोस्ती, मस्या, पुण्या तथा सक्रान्द। इन पर गर्व कर लो लेकिन एक पढ़ा-लिखा और साहित्यसेवी व्यक्ति तो सदा यही प्रयत्न करेगा कि शुद्ध शब्दो का उच्चारण करे। वह कभी अपनी बोल-चाल या पढ़ने लिखने मे कभी चाकू को काचू, कागज को कागद, (कागद-कलम न लिखनहार) एकादशी को कास्ती नही कहेगा, मतलब को मतबल नही कहेगा। शलगम को शगमल, तारीख को तरीख नहीं बोलेगा। इसी प्रकार सस्कृत हिन्दी के सैकडो हजारो शब्द ऐसे हैं जो अन-पढता आने से बिगड गये। (किसी को क्या हक है कि किसी पढे-लिखे को मजबूर करे वह कि तुम एकादशी क्यो कहते हो, कास्ती कहना होगा। तुम श्री नहीं सिरि कहो। ज्ञात रहे पहले-पहल अकाली श्री शब्द के विरोध मे लठ लिये फिरते थे और इसे गाली कहा करते थे अब श्री शब्द सबने बडे गर्व से अपना लिया है, मुसलमान भाइयो के नाम के साथ भी श्री लग रहा है और यह बडा लोकप्रिय हो रहा है। हिन्दी और सस्कृत का एक और शब्द लीजिए, कृतघ्नता। इसके बारे मे अकाली यही कहेगे हम ऐसे नही बोल सकते हैं और न ही यह गुरुमुखी लिपि मे ऐसा लिखा जा सकता है। ज्ञात रहे कि गुरुमुखी लिपि मे कृतघ्नता ठीक लिखा ही नही जा सकता। इसे किरतघनता ही लिखा और पढा जा सकता है। एक वाद-विवाद मे मेरा एक पजाबी ज्ञानी से वास्ता पड़ा, वह कहने लगा कि गुरुमुखी लिपि पूर्ण लिपि है और इसमे जो लिखा जाता है वही पढा जाता है। मैंने कहा कि लिखिए "कृतघ्नता"। कहने लगे कि लिख लिया। मैंने कहा कि पढिये क्या लिखा। कहने लगा किरतघनता। मैंने कहा मैंने तो कृतघ्नता बोला है। दस-पन्द्रह भाई बैठे थे सभी हस पडे। मैंने उसे फिर कहा कि मैं फिर बोलता हूं जरा ध्यान से सुनो और वही लिखो आपने 'कृतघ्नता' लिखना है कहने लगा कि अच्छा। मैंने कहा कि बताओ मैंने क्या बोला— कहने लगा कृतघ्नता-मैंने कहा आपने ठीक समझ लिया और स्पष्ट हो गया अब लिखिए और फिर पढिए कि क्या लिखा है— लिखने के बाद उसने फिर वही किरतघनता पढा। उसकी बडी भद पिटी। मैंने कहा भाई हठधर्मी छोडिये। गुरुमुखी लिपि मे यह शब्द ठीक लिखा ही नही जा सकता इस रोग के रोगी हैं श्री महीपसिह जी, जो शीशे के महल मे बैठकर भिन्डरवाले की तरह हिन्दी के खिलाफ तीर चला रहे हैं।

ऐसा ही एक और उदाहरण लीजिये। जालन्धर मे इनसे कही ज्यादा बड़े पजाबी के विद्वान् (लेकिन इनकी तरह सकीर्ण और तगदिल न थे) प्रो० मोहनसिह जी थे। पजाबी भाषा के लिये उन्हें अवार्ड भी मिला था और पजाबी के बहुत बड़े कवि और लेखक थे। यारो के यार थे। बड़ी उच्च जाति व कुल के कपूर क्षत्री थे। उनके रिश्ते-नाते क्षत्रियो मे ही थे। वह अपने को अलग कौम से नहीं मानते थे। उनमे हिन्दू व सिख मे कोई भिन्न भेद न था बल्कि अक्सर अकालियों की मनोवृत्तियो का मजाक उडाया करते थे। एक दिन उनके ही घर हम पाच-सात दोस्त बैठे थे तो बात पजाबी भाषा की चल पड़ी। कहने लगे मैं तो पजाब भाषा का अथारिटि हू। मैंने कहा प्रो० साहब क्यो डींग मारते हो? बुरा न मानना मैं दावे से कहता हू कि तुहानू पजाबी का कख नही आइन्दा। बडे तिलमिलाए मैंने कहा प्रो० साहब नाराज न हो बताइये कि कख का मतलब क्या है और क्यो इसे कख कहा जाता है। बोले यह भी कोई कठिन बात है कख अर्थात् कुछ नही—कख माने-कख कान— मैंने कहा प्रो० साहब हर शब्द के अन्दर उसका मतलब जुडा होता है। अब बतायें क ख शब्द कैसे बना? कहने लगे— कई शब्द ऐसे ही अटकलपच्चू बन जाते हैं। मैंने कहा प्रो० साहब यह बात नहीं है। अब सुनिये— जिस तरह से कहते है कि आपको अग्रेजी की ए बी सी नही आती उर्दू का अलफ, बे नहीं आता—इस तरह से मैंने कहा था कि आपको पजाबी का क ख (क ख) नही आता। वह हक्के-बक्के रह गये। कहने लगे मुझे तो यह बात आज तक नही सूझी थी। हम आप महारथो को नही जीत सकते। कहने लगे सस्कृत-हिन्दी भाषा तो समुन्द्र है हम तो जोहड मे तैराक हैं। जोहड का समुद्र से क्या मुकाबला? फिर हस-कर बोले हमारा वास्ता तो अनपढ लोगो से पड रहा है क्यो न हम इनसे फायदा उठायें। मैं प्रात घन्टा डेढ घन्टा काम करता हू हिन्दी पुस्तको के अनुवाद (उलथा) पजाबी में बदल देता हू। डेढ दो सौ रुपया रोज इस फालतू समय मे कमा लेता हू। इस अधी राजनीति से क्यो न फायदा उठायें। यह विचार थे उस व्यक्ति के जिसे पजाबी भाषा के लिये अवार्ड मिला था। वहा पजाबी विश्वविद्यालय मे ऊचे पद पर रहे। कुछ वर्ष पूर्व ही उनका देहान्त हो गया है।

अपने इस लेख मे श्री महीपसिह ने शहीद भगतसिह के परिवार का भी जिकर किया है। शहीद भगतसिह के दादा सरदार अर्जुनसिह जहा अपने आपको पक्के सिख और गुरुओ के अनुयायी कहते थे वहा वे कट्टर आर्यसमाजी भी थे। उनकी अपनी यह धारणा थी कि गुरुओं ने जिस मिशन के लिये काम किया ऋषि दयानन्द ने उस मिशन की तस्वीर पूरी करके हमें दी। और उनके धर्म को असली रूप में हमारे सामने रखा। उनकी दृष्टि मे पजाब की भाषा की भाषा क्या थी यह भी जान लें। जब इन्होंने अपने लडके किशनसिह का विवाह किया उस समय मे विवाह छोटी आयु मे हो जाते थे। सरदार अर्जुनसिह अकस्मात् श्री किशनसिह के सुसराल गये वहा मुकलावा देर से होता था। सुसराल वालो ने अपनी लडकी की ले जाने की बात चलाई। सरदार अर्जुनसिह ने कहा कि जब तक गोने की तारीख पक्की हो बेटी विद्यावती को हिन्दी पढ़ाओ। उन्होने गुरुमुखी पढ़ाने की बात नहीं कही। पंजाबी कोई भाषा है इसका तो तब नाम ही नहीं था। इस उदाहरण देने का अभिप्राय यह है कि शहीद भगतसिह की माता की भाषा

हिन्दी थी। यह वह देवी थी जिन्हे पजाब मे 'पजाब माता' की उपाधि मिली। यो कहना होगा कि पजाब की माता की भाषा हिन्दी थी।

अपने इस लेख मे महीपसिंह ने एक और तीर मारा है कि १९५६ से ही देश की प्रान्तो का पुर्नगठन भाषाओ के आधार पर होने लग गया था। इसकी आड मे ही यह जोर मारा जाने लगा कि पजाब की भाषा पजाबी है। यह ऐसी भ्रान्ति है जिसके चक्कर मे आकर जो लोग पजाब की भाषा समस्या की असलियत को नही समझते। कहने लगते हैं कि इस तरह बगाल की भाषा बगाली है, गुजरात की गुजराती है महाराष्ट्र की मराठी, इस तरह पजाब की भाषा पगला ही होगी। जबरदस्त मारे भी और रोने भी न दें। यह आर्यसमाजियो पर आरोप लगाया जाता है कि वे ऐसा न मानकर पजाब में साम्प्रदायिक तनाव खडा कर रहे है। असलियत यह है कि यह तनाव ही धीगे मस्ती आर्यसमाजी नही अकाली कर रहे हैं। पजाब मे झगड़ा लिपि का है भाषा और बोली का नही, श्री नेहरू ने भी रोहतक मे अपने भाषण मे कहा था कि पजाब मे भाषा का नहीं लिपि का झगडा है और इन अकालियो ने पजाबी भाषा को केवल गुरुमुखी लिपि मे सीमित करके यह झगड़ा बढाया है। विभाजन से पहले पजाब मे तीन लिपिया प्रचलित थी—उर्दू, देवनागरी और गुरुमुखी। पते की बात यह है कि पजाबी की लिपि देवनागरी ही होती तो भाषा का इतना झगडा न पडता।

"अकालियो के दबाव से सरकार भी इनके आगे झुकती गई और इसने पजाबी की लिपि केवल गुरुमुखी मानकर इसे केवल सिखो की भाषा बना दिया।

"आर्यसमाज तो आरम्भ से ही अपनी भाषा हिन्दी मानता चला आ रहा है उस समय पजाबी का कही अस्तित्व भी न था। स्वतन्त्रता मिलने पर वह अपने इस पक्ष को क्यो छोडता अगर छोडता तो यह इसका अकालियो से धक्काशाही और साम्प्रदायिक सकीर्णता के सामने घुटने टेकना होता और इसकी मौत होती। यह आर्यसमाज ही था जिसने हिन्दी को सारे देश की राष्ट्रभाषा बनाने के लिये भरपूर प्रयत्न किया।

कांग्रेस ने अकालियो की अलगाव की मनोवृत्ति के सामने झुककर अपने हथियार डाल दिये। परन्तु आर्यसमाज अब भी इस बुनियादी सिद्धान्त पर डटा हुआ है कि भारत की राष्ट्रभाषा केवल हिन्दी ही हो सकती है जो देश मे एकता ला सकती है। यह आर्यसमाज का एक सुदृढ राष्ट्रीय स्टेंड था। चाहिये तो यह था कि हर समझदार व्यक्ति इसकी दाद देता और कांग्रेस भी इसे अपनाती। लेकिन भाषा के मामले मे वह अकालियो के सामने झुकती चली गई जिससे उनमें अलगाव की मनोवृत्ति बढती गई। यह जो कहा गया है कि देश के प्रान्तो का पुर्नगठन भाषा के आधार पर किया गया—असलियत भी देखिये। आर्यसमाज के इस विचार को लेकर बिहार वालो ने अपनी स्थानीय बोली के मोह को छोडकर हिन्दी को ही अपनी प्रान्तीय भाषा घोषित किया। हालाकि बिहार की जो बोली है उसे हिन्दी बोलने वाला समझ ही नही सकता। इसी प्रकार राजस्थान ने भी अपनी स्थानीय अलग बोली के मोह को छोडकर अपनी हिन्दी को अपनी भाषा बनाया। इसी प्रकार मध्यप्रदेश मे भी किया गया। उत्तर प्रदेश जो भारत का सबसे बडा प्रान्त है और जिसकी सबसे अधिक स्थानीय बोलिया हैं, न इनकी परवाह न करके हिन्दी को ही अपनाया। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरयाणा, दिल्ली, हिमाचल, पजाब आदि हिन्दी बोलने वाले राज्यो की आबादी ५० करोड से अधिक होगी। यह आर्यसमाज के विचारो की ही विजय है कि भारत के तीन चौथाई लोगो ने समूचे तौर पर हिन्दी को ही अपनी भाषा माना। और भाषा के ही आधार पर इतना बडा क्षेत्र एक सूत्र मे पिरो दिया गया। अगर ये अकाली अपनी दगदिली से ऊपर उठते तो समूचा पजाब भी इसी सूत्र मे पिरोया जाता, लेकिन इसके उलट वह पजाब जिसमे सबसे पहले हिन्दी भाषा की आवाज आर्यसमाज ने उठाई, गैर हिन्दी भाषी राज्य बना दिया गया। वह शौक से गुरुमुखी को अपनी भाषा मानें लेकिन उनका क्या हक है कि वह अपनी साम्प्रदायिक लिपि गुरुमुखी को हिन्दुओ के गले मढें और तलवारें दिखाकर इनको डराये कि इन्हें जब हिन्दी अपनाने की इजाजत नही दी जा सकती और यह कहे कि जो लोग पजाब मे अपनी भाषा हिन्दी कहते है उन्हें बोलने का अधिकार न हो और उन्हे पजाब से निकलना होगा। आर्यसमाज अपना चे दिलावर अस्त, दुन्देह के बकफ चिराग दारद बिल्कुल राष्ट्रीय रूप मे अपना रहा है तो उसे साम्प्रदायिक का ताना दिया जाता है और यह अकाली खुद अपने फिरके की गुरुमुखी हिन्दुओ पर जबरदस्ती थोपें तो साम्प्रदायिकता नहीं और उनको कोई कुछ कहने पूछने वाला नही। एक फारसी के मुताबिक है—चोर कितना है दिलावर, हाथ मे रखे चिराग और उलटा चोर कोतवाल को डाटने वाली बात हो रही है।

यहा मैं एक और रहस्य की बात कह कह दू कि सन् १९५८ मे पजाब की भाषा समस्या सुलझाने के लिये पजाब के राज्यपाल श्री गाडगिल नियुक्त किये गये। उन्होने आते ही बयान दिया—'पजाब की भाषा समस्या का हल उनकी जेब मे है।' हमारा डेपुटेशन दो-तीन बार उन्हे मिला। पहली बार उन्होंने हमसे भी यही बात दोहराई तो मैंने उन्हें कहा कि पजाब की भाषा समस्या का केवल एक ही हल है और वह है कि पंजाब में हिन्दी और पंजाबी भाषा दोनों ही चलें इनको देवनागरी और गुरुमुखी दोनो लिपिया चलें। जिस लिपि में जो चाहें लिखें। श्री गाडगिल ने माना कि बस इसका यही ठीक हल है। वह पहले राज्यपाल थे जिन्होंने राज्य सदन मे अपना भाषण मिली-जुली हिन्दी और पजाबी में पढ़ा हालाकि वे (अहिन्दी भाषी होते हुए वह) पजाबी न ठीक बोल सकते थे। उनका पजाबी मे भाषण करना इस बात को साबित करना था कि पजाबी को देवनागरी लिपि मे लिखने पढने की इजाजत हो। मेरे इस लम्बे-चौड़े वक्तव्य से जिन लोगो को पजाब की भाषा समस्या के सम्बन्ध मे भ्रान्ति रही है वह भली प्रकार समझ गये होगे कि पजाब की भाषा समस्या क्या है और उसका ठीक हल क्या है।

अब देखना यह है कि यह पजाबी या गुरुमुखी कब से और कैसे उत्पन्न हुई और कैसे आगे आई। क्योकि देश विभाजन से पहले पजाब मे भी गुरुमुखी और पजाबी का कोई प्रश्न न था। उर्दू और हिन्दी का ही झगड़ा चलता था। मुसलमान उर्दू के दावेदार थे और हिन्दुओ का जिसमे सिख भी शामिल थे, यह आग्रह था कि हिन्दी इनकी मातृभाषा है जिसे उन्हे हर स्थान पर प्रयोग की अनुमति होनी चाहिये। और यह सच है कि विभाजन से पहले पजाब के डिट्रक्ट बोर्ड के लडकियो के स्कूलो मे पजाब के देहातो मे भी हिन्दी पढाई जाती थी और यही इनके माध्यम की भाषा थी। सिख और मुसलमान लडकिया भी हिन्दी पढती थी। कही भी गुरुमुखी पढने-पढाने का प्रबन्ध न था। सिखो को हिन्दुओ से अलग करने के लिये अलग भाषा और अलग कौम के काटे सिखो (अकालियो) के दिमाग मे बोये तथा अंग्रेजो ने ही पंजाबी की शब्दकोश तथा व्याकरण बनाई। जो हिन्दी का ही एक रूप है। जिस प्रकार मुसलमानो को हिन्दुओ से अलग करने के लिये अंग्रेज प्रिंसिपल बनाये उसी प्रकार डी० ए० वी० राष्ट्रीय आन्दोलन (नेशनल मूवमेण्ट) के मुकाबले मे अमृतसर मे खालसा कालिज खडा करके इसके प्रिंसिपल अंग्रेज रखे। इससे यह साबित है कि सिखो को हिन्दुओ से अलग करने वालो और उनसे गुरुओ की परम्परा छुडाकर अंग्रेज इन अकालियो के गुरु बने। तमाम गुरुओ के विवाह वैदिक रीति से क्षत्री घरानो मे हुए। वे यज्ञोपवीत पहनने थे, गउओ के रक्षक थे राम और कृष्ण को अवतार तथा महापुरुष मानते थे। ग्रन्थ साहब मे जगह-जगह राम और कृष्ण की महिमा का वर्णन है। गुरु गोबिन्द सिंह ने गोविन्द रामायण लिखी और नारा लगाया—राम कथा जुग-जुग अटल। उन्होने बडे गर्व से कहा 'क्षत्री का पुत्र हू' उन्होने अपने आपको लव और कुश की सन्तान बताया और सूर्यवंशी और वेदी होने पर गर्व किया। उन्होने अपने शिष्य (सिख) काशी भेजे। वे हिन्दी और संस्कृत के महान् कवि थे। इनके काव्यो को तो ये पजाबी का दावा करने वाले अकाली समझ ही नही सकते। गुरु गोविन्दसिंह जी प० हृदयनाथ शास्त्री का महाकाव्य 'हनु नाटक' के इतने शहदाई (श्रद्धालु और प्रेमी थे) कि वे इसको अपनी यात्रा मे बाधकर अपने कमर मे लटकाए रखते थे। उनकी रचनाए संस्कृत मिश्रित बृजभाषा हिन्दी (देवनागरी लिपि) मे थी। हिन्दी भाषा को वे कितना महत्त्व देते थे सुनिये—

> "निज भू, भाषा, सभ्यता, अतल शक्ति तीन देव
> चौथा ईश्वर देव है सब देवो का देव
> गौरव के हेतु यही, यही प्राणाधार
> भोग मोक्ष दाता यही, त्वो इसे उरधार॥

और देखिये—हम यहा गुरु गोविन्दसिंह जी के दो वाक्य लिख रहे है अगर कोई अकाली (सब सिखो से नही) इन वाक्यो का अर्थ बता दें तो हम कहेगे कि वह गुरु गोविन्दसिंह का सच्चा शिष्य (सिख) है, वरना यही कहा जायेगा कि गुरुओ के मिशन का घातक है। वाक्य देखिये—सम्मत्त सत्त रह, शहस भन्नजे, अवध शहस भिन्न तीन कहे जे। वहादुस शुद्धि अष्टमी रविवारा तीर सतरुद्र एह ग्रन्थ सुधारा—

> नेत्र त्वग के चरण तर, सतग्द्र तीर तरग।
> श्री भगवत पूर्ण कियो, रघुबर कथा प्रसग॥

यह गुरु गोविन्दसिंह जी की पवित्र रचना है। अगर कोई अकाली हमे समझा दें कि गुरुओ की भाषा संस्कृत हिन्दी देवनागरी नही थी और वे हिन्दुओ से अलग थे तो हम मान जायेंगे कि वे ठीक कहते हैं वर्ना यही कहेगे कि वे गुरुओ के गद्दार हैं और उनकी भाषा के शत्रु हैं। उनके मिशन से विद्रोह कर रहे हैं।

गुरु गोविन्दसिंह जी का जन्म पटना (बिहार) मे हुआ और मृत्यु नादेड (दक्षिण) मे हुई। वे तो सारे देश को एक करना चाहते थे और ये अकाली देश के टुकडे करने जा रहे हैं। आखिर मे इस हदबन्दी कमीशन के निर्णय की कुछ पक्तिया यहा लिखना आवश्यक समझते हैं जिनमे शाह कमीशन ने बेलाग फैसला दिया था।

पजाब के हिन्दुओ की भाषा क्या है ?

पजाब के हिन्दुओ ने सामूहिक रूप से पजाबी को कभी अपनी भाषा स्वीकार नही किया। वे घरो मे पजाबी (जिसे वे हिन्दी का ही रूप समझते है, बोलते जरूर हैं परन्तु अपने धार्मिक कार्यों, त्योहारो, उपदेशो, व्याख्यानों और लिखने-पढने मे हिन्दी देवनागरी का ही प्रयोग करते हैं) स्कूलों और कालिजो मे भी वे हिन्दी ही पढते और प्रयोग करते है। उन्होने कभी और किसी स्थिति मे भी गुरमुखी को स्वीकार नही किया। कमीशन ने आकड़े देकर प्रमाणित किया कि पजाब विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा मे इतिहास और भूगोल विषय लेने वाले विद्यार्थियो की सख्या १,३३,७५८ थी। इनमें ७३.८ प्रश विद्यार्थी अपने पर्चे हिन्दी मे किये और २६.२८ ने गुरुमुखी मे। आखिर मे कमीशन ने बड़े जोरदार शब्दो मे लिखा कि वे अल्पसख्यको की मर्जी बहुसख्यक पर हरगिज नही ठूसेंगे। (शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत् समाचार

पंजाब का शासन सेना को सौंप दिया जाए

नई दिल्ली। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु ने प्रधान मन्त्री को पत्र भेजकर माग की है कि पजाब का शासन सेना को सौंप दिया जाए।

उन्होने लिखा है कि पजाब मे बिगडती हुई स्थिति को देखते हुए सभी धार्मिक स्थानों का प्रबन्ध पुजारियो-ग्रथियो के हाथ मे दिया जाए। राजनीतिक व्यक्तियो को धर्मस्थानो की प्रबध व्यवस्था मे हस्तक्षेप करना प्रतिबंधित हो। प्रेमभिक्षु जी ने कहा कि यह अत्यन्त लज्जा की बात है कि पूजा का पवित्र स्थान स्वर्ण मन्दिर युद्ध और हिंसा का गढ बना है और सरकार तमाशा देख रही है। यह समानान्तर व्यवस्था शासन के मुख पर करारा थप्पड़ है, जिसे प्रधान मंत्री को सहन न करना चाहिए। प्रधान मन्त्री को आश्वासन देते हुए आपने लिखा है कि वे जो भी पग उठायेंगी सारे देश की देशभक्त जनता उनका साथ देगी।

युवाओं के जागरण से समाज जागेगा।

स्वामी सत्यप्रकाश का उद्बोधन : 'युवा उद्घोष' पाक्षिकका विमोचन

नई दिल्ली २४ मई (मगलवार) अखिल भारतीय महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समिति के कार्यकर्ता सम्मेलन में आर्यसमाज के युवा सगठन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश" के मुखपत्र 'युवाघोष' पाक्षिक के प्रथम अंक का विमोचन आर्यसमाज के दिग्गज विद्वान व सन्यासी स्वामी सत्य प्रकाश जी ने किया। स्वामी जी ने पत्र के लिए शुभकामनायें देते हुए कहा कि यह युवा वर्ग मे जागृति व चेतना का कार्य करे तथा समाज मे फैली रूढियो, कुरीतियो, अधविश्वासो व जातिवादिता के विरुद्ध जनमत जाग्रत करे करें। युवाओ के जागने से ही समाज जाग्रत होगा।

भूतपूर्व रक्षा राज्यमन्त्री प्रो० शेरसिंह जी भी समारोह मे उपस्थित थे, उन्होने भी पत्र के लिए शुभकामनायें दीं। परिषद् के महामन्त्री श्री अनिल कुमार आर्य 'युवा उद्घोष' के सम्पादक है।

डा० भवानी लाल भारतीय (अध्यक्ष महर्षि दयानन्द विद्यापीठ, पजाब विश्वविद्यालय) स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (प्रधान परोपकारिणी सभा), श्री ओमप्रकाश त्यागी (भूतपूर्व ससद सदस्य), प्रो वेदव्यास (प्रधान, डी ए. वी मैनेजिग कमेटी) श्रीक्षितीश वेदालकार (प्रमुख पत्रकार, आर्य जगत), आचार्य विश्वश्रवा, डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, श्री रामनाथ सहगल (महामन्त्रि, आर्य प्रादेशिक सभा) भी समारोह मे पधारने वाले विशिष्ट अतिथि थे।

श्री सत्यपाल भाटिया व राकेश रानी गिरफ्तार जमानत पर रिहा।

नई दिल्ली। करौलबाग थाने के इन्स्पेक्टर श्री रामसिंह चौहान ने मार्च, १९८३ के 'जन-ज्ञान' में लिखे सम्पादकीय पर अभियोग अंकित कर सपादक पडिता राकेश रानी व भाटिया प्रेस के स्वामी श्री सत्यपाल भाटिया को धारा ५०५ के अतर्गत गिरफ्तार किया। बाद मे दोनो को ३००० ०० रुपये की जमानतो व ३००० रुपये के निजी मुचलके पर रिहा कर दिया गया। स्मरण रहे कि पडिता राकेशरानी पर यह २२वा अभियोग है।

श्री सत्यपाल भाटिया जी
आर्यसन्देश इनके यहा छपता है।

आरोग्यदान एव योग प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

आर्यसमाज 'पलडी जिला मेरठ उ० प्र के तत्वावधान मे ज० इ० कालिज पलडी मे २३ जून से ९ जुलाई १९८३ तक महात्मा जगदीश्वरानन्द सत्व चिकित्सक के निर्देशन में आयोजन किया जा रहा है। यहा यौगिक क्रियाओं मानसोपचार, आयुर्वेद की दिव्य औषधियों, उपवास, प्राकृतिक चिकित्सा के विभिन्न प्रकार की क्रियाओ यथा—मिट्टी के प्रयोग, जल चिकित्सा, भाप, कटिस्नान सेक, विभिन्न वनस्पतियो के प्रयोग, सूर्यकिरण चिकित्सा आदि के माध्यम से विभिन्न रोगो का उपचार होगा। अधिक जानकारी के लिए आर्यसमाज पलडी जि० मेरठ उ० प्र०, पिन—२५०६२२ से सम्पर्क करें।

अकाली सोच

अमृतसर स्वर्ण मन्दिर मे पुलिस उपमहानिरीक्षक श्री अवतार सिंह अटवाल की हत्या से दो सत्य खुलकर सामने आये हैं। एक तो यह कि सिखो के इस पवित्र स्थल का उपयोग पूजा-उपासना के लिए ही नहीं, आपराधिक कार्यों के लिए भी हो रहा है। दूसरा यह कि अकाली आन्दोलन के उग्रवादी तत्वो को अपनी कमजोरी का एहसास हो रहा है। और वे हिंसा भडकाकर अपनी हारती बाजी को बचाना चाहते हैं। जो पक्ष शक्तिशाली होता है और जिसे भरोसा होता है कि जनता उसके साथ है तथा लोकतन्त्री विधि से लक्ष्य पूरा किया जा सकता है, वह हिंसा की राह पर चलना कभी पसन्द नही करता। हिंसा डूबते हुए दुर्बल पक्ष के लिए ही काम करती है।

पूजा-उपासना स्थल पर हथियार रखना उसी प्रकार न्याय और नैतिकता के खिलाफ है जिस तरह पुलिस का इन स्थलो मे प्रवेश। यदि एक पक्ष कानून और नैतिकता की धज्जिया उडा रहा है तो यह निश्चय ही पुलिस के लिए विचारणीय है कि क्या हथियारबन्द व्यक्तियो को पूजा उपासना ग्रहो को अपवित्र करने दिया जाय ? ताजा प्रसग मे तो यह बात और प्रबल रूप मे सामने आयी है कि क्या मन्दिर से सम्बद्ध सराय, धर्मशाला या आवास-स्थल को भी मन्दिर का विस्तार माना जाय और पुलिस इन आवासीय परिसदो मे भी प्रवेश न करे ? उचित तो यह था कि सन्त भिंडरावाले, उनके समर्थक और अन्य अकाली नेता एक हो स्वर्ण मन्दिर के आवासीय क्षेत्रो को मन्दिर से पृथक् मानकर वहा नागर-नियमो का पालन किए जाने पर जोर देते। परन्तु ऐसा न करके उन्होने पुलिस को बाध्य किया है कि वह इस मामले पर विचार करे। अकाली नेताओ से जो अपेक्षा थी वे यानी उस पर खरे नही उतरे तो इसका कारण यही प्रतीत होता है कि उन समर्थन के बारे मे वे अधिक आश्वस्त नही है। वे स्वयं ऐसे हाथो को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि पुलिस कार्रवाई करे और तब उन्हें जनमत को अपनी ओर आकर्षित करना आसान हो। यदि ऐसा है तो पुलिस को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। पर इसका यह मतलब भी नही कि वह मन्दिर मे छिपे आततताइयो को भी 'पुजारी' ग्रंथी मानकर क्षमा करती जाय और इस तरह वह आततताइयो को हीरो बनाकर जनता के सामने पेश किए जाने का मौका दे।

दिल्ली के शहरी गांवों का विकास किया जायेगा

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल ने दिल्ली के शहरी गावो के विकास के लिए निर्माण एव आवास मंत्रालय को योजना को स्वीकृति दे दी है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जिसके लिए पहले ही से योजना आयोग ने छठी पचवर्षीय योजना अवधि मे १० करोड़ रुपए की व्यवस्था की हैं, २०.६७ करोड रुपये की लागत मे ९६ शहरी गावो का विकास किया जाएगा।

मोटे तौर पर लगभग ८० गावो मे जल सप्लाई एव लगभग ५९ गावो मे मल निकास सुविधायें उपलब्ध कराई जाएगी, चूकि २४६ गाव कृषि के उपयोग के लिए हैं। इन गावो में ये सुविधाए उपलब्ध नही हैं। इन सभी ९६ गावो में जन सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएगी। सडको के अलावा इन सभी गावो मे बिजली की व्यवस्था भी की जाएगी। वर्तमान चौपालों में सुधार किया जाएगा और जहा भी सामुदायिक हाल की व्यवस्था नहीं है, वहा समाज-सदन (कम्युनिटी हाल) बनाए जाएगे। केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली में ३५७ गाव हैं। इनमें से कुल चार लाख की आबादी वाले १११ गाव, १९८१ को दिल्ली के मास्टर प्लान के अन्तर्गत आते हैं।

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार, ५ जून ८३

अन्धामुगल-प्रताप नगर—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार, अमर कालोनी प० ज्ञानचन्द जी, अशोकनगर—प० कामेश्वर शास्त्री, अशोक विहार—प० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार, आर्यपुरा—प० वेदव्यास जी भजनीक, आरकेपुरम सेक्टर ५—प० देवेशजी महोपदेशक, आरकेपुरम सेक्टर-६ प रामनिवास जी, आर्यनगर-पहाडगज—प० मुनिशंकर वानप्रस्थी, किंग्ज्वे कैम्प, प० सोमदेव शास्त्री, कालका—प० मनोहर लाल ऋषि, कालका डी. डी ए फ्लैट—वीरपाल जी, करौलबाग—प० ओमवीर शास्त्री, कृष्णानगर, प्रो० सत्यपाल वेदार, ग्रेटर कैलाश—प० देवेन्द्र कुमार शास्त्री, गोविन्दपुरी—प० हरिदत्त वेदाचार्य, गोविन्दभवन—दयानन्द वाटिका—प० अमरनाथ कान्त, जनकपुरी सी-३—डा० सुखदयाल भूटानी, टैगोर गार्डन—श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा, नारायण विहार, प० जयभगवान मडली, नगर शाहदरा—प० तुलसीराम, पजाबीबाग एक्सटेंशन—प० रामरूप शर्मा, पजाबी बाग—पडित सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, बिरलालाइन्स, प० देवराज आर्योपदेशक, बालीनगर—प० महावीर ब्रह्मा, महरौली-बलवीर शास्त्री, राणाप्रताप बाग—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, लड्डूघाटी—प० शीशराम जी, लाजपत नगर—डा० रघुनन्दनसिंह, विनगर - प० आशानन्द भजनीक, लारेंसरोड—श्रीमती सुशीला राजपाल, विनयनगर, प० हरिश्चन्द्र आय, सराय रोहला, कवि बनवारी लाल, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र जी शास्त्री, शालीमारबाग—प० शिवकुमार शास्त्री; मयूर विहार—प० देवशर्मा, मोतीबाग—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल, बोट क्लब—कवि व्याकुल जी, होजखास—आचार्य—विक्रमसिंह जी, राजौरी गार्डन—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, आनन्द विहार प० चुन्नीलाल।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, व्यवस्थापक वेद प्रचार,

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री नरेन्द्र अवस्थी, उपप्रधान—श्री दयालदास वर्मा, श्री ऋषिदेव शर्मा, मन्त्री—श्री प्रेमचन्द आर्य, उपमन्त्री—श्री लाजपतराय बधवा, प्रचारमन्त्री—श्री जोगेन्द्र कुमार अवस्थी, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मदेव विरमानी, लेखानिरीक्षक—श्री ओमप्रकाश आहूजा।

आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत के नए पदाधिकारी

प्रधान—लाला दलीपसिंह, उपप्रधान—श्री रामानन्द जी, श्री बाबूराम जी, मन्त्री—श्री आदित्यप्रकाश, उपमन्त्री—श्री अश्विनीकुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री कुलभूषण, पुस्तकाध्यक्ष—प्रेमचन्द्र जी, प्रचार मन्त्री—डा० सहदेव।

आर्यसमाज चूनामण्डी-पहाड़गंज के नए पदाधिकारी

प्रधान-श्री प्रियतमदास जी रसवन्त, उपप्रधान-श्री सुरेन्द्र जी पाहूजा, श्री प्रेमप्रकाश चोपड़ा, श्री गणेशदास, मन्त्री-श्री श्यामदास सचदेव, उपमन्त्री-श्री देवराज राजपाल, श्री सतीश कुमार, कोषाध्यक्ष-श्री चिरजीतलाल हूजा, पुस्तकाध्यक्ष श्री लक्ष्मणदास कालड़ा, अधिष्ठाता-आर्यवीर दल-श्री अजयकुमार कपूर, लेखा-निरीक्षक-श्री अजयकुमार कपूर।

आर्यसमाज अमर कालोनी में सुन्दर वेद प्रचार

आर्य समाज अमर कालोनी मे मई मास मे वेद कथा का कार्यक्रम दिनाक ९ मई सोमवार से १५ मई, रविवार तक बहुत सफल रहा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक वैद्य रामकिशोर जी के वेद मन्त्रो की व्याख्या के ढग को, तथा पडित चुन्नीलालजी भजनोपदेशक के मनोहर तथा शिक्षाप्रद भजनो को, यहा की जनता ने खूब पसन्द किया।

अनुभवी होम्यो डाक्टर की आवश्यकता

आर्य समाज द्वारा सचालित धर्मार्थ होम्यो चिकित्सालय के लिए एक अनुभवी डाक्टर की शीघ्र आवश्यकता है। कृपया सपर्क करें —मन्त्री, आर्य समाज, हनुमान रोड नई दिल्ली।

नीम एक महत्वपूर्ण कीटनाशक

भारतीय कृषि अनुसधान सस्थान मे किए गए अनुसधान से यह पता चला है कि टिड्डी और अन्य कीडो को नष्ट करने के लिए नीम को गिरी के घोल मे अत्यधिक विकर्षक गुण होता है। भारत और विदेश मे किए गए अनुसधान से यह पता चला है कि निमोलियो के घोल मे ऐसे मिश्रण होते है जिनमे कुछ कीडो की बढवार को रोकने की क्षमता होती है, जिसके फलस्वरूप वे कीड़े अडे देने मे असमर्थ हो जाते हैं। व्यावसायिक उपयोग के लिए निमोलियो से ऐसे विशिष्ट मिश्रणो को पृथक करने, उनकी पहचान करने और जाच करने से सबन्धित कार्य पर किए जाने वाले गहन अनुसधान मे प्रगति जारी है। राजमुन्द्री मे निमोली के घोल के उपयोग पर अधिक गभीरता से क्षेत्र परीक्षण किए गए हैं और इनके द्वारा तम्बाकू की पत्तियो को खाने वाले कैटर पिलर की रोकथाम का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया है, जो (कीडा) तम्बाकू और अन्य फसलो को बहुत नुकसान पहुचाता है।

निमोली के घोल का ०.५ प्रतिशत की दर से छिडकाव इस कीडे या बीमारी की रोकथाम के लिए सिफारिश की गयी अन्य कीटनाशी दवाओ की अपेक्षा ३ से ५ गुना अधिक सस्ता पाया गया है। इसके अतिरिक्त, यह उन उपयोगी कीडो को नुकसान नही पहुचाता, जो पत्ती खाने वाले कैटर पीलर के जैविक नियन्त्रण मे मदद करते हैं। दक्षिण भारत मे तम्बाकू उगाने वाले कृषको द्वारा इसका अब उपयोग किया जा रहा है।

द. दि. वेदप्रचार मण्डल का वार्षिक चुनाव

प्रधान श्री कृष्णलाल सूरी, उपप्रधान श्रीमती सरला पाल, श्री हरबशलाल कोहली, महामन्त्री-श्री रामशरणदास आर्य, सहा० मन्त्री-श्री चन्द्रप्रकाश, श्री देशराज जुनेजा, कोषाध्यक्ष-श्री शालिग्राम गौतम, लेखा-निरीक्षक-श्री सुरेन्द्रनाथ सहगल।

आर्यसमाज कलकत्ता के नए पदाधिकारी

प्रधान-श्री कालिया राम गुप्त, उपप्रधान-श्री सुखदेव शर्मा, श्री लक्ष्मणसिंह, मन्त्री-श्री राजेन्द्रप्रसाद आयसवाल, उपमन्त्री-श्री अशोककुमार सिंह, श्री मनीराम आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री रामयश आर्य, आय-व्यय निरीक्षक-श्री रामस्वरूप खन्ना, पुस्तकाध्यक्ष-श्री राधाकृष्ण ओझा।

पजाब की भाषा (पृष्ठ ५ का शेष)

अब यह भी जान लें कि अंग्रेजो ने सिखो को हिन्दुओ से क्यो अलग किया। १९२० की जन-सख्या मे हिन्दू, सिख अलग नहीं थे। उन दिनो अंग्रेजो के विरुद्ध स्वतन्त्रता का आन्दोलन बडा तेज हो रहा था। इस स्वतन्त्रता आन्दोलन मे पजाब के हिन्दू और सिख ला. लाजपत राय के नेतृत्व मे सब प्रान्तों से आगे थे। ला. लाजपत राय के दाया हाथ थे। शहीद भगतसिंह के चचा सरदार अजीतसिंह। उन्होने पजाब मे किसान आन्दोलन चलाया। जिसका नारा था—'पगडी सम्भाल ओ जटा' यह आन्दोलन इतना जोर पकड रहा था कि अंग्रेजो ने अनुभव किया कि वे अब पजाब मे न रह सकेंगे। उन्होने ला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह को देश निकाला दे दिया। और आन्दोलन को दबाने की बडी सख्तिया की। अंग्रेजो ने अनुभव किया कि पजाब मे आर्यसमाज और सिख दो शक्तिया उभर रही हैं। ये हमे यहां टिकने न देंगे। इसलिए उन्होंने हिन्दू सिखो को अलग करने के लिए षड्यन्त्र रचा। केश रखने वालों को अलग नौकरिया, मेम्बरिया, जागीरें दी जाने लगीं। सेना मे भर्ती के लिए इनको प्राथमिकता दी जाती थी। विशेषतया इनको केश रखने के लिए बडा प्रोत्साहन दिया जाता था। पहले-पहले इनके जाल मे चीफ खालसा दीवान वाले फसे। नामधारी और बब्बर अकाली तो अंग्रेजो के घोर विरोधी थे। वे अकाली भी पहले-पहल राष्ट्रीय थे। जब अंग्रेज ने साम्प्रदायिक अवार्ड ठोसा तो मास्टर तारासिंह ने लाहौर मे गुरुग्रन्थ साहब के सामने अर्दाश किया कि हम इसे न मानेंगे न चलने देंगे और जोरदार शब्दो मे कहा हम इसे खत्म न कर लेंगे तो गुरु गोविन्दसिंह के सिख न होगे। लेकिन अफसोस जब सिखो को अलग करके उनको मेम्बरिया और मन्त्रीपद दिये गये तो ये अकाली भी अंग्रेजो के जाल मे फसते चले गये। और कहने लगे कि वे एक अलग कौम हैं। जब अंग्रेज यहा से गया तो अंग्रेज के जरखरीद सिख लीडर उनके सामने रोये कि मुसलमानो को मिल गया पाकिस्तान ! हम सिख आपके लिये लड़ते-मरते रहे हमे क्या दिया ? अब अंग्रेज ने इन्हे समझाया कि उनका तो किसी भी जिले मे बहुमत नही। हम तुम्हे कौन-सा इलाका दें। जिन्होने भी इनको कोरा जवाब दिया कि मैं सिखो को हिन्दुओ से अलग कौम नही मानता। सिख हिन्दुओ की सबनेशन हैं, इनसे अलग नही। तब अंग्रेज ने इनके कान मे फूका—पजाब की भाषा पंजाबी बनाओ, और जितने उधर के सिख आये है उन्हे अमृतसर, फिरोजपुर, लुधियाना, भटिंडा मे बसाकर अपना बहुमत बनाओ और पजाबी सूबा की माग करो। अंग्रेज के सुझाव पर ज्ञानी करतारसिंह ने बडा जोर देकर पुर्नवास का विभाग अपने हाथ मे लिया। पंजाब काग्रेस के हिन्दू मन्त्री तो शिमले की ठन्डी हवा खा रहे थे और ज्ञानी करतारसिंह टीन के रोडो के नीचे बैठकर जालन्धर मे उधर से जितने सिख आये, उन्हे जालन्धर डिवीजन में जमाते चले गये। और उधर से आने वाले हिन्दुओ को अम्बाला, डिवीजन और अलवर में धकेलते रहे। फिर भी जालन्धर गुरदासपुर होश्यारपुर मे सिखों का बहुमत न हो सका और न अब भी है। जिला कागड़ा जिसकी आबादी ९५ प्रतिशत हिन्दू है हालांकि वे भी जालन्धर डिवीजन मे बोली जाने वाली टूटी-फूटी बोली बोलते हैं उन्हें हिन्दी भाषी कहकर अलग कर दिया। अगर जिला कांगडा पजाब में रहता तो इस नये पंजाबी सूबे मे भी हिन्दुओ की आबादी ६० प्रतिशत के करीब होती। उसे हिमाचल में धकेल दिया गया। उसे और जिला होशयारपुर की तहसीलें काटकर हिमाचल में मिला दिया गया। इस प्रकार यह नया पजाबी सूबा बना।

खालिस्तान की माग की जगह पजाबी सूबा मांगने पर जब किसी ने मास्टर तारासिंह को ताना दिया गया कि तुम तो खालिस्तान मागते थे अब पंजाबी सूबा क्यों कहते हो। उन्होंने जवाब दिया कि पजाबी सूबा एक ऐसी छत होगी जिस पर बैठकर एक ही छलाग से खालिस्तान हासिल कर लेंगे। इस पजाबी सूबे मे हिन्दुओं की सख्या ४८ प्रतिशत से कम नहीं लेकिन वे सगठित नही, उनकी एक आवाज नहीं, उनमें अलग-अलग पार्टिया हैं। अकाली चाहते हैं कि वे जैसे कैसे कमजोर और पिछड़े वर्ग के हिन्दुओं और हरिजनो को नौकरिया आदि का लालच देकर सिख बना लें। अपना-अपना ठोस बहुमत खडा कर लें। उग्रवादी अकाली हिन्दुओ को धमकी दे रहे हैं कि जो अपनी भाषा पजाबी नही मानते उनको पजाब मे रहने का कोई हक नहीं। और उनसे वोट का हक छीनने के भी नारे लगाये जा रहे हैं और देहातो में सिख कर्मचारी हिन्दुओं की भाषा [illegible] पंजाबी लिखे रहे हैं और उनकी वोटें भी [illegible] जाती। वास्तविकता यह है कि पजाबी भाषा की आड में हिन्दुओ का और हिन्दी भाषा का आघात किया जा रहा है।

यह है असलियत पजाब मे भाषाई झगड़े की। हमने इस लेख मे पजाब की भाषा समस्या को इसके असली रूप मे दर्शाने का प्रयत्न किया है ताकि इसको पढ़कर पता लग सके कि पजाब की भाषा के बारे मे जो भ्रान्ति फैलाई जा रही है उसमे कितनी सच्चाई है और हमने यह भी अकालियो की भाषा की आड मे अलग कौम और खालिस्तान की माग पर से भी पर्दा उठाया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष ७ अंक ३३ | रविवार १२ जून १९८३ | ३० ज्येष्ठ वि० २०४० | दयानन्दाब्द —१५८

प्रो० रामसिंह जी के निधन से राष्ट्र को क्षति
युवक उनसे प्रेरणा लें : श्री शालवाले का आह्वान

नई दिल्ली। राजधानी के वयोवृद्ध नेता और अ० भ० हिन्दू महासभा के भू० पू० अध्यक्ष प्रो० रामसिंह का २ जून के दिन प्रांत करौलबाग स्थित उनके निवासस्थान पर ८८ वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया। वह पिछले कुछ महीनो से अस्वस्थ थे। उनका अन्तिम सस्कार २ जून को ही साय निगमबोध घाट पर किया गया। अन्तिम सस्कार के समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा के लाला रामगोपाल शालवाले, भू० पू० महापौर लाला हसराज, संसद सदस्य डा० भाई महावीर, हिन्दू महासभा के श्री नित्यनारायण बनर्जी तथा सामाजिक एव राजनीतिक सस्थाओ के सैकडो लोग उपस्थित थे।

२८ अगस्त १८९५ को हरियाणा राज्य के फरमाना मे एक आर्यसमाजी परिवार मे उनका जन्म हुआ था, वह पांच वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान रहे, फलत वह पाच वर्षों तक गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी के कुलपति भी रहे। सन्० १९१९ में उन्हे पजाब मे मार्शलला के अन्तर्गत बन्दी बनाया गया था। १९२० मे वह दिल्ली आ गए और दिल्ली स्थित नैशनल स्कूल के प्रधानाचार्य बने। १९३९ से वह १९५१ तक वह दिल्ली नगरपालिका के निर्वाचित सदस्य रहे। १९५२ में वह दिल्ली विधान सभा के सदस्य चुने गये।

सार्वदेशिक आर्य सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने प्रो० रामसिंह के देहावसान को राष्ट्र की क्षति घोषित किया है। आशा है कि लोग उनसे प्रेरणा लेगे।

८६ वर्ष के बावजूद स्वस्थतम श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार ८६ वर्ष के हैं। आप ८६ वर्ष के जितने भी लोग पायेंगे, उनमे वह स्वस्थतम हैं। वह सुबह चार बजे उठते हैं। वह सुबह ही सुबह रात भर ताम्बे के बर्तन में रखा लोटा-भर पानी पीते हैं। वह कई किताब लिखते हैं। बुढ़ापा क्यों आता है, उनकी इस विषय में दिलचस्पी है। उन्होने अपना [illegible] ज्ञानवर्द्धक शोध-ग्रन्थ 'फाम ओल्ड एज टू यूथ' प्रकाशित करवाया है।

बुढ़ापे को रोकने के लिये उनकी तदबीरें बड़ी उपयुक्त हैं. वह योगासन ब्रह्मचर्य और होमियोपैथी का सुझाव देते हैं। डा० सिद्धान्तालंकार का मत है कि जवां बने रहने के लिये आपको जवां महसूस करना चाहिये। मैं डा० सिद्धान्तालकार की इस बात से सहमत हूं कि शारीरिक बुढापे का प्रमुख कारण रक्त सचार कम हो जाना है। रक्त-संचार तेज करने के लिये वह सुबह स्नान करते समय क्रमश गरम और ठण्डे पानी के लोटे डालते हैं··।

बुढ़ापे से लड़ना मजाक नही है। हर दिन आपको कम से कम दो घण्टे शरीर की देखभाल के लिये लगाने पड़ते हैं, पर नतीजा देखते हुए यह सब करने योग्य है। गुरु गोविन्दसिंह के शब्दों में : सदा रहे कञ्चन-सी काया, काल न कबहु व्यापे।

—[illegible]

(दैनिक 'हिन्दुस्तान' से साभार)

राजधानी के सामाजिक जीवन के प्राण

श्री कृष्णलाल सूरी, नवनिर्वाचित प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल

श्री रामशरणदास आर्य, निर्वाचित मन्त्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल

आर्यसमाज हनुमान रोड के निर्वाचित अधिकारी

श्री राममूर्ति जी कैला, प्रधान
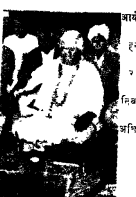
श्री सुभाष विद्यालंकार मन्त्री

दिल्ली सभा का अधिवेशन २४ जुलाई को
आर्यसमाजें अपना वेदप्रचार, दशांश भेजें
सभा मन्त्री प्रो० भारत मित्र का अनुरोध

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री सूचित करते है कि सभा की अन्तरग सभा के निश्चय के अनुसार सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार २४ जुलाई, १९८३ के दिन होगा। जिन आर्यसमाजो ने गतवर्ष अपने प्रतिनिधि नही भेजे थे उनसे अनुरोध है कि वे इस वर्ष साधारण सभा मे अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करके उनकी सूची, दशाश वेद प्रचार और आर्यसन्देश का वार्षिक शुल्क सभा कार्यालय मे शीघ्र भिजवा दे।

सभी सम्बद्ध समाजो से अनुरोध है कि वे ३१ मार्च को समाप्त हुए आर्थिक वर्ष की समाप्ति पर प्राप्त शताश, सत्सगो मे उपस्थितियो के आधार पर नियमानुसार घोषित सदस्यो की सूची, दशाश की राशि सहित सभा को भिजवा देगे। इसी के साथ समाज के अधिकारियो का निर्वाचन कर उनकी सूची, वेदप्रचार, दशाश और आर्यसन्देश के चन्दे के साथ यथाशीघ्र भिजवा देवें।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन
प्रभात वेला में ईश्वर की स्तुति

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

प्रातरग्नि प्रातरिन्द्र हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भग पूषण ब्रह्मणस्पति प्रात सोममुन रुद्र हुवेम ।। (यजु० ३४। ३, ऋ० ७।४१।१)

वसिष्ठ ऋषि, लिंगोक्त देवता, निचृज्जगती छन्द, निपाद स्वर ।

शब्दार्थ—[प्रात] प्रभात वेला मे [अग्निम्] स्वप्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, सब जगत् का प्रकाश करने हारे, [प्रात] प्रभात वेला मे [इन्द्रम्] परमैश्वर्ययुक्त वा परमैश्वर्य के दाता, [प्रात] प्रभात वेला मे [मित्रावरुणा] प्राण और उदान के समान प्रिय तथा सर्वमित्र वा सर्वोत्कृष्ट (तथा) [अश्विन] सूर्य वा चन्द्रमा के उत्पन्न करने वाले परमात्मा की [हवामहे] हम अत्यन्त प्रीति से स्पर्द्धा (प्राप्ति की इच्छा) वा स्तुति करते हैं। और [प्रात] प्रभात वेला मे [भगम्] भजनीय, सेवनीय ऐश्वर्ययुक्त, [पूषणम्] पुष्टिकर्ता, [ब्रह्मन] वेद वा ब्रह्माण्ड के [पति] स्वामी तथा पालन करने वाले (तथा) [प्रात] प्रभात वेला मे [सोम्] अन्तर्यामिप्रेरक वा सर्वजगदुत्पादक [उत]और [रुद्रम्] दुष्टो को रुलाने वाले परमात्मा की [हुवेम्] हम अत्यन्त प्रेम वा श्रद्धा से स्तुति करें। ऋषि दयानन्द संस्कार विधि, यजुर्वेद भाष्य वा ऋग्वेद भाष्य ।।

अन्यार्थ—मनुष्य को चाहिए कि वह रात्रि के पिछले प्रहर मे (अर्थात् ४ बजे के लगभग) उठकर शौच, दन्तधावन, स्नानादि आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर शरीरस्थ वा ब्रह्माण्डस्थ अग्नि वा विद्युत (बिजुली) वा शरीरस्थ प्राण वा उदानवायु वा सूर्य, चन्द्रमा, ऐश्वर्य, पुष्टि, परमेश्वर, औषधिगण वा जीवात्मा के गुणो वा स्वरूप का विचारपूर्वक जानने का प्रयत्न करें और फिर अग्निहोत्रादि कर्मो से सब जगत् का उपकार कृत्य-कृत्य होवे । ऋषि दयानन्द भाष्य)

भावार्थ —जो मनुष्य प्रात काल परमेश्वर की उपासना, अग्निहोत्र, ऐश्वर्य की उन्नति का उपाय, प्राण और अपान की पुष्टि करना, अध्यापको, उपदेशको तथा विद्वानो की सेवा वा औषधि को यथोचित सेवन और जीवात्मा को यथावत् जानने वा ग्रहण करने का प्रयत्न करते हैं, वे सब सुखो से सुशोभित होते हैं। ऋषि दयानन्द भाष्य)

अतिरिक्त व्याख्या—परमात्मा के अनेक गुण हैं और इस कारण उसके अनेक नाम हैं यथा ज्ञान स्वरूप वा सर्वप्रकाशक होने से परमात्मा को 'अग्नि' परमैश्वर्य स्वरूप वा परमैश्वर्य, दाता होने से 'इन्द्र' सर्वस्नेहकारी होने से 'मित्र' सर्वश्रेष्ठ होने से 'वरुण' ऐश्वर्ययुक्त वा भजनीय होने से 'भग' पुष्टिकर्ता होने से 'पूषा', सब ब्रह्माण्ड का पति वा पालक होने, वेदज्ञान देने हारा होने से 'ब्रह्मणस्पति', सर्व जगदुत्पादक अन्तर्यामि प्रेरक होने से] 'सोम', दुष्टो पापियो का दण्डदाता होने से 'रुद्र' कहते हैं । इन्ही गुणो वाले परमात्मा की ही उपासना प्रभात वेला मे करनी योग्य है अन्य किसी जीव अथवा जड पदार्थ की कदापि नही। उपासित परमात्मा हमारे पर कृपादृष्टि करेगा और उसकी सहायता से हम कठिन से कठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध कर सकेंगे।

संस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण मे ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि सदा स्त्री-पुरुष १० बजे शयन और रात्रि के पहले प्रहर वा ४ बजे उठकर प्रथम हृदय मे इस वेदमन्त्र वा अन्य चार यजुर्वेद के ३४वें अध्याय के मन्त्रो से व्यावहारिक और परमार्थ के कर्तव्य कर्म की सिद्धि के लिए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना वा उपासना किया करें कि जिससे परमेश्वर की कृपादृष्टि और सहाय से महाकठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सकें। तत्पश्चात् शौच दन्तधावन मुख प्रक्षालन करके स्नान करें तत्पश्चात् एकान्त जगल मे आकर योगाभ्यास की रीति से परमेश्वर की उपासना कर सूर्योदय पश्चत् घर मे आ करके सन्ध्योपासना अग्निहोत्रादि नित्य कर्म यथाविधि उचित समय मे किया करें।

ईश्वर प्रार्थना

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु

हे प्रभु ओ३म् तुम्ही, सबका सहारा हो। दुखियो को प्राण देते, सबके दुलारे हो ।।
हम सब तुम्हारे हैं वो प्रभु तुम हमारे हो। निर्बल की रक्षा करते, भक्तो को उबारे हो ।।
प्रभु तुम सर्वस्व हो, तुम ही आधार हो । तुझे छोड जाए कहां, तुम ही सहारा हो ।।
दुष्टो को दण्डित करते, शिष्टो को तारे हो । हम भक्तों को प्यार देते, प्रभु तुम प्यारे हो ।।
हम तुम्हारे पुत्र हैं, तुम पिता हमारे हो। हम सबकी रक्षा करना, प्रभु तुम प्यारे हो ।।
तुम दुख विनाशक हो, तुम सर्वाधिकार हो । 'ब्रह्मानन्द' सेवक का, तुम प्राणधारा हो ।।

अतरदह, मुजफ्फरपुर (बिहार)

हमारे अन्तः शत्रु

—सोमदत्त विद्यालंकार

भोले मानव ! तू आत्मरक्षा के लिए अपने शत्रुओं का विनाश करना चाहता है। अपने बाह्य शत्रुओं को पदलित करने के लिए सब तरह के उपाय काम में लाता है, पर कभी तूने अपने घर मे घुसकर अन्दर ही बैठे हुए शत्रुओं की तरफ कभी ध्यान दिया है। याद रख, ये आस्तीन के सांप बडे खतरनाक होते हैं। तू अपने इन शत्रुओं की तरफ से गाफिल होकर क्यों बैठा है। तू नहीं जानता कि बाह्य शत्रु तुझे वैसा नुकसान नहीं पहुचा सकते जैसा नुकसान ये तेरे अन्तः शत्रु तुझे पहुचा रहे हैं। तू अपने अन्तर स्थित, काम, क्रोध, लोभ, मद और मत्सर इन छह मनोविकारों को जब तक अपने अन्दर से निकालकर बाहर नहीं खदेडता तुझे सच्ची शान्ति प्राप्त नहीं होगी, ये शत्रु मामूली नहीं है। ये बडे भयकर हैं. इनमे अकेला अकेला ही तेरा सर्वनाश करने मे समर्थ है। फिर यदि ये सब एक साथ मिलकर तेरा सर्वनाश करने के लिए उद्यत हो जाएगे, तो सोच तेरी क्या दशा होगी। इसकी कल्पना भी तू नहीं कर सकता। इसलिए इन छह अन्त शत्रुओ का विनाश करने के लिए तू बद्ध परिकर होने मे अब विलम्ब न कर। कमर कसकर तैयार हो जा।

तू पूछता है कि मेरे मे अन्त शत्रु कौन-से हैं ? तू अपने को सब प्राणियों से श्रेष्ठ मानव कहता है, परन्तु तेरे अन्दर मे पशुओ और पक्षियो के दुर्गुण गहरी जड़ जमाकर बैठे हुए हैं। अथर्व वेद मे भगवान कहते हैं —

"उलूक यातु शुशुलूक यातु जहिश्व यातु मुल कोक यातुम् ।।
सुपर्ण यातु मुत गृध्रमातु दृशदेव प्रमृणरक्ष इन्द्र ।।

(उलूक यातु) उल्लू के समान आचरण करना, अर्थात् मूर्खता का व्यवहार करना। उल्लू जिस प्रकार प्रकाश से भागता है, उस प्रकार ज्ञान की रोशनी से भागना, मोह तथा अज्ञान में रहना, (शुशुलू यातु) भेडियो के समान क्रूरता तथा (श्वयातु) कुत्तो की तरह अपनो से लडना और दूसरों के सामने दुम हिलाना, दूसरो की उन्नति देखकर ईर्ष्या करना (कोक यातु) चिड़िया के समान चाल-चलन अर्थात् कामवासना (सुपर्ण यातु) गरुड़ के समान चाल-चलन अर्थात् घमण्ड, गर्व, अहंकार, (गृध्र यातु) गीध के समान बर्ताव अर्थात् लोभ, दूसरे के मास पर स्वय पुष्ट होने की प्रवृत्ति ये (रक्ष.) छह राक्षस, मोह, क्रोध, मत्सर, काम, गर्व तथा लोभ तेरे भयकर शत्रु तेरे ही घर के अन्दर घुसकर बैठे हुए हैं और तू इनकी तरफ से गाफिल हुआ निश्चित बैठा है। इसलिए भगवान तुझे सावधान करते हैं कि हे इन्द्र=पुरुषार्थिन्=शत्रुओ का विनाश करने में समर्थ मानव ! तू इन शत्रुओं को (दृशदेव) जैसे मट्टी के ठेले को पत्थर से चकनाचूर कर देते हैं वैसे ही इन (रक्षः) राक्षसो को (प्रमृण) कुचल कर रख दे।

तू तो उल्लू की तरह अज्ञान अन्धकार मे पड़ा हुआ है इस पाचभौतिक शरीर को ही सर्वस्व मानकर उस करुणावरुणालय भगवान् को बिल्कुल भुला बैठा है, इस मानव शरीर को पाकर तूने इस आवागमन के चक्कर से छूटकर मुक्ति का प्रयत्न ही छोड दिया है। तू भेडियो के समान क्रोध के वशीभूत हुआ है। तू नहीं जानता कि ये क्रोध बडा चाण्डाल है। इसके वशीभूत होकर तू अपने को ही जला रहा है। तू कुत्तो की तरह दूसरो की उन्नति देखकर ईर्ष्या द्वेष के दलदल मे फसा हुआ है। क्या तू भूल गया

(शेष पृष्ठ ६ पर)

किसी प्राणी की हिंसा न करो !

ओ३म् पशून् पाहि गा मा हिंसी, अजा मा हिंसी ।
आवि मा हिंसी., इम मा हिंसी, द्विपाद पशुम् ।
मा हिंसी. एक शफ पशुम्, मा हिंस्यात् सर्वा भूतानि ।।

यजु १३ ४७-४८

पशुओ की रक्षा करो, गाय को मत मारो, बकरी को मत मारो, दो पैर वाले मनुष्य-पक्षी आदि को मत मारो, एक खुर वाले घोडे-गधे आदि प्राणियो को मत मारो, किसी भी प्राणी की हिंसा न करो।

ओ३म्

आर्य सन्देश

वीरभोग्या वसुन्धरा

संसार का इतिहास साक्षी है कि केवल वे ही राष्ट्र और जातिया उसके पन्नो में अमर रहती हैं जो जीवन-संघर्ष मे पराजित नही होती। विश्व के इतिहास मे मिस्र, मध्यपूर्व का दजला फरात का क्षेत्र, यूनान, एशिया के विस्तीर्ण क्षेत्रो मे अनेक जातिया और संस्कृतियां उभरी परन्तु वे अधिक प्रबल आक्रान्ता सभ्यता एव सस्कृति के सम्मुख नष्ट हो गई। विदेशी आक्रमणकारी शक्तियो के बार-बार आक्रमण कर विजयी होने के बावजूद हजारो और लाखो वर्ष बाद भी भारतीय सस्कृति जीवित है, इसमे एक ओर उसके प्राणवत्ता भरे तत्वो का परिचय मिलता है तो साथ ही ईसा पूर्व एव १३वी शती से सत्रहवीं शदी तक अनेक विदेशी आक्रमणकारियो की सैनिक एव राजनीतिक विजय से [illegible] भी कटु लक्ष्य हृदयगम कर लेना होगा कि हमारे राजनीतिक, राष्ट्रीय एव सैनिक तन्त्र में कोई ऐसी बुनियादी निर्बलता घर कर गई थी, जिसके कारण विदेशी सैनिक एव राजनीतिक तत्त्व यहां विजयी हो गए और हम उसके सम्मुख टिक नही सके। विश्व इतिहास एवं सैनिक शास्त्र के विशेषज्ञ विदेशियों के सम्मुख भारत की पराजय के तीन प्रधान कारण बतलाते हैं, प्रथमत. हमारे देश में फूट या मतभेद सदा से रहे हैं दूसरे हमारे देशवासी अपने राष्ट्र और संस्कृति के प्रति वफादार न रहकर स्वार्थ के लिए बिकते रहे, तीसरे विश्व की नवीन सैनिक उपलब्धियो के सम्मुख भारतीय सेना नहीं टिक सकी।

इनमें से जहां तक तीसरे कारण का प्रश्न है वहां कहा जा सकता है कि राजा पुरु की हाथी सेना अपने प्रतिद्वन्द्वी सिकन्दर की तेज अश्वसेना की व्यूहरचना के सामने नहीं टिक सकी। इसी प्रकार आक्रमणकारी बाबर की सेना का मुकाबला राणा सग्राम-सिंह का व्यक्तिगत शौर्य तथा सेना की तलवारें नही कर सकीं। इसी प्रकार असगठित मुगलो एव उनके सूबेदारो के घटिया हथियार तत्कालीन यूरोपीय आक्रामक शक्तियो के नवीन आयुधो का सामना नहीं कर सके। इस कारण मे थोड़ी सचाई हो सकती है, इस कारण को व्यर्थ करने के लिए अपेक्षित है कि भारत की सेनायें आधुनिकतम सैनिक विधाओ से दीक्षित हो। उसकी हवाई सेनायें नए से नए आक्रामक एवं रक्षणात्मक तरीकों एव शस्त्रास्त्रो से सन्नद्ध की जानी चाहिए, उन्हें तथा वायवीय एव जलीय सेनाओं को प्रक्षेपणास्त्रो एव आणविक हथियारो से सज्जित करना चाहिये। भविष्य मे विदेशी शक्तिया भारत पर आक्रमण न कर सकें, करें तो वे मुह की खायें, इसके लिये समय रहते उनको रणनीति की आधुनिकतम विधाओ एव शस्त्रास्त्रो से सुसज्ज रहना होगा। इसी के साथ भारत को अपने पतन के पहले दो कारणो आपसी मतभेद, विरोध को समाप्त कर स्वाभिमान, स्वावलम्बन से जीवित रहने के लिये वीरभोग्या वसुन्धरा के तत्त्व को जीवन मे आत्मसात् करना होगा।

इस सम्बन्ध में एक छोटा-सा उदाहरण स्मरणीय है। मध्यपूर्व में १२-१५ करोड [illegible] के अरब राष्ट्रो के मुकाबले मे ३० लाख की जनसख्या का छोटा-सा इजराइल आज जीवित है तो अपनी सुदृढ जिजीविषा जीने की इच्छा के कारण हैं। उसके पडोसी राष्ट्रों ने उसके अस्तित्व को बार-बार समाप्त करने के प्रयत्न किये परन्तु छोटे-से इजराइल ने उन्हें व्यर्थ कर दिया। आज भारत के अस्तित्व को विदेशी शक्तिया तथा उनके इशारे पर नाचने वाले तत्त्व खत्म करने के लिये प्रयत्नशील हैं। इन तत्त्वो और इन शक्तियो का मनचाहा न हो सके, इसके लिये शासन और जनता को समय रहते सचेत और सन्नद्ध होना पडेगा। हमारी सरकार इस सम्बन्ध में सावधान हो तो अच्छा है, अन्यथा देश के भविष्य को सुरक्षित रखने के इच्छुक सभी सांस्कृतिक एव राष्ट्रीय वर्गों को देश के युवावर्ग एवं सामान्य जनता को आत्मरक्षा की कला मे निपुण करने के लिये प्रयत्नशील होना चाहिए। इसी के साथ हमें अपने देश धर्म और सस्कृति के प्रति सुदृढ आस्था एवं विश्वास पैदा करना होगा। विदेशी आक्रमणो के सफल होने के बावजूद हम और हमारी संस्कृति जीवित रहे। उसके मूल में हमारा अपने धर्म जीवन मूल्यों एव संस्कृति के प्रति सुदृढ विश्वास था। खेद है कि आजादी के बाद हमारी शिक्षित जनता का वह विश्वास डिगा है, वह न डिगे, इसके लिये आवश्यक है कि हम अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों में आस्था बनायें, उसी स्थिति में उसके संरक्षण के लिये हम प्रयत्नशील हो सकेंगे।

अमृत वचन

परमपिता परमात्मा मे परम श्रद्धा, परमप्रेम उनसे मिलने की तीव्र उत्कण्ठा और साधना की लगन इन चारो मे से एक भी हो जाए तो भगवान मिल सकते हैं।

जो अपने को बडा मानकर दूसरो को दबाता है, उसमे ईश्वर तत्त्व समझने की क्षमता नही होती—वस्तुत सभी जीव समान हैं और प्रभु की सन्तान है।

सच्चर्चा, सच्चिन्तन और सत्कर्म करना उत्तम है, परन्तु सच्चा सत्सग असत् (ससार) का आश्रय छोडकर सत् (परमात्मा) को अपना मानना

सत्य की दृढतापूर्वक पकड से सभी दुर्गुण दुराचार तथा दुर्व्यसन मिट जाते हैं, परन्तु सत्य बोलना ही नही व्यवहार मे या स्वभावत आ जाना चाहिए

अपने दोषों को बुरा समझकर उनके त्याग के उद्देश्य से उनसे घृणा करो और भगवान को एकमात्र अपना समझकर उससे प्रेम करो।

मानव के स्थूल शरीर से कर्म बनते हैं। सूक्ष्म शरीर मे उस कर्म के सस्कार पडते हैं और कारण शरीर मे अपनापन का अभिमान होता है। अत कर्म का बन्धन नियत है। एकमात्र अनासक्ति से ही प्राणी बन्धन मे मुक्ति पा सकता है।

वर्षों तक पढाई करने से जो परमार्थ लाभ नही होता, वह परस्पर थोडे ही समय की सच्चाइया (भगवान के गुणगान) से हो सकता है।

विषयभोग सेवन से आज तक किसी की तृप्ति नही हुई है। अत दृढ निश्चय कर लेना चाहिए कि तृप्ति का साधन विषय भोग नही है। महाभारत मे कहा भी है—'न जातु, काम कामानामुप भोगेन शाम्यति।

जो पुरुष परमपिता परमात्मा की ओर आकृष्ट हो गया, वह सचमुच निहाल हो गया।

सन्मुख होई जीव मोहि जब। जन्म कोटि अघ नासहि तब ही ।।

—चमनलाल, प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार, दिल्ली—११००५२

चिट्ठी-पत्री

सच्चे सन्त एवं गुरु की पहचान

० ऐसे व्यक्ति की पहचान यह है कि आप इसके पास बैठे हैं तो आपका मन उसके बैठे रहने से उकताए नहीं। न यह कहे कि उठो चलो यहा से तो समझो इस व्यक्ति से कुछ प्राप्त नही हो सकता है।

० उसका अपनी जिह्वा पर अधिकार हो, यदि वह चाट-गोल-गप्पे आदि खाता फिरता हो तो याद रखिये कि उसमे यह शक्ति नही कि मार्गदर्शन दिखा सके।

० उस व्यक्ति को क्रोध नही आता। हो सके तो कुछ दिन उसके पास रहकर देखो। यदि क्रोध मे आ जाए तो समझो कि उससे कार्य बनने वाला नही।

० वह लोभी न हो, किसी भवन, मन्दिर, आश्रम के लिए धन इकट्ठा करने की चिन्ता मे न हो।

—अमरनाथ खन्ना, ७८९ पहली मजिल, सेक्टर १५, फरीदाबाद (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र-साहित्यका विवेचन 'हिन्दी का पत्र-साहित्य' (शोध-प्रबन्ध) मे प्रकाशित

"हिन्दी का पत्र-साहित्य" गुजरात के युवा कवि और लेखक डा० कमल पुजाणी का शोध-प्रबन्ध है जिसमे ६ अध्यायो के अन्तर्गत देश की महान् विभूतियो के पत्रो का शोधपरक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-प्रबन्ध मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्रो का भी विशद विवेचन किया गया है। हिन्दी पत्र-साहित्य के इतिहास का रेखा-कन करते हुए लेखक ने स्पष्ट किया है कि हिन्दी मे प्रसिद्ध व्यक्तियो के पत्रो को सग्रहीत कर प्रकाशित करने की परम्परा का सूत्रपात महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र-सग्रह 'ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार भाग · ५ से हुआ है। इस सम्बन्ध मे लेखक के कुछ महत्वपूर्ण लेख भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए हैं। यथा — १— हिन्दी पत्र साहित्य के विकास मे आर्यसमाजी लेखको का योगदान। आर्यमर्यादा (साप्ता जालन्धर), १ अगस्त-८२ २—पत्रो के झरोखे से आर्यसमाज और स्वराज्य आन्दोलन वही, २३ जनवरी—१९८३। ३—स्वामी दयानन्द सरस्वती का पत्र साहित्य और पत्रो मे प्रतिबिम्बित उनका व्यक्तित्व। आर्यमित्र (साप्ता० लखनऊ) १२ मार्च १९८३। ४—ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्रो मे प्राप्त नवजागरणकालीन धार्मिक सन्दर्भ विश्वज्योतिर मासिक, होशियारपुर), दयानन्द-निर्वाण शताब्दी अक अप्रैल मई ८३।

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकारो तथा समीक्षक ने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रशसा कर एक अहिन्दीभाषी लेखक को प्रोत्साहित किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मे ३९२ पृष्ठ है और परिशिष्ट मे महान् विभूतियो के पत्रो की फोटो-प्रतिलिपिया दी गई हैं। कपडे की सुन्दर व पक्की जिल्द के साथ इस वृहद ग्रथ का मूल्य ८१-०० रु० रखा गया है। आर्यजनों, विद्वानो तथा सस्थाओ को २५ प्रतिशत छूट की व्यवस्था है। लेखक का पता इस प्रकार है :—

—डा० कमल पुजाणी, ब्लाक-११, आ० टी० जाडेजा एस्टेट, गुरुद्वार, जामनगर (गुजरात) ३६१००१।

सत्य

सुरेश चन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल. टी.

भौतिक जगत् मे जो स्थान प्रकाश का है, आध्यात्मिक जगत् मे वही स्थान सत्य का है। सत्य ऐसा व्रत है जो सब देशो, धर्मों और सम्प्रदायो मे भलीभाति माना जाता है और प्रमाण समझा जाता है। सत्य की महिमा का वर्णन वैदिक साहित्य मे भी अत्यन्त महत्वपूर्ण रूप मे किया गया है। वैदिक ऋषियो ने धर्म को जीवन यात्रा के लिए उपयोगी बताया है, जो उसके अनुभव की उपज है। 'सुग. ऋतस्य पन्था' धर्म का मार्ग सुख से गमन करने के योग्य है। (ऋ. ८, ३. १३) 'सत्यस्य नाव. सुकृतमपीपरन् (ऋ. ९. ७३. १)' सत्य की नाव ही धर्मात्मा को पार लगाती है।

सत्य बोलना, सत्य सकल्प करना, सत्यकर्म करना आदि वेद धर्म के प्रधान उद्देश्य हैं। वैदिक धर्मानुयायी सबसे अधिक घृणा असत्य से करते थे। झूठ बोलना असत्याचरण करना महापातक समझा जाता था। शतपथ (३. १. ३. १८) कहता है। 'अमेध्यो वै पुरुषो यदनृत वदति' अर्थात् झूठ बोलते वाला अशुद्ध है —झूठ बोलने वाले की पवित्रता नष्ट हो जाती है। असत्य भाषण का कोई प्रभाव नहीं पडता। असत्य बोलना वाणी का छिद्र है, जिसमे से सब कुछ गिर जाता है। एतद्वाचश्छिद्र यदनृतम्' (ताण्ड्य ब्राह्मण ८ ६. १३) असत्य वाणी का तेज भी कम होता जाता है—वह प्रतिदिन पापी होता जाता है इसीलिए मनुष्य को सत्यही बोलना चाहिए। 'तस्य कतीय कतीय एव तेजो भवति—श्व श्व पापीयान् भवति तस्माद् सत्यमेव वदेत्।' शतपथ २ २. २. १९)। यज्ञानुष्ठान के लिए सावधान रहने के लिए कहा गया है। वह झूठ तो बोले हीनही साथ ही न मास भी न खाए, न स्त्री के समीप जाए।' "नानृत वदेत् न मासभक्षीयात् न स्त्रियमुपेयात्" (तैत्तरीय सहिता २ ५ ५, ३२) सत्यपथ मे स्वर्ग की प्राप्ति मानी गई है 'ऋतेनैव स्वर्गम् लोक गमयति (ताण्ड्य ब्राह्मण १८ २ १९) और तो और तीनो वेदो को ही सत्य बताया गया है 'तद्यत्तत् सत्य त्रयी सा विद्या' (शतपथ ९. ५ १. १८) सत्यवादी अजेय माना गया है (श. ३। ४।२।८)

वैदिक सस्कृति का आधार स्तम्भ सत्य' है। पतञ्जलि मुनि का कहना है कि जैसे अहिसा एक सार्वभौम महाव्रत है, वैसे ही सत्य भी सृष्टि का सार्वभौम सिद्धान्त है। सिद्धान्त की परीक्षा लेने का उपाय यह है कि अगर उसे हर देश, काल, समाज पर लागू कर दिया जाए, तो वह टिक सके। अगर असत्य को सार्वभौम कर दिया जाए और प्रत्येक व्यक्ति झूठ के द्वारा अपना काम निकालने लगे तो यह झूठ टिक नही सकेगा। असत्य जो कुछ भी चलता है वह सत्य का ही चलना होता है। जिस क्षण उसमे से असत्य उभरा, उसी क्षण वह नष्ट हो जाता है। ठीक ऐसे जैसे प्रकाश की एक किरण के आते ही सदियो का घना अन्धकार एक क्षण में नष्ट हो जाता है इसीलिए वैदिक विचार-धारा कहती है। 'अनृतात् सत्यगमय' झूठ से निकाल कर मुझे सत्यार्थ पर डाल। महाभारत में लिखा है कि 'नास्ति सत्यात्परो धर्म' (शान्तिपर्व १६२.२४) सत्यरो श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं है। दूसरी जगह लिखा है.—

अश्वमेध सहस्र च सत्य
च तुलयाधृतम्
अश्वमेध सहस्याद्धि
सत्यमेव विशिष्यते ॥

हजार अश्वमेध यज्ञ और सत्य की तुलना की जाय तो सत्य ही अधिक होगा। वेदों मे तो सत्य की महिमा के विषय मे तो यहा तक लिखा है कि सारी सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व 'ऋत' और 'सत्य' उत्पन्न हुए। और सत्य से आकाश, पृथ्वी, वायु आदि पचमहाभूत स्थिर हैं "ऋतं च सत्यं चाभिद्धात्तपसोऽध्यजायत" "सत्येनोत्तभिताभूमि' अर्थात् यह पृथ्वी सत्य पर टिकी हुई है। सत्य शब्द का तात्पर्य भी यही है। अर्थात् 'जिसका कभी अभाव न हो, अथवा 'त्रिकाल अबाधित' सत्य के विषय मे मनु जी एक बात और कहते हैं —

वाच्यर्था नियता सर्वे
वाग्मूला वाग्विनिसृत ।
तातु य स्तेनयेद्वाच
स सर्वस्तेय कृन्नर ।

अर्थात् मनुष्यो के सब व्यवहारो का आधार वाणी है। एक के विचार दूसरे को समझाने का साधन वाणी है, इसलिए जो व्यक्ति वाणी की चोरी करता है वह सम्पूर्ण वस्तुओ को चुराने वाला है। जब विद्यार्थी शिक्षा समाप्त कर ससार मे—कर्म क्षेत्र मे प्रवेश करता था, तो उसे सबसे पहले 'सत्यवद' सच बोलो यही उपदेश दिया जाता था। मनुस्मृति मे मनुजी ने भी लिखा है 'सत्यपूता वदेद्वाच' सत्यसे पवित्र वाणी का प्रयोग करे। मत्युशय्या पर पडे भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को सब धर्मों का उपदेश देने के बाद प्राण छोडते हुए सब धर्मों का सार सत्य को माना और उन्होने कहा 'सत्येषु यतितव्य व. सत्य हि परम बलम्' सत्य का ही व्यवहार करना चाहिए, सत्य ही परमबल है। महात्मा गाधी ने सत्य को परमात्मा और परमात्मा को सत्य माना है और उनके गाधीवाद का मूल आधार यही सत्य है। सत्य परमात्मा का पुत्र होने से हमारा और दूसरे सभी प्राणियों और मनुष्यों का पारस्परिक सम्बन्ध प्रेम का और अहिंसा का होना चाहिए।

हम भौतिकवाद के चक्कर मे पड़कर जिस रूप मे हैं उस रूप मे अपने को दिखाना नही चाहते हैं। प्रत्येक बात के पीछे राजनीति दिखाई देती है। और राजनीति एक ऐसा विज्ञान है, जिसमे झूठ बोलना एक कला हो गई है। राजनीतिक व्यक्ति अपने मन की बात वाणी मे और वाणी की बात क्रिया मे नहीं आने देता। वह जो करता है, उसे कहता नहीं और जो कहता है उसे न करता है, न सोचता है।

असत्य व्यवहार

इस प्रकार आज प्रत्येक कार्य में सत्य को छिपाने की कोशिश करता है। किसी भी सरकारी विभाग मे, व्यक्तिगत व्यापार मे शिक्षणालयों एव डाकखानो मे भ्रष्टाचार और असत्य का साम्राज्य है। बिना टिकट यात्रा, न्यायालयों मे पैसा लेकर न्याय की हत्या करना, कम तौलना या नापना, घूस लेने और देने को हम बुरा नही मानते, इसे जीवन की सफलता का चिह्न समझते हैं। वकील असत्य को सत्य सिद्ध करने में लगे हैं, डाक्टर रोगी के रोग को बिना ठीक किए फीस वसूलना अपनी बौद्धिक योग्यता मानते हैं, अध्यापक ट्यूशनो के चक्कर मे पड़े हैं, इंजीनियर सीमेंट के स्थान पर बालू की मात्रा बढाकर राष्ट्र को ठग रहे हैं। यह सब असत्य व्यवहार है।

वैदिक सस्कृति का विचार है "जो लोग इस जगत् में स्वार्थ, परार्थ या मजाक मे भी कभी झूठ नही बोलते, उन्हीं को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।" यह भारत में भगवान कृष्ण और भीष्म पितामह ने कहा है "चाहे हिमालय पर्वत अपने स्थान से हट जाए, अथवा अग्नि शीतल हो जाए, परन्तु हमारा वचन नही हट सकता।" भर्तृहरि जी का कहना है "सत्पुरुष वही है जो अपनी प्रतिज्ञा कभी नहीं भग करते।"

तेजस्विन. सुखमसूनपि स त्यजन्ति ।
सत्यव्रतव्यसनिनो न पुन प्रतिज्ञाम् ॥

तेजस्वी पुरुष आनन्द से अपनी जान दे देंगे, परन्तु वे अपनी प्रतिज्ञा का त्याग कभी नही करते। महर्षि दयानन्द जो साक्षात् सत्य की प्रतिमा थे कहते थे—"भले ही मेरी अंगुलियो को कोई बत्ती बनाकर जलाए पर हम सत्य से नहीं हटेंगे।" स्वामी श्रद्धानन्द ने तो श्रत् सत्य दधाति इति श्रद्धा' के कारण अपना नाम ही श्रद्धानन्द रखा। लेखराम ने जिसे सत्य समझ उसके लिए अपने प्राण समर्पित कर दिए। इसीलिए वेद कहता है 'सत्येनोर्ध्वस्पति' मनुष्य सत्य से ऊचा उदीयमान होकर तपता-जगमगाता है। याद रखिए सत्य के सामने जो भी कठिनाइया या रुकावटें आती हैं, उन्हें वह ठोकरें मारता हुआ आगे बढ़ जाता है। इसीलिए कहा गया है—'सत्यमेव जयते नानृतम्'। आइए उस विजय को प्राप्त करने के लिए हम भी अपने जीवन मे सत्य को उतारें।

१७५, जाफराबाजार, गोरखपुर (उ. प्र.)

डिबाई का विशाल आर्य महासम्मेलन

१३ से १६ जून तक सम्मेलनों प्रदर्शनियों एवं शोभा यात्रा की धूम

क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन, डिबाई, बुलन्दशहर मे डिबाई क्षेत्र की सभी आर्य समाजो की ओर से १३ जून से १६ जून, १९८३ तक क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है। इसमें प्रतिदिन प्रात ७ से ९ बजे तक बृहद् यज्ञ एव उपदेश होगा। सोमवार का प्रात ९॥ बजे ओ३म् की पताका फहराई जाएगी। सामवार १३ जून को प्रात १० बजे दयानन्द प्रदर्शनी, राष्ट्र जागरण प्रदर्शनी एव नशाबन्दी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जाएगा, १३ जून को ही दोपहर ३ से ५ बजे तक विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी। ५ बजे से ६॥ बजे तक विशाल सार्वजनिक सभा की जाएगी। इस दिन रात्रि के ७॥ से ९॥ बजे तक वेद सम्मेलन होगा।

मगल १४ जून का प्रात १० से १२ बजे तक गोरक्षा एवं ग्रामविकास सम्मेलन होगा, दोपहर को २ से ५ बजे तक महिला सम्मेलन और रात्रि को प्रात १० से १२ बजे तक सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, दोपहर को २ से ५ बजे तक युवक सम्मेलन और रात्रि को ७ से १० बजे तक समाज सम्मेलन होगा। बृहस्पतिवार १६ जून को प्रात १० से १२ बजे तक राष्ट्रोत्थान सम्मेलन, दोपहर को २ से ५ [illegible] आर्य सम्मेलन और रात्रि को ७ से १० बजे तक कवि सम्मेलन होगा।

इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्दजी, श्री शिवकुमार शास्त्री, प० जयप्रकाश आर्य, लाला रामगोपाल शालवाले, श्रीओम प्रकाश त्यागी, श्रममन्त्री श्री धर्मवीर जी, श्री धर्मपाल शास्त्री आदि गणमान्य आर्यनेता पधार रहे हैं।

डा० द्विवेदी की शोध योजना स्वीकृत

हरिद्वार। स्थानीय गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उच्चस्तरीय शोध योजना के अन्तर्गत आपकी शोध योजना 'अथर्ववेद का सास्कृतिक अध्ययन' अनुदान हेतु स्वीकृत किया है। यह योजना डेढ़ वर्ष में पूरी होगा। आप हिन्दी, सस्कृत के विद्वानो मे से हैं। डा० द्विवेदी विश्वभारती अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी) के निदेशक भी हैं।

अन्तर्जातीय विवाह एवं दहेज प्रथा उन्मूलन का दायित्व किस पर ?

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना आर्यसमाज का छठा नियम है।" स्वामी दयानन्द ने गुरुदक्षिणा देते समय दण्डी विरजानन्द को वचन दिया था कि वह समाज मे व्याप्त कुरीतियो एव अन्धविश्वासो के निवारणार्थ जीवन पर्यन्त परिश्रम करेंगे। वैसा उन्होने किया भी। परिणामस्वरूप उन्हे मृत्यु का आलिंगन करना पड़ा, पर मरकर भी वह अमर हो गए।

आर्यसमाज एक आन्दोलन है जो सत्य सनातन, वैदिक धर्म मे व्याप्त अन्धविश्वासों एव सामाजिक कुरीतियो को नष्ट करने हेतु देव दयानन्द द्वारा चलाया गया है। इस समय जन्म मूलक जातिपाति रूप विषधर भयकर रूप धारण कर हिन्दू (आर्य) समाज एव भारत राष्ट्र को शनै. शनै. निगल जाने के लिए प्रयत्नशील है। अतएव महर्षि दयानन्द के अनुयायियों का प्रथम कर्तव्य हो जाता है कि वे इस विषधर के सिर को समय रहते कुचल दें, अन्यथा 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' वाली कहावत चरितार्थ होगी।

जब-जब भी मुहम्मदी एव ईसाईयो ने हिन्दुओ पर अत्याचार किए और वैदिक धर्म पर आक्रमण किया तब-तब आर्यसमाज ने क्षात्रधर्म का बाना पहनकर हिन्दू मन्दिरो की रक्षा की, छल, कपट, लोभ, लालच से विधर्मी बने हिन्दुओ को शुद्ध कर वैदिक धर्म मे पुन दीक्षित किया, राष्ट्रीय एकता को बचाने के लिए क्रान्तिकारी कदम उठाए और हिन्दू (आर्य) समाज की मझधार मे डगमगाती नैया को खेकर पार लगाने का प्रयत्न किया। इतिहास इसका साक्षी है।

हिन्दू समाज पर आक्रमण करने वाले विधर्मियो का हौसला तब बढा जब उन्होने देखा कि इस समाज की सबसे बड़ी कमजोरी जन्ममूलक जाति-पाति है।

कहा भी है —

ज्यो कदली के पात मे पात-पात मे पात।
ज्यों गदभ की लात मे लात-लात मे लात।
ज्यो नारी की बात मे बात-बात मे बात।
त्यो हिन्दुओ की जाति मे जात-जात मे जात॥

उन्होने इस कमजोरी का भरसक फायदा उठाया। अछूत कहलाने वाले शूद्रो का धार्मिक एव सामाजिक शोषण किया तथा राष्ट्रीय एकता पर भी प्रहार किया, जिसके केरल, मीनाक्षीपुरम्, छोटा नागपुर, नागालैंड आदि जीते जागते उदाहरण हैं। अतएव हिन्दू समाज मे इस रोग के पूर्णरूपेण फैलने के पूर्व उसका तत्काल उपचार करना आर्यसमाज की जिम्मेदारी है। 'चैरिटी बिगिन्स एट होम' कहावत के अनुसार उसे इस कार्य का श्रीगणेश आर्यसमाजियो से ही करना है, क्योकि आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सुधारवादी आन्दोलन है।

आज भी आर्यसमाजी कहलाने मे अपना गौरव समझने वाले अधिकाश व्यक्ति ऐसे हैं जो जाति-पाति के शिकंजो मे जकड़े हुए हैं। अपने नामो के पीछे जातिसूचक उपनाम लगाते हैं जैसे गुप्ता, सक्सेना, शर्मा, त्यागी, मल्होत्रा, चड्ढा आदि। अधिकाश में वे ही आर्यसमाज के पदाधिकारी बने हुए हैं तथा समाज मे सम्मान पाते हैं। अतएव मेरा यह सुझाव है कि आर्यसमाज की शिरोमणि सभा तथा आर्यप्रतिनिधि सभाए इस महामारी को समूल नष्ट करने हेतु कोई ठोस योजना तैयार कर उसे कार्यान्वित करें। हमारे धर्म ग्रन्थ साक्षी हैं कि आदर्श पुरुष राजा रामचन्द्र, योगीराज श्री कृष्ण, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, आदि ने कोई जातिसूचक उपनाम नही लगाए। और आधुनिक काल मे भी ऐसे महापुरुष पाए गए हैं जैसे डा० राजेन्द्र प्रसाद, चन्द्रशेखर, बाबू जगजीवन राम, लालबहादुर शास्त्री, डा० जगन्नाथ, इन महापुरुषो के पदचिह्नो पर चलकर महर्षि दयानन्द का एक ऋण तो हम चुका सकते हैं। योग्यता, पदवी, व नाम सम्बन्धी उपनाम जैसे शास्त्री, स्नातक, जयपुरिया, पूनेकर आदि क्षम्य हैं। वे जन्मजाति के सूचक हैं।

जाति सूचक उपनाम हटाने के पश्चात् दूसरा साहसी कदम अन्तर्जातीय विवाह के प्रचारार्थ उठाना है। इन दोनो क्रान्तिकारी ठोस कार्यों से जन्ममूलक जाति-पाति मिट सकेगी। और हिन्दू (आर्य) समाज शुद्ध एव पवित्र हो जायेगा। शनै शनै हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य तक पहुच जायेंगे। आज भी कुछ आर्यसमाजी अन्तर्जातीय विवाह करते हैं तथा अन्य समाज सुधारक इस ओर ध्यान दे रहे हैं। परन्तु उनकी सख्या नगण्य है, अधिकतर गुरुकुल से शिक्षित व्यक्ति ही इस प्रकार के विवाह किया करते हैं। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के दोनो पुत्रो के विवाह भी इस आदर्श की बेजोड मिसाल है। भारतीय इतिहास और वैदिक ग्रथो मे ऐसे विवाहोके अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। फिर भी अज्ञान एव अविद्या के अधकार मे पडे रहने के कारण जाति-पाति के कीचड मे फसे हुए हैं। आधुनिक नवयुवक व नवयुवतियो का झुकाव इस ओर दिखाई दे रहा है। परन्तु अधिकाश माता-पिता व अभिभावक रूढिवादी होने के कारण अपनी सहमति नहीं प्रदान करते परिणामस्वरूप उन्हे गान्धर्व विवाह करना पड़ता है। आर्यवीर दल व आर्य युवक परिषद इस कार्य को भी अपनी गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण अग बनाकर समाज मे परिवर्तन लायें।

अन्तर्जातीय विवाह एव दहेज प्रथा का नाश एक सिक्के के दो पहलू हैं तथा सोना और सुहागे के समान हैं। दहेज प्रथा का नामोनिशान मिटाने के लिए भरसक प्रयत्न होना चाहिए। इस प्रथा के विरोध मे अहिंसात्मक सत्याग्रह जैसे साधन अपनाने चाहिए। दहेज एव जन्म मूलक जाति पाति से सम्बन्धित विवाह हिन्दू समाज का भयंकर रोग है। जिसका

ले० पं० मुनिशंकर, वानप्रस्थ, नई दिल्ली

समूल नष्ट करना आधुनिक समय की सबल पुकार है। जिसके आह्वान पर आर्य समाज को पूर्ण सहयोग अन्य प्रगतिशील, बुद्धिवादी एव क्रान्तिकारी शक्तियो से मिल सकता है। केवल आगे बढकर नेतृत्व करने की आवश्यकता है। आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, प्रार्थना समाज जैसी सस्थायें इस समस्या को सुलझाने मे सक्रिय योगदान दें, तो हिन्दू समाज सुसगठित अक्षुण्ण बना रह सकता है।

दहेज रहित अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन तभी मिलेगा, जब आर्यसमाज ऐसेही सदस्यो का सम्मान करे जिसने अपने परिवार मे इस विवाह पद्धति को अपना लिया है। ऐसे ही सदस्यो को आर्यसमाज के पदाधिकारी बनाने मे वरीयता दी जाय। न कि उन लोगो को जो जन्म-जातिपाति के दकियानूसी परम्परा से जकडे हुए हैं। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस ने राजनीतिक दल होते हुए भी उसने इस घिनौने सामाजिक कलक को मिटाने का आह्वान किया है। बिहार के मुख्य मन्त्री श्री डा० जगन्नाथ ने अपने उपनाम 'मिश्र' को तिलाजलि दे दी है और अन्तर्जातीय विवाह करने वालो को विशेष सुविधायें देने का वचन दिया है। इसी प्रकार भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकारो को बिहार सरकार के पदचिह्नो का अनुकरण कर आगे बढना चाहिए। अन्यथा राष्ट्रीय एकता को खतरा हो सकता है।

वेदामृतम् (भाग–१) सुखी जीवन

लेखक—डा० कपिल देव द्विवेदी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार) पृष्ठसख्या—१६०+१६, मूल्य,अजिल्द-७-५० सजिल्द १५-०० प्रकाशक—विश्वभारती अनुसधान परिषद्, शान्ति निकेतन, ज्ञानपुर (वाराणसी)

वेद विश्व के प्राचीनतम ज्ञानग्रन्थ है। भारतीय अध्यात्म, धर्म, दर्शन-रूपी भव्य भवन, वेदो की दृढ नीव और भित्ति पर ही आधारित है। यह पुस्तक 'सुखी जीवन' वेद प्रेमी आर्य सज्जनो, की आवश्यकता को ध्यान मे रखकर लिखी गई है, इसमे जीवन को सुखी बनाने के लिए जिन गुणो की आवश्यकता है उनको बताने के लिए १०० मत्रो का सकलन किया गया है। लेखक ने विषय को सरल और सुबोध बनाने के लिए अन्वय, प्रत्येक शब्द का अर्थ, हिन्दी अनुवाद दिया है। अग्रेजी जानने वालो की सुविधा के लिए अग्रेजी मे भी अनुवाद दिया गया है। प्रत्येक मन्त्र का सबसे महत्वपूर्ण अश अनुशीलन है। इसमे मत्र का विस्तृत विवेचन किया गया है। अनुशीलन लेखक की वेद विषयक गहरी पहुच का सूचक है। अनुशीलन मे विषय से सम्बद्ध सुभाषित आदि भी दिए गए है। प्रत्येक मत्र को सूक्ष्मता से जानने के लिए आवश्यक व्याकरण आदि टिप्पणी मे दिया गया है।

डा० द्विवेदी की "वेदामृतम्–ग्रथ माला" विभिन्न विषयों पर ४० भागो मे प्रकाशित करने की योजना है। जिसमे १०० मत्र शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद, अग्रेजी अनुवाद तथा अनुशीलन आदि होंगे।

—डा० विभूराम मिश्र, प्रवक्ता, हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर (वाराणसी)

ग्राम तुगलकाबाद मे सफल वेद प्रचार

रविवार २८ मई के दिन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्यसमाज हनुमान रोड के तत्वावधान मे आर्यसमाज ग्राम तुगलकाबाद मे वेद प्रचार का कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प० वेदव्यास जी एव चुन्नी लाल जी आर्य के भजन हुए, जनता ने इन्हे सराहा। आर्यसमाज हनुमान रोड एव दिल्ली सभा के अधिकारियो एव ग्रामीण आर्यसज्जनो एव दिल्ली मे गए आर्यसज्जनो ने ग्राम तुगलकाबाद मे वेद प्रचार के लिए एव आर्यसमाज का सगठन मजबूत करने के लिए दान दिया। ५५०) के लगभग धनराशि एकत्र हुई।

आर्यसमाज महावीर नगर के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री यशपाल मल्होत्रा, उपप्रधान—श्री मुशीराम जौहर, मत्री—श्री कन्हैयालाल मदान, उपमन्त्री—श्री जगबीरसिंह हुड्डा, कोषाध्यक्ष—श्री बिशनदास, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री महेन्द्रकुमार।

आर्य जगत् समाचार

गोरक्षा के लिए विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा उच्चतम न्यायालय में याचिका

देश के ५० से अधिक धर्माचार्यों के निर्णय

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की १ जून के दिन हरिद्वार मे सम्पन्न हुई बैठक मे देश के कोने-कोने से ५० से भी अधिक धर्माचार्यों ने भाग लिया। इस बैठक मे गोरक्षा, असम मे मन्दिरो के जीर्णोद्वार, पंजाब एव केरल की हिन्दुओ की समस्याओ के बारे में तथा विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आगामी एकात्मता यात्रा की योजना पर विचार किया गया और ये निश्चय किए गए—

१—भिन्न-भिन्न पन्थो एव सम्प्रदायो द्वारा सुप्रीमकोर्ट मे गोरक्षा सम्बन्धी याचिकायें प्रस्तुत की जाये।

२—असम मे ५०० नामघर 'मदिरो' का निर्माण साधु सगठनो एव धनाढ्य लोगो से किया जाए।

३—पजाब की समस्या को सुलझाने के लिए धर्माचार्यो की टोलिया पजाब मे जगह-जगह जाकर शान्ति स्थापित करने मे सहयोग दें और अपने सिख भाइयो के धर्माचार्यों से भी मिलकर बातचीत करें।

४—केरल मे नीलाकल की समस्या को सुलझाने मे अपना सहयोग दें।

५—एकात्मता यात्रा को सफल बनाने के लिए सभी धर्माचार्य अपने-अपने शिष्यो के साथ इस योजना का प्रचार करें तथा इसमे अपना पूर्ण योगदान दें—

बैठक मे भाग लेने वाले धर्माचार्यों में बौद्ध गया के भिक्षु ज्ञानजगत जी, नेपाल के योगी नरहरिनाथ जी, मसुराश्रम बम्बई के ब्रह्मचारी विश्वनाथ, गोरखपुर के गोरखनाथ सम्प्रदाय के अध्यक्ष महन्त अवैद्यनाथ, तमिलनाडु के स्वामी तेजोमयानन्द, असम के स्वामी बाणगोविन्द परमपथी, पजाब के महन्त रामप्रकाशदास जी, हरिद्वार के महामण्डलेश्वर स्वामी प्रकाशानन्द जी, स्वामी वेदव्यासानन्दजी स्वामी जगदीशमुनि एवं केरल के स्वामी निर्मलानन्द जी के नाम उल्लेखनीय हैं। धर्माचार्यों के अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष महाराणा भगवतसिंह मेवाड़ एवं परिषद् के सहमत्री श्री अशोक सिंहल भी उपस्थित थे।

शासन साम्प्रदायिकता न बढ़ायें।

तुष्टीकरण की नीति ठीक नहीं : केन्द्रीय सभा कानपुर का आह्वान

कानपुर। केन्द्रीय आर्यसमाज महानगर की बैठक आर्यसमाज मन्दिर सीसामऊ मे प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे हुई। बैठक मे महानगर की विभिन्न आर्यसमाजो के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

बैठक मे एक प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार पर आरोप लगाया गया कि वह अल्पसख्यको की तुष्टीकरण की नीति अपना कर देश मे साम्प्रदायिकता को बढावा दे रही है। पुलिस, सेना व अन्य महत्वपूर्ण विभागो मे जबरदस्ती अल्पसख्यकों की भर्ती करने के आदेश देकर सन् १९४७ की स्थिति उत्पन्न की जा रही है। साम्प्रदायिक दंगो की रिपोर्टों को प्रकाशित न करना, मुस्लिम देशो को बार-बार अपनी सफाई देना अल्पसख्यको पर अत्याचार की बातें करना, काश्मीर मे धारा ३७० को सदा के लिए लागू करने की घोषणायें करना, विदेशी धन को भारत मे धर्म-परिवर्तन के हेतु आने पर प्रतिबन्ध नही लगाना देश के लिए घातक है। इस नीति को समाप्त करने की मांग की गई।

फीरोजपुर में सत्यार्थप्रकाश का पाठ और प्रदर्शनी

दिनाक २७-५-८३ से २९-५-८३ तक जिला आर्य युवक सभा/फीरोजपुर द्वारा आर्यसमाज लुधियाना रोड, फीरोजपुर छावनी मे सत्यार्थप्रकाश के पाठ का आयोजन किया एव ईश कृपा से सम्पूर्ण हुआ। इसमे फीरोजपुर की सभी आर्य सभाओ ने एव युवक सभाओ ने अपना योगदान दिया। पुरोहित राममूर्ति जी ने इसमे विशेष उत्साह दिखाया। इसी अवसर पर सत्यार्थप्रकाश प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसमे केवल ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत सभी पुस्तकें एवं सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न भाषाओ में अनुवाद आदि एव सत्यार्थ प्रकाश से सम्बन्धित प्रकाशित सामग्री प्रदर्शित की गई।

दिनाक २९-५-८३ को एक सत्यार्थ प्रकाश वाक-प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमे विभिन्न समुल्लासो से कुछ वाक्यो पर आधारित प्रश्न-पत्र में परीक्षार्थियो को यह बताना था कि यह वाक्य कौन-से समुल्लास से सम्बन्धित है और वैदिक मत के अनुकूल है या नही। इसके साथ ही उपस्थित सज्जनों को सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओं मे भी बठने के के लिए प्रेरित किया गया जो कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली द्वारा आयोजित की जाती है। पिछले तीन साल से ये परीक्षाएं यहां आयोजित की जा रही हैं।

हमारे अन्तः शत्रु

(पृष्ठ २ का शेष)

वह कहानी जब कुत्ता अपने मुख में रोटी पकडे हुए नदी के पुल के ऊपर से जाता हुआ पानी में अपनी परछाई को देखकर उसे दूसरा कुत्ता समझकर और उसके मुंह में पकड़ी रोटी को अपनी रोटी से अधिक बड़ी रोटी समझकर ईर्ष्यावश उस पर झपटकर अपना ही जीवन नाश कर बैठा था। और तूने वह कहानी भी तो सुनी होगी जब एक कुत्ता यह सुनकर कि उसके स्थान से १०० मील की दूरी पर रहने वाले शहर के निवासी बड़ लापरवाह हैं। वहा की स्त्रियों की इस गफलत के कारण तुझे खूब भरपेट खाना मिलेगा, यह सोचकर वह वहां के लिए चल पड़ा। पर एक-दो दिन बाद ही वह अपने शहर में वापिस आ गया। उसके साथी कुत्तो ने पूछा कि, "दोस्त क्या वहा नहीं गए थे, यदि गए थे तो इतनी जल्दी क्यो लौट आये?" वह बोला—साथियो—

"विचित्राणि सुभिक्षाणि, शिथिला: पौरयोषित:।
एको दोषो विदेशस्य, स्व जाति: घुर्घुरायते।"

वहा खाने-पीने की चीजो की बहुतायत है, वहा की स्त्रियां भी असावधान तथा लापरवाह हैं, रसोई घर के दरवाजे बन्द नहीं करती, परन्तु मुश्किल यह है कि अपनी जाति के कुत्ते ही फाड़ने को उद्यत रहते हैं। मैं घर से चलकर दूसरे गांव में पहुंचा, तो मुझे देखकर वहा के कुत्ते काटने के लिए मुझपर झपटे, मैं जब भागकर अगले गांव मे गया, तब वहा भी यही दशा हुई। तब मैं उस स्थान पर गया, जहां की तारीफ सुनकर घर से चला था। वहा पहुचने पर वहां के कुत्तो ने भी जीना दूभर कर दिया। इस प्रकार कई दिनो का रास्ता एक दो ही दिनों मे तय हो गया। तू चिड़ियो के समान काम वासना का शिकार हुआ, उसी मे ग्रस्त रहता है। तू नही जानता कि काम सब दोषो का मुखिया है। किसी ने ठीक ही कहा है—

"काम बाण जाके हिये भूलेहु लाग्यो नाहिं।
सिद्ध मुनी और औलिया तासो बड़ कोई नाहिं।"

और फिर तू गरुड़ पक्षी के समान घमड, गर्व, मद अभिमान मे डूबा हुआ है। तू गीध के समान लोभ में लिप्त रहता है। इसलिए हे मानव? यदि तू सच्ची शान्ति का इच्छुक है तो पहले इन अन्तः शत्रुओं का पूरी तरह दमन करके इन्हें अपने शरीर रूपी घर से बाहर निकालने का यत्न कर। इसीलिए तो भगतम मीरा गाया करती थी—

"काम क्रोध, मद, मोह, लोभ तों बचा चित्त कों दीजे।"

१+३११ नया राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११००६०

बोध-कथा

कुल का नाश

महाभारत-युद्ध के दिनों में श्रीकृष्ण एव श्री बलराम के यादव कुल की प्रशंसा इन शब्दों में की गई थी कि वे "वृद्धों की आज्ञा मे चलते हैं। अपने सजातीयों का अपमान नहीं करते···ब्राह्मणों, गुरुओ और सजातीयों के धन के प्रति अहिंसावृत्ति रखते हैं।·· धनवान होकर भी अभिमान रहित हैं, ब्रह्म के उपासक तथा सत्यवादी हैं। समर्थों का मान करते हैं और दीनो की सहायता करते हैं। सदा भगवान् की उपासना में रत, सयमी और दानशील रहते हैं, डींगे नहीं मारते इसीलिए वृष्णिवीरों का राज्य नष्ट नहीं होता।"

इस उक्ति के बावजूद यादवो का कुल महाभारत के युद्ध के कुछ समय बाद ही नष्ट हो गया। यादवों को मद्यपान की बडी लत थी। कृष्ण-बलराम आदि यदु नेताओं ने राष्ट्र भर में विज्ञप्ति प्रसारित कराई कि मद्य-निर्माण राजाज्ञा द्वारा वर्जित है, आज के पीछे जो मद्यपान करेगा, उसे बान्धवो सहित प्राणदण्ड दिया जाएगा। इस आदेश से कुछ समय तक मद्य का प्रयोग रुक गया, परन्तु पीछे से उच्छृंखल यादवों ने इस व्यसन का अभ्यास और बढा दिया। एक दिन द्वारका के निकट प्रभास तीर्थ मे समुद्र-तट पर बैठे यादव नाचरंग देख रहे थे कि शराब का दौर चलने लगा। सात्यकि ने कृतवर्मा की निन्दा की तो कृतवर्मा ने सात्यकि को बुरा-भला कहा। शराब के नशे में सात्यकि आपे मे नहीं था, उसने तलवार से कृतवर्मा का सिर काट डाला। अन्धक और भोज सात्यकि के विरुद्ध हो गए, श्री कृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न ने सात्यकि का पक्ष लिया। दम के दम दोनो दलो ने तलवारें खींच लीं और एक-दूसरे पर टूट पड़े। इस मुठभेड़ में सारे यादवकुल का नाश हो गया।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सतसंग

रविवार, १२ जून, १९८३

अन्धा-मुगल प्रताप नगर—प० कामेश्वर शास्त्री; अमर कालोनी—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, अशोक विहार—प० खुशीराम शर्मा, आर्यपुरा—प० अमरनाथ कान्त, कालका जी—प० दिनेशचन्द्र शास्त्री, कृष्णनगर—प्रो० वीरपाल; गांधीनगर—श्री रामकिशोर वैद्य, प० सत्यपाल मधुर, गीता कालोनी—प० सोमदेव शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-I—डा० सुखदयाल भूटानी, ग्रेटर कैलाश-II—प० रामनिवास, गुड़ मण्डी—प० प्राणनाथ सिद्धातालकार, गुप्ता कालोनी—प० देवशर्मा शास्त्री; चूनामण्डी पहाड़गज—प० मनोहरलाल ऋषि, जगपुरा-भोगल—प० तुलसीराम आर्य; जनकपुरी-सी-३—प० ओमवीर शास्त्री, टैगोर गार्डन—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; तिलकनगर—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, तिमारपुर—जयभगवान भजनमण्डली; दरियागज—प० देवराज आर्योपदेशक, नया मोतीनगर—श्रीमती लीलावती, निर्माणविहार—श्रीमती सुशीला राजपाल; पजाबी बाग, प० देवेश, पजाबी बाग एक्सटेन्शन—प० दिनेशचन्द्र शास्त्री, बागकडे खा—प० सीसराम भजनीक, मॉडल बस्ती—प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, मोडल टाउन—प्रो० सत्यपालवेदार, महावीर नगर—प० रामरूपशर्मा, मोतीनगर—प० टेकचन्द्र शास्त्री, रमेशनगर—अमीचन्द्र मतवाला, रोहतास नगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, लक्ष्मीबाई नगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य, त्रिनगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, लोधी रोड—जोरबाग—डा० रघुनन्दन सिंह, विक्रम नगर—श्रीमती प्रकाशवती बग्गा, बालीनगर—ओम्प्रकाश [illegible], विनय नगर—प० आशानन्द भजनीक, सदर बाजार—प० महावीर वत्रा, सराय रुहेल्ला—प० बलवीर शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, सोहनगज—पं० तुलसीदेव सगीताचार्य, शादीपुर—पं० रमेशचन्द्र वेदाचार्य, शालीमार बाग—प० रविदत्त गौतम, हौजखास—पं० बन्धेश्वर आर्य; मालवीय नगर—श्रीमती गीताशास्त्री; वोटक्लब-प० प्रकाशवीर 'व्याकुल'।

—स्वामी स्वरूपानन्द, प्रबन्धक वेद, प्रचार

कर्नल ब्रुक और महर्षि दयानन्द

—धर्मवीर विद्यालंकार

हम साधारण सुनते आए हैं कि महर्षि दयानन्द ने कर्नल ब्रुक से गोरक्षा के विषय में चर्चा की। कर्नल ब्रुक ने महर्षि के तर्कों से पराजित होकर गोवध रोकना स्वीकार कर लिया। परन्तु यह कार्य कर्नल ब्रुक के सामर्थ्य मे नही था। इसलिए उन्होने स्वामीजी को सलाह दी कि वह भारत के गवर्नर जनरल (वायसराय) से मिलें। इस हेतु उन्होने स्वामी जी को एक पत्र भी दिया।

महर्षि दयानन्द जी जैसे प्रतापी तेजस्वी विद्वान् सन्यासी का कर्नल ब्रुक जो कि वायसराय का प्रतिनिधि है—से वार्तालाप की—दो समान प्रतिष्ठा वाले बड़े व्यक्तियों की चर्चा मान लेने से इस घटना का वास्तविक महत्व छिप जाता है। उस समय की परिस्थितियो का अध्ययन करने से इसका जो रूप प्रगट होता है, वह वस्तुत बड़े साहस और श्रेय की वस्तु है।

कर्नल ब्रुक भारत के सर्वशक्तिसम्पन्न एकाधिराज वायसराय के राजस्थान मे एजेण्ट थे। वह कलेक्टर नही थे, डिप्टी कमिश्नर और कमिश्नर नही थे, जिनसे बड़े सेठ, साहूकार, भारतीय राजा या रायबहादुर भी आसानी से मिल सकते थे। इसके अतिरिक्त उन्हे भगवा कपडे पहनने वालों से बेहद चिढ थी।

दूसरी ओर स्वामी दयानन्द, मात्र सन्यासी थे जो भगवा वस्त्र पहनते थे। सन् १८६३ में गुरुदक्षिणा देकर दीक्षा पाई थी। यह १८६६ अर्थात् दीक्षा के बाद तीसरा वर्ष था। अभी वह मात्र बातचीत द्वारा मूर्ति पूजा आदि कुरीतियो तथा मत-मतान्तर के ढोगो का खण्डन करते थे। शास्त्रार्थ करते थे और भक्तो को सच्चे दिल की उपासना बताया करते थे। उस शिव को स्वीकार नही करते थे, जिसकी पत्नी पार्वती है। गुरु से शिक्षा लेकर ससार मे नए-नए उतरे थे। अभी उन्होने व्याख्यान देना आरम्भ नही किया था। अभी उनकी ख्याति अधिक फैली नही थी। अभी उन्हे किसी ने महर्षि पद से विभूषित नही किया था।

फिर यह घटना जिस प्रकार से घटी, वह प्रसग भी बडा रोचक है। जैसे आजकल साधु-महात्मा द्वार पर 'बम-बम भोले' की आवाज देकर यजमान पर द्वार पर खड़े-खड़े ही आशीर्वाद की वर्षा शुरू कर देते हैं, और तर्क सुतर्क-वितर्क शुरूकर देने है, ऐसे नही हुई।

एक दिन कर्नल ब्रुक स्वामी जी के निवास स्थान बन्सीलाल के बाग मे चले गए। स्वामी जी सामने बैठे थे। वृद्धिचन्द्र ब्राह्मण ने स्वामी जी से कहा—"महाराज

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पहाड़ी क्षेत्र में वेद प्रचार कार्य के लिए
तपोवन आश्रम देहरादून के लिए
सहायता की अपील

नई दिल्ली। दिल्ली, कैथल, पानीपत, देहरादून आदि नगरो के अनेक गणमान्य आर्य सज्जनो एव आर्य देवियों ने एक परिपत्र प्रकाशित कर देहरादून के वैदिक साधन आश्रम, तपोवन आश्रम के लिए एक लाख रुपये की सहायता एव डीजल जीप के लिए अपील की है।

इस अपील मे कहा गया है कि तपोवनाश्रम देहरादून के महात्मा दयानन्द सारे भारत में एव देहरादून के पहाड़ी इलाकों मे यज्ञों द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार का सराहनीय कार्य कर रहे हैं। महात्मा जी आश्रम से कुछ नहीं लेते, रेलवे से उन्हें जो पेन्शन मिलती है, उसी से अपना निर्वाह करते हैं। उन्होंने तपोवनाश्रम मे एक विद्यालय खोल रखा है, जिनमे निर्धन जनता के बच्चो को शिक्षा एव आर्थिक सहायता दी जाती है।

इन आर्य देवियो एव सज्जनों का हार्दिक इच्छा है कि महात्मा जी वृद्ध अवस्था मे अधिक से अधिक वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें, इसके लिए उन्हें डीजल जीप देकर आश्रम की सहायता करने का निश्चय किया गया है। वैसे भी तपोवन आश्रम देहरादून से ७-८ किलोमीटर दूर है, आश्रम के कार्यकर्त्ताओ को आने-जाने मे कठिनाई होती है। जो भाई-बहन सहायतार्थ धनराशि देना चाहते हैं वे आश्रम को चेक भिजवा सकते हैं।

अच्छे नागरिक बनने के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़िए और परीक्षा दीजिए।

लगभग गत बीस वर्ष से आर्ययुवक परिषद् दिल्ली—सत्यार्थ प्रकाश की चार प्रकार की परीक्षाओं का समूचे भारत वर्ष में आयोजन कर रही है। ये परीक्षायें इस वर्ष रविवार दिनाक १८ सितम्बर को विधिपूर्वक सम्पन्न होंगी। उत्तीर्ण छात्र-छात्राओ को आकर्षक प्रमाणपत्र तथा कुछ को पारितोषिक भी दिए जाते हैं। पर्याप्त ज्ञानकारी के लिए सम्पर्क करें।

श्री चमनलाल एम० ए०, परीक्षा मन्त्री आर्ययुवक परिषद्,
H-६४ अशोक विहार दिल्ली—५२

कर्नल ब्रुक और महर्षि दयानन्द (पृष्ठ ७ का शेष)

आप कुर्सी इधर कर लें। ये साहब आप लोगो को देख क्रुद्ध होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि—

"हम तो यही चाहते हैं" और कुर्सी को और आगे बढा कर बैठ गए। कर्नल ब्रुक स्वामीजी को देखकर झट अन्दर घुस गए। वृद्धिचन्द्र ने कहा—"महाराज! मैं आपसे कहता था। आपने न माना।" महाराज ने कहा—कोई चिन्ता नही, आने दो।" स्वामी उठकर टहलने लगे ताकि कर्नल ब्रुक का स्वागत न करना पडे।

आश्चर्य! कर्नल ब्रुक बाहर आए, उन्होने अपनी टोपी उतारी, हाथ मे ली, स्वामीजी से हाथ मिलाया और स्वामी जी के सामने कुर्सी पर बैठ गए, और काफी देर तक बातें करते रहे।

भारत के एकाधिपति वायसराय का प्रतिनिधि कर्नल ब्रुक, जो भगवा वस्त्र-धारी मात्र से चिढता था, स्वामी के पास स्वय आया और ऐसा भक्त बना कि घटो बातें करता रहा। इतना ही नही अगले दिन अपनी सवारी भेजकर स्वामी दयानन्द को अपने बगले पर बुलाया। (साथ मे पडित रामरूप जोशी भी गए थे।) और पौन घटे तक चर्चा हुई। वायसराय के नाम उन्होंने पत्र लिख दिया। इतना ही नहीं उन्होने जयपुर के राजा रामसिह जी को पत्र लिखकर खेद प्रकट किया कि आपने ऐसे उत्तम वेदवक्ता के साथ कुछ बातचीत न की।

स्वामी जी ने कर्नल ब्रुक से गोरक्षा की चर्चा बडे मनोवैज्ञानिक तरीके से की।

स्वामीजी—आप धर्म का स्थापन करते हैं या खण्डन ?

कर्नल ब्रुक-धर्म का स्थापन करना तो हमारे यहा भी अच्छा है, परन्तु जिसमें लाभ हो, वह करते हैं। स्वामी जी—आप लाभ की बात नहीं करते, हानि की करते हो।

कर्नल ब्रुक—कैसे ?

स्वामीजी ने तब बताया कि एक गाय होती है, उसका एक बछडा होता है। इस प्रकार उसकी कितनी वशवृद्धि होती है। फिर विचारना चाहिए कि उससे कितने मनुष्यों का पालन होता है, साराश यह कि उन्होंने 'गोकरुणानिधि' विधि से गोरक्षा के लाभ बताए। और फिर पूछा— अब आप बतलाइए कि इसके वध से आपको लाभ है या हानि ?"

कर्नल ब्रुक—"होती तो हानि है।"

स्वामीजी—'फिर आप गोवध क्यो करते हैं ?

कर्नल ब्रुक ने बात स्वीकार की। अगले दिन बगले पर बुलाकर पौन घटा चर्चा की।

यह थी स्वामी जी [illegible] ब्रह्मचर्य की महिमा [illegible] प्रताप कि सन्यासि[illegible] सर्वोपरि प्रभुता स[illegible] उस समय के साधा[illegible] दयानन्द का समर्थन ह[illegible] [illegible]क्त बन गया। आइए पाठकवृन्द आज हम उस महर्षि के ग्रन्थो का स्वाध्याय करने का व्रत लें और ससार से—विशेषतः भारत से अविद्यारूपी अन्धकार को दूर भगायें और पदार्थों के सत्यरूप को प्रकाशित करने में उत्साहित हों।

५, अशोक नगर, पीलीभीत

आर्यसमाज पहाड़गंज नई दिल्ली के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री प्रियतमदास रसवन्त, मन्त्री—श्री श्यामदास सचदेव, प्रचार मन्त्री—श्री अविनाश जी महाजन।

आर्यसमाज गांधीनगर दिल्ली का २८वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गान्धीनगर का वार्षिकोत्सव दिनाक ६ से १२ जून तक मनाया जा रहा है। जिसमे रात्रि ८ से ६॥ बजे तक दिनाक ६ से १० तक श्री सत्यपाल मधुर द्वारा 'भजन होते हैं भजनो के पश्चात प्रो० उत्तम चन्द्र जी शरर द्वारा वेद कथा हो रही है। १२ जून रात्रि ८ से १०॥ बजे तक पडिता राकेश रानी की अध्यक्षता मे तथा उसमे मुख्य वक्ता महात्मा वेदभिक्षु प्रो० बनराज मघोक तथा चमनलाल क्षत्रिय हिन्दू सम्मेलन तथा २२ जून को प्रात १०॥ से १ बजे तक स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे धर्मरक्षा सम्मेलन होगा। जिसमे मुख्य वक्ता श्री चिन्तामणि जी (हरिजन नेता) होगे सम्मेलन के बाद ऋषि लगर भी होगा।

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

जुलाई से प्रारम्भ बी० ए० स्तर तक की नि शुल्क शिक्षा, सादा भोजन, नियमित जीवन, उत्तम देखभाल के लिए, प्रारम्भ मे भोजन शुल्क ७५ रु० मासिक मे अपने ७ से १० वर्ष तक बालकों को गुरुकुल वृन्दावन मे प्रवेश दिलवाए—योगेन्द्र सिंह स्नातक एडवोकेट, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन।

आर्यसमाज निर्माणविहार के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री बशेशरनाथ शर्मा, उपप्रधान—जयदत्त शर्मा, श्री रामस्वरूप गुप्ता, मन्त्री—श्री प्रेमप्रकाश आर्य, उपमन्त्री—श्री चुनीलाल मल्होत्रा, कोषाध्यक्ष—श्री रविकुमार बहल, पुस्त[illegible]ध्यक्ष श्री महेन्द्रप्रताप सूद।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा न० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष . ७ अंक ३४ | रविवार १९ जून, १९८३ | ५ आषाढ वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५८

मूर्तिपूजकों की हिंसा का नारा राष्ट्र विरोधी कार्य

आर्यसमाज राष्ट्रविरोधी कार्य का जमकर विरोध करेगा

भारत की राजधानी में इस्लाम के नाम पर मूर्तिपूजकों की हिंसा का दूषित प्रचार

नई दिल्ली १०-११ जून को समाप्त होने वाले सप्ताह मे भारत की राजधानी नई दिल्ली मे भारत के रिजर्व बैंक के सामने वाली चारदीवारी पर आकाशवाणी या आल इण्डिया रेडियो, जन्तर-मन्तर, कृषि भवन आदि के सामने की चारदीवारी तथा राजधानी के दर्जन से अधिक स्थानों पर बहुत मोटे अक्षरो मे लिखा था—

मूर्तिपूजको सावधान कुरान का आदेश

मूर्तिपूजको (आइडोलेटर्स) को जहां कहीं पाओ, कत्ल करो (कुरान ९।५)

स्पष्ट ही इस तरह के नारे और आदेश देश की बहुसंख्यक हिन्दू जनता मे मतभेद और वैमनस्य पैदा करने के लिए प्रयुक्त किए जा रहे हैं। बहुसख्यक हिन्दू जनता मूर्तिपूजा में विश्वास करती है, परन्तु उसमे आर्यसमाज, निरकारी एव सिख आदि ऐसे चिन्तक भी उत्पन्न हो गए हैं, जो किसी भी मूर्ति मे विश्वास न कर निराकार भगवान् की पूजा-अर्चना को ही उचित मानते हैं। जहा तक निराकार भगवान् को मानने वाले एव मूर्तिपूजा का स्पष्ट एव खुला विरोध करने वाले आर्यसमाज एवं सामान्य आर्यजनता का प्रश्न है, वे डके की चोट पर यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि यद्यपि वे मूर्तिपूजा उचित नहीं मानते, तथापि वे मूर्तिपूजा करने वाले अपने भाइयो की मूर्तियों को तोड़ने या उन मूर्तिपूजको का सहार करने मे किंचित भी विश्वास नही करते। हम आपसी विचार-विमर्श एव [illegible] द्वारा मूर्ति के स्थान पर निराकार भगवान की भक्ति की बात करते हैं।

हम अपने भाइयो के हृदय-परिवर्तन मे विश्वास करते हैं। अपने विरोधी मत[illegible] को मानने वालो की हत्या करना अथवा उनकी मूर्तियों को नष्ट करना या उनके पूजास्थानो को भ्रष्ट करना या उन्हे परिवर्तित करना भारतीय सहिष्णुता की परम्परा के अनुकूल नही है। भारत की राजधानी दिल्ली मे मूर्तिपूजको के विरुद्ध इस्लाम के नाम पर हत्या का नारा लगाना सर्वथा एक राष्ट्रविरोधी कार्य है। स्मरण रहे कि वर्षों पहले अग्रेजो के शासन मे दिल्ली के टाउन हाल के समीपस्थ शिव मन्दिर को हटाने के लिए जब ब्रिटिश सरकार ने कोशिश की थी उस समय प० चन्द्रगुप्त वेदालकार और प्रो० व्यासदेव के नेतृत्व मे आर्यसमाज ने ही उस शिवमन्दिर की रक्षा की थी।

आज भी देश मे हिन्दू मन्दिरो, मूर्तियो एव मूर्तिपूजको के विरोध मे विदेशी शक्तियो के इशारे पर इस्लाम यदि हत्या का रास्ता अपनाता है तो आर्यसमाज मूर्तिपूजा मे विश्वास न करते हुए भी मूर्तिपूजको को प्रेरणा और स्नेह से उनका हृदय बदलने मे विश्वास करता है, वह इस्लाम के नाम पर भारत मे मूर्तिपूजकों की हिंसा का कट्टर विरोधी है, वह उनके विरुद्ध इस प्रकार के राष्ट्रविरोधी कार्यों का खुलकर, जमकर विरोध करेगा।

सफदरजंग के मजार पर कब्जे की कोशिश

पुलिस की सतर्कता से राष्ट्रविरोधियों का प्रयत्न विफल

नई दिल्ली। शुक्रवार १० जून, १९८३ के दिन नई दिल्ली के सफदरजग मकबरे के पास पृथ्वीराज रोड पर अ० भा० तेहादे मजलुमीन के स्वयसेवको ने नमाज पढी। इससे पूर्व तेहादे मजलुमीन के ६० से अधिक स्वयसेवक एक निजी बस मे भरकर सफदरजग मकबरे मे नमाज पढने के लिए पहुचे थे। पुलिस ने निषेधाज्ञा के कारण उन्हे मकबरे मे प्रवेश करने से रोका, फलत इन लोगो ने मकबरे के निकट पृथ्वीराज रोड पर नमाज पढी।

पुरातत्व विभाग के अधिकारियो के अनुसार सरकार इस बात पर दृढप्रतिज्ञ है कि ऐतिहासिक मजार पर गैरकानूनी कब्जा न होने दिया जाए, पर साथ ही धार्मिक भावनाओ को ठेस न पहुचाने की नीति पर भी कायम है। सरकारी सूत्रो मे कहा जा रहा है कि अप्रयुक्त ऐतिहासिक मस्जिदो की सुरक्षा की दृष्टि से उनके सार्वजनिक प्रयोग की अनुमति नही दी जा सकती।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व फीरोजशाह कोटला तथा दिल्ली के पुराने किले के सम्मुख पुरातत्त्वीय स्मारको मे भी इस संस्था के स्वयसेवको ने जुम्मे की नमाज पढने की कोशिश की थी।

आर्य विद्यापरिषद् की परीक्षाओं की सफलता

१०८७ छात्र-छात्राओं में से १०५४ उत्तीर्ण

नई दिल्ली। प्रतिवर्ष की तरह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्य विद्यापरिषद् द्वारा आर्य छात्र-छात्राओ की नीति प्रवेशिका, नीति अधिकारी, नीति-ज्ञानी और नीति-विशारद परीक्षाओ के १९८२-८३ वर्ष के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। पाचवी कक्षा मे ली जाने वाली नीति प्रवेशिका परीक्षा के लिए ३७५ नाम आए थे। उनमे से ३६७ ने परीक्षा दी और ३५१ उत्तीर्ण हुए। आठवी कक्षा की नीति अधिकारी परीक्षा के लिए ३३८ आवेदन आए थे, उनमे से ३२३ ने परीक्षा दी, ३१४ उत्तीर्ण हुए। दसवी की नीति ज्ञानी परीक्षा के लिए २३४ आवेदन आए थे, २१९ ने परीक्षा दी और २१४ उत्तीर्ण हुए। १२ वी की नीति विशारद परीक्षा के लिए १८७ आवेदन आए, १७४ ने परीक्षा दी और १७२ उत्तीर्ण हुए।

विभिन्न परीक्षाओ के विजयी छात्र छात्राओ की सूची इस प्रकार है—

नीति प्रवेशिका

प्रथम कु० सीमा भाटिया सुपुत्री श्री मदनलाल रोल नम्बर—१०६ (१०० अको में से ८०) आर्य पुत्री पाठशाला, गाधी नगर, दिल्ली—३१, द्वितीय कु० शशि बाला सुपुत्री श्री सुदेश कुमार रोल नम्बर १४१ (१०० अको मे से ७७) आर्य पुत्री पाठशाला गाधी नगर, दिल्ली ३१, तृतीय मा० दीपक ढींगरा, सुपुत्र श्री इन्द्रसैन ढींगरा रोल न० १८३ (१०० मे से ७६) आर्य विद्या मन्दिर, प्रताप नगर, दिल्ली—७

: नीति अधिकारी

प्रथम कु० वीना सुपुत्री श्री रामसिंह, रोल नम्बर-५०८ (१५० अक मे से १२०) चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, सूरज पर्वत, नई दिल्ली; द्वितीय कु० सीमा सुपुत्री श्री मनोहर लाल, रोल नम्बर-७४६ (१५० अक मे से ११७) रघूमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली, तृतीय कु० रचना सुपुत्री श्री आर० एस० चावला, रोल

(शेष पृष्ठ ८ पर)

उपदेशक विद्यालय में प्रवेश

अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (राजकोट सौराष्ट्र) गुजरात में प्रवेश के इच्छुक छात्र २५ जून तक अपने प्रार्थना पत्र भेज दें। विद्यालय की ओर से आवास, भोजन वस्त्र और शिक्षा की नि:शुल्क व्यवस्था है। चार वर्ष का पाठ्यक्रम है। ऋषि दयानन्द कृत ग्रंथों के अलावा वेद, उपनिषद्, व्याकरण, संस्कृत और सामान्य अंग्रेजी का अध्ययन कराया जाता है। कोई सरकारी परीक्षा नहीं दिलवायी जाती। प्रवेशार्थी का दसवी उत्तीर्ण होना आवश्यक है। प्रवेश की स्वीकृति मिल जाने पर टंकारा पहुचे। प्रार्थना पत्र इस पते पर भेंजे—आचार्य महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय टंकारा राजकोट), गुजराज। अथवा—श्री रामनाथ सहगल, मंत्री टंकारा ट्रस्ट, आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१,

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

प्रातःकाल : ईश्वर-प्राप्ति की सुगमता

प्रेमनाथ, सभा प्रधान

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजाचिद्यं भगं भक्षीत्याह॥
यजु० ३४।३५।७। वा ऋ० ७।३४।१।२)

वसिष्ठ ऋषि, भग देवता, निचृत्त्रिष्टुप छन्द, धैवत् स्वर।

(जो ईश्वर) [प्रात] प्रभात वेला मे [जितम्] उत्तमता से प्राप्त होने योग्य [भगम्] भजनीयस्वरूप सकलैश्वर्य सम्पन्न [उग्रम्] अत्युत्कृष्ट तेजस्वी [अदिते पुत्रम्] अन्तरिक्ष के पुत्र अर्थात् सूर्य की (उत्पत्ति करने वाले) [विधर्ता] (वा सूर्यादि लोको का) विशेष धारण करने वाले [आध्र] सब ओर से धारण करता [य चित्] जिस किसी को भी [मन्यमान] जानने हारा [तर चित्] दुष्टो का भी दण्डदाता अधिकारी [राजा] सब का प्रकाशक अथवा सबका स्वामी है [यम्] जिस [भगम्] भजनीयस्वरूप को [चित्] भी [भक्षि] सेवन करता हू अर्थात् उसकी शक्ति और आज्ञा का पालन करता हू [इति]ऐसा [आह] (परमेश्वर) सबको उपदेश करता है कि (जो मैं सूर्यादि जगत् का बनाने और धारण करने हारा हू तुम उस मेरी ही उपासना किया करो और मेरी ही आज्ञा पर चला करो)। (उसी परमेश्वर की) [वयम्] हम लोग (हुवेम) स्तुति करते है।

भावार्थ—मनुष्यो को चाहिए कि प्रात काल उठकर सर्वाधार परमेश्वर का ध्यान करें और अपने सब कर्त्तव्यकार्यों का चिन्तन करें और धर्मरूप पुरुषार्थ से प्राप्त ऐश्वर्य को भोगो वा औरो को उपलब्ध करायें। ऐसा ईश्वर का सबको उपदेश है।

अतिरिक्त व्याख्या—परमात्मा को हम ज्ञान, कर्म वा उपासना से पा सकते हैं। सबसे उत्तम समय इसके लिए प्रात-काल का है जबकि मन भी प्राय शान्त होता है। इस वेद मन्त्र मे परमात्मा को उपलब्ध कर लेने के लिए शब्द जितम् आया है अर्थात् जयशील अथवा प्रभात वेला मे उत्तमता से प्राप्त होने योग्य। यह शब्द 'जि' धातु से निकला जिसके अर्थ जीतने के हैं। जब कोई हिमालय की सबसे ऊंची चोटी 'ऐवरेस्ट' पर पहुच जाता है, तब यह कहता कि मैंने इसे विजय कर लिया अर्थात् जीत लिया इसी प्रकार सबसे उत्कृष्ट परमपिता परमात्मा को जब भक्त पा लेता है, तब वह कहता है कि अहा! मैंने भगवान को जीत लिया है। इसी प्रकार माता भी जब अपने छोटे बच्चे के साथ 'लुकन मीटी' (लुकना-छिपना) खेलती है और बच्चा उसको ढूढ लेता है तब बड़े हर्ष से कहता है कि "मैंने माता आपको जीत लिया।" माता भी प्रसन्न होकर उसको गले लगा लेती है।

दूसरा एक शब्द इस वेद मन्त्र मे 'भक्षि' आया है। यह शब्द भज धातु से निकला है, जिसके अर्थ सेवा अथवा सेवन करने के हैं। जब भक्त परमपिता परमात्मा को पा लेता है और आनन्द मे निमग्न हो जाता है, तब वह कहता है। कि मैं भगवन का सेवन कर रहा हू अथवा मैंने अपने को उसकी सेवा मे अर्पण कर दिया है।

मनुष्य ज्ञान, कर्म वा उपासना से ही धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि प्राप्त कर सकता है। जैसे ऐहिक वा पारमार्थिक सुख का लाभ आप करें वैसे औरो को भी करावें। यही परमपिता परमात्मा की आज्ञा है।

स्वास्थ्य-रक्षा

—अमरनाथ खन्ना

जहा तक काम चलता हो गिजा से, वहा तक चाहिए बचना दवा से।
यदि मेदे मे होए जब गिरानी तो पी नीबू, सौंफ, अदरक का पानी।
यदि खून कम बने बलगम ज्यादाम, तो खा गाजर, चने, शलगम ज्यादा।
जिगर के बल पर है इन्सान जीता, जिगर कमजोर हो तो खा पपीता।
जिगर आतो मे गरमी हो ता दही खा, अनार और सन्तरे के रस को पी जा।
थकान है यदि सब अग ढील, तो फौरन दूध गरमागरम पी ले।
यदि जियादा दिमागी है तेरा काम, तो खा ले शहद के साथ बादाम।
जो दुखता हो गला नजले के मारे, तो कर नमकीन पानी के गरारे।
यदि है दर्द दांतो से तू बेकल, तो उगली से तेल, सरसो और नमक मल.
जो बदहजमी से चाहे तू आफाका, तो करले एक दो वक्तो का फाका।
कब्ज से हो अगर तुझको परेशानी, सुबह उठते ही पीले बासी पानी।
हो गर्मी दिल की कमजोरी का आभास, मुरब्बा आवला खा अनन्नास खा।

मकान नं० ७८६ सेक्टर १५, फरीदाबाद (हरियाणा)

स्वास्थ्य के तीन आधार

—डा० शिवाशंकर पाण्डेय

भिषगाचार्य महामति चरक ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथरत्न 'चरक संहिता' में मनुष्यो को निरोग रहने के लिए अनेक उपाय बताए हैं। उन्होंने मानव शरीर को एक भवन की सज्ञा देते हुए कहा है। कि—'त्रय उपस्तम्भा आहार स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति' अर्थात् इस स्वास्थ्य रूपी घर को स्थिर रखने के लिए इसके तीन स्तम्भों को ठीक-ठाक रखना चाहिए। ये तीन स्तम्भ हैं—(१) संतुलित आहार अथवा भोजन, (२) विश्राम एव निद्रा, (३) इन्द्रियो का सयम (ब्रह्मचर्य)।

भारत मे प्रतिवर्ष पूर्ण आयु प्राप्त किए बिना ही करोड़ो लोग असमय मे काल-कवलित हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि हम मैं से अनेक लोग ऐसे हैं, जो उपर्युक्त बातो का ठीक-ठीक पालन नही करते। हमारे आयुर्वेदिक ग्रथों में शरीर को अन्नमय कोश कहा गया है। अतएव इसके लिए सन्तुलित आहार की नितान्त आवश्यकता है। आजकल कई वैज्ञानिक मनुष्य के लिए प्रोटीन, विटामिन आदि की आवश्यकताए तो समझते हैं किन्तु हमारे प्राचीन ग्रथो मे घी, दूध को मनुष्य के लिए उपयोगी रसायन माना गया है। 'क्षीरा घृताभ्यासो रसायनानां श्रेष्ठतम्।' कुछ लोग घी-दूध के अभाव को मास तथा अडे से पूरा करने की बात कहते हैं, किन्तु ये वस्तुए तामसिक मानी गई हैं और इनका सेवन करने वालो की मनोवृत्ति तमोगुण प्रधान बन जाती है।

आहार की महत्ता

आजकल हमारे बहुत से भाई महगे सौन्दर्य-प्रसाधनो में अपनी आमदनी का बहुत बडा भाग खर्च कर डालते हैं किन्तु, अपने स्वास्थ्य को स्थिर बनाए रखने के लिए न तो घी-दूध खाते हैं और न मौसमी फलो आदि का सेवन करते हैं। जो लोग पाचनतन्त्र की गड़बड़ी के शिकार हो उन्हें भोजन करते समय निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना चाहिए—

१ भोजन शान्ति से धीरे-धीरे खूब चबाकर करें।

२. भोजन नियमित समय पर तथा केवल दोबार करें।

३. भोजन, सुपाच्य तथा पौष्टिक होना चाहिए।

४. थकान हो तो किंचित विश्राम करने के बाद भोजन करें।

५. तरल पदार्थ भोजन से एक घटा पूर्व अथवा तीन घटे बाद सेवन करें।

६. प्रात-सायं घूमने अवश्य जाए तथा व्यायाम करें।

७. सायकालीन भोजन के बाद तुरत शयन न करें।

८. चिन्तारहित होकर शयन करें और प्रात सूर्योदय से पूर्व शैया का परित्याग कर दें।

९. तली, मसालेदार, बासी तथा चटपटी चीजों का सेवन न करें।

बोध-कथा

बुद्धि की परीक्षा

उन दिनो देश मे नन्द नाम के राजा का शासन था। उसकी दो पत्नियां थीं, सुनन्दा और मुरा। मुरा का पुत्र मौर्य हुआ, और सुनन्दा के नौ नन्द पुत्र हुए। मौर्य के सौ पुत्र हुए, जिनमे चन्द्रगुप्त श्रेष्ठ और बुद्धिमान् था। वृद्ध राजा ने सारा राजकाज नवनन्दो को सौंप दिया, उन्होने मौर्यपुत्रो को तहखाने मे बन्द कर दिया, चन्द्रगुप्त को छोड़कर सभी मर गए। एक बार सिंहल के राजा ने पिंजड़े में बन्द एक शेर नन्दो के पास भेजा, जो जीवित मालूम पड़ता था। सिंहल के राजा ने कहलाया, जो कोई पिंजरा खोले बिना शेर को पिंजरे से निकाल देगा, वही [illegible] या बुद्धिमान् होगा। नन्द कुछ न कर सके, दूसरे भी कोई भेद नहीं जान सके। यह बात जब चन्द्रगुप्त को मालूम हुई, जब उसने कहलाया कि वह शेर को पिंजरे से निकाल सकता है। राजा ने उसे बुलवाया। उसने लोहे की शलाका गरम कर शेर को [illegible] शेर मोम का बना था, गरम लोहे के स्पर्श से पिघलकर वह पिंजड़े से बाहर आ गया। अपनी बुद्धि से चमत्कृत कर देने के कारण चन्द्रगुप्त को कारागार से मुक्ति मिल गई।

चन्द्रगुप्त की बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर उस समय के विद्वान् चाणक्य ने उसे अपने आश्रय मे ले लिया। उन्हीं दिनों एक दूसरा राजकुमार पर्वतक भी चाणक्य के आश्रय मे आया। 'महावश' ग्रन्थ में लिखा है कि एक बार बुद्धिमान् चाणक्य ने दोनों राजकुमारों चन्द्रगुप्त और पर्वतक की बुद्धि की परीक्षा करनी चाही। एक दिन की बात है चाणक्य, चन्द्रगुप्त और पर्वतक एक न्योते मे खीर खाकर एक वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे। तीनो को नीद आ गई। सबसे पहले चाणक्य की नींद खुली। उसने पर्वतक को जगाया और उसकी परीक्षा करने के प्रयोजन से उसे एक तलवार देकर कहा—"चन्द्रगुप्त के गले में जो सूत्र पड़ा है, उसे मेरे पास ले आओ, पर यह ध्यान रखना न सूत्र टूटे और न उसकी गांठ खुले।" पर्वतक को कोई उपाय न सूझा और खाली हाथ लौटा। दूसरे दिन चाणक्य ने चन्द्रगुप्त की परीक्षा लेने के लिये उसे भी तलवार देकर पर्वतक के गले के सूत्र को ऐसे निकालने के लिये कहा कि वह सूत्र टूटे और न गांठ खुले। चन्द्रगुप्त ने विचार किया सूत्र न टूटे और न उसकी गांठ खुले, ये दोनों बातें तभी सम्भव हैं, जब पर्वतक का सिर काट दिया जाये। उसने ऐसा ही किया और सूत्र लेकर चाणक्य को सौंप दिया। बुद्धिमान् चाणक्य चन्द्रगुप्त की बुद्धिमत्ता से अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

—नरेन्द्र

मन शिवसंकल्पों वाला हो।

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृत प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु ।। यजु० ३४.३

ज्ञान देने वाला, चेतनाशील एव अविनाशी मन सब प्राणियो के हृदयो में प्रकाश करने वाला है। जिस मन के बिना कोई कार्य किया जाना सम्भव नही, मेरा वह मन शिवसकल्पो वाला हो।

ओ३म्
आर्य सन्देश

राष्ट्र को नई चुनौतियां

अधिकृत रूप से यह सूचना दी गई है कि मुस्लिम सम्प्रदाय के कुछ लोगो की ...श है कि देश की राजधानी मे प्राचीन ऐतिहासिक एव पुरातत्व सम्बन्धी स्मारको मे अवस्थित अप्रयुक्त मस्जिदो को, जो पुरातत्व विभाग द्वारा सरक्षित हैं, प्रवेश कर उन पर कब्जा करने का प्रयास किया जाए। कहते हैं कि इस योजनाबद्ध चाल के अन्तर्गत फीरोजशाह कोटला तथा पुराने किले के सम्मुख खेराउल मस्जिद मे शुक्रवार के दिन जुम्मे की नमाज पढी गई। इन लोगो ने एक सोसायटी बना ली है, इसके माध्यम से वे सभी प्राचीन स्मारको मे अवस्थित मस्जिदो या स्मारको मे नमाज पढने की कोशिश करेंगे। इस समिति की कोशिश थी कि शुक्रवार १० जून के दिन सफदरजग मकबरे में भी इसी प्रकार की नमाज पढी जाए, शासन द्वारा समय पर शुक्रवार के दिन प्रतिबन्धात्मक कार्रवाई करने से यहा कुछ नहीं हो सका। जिस तरह का इन षड्यन्त्र कारियो का योजनाबद्ध प्रयत्न चल रहा है, उससे प्रतीत होता है कि ये षड्यन्त्रकारी लालकिले, कुतुबमीनार, पुराने किले, हुमायू के मकबरे आदि सभी प्राचीन ऐतिहासिक पुरातत्वीय स्मारको पर अपना अधिकार करने की कोशिश करेंगे। यह ऊपर से तो खुदा या भगवान की प्रार्थना का एक प्रयत्न मालूम पड़ता है, परन्तु इसके मूल मे कुछ राष्ट्रविरोधी तत्व कार्य कर रहे दिखाई देते हैं।

इसी तरह के सवाद कुछ दिन पूर्व दक्षिण से मिले थे। वहा द० भारत मे हिन्दू तीर्थों के समीप ईसाई तीर्थ स्थापना की योजनाबद्ध चाल चल रही है। केरल के प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थों श्री कृष्ण के वासस्थान गुरुवायूर और आदि शकर के जन्मस्थान कालड़ी में ईसाई तीर्थ स्थापित किए जा चुके हैं, अब केरल के तीसरे प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ नीलक्कल के प्राचीन शिवमन्दिर के पास ईसाई अपना गिरजाघर स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। नीलक्कल मे कभी कोई ईसाई स्मृतिस्थान नही रहा, यहा दो मजदूरो के द्वारा एक नया क्रास प्रतिष्ठित कर उसे प्राचीन स्मारक घोषित करने की कोशिश को शासन उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा है। कहते हैं कि प्राचीन देवमन्दिर की गरिमा, पवित्रता एव प्रतिष्ठा का ख्याल न करते हुए इन राष्ट्रविरोधी तत्वो को सरकारी भूमि पर कब्जा करने का मौका दे दिया गया है। ये घटनायें छोटी और सामान्य हैं, परन्तु उनसे यह ध्वनित अवश्य होता है कि राष्ट्रविरोधी विधर्मी शक्तिया भारत के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की उपेक्षा कर यहां राष्ट्रविरोधी साम्प्रदायिक शक्तियो को सगठित और सुदृढ करना चाहती हैं।

कहा जा सकता है कि सविधान और कानून की दृष्टि से प्रत्येक नागरिक एव समाज को अपने व्यक्तिगत एव सामूहिक धर्माचरण की छूट होनी चाहिए। परमात्मा की स्तुति एवं आराधना ठीक है, परन्तु इसके नाम पर राष्ट्र एव प्रदेशो की शान्ति, सुरक्षा एव साम्प्रदायिक सद्भाव को समाप्त करते हुए यहां राष्ट्रविरोधी नए मोर्चों की स्थापना की जा रही है। आज केरल और भारत की राजधानी दिल्ली मे इसी प्रकार के सुनियोजित प्रयत्न किए जा रहे हैं, मीनाक्षीपुरम में सामूहिक धर्मान्तरण एव पूर्वोत्तर प्रदेश मे ईसाई स्वतन्त्र राष्ट्र स्थापित करने के बाद इस प्रकार के नए प्रयत्नो से समय रहते शासन और जनता को सावधान हो जाना चाहिए। विश्व की महाशक्तिया नही चाहतीं कि भारत एक स्वतन्त्र, शक्तिशाली, महान् राष्ट्र के रूप में उभरे, उसी प्रकार ईसाई और मोहम्मदी शक्तिया भारत में ईसाई एव इस्लामी शासन के दिनो मे जो कार्य नहीं कर सकीं, वही कार्य अब कथित धर्मप्रचार के नाम पर करने के लिए तुली दीखती हैं। चीन में भी एक समय विदेशी साम्प्रदायिक शक्तियां वहां प्रभुत्व करने के लिए प्रयत्नशील थीं, परन्तु देश में कम्युनिज्म के आते ही उन्होंने इन शक्तियो को देश से बहिष्कृत कर दिया। आज भारत राष्ट्र को इन साम्प्रदायिक तत्त्वों से जो चुनौतिया मिल रही हैं, उनका समय रहते मुकाबला करना हमारा पुनीत राष्ट्रीय दायित्व है। अच्छा हो कि इस सम्बन्ध में शासन स्वतः अपना दायित्व निबाहे, यदि वह इस बारे में जागरूक न हो तो उसे जागरूक करना उनका निरोध करना हमारा कर्त्तव्य है।

कर्मपथ पर अग्रसर हों !

–आचार्य प्रज्ञादेवी

(पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी के १२ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिए दीक्षान्त भाषण के आवश्यक अंश)

मिट्टी से जुडकर वृक्ष अथवा वृक्ष से जुडकर पुष्प ने मिट्टी या वृक्ष से क्या-क्या लिया एव मिट्टी या वृक्ष ने उसे क्या-क्या दिया ? दोनो के लिए यह बता पाना सुलभ नही किन्तु जुड़े रहना उसकी अमरता का सन्देश एव उसकी सार्थकता की परिभाषा है। इस मानव जीवन के भी माता-पिता-आचार्य तीन खूटे हैं जिनसे प्रत्येक अबोध बालक जुडकर अपने जीवन के बहुमूल्य रहस्यो का विस्तार पाता है। प्रत्येक माता पशुरूप मे ही बालक को जन्म देती है जिसका क्रमश- मानवीकरण एव दैवीकरण तीन खूटो से बध कर होता है।

मनुष्य जीवन भर विद्यार्थी रहता है और रहना चाहिए किन्तु विशेष परिश्रम-साध्य एव विशेष समयापेक्षित शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त इन वेद के तीन अङ्गो का अध्ययन तुमने मनोयोगपूर्वक कर लिया है। अत इस समय तुम्हारा कर्मभूमि मे प्रवेश से तात्पर्य आगम एव व्यवहार काल दोनो का साथ-साथ चलाना है।

आज प्राय जननायको द्वारा विशेष अवसरो पर यह रटा-रटाया वाक्य उच्चरित किया जाता है कि 'सस्कृति से प्राप्त परम्परायें नही रहेगी तो स्थापित मूल्य बिखर जायेंगे' कितनी उपहासास्पद बात है कि जिनको वैदिक सस्कृति का रञ्चमात्र बोध ही नही है वे भी स्थापित मूल्यो की चर्चा करते है। यह सस्कृति की अवमानना नही तो क्या है ? 'शिक्षक सस्थानो' मे जहा समूचा राष्ट्र बनता है उसे पुलिस प्रशासन की छाया मे चलाना पड़े तो आज यह कह देना होगा कि ऐसे विश्वविद्यालयो को बन्द कर देने की आवश्यकता है। स्थापित मूल्यो का विध्वस आज इन्ही विसङ्गतियो द्वारा हो रहा है, जो शिक्षा जगत् के लिये महती चिन्ता का विषय है। शिक्षण सस्थानो को पवित्रता उसकी अपनी स्वायत्तता मे है इसीलिए तो आचार्य सूर्यसम कहा गया है कि जिसके इर्द-गिर्द ग्रह उपग्रहरूपी सम्पूर्ण मानवजीवनोपयोगी शैक्षिक व्यवस्थायें अनुसञ्चलित होती हैं। विशुद्ध ज्ञानधारा की सुरक्षा एव जीवन की उज्वलता इसी परम्परा के निर्वाह मे है।

जीवन की प्रथम अवस्था का मनुष्य के जीवन मे वही महत्त्व है जो भवन के लिए नींव का होता है। इस प्रथम अवस्था के लिए वेद से लेकर उपनिषदो तक की ज्ञानराशि जिस कठोर तपश्चर्या का समर्थन करती है उस तपस्या को तुमने इस विद्या-मन्दिर मे इतने वर्ष व्यतीत करते हुए उपार्जित किया है। इस आधार पर तुम्हारा आगामी जीवन वञ्चनामय जगत् के व्यवहारो से निश्चय ही भिन्न रहेगा, यह कहा जा सकता है। मृत्पात्र कुम्भकार के आंवे में जिस रक्तिम वर्ण को पा लेता है उस रक्तिम वर्ण को आंवे से बाहिर निकल कर भी अपने अन्तिम क्षण तक नही छोड पाता। चेतन मानव के संस्कारो के आधान की प्रक्रिया भी ठीक ऐसी ही है। अनुभव का क्षेत्र ज्ञानार्जन से पृथक् है, अत दुविधाग्रस्त अवसरो पर ऋषि-महर्षियो के वचनो का सही प्रयोग करने से उचित दिशा तुम्हें प्राप्त हो सकेगी। "परमतप स्वाध्याय" तुम्हारे जीवन का अभिन्न अग बना रहेगा तो जीवन के प्रलोभन नही सताऐंगे क्योकि वे तुमसे तभी बातें करेंगे जब तुम बेकार होओ, पर तुम्हे तो स्वाध्याय से अवकाश ही नही। जीवन की पावन प्रथम अवस्था में जितनी कठोर तपश्चर्या कर ली जाती हैं आगामी जीवन का पथ उतना ही सुगम बनता है इसे कभी न भूलना चाहिए।

तुमने अभी ज्ञान अर्जित किया है, किन्तु तुम्हारे ज्ञान मे समाज लाभान्वित हो इसके लिए सम्वेदनात्मक-सम्प्रेषणीयता भी तुम्हारे लिए अनिवार्य होगी, जिसका पाठ अब कर्मभूमि का स्पर्श करते हुवे अनुभव की पाठशाला मे ही पढा जा सकेगा। मनुष्य प्राय कुछ आगे बढने पर अपनी पिछली अवस्था को भूल, आने वाली पीढी को अपनी वर्तमान तुला पर तोलने लगता है, इससे वह दूसरो को मूढ बताता हुआ स्वय 'अन्धन्तम. प्रविशन्ति' के अनुसार एक पक्षीय मूढ बन जाता है। जीवन की यह अवस्था दूसरों को दबाने वाली एव स्वयं मे अह को जन्म देने वाली होती है अत ऋषियो के मार्ग का अवलम्बन करने वाले जन को दूसरो की अवस्था को समझकर परोपकार का बीडा उठाना चाहिये।

"राष्ट्र एवं समाज में व्याप्त अन्धकार के बादल तुम्हें छिन्न-भिन्न करने हैं। तुम ऋषिवर दयानन्द की बेटियां हो" ऐसे सन्देश सम्भवत अब तक अनगिनत बार तुम्हें दिये जा चुके हैं पर आज इस मङ्गलमयी वेला मे पुन उस पुरातन सन्देश को नई गुरुता के साथ देती हुई कहना चाहूगी कि "आज तुम जो कुछ भी हो ऋषि कृपा से हो" अन्यथा नारी जाति का मध्यकाल मे अस्तित्व ही क्या रह गया था ? वैदिक धर्म तुम्हारा प्राण हो, तुम्हारा रोम-रोम वेद से अनुप्राणित हो यही तुम्हारे लिए मेरा आज का

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेद और विज्ञान

सुशीलादेवी विद्यालंकृता

वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना सुनना-सुनाना मनुष्य मात्र का परम कर्त्तव्य है। वेद का अर्थ है ज्ञान। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। ईश्वर के मुख्य कार्य हैं—सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय। तथा आदिसृष्टि मे मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिये वेदो का प्रादुर्भाव करना। जीव मात्र के लिये उनके कर्मो के आधार पर जाति, आयु भोगादि की व्यवस्था करना। जीवात्मा स्वतन्त्र कर्त्ता कर्म करने मे स्वतन्त्र है। कर्मों का फल प्रदान करना ईश्वर के हाथ मे है। मनुष्यो को कर्मेन्द्रियो के साथ-साथ ज्ञानेन्द्रिया भी प्रदान की हैं प्यारे प्रभु ने। वह इस विश्व ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्राप्त कर सके तथा आध्यात्मिक जगत का भी ज्ञान प्राप्त कर सके। उसे मन, वुद्धि चित्त तथा अहकार (अन्त करण चतुष्टय) भी प्राप्त हुए हैं। अनन्ता वै वेदा वेद अनन्त है। ज्ञान की कोई सीमा नही। कहते हैं मनुष्य के मस्तिष्क मे ५० करोड सैल (कोश) हैं। एक-एक सैल की इतने ज्ञान को सुरक्षित रखने की क्षमता है कि वैज्ञानिक कहते हैं कि ससार के जितने पुस्तकालय है एक ही व्यक्ति के दिमाग मे समा सकते है। ५० करोड़ सैल इतनी बडी शक्ति है कि सारी पृथ्वी पर जितना ज्ञान है एक ही व्यक्ति उसका स्वामी बन सकता है। परन्तु इतना ज्ञान एक ही व्यक्ति के अन्दर पहुचाने की व्यवस्था नही है। आयु इतनी कम है कि एक विषय पर भी पूर्ण दक्षता प्राप्त नही की जा सकती। यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के मत्र ९, १० और ११ मे कहा गया है कि ज्ञान दो प्रकार का है। अविद्या अर्थात् विश्व ब्रह्माण्ड का ज्ञान, जिसे अपरा विद्या कहते हैं तथा विद्या वह ज्ञान जिससे उस अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

परा यया तदक्षरमधिगम्यते।

वेद कहते है कि केवल अविद्या अर्थात् विज्ञान भी अधूरा है, केवल विद्या—आध्यात्मिक ज्ञान भी अपूर्ण है।

ओ अधतम प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ततो भूय इव ते तमो। यऽविद्यायाँ रता.। अर्थात् जो केवल सासारिक विज्ञान मे ही लगे है वे अन्धकार मे जाते हैं, और जो केवल आध्यात्मिक ज्ञान के चक्कर मे पड़ते है, वे तो और भी गहनतम अन्धकार मे रहते है। इसलिये अविद्या या अपरा विद्या के द्वारा मृत्यु लाघिये और परा विद्या के द्वारा उस अमृत तत्त्व की प्राप्ति कीजिये। इसीलिये ऋग्वेद के १-२२-१९ मत्र मे कहा गया है—

ओ विष्णो कर्माणि पश्यत, यतो व्रतानि पस्यशे। इन्द्रस्य युज्य सखा।

ऋग्वेद १-१२१। हे मनुष्य! उस विष्णु-सर्वससार के रचयिता पिता के कर्मो—सृष्टि की रचना को देखो। तथा व्रतानि-पश्यत—सृष्टि के नियमो को देखो और साथ-साथ इन्द्र 'उस सर्वशक्तिशाली परमात्मा का युज्य--अभिन्न सखा मित्र बनो।

परमात्मा की सृष्टि तथा उसके नियमो का अध्ययन विज्ञान है। उस इन्द्रका अभिन्न सखा बनना आध्यात्मिक ज्ञान है। इन दोनो की मित्रता को प्राप्त करना ही मनुष्य जीवन की पूर्णता है, इसीलिये वेदो मे जहा ऊचे आध्यात्मिक ज्ञान की झाकिया मिलती हैं, वही विश्व ब्रह्माण्ड के विज्ञान की भी जहा-तहा झलकिया प्राप्त होती हैं। वेदो का लक्ष्य है मनुर्भव जनया दैव्यजनम्। हे व्यक्ति! तू मनुष्य बन। और दिव्य जन को पैदा कर। सच्चा, दिव्य मनुष्य ही आर्य है। इस प्रकार के मनुष्यो का निर्माण करने के लिये यज्ञो का प्रतीक प्रस्तुत किया गया। यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म। श्रेष्ठ कर्म ही यज्ञ है। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा। यज्ञो के द्वारा ही यज्ञ स्वरूप प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है। अत यज्ञो को ज्ञान + विज्ञान, परा + अपरा विद्या के समन्वय का रूप दिया गया। यज्ञ हमारी आध्यात्मिक उन्नति के साधन थे। यज्ञो के द्वारा ही विज्ञान की उन्नति भी सम्भव हो सकी। यज्ञो को सफल बनाने के लिये बहुत सारे पदार्थों के साथ-साथ अनेक प्रकार की विद्याओ की भी आवश्यकता होती है। और मनुष्य से सम्बन्ध रखने वाली ऐसी एक भी विद्या नहीं है जिसकी यज्ञ मे जरूरत न होती हो। मास्टर थीबो साहब कहते है कि "स्पष्टतया विज्ञान प्राचीन भारतीय धर्म से सबद्ध रहा है और समझा जाता है कि निश्चय ही वह स्वत भारतीयो मे ही प्रादुर्भाव हुआ था।" आर्यों कीयज्ञ से सम्बन्ध रखने वाली जितनी विद्यायें हैं सब आर्यों की अपनी ही उपज हैं। वैदिक आविष्कार है। आइये यज्ञो से सम्बन्ध रखने वाले वैदिक विज्ञान पर विचार करें। यज्ञो के लाभो मे प्रमुख लाभ हैं वातावरण की शुद्धि। आजकल पोल्यूशन की, वायुदूषण की प्राय शिकायत है। ज्यो-ज्यो ससार मे बडे-बड़े कल-कारखाने बनते जाते हैं, उनकी चिमनियो से निकलने वाला विषैला धुआ स्वास्थ्य के लिये बडी समस्या बन गया है। और भी अनेक प्रकार की गन्दगी सुबह से शाम तक हवा तथा पानी को दूषित कर रही है। बम्बई, कलकत्ता मे रहने वाले गरीब किस तरह से जीते हैं यह एक करुण कहानी है। कानपुर, अहमदाबाद अन्य बडी-बडी मिलो की बस्तियो मे सास लेना कठिन है, ऐसी हवा बोझिल बनी हुई है। प्राचीन ऋषियो ने यज्ञ को वायुशुद्धि का सबसे प्रमुख तथा प्रभावशाली साधन माना था। इसीलिये यज्ञो के लिये जो सामग्री तैयार की जाती थी वह प्रत्येक ऋतु के अनुकूल होती थी। इसीलिये यज्ञो के लिये आयुर्वेद विज्ञान बना। आयु को बढाने वाला ज्ञान जिसमे सचित है वही तो आयुर्वेद है। हमारा आयुर्वेद दवाओ को बनाने वाला वेद नही। दवायें तो आ ही जायेंगी। आपको स्वस्थ, निरोग बनाने के साधन प्रस्तुत करने वाला वेद है। ऋग्वेद १०/९७/६ मे लिखा है—

ओ यत्रौषधी समग्मत राजान समिताविव। विप्र स उच्यते भिषक रक्षोहामीवचातन॥

राजा की सभा मे जैसे भाति-भाति के साधन-प्रसाधन सभा की शोभा बढाते हैं, इसी प्रकार वही विद्वान् सफलभिषक् है जिसके पास नाना प्रकार के रोग को जड़ से दूर करने वाले साधन सग्रहीत हैं। वही रक्षोद् कहलाता है। उस जमाने मे इस प्रकार के भैषज्ञ यज्ञो का आयोजन किया जाता था, जिसका आयोजक देश, काल और पदार्थों के गुण जानता हो। ऋषि दयानन्दने वेदो के आधार पर रोगनाशक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, सुगन्धित और मिष्ट पदार्थों के नामो की सूची दी है।

ओ शत वो अम्ब नामानि सहस्रमुत वो सह। अधा शतक्रतो यूयमिम मे अगद कृत। यजुर्वेद २।७६। गद् कहते है रोग को। आनन्दकृत = निरोगी बनाने वाली स्वास्थ्य प्रदान करने वाली अम्ब। मा! तेरे सैकडो नाम हैं और हजारो प्रकार से तुम उगती हो।

ओ त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनाद मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका ऐसी ओषधिया थी जिनके द्वारा यज्ञ करने से व्यक्ति दीर्घायु कोप्राप्त करता था। आज भी इस मत्र को मृत्युजय मत्र के नाम से ही जाना जाता है। डा० रघुनन्दन शर्मा का विचार है कि क्योकि इन तीनो ओषधियो के साथ-साथ चूहे का भी वर्णन है अत शायद यह प्लेग विनाशक ओषधिया होगी। वैदिक वैज्ञानिक आयुर्वेद के उच्चकोटि के विद्वान् थे। आज आयुर्वेद पर खोज की जाये तो कई चमत्कारी प्रयोग बीमारियो के जड से उन्मूलन करने तथा असाध्य रोग की चिकित्सा के लिये उपलब्ध हो सकते हैं।

प्राय ऋतुओ की सधियो मे ही व्याधियो का प्रकोप होता है। अत ऋतुओ की सधियो, अयना उत्तरायण, दक्षिणायन का ज्ञान भी आवश्यक अग था यज्ञो का। क्योकि वैदिक विचारको की मान्यता थी कि उत्तरायण मे स्वर्गवास होने से जीवात्मा मोक्ष प्राप्त करता है तथा दक्षिणायन मे मृत्यु होने से पुनर्जन्म के चक्कर मे फसता है। इसीलिए ज्योतिष का ज्ञान भी यज्ञो का अनिवार्य अग था। यज्ञ चाहे छोटे हो या बड़, सधियो मे ही होते हैं। प्रात. साय की सधि, पक्षो की सधि, महीनों की सधि, ऋतुओ की सधि, चातुर्मास्या की सधि पर प्राय यज्ञ होते हैं। इनके सूक्ष्म ज्ञान की वेद मे जहा-तहा झलक प्राप्त होती है। प्रात प्रात गृहपतिनोऽग्नि साय साय सौमनस्य दाता।

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू यजुर्वेद १३।२५

शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृत् १४।६
नभश्च नभस्यश्च वार्षिकोवृत् १४।१५
तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृत १५।५७
द्वे सती अश्रण्वम् पितृणामुत देवानामुत। १५।४७

षडाहु शीतान् षड्मास उष्णान्वृतुमावत
अथर्व वेद ८-९-१७

यहां पर वेदों में बड़े ही सुन्दर ढग से बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर ऋतुओ, देवयान और सृष्टियान दोनो मार्गों का वर्णन किया गया है।

पृथ्वी गोल है। सस्कृत मे भूगोल शब्द ही स्वय बताता है कि पृथ्वी गोल है। पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है। सूर्य के आकर्षण से ही ठहरी है, इसका भी वेदो मे सुन्दर वर्णन है। ओ चक्राणास परीणह पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुभमाना। न हिन्वानासस्ति तिरस्त इन्द्र परिस्पशो अ[...]धात् सूर्येण। ऋग्वेद १।३।११८

इसमे बताया गया है कि पृथ्वी गोल है। इसका आधा भाग सूर्य से प्रकाशित रहता है। आधा भाग अन्धकार से पूर्ण रहता है। दाधार पृथिवीमभितोमयूखैं, सूर्य अपनी किरणो के द्वारा पृथ्वी को धारण करता है। द्वादश प्रधयश्चक्रमेक त्रीणि नभ्यानि क उतच्चिकेता तस्मिन् साक त्रिशता न् शकवाऽपिता षष्टिर्न चलाचला स। ऋग्वेद १।१६४।४८

पृथ्वी की १२ परिधिया यानी मास है। ग्रीष्म, शरद् और वर्षा तीन नाभिया हैं। ३६० अश का एक चक्र यानी वर्ष है।

वेदो मे सूर्य ग्रहण का भी वर्णन है। ऋग्वेद ५।४०।५६ यत्त्वा सूर्य स्वर्भानुस्त. मसाविध्यदासुर। अक्षेत्रविद्यया मुग्धो भुवनाम्यदीधयु।

सूर्य तुझे चन्द्रमा ने अन्धकार से घेर लिया है, ज्योतिष व रेखागणित न जानने वाले मुग्ध हो रहे हैं। यहा स्पष्ट कहा गया है कि जो रेखागणित नही जानता, अक्षेत्रविद् है वह मुग्ध हो रहा है। पर जो ज्ञानी है वह गणित के द्वारा जान लेता है कि किस दिन चन्द्रमा सूर्य के ऊपर आ जायेगा और यह घटना पृथ्वी की चालों का विधिवत् ज्ञान होने से ही ग्रहण कर समय व स्थान जाना जा सकता है। वैदिक सम्पत्ति मे पण्डित रघुनन्दन शर्मा ने इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। परन्तु कौन पढता है? किसे रुचि है कि वेद जोकि ज्ञान का अमर कोश है उसमे से बहुमूल्य रत्नो को चुने और ससार के सामने प्रस्तुत करे। वेदों से पृथ्वी की सवत्सर, ऋतु काल इनका इतना सूक्ष्म विज्ञान है कि रिसर्चस्काल भी दग रह जाते हैं।

(शेषाश अगले अक मे)

शिक्षणालयों में धर्मशिक्षा क्यों और कैसी ?

आज हमारा राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष है। अंग्रेजी के शब्द 'सेक्युलर' का यही ठीक शब्दानुवाद है। इसका अर्थ 'अधार्मिक' करना उचित नहीं है। धर्मनिरपेक्ष का एकमात्र यही तात्पर्य है कि जिस प्रकार पाकिस्तान तथा अन्य कई देश मुस्लिम कहलाते हैं, उनका राजकीय धर्म 'मुस्लिम' है, वहा के सविधान के अनुसार केवल मुसलमान ही वहा का सर्वोच्च शासक हो सकता है, ऐसी बात हमारे राष्ट्र मे नही है। भारत मे अनेक सम्प्रदायो के लोग रहते हैं वे सभी भारत को अपनी मातृभूमि मानते हैं। हमारे राष्ट्र का किसी भी सम्प्रदाय को मानने वाला नागरिक शासन मे उच्च से उच्च पद को प्राप्त कर सकता है। सक्षेप मे कहा जाए तो हमारे देश की राजनीति मे किसी धर्म या सम्प्रदाय का विचार नही किया जाता।

इस प्रकार 'धर्मनिरपेक्षता' हमारे देश के लिए युक्तिसगत तथा सर्वथा उपयुक्त ही है। परन्तु व्यवहार मे देखा जाए तो अब यह 'अधार्मिकता' का रूप लेती जा रही है। स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व हमारे देश मे तीन प्रकार की शिक्षण-सस्थाए छात्रो को शिक्षा देने का कार्य कर रही थीं। १ सरकारी २. अर्द्ध-सरकारी ३ स्वतन्त्र।

सन् १८३८ मे 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' की ओर से शिक्षा सम्बन्धी नई व्यवस्था की गई। उस समय उसके लिए जो कमीशन नियुक्त किया गया, उसमे मैकाले साहब गवर्नर जनरल के कानून मन्त्री थे, प्रमुख थे। उन महानुभावों का भारत मे शिक्षणालय खोलने तथा भारतीयो को शिक्षित करने का एकमात्र यही उद्देश्य था कि इन शिक्षणालयो से पढकर निकले छात्र ब्रिटिश शासनतन्त्र को चलाने वाले सस्ते कर्मचारी हो।

किसी धर्म विशेष की शिक्षा न देकर भी शिक्षा का अन्तर्निहित भाव यही था कि इन शिक्षणालयो से शिक्षा प्राप्त कर निकला युवक बेशक ईसाई न होगा—पर वह अपने धर्म के प्रति भी निष्ठावान नही रहेगा। मैकाले का तो लक्ष्य ही यह था कि इन शिक्षणालयो से 'काले अग्रेज' तैयार किए जाए। इस प्रकार के सरकारी स्कूलो तथा कालेजो का लक्ष्य के अनुकूल ही परिणाम भी निकला।

परिणामस्वरूप धर्मप्राण भारतीयो मे प्रतिक्रिया ने जन्म लिया, जिसके नतीजे के तौर पर सम्प्रदाय विशेष द्वारा नियन्त्रित शिक्षणालयो ने जन्म लिया। परन्तु सरकारी नौकरी का प्रलोभन उन्हे सर्वथा स्वतन्त्र रूप न दिला सका। इन विद्यालयो मे ईसाई धर्म, मुस्लिम अथवा हिन्दू धर्म की शिक्षा देने की भी व्यवस्था की गई। आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियो ने आर्य सस्कृति की रक्षा के लिए दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूलो तथा कालेजो की स्थापना की। एक अति उच्च उदात्त विचार से प्रेरित होकर खोली गईं ये सस्थाए भी अन्त मे अपनी मूल प्रेरणा को खोकर सरकारी मशीन को चलाने वाले सस्ते क्लर्क ही पैदा करने वाली बन गई। डी० ए० वी० आन्दोलन के प्रमुख जन्मदाताओ में से प्रमुख श्री लाला लाजपतराय ने बड़े दुख के साथ कहा था कि दयानन्द ऐंग्लो वैदिक मे से दयानन्द और वैदिक तो गायब हो गए सिर्फ ऐंग्लो कालेज ही रह गया।

इन अर्द्ध-सरकारी सस्थाओ से समुचित परिणाम निकलता न देखकर कुछ विचारशील लोगो ने सरकारी हस्तक्षेप से सर्वथा रहित शान्ति निकेतन तथा गुरुकुल आदि सस्थाओ की स्थापना की। परन्तु इन शिक्षण सस्थाओ मे सम्प्रदाय विशेष की ही शिक्षा धर्म शिक्षा के रूप मे दी जाती थी।

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् हमारी राष्ट्रीय सरकार ने इस प्रकार के सम्प्रदाय विशेष के द्वारा साम्प्रदायिक आधार पर चलाई जाने वाली सस्थाओ को पसन्द नही किया। सरकारी शिक्षा सस्थाओ मे क्योकि सभी सम्प्रदायो के अनुयायी छात्र पढते है, इसलिए 'धर्मशिक्षा' नाम की चीज ही गायब कर दी गई। हमारे प्राचीन शास्त्र तथा विद्वान् ऊर्ध्व बाहु होकर कहते रहे हैं कि 'विद्या धर्मेण शोभते' अर्थात् विद्या की शोभा धर्म ही से है। धर्म से रहित शिक्षा ऐसी ही है जैसे बिना थनो की गाय। धर्म के अभाव में विद्या उसी प्रकार अविद्या बन जाती है जिस प्रकार फटा हुआ दूध। विद्या और धर्म दोनो मिलकर हो मनुष्य के दो पैरो की तरह आदमी पूर्ण कहलाता है। किसी एक के चले जाने से वह पगु कहलाता है। मनुष्य को सच्चे अर्थो मे मानव कहे जाने योग्य बनाने के लिए दो बातो की नितान्त आवश्यकता है। मनुष्य शब्द की व्युत्पत्ति ही यह है कि "मत्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्य." अर्थात् मनुष्य वही है जो विचारपूर्वक कर्म करता है। वह कर्तव्य-अकर्तव्य का विचार करके कर्म करे, अविचारपूर्वक अकर्म न करे। यही बुद्धि पैदा करना शिक्षा का उद्देश्य है।

शास्त्र कहते हैं कि 'श्रद्धामयो ऽय पुरुष" अर्थात् मनुष्य श्रद्धामय है। श्रद्धा शब्द ही श्रत् =सत्य तथा धा=धारण करना। शिक्षा का उद्देश्य है, मनुष्य को सत्य के अन्वेषण के योग्य बनाना ताकि वह शिक्षा द्वारा सत्य को खोजकर कर्तव्य तथा अकर्तव्य का विचार कर कर्तव्य पर स्थित हो सके। यदि शिक्षा मे से धर्म का बहिष्कार कर दिया जाता है, तो शिक्षा मानव को श्रद्धायुक्त न बनाकर कोरा तार्किक बना देती है। वेद मे एक मन्त्र द्वारा इसे बहुत हानिकारक बताया है। वेदमन्त्र कहता है कि "मनुष्य अपने हृदय और मस्तिष्क को जोड़कर अपने को सिर से ऊपर और मस्तिष्क से परे रखे। अर्थात् मस्तिष्क को (ब्रेन) और हृदय (हार्ट) को एक बनाकर सम और उन्नत करे। पवित्र बनकर मस्तिष्क से परे अर्थात् तर्क की बुद्धि से परे कूद जाए। मस्तिष्क का काम है तर्क-वितर्क करना। हृदय का काम है श्रद्धा एव भक्ति। केवल तर्क नास्तिकता को एव अकेली श्रद्धा अन्धविश्वास को जन्म देती है। दोनो का योग होने से तर्क से भक्ति जन्य दोष =अन्धविश्वास हटेगा और भक्ति से तर्कजन्य दोष नास्तिकता दूर होगी।

—सोमदत्त विद्यालंकार

धर्मशिक्षा के अभाव मे हमारी वर्तमान शिक्षा विद्यार्थी को तार्किक तो बना देती है पर उसे श्रद्धावान् तथा नैष्ठिक नही बना सकती। आज के छात्र इसी श्रद्धा के अभावो मे कोरे तार्किक बनते जा रहे है, जिसके कारण चरित्रहीनता बढती जा रही है। इसलिए शिक्षा मे धर्म शिक्षा का देना अत्यावश्यक है।

अब सवाल यह पैदा होता है कि धर्म शिक्षा दी जाए तो किस धर्म की। वास्तव मे हम धर्म शब्द को सकुचित अर्थ-सम्प्रदाय के रूप मे ले लेते है। इसी के कारण सब गडबडी हो रही है। धर्म का लक्षण बताते हुए कहा गया है कि "धारणात् धर्म मित्याहु, धर्मो धारयते प्रजा"। अर्थात् जिन नियमों के पालन से मनुष्य समाज का धारण होता है वह धर्म है। इस लक्षण के अनुसार बहुत-सी ऐसी बातें है, जो सब धर्मो मे, सम्प्रदायो मे सामान्य हैं। वही वास्तविक धर्म है। मनु ने धर्म का लक्षण इस प्रकार बताया है। धृति, क्षमा, दमो अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध, दशक धर्म लक्षणम्। आप ही बताइए कि इन दस धर्म की बातो से किस सम्प्रदाय वाले को मतभेद हो सकता है। कौन-सा ऐसा सम्प्रदाय है जो चोरी करना, गन्दा रहना, झूठ बोलना, गुस्सा करना आदि को अच्छा बतलाता है।

अष्टाग योग मे भी यम और नियम जिन्हें योग का पहला और दूसरा अग कहा गया है "अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यम तथा शौच सतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान" नियम इनका पालन करना आवश्यक माना गया है। "योग कर्मसु कौशलम्" के अनुसार इन कर्मो मे कुशलता=दक्षता प्राप्त करना ही योग से अभिप्रेत है। यह भी कहा गया है कि मनुष्यो को यमो का सेवन अनिवार्य रूप से करना चाहिए, केवल नियमो का ही नही। यमो का पालन न करके केवल नियमो का पालन करने वाला कर्तव्य से च्युत हो जाता है। यमो के अन्तर्गत जो ५ बातें हैं वे समाज व्यवस्था के सुचारु रूप से चलाने के लिए जरूरी हैं और नियमो के अन्तर्गत जो बातें है वे वैयक्तिक उन्नति के लिए आवश्यक है। सबको अपनी उन्नति के साथ दूसरो की उन्नति का भी ध्यान अवश्य रखना चाहिए, इसीलिए नियमो के पालन की अपेक्षा यमो के पालन पर अधिक जोर दिया गया है। यदि मनुष्य अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, सदाचार (ब्रह्मचर्य) जरूरत से अधिक सग्रह करना आदि का पालन नही करेगा तो समाज व्यवस्था सुचारु रूप मे नही चल सकती।

अब आप ही बतलाइए कि इन यमो और नियमो के अन्तर्गत जो बातें समाज-व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए आवश्यक एव अनिवार्य कही गई हैं, दुनिया का कौन-सा सम्प्रदाय इनके विरुद्ध उगली भी उठा सकता है।

जब हम कहते हैं कि किताबी शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी अवश्य दी जानी चाहिए। तब हमारा तात्पर्य धर्म के इन्ही अगो की शिक्षा देने से है। 'धर्मशिक्षा' इस शब्द से यदि चिढ हो तो इसे सदाचार शिक्षा का नाम दिया जा सकता है। सदाचार शिक्षा की पाठविधि मे धर्म के इन्ही अगो मे से प्रत्येक की विशद व्याख्या करने के बाद उनके सम्बन्ध मे भिन्न-भिन्न धर्मग्रथो तथा सम्प्रदायो की धर्म पुस्तको मे जो वाक्य सुभाषित या कथानक आये हुए हो उनसे भी छात्रो को अवगत कराया जाए। उन बातो को प्रतिपादित करने वाली ऐतिहासिक घटनाओ तथा प्रचलित कहानियों के माध्यम से उस नियम की छाप छात्रो के दिल पर बिठाने का यत्न करना ही धार्मिक शिक्षा या सदाचार शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर 'सत्य' के सम्बन्ध मे सुन्दर सुभाषित हिन्दू धर्म के ग्रथो वेद, रामायण, महाभारत मे, कुरान, बाइबिल, जिन्दा वस्था, गुरुग्रथ साहब तथा अन्य सम्प्रदायो की पुस्तको से सग्रहीत कर पढाये जाए। साथ ही सत्य आदि का आश्रय न लेने के कारण क्या बुरे परिणाम हो सकते है यह भी छात्रो को हृदयगम कराया जाए तो कौन इस प्रकार की शिक्षा के विरुद्ध एक शब्द भी बोल सकता है।

धर्म की शिक्षा के अभाव मे आजकल छात्रो के मन मे ब्रह्मचर्य तथा वीर्य रक्षा का महत्त्व सर्वथा गायब हो गया है। धर्म की शिक्षा के अभाव मे आज का विद्यार्थी विद्या का अर्थी = इच्छुक न बनकर विद्या की अर्थी निकालने वाला ही बनता जा रहा है। और हमारे आजकल के विद्यालय विद्या प्रदान करने के आलय न बनकर विद्या को लय करने वाले बन रहे है। आशा है हमारे राष्ट्र के कर्णधार समय रहते धर्म शिक्षा के महत्त्व एव अप्रतिहार्यता को स्वीकार कर शीघ्र ही शिक्षण सस्थाओ मे धर्म शिक्षा या सदाचार शिक्षा की समुचित व्यवस्था करेंगे।

१+३११ नया राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-११००६०

प्रो० रामसिंह के निधन से गहरी क्षति

जीवन से प्रेरणा लें : आर्य नेताओं का उद्बोधन

दिल्ली। रविवार ६ जून के दिन आर्यसमाज दीवान हाल मे प्रसिद्ध समाज सेवी हिन्दू सगठन के अग्रणी पुरोधा स्व० प्रो० रामसिंह जी के दिवंगत होने पर प्रह्लाद दत्त जी की अध्यक्षता मे श्रद्धाजलि सभा हुई। जिसमे विभिन्न वक्ताओं ने अपनी भावभीनी श्रद्धाजलिया अर्पित की। ला० हसराज गुप्त ने उन्हे स्वामी दयानन्द के विचारो का कट्टर समर्थक एव अनुयायी बताया।

श्री बाला साहब सावरकर ने कहा, वह महान् कार्यकर्ता, विद्या के धनी, त्याग की प्रतिमूर्ति, धार्मिक, तथा राजनीतिक क्षेत्र के निर्भीक वक्ता थे। अखिल भारतीय जनसघ के प्रधान श्री बलराज मधोक ने उनके देहावसान को हिन्दू समाज की गहरी क्षति माना। उन्होने कहा कि वह महान देश-भक्त, राष्ट्रवादी, जाग्रति के पुतले, सदा याद किए जाते रहेगे। प्रसिद्ध आर्य नेता श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा—आज देश मे अनेक विदेशी शक्तियां षड्यन्त्र कर रही हैं जो देश की एकता के लिए चुनौती है। हिन्दू समाज की एकता की अत्यन्त आवश्यकता है। स्वतन्त्र भारत का स्वप्न देखने वाले युगपुरुष दयानन्द के परम शिष्य प्रो० रामसिंह जीवन भर हिन्दू समाज की एकता के लिए प्रयास करते रहे। उनके जीवन से आज हम एकता की प्रेरणा लें।

आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा—वह विद्वान, हृदय का देदीप्यमान व्यक्तित्व अपनी निर्भीक एव स्पष्टवादी वाक् शक्ति के लिए हर क्षेत्र मे प्रेरणा देता रहेगा।

आर्यसमाज जगपुरा-भोगल, आर्यसमाज जनकपुरी बी-ब्लाक ··आदि दिल्ली की अनेक आर्यसमाजो ने हिन्दू-समाज एव आर्यसमाज के जागरुक प्रहरी प्रो० रामसिंह के असामयिक निधन पर अपने शोक प्रस्ताव स्वीकृत किए।

महर्षि के पथ के ध्येयनिष्ठ पथिक

दिल्ली प्रदेश जनसघ के प्रचारमन्त्री श्री नरेन्द्र अवस्थी ने हिन्दू महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० रामसिंह जी को भाव भीनी श्रद्धाजलि प्रस्तुत करते हुए बताया कि जहा वह स्वाधीनता सग्राम के एक अग्रगण्य सेनानी रहे वहा हिन्दू व हिन्दी हितो के लिए सदैव सघर्षशील रहे। प्रो० रामसिंह जी की गणना उन कर्मठ सार्वजनिक कार्यकर्ताओ मे प्रमुखतम थी जिनका आदर वैचारिक अधिष्ठान पर पृथक विचारधारा रखने वाले भी समान रूप से करते थे। महर्षि दयानन्द के पथ पर चलने वाले एक ध्येयनिष्ठ पथिक थे। प्रो० साहब प्रमुख समाजसेवी, सिद्धान्तो पर हिमगिरि की तरह अडिग रहने वाले कुशल राजनीतिज्ञ, परमहिन्दुत्वनिष्ठ, सुलझे हुए लेखक व पत्रकार आदि बहुमुखी प्रतिमा के धनी थे।

आर्यसमाज लन्दन का वार्षिक अधिवेशन

आर्यसमाज लन्दन का वार्षिक अधिवेशन २४ अप्रैल १९८३ को 'वन्देमातरम् भवन' मे बड़े प्रेम तथा सौहार्द पूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। प्रधान प्रो० सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज के उत्प्रेरक उद्बोधन के पश्चात् मन्त्री श्री शर्मा द्वारा वार्षिक विवरण पढ़ा गया तथा श्री प्रियव्रत चोपड़ा द्वारा आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत हुआ। तत्पश्चात् सर्वसम्मति से १९८३-८४ वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान—प्रो० सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज उप प्रधान—श्री धर्मवीर पुरी, श्री कपिल देव प्रिजा, मंत्री—श्री जगदीश राय शर्मा, उपमन्त्री—श्री राजेन्द्र ओबराय, श्री महेन्द्र कुमार चाठली, कोषाध्यक्ष—श्री प्रियव्रत चोपडा, जनसम्पर्क अधिकारी—श्री अमर नाथ गिरधर, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती शकुन्त कोछड़। अंतरग सदस्य—श्रीमती सावित्री छाबडा, श्रीमती लाज चावला, श्री फकीर चन्द सुमरा, श्री धर्मपाल भसीन, श्री प्रेम राम पाल, श्री त्रिलोक गाजरी, श्री राजेन्द्र चौधरी, श्री रमेश सेठी, श्री एफ० सी० मायर। प्रधान प्रो० भारद्वाज ने अपने सभी निर्वाचित सहयोगियों की तरफ से सदन का धन्यवाद करते हुए आश्वासन दिया कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वह समिति पारस्परिक सहयोग तथा विश्वास पूर्ण कर्म भावना द्वारा आर्य-समाज के कार्य को आगे बढ़ाते रहेगी।

—गिरीश चन्द्र खोसला

संस्कृत अभिव्यक्ति का सुन्दर माध्यम

वाराणसी की छात्राओं के शौर्यपूर्ण कार्यक्रम

पाणिनि महाविद्यालय का उत्सव एवं दीक्षान्त सम्पन्न

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का द्वादश वार्षिकोत्सव २७,२८,२९ मई को सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव में भाग लेने हेतु सुदूर प्रान्तों चम्बा (हि० प्र०) हैदराबाद (आ० प्र०) बम्बई, सिलीगुड़ी, दिल्ली, पानीपत, मोगा, नागौर, भरतपुर आदि स्थानो से भारी सख्या में लोग पधारे।

२७ मई को यज्ञ के अनन्तर ओ३म् ध्वजोत्तोलन विद्यालय के प्रधान श्री प० शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी द्वारा किया गया तथा ब्रह्मचारिणियो ने 'ओ३म् [illegible]' विश्वविजयिनी भारतें ध्वजगीत का गान किया।

सायंकालीन सभा में श्री ओ३म् प्रकाश जी वर्मा के भजनो के बाद श्री नारायणमुनिश्चतुर्वेद' ज्वालापुर एव श्री प० रामप्रसाद वेदालकार, उपकुलपति गुरुकुल कागडी हरिद्वार के स्वाध्याय पर बड़े प्रेरणाप्रद भाषण हुए। रात्रि को सस्कृत मे 'भक्तसभा' नामक लघु प्रहसन हुआ, उसमे आधुनिक युग मे व्याप्त सामाजिक भ्रष्टाचार आदि विसगतियो पर करारा व्यग्य था। द्वितीय—"ऋषि दयानन्द का व्यक्तित्व एव कृतित्व" विषय पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो पर आधारित भाषण प्रतियोगिता हुई। इसके निर्णायक गण थे—आचार्य सुद्युम्न जी, प्रो० मुरली मनोहर डिग्री कॉलिज बलिया, श्रीमती सुशीला देवी जौहरी भू० पू० प्राध्यापिका डिग्री कॉलिज लखीमपुर खीरी एव श्री रामप्रसाद जी वेदालकार उपकुलपति गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार। प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान—कु० यशोलता सिलीगुडी, द्वितीय स्थान—कु० अनुपमा अलीलाबाद तथा तृतीय स्थान—कु० शोभा रंगून (बर्मा) ने प्राप्त किया।

२८ मई को प्रात: स्नातिका कक्ष का उद्घाटन श्री प० रामप्रसाद जी वेदालंकार ने किया।

२८ मई की रात्रिकालीन सभा मे श्री सत्यपाल पथिक अमृतसर के भजनोपदेश, श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री गोरखपुर के प्रवचन, लघु यज्ञ, कुलगीतिगायन, एवं प्रतिज्ञावाचन के पश्चात् वीतराग संन्यासी श्री नारायणमुनिश्चतुर्वेद: ज्वालापुर ने चार नव स्नातिकाओ को विद्यालय की सर्वोच्च उपाधि 'व्याकरणसूर्या' प्रदान की। तदनन्तर विद्यालय की आचार्या जी का सारगर्भित दीक्षान्त भाषण हुआ। आचार्या जी ने घोषणा की कि 'वैदिक धर्म कर्मणा वर्ण व्यवस्था मानता है जन्मना नहीं, अत: इन स्नातिकाओं के अध्ययन-अध्यापन आदि गुण की प्रखरता एवं श्रेष्ठता के कारण ये ब्राह्मण वर्ण की हैं यह मैं आज आप सबके समक्ष घोषणा करती हूं।"

दीक्षान्त भाषण के अनन्तर नव स्नातिकाओं ने गुरुकुलीय आचार सम्बन्धी अपने भावपूर्ण आत्मनिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा—"वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए हम सब कृतनिश्चय हैं।" नव स्नातिकाओं मे कु० सूर्या व्याकरणसूर्या का आत्मनिवेदन इतना कारुणिक चित्रण लिए हुए था कि उपस्थित जन-समूह की आंखें छलक उठी। दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता श्री प० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी ने की।

वार्षिकोत्सव की रात्रिकालीन अन्तिम सभा मे शारीरिक खेल व्यायामो के प्रदर्शन में कन्याओ की तत्परता एवं अनुशासनप्रियता देखते ही बनती थी। इस खेल व्यायाम के कार्यक्रम के अन्तर्गत धनुर्विद्या प्रतियोगिता भी हुई, जिसमें तीन ब्रह्मचारिणियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक श्री एस० एस० गिनोडिया ने कु० मुक्ता हैदराबाद को प्रथम तथा कु० श्रद्धा उड़ीसा को द्वितीय घोषित किया।

इस अवसर पर श्री बलबीर सिंह बेदी (डी० आई० जी०) ने अपने भाषण में कहा—"परेड पी० टी० आदि कार्यक्रमों का सस्कृत मे निर्देशन मेरे लिए अनूठी वस्तु है। सस्कृत विश्व की सभी भाषाओं की जननी है। इस विद्यालय की कन्याओं द्वारा सस्कृत में सरल सम्भाषण को देखकर आज मुझे अनुभव हुआ कि यह अब भी अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकती है, सचमुच यदि देश के स्वतन्त्र होते ही संस्कृत भाषा राष्ट्रभाषा पद पर अधिष्ठित कर दी जाती तो इस देश का नक्शा कुछ और ही होता। वैदिक सस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए बद्धपरिकर इस विद्यालय की कन्याओं के शौर्यपूर्ण कार्यक्रम एवं शैक्षिक योग्यता को देखकर मुझे आज अपार प्रसन्नता हुई।" कन्याओं के इन अद्भुत कार्यक्रमों के अनन्तर श्री जयप्रकाश जी आर्य प्रधान आ० सा० गान्धीनगर देहली द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ।

अन्त में पूज्या पं० मेधा देवी द्वारा वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन पूज्या आचार्या प्रज्ञा देवी जी ने किया—माधुरी तर्कतीर्थ।

श्री हरभजनलाल श्रीवास्तव का स्वर्गवास

आर्यसमाज, हरदोई समाज के मन्त्री श्री अनूपकुमार श्रीवास्तव के ताऊजी एव श्री रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव (मुन्नि बाबू) सक्रिय कार्यकर्ता के बड़े भाई श्री डा० हरभजनलाल श्रीवास्तव (बाबू) के निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्यसमाजों के सतसंग

रविवार, १९ जून, १९८३

अन्धा-मुगल प्रताप नगर—प० कामेश्वर जी शास्त्री; अमर कालोनी—पं० देवेन्द्रकुमार शास्त्री, अशोकनगर—कवि प्रकाश व्याकुल; आर०के०पुरम सेक्टर-९ प० रामनिवास शास्त्री; इन्द्रपुरी—श्रीमती प्रकाशवती, किंग्जवे कैम्प—प० देवराज आर्योपदेशक; कालका—प० तुलसीराम आर्य, कालका डी डी ए. फ्लेट—आचार्य हरिदेव; गाधीनगर—प० बल्वेश्वर आर्य, गीता कालोनी—बलवीर शास्त्री, ग्रेटर कैलाश I—आचार्य दिनेशचन्द्र पाराशर, ग्रेटर कैलाश-II—प० मनोहरलाल ऋषि, गुड़ मण्डी—प० सोमदेव शर्मा शास्त्री, गुप्ता कालोनी—प० खुशीराम शर्मा, गोविन्द पुरी—पं० कामेश्वर शास्त्री, चूना मण्डी—पहाड़गंज—प्रो० सत्यपाल वेदार, भोगल—पं० मुनिशकर वानप्रस्थ; जनकपुरी—बी-३ श्रीमती लीलावती; टैगोर गार्डन—अपोचन्द्र मतवाला; तिलकनगर—रमेशचन्द्र वेदाचार्य, तिमारपुर—प०अमरनाथ कान्त, नारायण विहार—पं० हरिश्चन्द्र आर्य; पजाबी बाग एक्सटेन्शन—प० देवेश जी महोपदेशक, पजाबी बाग—प० देव शर्मा शास्त्री, बिरला लाइन—प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री; मोडल बस्ती—डा० रघुनन्दनसिंह, मोडल टाउन—प० प्राणनाथजी सिद्धातालंकार, रमेशनगर—प० रामरूप शर्मा शास्त्री, राजौरी गार्डन—पं० चमनलाल जी, लक्ष्मीबाई नगर—प० शीशरामजी, त्रिनगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, लारेन्स रोड—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, सराय रुहेल्ला—पं० आशानन्द भजनीक, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्रजी, सोहन गज—प० सत्यभूषण वेदालंकार, शादीपुरी—जयभगवान, शालीमार—प० दीनानाथ सिद्धान्तालकार, हौजखास—प० चन्द्रभानुजी; मालवीय नगर—प० ओमवीर शास्त्री, श्रीनिवासपुरी—प० महावीर बत्रा; कोर्ट क्लब—व्याकुल कवि, कृष्णनगर—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, अशोक विहार—पं० चुन्नीलाल भजनोपदेशक, देवनगर—प० सत्यदेव स्नातक।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अध्यक्ष—वेद प्रचार विभाग।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री प्रकाशचन्द मूना, उपप्रधान—श्री ओंकारनाथ आर्य, श्री सोहन लाल दुग्गल, महामन्त्री—डा० दीवान प्रेमचन्द, उपमन्त्री—श्री विश्वभूषण आर्य, श्री लालचन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री कस्तूरीलाल मदान।

आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक जनकपुरी के अधिकारी

संरक्षक—श्री व्यासदेव मेहता, प्रधान—मेजर रामप्रकाश धाम, उपप्रधान—श्री विद्याप्रकाश मदान, श्री मोहनलाल वशिष्ठ, श्री रामकृष्ण सतीजा, मन्त्री—वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री प्रतापसिंह गुप्त, कोषाध्यक्ष—श्री गुरुमुख राय दुग्गल, उपमन्त्री—श्री शिवकुमार मदान, नरेन्द्रचन्द्र पुरी।

पाणिनि विद्यालय का दीक्षान्त भाषण

(पृष्ठ ३ का शेष)

महत्वपूर्ण संदेश है। तुम्हें कर्म पथ पर अग्रसर होना है पर प्रतिदान की इच्छा मे नही।

प्रति वर्ष लोग मुझसे पूछते हैं कि "इस वर्ष विद्यालय मे नूतन कौन-सा हुआ" आज मैं आपको अपना नूतन निर्माण कमरे आदि के रूप में न दिखाकर इन प्यारी बेटियों देवबालाओ के रूप में करा रही हूं। सामाजिक कुविचारों से कोसो दूर निर्मल, परिशुद्ध ये पुत्रिया निश्चय ही आपके स्नेह की ही नही 'पिता भवति मन्त्रद" के अनुसार मान-सम्मान की भी पात्र हैं।

वैदिक-धर्म जन्मना वर्ण व्यवस्था को स्वीकार नही करता, आचार्य ही गुण कर्मानुसार दीक्षान्त के समय उन्हे वर्ण प्रदान करेगा, तदनुसार मे आज इस विशाल जनसमुदाय के समक्ष घोषणा करती हू कि ये बालायें अध्ययन-अध्यापन गुण की प्रखरता एवं श्रेष्ठता के कारण ब्राह्मण वर्ण की हैं।

संसार में आत्मानुशासन की लगाम बहुत बडी चीज है। अब तुम अपने भावी जीवन में आत्मानुशासन को ही आधार दण्ड समझ लेना, यह मेरा तुम सबसे दृढ़ कथन है।

तुम्हारा समस्त भावी जीवन सुखद, मगलमय, निरापद हो यह हम दोनों का आशीर्वाद है, अतः जिस कर्मक्षेत्र पर तुम अब उतर चुकी हो या उतरने की तैयारी मे हो उसमें तुम्हें सदैव अक्षय यश एवं अमिट कीर्ति तथा महती सफलता प्राप्त हो—तुम्हारी वाणी में ऐसा तेज एवं ओज हो कि विश्व एकाकार हो उठे, वेद की प्रतिध्वनि तुम्हारे श्वास-प्रश्वास में हो, मात्र यही मंगलकामना विश्वपति भगवान् से तुम्हारे लिए मैं कर पा रही हूं।

डिबाई में जनहित के लिए आह्वान : अन्याय को चूर-चूर करो

डिबाई में क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन

नई दिल्ली। डिबाई, बुलन्दशहर (उ० प्र०) के क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन के सयोजक श्री रूपकिशोर शास्त्री ने देश मे व्याप्त अभावो एव कष्टो को दूर करने एव अन्याय को नष्ट करने के लिए डिबाई में हो रहे क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन मे सक्रिय सहयोग के लिए जनता का आह्वान किया है।

वर्तमान दौर में देश व जनता ऐसे हालात से गुजर रही है कि भविष्य में हमारी सस्कृति सभ्यता व देश को कही का नही छोडेगी और हम लोग अपने अस्तित्व को ही बिसार बैठेंगे। जनता किसी न किसी रूप मे प्रत्यक्ष या परोक्ष दृष्टि से विदेशी कुचक्र से आक्रान्त हो रही है। देश की आजादी के ३५ वर्षों के बाद भी चहु ओर मत्स्यन्याय व्याप्त है। अव्यवस्था, अन्याय, पक्षपात, पारस्परिक कलह, द्वेष, अभाव एव अशिक्षा के कारण जनमानस कराह रहा है। इन सभी के विरुद्ध लगभग १२५ वर्ष पूर्व आदित्य ब्रह्मचारी परम तपस्वी वेद शास्त्रो के उद्धारक ऋषि दयानन्द ने सघर्ष किया था। आज भी महर्षि दयानन्द का प्रतिनिधि आर्यसमाज ताल ठोके हुए अखाडे मे कूदा हुआ है।

महात्मा गाधी ने कहा था कि मानव जाति व देश के मानसिक अभाव, दरिद्रता, अशिक्षा, छूआछूत आडम्बर को समूल मिटाने, देश की आजादी के लिए जितने भी क्रान्तिकारी, कर्मठ कार्यकर्त्ता, देशभक्त निष्ठावान, उस दिव्य दयानन्द के सैनिको ने मेरी सहायता की है, उतनी किसी ने नही की। विद्वानो के आकडो के अनुसार देश की आजादी के लिए सघर्ष करने वाले लगभग ७० प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे।

अभावो एव सभी विषम परिस्थितियो से सघर्ष करने के लिए मेहनतकश ईमानदार लोगो की वीरभूमि डिबाई क्षेत्र मे १३-१४-१५-१६ जून, १९८३ को विशाल आर्य सम्मेलन के माध्यम से जन जागृति का उपक्रम हो रहा है। इस उपक्रम के पीछे अज्ञान, अभाव, अशिक्षा, विदेशी शिक्षा, विदेशी सस्कृति, सभ्यता, देश को निर्बल बनाने वाले विदेशी षड्यन्त्र, देश के विभिन्न क्षेत्रो मे फैली हुई गद्दार कौमो, वर्गो सम्प्रदायो द्वारा तोडफोड, आगजनी, लूटपाट, मारकाट एव बेतुकी मागो के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

(पृष्ठ १ का शेष)

नम्बर ७५६ (१५० ग्रक मे से ११२) रमघुल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल राजा बाजार नई दिल्ली।

नीति ज्ञानी

प्रथम कु० सीमा सुपुत्री श्री ऋषि केश रोल नम्बर-१०२० (२०० ग्रक मे से १७२) रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली द्वितीय कु० सगीता सुपुत्री श्री नानक चद रोल न० १००५ (२०० अक मे से १६७) रघुमल आय कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, बाजार नई दिल्ली तृतीय कु० राजकुमारी सुपुत्री श्री एस० बी० वर्मा रोल नम्बर १००३ (२०० ग्रक मे से १५६) रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेन्डी स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली

(नीति-विशारद)

प्रथम कु० सविता सुपुत्री श्री हरि किशन, रोल नम्बर-१०१५ (२०० ग्रक मे से १६५) बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, बिरला लाइन्स, दिल्ली द्वितीय कु० जसबीर सुपुत्री श्री गोपाल सिंह, रोल नम्बर-१००७ (२०० मे से १३७) चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, सूरज पर्वत नई दिल्ली, तृतीय कु० रीता सुपुत्री श्री तारा सिंह सचदेवा, रोल नम्बर १०१४ (२०० ग्रक मे से १३४) आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली, २—कु० मधु सुपुत्री श्री राम कृष्ण शर्मा, रोल नम्बर-१०३१ (२०० ग्रक मे से १३४) बिरला आय कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, बिरला लाइन्स दिल्ली।—प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद दिल्ली।

डिबाई आर्य महा सम्मेलन (पृष्ठ ७ का शेष)

विरुद्ध जबरदस्त सघर्ष करके समुचित न्याय व्यवस्था को लाना मुख्य उद्देश्य है। अन्याय पक्षपात की दीवारो को तोडकर चूर-चूर कर देने का आह्वान किया गया है। विश्वास है कि इस सम्मेलन के माध्यम से जनता के हितार्थ समग्र क्रान्ति के पथ पर प्रगति सम्भव होगी।

समस्त क्षेत्रवासियो से निवेदन है कि इस ऐतिहासिक विशाल आय सम्मेलन को सभी विवादग्रस्त, शकाओ तथा जातिगत भावना से एकदम ऊपर उठकर तन-मन-धन एव निष्काम भाव से सहयोग करें। इस महासम्मेलन मे देश के कोने कोने से बडे-बडे सन्यासी विद्वान्, नेता एव कार्यकर्ता भाग लेने आ रहे हैं। उनको उत्साहजनक सहयोग देकर अपना एव उनका मनोबल तथा सकल्प दृढ करें। सम्मेलन की सफलता आपकी निष्ठा, लगन एव उन्नति की परिचायक है।

गृहस्थाश्रम-साधना शिविर

नई दिल्ली, सोमवार २७ जून से रविवार ३ जुलाई, १९८३ तक दिल्ली के वेद-सस्थान मे गृहस्थाश्रम-साधना-शिविर होगा। इस शिविर का विषय होगा, 'घर मे सुख से रहने की कला'। इसमे सब आयोजन गृह-केन्द्रित होंगे। वेदो मे, धर्म-शास्त्रो मे गृहस्थ के आदर्शों, नियमो के विवेचन के अलावा, वर्तमान युग के सदर्भ मे गृह मे चरित्र निर्माण और राष्ट्रसाधना जैसे विषयो पर भी प्रवचन होंगे। पति-पत्नी-रूप जोडे से पधारने वाले शिविर का पूरा और बेहतर लाभ ले पाएगे। सर्वश्री महर्षि दयानन्द, डा० अभयदेव शर्मा, डा० फतहसिंह, आदि महानुभावो के विचारो से शिविर लाभान्वित होगा। अतिम दिन शिविर समापन के साथ ऋषि-लगर होगा। विज्ञप्ति, नियमावली, आदि 'सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली ११० ०२७"—वेद-सस्थान के इस पते से मगाई जा सकती है। दूरभाष ५० २३१६ पर भी सम्पर्क किया जा सकता है।

सिन्धी युगल का विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर मे रविवार दिनाक ५-६-८३ को श्री प्रो० बुद्धिप्रकाश आय के पौरोहित्य मे एक सिन्धी युगल का समस्त प्रकार की सामाजिक रूढियो का परित्याग कर सादगी से विवाह हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज अजमेर के मन्त्री श्री रासासिंह तथा उपमन्त्री शिवचन्द सिंह ने दहेज उन्मूलन तथा सामाजिक रूढियो का त्याग हेतु युगल के सत्साहस के लिए बधाई दी।

रजि० न० डी० सी० 759 साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा न० २ गाधीनगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन ३१०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष . ७ अंक ३५ | रविवार २६ जून, १९८३ | १२ आषाढ वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५८

अजमेर की भिनाय कोठी में राष्ट्रीय स्मारक बने

सरकार मकान का अधिग्रहण कर उसे आर्यसमाज को सौंपे

पंजाब की स्थिति के कारगार नियन्यण के लिए वहां सर्वाधिकारी नियुक्त हो

भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह से सार्वदेशिक सभा में शिष्टमण्डल का अनुरोध।

नई दिल्ली। महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण हुए इस दीवाली पर पूरे सौ वर्ष हो जाएंगे। उनका निर्वाण राजस्थान के अजमेर नगर अवस्थित राजासाहब भिनाय की कोठी मे हुआ था। स्वामी जी की निर्वाणस्थली भिनाय की कोठी के अगले भाग मे पेट्रोल पम्प और रिहाइशी मकान बना लिए गए हैं, आर्यसमाज केन्द्र की और राजस्थान की सरकारों से अपेक्षा करता है कि इस महत्वपूर्ण धार्मिक एव राष्ट्रीय स्मारक के निर्माण के लिए सरकार यह निजी सम्पत्ति अधिग्रहीत कर शीघ्र आर्यसमाज को सौंप दे जिससे कि दीपावली से वहां स्मारक निर्मित हो जाए। वर्तमान में स्मारक का छोटा-सा भाग कोठी के पिछले भाग मे बना हुआ है, जो स्थान के महत्त्व की दृष्टि से सर्वथा अपर्याप्त है।" इन शब्दो मे मंगलवार १४ जून के दिन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, सभा के उपप्रधान श्री वन्दे मातरम् रामचन्द्रराव एव श्री पृथ्वीसिंह आजाद ने राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने आर्यसमाज का दृष्टिकोण रखकर सहयोग का अनुरोध किया। राष्ट्रपति महोदय ने प्रतिनिधिमण्डल की मांग ध्यान से सुनी और भिनाय की कोठी आर्यसमाज को देने के लिए सरकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

पंजाब की स्थिति की चर्चा करते हुए प्रतिनिधिमण्डल ने माग की कि पंजाब मे जैसी परिस्थिति है, उसे देखते हुए वहां राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए, यदि किन्हीं कारणो से ऐसा करना सम्भव न हो तो वहां केन्द्र को एक सर्वाधिकार प्राप्त अधिकारी द्वारा शासन व्यवस्था अपने हाथ में ले लेनी चाहिए, तभी इस सीमान्त राज्य मे शान्ति स्थापित हो सकेगी। प्रतिनिधिमण्डल ने राष्ट्रपति को स्मरण कराया कि हैदराबाद के तेलंगाना क्षेत्र में साम्प्रदायिक उपद्रव होने पर केन्द्र ने इसी प्रकार की कार्यवाही की थी।

मीनाक्षीपुरम, नीलाक्कल तथा असम का उदाहरण देकर श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव ने सूचना दी कि धार्मिक अल्पसख्यको के नाम पर कतिपय वर्ग शासन की उदारता का अनुचित लाभ उठा रहे हैं, जिसे तुरन्त रोकना आवश्यक है। प्रतिनिधिमण्डल का स्पष्ट मत था कि उन राष्ट्र विरोधी विभाजक शक्तियो से यदि बातचीत के द्वारा कोई समाधान न मिले तो बलपूर्वक उनके राष्ट्र विरोध को समाप्त कर देना चाहिए।

५३ पुरानी मस्जिदों पर कब्जे की मांग

प्राचीन पुरातत्व के स्मारकों पर अधिकार की जबरन कोशिश

नई दिल्ली। अ० भा० इत्तहादुल मजलुमीन कमेटी, मस्जिद बचाओ कमेटी, तुर्कमान दरवाजा कार्यवाही समिति और मस्जिद भूरी भटियारी आदि चार सस्थाओं की ओर से शुक्रवार १७ जून को दोपहर बाद १०१ से अधिक मुसलमानों ने ऐतिहासिक सफदरजग मकबरे के समीप पृथ्वीराज रोड पर नमाज पढी। उल्लेखनीय है कि पिछले आठ दिनो से मकबरे एव समीपस्थ क्षेत्र को राष्ट्रीय इमारत घोषित करने के बाद प्रतिबन्धित क्षेत्र घोषित कर दिया गया था और यहां नमाज करने पर रोक लगा दी गई थी। उस दिन की नमाज की अगुआनी फतहपुरी जामा मस्जिद के इमाम ने की थी।

उक्त चारो सस्थाओं ने सयुक्त वक्तव्य में भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा घोषित मस्जिदो को राष्ट्रीत स्मारक घोषित करने के बाद इन इमारतो मे नमाज पर लगाए प्रतिबन्धो का विरोध किया। इन सस्थाओ ने माग की है कि दिल्ली मे इस तरह की ५३ ऐतिहासिक पुरातत्वीय मस्जिदें हैं, जहा उन्हे नमाज करने की छूट मिलनी चाहिए। वे इन सस्थाओ की देख-रेख और सचालन के लिए एक कमेटी बनाना चाहते है। उनका कहना है कि इन मस्जिदों की पुरातत्व विभाग ठीक देखभाल नही करता।

अरुण गुप्त ने अखिल भारतीय रिकार्ड तोड़ा

नई दिल्ली। आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि कुलाची हसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, फेज-१ नई दिल्ली के विद्यार्थी श्री अरुण गुप्त ने अखिल भारतीय हायर सैकेंडरी स्कूल कक्षा १० की परीक्षा मे ९१.४ प्रतिशत अक प्राप्त करके अखिल भारतीय रिकार्ड तोड़ दिया। भारत सरकार ने श्री अरुण गुप्त को गोल्ड मेडल देने का निश्चय किया है।

प्रो० रामसिंह के निधन पर शोक

सतआर्वा आर्य कन्या महाविद्यालय, करौल बाग, नई दिल्ली की ओर से प्रो० रामसिंह जी के निधन पर अत्यन्त शोक अभिव्यक्त किया गया। विद्यालय की प्रबन्धक समिति ने आर्य समाज और इस विद्यालय के प्रति की गई उल्लेखनीय सेवाओं तथा देश, दलित वर्ग और संस्कृत के प्रचार की अद्वितीय सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सनावद में शुद्धि एवं विवाह

आर्यसमाज सडवा जिला पूर्व निमाड़ (म० प्र०) मे दि० ५.६.८३ को श्री रामचन्द्र जी आर्य प्रधान आ० स० की अध्यक्षता में, श्री मनोहर व मोतीलाल मडलोई ईसाई ७४ पुष्प नगर इन्दौर एव राजकुमारी व जोसफ ईसाई ७४ पुष्प नगर इन्दौर दोनो का शुद्धिकरण संस्कार कर दोनों का पाणिग्रहण सस्कार वैदिक पद्धति से समाज के पुरोहित पं० सुखराम आर्य सि० शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ।

महाराष्ट्र में पाकिस्तान बनने से रोका जाए

सतपुड़ा पर्वतमाला के इस्लामीकरण से खतरा . अनुसूचित जातियों की सुविधाएं धर्मान्तरण के बाद रोकी जाएं : शालवाले का वक्तव्य

दिल्ली। महाराष्ट्र राज्य का व्यापक दौरा करने के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे बताया कि महाराष्ट्र में वनवासी क्षेत्रों में मुसलमान लोग १५—१५ की टुकडियो में घर-घर जाकर बनवासी, गिरिजनों, माल, गोण्ड तथा कोरकू जाति के निवासियो को मुसलमान बना रहे हैं। बालेवाडी और चिजोरी में २-२ लाख रुपए की लागत से मस्जिदो का निर्माण भी हो चुका है। सतपुड़ा पर्वतमाला पर इस्लामीकरण का कार्य जोरो पर चलाया जा रहा है।

श्री शालवाले ने गृहमंत्री, भारत सरकार और मुख्यमंत्री महाराष्ट्र सरकार को पत्र लिखकर चेतावनी दी है कि यदि राज्य के मुसलमानों के धर्मान्तरण की इस लहर को न रोका गया तो शीघ्र ही महाराष्ट्र मुस्लिम बहुल प्रान्त बन जाएगा और अकालियो के खालिस्तान की मांग की तरह महाराष्ट्र मे छोटे पाकिस्तान की माग उठ खड़ी होगी।

उन्होने महाराष्ट्र सरकार से माग की कि आदिवासी, भील, जनजातियो एव अनुसूचित वर्ग के लोगों को जा सुविधाए प्राप्त हैं, इन लोगों के इस्लाम धर्म ग्रहण करने के उपरान्त ये सुविधाए तुरन्त बन्द कर देनी चाहिए। उन्होने इस बात पर आश्चर्य और खेद प्रकट किया कि महाराष्ट मे इन लोगो को धर्म परिवर्तन के पश्चात् भी सरकार की उक्त सुविधाओ का लाभ मिल रहा है।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

प्रातः काल में ईश्वर से प्रार्थना

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

भगप्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमा धियमुदवा ददन्न ।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्त. स्याम ॥

वसिष्ठ ऋषि, भगवान् देवता, निचृत् त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर।

शब्दार्थ—[भग] हे भजनीय स्वरूप परमैश्वर्ययुक्त [प्रणेत] (वा) पुरुषार्थ वा सत्याचार के प्रेरक [भग] हे ऐश्वर्यप्रद वा [सत्यराध] उत्तम प्राकृतिक वा सत्य विद्यारूप धन के देने हारे। [भग] हे (सत्याचरण करने हारो को) सकल ऐश्वर्य के दाता परमेश्वर (आप) [न] हमको [इमाम्] इस वर्तमान [धियम्] प्रज्ञा (उत्तम बुद्धि) को [ददत्] दीजिए (और उसकी) [उदव] उत्कृष्टता से रक्षा कीजिए। [भग] हे सर्वसामग्रीप्रद ! [गोभि] उत्तम गाय आदि (वा) [अश्वै] उत्तम घोडे आदि उत्तम पशुओ वा चक्रवर्ती राज्य को [न.] हमारे लिए [प्रजनय] अच्छे प्रकार उत्पन्न कीजिये। [भग] हे सकलैश्वर्ययुक्त [नृभि] उत्तम मनुष्यो (नायको) से [नृवन्त] बहुत उत्तम वीर मनुष्य (पुरुष-स्त्री) वाले [प्रस्याम्] अच्छे प्रकार हो ॥

भावार्थ—जो मनुष्य ईश्वर की आज्ञा, प्रार्थना, ध्यान और उपासना का पहले आचरण करके पुरुषार्थ करते हैं वे धर्मात्मा होकर अच्छे सहायवान् हुए, सकल ऐश्वर्य को प्राप्त करते हैं ॥ (ऋषि दयानन्द ऋग्वेद भाष्य) ॥

अतिरिक्त व्याख्या—इस वेदमन्त्र की प्रेम भावपूर्ण व्याख्या ऋषि दयानन्द अपने अत्युत्तम भक्ति ग्रन्थ 'आर्याभिविनय' मे निम्न प्रकार करते हैं—

हे भगवान् ! परमैश्वर्यवन "भग" ऐश्वर्य के दाता, ससार वा परमार्थ मे आप ही हो। तथा 'भगप्रणेत.' आपके ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य है, अन्य किसी के अधीन नही। आप जिसको चाहो, उसको ऐश्वर्य दे ओ। सो आप कृपा से हम लोगो का दारिद्रय छेदन करके हमको परमैश्वर्य वाले करें, क्योकि ऐश्वर्य के प्रेरक आप ही हो। हे "सत्यराध." भगवान् ! सत्यैश्वर्य की सिद्धि करने वाले आप ही हो, सो आप नित्य ऐश्वर्य हमको दीजिए, तथा जो मोक्ष कहाता है उस सत्य ऐश्वर्य के दाता आपसे भिन्न कोई नही है। हे सत्यभग ! पूर्ण ऐश्वर्य सर्वोत्तम बुद्धि हमको आप दीजिए, जिससे हम लोग आपके गुण और आपकी आज्ञा का अनुष्ठान, ज्ञान इनको यथावत् प्राप्त हो। हमको सत्य बुद्धि, सत्य कर्म, और सत्य गुणो को 'उद्वा' (उदगमय-प्रापय) प्राप्त कराओ, जिससे हम लोग सूक्ष्म से भी सूक्ष्म पदार्थों को यथावत् जानें।

'भग प्रनोजनय' हे सर्वैश्वर्योत्पादक ! हमारे लिये ऐश्वर्य को अच्छे प्रकार से उत्पन्न करो, सर्वोत्तम गाय, घोड़े और मनुष्य इनसे सहित अत्युत्तम ऐश्वर्य हमको सदा के लिए दीजिए। हे सर्वशक्तिमान् ! आपकी कृपा से सब दिन सब लोग उत्तम-उत्तम पुरुष, स्त्री और सन्तान भृत्य वाले हो। आपसे यह हमारी अधिक प्रार्थना है कि कोई मनुष्य हममे दुष्ट और मूर्ख न रहे, न उत्पन्न हो, जिससे हम लोगो की सर्वत्र सत्कीर्ति हो, निन्दा कभी न हो।

वेदों पर दृढ़ आस्था

ले०—सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० न० वि०—

तैत्तिरीय ब्राह्मण मे एक कथा आती है। वेदज्ञाता वेदार्थ अनवरत श्रमी भरद्वाज ऋषि ने तीन जन्म पर्यन्त आजन्म ब्रह्मचर्य धारण कर वेदों का ही गहन स्वाध्याय किया। तीसरे जन्म में जब वह वृद्ध होकर मृत्यु शय्या पर पडे थे, तब इन्द्र ने उनसे पूछा कि यदि मैं तुम्हें चौथा जन्म दे दू तो तुम क्या करोगे ? भरद्वाज ने उत्तर दिया कि चौथा जन्म पाकर भी मैं अखण्ड ब्रह्मचर्य धारण कर वेद का ही स्वाध्याय करूगा।"

तब इन्द्र ने उन्हे तीन विशाल पर्वत दिखाए और प्रत्येक से एक मुट्ठी भर लेकर कहा, "भरद्वाज ! देखो, ये वेद हैं। ये अनन्त हैं। तू तो तीनो जन्मों मे भी इतना-सा पढ पाया है। यह तो अभी किंचिन्मात्र है।"

वेदों की महिमा के बारे मे एक और कथा, कुमारिल भट्ट की है, जिसका वर्णन करना हम यहा आवश्यक समझते हैं। कुमारिल भट्ट बौद्धो पर विजय पाने के लिए उनके बीच जब गुप्त रूप से प्रविष्ट हुए, तब बौद्धो द्वारा वेदो की निन्दा सुनकर उनकी आखो से आसू बहने लगे।' अदूदुवद् वैदिकमेव मार्गं तथागतो जातु कुशाग्रबुद्धि। तदाऽपतन्मे सहसाऽश्रुबिन्दु वच्चाविदु पार्श्व निवासिनो उन्ये॥ (शकर दि० ७।९४-९५) यह देखकर बौद्धो ने उनके वैदिक धर्मावलम्बी होने का अनुमान कर लिया। "विपक्षपाठी बलवान् द्विजाति, प्रत्याददद्दर्शन तस्मदीय। उच्चाटनीय कथमप्युपायनैसादृश स्थापयितु हि योग्य। (शं०-७-९६) यह हमारा रहस्य जानकर हमे हानि पहुचाएगा, अत इसे किसी भी प्रकार मार देना चाहिए। यह सोचकर वे अहिंसा ध्वजी बौद्ध कुमारिल भट्ट को एक ऊंचे महल पर ले गए और उसे धक्का देकर उन्होने नीचे फेंक दिया। "सरमन्थ्य वेत्थं कृतनिश्चयास्ते, ये चाऽपरेऽहिंस न वाद शीला:। व्यपातयीन् उच्चतरात्प्रमत्त मामग्र सौधाद् विनिपात भीरुम्।" तब कुमारिल भट्ट ने कहा, "यदि वेद सच्चे हैं, तो मैं गिरकर भी न मरूं—"पतन् पतन् सौधतलान्यरीरुह यदि प्रमाणं श्रुतयो भवन्ति। जीवेयमस्मिन् पतितोऽस मस्थले मज्जीवने तच्छ्रुति मानता गतिः (श०-७-९८) कुमारिल भट्ट गिर पड़े पर मरे नहीं, किन्तु उनकी एक आख फूट गई। उन्होंने सोचा कि मैंने अपने वाक्य में 'यदि' का प्रयोग किया है, इसी सशयवश मुझे यह हानि पहुंची।" यदीह स देह पद प्रयोगात् व्याजेन शास्त्रश्रवणाच्च हेतोः। ममोच्च देशात् पततोव्यनक्षीत् तदेक चक्षुर्विधिकल्पना सा।" (श०-७-९९) यदि मैं वेद की सत्यता के बारे में सदेह विषयक 'यदि' शब्द का प्रयोग न करता, तो उच्च शिखर से गिराए जाने पर मेरी एक आंख भी न फूटती।

यह है, एक ब्राह्मण की वेदो के प्रति दृढ आस्था, अविचल श्रद्धा। अत. मनु महाराज का यह कथन सत्य ही है, "चातुर्वर्ण्यं त्रयोयोकाश्चत्वारश्चा श्रमाः पृथक्। भूत भव्यं भविष्य च सर्वं वदात् प्रसिध्यति। (मनु०-१२-९७)

चारो वर्ण, तीनो लोक चारों आश्रम भूत वर्तमान और भविष्य की सब व्यवस्थाए वेद द्वारा ही संसार मे प्रचलित होती। अत. मेरा करबद्ध कथन है, सब बैर विरोध मिटाय, गले मिल आर्यजनो ! सबको अपनाइए। त्याग, समर्पण, भावना से पर-सेवा का पाठ सभी को पढ़ाइए। छोड़ कुरीति, कुतर्क, कलह, कलिकाल में एकय की राह दिखाइये। पर वेद को सर्वप्रधान सम्मान दे, तब अजमेर शताब्दी मनाइये।

नहीं चलेगा बहुत दिनो तक यह तुम्हारा धन्धा लोगो !

—प्रकाशवीर 'व्याकुल'

खाओ पीओ उडाओ तफरी कर-कर के नित चन्दा लोगो,
नही चलेगा बहुत दिनो तक यह तुम्हारा धन्धा लोगो
इगलिश फैशन के मतवालो वेदो का प्रचार करोगे
अण्डे, केक, चाय, बिस्कुट खाकर जीवन को गन्दा लोगो ॥
जो करते कुछ कार्य धर्म का, उनको नही ठहरने देते।
काली करतूतें कर-कर के होते न शर्मिन्दा लोगो ॥
नित घटती तादाद तुम्हारी कटती जाती डोर धर्म की,
क्यो बहकाते हो जनता को डाल-डाल कर फन्दा लोगो ॥
सत्य बात कहने वाले का खुलकर नित्य विरोध करो तुम
समझ रहे अपनी ही भाति सारे जग को अन्धा लोगो ॥
खुल जाएगी पोल ढोल की गोल-मोल कब तलक रहेगी ?
मुफ्त किसी की जान जा रही, मारे माल मुकन्दा लोगो ॥
तुमही हो भगवान तुम्हारा दिया हुआ ही सब खाते हैं।
खबरदार बकवास करी जो इस प्रकार आइन्दा लोगो ॥
तुम परखोगे कविहिय को रवि को देख सकेगा उल्लू
चुल्लू भर पानी मे डूबो चला धर्म पर रन्दा लोगो।
खुलकर निन्दा करो कसम है तुम्हें जवानी की-जीवन की।
कवि को नहीं बना पाओगे किन्तु अपना बन्दा लोगो ॥
ये कविता कवि सम्मेलन मे पोल तुम्हारी खोल सकेगी
भारी ऋण ऋषि दयानन्द का कितने आप दहन्दा लोगो ॥

बोध-कथा

एकता का अभाव

एक बार अकबर ने अपने राजदरबार मे सवाल किया कि इस दुनियां मे भेड़-बकरियो, घोड़े-गधो के समूह तो दिखाई देते हैं, परन्तु कुत्तो का समूह दिखाई नही देता ? कोई दरबारी सवाल का ठीक जवाब नहीं दे सका। अकबर ने अपने हाजिर-जवाब मन्त्री बीरबल से भी यही प्रश्न किया, परन्तु बीरबल ने उत्तर देने के लिए रात भर की मोहलत मागी। शाम के समय ही बीरबल ने एक सुरक्षित कमरे मे भेड़ें उनके लिए हरी घास और पानी रखवा दिया, एक अन्य कमरे में कुत्ते तथा उनकी खुराक रखवा दी।

अगले दिन सुबह ही मन्त्री बीरबल बादशाह अकबर को लेकर उन कमरों के पास पहुंचे। भेड़ो का कमरा जब खोला गया तब उन्होंने देखा कि भेड़ों का सारा चारा, घास पानी खत्म हो गया था, वे एक-दूसरे से लिपटी इकट्ठी मजे से सो रही थीं। इसके बाद जब कुत्तो का कमरा खोला गया तब वहा बड़ा खौफनाक नजारा देखने को मिला। उनका खाना-पानी पहले दिन की तरह ज्यों का त्यो रखा हुआ था और सब कुत्ते बुरी तरह घायल और लहू-लुहान हो गए थे। एक कुत्ता ज्योंही खाने की ओर बढ़ता तो दूसरे कुत्ते उस पर गुर्राते और हमला कर देते। इस तरह सारी रात कुत्तों में घमासान लड़ाई होती रही, सब भूखे-प्यासे रहे, सब आपस मे लड़ते रहे। बीरबल ने अकबर बादशाह को कहा—"ससार के सब पक्षी-पशु आपस में मेल-मिलाप से रह जाते हैं—परन्तु कुत्ते कभी मिलकर नहीं रहते। इसी कारण कुत्तों का कभी समूह नहीं देखा जाता। न वे एक साथ मिलकर रह पाते हैं और न इकट्ठे होकर खा-पी सकते हैं।"

—नरेन्द्र

हमें गौ और अन्न से भरपूर करें !

ओ३म् यस्याश्चतस्र प्रदिश: पृथिव्या यस्यामन्न कृष्टय सबभूवु ।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु ।। अथर्व १२, १,४,

जिस पृथ्वी मे चार दिशाएं हैं, जिसमें खेती और अन्न होता है, जो प्राणवान् जगत् का सहारा है, वह पृथ्वी हमें गौ और अन्य से भरपूर करें।

ओ३म्
आर्य सन्देश

शापादपि शरादपि !

आजकल अक्सर ट्रको और वाहनो के पीछे लिखा होता है कि बुरी नजर वाले का मुह काला। हमारे देश मे बुरी नजर और बुरा ग्रह टालने के लिए तरह-तरह के अनुष्ठान एव व्यर्थ के कार्य किए जाते हैं। हमे जीवन मे यह कटु तथ्य अगीकार कर लेना होगा कि निरन्तर सावधान सन्नद्ध और सशक्त व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को न तो बुरी नजर तग कर सकती है और न ही अनिष्ट ग्रह ही उसका कुछ बिगाड सकते हैं। आज हमें अपने वर्तमान और भविष्य के लिए केवल अपने साधनो, शक्ति एव युक्ति व्यवस्था पर आश्रित रहना चाहिए। यदि भारत आर्थिक व्यावसायिक, सैनिक दृष्टि से पूरी तरह स्वावलम्बी, शक्तिशाली और महान बन जाए तो उसे चुनौती देने की हिम्मत किसी की नही हो सकेगी। पिछले दिनो दिल्ली स्थित अमेरिकी राजदूत हैरी जी बार्न्स ने इस प्रकार की युक्ति कही थी कि जिस प्रकार प्यूटोरिको के लोग अमेरिकी उपनिवेश-वाद के विरुद्ध सघर्षरत हैं, तो इसी प्रकार खालिस्तान का आन्दोलन प्रचलित है। अमेरिकी राजदूत की इस उक्ति से ध्वनित होता है कि अमेरिका भारत मे कथित खालिस्तान आन्दोलन की पीठ पर है।

अमेरिकी राजदूत की उक्ति ऐसे नाजुक समय मे हुई है, जब अमेरिकी विदेश मन्त्री भारत से सम्बन्ध सुधारने के लिए जल्दी ही भारत आने वाले हैं। ऐसे नाजुक समय मे अमेरिकी राजदूत की उक्ति सम्भवत: एक प्रमुख एशियाई देश को नीचा दिखाने का प्रयत्न हो सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे भारत द्वारा गुटनिरपेक्ष राष्ट्रो का नेतृत्व पसन्द नहीं आया है। अनेक वर्षों से भारत के विरोध के बावजूद अमेरिका हमारे पड़ोसी देशो को नवीनतम शस्त्रास्त्र और विमान देता रहा है। उसकी ओर से बार-बार कहा जाता रहा है कि इन शस्त्रास्त्रो एव विमानो का प्रयोग साम्यवाद की बढती शक्ति के विरुद्ध होगा, न कि भारत के विरुद्ध। इस बार भी ऐसे ही वचन दिए जा रहे हैं, परन्तु हमेशा की तरह ये शस्त्रास्त्र और विमान कम्युनिज्म के विरुद्ध नही, प्रत्युत भारत के विरुद्ध ही प्रयुक्त किए जाएगे। स्पष्ट है कि विश्व की महाशक्तिया नही चाहती कि भारत आर्थिक, सैनिक और राजनीतिक दृष्टि से महान बने। उनका बस चले तो वे भारत को विघटित और टुकडे-टुकडे करना चाहते हैं। अपनी इसी दुरभिसन्धि के कारण उग्रपन्थियो की एक अस्तित्वहीन खालिस्तान की माग को उछालना अमेरिकी घृणित इरादो की ओर इशारा करता है।

हमे यह कटु तथ्य हृदयगम करना होगा कि यदि हम राष्ट्रो की बिरादरी मे स्वाभिमान और गौरव के साथ जीना चाहते हैं तो हमें बडे राष्ट्रों की मनुहार और खुशामद छोड़कर स्वावलम्बन और अपने साधनो एव असख्य मानवशक्ति का सहारा लेना होगा। चांग काई शेक के बाद यदि चीन अपने साधनो और मानवशक्ति के आधार पर शक्तिशाली और स्वावलम्बी बना तो उसका सम्मान विश्व राष्ट्रो के समाज मे सम्भव हो सका। अमेरिकी राजदूत की उक्ति के विरुद्ध राष्ट्रीय रोष का प्रदर्शन बृहस्पति-वार १६ जून के दिन दिल्ली मे देखने को मिला। एक समय था जब तपस्वी साधको की वाणी से ही प्रतिस्पर्द्धी समाप्त हो जाता था, आज तो शक्ति और साधनो का समय है, हमारी वाणी का सम्मान उसी समय होगा, जब हमारी बाहुओं में बल होगा। जिस दिन हम अपनी आन्तरिक समस्याओ को अपनी शक्ति और सामर्थ्य से सुलझा लेंगे और हमे अन्न, तकनीक और दूसरे क्षेत्रो मे विदेशी शक्ति का सहारा नहीं जोडना होगा, उस समय हमारी वाणी भी शाप के समान बलवती होगी और हमारे बाहू भी शरो, बाणो या हथियारों की तरह सक्षम हो सकेंगे। गुटनिरपेक्ष और तटस्थता की नीति ठीक है। परन्तु उसके साथ हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे दूसरो का द्वार खटखटाने के स्थान पर अपने साधनों, शक्ति और अपार मानवशक्ति को सगठित और तैयार करना होगा। जिस दिन हम ऐसी स्थिति में पहुंच जाएंगे, तब विदेशी छोटे या बडे राष्ट्र हमारे आन्तरिक मामलों में कुछ बोल न सकेंगे और हम 'शापादपि शरादपि' अपनी कड़कती वाणी और बलशाली बाहुओं से अपनी समस्या स्वत: सुलझा सकेंगे।

ऋषियों के प्रश्नोत्तर : उपनिषद् का तत्त्वज्ञान

—डा० भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़

एक बार महर्षि पिप्पलाद के आश्रम मे ब्रह्म के अन्वेषण मे तत्पर, ब्रह्मनिष्ठ तत्व-जिज्ञासु भारद्वाज के पुत्र सुकेश, शिव के पुत्र सत्यकाम, सौर्य के पुत्र गार्ग्य, अश्वल के पुत्र कौशल्य, भृगु के पुत्र वैदर्भि तथा कत्य के पुत्र कात्यायन आदि छह पुरुष पहुंचे। वे सभी समित्पाणि होकर गुरु सेवा में उपस्थित हुए थे। जब ये लोग आश्रम मे आचार्य पिप्पलाद के निकट पहुचे और उन्होंने अपना अभिप्राय व्यक्त किया, तब ऋषि ने उन्हे एक वर्ष तक आश्रम मे ही तपस्यापूर्वक ब्रह्मचर्य का सेवन करते हुए श्रद्धापूर्वक रहने का आदेश दिया। साथ ही यह भी कह दिया कि इसके पश्चात् वे यथेच्छ प्रश्न पूछ सकेंगे और यदि उनके प्रश्नो का उत्तर देना उनके द्वारा शक्य होगा तो वह अवश्य स्पष्ट रूप से प्रश्नों की व्याख्या करेंगे।

इस प्रकार ऋषि के आश्रम मे वर्ष पर्यन्त तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धापूर्वक रहने के अनन्तर कत्य के पुत्र कबधी ने आचार्य के निकट आकर पूछा—हे भगवन्, कृपया यह बताए कि ये प्रजाए किससे उत्पन्न होती हैं। महर्षि ने उत्तर मे कहा—निश्चय ही प्रजापति परमात्मा जब ससार को उत्पन्न करने की इच्छा करता है, तो वह स्वय तप करता है। उसी तप से रयि (प्रकृति) और प्राण (शक्ति) के जोड़े को उत्पन्न करता है। रयि और प्राण ही उसकी विविध रूपा प्रजा को उत्पन्न करते हैं। प्राण और रयि किन-किन पदार्थों और रूपो मे दृष्टिगोचर होते हैं। इसकी व्याख्या करते हुए आगे ऋषि ने कहा—आदित्य ही प्राण और चन्द्रमा ही रयि है। ससार मे जो कुछ व्यक्त और अव्यक्त है, उनमे सूक्ष्म और अव्यक्त को ही रयि (प्रकृति) कहना चाहिए।

अब आदित्य रूपी प्राण का ससार के निर्माण और विकास मे जो योग है, उसे स्पष्ट करते हैं—प्रथम आदित्य पूर्व दिशा से प्रवेश करता है और इस दिशा मे रहने वाले प्राणों को स्वरश्मियो मे धारण करता है। इसी प्रकार प्राणो का आधारभूत सूर्य क्रमश दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊपर और नीचे सर्वत्र—सब दिशाओ को प्रकाशित करता है और इन समस्त दिशाओ मे अपनी किरणो को फैलाकर भूत पदार्थों और प्राणियो मे (जड चेतन जगत् मे) वह अग्निरूपी आदित्य ही वैश्वानर नाम धारण करता हुआ विभिन्न रूपो मे अपनी प्राणाग्नि को व्यक्त करता उदय होता है। इस वैश्वानर सूर्य की स्तुति मे इस प्रकार कहा गया है—विश्वरूप, किरणो वाला, प्रकाशयुक्त, सबका आश्रय यह एकमात्र ज्योतिरूप, प्रकाशमान हजारो किरणो वाला यह सूर्य अनेक प्रकार से वर्तमान होता हुआ, प्रजा का प्राणरूप उदय हो रहा है।

पुन संवत्सर को प्रजापति रूप मे वर्णित करते हुए आचार्य ने कहा— निश्चय ही संवत्सर (वर्ष) की प्रजापति है। उसके दक्षिण और उत्तर दो अयन (भाग) हैं। जो लोग सकाम कर्म (इष्ट और आपूर्त—यज्ञ एव कूप-तडाग, आदि का निर्माण) करते हैं वे चन्द्रलोक को प्राप्त होते हैं परन्तु सुखरूपी चन्द्रलोक मे रहकर उन्हे पुन ससार मे लौटना पड़ता है। इसे ही ससार मे दक्षिणायन तथा पितृयाण कहा गया है। प्रजा कामी लोगो का यह मार्ग है, जो सकाम भाव से किए गए नाना लोकोपकारी कार्यों तथा यज्ञादि द्वारा सिद्ध होता है परन्तु यह मार्ग केवल लौकिक सुखो को ही प्रदान कर सकता है। इसे ही शास्त्रो मे पितृयान कहा है। फलोपभोग के उपरान्त पुन जन्म लेना ही इस मार्ग की नियति है। दक्षिणायन मार्ग का वर्णन करने के पश्चात् आचार्य ने उत्तरायण का वर्णन किया—उत्तरायण ही देव मार्ग कहलाता है। इस साधना को स्वीकार करता तप और ब्रह्मचर्य का सेवन करता हुआ ज्ञानपूर्वक आत्मा का अनुसधान करता है और उस आत्मा (परमात्मतत्त्व) को जानकर आदित्य लोक को जीत लेता है। इस प्रकार उत्तरायण मार्ग का यह साधक उस प्राण तत्त्व के आश्रयभूत ईश्वर को प्राप्त करता है। वहा से पुन लौटकर नही आता। इसे ही निवृत्ति मार्ग कहा गया है।

अथर्ववेद के मन्त्र (९-५-९) मे इस सवत्सर रूपी प्रजापति का वर्णन इस रूप में मिलता है—यह संवत्सर पाच ऋतु रूपी पचपादात्मक, द्वादशाकृति (बारह महीनो वाला) तथा द्युलोक के बीच मे जल वाला है। यह सात चक्रो (सप्त लोक-भू, भुव:, स्व, मह, जन, सत्य) तथा छह अरो (ऋतु) से जडा हुआ है। इसी प्रजापति को मास के रूप मे वर्णित किया। मास ही प्रजापति है। इसका कृष्ण पक्ष ही रयि और शुक्ल पक्ष ही प्राण है। इसीलिए विद्वान लोग शुक्ल पक्ष मे नाना प्रकार की याज्ञिक दृष्टियां करते हैं और अन्य विद्वान ऋषि कृष्ण पक्ष मे भी स्व साधना मे सलग्न रहते है।

अहोरात्र (दिन और रात्रि) को भी प्रजापति करते हैं। दिन तो प्राण है और रात्रि ही रयि है। अन्न ही प्रजापति है, उससे ही वीर्य होता है और वीर्य से ही ये प्रजाए उत्पन्न होती हैं। सो जो गृहस्थ प्रजापति व्रत का पालन करते है वे पुत्र-पुत्री रूप जोडे को उत्पन्न करते हुए भी तप और ब्रह्मचर्य आदि साधनो का सम्यक पालन करते हैं। इस तप और ब्रह्मचर्य पालन मे ही सत्यरूपी ईश्वर प्रतिष्ठित है और इनका साधक ही ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है। वस्तुत ऐसे ही साधक निर्मल ब्रह्मलोक को प्राप्त करते हैं, जिनमे कुटिलता, असत्य तथा छल-कपट आदि बुराइया नही हैं। इस प्रकार प्रथम प्रश्न के उत्तर मे आचार्य ने प्राण और रयि की व्याख्या करते हुए आदित्य, सवत्सर अहोरात्र आदि की व्याख्या की।

वेद और विज्ञान

(गतांक से आगे)

काल यानी समय पानी की धारा की भान्ति अट्ट बहता है, उसमे भूत वर्तमान भविष्य की रेखाए खीचना कठिन है, इसी लिए वेदो मे एक ऐसा दिन रखा गया है, जिससे वे वर्ष को छह-छह महीनो के दो भागो मे बाट दें। उस दिन का नाम है विषुवान्। गोपथब्राह्मण ने लिखा है—आत्मा वै सवत्सरस्य विषुवान अगानि मासो। यत्र वा आत्मा तदगानि यदगानि तदाश्रया। कितना सूक्ष्म विज्ञान है। सूर्य के उदय-अस्त का विज्ञान आज कल के वैज्ञानिक कहते हैं कि प्राचीन ऋषियो को सूर्य के उदय अस्त का ज्ञान नहीं था। गोपथ ब्राह्मण लिखता है - स वा एष न कदाचनास्तयेति नोदेति। सूर्य न कभी उदय होता है न अस्त होता है। वह तो सदा एक-सा ही बना रहता है। जब पृथ्वी उसके सामने आ जाती है रात्रि हो जाती है जब पृथ्वी सामने से हट जाती है दिन हो जाता है। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का प्राचीन ऋषियो को ज्ञान था भास्कराचार्य कहते हैं—आकृष्ट शक्ति मही तया यत् स्वस्थ गुरु. स्वाभिमुख स्वशक्तया आकृष्यते तत् पततीतिभाति सम समन्तात्क्व पतत्विय रव। अर्थात कोई भी पदार्थ ऊपर की ओर फेंकने से वह नीचे की ओर गिरता है इससे सिद्ध है कि पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है। लोग इसका आविष्कारक न्यूटन को मानते हैं, परन्तु न्यूटन से वर्षों पूर्व यह ज्ञान वेदो के द्वारा ऋषियो को प्राप्त हो चुका था। ज्वारभाटे के सम्बन्ध मे विष्णुपुरान मे लिखा है—स्थालीस्थमग्नि सयोगादुद्रे की सलिल यथा। तथेन्दुवृद्धौ सलिलमभोधौ मुनि सत्तमा। अग्नि पर थाली मे जल रखने से जैसे वह उमड पडता है उसी तरह चन्द्रमा के आकर्षण से ज्वारभाटा होता है।

रेखागणित, बीजगणित, गिनती, पहाड़े सब प्रकार का गणित भी वेदो से ही प्रादुर्भूत हुआ है। मोनियर विलियम्स लिखते हैं बीजगणित तथा रेखागणित का आविष्कार प्राचीन आर्यों ने ही किया था। हिन्दुओ को ही श्रेय है कि उन्होने बीजगणित और रेखागणित का आविष्कार तथा नक्षत्र विज्ञान मे इसका प्रयोग किया था। (इण्डियन विजडम पृष्ठ १८५)
यजुर्वेद १७।२ का मन्त्र है—

ओ इमा मे अग्न इष्टका धेनव मन्त्वेका च दश च दश च शत च शत च महस्र च सहस्र चायुत चायुत च नियुत च नियुत च प्रयुत च न्यबुर्द च समुद्रश्च मध्य चान्तश्च परार्धश्च मे अग्न इष्टका स धेनव सन्तु अमुन्नास्मिन च लोको यहा इकाई से लेकर परार्ध तक की गणना का पूरा वर्णन है।

हमारे वेदो मे अग्नि, वायु, जल का भी गहन ज्ञान है। अग्नि का तो ऋग्वेद के प्रथम सूक्त मे ही बड़ा सूक्ष्म वर्णन है।

ओमग्निमीले पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विज होतार रत्नधातमम्। अग्नि पुरोहित है। कोई आवश्यक कार्य अग्नि के बिना नही हो सकता। वह रत्नधातमम् है सारे कल-कारखाने अग्नि से ही चलते हैं। सारी दौलत अग्नि के द्वारा ही उत्पन्न होती है। वायुचक्र मे गति उत्पन्न करना, पानी बरसाना सब अग्नि के द्वारा ही सभव है। अग्निविद्या के द्वारा सूर्यताप उत्पन्न करके वायुचक्र में अनुकूल गति उत्पन्न कर देना अग्निविद्या का आश्चर्यजनक चमत्कार है। ओ अग्नि दूत वणीमहे। अग्नि को दूत बनाकर देवताओ के पास भेजा जाता है। देवता कौन वायु भी देवता है। अग्नि को दूत बनाकर राजा वायु के पास भेजकर पानी बरसाने का सूक्ष्म ज्ञान वेदो में वर्णित है।

वेदो मे इन्द्र देवता का वर्णन है। इन्द्र वर्षा करता है। उसे मरुत्सखा भी लिखा है। अग्नि दूत बनाकर जब वायु को प्रेरणा करता है तब वह इन्द्र के द्वारा वृष्टि कराता है। इन्द्र? कौन सूर्य, वायु का वणन आवात वाहि भेषज। वायु को स्वास्थ्य लाने के लिए आवाहन किया जाता है। वायु दो प्रकार की है। एक बाह्य ब्रह्माण्ड की एक हमारे अन्तर्जगत, ब्रह्माण्ड मे ४६ प्रकार के वायु के सूक्ष्म भेद बताए है। अन्तर्जगत मे भी प्राण, अपान व्यान, समान, उदान ये पाच प्राण तथा नाग, कर्म, ककल, देवदत्त और धनजय इन उपप्राणो के सूक्ष्म भेदो का वर्णन है। इन प्राणायाम के द्वारा शरीर की उसी प्रकार से शुद्धि हो जाती है, जैसी अग्नि मे धातु जलने से शुद्ध होती है वैसे ही प्राणायाम से अन्त शरीर निर्मल होकर दीर्घायुष्य और स्वास्थ्य प्रदान करता है।

ग्रहो की चाल जानने के लिए उनके पास वेधशालाए थी। जहा वेधयन्त्र और तुरीय यन्त्र होते थे। उन्हें दूरबीन कहा जाता था। कपास का सिद्धान्त चुम्बक की सुई पर आधारित है। वैशेषिक दर्शन ५।१।१५ मे कणाद मुनि लिखते हैं कि—मणिगमन सूच्याभिसर्पण मदृष्ट कारणम् चम्बक की सुई की ओर लोहा क्यो खिचता है इसका कारण अदृष्ट है हस्तलिखित शिल्प सहिता जो अहिलपुर गुजरात के जैन पुस्तकालय मे है उसमे ध्रुव मत्स्य यन्त्र बनाने का तरीका लिखा है। उसी सहिता मे थर्मामीटर और बैटोमीटर बनाने की विधिया भी लिखी हैं। वहा लिखा है कि "पारदाम्बुज सूत्राणि शुल्क तैल जलानि च। बीजानिपासवस्तेषु। पारा, सूत, जल और तेल के योग से यह मन्त्र बनता है। धूपघडी, जलघड़ी बालुकाघडी का भी निर्माण वेदों के आधार पर कर लिया था। ज्योतिष के ग्रन्थो में तो और भी अनेक प्रकार के यत्रों का वर्णन है।

तोपयंत्र कपालार्ध मेयूर नर वानर.
ससूत्ररेणुगर्भैश्च सम्यक् काले प्रसाधयेत ।।

इस सब यन्त्रो से समय जाना जाता है। एक स्वयवह नामक यन्त्र था जो गर्मी या सर्दी पाकर स्वय ही चलने लगता था। इसका वर्णन सिद्धान्त शिरोमणि में किया गया है—
तुगबीज समायुक्त गोलयंत्र प्रसाधयेत गोप्यमेतत् प्रकाशोक्तं सर्वगम्यं भवेदिह ।।

वेदो मे विमान-निर्माण के वर्णन हैं। विमानशब्द स्वय ही विज्ञान का दिग्दर्शन कर रहा है विस्यान पक्षी की तरह से आकाश मे उड़ने वाला यान—सवारी ओं वेदा यो वीना पदमन्तरिक्षेण पतताम् वेदनाव: समुद्रिय.।

जो पक्षियो की अन्तरिक्ष में उड़ने की कला को बारीकी से समझता है वह विमानो के निर्माण की कला को समझ सकता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादियास्य भूमिका में नौविमानाद विद्याविषय मे ऋग्वेद के अ० १ अ० ८ म० ३-४ को उल्लिखित करते हुए बताया है कि मनुष्य अपनी व्यापारादि की उन्नति के लिए नौका, विमान आदि का निर्माण करें।

सुशीला देवी विद्यालंकृता

ओ तुग्रोह भुज्युमश्विनोदमेघे रयिं न कश्चिन् मयूरवानवाहा.। तमूहथुनौभि रात्मन्वतीभि अन्तरिक्षप्रदि स्योदकाभि.।
तिस्र. क्षपस्त्रिरहातिवर्जाद्भि:नासत्या भुज्यु रूहथु.
पतगै । समुद्रस्य, धन्वन्मन्द्रिस्यपम् त्रिभीरथै. शतपद्रि षडश्वै.।।

इस मत्र मे भूमि पर चलने वाली समुद्र मे चलने वाले तथा अन्तरिक्ष मे चलने वाली तीन प्रकार के वाहनो—का वर्णन किया गया है। भास्करा चार्य के यत्र सर्वस्व मे नाना प्रकार के विमानो के निर्माण का वर्णन है। इस पर गभीरता से खोज की जाए तो चमत्कारी, परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इस पर पह रिश्चन्द्र विद्यालकार बम्बई वाले काफी काम कर रह हैं। राजा रामचन्द्र दल-बल के साथ रावण का सहार करके अयोध्या लौटे तो पुष्पक विमान मे ही लौटे थे। जब हम बचपन मे पुष्पक विमान की चर्चा करते थे, तो पश्चिमी वैज्ञानिक हसते थे। आज विमान बना लिए, तो प्राचीन सत्यो का कपाल कल्पित कहते हैं। हमारे प्राचीन काल मे वेदो के आधार पर इतनी वैज्ञानिक उन्नति थी कि ग्रह-उपग्रह मे भी आना जाना चलता था। नल नील ने समुद्र पर पुल बाधा। कितने बड़े इजीनियर होंगे वे दोनो। इन्द्रप्रस्थ मे मय नामके इजानियर ने ऐसे २ वास्तुकला के चमत्कार दिखाय थे कि जब दुर्योधन अपन भाइयो क साथ वहां आये तो जहां जमीन है वहा पर पाना समझकर कपड़े पावो से ऊचे करके चलन लगे। जहां पानी था उसे जमीन समझकर उसमे भीग गए। जहा दीवार नही हैं वहां दीवार समझकर चले, तो गिर गय। जहा दीवार थी, वहां खाली जगह समझकर सिर फोड़ लिया। द्रौपदी अपनी खिड़की से यह देखकर हंस पड़ी और कह दिया कि अधे के अधा ही हुआ। जिसके परिणाम स्वरूप इतना बड़ा महाभारत का युद्ध हो गया। हमारा वेद विज्ञान का अमर कोश है। वहां तो ज्ञान विज्ञान के सूत्र बिखरे पड़े हैं। उन सूत्रों को समझने वाला चाहिए। ज्ञान के सूत्रों को जानो और फिर सूक्ष्म सूत्र यो विज्ञात्—सूत्रों के सूत्र को जानो तभी जीवन की पूर्णता होता है। आक्रमण कारियों मे हमारे ज्ञान के अमर कोश बड़े २ पुस्तकालय जला दिए। अमूल्य निधियां नष्ट हो गईं। फिर वेदों के ऊपर कोई काम नही हो रहा। वेदों के अर्थों के अनर्थ कराये गए अग्रेजों के द्वारा। धन्य है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती, जिसने फिर से वेदो के ज्ञान का डका ससार मे बजवा दिया। बताया कि भारतीयों, आखें खोलकर देखो तुम्हारी गुदड़ी में क्या-क्या लाल छिपे हुए हैं। यह ऋषि दयानन्द का ही, चमत्कार था कि हमने अंगड़ाई ली। आत्मगौरव जगा। फिर से कुछ अपने इतिहास को समझने का प्रयास आरम्भ किया। दिल्ली की लोहे की लाट जिसे देखकर संसार भर के इजीनियर हैरान हैं। वे समझ नहीं पाते कि भारतीय वैज्ञानिको ने किन-किन धातुओ. का मिश्रण कर वह लोहस्तभ तैयार किया था कि आजतक इसमे जग नही लगा। इतनी सर्दी, गर्मी, वर्षा के झटके सहे। हजारो वर्षो मे अनेक भूकम्प आये, परन्तु लोहस्तम्भ को हिला न सके। यह शान के साथ मस्तक ऊचा करके भारत के वैज्ञानिको की अमरगौरव गाथा कहता हुआ आज के वैज्ञानिको को चुनौती दे रहा है कि आओ मुझसे टकराकर तो देखो। अजन्ता, एलोरा की गुफाए, चित्तौड़ का विजय स्तम्भ उदयपुर की अगाध झील मे महल, कोणार्क का सूर्य मन्दिर, दिल्ली, जयपुर और काशी के जन्तर-मन्तर, हजारो पर्वतीय दुर्ग इन सबमे वैदिक वैज्ञानिको की अनूठी कारीगरी झलक रही है। आगरा का ताजमहल जिसे शाहजहा का बनाया हुआ बताते हैं वह भी भारतीय वास्तुकला विशारदों बनाया हुआ है, शाह जहा का नही। डा० ओक की पुस्तक पढ़िए। इतिहास की १४ भूलें। उन्होने सप्रमाण सिद्ध किया है कि यह प्राचीन महल था। जिसे शाहजहा ने ताजमहल क नाम स मशहूर कर दिया। मैंने स्वयं बम्बई में उनका भाषण सुना था। उन्होने ठोस प्रमाण प्रस्तुत करते हुए बताया था कि यह हिन्दू कारीगरी है, मुस्लिम नहीं। यह मेरे देश का दुर्भाग्य है कि जिससे भारत के अपना मस्तक ससार म शान क साथ ऊचा करके खड़ा हो सकता है उन वेदो की भारत मे सक्यूलर स्टट या धर्मनिरपेक्ष राज्य के नाम पर उपेक्षा हो रही है। वेदा: वै अनन्ता:। वेदों में अनन्त ज्ञान है। उसमे जहा विश्व ब्रह्माण्ड के रहस्यो का खोला गया है, वहीं मनुष्य को अन्तरात्मा का ज्ञान कराकर आत्मा-परमात्मा के मिलन की प्रक्रिया का भी दिग्दर्शन है। विश्व ब्रह्माण्ड के ज्ञान के लिए आवश्यकता है प्रयोग की तथा आत्मा परमात्मा के मिलन के लिये आवश्यकता है योग की।

बरदाम, १६, ४७।६ [illegible], सिकन्दराबाद

सुखी जीवन का एकमात्र मार्ग : सन्तोष

मानव जीवन को सफल और सुखमय बनाने के लिए योगदर्शन के दूसरे अध्याय मे अष्टांग योग का वर्णन है—

यम नियम आसन प्रत्याहार धारणा ध्यान

समाधि—इसमे 'यम' के अन्तगत "अहिंसा सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह—इन पाच साधनो का और 'नियम' के अन्तर्गत भी पांच साधन बताये गये हैं जो इस प्रकार हैं—

शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर-प्रणिधान

सामान्य शब्दों मे पाचों 'यम' सामाजिक व्यवहार के और पाचो 'नियम' व्यक्तिगत जीवन को श्रेष्ठ बनाने के साधन हैं। इस लेख में दूसरे नियम 'सतोष' का विवरण दिया गया है—'सन्तोष' का अभिप्राय है कि जीवन यात्रा के जो अपेक्षित साधन प्राप्त हैं, उन्ही मे सतुष्ट रहना और अपना कार्य चलाना। लोभ आदि मे प्रवृत्त हो आवश्यकता से अधिक धन व वस्तु सग्रह मे प्रवृत्त न होना। इस प्रकार के सन्तोष पालन का लाभ क्या होता है, योगदर्शन के २।४२ सूत्र मे कहा गया है—

सन्तोषादनुत्तम सुख लाभ ॥

सन्तोष से 'अनुत्तम' अर्थात् जिससे उत्तम श्रेष्ठ कोई न हो, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ ऐसे सुख की प्राप्ति सन्तोष से ही हो सकती है। ऋग्वेद १।३१।१४ मंत्र में प्रभु से प्रार्थना की गई है—हे प्रकाशस्वरूप प्रभो, जो चाहने योग्य सबसे अच्छा धन है, वह तू स्वय ही अत्यन्त योग्य, प्रशसनीय व्यक्ति को सम्मान सहित देता है। तू दुर्बल का निश्चित चिताने—ध्यान रखने वाला पिता रक्षक कहा जाता है। तू उत्तम ज्ञानी पवित्रात्मा को उत्तम अपना उपदेश अच्छी तरह प्रकट कर देता है।

तीन एषणाएं

बृहदारण्यक उपनिषद् मे याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवाद में ऋषि कहते हैं "मनुष्य की तीन इच्छायें कामनायें होती हैं—

(१) पुत्रैषणा सन्तान की इच्छा

(२) 'वित्तैषणा' धन-सम्पत्ति की लालसा,

(३) लोकैषणा सासारिक मान-बड़ाई की कामना। इसी प्रसंग में बृहदारण्यक उप. ४।४।२३ और ४।४।३३ में ऋषि कहते हैं —विद्वान् के धन की महिमा यही है कि वह अनावश्यक रूप से जहां बढ़ता नहीं, वहां आवश्यक मात्रा से कम भी नहीं होता। पर सर्वाधिक ध्यान रखने की बात यह है कि धन प्राप्ति के बाद पापकर्म मे लिप्त न हो, वही वरण करने योग्य स्थायी धन है।" बृहदारण्यक के इसी श्लोक से पहले ४।४।२२ में ऋषि कहते हैं कि—

"विद्वान् वेद के प्रवचन, यज्ञ, दान, तप द्वारा इस धन के स्वरूप को जानना चाहते हैं। जो इसे जान लेता है, वह 'मुनि' अर्थात् अपनी सतत बुद्धिशील इच्छाऐषणा समूह पर संयम कर लेता है।

उत्तम धन के सात अंग

श्रेष्ठ और उत्तम धन क्या है—नीतिकार कहते हैं :—

उत्थान सयमो दाक्ष्यमप्रमादो धृति स्मृति । समीक्ष्य च समारम्भो विद्धि मूल धनस्य तु ॥

१. उद्योग-परिश्रम २. सयमित जीवन ३. दक्षता व्यावहारिक बुद्धि ४. प्रमाद-रहित जीवन ५. धैर्य ६. उत्तम गुणों का स्मरण ७ अच्छी प्रकार सोच-समझकर किसी कार्य का प्रारम्भ।

नीतिकार यह भी कहते हैं—

'अर्थार्थी यानि कष्टानि मूढोऽय कुरुते जन । शताशेनापि मोक्षार्थी तानि चेन्मोक्ष माप्नुयात् ॥

अर्थानामर्जने दु ख अर्जिताना च रक्षणे। आये दु ख व्यये दु ख धिगर्था. कष्ट सश्रया' ॥

अर्थात् अर्थ-धन का लोभी मूर्ख धन प्राप्ति के लिए जो कष्ट करता है, उसका सौवा भाग भी यदि मोक्ष के लिए उसे प्राप्त कर सकता है। धन ऐसा पदार्थ है, जिसके अर्जन मे दु ख, अर्जित धन की रक्षा मे दु.ख उसकी प्राप्ति मे दु ख और उसके व्यय मे दु ख, सचमुच धन कष्ट का भडार है।

ययाति का पुत्र को उपदेश

महाभारत की एक कथा है। राजा ययाति बडा अर्थ लोभी और समस्त जीवन अर्थ तृष्णा मे फसा रहा। मृत्यु काल मे जब यमदूत उसे लेने आए, तब भी राज्य त्याग के लिये तैयार नही। यमराज से अत्यन्त खुशामद कर उसे कहा गया कि यदि वह अपने सातो पुत्रो की आयु उनसे मागकर ले ले, तब यमदूत पुत्रो को यमलोक ले जा कर खानापूरी कर लेंगे। ययाति की यह बात यमराज ने मान ली। छह पुत्रो की आयु खा जाने के बाद भी जब उसकी अर्थ-लिप्सा और तृष्णा समाप्त नही हुई और यमदूत सातवें पुत्र 'पुरु' को लेने आये, तब राजा ययाति कहता है —

' यादुर स्त्यज्या योनि जीर्यति जीर्यताम् । ता तृष्णा सत्यजन् प्राज्ञ सुखेनाभिपूर्यते ॥

अर्थात् यह बडी कठिनता से छोडी जाती है, शरीर के जीर्ण-शीर्ण होने पर भी यह जीर्ण नही होती। इसी तृष्णा को छोड-कर ही बुद्धिमान् सुख से आपूरित हो जाता है।

कबीर के शब्दों में

तृष्णा सींची न बुझै, दिन-दिन बढती जाइ
जवासा के रूप ज्यू पाणि मेहां कुम्हलाइ ॥
(जवासा-आक)

तृष्णा कभी पूरी नहीं होती

संस्कृत के एक कवि ने इस तृष्णा का यह भावग्राही चित्र खींचा है—

इच्छति शती सहस्र ससहस्र
कोटि मीहतेकर्तु म् ।
कटि युतोऽपि नृपत्वं नृपोऽपि
सत चक्र वर्तित्वम् ।
चक्रधरोऽपि सुरत्व सुरोऽपि
सुरराज्य मीहते कर्तु म् ।
सुरतमोऽप्यूर्ध्वगति तथापि
न निवर्त्ततेतृष्णा ॥

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

अर्थात् सौवाला हजार, हजार वाला करोड की इच्छा करता है, करोड़पति राजा और राजा चक्रवर्ती पद चाहता है, चक्रवर्ती इन्द्र और इन्द्र भी इन्द्र राज्य करना चाहता है, इन्द्रराज्य स्वामी भी इससे ऊचा पद चाहता है पर तृष्णा तब भी दूर नही होती। तभी तो कहा गया है तृष्णा नैव जरायते'—मनुष्य बूढा हो जाता है, पर तृष्णा-लोभ-लालसा यह कभी बूढी नही होती। ऐसा मानव यह कभी नही सोचता कि जब मेरे इस शरीर का अन्त मृत्यु के साथ है, तब अर्थलिप्सा का भी अन्त मृत्यु से पूर्व ही स्वय कर लेना चाहिए, अन्यथा काल का कुटिल चक्र तो उसे पीस ही देगा। कबीर के शब्दो मे।

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच, साबत रहा न कोय।

नचिकेता को वर श्रेय मार्ग

कठ उपनिषद् मे उल्लेख है कि जब अपनी जिज्ञासा और शका निवृत्ति के लिए पिता से यह कहा 'इन बूढी गौओ का दान करने से क्या लाभ, वह वस्तु दान करो जो सशक्त और उपयोगी हो और बार-बार यह पूछने पर मैं युवा हू मुझे किसे दान करोगे ?" क्रुद्ध पिता के यह कहने पर मुझे मृत्यु के लिए देता हू "और मृत्यु देवता के घर जाने पर वह नही मिले, तीन दिन भूखा रहा और ऋषि ने वापस आ, पश्चात्ताप प्रकट करते हुए तीन वर मागने को कहा, ब्रह्मचारी द्वारा तीसरा वर मृत्यु को जीतने के बारे मे मागा। तब ऋषि युवक को प्रलोभन देते हुए कहते हैं—"कामान त्वा कामभाजंकरोमि" तू यथेच्छ वर माग, मैं तेरी सब कामनायें पूरी कर दूगा, उस समय नचिकेता ने यम को जो उत्तर दिया, वह इस प्रसग मे सदा अविस्मरणीय है —

न वित्तेन तर्पणीय मनुष्य तपस्यामहे वित्तमद्राक्ष्य चेत्त्वा'—वित्तसे कभी मनुष्य तृप्त नही होता, यदि हमने मृत्यु को जीत लिया,तो सम्पूर्ण धन-धान्य प्राप्त हो जायेगा।

यहा पर ऋषि ने नचिकेता को जो उपदेश दिया है, वह सदा मननीय चिन्तनीय और जीवन प्रतिक्षण स्मरणीय है—

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्य मेतस्तौ सपरित्य विविनक्ति धीर ।
श्रेयोहि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते प्रेयो हिमन्देश योगक्षेयात् वृणीते ॥

ब्रह्मचारिन् ! जीवन के दो मार्ग हैं, श्रेय और प्रेय। बुद्धिमान धीर मनुष्य विवेक और समझ से दोनो को देख फिर निश्चय करता है। वह धीर व्यक्ति प्रेम की अपेक्षा श्रेय मार्ग वरण करता है जब कि मन्द बुद्धि सामान्य योगक्षेम को छोड़ प्रेय मार्ग का अवलम्बन करता है।

सन्तोष का मार्ग ही श्रेष्ठ मार्ग है। इसका अवलम्बन करने से योगदर्शन के कथन के अनुसार अत्यन्त आनन्द और आह्लाद प्राप्ति होती है।

के०सी० ३५A अशोक विहार दिल्ली ५२।

वेदों की शिक्षा से समुन्नति

आर्यसमाज भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स का वार्षिकोत्सव

हरिद्वार। भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स रानीपुर हरिद्वार के आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव, वैदिक प्रचारोत्सव के रूप मे ३० मई १९८३ से ५ जून १९८३ तक बडे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इसमे देश के कोने-कोने से पधारे हुए व्यक्तियो ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। इस उत्सव मे ५ जून १९८३ को आर्य विद्वानो का समाज, आर्य जगत एव राष्ट्र के लिए की गई सेवाओ के लिए अभिनन्दन किया गया। वे हैं—महात्मा आर्य भिक्षु, डा० कपिलदेव द्विवेदी, डा० रामेश्वर दयाल गुप्त, कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री, डा० हरिप्रकाश जी।

इस अवसर पर डा० कपिल देव द्विवेदी ने वर्तमान युग मे वेदो के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेदों की शिक्षाओ के पालन से ही समाज का चरित्र उन्नत हो सकता है और समाज की सर्वतोमुखी उन्नति हो सकती है। महात्मा आर्यभिक्षु ने विशाल जन समुदाय को महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों पर चलने का अनुरोध किया।

कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री ने आर्य कन्या गुरुकुल हरिद्वार जिसके वे सचालक हैं उसके सदर्भ मे कन्याओ की शिक्षा पर विशेष बल दिया।

डा० रामेश्वर दयाल गुप्त ने त्रैत दर्शन और प्रागैतिहासिक घटनाओ के क्रम मे वेद और महर्षि दयानन्द के योगदान की चर्चा की।

आर्यसमाज निजामुद्दीन के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री खेमचन्द मेहता, उपप्रधान, श्री मंगतराय, मत्री—श्री प्यारेलाल वर्मा, सयुक्त मत्री श्री बलराज, कोषाध्यक्ष—श्रीनौतन बगलानी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री चमूपति

आर्य जगत् समाचार

पंजाब की स्थिति निरन्तर बिगड़ रही है

अकाली आन्दोलन बातचीत से समाप्त हो : लोंगोवाल और वीरेन्द्रजी से साक्षात्कार

पिछले दिनो दिल्ली के सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान डा० प्रशान्त वेदालकार पजाब की परिस्थिति के विषय मे खालसा दल के अध्यक्ष श्री लोगोवाल और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्रजी से मिले थे। यहां प्रस्तुत है उसी भेंट वार्ताओ के आधार पर यह विवरण

खालसा दल अध्यक्ष श्रीलोंगोवाल ने कहा कि अभी तक उन्हे प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी, गृह मत्री श्री प्रकाशचन्द सेठी या कोई अन्य सरकारी निमन्त्रण प्राप्त नही हुआ, जिसके अनुसार बातचीत द्वारा कोई हल निकाला जा सके। हा, उन्हे एक पत्र अवश्य प्राप्त हुआ, जिसका उन्होने उत्तर दे दिया है, पर उसमे भी बातचीत का कोई निमन्त्रण नही था। प्रधानमत्री जब भी भारत से बाहर जाती हैं, तब कोई बातचीत की बात कह जाती हैं, पर उसका कोई अर्थ नही होता।

यह बात उन्होने मुझे ७ जून १९८३ को कही, जब मैंने अमृतसर मे उनका साक्षात्कार किया। ९ जून के समाचार पत्रो मे श्री लोगोवाल का उक्त आशय का वक्तव्य छपा भी। श्री सेठी ने उन्हें दुबारा निमत्रण दिया, अभी तक श्री लोगोवाल के उत्तर का पता नही चला।

श्री लोगोवाल ने यह भी कहा कि श्रीमती इन्दिरा गाधी केवल अपने हितो मे प्यार करती हैं, उन्हे देश या पजाब वालो से कोई प्यार नही।

पजाब की हिंसक घटनाओ के बारे मे प्रश्न पूछने पर श्री लोगोवाल ने कहा कि इन हिंसक घटना से अकाली आन्दोलन का कोई सम्बन्ध नहीं। यह सब सरकार हमे बदनाम करने के लिए कर रही है। यदि वह पजाब मे हो रही हिंसाओं के प्रति चिन्तित है तो वह हिंसक लोगों को गिरफ्तार क्यो नही करती? आज तक एक भी गिरफ्तारी के न होने का अर्थ दाल मे काला नजर आता है। अकाली दल का हिंसा से कोई सम्बन्ध नहीं है। हमने सदा गोली और लाठी खाई है। जेल-यातना सही है। हमारा सारा आन्दोलन शान्ति-पूर्ण है। हमारा आतकवादियो से कोई सम्बन्ध नही। यदि पुलिस चाहती तो अठवाल के हत्यारे को वहीं समाप्त कर सकती थी। हत्यारा बाहर से आया था, और लोगो ने उसे भागते हुए देखा।

यह पूछे जाने पर कि चण्डीगढ व पानी के विवाद मे आप पजाब के हिन्दुओ का साथ क्यो नहीं देते। श्री लोंगोवाल ने कहा कि पंजाब का हिन्दू सकीर्ण है। यदि वह साथ दे दें तो समस्या ही समाप्त हो जाए। पर उन्होने यह भी स्वीकार किया कि चण्डीगढ और पानी का विवाद समाप्त हो जाने के बाद भी हमारा आन्दोलन समाप्त नही होगा। सिखो के प्रति हमारी सरकार की अनुदार नीति समाप्त न हो, वे हमारी धार्मिक मागो को जब तक पूर्ण रूप से न माने तब तक आन्दोलन के समाप्त होने का प्रश्न ही नहीं।

जब श्री लोंगोवाल का ध्यान चौधरी चरणसिह को मिले धमकी भरे पत्रो व उनके वक्तव्यो की ओर दिलाया गया तो श्री लोगोवाल हंसकर कहने लगे कि चरण सिह बूढे हो गए हैं और बूढे और बच्चो की बात का कोई बुरा नही मानना चाहिए। वह अपने किन्ही राजनीतिक स्वार्थों के लिए यह सब प्रचारित करते हैं।

श्री लोगोवाल ने कहा कि वे तथा सम्पूर्ण खालसा पन्थ देश की आजादी व अखण्डता के लिए लडता रहा है, आज उन पर यह आरोप लगाना कि वे पृथक् खालिस्तान की माग कर रहे हैं, राजनीति द्वारा प्रेरित है। हमारा बलवीरसिह सधू से कोई सम्बन्ध नही। श्री संधू भारत से बाहर बैठकर वक्तव्य देते रहते हैं, वह अकेले हैं, उनका कोई साथी नही। अपने आन्दोलन को पाकिस्तान से सम्बन्ध को उन्होने बेबुनियाद और मूर्खतापूर्ण बताया। उनकी दृष्टि में यह बीबी (श्रीमती गाधी) व राजीव गांधी की बहक है।

श्री लोगोवाल ने यह बात स्वीकार की कि हिन्दू और सिख एक हैं, वे जन्म-मरण मे साथ इकट्ठे होते हैं। इनमें रोटी बेटी का रिश्ता है पर फिर भी सिख एक अलग कौम है, जिसने हिन्दू धर्म की रक्षा की। आज स्वयं उस पर संकट आया है, वे अपनी रक्षा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम पर हिन्दू मैरिज एक्ट या दूसरे एक्ट नहीं लादने चाहिए। श्री लोगोवाल ने इसी सन्दर्भ मे एक चौंकाने वाली बात कही कि जब देश आजाद हुआ था तब महात्मा गांधी ने कहा था कि तिरगा ध्वज हिन्दू, मुसलमान और सिख इन तीन कौमों का प्रतीक है। ये तीनों ही यहां समान रूप से जीने के अधिकारी हैं। पर वह यह नहीं बता सके कि गाधीजी ने उक्त बात कब कही थी। उन्होने भारत सरकार पर सिखो से भेद-भाव की बात कही।

यद्यपि स्वर्ण मन्दिर और दरबार साहब के आसपास का वातावरण शान्त था, पर फिर भी लोगो मे दहशत थी। स्वर्ण मन्दिर में सत्याग्रहियों के अतिरिक्त बहुत कम लोग थे। हिन्दू मुझे जैसे २-४ ही थे। वह वीरान-सा प्रतीत होता था।

मैं जालन्धर मे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी व पटियाला में हिन्दू रक्षा समिति के कार्यकर्ताओं से भी मिला। उनका कहना था कि अकाली आन्दोलन के कारण पंजाब का सम्पूर्ण वातावरण दूषित हुआ है, और इस कारण हिन्दुओं में प्रतिक्रिया स्वरूप अत्यन्त रोष है। ६ जून को जालन्धर में १५०० हिन्दू युवकों ने त्रिशूल व नंगी तलवारें लेकर जलूस भी निकाला।

पजाब की स्थिति निरन्तर बिगड़ रही है। अतः पजाब सरकार व केन्द्रीय सरकार को अकाली आन्दोलन बातचीत द्वारा समाप्त करने में तेजी लानी चाहिए। यदि इसमें विलम्ब हुआ तो स्थिति बिगड़ भी सकती है।

प्रो० रामसिंह के निधन पर शोक

स्थानीय आर्यसमाज अजमेर के साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् दिल्ली के सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता तथा हिन्दू महासभा के भू० पू० अध्यक्ष प्रो० रामसिह के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए एक मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। उनके निधन से आर्य जगत् को अपूरणीय क्षति हुई।

युवक समाज–सुधार कार्यों में लगें

सरकार उग्रवादियों को सख्ती से कुचले

नई दिल्ली, १४ जून (मगलवार) अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह अजमेर मे आगामी नवम्बर मास मे १००० आर्य नौजवान अग्नि के समक्ष राष्ट्र रक्षा व विलासिता में डूबे देश के सैकडो युवको की जागृति के लिए पथ प्रदर्शन करेंगे। ये शब्द आर्य युवक परिषद् दिल्ली के अध्यक्ष ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य ने आर्यसमाज मन्दिर मार्ग मे आयोजित विशाल कार्यकर्त्ता-सम्मेलन मे कहे। उन्होने युवको का आह्वान किया कि वे आगे आए और समाज सुधार के रचनात्मक कार्यों में शक्ति लगायें।

भूतपूर्व संसद सदस्य व आर्य नेता श्री रामचन्द्र विकल ने जन-जागरण का सदेश देते हुए कहा कि युवको को मांसभक्षण, मद्यपान, दहेज, अशिक्षा, स्त्रियो से छेड-छाड, सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध संघर्ष करें।

श्री रामनाथ सहगल ने युवको को सगठित होकर देश के कोने कोने मे एक नई दिशा देने का आह्वान किया। सम्मेलन मे सरकार की उग्रवादी अकालियो के प्रति ढीली नीति की कड़ी आलोचना की गई। सरकार से माग की गई कि वह देश की एकता व अखण्डता के विरुद्ध कार्य करने वालो को सख्ती से कुचले।

प्रेरणादायक प्रसंग

दुश्मन की कमजोरी से फायदा न उठाओ

सन् १९४२ की घटना है। महात्मा गाधी जी आगाखां महल में नजरबन्द थे। श्रीमती सरोजिनी नायडू के साथ बैडमिंटन खेल रहे थे। सरोजिनी जी के दांये हाथ में चोट थी, इसलिए उन्होंने बाए हाथ में रैकट पकड़ा हुआ था और इसी प्रकार खेल रही थीं। गांधीजी भी बांये हाथ मे रैकट पकड़ कर खेलने लगे। सरोजिनीजी ने हंसकर कहा, "आपको तो यह भी मालूम नहीं कि रैकट किस हाथ में पकड़नी है।" गांधीजी बोले, "तुमने भी तो बाएं मे पकड़ी हुई है।" सरोजिनी देवी ने कहा, "मेरे तो दांये हाथ में दर्द है।"

गांधीजी बोले, "तो मैं दांये में रैकट पकडकर कैसे खेल सकता हूं, यह तो बेई-मानी है। विरोधी की असुविधा का लाभ मैं नहीं उठा सकता।"

सोमदत्त विद्यालंकार १ + ३११, नया राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली ६०

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार, २६ जून, १९८३

अमर कालोनी—श्रीमती गीताशास्त्री; अशोक नगर प० बन्धेश्वर आर्य, आर० के पुरम ५—पं० ओमवीर शास्त्री; आर० के० पुरम् से० ६—प० देवशर्मा शास्त्री, आर० के० पुरम् से० ९—श्रीमती लीलावती, आनन्दविहार-हरिनगर—आ० हरिदेव सिद्धान्त भूषण; आर्यनगर—पहाडगज—श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा; किंग्जवेकैम्प—प० कामेश्वर शास्त्री; कालका जी डी० डी० ए० फ्लेट—प० ओमप्रकाश वेदालंकार; कृष्णनगर—डा० सुखदयाल भूटानी, गाधीनगर—आचार्य नरेन्द्र श्री, [illegible] कालोनी—प० सत्यभूषण—वेदालकार, ग्रेटर कैलाश २—प० तुलसीराम आर्य; गुडमण्डी—प० हरिश्चन्द्र आर्य, गुप्ता कालोनी—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, गोविन्द भवन—दयानन्द वाटिका—प० देवशर्मा, चूनामण्डी—पहाडगज—श्रीमती सुशीला राजपाल; भोगल—प० रामनिवास, जनकपुरी वी ३।२४—प० सोमदेवशर्मा शास्त्री; टैगोर गार्डन—प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य, तिलक नगर—प० रामदेव शास्त्री, दरियागज—प० मनोहरलाल ऋषि, नगर शाहदरा—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, पंजाबी बाग एक्सटेंशन—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार, पजाबी बाग—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक, बाली नगर—प० जयभगवान भजनमण्डली, महावीर नगर—प० सीसराम भजनमण्डली, रघुवीर नगर—प० हरिदत्त वेदाचार्य, राणाप्रताप बाग—प० चमनलाल, रोहतास नगर—प० महावीर बत्रा, लडडू घाटी—प० रामरूप शर्मा, लाजपत नगर—प० प्रेमचन्द्र श्रीधर, लारेंस रोड—प० आशानन्द भजनीक, सदर बाजार—पहाडी धीरज—प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, साकेत—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल', सराय रुहेल्ला—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, सोहनगज प० अमरनाथ कान्त, हनुमान रोड—श्री रामकिशोर वैद्य, हौजखास—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, मयूर विहार—प० बलवीर शास्त्री, मोती बाग—प० खुशीराम शर्मा।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, वेदप्रचार अधिष्ठाता।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज में नेत्र शिविर

आर्यसाहित्य गुजराती, मराठी और हिन्दी में वितरित

बम्बई। आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा की गई सामाजिक एव मानवीय सेवा के इतिहास मे "नेत्ररोग परीक्षा एव आपरेशन शिविर" का आयोजन एक महत्वपूर्ण कडी और जोड़ी गई। पिछने लगभग ३ माह से समाज की रुग्ण वाहिका सान्ताक्रुज उपनगर के आस-पास के झोपड पट्टी इलाको में जाकर नेत्र रोगियो की परीक्षा एव चिकित्सा कार्य करती रही है। इस कार्य का सफल सयोजन श्री स्वामी रामानन्द जी शास्त्री द्वारा किया गया एव डाक्टर के रूप मे श्री डा० बी० बी० सिह की सेवा प्राप्त होती रही। एक सप्ताह का शिविर बोरीवली, जोगेश्वरी, कांदीवली, वरसोवा, अन्धेरी एव बान्दरा उपनगरों के विभिन्न इलाको मे लगता रहा। इन शिविरो के दौरान २२०० रोगियो के नेत्रो की परीक्षा की गई। लगभग २००० नेत्र-दवा रोगियो को नि शुल्क बाटी गई। ३० चश्मे निःशुल्क ९० चश्मे आधी कीमत पर रोगियो को दिए गए। इन शिविरो के दौरान लगभग ६४ रोगी आपरेशन के योग्य पाए गए।

आपरेशन हेतु आर्य समाज मन्दिर मे दिनाक २२-५-८३ से २६-५-८३ तक नेत्र रोग परीक्षा एव आपरेशन,, शिविर लगाया गया। शिविर एव आपरेशन थियेटर का उद्घाटन चरित्र अभिनेता एवं आर्य परिवार के सदस्य श्री मनमोहन कृष्ण ने किया। मन्दिर के एक भवन को अस्पताल का रूप एव योग केन्द्र को "आपरेशन थियेटर" के रूप में परिवर्तित किया गया। २२ एव २३ मई को होने वाले निःशुल्क आपरेशन मे ४० व्यक्तियों के आपरेशन किए गए जिसमें सभी धर्म के रोगी थे। आपरेशन के पश्चात् रोगियों का परिचर्या हेतु एक सप्ताह आर्य समाज हॉल में रखा गया। डा० श्याम अग्रवाल एम० एस० के नेतृत्व में ६ डाक्टरो के दल ने आपरेशन कार्य किया।

इन शिविरो की सबसे बडी विशेषता यह रही कि हर रोगी को आर्य समाज का साहित्य मराठी, गुजराती एव हिन्दी भाषा मे बाटा गया ताकि उस बस्ती में आर्य समाज की छवि उभरे एव वैदिक धर्म का प्रचार हो। आपरेशन कराये रोगियो को परिचर्या पश्चात् अवकाश देते समय आर्य समाज की ओर से नि शुल्क चश्मे एवं आर्य साहित्य भी भेन्ट किया गया।

चरित्र अभिनेता श्री मनमोहन कृष्ण ने अपने उद्घाटन भाषण मे कहा कि मैं आज स्वयं को इस मच से बोलते हुए धन्य समझ रहा हूं। मेरी मा पक्की आर्य समाजी थी और उन्होने हमारे परिवार के रग-रग में आर्य समाज की शिक्षा भरी है। मैं बचपन में आर्यसमाज के मचों से गाने गाया करता था और उन्होने अपने भाषण मे अनेक पुराने आर्यसमाजी गानो के बोलो को सुनाकर उपस्थित जन-समूह को मुग्ध कर दिया। श्री मनमोहन कृष्ण ने कहा आर्यसमाज के मच से मुझे आज इतना प्यार स्नेह और सम्मान मिलेगा इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। एक आर्य होने के नाते आज आपने जो प्यार मुझे दिया उसके आगे मैं अपने को बहुत छोटा समझ रहा हू। उन्होने आपरेशन थियेटर का उदघाटन करने मे पूर्व उचे स्वरो मे सबको साथ लेकर गायत्री मन्त्र का उच्चारण किया और फिर फीता काटकर थिएटर का उद्घाटन किया।

महामन्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने आर्यसमाज द्वारा की गई इस सेवा के महत्व को जनता के सम्मुख रखा। उन्होने घोषणा की कि हम इस वर्ष नवीन रुग्ण वाहिका की सेवा चल-चिकित्सालय के रूप मे करेंगे जो गरीबो की झोपडियो मे जाकर उनके स्वास्थ्य की नि शुल्क परीक्षा करेगी एव शिविरो के दौरान वहा यह उपदेश एव साहित्य वितरण का कार्य भी करेगी।

धर्म की जय हो, देश की जय हो

ये नारे, जिन्हें दिल्ली के कोने-कोने में लगाइए

ओ३म् का झडा हर घर पर हो।
धर्म की जय हो, देश की जय हो।

० ० ०

देश की हानि, धर्म की हानि।
हिन्दू फूट की यही कहानी।

० ० ०

ऊच-नीच का भेद मिटाओ।
हिन्दू, हिन्दू, एक हो जाओ।

० ० ०

भारत माता सब की माई।
जात-पात फिर कहा से आई।

० ० ०

हिन्दू हिन्दू गर मिल जाए।
देश की नैया पार लगाए।

० ० ०

हिन्दू जाग ! अब तो जाग।
भारत माता करे विलाप।

० ० ०

भारत मा के सब अनुयायी।
हिन्दू, हिन्दू, भाई, भाई।

० ० ०

भारत मा का ऊचा भाल।
हिन्दू जाग ! देश सभाल।

० ० ०

देश की रक्षा, धर्म की रक्षा।
हिन्दू हित की पहले रक्षा।

० ० ०

पूजा पाठ और जात के झगड़े।
हिन्दू हित को देते रगडे।

० ० ०

—चुन्नीलाल विजर'
११०४५, ईस्ट पार्क रोड,
नई दिल्ली-५

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में निम्न कक्षाओं में प्रवेश के लिए प्रवेश-पत्र दिनांक ३१-८-८३ तक आमन्त्रित किए जा रहे हैं।

१ विद्या विनोद (इण्टर)—प्रवेश योग्यता संस्कृत सहित मैट्रिक या समकक्ष, अंग्रेजी सहित पूर्व मध्यमा, विद्याधिकारी, विशारद, (पंजाब), अंग्रेजी सहित मैट्रिक, विद्यारत्न।

२. अलंकार (बी० ए०)—प्रवेश योग्यता. संस्कृत सहित इण्टर या समकक्ष, अंग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा, विद्याविनोद, विशारद (पंजाब), अंग्रेजी सहित इण्टर, विद्यालकार/विदालंकार की उपाधि दी जाती है।

३. बी० एस० सी०—प्रथम ग्रुप : कैमिस्ट्री, बोटनी, जूलोजी, द्वितीय ग्रुप : कैमिस्ट्री, फिजिक्स, गणित। प्रवेश योग्यता इण्टरमीडिएट विज्ञान सहित तथा उसके समकक्ष।

४ एम० ए०—वेद, संस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, गणित, प्रवेश योग्यता बी० ए०, बी० एस० सी०, बी० कॉम०, अलंकार, विद्याभास्कर, शास्त्री, आचार्य साहित्यरत्न आदि। "महिलाएं तथा सैनिक व्यक्तिगत रूप से परीक्षा दे सकते हैं।

५ पी—एच० डी०—वेद, संस्कृत, हिन्दी, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व, भारतीय दर्शन मे प्रार्थना पत्र दिनांक ३१-८-८३ तक स्वीकार्य हैं, योग्य छात्रों के लिए छात्रवृत्ति उपलब्ध।

सुसज्जित प्रयोगशालाए, छात्रावास, पुस्तकालय, क्रीड़ा, एन० सी० सी०, तैराकी आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं। उपाधि भारत सरकार तथा देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों द्वारा मान्यता प्राप्त, विद्याविनोद (इण्टर) तथा अलकार (बी० ए०) कोर्स में शिक्षा नि शुल्क है, वेद विषयों मे सभी को छात्रवृत्तियां, पी—एच० डी० आवेदन-पत्र तथा नियमावली ५/- अन्य प्रत्येक पाठ्यक्रम आवेदन पत्र सहित ७/- रु० डाक व्यय १/- विद्याधिकारी, विद्या विनोद एवं अलंकार तक (छात्राओ के प्रवेश हेतु आचार्या कन्या गुरुकुल, ६० राजपुर रोड, देहरादून से सम्पर्क करें।)

—डा० जबरसिंह सेंगर, कुलसचिव

पर्यावरण संरक्षण एवं समृद्धि की महत्ता

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में द्विदिवसीय गोष्ठी :

केन्द्रीय मन्त्री श्री दिग्विजयसिंह का उद्बोधन

गुरुकुल कांगड़ी। विश्वविद्यालय में श्री जी० बी० के० हूजा, कुलपति की प्रेरणा से दिनाक ५. ६ जून को विश्व पर्यावरण दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसके लिए वित्तीय सहायता भारत सरकार के पर्यावरण विभाग, दिल्ली से प्राप्त हुई। 'पर्यावरण सरक्षण एव समृद्धि' पर एक द्विदिवसीय गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए डा० तावडे निदेशक, छात्र कल्याण शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ने भूमि संरक्षण पर बल दिया।

पर्यावरण मन्त्रालय भारत सरकार के उपमन्त्री श्री दिग्विजय सिंह ने गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय को [illegible] पर्यावरण के क्षेत्र में हो रहे कार्यों के लिये बधाई दी एवं इस बात पर बल दिया कि जनता के पर्यावरण सरक्षण एव समृद्धि में सक्रिय भाग लिये बिना पर्यावरण सम्बन्धी कोई कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता। गोष्ठी में विभिन्न विश्वविद्यालय एव अनुसन्धान सगठनों के वैज्ञानिको ने भाग लिया, टी.इ. सी० गुरुकुल कांगडी के श्री वी. एन .श्रीवास्तव ने गोष्ठी की एक बैठक की अध्यक्षता की और अपने गहन प्रसार कार्य के अनुभव के आधार पर पर्यावरण सम्बन्धी अनेक लाभकारी बातें बताईं। श्री कुलपति एवं अनेक अन्य विद्वानों ने वेदों में विद्यमान पर्यावरण सम्बन्धी [illegible] के विषय में प्रकाश डाला।

डा० ए. बी. [illegible] परिस्थितिकी एवं पर्यावरण विभाग उत्तर प्रदेश ने गोष्ठी में भाग लेने वालों को पर्यावरण साहित्य देकर पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया। गोष्ठी के लिये २१ शोध पत्र प्राप्त हुए। इस अवसर पर पर्यावरण पर एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। कांगड़ी ग्राम में भी इस विषय पर एक गोष्ठी एवं प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। श्री घनश्याम जी पंत आर एम हरिद्वार ने इस गोष्ठी की अध्यक्षता की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष : ७ अंक ३६ | रविवार ३ जुलाई, १९८३ | १९ आषाढ़ वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५९

पंजाब में हिंसा का दौर : प्रताप-कांग्रेस भवनों पर बम

बम विस्फोटों की सर्वत्र निन्दा : उग्रवादी दण्डित किए जाएं

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार के निर्देश पर पंजाब के उग्रवादियो के विरुद्ध कारगर कार्रवाई करने तथा अकालियो को शेष मागो को न्यायाधिकरणो को सौंपने की घोषणा पर होना तो यह चाहिए था कि समझौते या आपसी बातचीत का कोई रास्ता निकलता, लेकिन हुआ कुछ उल्टा ही। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष श्री गुरुचरण सिंह टोहरा ने केन्द्रीय गृहमन्त्री प्रकाशचन्द्र सेठी द्वारा क्षेत्रीय एव फालतू पानी के मुद्दो को न्यायाधिकरणो के सुपुर्द करने की पेशकश अकाली दल की ओर से ठुकरा दी है। शुक्रवार २४ जून के दिन उग्रवादियो ने अपना रोष प्रकट करने के लिए नई हिंसक कार्रवाइयो का सिलसिला शुरू किया, उसके फलस्वरूप दो स्थानो पर हुए बम विस्फोटो मे दो व्यक्ति मर गए और चार घायल हो गए।

जालन्धर मे प्रात ११ बजे वीर प्रताप समाचार पत्र कार्यालय मे प्रताप के सचालक श्री वीरेन्द्र जी के नाम अमृतसर से भेजे एक पार्सल को खोलते हुए भयकर बम विस्फोट हुआ, इसके फलस्वरूप पाच कर्मचारी घायल हो गए। उनमे से एक केवलकृष्ण अलग की थोडी देर मे घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई, दूसरे कर्मचारी नरेश कुमार की अस्पताल मे मृत्यु हो गई। समझा जाता है कि प्रताप के सम्पादक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के लेखो के कारण उग्रवादी उन्हे कई महीनो से पत्रो द्वारा धमकी दे रहे थे। दूसरा बम-विस्फोट चण्डीगढ स्थित पजाब कांगेस (इ) के भवन मे हुआ। इसके बाद उग्रवादियो ने जालन्धर नगर के एक मन्दिर के एक पुजारी को मार डाला है तथा दूसरे मन्दिर के पुजारी को घायल कर दिया है।

विभिन्न पत्रकार एव आर्य सामाजिक सगठनो ने जालन्धर मे प्रताप एवं वीर प्रताप समाचार पत्रो के कार्यालय में भेजे गंए पार्सल बमो की घटना की तीव्र भर्त्सना की तथा राज्य व केन्द्र सरकारो से माग की है कि पजाब मे प्रेस वालो एव हिन्दू जनता को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जाए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रेमनाथ, उपप्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा एव मन्त्री श्री भारत [illegible] शास्त्री ने राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह, प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी, पजाब मुख्यमन्त्री श्री दरबारा सिह, भारत गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी के नाम तार भेजकर बमकाण्ड की तीव्र भर्त्सना करते हुए आतकवादियो की तुरन्त रोकथाम करने की माग की है। अ० भा० समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विश्वबन्धु गुप्त ने कहा — इस तरह के आक्रमण शान्ति-प्रयासो के लिए गम्भीर खतरा हैं। नेशनल यूनियन आफ जर्नलिस्ट ने इस आक्रमण को घृणित अपराध बताते हुए उग्रवादियो की गतिविधियो की रोकथाम करने की माग की है। कांग्रेस (इ) के महासचिव श्री चन्दूलाल चन्द्राकर ने उग्रवादी तत्त्वो के खिलाफ तुरन्त कार्रवाई करने की माग की है।

पंजाब को सेना के हाथों सौंपा जाए

विघटनकारी तत्त्वों से कड़ाई हो : सार्वदेशिक के प्रधान श्री शालवाले का प्रधानमन्त्री को पत्र

शुक्रवार २४ जून को जालन्धर मे दैनिक प्रताप और वीर प्रताप के कार्यालय मे उग्रवादी अकालियो द्वारा बम फेंके जाने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को एक पत्र भेजकर माग की है कि पजाब की स्थिति को सुधारने का एकमात्र उपाय है कि उनका नियन्त्रण सेना को सौंपा जाए। श्री शालवाले ने अपने पत्र मे लिखा है—

"मुझे अभी टेलीफोन से पता चला है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र के दैनिक पत्र वीर प्रताप और दैनिक प्रताप के कार्यालय पर उग्रवादी अकालियो ने बम फेंककर धार्मिक जगत् मे एक नई परम्परा स्थापित की है। सौभाग्य से श्री वीरेन्द्र उस समय कार्यालय मे मौजूद न थे। इस दुखद समाचार से सारे आर्य जगत् मे क्षोभ एव रोष फैलना स्वाभाविक है। मैं अपने पत्र द्वारा आपको सुझाव दे चुका हू कि पजाब को सेना के हाथो मे सौंप दिया जाए। इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नही है, क्योकि पजाब की सरकार और पुलिस हत्यारो एव धर्म के नाम पर गुण्डागर्दी करने वालो पर काबू पाने मे सर्वथा असमर्थ रही है। सैंकडो व्यक्ति वहा मौत के घाट उतारे जा चुके हैं किन्तु एक भी अपराधी पकडा नही जा सका।

पजाब के अकालियो की खुशामद एव उनकी अनुचित मागो के आगे झुकने की प्रवृत्ति से समस्त देश मे क्षोभ एव क्रोध व्यक्त किया जा रहा है। देश के विघटनकारी तत्त्वो को इस प्रकार सरकार द्वारा बार-बार बातचीत के लिए आमन्त्रित करने से उनका आत्मबल और भी बढता जा रहा है, जबकि चाहिए यह था कि सरकार द्वारा यह माग उठते ही इस आवाज को सदा के लिए दबा दिया जाता। आप पजाब की वर्तमान स्थिति को सुधारने का अविलम्ब प्रयत्न करें।

२[illegible]० ईसाई परिवार वैदिक धर्म में लौटे

[illegible]कल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे बलागीर जिले के लोईसिंगा ब्लाक मे विशाल शुद्धि समारोह १३ जून को सम्पन्न हुआ। इसमें २८० ईसाई परिवारों ने पुन अपने प्राचीन वैदिक धर्म में अति श्रद्धा एव हर्ष के साथ यज्ञ में आहुति देकर श्री पृथ्वीराज शास्त्री (संयुक्त मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) के करकमलों से यज्ञोपवीत ग्रहण किए। इनके सदस्यो की सख्या ८०० थी। शुद्धिसस्कार श्री विशिकेशन शास्त्री, श्री अखिलेश आचार्य श्री सुभाष चन्द्र शास्त्री ने कराया।

इस कार्य मे श्री प्रफुल्ल कुमार एडवोकेट बलागीर का विशेष प्रयत्न रहा। उनके तथा स्वामीजी के विशेष आग्रह पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान के प्रतिनिधि रूप में श्री पृथ्वीराज शास्त्री भी उपस्थित थे जिससे सभी को बहुत उत्साह मिला।

२०३ ईसाई भाई वैदिक धर्म में दीक्षित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के श्री इतवारीलाल आर्य के धर्मप्रचार से प्रभावित होकर कस्बा-बलराम जिला—एटा मे दिनाक १२-६-८३ को २०३ पुरुष स्त्री, बच्चो को प० दीपचन्द जी शर्मा कार्यालयाध्यक्ष भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ने वैदिक शुद्धि पद्धति से शपथ दिलाकर हिन्दू धर्म पर अडिग रहने की प्रेरणा देकर बाल्मीकि जाति मे प्रविष्ट किया। ये लोग १५० वर्ष पुराने ईसाई बने हुए थे। ग्राम—बलराम मे ईसाइयो द्वारा निर्मित एक गिरजाघर भी है। जिसमे पादरी रहकर यहा के क्षेत्र के हरिजनो बाल्मीकियो को ईसाई धर्म के लिए प्रेरित करना है। इस शुद्धि सम्मेलन मे श्री इतवारी लाल आर्य, श्री अमरसिंह, चौहान श्री बलवीर सिंह चौहान सम्मिलित हुए। शुद्धि के पश्चात् बहुत बडी सख्या मे सभी ग्रामीण शुद्धि मुद्राओ ने यज्ञशेष प्रसाद और पचामृतपान करके बाल्मीकि ऋषि को अपनाकर मसीह धर्म को त्याग दिया। यज्ञ के बाद सहभोज भी हुआ।

सम्पादक—यशपाल सुधांशु नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

उत्तम प्रज्ञा में स्थिर हों

—प्रेमनाथ सभा प्रधान

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानाᳬसुमतौ स्याम ॥ यजु० ३४।३७
ऋ० ७।४१।४

वसिष्ठ ऋषि, भग देवता, पङ्क्ति-छन्द, पचम स्वर।

शब्दार्थ—[मघवन्] हे परमपूज्य परमैश्वर्ययुक्त ईश्वर! [वयम्] हम लोग [इदानीम्] इस वर्त्तमान समय मे [उत] और (आपकी कृपा वा अपने पुरुषार्थ से) [प्रपित्वे] प्रकृष्टता (उत्तमता) से ऐश्वर्य (पदार्थों) की प्राप्ति मे [उत] और [अह्नाम्] दिनो के [मध्ये] बीच [उत] और [सूर्यस्य] सूर्य के [उदिता] उदय मे [उत] और (सायकाल मे) [भगवन्त] ऐश्वर्ययुक्त और शक्तिमान् [स्याम] हो (तथा) [देवानाम्] पूर्ण विद्वान् धार्मिक प्राप्त लोगो की [सुमतौ] उत्तम प्रज्ञा मे [स्याम] स्थिर हो (सदा प्रवृत्त रहे)॥

भावार्थ—जो मनुष्य जगदीश्वर के आश्रय, आज्ञा पालन तथा विद्वानो के सग से अत्यन्त पुरुषार्थी होकर धर्म, अर्थ, काम वा मोक्ष की सिद्धि के लिए प्रयत्न करते है, वे सकल ऐश्वर्ययुक्त होते हुए भूत, भविष्यत् और वर्तमान तीनो कालों मे सुखी होते हैं॥

अतिरिक्त व्याख्या—परमात्मा परमैश्वर्ययुक्त होने से भगवान् है और वही हमको सकलैश्वर्य देने वाला है। सब कालो मे ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और साथ ही उसके लिए अपना पूरा प्रयत्न भी होना चाहिए ताकि हम भी ऐश्वर्य सम्पन्न बनें और किसी प्रकार का दुःख न हो। ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम बुद्धि की भी आवश्यकता है और पारमार्थिक सुख के लिए भी। यह बुद्धि देवो अर्थात् धार्मिक विद्वानो को प्राप्त होती है। इस वेदमन्त्र मे परमात्मा से इस मेधा बुद्धि की भी प्रार्थना की गई है। बुद्धि का प्रयोग भौतिक अथवा आध्यात्मिक ज्ञान दोनो के लिए होना चाहिए, जिससे सासारिक वा पारमार्थिक दोनो प्रकार के सुखो का लाभ हो॥

बोध-कथा

धीरज !

गुरु चाणक्य ने अनेक वर्षों तक चन्द्रगुप्त को अनेक विद्याए सिखाने के बाद सैन्य-सचालन और युद्ध विद्या की शिक्षा दी। जब उन्होने देखा कि चन्द्रगुप्त सैन्य-सचालन मे योग्य हो गया है, जब उन्होने सचित धन से सेना एकत्र की। चन्द्रगुप्त इस सेना के सेनापति बने, उन्होने गावो और नगरो को जीतकर उन्हे अपने अधीन करना शुरू कर दिया, पर इन क्षेत्रो की जनता उनके विरुद्ध खडी हो गई, फलत चन्द्रगुप्त को भागकर जगल की शरण लेनी पडी। चन्द्रगुप्त ने चाणक्य के साथ जनता के विचार पता लगाने चाहे। वे वेश-भूषा बदलकर घूमने लगे कभी किसी गाव मे जाते तो कभी किसी शहर मे। एक दिन एक गाव मे एक स्त्री पुए बनाकर गर्म-गर्म अपने लडके को खाने के लिए दे रही थो। लडका पुए का किनारा छोडकर बीच का हिस्सा खाता, तो उसका मुह जल उठता। लडके की सिसकारी सुनकर उसकी मा बोली—'बेटा, तेरा व्यवहार चन्द्रगुप्त जैसा है, जो सीधा राज्य की राजधानी की ओर बढकर मात खा जाता है।"

लडका बोला—' मैं क्या अनुचित कर रहा हू और चन्द्रगुप्त क्या कर रहा है?" माता ने जवाब दिया—"मेरे बेटे, तुम चारो किनारे छोडकर बीच का गर्म भाग खाने की कोशिश कर रहे हो, पहले ठण्डे किनारे खाओ, फिर बीच का हिस्सा खाओगे तो मुह नही जलेगा। चन्द्रगुप्त राजा बनना चाहता है, जब तक सीमावर्ती प्रदेश उसके अधीन नहीं होगे, तो बीच मे नगरो और गावो मे सीधे पहुचने से जनता उसके खिलाफ खडी हो गई। चन्द्रगुप्त की नीति मूर्खतापूर्ण है।"

चन्द्रगुप्त और चाणक्य दोनो ने उस बुद्धिमती मा की बात सुनी। वे दोनो नई हिम्मत और नई योजना से बढ चले। उन्होने दुबारा सेना एकत्र की, इस बार उन्होंने सबसे पहले अरक्षित सीमावर्ती प्रदेश जीते। उसके साथ वहा के समीपस्थ क्षेत्रो पर नियन्त्रण सुदृढ किया, इस तरह निरन्तर शक्ति बढ़ाकर सब जगह स्थिति मजबूत कर केन्द्र की ओर बढे। उनकी व्यवस्थित सेनाओ के सामने घननन्द की सेना टिक नहीं सकी। पाटलिपुत्र पर चन्द्रगुप्त की सेना का अधिकार हो गया।

—नरेन्द्र

जरूरत है मैकाले की ये दुकानें बन्द की जाएं

—रूपकिशोर शास्त्री
एम० ए० एम० फिल० रिसर्च स्कॉलर

उस समय महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) का माथा ठनका था, जब उनकी छोटी-सी पोती गाती चली आ रही थी कि 'ईसा-ईसा तेरा क्या लगेगा मोल' स्वामी जी ने उसे रोका भी, लेकिन वह गुनगुनाती हुई दौड गई। वस्तुत. जिसके हृदय मे जरा-सी भी देशहित की आग हो, अपने पूज्य पूर्वजो का आदर्श सामने हो उसको यह कभी भी सहन नही होगा। स्वाभाविक था दुःखी होना स्वामी जी का, वह दुःखी तो हुए परन्तु निदान भी चिन्तनपूर्वक सोच लिया था।

यह ठीक है कि जो जिस सस्था से जुडकर कार्य करता है वह उसी के गीत गाता है। हम लोग मात्र अग्रेजी को फरटिदार बोलने के मोह के कारण अपने बच्चो को आस्तीन का साप बना देते हैं। जब ये बच्चे पब्लिक, कान्वेण्ट आदि राष्ट्रघातक षड्यन्त्रकारी विदेशी मिशनरियो या उनके क्रीत दासो द्वारा चलाई जा रही शिक्षा सस्थाओ मे पढते हैं तब वहा पर ईसाइयत की घुट्टी पिलाई जाती है, यह घुट्टी उन नन्हे बच्चो के रोम-रोम मे जहर की तरह फैल जाती है। यही बच्चे उन सस्थाओ से पढकर निकलते हैं, बड़े होते हैं, अच्छे पदो या सर्विस पर पहुंचते हैं तब भी जीवन भर उनके गीत गाते हुए उनको सरकारी सरक्षण भी प्रदान कराते हैं। अनेक सस्थाओ मे तो इन ईसाई मिशनरियो ने यह भी घात किया, बच्चो को बैठाकर कुशिक्षा दी कि एक सदृश दो मूर्ति हैं एक ईसामसीह की है और दूसरी आपके राम की है, इन दोनो मे जो भी डूब जाए उसमे विश्वास और आस्था न रखो और जो पानी मे तैरने लगे, डूबे नहीं उसकी महत्ता सच्ची है उसी पर विश्वास रखो। ऐसा किया गया राम की मूर्ति तुरन्त डूब गई और ईसा की तैरने लगी। कारण था कि रग दोनो एक तथा एक काठ (लकडी) की और दूसरी धातु की। अब बताओ कि इन षड्यन्त्रकारियो का साक्षात् षड्यन्त्र है या पूर्वजो को लेकर शिक्षा दी जा रही है? मैं समझता हू कि ऐसी सस्थाओ मे जो पढ़ता है, वह आपकी धरती से कट रहा है, वह आपके पूर्वजो, आपकी सस्कृति सभ्यता को पाखण्ड, आडम्बर एव पिछड़े लोगो की सस्कृति समझता है। यह दोष उसका नहीं बल्कि उसके मूल मे छिपे षड्यन्त्र का है, जो शिक्षा के माध्यम से दिया जा रहा है।

मिस्र रोमा मिट गये जहा से,
क्या बात है कि—
हस्ती मिटती नही हमारी।

अब हमारे इस अस्तित्व को धराशायी करने का कुचक्र तीव्र गति से चल रहा है। इस देश की सस्कृति को मुसलमान सदियों से तलवार के बल पर नहीं मिटा सका, आज मात्र शिक्षा से इक रिमूबर की तरह से मिटाई जा रही है।

गत एक रविवार कोएक दम्पत्ति बड़े दुःख के साथ मुझे अपनी व्यथाकथा सुना रहे थे कि शास्त्री जी! मेरा पूरा परिवार पूर्ण सात्विक भारतीय परिवेश एवं धार्मिक है, लेकिन मेरा एक ही बेटा है, वह अब ईसाई मिशनरियो के साथ प्रचार करने जाता है। पूछने पर उन्होंने बताया कि वह कान्वेण्ट स्कूल मे पढता रहा, फलस्वरूप उसका दिल-दिमाग का ईसाईकरण हो गया। यह है कि आपकी सस्कृति के बेटे-बेटिया पराए हो रहे हैं। यह सुनकर आप शायद चौंकेंगे लेकिन इतने से ही नहीं। इस देश की शस्य श्यामला स्वर्णिम भूमि पर ईसाइयो द्वारा धर्मपरिवर्तन की शुरुआत सर्वप्रथम सन् १६४२ ई० मे पूर्वाञ्चल प्रदेशो (नागालैण्ड, सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल असम, मेघालय मणिपुर आदि) मे फ्रासिस जेवियर नामक पादरी ने की। उसने लगभग सात लाख भारतीयो को अपनी धर्म सस्कृति देश से मानसिक तौर पर अलग कर दिया। वैसे अग्रेजो के भारत मे आने के बाद सन् १६७६ मे पादरी हिटवेन्स ने यहा आकर ईसाईकरण से राष्ट्रघातक कार्य शुरू कर दिया था। विदेशी ईसाई मिशनरियो ने यहा की गरीबी, अशिक्षा, सामाजिक बुराइयो का अनुचित लाभ का अवसर जानकर दलित, शोषित, पिछडे तथा कथित हरिजन वर्ग को अच्छी नौकरियां सेवा-सुविधाओ, सामाजिक समानताओं का नकली आश्वासन देकर आशातीत सफलता प्राप्त की। परिणामस्वरूप भारत का पूर्वाञ्चल भाग, गोवा, केरल मध्यप्रदेश उडीसा के कुछ इलाके तथा थोडे-बहुत देश के अन्य भागो मे भी ईसाइयत के खून का फैलाव एव बहाव हो गया है। ध्यान रहे कि इन ईसाई मिशनों को ईसाई देशो से प्रतिवर्ष चार अरब से भी अधिक रुपये प्राप्त होते हैं जिससे हमारे बन्धुओ को ईसाइयत के इन्जेक्शन लगाये जाते हैं।

धर्मनिरपेक्षता एवं अल्पसंख्यक की आड़—मे ये ईसाई सस्थाए कसाई के कटरे की तरह पल एव बढ़ रहे हैं। भारतवर्ष मे जितने भी अल्पसख्यक सम्प्रदाय के लोग है उन्हे बढावा देने के लिए पदे-पदे सरकारी मदद एवं सरक्षण पर्याप्त मिलता है और बाहर से भी, इस प्रकार ये लोग दुहरे फल-फूल रहे हैं। उस पैसे के बल पर तथा षड्यन्त्रकारी भावना के कारण स्थान-स्थान पर संस्थाएं खोलकर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

निष्काम कर्म : मुक्ति का मार्ग

ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्मलिप्यते नरे ।।यजु-४० २

इस लोक मे कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करो। इस प्रकार निष्काम कर्म करने से तू कर्मों मे लिप्त नहीं होगा। मुक्ति का मार्ग यही है।

अल्पसंख्यकों के लिए संरक्षण राष्ट्र घातक

१८५७ का स्वाधीनता सग्राम यद्यपि अपने लक्ष्य—भारत से अंग्रेजी राज्य की समाप्ति मे सफल नही हो सका था, तथापि उसमे इस आजादी की लडाई मे हिन्दुओ और मुसलमानो ने सयुक्त होकर अपना खून बहाया था। अंग्रेजो को जनता की यह एकता रास न आई थी। उन्होने मुसलमानो को बहुसख्यक हिन्दू जनता से पृथक् करने के लिए सर सैयद अहमद खान को मुस्लिम अलीगढ विश्वविद्यालय पृथक् स्थापित करने की प्रेरणा दी थी। यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि इस शताब्दी के शुरू मे आगा खा के नेतृत्व मे एक मुस्लिम प्रतिनिधिमण्डल ने ब्रिटिश अधिकारियो की सलाह पर ही प्रमुख ब्रिटिश अधिकारियो से मुसलमानो के लिए विधान सभाओ, नौकरियों, जनसेवाओं मे पृथक् कोटा सुरक्षित रखने की माग की थी। इसी माग के फलस्वरूप प्रान्तीय विधान सभाओ एव सरकारी नौकरियो मे मुसलमानो के प्रतिनिधित्व का सिलसिला शुरू हुआ। एक बार अल्पसख्यको के सरक्षण का सिलसिला चला तो बढता ही चला गया, उनकी मागे निरन्तर बढती ही गई, अन्त मे वे देश के टुकडे करवाकर पृथक् मुस्लिम देश प्रतिष्ठित करने मे कामयाब हो गए।

देश के दो बाजू पृथक् हो जाने पर समझा गया था कि अब किसी प्रकार का पक्षपात एव भेदभाव का व्यवहार न होगा, परन्तु खेद है कि वोटो की राजनीति ने पुनः देश मे अल्पसख्यको के तुष्टीकरण की प्रणाली को उभारा है। पिछले दिनो देश के प्रमुख पत्रो मे प्रकाशित समाचार के अनुसार प्रधानमन्त्री ने केन्द्रीय मन्त्रियो और राज्य सरकारो को निर्देश दिया है कि पुलिस, बैंको, रेलवे एव सरकारी तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानो मे मुसलमानो और अल्पसख्यको को नियुक्त करने के लिए विशेष ख्याल रखा जाए। यह सूचना भी मिली है कि गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने इन्दौर मे भाषण करते हुए अल्पसख्यको के लिए नौकरियो मे कोटा निश्चित करने की बात कही है। सविधान के अनुसार सेवाओं और विधान सभाओ मे प्रवेश का आधार केवल योग्यता होना चाहिए। यह ठीक है कि शिक्षा, धन की दृष्टि से पिछडे तत्वो को शिक्षा के लिए विशेष अवसर दिए जा सकते हैं, परन्तु सेवाओ, नौकरियो एव विधान सभाओ मे किसी कोटे के आधार पर नही, प्रत्युत योग्यता, गुण, अनुभव के आधार पर नियुक्तिया की जानी चाहिएं।

अंग्रेज देश से गए, जाते-जाते वे देश के दो बाजू काटकर पृथक् कर गए। पिछले ढाई-तीन वर्षों से विदेशी साम्प्रदायिक शक्तिया धन के प्रलोभन से बहुसख्यक हिन्दू जनता का सामूहिक धर्म परिवर्तन करने के लिए प्रयत्नशील रही हैं। मीनाक्षीपुरम के बाद महाराष्ट्र एवं देश के कई भागो से धर्मान्तरण के व्यवस्थित प्रयत्नो के समाचार मिले हैं। एक ओर ये साम्प्रदायिक तत्व अपनी स्थिति और सख्या सुदृढ करने के लिए प्रयत्नशील हैं दूसरी ओर यदि केन्द्र और प्रदेशो मे नौकरियो एव विधान सभाओं मे अल्पसंख्यको को व्यर्थ का सरक्षण दिया गया तो देश मे नए-नए अलस्टरो की स्थापना रोकनी कठिन हो जाएगी। केन्द्र और प्रान्तो की सरकारो को ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाना चाहिए, जिससे देश की एकता, अखण्डता और स्थायित्व को खतरा पैदा हो। मुसलमान हो या हरिजन, अथवा सामान्य जनता उन्हे शिक्षा एव रोजगार के लिए समान सुविधा, अवसर और सहायता देना शासन का पुनीत कर्त्तव्य है। इस सीधे-सादे रास्ते को छोडकर धर्म के आधार पर किसी से पक्षपात या भेदभाव करना सर्वथा अनुचित है। परिगणित जातियो को विशिष्ट सरक्षण देने से देश मे असन्तोष एवं अव्यवस्था बढी है। यदि अब योग्यता और समान अवसर के सिद्धान्त की उपेक्षा कर धर्म के आधार पर कोटा नियुक्त करने का प्रयत्न किया गया तो एक बार चुनाव में किसी को लाभ हो सकता है, परन्तु ऐसा कदम देश के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध होगा।

उलाहना

—गंगाचरण दीक्षित

प्यारा होता भारत न गारत सलोने होकर, रोता बिलखता न कलपता कभी भी आज।
लाल उसके कभी न सूली पर चढ़ाए जाते, बंटते न सींकचों के भीतर कदापि आज।।
कैसे मानें द्रौपदी की टेर सुन धाए तुम, जब लाखों नारियों की टेर न कपाती आज।
झूठा है फिसाना राम-रावण का युद्ध होना, जब लाखो रावणो से भूमि भरी पड़ी आज।

यज्ञ द्वारा वृष्टि का व्यवस्थित प्रयत्न

'सरिता' जून (प्रथम) १९८३ मे प्रकाशित लेख 'कन्या कुमारी मे यज्ञ' पढा। मिश्रित प्रतिक्रिया हुई। प्रसन्नता और दुःख भी। लेखक ने यज्ञ की कुरीतियो और धर्म के पाखण्ड का विवेचन किया है, इससे प्रसन्नता हुई, परन्तु यज्ञो के वैज्ञानिक स्वरूप पर प्रकाश नही डाला, यह दुःख की बात है।

भारतीय सस्कृति एव साहित्य मे किसी भी उपकारी कर्म को यज्ञ कहते हैं। यह कार्य आज के युग के 'विज्ञान' से सम्मत होता है। माननीय जी० रामचन्द्रन तमिलनाडु की प्यासी जनता के लिए अमेरिका के वैज्ञानिको का सहयोग लेकर कृत्रिम वर्षा का यत्न करते हैं। इस कार्य मे किसी की भी असहमति नही हो सकती। अगर हम भारतीय विद्वानो द्वारा वैदिक विज्ञान के आधार पर (यज्ञ द्वारा) वृष्टि कराए, तो उसे करा लेने मे आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आपत्ति तो विद्वान् के चयन करने मे है। भारत को गर्व होना चाहिए कि आज के युग मे 'यज्ञ द्वारा वृष्टि' कराने वाले विद्वान् भारत मे हैं। इन्दौर निवासी, श्री वीरसेन जी वेदश्रमी यज्ञ द्वारा वृष्टि करा चुके हैं। यह वृष्टि मात्र थोड़े-से परिमित क्षेत्र मे ही नही, अपितु पीलीभीत से सम्बद्ध पाचो जिलो मे हुई थी। इतनी हुई कि खेत पानी से भर गए थे।

—धर्मवीर विद्यालकार, ५ अशोक नगर, पीलीभीत (पिन २६२-००१)

आर्य अनाथालय, फीरोजपुर (पंजाब) की मदद करें

आर्य अनाथालय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा सन् १८७७ मे स्थापित किया गया था। आज की बढती हुई महगाई और जीवन की कठिनाइयो के समय दान से प्राप्त आय बहुत कम हो गई है जबकि दैनिक आवश्यकता की वस्तुओ के दाम बहुत बढ गए हैं फिर भी हमे एक सौ अनाथ बालक-बालिकाओ के लिए मुफ्त पढाई, कपडे, खाने-पीने एव रहने का प्रबन्ध करना होता है। इस प्रकार हम बडे आर्थिक सकट के दौर मे से गुजर रहे हैं। इस अनाथालय का भवन १०७ वर्ष पुराना है जिसमे कन्या आश्रम, बाल आश्रम, गोशाला, स्टाफ के लिए आवास, यज्ञशाला एव तीन विद्यालय है। टूटे-फूटे भवन की मरम्मत की तुरन्त आवश्यकता है। इस कार्य मे ८० हजार से भी अधिक खर्च होने की सम्भावना है। धनाभाव के कारण हम इन अनाथ बच्चो को न्यूनतम स्वास्थ्य सुविधा भी उपलब्ध कराने मे असमर्थ हो रहे है। स्थानीय चिकित्सालय पर्याप्त दूरी पर स्थित होने के कारण एव अधिक खर्चीले होने के कारण हमारी पहुच से बाहर है। इसलिए हमने एक छोटा-सा चिकित्सालय बनाने का निश्चय किया है, जहा से आर्य अनाथालय के बच्चो का उत्तम स्वास्थ्य सुविधाए प्रदान की जा सकें। इसलिए इस चिकित्सालय का निर्माण केवल आप जैसे लोक-हितैषी, मानवतावादी तथा सहृदय दानी महानुभावो द्वारा किये गए आर्थिक सहयोग से हो सकता है। मेरी यह अपील दानी महानुभावो को प्रेरित करेगी और वे इस सस्था की आर्थिक दशा को सुधारने तथा चिकित्सालय के निर्माण के लिए हमारी सहायता करेंगे और इस पवित्र कार्य के लिए दिल खोलकर दान देंगे।

—पी डी चौधरी, मैनेजर, आर्य अनाथालय, फीरोजपुर

'ह्रासोन्मुख राष्ट्रीय चरित्र'

स्वतंत्रता अर्थात सन् १९४७ के पूर्व भारत का राष्ट्रीय चरित्र अत्यधिक उत्कृष्ट था। यहा के नागरिको मे विशेषकर नवजवानो मे त्याग बलिदान—देश-प्रेम-परोपकार की उत्कट भावनाए हिलोरें ले रही थी। यही कारण था कि भारत माता की स्वाधीनता की बलिवेदी पर लाखो युवको ने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। परिणाम स्वरूप भारत स्वतत्र हुआ। आशा थी कि स्वाधीन भारत मे हमारा चरित्र बहुत ही ऊचा होगा और एक महान नैतिक आदर्श उपस्थित कर हम विश्व का मार्ग दर्शन करेंगे। लेकिन महान दुःख के साथ कहना पडता है कि आजादी के उपरान्त हमारा राष्ट्रीय चरित्र निरन्तर गिरता गया और आज ३६ वर्षो के उपरान्त हम इतना नीचे गिर गए हैं कि हमारा मानव समुदाय दानवी प्रवृत्तियो से सराबोर हो चुका है। सामान्य नागरिक से लेकर चोटी तक के राजनेता अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति मे सलग्न है। हर नागरिक स्वार्थान्ध हो चुका है। यही कारण है कि सारे राष्ट्र मे आज भयकर भ्रष्टाचार, घूस खोटी, अनैतिकता, अराजकता, अव्यवस्था, अकर्मण्यता का साम्राज्य छाया हुआ है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर आज राष्ट्रद्रोह का नगानाच हो रहा है। हमारा शासन भी जनकल्याणकारी न होकर मात्र व्यापारीकी भूमिका अदा कर रहा है अश्लीलसाहित्य तथा नग्न फिल्मो के भद्दे प्रदर्शनो के कारण सारा युवा विपरीत दिशा मे भटक रहा है। दयाप्रेम-सेवा-परोपकार सहयोग आदि मानवता के गुणो के लुप्त हो जाने से दानवता अट्टहास कर रही है। व्यापारी अधिकारी छात्र, राजनेता बुद्धिजीवी सारे के सारे लोग कहा जा रहे हैं देखकर रोगटे खडे हो जाते हैं। आज जब सारे ससार को भारत से आध्यात्मिक नेतृत्व की आशायें थी, भारत स्वय चारित्रिक पतन के गड्ढे मे गिरता जा रहा है। आज हमारी नारियो का जितना अपमान हो रहा है, उतना पहले कभी नही हुआ था। अपहरण-बलात्कार आज की सामान्य बातें हैं। राष्ट्रीयता मानवता का लोप होता जा रहा है। निकट भविष्य मे हमारा राष्ट्रीय चरित्र पतन की ओर न जाकर उच्चता की ओर जायेगा, इसकी आशा कम है।

—राधेश्याम आर्य, ऐडवोकेट, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

संयमी जीवन : बढ़ती जनसंख्या का हल

वर्षों पूर्व पण्डित नेहरू ने एक बार कहा था कि हमारा देश समस्याओं का गढ है, असख्य समस्याओ ने हमे चारो ओर से घेरा हुआ है। या यू कहिए कि यहा जितने आदमी हैं, उतनी ही समस्यायें हैं। जात-पात, छुआछूत, भाषा विवाद, निम्न श्रेणी तथा हरिजनो पर अत्याचार, (इनकी गरीबी तथा पिछडेपन का लाभ उठाकर लोभ लालच से इनका धर्मपरिवर्तन करने का अभियान) अल्पसख्यको के बहुसख्यको के साथ आपसी झगडे, बन्धक मजदूरो की दुर्दशा, दहेज की कुप्रथा, प्रदेशो के पानी के बटवारे, आसाम से विदेशियो के निष्कासन का प्रश्न, अकालियो की धीगा-मस्ती, आकाश को छूती हुई महगाई, जीवन के हर क्षेत्र मे फैले भ्रष्टाचार का रोग विशेषकर राजनीतिक क्षेत्र मे इसका दुष्प्रभाव जैसे अनेक ज्वलन्त प्रश्न हैं, जिनके हल करते वर्षों बीत गये, परन्तु समस्यायें ज्यो की त्यो बनी खडी है उनमे से कोई-कोई तो बडा उग्र रूप धारण कर के चिन्ता का विषय बनती जा रही है और आज की सबसे बडी समस्या जनसख्या का तीव्र गति से बढने की है।

सरकार का कहना है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् से (गत ३६ वर्षों मे) खाद्य अन्न की उपज दुगुनी से भी अधिक हो गई है। प्रत्येक जीवन उपयोगी वस्तु यहां पर बनने लगी है। मकानो, स्कूलो, शिक्षा सस्थाओ अस्पतालो की भी कोई कमी नही है। नई-नई आधुनिक टेकनीको का प्रयोग करके जीवन को सुखद बनाने का भी भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। रोजी-रोटी के साधन भी बहुमात्रा मे जुटाए जा रहे हैं, परन्तु जनता मे फिर भी अशान्ति फैली है। कोई भी वस्तु सुविधा से उचित दामो मे उपलब्ध नहीं होती। सभी का अभाव और कमी प्रतीत होती है इनके बहुत से कारणो मे से एक मुख्य कारण है यहा की जनसख्या का तीव्र गति से बढना। सरकार इस बढती हुई जनसख्या के दुष्परिणामो स भली-भाति परिचित है और इसकी सारी शक्ति इसकी रोकथाम मे लगी है। वह सभी जनसामान्य के लिए आवश्यक वस्तुओ का उचित मात्रा मे जुटावे। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और बीमारी की हालत मे इसके निदान के पर्याप्त उपाय करे। प्राय सरकारें इन सुविधाओ के जुटाने मे समर्थ नही होती, क्योकि वैज्ञानिको तथा अर्थशास्त्रियो की यह मान्यता है कि आबादी (जनसख्या) उसके जीवनोपयोगी वस्तुओ के जुटाने के अनुपात मे कही अधिक गति से बढती है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री माल्थस का कहना भी है कि जनसख्या का विस्तार ज्यामितिक पद्धति से होता है। उसके कारण पोषण के साधन गणितीय पद्धति से बढते हैं। यह समस्या भारत जैसे विकासशील अथवा अविकसित देशो के कुछ ज्यादा ही उग्र रूप में दीख पड़ती है। कुछ अनुमानो के अनुसार हमारे देश मे प्रतिदिन पचास हजार बच्चे (अर्थात् प्रति तीन सैकेण्ड के बाद दो बच्चे) पैदा होते हैं जिसके परिणाम स्वरूप प्रति वर्ष हमारी आबादी मे पूरे आस्ट्रेलिया की जनसख्या जुड जाती है, और स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् से अब तक रूस देश की आबादी के बराबर हमारी जनसख्या में और वृद्धि हुई है। अत ऐसी भयकर स्थिति को रोकने के लिए हमारी सरकार कटिबद्ध है और शिशु निरोध की तरह-तरह की योजनायें बनाकर, करोड़ो-अरबो रुपये के बजट बनाकर युद्धस्तर पर इसका अभियान चलाने मे सलग्न हैं। जगह-२ शिविर लगाकर सहस्रो विवाहित युवक-युवतियो को तरह-तरह के आर्थिक प्रलोभन देकर उनकी नसबन्दी की जाती है। और कई अन्य शिशु निरोध उपकरणो का प्रयोग भी बताया जाता है। यही नही, यदि न चाहते हुए भी सन्तान उत्पन्न होने की सम्भावना हो तो कानूनन निश्शुल्क सेवायें गर्भपात के लिए देश मे स्थान-स्थान पर उचित प्रबन्ध किए गए हैं ताकि शिशु निरोध हो सके और निश्चित अवधि मे जनसख्या का बढना ३५ प्रति सहस्र से घटाकर २५ प्रति सहस्र होजाए। परन्तु यहा यह कहना कदाचित् अनुचित न होगा कि जनसख्या के रोकने के ये सब अप्राकृतिक और कृत्रिम उपाय हमारी प्राचीन सभ्यता और सस्कृति के सरासर विरुद्ध ही नहीं हैं अपितु ये बडे हानिकारक और भ्रष्टाचार फैलाने वाले हैं। नसबन्दी करवाने वालो को अनेक तरह के रोग भी लग जाते हैं और उनका स्वास्थ्य भी बिगड जाता है, और कतिपय स्त्री-पुरुषो को तो जान से भी हाथ धोना पड जाता है।

परन्तु विचारणीय बात तो यह है कि क्या यह जनसख्या की भयकर समस्या हमारे ही देश की है वा अन्य देश भी इसके सुलझाने मे लगे है। समाचार-पत्रो के पढने से तो स्थिति सर्वथा इस के विपरीत ही दीख पडती है। कुछ देशो मे तो अधिक बच्चो वालो को बड़े-बडे उत्साहवर्द्धक आर्थिक तथा अन्य तरह के प्रलोभन दिए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर फ्रास देश मे तीन बच्चे वाले माता-पिताओ को इतनी आर्थिक सुविधायें दी जाती हैं कि उनकी आय बिना बच्चे वालो की अपेक्षा कुछ हालात मे तीन गुणा तक हो जाती है। यही नही, वहा द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् वहा के शासक मार्शल पेता ने गर्भपात को एक महान भयकर और भीषण अपराध कहा था। रूस की तो बड़ी मजेदार बात समाचार पत्रो मे पढने को मिलती है। वहा तो अधिक बच्चे पैदा करने वालो को बडे-बडे आश्चर्यजनक उत्साह व प्रलोभन दिये जाते हैं। ५-६ बच्चो को मा को मातृत्व के पदक से विभूषित किया जाता है। और ७-६ बच्चो की मा को मातृत्व की गरिमासे सम्मानित और इससे अधिक बच्चो वाली माता को मा नायिका की उपाधि से अलकृत किया जाता है और इन सबको सोवियत सघ के अध्यक्ष मण्डल के प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। इसी प्रकार अमेरिका, चीन, जापान और इग्लेंड मे भी इस प्रकार की कोई चिंता नही है। कुछ पाश्चात्य मनीषियो की तो यह मान्यता है कि ससार मे ऐसे बहुत से उदाहरण मिलेंगे जो मात्र कम जनसख्या के कारण नष्ट हो गए परन्तु इसके विपरीत कोई भी उदाहरण ऐसा नही मिलेगा कि जिसका ह्रास अधिक जनसख्या के कारण हुआ हो। फ्रास के शासको का कहना है कि द्वितीय महायुद्ध मे उस देश का पतन केवल मात्र कम आबादी के कारण ही हुआ था। अत यह भी कुछ कहते हैं कि कही हमारी अल्प समय मे ही हर क्षेत्र मे आश्चर्यजनक प्रगति को देखकर ईर्ष्या के कारण कुछ राजनीतिक कारणो से सम्भवत कुछ विकसित देशो ने हमारे लिए यह जनसख्या का विषय इतना चिन्ताजनक तथा गम्भीर बना दिया हो यह भी विचारणीय बात होनी चाहिए।

—चमनलाल
प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार

यदि सरकार की यही दृढ धारणा है कि शिशु निरोध देश की समृद्धि और सम्पन्नता की एक मात्र अचूक औषधि है तो एक ऐसी राष्ट्रीय व्यापक योजना बनानी चाहिए जो देश के सभी निवासियो को समान रूप से लागू हो और किसका धर्म और मजहब के नाम हर विरोध करने वालो को अपराधी घोषित किया जाए। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि प्रचलित नीति ऐसी नहीं है। कुछ अपने आप को अल्पसख्यक कहने वाले वर्ग इन योजनाओ का धर्म के नाम पर विरोध करते हैं और इनका लागू करना सरकार द्वारा अपने धर्म मे हस्तक्षेप कहते हैं। तो फिर तो ये सभी योजनायें बहुसख्यक वर्ग के लोगो के ही लिए रह गई। यदि यही प्रक्रिया चलती रही और साथ ही वर्तमान मे जो अरब देशों से विपुल धनराशि के आधार पर निम्न वर्ग के हिन्दुओ तथा हरिजनों को प्रलोभन देकर सामूहिक तौर पर धर्म परिवर्तन करने का कुचक्र चल रहा है, तो वह समय दूर नही जब आज के अल्पसंख्यक वर्ग वाले कल बहुसख्यक हो जायेंगे और विदेशी मुसलमानों से मिलकर इस देश को मुस्लिम देश घोषित करने की माग करने से न चूकेंगे। अत हिन्दुओं को इस आने वाले भयकर बवण्डर से सावधान रहने की अत्यन्त आवश्यकता है। वैसे तो इनके धर्म ग्रथो मे छोटे परिवार सीमित परिवार को ही आदर्श व सुसमृद्ध परिवार कहा गया है। वेद विश्व के पुस्तकालय मे प्राचीनतम पुस्तक कही जाती है। यह एक व्यावहारिक धर्मग्रन्थ है जिससे भगवान ने सृष्टि के आदि में ही जन कल्याण के लिए सीमित परिवार का ही प्रतिपादन किया है।

"बहु प्रजा निर्ऋतिमाविवेश।"

अर्थात् अनेक सन्तानो वाला पुरुष सदैव दुखी रहता है। इसके अलावा हमारे ग्रन्थों मे प्राचीन ऋषियो ने संयम का जीवन बिताने के ही आदेश किए हैं। विवाह को भी एक धर्म पालन की व्यवस्था बताया है न कि कामवासना की पूर्ति के लिए। यही नही एक से अधिक पति रखना भी पाप कहा गया है। परन्तु इसके विपरीत जो लोग धर्म के नाम पर बहुपत्नी विवाह मे विश्वास करते हैं, वही इस शिशु निरोध योजनाओ का विरोध भी करते हैं।

राष्ट्र और देश के हित में शिशुनिरोध की एक ऐसी व्यापक योजना बनानी चाहिए। जो बिना किसी धर्म, मजहब के लिहाज के देश के सभी निवासियो पर समान रूप से लागू हो। (२) कामवासना को उत्तेजित करने वाले सभी प्रकार के साहित्य फिल्मो पर कडा प्रतिबन्ध हो, (३) होटलो मे मद्यपान और युवतियों के नग्न नृत्यादि बन्द होना चाहिए। (४) सरकारी प्रकाशनो से सयमी जीवन के लाभ और गुणो का युद्ध स्तर पर प्रचार व प्रसार करना चाहिए। ऐसे ही कुछ और उपायो के अपनाने से वहा शिशु निरोध को बढावा मिलेगा, परिवार सीमित होगा, वहा गृहस्थ रोग शोक से भी मुक्त होंगे, जो सन्तान होगी वह हृष्ट-पुष्ट होगी।

आर्यसमाज कृष्णनगर के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री जगन्नाथ सरीन, उपप्रधान—श्री सीताराम सहगल, श्री राजकुमार महरा, मन्त्री—श्री जयपालसिंह, उपमन्त्री—श्री अशोक कुमार, श्री जगदीशनाथ भाटिया, कोषाध्यक्ष—श्री दीवानचन्द्र, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री विनोद कुमार।

आर्यसमाज गन्नौर (सोनीपत) हरियाणा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गन्नौर बहुर (सोनीपत) हरियाणा का २६वा वार्षिकोत्सव १०, ११-१२ जून को मनाया गया।

नर और नारी

नर और नारी मनुष्य के दो पहलू हैं जो एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनो के उद्भव का एक स्रोत है। सृष्टि की रचना मे जो अंग-विन्यास मे भेद हुआ है, वह भेद विरोधाभास का कारण नही है, प्रत्युत एक-दूसरे की अपूर्णता को पूर्णता में लाने के लिए बना हुआ है। नारी की शारीरिक क्षमता पुरुष के शारीरिक बल से कुछ कम होने के कारण उसकी हीनता का परिचायक नहीं है। प्रत्युत नारी की शारीरिक दुर्बलता मे निहित सौन्दर्य और कोमलता प्रादुर्भूत होती है और पुरुष के अधिक सशक्त शरीर में निहित कठोरता उसके पौरुष भाव को जीवित रखती है, और कोमलता का आधार स्तम्भ बनती है।

एक-दूसरे के पूरक

उदाहरण के तौर पर वृक्ष के बीज मे तने की कठोरता मे शाखाओ के फल और फूल की कोमलता के तत्त्व छिपे हुए होते हैं। विकसित तना शाखाओ को अपना आधार प्रदान करता है और कोमल शाखाए तने का आधार पाकर ऊर्ध्वमुखी विकास की ओर प्रगति करती हैं और अपने सौन्दर्य और कोमलता का प्रक्षेपण करती हुई उपवन की शोभा को बढाती हैं। तात्पर्य यह है कि नारी की शारीरिक कोमलता और पुरुष की शारीरिक कठोरता का भेद एक-दूसरे के लिए पूरक बनता है और भगवान की शाश्वत योजना का परम उद्देश्य सफलीभूत होता है। क्योकि नारी, पुरुष के लिए केवल वासना का रूप नहीं वह शक्ति का तेजोमय आकार भी है।

नर और नारी अपने यथार्थ स्वरूप को जानकर एक-दूसरे के प्रति कुभावनाओ और कुविचारो से मुक्ति प्राप्त करके एक स्वर्गीय विश्व का निर्माण कर सकते हैं।

नारी जब पुरुष की वासना तृप्ति के लिए बाह्य और कृत्रिम सौन्दर्य को अपना आधार भूमिका बनाती है या गृहस्थ के तुच्छ सुखो की तृप्ति के पीछे अपनी सहज और स्वाभाविक क्षमताओ को खो बैठती है तब इसके दुष्परिणाम मे अनेक प्रकार की यातनाओ से आक्रान्त हो जाती हैं। स्त्रियों को आभूषणों और वस्त्रो के प्रति इतना अधिक आकर्षण है या व्यामोह है कि अपने यौवनकाल में प्रगति के अवसरो को खो बैठती हैं। न तो उसका विवाहित जीवन आनन्दमय बनता है और न उसका कौमार्य जीवन सुखमय बनता है।

सच्चा जीवन क्या है ? वह इन अर्थो को जन्म से नही समझ पाती और वह भूल-भुलैया मार्ग मे भटक रही होती हैं। आध्यात्मिक जीवन से वचित नारी भोग का यन्त्र बनकर रह जाती है।

जटिलताओं से जकड़ी

आज की सुशोभित नारी अभी तक सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं कर सकी। जितना अधिक मात्रा मे आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने की दौड लगा रही है वह और अधिक जटिलताओ मे जकडी जा रही है। इस प्रकार पुरुष भी अपनी स्वाभाविक क्षमताओ अर्थात् शौर्य, ओज, वीर्यत्व और बलादि गुणो को विकसित न करता हुआ पुरुषत्व का प्रदर्शन करने लगा है। उसको भीतर से सम्राटत्व प्राप्त है, परन्तु पदो के प्रलोभन मे, तुच्छ साधनो द्वारा धन को बटोरने मे और नारी के सौन्दर्य को मसलने मे अपनी शक्ति का क्षय कर रहा है ओर सच्चे देवत्व के भाव से वचित हुआ पडा है। मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसको भगवान ने परम ऐश्वर्य प्रदान कर देवत्व भाव के उच्चतर शिखर पर आरोहण का कृत सकल्प है, उस भगवान के सकल्प को चरितार्थ करना ही हमारा परम कर्त्तव्य है। दोनो को अब निर्णयात्मक दिशा पकडनी चाहिए। स्त्री, पुरुष, सन्तान व घर-गृहस्थी आदि भोग के साधन नही है अपितु वह सारे समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय के दोनो आधार स्तम्भ हैं। हम दोनो पूर्ण रूप से जाग्रत होकर मानव एकता को सुदृढ बना सकते हैं।

यदि हम मौलिक रूप से दो लिगो, स्त्री या पुरुष की भेद भावना से हटकर मानव के दो पहलू हैं इस चिन्तन मे अपने को ले आए तो हमारी समस्याओ का स्वत ही समाधान हो जाएगा।

उज्ज्वल सम्बन्धों का निर्माण

यदि नारी अपने भीतर से पुरुष के प्राणिक और शारीरिक आकर्षण को दिव्य प्रेम से उन्नत बना ले और खुद को भोग का यन्त्र न बनाये इसी प्रकार पुरुष यदि स्त्री पर अधिकार की गर्वभरी भावना से मुक्ति पा जाए तो दोनो का सम्बन्ध उज्ज्वल बन सकता है और दोनो ही गृहस्थ का सच्चा सुख जो अपवर्ग (मोक्ष) से बढकर है, उसका उपभोग स्त्री और पुरुष प्रकृति और आत्मा के विधान को जानते हुए यदि जीवन-यापन करें तो पृथ्वी पर स्वर्ग उतर सकता है। यदि ये दोनो प्रेम की परिभाषा को जान सकें प्रेम और (भोग) दोनो का मिश्रण करके उसकी परिभाषा को विकृत न करें तो ब्रह्मचर्य का जीवन कठिन न बनकर सहज और स्वाभाविक बन जायेगा। फिर मानव काम वासना का रूप न बनकर शक्ति और ओज का रूप बनकर ऋतु दान से मानव सन्तान को जन्म देगा। ऋतु दान से सतान को जन्म देने वाला दाम्पत्य ब्रह्मचारी ही कहलाएगा।

ब्रह्मचर्य का अर्थ यह है कि स्त्री और पुरुष (ज्ञान इन्द्रिया) नेत्र, चक्षु, श्रोत्र घ्राण और त्वचा (कर्म इन्द्रिया) हस्त, पाव, वाणी, मूत्र-इन्द्रिय और पाँच इन्द्रियादि का यथावत् प्रयोग का बोध हो, किसी भी इन्द्रिय का दुरुपयोग न करना सच्चा ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य प्रकृतिप्रद स्वाभाविक अमृत है जो इस अमृत का पान कर लेता है फिर उसको वासना तृप्ति का तुच्छ रस अस्वीकृत हो जाता है।

हमारे प्राचीन ऋषियो ने ब्रह्मचर्य की महिमा को केवल कोरे शाब्दिक जाल मे न गाकर क्रियात्मक रूप से अनुभव करके लिखा है।

नर और नारी पृथ्वी और द्यौ के समान हैं। जैसे पृथ्वी और द्यौ (सूर्य) के सामजस्य से सम्पूर्ण विश्व चल रहा है इसी प्रकार नर और नारी के सुविचारो के सामजस्य से नवल ज्ञान की उपकिरण से अज्ञान और अविद्या के निविड तमसोच्छन्न अन्धकार को तिरोभूत कर एक नूतन सतयुग का निर्माण कर महात्मा गाधी के रामराज्य के सुखद स्वप्न को चरितार्थ कर सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमे मानव जन्म मिला है।

—सुशीला राजपाल,
सिद्धान्तविदुषी
१३ पश्चिमी वैस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली-११०००८

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज लेखराम नगर, त्रिनगर (दिल्ली ३५) प्रधान चौधरी श्रीराम, उपप्रधान—श्री प्राणनाथ मेहता, श्री समेरचन्द्र आर्य, मन्त्री—श्री सत्यपाल आर्य, प्रचार मन्त्री—महाशय सोहनलाल शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री सहदेव आर्य, उपमन्त्री—श्री सूर्यकान्त आर्य, श्री मित्रसेन।

आर्यसमाज बल्लभगढ (फरीदाबाद) हरियाणा। प्रधान—श्री बाबूराम, उपप्रधान—श्री पूरनचन्द्र बजाज, श्री सुरेश कुमार आर्य, मन्त्री—श्री राजकिशोर गोयल, उपमन्त्री—श्री राजकिशोर गोयल, कोषाध्यक्ष—श्री सुभाषचन्द्र, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री सुरेशचन्द्र मित्तल, लेखा निरीक्षक—श्री हरिराम शर्मा।

जिला आर्य सभा बठिण्डा। प्रधान—श्री वजीरचन्द्र बठिण्डा, उपप्रधान—श्री बनारसीदास बरेटा, उपप्रधान—श्रीमती प्रवेश आर्या, मानसा। मन्त्री—श्री ओमप्रकाश आर्य बठिण्डा, उपमन्त्री—श्री तरसेम कुमार आर्य, गोनियाना।

आर्यसमाज पटेल नगर मे उपनिषद कथा।

आर्यसमाज पटेल नगर, नई दिल्ली मे २० जून से २५ जून, १९८३ तक आर्य-जगत् के विद्वान प्रो० रत्नसिह्न प्रतिदिन रात्रि को ८-४५ से ९-४५ तक उपनिषदो की कथा प्रस्तुत की। कथा मे पूर्व श्री वेदव्यास जी के भजन हुए। रविवार २६ जून को प्रात साढे आठ से डेढ बजे तक प्रो० रत्नसिह जी का प्रवचन हुआ।

आर्य समाज नागदा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नागदा! आर्य समाज नागदा का १७ वा वार्षिकोत्सव दिनाक-२८ मई से ३० मई तक औद्योगिक बस्ती बिडलाग्राम मे बडे उत्साह तथा समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम मे योगाचार्य स्वामी सर्वानन्दजी लुधियाना, वेदो के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी आत्मानन्दजी तथा वैदिक मिशनरी पण्डित कमलेश कुमारजी अहमदाबाद के सुन्दर प्रवचन तथा भजनो का भारी सख्या मे पुरुषो तथा महिलाओ ने उपस्थित होकर लाभ उठाया। अपने प्रवचनो मे आर्य विद्वानो ने कहा कि आर्य समाज कोई मत, सम्प्रदाय या पन्थ नही है यह तो सत्य सनातन वैदिक धर्म जिनको आज इस भौतिक वादी युग मे हम भूल गए हैं, याद दिलाने वाला श्रेष्ठ जनो का समूह है।

आर्य समाज की विशिष्टता

आर्य समाज नागदा के १७ वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित २८ मई को रात्रि सत्सग मे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध मनीषी वैदिक—मिशनरी श्री प० कमलेश कुमार जी आर्य अग्निहोत्री ने अपने प्रवचन मे कहा—आर्य समाज कोई मत पन्थ सम्प्रदाय नही है। यह तो सत्य—सनातन पवित्र वैदिक धर्म प्रचार—प्रसार करने वाले श्रेष्ठ जनो का समुदाय है!

प० चन्द्रभानु जी का अभिनन्दन

आर्य पुरोहित सभा के सरक्षक श्री प० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण भू० पू० पुरोहित आर्य समाज हनुमान रोड के ७५ वे जन्म दिवसोपलक्ष्य मे मार्च १९८४ मे आर्य पुरोहित सभा के तत्वावधान मे पण्डित जी के सार्वजनिक भव्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया जायेगा। पण्डित जी के भक्त एव सहयोगी उनके विषय मे अपने लेख या सस्मरण इस पते पर भेजें—(वेदकुमार वेदालकार) मन्त्री आर्य पुरोहित सभा, आर्यसमाज कैलाश ग्रेटर कैलाश—१ नई दिल्ली ११००४८

श्री घनश्याम दास बिड़ला की स्मृति में सभा

नई दिल्ली, १३ जून (सोमवार) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे प्रसिद्ध उद्योग व समाज सेवी श्री घनश्याम दास बिडला के निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महासचिव श्री रामनाथ जी सहगल ने वयोवृद्ध नेता के महान गुणो से प्रेरणा लेकर युवको को व्यावसायिक व सामाजिक क्षेत्र मे उन्नति करने का आह्वान किया।

आर्य जगत् समाचार

अजमेर में निर्वाण शताब्दी संयुक्त रूप से व्यवस्थित समारोह के लिए प्रमुख नेताओं का सर्वसम्मत निश्चय

१७ जून को प्रात काल परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले और स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती अजमेर पहुचे और वहा करनाल के रायसाहब चौधरी प्रताप सिंह जी और आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिह एडवोकेट भी पहुच गए थे। स्टेशन पर अजमेर नगरवासियो ने अतिथियो का स्वागत किया।

उसी दिन सायकाल को आर्यसमाज केसरगज के डी० ए० वी० कालेज के कार्यालय कक्ष मे सभी कार्यकर्ताओ की बैठक हुई। सब लोगो ने निश्चय किया कि अजमेर नगरी में ३ से ६ नवम्बर तक निर्वाण शताब्दी समारोह मनाया जायेगा और समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा एव देश की समस्त आर्य संस्थाओ का सहयोग होगा। सब लोगो ने मिलकर निर्णय किया कि शताब्दी समारोह विश्राम स्थली (पुष्कर रोड) पर मनाया जायेगा।

इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ एक मास तक सम्पन्न होगा जिसकी अध्यक्षता महात्मा दयानन्द तथा व्यवस्था यतिमडल करेगा। शताब्दी समारोह का समग्र कार्यक्रम स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा। मुख्य समारोह का उद्घाटन लाला रामगोपाल शालवाले करेंगे। समारोह के स्वागताध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिह तथा स्वागत मत्री श्रीकरण शारदा तथा स्वागत सहमत्री रासासिहजी नियुक्त किए गए हैं। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन, वेद सम्मेलन, युवक सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि आयोजित किए जायेंगे।

शताब्दी समारोह समिति ने यह निश्चय किया कि इस अवसर पर भारत सरकार से प्रार्थना की जाएगी कि दिल्ली अजमेर की चलने वाली गाडी अहमदाबाद मेल तथा एक्सप्रेस को दयानन्द मेल और दयानन्द एक्सप्रेस नाम दिया जाए। इस अवसर पर स्वामी दयानन्द जी स्मृति मे डाक टिकट निकालने की भी माग की गई है।

परोपकारिणी सभा, सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियो की यहां सम्पन्न हुई उच्च स्तरीय बैठक मे सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित हुआ कि भारत सरकार से प्रार्थना की जाय कि समस्त भिनाय कोठी, जहा महर्षि दयानन्द का निधन हुआ था, राष्ट्रीय स्मारक के रूप मे आर्य जगत् के हवाले की जाय।

बैठक मे सर्वश्री रामगोपाल शालवाले, श्री स्वामी ओमानन्द श्री छोटूसिह जी, श्री दत्तात्रेय आर्य, स्वामी सत्यप्रकाश डा० भवानी लाल जी भारतीय, श्री श्रीकरण जी शारदा, श्री चौधरी प्रताप सिंह जी श्री भीमाराव जी, आर्य आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

अन्त मे अजमेर नगरी के प्रमुख कार्यकर्ताओ की सार्वजनिक मीटिंग हुई, जिसमे स्वामी ओमानन्द जी, श्री छोटूसिह जी, लाला रामगोपाल जी और स्वामी सत्यप्रकाश जी ने उत्साह वर्धक वक्तृतायें दी।

स्वामी दयानन्द की प्रामाणिक जीवनी का प्रकाशन

ज्ञात हुआ है कि महर्षि दयानन्द की जीवनी के मर्मज्ञ विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय अपने २५ वर्षीय अध्ययन-अनुसधान तथा चिन्तन के पश्चात् स्वामी दयानन्द का प्रामाणिक जीवन चरित लिख रहे हैं। ६०० पृष्ठो का यह वृहद्ग्रन्थ निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित होगा। साहित्यिक शैली मे लिखा गया यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य की निधि होगा।—प्रबधक, वैदिक मत्रालय, अजमेर

पं० गोपाल शास्त्री का असमायिक निधन

सस्कृत के उद्भट विद्वान, पण्डित महासभा के अध्यक्ष प०गोपालशास्त्री दर्शन केशरी के निधन पर आर्यसमाज लल्लापुरा के साप्ताहिक अधिवेशन में दि० १२ जून १९८३ को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई। उन्होंने पाणिनि मुनि कृत अष्टाध्यायी के विकास हेतु आजीवन अकथ परिश्रम किया। उनके निधन पर ईश्वर से प्रार्थना की गई कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

जरूरत है मैकाले की ये दुकानें बन्द की जाएं

(पृष्ठ २ का शेष)

कुशिक्षाए देते हैं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मे कोई सरकारी अकुश तो होता नही, इसलिए ये जो भी शिक्षा देंगे अपनी और अपने मजहब की चाहे वह अच्छी है या बुरी, इसे नवमस्तिष्क जल्दी ग्रहण कर लेता है। बस यही से हो जाता है शुरू षड्यन्त्र। परिणाम यह होता है कि हमारे लाल ही हमारे दुश्मन होने लग जाते हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अपनी एक परीक्षा मे आए हुए प्रश्न के उत्तर मे लिखा था "यदि किसी देश पर अधिकार करना हो तो उस देश की सस्कृति-सभ्यता को पहले नष्ट कर देना चाहिए।" तो इस प्रकार इस देश को नष्ट करने का, गुलाम व समस्त देश को ईसाई देश बनाने का यह भी मात्र उपाय है, जिसको कि ये लोग अपना रहे हैं।

शिक्षा देने के हथकण्डे—इन स्कूलो मे बाइबिल की शिक्षा देने की अलग से समय सारिणी होती है, जिसमे पादरियो की टोली की टोली बडे चाव से शिक्षा दे-देकर उन प्यारे मासूम बच्चो के रग-रग मे देश व सस्कृति के प्रति घातक भावना भर देती है। दूसरा यह कि इन बच्चो को एव उनके माता-पिताओ को निर्देश दे दिया जाता है कि इनके साथ घर मे भी अग्रेजी ही बोलें, हिन्दी या अन्य भाषाए नही, तो बताओ इस देश के लोगो! कहा रहेगा उसको अपनी मातृभाषा एव सस्कृति से प्यार, बस इस तरह से वह कटता-कटता बिल्कुल पराया हो जाता है। तीसरा पर्वो आदि का भारत की सस्कृति के प्रति गहरा सम्बन्ध है, जब इन ईसाइयो के त्योहार आते है तो उन्हे वैसी ही सस्कृति, सभ्यता, वेशभूषा आदि से तैयार किया जाता है और इधर हमारे पर्वो की छुट्टिया भी नही होती। इनके बोलने-चालने आदि का भी वही ढग रखा जाता है जो विदेशी है। जब यही बच्चे अपने समाज मे आते हैं, तब ये मध्यवर्गीय या निम्नवर्गीय बच्चो या लोगो से उच्च (सुपीरियर) समझकर उन्हे हेय और उपेक्षित समझते हुए उनसे सदैव अलग होते चले जाते हैं। सरकार ने भी बेसिक शिक्षा एव नगर निगम के स्कूलो की सदया उपेक्षा की, दूरगामी परिणामो को नही देखा। इस प्रकार लोगो की भावना खत्म होकर इन ईसाई पब्लिक स्कूलो मे लगी जिसका पूरा लाभ मिल रहा है इन विदेशी षड्यन्त्रकारियो को।

शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में—इन्हीं बातों पर पूर्ण चिन्तन के बाद परम राष्ट्रवादी स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के शिक्षा प्रकरण पर चर्चा करते हुए लिखा कि पहले बच्चो को देवनागरी लिपि का ज्ञान व अभ्यास कराया जाए उसके बाद कहीं अन्य भाषाए भी यथाशक्ति पढ़ाई जाए फलत इससे मूल मे भारतीयता रहेगी और विद्या भी अच्छी तरह प्राप्त कर सकता है। इसी चिन्तन पद्धति के कर्णधार एव महर्षि दयानन्द से प्रेरणा प्राप्त महान् शिक्षा शास्त्री थे स्वामी श्रद्धानन्द एवं महात्मा हसराज। जहां स्वामी जी ने गुरुकुलीय परम्परा को चलाकर देश को परम देशभक्त मनीषी विद्वान् दिए, वहीं महात्मा हसराज ने भी देश के लिए चिन्तक एव कट्टर क्रान्तिकारी भी। उस समय के डी० ए० वी० कालिजों, स्कूलो के पढे-लिखे लोग आज मिलते हैं तो उनको देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। आज भी देशभक्ति की शिक्षा उनके खून मे विराजमान है। उस समय धर्मशिक्षा का पीरिएड अवश्य होता था। क्या मजाल है कि कोई भी षड्यन्त्रकारी उनके दिल और दिमाग को बदल दे। इसलिए आवश्यक अग माना गया प्रारम्भिक शिक्षा को। आज डी० ए० वी० स्कूल, कालिज तो बढे लेकिन उनमे धर्म व राष्ट्र शिक्षा के अध्यापक घटे या न रहे, साथ ही इसके वे दुकानें बन गई परन्तु अब कुछ प्रयास कुछ कर्मठ कार्यकर्त्ताओ समर्पित भावना वालो द्वारा किया जाना प्रारम्भ किया है वह भी पर्याप्त नही है।

यह विकल्प मात्र आर्यसमाज के पास है। यदि आर्यो! ऋषि दयानन्द की पीडा आपके हृदय मे है, देश भक्ति की चिनगारिया यदि आपके अन्त.करण मे व्याप्त हैं तब इन जहरीले पब्लिक और कान्वेण्ट स्कूलो का मोह छोड़कर योजनाबद्ध अपनी भारतीय शिक्षा के साथ अपने स्कूल तैयार करने होंगे। शिक्षा अग्रेजी हिन्दी के माध्यम से दो भले ही अगह जगह स्कूलो की माग है तुम्हे अविद्या अज्ञान का अन्धकार मिटाना है। हमारे पास बहुत सारे स्कूल हैं भी लेकिन दुख है इस बात का कि हम इनको दुकानें बना बैठे और मैकाले के सपने के अग्रेजियत के अन्धे भक्त बनाने लगे। आज जरूरत है कि मैकाले की ये दुकानें बन्द की जाए।

आर्य समाज, १५ हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

आर्य समाज फेरुपुर रामखेड़ा का उत्सव

आर्य समाज फेरुपुर—रामखेडा (हरिद्वार) का पाचवा वार्षिकोत्सव २०, २१ व २२ मई को यजुर्वेद खण्ड पारायण यज्ञ सहित सम्पन्न हुआ। प० फूलसिह जी आर्य वनौरानखिरी मेरठ यज्ञ के ब्रह्मा थे। उत्सव में धर्म एव सस्कृति सम्मेलन, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, महिला सम्मेलन, तथा मद्य निषेध सम्मेलन हुये। प्रतिदिन चार व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए। अन्तिम दिन के यजमान डा० हरिप्रकाश जी व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुल कागड़ी फार्मेसी हरिद्वार थे। आदरणीय श्री आर्य भिक्षु जी प्रधान आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर तथा स्वामी वरुणवेश जी सरस्वती के प्रवचन सराहनीय रहे।

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार, ३ जुलाई, १९८३

अन्धामुगल-प्रताप नगर—प० सोमदेव शर्मा शास्त्री, अशोक नगर—प० रामरूप शर्मा; अशोक विहार - आचार्य दीनानाथ, आर्यपुरा—प० ईश्वरदत्त जी, आर के पुरम् सैक्टर ५—प० देवेश; आर के पुरम सैक्टर ६—प० हरिश्चन्द्र आर्य—आनन्द विहार—हरि नगर—श्री मुनिशंकर वानप्रस्थ, किशनगंज मिल एरिया—प० अमीचन्द मतवाला, किंग्ज्वेकैम्प—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, कालका डी० डी० ए० फ्लेट—पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; कालका जी—प० कामेश्वर शास्त्री, कृष्णनगर—डा० रघुनन्दन सिंह, गांधी नगर—प० मनोहरलाल ऋषि, गीता कालोनी—पं० राम निवास जी, ग्रीन पार्क—प० बन्देश्वर आर्य, गोविन्दपुरी—प० परमेश शर्मा, जनकपुरी सी० ३—प० शीशराम भजनीक, गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, जनकपुरी बी-३/२४—प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य—टैगोर गार्डन—डा० सुखदयाल भूटानी, तिलक नगर—श्रीमती सुशीला राजपाल—तिमारपुर—श्रीमती लीलावती, देवनगर—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, नारायण विहार—प० प्रकाशचन्द वेदालकार, सराय रोहेला—प० महेशचन्द भजन मण्डली, नगर शाहदरा—प० विश्व प्रकाश शास्त्री, पंजाबी बाग एक्टेन्शन—पं० हरिदेव सिद्धान्तभूषण—प्रीतमपुरा—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, बिरला लाइन्स—कवि बनवारीलाल शादाब मॉडल टाउन—प्रो० वीरपाल, मोतीबाग—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, महरौली—प० अमरनाथ कान्त, रमेश नगर—बलबीर शास्त्री, राणा प्रताप बाग—प० प्राणनाथ जी, राजौरी गार्डन—प० खुशीराम शर्मा, बाली नगर—प० रामदेव शास्त्री, लड्डू घाटी—श्रीमती प्रकाशवती जी, लाजपत नगर—प० अशोक विद्यालकार, विनय नगर—आचार्य विक्रमसिंह शास्त्री, सोहन गंज—प० रामरूप शर्मा, श्री निवासपुरी—प० जय भगवान मण्डली—हौज खास—प० तुलसीराम आर्य, प० चुन्नीलाल मोतीचौक रेवाड़ी।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग

आर्यसमाज गोविन्द नगर, कानपुर ६ के पदाधिकारी

प्रधान—श्री देवीदास आर्य, उपप्रधान—श्री मोहनलाल मकानी, श्री द्वारका नाथ उप्पल, श्री कृष्णलाल धामीजा, मन्त्री—श्री शुभ कुमार, उपमन्त्री—श्री त्रिलोक नाथ सूरी, श्री लाजपतराय, कोषाध्यक्ष—श्री सन्तोषपाल, पुस्तकाध्यक्ष, श्री बुलाकीदास वर्मा।

आर्यसमाज (मुनतान) देवनगर के अधिकारी

प्रधान—डा० वामदेव, उपप्रधान—श्री महावीर जी स्नातक, श्री टेकचन्द्र दीवान, मन्त्री—श्री यशपाल उबराय, उपमन्त्री—श्री राकेश वेदी, कोषाध्यक्ष—श्री हरिपाल,—पुस्तकाध्यक्ष—श्री लालचन्द्र, लेखा निरीक्षक—श्री अशोक वर्मा।

आजाद कालोनी पार्क में रामायण कथा

आर्यसमाज माडल टाउन दिल्ली के तत्वावधान मे २७ जून से २ जुलाई १९८३ तक महात्मा श्री राजकिशोर जी वैद्य द्वारा रामायण कथा का आयोजन आजादपुर कॉलोनी पार्क (निकट मदर डेरी एव शिव मन्दिर) मे बड़ी धूमधाम से किया जा रहा है। जिसमे सभी रामभक्त एवं धर्मप्रेमी सज्जन सादर आमंत्रित हैं।

पं० हंसराज वैदिक मिश्नरी का देहावसान

बड़े दुख के साथ सूचना दी जा रही है कि पंडित हंसराज शर्मा भजनोपदेशक वैदिक मिश्नरी का दिनांक १७-६-८३ को देहान्त हो गया। क्रिया रस्म पगड़ी दिनांक २७-६-८३ सोमवार, साय ४ बजे से साढ़े पाँच बजे उनके निवास स्थान १६।२० तिलक नगर नई दिल्ली मे हुई। नन्दलाल, कार्यालयाध्यक्ष—आर्य केन्द्रीय सभा नई दिल्ली।

गुरुकुल कांगड़ी में विश्व पर्यावरण दिवस

हरिद्वार ७-६-८३—विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय मे दिनांक ५-६-८३ से दो दिवसीय राष्ट्रीय सगोष्ठी का आयोजन किया गया। सगोष्ठी मे देश के अनेक संस्थानो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

इस सगोष्ठी मे कुल २१ निबन्ध प्रस्तुत किए। सगोष्ठी का समापन डा० दिग्विजय नारायण सिंह, उपमन्त्री पर्यावरण विभाग भारत सरकार के द्वारा किया गया। इस अवसर पर पर्यावरण के खतरे से जन-मानस को जानकारी देने हेतु एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। गुरुकुल कांगडी के मातृग्राम मे भी इस अवसर पर ग्रामवासियो को पर्यावरण के प्रदूषण की जानकारी देने हेतु पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

डिबाई क्षेत्र में व्यापक जनजाग्रति एवं चेतना

सफल आर्य महासम्मेलन : विशाल शोभायात्रा

अनेक सम्मेलनों की धूम

१३ जून से १६ जून, १९८३ तक उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के डिबाई कस्बे मे एक विराट आर्य सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सफल महासम्मेलन के सयोजक थे आर्यसमाज के मनीषी कर्मठ युवा विद्वान् श्री रूपकिशोर शास्त्री। सम्मेलन १३ जून, १९८३ को प्रात बृहद् यज्ञ एव ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। बृहद् यज्ञ के ब्रह्मा थे उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य शिवाकान्त उपाध्याय। दोपहर बाद ३ बजे विशाल शोभायात्रा निकली। अनेक हाथियो, घोडो, ट्रैक्टरो बैलगाडियो, मोटर साईकिलो, साईकिलो एव पैदल लोगो का जलूस देखते ही बनता था। सबसे आगे बहुत बडा बैण्ड देशभक्ति के गीत गाता हुआ गगन मण्डल को जोश से भर रहा था। विशाल शोभायात्रा के सयोजक थे, श्री मनोहर लाल जिन्दल एव श्री ठाकुरदास वर्मा।

१३ से १६ जून तक अनेक सम्मेलनो के माध्यम से जनजागृति का आह्वान किया गया। आर्य महासम्मेलन के अन्तर्गत वेद सम्मेलन ग्राम विकास एव गोरक्षा, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, शिक्षा, महिला राष्ट्रोत्थान, समाज सुधार एव आर्य सम्मेलन हुए। इस महासम्मेलन मे देश के कोने-कोने से पधारे विद्वानो का सगम हुआ। महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी इन्द्रदेव, प० शिवकुमार शास्त्री आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री प्रो० वीरेन्द्र, प० धर्मपाल शास्त्री, प० वीरेन्द्र रत्नम, आचार्य विक्रम शास्त्री, श्रीमती शास्त्री श्रीमती वेदकुमारी वेदशिरोमणि, श्री सरस्वती सुमन, श्री शिवराज शास्त्री श्री प्रेमपाल शास्त्री, प० जयप्रकाश आर्य, डा० आनन्द सुमन, डा० गणेशसिंह कौशिक, प्रो० सत्यपाल बेदार, प्रो० उत्तम चन्द्र शरर, कविवर सारस्वत मोहन मनीषी एव अनेक कविगण, श्री शोभाराम प्रेमी, श्री सत्यदेव स्नातक आदि श्री जगवीरसिंह एडवोकेट इत्यादि महानुभाव विद्वानो ने भाग लिया। मुख्य आकर्षण था राष्ट्र जागरण प्रदर्शनी का, इसकी छाप वहा के जन जीवन पर बहुत पडी। इन सम्मेलनो के माध्यम मे एक बहुत बडी जागृति एव चेतना फैली। उस सम्मेलन के मुख्य कार्य कर्ता, जिन्होने दिन रात एक करके इस विशाल आर्य जन को

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रो० रामसिंह के निधन से समाज व राष्ट्र को क्षति

नई दिल्ली। ५ जून केन्द्रीय आर्य परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज लाजपत नगर मे स्वतन्त्रता सेनानी वयोवृद्ध आर्य नेता प्रो० रामसिंह की स्मृति मे शोक सभा का आयोजन किया गया। ब्र० राजसिंह आर्य ने कहा वर्तमान मे जब देश सकट के दौर से गुजर रहा है, ऐसे समय मे उनका ससार से उठ जाना समाज व राष्ट्र के लिए घातक है। उन्होंने युवा शक्ति को आह्वान किया कि वे प्रो० रामसिंह के बताए मार्ग पर चलें।

प्रसिद्ध पत्रकार श्री नरेन्द्र अवस्थी ने अपनी श्रद्धाजलि देते हुए उन्हे वेदो का विद्वान्, महान देशभक्त व राष्ट्र का जागरूक प्रहरी बताया। डी० ए० वी० कालेज लाहौर मे क्रान्तिकारियो के सम्पर्क मे आकर वे देश की आजादी के लिए लडे। उन्होने गौ रक्षा, हिन्दी रक्षा, हैदराबाद, जम्मू-कश्मीर, के आन्दोलनो मे सक्रिय भाग लिया व निडरता से सामाजिक कार्यों मे लगे रहे।

ग्राम सिहानी में वेदप्रचार कार्यक्रम

दिनांक ११ से १३ जून १९८३ को आर्यसमाज ग्राम सिहानी जिला गाजियाबाद मे मन्त्री आर्यसमाज श्री कालीचरण जी के सहयोग से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से वेद प्रचार का विशेष कार्यक्रम रखा गया। जिसमे प० चुन्नीलाल जी आर्य भजनोपदेशक एवं प० ज्योति प्रसाद जी ढोलक कलाकार सभा की तरफ से उस ग्राम मे बहुत ही सुन्दर कार्यक्रम तीन दिन तक सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय में प्रवेश

महर्षि दयानन्द संस्कृत गुरुकुल महाविद्यालय पटेल मार्ग गाजियाबाद मे १ जुलाई से नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। अत आप अपने बच्चो के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हे गुरुकुल मे प्रवेश कराए। स्थान कम हैं। भोजन, आवास तथा शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है।

यह गुरुकुल सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से प्रथमा से आचार्य पर्यन्त मान्यता प्राप्त है।

देश जाति दलित वर्ग के उत्थान के लिए सेवा-कार्य

आर्य समाज सतभ्रावा मार्ग करोल बाग, नई दिल्ली की ओर से प्रो० रामसिंह जी के देहावसान पर शोक प्रकट किया गया। प्रो० रामसिंह जी ने सारी आयु आर्य समाज, देश-जाति, दलित वर्ग के उत्थान और संस्कृत भाषा के प्रचार के लिए जो सेवाए की, वे इतिहास मे स्वर्ण अक्षरो में अंकित होगी।

जगदीश प्रसाद शर्मा
प्रधान

मण्डी डबवाली (हरियाणा) में सामवेद परायण यज्ञ

९-५-८३ से १५-५-८३ तक श्री लाला दीवानचन्द जी सिंगला मण्डी डबवाली वालो ने अपने निवास स्थान पर सामवेद का यज्ञ कराया—जिसके ब्रह्मा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज थे—इस यज्ञ मे दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के ब्रह्मचारियो ने और ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी-अधिष्ठाता, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, गुरुकुल बठिण्डा ने पूर्ण भाग लिया।—इस शुभ अवसर पर लाला दीवानचन्द जी ने १०१ रुपये दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार को, १०१ आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल बठिण्डा को दान दिए। और ३३५ रुपये लाला दीवानचन्द जी के सम्बन्धियो तथा नगर निवासियों ने आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को दान दिए।

डिबाई क्षेत्र में व्यापक जन जागृति एव चेतना

(पृष्ठ ७ का शेष)

सफल बनाया वे थे प्रिंसिपल धर्मेन्द्रसिंह आर्य प्रधान श्री क्षेमसिंह आर्य मन्त्री, श्री रघुनन्दन लाल शर्मा, कोषाध्यक्ष, ज्ञानप्रकाश बजाज, और मूनाजी जिन्होने भोजन एव आवास की सभी सुविधायें प्रदान की। बाबू गजराज सिंह एडवोकेट श्री गगाप्रसाद निराला इत्यादि सभी क्षेत्रवासी कर्मठ कार्यकर्त्ता थे।

बाद मे सभी विद्वानो एवं [illegible] का आभार धन्यवाद हृदय से श्री [illegible] शास्त्री जी ने किया तथा शास्त्री जी ने रचनात्मक कार्य करने का भी आह्वान किया।

रजि० न० डी० सी० 759 साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रु० | वर्ष . ७ अंक ३७ | रविवार १० जुलाई, १९८३ | २६ आषाढ वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५९

पंजाब में स्थिति के नियन्त्रण के लिए फौजी शासन हो

राज्य में हत्याओं का दौरदौरा : स्थानीय पुलिस हटाई जाए

हिन्दुओं को आत्मरक्षार्थ हथियार रखने की अनुमति हो : पंजाब की भीषण परिस्थिति के नियन्त्रण के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले का प्रधानमन्त्री से अनुरोध

अमृतसर। उग्रवादियो ने शुक्रवार १ जुलाई के दिन अमृतसर नगर के घने आबादी वाले इलाके बाबा दीपसिंह बाजार मे गोली मारकर दो निरंकारी भाइयो की हत्या कर दी। २४ जून के बाद उग्रवादियो द्वारा की गई हत्याओ की गिनती नौ तक पहुच गई है। इसी दिन कपूरथला के उद्योगपति राकेश खोसला को मिले पार्सल मे एक बम मिला। इसे हिमाचल के सीमावर्ती पोंटा साहब से भेजा गया था। उपद्रवो से ग्रस्त जालन्धर तथा मलेरकोटला नगरो मे पुन कर्फ्यू प्रचलित रखा गया। सबसे अधिक चिन्ता और क्षोभ का विषय यह है कि पजाब मे अमृतसर तथा दूसरे नगरो मे उग्रवादियो की हिंसक कार्रवाइयो को रोकने मे पुलिस पूरी तरह नाकामयाब रही है। यह अत्यन्त क्षोभ का विषय है कि अनेक वारदातें होने के बावजूद अभी तक एक भी अपराधी उग्रवादी पकडा नही जा सका है। यह अत्यन्त लज्जा की बात है कि शुक्रवार १ जुलाई को निरंकारियो की हत्या जिस स्थल पर की गई है, वह पुलिस स्टेशन के अत्यन्त निकट है। यह भी दुख और क्षोभ का विषय है कि अमृतसर तथा दूसरे प्रमुख नगरो मे शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो, जब कोई वारदात या हिंसा न होती हो।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के नाम पत्र भेजकर यह ध्यान दिलाया है कि पजाब मे अराजकता का जो ताण्डव नृत्य किया जा रहा है, जिसके कारण सैकडो बेगुनाह लोगो की हत्याए की गई है, किन्तु आश्चर्य है कि पंजाब सरकार और पुलिस एक भी हत्यारे को गिरफ्तार नही कर सकी। अपराधी चोरी, डाका व हत्या करके धार्मिक स्थानो में छिप जाए और सरकार विवश होकर तमाशा देखे इससे निश्चित रूप से देश की जनता का विश्वास पजाब सरकार पर से उठता जा रहा है। श्री शालवाले ने प्रधान मन्त्री से माग की है कि पजाब के हिन्दुओ को भी रक्षा के लिए हथियार रखने की इजाजत दी जाए, पजाब पुलिस को स्थानान्तरित कर वहा पी० ए० सी० के हाथ जनता की सुरक्षा का दायित्व सौंपा जाए। स्थिति को काबू मे करने के लिए समय आ गया है कि वहा फौजी शासन लागू किया जाए।

जनता जागरूक हो

दीनदयाल शोध सस्थान के निदेशक एव जनता पार्टी के भू० पू० महामन्त्री श्री नानाजी देशमुख ने एक वक्तव्य मे कहा है कि देश मे अन्तर्राष्ट्रीय तत्त्वो तथा अलगाववादी वातावरण को देखते हुए सलाह दी है कि जब तक हिन्दू समाज अनुशासित, सगठित तथा जागरूक नही बनेगा तब तक इन पृथक्‌वादी तत्त्वो का सामना नही किया जा सकता, अत आज हिन्दू सगठन की नितान्त आवश्यकता है।

पंजाब में राष्ट्रपति शासन की मांग

दिल्ली की आर्यसमाजों का आह्वान

नई दिल्ली। रविवार ३ जुलाई के दिन आर्यसमाज दीवान हाल मे पजाब समस्या पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव दिल्ली की आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान मे आयोजित दिल्ली भर की आर्यसमाजो, आर्य सस्थाओ एव आर्यजनो की एक विशाल सार्वजनिक सभा ने पजाब मे राष्ट्रपति शासन लागू करने की माग की। स्वीकृत प्रस्ताव मे कहा गया है कि पजाब मे सरकार और कानून नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। सरकार की दुर्बल और ढुलमुल नीति इस स्थिति को पैदा करने के लिए बहुत कुछ जिम्मेदार है।

प्रस्ताव मे कहा गया है कि अकालियो का उद्देश्य किसी भी प्रकार पजाब में राजनीतिक सत्ता हथियाना है, इस काम मे उन्हे उग्रवादी तत्त्वो के अतिरिक्त पाकिस्तान से भी सहायता मिल रही है। प्रस्ताव मे इस तथ्य पर भी प्रकाश डाला गया है कि पजाब मे पुलिस का रवैया पक्षपातपूर्ण रहा है, इसलिए वहा केन्द्रीय पुलिस अधिक सख्या मे भेजी जाए और गुरुद्वारो मे छिपे अपराधियो को निकालकर दण्डित किया जाए।

स्वर्गीय लालमन आर्य के प्रति श्रद्धांजलि

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध कर्मठ नेता एव दानवीर श्री लालमन जी आर्य का २० जून को बगलौर मे हृदयगति बद हो जाने से अचानक निधन हो गया था। उनकी पुण्य स्मृति मे उनके पुत्रो ने अपने निवास स्थान पजाबी बाग मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ रखा था। जिसकी पूर्णाहुति वृहस्पति वार ३० जून को को प्रात १० बजे हुई। पूर्णाहुति के पश्चात् उनकी उच्चात्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पण की गई एव उनके जीवन के विभिन्न कार्यों पर प्रकाश डाला गया।

श्री आर्य जी एक निष्ठावान् कर्मकाण्डी एव दानवीर आर्य सज्जन थे। जीवन मे प्रत्येक प्रकार की सफलता उन्होने प्राप्त की— धन-धान्य, पुत्र-पुत्रिया पौत्र, नातिया— बडा ही सम्पन्न एव आदर्श कर्मकाण्डी परिवार—यह सब आर्य जी की धर्म के प्रति आस्था एव कर्म काण्ड मे निष्ठा का ही फल था। उन्होने ६१ वर्ष की उम्र मे वानप्रस्थ ग्रहण कर समाज सेवा एव वेद प्रचार के कार्य को ही अपना समस्त समय प्रदान किया। ऐसे महान् व्यक्तित्व के चले जाने से आर्य जगत की जो क्षति हुई हैं उनका पूर्ण होना कठिन है। सन्तोष इस बात का है कि उनका सारा परिवार उनके मार्ग पर चलता हुआ आर्यसमाज की सेवा मे उसी प्रकार योगदान देता है जैसे वह देते थे। श्रद्धांजलि देने वालो मे श्री स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, लाला रामगोपाल जी प्रधान एव श्री ओम्प्रकाश त्यागी, मन्त्री सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, श्री सरदारी लाल वर्मा उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य सत्यप्रिय जी हिसार, प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा प० शिवाकांत उपाध्यक्ष एव श्री परमानन्द जी के नाम उल्लेखनीय है।

हम आर्यसन्देश परिवार की ओर आर्य जी के परिवार से सवेदना प्रकट करते हैं।

दो विदेशियों एवं ३ ईसाइयों की शुद्धि एवं विवाह संस्कार

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के तत्त्वावधान मे एक २८ वर्षीया जापानी युवती एक २६ वर्षीया जर्मन युवती एव ३ ईसाई युवक-युवतियो की शुद्धि युवा विद्वान् श्री रूपकिशोर शास्त्री एम० ए० एम० फिल० रिसर्च स्कॉलर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। शुद्धि के समय शास्त्रीजी ने वैदिक धर्म एव ईसाई मजहब की तुलनात्मक चर्चा की। वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सुन्दर ढग से समझाई। कुछ दिनो पश्चात् अब सभी आर्यो (हिन्दुओ) के साथ पाणिग्रहण सस्कार करा दिया गया। इन सभी शुद्ध हुए एव नवविवाहित दम्पत्तियो को आर्यसमाज के अधिकारियो, सदस्यो एव आर्यसन्देश के पाठको की ओर से समस्त शुभ कामनायें, आशीर्वाद एव बधाई। —सुभाष विद ~~र, मन्त्री,

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक— प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

भगवान् की भक्ति से ऐश्वर्य की प्राप्ति

—प्रेमनाथ, सभा प्रधान

भग एव भगवा अस्तु देवास्तेन वय भगवन्त स्याम।
त त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स तो भग पुर एता भवेह।
॥ यजु० ३४।३८॥ ॥ऋ० ७ ४१।५॥

वसिष्ठ ऋषि, भगवान् देवता, निचृत त्रिष्टुप छन्द धैवत् स्वर।

शब्दार्थ—(हे सर्वाधिपते महाराजेश्वर) (आप) [भग] भजनीय सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त और समस्त ऐश्वर्य के दाता होने से [एव] ही (हमारे) [भगवान्] पूजनीय सकलैश्वर्य सम्पन्न देव [अस्तु] हो। [देवा] हे विद्वानो! [तन] उसी भगवान के सहाय से [वयम्] हम [भगवन्त] सकलैश्वर्ययुक्त [स्याम] होवे। [भग] हे अखिल शोभायुक्त सकलैश्वर्यप्रद परमेश्वर! [सव] सब सज्जन (सब ससार) [इत] ही निश्चय करके [तम] उस [त्वा] आपकी [जोहवीति] बहुत प्रशसा करता है (अथवा हृदय मे आह्वान करता है) [स] सो आप [भग] हे ऐश्वयप्रद! [इह] इस ससार मे [न] हमारे [पुर एता] अग्रगामी] और आगे-आगे [हम को] सत्य कर्मो से बढाने वाल [भव] हूजिए।

भावाथ—मनुष्या को चाहिए कि वे परमेश्वर वा उसके उपासक धार्मिक विद्वान उनके सहाय से सिद्ध तथा श्रीमान होव। जा जगदीश्वर हम पर माता-पिता के समान कृपा करता है उसकी शक्ति वा उसके बताए वेदमार्ग पर चल कर ही हम एकत्र ऐश्वर्य वाले धनाढ्य हो सकते हैं हैं। अर्थात् सम्पूर्ण ऐहिक वा परमार्थिक सुख का लाभ कर सकते हैं।

अतिरिक्त व्याख्या—ऋषि दयानन्द अत्युत्तम भक्ति ग्रन्थ 'आर्याभिविनय' मे इस वेद मन्त्र की भक्तिभावपूर्ण व्याख्या निम्न शब्दो मे करते है—

हे सर्वाधिपते! महाराजेश्वर! आप 'भग' परमैश्वर्यस्वरूप होने से भगवान् हो। हे 'देवा विद्वानो! तेन (भगता प्रसन्नेश्वर सहायेन) उस भगवान् प्रसन्न ईश्वर के सहाय से हम लोग परमैश्वर्ययुक्त हा। हे 'भग परमेश्वर सर्वससार तन्त्रा उस आप को ही ग्रहण करने की अत्यन्त इच्छा करता है, क्योकि कौन ऐसा भाग्यहीन मनुष्य है जो आपको प्राप्त होन की इच्छा न करे। सो आप हम को प्रथम से ही प्राप्त हो, फिर कभी हम से आप और ऐश्वर्य अलग न हो। आप अपनी कृपा से इसी जन्म मे परमैश्वय का यथावत् भोग हम लोगो को कराए। पर जन्म मे तो कर्मानुसार फल होता ही है। तथा आपकी सेवा मे हम नित्य तत्पर रह।

ऋषि के उपकार

— विपिनेश

प्रिय आर्यवन्द! कीजिए जयकार झूमके।
फिर गान कीजिए, ऋषि-उपकार झूमके॥
वन पर्वता मे कष्ट थे अगणित सहे ऋषिवर।
सीखा कही था योग अष्टाध्यायी कही पर॥
योगी बन, ऋषिवर बने, सन्देह क्या इसमे।
गुरुवर तो गुरुवर ही रह सशय नही इसम॥
गुरु ने दिया आदेश तो ऋषिवर! था शिर धारा।
वेदो का बजा नाद जग आश्चर्यमय सारा॥
वेदा क युक्तियुक्त भाष्य किए थे कभी।
उव्वट, महीधर सायण थे हतप्रभ रहे सभी॥
ससार के सब दार्शनिक प्रभावित थे सब ऋषिवर।
बुद्धि का लोहा मानते है जग के विद्वद्वर॥
है सत्यमेव जयते नानृतम्' देखा जग ने।
अस्ति दीप्तिमान सत्य अवनी अपि गगने॥
खण्डन कुरीतियो का तुमने कर दिया ऋषिवर।
तम तो विलीन हो गया, चमके ऋषि बन दिनकर॥
होता न प्रादुर्भाव तो ऋषियो का वैदिक धर्म।
अस्तित्व मे क्या होता, क्या जन जानते कुछ मर्म।
स्वातन्त्र्य का तुमने चलाया था ऋषे! सग्राम।
थे देशहित मे कृत्य ही ऋषिवर! सभी निष्काम॥
फिर क्यो न करें हम ऋषि-जयकार झूम के।
कृतज्ञ है पाए हम, उपकार झूम के॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती : पत्रों के आलोक में

—डा० कमल पुंजाणी

'मेरे विचार मे विद्वज्जनो के पत्र मनुष्य के पत्र मनुष्य के समस्त कथनो मे श्रेष्ठ हैं।'

—फ्रांसिस बेकन।

"व्यक्ति के महत्त्व से उनके पत्रो का महत्त्व समाज और ससार मे स्वीकृत हो जाता है। महापुरुषो की जीवनियों के समान उनके पत्र भी हमे समुन्नत जीवन के लिए प्रेरित करते हैं, क्योंकि पत्र अपने स्वरूप की दृष्टि से जीवनी और आत्मकथा के अधिक निकट हैं। साधारण व्यक्तियो के पत्रो की अपेक्षा प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियो के अधिक पत्र मूल्यवान होते हैं। अत वे काल कवलित न होकर समाज के लिए दुर्लभ, मूल्यवान् और स्थायी सम्पति बन जाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र भी हमारे राष्ट्र की बहुमूल्य सम्पत्ति हैं।

प्रकाशित पत्रसग्रह—महर्षि दयानन्द सरस्वती केवल आर्यसमाज के सस्थापक ही नही थे बल्कि राष्ट्र के उन्नायक भी थे। उनके पत्र स्वातन्त्र्य-सग्राम की भूमिका प्रस्तुत करते है। वैदिक सस्कृति के प्रति उनकी अपार आस्था, उत्कट राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्कर्ष मे उनका बहुमूल्य योगदान इत्यादि महत्वपूर्ण विषयो की प्रामाणिक जानकारी उनके पत्रो के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

यह विचित्र सयोग है कि हिन्दी मे पत्र-साहित्य' का प्रारम्भ स्वामी जी के पत्र-सग्रह के प्रकाशन से होता है। सन १९०४ ई० मे स्व० महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी) ने सवप्रथम स्वामी जी के पत्रो का एक सग्रह प्रकाशित कराया था। इस पत्र सग्रह मे स्वामी के पत्रो के अतिरिक्त उनके लिखे गए अन्य व्यक्तियो के पत्र भी थे, तदनन्तर सन् १९०९ ई० मे प भगवद्दत जी ने अथक परिश्रम और खोजबीन करके स्वामी के पत्रो का एक विशाल सकलन प्रकाशित किया जिसका शीर्षक है—'ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार।' इसी शीर्षक से एक दूसरा पत्र सग्रह प० चमूपति द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिन्दी मे पत्र सग्रह के प्रकाशन का उपक्रम महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्रो से ही हुआ है।

पत्रों मे प्रतिबिम्बित व्यक्तित्व—किसी भी महान साहित्यकार, समाज-सुधारक और तत्त्वचिन्तक के वास्तविक व्यक्तित्व का परिचय उनके पत्रो द्वारा ही मिल सकता है। पत्र-लेखन कला के मर्मी विद्वान जेम्स हॉवेल ने उचित ही कहा है—जैसे कुंजियां कोषागार खोल देती हैं, इसी प्रकार पत्र हृदयो को अभिव्यक्त कर देते हैं।

स्वामी जी को हम केवल उच्चकोटि के विद्वान, तत्त्वचिन्तक, समाजसुधारक एव देशभक्त के रूप मे ही जानते हैं, परन्तु प० भीमसेन जी, लाला कालीराम, बाबू छेदीलाल, प० दयाराम, मुन्शी समर्थदान आदि को लिखे गए उनके पत्रो से स्पष्ट होता है कि वह अत्यन्त लोकदक्ष, व्यवहारकुशल, स्पष्ट वक्ता एव सामाजिक नेता भी थे। 'रुपए पैसे' के हिसाब किताब मे स्पष्टता लेन देन मे स्पष्टता योग्य अयोग्य कार्यकर्ताओ की परख, प्रेस सम्बन्धी सभी आवश्यक ज्ञान, टाइप, छपाई, कागज आदि की पूरी जानकारी उन्हे रहती थी। सन्त एमर्सन का कथन है कि छोटी-छोटी एव क्षुल्लक-सी प्रतीत होने वाली बातों मे ही सच्ची महत्ता छिपी हुई है—"स्वामी जी इस दृष्टि से भी सच्चे महापुरुष थे।

राष्ट्रप्रेम—स्वामी जी को सदैव ही स्वदेश प्रेम एव भारतीय सस्कृति की चिन्ता रहती थी। उन्होंने अपने शिष्य और प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश भेजते समय अपने १५ जुलाई १८७२ को एक पत्र मे लिखा था देखो तुम विदेश मे जाकर अपने को भारत का एक बहुत छोटा विद्यार्थी बताना और कोई ऐसा काम न करना जिससे अपने देश का ह्रास होवे।' इन शब्दो मे स्वामी जी की उत्कृष्ट स्वदेशभक्ति प्रतिध्वनित है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्कर्ष मे योगदान—स्वामी जी की मातृभाषा गुजराती थी तथापि हिन्दी भाषा पर उनका असाधारण प्रभुत्व था। सस्कृत के तो वह प्रकाण्ड पडित थे ही सन् १८७२ तक उनका पत्र-व्यवहार सस्कृत मे ही होता था। सन् १८७३ से १८८३ तक हिन्दी मे नियमित रूप मे वह पत्र लिखते लिखाते थे। हिन्दी को वह आर्यभाषा' कहते थे। हम आज तक भी हिन्दी को राष्ट्र-भाषा' की पद-प्रतिष्ठा नही दे पाए है, जिसके लिए स्वामी जी ने आज से करीब सौ साल पूर्व प्रयास किया था। लाला कालीचरण जी को १४ अगस्त सन् १८८२ ई० मे उन्होने अपने एक पत्र मे लिखा था—'आर्यभाषा के राज-कार्य मे प्रवृत्त होने के अर्थ शीघ्र प्रयत्न कीजिए।'

इस प्रकार स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्रो मे उनके महान् व्यक्तित्व की झांकी मिलती है जो हमे उनके जीवन-चरित्र की तरह—समुन्नत जीवन की प्रेरणा देते हैं।

१११२, आर० टी० जाडेजा एस्टेट० गुरुद्वारे के निकट रामनगर, (गुजरात)
३६१००१६

ज्ञान-विज्ञान दोनों आवश्यक

ओ३म् ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वत धिय । क्षत्र जिन्वतमुत जिन्वत नृन् ।
धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वत विश ।।ऋग्वेद ८ ३५ १६-१८

सच्चे ब्राह्मण की अभिवृद्धि से बुद्धि बढेगी, सच्चे क्षत्रिय की अभिवृद्धि से वीरता बढेगी। धेनु की अभिवृद्धि से जन-जन जनता की शक्ति बढेगी। सच्चा सुख पाने के लिए क्षत्रियों के बल के साथ ब्राह्मणों के तेज का बल भी होना चाहिए। शारीरिक बल के साथ आध्यात्मिक शक्ति-ज्ञान के बल के साथ विज्ञान का बल भी होना चाहिए।

यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए

आर्यसमाज के दस नियमो मे सातवा महत्वपूर्ण नियम है "सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।" इस महत्वपूर्ण नियम के तीन भाग हैं पहली व्यवस्था है कि सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार करें यह हुआ सामान्य सिद्धान्त, सभी प्राणियों एवं मानवमात्र से मानव को प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए, इस नियम की दूसरी व्यवस्था है कि सबसे प्रीति के साथ धर्मानुसार व्यवहार करना चाहिए। हमारे व्यवहार मे ऐसी कोई बात नही हो जो धर्म के प्रतिकूल हो। धर्म के वेसे कई लक्षण हैं, परन्तु धर्म का यह एक लोक प्रचलित लक्षण है --'वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन एतच्चतुर्विध प्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्' वेदो स्मृतियो मे प्रदर्शित यम-नियम, सच्चा आचार चरित्र हमे अपनाना चाहिए। दूसरो से ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसा कि दूसरो से अपेक्षा करते है और नियम की तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण व्यवस्था है कि हमे सब के साथ यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए। इसका सीधा-सादा अर्थ हुआ कि सज्जन के साथ सज्जनता का शठों के साथ शठता का, जैसा जो व्यवहार करता हो, उसके अनुसार उससे वैसा व्यवहार करना चाहिए। नीति की सीख है कि जैसा सम्मुख व्यक्ति और मनुष्य जैसा व्यवहार करें, उससे उसी तरह यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।

यह कितने अधिक खेद और पश्चात्ताप की बात है कि आज पजाब मे उग्रवादी खुलकर हिंसा कर रहे हैं। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान एव वीर प्रताप के संचालक श्री वीरेन्द्र को पार्सल बम भेजा गया। उनके नाम भेजे पार्सल को खोलते ही दो कर्मचारी शहीद हो गए और तीन घायल हो गए हैं। पजाब केसरी के यशस्वी सम्पादक लाला जगतनारायण की हत्या के बाद पत्रकार श्री वीरेन्द्र जी को बम भेजने की घटना स्पष्ट इगित कर रही है कि अकाली और उग्रवादी पजाब मे निष्पक्ष स्वतन्त्र लेखन बर्दाश्त नही करते। उसी के साथ सुल्तानपुर लोदी और अमृतसर मे पुजारियो की हत्या एव अनेक पुलिस कर्मचारियों की दिन दिहाडे हत्या से स्पष्ट है कि ये उग्रवादी केवल बातो या धमकियो से सीधे रास्ते पर नही आते दीखते। इतना ही नही, केन्द्रीय गृहमन्त्री ने अकाली दल के सम्मुख नदी जल विवाद तथा चण्डीगढ आदि प्रश्न न्यायधिकरणो को सौंपने की बात कही थी उससे पूर्व अकाली स्वय उस न्ययाधिकरणो का सौंपने की बात कहते थे परन्तु उन्होंने दोनों ही न्याय सगत प्रस्ताव ठुकरा दिये हैं। सरकार अकालियो द्वारा अनिच्छा प्रकट करने के बावजूद उन्हे बातचीत के लिए आमन्त्रित करती रही है उस सम्बन्ध में विरोधी दलो का दृष्टिकोण भी युक्तिसगत नहीं है। एक ओर वे उग्रवादियो से सख्ती से व्यवहार करने की बात करते हैं तो चौधरी चरण सिंह को छोड कर दूसरे विरोधी अकालियो के अराष्ट्रीय मूर्खता पूर्ण रवैय की खुल कर निंदा नहीं करते।

अब समय आ गया है जब अकालियो और उग्रवादियो के साथ दृढता से यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए। यह ठीक है कि हमें जीवन मे सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार व्यवहार करना चाहिए परन्तु जीवन में यदि कोई तत्व साप और बिच्छू जैसा व्यवहार करता हो तो उन्हें दूध पिला कर बढाने के स्थान पर ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए। यदि हमारे सम्मुख साप या बिच्छू आंए तो साप को लाठी से तथा बिच्छू को घन पत्थर या ईंट के टुकडे से नष्ट कर देना चाहिए। वेदो में स्पष्ट कहा गया है कि हमे जीवन में सांप और बिच्छू की वृत्ति नहीं अपनानी चाहिए परन्तु यदि कोई हमसे वैसा सांप बिच्छू जैसा व्यवहार करें तो हमें उसी की भाषा और मुहावरे में जम कर मुहतोड़ उत्तर देना चाहिए। नीति की सीख है कि जैसा शत्रु हो, उससे वैसे शस्त्र का व्यवहार करना चाहिए। ठीक है हमें दूसरों से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार बर्तना चाहिए यदि हमारे गाल पर कोई एक थप्पड़ मारे तो उसके सामने दूसरा गाल करना कायरता है, परन्तु उसके एक थप्पड़ का जवाब घूंसे या डण्डे से देना ही सच्ची नीति है, पजांब में अराजकता [illegible] उग्रवादी तत्व खुलकर खेल रहे हैं। उनसे सौजन्य या अहिंसा का व्यवहार मूर्खता और कायरता है। उन राष्ट्रविरोधी तत्वों को दृढ़ता से सदा के लिए नष्ट करना ही [illegible] यथायोग्य व्यवहार करना होगा।

चिट्ठी-पत्री

पंजाब में न्यायोचित कठोर कदम उठाए जाएं

श्री मती इन्दिरा गाधी ने विदेशी यात्रा से लौटते ही विपक्षी दलो को इस बात के लिए फटकार बताई है कि विपक्षी दलो ने पजाब में हो रही हिंसा की निन्दा नही की। केन्द्र की इस प्रकार की घोषणाओं मात्र का उत्तर पजाब के उग्रवादी अपनी ति विधियो मे अधिक तीव्रता लाकर दे रहे है। २५-६-८२ के अमर उजाला के समाचार के अनुसार "वीर प्रताप" के कार्यालय मे बम का विस्फोट होना गम्भीर चिन्ता का विषय है। लाला जगतनारायण बलिदान हो चुके हैं। उनके उत्तराधिकारी एव उनके सयोग्य पुत्र श्री रमेश को धमकिया दी जा चुकी हैं। श्री वीरेन्द्र जी, मालिक एव सम्पादक वीर प्रताप को भी धमकिया दी जा चुकी हैं। अब वे धमकिया कार्यान्वित होने की ओर अग्रसर हैं। अगर कही श्री वीरेन्द्र जी का बलिदान हो गया तो पजाब का हिन्दू नियत्रण खो बैठेगा। श्री वीरेन्द्र जी मात्र हिन्दू अथवा पत्रकार नही हैं। वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान हैं। आर्य जगत को गम्भीर चोट पहुचने पर पजाब का आर्य (हिन्दू) निश्चिन्त नही बैठेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि बिना गहरे एव छिपे समर्थन के सिख इतनी उग्रता पर नही आ सकते। न्यायोचित एव कठोर कदम के उठते ही उग्रवादी शान्त हो जाएगे। सरकार को उचित है कि भारतीय-मनीषियो से मार्ग निर्देशन प्राप्त कर न्यायोचित एव कठोर कदम उठाने मे तनिक भी सकोच न करें।

—धर्मवीर विद्यालकार ५, अशोक नगर, पीली भीत

आर्यसमाज का असली स्वरूप

आर्यसमाज बादीकुई (जयपुर) राजस्थान के साप्ताहिक यज्ञ के उपरान्त आयोजित कार्यक्रम मे आर्य बन्धु "विचित्र" बनवारी लाल मीणा, इजीनियर ने सभी आर्य बन्धुओ का ध्यान एक महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर आकृष्ट किया कि आर्यसमाज सस्था विश्व के सभी मनुष्य मात्र के कल्याण की सस्था है या केवल हिन्दुओ की। सिद्धान्तत यद्यपि सभी सहमत तो होते हैं कि आर्यसमाज किसी वर्ग विशेष या सम्प्रदाय विशेष की सस्था नही है अपितु विश्व के प्रत्येक मानव प्राणी के कल्याणार्थ बनी सस्था हैं, तथापि इस सस्था मे हिन्दुओ के बाहुल्य के कारण आर्यसमाज सस्था व इससे सम्बद्ध सभी कार्यकारिणी लघु सस्थाओ मे हिन्दू लोग अपनी हिन्दू विचारधारा को हावी करने मे तत्पर रहते हैं जिससे इस सस्था को भारी नुकसान पहुचता है। विश्व के अन्य सम्प्रदाय के लोगो के दिमाग मे आर्यसमाज हिन्दुओ की सस्था के रूप मे चित्रित होने के कारण अन्य सम्प्रदाय के लोगो को आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित करने मे अत्यन्त कठिनाई आती है। धर्म परिवर्तन जैसे मामलो मे भी आर्यसमाज की प्रतिक्रिया इसकी अपनी विचारधारा के विरुद्ध है। कई भारतीय अधिनियमो मे भी आर्यसमाज को हिन्दू सम्प्रदाय का ही अग घोषित किया गया है जैसे कि बौद्ध जैन, सिक्ख इत्यादि को, जो कि बिल्कुल गलत है। आशा है पाठक इस सदर्भ में अपने विषय निम्न पते पर भेजेंगे।

—विचित्र बनवारी लाल मीणा, इजीनियर, पोस्ट बादी कुई, जयपुर

बापू वाणी

- अगर आप ईश्वर से डरें तो मनुष्य का डर छूट जाएगा।
- विवाद और सन्देह सभी धर्मों के बारे में है। जहा प्रकाश है वहा अधकार भी।
- गरीबो के लिए कार्य करने से बढकर ईश्वरोपासना का और कोई ढग मैं सोच नही सकता।
- हिन्दू धर्म अनमोल रत्नो से भरा अगाध समुद्र है।
- त्याग ही जीवन है। आसक्ति मृत्यु।
- हिन्दुत्व कोई सम्प्रदाय नही वह तो एक जीवन-पद्धति है।

प्रेम और न्याय

जहा पर प्रेम है, वहा पर प्रभु भी हैं। प्रेम ईश्वर का रूप है, प्रेम दया का स्वरूप है। सच्चा प्रेम ईश्वरीय न्याय है। प्रेमी प्रभु के साथ रहता है। यदि ससार मे विचरते समय मनुष्य न्याय और प्रेम को साथ रखता है तो वह दया की मूर्ति बन जाता है। जब वह स्वार्थहीन होकर कार्य करता है, तब ईश्वर का आशीर्वाद या मानव जीवन का भरपूर लाभ उठाता है। प्रेम और न्याय ही मानवता की सच्ची पूजी हैं। प्रेम परमेश्वर है, उनके न्याय के अन्तर्गत ही इस ससार का सारा कारोबार चल रहा है।

द्रौपदी कोचर, ए-२७, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-११००४९

हिन्दू राष्ट्रवाद तथा आर्यसमाज

कुछ मास पहले जालन्धर से प्रकाशित होने वाले पत्र 'आर्यमर्यादा' मे मैने ये विचार प्रकट किए थे कि आर्यसमाज 'हिन्दूवाद' मे ग्रस्त होकर अपने स्वरूप को धूमिल कर रहा है तथा अपने कार्य को प्रभावहीन कर चुका है। इस हिन्दूवाद' अर्थात् अपने को हिन्दू समाज का अभिन्न अंग मानने की भावना से आयसमाज मे व्यावहारिक रूप से जातिवाद तथा फलित ज्योतिष की भ्रान्तिया—विवाह आदि कार्यों मे निश्चित दिनो के महत्त्व का मानना प्रचलित हो गया है। उपासना की दृष्टि से भी आर्यसमाज मे ऋषि दयानन्द के दृष्टिकोण को छोडकर हठयोगादि की प्रवृत्तियो का प्रचार हो रहा है।

मैं हिन्दू समाज के विरुद्ध नही। यह भी समझता—मानता हू कि हिन्दू समाज के ह्रास से वैदिक मान्यताओ का आधार क्षतिग्रस्त होता है। पर देश मनुष्य जाति तथा हिन्दू समाज के उत्कर्ष के लिए भी आर्यसमाज को अपना स्वरूप स्वच्छ करना चाहिए और अपनी मान्यताओ पर दृढ रहकर उनका प्रचार करना चाहिए। ऐसा करने से हिन्दू समाज अधिक प्राणवान होगा।

इसी हिन्दूवाद' का एक उग्र रूप 'हिन्दू राष्ट्रवाद है। अर्थात् भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाए। अभिप्राय यह है कि भारत मे हिन्दू धम की मान्यताओ के अनुसार शासन चले दण्डविधान हो, तथा शासन की प्रक्रिया हिन्दू धर्म के प्रसार म सहायक हो। स्वभावत इसका एक पर्याय हिन्दू धर्म को न मानने वालो को अपेक्षाकृत हीन स्थान दिया जायगा।

अभी-अभी हिन्दू राष्ट्रवाद के समर्थक श्री बलराज मधोक का एक लेख प्रकाशित हुआ है उसम विचार दिया गया है कि "जो मुसल्मान हिन्दू सस्कृति के अनुयायी न हो, उनको वोट का अधिकार न दिया जाए।" आर्य जगत' के हिन्दू राष्ट्र अक में भी उन्होने लिखा था कि हिन्दू राज्य में कोई सिक्ख-बौद्ध जैन या वैष्णव बने, इसकी पूरी छट होगी, परन्तु ईसाई या मुसलमान बनने की छूट नही दी जा सकती। डा० प्रशान्त विद्यालकार ने भी इसी अक मे लिखा था—'देश के प्रति निष्ठा तथा मुसलमानो के मताधिकार पर रोक।'

व्यक्तिगत रूप से किसी के ये विचार हो तो ठीक है, पर आर्यसमाज पर इनको क्यो लादा जाए। क्या देश के लिए बलिदान होने वाले आर्य शहीदो ला० लाजपतराय, सरदार भगतसिंह, स्वा० श्रद्धानन्द तथा राम प्रसाद बिस्मिल आदि के ये ही विचार थे।

भारतवर्ष की वर्तमान परिस्थितियो में हिन्दू राष्ट्र की स्थापना न तो सम्भव है न व्यवहार्य है और न वाञ्छनीय है।

सबसे पहली तो बात यह है कि जब भी किसी देश मे धर्म को राष्ट्र के साथ जोडा गया है सिवाय रक्तपात और कलह के और कोई उपलब्धि नही हुई, आयरलैण्ड, ईरान, पाकिस्तान, बागलादेश और वर्तमान पजाब इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। एक ईसाईमत के दो विभागो रोमन कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेण्ट को लेकर बीसियो वष पहले आयरलैण्ड मे जो अन्त कलह प्रारम्भ हुआ था वह हजारो प्राणो की बलि लेकर भी अभी तक शान्त नही हुआ। ईरान का नरसहार मुसलमान मुसलमान मे है। ईरान के धार्मिक शासक इमाम आयतुल्लाह खोमैनी के आदेश निर्देश से जितने आदमियो का वध हुआ है उनकी सख्या हजारो मे है। बागलादेश मे एक करोड के लगभग हिन्दू नारकीय दशा मे हैं तथा पजाब मे धम का नाम लेकर जो निर्दोष प्राणियो का सहार हो रहा है उसने सारे भारत मे वितृष्णा की लहर चला दी है। आने वाले बीसियो वर्षो तक पजाब का वातावरण शान्त और स्वाभाविक नही हो सकेगा।

खालिस्तान के विषय मे 'इण्डिया टूडे' मई १९८३ के २० पृष्ठ पर श्री बलवीर सिंह सन्धु ने जो खालिस्तान का सविधान दिया है उसकी एक शर्त यह है कि "जो सिक्खो के अतिरिक्त लोग होगे उनको सिक्ख धर्म के अनुसार चलना होगा। पर उन्हे शासन मे न्यायपालिका ओ मे और प्रबन्ध की सभाओ मे कोई ऊचा स्थान नही मिलेगा।

सम्भवत ऐसी अवस्था म कोई भी गैर सिक्ख खालिस्तान मे नही रह सकेगा।

इस अशान्ति और कलह का एक मूल कारण है। धम, विशेषकर जत्थेबन्दी का धम मनुष्य के मन पर ऐसा प्रभाव डालता है कि वह स्वाभाविक मानवीय स्तर पर कुछ सोच ही नही सकता। १९४७ के उभय पक्षी भयकर नरसहार मे पाकिस्तान की दृष्टि मे हिन्दुओ को मारने वाले सब मुसलमान गाजी थे और हिन्दुओ के हाथो मरने वाले सब मुसलमान शहीद थ। एक हिन्दू लडकी को बहकाकर यदि कोई मुसलमान ले जाता है तो उस लडकी के मा-बाप और परिवार के दुख की किसी मुसलमान को परवाह न होगी सबको यही खुशी होगी कि लडकी ईमान के रास्ते पर आ गई। यही भावना हिन्दुओ की दृष्टि मे शुद्ध होने वाली मुसलमान लडकी के विषय मे होगी।

शासन का-राज्य का आधार यदि धर्म होगा तो यही अन्धापन अवश्य आ जाएगा। एक धार्मिक शासन के अन्तर्गत दूसरे धर्म के लोगों को न तो कभी बराबरी का दर्जा मिल सकता है और इतिहास साक्षी है कभी मिला भी नहीं।

वैदिक धर्म-मानव धर्म

सामान्यत हिन्दू धर्म और विशेषत वेद को धर्ममूल मानने वाले आर्य समाज की स्थिति बिल्कुल अलग है। वेद विशुद्ध मानवता का ग्रन्थ है मानव धर्म का ग्रन्थ है। देश जाति, सम्प्रदाय, पीरी, पैगम्बरी-रूढियो सबसे उपर। वैदिक घोष है 'माता भूमि पुत्रोऽह पृथिव्या'। मानव मात्र की माता पृथ्वी है और मानव मात्र उसके पुत्र हैं, समान रूप से अधिकारी। वर्तमान युग के वेद उद्घोषक ऋषि दयानन्द ने तो धर्मगुरुओ की आलोचना करके व्यक्तियो के नाम पर होने वाले धार्मिक वाद विवादो का निरस्त करने का प्रयत्न किया है।

—सत्यदेव विद्यालंकार

वैदिक धर्म तथा उसके आधार पर पल्लवित हिन्दू धर्म मे ब्रह्म और क्षत्र दो अलग शक्तिया हैं। ब्रह्म अर्थात् ब्राह्मण का सम्बन्ध धर्म से ह तथा क्षत्र अर्थात् क्षत्रिय का सम्बन्ध राजनीति से है। राजनीति शास्त्र अलग है धर्म शास्त्र अलग है। राजा सम्पूर्ण प्रजाओ को एक दृष्टि से देखने वाला है। ब्रह्मत्व का उत्कृष्ट आदर्श सन्यासी है जो धर्म का उज्ज्वल स्वरूप है वह राजनीति के दलदल मे नही फसता।

इसके विरुद्ध ईसाई धर्म तथा इस्लाम मे पोप और खलीफा धर्मगुरु है और राज्य शक्ति के केन्द्र भी। इन धर्मो के राज्यो मे धमगुरु ही राजनीतिक गतिविधियो का सचालन करते है। ईसाई समाज के विकास मे यह अवस्था गुजर चुकी है। ईसाई देशो मे राजनीति राजनीतिज्ञो के हाथो मे है पादरियो के हाथो मे नही। इसलिये शासन अपेक्षाकृत निष्पक्ष और स्वस्थ होता है। पाकिस्तान जैसे इस्लामी देशो मे नई धार्मिक प्रबल भावना मे शासन फिर मौलवियो के हाथो मे पकडा दिया है। अर्थ प्रणाली और दण्ड प्रणाली विकसित मानवीय विचार धाराओ से परे हटकर धर्म की रूढियो मे फस रही है।

भारत मे हिन्दू राष्ट्र' का नारा लगाने वाले राजनीति को फिर साधु-सन्यासियो के हाथो मे देना चाहते हैं। इससे एक ओर तो सन्त और सन्यासी भ्रष्ट होगे शक्ति का मद उन्हे वासनाओ मे खीच लाएगा और दूसरी ओर राजनीति का आधार स्वच्छ दृष्टिकोण का चिन्तन न होकर अन्धी श्रद्धा होगा। आजकल पजाब का अकाली आन्दोलन इस बात का अच्छा उदाहरण है।

इस देश की वर्तमान अवस्था मे 'हिन्दू राष्ट्र अर्थात् देश मे हिन्दुओ का ही राज्य हो यह विचार देश के टुकडे-टुकडे कर देगा। इस देश मे केवल हिन्दू ही नही बसते। करोडो अन्य धर्मों के लोग भी हैं। प्रत्येक धर्म के लोग अपना-अपना राष्ट्र भाग मागेंगे। करोडो की सख्या की जनता को दबाया नही जा सकता। हिन्दू राष्ट्र मागने वाले खालिस्तान का विरोध कैसे कर सकते।

भिन्न धर्मों के लोगों को मिलाकर एक राष्ट्र बनाने का उपाय तो केवल यही है कि धार्मिक भेदो की चर्चा न कर राष्ट्र का आधार केवल मानवीय मूल्यो को ही माना जाय। इसके बिना न राष्ट्र की एकता रहेगी न सेना का सामजस्य रहेगा और न प्रशासन को साम्प्रदायिक गधलेपन से बचाया जा सकेगा।

आर्यसमाज की दृष्टि से तो हिन्दू राष्ट्रवाद भयकर रूप से घातक है। हिन्दू नाम से जो समाज के तत्त्व सामने आते हैं उनमे आर्यसमाज का और उसके विचारो का कहा स्थान है? धर्मनिरपेक्षता का आधार मानकर राज्य चलाने वालो को आगे ही तान्त्रिको ने, ज्योतिषियो ने, साधुओ ने, सन्तो ने, तीर्थों ने, मकबरो ने घेर रक्खा है। धर्म का नाम मुख्य होने पर तो न जाने कितने ही सिद्ध बाबाओ, आचार्यों और गुरुओ की सेना राजनीति पर छा जाएगी। इन धार्मिक पाखण्डभरी व्यवस्थाओ के नगाडो के शोर मे आर्यसमाज की तुरही की आवाज कौन सुनेगा।

आर्यसमाज की स्थिति वैसे भी विचित्र है। अपनी सस्थाओ के उत्सवो तथा जयन्तियो को मनाते समय हम शासन के स्तम्भो को लाकर मस्तक पर बिठाते है और उनको प्रसन्न करने के लिए बीस सूत्री और पाच सूत्री कार्यक्रमो से अपनी सहमति प्रकट करते हैं पर अपने समाचार पत्रो मे हिन्दू राष्ट्रवाद' के समर्थन मे खूब लिखते है। यह दो रगी नीति कहा तक चलेगी?

अत सिद्धान्त की दृष्टि से, राष्ट्र की व्यवस्था की दृष्टि से तथा व्यावहारिकता की दृष्टि स आर्यसमाज को मानवतावादी राष्ट्रीय नीति का ही समर्थन करना चाहिए।

शान्ति सदन, १४५/४ सैण्ट्रल टाउन,
जालन्धर (पजाब)

दानवीर श्री लालमन आर्य का असामयिक देहावसान

आर्यसमाज हनुमान रोड के अधिकारियों एव सदस्यो ने प्रसिद्ध आर्य नेता एव दानवीर श्री लालमन जी आर्य के असामयिक देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट किया। उनके निधन से आर्य जगत् की जो महती क्षति हुई है, उसकी पूर्ति असम्भव है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत उच्च आत्मा को सद्गति एवं उनके शोकाकुल परिवार को धैर्य एवं शान्ति प्रदान करें।

योग द्वारा दीर्घायु बनें !

मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि बूढ़ा किसी भी उपाय से जवान हो सकता है, या आसनों अथवा योग के साधन से वृद्ध को युवा किया जा सकता है। कहावत प्रसिद्ध है कि जो जाकर न आए वह जवानी देखी, और जो आकर न जाए वह बुढ़ापा देखा, परन्तु इस बात मे सन्देह नहीं कि आसनों, प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य से जो योग के अभिन्न अंग हैं, बुढ़ापे के कष्टो का निवारण किया जा सकता है। एक युवा का ऐसा जीवन हो सकता है, जो बुढ़ापे से भी बदतर हो, और योगासनो, प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य द्वारा एक वृद्ध का ऐसा जीवन हो सकता है जिसे देखकर युवा-व्यक्ति भी आखें फाडते रह जाए।

लचक का अभाव - बुढ़ापा—बुढापा क्या है? बचपन और जवानी में हमारे अंग-प्रत्यगो मे जो लचक होती है, जो इलेस्टिसिटी होती है, उसका कम हो जाना या न रहना ही बुढापा है। बूढे व्यक्ति के हाथ-पैर-पीठ के जोड कड़े पड जाते है, उनमे लचक नही रहती, वह सहारे के बिना उठ-बैठ नही सकता, सीधा खडा नही हो सकता, उसे लाठी का सहारा लेना पडता है, हाथ-पैर के जोड़ो को, घुटनो को पीठ को हिलाने से दर्द होने लगता है। हमे समझ लेना चाहिए कि इन सबका इलाज दवाइयो से क्षणिक ही हो सकता है, इनका इलाज जोड़ो का व्यायाम करते रहने से ही हो सकता है। जोडो के इन व्यायामो को ऐलोपैथी मे फिजियो थेरेपी कहे हैं, योग की परिभाषा में इन्हें योगासन कहते हैं, परन्तु फिजियो थेरेपी और योगासनो मे भेद है। फिजियो थेरेपी तब की जाती है जब कष्ट सामने आ खडा हो, योगासन तब किए जाते हैं जब कष्ट का कहा नाम भी न हो।

युवा बने रहने का गुर—जोडों के दर्दों का मुख्य कारण जोडो में यूरिक ऐसिड का जम जाना है। योगासनो से यह ऐसिड जमा नही होता। उदाहरणार्थ घुटनों के दर्द को लीजिए। पद्मासन करने से घुटनों का दर्द नहीं बन पाता, बन जाए तो चला जाता है, जोडों के दर्द का इलाज पद्मासन है। एक-दूसरे आसन से जिसका नाम सिद्ध पद्मासन है, प्रोस्टेट ग्लेंड बढ़ने नहीं पाता। मैं स्वय पद्मासन, सिद्ध पद्मासन आदि अनेक आसन प्रतिदिन करता हू और ८६ वर्ष की अवस्था मे न मुझे किसी जोड़ की शिकायत है, न प्रोस्टेट की। आसनो द्वारा शरीर की लचक को बनाए रखना ही युवा बने रहने का गुर है।

यूरिक ऐसिड के अतिरिक्त जीवन का दूसरा शत्रु कोलेस्टेरोल है। यह हमारे भोजन द्वारा-पूरी, परौंठा, मांस, अण्डा, तले पदार्थ, घी आदि द्वारा नस-नाड़ियों की दीवारों में चिपक कर उन्हें संकुचित कर देता है जिससे रुधिर के प्रवाह मे तेजी आकर ब्लड प्रेशर हो जाता है, या कोलेस्टेरोल का धक्का हृदय-रोग उत्पन्न कर देता है। इसमे यौगिक-जीवन बडा सहायक है। योगी व्यक्ति चटोरपन को छोड देता है। वह ऐसी वस्तुओ का सेवन करता है, जो पौष्टिक तो हो, परन्तु वसामय न हो। इसके अतिरिक्त शरीर के सब अंगो का घर्षण या मर्दन कोलेस्टेरोल के निवारण मे बहुत सहायक है। जैसे बाल्टी मे देर तक पड़ा पानी बाल्टी के भीतर कैलशियम आदि की परत छोड देता है, उसे घिसा जाए तो वह परत छट जाती है, आगे बनने नहीं पाती, वैसे प्रतिदिन शरीर को मालिश करने से नस-नाडियो मे कोलेस्टेरोल जमने नहीं पाता, हार्ट-अटैक की शका कम हो जाती है, शरीर की लचक बनी रहती है।

दीर्घजीवी कौन ? मैंने जहा मालिश पर बल दिया है, वहा भिन्न-भिन्न भोजनो पर भी विस्तार से जानना आवश्यक है जिससे पता चले कि किस भोजन मे कोलेस्टेरौल है, किसमे नहीं है, किस भोजन मे कितनी कैलोरी है ताकि जो स्त्री-पुरुष मोटापा दूर करना चाहते हैं, पतला होना चाहते हैं, वे अपने भोजन के पदार्थों तथा उनकी मात्रा का स्वय निर्णय कर सकें। आयुर्वेद मे लिखा है—'तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्'— ताक या छाछ ऐसा दिव्य पदार्थ है जो कोलेस्टेरोल को छाट देता है, आयु को बढाता है। यही कारण है कि पजाबी लोग जो चाय की जगह लस्सी के शौकीन हैं, भारत मे सबसे अधिक तन्दुरुस्त हैं और दीर्घजीवी हैं। बल्गेरिया के लोग सबसे अधिक दीर्घजीवी पाए गए हैं क्योकि उनका मुख्य भोजन दही तथा लस्सी है। दही को वहा तथा यूरोप मे योगार्ट कहा जाता है।

आसन - प्राणायाम—प्राय. समझा जाता है कि आसन कर लेना ही योग है। यह भ्रान्ति है। योग के मुख्य अंग आठ हैं। वे हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान, तथा समाधि। आसन तो योग का एक बटा आठवा (१।८) हिस्सा है। शरीर को युवा बनाए रखने के लिये जितना आसनों का महत्त्व है, उससे अधिक महत्त्व प्राणायाम का है। आसन तथा प्राणायाम भारत के ऋषियो के बुढ़ावस्था को दूर करने तथा युवावस्था बनाए रखने के अद्भुत आविष्कार थे। युवावस्था का गुर आसनों तथा प्राणायाम में निहित है। लोग 'डीप ब्रीदिंग' को प्राणायाम समझ लेते हैं। यह भ्रान्ति है। प्राणायाम की ऋषियों द्वारा आविष्कृत की हुई अपनी एक विधि है, टैक्नीक है। इसमें भस्त्रा, पूरक, कुम्भक, रेचक तथा भ्रामरी प्राणायाम गिने जाते हैं। भस्त्रा-याम का प्रभाव श्वास-संस्थान तथा रक्त-सचरण-संस्थान पर पड़ता है, जिससे फेफडे तथा हृदय को बल मिलता है। कुम्भक प्राणायाम का प्रभाव पेट, आतो, तिल्ली, गुर्दे आदि भीतर के सब अंगो को बलशाली बनाता है। इसी सिलसिले मे एक आसन है जिसे योगमुद्रा कहते हैं। योग-मुद्रा का उद्देश्य मस्तिष्क से लेकर सम्पूर्ण शरीर के प्रत्येक भीतरी अंग को बल देना है।

—डा० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के हृदय रोग-विशेषज्ञ डा० के० के० दाते ने जिनका हाल मे ही २२ अप्रैल को, देहान्त हो गया, शवासन का विदेशो मे इतना प्रचार किया कि बड़े-बड़े डाक्टर शवासन के भक्त हो गए। उन्होने जो परीक्षण किए उनसे सिद्ध हो गया कि शवासन से ब्लड प्रेशर मे कमी आ जाती है, रोगी औषधि लेना छोड देते है, परन्तु शवासन का अर्थ सिर्फ मुर्दे की तरह लेट जाना नहीं, मन को ध्यान मे लगाते हुए दुनियावी विचारो को दिमाग से निकाल कर लेटना है जिसे योग मे 'प्रत्याहार' कहा है। लेटे-लेटे दुकानदारी करते रहने को शवासन नहीं कहते।

आल इण्डिया मैडिकल इन्स्टीट्यूट के हृदय-रोग विशेषज्ञ डा० भाटिया का कथन है कि यूरोप मे ट्रान्सेन्डैन्टल मैडीटेशन द्वारा हाई ब्लड प्रेशर को नियन्त्रित करने के सफल परीक्षण हो रहे हैं। आसन तथा प्राणायाम के अतिरिक्त भारतीय ऋषियो ने युवावस्था बनाए रखने के लिए एक तीसरा आविष्कार 'ब्रह्मचर्य' किया था। वेद मे लिखा है—'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्यु अपाघ्नत'—ब्रह्मचर्य रूपी तप से मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

(८ मई के दिन राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्री ज्ञैलसिंह जी द्वारा डा० सत्यव्रत सिद्धातालंकार की 'फ्राम ओल्ड एज टु यूथ थ्रू योग' शीर्षक पुस्तक का विमोचन किया गया था। उस अवसर पर डा० सत्यव्रत जी द्वारा दिए गए भाषण के कुछ अंश)

उक्त रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) से बचाव के कुछ उपाय

—डा० के० के० बाजपेयी

उक्त रक्त-चाप-हाई ब्लड प्रेशर सच पूछा जाए तो कोई रोग नही है, अपितु यह शरीर मे उत्पन्न किसी शारीरिक या मानसिक विकार का लक्षण है। आजकल के व्यस्त जीवन मे रक्त-चाप एक आम शिकायत हो गई है। सन् १६७१ की गणना के अनुसार अमेरिका मे करीब पचास लाख व्यक्ति उच्च रक्त-चाप से पीडित थे। महात्मा गाधी भी उच्च रक्त-चाप से पीड़ित रहते थे।

रक्त-चाप रक्त वाहिनी नाडियो पर पड़ने वाला दबाव है। जब यह दबाव सामान्य या औसत से अधिक हो जाता है तब उसे रक्त-चाप अथवा अति रुधिर तनाव कहते हैं। जब रक्त-चाप १६० से अधिक हो जाता तब इसे विकृत अवस्था कहते हैं और उसे कम करने की आवश्यकता पड़ती है।

रक्त-चाप की अवस्था

रक्त-चाप की अवस्था होने पर चक्कर आते हैं, माथे मे भारीपन रहता है एव माथे मे खून के दौरान रक्तिम झलक दिखाई पड़ती है। आखो मे लाली आ जाती है। कनपटी मे टनक तथा नाड़ी मोटी और कड़ी चलती है। रक्त-चाप के होने का कारण या तो शरीर मे कही न कही विकार का होना है अथवा समग्र रूप से विकृति के कारण ऐसा होता है।

प्राकृतिक जीवनचर्या रक्त-चाप का सही इलाज है। प्राकृतिक जीवन जीने से यह रोग अपने आप शमित हो जाता है। चाय, कॉफी, मिर्च मसाले, धूम्रपान, शराब, मांसाहार, अत्यधिक मानसिक चिन्ता, अथक परिश्रम रक्त-चाप के कारण हो सकते हैं अतएव इनसे बचना चाहिए।

अधिक रक्त-चाप होने पर पूर्ण विश्राम, हल्का व्यायाम, पैदल टहलना, सुपाच्य तथा सादा भोजन करना चाहिए। पेट को साफ रखने से रक्त-चाप मे सुधार होता है। समय-समय पर अपने रक्त-चाप की जाच भी करा लेनी चाहिए।

नमक कुछ दिनो के लिए एकदम छोड दिया जाए, तो रक्त-चाप मे सुधार होने लगता है। अचार, चटनी-सिरका आदि का भी त्याग कर देना उचित होता है। चिन्तामुक्त रहना भी मनुष्य को इस विकार से मुक्त रखता है इस विकार से ग्रस्त व्यक्तियो के लिए निम्नलिखित सावधानी बरतनी उचित होगी—

१. हरे शाक, सब्जी और फलो का सेवन किया जाए।

२ डबल रोटी आदि न लें।

३ सफेद चीनी की मिठाई छोड दें।

४ लस्सी और छाछ पेय के रूप मे लेना उचित है।

५ मन तथा शरीर दोनो स्वच्छ रखें।

६ मालिश करना भी अच्छा है।

७ ग्रीवा का व्यायाम करने से रक्त-चाप मे कमी आती है।

८ साइकिल चलाना भी उपयोगी होता है।

६ पानी मे नींबू का रस मिलाकर लें।

१०. सूर्योदय से पहले उठकर घूमने

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत् समाचार

पुलिस कांस्टेबल के दुर्व्यवहार की निन्दा व पदच्युत करने की मांग

दिल्ली २४ जून (शुक्रवार) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश, सर्राफा बाजार वैलफेयर सोसायटी, नव आदर्श जन हित सघ, स्थानीय भ्रष्टाचार विरोधी समिति द्वारा पुरानी सब्जी मण्डी थाने के स्पेशल स्टाफ के पुलिस कांस्टेबल सरदार जोगिन्दर सिंह के स्थानीय दुकानदारो से किये गये दुर्व्यवहार की तीव्र भर्त्सना व उन्हे पदच्युत करने की माग की गई।

उल्लेखनीय है कि २३ जून प्रात ११ बजे के लगभग मेन बाजार सब्जी मण्डी मे चौधरी स्टीट्स की दुकान पर पुलिस व नगर निगम के अधिकारी आए व दुकान मालिक की गैरमौजूदगी मे दुकान के अन्दर की परछत्ती तोडने लगे। पडोसी दुकानदार राजसिंह आर्य व नानक चन्द द्वारा अधिकारियो से अनुरोध किया गया कि वे दुकान मालिक के आने तक प्रतीक्षा करें परन्तु उन्होने ऐसा न किया। साथ ही स्थानीय दुकानदारो के कहने पर आदेश नही दिखाया अपितु इन दोनो को थाने मे बन्द कर दिया, गन्दी गालिया दी, बर्बरतापूर्ण निममता से पिटाई की जिससे चोटें लगी तथा कहा मैं सरदार हू, एस० एच० ओ० सरदार है, ए० सी० पी० सरदार है और डी० आई० जी० सरदार है, तुम्हारी लीडरी हम नहीं चलने देंगे चाहे दिल्ली को पजाब बनाना पड़े।

पुलिस द्वारा कथित दुर्व्यवहार के कारण मेन सब्जी मण्डी बाजार कल बन्द रहा, सर्राफा बाजार के अधिकारी व सामाजिक कार्यकर्त्ता सरकार के उच्चस्थ अधिकारियो से मिले। मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री जगप्रवेश, श्री कुलानन्द भारतीय (कार्यकारी पार्षद) श्री ललित माकन (महानगर पार्षद), श्री मदनलाल खुराना, चौ० नन्दलाल, श्री अनिल शर्मा, श्री हरचरण सिंह जोश ने पुलिस ज्यादती की निन्दा की है। पुलिस आयुक्त व उपराज्यपाल से माग की गई कि वे इस प्रकार की सकीर्ण मनोवृत्ति के अधिकारी को नौकरी से बर्खास्त करें।

'बांदीकुई आर्यसमाज और छूआछूत उन्मूलन'

यद्यपि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद छूआछूत जैसी भयानक सामाजिक बुराई मे काफी कमी आई है, तथापि देश के गावो मे अभी स्थिति मे कोई सन्तोषजनक सुधार नही हुआ है। राजस्थान मे जयपुर जिले के एक छोटे-से कस्बे बांदीकुई मे आर्यसमाज सस्था द्वारा किए जा रहे प्रयास विशेष प्रशसनीय हैं। आर्यसमाज बांदीकुई के आर्य बन्धु श्री महाराज सिंह जी, "विचित्र" बनवारी लाल जी इजीनियर, एव श्री प्रीतमसिंह जी इत्यादि ने छूआछूत उन्मूलन के लिए एक क्रान्तिकारी अभियान चला रखा है। जयपुर आर्यसमाज के मन्त्री श्री केशवदेव जी वर्मा एव उपदेशक श्री अमरसिंह जी व उनके साथी श्री केशव जी का भी विशेष सहयोग उल्लेखनीय है। अभी एक हरिजन महिला, श्रीमती गुलाब बाई एव उनके पतिदेव श्री ईश्वरी लाल जी की ओर से आर्यसमाज बांदीकुई मे २५ जून १९८३ (पूर्णमासी) के दिन यज्ञ और प्रीति-भोज का आयोजन किया गया जिसमे बडी खुशी और उल्लास के साथ समाज के सभी वर्गों ने भाग लिया। प्रीति-भोज मे लगभग चार सौ सम्मिलित होने वाले व्यक्तियो मे बच्चो, महिलाओ व पुरुषो मे डाक्टर, इजीनियर, वकील, सरकारी अधिकारी, विद्यार्थी इत्यादि शामिल थे। छूआछूत-उन्मूलन अभियान का यह एक बहुत ही सफल चरण था।

डा० युद्धवीर सिंह को श्रद्धांजलि

दिल्ली के पुराने राष्ट्रीय आर्य नेता एव राजधानी मे आर्यवीर दल आन्दोलन के पुरस्कर्ता डा० युद्धवीर सिंह के निधन पर अनेक आर्यसमाजो एव आर्य सस्थाओ ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धाजलिया प्रस्तुत की हैं। दिल्ली प्रदेश की केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने उन्हे देश के स्वातन्त्र्य सग्राम का महान योद्धा घोषित किया। साथ ही नशाबन्दी एव समाज सुधार सम्बन्धी उनकी सेवाओ की सराहना की। आर्यसमाज सतभ्रावा मार्ग करौल बाग ने एक प्रस्ताव द्वारा घोषित किया कि उनका जीवन देश, जाति और जनता जनार्दन के लिए अर्पित रहा। सतभ्रावां आर्य कन्या महाविद्यालय करौलबाग की प्रबन्धक समिति, अध्यापिकाओ तथा छात्राओ ने एक शोकप्रस्ताव में घोषित किया है कि आर्यसमाज तथा देश के इतिहास में उनका नाम सदा गौरव से लिया जाएगा।

गुजरात के बाढ़ पीड़ितों की मदद करें

आर्य जनता को यह तो विदित हो ही चुका है कि प्रकृति के अकस्मात् प्रकोप से गुजरात मे बाढ एव तूफान के कारण काफी धन-जन की क्षति हुई है। महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टकारा (गुजरात) मे महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के तत्त्वावधान मे चल रहे उपदेश महाविद्यालय एव गोशाला तथा वहा पर चल रहे कार्यों को काफी नुकसान पहुचा है। अत आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली एव महर्षि दयानन्द स्मारक टकारा द्वारा वहा एक बाढ सहायता कैम्प लगाया जा रहा है। जिसका मुख्य कार्यालय टकारा मे ही होगा। इस कैम्प द्वारा जहां-जहा बाढ से क्षति हुई है, सहायता की जाएगी। जो समाजसेवी कार्यकर्त्ता इस कैम्प के अन्तर्गत सेवा-कार्य करना चाहते हैं वे यथाशीघ्र आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग-नई दिल्ली से सम्पर्क करें। आर्य हिन्दू जनता से अनुरोध है कि बाढ पीडितो की सहायता के लिए अधिक से अधिक राशि व वस्तुएं उक्त पते पर भेजें।

शिक्षा का आधुनिक स्वरूप

—संजय सहगल

'सा विद्या या विमुक्तये' यह तो इसी कथन से सिद्ध हो जाता है कि वैदिक काल से ही विद्याध्ययन को विशेष महत्त्व दिया जाता रहा है, पर आज शिक्षा (पाश्चात्य सस्कृति से प्रभावित) का एक रूप यह भी है कि आज का शिक्षक वर्ग तभी सन्तुष्ट रहता है अगर हडतालें न हो, पर उसका इस बात से कोई सरोकार नही है कि विद्यार्थी ऐसा व्यवहार करें या ऐसी वेषभूषा मे रहे कि वे जिज्ञासु से अधिक उपद्रवी नजर आए। आज का छात्र राष्ट्र की नीव रखने की बजाय शिक्षा पूरी करने के पश्चात् पथभ्रष्ट हो जाता है। वह अपने साहस और जोश को सयमित नही रख पाता और तोड-फोड जैसे निन्दनीय कार्य करता है। आखिर इन सबके लिये उत्तरदायी कौन है ? मेरे विचार से आधुनिक शिक्षा मे नैतिक शिक्षा की कमी ही इसके लिये उत्तरदायी है। अगर आज के छात्रो मे सच्चरित्रता और नैतिकता की थोडी-सी भावना भी होगी तो उनकी शक्ति किसी अच्छे कार्य मे लगेगी।

मानव मात्र पेट की ज्वाला शान्त करने के लिये जीवित नही रहता, अतएव उसे जीविकोपार्जन हेतु समर्थ बनाना मात्र ही शिक्षा का उद्देश्य नही होना चाहिए। भारतीय सस्कृति की यह प्रबल मान्यता है कि शिक्षित व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अर्जित कर पूर्णत्व को प्राप्त करता है, शिक्षा का लक्ष्य इन सब पुरुषार्थों को प्राप्त करना है। और इन सब गुणो का समावेश सच्चरित्रता मे ही है। यदि नभ की शोभा चन्द्रमा है तो मानव जीवन का सौन्दर्य चरित्र है। चरित्र के द्वारा व्यक्ति न केवल अपने जीवन का अपितु समाज व राष्ट्र का भी हित कर सकता है। और अन्त मे मैं यही कहना चाहूगा कि चरित्र की पराकाष्ठा मे ही हमारी शिक्षा का स्रोत निहित है।

ए।६१ गुड मण्डी डबल स्टोरी,
दिल्ली-११०००७

बोध-कथा

कौन बड़ा ?

विश्वविजय का सपना लेने वाला यूनान का सम्राट् सिकन्दर महान् बहुत अधिक अभिमानी था। वह यह सहन नही कर सकता था कि कोई उसके सम्मुख गर्व से सिर उठाए। एक बार उसे जीवन में एक सच्चे वीतराग तपस्वी साधु देवजानस से मिलने का सुयोग मिला। साधु देवजानस किसी सार्वजनिक स्थान पर लेटा हुआ था, वहा समीप से ही सम्राट् सिकन्दर को जाना था। सिकन्दर के अंगरक्षक सिपाही आए। उन्होने आकर कहा—'देवजानस, दुनिया जीतने वाले बादशाह सिकन्दर आ रहा है, तू उठ जा और उसका स्वागत कर। "देवजानस लेटा रहा, न तो उठा और न स्वागत के लिए खडा हुआ। थोडी देर मे सिकन्दर के अनेक सिपाही आए, दूसरे अगरक्षक भी आए, परन्तु साधु वैसे ही लेटा रहा। अन्त में स्वयं सिकन्दर आ पहुचा। उसने साधु से कहा—"देवजानस, जानता नहीं, दुनिया जीतने वाला वाला यूनान का बादशाह सिकन्दर तेरे सामने खडा है, तू उसे प्रणाम नहीं करता ?

इस पर देवजानस ने कहा—"मेरे दो गुलाम हैं एक इच्छाएं और दूसरा लालच। मैंने इन्हें अपने नियन्त्रण मे रखा हुआ है। मेरे इन दासों ने तुझे अपने वश में किया हुआ है। अब बता कि जब तू मेरे गुलामो के वश में है तो मैं उनके गुलाम सिकन्दर का कैसे स्वागत-अभिवादन करूं ?"

सिकन्दर को उस तेजस्वी साधु की उक्ति का कुछ जवाब देते नहीं बना। वह उस लेटे हुए साधु को देखता हुआ अपनी सेना के साथ आगे निकल गया। —नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार, १० जुलाई, १९८३

अन्धामुगल-प्रताप बाग—प० ईश्वरदत्त जी; अमर कालोनी—प० सत्यपाल मधुर, अशोकनगर—प० बन्धेश्वर आर्य, अशोक-विहार के० डी० ६१-सी—प० प्रकाशचन्द वेदालंकार, आर्यपुरा—प० सोमदेव शास्त्री, किशनगंज—प० खुशीराम शर्मा, कालका डी-डी. ए. फ्लेट—प० देवेश बसल, कृष्णनगर—कवि व्याकुल, गाधी-नगर—श्रीमती प्रकाशवती, गीता कालोनी—प० महावीर बत्रा, गुडमण्डी—प० सत्यदेव स्नातक, गुप्ता कालोनी—श्री मुनिशकर वानप्रस्थ; ग्रेटर कैलाश २—प० कामेश्वर शास्त्री, गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—स्वामी शिवाचार्य जी, ग्रीन पार्क—प० हरिश्चन्द्र जी आर्य, भोगल—प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य, जनकपुरी सी-३—प्रो० सत्यपाल बेदार, तिलकनगर—प० रामदेव शास्त्री, तिमारपुर—प० रामनिवास, त्रिनगर—डा० सुखदयाल भूटानी, दरियागंज, प० जयभगवान, नारायण विहार—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री; न्यू मोतीनगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, निर्माण विहार—प० चुन्नीलाल आर्य, पजाबी बाग—प० वेदव्यास, पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प्रो० बीरपाल जी, बाग कड़ेखा—आचार्य रामचन्द्र शर्मा, मोडल बस्ती—प० शीशराम, महावीर नगर—प० आशानन्द भजनीक, रमेशनगर—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार राणाप्रताप बाग-प० अशोक विद्यालकार, रोहतास नगर—प० अमरनाथ 'कान्त', लड्डू घाटी—प० बलबीर शास्त्री, लक्ष्मीबाई नगर—प० सत्यभूषण वेदालकार, लाजपत नगर—मा० ओमप्रकाश जी, लारेन्स रोड—प० ओमप्रकाश वेदालकार, विक्रम-नगर—अमीचन्द मतवाला, विनयनगर—प० महेशचन्द पारासर, सदर बाजार पहाड़ी धीरज—प० रामरूप शर्मा—सराय रोहैल्ला श्रीमती लीलावती जी, सोहनगज—श्रीमती सुशीला राजपाल, निवासपुरी—ओमप्रकाश गायक, शाहदरा—प० तुलसी राम आर्य, हौज खास - प० आचार्य हरिदेव सिद्धान्तभूषण, हनुमान रोड—प० वेद-प्रकाश श्रेत्रिय।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता, वेदप्रचार विभाग

आर्यसमाज नांगल राय के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री पृथ्वीराज, उपप्रधान—श्री देवीसिंह, श्री लेखराम, मन्त्री—श्री हरकिशन, प्रचार मन्त्री—श्री रतनलाल, उपमन्त्री—श्री भगवान दास, कोषाध्यक्ष—श्री अजीतकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—श्री भीष्मचन्द्र गोस्वामी, लेखा निरीक्षक—श्री दलीपसिंह।

आर्यसमाज खण्डवा (म० प्र०) के नए पदाधिकारी

प्रधान—प० रामचन्द्र आर्य, सचिव—श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल।

१ जनवरी, १९८२ से ३० अप्रैल, १९८३ तक आर्यसमाज की कुल आय १, ३४,२६६ हुई और व्यय १ २६ २६ १ हुआ। शुद्ध बचत ८०००)रुपए हुई।

आयु मजुल चि अरुण का शुभ विवाह

आर्यसमाज सासाराम (बिहार) के मन्त्री एव प्रबन्धक व्यापार मण्डल, सहयोग समितिया, तकिया के प्रबन्धक श्री जगदीश आर्य सिद्धान्तरत्न की आत्मजा आयु० मजुल का शुभविवाह रविवार ३ जुलाई, १९८३ को आर्यसमाज भभुआ, जिला रोहतास के उपमन्त्री श्री कल्पनाथ के आत्मज चि० अरुण के साथ तकिया मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रदेश के प्रमुख आर्य कार्यकर्ता एव नागरिको ने वरवधू को अपना आशीर्वाद दिया।

आर्य परिवार की कन्या चाहिए।

पच्चीस वर्षीय वमल गोत्र अग्रवाल परिवार की स्वस्थ सुन्दर कार्यरत वैदिक धर्मी युवक के लिए वैदिक धर्मी, पच महायज्ञ करने मे निपुण गृह कार्यो मे दक्ष सम्पन्न परिवार की कन्या की आवश्यकता है। पत्र व्यवहार निम्न पते पर करिए।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग, दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

धर्म एवं समाज के लिए समर्पित श्री लालमन जी आर्य

श्री लालमन आर्य का जन्म सन् १९११ ई० मे एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार मे ग्राम ढोरडा, जिला श्रीगगानगर (राज-स्थान मे हुआ था। युवावस्था मे ही उन्हे आर्यसमाज के सम्पर्क मे आने का सौभाग्य

प्राप्त हुआ और वैदिक धर्म के प्रति उनकी आस्था मे निरन्तर वृद्धि होती गई। जो कोई भी उनके सम्पर्क मे आया, उनसे प्रभावित होकर आर्यसमाज की धारा मे सम्मिलित होता गया।

वह बराबर आर्यसमाज तथा देश की विविध सस्थाओ को रचनात्मक व आर्थिक सहयोग देते रहे। वह दयानन्द ब्राह्म महा-विद्यालय हिसार, गुरु विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम मथुरा, बाल सेवा सदन, भिवानी, वैश्य विधवा हितकारिणी सभा, आर्यसमाज बडा बाजार ट्रस्ट कलकत्ता आर्य प्रादेशिक उप प्रतिनिधि सभा हरि-याणा आदि सस्थाओ के माध्यम से धर्म तथा समाज की सेवा मे सलग्न रहे। गत २० जून १९८३ को अचानक हृदय गति रुक जाने से बैंगलूर मे उनका देहावसान हो गया। वह अपने पीछे वृद्धा माता व पत्नी व तीन सुपुत्र सर्वश्री गजानन्द आर्य, प्रकाशानन्द आर्य तथा सत्यानन्द आर्य एव चार सुपुत्रिया एव नातियो आदि से भरा-पूरा परिवार छोड गये है। जो उनके आदर्शो के अनुसार धर्म तथा समाज की सेवा मे तत्पर है।

उच्च रक्तचाप (पृष्ठ ५ का शेष)

जाए तथा सूर्य निकलने से पूर्व वापस आ जाए।

११ सायकालीन भोजन करने के बाद कम से कम आधा घण्टा घूमने जाए।

१२. प्रसन्नचित्त रहे।

१३ रात्रि को १० बजे तक शय्या पर अवश्य चले जाए।

आप उपर्युक्त बताई हुई बातो मे से यदि ६-७ का ही पालन करेंगे तो आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उच्च रक्त-चाप से मुक्ति मिल जाएगी।

कांगड़ी विकास-योजना में प्रगति

२२ जून को कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने कागडी ग्राम योजना के निर्देशक डा० विजय शकर के साथ कागडी विकास योजना की प्रगति का निरीक्षण किया। उन्होने देखा कि वहा दो गोवर गैस प्लान्ट कार्य कर रहे हैं। गृहस्वामिनी ने ज्योति जलाकर दिखाई। इसी प्रकार निर्बल आवास मे भी चार परिवार रहने लगे हैं। खडन्जो के कार्य मे भी काफी प्रगति हुई है। अब इसे नदी की ओर एव ग्राम की दूसरी गली मे मोडने की आवश्यकता है। कुए मे भी पानी आ गया है। स्कूल मे एक कमरा तथा चार दीवारी बनने जा रही है। चार दुकानें प्राय तैयार हैं।

स्टेट बैंक एव न्यू बैंक से जिन लोगों ने ऋण लिए हैं उन्हें भी काफी आय हो रही है। एक बुग्गी वाले ने उन्हे बताया कि उसे तीस-चालीस रुपए प्रतिदिन की आय हो जाती है। प्रसार-प्रशिक्षण केन्द्र गुरुकुल कागडी ने दो ग्राम सेवक तीन मास के लिए कागडी ग्राम मे नियुक्त किए हैं। रामकृष्ण मिशन की चल चिकित्सा गाडी सप्ताह मे दो बार यहा आती है।

पिछले दो वर्ष से कागडी ग्राम मे प्रतिवर्ष धूमधाम से वन महोत्सव मनाया जा रहा है, लेकिन चकबन्दी के कारण उसमे आशानुकूल सफलता प्राप्त नहीं हुई। अब चकबन्दी का कार्य लगभग पूरे होने से इस वर्ष के महोत्सव की सफलता की पूरी आशा है। आगामी वर्षा ऋतु मे कागडी ग्राम में उक्त महोत्सव फिर मनाया जाएगा। इसकी अध्यक्षता हेतु श्री ओ० पी० आर्य जिला अधिकारी बिजनौर को आमन्त्रित किया गया है।

आर्यसमाजो क नए पदाधिकारी

आर्यसमाज आर्यपुरा, सब्जी मण्डी—प्रधान—चौ० सुखलाल, उपप्रधान—श्री राजेन्द्र प्रसाद, श्री चमनलाल, मन्त्री—ब्र० राजसिह आर्य उपमन्त्री—श्री रणवीर सिंह, श्री ओमप्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री पुष्पराज, पुस्तकाध्यक्ष—श्री धर्मेन्द्रपाल शास्त्री प्रचारमन्त्री—श्री रामप्रसाद उर्फ नन्हे सिंह।

स्त्री समाज आर्यपुरा—प्रधाना—श्रीमती राजकुमारी, मन्त्रिणी—श्रीमती प्रकाशवती भाटिया, सहमन्त्रिणी—श्रीमती ओमवती।

आर्यसमाज नया बास—प्रधान—श्री ओमप्रकाश कपडे वाले, उप प्रधान—श्री पूरनचन्द्र अरोडा ओमप्रकाश जी [illegible] वाले, मन्त्री—श्री शिवकुमार आर्य, उपमन्त्री—श्री ब्रह्मानन्द शर्मा, श्री राजेन्द्र कुमार [illegible], कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रनाथ गोटे वाले, पुस्तकाध्यक्ष—श्री न[illegible] आर्य।

आर्यकुमार सभा किंग्जवे कैम्प—प्रधान—श्री परीक्षित [illegible], उप प्रधान—श्री कंवल बग्गा; मन्त्री—श्री उमेश बग्गा, उपमन्त्री—श्री [illegible] कुमार; कोषाध्यक्ष—श्री गुलशन मलिक, पुस्तकाध्यक्ष—श्री नन्दीलाल [illegible]।

ऋषि ग्रन्थो से समाज की उन्नति

आर्यपुरा मे नागरिक चेतना सप्ताह

दिल्ली। आर्यसमाज आर्यपुरा, सब्जी मण्डी, दिल्ली-७ का वार्षिकोत्सव नागरिक चेतना सप्ताह के रूप मे ६ जून १९८३ से १२ जून १९८३ तक बडे धूमधाम से मनाया गया। जिसमे प्रात ६-३० बजे से ८-३० तक पारायण यज्ञ किया। जिसके ब्रह्मा श्री प० ब्रह्मप्रकाश शर्मा 'वागीश' और वेदपाठी युवा पुरोहित प० धर्मेन्द्रपाल शास्त्री थे। रात्रि ८-०० बजे से ९-०० बजे तक आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ—श्री गुलाबसिह 'राघव' के ओजस्वी एव क्रान्तिकारी भजन हुए। तत्पश्चात श्री ब्रह्मप्रकाश 'वागीश' के नित्यप्रति ९ बजे से रात्रि १० बजे तक सिद्धान्तपूर्ण व्याख्यान के साथ क्रान्तिपूर्ण विचार रखे।

इस अवसर पर श्री वागीश' ने वर्तमान युग मे ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थो के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि कृत ग्रन्थो और वैदिक साहित्य के स्वाध्याय से ही समाज की सर्वतोमुखी उन्नति हो सकती है। अन्त मे महर्षि दयानन्द के आदर्शों को जीवन मे लाने का अनुरोध किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन आगामी १७ जुलाई १९८३ रविवार प्रात ११ बजे से साय ४ बजे तक आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में सम्पन्न होगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा आदित्य प्रेस १९७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष : ७ अंक ३८ | रविवार १७ जुलाई, १९८३ | २६ आषाढ वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५९

पाकिस्तान द्वारा प्रथम इस्लामी आणविक बम विस्फोट

भारत के विरुद्ध एक नया गठबन्धन : कथित खालिस्तानी नेता जगजीत चौहान को लीबिया का निमन्त्रण :

भुट्टो-परिवार के प्रतिनिधि द्वारा निमन्त्रण : भारत के लिए नया खतरा

नई दिल्ली। राजनीति मे सब कुछ सम्भव है कल तक के दोस्त कब दुश्मन बन जाए और आज के दुश्मन कब दोस्त बन जाए, यह कहना कठिन है। कहते हैं कि पाकिस्तान को इस्लामी आणविक बम के निर्माण के लिए लीबिया के कर्नल गद्दाफी ने भुट्टो के प्रधानमन्त्रित्व मे पाकिस्तान को अरबो-करोडो रुपयो की सहायता दी थी। कहते हैं कि भुट्टो के समय तो पाकिस्तान इस्लामी बम नही बना सका, परन्तु अब पाकिस्तान द्वारा शस्त्रसग्रह की होड और उसके रुख से यह स्पष्ट हो गया है कि पाकिस्तान या तो इस्लामी परमाणु बम बना चुका है, या निकट भविष्य मे जल्दी ही बना लेगा। पिछले दिनो कई समाचार समितियो ने यह समाचार दिया था कि पाकिस्तान मे अपना पहला आणविक विस्फोट कर लिया है, जिसका अकन कई भारतीय वैज्ञानिक केन्द्रो में किया गया था। कई ने इसे एक भूकम्पीय विस्फोट कहा था। इसी के साथ भारत की दृष्टि से यह भी चिन्ता का विषय है कि पाकिस्तान को इस्लामी परमाणु बम के लिए आर्थिक सहायता देने वाले लीबिया के कर्नल गद्दाफी के शासन ने खालिस्तान के दावेदार जगजीत चौहान का लीबिया आने का न्योता दिया है। यह भी ज्ञात हुआ है कि चौहान तक गद्दाफी का निमन्त्रण पहुचाने वाला व्यक्ति पाकिस्तानी प्रजाजन अल्ताफ अब्बासी फासी पर चढाए गए पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री जुल्फिकार अली भुट्टो के लड़के मुर्तजा भुट्टो का व्यक्तिगत प्रतिनिधि है। यदि यह सवाद सत्य है तो इसके आधार पर कहा जा सकता है कि पाकिस्तानी इस्लामी बम के निर्माण मे जन-जिया के साथ उनके विरोधी पीपल्स पार्टी का भुट्टो-परिवार और लीबिया के कर्नल गद्दाफी सब एक साथ हैं। इसके साथ यह ध्वनित भी होता है कि भारत विरोधी खालिस्तान के समर्थकों को आश्रय देने मे भुट्टो परिवार, लीबिया की गद्दाफी सरकार और पाकिस्तान की जन-जिया सरकार तीनों मिले हुए हैं। या भारत सरकार और देश की जनता भारत विरोधी इस नए गठबन्धन से समय रहते कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकेगे ?

अकाली नेता का सिखों को आह्वान

पिछले दिनो दिल्ली मे विरोधी दलो का एक सम्मेलन दिल्ली मे हुआ था। उस सम्मेलन ने पजाब की स्थिति को सुलझाने के लिए उग्रवादियो की गतिविधियो को रोकने के लिए पेशकश नहीं की गई और न धार्मिक स्थानो के प्रयोग पर ही कोई सामूहिक विरोध प्रदर्शित किया गया, उल्टे हरियाणा के हितों का ख्याल न करते हुए चण्डीगढ पजाब को देने का प्रस्ताव किया गया, इससे उत्साहित होकर अमृतसर के निकट बाबाबकाला मे भाषण देते हुए अकाली दल के अध्यक्ष श्री गुरुचरणसिह टोहरा ने सिखो का आह्वान किया है कि वे पुलिस द्वारा गुरुद्वारो मे प्रवेश के किसी भी प्रयत्न को विफल कर दें। उन्होने अकाली सदर-मुकाम के किसी भी निर्देश के बिना ही पुलिस के विरुद्ध कार्यवाही करने का अनुरोध किया है यदि वे गुरुद्वारो मे प्रवेश का प्रयत्न करें।

रविवार २४ जुलाई को सारे देश में पंजाब-दिवस मनाया जाए

सार्वदेशिक सभा का प्रतिनिधि मण्डल पंजाब का दौरा करेगा : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग का निश्चय।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की बैठक रविवार १० जुलाई को आर्यसमाज दीवान हाल मे हुई, जिसमे पंजाब की वर्तमान स्थिति पर विस्तारपूर्वक विचार कियागया। आचार्य पृथ्वीसिह आजाद ने सारी स्थिति पर प्रकाश डाला। बैठक मे सारे देश से आये सदस्यो ने भाग लिया और अपने विचार रखे। उपस्थित सदस्यो का मत था कि पजाब के हिन्दुओ पर जो अत्याचार उग्रवादी अकालियो द्वारा किए जा रहे हैं, उनसे सारे देश मे रोष फैला हुआ है और यदि सरकार द्वारा अथवा अकालियो द्वारा स्थति को सभाला न गया तो सारे देश मे इसकी प्रतिक्रिया होने की सम्भावना हो सकती है। यदि ऐसा होता है तो यह देश के लिए बडी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होगी परन्तु इस सबकी जिम्मेवारी सरकार एव अकालियो पर होगी। निश्चय हुआ कि सार्वदेशिक सभा का शिष्ट मण्डल पजाब का शीघ्र दौरा करेगा।

दूसरे प्रस्ताव द्वारा सारे देशवासियो से सभा द्वारा अनुरोध किया गया कि रविवार २४ जुलाई को अखिल भारतीय पजाव दिवस मनाया जाए और सरकार से माग की जाये कि वह अविलम्ब स्थिति को सभाले।

केरल के हिन्दू तीर्थों के समीप ईसाइयों की व्यूह-रचना

नीलक्कल विवाद की पृष्ठभूमि : तथ्य क्या कह रहे हैं ?

ईसा की पहली चार शताब्दियों में गिरजे और क्रास का निशान तक नहीं था।

त्रिवेन्द्रम। केरल के दो प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थो श्रीकृष्ण के वासस्थान गुरुवायुरप्पन तथा आदि शकर के जन्मस्थान कालडी मे ईसाई तीर्थ स्थान स्थापित किए जा चुके हैं। अब ईसाइयो का प्रयत्न है कि केरल के प्रमुख हिन्दू तीर्थ शबरी मलै के समीप नीलक्कल के शिवमन्दिर के पास सरकारी भूमि का अतिक्रमण कर उनका गिरजाघर स्थापित कर दिया जाए। नीलक्कल—विवाद का प्रारम्भ २३ मार्च, १९८३ के दिन हुआ। उस दिन कैथोलिक काग्रेस ने दावा किया कि राज्य कृषि निगम के दो ईसाई मजदूरो को नीलक्कल मे एक क्रूस (क्रास) मिला है। जिस स्थान पर क्रूस-प्राप्ति की बात कही जाती है वह दो प्राचीन मन्दिरो—नीलक्कल महादेव मन्दिर और पल्ली आराकाबू देवी मन्दिर के बीच मे है। अगले ही दिन दो जीपो मे कुछ व्यक्ति उस क्रूस की पूजा के लिए पहुच गए। कृषि निगम के अधिकारियो ने इसे अपनी भूमि पर अतिक्रमण मान कर प्रारम्भ मे इस पर आपत्ति की, परन्तु बाद

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

छह शत्रुओं का दमन करो।

उलूकयातु शुशुलूकयातु जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातु दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ॥ अथर्व ८-४-२२ ॥

शब्दार्थ—(इन्द्र) हे प्रतापी राजन् (उलूकयातुम्) उल्लू के समान झपटने वाले, (शुशुलूकयातुम्) बड़े भेडिए के समान दुःखदायी (श्वयातुम्) कुत्ते के समान पीड़ा देने वाले (उत) और (कोकयातुम्) चिड़े के समान अमर्यादित कामवासना करने वाले (सुपर्णयातुम्) श्येन पक्षी के समान अभिमान करने वाले (उत) और (गृध्रयातुम्) गिद्ध के समान लालच करने वाले [उपद्रवी] को (जहि) मार और (दृषदा इव) शिलाओं एव पत्थरों से (रक्ष.) राक्षस को (प्र मृण) नाश कर दे।

स्पष्टीकरण—वेद मे मानव की तरह तरह के उपदेश दिए गए हैं। सामान्यतया वेद मे मानव को सन्मार्ग दिखाने के लिए सरल शब्दो मे ही सीधा-सादा उपदेश प्रस्तुत किया गया है, कई बार पशुओ एव पक्षियो के माध्यम से भी दुष्प्रवृत्तियो से बचते हुए जीवन का रहस्य समझाया गया है। प्रस्तुत मन्त्र मे मनुष्य को उल्लू, भेडिए, कुत्ते, चिड़े, श्येन और गीध की चालो से सावधान किया गया है। इन छह पशु-पक्षियो की चालें अच्छी नही होतीं, ये चालें मनुष्य जीवन के पतन का कारण हैं। प्रारम्भ मे मानव को 'उलूक यातुम्' उल्लू की चाल से सावधान किया गया है। उल्लू को अन्धकार से प्रीति होती है, उसे उजाला रास नही आता, वह रात्रि के अन्धकार मे विचरण करता है और सूर्य का प्रकाश होते ही गुफाओ, कोटरो और खण्डहरो के अन्धेरे मे छिप जाता है। मन्त्र मे उपदेश दिया गया है—हे मानव, तुम विद्या की ज्योति प्राप्त करो, अज्ञान-अन्धकार से बचो। इसी के साथ मानव को झूठे मोह से बचना चाहिए।

मन्त्र मे दूसरा सन्देश है 'शुशुलूकयातुम्' मानव निर्बल को दबाने वाली भेड़िये की वृत्ति छोड़े, उसकी उच्छृंखलता एवं क्रोध की वृत्ति छोड़ दे। मन्त्र का तीसरा सन्देश 'जहि श्वयातुम्' वह कुत्ते की चाटुकारिता या चापलूसी की वृत्ति छोड़ दे, दूसरे वह स्वजातिद्रोह से दूर रहे। मन्त्र का चौथा उपदेश है कि मानव 'कोकयातुम् जहि' वह चिड़े के समान अमर्यादित कामवासना छोड़ दे। चाणक्य कहते हैं—'नास्ति कामसमो व्याधि.' कामवासना के समान दूसरा कोई रोग नही है, इसलिए अनियमित कामवासनाओं से बचो।

मन्त्र मे पाचवा सत्परामर्श दिया गया है 'सुपर्णयातुम्' श्येन पक्षी के समान शक्ति या किसी भी गुण पर अभिमान करना उचित नहीं है। मानव यौवन, विद्या, धन शक्ति किसी भी वस्तु पर व्यर्थ का अभिमान न करे। परमात्मा यदि ये सब चीजें दे तो मानव नम्र रहे, यदि वह ले ले, तो उसकी इच्छा के सामने सिर झुका दे। मन्त्र की अन्तिम छठी सीख है कि मानव गृध्रयातुम् गीध या गृद्ध के समान लालच की वृत्ति छोड़ दे।

इस मन्त्र के माध्यम से जगन्नियन्ता परमात्मा ने मानव-कल्याण के लिए उपदेश दिया है कि तू वास्तविक उन्नति चाहता है तो उल्लू के समान अज्ञान अन्धकार, भेडिए के समान उच्छृंखलता एवं क्रोध, कुत्ते के समान चापलूसी, चिड़े के समान अमर्यादित कामवासना, श्येन के समान व्यर्थ के अभिमान तथा गृद्ध के समान लालच की वृत्ति छोड दे। इन राक्षसी भावनाओ और दुष्प्रवृत्तियो को पत्थर के समान कठोर साधनो से कुचल डालना चाहिए। दुष्प्रवृत्तियो को कुचलने के लिए कोमलता की आवश्यकता नहीं, अपितु कठोरता की आवश्यकता होती है।

अपना अब प्रण निभा डालो

कवि० बनवारी लाल 'शादां'

प्रधान आर्यसमाज मॉडल बस्ती नई दिल्ली-५

दयानन्द के उठो सैनिको, उठ जग मे धूम मचा डालो।
सत्यार्थ-प्रकाश प्रकाश करो, पाखण्डों के गढ़, ढा डालो ॥
ऋषि का सबको, सन्देश सुना, अन्धकार अविद्या, जग से मिटा।
जग परमेश्वर को भूल रहा, वेदों का ज्ञान, करा डालो ॥
धर्म युद्ध मे, तुमको डटना, कदम बढ़ा, न पीछे हटना।
गर मौत भी, टकराए आकर, ठोकर की मार हटा डालो ॥
छूत-छात को दूर हटाना, जाति-पाति के भेद मिटाना।
विधर्मी बन रहे अपने भाई, शुद्धि कर उन्हें मिला डालो ॥
दयानन्द थे सच्चे ब्रह्मचारी, देश-दशा बिगड़ी सुधारी।
भारत देश का नक्शा बदला, तुम अपना फर्ज निभा डालो ॥
देश धर्म की रक्षा अब करना, इस प्रण से तुम कभी न टरना।
धर्म प्रधान था देश हमारा, 'शादां' वह शान बना डालो ॥

धर्म

– द्रौपदी कोचर

धर्म का स्वरूप कितना विकृत हो गया है, जो मानवता के लिए अभिशाप के तुल्य सिद्ध हो रहा है। सच्चाई, अच्छाई और सबकी भलाई ही मानवधर्म के आधार-स्तम्भ हैं, जिससे हम बिछुड़ गए हैं। मन्दिर-मस्जिद-गुरुद्वारे-गिरजाघर आदि पूजास्थल मानव की पूजा-आराधना के अलग-अलग केन्द्र हैं; परन्तु मानवता का तत्त्व एक ही है और मानव-धर्म सद्भावना, सदाचार और मानव जाति के कल्याण पर अवलम्बित है।

मानवता या इन्सानियत के विरुद्ध आचरण करना मानव समाज को पंगु बनाना है, व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण इन्सानियत के विरुद्ध आचरण वस्तुतः धर्म के विपरीत आचरण है। ऐसे व्यक्ति न तो जन-जन में सच्चा सम्मान ही पाते हैं और न ये सच्ची आत्मिक शान्ति ही पा सकते हैं।

ए-२१, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-११००४९

बोध-कथा

हाजिर जवाबी !

श्री जार्ज बर्नार्ड शा अंग्रेजी भाषा के विख्यात लेखक एवं शिरोमणि नाटककार थे। कहते हैं कि वह जितना अच्छा लिखते थे, उसी तरह वह हाजिरजवाबी मे भी बड़े माहिर थे। वाणी और लेखनी के सौन्दर्य के बावजूद प्रकृति ने उन्हें रूप देने में बड़ी कजूसी बरती थी। वह बहुत ही कुरूप थे। एक दिन जार्ज बर्नार्ड शा के पास एक बहुत ही रूपवती और धनवती अमेरिकी महिला आई। उसने इस प्रतिभा-सम्पन्न कुवारे नाटककार से प्रस्ताव किया—"बड़ा अच्छा हो यदि हम दोनों विवाह कर लें, हमारे वैवाहिक सम्बन्ध से ऐसी अच्छी सन्तान पैदा हो सकती है जो रूप-रंग मे तो मेरी प्रतिमूर्ति हो और प्रतिभा-चतुराई में आप जैसी हो।"

नाटककार जार्ज बर्नार्ड शा एक क्षण सहमे। फिर अपनी गम्भीरता कायम रखते हुए बोल उठे—"मैडम, यदि कुदरत ने तुम्हारी तदबीर के खिलाफ खेल किया तो क्या होगा।" वह रूपसी बोली—"वह कैसे ? बर्नार्ड शा ने उत्तर दिया—"देवी जी, वह ऐसे कि कहीं कुदरत का सारा खेल पलट गया तो क्या होगा, यदि उस सन्तान को मेरा रंग-रूप मिल गया और अकल तुम्हारी तो फिर क्या होगा ?"

नहले पर दहले जैसा यह जवाब सुनते ही वह रूपसी-धनवती उल्टे पांवो लौट गई।

—नरेन्द्र

एक सिख का संस्कृत प्रेम

फाजिल्का के एक सिख स० मोहन सिंह सागर ने अपनी लड़की के शुभ विवाह मे संस्कृत में निमन्त्रण-पत्र छपवाकर अपने संस्कृत प्रेम को सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया है। इस निमन्त्रण-पत्र पर कई लोग चकित रह गए। जब मोहन सिंह से इस सम्बन्ध में पूछा गया तब उन्होंने बताया कि संस्कृत के निमन्त्रण-पत्र इसीलिए दिए गए हैं, क्योंकि लोग अक्सर अंग्रेजी में ही पत्र छपवाने में अपनी शान समझते हैं और अपनी संस्कृति को भूल गए हैं। आम वर्ग के लोगों में उन्होने पंजाबी में निमन्त्रण-पत्र अलग-वितरित किए। संभवतः यह पहला अवसर था कि किसी सिख ने संस्कृत में निमन्त्रण-पत्र छपवाए हो।

ईसाई युवती का वैदिक धर्म ग्रहण एवं विवाह संस्कार

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी मे दि० १५-६-८३ को दिन में गोरखपुर की ईसाई युवती कु० ज्वाय ईरा पाल पुत्री श्री जगदीश पाल वैदिक धर्म में दीक्षित हुई। शुद्धि संस्कार पं० चन्द्रपाल शास्त्री वाराणसी ने कराया। शुद्धि के बाद युवती ने अपनी इच्छा से कु० अर्पिता सिंह नाम रखा एवं विवाह डा० आनन्द सिंह स्वरूपरानी अस्पताल इलाहाबाद से पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। शुद्धि एव विवाह संस्कार में युवती के पिता आदि व आर्यसमाज लल्लापुरा के पदाधिकारी तथा सदस्यगण एवं वाराणसी के प्रतिष्ठित नागरिक अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

हम शतायु हों !

ओ३म् पश्येम शरद' शतम्, जीवेम शरद शतम्, शृणुयाम शरद शतम् ।
प्र ब्रवाम शरदः शतम्, अदीना' स्याम शरदः शतम्, भूयश्च शरद शतात् ॥

(यजु० ३६-६४)

हम सौ वर्ष तक देखें, हम सौ वर्ष तक जीवित रहें, हम सौ वर्ष तक सुनें, हम सौ वर्ष तक बोलें, हम सौ वर्ष तक दीनतारहित रहें, हम सौ वर्ष से भी अधिक समय तक जीवित रहें।

हम भूमिमाता की सच्ची सन्तान बनें !

अथर्ववेद में कहा गया है—'माता भूमि पुत्रो अह पृथिव्या. पर्जन्य. पिता स उ ना पिपर्तु ।'—भूमि हमारी माता है, हम पृथ्वी के पुत्र हैं, मेघ हमारे पिता हैं, वे हमें पवित्र करते हुए पुष्ट करें। इसी वेद मे यह सन्देश भी दिया गया है—'यस्या समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्न कृष्टयः सबभूवु, यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमि' पूर्वं पेये दधातु ।' समुद्र, नदियो और जल से भरी-पूरी पृथ्वी, जिसमे कृषि होनी है, अन्न होता है, जिससे यह प्राणवान् संसार तृप्त होता है, यह पृथ्वी हमे फलरूप रस मिलने वाले प्रदेश में प्रतिष्ठित करे। हिमालय को भारतभूमि का उत्तरी रक्षक-प्रहरी कहा जाता है, परन्तु विगत वर्षों मे जनसंख्या के भारी दबाव और नित नए निर्माण-कार्यों से हिमालय का स्वरूप बदल रहा है। सड़को और मकान बनाने से पर्वतो का स्वरूप ही बदलता जा रहा है। इसी के साथ ईंधन की जरूरत और इमारती कार्यों के लिए भी वनसम्पदा बुरी तरह नष्ट की जा रही है। सारे हिमालय मे विशाल बाध और पन-बिजली योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं, जिन्हें पूर्ण करने के लिए अन्धाधुन्ध पेड़ काटे जा रहे हैं और प्राकृतिक सन्तुलन का ख्याल किए बिना सडकें बनाई जा रही हैं।

शहरो और गावो मे पर्यावरण का प्रदूषण निरन्तर बढ रहा है। नए-नए कारखानो और वाहनो से इतना अधिक जहर फैलाया जा रहा है कि स्वच्छ जल और वायु की उपलब्धि दुर्लभ हो गई है। मानव अपने स्वार्थों की पूर्त्ति के लिए दानव बनता जा रहा है। हमारी सस्कृति यज्ञ-परोपकार मे विश्वास करती है। उसमे कहा गया है—व्यक्ति 'शतहस्त समाहर, सहस्र-हस्त सकिर' सौ हाथो से कमाए और हजार हाथों से बांटे। मानव को यह मन्त्र दिया गया था—'त्यक्तेन भुञ्जीथा'—ईश्वर ने जो कुछ दिया है, उसका त्यागपूर्वक भोगकर, दु.ख है कि मानव वेद की दी हुई इस सीख को भूल गया है। आज लालची मानव भौतिक समृद्धि एव धन सम्पदा की चाह मे प्रकृति एव भूमि माता का ऐसा शोषण और दोहन कर रहा है, यदि समय रहते उसे रोका नहीं गया तो सर्वत्र विनाश एवं संहार के कुछ नहीं दीखेगा। हिमालय के जगल बुरी तरह कट रहे हैं, वनस्पतिया दुर्लभ होती जा रही हैं, पत्थर, धातुओ और इमारती लकड़ी आदि की प्राप्ति के लिए पर्वतों को नगा और वनस्पति-वृक्षो से शून्य-रीता किया जा रहा है। इस सबका परिणाम मानव के लिए विनाश और सर्वनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

पर्वतों, तराई और मैदानो में प्रतिवर्ष ऐसी भीषण बाढें आ रही हैं कि हिमालय और देश का स्वरूप बदलता जा रहा है। यदि इस स्थिति का सुधार करना है तो पर्वतो और मैदान में वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई रोकनी होगी, वृक्षो और वनस्पतियों का न केवल संरक्षण करना होगा, प्रत्युत उनका व्यवस्थित विकास करना होगा। पृथ्वी माता की सुरक्षा के लिए वनों का प्रबन्ध और संरक्षण वैज्ञानिक दृष्टि से करना होगा। पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए नगरो, गावो और सर्वत्र उद्योगों और कृषि का सन्तुलित विकास करना होगा। पर्वतों, मैदान और तराई के खुले नगे क्षेत्रों मे नई वनस्पतियां और वृक्ष लगाए जाने चाहिए। गावों और नगरों की जनता, बच्चो, बूढ़ों और सामान्य जनता को यह सीख देनी होगी कि माताभूमि उसी समय धन-धान्य और फल फूल देगी, जब उसका व्यवस्थित संरक्षण एवं विकास किया जाए। भूस्खलन वाले क्षेत्रों में कृषि-विस्तार की जगह नए वनों का विस्तार करना होगा। १९५७, १९६७ और १९७० में हिमालय में जैसी बाढ़ आई है, यदि उनकी परम्परा ऐसी ही चलती रही तो एक दिन आएगा जब हिमालय देश के रक्षक की जगह भक्षक का स्थान ले लेगा। यह स्थिति न आए, उसके लिए समय रहते हमें वृक्षों-वनस्पतियों का निरन्तर विस्तार भूमि-माता की सच्ची सन्तान बनने का प्रयत्न करना होगा।

चिट्ठी-पत्री

हवन सामग्री की खोज

महर्षि दयानन्द जी के आन्दोलन से यज्ञवाद का उद्धार हो तो गया, परन्तु हवन-सामग्री का कोई प्रामाणिक योग अब तक भी नहीं बना। आर्यपर्वपद्धति के आरम्भ में जो ऋतु-अनुकूल और सामान्य हवन-सामग्री के योग हैं, वे महगाई के कारण प्रचलन में नहीं। प्रामाणिकता की दृष्टि से उनकी परीक्षा अभीष्ट है। शुद्ध घी का मिलना भी कठिन है। ससार मे वातावरण की शुद्धि के आन्दोलन चलते है। हवन सामग्री नामक कुछ पदार्थ भी बड़ी मात्रा मे बेचे जाते हैं। रस्म-रिवाजो मे भी यज्ञ-हवन होने लगे। किसी व्यक्ति या सस्था का योजनाबद्ध रीति से धैर्यपूर्वक अनुसधान के आधार पर जलवायु-शोधक रोग-निवारक, उत्तम परिणामकारी हवन-सामग्री का आविष्कार करके उसका विधिपूर्वक मानकीकरण कराना चाहिए। उसे पेटेंट भी कराया जा सकता है। यज्ञ प्रेमी वैद्यो, डाक्टरो, विज्ञान के आचार्यों को हवन-सामग्री के प्रामाणिकीकरण मे ध्यान देकर लोकोपकार करना चाहिए। हवन और हवन-सामग्री को अशिक्षितो का काम या व्यापार न होना चाहिए। लकडी का बुरादा, कूड़ा-कचरा हवन सामग्री नही।

—जगत्कुमार शास्त्री, आर्योपदेशक, अशोक विहार, दिल्ली-५२

आर्यसमाज तुरन्त कार्य करे

२६ जून, १९८३ के 'आर्यसन्देश' का लेख पढा कि क्या सरकार महाराष्ट्र मे मुस्लिम बनने वाले लोगो को रोकेगी—? यह आशा रखना व्यर्थ है। आर्यसमाज को कोई उपाय सोचकर करना है। यदि कुछ कर लिया गया तो हम लोग बच सकेंगे, वर्ना हमारे लिए देश मे बडे-बड़े खतरे हैं उठकर जी सकते हैं—सरकार से सहायता मिल सकती है—यदि कोई लेने वाला हो—४७ के पश्चात् हम सो रहे हैं। जागो वर्ना मिट जाओगे। दिल्ली मे आर्यसमाजो की दुर्दशा है। रविवार को दो-चार या बहुत कम लोग आते हैं। आर्यसमाजो के भवन या मकान ४-५ लाख के, मगर सदस्य शून्य—यह स्थिति कैसे सुधरे—धन भी हो मगर जीवन न सुधरे यह बड़े दुख की बात है। ईश्वर के नाम पर कोई स्कीम-प्रोग्राम होना चाहिए, उसे अमल मे लाना चाहिए।

—बदरी प्रसाद गुप्त, इन्द्रप्रस्थ, नई दिल्ली

आर्यसमाजें सतर्क रहें

सर्वसाधारण को मालूम हो कि एक व्यक्ति जे० पी० राय नाम के जो अपने आपको राजेन्द्र होम्योपैथिक विश्वविद्यालय पटना-बिहार का उपकुलपति कहता है लगभग ३ माह से दिल्ली की बहुत-सी समाजो मे चक्कर काट चुके हैं। उन्हे हमने अपने यहां आर्यसमाज मन्दिर में ठहरने के लिए स्थान दिया था परन्तु उनके विरुद्ध शिकायत आने पर हमने उनसे स्थान खाली करा लिया। हमारे यहा से जाने के बाद वह आर्य-समाज लारस रोड मे भी ठहरे वहा से भी उन्हे निकाला गया क्योकि वह अच्छे आचरण के नहीं पाये गये। ऐसे व्यक्ति से अन्य आर्यसमाजें वा सस्थाए सतर्क रहे और किसी प्रकार से रुपया-पैसा नहीं दें।

—जयकृष्ण आर्य मन्त्री, आर्यसमाज बिरला लाइन्स, दिल्ली-७

दिल्ली सभा का अधिवेशन २४ जुलाई को

आर्यसमाजें अपना वेदप्रचार दशांश भेजें

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार, २४ जुलाई, १९८३ के दिन होगा। जिन आर्यसमाजो ने नियमानुसार दशाश, वेदप्रचार और आर्यसन्देश का चन्दा नही भेजा है, वे तुरन्त भेजने की व्यवस्था करेंगे। सत्संगो में उपस्थितियो के आधार पर घोषित सदस्यो की सूची, दशाश की राशि, वेदप्रचार आदि कार्यालय में तुरन्त मिलने पर समाजो के प्रतिनिधियो के प्रवेश-पत्र आर्यसमाजों को सीधे भेजे जा सकते हैं।

—मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

हम आह भी भरते हैं तो...।

गत २ जनवरी को बिजनौर नगर (उ० प्र०) मे जिला हिन्दू सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन से (हिन्दू विरोधी कहो या) जयचन्दी लोगो मे तिलमिलाहट उत्पन्न हो गई। किन्ही बाबूराम कश्यप ने इस तिलमिलाहट का प्रतिनिधित्व अपनी कराहट द्वारा 'बिजनौर टाइम्स' मे सम्पादक के नाम पत्र लिखकर किया।

वह लिखते हैं 'इसका औचित्य क्या है, क्या इस तरह के सम्मेलन से राष्ट्र या हिन्दू मजबूत होगे ? आज देश मे नाजुक स्थिति है। आए दिन कहीं न कही साम्प्रदायिक दगे होते ही रहते है, तब ऐसे समय में इस तरह के सम्मेलनो से हिन्दू-मुस्लिम एकता की बजाए उनके बीच नफरत की खाई और गहरी होगी। आज के युग मे आवश्यकता है हिन्दू-मुस्लिम एकता की ताकि देश मजबूत हो सके और ऐसा तब होगा, जब तक इस तरह के सम्मेलन न हो। सरकार को चाहिए कि वह देश मे किसी भी व्यक्ति को इस तरह के सम्मेलन करने की इजाजत न दे।''

पत्र लेखक महोदय की सम्मति मे हिन्दू बिखरे रहकर लुटने-पिटते रहने से मजबूत होगे। एकत्र होकर अपनी समस्याओ पर विचार कर उनका हल निकालने से नही।

बिजनौर मे हिन्दू सम्मेलन हुआ तो स्थिति की नजाकत दिखाई देने लगी। मेरठ मे पी० ए० सी० द्वारा मुसलमानो को काफिरो को कत्ल करने के उनके मजहबी अधिकार से रोक लिया गया, वह भी इन्दिरा जी जैसी धर्मनिरपेक्ष की दृढता से, अन्यथा वहा हिन्दुओ का कत्ल-ए-आम होता। तब इसी मेरठ के प्रश्न को लेकर दिल्ली मे तीस मुस्लिम सासदो ने एकत्र होकर ससद के कुछ ही दिन बाद होने वाले सत्र मे सभी ६५ मुस्लिम सासदो द्वारा एक दिन ससद से अनुपस्थित रहने का प्रस्ताव स्वीकृत किया, जिनमे गाधी टोपी के नीचे साम्प्रदायिक और राष्ट्र व द्रोही मस्तिष्क छिपाये हुए १५ सासद इन्दिरा काग्रेस के थे। तब उक्त पत्र लेखक और उनके दृष्टिकोण के किसी व्यक्ति के सीने मे साम्प्रदायिकता की पीडा नही हुई।

४५ मुस्लिम सासदो ने जब प्रधान मन्त्री को मेरठ मे पी० ए० सी० द्वारा हिन्दुओ की रक्षा किए जाने के विरुद्ध ज्ञापन देकर अपनी घोर साम्प्रदायिक तथा राष्ट्र-द्रोही मनोवृत्ति का परिचय दिया, तब इस प्रकार के लोगो के सीने मे साम्प्रदायिकता की पीडा नही हुई।

सन् १९८० मे जब इमाम बुखारी ने यह बयान दिया था कि मुसलमान भारत का वफादार नही हो सकता, तब इन लोगो को साम्प्रदायिकता नही दिखाई दी अपितु उस समय तो हिन्दु-मुस्लिम एकता, धर्मनिरपेक्षता, साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्र-रक्षा की गध आती रही होगी।

इमाम बुखारी ने अकालियो की घोर साम्प्रदायिकता और राष्ट्र-द्रोही मनोवृत्ति का समर्थन आनन्दपुर साहब और अमृतसर मे उनकी सभाओं मे न केवल सम्मिलित होकर अपितु सभा की अध्यक्षता करके किया, तब भी इन तथाकथित राष्ट्रवादियो को पीडा नही हुई। अब हिन्दू जागते, एकत्र होते और सगठित होते दिखाई देने लगे तब इन्हे मर्मान्तिक वेदना हुई।

हिन्दुओ के सगठित होने मे इन्हे औचित्य दिखाई नही देता। औचित्य तो हिन्दुओ के लुटने-पिटने, मारे जाने और इनकी बहू-बेटियो के कलकित होते देखने मे है, सगठित होने और सुरक्षित रहने मे नही।

बडे प्रबल राष्ट्रवादी बेचारे ! यद्यपि यह पता नही कि राष्ट्र क्या है और राष्ट्रवाद किसे कहते हैं ? भारत मे यदि कोई राष्ट्र है तो वह भारत है और कही राष्ट्रवादिता है तो वह अधिकाशत हिन्दुओ मे है। जिनकी मातृ-पितृ भूमि भारत है, जिनका मरना और जीना भारत मे है और भारत के लिए है। जो केवल भारत का खाते-पीते ही नही, अपितु जो स्वप्न भी भारत के ही लेते हैं।

जिनकी निष्ठा कही अन्यत्र है। जो खाते-पीते भारत का हैं, मरते-जीते भारत मे है तथा गीत दूसरे देशो के गाते हैं, दूसरे देशों के प्रति वफादारी की स्पष्ट घोषणा करते और भारत के प्रति अपने को गैर वफादार बताते हैं, वे भारत के राष्ट्रीय कदापि नही हो सकते। वे अपने आपको भारत का वफादार व राष्ट्रीय मानते ही नही, झूठमूठ भी कहने को तैयार नही, किन्तु हिन्दुओ मे कुछ जयचन्दी तत्त्व हैं, जो न केवल उनकी वकालत ही करते हैं अपितु उनकी ओर से शपथ-पत्र भी स्वय ही प्रस्तुत करते हैं। इतना तो निश्चित है कि मुसलतान इस विषय मे ईमानदार हैं और ये बेईमान हैं, देशद्रोही हैं अथवा मूर्ख ? यह समझने की आवश्यकता है।

जब हिन्दू बोलता है, जागता है, करवट बदलता है अथवा कम से कम अगडाई ही लेने लगता है, तब कुछ लोगो को साम्प्रदायिकता के साथ-साथ नाजुक स्थिति भी दृष्टिगोचर होने लगती है और अराष्ट्रीय तत्त्व चाहे हिन्दू को खा जाए, चाहे इस देश मे आग लगाते रहे किन्तु तब इन स्वयसिद्ध तथा भ्रष्ट राष्ट्रवादी विचारको का मुख भी नही खुलता।

पत्र लेखक ने देश में साम्प्रदायिक दंगे होने का भी रोना रोया है। साम्प्रदायिक दगे करता कौन है ? दगे होते वहीं हैं, जहा कम से कम पन्द्रह-बीस प्रतिशत मुस्लिम आबादी हो। यदि पूरे नगर मे नही तो कम से कम एक मोहल्ले मे जहा भी १५-२० प्रतिशत आबादी मुसलमानो की होती है, वही साम्प्रदायिक दगे होते हैं। जहा इससे कम आबादी मुसलमानो की है अथवा केवल दो-चार घर मुसलमानो के हैं, वहा कभी साम्प्रदायिक दगे नही होते। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि मुसलमान ही साम्प्रदायिक दगे करते हैं। हिन्दू साम्प्रदायिक होते और दगे करते तो भारत के अधिकाश मुसलमान अब तक समाप्त हो जाते, क्योकि १५-२० प्रतिशत तथा उससे अधिक मुसलमान तो भारत मे कही कही ही हैं, अधिकतर स्थानो मे तो उनकी सख्या नगण्य ही है।

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष -- वैदिक सस्थान
नजीबाबाद, उ० प्र०

उक्त पत्र मे आपने हिन्दू-मुस्लिम एकता की भी चर्चा की है। यह एकता किस मूल्य पर होनी है, यह आज तक किसी ने बताकर नही दिया। यह लेखक तो क्या ? कोई भी भारत का बडे से बडा हिन्दू-मुस्लिम एकता का हामी और अलमबरदार इस एकता का सूत्र तो बताए।

भारत-पाक युद्ध के दिनो मे रेडियो सुना जाए पाकिस्तान का। भारत की विजय पर शोक छा जाए, गरदनें लटक जाए और भारत की पाकिस्तान से पराजय सुनकर चेहरे खिल जाए। और तो और भारत-पाक खेल-प्रतियोगिताओ तक मे भारतीय खिलाडियो की जीत पर मृत्यु के अवसर जैसा शोक छा जाए और पाकिस्तानी खिलाडियो की जीत पर 'पाकिस्तान-जिन्दाबाद' के घोष लगें, मिठाइया बाटी जाए और हिन्दू इसे केवल यह कहकर सह ले कि 'मूर्ख हैं' और उधर से उपेक्षापूर्वक आखें फेर ले, फिर भी साम्प्रदायिक हिन्दू।

इस प्रकार की अराष्ट्रीय गतिविधिया भारत में ही सहन होती हैं। इसका कारण यह है कि एक तो हिन्दू आवश्यकता से अधिक सहनशील है, इतना सहनशील कि विष उगलने वाले सापो को भी दूध पिलाना धर्म समझता है और दूसरे भारत प्रारम्भ से ही ऐसे लोगों के हाथ में पड गया है, जो न भारत को जानते हैं और न भारतीयता को। उनके सामने न राष्ट्र है, न राष्ट्रवादिता। यदि कुछ है तो केवल और केवल मात्र येन-केन-प्रकारेण शासन की कुर्सी हथियाये रहना। नहीं तो १५ अगस्त सन् १९४७ से लेकर अब तक की इस इतनी लम्बी अवधि मे भारत में वास्तविक राष्ट्रीयता का विकास हो गया होता और जिन्होने उसे स्वीकार नहीं करना था, वे वहा से विदा हो जाते।

जहा तक हिन्दू का प्रश्न है, यह घोर राष्ट्रवादी है। छत्तीस वर्ष हो गए उसे सहते-सहते। मीनाक्षीपुरम् मे सामूहिक धर्म परिवर्तन कर हिन्दुओ को मुसलमान बनाने के लिए अरब राष्ट्रों से धन और विदेशी मुसलमान बड़ी सख्या मे आएं तो साम्प्रदायिकता की पीड़ा से मुक्त कराने वाले अगडाई भी न लें। मेरठ, रामपुर और मुरादाबाद मे तोपें, हथगोले और बन्दूक व रिवाल्वरें सहस्रो-सहस्रों की सख्या मे मुस्लिम घरो और मस्जिदो मे से सरकारी अधिकारियो ने पकड़े। मेरठ मे यदि पी० ए० सी० न होती तो हिन्दुओ का सर्वनाश निश्चित था।

इमाम बुखारी साम्प्रदायिकता की आग भडकाने वहा बार-बार आया। सरकार भी उक्त अवसरो पर जागी, परन्तु यह धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवादी पता नही कहा चले गए थे ? राष्ट्र-भक्त जागने लगे तो इन्हे पीडा हुई।

प्रश्न फिर वही है कि अन्ततोगत्वा यह हिन्दू-मुस्लिम एकता किस मूल्य पर होगी ? सन् १९५० मे भारतीय ससद ने राष्ट्रीय अभिवादन 'नमस्ते' निश्चित किया, किन्तु अभी तक भी भारत के मुसलमानो ने उसे व्यवहार मे लाना स्वीकार नही किया, आपस मे दो मुसलमान मिलते हैं तब तो क्या ? हिन्दू से मिलते समय भी नहीं ! रूस और चीन आदि देशो के निवासी मुसलमानो के नाम उन्ही देशो की भाषा मे होते हैं किन्तु भारत के मुसलमानो के अरबी और फारसी भाषा मे, भारत की राष्ट्रभाषा मे नही।

हम 'पताका' से 'ध्वजा' पर आए और फिर ध्वजा से झण्डे पर आ गये, किन्तु भारत मे रहने वाले मुसलमान 'परचम' से नीचे आने को तैयार नही।

भारत के आर्थिक ढाचे के मेरुदण्ड गोवश की रक्षा के लिए मुसलमान भारत की स्वाधीनता के इन छत्तीस वर्षों के बाद भी हमारे स्वर मे स्वर तो क्या मिलाता ? अब भी चोरी-छिपे कानूनन अपराध होने पर भी गो-वध करता रहता है। देश की बढती हुई आबादी और खाद्य समस्या के हल के लिए उपयोगी 'परिवार कल्याण' के कार्यक्रमो को कुफ्र बतलाता है और कहता है—'गर्दन कट सकती है, नस नही कट सकती।'

हिन्दू प्रत्येक नगर की दर्जनो-दर्जनों मस्जिदो से होने वाली ध्वनि विस्तारकों पर अजान की आवाज को प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त्त मे भी सहन करते हैं और सायकाल दिन छिपते समय भी किन्तु विरोध तो क्या ? कभी शिकायत तक भी नही करते। यद्यपि प्रात. ब्राह्म मुहूर्त मे और सायकालीन सध्या समय भी की जाने वाली

(शेष पृष्ठ ५ पर)

अण्डे खाना छोड़िए

—अमरनाथ खन्ना

अण्डे-मछली मास से, होते रोग अनेक।
सिगरेट-बीडी-शराब मे, विष हैं भरे अनेक।

अण्डा अभक्ष्य इसलिए है क्योकि इसका खाना वेद विरुद्ध है।

य आमं मासमदन्ति पौरुषेय च ये ऋवि.।
गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि॥ अथर्व० ८।६।२३

अर्थात् जो मास और अण्डे खाते हैं मैं उनका नाश करता हू।

अण्डे खाने से नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं, जैसे दिल की बीमारी, हाई ब्लड प्रेशर, गुरदो की बीमारी, पित्त की थैली मे पथरी, धमनियो मे जख्म, एग्जिमा, लकवा टी० बी०, पेंचिश और पेट मे सड़ान्ध इत्यादि।

अण्डो मे डी० डी० टी० विष पाया गया है। कृषि विभाग फलोरिडा अमरीका की हैल्थ बुलेटिन, १९६७ के अनुसार १८ महीनो के परीक्षण के पश्चात् मालूम हुआ है कि ३० प्रतिशत अण्डों मे डी० डी० विष था।

अण्ड की जर्दी मे कौलैस्ट्रोल नामक भयानक तत्त्व, पाया जाता है। वह जिगर मे जमा हो जाता है। यह अण्डो म इतनी अधिक मात्रा मे होता है कि अमेरिकी डा० कैथेराइन निम्मो, डी० सी० आर० एन० के अनुसार दिल की बीमारी, हाई ब्लड प्रेशर, गुरदो की बीमारी, पित्त की थैली मे पथरी आदि रोग इसी के कारण उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार इग्लैंड के डा० जे० ऐमन विल्किन्ज का कहना है कि कौलेस्ट्रोल रगो (धमनियो) मे जख्म और कड़ापन पैदा करता है।

इग्लैंड के डा० रावर्ट ग्रास और प्रो० इर्विग डेविडसन के मतानुसार १ अण्डे मे लगभग ४ ग्रेन कौलस्ट्रोल होता है और जब अण्डे खाए जाते हैं तो खून मे कौलस्ट्रोल की मात्रा बढ जाती है जिसके कारण पित्ताशय मे पथरी और दूसरी बीमारिया पैदा हो जाती हैं।

अण्डे की सफेदी मे एवीडिन नामक तत्व होता है। इग्लैण्ड के डा० आर० विलियम्स के अनुसार यह तत्व एग्जिमा की बीमारी का कारण होता है। इग्लैण्ड के डा० रावर्ट ग्रास का कथन है कि जिन जानवरो को अण्डे की सफदी खिलाई गई उन्हे लकवा मार गया और चमडी सूज गई।

अण्डों मे कैलशियम की कमी और कार्बोहाईड्रेट्स का सर्वथा अभाव होता है। इस कारण ये बडी आतो मे जाकर सडान्द उत्पन्न करते है (प्रसिद्ध डा० इ० वी० मैक्कालम)।

अण्डा खाना हिंसा है। डा० जे० एमन विल्किज ने लिखा है कि अण्डा उत्पन्न न हुआ (भावी) मुर्गी का बच्चा है। अत अण्डा खाना मुर्गी के बच्चे की हत्या के बराबर है।

प्रोटीन की दृष्टि से एक किलोग्राम सोयाबीन ३ किलोग्राम अण्डे के तुल्य है।

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हैल्थ बुलैटिन न० २३ से लिए गए निम्नलिखित आकडे स्पष्ट दिखलाते हैं कि अण्डे की अपेक्षा दूसरे शाकाहारी खाद्यो मे कितने अधिक पौष्टिक तत्व है। शाकाहारी खाद्य अण्डे से सस्ते भी है और स्वास्थ्य वर्द्धक भी।

मूग की दाल मे २४ प्र० श० प्रोटीन ५९.९ प्र श कार्बोहाईड्रेट है तो उसमे चिकनाई १ ३ प्र श खनिज लवण ३ ६ प्र श. तथा कैलोरी ३३४ होती है। उडद की दाल मे कार्बोहाइड्रेट्स ६० ३ तथा प्रोटीन २४ प्र श होती है उसमे कैलोरी ३५० होती है, भुनी मूगफलीमे पोटीन ३१ ५ प्र. श. कार्बोहाईड्रेट्स १९.३ प्र श. होती है, और कैलोरी ५६१ होती है, उनकी तुलना मे अण्डे मे प्रोटीन १३.३, चिकनाई १९ ५, खनिज लवण १ प्रतिशत और कार्बोहाईड्रेट्स शून्य होते हैं, उसमे फास्फोरस और कैलशियम शून्य तथा लोहा और कैलोरी २ १ प्रतिशत तथा १७३ होती हैं।

इसी प्रकार अरहर, मसूर, मटर, चना, लोबिया, सोयाबीन, बादाम, काजू, मेथीबीज, पनीर आदि मे प्रोटीन, कैलोरी, चिकनाई, खनिज लवण के अश कही अधिक हैं, अण्डा, मछली, बकरी-सूअर आदि मे कही कम। इस सम्बन्ध मे जानकारी के लिए शाकाहार एव मासाहार सम्बन्धी भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रकाशित स्वास्थ्य समाचार सख्या २३ देखिए —पढिए और शाकाहार अपनाइए।

मकान सख्या ७८९, सेक्टर १२, फरीदाबाद (हरियाणा)

रसोई में सूर्य की सहायता लें

महाराष्ट्र लघु उद्योग विकास निगम ने घरेलू उपयोग के लिए सौर चूल्हे की बिक्री करनी शुरू कर दी है। यद्यपि एक सौर चूल्हे पर ५६० रुपए की लागत आती है परन्तु महाराष्ट्र मे खरीददार को इसकी कीमत ३१० रुपए और ४१० रुपए के बीच पडती है। यह भारत सरकार और राज्य सरकार द्वारा दी गई सहायता के कारण सभव हो सका है। एक चूल्हे पर केन्द्र सरकार १५० रुपये की सहायता देती है। इस पर बिक्री कर, उत्पादन कर और चुगी भी नही लगती। एक चूल्हा १० वर्ष तक ठीक तरह से काम कर सकता है। १२ महीनो मे ही इसकी कीमत वसूल हो जाती है। सौर चूल्हा अन्य चूल्हो की तरह काफी उपयोगी है। एक चूल्हा चावल, सब्जिया, गोश्त अथवा मछली पकाने, मूगफली भूनने, पानी को गर्म करने और दूध को उबालने का कार्य कर सकता है। कोई भी नुस्खा क्यो न हो, इस पर खाना बहुत बढिया बनता है।

साधारण यन्त्र! सौर चूल्हा एक साधारण यत्र है। इसमे आयताकार एल्लूमिनियम का बक्सा है जिसकी भीतरी सतह विशेष काले रग से रगी हुई है, ताकि इस पर पडने वाली सूर्य की किरणें अधिक से अधिक उर्जा सोख सकें। इसकी ऊपरी सतह दोहरे मोटे शीशे से ढकी हुई है। यह शीशा खोला जा सकता है और खाना पकाने के बर्तन सौर चूल्हे से निकाले अथवा उसमें रखे जा सकते हैं। इसके सभी पुर्जे और तकनीकी जानकारी स्वदेशी है।

भारत सरकार द्वारा उर्जा के वैकल्पिक साधनो के लिए गठित आयोग (केस) ने विभिन्न राज्य सरकारो को सौर चूल्हे के उत्पादन और इसकी बिक्री का कार्य सौंपा है। महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और अन्य राज्यो के कुछ परिवार पहले से ही सौर चूल्हे का उपयोग कर रहे हैं। केवल पुणे जिले के भोर ताल्लुके मे ही २३ सौर चूल्हे काम मे लाए जा रहे हैं। सूर्य के एक उपासक का कहना है कि "सौर चूल्हे द्वारा सूर्य मेरी रसोई मे आ गया है। सौर चूल्हे का उपयोग कर मैं अनुभव करता हू कि मैं उसकी उपासना पहले से अधिक अच्छी तरह कर रहा हू।"

कुष्ठ रोग से मुक्ति सम्भव

- भारत मे इस समय ३२ लाख से अधिक कुष्ठ रोगी हैं।
- लगभग २५ लाख कुष्ठ रोगियो का पता लगा लिया गया है और २२ लाख कुष्ठ रोगियो का इलाज चल रहा है।
- प्रत्येक वर्ष लगभग २.३ लाख कुष्ठ रोगियो का पता लगाया जाता है। इनमे लगभग २५ प्रतिशत १४ वर्ष से कम आयु के बच्चे है और एक चौथाई रोगी शारीरिक विकृति से पीडित हैं।
- लगभग चार लाख कुष्ठ रोगियो का सामाजिक-आर्थिक जीवन विश्रृंखलित हो चुका है और दो लाख कुष्ठ रोगी भिखारी बन चुके है।
- हमारे देश मे कुष्ठ रोगियो के इलाज के लिए ८००० केन्द्र हैं।
- १९५१ से अब तक इन केन्द्रो द्वारा १० लाख कुष्ठ रोगियो को रोगमुक्त कर इन केन्द्रो से वापिस भेजा जा चुका है। इसी अवधि के दौरान कुष्ठ रोग पर काबू पाने के लिए ४६७५ लाख रुपए खर्च किए जा चुके हैं।
- छठी पचवर्षीय योजना मे कुष्ठ रोग पर काबू पाने के लिए ४००० लाख रुपए खर्च किये जायेंगे और यदि आवश्यक हुआ तो और अधिक राशि उपलब्ध कराई जाएगी।
- इस शताब्दी के अन्त तक देश मे कुष्ठ रोग को पूरी तरह से समाप्त करने हेतु एक कार्य योजना बनाने के लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय कुष्ठ रोग उन्मूलन आयोग और राष्ट्रीय कुष्ठ रोग उन्मूलन बोर्ड का गठन किया है।
- स्मरण रखें कि यदि प्रारम्भ मे ही ख्याल एव निवारण किया जाए तो कुष्ठ रोग से मुक्ति सम्भव है।

हम आह भी भरते हैं तो…।

(पृष्ठ ४ का शेष)

सध्या-उपासना के लिये ध्वनि-विस्तारको द्वारा अजान किया जाना नितान्त बाधा है, परन्तु मुसलमान मेरठ के एक मन्दिर से आने वाली आरती की ध्वनि को भी सहन नहीं कर सके और वहां के पुजारी राम भोले की हत्या कर दी।

उपर्युक्त तथा इसी प्रकार के सैकडों प्रश्न हैं। जिनका उत्तर इन तथाकथित स्वयसिद्ध राष्ट्र-भक्तों तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के अलमबरदारों से कभी भी और कदापि नहीं दिया जा सकता। यदि ये लोग ईमानदार हैं और सही अर्थों में राष्ट्र-भक्त हैं तो अपने विरादराने वतन को राष्ट्र-भक्ति सिखाए, उन्हे धर्मनिरपेक्ष और हिन्दू-मुस्लिम एकता का हामी बनाए। उन्हे कभी नेक सलाह नही देंगे, चाहे जितने अत्याचार वे हम पर करें। हम चोट खाकर कराहे भी तो ये लोग तिलमिला उठते हैं।

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वो कत्ल भी करते हैं तो शिकवा नहीं होता॥

वेदप्रचार के निमित्त निष्ठावान् प्रचारक चाहिए

आर्य सिद्धान्तो मे मन-वचन-कर्म से विश्वास रखने वाले एव मिशनरी भावना से कार्य करने के इच्छुक नैष्ठिक आर्य युवक एव युवतिया वेदप्रचार कार्य के निमित्त अपनी सेवाए दें। पत्र-व्यवहार का पता है—

—मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

पंजाब की स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक

पंजाब में राष्ट्रपति शासन हो विभिन्न हिन्दू संस्थाओं की मांग

नई दिल्ली। पजाब मे हिन्दू मन्दिरों को भ्रष्ट करने के प्रयत्नों के बाद विभिन्न मन्दिरो के पुजारियो पर हमलो के साथ दल खालसा द्वारा दो हिन्दू मन्दिरो के हटाए जाने के बारे मे पोस्टरों द्वारा बम प्रयोग की धमकी से स्पष्ट है कि उग्रवादियों एव असामाजिक तत्वो द्वारा पैदा की जा रही ये प्रवृत्तियां अत्यधिक चिन्ताजनक हैं। विश्व हिन्दू परिषद् के महामन्त्री श्री हरमोहनलाल ने एक वक्तव्य मे पंजाब के सभी बन्धुओं से अनुरोध किया है कि ये समाज मे विघटन और अशान्ति उत्पन्न करने वाले क्षुद्र स्वार्थी राजनीतिज्ञो के षड्यन्त्र के शिकार न बनें तथा पारस्परिक एकता और पारिवारिक सम्बन्धो को दृढ से दृढता बनायें।

पजाब में राष्ट्रपति शासन हो

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि उपसभा पश्चिमी दिल्ली (राजौरी गार्डन क्षेत्र) ने एक प्रस्ताव मे अकालियो द्वारा उग्रवादी तत्वो के साथ मिलकर पजाव मे बेगुनाह लोगो की हत्या, मन्दिरो पर बलात् कब्जा करने की तीव्र निन्दा की है और अकाली आन्दोलन को राष्ट्रद्रोही कहा है। प्रस्ताव मे दरबारासिंह मन्त्रिमण्डल भग कर राष्ट्रपति शासन प्रचलित करने की माग की गई।

पजाब की हकूमत फौज को सौंपो

आर्यसमाज सुभाषनगर ने भी एक प्रस्ताव मे अकाली आन्दोलन को भारत की अखण्डता के लिए एक चुनौती कहा है और इसे सख्ती से दबाने की माग की है, प्रस्ताव द्वारा पजाब का प्रशासन सेना को सोपने की माग की गई है।

सिखों हिन्दुओं को जुदा नहीं किया जा सकता

शिवमन्दिर, सुभाषनगर की प्रबन्ध समिति ने राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के नाम पत्र भेज कर घोषित किया है कि जब तक सद्गुरुओ का नाम और उनकी परम्परा कायम है तब तक सिखों और हिन्दुओं को कोई जुदा नही कर सकता। गुरुगोविन्दसिंह उनके पिता और चारो पुत्रो ने अपने को हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए बलि दे दिया था, आज अकाली उन्हीं आदर्शों से गद्दारी कर रहे हैं, अमृतसर के स्वर्णमन्दिर को इन गद्दारो से पवित्र किया जाए।

आर्यसमाज सराय रुहेला पर कब्जे की कोशिश विफल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा रोष अभिव्यक्त

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने इस बात पर गहरा रोष प्रकट किया है कि सोमवार ४ जुलाई, १९८३ के दिन आर्यसमाज मन्दिर सराय रुहेला सुभद्रा कालोनी पर राजेन्द्रप्रसाद बजाज ने पुलिस की मदद से जबर्दस्ती कब्जा करने का अनुचित एवं अवैधानिक प्रयत्न किया, जिसे आर्यसमाज के पदाधिकारियों और सदस्यो ने जनसहयोग से असफल बना दिया। आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं बहन रामेश्वरी शर्मा व श्री उत्तमचन्द्र को गिरफ्तार करने की धमकी दी जा रही हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा स्पष्ट कर देना चाहती है कि आर्यसमाज मन्दिर सराय रुहेला सुभद्रा कालोनी प्रतिनिधि सभा की सम्बद्ध समाज है, इस पर किसी भी तरह की नाजायज कब्जे या अधिकार करने की कोशिश का सभा और आर्यसमाजें दृढ़ता से विरोध करेंगी। आर्यसमाज का सगठन पूर्णतया प्रजातान्त्रिक है, इसकी किसी भी समाज पर शक्ति या दबदबे का प्रयोग कर अधिकार करने की कोशिश सहन नहीं की जाएगी।

भारतीय मूल्यों की सुरक्षा सत्यार्थ प्रकाश से

गत २५ जून को आर्यसमाज खण्डवा के पुरोहित पं० सुखरामजी आर्य ने श्री अविनाश आर्य का सौ० का० नन्दा सुखटकर के साथ शुभ-विवाह संपन्न कराया। आर्य समाज की ओर से वैदिक साहित्य विधायक श्री गगाचरण मिश्रजी ने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए कहा कि हमे भारतीय संस्कृति एवं भारतीय मान्यताओं एवं मूल्यों को सुरक्षित रखना है। श्री रामचन्द्रजी आर्य, मंत्री कैलाशचन्द्र [illegible]वाल, हीरालाल आर्य ने आशीष वचन दिए।

षट्दर्शन साधु अखाड़ा परिषद् द्वारा गोरक्षा का व्यापक समर्थन

आगामी २५ जुलाई को गोवंश रक्षा प्रतिज्ञा दिवस

हरिद्वार—श्री अखिल भारतीय षट्दर्शन साधु अखाड़ा परिषद् ने अ० भा० गोसंरक्षण परिषद् द्वारा चलाए जा रहे गोवंश रक्षा आन्दोलन का सर्व-सम्मति से समर्थन करते हुए भारत के सभी साधु-सन्तों एवं साधु-भक्तों से अनुरोध किया है कि आगामी २५ जुलाई १९८३ को गोवंश रक्षा प्रतिज्ञा दिवस मनाकर अपने-अपने स्थान के अनुसार कार्यक्रमों का निश्चय करते हुए अ० भा० गोसंरक्षण परिषद् की ओर से भेजे सुझावों पर आचरण करें। उक्त निर्णय श्री तपोनिधि निरंजनी अखाड़ा के भवन में हुई बैठक ने लिया। इस बैठक ने यह भी निर्णय किया कि २५ जुलाई को प्रातः ७ से ९ बजे तक हरिद्वार में हरि की पेढी पर परिषद् के नेतृत्व में प्रमुख पूज्य महन्त गोवंश रक्षार्थ प्रार्थना करेंगे।

छात्र व छात्राएं अपना आत्मबल बढ़ाएं

—श्री आर एस मिश्रा का सत्परामर्श

गत ५ जुलाई को वन संरक्षक श्री आर एस मिश्राजी ने आकस्मिक निरीक्षण किया। जिन्होंने बालको को वनो के महत्व व लाभ लकड़ी का जीवन में महत्व, वृक्षारोपण व वनो के वातावरण पर प्रभाव आदि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के बालकों को अपना आत्मिक बल बढ़ाना चाहिए एव अपनी जड़ें मजबूत करनी चाहिएं जिससे वे भविष्य मे आत्म-निर्भर बन सकें। सस्था की गतिविधियों की जानकारी मन्त्री श्री कैलाशचन्द जी पालीपाल ने दी। उनका स्वागत, प्रधान पं० श्री रामचन्द्र जी आर्य ने किया एवं आभार प्र० अ० कु० हेमलता शर्मा ने व्यक्त किया।

गत ५ जुलाई को ही आचार्य अरविन्द कुमार मयाचारी शास्त्रीजी ने भी बालकों को नैतिक शिक्षण व आध्यात्मिक ज्ञान पर प्रकाश डाला।

गोवंश रक्षा आन्दोलन में अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं का सहयोग

नई दिल्ली—२५ जुलाई १९८३ को गोवश रक्षा प्रतिज्ञा दिवस मनाने के लिए अ० भा० गो सरक्षण परिषद के समर्थन में अनेक सस्थाओ ने अपील की है जिनमें विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू मच, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ, श्री अखिल भारतीय षट्दर्शन साधु अखाडा परिषद, योगी महासभा अखिल, भारतीय हिन्दू महासभा, गोसरक्षण महिला परिषद, आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। उक्त जानकारी पत्रकारो को देते हुए अ० भा० गोसरक्षण परिषद के अध्यक्ष प० पू० महामण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधीजी से पुनः अनुरोध किया है कि सम्पूर्ण गोवंश हत्या निरोध केन्द्रीय कानून बनाने की घोषणा २५ जुलाई से पूर्व ही करें ताकि देश को ऊर्जा एव अन्न आदि सकटों की बरबादी से बचाया जाए तथा आन्दोलनकारी गोभक्तो को गोसम्वर्धन एव गोपालन के कार्य में लगाकर देश रक्षा के रचनात्मक कार्य किए जा सकें।

पजाब में अराजकता व असुरक्षा का राज्य

आर्य वीरदल गुड़गांवा के शिक्षण शिविर-आयोजन दिनाक २६-६-८३ के उद्घाटन अवसर पर यह सभा "दैनिक प्रताप" जालन्धर कार्यालय मे पार्सल बम विस्फोट से दो निर्दोष कर्मचारियों की हत्या पर गहरा दु.ख प्रकट करती है। उग्रवादियों को दण्डित करने और अन्य हिन्दू निरकारी, उदार सिक्खों की असुरक्षा पर पजाब राज्य प्रशासन अव्यवस्था की कटु निन्दा करती है।

आर्यसमाज खंडवा जिला पूर्व निमाड़ (म० प्र०) खंडवा दि० २६-६-८३ की साधारण सभा श्री प्रो० रामसिंह जी के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

भारत की औद्योगिक प्रगति में योगदान

प्रमुख उद्योगपति स्व० श्री घनश्यामदास बिरला के प्रति

आर्यसमाज हनुमान रोड की श्रद्धांजलि

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्संग में भारत के प्रमुख उद्योगपति श्री घनश्यामदास बिरला के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया। श्री बिरला जी ने अपने जीवनकाल में भारत की औद्योगिक प्रगति में योगदान के अतिरिक्त धार्मिक एव सामाजिक क्षेत्रों में जो सेवाएं कीं, वे चिरस्मरणीय हैं। आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली श्री बिरला जी द्वारा अपने निवास स्थान के लिए प्राप्त किए गए स्थान पर बना है। जब सरकार से आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि प्राप्त न हो सकी, तब बिरला जी ने अपनी कोठी के लिए ली गई यह भूमि आर्यसमाज को दे दी।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत उच्च आत्मा को उनके सत्कर्मों के आधार पर सद्गति एवं उनके परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दें साथ उनके मार्ग पर चलते हुए धर्म एवं समाज की सेवा के लिए प्रेरित करें।

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार, १७ जुलाई, १९८३

अमर कालौनी—पं० खुशीराम शर्मा, अशोक नगर—प० सोमदेव शास्त्री; अशोक विहार—प० आशानन्द भजनीक, आर्यपुरा—प० रमेशचन्द वेदाचार्य; आर० के पुरम सेक्टर-६—श्रीमती लीलावती, आर० के० पुरम सेक्टर-९—प० देवेश् बसल; इन्द्रपुरी—श्री मुनिशंकर वानप्रस्थ; किशनगंज—स्वामी शिवाचार्य; किंग्जवे कैम्प—बलवीर शास्त्री; कालकाजी—प०रामनिवास शास्त्री; कालका डी० डी० ए० फ्लेट—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, कृष्णनगर—सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; गाधीनगर—पं० अमरनाथ 'कान्त', गीता कालौनी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; गोविन्दपुरी—प०कामेश्वर शास्त्री; गुडमण्डी—पं० ईश्वरदत्त शास्त्री; ग्रेटर कैलाश न० १—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती; जूनामण्डी-पहाड़गज—आचार्य हरिदेव सिद्धान्तभूषण, भोगल—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, जनकपुरी सी-३—पं० ओमवीर शास्त्री, जनकपुरी बी-३/२४—पं० रामदेव शास्त्री; टैगोर गार्डन—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक, तिलकनगर—प० रामरूप शर्मा; तिमारपुर—प० मनोहरलाल ऋषि, त्रिनगर—प० सत्यपाल मधुर, दरियागज—प० ओमप्रकाश वेदालकार; देवनगर—प० अशोक विद्यालकार, नारायण विहार—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, पजाबी बाग—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प० चमनलाल जी, प्रीतमपुरा—प० बघेश्वर आर्य, बाग कड़ेसा—रणजीतसिंह राणा, मोडलबस्ती—पं० प्राणनाथ जी; मोडल टाउन—प्रो० सत्यपाल बेदार; महरौली—प० सत्यभूषण वेदालकार; रमेशनगर—महाशय-तुलसी राम आर्य; राणा प्रताप बाग—प० शीशराम भजनीक; राजौरी गार्डन—प० ओमप्रकाश वेदालंकार; लड्डू घाटी—श्रीमती सुशीला राजपाल; लक्ष्मीबाई—अमीचन्द मतवाला; लाजपतनगर—आचार्य दिनेश चन्द, लारेन्स रोड—प० वेदव्यास और प० ज्योति प्रसाद ढोलक वादक, विक्रमनगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य, सराय रोहेला—प० सत्यदेव स्नातक, सोहनगंज—पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री, श्रीनिवासपुरी—प० महेशचन्द पाराशर, शादीपुर—आचार्य रामचन्द शर्मा, हौजखास—प० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण, हनुमान रोड—डा० विक्रम सिह शास्त्री, ग्रीन पार्क—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, बिरला लाइन्स, कविप्रकाशचन्द व्याकुल,

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता, वेदप्रचार विभाग

छात्र-छात्राओं की नेत्र-परीक्षा होगी

उपराज्यपाल बाल नेत्र-ज्योति अभियान शुरू करें

महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्रीमती चन्नमदेवी आर्य समाज नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय ने २२ जुलाई से १९ नवम्बर १९८३ तक श्रीमती इन्दिरा गाधी जी के ६६वें जन्मदिन तक "एक बाल नेत्र ज्योति बचाओ" अभियान चलाने का निश्चय किया है। इस अभियान मे ६६,००० हजार के लगभग स्कूली छात्र-छात्राओं की स्कूलो मे जा जाकर नेत्र परीक्षा की जाएगी। रोगी छात्रों को यथासम्भव नि:शुल्क दवाइया भी दी जाएंगी। इस कार्य के लिए तीन एम० एस० सर्जन नेत्र रोग विशेषज्ञों की अलग-अलग तीन टीमे बनाई गई हैं। जो स्कूलो मे जा-जाकर नेत्र परीक्षा करेंगी।

इसके साथ ही दिल्ली के ६६ देहातो में घर-घर जाकर देहाती भाई-बहनो की नेत्र परीक्षा की जाएगी। यह सारा कार्य १९ नवम्बर १९८३ तक पूरा किया जाना है और इसकी रिपोर्ट १९ नवम्बर, १९८३ को प्रधान मन्त्री जी के जन्मदिन पर उन्हें भेंट की जाएगी।

"बाल नेत्र ज्योति बचाओ" अभियान का उद्घाटन दिल्ली के उपराज्यपाल माननीय श्री जगमोहन जी २२ जुलाई, को प्रात ११ बजे कर रहे हैं।

युवक जियाउद्दीन जीवनलाल आर्य बने

नगर आर्यसमाज साहबगज गोरखपुर द्वारा २८ वर्षीय नवयुवक जियाउद्दीन पुत्र श्री अब्दुल गोइद चौधरी निवासी (एकाबगंज) साहबगज गोरखपुर का शुद्धि संस्कार जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर के अध्यक्ष ऋषि द्विजराज शर्मा पुरोहित द्वारा सम्पन्न किया गया।

कार्यक्रम का संचालन समाज के मंत्री दर्शन प्रसाद गुप्त ने किया।

इस अवसर पर नगर के गणमान्य व्यक्ति एवम् महिलाओ के अतिरिक्त आर्य युवक परिषद् के मन्त्री अशोककुमार लोहिया श्री घनश्यामदास आर्य, देवीलाल राधेश्याम गुप्त, शंकरलाल आर्य आदि महानुभावों ने आशीर्वाद प्रदान किया। युवक का नाम श्री जीवनलाल आर्य रक्खा गया।

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज गन्नौर शहर (सोनीपत)—प्रधान—प० जयदेव जतोई वाले, उपप्रधान—मास्टर आत्मदेव बधवा, मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र स्नेही, उपमन्त्री एव विद्यालय कोषाध्यक्ष—श्री सुरेशकुमार मुखीजा, विद्यालय—प्रबन्धक—श्री अमरनाथ बत्रा, कोषाध्यक्ष—श्री मनोहरलाल डुडेजा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रतापचन्द भूटानी, लेख निरीक्षक—ओम्प्रकाश वर्मा।

आर्यसमाज गोविन्दनगर, कानपुर—प्रधान श्री देवीदास आर्य, उपप्रधान—श्री द्वारिका प्रसाद उप्पल, श्रीकृष्ण धमीजा, मन्त्री—श्री शुभकुमार वोहरा, प्रचारमन्त्री—श्री दीवानचन्द्र खन्ना, उपमन्त्री—श्री लाजपतराय आर्य, त्रिलोकनाथ सूरी, कोषाध्यक्ष श्री सन्तोष पाल।

आर्यसमाज सोहनगंज—प्रधान—श्री शिवप्रसाद गुप्त, उपप्रधान—श्री सुशील कुमार नागिया, उपप्रधान—श्रीमती सुमित्रा शर्मा, मन्त्री—प्रेमसागर गुप्त, उपमन्त्री श्री नारायणदास मित्तल, श्री माताप्रसाद जी, कोषाध्यक्ष—श्री नृपतिराय, पुस्तकाध्यक्ष—श्री वेदप्रकाश हिन्दूजा।

रामायण कथा एवं वैदिक साहित्य का वितरण

"आर्यसमाज माडल टाउन मे २७ जून से २ जुलाई तक रामायणकथा श्री आचार्य रामकिशोर जी वैद्य के द्वारा बडी धूमधाम से सम्पन्न हुई जिसमे सैकड़ो नर-नारियो ने बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। इस अवसर पर प्रचारार्थ नि.शुल्क विभिन्न प्रकार का वैदिक साहित्य वितरण किया गया।

आर्यसमाज द्वारा शुद्धिकरण

गत २१ जून को आर्यसमाज खण्डवा में प० श्री रामचन्द्रजी आर्य की अध्यक्षता मे एन्ड्रू माइकल डिसोजा के आवेदन पर शुद्धिकरण कर वैदिक धर्म मे प्रवेश कराकर अविनाश आर्य नाम रखा। मत्री श्री कैलाशचन्द्रजी पालीवाल ने आशीष दिया।

—फूलचन्द खरे सदस्य, आर्यसमाज खण्डवा

योग्य वर की आवश्यकता

आर्यसमाज काकडवाडी बम्बई द्वारा द्वारा पालित एव सुरक्षित कन्या गुरुकुल बडोदा से १० वीं कक्षा तक पढी, सुशील, गृह कार्य दक्ष, कद पाच फुट, १९ वर्षीया कन्या के लिए स्वावलम्बी, निर्व्यसनी और आर्य विचारो के वर की आवश्यकता है। योग्य इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर सम्पर्क करें। राजेन्द्रनाथ पाण्डेय, मत्री, आर्यसमाज बम्बई काकडवाडी, विट्ठलभाई पटेल मार्ग, बम्बई—४

केरल हिन्दू तीर्थों के समीप ईसाइयों की व्यूह-रचना

(पृष्ठ १ का शेष)

मे मन्त्रिमण्डल के घटक ईसाई दलो को खुश करने के लिए सरकार ने वह सरकारी भूखण्ड ईसाइयों को देने की पेशकश की, परन्तु इस सरकारी कार्यवाही से प्रदेश के ही नहीं, समस्त दक्षिण भारत की बहुसंख्यक जनता क्षुब्ध हो उठी है और प्रदेश-भर में प्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान सत्याग्रह कर रहे हैं।

ईसाइयो का यह कहना कि इस क्षेत्र मे सन्त थामस का पहली शताब्दी का क्रास मिला है, यह न केवल कोरी गप्प है प्रत्युत नितान्त धोखेबाजी। यह दावा पाच दृष्टियो से पूर्णतया निराधार एवं तथ्य विरोधी है। यहा प्रस्तुत है नोलक्कल मन्दिर के समीपस्थ कथित ईसाई क्षेत्र के बारे मे कुछ उपयोगी विवरण—

० प्रथमत चौथी शताब्दी से पहले क्रास का प्रयोग धार्मिक चिह्न के रूप मे नहीं किया जाता था।

० पाचवी ईसवी सदी से पूर्व ईसाई गिरजाघरो का निर्माण नहीं करते थे।

० तीसरे सन्त थामस कभी भारत आए ही नहीं।

० चौथे क्रास का निशान केवल गिरजाघरों में नहीं, प्रत्युत कब्रों में भी प्रयुक्त होता है।

० पांचवे क्रास केवल ईसाइयो का धार्मिक चिह्न नहीं है।

उल्लेखनीय है प्रारम्भिक शताब्दियों मे ईसाई किन्ही भी मूर्त्तियो, चिह्नों एव प्रतीको को मूर्त्तिपूजा विरोधी होने के कारण अस्वीकार करते थे। प्रारम्भिक वर्षों मे ईसाइयो पर अत्याचार किया जाता था, इसलिए वे अधिकतर छिपे-छिपे ही बलिदान के प्रतीक क्रास का प्रयोग किया करते थे। गिरिजाघर की वास्तुकला मे सन् ३१३ के बाद रोम के सम्राट् कान्स्टीटाइन ने पहली बार क्रास प्रयुक्त किया। जब यूरोप मे ही गिरजाघर नही थे तो भारत मे वे कैसे बन सकते हैं। केरल मे ईसाइयो का आगमन १६ वी सदी मे पुर्तगालियों के साथ हुआ।

दिल्ली पुलिस की ज्यादती

आर्यवीरदल गुडगाव शिक्षण शिविर के उद्‌घाटन अवसर पर यह सभा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के प्रधान ब्रह्मचारी राजसिंह की आजाद मार्केट पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली एक दुकान की अवैधानिक छत तोड़ने मे अधिकार प्रमाणपत्र दिखाने के प्रश्न पर पुलिस कर्मचारियो द्वारा थाने में पिटाई और दुर्व्यवहार की [illegible] उचित कार्यवाही हेतु यह सभा दिल्ली प्रशासन से माग करती है।

महर्षि दयानन्द के भक्तों से हार्दिक अपील।

महर्षि दयानन्द की देहान्तस्थली पर विशाल अन्तरराष्ट्रीय स्मारक बन रहा है।

प्रत्येक आर्य अपने परिवार की ओर से अधिक से अधिक पर कम से कम ५ रुपए प्रति सदस्य योगदान भेजकर पुण्य का भागी बने।

काम चालू है यह बन्द न होने पाए।

[illegible] दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, दयानन्द मार्ग, अजमेर (राज०)

रजि० न० डी० सी० 759 साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन: ३१०१५०

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपए   वर्ष : ७ अंक ३९   रविवार २४ जुलाई, १९८३   ९ श्रावण वि० २०४०   दयानन्दाब्द—१५९

अलगाववादी तत्त्वों से देश की एकता को खतरा

उग्रवादियों की हिंसक गतिविधियों का दृढ़ता से सामना किया जाए

अन्यथा उसके परिणाम गम्भीर और घातक : भू० पू० प्रधानमन्त्री श्री चरणसिंह का आर्यसमाज दीवानहाल में सामयिक उद्बोधन

नई दिल्ली। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री, लोकदल के अध्यक्ष एव आर्यसमाज के सिद्धान्तो मे आस्था रखने वाले चौधरी चरणसिंह ने रविवार १७ जुलाई के दिन आर्यसमाज दीवानहाल द्वारा पजाब समस्या पर आयोजित एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि पंजाब मे उग्रवादियो की हिंसक गतिविधिया जारी रहीं तो देश की एकता खतरे मे पड सकती है और उसके परिणाम बहुत गम्भीर और घातक हो सकते हैं। उन्होने पजाब समस्या के समाधान के लिए केन्द्रीय सरकार से [illegible] की कि वह अलगाववादी ताकतो से सख्ती से पेश आए।

चौ० चरणसिह ने कहा—"पजाब की समस्या इतना तूल पकड गई है कि इससे पूरे देश की एकता को खतरा पैदा हो गया है, इसके लिए और कोई नही, केन्द्र सरकार की ढुलमुल नीति ही जिम्मेदार है। धर्म, बिरादरी और भाषा ही देश की एकता मे फूट के प्रमुख कारण हैं।" उन्होंने सुझाव दिया कि साम्प्रदायिक संस्थाओं को राजनीतिक क्षेत्र मे कार्य नहीं करना चाहिए। श्री चरणसिंह ने पंजाब की समस्या को भडकाने के लिए अमेरिका पर भी अभियोग लगाया और कहा कि कुछ विदेशी ताकतें देश को भाषा धर्म और जाति के आधार पर कमजोर करने पर लगी हुई हैं। वक्ता ने यह अभियोग भी लगाया कि श्रीमती गांधी सिखो के वोट चाहती हैं और इसके लिए तुष्टिकरण की नीति अपना रही हैं, इसी कारण आज पंजाब मे स्थिति बेकाबू हो रही है।

उन्होने कहा कि द्विराष्ट्रवाद सिद्धान्त के सामने झुकते हुए देश का विभाजन हुआ, उसके बाद मुसलमानो से कहा जाना चाहिए था कि उन्हे भारतीय बनकर तथा इस देश की सस्कृति से तालमेल बिठाकर रहना चाहिए, किन्तु वोटो के लिए तुष्टिकरण की नीति अपनाई जाती रही। परिणामस्वरूप देश मे अलगाववादी तत्त्व पनपने गए। पजाब की समस्या भी इसी नीति का परिणाम है। उन्होने सुझाव दिया कि गुरुद्वारो मे छिपे उग्रवादियो एव अपराधकर्मियो को गिरफ्तार करना चाहिए।

इससे पूर्व सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि पाकिस्तान और अमेरिका जैसे देश अकालियो को सहयोग देकर देश का एक और विभाजन करने का षड्यन्त्र कर रहे हैं।

हिन्दू-सहमति से ही अकालियों से समझौता

पृथक् राष्ट्र मांगने वाले मताधिकार से वंचित हों

धार्मिक स्थलों के दुरुपयोग पर प्रतिबन्ध लगे :

पंजाब के आर्य हिन्दू नेताओं का प्रधानमन्त्री को ज्ञापन

नई दिल्ली। १३ जुलाई के दिन पजाब हिन्दू सगठन के एक १३ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से भेंट कर उनसे कहा है कि पजाब समस्या पर सरकार और अकालियो के बीच कोई समझौता हिन्दुओ की सहमति के बगैर उन्हे मान्य नहीं होगा। प्रधानमन्त्री को दिए गए ज्ञापन मे प्रतिनिधिमण्डल ने कहा कि स्वायत्तता जैसी माग भडकाने वाली है और जो लोग अलग राष्ट्र की माग कर रहे है, उन्हे मताधिकार से वचित कर दिया जाना चाहिए।

प्रतिनिधिमण्डल ने ज्ञापन मे कहा है कि अकाली दल द्वारा पजाब मे शुरू किए कथित 'धर्मयुद्ध' से राज्य मे कानून-व्यवस्था के लिए सकट पैदा हो गया है। हिंसा के वातावरण से अकाली उग्रवादी हिन्दुओ को पजाब छोडने की स्थिति पैदा कर रहे हैं।

सगठन के अध्यक्ष पडित अमरनाथ और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान एव प्रताप के सचालक श्री वीरेन्द्र ने सवाददाताओं को सूचना दी कि पजाब की स्थिति से स्वयं प्रधानमन्त्री चिन्तित हैं। यह आरोप भी लगाया गया है कि गुरुद्वारो का उपयोग राजनीतिक और अपराधियो को शरण देने जैसे कार्यों के लिए हो रहा है। उन्होने धार्मिक स्थलों के राजनीतिक उपयोग पर पाबन्दी लगाने की माग की। प्रतिनिधिमण्डल ने पजाब के हिन्दुओ तथा अन्य अल्पसख्यको की शिकायतो की जाच के लिए एक उच्चाधिकार प्राप्त आयोग गठित करने की माग की है। प्रतिनिधिमण्डल ने यह माग की है कि हिन्दी पजाबी पजाब की सरकारी भाषाए घोषित की जाए क्योंकि एक भाषा के कारण साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिलता है।

श्री मेला राम वर्मा को—पौत्र-शोक

बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि प्रसिद्ध आर्य नेता श्री मेला राम वर्मा, करनाल के पौत्र एवं श्रीमती ममता सहगल, अतिरिक्त रेन्ट कन्ट्रोलर के पति श्री अनिल सहगल एफ०-४६, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली का अकस्मात् हृदय गति रुक जाने से दिनांक १७ जुलाई, १९८३ को देहावसान हो गया। उनका अन्तिम शोक दिवस शुक्रवार, २९ जुलाई, १९८३ को आर्यसमाज मन्दिर ग्रीन पार्क, नई दिल्ली मे होगा। आर्य-सन्देश परिवार एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से संतप्त परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट करते हैं।

पंजाब सुरक्षा दिवस पर विराट सभा

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की सम्मिलित सभा आर्यसमाज हनुमान रोड मे रविवार, २४ जुलाई को साय ४ बजे होगी जिसमें सभी आर्य-हिन्दू संस्थाओ के नेता पधार रहे हैं। भारी सख्या में पधारें।

२४ जुलाई को पंजाब सुरक्षा दिवस मनाओ

पंजाब के उग्रवादियों से हिन्दुओं की रक्षा करो

अलगाववादी नारों का विरोध करो : आर्यसमाजें सार्वजनिक सभाएं आयोजित कर प्रस्ताव स्वीकृत करें

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो, आर्य संस्थाओ एवं आर्यजनो को निर्देश दिया है कि वे आर्यसमाज की सार्वभौम संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार रविवार २४ जुलाई, १९८३ को अखिल भारतीय सुरक्षा दिवस मनाए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निर्देश दिया है कि रविवार २४ जुलाई को समाजों मे सार्वजनिक सभाए कर उग्रवादी अकालियो द्वारा पजाब मे हत्याकाण्ड, अलगाववाद और देश की अखण्डता को चुनौती देने वाले देशघातक खालिस्तान के नारे का घोर विरोध किया जाए। और प्रस्ताव स्वीकृत कर भारत सरकार से अनुरोध कीजिए कि पंजाब के उग्रवादियो से हिन्दुओ की सुरक्षा का प्रबन्ध किया जाए। इन सभाओं में मुख्य नारा लगे—'पजाब का हिन्दू नहीं अनाथ, सारा भारत उसके साथ।'

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन एकमात्र सुखदायी मार्ग

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥यजु ३१ १८

पदार्थ—हे जिज्ञासु पुरुष! (अहम्) मैं जिस (एतम्) इस पूर्वोक्त (महान्तम्) बड़े बड़े गुणों से युक्त (आदित्यवर्णम्) सूर्य के तुल्य प्रकाशस्वरूप (तमसः) अन्धकार वा अज्ञान से (परस्तात्) पृथक वर्तमान (पुरुषम्) स्वस्वरूप से पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हूं (तम् एव) उसी को (विदित्वा) जान कर आप (मृत्युम्) दुःखदायी मरण को (अति एति) उल्लंघन कर जाते हो किन्तु (अन्यः) इससे भिन्न (पन्थाः) मार्ग (अयनाय) अभीष्ट स्थान मोक्ष के लिए (न विद्यते) नहीं विद्यमान है।

भावार्थ—यदि मनुष्य इस लोक परलोक के सुखों की इच्छा करे तो सबसे अति बड़े स्वयं प्रकाश और आनन्द स्वरूप अज्ञान के लेश से पृथक वर्तमान परमात्मा को जानकर ही मरणादि अथाह दुःखसागर से पृथक हो सकते हैं यही सुखदायी मार्ग है इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों को मुक्ति का मार्ग नहीं है।

संसार के लोग यदि सुख शान्ति आनन्द और सच्चा कल्याण चाहते हो सच्चे भगवान की शरण में जाइए। ब्रह्मानन्द का पान कीजिए और डटकर सोम का पान करो। वेद के शब्दों में विद्वान गुरु जिज्ञासु साधक से कहता है—हमें उस महान परमेश्वर को जानना चाहिए जो सूर्य के समान देदीप्यमान है, जिसमें अन्धकार का लेशमात्र भी नहीं है। उसी सच्चे भगवान को भली प्रकार जान कर साधक मानव मृत्यु के बन्धन से भी छूट जाता है। सच्चे भगवान की प्राप्ति के बिना मोक्ष का दूसरा कोई नहीं है।

इसी सम्बन्ध में कठोपनिषद (५ १२) में कहा गया है।

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा
एकं रूपं बहुधा यः करोति।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति
धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।

वह एकमात्र परमेश्वर सबको वश में रखने वाले सबके भीतर व्याप्त सर्वान्तर्यामी और एक रूप को अनेक रूप बनाने वाला है। आत्मा के अन्दर विद्यमान उस पुरुष को जो देख लेते हैं उन्हें ही मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है दूसरों को नहीं।

विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति : वैदिक संस्कृति संस्कृत–भाषा के माध्यम से

(लन्दन के कोसिंग्टन क्षेत्र में ६१ क्वींस द्वार पर बालक-बालिकाओं के सैण्ट जेम्स विद्यालय का विवरण)

विभिन्न धर्मों के तत्त्वज्ञानों का अध्ययन करते करते हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मात्र तत्त्वचर्चा करने से कोई लाभ नहीं जब तक कि हमारा जीवन तत्त्वज्ञान पर आधारित न हो। इस विचार विमर्श के मध्य निश्चित हुआ कि विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति केवल वैदिक संस्कृति ही है। इस संस्कृति में निहित तत्त्वज्ञान के अनुसार जीवन व्यतीत करने के लिए इसका सूक्ष्मता से गहन अध्ययन किया जाना चाहिए। हमने जाना कि वैदिक संस्कृति की मूल तो संस्कृत भाषा ही है। संस्कृति के साथ भाषा का विशिष्ट सम्बन्ध है अतः सर्वप्रथम संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य है। इस सम्बन्ध में भारत से आए संस्कृत के विद्वान का मार्गदर्शन प्राप्त हो गया। हमारे मन में यह सुविचार भी आया कि यदि विद्यार्थियों को प्रारम्भ से संस्कृत पढ़ाई जाए तो आगे चलकर वैदिक संस्कृति के अनुसार एक विशिष्ट समाज उत्पन्न हो जाएगा। यह सुविचार सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया और लन्दन के सैण्ट जेम्स स्कूल में गत दस वर्षों से संस्कृत विषय अनिवार्य कर दिया गया। लन्दन के इस विद्यालय में ६०० विद्यार्थी हैं जिनमें ६६ प्रतिशत अंग्रेज विद्यार्थी हैं उनमें से लगभग आधी संख्या बालिकाओं की है यहां सहशिक्षा नहीं है बालिकाओं के लिए पृथक कक्षाएं लगती हैं। वार्षिक शुल्क १६०० पाउण्ड है, इस पर भी विद्यार्थियों की भीड़ बहुत है, इस विद्यालय में लन्दन के हेमस्टड हीथ के निकट सैण्ट वेदान्त नाम से दूसरी शाखा प्रारम्भ की है। इस विद्यालय में सम्पन्न वर्ग के बच्चे ही पढ़ते हैं।

'ओ३म्' की व्याख्या

(चौपाइयों में)

—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द

तीन अकार भेद मुनि भाए विश्व विराट अग्नि कहलाए।
सब जग में है प्रभु का वासा ताते विश्व नाम मुनि भाषा॥
सब जग में प्रकाश सिरजाओ ऐहि विधि नाम विराट सुहायो।
ज्ञान रूप प्रभु मार्ग दिखावे इसी हेतु वे अग्नि कहावे॥
नाम हिरण्यगर्भ प्रभु जाना तैजस वायु उकार बखाना।
रवि शशि आदि देव प्रगटायो ताते हिरण्यगर्भ कहलायो॥
अनन्त बल निधान प्रभु जाना ताते वायु नाम बखाना।
तेजरूप प्रभु तेज भण्डारी ताते तैजस प्रभु तिमिरारी॥
ईश प्राज्ञ आदित्य कहाए मकार के ये अर्थ बताए।
सकल ग्रधीश न्याय नमकारी ईशनाम इस भांति सुखारी॥
सब जग का प्रभु जानन हारा ताते प्राज्ञ नाम वह धारा।

अनमोल वचन

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

* कामवासना जाग्रत होने पर प्रभु के ओ३म नाम की रट लगानी चाहिए। ओ३म नाम के जप के सामने कामवासना ठहर नहीं सकती है, वह भाग जाएगी।
* इन्द्रियों में यदि एक भी इन्द्रिय विचलित हो जाती है तो बुद्धि को नष्ट कर देती है। जैसे मशक में एक छोटा सा छिद्र हो जाता है वह धीरे धीरे सारा पानी निकाल देता है।
* भोजन में विष मिला हो और यह भोजन करने वाले को पता लग जाए तो तुरन्त थाली छोड़कर उठ जाएगा। इसी प्रकार जब मनुष्य को संसार की अनित्यता और दुःख रूप का पता लग जाता है तब वैराग्य हो जाता है।
* आंखमिचौनी खेल में जब गोल छू लेने पर फिर चोर नहीं कहलाता, इसी प्रकार ईश्वर की शरण लेने पर सांसारिक बन्धन उसे नहीं बांध सकते।
* अहंकार करना व्यर्थ है—जीवन यौवन कुछ नहीं रहेगा—यह दो दिन का सपना है।
* दुष्ट मनुष्य में भी ईश्वर का निवास होता है मगर उसका संग करना अच्छा नहीं।
* मन एक सफेद कपड़ा है इस पर जैसा रंग चढ़ाओगे, वही रंग चढ़ जाएगा।
* जल में नाव रहे तो कोई हानि नहीं, नाव में जल रहे तो खतरे की निशानी है। इसी प्रकार प्रभु भक्त संसार में रहे तो कोई हानि नहीं है अगर संसार मन में रहे तो हानि है।
* सदगुणों को पाने के लिए प्रयत्न करो। बाहरी आडम्बर से कोई लाभ नहीं बिना दूध देने वाली गाय के गले में घण्टा बांधने से ही नहीं बिकती।
* झूठ बोलने पर यज्ञ का फल नष्ट हो जाता है। सत्य बोलने से देवता प्रसन्न होते हैं।

बोध-कथा अनुपम बलिदान

पिछले दिनों गढ़वाल में वृक्षों की रक्षा के लिए पर्वत पुत्रियों एवं हिमालय के पुत्रों ने वृक्षों से चिपककर उनकी रक्षा का व्यापक आन्दोलन किया था। वेदों में सन्देश दिया गया है हरे पत्तों—केशों वाले प्राणियों के रक्षक वृक्ष नमस्कार के योग्य हैं ('वृक्षेभ्य हरिकेशेभ्य नमः।) वृक्षों एवं वनस्पतियों को सदा से प्राणियों एवं मानव का सहायक समझा जाता रहा है। मरुभूमि से व्याप्त राजस्थान में ३० ८० गावों की विश्नोई बस्तियां आज भी वहां शाद्वलस्थल या नखलिस्तान का रूप हैं। वहां खूब पेड़ हैं, चहचहाते पक्षी, कलरव करते जलचर और मस्ती में झूमते वन प्राणी हैं जो मानव के विशेषत इस पृथ्वी की सन्तानों के अदम्य उत्साह और उत्सर्ग का सन्देश दे रहे हैं।

एक बार गांव में राजा के कारिन्दे आए। उन्होंने ऐलान किया—राजा का महल बन रहा है। इमारत के लिए अच्छा पुख्ता मसाला चाहिए मसाले के लिए चूना फूंकना है उसके लिए लकड़ी चाहिए। राजमहल के लिए लकड़ी चाहिए, गांव के पेड़ काटने के लिए राजा ने आदेश दिया है पेड़ बचाने हैं तो डांट या दण्ड दो। गांव की नारी अमृता देवी सामने खड़ी थी। उसने दृढ़ता से कहा— पेड़ नहीं कटेंगे, यह धर्म के विरुद्ध है मैं दण्ड भी नहीं दूंगी यह देने से धर्म का अपमान होगा, मैं धर्म के लिए अपनी बलि दे दूंगी। अमृता देवी पेड़ से चिपक गई। राजा के कारिन्दों ने पेड़ के साथ उसके टुकड़े भी कर दिए। उसके बाद पेड़ की रक्षा के लिए उसकी तीन बेटियां भी शहीद हो गई, इन चार नारियों के बलिदान से गांव के सारे विश्नोई पुरुष और नारियां पेड़ों की रक्षा के लिए आगे आ गए, पेड़ों को बचाते हुए ३६३ विश्नोई नारियां और पुरुष बलि चढ़ गए। सब समाचार सुनकर ६ सितम्बर १७३० के दिन राजा स्वयं ही वहां आया, उसने स्वयं क्षमा मांगी, अपने कारिन्दों को क्षमा मांगने का आदेश दिया। उसने यह आदेश दिया कि मेरे जोधपुर राज में विश्नोई के गांवों में एक भी पेड़ न काटा जाए। आज भी सारे मरुस्थल में विश्नोई के गांवों में हरे-भरे पेड़ और वनस्पतियां सुरक्षित हैं। —नरेन्द्र

आराधना का लक्ष्य

ओ३म् हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।
ऊर्ध्वो अध्वर दिवि देवेषु धेहि ॥ यजु ३७.१९

हे भगवन्, हृदय की स्वस्थता के लिए तुम्हारी स्तुति करता हूं, मन की स्वच्छता के लिए, सच्चे स्वर्ग की प्राप्ति के लिए और ज्योतिष्मान् तुम्हारी प्रसन्नता के लिए मैं तुम्हारा आराधन करता हूं। तुम इस यज्ञ को दिव्य शक्तियों में प्रतिष्ठित करो।

निरन्तर गतिशीलता से सतयुग

हमारे वैदिक पूर्वज कह गए हैं—'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'—उठो जागो, जो श्रेष्ठ कार्य है, उन्हे पहचानो और उनमे प्रवृत्त हो। उपनिषदो मे कहा गया है—चरैवेति-चरैवेति—निरन्तर गतिशील रहो—सदा चलते रहो। 'आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठत.'—बैठे हुए का भाग्य बैठा रहता है, बढता नही, चलने वाले का भाग्य उन्नति की ओर बढता है। 'शेते निपद्यमानस्य चरति चरतो भग', 'चरैवेति-चरैवेति'—जमीन पर जो सोता है, उसका भाग्य सोता है, जो देश-देशान्तर मे अर्जन के लिए निकल पड़ता है, उसका भाग्य दिन-दिन बढ़ता जाता है। हमारे तत्व-चिन्तन में चारों अच्छे-बुरे युग इस पृथ्वी पर ही विद्यमान हैं। वहा कहा गया है—कलि शयानो भवति सजिहानस्तु द्वापर उत्तिष्ठस्तु त्रेता भवति कृत सपद्यते चरन्, चरैवेति-चरैवेति—सोने वाला कलि बनता है, नीद को त्यागने वाला द्वापर, उठने वाला त्रेता और चलने वाला सतयुग बनता है। इस पुरानी उक्ति में सचाई है। जो व्यक्ति और राष्ट्र निरन्तर गतिशील रहते हैं, उद्यमी रहते हैं, कठिन से कठिन संकट एव बाधाए भी उनके सामने घुटने टेक देती हैं।

आज देश मे कठिन परिस्थिति है। देश के पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे विघटनवादी अराजक तत्त्व खुलकर खेल रहे हैं। बृहस्पतिवार १४ जुलाई के दिन कपूरथला के समीप एक पुलिस थाने के ४ पुलिस कर्मचारी आतकवादियो द्वारा मार डाले गए, इससे पूर्व पिछले कुछ महीनो मे अनेक ऊचे पुलिस एव सरकारी कर्मचारी उग्रवादियो की हिंसक गतिविधियो के शिकार बन चुके हैं। ऐसी कठिन परिस्थिति मे जो पुलिस अपनी सुरक्षा स्वयं नही कर सकती, वह सामान्य जनता की सुरक्षा एव सरक्षण कैसे कर सकेगी? पिछले दिनो जालन्धर मे एक मन्दिर की सम्पत्ति एवं अस्तित्व के सरक्षण के लिए जब नगर की हिन्दू जनता सगठित एव सन्नद्ध हो गई तब आततायी गुण्डा तत्त्व विशेषत राष्ट्रविरोधी साम्प्रदायिक तत्त्व एकदम शात हो गए। नीति मे कहा गया है कि शठ का निवारण शठता से करो। काटा कांटे से ही निकल सकता है। पश्चिमोत्तर प्रदेश मे व्याप्त अराजकता उपदेशो एव प्रस्तावो से प्रतिष्ठित नही हो सकती। उसकी प्रतिष्ठा के लिए तो मोहल्ले-मोहल्ले, नगर-नगर, प्रदेश-प्रदेश मे स्त्रियों-पुरुषो, बच्चो-बूढो का संगठन सुदृढ करना होगा।

इतिहास का मन्त्र है कि वे जातिया और देश जीवित रहते हैं जिनमे जीने की उत्कट अभिलाषा और आकाक्षा रहती है। ससार की अनेक प्राचीन सस्कृतियो मे भारतीय संस्कृति अपनी उत्कट जिजीविषा के कारण ही जीवित रह सकी है। उसने विदेशी संस्कृतियों, सेनाओ के अत्याचार एव आक्रमण सहे हैं। स्वाधीनता के बाद हम कुछ मोहनिद्रा में डूब गए। देश में अंग्रेजियत की बाढ के सामने भारतीय सस्कृति की अवमानना हुई, आज देश में विधर्मी अराष्ट्रीय तत्त्व भारतीय सस्कृति एव राष्ट्रवाद के सम्मुख पुन सिर उठा रहे हैं। उनका बस चले तो वे देश की ईंट से ईंट बजा दें, ऐसी स्थिति न आने पाए, इसके लिए प्रत्येक गाव, नगर, प्रदेश मे आन्तरिक सुरक्षा के लिए एवं बाह्य आक्रमण का मुंह तोड़ उत्तर देने के लिए जूडो, कराटे एव व्यवस्थित व्यायाम एवं व्यूह रचना आदि के माध्यम से आबलावृद्ध जनता को सशक्त, सगठित और सन्नद्ध करना होगा। अब समय आ गया है, जब हमें अनुभव कर लेना होगा कि बैठे रहने-सोने या उपेक्षा करने से कुछ लाभ न हो सकेगा, आज निरन्तर गतिशीलता को अपनाकर ही कलियुग के आलस्य, प्रमाद, उपेक्षा का त्यागकर सतयुग की गतिशीलता, परिश्रम एव एकता के तत्त्व यत्नपूर्वक जीवन मे लाकर राष्ट्र का कायाकल्प करना होगा।

निर्वाण शताब्दी, विद्वान सहयोग दें

विद्वानों को विचारना चाहिए कि वे महर्षि दयानन्द महाराज के कितने ऋणी हैं। महर्षि की युक्तियो-तर्क-सकेतो से वेद भाष्य व अन्य ग्रथो से कितना प्रकाश पा रहे हैं। आज निर्वाण शताब्दी एक सुनहरा अवसर है ऋण चुकाने एव श्रद्धाञ्जलि देने का। विद्वानों को दक्षिणा-मार्ग व्यय तक का लालच को छोड़कर सेवा करनी होगी। यज्ञ एक महीना चलना है। प्रात.-साय २० से २५ मिनट व्याख्यान के लिए मिल पाएंगे। हर एक को विषय दिए जाएगे। विद्वान महोदय पूरी तैयारी करके आएं। जनता के सम्मुख महर्षि जी के सदेश सरलतम रोचक भाषा मे रखें। सेवा के इच्छुक सज्जन निम्न पते पर सूचित करें। पहले यज्ञो मे समय देना आसान होगा। अन्त मे सभवत अवसर न निकाला जा सके, उसके लिए क्षमा करेंगे।

—दयानन्द वानप्रस्थी, तपोबनाश्रम, देहरादून-२४८००८

कब्रों-मजारों पर माथा न टेको . धर्म-देश के विरुद्ध

हिन्दू नारियो से आग्रह है कि वे किसी भी अवस्था मे किसी कब्र मजार या पीर पर माथा न टेकें, मनौती न मानें और न प्रसाद चढाए, न ही वहा का प्रसाद खाए, वहा दीपक या मोमबत्ती भी न जलाए, गण्डा-ताबीज के लिए मस्जिदो, मुल्लाओ, पीरो या औलियाओ आदि किसी के पास न जाए, ये सब क्रियाए भारतीय धर्मो एव भारतीयता के ही विरुद्ध नही, प्रत्युत राष्ट्रीय भावनाओ के भी सर्वथा विरुद्ध है।

—श्रीमती सुशीला आर्य शाहदरा, दिल्ली-३२

आर्यसमाजी बन्धु विचार करें !

लेखक—राजर्षि रणजयसिंह
(अमेठी, भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०)

आर्यसमाज के सम्मुख अनेक आवश्यक कार्यक्रम हैं जिन्हे पूर्ण करना है, परन्तु सम्प्रति विशेष ध्यान देकर महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी को सब प्रकार से मिल-जुलकर सफल बनाने का प्रश्न आ गया है। सन्तोष की बात है कि जो बीच में स्थान का मतभेद उत्पन्न हो गया था, उसका समझौता हो गया और अब आर्यसमाज के सभी कर्णधार अजमेर मे उसे ससमारोह पूर्णरूपेण सफल बनाने के लिए कटिबद्ध हो गए हैं। मुझे स्मरण है, जब १९३३ मे अजमेर मे निर्वाण अर्द्ध शताब्दी अति समारोह पूर्वक मनाई गई थी। देश तथा विदेश के आर्यबन्धुओ ने बहुत बडी सख्या मे एकत्र होकर उसमे भाग लिया था और महर्षि के प्रति सच्ची भक्ति-भावना का अवलोकनीय दृश्य उपस्थित किया था। लेखक को मथुरा मे महर्षि जन्म-शताब्दी देखने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अजमेर की निर्वाण-अर्द्ध-शताब्दी लगभग उसी टक्कर की प्रतीत हो रही थी। और भी अनेक महापुरुषो की जन्म-शताब्दियो मे सम्मिलित होने का अवसर लेखक को मिला है, परन्तु जो शुद्ध सात्त्विक धर्म-भाव उपर्युक्त महर्षि जन्म-शताब्दी और महर्षि निर्वाण-अर्द्ध-शताब्दी मे रहे है, अन्यो मे नही दृष्टिगोचर हुए। कारण, समय तथा विचारो मे परिवर्तन। शुष्क राजनीतिक भावो का बाहुल्य और धार्मिक प्रवृत्ति मे शिथिलता। अधिकतर आर्यबन्धुओ की शक्ति का अन्य दिशाओ मे विशेष रूप से लग जाना और अपने मुख्य ध्येय को गौण मान लेना है अन्यथा क्या आर्य-बन्धुओ की सख्या मे वृद्धि और तेज की कमी का होना आश्चर्यजनक नही है? ईश्वर की कृपा से लेखक को आठ दशाब्दिया देख लेने का अवसर मिला है और अब नवी दशाब्दी देख रहा है। उसकी भक्ति मे तो कोई कमी नही है परन्तु शक्ति का पूर्वापेक्षया ह्रास अवश्य हो गया है।

बाल्यावस्था मे उसने जैसे उत्साही आर्यों को देखा है, अब इनेगिने कही कोई मिल पाते हैं। आर्यकुमारो के क्रातिकारी कार्यक्रम देखे थे। अब नवयुवको मे आर्यसमाज के प्रति उतना आकर्षण नही रहा, आर्यसमाज मे समुचित अभिरुचि होती, तब उनकी प्रवृत्ति श्रेय मार्ग मे होती और वे प्रेय मार्ग से कोसो दूर रहते। भारत के भावी भाग्य-विधाता आदर्श रूप मे देदीप्यमान होते। समय था जब आर्यसमाज अग्रणी था, विश्व मे उसकी धूम मच गई थी। परन्तु जब से आर्यसमाजी बन्धु दूसरो के पीछे चलने लगे, तबसे निष्क्रियता का आना स्वाभाविक ही है। आर्यसमाज मे वैदिक धर्मावलम्बी साधु, सत-महात्माओ तथा विद्वानो का जो सम्मान होता था वह भी वैसा नही रहा। सभाओ, सम्मेलनो यहा तक कि वेद परायण यज्ञो तक मे जन-समूह एकत्र करने अथवा आर्थिक लाभ की दृष्टि से जब सर्वोपरि स्थान धनाढ्यो तथा मिनिस्टर आदि को दिए जाने लगे है चाहे वे जिस विचार के हो, तब तन, मन धन से वैदिक धर्म के सच्चे सेवको का महत्त्व वैसा कहा रह गया?

(शेष पृष्ठ ७ पर)

क्या सिख हिन्दू नही हैं ?

एक ज्वलन्त प्रश्न का विश्लेषणात्मक उत्तर

—श्री वीरेन्द्र

संचालक दैनिक प्रताप व वीर प्रताप जालन्धर व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर।

प्रात. का भूला साय को वापस आ जाए तो उसे भूला नही कहते। यह ख्याल मुझे उस समय आया जब मैंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के प्रधान सरदार गुरचरण सिह टोहरा का वह वक्तव्य पढा जिसमे उन्होने हिन्दू-सिख-एकता पर बल दिया है। इसमे उन्होने कहा है कि—

१ सिख इस बात पर गौरव अनुभव करते है कि गुरु साहेबान ने सिखो. को हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए पैदा किया था। इसलिए हिन्दुओ और सिखो मे किसी प्रकार के टकराव का कोई सवाल पैदा नही होता।

२. अकाली दल जो लडाई लड रहा है, वह भारत सरकार के विरुद्ध है। अगर अकाली इस लडाई के माध्यम से सारे पजाब के लिए न्याय प्राप्त कर सकें तो सबको लाभ होगा।

४ हिन्दू और सिख एक-दूसरे से अलग नही किए जा सकते। किसी प्रकार का विषाक्त प्रचार इनके भाइयो जैसे सम्बन्धो मे दराड पैदा नही कर सकता।

५. सिखो को इन्दिरा काग्रेस के झासे मे नही आना चाहिए और अपनी परम्परागत सहिष्णुता एवं प्रेम से हिन्दुओ का विश्वास जीतने का प्रयास करना चाहिए।

६ हिन्दू साधारण रूप से और सिख विशेष रूप से प्रत्येक स्थिति मे एकता बनाए रखने का प्रयास करें। उन्हे चाहे कितना आवेश दिलाने का प्रयास किया जाए।

मैंने टोहरा साहब का यह वक्तव्य पढा तो मुझे जहा कुछ आश्चर्य हुआ वहा अत्यधिक प्रसन्नता भी हुई। मैं बहुत देर तक यह सोचता रहा कि क्या यह वही व्यक्ति कहा रह है जिसने २९ अक्तूबर १९७८ को लुधियाना मे अ० भा० अकाली सम्मेलन मे पहली बार दो कौमो का विचार पेश किया था। जिसने कहा था कि भारत मे एक नही कई कौमे बसती है और जिसने रूस के सविधान की धारा ७६ को उद्धृत करते हुए कहा था कि अगर रूस के एक राज्य को अलग होने का अधिकार मिल सकता है तो भारत मे हमे यह अधिकार क्यो नही मिल सकता।

सरदार गुरचरण सिह टोहरा के इस भाषण ने वह विवाद शुरू कर दिया था जिसका परिणाम आज हम देख रहे हैं। अगर अकाली यह कहें कि केन्द्र और राज्यो के सम्बन्धो पर पुनर्विचार होना चाहिए तो इस किसी को आपत्ति नही हो सकती। यह तो और भी कई पार्टिया कहती हैं। अकालियो की इस माग का विरोध और इसी के साथ आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव का विरोध उस समय शुरू हुआ था, जब श्री गुरचरण सिह टोहरा ने कहना शुरू किया था कि भारत मे कई कौमे आबाद हैं। और उन्हे उसी तरह अलग होने का अधिकार मिलना चाहिए जिस तरह रूस मे वहा की विभिन्न कौमो को मिला हुआ है।

प्रतीत होता है कि टोहरा साहब को अपनी भूल का अनुभव होने लगा है। अब वह कहते हैं कि हिन्दू और सिख एक हैं। उन्हे कोई अलग नहीं कर सकता। उन्होने सिखो से यह भी कहा है कि वे अपनी परम्परागत उदारता और सहिष्णुता के अनुसार हिन्दुओ का विश्वास प्राप्त करने का प्रयास करें। अगर अब भी टोहरा साहब और उनके साथी यह समझ सकें कि हिन्दू और सिख एक-दूसरे से अलग नही हो सकते और वह उन अर्थों मे कभी भी दो कौमे नही बन सकती, जिन अर्थों मे मुहम्मद अली जिन्ना ने हिन्दू और मुसलमान को दो कौमे बना दिया था तो पजाब की कोई समस्या नही रहती। हिन्दू और सिख एक-दूसरे के कन्धे से कन्धा मिलाकर पजाब के अधिकारो के लिए लड सकते हैं। किन्तु जब तक दो कौमो की की बात होती रहगी उस समय तक कोई समझौता सम्भव नही है। अगर हिन्दू एक अलग कौम हैं तो उन्हे भी अपने अधिकारो की रक्षा के लिए लड़ना पडेगा। स० गुरचरण सिह टोहरा ने कहा है कि हिन्दू और सिख एक हैं। वह एक-दूसरे से अलग नही हो सकते। काश! कि यही कुछ उन्होने १९७८ मे कहा होता तो आज पजाब के हालात कुछ और होते। मैं तो देर से यह कहता आ रहा हू कि हिन्दू और सिख एक-दूसरे से अलग नही किए जा सकते। हमारे धर्म, हमारे इतिहास, हमारी सस्कृति ने इन दोनों को इस तरह बाध रखा है कि कोई शक्ति इन्हे एक-दूसरे से अलग नही कर सकती। शायद कुछ बातें टोहरा साहब भूल गए हो उन्हें आज फिर याद दिलाना चाहता हू।

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहब मे ३३० बार वेदो का उल्लेख हुआ है। जो कुछ गुरु साहेबान ने वेदो के विषय मे लिखा है यदि मैं वह सब पेश करने लगू तो ऐसा लगेगा कि शायद आर्यसमाजियों को भी वेदो मे इतनी श्रद्धा नहीं, जितनी कि गुरु साहेबान को थी। जब श्री गुरु गोविन्दसिह जी महाराज ने यह लिख दिया कि चारो वेद ब्रह्मा ने अर्थात् परमेश्वर ने बनाए हैं तो शेष क्या रह गया।

२. गुरु गोविन्द सिह जी महाराज ने लिखा है कि गुरु नानकदेव जी का जन्म बेदी परिवार मे हुआ था और बेदी वे थे, जिनके घरो मे वेदो का पाठ हुआ करता था।

३ श्री गुरु गोविन्द सिह जी ने अपना सम्बन्ध भगवान राम के सूर्यवंशी कुल से जोडा है। गुरु नानकदेव जी वेदी थे, जिनके घर वेदपाठ हुआ करता था और गुरु गोविन्द सिह सोढी थे जिनके पूर्वज सूर्यवशी हुआ करते थे।

४. शायद इसीलिए गुरु तेग बहादुर जी ने अपने बलिदान से पूर्व जो पत्र अपने बेटे को लिखा था उसमे उन्होने कहा था कि—

सग सखा सब तज गए, कोई न निभयोसाथ,
कहो नानक इस विपद मे, टेक एक रघुनाथ।

यह कौन-से रघुनाथ थे, जिन्हे गुरु महाराज ने याद किया था। हमारे धार्मिक और सास्कृतिक इतिहास मे रघुनाथ तो रघुकुल शिरोमणि भगवान राम को ही कहा गया है। गुरु महाराज ने अन्तिम समय मे उन्हे ही याद किया था।

५ श्री गुरु ग्रन्थ साहब मे, वेद, राम-कृष्ण, हरि-नारायण, मधुसूदन इनका बार-बार उल्लेख हुआ है। इससे कोई इन्कार नही कर सकता कि इनका सम्बन्ध मुसलमानो से नही केवल हिन्दुओ से है अगर ग्रन्थ साहब मे इनकी चर्चा बार-बार हुई है तो क्या इसमे कोई सन्देह रह जाता है कि गुरु साहेबान की दृष्टि मे हिन्दू और सिख में कोई अन्तर न था। यह तो बाद मे कुछ स्वार्थी लोगों ने राजनीति के चक्कर मे पड़कर पैदा किया था।

६ गुरु गोविन्द सिह जी ने अपनी आत्मकथा 'विचित्र नाटक' हिन्दी में लिखी थी। इसीलिए उनके प्रसग मे यह कहा गया है कि हिन्दी साहित्य मे वीर रस का इतना बडा कवि और कोई पैदा नही हुआ और उन्होंने कृष्ण-अवतार, राम-अवतार, चण्डी-चरित्र, चौबीस अवतार और हिन्दू धर्म तथा हिन्दू सस्कृति के बारे में इतना कुछ लिखा था जितना किसी दूसरे हिन्दू ने भी न लिखा हो। हिन्दू संस्कृति के लिए उन्हें जितनी श्रद्धा थी, उसका अनुमान उन द्वारा लिखित राग सोरठी के इन शब्दों से लगाया जा सकता है—

प्रभु जू तो कह लाज हमारी
नीलकण्ठ नर हरि नारायण
नील बसन बनवारी।

क्या अब भी कोई सन्देह रह जाता है कि गुरु साहेबान हिन्दू थे या नही ?

हमारे अकाली मित्र यह कहते नही थकते कि वे हिन्दू नहीं हैं। जब उन्हें कोई हिन्दू कहता है, तब वे उससे चिढ़ते हैं। मेरी यह धारणा रही है और अब भी है कि किसी को जबर्दस्ती हिन्दू नहीं बनाया जा सकता। यदि अकाली इस बात पर अड़े हुए हैं कि वे हिन्दू नही हैं तो हम बार-बार उन्हे यह कहकर क्यो परेशान करें कि वे हिन्दू हैं। सिख रहते हुए भी वे हमारे वैसे ही भाई हैं जैसे कि हिन्दू। हिन्दुओं मे भी तो आर्यसमाजी, सनातनधर्मी और जैनी जैसे कई विभिन्न समुदाय हैं। यदि हम सब मिलकर चल सकते हैं, तो सिखो के साथ क्यो नही चल सकते। या सिख हमारे साथ क्यो नही चल सकते।

लेकिन गुरु नानकदेव जी से लेकर गुरु गोविन्द सिह जी तक जितने गुरु हुए हैं उनमे और आज के सिखो मे हमे कुछ न कुछ अन्तर अवश्य करना पड़ेगा। जो कुछ गुरु साहेबान ने किया वह सब कुछ हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किया था। वास्तविकता यह है कि वे हिन्दू धर्म के प्रति समर्पित थे। तथ्य यह है कि श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज ने अपना बलिदान हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही दिया था। उन्हे किसी ने औरगजेब के पास जाने के लिए विवश नही किया था। यदि किसी ने उन्हे थोड़ी बहुत प्रेरणा दी थी तो उनके ९ वर्ष के बेटे गोविन्दराय ने दी थी। जब उनके बेटे ने उनसे कहा कि इस समय धर्म की रक्षा के लिए, किसी महापुरुष के बलिदान की आवश्यकता है तो गुरु तेग बहादुर कह सकते थे कि हमारा हिन्दुओ से क्या सम्बन्ध, ये मरते हैं तो मरने दो। कश्मीर के जो पण्डित उनके पास आए थे, उनसे वह कह सकते थे कि मैं तुम्हारी मदद तब करूगा यदि तुम सब पहले सिख बन जाओ, लेकिन उस समय तक तो खालसा पथ सजाया ही नही गया था। इसलिए यदि एक मिनट के लिए यह मान भी लिया जाए कि सिख हिन्दू नही हैं तो इसका यह अभिप्राय हुआ कि जब तक गुरु गोविन्द सिह ने खालसा पथ नही सजाया, उस समय तक तो सब हिन्दू ही थे। और सम्भवत. यही कारण था कि गुरु गोविन्द सिह जी महाराज ने कहा था—

"सकल जगत् मे खालसा पथ गाजे
जगे हिन्दू धर्म सकल भड भागे"

यदि सरदार गुरचरण सिह टोहरा गुरु गोविन्दसिह की भावनाओ को ठीक तरह से समझने को तैयार हों, तो जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है इसका अभिप्राय है कि गुरु गोविन्द सिह की दृष्टि में खालसा पथ और हिन्दू धर्म ये दोनों एक थे। जहां वह यह कहते हैं कि सकल जगत् में खालसा पथ गाजे, साथ ही वह यह भी कहते हैं कि जगे धर्म हिन्दू। वह हिन्दू धर्म को जगाना

चाहते थे, इसीलिए उन्होंने खालसा पथ सजाया था आज के अकाली इसे यदि समझने को तैयार नहीं तो इसका कोई इलाज नही। अकाली तो गुरु साहेबान के उपदेशों से इधर-उधर हो सकते हैं और आज हो भी रहे हैं, कोई सिख नही हो सकता। जो भी गुरु का सच्चा सिख है उसे गुरु गोविन्द सिंह जी की यह बात माननी पड़ेगी कि "सकल जगत् में खालसा पथ गाजे। और जगे धर्म हिन्दू सकल भड भागे।"

श्री गुरु गोविन्द सिंह का जन्म पटना में हुआ था। उनका पालन-पोषण आनन्दपुर साहिब मे हुआ। और उनका देहान्त महाराष्ट्र के एक स्थान नादेड मे हुआ था, इसलिए सारा भारत ही उनकी जन्मभूमि थी। हमारे अकाली दोस्त तो अपने-आपको पजाब तक सीमित रखना चाहते हैं लेकिन दस के दस गुरु साहेबान सारे देश मे घूमते रहे और अपने धर्म का पचार करते रहे। गुरु नानकदेव जी तो ईरान और ईराक से होते हुए मक्का और मदीना भी जा पहुचे थे। पाठकगण आप जरा अनुमान लगाए कि गुरु साहेबान किस सीमा तक विशाल हृदय और विशाल दृष्टि रखते थे। वे स्वय को एक छोटे-से कुए मे बन्द करना नही चाहते थे। सारे भारत को वह अपना देश समझते थे। इसलिए उन्होने जगह-जगह गुरुद्वारे बनाए थे। उनके समय मे कभी किसी ने खालिस्तान की बात नहीं की थी। गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने खालसा पथ स्थापित करते समय भी यह नहीं कहा था कि इसके बाद खालिस्तान कायम किया जाएगा। आज तो हमारे अकाली मित्र दो कौमो की बात करते हैं। दसो के दसो गुरुओ मे से किसी ने किसी अन्य कौम की बात नही की थी। जिसे अकाली कौम कहते हैं, गुरु साहेबान उसे या तो पथ कहते थे या सगत कहते थे। जब किसी ने गुरु गोविन्द सिंह जी पूछा कि यह खालसा पथ क्यो स्थापित किया गया है तो उन्होने उत्तर दिया —

"आगिया भई अकाल की तबै चलाओ पथ
सब सिक्खन को हुक्म है गुरु मानियो ग्रथ"

यहा आकर सारी बात समाप्त हो जाती है। उन्होने कहा कि अकाल अर्थात् परमात्मा का यह आदेश था। उसके अनुसार मैंने यह पथ स्थापित कर दिया है। इसी से हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं कि जो लोग आज दो कौमो की बात करते हैं वास्तव मे उनका उद्देश्य क्या है।

वैसे तो मेरा यह विश्वास है कि सभी दसो गुरुओ की हिन्दू धर्म मे पूरी निष्ठा थी और वे अपने-आपको उसके पाबन्द समझते थे। मैं इसलिए लिख रहा हू कि क्योंकि मैं यह अनुभव करता हू कि टोहरा साहिब के विचारो में कुछ परिवर्तन आ रहा है। हाल ही में उनके जो वक्तव्य समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए हैं, उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि वह हिन्दुओं के निकट आ रहे हैं। वह यदि हमारे निकट आ रहे हैं तो कोई कारण नही कि हम उनके निकट न जाए। इसलिए कुछ ऐसी घटनाए प्रस्तुत करना चाहता हू जिनके द्वारा हिन्दुओ और सिखो के सम्बन्ध सुदृढ बनाए जा सकें।

मेरे अकाली मित्र पजाब मे हिन्दी को सहन करने को तैयार नही। उनका यह रवैया कहा तक उचित है, मैं इस समय इस विवाद मे पडना नही चाहता। लेकिन टोहरा साहब की जानकारी के लिए निवेदन करना चाहता हू कि—

१. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी यह चुकी है कि गुरु गोविन्द सिंह की मातृभाषा हिन्दी थी। मैं केवल यह जानना चाहता हू कि यदि गुरु महाराज की मातृभाषा हिन्दी हो सकती थी तो हमारी क्यो नही।

२. गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपनी आत्मकथा 'विचित्र नाटक' हिन्दी मे भी लिखी और उसमे अधिकाश शब्द सस्कृत के ही प्रयोग किए हैं। उनके समय मे आज की पजाबी कोई नही जानता था। यह तो अकालियो की घडी हुई पजाबी है। यह गुरु गोविन्द सिंह की पजाबी नही है।

३ गुरु महाराज ने अपनी इस आत्मकथा 'विचित्र नाटक' को सस्कृत के इन शब्दो के साथ समाप्त किया था—

'इति श्री 'विचित्र नाटक' ग्रन्थे समाप्तमस्ते शुभमस्तु।'

४ गुरुजी ने अपने दरबार के कई पडित सस्कृत पढने के लिए बनारस भेजे थे।

५. उनके दरबार मे ५२ कवि थे, जिनमे अधिकतर हिन्दी के कवि थे। उन कवियो मे काव्य-सग्रह को 'विद्यासागर' का नाम दिया गया था।

६. एक कवि थे जिनका नाम था 'सेनापति'। गुरु महाराज ने उसे चाणक्य नीति का भाषानुवाद करने को कहा था।

७. एक कवि थे उनका नाम था हसराज। गुरु महाराज ने उसे महाभारत के कर्ण पर्व का अनुवाद करने को कहा था।

८ एक कवि था 'अमृतराय' उसे महाभारत के 'सभा पर्व' का अनुवाद करने को कहा गया था।

९. एक कवि थे 'मगल'। उसे भी महाभारत का अनुवाद करने को कहा गया था।

१०. अभिप्राय यह कि महाभारत और अन्य हिन्दू धार्मिक ग्रन्थो का अनुवाद कराया गया। इस पर भी हमारे अकाली मित्र कहते हैं कि हम हिन्दू नही हैं।

श्री गुरचरण सिंह टोहरा कहते हैं कि वह हिन्दू नहीं हैं। साथ यह भी कहते हैं कि हिन्दुओ और सिखो का अटूट सम्बन्ध है खालसा का हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए स्थापित किया गया था। और सिख इसे गर्व की बात समझें कि उन्हें यह काम सौंपा गया था। इसलिए उन्होने सिखो से कहा है कि वह अपनी परम्परागत उदारता और भाईचारे से काम लेते हुए हिन्दुओ का विश्वास प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

मैं कह चुका हू कि जो लोग अपने-आपको हिन्दू कहलाने मे लज्जा महसूस करते हैं, हम उन्हे हिन्दू कहने को विवश करना नहीं चाहते। वह इसलिए भी कि प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू नही बन सकता। हिन्दू एक विशेष प्रकार की विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस विचारधारा की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह ने अपनी तलवार उठाई थी, इसलिए हिन्दू बनना कोई आसान काम नही है। कोई ऐरा-गैरा हिन्दू नहीं बन सकता, इसलिए यदि गुरचरण सिंह टोहरा और उनके साथी कहते हैं कि वे हिन्दू नही हैं तो मैं तो कम से कम यह मानने को तैयार हू कि वे हिन्दू नही हैं।

लेकिन मैं कई बार लिख चुका हू और आज पुन डके की चोट कहता हू कि जहा तक गुरु नानकदेव जी से लेकर गुरु गोविन्द सिंह तक दसो गुरु साहेबान का सम्बन्ध है, वे हिन्दू थे। कोई शक्ति उन्हे हमसे छीन नही सकती, गुरचरण सिंह टोहरा जैसे व्यक्ति के दिमाग मे यह बात नही बैठती कि गुरु साहेबान हिन्दू थे। लेकिन टोहरा साहब की जानकारी के लिए मै यह लिख देना चाहता हू कि एक प्रसिद्ध पत्रकार और इतिहासकार खुशवन्त सिंह ने अपनी पुस्तक मे लिखा है कि दसो के दसो गुरु हिन्दू थे। खुशवन्त सिंह ने सिख इतिहास पर अग्रेजी मे एक पुस्तक लिखी है। उसके शुरू मे ही उसने लिखा दिया है कि सब गुरु साहेबान हिन्दू थे। यह एक टकसाली सिख लिख रहा है। और यह मेरे इस विचार की पुष्टि है कि गुरु साहेबान हिन्दू थे। गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने अपनी पुस्तक 'विचित्र नाटक' मे राम-अवतार, कृष्ण-अवतार, कल्कि अवतार, नर-अवतार, ब्रह्मा-अवतार, रुद्र-अवतार, पारसनाथ-अवतार और इस प्रकार की जो और बातें लिखी हैं, वह एक हिन्दू ही लिख सकता है, कोई अन्य नही। अपनी इस आत्मकथा मे उन्होने यह भी बताया है कि उन्होने इस धरती पर जन्म क्यो लिया और अपने इस श्लोक को वह इन शब्दो से शुरू करते हैं .

"हम इह काज जगत मो आए। धर्म हेतु गुरदेव पठाए। जहा-तहा तुम धर्म बिथारो। दुष्ट देखियन पकरि पछारो। या ही काज धरा हम जनम समझि लेहु साधु सब मनम। धरम-चलावन सन्त उबारन दुष्ट सभन को मूल उपारन"

यदि टोहरा साहिब ने गीता पढी है और उसमे भगवान कृष्ण का वह उपदेश पढा होगा जो उन्होंने कुरुक्षेत्र के मैदान मे अर्जुन को दिया था, और जिसमे उन्होने बताया था कि जब-जब धर्म पर कोई मुसीबत आती है और धर्मात्माओ पर अत्याचार होते है, तब उस समय धर्म की रक्षा करने और धर्मात्माओ को बचाने के लिए युग-युग मे मैं जन्म लिया करता हू। कोई बताए कि जो कुछ भगवान कृष्ण ने कहा था, उसमे और जो कुछ गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा था, उसमे क्या अन्तर है।

इसी प्रसग मे गुरु गोविन्द सिंह जो के लिखे हुए दो और श्लोक मैं पेश करना चाहता हूं। पहला था—

'यही देहु आगिया तुरक को मिटाऊ
गऊ घात का पाप जग से हटाऊ"
और दूसरा था—
"तिलक जजू राखा प्रभु ताका,
कीनो बडो कलूमही साका"

इस दोनो से यह स्पष्ट हो जाता है कि गुरु महाराज ने गऊ घात के पाप को मिटाने का सकल्प कर रखा था। आज के अकाली तो कहते है कि सिख और मुसलमान भाई-भाई है, लेकिन गुरु गोविन्द सिंह जी तो 'तुर्क' को मिटाना चाहते थे और साथ ही तिलक तथा जजु अर्थात् यज्ञोपवीत की रक्षा करना चाहते थे।

क्या इसके बाद भी कोई कह सकता है कि गुरु साहेबान हिन्दू नही थे। गुरु गोविन्द सिंह के सारे साहित्य मे कही भी यह नही लिखा गया कि वह हिन्दू नही हैं या हिन्दू धर्म से उनका कोई सम्बन्ध नही था।

आज मै अपने अकाली मित्रो की एक और भ्रान्ति भी दूर करना चाहता हू। वह प्राय पजाब, पजाबी और पजाबियत का बहुत रोना रोया करते हैं। क्या उन्हे यह पता है कि श्री गुरु गोविन्द सिंह ने अपने 'विचित्र नाटक' मे कही भी पजाब का उल्लेख नही किया। उनका जन्म पटना मे हुआ था। और उनके पिताश्री गुरु तेग बहादुर जी उन्हे आनन्दपुर साहिब ले आए थे। इसके बारे मे गुरु गोविन्द सिंह जी अपने विचित्र नाटक' मे लिखते है।

"तही प्रकाश हमारा भयो। पटना सहर बिखे भवलयो। मद्र देस हम को ले आए। भाति-भाति दायन दुलराय'

गुरु महाराज ने पजाब का उल्लेख नही किया, किसी मद्र देश का उल्लेख किया है जहा उनके पिता उन्हे ले आए थे। हम जानते है कि वह आनन्दपुर साहिब था जिसका अभिप्राय है कि श्री गुरु गोविन्द सिंह के समय मे यह इलाका पजाब नही था, मद्र देश था।

पटना से चलकर गुरु गोविन्द सिंह कहा आए थे। जहा तक हम जानते हैं उनका बचपन बहुत कुछ आनन्दपुर साहिब मे ही गुजरा था। यही कश्मीर के हिन्दू पण्डित गुरु तेग बहादुरजी से आकर मिले थे। और यही गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने पिताजी से कहा था कि इस समय किसी बहुत बडे बलिदान की आवश्यकता है यह सब कुछ आनन्दपुर साहिब मे हुआ था। प्रश्न पैदा होगा कि

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य जगत् समाचार

हरयाणा के लिए सब मिलकर अकालियों की अक्ल ठीक करें

रोहतक में आयोजित विशाल सभा में प्रो० शेरसिंह का भाषण

रोहतक। भिवानी स्टेण्ड पर हिन्दू सुरक्षा समिति द्वारा आयोजित विशाल सार्वजनिक सभा मे हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने बोलते हुए हरियाणा के सभी राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक नेताओ से अपील की कि वे सभी मिलकर हरियाणा के हितो की रक्षा तथा पजाब के हिन्दू भाइयो की जान, माल एव इज्जत की सुरक्षा हेतु एकजुट होकर अकालियो की अक्ल ठीक करें।

उन्होने पजाब मे चल रहे अकाली आन्दोलन का उल्लेख करते हुए बताया कि सरकार हिंसक गतिविधियो को रोकने मे विफल हो चुकी है। पजाब की जनता का पजाब पुलिस पर भी विश्वास नही रहा, क्योकि उग्रवादी सिख नवयुवक थाने के सामने ही हिन्दुओ, निरकारियो तथा राष्ट्रवादी सिख नेताओ को दिन-दहाडे कत्ल करके गुरुद्वारो पर भाग जाते हैं और उन्हे अकाली नेता शरण दे रहे हैं। पजाब सरकार मे साहस नही है कि वे गुरुद्वारो मे घुसकर कातिलो को पकडकर जेलो मे डाल दें। हा, सरकार हिन्दुओ के मन्दिरो मे बिना चेतावनी दिए कार्यकर्ताओ को पकडकर जेलो मे बन्द कर देती है। यह सरासर भेदभाव है। भारत सरकार से माग करते हुए आपने कहा कि कानून सभी नागरिको के लिए समान होता है। केवल गुरुद्वारो के लिए पृथक् गुरुद्वारा एकट बनाकर धर्म के कार्यों में हस्तक्षेप किया जा रहा है। अकालियो की अनुचित माग मानकर अमृतसर के दरबार साहब ने गुरुबाणी का प्रसारण आकाशवाणी द्वारा करने की तैयारी हो रही है परन्तु बार-बार माग करने पर भी हिन्दुओ के धार्मिक स्थानो से वेदवाणी के प्रसारण पर विचार तक भी नही किया जा रहा।

भारत सरकार अकालियो की हरियाणा विरोधी मागो पर विचार करने के लिए नया ट्रिब्यूनल बैठाने की घोषणा करती है, परन्तु चण्डीगढ को हरयाणा को देने सम्बन्धी शाह कमीशन की रिपोर्ट उसने रद्दी की टोकरी मे डाल दी और और प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरागाधी के स्वय किए फैसले (१९७० के) अवार्ड जिसमे हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर-फाजिल्का को हरियाणा मे मिलाना था, पर १३ वर्ष बीतने पर भी अमल नही किया गया। प्रो० शेरसिंह ने अकालियो पर राष्ट्रद्रोह का आरोप लगाते हुए कहा कि पाकिस्तान को तो मुफ्त मे पानी दिया जा रहा है और हरियाणा को रावी-व्यास का फालतू पानी देने के लिए भी अकाली रुकावटें पैदा कर रहे हैं। उन्ही चौ० चरणसिंह के साहस की प्रशसा करते हुए कहा कि उन्होने अकालियो की खुलकर निन्दा की है तथा भारत सरकार से उनकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियो को सख्ती से कुचलने का परामर्श दिया है। परन्तु बहुगुणा जैसे नेता अपने स्वार्थ मे आकर अकालियो की अनुचित मागो का समर्थन कर रहे हैं।

इस सार्वजनिक सभा मे श्री परमानन्द तुली, श्री हुकमचन्द गोयल, श्री राममेहर एडवोकेट, डा० मगलसेन तथा प्रताप के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र ने भी भाषण देते हुए पजाब पुलिस की आलोचना की और चेतावनी दी कि यदि इसी प्रकार पजाब पुलिस के साथ मे हिन्दुओ को गोली से मारा जाना जारी रहा, तो उसकी प्रतिक्रिया हरियाणा प्रदेश मे भी हो सकती है। भिण्डरवाला जैसे अपराधी को तुरन्त गुरुद्वारे से निकालकर कानून के अनुसार कडा दण्ड दिया जाए। नेताओ ने चेतावनी दी है कि यदि अकालियो ने हरियाणा का पानी तथा बिजली रोकी तो हरयाणा भी पजाब के वाहनो को रोकने पर विवश होगा।

आर्यसमाज लुधियाना रोड में 'ज्ञान गंगा प्रवाह'

आर्यसमाज लुधियाना रोड फीरोजपुर छावनी मे ४ से १० जुलाई, १९८३ तक वेद प्रचार सप्ताह बडी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। जिसमे श्री ओमप्रकाश आर्य जी के बहुत ही ओजस्वी तथा प्रभावशाली प्रवचन हुए। सुबह का कार्यक्रम पारिवारिक सत्सग के रूप में मनाया गया। रात्रि को मन्दिर मे ही वाल्मीकि रामायण का विशुद्ध पाठ एव उसी आधार पर अपने-अपने व्यवहार के उसी अनुकूल ढालने की प्रेरणा दी गई। पकज एवं रूपेश जैसे छोटे-छोटे युवकों ने सगीत के माध्यम से सबके दिल को मोह लिया।

क्या सिख हिन्दू नहीं हैं ?

(पृष्ठ ५ का शेष)

आनन्दपुर साहिब उस समय कहा था। गुरु महाराज ने उस क्षेत्र का नाम मद्र देश लिखा है, पंजाब नहीं लिखा। तो क्या इसका अभिप्राय यह हुआ कि उनके समय मे पंजाब नाम का कोई क्षेत्र नहीं था, तो कब इस क्षेत्र को पंजाब नाम दिया गया। यदि यह गुरु गोविन्द सिह के बाद दिया गया तो पजाब पजाबी और पजाबियत का सारा दावा समाप्त हो जाता है और आज पंजाब पंजाबी और पजाबियत पर जितना शोर मचाया जा रहा है, वह सब अर्थहीन है। मैंने गुरु गोविन्द सिह जी महाराज के बारे मे बहुत-सा साहित्य पढ़ा है। उनका लिखा हुआ 'विचित्र नाटक' भी पढा है। मुझे कही भी पजाब-पजाबी या पजाबियत का उल्लेख देखने को नही मिला। खालसा, पथ, भगत इस प्रकार के शब्द तो बहुत मिलते हैं, लेकिन पंजाबी का कही उल्लेख नही है। और जहा तक मैं जानता हूं गुरु साहेबान ने पजाबी पर इतना जोर नही दिया था जितना गुरुमुखी पर। गुरुमुखी लिपि गुरु अगददेव ने बनाई थी, इसलिए यदि पजाबी की बजाय गुरुमुखी पर जोर दिया जाए तो उसका अर्थ कुछ और निकलेगा। लेकिन हमारी कठिनाई यह है कि हमारे अकाली दोस्त किसी तर्क के आधार पर नही चलते। भावनाओ के आधार पर सब काम करते हैं।

अकालियो की एक और कठिनाई भी है। वे गुरु साहेबान के लिखे साहित्य को पढते नही। गुरुद्वारो के ग्रन्थी उन्हे जो सुना देते हैं, उसके आधार पर वे अपने मोर्चे लगा देते हैं। जो कुछ गुरु साहेबान ने कहा था यदि वह पूरी गम्भीरता से उसका अध्ययन करें, तो उनकी आखें खुल जाएगी और वे स्वय हैरान होगे कि वे किधर जा रहे है। मैंने पूर्व भी लिखा था कि गुरु गोविन्द सिह ने अपनी आत्मकथा 'विचित्र नाटक' सस्कृत के कुछ शब्दो के साथ समाप्त की थी, इतना ही नही गुरु महाराज ने अपनी उस पुस्तक का प्रत्येक अध्याय सस्कृत के साथ समाप्त किया है। अर्थात् उन्हें सस्कृत मे उतनी ही श्रद्धा थी, जितनी कि किसी हिन्दू को हो सकती है। और यह केवल इसलिए कि उन्होने हिन्दू और सिख मे कोई अन्तर नही समझा था।

तीसरे गुरु अमरदास जी के बारे मे कहा जाता है कि जब उनका देहान्त होने लगा, तब उन्होने अपने सारे परिवार को अपने पास बुला लिया। और उन्हे यह उपदेश दिया कि, "मेरे पीछे कोई भी रोएगा तो वह हमे अच्छा नहीं लगेगा, और सारे परिवार से गुरु रामदासजी के चरणो में शीश नवाकर कहा कि मेरे पीछे कीर्तन करना और गोपाल पण्डित को बुलाकर पुराण की कथा करवाना और पिण्ड पत्तल क्रिया दीवा आदि सहित फूल गगाजी में बहा देना।" कोई बताए वह सब कुछ कहने वाले कौन थे। कई हिन्दू भाई यही सब कुछ करते हैं जो गुरु अमरदास जी ने उस समय कहा था और उनके बारे मे यह भी कहा जाता कि वह २२ बार गगा-स्नान के लिए हरिद्वार गए थे। (श्री गुरुग्रन्थ साहिब पृष्ठ ९२३ राग रामकली मे)

जिन महापुरुषों की वाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में शामिल की गई है, उनमें एक नामदेव भी थे। वह हरि का नाम लेने के बारे में जो कुछ लिखते हैं वह निम्नलिखित है—

'हरि-हरि करत मिटे सब भरमा।
हरि को नाम लै उत्तम धरमा॥
हरि-हरि करत जात कुल हरि।
सो हरि अन्धले की लाकरि॥
हरि-ए नमस्ते हरि-ए नमन।
हरि-हरि करत नही दुख जम.।"

इसमे आर्य समाजियो की नमस्ते भी आ गई। यदि मैं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से उन सबकी वाणी नकल करने लगू जिनकी वाणी उसमे शामिल की गई है तो ठीक हैरान हो जाएगे कि हिन्दू धर्म और हिन्दू सस्कृति तथा हिन्दू परम्पराओं के बारे में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में क्या लिखा गया है। कोई भी सिख जो गुरु साहेबान के पद-चिन्हों पर चलता है, कभी हिन्दुओं के विरुद्ध नही हो सकता। अकाली चूकि गुरु ग्रन्थ साहिब गम्भीरता से नही पढते इसलिए वह हिन्दुओं के विरुद्ध रहते हैं।

गुरु नानकदेव जी महाराज तो अपने धर्म का प्रचार करते हुए ईरान, ईराक और मक्का-मदीना तक जा पहुचे थे। श्री गुरु तेग बहादुर बाबा बकाला से चले और असम तक जा पहुचे। गुरु गोविन्द सिह का जन्म बिहार मे हुआ था। उनका पालन-पोषण पजाब मे हुआ था। उनका देहान्त महाराष्ट्र मे जाकर हुआ। गुरु साहेबान ने कभी यह नही कहा था कि यह इलाका हमारा है यह दूसरे का है। उनके लिए जो सारा ससार ही उनका था। इसलिए उन्होने कभी पजाबी सूबे की माग नही की थी न उनके दिमाग में कभी आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव जैसी [illegible] आई थी। गुरु गोविन्द सिह जी ने अपने बारे मे यह लिखा है कि उन्होंने कभी हेमकुण्ड मे तपस्या की थी। यह हेमकुण्ड बद्रीनाथ जाते हुए रास्ते मे आता है। वहां अब एक बहुत बड़ा गुरुद्वारा भी बन गया है। आज तो हमारे सिख भाई जब चाहें वहा चले जाते हैं उन पर कोई प्रतिबन्ध नही है। कल को यदि खालिस्तान बन जाए तो उन्हें पटना साहेब जाने के लिए भी पासपोर्ट की जरूरत पड़ेगी दिल्ली के सीसगंज गुरुद्वारा, रकाबगंज, और दिल्ली के अन्य गुरुद्वारों को देखने के लिए भी उसी तरह पासपोर्ट लेना पड़ेगा, सिख

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार, २४ जुलाई १९८३

अन्धामुगल-प्रतापनगर—स्वामी शिवाचार्य जी, अमर कालौनी—आचार्य हरिदेव सिद्धान्तभूषण; अशोकनगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, आरके पुरम् सेक्टर-५—पं० ओमवीर शास्त्री, आरके पुरम सेक्टर-६—प० परमेश शर्मा, आर० के० पुरम् सेक्टर-९—डा० सुखदयाल भूटानी; आनन्द विहार-हरिनगर—प० प्रकाशचन्द वेदालंकार; किशनगंज—प० सोमदेव शर्मा—किग्जवे कैम्प—प० कामेश्वर शास्त्री, कालका डी० डी० ए० फ्लेट—प० गणेशप्रसाद वेदालकार; कृष्णनगर—श्रीमती लीलावती, गाधीनगर—प० अमीचन्द मतवाला; गीता कालोनी—पं० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री गुडमण्डी—पं० मनोहरलाल ऋषि, गुप्ता कालोनी—प० आशानन्द भजनीक, ग्रेटर कैलाश-१—प० खुशीराम शर्मा, ग्रेटर कैलाश-२—प० चुन्नीलाल जी, गोविन्दभवन-दयानन्द वाटिका—प० ईश्वरदत्त शास्त्री, चूना मण्डी-पहाडगज—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, ग्रीनपार्क—प० महेशचन्द्र पाराशर, टैगोर गार्डन—प० सत्यपाल मधुर; तिलकनगर—प० सत्यभूषण वेदालकार, तिमारपुर—प० देवीचरण देवेश; दरियागज—प० महावीर बत्रा, देवनगर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, नारायण-विहार—प० रमेशचन्द वेदाचार्य, न्यू मोतीनगर—प० अमरनाथ कान्त, नगर शाहदरा—प्रो० वीरपाल, पजाबी बाग—आचार्य दिनेशचन्द्र पाराशर, पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प्रो० सत्यपाल वेदार, बाग कड़ेखा—प० विद्याव्रत शास्त्री, बिरला-लाइन्स—प० अशोक विद्यालकार; मोडल बस्ती—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, मोती बाग—पं० बलवीर शास्त्री; रघुवीरनगर—डा० रघुनन्दनसिंह, रमेशनगर—प० रामनिवास शास्त्री, राणाप्रतापबाग—श्रीमती सुशीला राजपाल, राजौरी गार्डन—प० रामदेव जी, बालीनगर—व्याकुल कवि, रोहतास नगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य, लड्डू-घाटी—आचार्य रामचन्द्र, लाजपत नगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, लारेन्स रोड—प० ओमप्रकाश गायक, विक्रमनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, विनयनगर—प० जयभगवान गायक, सदरबाजार—प० सत्यदेव स्नातक, साकेत—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, सराय रोहेला—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, सोहनगज—प० रणवीरसिंह राणा, शालीमार बाग—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, हौजखास—प० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण, सुदर्शनपार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, हनुमान रोड—डा० विक्रम शास्त्री, बोट क्लब—व्याकुल कवि।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता, वेदप्रचार विभाग

आर्यसमाजी बन्धु विचार करें !

(पृष्ठ ३ का शेष)

इसका अभिप्राय यह नही है कि मिनिस्टरो आदि का सम्मान न किया जाए, उनमे भी कई अच्छे देशभक्त विद्वान् हैं, जो सर्वदा आदरास्पद हैं। हा, यह नितान्त सत्य है कि यदि सिद्धान्तरहित अथवा चरित्रहीन व्यक्तियो को विद्वज्जन की अपेक्षा विशेष सम्मान दिया जाता है तब उसका प्रभाव अच्छा नही पड सकता। नीति शास्त्र का यह वचन प्रत्यक्ष प्रमाणित हो रहा है—

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्याना च विमानना।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्त, दुर्भिक्ष, भय, विप्लवम्॥

अर्थात जहा अपूज्यो का सम्मान किया जाता है और पूज्यो की अवमानना होती है, वहा तीन बातें होती हैं, दुर्भिक्ष, भय, तथा विप्लव। अब विचारणीय यह है कि सुधार कैसे हो ? महर्षि दयानन्द ने जब वैदिक धर्म का प्रचार प्रारम्भ किया था तब पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराकर। महर्षि त्रिकालदर्शी थे। वे जानते थे कि जब तक पाखण्ड रहेगा, वेदो का प्रचार कार्यान्वित नहीं हो सकेगा। अन्त मे यही निवेदन है कि आगामी दीपावली के पर्व पर अजमेर मे ३ से ६ नवम्बर तक जो महर्षि निर्वाण शताब्दी मनायी जा रही है उसमें देश-विदेश के वैदिक विद्वान् एकत्र होंगे, वही पर गंभीरता पूर्वक विचार करके ऐसा कार्यक्रम निर्धारित किया जाए जिससे आर्यसमाज पुनः पूर्ववत् सक्रिय हो और विश्व मे वैदिक निनाद गुजायमान हो, साथ ही आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य, आध्यात्मिक शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति द्वारा ससार का उपकार हो।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
बाढ़ सहायता कोष में योगदान करें

गुजरात के सौराष्ट्र और महाराष्ट्र के कोकण क्षेत्र मे आई बाढ से जान-माल की भारी क्षति हुई है और लाखो लोग भीषण सकट मे फस गए हैं। अपनी सार्वजनिक सेवा की परम्परा को प्रचलित रखते हुए आर्यसमाज के सगठनो और आर्य जनता की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सहायता कोष एकत्र करने का उदात्त निर्णय किया गया है। ११ रुपए या उससे ज्यादह का व्यक्तिगत या सस्थात्मक योगदान करने वालो के नाम साप्ताहिक आर्य सन्देश मे प्रकाशित किए जाएगे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सहायता कोष के नाम पर अपने क्रास्ड चैक, ड्राफ्ट या नकद योगदान १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेजने की व्यवस्था करेंगे।

आर्यसमाजों के पदाधिकारी

आर्यसमाज माडल टाउन—प्रधान—श्री देशराज झाम्ब, उपप्रधान—श्री बद्रीनाथ महाजन एव श्री मोहनलाल नैय्यर, मन्त्री—श्री श्रीनिवास गुप्त, उपमन्त्री—श्री ओ० पी० धीर एव श्री कर्णदेव शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री ओ३म्प्रकाश गोयल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सतीशकुमार धीर, लेखानिरीक्षक—श्री जितेन्द्र गुप्त।

आर्यसमाज पाण्डवनगर पटपड़गंज: प्रधान—श्री विद्यासागर, उपप्रधान—श्री हरिदत्त वेदालकार, मन्त्री—श्री प्रमोदसिंह त्यागी, कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्रकुमार उपमन्त्री—श्री पतञ्जलि ऋषि कौशल, आयव्यय निरीक्षक—श्री कुलदीप कुमार।

गुरुकुल खेड़ा कुर्द में प्रवेश सूचना

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय खेडा कुर्द, दिल्ली-८२ मे छात्रो का प्रवेश प्रारम्भ है। यह महाविद्यालय सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से प्रथमा से आचार्य परीक्षा पर्यन्त मान्यता प्राप्त है। सस्कृत व्याकरण, दर्शन, साहित्य तथा विज्ञान, गणित, अग्रेजी आदि का सुन्दर पठन-पाठन तथा आवास एव भोजन की उत्तम व्यवस्था है। निर्धन तथा मेधावी छात्रो को छात्रवृत्ति एव सहायता दी जाती है। प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क करें। पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने से प्राप्य १२८ तथा १३७ नम्बर की बसे खेडा खुर्द पहुचाती हैं।

क्या सिख हिन्दू नहीं हैं? (पृष्ठ ६ का शेष)

तरह आज ननकाना साहेब जाने के लिए लेना पडता है। अभिप्राय यह है कि हमारे अकाली भाई स्वय ही तो ऐसी परिस्थितिया पैदा कर रहे हैं कि वे न केवल हिन्दुओ से कट जाए बल्कि अपने उन ऐतिहासिक गुरुद्वारो से भी कट जाए जो सिख पथ की सबसे बडी पूजी हैं। और जिन गुरुद्वारो पर केवल सिख ही नही हिन्दू भी गर्व करते हैं।

अन्त में मैं एक और बहुत बड़े सिख का उदाहरण अकालियो के सामने रखना चाहता हू। वह थे महाराजा रणजीत सिंह वह बडे कट्टर सिख थे। परन्तु साम्प्रदायिकता और धार्मिक सकीर्णता उनके निकट तक नही फटकती थी। उनके शासनकाल मे हिन्दू, मुसलमान, सिख सबके साथ एक जैसा व्यवहार किया जाता था और उनके दिल मे हिन्दू धर्म के लिए वही श्रद्धा थी जो सिख धर्म के लिए थी। दो-तीन उदाहरण मेरे इस विचार की पुष्टि करते है। उनके समय मे अफगानिस्तान मे गृहयुद्ध चल रहा था। वहा के बादशाह शाह शुजा को वहा से भागना पड गया। उसने महाराजा रणजीत सिंह से सहायता मागी। महाराजा रणजीत सिंह ने अपनी दो शर्तें पेश की। एक यह कि महमूद गजनवी सोमनाथ मन्दिर के जो दरवाजे वहा से निकालकर ले गया था, वे वापिस किए जाए। दूसरी यह कि अफगान यह वचन दें कि भविष्य मे वे गोवध नहीं करेंगे। इससे पहले महाराजा रणजीत सिंह ने कोहेनूर का हीरा भी उनसे मागा था। शाह शुजा महाराजा की दोनो शर्तें मान गया और कोहेनूर का हीरा भी उन्हे दे दिया गया। एक ओर तो हमारे सामने महाराजा रणजीत सिंह का उदाहरण है जो इतने गोभक्त थे कि उन्होने अफगानिस्तान के बादशाह से भी यह वचन ले लिया था कि वह गोहत्या नही करेगा। दूसरी ओर आजकल कई वे लोग हैं जो स्वयं को अकालियो की छत्रछाया मे काम करते बताते हैं, वे गौओ के सिर काटकर मन्दिरों में फेंक देते हैं। महाराजा रणजीत सिंह हिन्दू और सिख दोनो को किस तरह एक ही स्तर पर रखने का प्रयत्न करते थे। उसका अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि एक ओर विधिवत रूप से ग्रन्थ साहिब का पाठ किया करते थे। अमृतसर के हर मन्दिर के लिए उन्होने बहुत कुछ दिया था और उस पर आज जितना सोने का छत्र चढा है, वह भी महाराजा रणजीत सिंह ने ही दिया था। दूसरी ओर उन्होने अपने देहान्त से पहले यह वसीयत कर दी थी कि कोहेनूर का हीरा जगन्नाथपुरी के मन्दिर को दिया जाए। उन्होने बनारस के विश्वनाथ मन्दिर के लिए भी बहुत सोना भेजा था। कांगड़ा और ज्वालामुखी के मन्दिरों के लिए भी बहुत दान दिया था।

कोई बताए कि क्या महाराजा रणजीत सिंह सिख नहीं थे और सिख होते हुए भी यदि उनके दिल मे हिन्दू धर्म देवी-देवताओं और हिन्दू मन्दिरो के लिए इतनी श्रद्धा थी तो केवल इसलिए कि वह हिन्दुओं को सिखों से अलग नही समझते थे। हिन्दू धर्म और सिख धर्म मे कोई अन्तर न समझते थे। जो कुछ भी हमारे गुरु साहेबान कह गए हैं और जो कुछ महाराजा रणजीत सिंह ने कहा था और किया था, उसे सुनने और देखने के बाद यदि अकालियो की कारगुजारी पर किसी को खेद हो तो इसके लिए अकाली स्वय ही जिम्मेदार हैं।

लेकिन कहते हैं कि सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नही कहते। हाल ही मे सरदार गुरचरण सिंह टोहरा और सन्त हरचन्द सिंह लौंगोवाल ने कुछ ऐसे वक्तव्य दिए हैं, जिनसे ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हे अपनी त्रुटि का आभास होने लगा है। कहावत मशहूर है, "जब दिया रज बुतो ने तो खुदा याद आया।" अब जबकि इन्दिरा सरकार ने उनका जीना दूभर कर रखा है और उस उलझन मे से निकलने का उन्हे कोई रास्ता दिखाई नही दे रहा, जिसमें कि वे फंस गए हैं, तो वे कहने लगे हैं कि हिन्दू और सिख एक हैं। इसलिए सिखों को हिन्दुओ का विश्वास प्राप्त करना चाहिए। मैं इन दोनो महानुभावो के इन वक्तव्यों का स्वागत करता हू। यदि वे अब भी हिन्दुओ को साथ लेकर पजाब की समस्या हल करने का प्रयत्न करें तो बहुत कुछ हो सकता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा साहिबा प्रेस २१७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगरदिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली। फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ७ अंक ४० रविवार ३१ जुलाई, १९८३ १६ श्रावण वि० २०४० दयानन्दाब्द—१५९

श्री सरदारीलाल वर्मा दिल्ली सभा के प्रधान निर्वाचित

श्री प्राणनाथ घई नए सभा-मन्त्री चुने गए : १९८३-८४ वर्ष के लिए नए पदाधिकारियों की घोषणा : आर्यजन सहयोग करें—सभा-प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

दिल्ली। रविवार २४ जुलाई, १९८३ को प्रात ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन सभा-प्रधान श्री प्रेमनाथ जी एडवोकेट को अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। ईश—प्रार्थना के बाद सभा-प्रधान के प्रस्ताव पर समवेत आर्यजनो ने ग्रेटर कैलाश के श्री नन्दलाल बजाज, तिलक नगर के श्री हुकमचन्द आर्य, श्रीमती सावित्री देवी, धर्मपत्नी, श्री नन्दलाल बजाज, हिन्दू-[illegible] प्रो० रामसिह, दिल्ली के सुप्रसिद्ध आर्य राष्ट्रीय नेता डा० युद्धवीर सिह, हरिद्वार के चिकित्सक, शिक्षाशास्त्री वैद्य योगेन्द्रपाल शास्त्री, प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री प्रो० वेदव्यास जी की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्रीदेवी जी, सुप्रसिद्ध कवि, आर्यसामाजिक कार्यकर्ता श्री गोपीनाथजी अमन, सुप्रसिद्ध समाजसेवी, दानी श्री लालमन आर्य, तिलकनगर के श्री हसराज जी, राष्ट्र के प्रमुख उद्योगपति, अर्थशास्त्री समाजसेवी श्री घनश्यामदास बिरला, सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार श्री कृष्णचन्द्र विद्यालकार, वैदिक मिश्नरी, प० हमराज जी शर्मा, श्री हुकमचन्द जी आर्य, राष्ट्रीय कार्यकर्ता श्री मोहनलाल जी, योगाभ्यास के उन्नायक श्री नारायणदास जी कपूर, आर्यसमाज बिरला लाइन के पुरोहित श्री रामचन्द्र जी, श्री देशराज जी एव श्री चुन्नीलाल जी हाण्डा आदि के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए परमपिता से प्रार्थना की कि वह दिवगत आत्माओ को उनके शुभकर्मों के अनुसार सद्गति देंगे और उनके पारिवारिक जनो, मित्रगण एव परिचितो को उनके वियोग का दु ख सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नए पदाधिकारी

सभा का १९८२-८३ का वार्षिक विवरण तथा आयव्यय का ब्योरा सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिए जाने के बाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे सभा के वार्षिक चुनाव की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए दो नाम आए—श्री सरदारीलाल जी वर्मा और स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती। स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा अपना नाम वापस लिए जाने पर श्री सरदारीलाल जी वर्मा सर्वसम्मति से दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित हो गए। नव निर्वाचित प्रधान जी को सभा ने अधिकार दिया कि वह अपने सहयोगी अधिकारियों के नामो की घोषणा करें। इस अधिकार के अनुसार सभा-प्रधान जी ने वर्ष १९८३-८४ के लिए इन अधिकारियो के नामो की घोषणा की—

उपप्रधान—श्री विद्याप्रकाश जी सेठी, श्री तीर्थराम जी आहुजा, प्रो० भारतमित्र शास्त्री, मन्त्री—श्री प्राणनाथ जी घई, उपमन्त्री—डा० धर्मपाल सिह आर्य, श्री हरिदेव आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलवन्तराय खन्ना, पुस्तकाध्यक्ष—श्री दुर्गादास।

प्रतिष्ठित सदस्य—श्री सोमनाथ जी एडवोकेट, श्री प्रेमनाथ जी एडवोकेट, श्री राममूर्ति कैला, श्री रतनचन्द सूद, महाशय धर्मपाल, चौ० देशराज, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, श्री सूर्यदेव, श्री लाजपतराय, श्री वीरेन्द्र प्रताप।

अन्तरंग सदस्य—श्री सुरेन्द्रकुमार हिन्दी, श्री प्रीतमदास रसवन्त, श्री सत्यपाल मधुलिया, श्री विद्यासागर, श्री प्रद्युम्नलाल तलवाड, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री बनवारी लाल शादा, श्री रतनलाल सहदेव, डा० महेन्द्रपाल सिह आर्य, श्री रामशरणदास आर्य, श्री भजनप्रकाश आर्य, श्री नेतराम शर्मा।

प्रधान द्वारा मनोनीत—चौ० हीरासिह, श्री किशोरीलाल, श्री नवनीत राय एडवोकेट, श्री बी० बी० मिगल।

विशेष आमन्त्रित— मदनगोपाल खोसला मागेराम आर्य, मूलचन्द गुप्त विश्वनाथ कोहली कृष्णलाल सूरी, श्रद्धानन्द, सत्यपाल मधीन, खैरातीलाल भाटिया, ओ३मप्रकाश आर्य, वेदव्रत शर्मा, श्री बलबीर सिह सूद, ओ३प्रकाश कपडे वाला, श्री प्राणनाथ, राणा सिह भल्ला, आर० एन० गुप्त, रोशनलाल गुप्त, श्रीमती ईश्वरी देवी धवन, श्रीमती सरला पाल, श्रीमती रामचमेली, श्री हरिराम आजाद।

पंजाब में राष्ट्रपति-शासन लागू करो
धार्मिक स्थानो का राजनीतिक प्रयोग रोको

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की सर्वसम्मत मांग

नई दिल्ली। २४ जुलाई १९८३ के दिन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो की एक विराट सार्वजनिक सभा आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली मे उग्रवादी अकालियो द्वारा पजाब मे हत्याकाण्ड तथा अलगाववादी देशद्रोही तत्वो द्वारा उत्पन्न अराजकता का विरोध करने के लिए सपन्न हुई। इस सभा की अध्यक्षता करते हुए स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने पजाब मे उत्पन्न भीषण समस्या का समाधान करने हेतु भारत सरकार से माग करने के लिए सभी आर्यसमाजी बन्धुओ को प्रेरणा दी। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले, ससद सदस्य, आचार्य भगवान देव और निरकारी मण्डल के श्री जयराम दास सत्यार्थी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया—

यह सार्वजनिक सभा पजाब मे उग्रवादी अकालियो तथा पृथक्तावादी देशद्रोही लोगो की हत्या करने और राज्य मे अराजकता उत्पन्न करने के प्रयत्नो की घोर निन्दा करती है तथा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब का शासन सुचारू रूप से चलाने के लिए वहा राष्ट्रपति शासन तुरन्त लागू किया जाए। किसी प्रकार के विवाद को निपटाने से पहले भारत सरकार को गैर अकालियो, निरकारियो, पजाब हिन्दू रक्षा समिति तथा आर्यसमाज के प्रतिनिधियो से विचार विमर्श करने के पश्चात ही अकालियो से बात करनी चाहिए। इस वार्ता मे अन्य सम्बद्ध राज्यो के प्रतिनिधियो को भी सम्मिलित किया जाए। इन देशद्रोही तत्वो को मताधिकार से वचित किया जाए। धार्मिक स्थानो का राजनीतिक और हिंसात्मक कार्यों के लिए प्रयोग तत्काल बद किया जाए। पजाब के निवासी हिन्दुओ तथा अन्य अल्पसख्यको की सुरक्षा का प्रबन्ध किया जाए। जिससे इसकी प्रतिक्रिया अन्य प्रदेशो मे प्रारम्भ न होने पाए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड

वेद-मनन

हम ज्योतिस्वरूप परमात्मा को प्राप्त हों

—प्रेमनाथ, एडवोकेट

उपस्थान मन्त्र सन्ध्यान्तर्गत

ओ३म् उद्वय तमसस्परि स्व पश्यन्त उत्तरम्।

देव देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ यजु० ३५/१४॥

आदित्य ऋषि, सूर्य देवता, विराड-नुष्टुप, छन्द, गान्धार स्वर।

शब्दार्थ—(हे परमात्मन्!) [तमसस्परि] अविद्यान्धकार से परे (रहित) प्रकाशस्वरूप (ज्ञानस्वरूप), [स्व] सर्वानन्दस्वरूप (सुखस्वरूप वा सुखदाता) [उत्तरम्] जगत् के प्रलय के पश्चात् भी (नित्यस्वरूप होने से) सदा विराजमान् (अथवा सर्व दुःखो से पार करने वाले), [देवम्] ज्ञानस्वरूप वा आनन्दस्वरूप वा मुमुक्षु धर्मात्माओ को सर्वानन्द देने वाले, [देवत्रा] विद्वानो वा सूर्यादि सब दिव्य गुणयुक्त पदार्थो मे अनन्त दिव्य गुणयुक्त (देवो के भी देव), [सूर्यम्] सब चराचर जगत् के आत्मा (अर्थात् सब पदार्थों वा जीवो मे व्यापक (अन्तरात्मा) [ज्योति] स्वप्रकाशस्वरूप वा सूर्यचन्द्रादि के प्रकाशक, [उत्तमम्] सर्वोत्कृष्ट (सर्वोत्तम) आपको [वयम्] हम लोग [पश्यन्त] ज्ञानदृष्टि से देखते हुए [उदगन्म] उत्कृष्टता से प्राप्त हो (अर्थात् मुक्ति को प्राप्त हो)।

भावार्थ—जैसे सूर्य को देखते हुए दीर्घावस्था वाले धर्मात्मा जन सुख को प्राप्त होते है, वैसे ही धर्मात्मा योगीजन महादेव सर्वप्रकाशक जन्म के क्लेश से रहित सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा को साक्षात् ज्ञान मोक्ष को पाकर सदा आनन्द मे रहते हैं।

(ऋषि दयानन्द भाष्य)

व्याख्या—इस वेद मन्त्र मे परमात्मा को तमसस्परि कहा गया है अर्थात् वह अन्धकार से पृथक् है। अन्धकार न केवल भौतिक प्रकाश के प्रभाव से होता है किन्तु अविद्या, अज्ञानता से भी होता है। यहा अभिप्राय तमसस्परि से है कि ब्रह्म अविद्यादि दोष से रहित है। 'स्व' शब्द के अर्थ आदित्य, द्युलोक, आकाश, स्वर्ग वा आनन्दस्वरूप के हैं। परमात्मा सर्वानन्दस्वरूप है। इसलिए उसे इस वेदमन्त्र मे 'स्व' कहा गया है। परमात्मा को इस वेदमन्त्र मे 'सूर्य' भी कहा गया है। लौकिक सस्कृत मे इसके अर्थ प्रकाशमय भौतिक सूर्य के हैं, परन्तु वेद मे इसके अर्थ परमात्मा के भी हैं। परमात्मा चराचर जगत् का आत्मा होने से सूर्य कहाता है, सध्या के (उपस्थान के) तीसरे मन्त्र मे स्पष्ट आता है— सूर्यआत्मा जगतस्तस्थुषश्च अर्थात् समस्त जड व चेतन जगत् मे व्यापक होने से परमात्मा सूर्य नाम वाला है।

बोध-कथा

देशभक्ति

जहाज जापानी बन्दरगाह पर जा लगा। जापानी तटकर अधिकारी एवं पुलिस कर्मचारी सामने आए। वे बडी तेजी से काउण्टर पर यात्रियो की अटैचियो, टोकरियो एव सामान की छानबीन करने लगे। अधिकतर वे यात्रियो के बयान पर ही विश्वास कर रहे थे। जिसने कहा कि इसमे कस्टम का माल नहीं है, तो उसे कहा 'आगे चले जाइए।' जिसने कहा—'इसमे ड्यूटी वाला माल है' तो उसे देखकर तेजी से कानून के अनुसार तेजी से मामला निपटा रहे थे। इतने में ही एक भारतीय व्यापारी आया। उसने कहा, "मेरे पास अटैचियो मे तो कोई ऐसा सामान नही है, जिस पर चुगी लगती हो हा, ये कुछ फलों की टोकरिया हैं, इन्हें मैं आपके नेताओ और व्यापारियो को भेंट करना चाहता हू। इन्हे उपहार समझिए, ये आपके लिए, अफसरो और मन्त्रियों के लिए हैं।

जापानी अधिकारी ने पूछा—'इसमे कौन से फल हैं?' भारतीय व्यापारी ने उत्तर दिया इसमे भारत के रसीले आम है, जिन्हे खा-चूमकर जापानी मन्त्री, अफसर, व्यापारी मुग्ध हो जाएगे। इन्हे ले जाने दीजिए। आप खुद भी इन्हे चखकर देखिए, ये कैसे मीठे और जायकेदार हैं।' जापानी अधिकारी ने कहा—'हमे ऐसे मीठे जायकेदार फल नहीं चाहिए जो हमारे लोगो को अपने सत्य से— धर्म से च्युत कर सकें। ऐसे फलो को हम अपने देश मे आने भी नही दे सकते। क्षमा करेंगे।" इन शब्दो के साथ उन निष्ठावान् अधिकारियो ने वे फलो के टोकरे समुद्र को भेंट कर दिए।

—सुरेन्द्र

अनमोल मोती

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती दिल्ली

- जिस प्रकार स्नान आदि से शरीर स्वच्छ होता है, उसी प्रकार मन की स्वच्छता ईश्वर के गुणगान से होती है।
- प्रभु पर विश्वास करके जो कार्य किया जाता है, वही मगलमय है इसलिए ईश-विश्वास ही मुख्य वस्तु है।
- ईश्वर प्राणी मात्र के अन्दर की छोटी-छोटी बात देख रहा है, जानता है ईश्वर से छिपाना मूर्खता है।
- ईश्वर-उपासना को अपना परम कर्त्तव्य मानकर कभी भुलाना नही चाहिए। उसीमे लगा रहना लाभदायक है।
- प्रभु पर निर्भर और उस पर अधीन रहने वाला वास्तव मे वही है, जिसने ईश्वर का दृढ विश्वास (आश्रय) लिया है और जो किसी बात पर दोष नही लगता है।
- ईश्वर की आज्ञा मे चलना, ईश्वर के प्रति नम्र होना, उसकी प्रत्येक इच्छा के आगे सिर झुकाना— वही सच्चा वैरागी है।
- ईश्वर को छोडकर जो मनुष्य दैवी गुणों से मोक्ष की आशा करता है, वह बच्चो की-सी व्यर्थ चेष्टा है सत्यादि सद्गुणो के धारण करने के लिए ईश्वररूपी आधार की अत्यन्त आवश्यकता है।
- वासना लेशमात्र भी रही, तो प्रभु चिन्तन मे बाधा पड़ेगी।
- विषयासक्ति जितनी कम होती जाएगी—उतना ईश्वर के प्रति प्रेम भी बढ़ता जाता है।
- विषय विष है त्याग करना ही सुख का मूल है।
- काम को जीतना ही पूर्ण सफलता है।
- जल मे डूबा मनुष्य बच जाता है परन्तु विषयो मे डूबा नहीं बच सकता है।
- विषयो को हमने नही भोगा, किन्तु विषयो ने हमारा ही भुगतान कर दिया। तृष्णा का बुढापा नही आया – हमारा ही बुढापा आ गया।
- जो लोग शक्ति सामर्थ्य रहते विषयो को छोडते हैं, वे लोग ही प्रशसा के योग्य होते हैं।

खंजर सिर तक आ पहुंचा है!

—नीरज—

ओ उपवन के रसिक मधुकरो! गुजन रण-भेरी मे बदलो,
अपना बाग बाहर लूटते, पतझर घर तक आ पहुचा है!
जहा जलि धूनी ऋषियो की वहा धधकतीं आज चिताए,
मन्त्र जहा गूजे वेदो के, वहा पडी बेकफन ऋचाए।
मेरे देश उदास न हो, आख न कर आसू से गीली,
जागा है इन्सान तभी जब, पानी सिर तक आ पहुचा है।
शाति शक्ति की सगी बहन है, तभी विचरती है यह घर मे,
दीवारें कमजोर न हो जब और दुधारे हो कर-कर मे।
उनकी शाति विवशता है जो, हिसा-भय फेंक धनुष को,
लेकर बस खडताल, कीर्तन करते हैं धनिक मन्दिर मे।
मौसम की साजिश अब भी पहचान, अरे ओ मेरे नाविक!
दिखी भवर से बचकर बडा छिपी भवर तक आ पहुचा है।
शाति तभी तक ठीक कि जब तक शाति न बन जाए कमजोरी,
उससे नही दोस्ती मुमकिन बाटी जिसने कभी तिजोरी।
समझौते की करो न चर्चा, सन्धि-पत्र का अर्थ नही कुछ,
कातिल का खजर दामन को चीर जिगर तक आ पहुंचा है।

मेरिस रोड, अलीगढ़ (उ० प्र०)

अशोकनगर आर्यसमाज के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज—अशोक नगर—प्रधान—श्री राजाराम आर्य, उपप्रधान—श्री सुखदेव आर्य, श्री मगतराम आर्य, महामन्त्री – श्री पुरुषोत्तम लाल सेठ, मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र; उपमन्त्री—श्री अमृतलाल; कोषाध्यक्ष—श्री बन्द्रभान आहूजा; लेखा निरीक्षक—श्री यशपाल।

सब ऋतुएं मंगलकारिणी हों !

ओ३म् ग्रीष्म से भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्त शिशिरो वसन्त ।
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम् ॥ अथर्व १२.१.३६

हे पृथ्वी, ग्रीष्म और वर्षा, शरद और हेमन्त, शिशिर और वसन्त ये छहो ऋतुए, दिन-रात और वर्ष —सब हमे फल देने वाले हों।

कठिन परीक्षा की घड़ी

इस समय देश की जैसी परिस्थिति है, उसमे प्रत्येक देशवासी को राष्ट्ररक्षा के लिए दृढ सकल्प ग्रहणकर उसे कार्यान्वित करने के लिए तन-मन-धन की बाजी लगाने के लिए सदा तत्पर रहना होगा। वैसे तो तीन-तीन बार आक्रमण करने वाले एव भारत के विरुद्ध रात-दिन नए से नए शस्त्रास्त्र एकत्र करने वाले पाकिस्तान ने पिछले दिनो कोशिश की है कि वह भारत से अपने मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो का प्रदर्शन करे, परन्तु वस्तुत वह भारत से मैत्री करने के नाम पर अपनी सैनिक तैयारी करना चाहता है। जापान—यात्रा के दौरान पाक राष्ट्रपति जन० जिया ने घोषित किया है कि पाकिस्तान उस समय तक परमाणु शक्ति निरोधक सन्धि पर किसी प्रकार के कोई हस्ताक्षर नही करेगा, जब तक ऐसी सन्धि पर भारत भी हस्ताक्षर नही करता। पिछले दिनो विश्व भर के समाचार पत्रों मे यह संवाद भी प्रकाशित हुआ था कि लीबिया के कर्नल गद्दाफी तथा अरब राष्ट्रो की सक्रिय आर्थिक सहायता के फलस्वरूप पाकिस्तान इस्लामी अणुबम बनाने के लिए प्रयत्नशील है। पिछले दिनो यह सवाद भी मिला था कि पाकिस्तान को अपने अणुबम के प्रयोग मे सफलता मिल गई है। स्वभावत जिज्ञासा होगी कि वह अपने इस इस्लामी बम का प्रयोग किसके विरुद्ध करेगा ?

अपने परम्परागत विरोध के कारण पाकिस्तान का मुख्य लक्ष्य भारत है और दूसरे मध्यपूर्व मे अरब राष्ट्रो का परम्परागत शत्रु इजराइल है। पिछले दिनो अनेक अग्रेजी एव भारतीय भाषाओ के पत्रो में यह सवाद भी प्रकाशित हुआ है कि प्रारम्भ से ही खालिस्तान आन्दोलन को पाक का सक्रिय आर्थिक एव राजनीतिक समर्थन मिला है। विदेशों मे अवस्थित पाकिस्तानी दूतावासो ने भारत विरोधी इस आन्दोलन के नेताओ को अपने खर्चे पर पाकिस्तान बुलाकर उनका स्वागत किया है और उन्हे सब तरह की आर्थिक एव सामाजिक सहायता की है। इन कथित खालिस्तानी नेताओ का स्वय जिया ने स्वागत भी किया है। पिछले दिनो यह सवाद भी मिला था कि इन कथित खालिस्तानी नेताओ का अमेरिकी सरकार ने पारपत्र की सुविधा दी थी। इतना ही नही, भारत स्थित अमेरिकी सरकार राजदूत खालिस्तानी आन्दोलन को अपना नैतिक और राजनीतिक समर्थन भी सार्वजनिक रूप से दे चुके हैं। यह बात भी उल्लेखनीय है कि पिछले तीन दशको मे पाकिस्तान को कम्युनिज्म के विरोध के लिए अमेरिका से निरन्तर आधुनिकतम शस्त्रास्त्र, टैक और विमान आदि मिलते रहे हैं और आज भी बडी गिनती में मिल रहे हैं, जिनका खुलकर प्रयोग भारत के विरोध मे ही होगा।

सचमुच देश के सम्मुख परीक्षा की कठिन घडी आ गई है। अलगाववादी तत्वों से देश की एकता को खतरा पैदा हो गया है। सकट की भयकरता इतनी अधिक है कि पिछली २४ जुलाई के दिन उत्तर भारत मे पजाब सुरक्षा दिवस मनाया गया। इस दिन कि सभाओ मे पजाब एव केन्द्रीय शासन से अनुरोध किया गया कि वे उग्रवादियो से हिंदुओ की रक्षा करें। यह दायित्व शासन निबाहता तो समस्या बिगडती ही नही। आज सारे देश की जनता को अपने व्यवहार से बतलाना होगा कि 'पजाब का हिन्दू नहीं अनाथ, सारा भारत उसके साथ।' यह काम कोरे प्रस्तावो और प्रदर्शनो से पूरा नही हो सकता। इस बात में कोई सन्देह नही रह गया है कि पाकिस्तान और अमेरिका जैसे देश अकालियों को सहयोग देकर देश का एक और विभाजन करने का षडयन्त्र कर रहे हैं। इन भारत विरोधियो का षडयन्त्र विफल हो जाए उसके लिए भारतीय जनता और केन्द्रीय एव राज्यों की सरकारो को मिलकर भगीरथ प्रयत्न करना होगा। कठिन परीक्षा की घडी में हम खरे सफल सिद्ध हों, इसके लिए छोटे-बड़े प्रत्येक देशवासी को आन्तरिक अव्यवस्था और बाह्य आक्रमण से राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सशक्त, सन्नद्ध और सतत जागरूक बनना होगा।

दिल्ली कीं आर्यसमाजों से निवेदन

सरदारीलाल वर्मा—प्रधान, दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन मे रविवार २४ जुलाई को सर्वसम्मति से मुझे सभा का प्रधान निर्वाचित करके वर्ष के लिए सभा के अन्य अधिकारी वर्ग एव अतरगसभा के गठन का अधिकार देकर मेरे कन्धो पर जो बोझ डाला है, मैं उसके लिए सभी प्रतिनिधि महानुभावो का आभारी हू और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि वह मुझे सद्बुद्धि, विवेक एव शक्ति प्रदान करे, जिससे मैं अपने उत्तरदायित्व को ईमानदारी से बिना किसी पक्षपात के पूरा करने मे सफल हो सकू। मैंने साधारण सभा द्वारा दिए गए अधिकार का प्रयोग करके जो मन्त्रिमडल एव अन्तरग सभा का गठन किया है, उसमे प्रत्येक क्षेत्र से सभा के कार्य मे रुचि रखने वाले, कर्मकाण्डी एव समय देने वाले कार्यकर्त्ताओ को ही रखा है। यह स्वाभाविक ही है कि जब मैंने अपने उत्तरदायित्व निभाने के लिए अपनी टीम बनानी है, तो उसमे उन्ही कार्यकर्त्ताओ को शामिल करूगा, जिनसे मुझे पूर्ण परामर्श, सहयोग एव समय मिलने की आशा हो। परन्तु ऐसे सज्जनो जो मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे, की सूची बहुत अधिक है और अन्तरग सभा मे केवल ३५ एव अधिकारी वर्ग मे ९ व्यक्ति लिए जा सकते थे। इसलिए कुछ आदरणीय एव कर्मठ कार्यकर्त्ताओ को विशेष आमन्त्रित की सूची मे रखा गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है ये सब महानुभाव अपने को अन्तरग सदस्य समझकर अन्तरग सभा की सभी बैठको मे पधारते रहेंगे और अपने परामर्श एव सहयोग से सभा के कार्य को तीव्र गति देने मे मेरा पूर्ण सहयोग देंगे।

आप सबको विदित ही है कि वर्तमान स्थिति मे आर्यसमाज को अपने गौरवमय अतीत के अनुसार जनता का मार्गदर्शन करना है और अपने उत्तरदायित्व मे निभाने के लिए कटिबद्ध होकर क्षेत्र मे उतरना है। यह तब ही हो सकता है, यदि हम सबका आपसी छोटे-मोटे मतभेद भुलाकर कन्धे से कन्धा मिलाकर सगठित रूप मे कार्य करने का निश्चय करें। पजाब की समस्या हमारे सामने है, निर्वाण शताब्दी भी आ रही है। विदेशी शक्तिया हमारे देश एव धर्म को नष्ट करना चाहती हैं और सभी आर्यसमाजो को अपने रास्ते का काटा समझती है। वास्तव मे है भी ठीक। आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही एक सजग प्रहरी की भूमिका निभाता आया है और बिना किसी स्वार्थ किसी गद्दी अथवा कुर्सी के लालच के, देश एव धर्म के लिए, रक्षा करता आया है। वर्तमान समय मे एक ओर देश की अखण्डता को भग करने का षड्यन्त्र है और दूसरी ओर आर्य सस्कृति को नष्ट करने हेतु अपने पराये सभी लग रहे हैं। अत आर्यसमाज का उत्तरदायित्व इस समय बहुत बढ गया है। इसे हम सगठित रूप में ही सफलता पूर्वक निभा सकते हैं। इसलिए हमारा सभी महानुभावो से विनम्र निवेदन है कि आप सब तन, मन एवं धन से सभा को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर सगठन को शक्तिशाली बनाए, तब ही हम अपने लक्ष्य मे 'घर-घर मे वेद सन्देश पहुचाए' सफल हो सकते है।

दुःख इस बात का है कि कुछ अवाछनीय तत्त्व स्वार्थ एव सकीर्ण भावनाओ के वशीभूत नाना प्रकार की भ्रान्तिया फैलाते है, जिनका कोई अस्तित्व नही होता। ऐसी अफवाहो पर ध्यान न देकर सब मिलकर प्रचार के कार्य मे अपना योगदान करें। यदि किसी भाई को किसी के प्रति किसी प्रकार की कोई शका हो तो आर्य होने के नाते वह सीधे सभा मे आकर उसका समाधान करें ताकि वास्तविकता को पहचान सके।

सभा आपकी है और सभा के है। सभा की भलाई मे हम सबको अपना योगदान करना है सभा मजबूत होगी तो अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार पूरा कर सकेंगे। कई आर्यसमाजो ने अपने दशाश, वेदप्रचार आदि की राशि नहा भेजी क्योकि वे सभा के निर्वाचन मे भाग नही लेना चाहते थे। उन सबसे मेरी प्रार्थना है कि वे इस सगठन के महत्वपूर्ण अग हैं, इसे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें और अपने दशाश आदि की राशि तुरन्त सभा कार्यालय को भिजवा देवें।

चिट्ठी-पत्री

प० दिनेशचन्द्र पराशर की सेवा का लाभ उठाए

आर्य बालगृह पटौदी हाउस, दरियागज मे सस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदो व वैदिक कर्मकाण्ड के उत्तम विद्वान् आचार्य प० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री एम० ए० सस्कृत वेदो आदि के अध्यापक पधार गए हैं। वह वेद-प्रवचन, गीता, रामायण, महाभारत, मनोविज्ञान, दर्शनो उपनिषदों की कथा सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक व्याख्यान करते हैं। शका-समाधानो के लिए भी उद्यत रहते हैं। आशा है कि ऐसे श्रेष्ठ विद्वान् से आर्यसमाजें, आर्य जनता लाभ उठाएगी। वह समस्त यज्ञो व विवाह सस्कार, मुण्डन स०, नामकरण सस्कार आदि के लिए भी समय समय पर उद्यत रहते हैं।

— व्यवस्थापक, आर्य बाल गृह पटौदी हाउस, दरियागज दिल्ली —२

पहला नियम शौच पवित्रता

अहैतुकी भक्ति

मानव-जीवन के चौमुखी विकास के लिए वैदिक धर्म के अन्तर्गत योगदर्शन मे पांच नियम और पाच यम—१० साधनो का वर्णन किया गया है। मनुस्मृति मे यह भी कहा गया है कि यमो का पालन करने के साथ नियमो का पालन करें, केवल नियमो का नही। पाच यम इस प्रकार हैं—१. अहिसा, २ सत्य, ३ अस्तेय, ४. ब्रह्मचर्य, ५ अपरिग्रह, अर्थात् सग्रह और जमा करने की भावना का त्याग, केवल मात्र जीवन यात्रा के लिए अनिवार्य पदार्थो का ही उपयोग। पाच नियम हैं १ शौच, २ सन्तोष, ३. तप, ४ स्वाध्याय, के दो अर्थ—पहला अपने आपको देखना, अपने दोषो का अधिक और गुणो का कम चिन्तन आत्म चिन्तन दूसरा, मोक्ष-मार्ग में प्रेरक ही शास्त्रो और साहित्य का अध्ययन, ५ ईश्वर-प्रणिधान, सतत् प्रभु की महिमा का चिन्तन करते हुए अपने को, बिना किसी प्रकार की माग करते हुए, पूर्णत अर्पित और जगदीश्वर के न्याय और दया—दोनो पर अडिग आस्था और विश्वास। शास्त्रो में इस प्रकार की भक्ति को अहैतुकी भक्ति कहा गया है।

यम और नियमो के मध्य भेद रेखा प्रकट करने के लिए यह भी कहा जा सकता है कि पाचो यम 'सामाजिक जीवन' के और पाचो नियम 'व्यक्ति जीवन'—दोनों एक साथ रथ के दोनो पहियो के समान-उत्कृष्ट और उन्नत जीवन के प्रेरक हैं।

बाह्य शौच

हम यहा प्रथम नियम 'शौच' की व्याख्या करते हैं। प्रसगवश दूसरे नियम 'सन्तोष' के सम्बन्ध मे रविवार, २६ जून के 'आर्य सन्देश' मे कर चुके है। अब प्रथम नियम 'शौच का कुछ विवेचन कर रहे है। योगदर्शन २।३२ सूत्र के अनुसार 'शौच' का अर्थ शुद्धि, पवित्रता है। यह दो प्रकार का है—बाह्य और अभ्यन्तर। १ जल, मृत्तिका आदि भौतिक तत्त्वो द्वारा अपने शरीर, वस्त्र, निवास स्थान, आसपास, परिवेश इत्यादि और शुद्ध आहार-व्यवहार इत्यादि द्वारा सयमित जीवन इसके अन्तर्गत हैं। गीता ६।१६-१७ मे इसी प्रकार के जीवन के अन्तर्गत आहार-विहार, शारीरिक निद्रा, जागरण इत्यादि को ऐसा योग मार्ग कहा गया है जिससे दु ख दूर होते हैं।

अभ्यन्तर शौच

अभ्यन्तर अर्थात्, मानसिक शौच के अन्तर्गत चित्त मे उत्पन्न मल, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, क्रोध, भय, मात्सर्य आदि का, सदा सावधान रहते हुए, प्रक्षालन, निवारण इस पृष्ठभूमि में यदि हम वैनिक कर्त्तव्य, प्रात.सायं—सन्ध्या के मन्त्रो पर कुछ गहराई से विचार करें तो उनकी क्रमबद्धता और उनमे निहित गभीरता प्रकट होती है। सन्ध्या के प्रथम आचमन मत्र द्वारा परमात्मा से सार्वभौम 'शम्' कल्याण की कामना करते हुए जल स्पर्श द्वारा अग-प्रत्यगो की पुष्टि और नीरोगता के बाद सिर से पैर तक प्रत्येक अग की पवित्रता के साथ दोबारा (पुन) मस्तिष्क की पवित्रता की प्रार्थना की गई है ऐसा क्यो ? इसलिए कि मानवदेह मे 'शिर' ही एक मात्र ऐसा स्थान है जहा आत्मा का निवास है और वही एक मात्र शरीर की ज्ञानेन्द्रियो और कर्मेन्द्रियो का स्वामी और सचालक है। यही आभ्यन्तरिक पवित्रता की उपलब्धि के लिए, प्राणायाम द्वारा, चित्त को एकाग्र कर सर्वव्यापक प्रभुदर्शन हो सकता है। 'अघमर्षण' मत्रो को प्राय पाप से क्षमा मागने का मंत्र समझा जाता है। यह भयकर भूल है। वैदिक सिद्धान्त के अनुसार पाप कभी क्षमा नही होते, फल तो भोगना ही पडेगा 'अवश्यमेव भोक्तव्य कृतकर्म शुभाशुभम्'। 'अघ' का अर्थ पाप है, 'मर्षण' धातु मृष्-सहने' उसका फल सहने के लिए इस सृष्टि मे ईश्वर की अकल्पनीय, अचिन्त्य महत्ता को विचार कर उपासक अपने आत्मा को भी महान्, उदार, गम्भीर बनाये—यही प्रेरणा दी गई है।

ईर्ष्या-द्वेष का दावानल

मानव की जन्मजात, सर्वाधिक भयकर और विनाशक व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर—दुर्बलता ईर्ष्या-द्वेष की है जिसके रावण के कभी न समाप्त होने वाले दस सिरो की तरह—अनेक रूप, क्रोध, अहकार, मात्सर्य, घृणा इत्यादि हैं। वेद मे इस ईर्ष्या-द्वेष को दावानल (प्रलयकारी अग्नि) से उपमित किया गया है। यह ऐसी 'बुझाए न बुझे' यह वह्नि है जिसके अनिवार्य फलस्वरूप व्यक्ति स्वय और फलते-फूलते कुटुम्ब, परिवार, समाज राष्ट्र और यहा तक कि समूचा विश्व भस्मसात् हो जाता है। सन्ध्या के मानसिक परिक्रमा के ६ मत्रो द्वारा—जिनके द्वारा इस कुत्सित चिन्तन के मूलत. विनाश की प्रभु से प्रार्थना की गई है, वहा मानव की जन्मजात इस दुर्बलता के 'वही दोषी है, मैं तो निर्दोष हू, इस अस्मिता के निवारण और न्याय के लिए उपासक प्रभु से यही प्रार्थना करता है—विश्व की छह दिशाओं का चिन्तन करते हुए 'योऽस्मान् द्वेष्टि य व वय द्विष्म: त वो जम्भे दध्म भगवन्! जो हमसे द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते है' उसका न्याय हम स्वयं न कर आप पर ही छोडते हैं आज विश्व शान्ति की अहर्निश पुकार के साथ दूसरी ओर, दूसरे विश्व युद्ध के बाद—जिसे ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधान मंत्री चर्चिल ने अन्तिम युद्ध कहा था पर इसके सर्वथा विपरीत, गत लगभग आधी सदी मे एक दिन भी ऐसा नहीं था, प्रसिद्ध चिन्तक बर्नार्डशा के शब्दों में जब विश्व पूर्णरूप से युद्ध रहित और सर्वथा शान्त रहा हो। क्या इस भयावह विडम्बना का कोई उपाय नही है ! नहीं, अवश्य है और पूर्णत. वही है जो वैदिक सन्ध्या मे जल के माध्यम से आचमन मत्र से लेकर 'मनसा परिक्रमा' के आगे दर्जन मत्रो द्वारा 'नम शिवाय शिवतराय च' कल्याणकारी और अत्यन्त कल्याणकारी जगदीश्वर के प्रति सन्ध्या मे समर्पण मत्र द्वारा प्रभुभक्त प्रतिदिन करता है।

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

अर्थ शुचिता सबसे प्रथम

आज के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और जागतिक परिवेश मे जिस पवित्रता, शुद्धता, पुनीतता की सर्वाधिक प्राथमिकता है और इसके सर्वथा विपरीत जिसका तीव्रता से लोप हो रहा है, वह अर्थ 'शौच' मनु महाराज के शब्दो मे 'सर्वेषामेव शौचाना अर्थ शौच परम स्मृतम्"—सब प्रकार के शौचो मे अर्थ का शौच धन की, कमाई की पवित्रता सबसे मुख्य है। कौटिल्य अर्थशास्त्र का दूसरा सूत्र है 'धर्मस्य मूलमर्थ अर्थात् धर्म पालन का आधार अर्थ है। तीसरे सूत्र मे अर्थ का मूल राज्य बताते हुए, चौथे सूत्र मे कौटिल्य कहते हैं—राज्यस्य मूल मिन्द्रियजय." राज्य का आधार इन्द्रिय सयम" है। अभिप्राय यह इन्द्रियो पर विजय द्वारा ही राज्य सचालन और राज्य का मूल अर्थ और अर्थ का आधार धर्म है। इस प्रकार महान् नीतिज्ञ कौटिल्य ने धर्म और अर्थ – दोनो का समन्वय किया है। पर अर्थ को धर्म से सर्वथा पृथक् और उपेक्षित करने का महापाप जिसके फलस्वरूप आज अधिकाश मानव और विश्व पाप के गर्त मे निमज्जित हो रहा है, उसका दायित्व, हमारी दृष्टि मे, सर्वाधिक महाभारत के उच्चतम और अद्वितीय नायक भीष्मपितामह पर है।

भीष्म पितामह की भारी भूल

जिस समय द्यूत के लिए समवेत कौरव-पाडवो और द्रोण, इत्यादि आचार्यों और जन्मान्ध व मोहान्ध कौरव कुल के पिता और पाडवो के चाचा धृतराष्ट्र की उपस्थिति मे युधिष्ठिर पत्नी द्रौपदी का विलाप करते निर्वसना केशों से घसीटते दुशासन द्वारा भरी सभा मे लाया गया, तब उसने पितामह भीष्म से अत्यन्त [illegible] स्वर में पूछा—'पितामह !! तुम [illegible] कौरव-पांडव दोनों के एक सदृश पितामह हो, इस समय मुझ असहाय अबला के साथ हो रहे इस घोर अनर्थ पर चुप क्यों बैठे हो, विरोध क्यों नहीं करते ? तब भीष्म ने महाभारत के अनुसार जो शब्द कहे, वह उस काल के नैतिक पतनोन्मुख होने और उसके परिणामस्वरूप भारत के आगामी इतिहास पर काली छाया डालने वाले ही सिद्ध हुए। भीष्म सकट गुरु द्रौपदी के उद्धार के प्रति अपनी अशक्तता और असमर्थता प्रकट करते हुए कहते हैं—

अर्थस्य पुरुषो दास: दासोऽर्थस्तु न कस्यचित्

हे देवी ! मनुष्य धन का गुलाम है, धन किसी का नौकर नहीं है।

मनुस्मृति की चेतावनी सुनो

इसके सर्वथा विपरीत मनु ने अ० ४। १७०-१७४ मे जो शब्द कहे हैं, वे आज के व्यापक विशाल काले धन के कीचड़ मे फसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनवरत मननीय और स्मरणीय है—

१ 'जो व्यक्ति धार्मिक है, जिसका धन अनृत से प्राप्त हुआ है, जो हिसारत है, उसे कभी सुख प्राप्त नही हो सकता।

२ कष्ट पाता हुआ भी धर्म मार्ग का यात्री कभी अधर्म के मार्ग पर न चले। अधार्मिको के पापो का शीघ्र प्रतिकूल फल मिलता है।

३ जैसे गौ शीघ्र गाभिन हो दूध नही देती, इसी प्रकार अधर्म शीघ्र फल नही देता। शनै शनै कार्य करता हुआ कर्ता के मूल को काट देता है।

४ अगर पाप का फल अपने को नही मिलता तो पुत्रो मे, पुत्रो में नही तो दोहतो को मिलता है। किया हुआ अधर्म कर्ता के लिए निष्फल नही होता।

५ पाप पहले फलता-फूलता है, फिर सब ओर कल्याण देखता है, फिर शत्रुओ को जीत लेता है, उसके बाद मूल सहित नष्ट हो जाता है।

वित्त की अपेक्षा वृत्त का महत्व

विदुर नीतिकार अपने ग्रन्थ के ४। ३० श्लोक मे कहते हैं कि 'हे मनुष्य अपने वृत्त (आचरण) की यत्न से रक्षा करो, वित्त (धन) तो आने-जाने वाला है। वित्त से निर्बल होने पर भी मनुष्य निर्बल नही होता पर वृत्त सदाचार से हीन मनुष्य तो मरे हुए के सदृश है।

भगवान् से प्रार्थना

वेद के शब्दो में प्रभु से प्रतिदिन प्रार्थना करनी चाहिए।

ओ३म् । येन देवा: पवित्रेण आत्मान पुनते सदा। तेन सहस्र धारेण पावमानी पुनन्तु न. ॥ सामवेद उत्तमाचिक ५।२।३

भावार्थ—प्रभु की जिन पवित्र धाराओं से विद्वान् अपने को पवित्र करते हैं। पवित्रता की वे हजारों धारायें हमें चारों ओर से सदा पवित्र करने वाली हों।

के० सी० ३७ बी,
अशोक विहार, दिल्ली-५२

हमारे वानप्रस्थो-संन्यासी देश के कोने-कोने में प्रचार करें

—हरप्रकाश आहलूवालिया

गत कुछ वर्षों से मैं अप्रेल मास मे हरिद्वार स्थित वानप्रस्थ संन्यास-आश्रम ज्वालापुर वैदिक मोहन आश्रम, गुरुकुल कांगडी आदि सस्थाओ के वार्षिकोत्सवो मे सम्मिलित होता रहा हू। यो तो इन सभी जगह रहने-खाने भजन-उपदेश की सुन्दर व्यवस्था होती है, किन्तु इस समय मैं केवल वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर का ही कुछ वर्णन करूंगा। वहाँ का वातावरण बहुत शांत है। हर तरह की व्यवस्था बहुत सुन्दर है। वहा का अनुशासन और समय की पाबन्दी किसी अन्य जगह आज-कल देखने को बहुत कम मिलती है। वहा के अधिकारी और कार्यकर्ता नम्रता की मूर्ति हैं, यात्रियो को हर सुविधा पहुचाने मे कोई कसर उठा नही रखते। वार्षिक उत्सव के अवसर पर वहा भक्ति-भजन और उपदेश का जो दृश्य दृष्टिगोचर होता है। उससे बाहर से गए हुए मेरे जैसे यात्री को यही मालूम होता है कि वह जगह सचमुच ही विशेषकर वृद्धो के लिए धरती पर एक स्वर्ग है।

आश्रम मे जाने पर मेरे मन मे बार-बार यही प्रश्न उठता है कि यह सब कुछ निश्चय ही बहुत अच्छा है, किन्तु क्या इस से महर्षि दयानन्द का मिशन या फिर इस आश्रम के सस्थापक पूज्यपाद नारायण स्वामी जी महाराज का ही लक्ष्य कहीं तक पूरा हो पाता है। आश्रम की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य यही था कि उच्च कोटि के वानप्रस्थी एव सन्यासियो का निर्माण किया जाए, जो ससार मे भूलेभटके व्यक्तियो को धर्म का मार्ग दिखा सकें। अब हमे यह देखना है कि इस मुख्य उद्देश्य की पूर्ति देश की और विशेषकर हिन्दुओ की वर्तमान स्थिति के सन्दर्भ मे कहाँ तक हो रही है?

देश की स्थिति का अवलोकन करने पर मालूम पड़ता है कि उत्तर-पूर्व सीमा पर तो प्राय सभी प्रदेश ईसाई-बहुल बन ही चुके हैं। वहा एक अलग ईसाई राज्य के स्थापना की योजना चल रही है। दक्षिण भारत मे पैट्रो डालर के आधार पर क्या हो रहा है यह शायद सभी को भली-भांति मालूम नही है। अकेले तमिलनाडु में १७,००० हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया गया है। केरल मे मौनतुल इसलाम एसोसिएशन नाम की एक सस्था ने एक लाख लोगो को मुसलमान बना लिया है। यदि आज भारत के पूर्व दक्षिण एव पश्चिमी तटों पर दृष्टि डालकर देखें तो हर तरफ मुसलमानो की आबादी बढ़ रही है। उन की मस्जिदो की संख्या कई गुना बढ़ गई है। उत्तर प्रदेश में मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, बिजनौर, अलीगढ़ के इलाके को दूसरे पाकिस्तान बनाने की योजना भी बन चुकी है। देश के विभिन्न भागो मे ईसाई मिशनरियो और उनसे जुडी सस्थाऐ पृथकतावादी तत्वो को उभारने में विशेष भूमिका निभा रही हैं और एक अलग दलित स्थान की माग को जोरदार तरीके से पेश किया जा रहा है। ईसाई मिशनरी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार राज्यो मे हरिजन आदिवासी बहुल क्षेत्रो मे अपना प्रचार बहुत जोर-शोर से कर रहे हैं। श्री रामगोपाल शालवाले के एक वक्तव्य के अनुसार मध्य प्रदेश एव विदर्भ मे आठ लाख भीलो मे आदि-वासियो तथा हरिजनो को मुसलमान बनाने का षडयन्त्र प्रारम्भ किया जा रहा है। रही सही कसर हमारे अकाली भाइयो ने पूरी कर दी है। सिखो का जन्म ही हिन्दू जाति और धर्म की रक्षा के लिए हुआ था और जो स्वय मुसलमानो के अत्याचार के शिकार रहे है। अब उन्हे मुसलमानो के अधिक निकट बताया जा रहा है। अभी ११ मई को दरबार साहिब मे अकाल तख्त के सामने १५१ मुसलमानो ने मुसलिम लीगी झण्डो के साथ नाराये तकबीर लगाते हुए शपथ ली है कि वे अकाली नेताओ के दिए गये आदेश पर अकालियो की राजनीतिक मागो के मनवाने के लिए अपना बलिदान कर देंगे।

इसके साथ जब हम चौधरी चरण सिंह के एक वक्तव्य मे दी गई इस खबर को पढते हैं कि पाकिस्तान ने अनगिनत पाकिस्तानी युवक पजाब मे गुप्त रूप से भेज दिए हैं जोकि बाहरी वेशभूषा से सिख ही दिखाई देते हैं और जोकि सन्त जरनैल सिंह के स्वय सेवको के साथ मिल कर कार्य करेंगे तो स्थिति इतनी चिन्ताजनक बन जाती है। उधर धर्मनिरपेक्षता की आड मे हिन्दुओ के हितो की किस तरह से अवेहलना हो रही है। मुसलमानो के लिए नित नई सुविधाए दिए जाने और पुलिस आदि मे उनकी अधिक भर्ती के हाल मे ही दिए गए सरकारी आदेश पाठको ने पढे ही होगे।

एक तरफ हिन्दुओ पर इस तरह से चारो तरफ से आघात हो रहे हैं और दूसरी तरफ हम घोर निद्रा मे सो रहे हैं। बिल्ली को आते देखकर कबूतर के आखें बन्द कर लेने के समान हम यह समझते हैं कि समाज मन्दिरो मे हर रविवार दो घन्टे का सत्सग करके और ससार भर को आर्य बनाने के नारे लगाने मात्र से हमारी सब समस्याए हल हो जाएगी। हमारे वानप्रस्थ आश्रम को ही लीजिए। इस आश्रम की १९८२ की रिपोर्ट पढ़ने से पता चलता है कि इसमें कुल ३८६ कुटियां हैं जिनमे कुछ सौ वानप्रस्थी विद्वान और संन्यासी भी स्थायी रूप से रहते हैं। ये सब आश्रमवासी आश्रम में प्रतिदिन होने वाले यज्ञ-भजन और उपदेशो मे बडी श्रद्धा से भाग लेते हैं। व्यक्तिगत साधना मे जुटे हुए अपने-अपने जीवन को ऊचा उठाने मे लगे हुए है। यदि ये सब विद्वान वानप्रस्थ एव संन्यासी वेदप्रचार के लिए यत्नपूर्वक सलग्न हो जाए तो कितना परिवर्तन हो सकता है।

इस साल १५-४-८३ से १८-४-८३ तक आश्रम के वार्षिक-उत्सव मे महात्मा दयानन्द जी भी पधारे थे जिन्होने वहा तीन प्रवचन दिए जिनमे इसी बात पर जोर दिया। अपने पहले प्रवचन मे तो उन के अपने शब्दो मे उन्होने केवल अपनी बिरादरी वालो को ही सम्बोधित किया और उन्हे बहुत जोरदार शब्दो मे बाहर प्रचार कार्य के लिए निकलने की प्रेरणा दी। उन्होने अपने दक्षिण और पूर्व उत्तर भारत मे भ्रमण का ब्योरा देते हुए हिन्दू जाति पर आए हुए सकट का दिग्दर्शन कराया और बार-बार प्रार्थना की कि वे समय आश्रम मे बैठकर साधना करने का ही नही बल्कि अपना अधिक समय हिन्दू जाति को सगठित करने मे ही लगाना चाहिए। यही बात स्वय महात्मा आर्य भिक्षु जी ने जो कि इस आश्रम के १९८१ साल से अध्यक्ष भी हैं ने अपने समापन भाषण मे कही और आश्रम के सन्यासियो को सम्बोधित करते हुए अपने पुन अध्यक्ष चुने जाने के विरोध में कही कि यदि आप स्वंय प्रचार कार्य के लिए बाहर नही जा सकते तो कम से कम जो प्रचार कर रहा है उसमे तो (पुनः उन्हें अध्यक्ष चुनकर) वे बाधक न बने।

आश्रम अपने मे बहुत अच्छा कार्य कर रहा है, किन्तु यदि जो कुछ हो रहा है इसके साथ ही सचमुच ही श्री नारायण स्वामी जी महाराज के आधारित लक्ष्य के अनुसार आश्रमवासी अपना निर्माण करते हुए भूलेभटके व्यक्तियो को धर्म का मार्ग दर्शा सकें तो देश का उद्धार हो सकता है जो वानप्रस्थी अधिक विद्वान नही हो वे भी गाव-गाव मे जाकर हिन्दुओ की वर्तमान स्थिति का बोध तो करा सकते हैं और हिन्दू जाति को सगठित करने का प्रयास तो कर सकते हैं। इसी आश्रम की तरह और कई आश्रम भी हैं। विशेषकर जिनको पौराणिक भाई चला रहे है। इस के अतिरिक्त लाखो की सख्या मे साधु-सन्यासी है अगर वे सब मिलकर इस काम मे जुट जाए तो हमारी सरकार को क्या दुनिया की कोई शक्ति भी हिन्दुओ के हितो की अवहेलना नही कर सकती। स्वय हमारे दलित और पिछडे हुए भाइयो मे भी शक्ति का सचार हो जाएगा। और वे अपने आप को हिन्दू जाति का अग समझने मे गौरव महसूस करेंगे। और विधर्मियो के आक्रमण का मुकाबला करने का साहस उन मे पैदा हो जाएगा। परन्तु इस कार्य मे भी पहल आर्यसमाज को ही करनी होगी। और हमारे वानप्रस्थी और सन्यासियो को ही सब का मार्गदर्शन करना होगा।

एफ-६३ अशोक विहार, दिल्ली-५२

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज करौलबाग—प्रधान—श्री अजयकुमार भल्ला, उपप्रधान—श्री जयचन्द टण्डन, श्री तीर्थराम आहूजा, महाशय धर्मपाल, श्री खुशीराम सहगल, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश सुनेजा, उपमन्त्री—श्री सत्यपाल मोहन, श्री देवराज बघई, श्री चेतन स्वरूप कपूर, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश गुप्त, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री अमरनाथ ससार, लेखा निरीक्षक—श्री देवसेन शारदा।

आर्यसमाज विनयनगर—प्रधान—श्री सत्यदेव गुप्त, उपप्रधान—श्री विजयकुमार सहगल, श्री देशराज बुधराजा, श्री प्रेमचन्द, श्री बलवीर वर्मा, मन्त्री—श्री रोशनलाल गुप्त, उपमन्त्री—श्री गगादेव शर्मा, श्री इन्द्रसेन कोहली, श्री सुरेन्द्रकुमार गर्ग, श्री किशोर कुमार, कोषाध्यक्ष—श्री राममूर्ति शर्मा,

आर्यसमाज रामगली— सी-१३, हरिनगर, घण्टाघर, नई दिल्ली—६४ प्रधान श्री चरणदास शर्मा, उपप्रधान—श्री सोहनलालजी, श्री हरचन्दीलाल गुप्त, मन्त्री—श्री आनन्द प्रकाश वर्मा, उपमन्त्री—श्री ताराचन्द पवार, प्रचारमन्त्री—श्री ओमदत्त गौतम, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बी० डी० सरना, आयव्ययनिरीक्षक—श्री रामशरणदास गुप्त।

स्त्री समाज हनुमान रोड—प्रधाना—श्रीमती रामाबाई, उपप्रधान—श्रीमती आशा वर्मा, श्रीमती शकुन्तला साहनी, मन्त्रिणी—श्री प्रकाश आर्या, उपमन्त्रिणी—श्रीमती सुनीता बुग्गा, प्रचारमन्त्रिणी—श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा, कोषाध्यक्षा—श्रीमती शकुन्तला सैनी, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती साधना शर्मा।

आर्यसमाज—राजेन्द्रनगर—प्रधान—श्री द्वारकानाथ सहगल, उपप्रधान—श्री देशराज बहल, श्री कृष्णलाल भाटिया, मन्त्री—श्री शादीलाल, उपमन्त्री—श्री प्राणनाथ कक्कड,श्री हेमराज, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश मलिक, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश सलूजा; प्रचारमन्त्री—श्री अशोककुमार सहगल।

खालिस्तान-आन्दोलन को पाक का सक्रिय खुला समर्थन

विदेशों में अवस्थित पाक मिशनों द्वारा आर्थिक मदद : पाक राष्ट्रपति जिया का भी सीधा समर्थन

अमृतसर। सुविज्ञ राजनीतिक प्रेक्षको के अनुसार कथित खालिस्तान आन्दोलन को अन्य पाकिस्तानी नेताओ के अतिरिक्त पाक राष्ट्रपति जन.जियाउलहक का आशीर्वाद भी प्राप्त है। इसी के साथ पाकिस्तान के ब्रिटेन, सयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा स्थित राजनयिक मिशन भी इस आन्दोलन को बढावा देने मे पूरी तरह से सक्रिय हैं। वे इन खालिस्तानी नेताओ को केवल धन एव यात्रा सम्बन्धी मुफ्त सुविधाएं ही उपलब्ध नही करा रहे, प्रत्युत उन्हे भारत विरोधी प्रदर्शन करने मे भी सहयोग दे रहे हैं।

इतना ही नही, इन पाकिस्तानी दूतावासो ने तथाकथित खालिस्तानी डा० जगजीतसिंह चौहान को खालिस्तान एयर-लाइन्स (हवाई कम्पनी) खोलने मे भी सहायता दी। यह हवाई कम्पनी छह माह मे ही दम तोड़ गई, क्योंकि उसे कोई भी यात्री नही मिल सका। प्रेक्षको ने यह रहस्योद्घाटन भी किया कि पृथक् सिख राष्ट्र का नारा देने वाले श्री गगासिंह ढिल्लो भी चौहान की तरह अनेक बार पाकिस्तान की यात्रा पाकिस्तानी टिकट एव आर्थिक सहायता के बल पर कर चुके हैं। १९७८ मे जब वह संयुक्त राज्य अमेरिका से पाकिस्तान गए, तब स्वंय पाक राष्ट्रपति जिया उल हक ने उनका अभिवादन किया।

एक अन्य समाचार मे बताया गया कि डा० जगजीतसिंह चौहान ने जिस समाचार-पत्र 'खालिस[illegible]' की शुरूआत की थी, [illegible] पत्रकारो द्वारा सं[illegible] एजेंसी ने आर्थिक सहायता दी [illegible] काम के लिए यूरोप की [illegible] से धन मिला।

दयानन्द नेत्र-चिकित्सालय में नेत्रों की परीक्षा

आर्यसमाज माडल टाउन के प्रधान श्री देशराज शर्मा और मन्त्री श्री निवास गुप्त सूचित करते हैं कि आर्यसमाज के तत्त्वावधान में दयानन्द धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय में प्रति सप्ताह मगलवार, बृहस्पतिवार, शनिवार को प्रातः ८॥ से १०॥ तक आंखों के प्रत्येक रोग की परीक्षा तथा चश्मे का नम्बर लेने की सुविधा है। इस अवसर पर नेत्र विशेषज्ञ श्री जे० डी० बतरा नेत्र-परीक्षा करते हैं।

पंजाब को फौज के सुपुर्द किया जाए

कानपुर। आर्यसमाज गोविन्द नगर मे एक सभा केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हुई जिसमे प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से माग की गई कि पंजाब मे कानून व सरकार नाम की कोई चीज नहीं रह गई है, अतः पजाब मे राष्ट्रपति-शासन लागू किया जाए। पजाब में पुलिस का रवैया पक्षपातपूर्ण रहा है, इसलिए पंजाब को केन्द्रीय पुलिस व फौज के सुपुर्द किया जाए। गुरुद्वारो मे छिपे अपराधियों को निकालकर दण्डित किया जाए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भारतिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष : ७ अक ४१ | रविवार ७ अगस्त, १९८३ | २३ श्रावण वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५९

पंजाब समस्या में विदेशी हाथ सुनिश्चित

बाहरी शक्तियां भारत को शक्तिशाली नहीं देखना चाहतीं—अकाली देशद्रोहियों की भूमिका निभा रहे हैं !

गांधी नगर को सार्वजनिक सभा में आर्यनेताओं की चेतावनी।

रविवार ३१-७-८३ को रात्रि ८ बजे से शाहदरा क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे पजाब सुरक्षा दिवस के उपलक्ष्य मे सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। जमना-पार क्षेत्र के हजारो नर-नारियो ने इस सभा मे पधारकर आर्य-नेताओ के विचार सुने। सभा मे उपस्थित सभा प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा, सभा-मन्त्री श्री प्राणनाथ घई, स्वतन्त्रता सेनानी श्री हरिराम आजाद, सभा उपप्रधान श्री विद्याप्रकाश सेठी, उपसभा प्रधान श्रीमती ईश्वर देवी धवन के अतिरिक्त आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह प्रधान हरयाणा रक्षा वाहिनी, श्री राज सिह आर्य प्रधान केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्री महात्मा वेदभिक्षु जी एव निरंकारी सन्त श्री जयरामदास जी सत्यार्थी ने जनता को बताया कि पंजाब की समस्या कोई धार्मिक समस्या नहीं है और न ही यह सिख पथ की समस्या है। मुट्ठी भर अकाली विदेशी षड्यन्त्र के अन्तर्गत विदेशी सहायता से देश द्रोहियो की भूमिका निभा रहे हैं। धार्मिक स्थानो को अपराधियो के शरणगृह के रूप मे इस्तेमाल करके और गुरुद्वारो मे बारूद और दूसरे हथियार एकत्र करके धार्मिक स्थानो की पवित्रता को नष्ट कर रहे हैं। निरपराधियो की निरकुश हत्याओ को प्रोत्साहन देकर वे यह सिद्ध कर रहे हैं कि पजाबी सूबे में अल्पसख्यको के लिए कोई स्थान नही। वे इस बात को भूल रहे हैं कि जिस प्रकार वे पजाब में गैर अकालियो एव हिन्दुओ पर अत्याचार कर रहे हैं यदि इसी प्रकार अन्य स्थानों पर जहा-जहा अकाली अल्प सख्या मे हैं, उनसे यदि इसी प्रकार का व्यवहार किया जाए तो क्या होगा। वक्ताओ द्वारा सरकार से माग की गई कि अकालियो से कोई समझौते की बात न की जाए और उपद्रवकारियो से सख्ती से बर्ता जाए। स्वर्ण मन्दिर में जो अपराधी शरणागत हैं उन्हे पुलिस अथवा फौज द्वारा तुरन्त वहां से निकालकर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। अलगाववादी तत्त्वो से वोट का अधिकार छीना जाए और देश की अखण्डता के एव पजाब के गैर अकालियो एव हिन्दुओ की सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करने के हेतु पजाब मे तुरन्त राष्ट्रपति-शासन किया जाए।

पंजाब के उग्रवादियों से सख्ती करो

अलगाववादियों की मांग देशद्रोह से पूर्ण

पंजाब सुरक्षा दिवस पर दिल्ली की आर्यसमाजों की मांग

नई दिल्ली। रविवार २४ जुलाई के दिन दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा आदि की बहुसख्यक आर्यसमाजो ने अखिल भारतीय पजाब सुरक्षा दिवस मनाया। सब आर्य-समाजो मे सार्वजनिक सभाए आयोजित की गई। सभाओ मे अकालियो के अलगाववादी और देश की अखण्डता को चुनौती देकर खालिस्तान के देशद्रोही नारे का विरोध करते हुए भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि पजाब के उग्रवादियों के अत्याचारो से वहा के हिन्दुओ की जानमाल की सुरक्षा का प्रबन्ध किया जाए। पजाब के हिन्दुओ की सहमति के बिना अकालियो से कोई समझौता नही किया जाए, साथ ही सब सभाओ ने पजाब के हिन्दुओ को विश्वास दिलाया कि 'सम्पूर्ण भारत का हिन्दू उनके साथ है।'

रामगली आर्यसमाज—सी-१३, हरि-नगर, नई दिल्ली-६४, आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१ आर्यसमाज कोटला मुबारकपुर आदि अनेक आर्यसमाजो ने एतद् सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकार कर इस विषय में भारत के प्रधानमन्त्री एव गृहमन्त्री आदि को पत्र लिखे हैं। आर्यसमाज मोदीनगर (उ० प्र०) ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव स्वीकृत कर घोषित किया है कि हिन्दुओ से रोटी-बोटी का रिश्ता होने के बावजूद अकाली पजाब में ऊधम मचाए हुए हैं। इनके गुरुओ ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए खालसा फौज बनाई थी, अब वे हिंसात्मक गतिविधियो मे लगे हैं, आर्य-समाज इसका विरोध कर सरकार से अनुरोध करती है कि भ्रष्टाचारियो से सख्ती से निपटा जाए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी

'आधुनिक भारत के निर्माता' ग्रन्थमाला के अन्तर्गत भारत सरकार प्रकाशित करेगी

नई दिल्ली। पिछले दिनो अनेक आर्य सस्थाओ ने भारत के सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री हरिकृष्णलाल भगत से माग की थी कि प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही 'भारत के महापुरुष और देविया' सम्बन्धी ग्रन्थमाला मे महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जाना चाहिए। इसके उत्तर मे महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट दयानन्द नगर, टंकारा, जिला राजकोट (गुजरात) के महासचिव श्री रामनाथ को केन्द्रीय सूचना मन्त्री श्री भगत ने सूचना दी है कि भारत सरकार का प्रकाशन विभाग 'आधुनिक भारत के निर्माता' शीर्षक के अन्तर्गत भारत के महापुरुषो एव देवियों की जीवनिया और कार्यों के सम्बन्ध मे जीवन-चरित्र की एक ग्रन्थमाला प्रकाशित कर रहा है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशन विभाग ने स्वामी दयानन्द की जीवनी के प्रकाशन का दायित्व सम्भाल लिया है। निकट भविष्य में यह ग्रन्थ प्रकाशित हो जाएगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की बैठक ६ अगस्त के स्थान पर शनिवार १३ अगस्त को सायं ५ बजे आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में होगी।

सभाप्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा का हार्दिक अभिनन्दन

आर्यसमाज हनुमान रोड में भव्य समारोह

रविवार ३१-७-८३ को प्रात १० बजे आर्यसमाज हनुमान रोड की ओर से अपनी समाज के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा का दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित होने पर भव्य स्वागत किया गया। समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान भूतपूर्व ससद सदस्य श्री शिवकुमार जी शास्त्री ने की। श्री शास्त्री जी के अतिरिक्त श्री विद्याप्रकाश जी सेठी, श्री प्राणनाथ घई, श्री विद्यासागर श्री राम मूर्ति कैला, स्वामी स्वरूपानन्द जी, श्री कृष्ण लाल सूरी प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचारमण्डल, श्री मती सरला पाल एव श्री सुभाष विद्यालकार द्वारा श्री वर्मा जी के जीवन का परिचय देते हुए आर्यसमाज के प्रति उनकी सेवाओ की प्रशसा की गई। दिल्ली एव नई दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजो के कार्यकर्ताओ द्वारा श्री वर्मा जी का फूल-मालाओ द्वारा स्वागत किया गया। उपस्थित सभी आर्य बहन-भाइयो ने समारोह पश्चात् मिलकर जल-पान किया।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति | व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

सृष्टि की अद्भुत रचना से परमात्मा का बोध

—प्रेमनाथ एडवोकेट

उपस्थानमन्त्र (सन्ध्यान्तर्गत)

ओ उदुत्य जातवेदस देव वहन्ति केतव । दृशे विश्वाय सूर्यम्॥यजु० ३३।३१॥

प्रस्कण्व ऋषि, सूर्य्य देवता,
निचृद्गायत्री छन्द, षडज स्वर।

शब्दार्थ—१) आध्यात्मिक अर्थ—जो [जातवेदसम्] सर्वज्ञानपद=ऋग्वेदादि चारो वेदो का प्रकाशक वा सकल उत्पन्नमात्र जगत् के पदार्थो को जानने वाले [देवम्] अनन्त दिव्य गुणयुक्त सर्वानन्दप्रद वा सर्वप्रकाशक [सूर्य्यम्] चराचर सर्वजगत् के आत्मा (अर्थात् सब पदार्थों वा जीवो मे व्यापक वा उनके अन्तरात्मा है [त्यम्] उस (पूर्वोक्त परमात्मा को) [केतव.) किरणें अर्थात् विविध प्रकार के जगत् के रचनादि के विज्ञानयुक्त नियमो को प्रकाशित करने वाले गुण [उ] निश्चय से उद्वहन्ति=उत्+वहन्ति] उत्कृष्टता से (अथवा आश्चर्यरूप से प्राप्त कराते, जनाते वा प्रकाशित करते हैं।(उसी परमात्मा की (विश्वाय) विश्व अर्थात् सम्पूर्ण जगत् वा सर्वविद्या वा सर्वज्ञान को (दृशे) देखने अर्थात् जानने वा प्राप्त करने के लिए (हम सदा प्राप्ति की इच्छा वा उपासना करें अन्य किसी की नही)॥ (देखो पञ्चमहायज्ञविधि)

भौतिक अर्थ—(हे मनुष्यो ! जिस) (जातवेदसम्) उत्पन्न हुए पदार्थों मे विद्यमान (देवम्) देदीप्यमान (सूर्य्यम्) सूर्यमण्डल को (विश्वाय) ससार को (दृशे) देखने के लिए (केतव) किरणें (उद्वहन्ति) आश्चर्यरूप प्राप्त कराती हैं (त्यम्) उस सूर्य को (उ) निश्चय से तुम जानो ॥ (देखो ऋषि दयानन्द वेद भाष्य)॥

भावार्थ—योगी लोग अपने आत्मा मे उस परमात्मा को साक्षात् करते हैं परन्तु साधारण मनुष्य अथवा नास्तिक भी सूर्य, चन्द्रमा तारागण पृथिव्यादि लोक लोकान्तरों की ज्ञानपूर्वक अद्भुत रचना वा उनकी नियमपूर्वक गति वा पृथिव्यादि पर जल फल फूल वृक्ष आदि अनेक विध अद्भुत पदार्थों वा अनेकविध अनन्त जीवो के शरीरो की ज्ञानपूर्वक अद्भुत सूक्ष्म रचना को देखकर उस सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक अनन्त दिव्यगुणयुक्त परमात्मा के अस्तित्व से नकार नही कर सकता। जैसे सूर्य की किरणें सूर्य वा अनेक विध सब पदार्थों को प्रकाशित करती वा जनाती हैं वैसे ही इस जगत् की नियमपूर्वक वा ज्ञानपूर्वक अद्भुत रचना उस ईश्वर के अनन्त गुणो का बोध कराती हैं और उन गुणो से गुणी अर्थात् सर्वज्ञ अद्भुतस्वरूप ईश्वर का बोध होता है।

जैसे सूर्य अपनी किरणो से ससार को दिखाता और आप सुशोभित होता है वैसे विद्वान् लोग भी सब विद्याओ वा शिक्षाओ को दिखाकर सुशोभित हो॥

हिन्दुओ एक हो जाओ

कवि० बनवारीलाल 'शादाँ'
प्रधान, आर्यसमाज मॉडल बस्ती, नई दिल्ली-५

उठो अय हिन्दुओ, अब तो सारे एक हो जाओ।
दिखाओ एकता ऐसी, सभी इक राग हो गाओ॥
नहीं है एकता से बढ़, कोई हथियार दुनिया मे।
यही ऐटम हमारा है, यही तलवार दुनिया मे॥
सभी हिन्दू अगर मिलकर, सारे एक हो जाएं।
मिटाए छूत-छात को, सभी जन नेक हो जाए॥
मिटाकर देश से झगड़े, न भटकें अपनी मंजिल से।
बचें हम फूट-कीचड से, और भारी दलदल से॥
हमारी फूट से दुश्मन, हमें ही मात देते हैं।
लडाकर हमको आपस मे, फूट सौगात देते हैं॥
नजर आए न दुश्मन फिर, बने प्रताप राणा सम।
रखें गर एकता कायम, बनें न फिर निशाने हम॥
न बन्दरबाट फिर होगा, न कोई हक दबाएगा।
सभी स्वारथ को छोडें गर, पक्षधर न कहाएगा॥
मिटाए जाति के झगड़े, भाषा के जवानो के।
बचाए फूट अग्नि से, तिनके आशियानों के॥
हमारे देश मे आकर, न झगडे करने पाएगे।
करें गर हमसे गद्दारी, तो वे मुह की खाएगे॥
रहे भूखा नहीं प्यासा, बहे फिर धर्म की नहरें।
बनाए सगठन 'शादाँ', उठें आनन्द की लहरें॥

नमस्ते बनाम नमस्कार

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

कुछ समय से नमस्ते के स्थान पर नमस्कार का प्रयोग प्रारम्भ हुआ है और अब धीरे-धीरे यह पर्याप्त विस्तृत हो चुका है, विस्तार भी इसका हो रहा है, पढ़े-लिखे तथा शिक्षित कहलाने वाले लोगो में। अब तो नमस्कार भी नमश्कार बनने लगा है, किन्तु यह कोई नहीं सोचता कि हम कह क्या रहे हैं ? यदि अभिवादन का अर्थ आपस मे मिलते समय एक-दूसरे को बिना विचारे चाहे जो कुछ कह लेना है तो कोई भी शब्द – चाहे सार्थक से सार्थक हो या निरर्थक से निरर्थक— निश्चित करने की क्या आवश्यकता है। जिसके जो मन में आया, वही कह दिया। बिना पढे लोगों से कुछ शिकायत नहीं। वे तो अर्थ-विचार की योग्यता से रहित हैं, किन्तु खेद तो इस बात का है कि जिन्हें उच्च शिक्षा-प्राप्त कहा जाता है, यह गड़बड़ उन्ही से प्रारम्भ हुई है और उन्हीं मे बढती जा रही है।

यदि शिक्षा का इतना लाभ भी नहीं कि विचार शक्ति ही उत्पन्न हो, विचार करने की योग्यता भी आ सके तो फिर इस प्रकार की पढाई तो निरर्थक ही ठहरी। इतने पर भी गर्व यह है कि 'हम बड़े शिक्षित हैं' और शिक्षा दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है।' परन्तु वास्तविकता यह है कि शिक्षा नही अपितु साक्षरता बढ़ रही है और वह भी भ्रष्ट साक्षरता। बात हम कर रहे थे 'नमस्ते' की। नमस्ते का अर्थ है 'मैं आपका मान करता हूं।' यह शब्द अत्यन्त सार्थक और सारगर्भित है। दो व्यक्तियों के परस्पर मिलने पर इसी भाव की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। नमस्कार में इस भाव की अभिव्यक्ति के लिए कोई स्थान नही। नमस्कार का अर्थ है नमः—कार और 'नम' का अर्थ है मान करना— 'कार' शब्द तो शब्द की पूर्ति के लिए लगाया जाता है, उससे वहां और क्या अर्थ लिया जा सकता है। 'ते' का अर्थ आपके लिए अथवा आपको है। 'कार' से 'ते' का भाव प्रकट नही होता। 'कार' शब्द तो पद-पूर्ति के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे ओ३म् का 'ओंकार' किन्तु अर्थ केवल 'ओ३म्'। 'अ' का 'अकार' अर्थ केवल 'अ' वर्ण। 'क' का 'ककार' अर्थ केवल 'क' वर्ण। ठीक इसी प्रकार से नमस्कार का अर्थ है 'नमः' कार शब्द पृथक् होकर कोई अर्थ नहीं प्रकट करता। इस प्रकार अकेले 'नम' के प्रयोग से मिलने के अवसर पर, जिससे मिलकर अभिवादन के लिए इस शब्द नमस्कार (नम कार) का प्रयोग किया जाता है, उसके प्रति मान की भावना मन में होते हुए भी मान का भाव प्रकट नही होता। होना यह चाहिए कि जो भावना मन मे है उसी के भाव वाणी से अभिवादन में प्रकट हो। 'ते' शब्द को 'नम' के साथ लगाने से मन के वे भाव प्रकट हो जाते हैं, जिनकी भावना से अभिवादन किया जाता है। यही कारण है कि प्राचीन इतिहास और अन्य समस्त वैदिक वाङ्मय में नमस्ते का प्रयोग मिलता है।

यदि नमस्कार से किसी भाव की अभिव्यक्ति हो सकती है तो केवल यह कि 'नमस्ते किया करो' अथवा 'नमस्ते करना चाहिए।' किसी को अभिवादन करते समय उसके प्रति मान प्रकट न करके उसे यह आदेश देना कि 'नमस्ते किया करो' अथवा यह उपदेश करने लग जाना कि 'नमस्ते करना चाहिए' बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती। इससे तो शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित ही नही, अपितु अनपढ सिद्ध हो जाता है। विज्ञ पाठको से यह आशा की जा सकती है कि वे इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके सुधार कर लेंगे।

बोध-कथा

लगाव !

एक सूफी नवाब थे। एक दिन एक फकीर आया। इस फकीर ने देखा कि वह सूफी नवाब एक भव्य सुन्दर तम्बू मे मखमल की गद्दी पर बैठे थे। उस तम्बू की कीलें भी सोने की थीं। फकीर ने उस सूफी सन्त के पास जाकर कहा—"जनाब, मैंने तो आपकी तारीफ मे बहुत कुछ सुना था, आप तो बडे त्यागी, सादगीपसन्द सूफी-सन्त माने जाते हैं, आपका यह शाही ठाठ, राजसी शान देखकर मुझे बड़ा दु:ख हुआ। मुझे ऐसी उम्मीद नही थी।"

वह सूफी सन्त अपनी सुनहरी रेशमी गद्दी छोड़कर वैसे ही उठ गए। बोले—"मुझे इनमें से किसी भी चीज से लगाव नहीं है। मैं अभी ये सब चीजें छोड़कर तुम्हारे साथ चलता हूं।" वह सूफी नवाब अपनी गद्दी, ठाठ-बाट, धन दौलत, कपड़े-जूते सब उसी तरह छोड़कर चल दिए और उस फकीर के साथ चलने लगे। कुछ दूर आगे चले थे कि वह फकीर परेशान हो उठा। वह बोल उठा—"जरा रुकिए, मेरा भीख मांगने वाला कटोरा तो आपके तम्बू मे ही छूट गया।" इस पर उस सूफी ने कुछ मुस्कराकर कहा—'बाबा, आपके एल्यूमीनियम के कटोरे ने आपका अभी तक पीछा नहीं छोड़ा। मेरी सुनहरी-रेशमी गद्दी और मेरे कीमती तम्बू की सोने की कीलें मेरे दिल से नहीं चिपकी थीं। वे तो इस जमीन पर टिकी थीं, उन्हें छोड़ने में मुझे कोई परेशानी-संकट नहीं हुआ। पर आपका अपना दिल इस भीख के कटोरे में अटका हुआ है।" —नरेन्द्र

आत्मा अमर है !

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णाण्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ गीता २-२२
कपड़े जब जर्जर होते हैं, तब उन्हें फेंक हम देते हैं।
उनके बदले में पहन साफ, अरु सुन्दर कपड़े लेते हैं॥
आत्मा का कपड़ा यह तन है, जब यह जर्जर हो जाता है।
तब इसे फेंक वह देता है अरु नूतन तन मे जाता है॥

ओ३म्
आर्य सन्देश

जरूरत है जड़ को सींचिए, पत्तों को नहीं !

इस समय राष्ट्र के सम्मुख जैसी भीषण परिस्थिति है, वैसी सम्भवत इससे पहले कभी नही थी। देश के पूर्वोत्तर एव पश्चिमोत्तर अचलो मे साम्प्रदायिक तत्त्व विदेशी शक्तियो के इशारे पर अलगाववादी एव विघटनवादी प्रवृत्तिया तेज कर रहे हैं। देश के अन्दर विरोधी दलों के सम्मुख केन्द्रीय सत्ता को निर्बल कर अपनी दलीय स्थिति को सुरक्षित करना ही अभिप्रेत है उन्हे राष्ट्र का कल्याण अभीष्ट नहीं दीखता। इससे पडोसी देश मे भी भारत-वैमनस्य की चिनगारी सुलगने लगी है। चीन और पाकिस्तान का तो परम्परागत भारत-विरोध प्रसिद्ध है ही। वे भारत के विरुद्ध अपने सैनिक एव राजनीतिक अभियान या मोर्चे भी लगा चुके हैं, अब बांगलादेश, नेपाल और श्रीलका से भी भारत-विरोध की घटनाएं एवं वक्तव्य देखने मे आ रहे हैं। पिछले दिनो श्रीलका मे तमिलभाषी भारतीय अल्पसख्यकों का सामूहिक हत्याकाण्ड किया गया, जब उनसे इन अल्पसंख्यको के सरक्षण का प्रश्न उठाया गया, तो उस देश के शासको की ओर से कहा गया—इस बारे मे भारत को बोलने की जरूरत नही है, यह श्रीलका का अपना घरेलू मामला है। स्वभावत जिज्ञासा होती है कि इस सारे भारत-विरोध का क्या कारण है ? कहते हैं कि गरीब की जोरू सबकी भाभी होती है।

यह ठीक है कि भारत औद्योगिक और कृषि सम्बन्धी दृष्टि से ससार के कुछ महत्त्वपूर्ण अग्रणी दस राष्ट्रो मे परिगणित होने लगा है, वह अनेक क्षेत्रो मे स्वावलम्बी हो गया है, इस स्थिति के बावजूद विश्व की राजनीति मे विशेषत हमारे निकटतम पडोसी देशो मे हमारा वह सम्मान नही है, जैसा कि होना चाहिए था, इसका कारण यही है कि इस पृथ्वी मे वीर जातियां, देश और व्यक्ति ही स्वाभिमान मे जीवित रहते हैं। आज की जैसी परिस्थिति है, उसमें जरूरत है जड़ को सीचिए, पत्तो को नही। आज राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक, प्रत्येक युवक सगठित, शक्तिशाली और सन्नद्ध होना चाहिए। इसके लिए हमे एक राष्ट्रीय गीत की एक पक्ति स्मरण रखनी होगी 'अस्त्रैरंजयत, दुर्वृत्ताम्, पत्सु प्रणमत सद्वृत्तान्' जो बुरे रास्ते पर चलना चाहते हैं, उनको अस्त्र-शस्त्रो से नियन्त्रण करो और सद्वृत्तो का आदर-सम्मान करो। काटा काटे से ही निकलता है, शठ-दुष्ट से शठता किए बिना—उससे शक्ति का प्रयोग किए बिना गति नहीं है। आज शठो या दुष्टों से मधुर वचनो या नम्रता से काम नही चलता, उनके साथ तो यथायोग्य व्यवहार करना ही होगा। जिस प्रकार देश मे उपद्रव या आतक करने वाले तत्त्वो से निपटने के लिए शक्ति का प्रयोग वाछनीय है, उसी प्रकार नित्य द्वेषी अहितकर पडोसी देशों से शक्ति का प्रयोग सर्वथा न्यायसंगत है।

अब समय आ गया है कि व्यक्ति, परिवार, प्रदेश, राष्ट्र प्रत्येक को चाहे वह स्त्री-पुरुष हो, बच्चा हो या बूढा, आत्मरक्षा के बुनियादी सिद्धान्तो एव करतबो से पूरी तरह दीक्षित एवं सिद्धहस्त हो जाना चाहिए। कराटे, जुजुत्सु आदि इस तरह की नवीन कलाए आज विद्यमान हैं जिन्हें सीखकर एक अबला, सबला बन सकती है, बालक, वृद्ध एवं युवक न केवल आत्मरक्षा कर सकते हैं, प्रत्युत आततायियो का दृढतापूर्वक मुकाबला कर उन्हें पराजित कर सकते हैं। आततायियो एव गुण्डा तत्त्वो से झुककर या डरकर काम नहीं चलेगा, इसी तरह भारत विरोधी नित्य द्वेष करने वाले लोगो या राष्ट्रो के सामने गिड़गिड़ाने से काम नही चलेगा। ऐसे सब अवसरो पर सम्भव हो तो वाणी या शान्तिपूर्ण प्रयोगों से स्थिति सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए, परन्तु यदि ऐसा न हो तो आवश्यक हो तो शक्ति का प्रयोग करने से भारत को सकोच नही करना चाहिए। निजाम हैदराबाद, गोआ आदि के कठिन धधकते प्रश्नों को भारत ने जिस तरह-से नश्तर का प्रयोग कर सुलझाया है, वैसे ही इन ज्वलन्त समस्याओं को सयम, एकता और दृढ़ता से सुलझाए बिना दूसरी गति नहीं है।

चिट्ठी-पत्री

आर्य बन्धु अपने विचार व पते भेजें।

आर्यसमाज न तो कोई नवीन मत या सम्प्रदाय है न नया धर्म। यह तो युग-निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा अप्रैल १८७५ को चलाया एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है, जिसका उद्देश्य प्राचीन वैदिक धर्म का पुनरुद्धार करना और पिछले दो हजार वर्षों से इसमें आई कुरीतियो को तर्क, प्रमाण और वेद के आधार पर दूर करना है।

देश-विदेश मे आर्यसमाज इस क्रान्तिकारी आन्दोलन को सफलतापूर्वक चला रहा है। इस क्रान्तिकारी आन्दोलन को और अधिक क्रान्तिकारी बनाने के लिए कुछ विशेष योजनाओ का निर्माण करना आवश्यक है। आज देश मे बढता हुआ नैतिक पतन एक जटिल समस्या बन गई है। रक्षक ही भक्षक हो रहा है, राज्य सत्ता के नाम पर लोग व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति मे तल्लीन हैं। वैदिक धर्म की नीति और मान्यताओ का व्यावहारिक उपयोग करके इन समस्याओ का सामना करने के लिए मेरा यह विनम्र अनुरोध है कि ज्वलत दिलचस्पी रखने वाले व सभी विवेकशील आर्य बन्धु मुझे अपने पते, अपने विचार व स्वय के बारे मे सक्षेप मे जानकारी भेजकर कृतार्थ करें।

—'विचित्र' बनवारी लाल मीणा, इन्जीनियर, पोस्ट— बादीकुई (जयपुर) राजस्थान

आर्यसमाज और सिख साम्प्रदायिकता

न० भा० टा० २० जुलाई के अक मे श्री प्रभाष जोशी द्वारा इस सम्बन्ध मे लिखे गए लेख के सम्बन्ध मे यह स्पष्टीकरण प्रस्तुत है। सिखो की पृथकतावादी मनोवृत्ति का आधार एव इतिहास का उस लेख मे यथार्थ विश्लेषण किया गया है, परन्तु उसके साथ ही पजाब मे आर्यसमाज के वेग से हुए प्रसार का आधार सार्वभौमिक व्यापक एव बुद्धिगम्य बताकर बाद मे उसे इस्लाम एव सिखो की अलगाववादी एव सकीर्ण विचारधारा का अनुयायी बताकर वर्तमान सकट का उसे अशत उत्तरदायी ठहराया है। वस्तुत यह सत्य नही है। लेखक ने स्वय अपने उक्त लेख मे जिस वास्तविकता का प्रतिपादन किया है, वर्तमान सकट का वही कारण है। यह तथ्य है कि आर्यसमाज के नेता लाजपतराय के राजनीतिक घनिष्ठ साथी और शहीद भगतसिंह के बाबा अजीतसिंह थे, जिनको देश निकाले की सजा अग्रेज सरकार ने दी थी। डी० ए० वी० कालेज के सस्थापक महात्मा हसराज के साथ भगतसिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह ने पजाब मे आजीवन आर्यसमाज के अन्तर्गत प्रचार कार्य किया। अन्य गणमान्य सिखो की भाति भगतसिंह की भी शिक्षा डी०ए० वी० कालेज मे हुई थी। कालेज की प्रबन्धक समिति के प्रथम मत्री भी एक सिख सज्जन ही थे। अमृतसर के सर्वोच्च वस्त्र मिल मालिक बाबा प्रद्युम्न सिंह आर्यसमाज के पदाधिकारी रहे थे। आर्यसमाजियो के पारिवारिक सम्बन्ध सिखो के साथ चलते रहे हैं। यो एकेश्वरवाद समर्थक, मूर्तिपूजा एव जातपात के विरोधी गुरुमत और आर्यसमाज दोनो आज भी हैं।

१९१६ मे सिखो के गुरु का बाग आन्दोलन मे तत्कालीन महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी) ने बढ़-चढकर भाग लिया था। बाद मे लाहौर की प्रसिद्ध शहीद-गज मस्जिद का मुकदमा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्कालीन प्रधान दीवान बहादुर बद्रीदास ने सिखो के लिए बिना फीस लिये लडकर जीता। उन्हे उसके लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबधक कमेटी ने सिरोपा भेंट किया था। यह कहना सर्वथा गलत है कि इस्लाम एव सिखो की भाति साम्प्रदायिकता का सहारा लेकर आर्यसमाज ने पृथक् निर्वाचन या विशेषाधिकार कभी मागे थे या मागे हैं।

—ब्रह्मदत्त (स्नातक) भारतीय विदेश सेवा (रिटा०)
अवै० समाचार पत्र एव जनसम्पर्क सलाहकार

कृपया उपदेशक ध्यान रखें

सभी उपदेशक महानुभावो से निवेदन है कि रविवार के साप्ताहिक सत्सगो के कार्यक्रमो में ठीक समय पर पहुचने का ध्यान रखें। कृपया जहा नही जा सकते हैं, वह सूचना सभा-कार्यालय मे कुछ समय पूर्व दे दिया करें ताकि अन्य व्यवस्था कर दी जाया करे। जो महानुभाव बगैरह सूचना के दिए नहीं जाते हैं ऐसा अच्छा नही है। साथ ही जिन उपदेशको की स्वीकृति नही आती है वे बिना स्वीकृति दिये सभा का कार्ड लेकर न पहुचे क्योकि वहा अन्य व्यवस्था कर दी जाती है। स्वीकृति पत्र प्राप्त होने पर ही कार्यक्रम पक्के होते हैं। आशा है कि ध्यान देंगे।

—स्वामी स्वरूपानन्द, व्यवस्थापक
वेदप्रचार विभाग

आइए, वेद-अध्ययन करें—
हमारा संकल्प कैसा हो

लेखक—जगदीश आर्य, सिद्धान्त रत्न, सासाराम

मनुष्य सकल्पो के बिना रह नही सकता। प्रतिक्षण कुछ न कुछ सकल्प करता ही रहता है। सकल्प और क्रिया दोनो साथ-साथ चलते हैं। प्रथम सकल्प तब तदनुसार कर्म किया जाता है। वेद-शास्त्रो मे सकल्प की बडी महिमा गाई गई है। उपनिषद् मे आया है 'क्रतु मय पुरुष।' (छा० उप०) अर्थात् पुरुष सकल्पो से बना है। वेद मे आया है 'तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु।" वह मेरा मन भद्र सकल्प वाला होवे। अन्यत्र भी वेद मे आया है—'आ न एतु मन ऋत्वे दक्षाय जीव से, ज्योक च सूर्य दृशे।' (यजु०) इस मन्त्र मे भी मन शक्ति (विचार या सकल्प) की कामना की गई है। शिवसकल्प से किया हुआ कार्य सदा उत्साह एव जोश बढाता है। अत जीवन मे सौन्दर्य आए, सौरभ की प्राप्ति हो, इसके लिये भद्र विचारो की आवश्यकता है।

हमारा सकल्प कैसा हो, इस पर एक सुन्दर वेद-मन्त्र प्रस्तुत करता हू—

'आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धा सो अपरीतास उद्भिद।
'देवा न यथा सदमिदे वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।"
(यजु० २५।१४)

शब्दार्थ—(न.) हमे (विश्वत) सभी ओर से, सब तरफ से सभी दिशाओ से (अपरितास) पूर्वाग्रह रहित (अदब्धास) अविनाशी अर्थात् किसी से न दबने वाले (उद्भिद) भेदन करने वाले (भद्रा) शिव मगलकारी (क्रतव) विज्ञानमय बलिष्ठ सकल्प (आ यन्तु) प्राप्त हो। (देवाय) विद्वान पुरुष (अप्रायुव.) अप्रमादी होकर (दिवे-दिवे) प्रतिदिन (वृधे) हमारी उन्नति के लिए (न सदम्) हमारी सभा मे (आसन्)—विद्यमान हो।

इस मन्त्र के द्वारा परमात्मा हमे उपदेश दे रहे हैं कि तुम चारो ओर से—सभी दिशाओ से अच्छे सकल्पो को धारण करो। विश्व के जिस कोने मे भी भद्र सकल्प हो, उन्हें ग्रहण करो। ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ मे भी यही विचार प्रकट किया है उन्होने लिखा है "सत्य और श्रेष्ठ भाषण सब देशो से तथा सभी मनुष्यो से ग्रहण करो।" (स० प्र० चतुर्थ समु०)

'भद्र सकल्प' को परिभाषित करते हुए वेद के ऋषि कहते हैं—कि सकल्प मे तीन गुण होने चाहिए—

१. (अपरितास) अर्थात् पूर्वाग्रह रहित, (२) अदब्धास किसी से न दबने वाले (३) उद्भिद अभद्र विचारो को तोड़-फोड करने की शक्ति।

१ अपरितास—पहली बात तो यह है कि अपने मस्तिष्क को खुला रखो। मन मे यह विचार न लाओ कि हमारे ही विचार श्रेष्ठ हैं। मैं विश्व का सर्वश्रेष्ठ विचारक हू—ऐसी कल्पना कभी न करो। किसी भी सिद्धान्त का ऊहापोह, खुले दिमाग से करो। इस युग के महान् चिन्तक, दार्शनिक, महर्षि दयानन्द लिखते हैं—"मैं पुराण, जैनियो के ग्रन्थ, बाइबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर, उनमे से गुणो का ग्रहण और दोषो का त्याग करता हू।"(सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका) ऋषिवर का यह कथन वेद के अनुसार (अपरितास) पूर्वाग्रहरहित है।

२. (अदब्धास) संकल्प न दबने वाले हो। विश्व की कोई भी शक्ति आपके सकल्पो को न बदल सके। कल्पना करें—किसी अन्धविश्वास या समाजराष्ट्र एव धर्म के विघातक प्रथा के विरोध मे किसी-किसी सकल्प को आप धारण करते हो, परन्तु आपका परिवार, समाज एव प्रशासन आप पर दबाव डालता है कि सकल्प को बदल दो—अन्यथा तुम्हे परिवार से पृथक् कर देंगे। सम्पत्ति मे कोई भाग नही देंगे—समाज आपका बहिष्कार करता है, प्रशासन जेल मे डाल देता है—परन्तु इतना होते हुए भी आपका सकल्प न दबे, उसमे परिवर्तन न हो। आर्यो की पुरानी पीढ़िया इसकी साक्षी है। महाकवि शकर ने स्वामी दयानन्द की सकल्प दृढता देखकर यह लिखा—

"जो न हटा मुख फेर बढा जीवन भर आगे,
जिसका साहस देख, विघ्न भय सकट भागे।"

योगिराज भर्तृहरि जी ने दृढ सकल्पी के विषय मे लिखा है—

"निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तवन्तु-
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा-
न्याय्यात् पथ प्रविचलन्ति पद न धीरा॥" (नीतिशतक)

३ उद्भिद—अर्थात् भद्र सकल्पो मे, अभद्र विचारो को तोड-फोड करने की शक्ति होनी चाहिए। सकल्प मे उद्भेदक शक्ति होनी चाहिए। सकल्प के रास्ते में जो भी गुत्थिया आए, उन्हे सुलझा दें, तथा विचारों के बन्द द्वारों को खोलने की शक्ति होनी चाहिए। एक उदाहरण द्वारा इसे स्पष्ट करने का प्रयत्न करता हूं। पृथ्वी के अन्दर बीज डाला जाता है। पानी तथा अन्य तत्त्वों के सयोग से अति कोमल अकुर फूटता है—परन्तु ऊपर आने मे सबसे बडी रुकावट पृथ्वी की वह दृढ सतह है, जिसे तोडकर उसे बाहर आना है और अपनी सुरभि एव मधुर रस से प्राणियों को तृप्त करना है। कल्पना करें कहा वह कोमल-मजुल अकुर और कहा पृथ्वी का दृढ सतही जिसे भेद-कर तोड़कर उसे बाहर आना है। परन्तु वह कोमल अकुर उस कठिन सतह को तोडकर खुली हवा मे खुले आकाश के तले झाकने लगा—मुस्कुराने लगा। यह चमत्कार कैसे हुआ? यह इसलिए हुआ कि परमात्मा ने उस नन्हे से अकुर में 'उद्भेदक' शक्ति दी है। अत भद्र सकल्प चाहे वे दीखने मे कितने ही छोटे लगें, अगर उनके अन्दर 'उद्भेदक' शक्ति है तो वे कठिन से कठिन रुकावटो को तोड़कर आगे बढते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन का एक प्रसग है—जिसमें उनके उद्भेदक संकल्प शक्ति का परिचय प्राप्त होता है। अभी वह सन्यासी नही बने थे, मुशीराम के नाम से ही प्रसिद्ध थे। ऋषि दयानन्द के सम्पर्क मे आ चुके थे और उनके भक्त भी बन चुके थे—परन्तु अभी तक अभद्र विचारो से ग्रस्त थे।

प्रात काल का समय था। मुशीराम सत्यार्थ-प्रकाश के दशम समुल्लास का पारायण कर रहे थे। भक्ष्याभक्ष्य का प्रकरण चल रहा था, इतने मे सामने से एक कसाई ताजे मास का टोकरा लेकर सडक से जा रहा था। श्री मुशीराम जी की दृष्टि उस टोकरे पर पडी। बकरे का जाघ टोकरी से बाहर लटक रहा था। मुशीराम के सामने स० प्र० का वह लेख सामने आ गया, जिसमे ऋषिवर दयानन्द ने 'गौ' और 'बकरी' के हत्या का विरोध एव उनकी उपयोगिता सिद्ध की है। मुशीराम जी अब तक मासाहारी थे—उन्होने मास न खाने का एक संकल्प लिया। रात्रिकालीन भोजन के समय अपने मित्रों के साथ भोजन पर बैठे। सदा की भाति रसोइए ने फूल के कटोरे मे गरम मसालो से बना हुआ मास परस दिया। परन्तु यह क्या—मुशीराम को सत्यार्थ-प्रकाश का, भक्ष्याभक्ष्य प्रकरण स्मरण हो उठा, और कसाई का वह टोकरा दिखाई देने लगा तथा अपना सकल्प स्मरण हो उठा। शीघ्र ही मुशीराम ने मास का कटोरा आगन मे फेंक दिया—एक छन्नाके की आवाज गूज उठी—इस अप्रत्याशित गूज से साथियो का ध्यान उस दृश्य की ओर आकृष्ट हुआ। वे हक्के-बक्के हो गए—उनकी समझ मे यह नहीं आया कि कल तक जो मास का अत्यन्त प्रेमी मुशीराम—आज उसे मास-भक्षण-से विरक्ति क्यू हो गई? मुशीराम जी ने बताया कि मास न खाने का सकल्प कर लिया हूं। मित्रो ने पूछा 'मास की कटोरी क्यो फेंक दी—लौटा देते। श्री मुशीराम ने कहा कि मैं अगर एकान्त मे इस सकल्प को लिए रहता तो सम्भव था मैं कभी विचलित हो जाता, अब तो आप लोग भी मेरे सकल्प के साक्षी हैं। फल इसका यह हुआ कि मेस मे दूसरे दिन से ही मास पकना बन्द हो गया। श्री मुशीराम जी के इस छोटे-से सकल्प ने स्वाद की आसक्ति के दृढ चट्टान को भेदकर चौके से सदा के लिए मास को बाहर निकाल दिया। इसे कहते हैं उद्भेदक सकल्प शक्ति-वेद के शब्द मे यही 'उद्भिद.' है।

वेदमन्त्र अच्छे सकल्पो को धारण करने को कहता है। स्वा० दयानन्द जी ने आर्यसमाज का नियम बनाया है—'सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए'—अर्थात् भद्र विचारो को धारण करने तथा अभद्र विचारो को त्यागने मे प्रमाद न करना चाहिए।

मन के सकल्पो के ऊपर ही सदाचार की भित्ति खड़ी होती है। जैसे विचार मन में उठते हैं, वैसा ही बोलता है तथा तदनुसार क्रिया करता है—

"यन्मनसा ध्यायति तद वाचा वदति,
यद वाचा वदति तत् कर्मणा करोति,
यत् कर्मणा करोति तद्भि सपद्यते।"

जिसके मन मे खोटे विचार हैं वह अपने चरित्र को नही सुधार सकता। अत: मन मे अच्छे संकल्प लाने चाहिए। शरीर को शुद्ध रखने की आवश्यकता है, वाणी को भी शुद्ध रखना चाहिए—परन्तु सबसे अधिक महत्ता इस बात मे है कि मन को शुद्ध रखें। बुरे विचार मन मे जन्म लेते रहते हैं, उन्हें कोई दूसरा तो नहीं देख सकता—अत: एक न एक दिन वे बाहर तो निकलते ही हैं। अत. 'मन' को सदा शिवसकल्पो से आवृत रखें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उपसभा, पटपड़गंज के अधिकारी

प्रधान—श्री बी० एन० शर्मा, उपप्रधान—श्री शान्तिस्वरूप शर्मा, मन्त्री—श्री रविदत्त, उपमन्त्री एवं कोषाध्यक्ष—श्री रमेशचन्द्र गुप्त।

ऋषि ने निर्माण-पथ दिखलाया

—प्रकाशवती बुग्गा शास्त्री

स्वर्गीय भावों मे भरे
ऋषि होम करते थे जहा
उन ऋषिगणो से ही
हमारा है हुआ उद्भव यहां।

प्रत्येक युग मे इस पवित्र ऋषिभूमि पर अनेक महापुरुष हुए। सभी ने समय की आवश्यकतानुसार जनता का पथ-प्रदर्शन किया। इसी परम्परा मे ऋषि दयानन्द का नाम भी आता है। एक विशेषता लिए हुए।

महात्मा बुद्ध आए उन्होने यज्ञो के नाम पर होने वाली बलि को बन्द किया। लोगो को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। विश्वप्रेम की तान छेडी ससार झूम उठा। स्वा शकराचार्य आए, वेदो के लुप्तज्ञान को प्रकाशित किया। भारतीय सस्कृति का नवीकरण कर देश मे आस्तिकवाद की गगा बहाई, कबीर, नानक, तुलसी आदि सतो ने भक्तिकाल में जनता को भक्तिरस से सराबोर किया। परन्तु सभी की शिक्षाओ मे एक न्यूनता थी। सबने ससार को असत्य बताकर इसे त्यागने की शिक्षा दी। सासारिक सम्बन्धो को निरर्थक बताकर उनसे पृथक् होने का प्रचार किया। फलत देश मे बौद्ध भिक्षुओं और भगवा वस्त्रधारी साधुओ-सतो की बाढ आ गई। भक्ति और वैराग्य के नाम पर लोग घर छोडकर बेकार हो गए। देश भिखमगो और पाखडी साधुओ से भर गया। पुरुषार्थ का स्थान आलस्य ने और कर्म का स्थान अकर्मण्यता ने ले लिया। कुरीतियो अन्धविश्वासो ने समाज को दुर्बल बना दिया। ऐसे कठिन काल मे विदेशियो की बन आई। देश पर भयकर आक्रमण हुए, मन्दिर और विहार टूटे देश का असख्य धन लूटा गया।

ऐसे विषम समय में महर्षि दयानन्द ने भारत में जन्म लेकर जनता को निर्माण का मार्ग दिखलाया। उनका नारा था घरो को मत छोड़ो, घरो का निर्माण करो। समाज का निर्माण करो, राष्ट्र का निर्माण करो।

प्रभु से प्रेम करो, मोक्ष का लाभ करो, परन्तु घरो को उजाडकर नही, बसा कर उन्होने वैदिक सस्कृति की आश्रम—परम्परा सामने रखी। उन्होंने कहा—प्राचीन भारतीय आदर्श यही था।

सयम नियमपूर्वक प्रथम बल और विद्या प्राप्त की। होकर गृही फिर लोक की कर्तव्य रीति समाप्त की। हम अन्त में भवबंधनो को थे सदा को तोड़ते। आदर्श भावी सृष्टि हित थे मुक्ति-पथ में छोड़ते।

अर्थात्—प्रथम ब्रह्मचारी बनकर ज्ञान और शक्ति का अर्जन करो अपने शरीर आत्मा का पूर्ण निर्माण कर तदनन्तर गृहस्थी बन उत्तम सतान का निर्माण करो, देश को उत्तम नागरिक दो। गृहस्थाश्रम को भोग का नही, त्याग का आश्रम समझो, इसमे रहकर सात्विक जीवनयापन करो, सेवा करो, यज्ञ करो, दान करो।

व्यक्तिवाद से उठकर समाजवाद को अपनाओ। केवल अपनी ही उन्नति में अपनी उन्नति न समझो बरन सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझो।

स्वामी दयानन्द ने एक क्रियात्मक योजना मानवजाति के सम्मुख रखी। जिसमे चार वर्ण, चार आश्रम और पच यज्ञो का विधान कर दिया। इस तीन सूत्री कार्यक्रम मे ऋषि ने गागर मे सागर भर दिया। इस योजना का यही उद्देश्य है कि मानव सदा निर्माण के पथ पर चलता हुआ उत्तरोत्तर उन्नति के शृगो पर चढ़ता जाए।

यजुर्वेद के मत्र का आदर्श सामने रक्खा कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत शत समा हे मनुष्य तू सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर परन्तु कर्म को कभी मत छोडो।

अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते कर्मों के द्वारा सासारिक कर्त्तव्यो को करता हुआ वह ज्ञान प्राप्त कर जो तुझे भव बन्धनो से छुडा कर मोक्ष का अधिकारी बनाए। ऋषि की यह सबसे बडी देन है, किसी सत महात्मा को यह बात नही सूझी।

महात्मा गाधी ने भी रामराज्य का सपना देखा था परन्तु रामराज्य की आधारशिला क्या है इसकी ओर उनका ध्यान ही नही गया। क्या चरित्रहीन व्यक्तियों की ईंटो से रामराज्य का भवन निर्मित हो सकता है? ऋषि ने मानव निर्माणके चरित्र-निर्माण के तीन आधार बताए उन्होने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाशमे लिखा है—

मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद। श्रेष्ठ माता बच्चे मे उत्तम सस्कार डाले, पिता उनको विकसित करे, और आचार्य उन्हीं सस्कारो के आधार पर बच्चे के चरित्र का निर्माण करे।

आचार्य वह होता है जो आचार का निर्माण करे। आचार परमो धर्म. आचारहीन न पुनन्ति वेदा:। सारी शिक्षाए सारे नियम आचारवान् के आधार से ही प्राणप्रतिष्ठा पाते हैं। आचारवान् व्यक्तियो से ही उत्तम राष्ट्र का निर्माण होता है। चरित्रहीन, झूठे, रिश्वतखोर, कर्त्तव्यविमुख भ्रष्टाचारी व्यक्तियो को लेकर कोई सरकार सफल नही हो सकती। कोई योजना फलवती नही हो सकती। ऋषि ने चरित्रवान व्यक्तियो के निर्माण का पथ

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भारत माता की वन्दना

—श्रीमती सुशीला राजपाल

जड पदार्थ कुछ मैदान, खेत, वन, पर्वत आदि से स्थूलीकृत रूप भारत माता नही है, प्रत्युत यह सजीव मा है। आद्या शक्ति का रूप है।

जिन राष्ट्रो मे सजीव दैवी शक्ति काम कर रही है, उनमे भारत माता का स्थान सर्वोपरि है। इसके दर्शन प्रज्ञानेत्र द्वारा प्राप्त होते हैं। जिन आत्माओ ने भारत माता की सजीव रूप से अर्चना की है उन्हें इसने अपना वास्तविक रूप प्रदर्शित किया है। मा से उन्हे उदात्त प्रेरणाए प्राप्त होती रही हैं।

विज्ञान, कला, साहित्य, सगीत धर्मादि विषयो मे भारत की परिपक्वता महान रही है। युगो तक भारत ने स्वतन्त्रता का उपभोग किया है। इसकी सस्कृति मे उच्च आध्यात्मिकता के गहन तत्त्व हैं, इसीलिए यह अमर रहा है। सदियो तक भारत माँ विदेशियो द्वारा पादाक्रान्त रही फिर भी यह जीवित रही, क्योकि उसके मूल मे आध्यात्मिकता की लौ प्रज्वलित है।

भारत माता एक देश नही, वरन् एक सगठित राष्ट्र है। जिन देशो मे अपनी कोई सस्कृति नही होती, वे युग के प्रवाह मे समाप्त हो जाती हैं, जैसे रोम, मिश्र वैबिलोनिया आदि राष्ट्र की परिभाषा मे राष्ट्र का निखरा रूप और उसकी सुसस्कृत-आत्मा जाज्वल्यमान होकर जीवन के सभी क्षेत्रो मे ससर्ग स्थापित करती है। राष्ट्र इसे विशाल पृथ्वी के किसी खण्ड मे रहने वाली वह मानव जाति है, जो मूल मे एक ही भाषा एक ही सस्कृति, और धर्म से गठित रही है। भारत की सस्कृति वैदिक भाषा सस्कृति और धर्म 'वेद' रहा है इसीलिए वह युगो के थपेडो से प्रपीडित होता हुआ भी पुनर्जीवित होता रहा है। अब भला किसकी शक्ति है भारत को समाप्त करने की। बादलो की गड़गड़ाहट दामिनी की दमक वर्षा की तीव्र धारायें क्या उषा के मुख को मलिन कर सकती है। जैसे उषा की ओजस्वनी और उज्जवल किरणें घटाटोप को निदीर्ण कर देती हैं उसी प्रकार भारत माता की भास्वर और तेजोमय ज्योति पुज रूपी बादलो को निस्फारित करती हुई चारो ओर प्रकाश को निकीर्ण कर देंगी। अत आओ हम सब भारत माता की वन्दना करें।

भारत माता तू हमे गुरु शक्ति प्रदान कर। सदा तेरा सरक्षण हमे प्राप्त रहे। हम तेरे सबल और सचेतन यन्त्र बनकर नि स्वार्थ भाव से तेरी सेवा करें। तू ही हमारे जीवन की एकमात्र ध्येय बन जा।

प्यारी मा, हमारी अपूर्णताओ को दूर करके तू हमे पूर्ण बना, अपने आशीर्वादों से हमारी प्रसुप्त शक्तियो को जाग्रत कर। हमारे प्राणो मे अजेय शक्ति भर दे, ताकि हमारी भीषण हुकार से शत्रुदल काप उठे। तू ब्राह्म शक्ति और क्षण ओज के साथ हमारे भीतर प्रवेश कर। मा तू हमे स्नेह-सिक्त भुजाओ मे प्रगाढ आलिंगन दे और हम तेरे प्रेममय अक मे अलौकिक आनन्द की अनुभूति करें।

भारत मा, तू धन्य है। कभी-कभी हम स्वार्थ लोलुपता मे निर्वीय और निस्तेज होकर तेरी सेवा करना भूल जाते हैं। फिर भी मा तू हमे विस्मरण नही करती। तू कितनी उदार मा है। मा तू हम पर ऐसी कृपाकर कि हमे सकीर्णता, साम्प्रदायिकता और मलीनता हट जाए और उसके स्थान पर प्राप्त हो विशालता, देश प्रेम और सच्ची मानसिक और आध्यारिमक स्वतन्त्रता, मा तेरा सुन्दर और सजीव रूप हमारे चित मे प्रकट होता कि हमारे भावों मे अनन्य भक्ति-भाव बना रहे और हम स्वप्न मे भी तेरे विद्रोही न बनें। हमारा सम्पूर्ण जीवन तेरे लिए हो तेरे लिए हो और तेरे ही लिए हो।

"माता भूमि पुत्रोऽह् पृथिव्या, निधि विभुति वहुधा गुहम् वसु मणि रत्न पृथ्वी ददातु मे।

वसुन्धरे माता पुनीत धाम,
सकल मानव नत प्रणाम।
परिपुरित शस्यश्यामला धन-धान्य,
गर्भ निहित मणि रत्न ललाम।
समुद्र तरगो का उज्जवल उल्लास,
रवि किरण का मोद विलास।
हिम मडित शिखरो की शोभा,
निखर रही प्रकृति की शोभा (सौन्दर्य)
वन उपवन की सुन्दर सुषमा,
धवल कुसुमो की शशि समउपमा।
तरुवरो की सुशोभित माला,
मानो प्रकृति नदी की रगशाला।

एन-१३, पश्चिमी पटेल नगर,
नई दिल्ली-११०००७

आर्य जगत् समाचार

उग्रवादियों का कार्य स्पष्ट राष्ट्रद्रोह

देश का प्रत्येक हिन्दू पंजाब के हिन्दुओं के साथ :

उग्रवादी पाकिस्तान के बहकावे में आकर खालसा राज्य का स्वप्न छोड़ो
ला० रामगोपालशालवाले द्वारा सिखों को चेतावनी।

गाजियाबाद। आर्यसमाज गाजियाबाद द्वारा आयोजित पंजाब सुरक्षा दिवस पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने उग्रवादी सिखों को सलाह दी कि वे पाकिस्तान के बहकावे मे आकर विघटनवादी मनोवृत्ति के शिकार न हों। पाकिस्तान बंगला देश के पाकिस्तान से निकालने का दोषी भारत को मानता है और उसका बदला वह सिखों को खालसा राज्य बनवाने का प्रलोभन दिखाकर बदले की भावना से उग्रवादियों को उचित-अनुचित सहायता कर रहा है। इसे प्रत्येक राष्ट्रीय सिख भली प्रकार जान ले। क्या यह राष्ट्रद्रोह नहीं है ?

श्री शालवाले ने कहा ला० जगतनारायण की हत्या और श्री वीरेन्द्र को पार्सल मे बम भेजने आदि की घटनाओ ने देश के हिन्दुओ की आखें खोल दी हैं। भारत का प्रत्येक हिन्दू पंजाब के हिन्दुओ के साथ है। दुर्ग्याना मन्दिर को उडा देने की धमकी के प्रसंग को छेडते हुए आपने कहा ऐसा करना देश भर के सिखो पर ही प्रहार करने के समान होगा। इसकी प्रतिक्रिया अत्यन्त घातक होगी, इसे प्रत्येक सिख भाई ध्यान रखकर उग्रवादियो के कार्यों की खुली भर्त्सना करे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्यवीर दल के संचालक श्री प० बाल दिवाकर हंस ने कहा कि दिल्ली की दीवारो पर लिखे नारे 'हम सिख चाहे जो हो सकते हैं पर हिन्दू नही' पर कडा प्रहार करते हुए कहा कि हिन्दू ईश्वर की सत्ता, आत्मा की शाश्वतता, कर्म सिद्धान्त और पुनर्जन्म को मानता है जिसे सिख भाई भी मानते हैं उसके विपरीत सामी लोग जिनमे ईसाई मुसलमान, और यहूदी आते हैं, ईश्वर की सत्ता के अतिरिक्त जन्नत और दोजख को मानते हैं जो उनके नबियो की कृपा अकृपा से प्राप्त होती हैं। ऐसी स्थिति में कम से कम मेरी समझ से बाहर है कि सिख भाई उग्रवादियो के इन दूषित विचारों के शिकार हो सकते हैं ?

आपने सोढल मंदिर मे निशान गाड़ने और उसे उखाड़ के दूर ले जाने की घटना से सबक लेने की अपील करते हुए सिखो से हिन्दुओ के खून के रिश्तो की चर्चा की और कहा वीर बन्दा वैरागी हिन्दू ही था जिसने अपना सर्वस्व न्योछावर कर गुरु-गोविन्दसिंह की सीख को संकट के समय स्वीकारा था और अपना बलिदान दिया, राम, कृष्ण, कबीर, सिख धर्म ग्रन्थो के आधार है वेद, गौ, ब्राह्मण की रक्षा कभी सिखो का संकल्प रहा है अगर इसके विपरीत आचरण मे सिख अग्रसर हुए और उग्रवादी मनोवृति उन पर हावी हुई है तो चाहे वे आज मंदिरो मे गौमुण्ड काट कर डालें पर यह उनके लिए ही भारी अनिष्टकर होगा। मेरी बात ध्यान में रखी जाय।

आचार्य श्री दत्तात्रेय बाब्ले विदेश-यात्रा पर

आर्यसमाज अजमेर के प्रधान तथा आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर के मन्त्री, प्रसिद्ध शिक्षाविद श्री दत्तात्रेय जी बाब्ले (आर्य) दो माह के लिए विदेशयात्रा पर अमेरिका जा रहे हैं। श्री बाब्ले की नवीनतम अंग्रेजी की पुस्तक 'दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दुइज्म' के सन्दर्भ मे विभिन्न अमेरिकी विश्वविद्यालयो मे स्थित भारतीय शोध एवं अध्ययन केन्द्रों ने उन्हे अपने यहा भारतीय समाजसुधार, सामाजिक परिवर्तनो आदि पर आयोजित गोष्ठियों में विशेष भाषणो के लिए आमन्त्रित किया है।

ऋषि ने निर्वाण पथ

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्रशस्त किया। उन्होने घर छोड़कर भीख मांगने के लिए नही कही, कर्त्तव्य से विमुख होकर प्रभु-प्राप्ति की शिक्षा नही दी। वरन उनका तो यह आदेश है कि मनुष्य क्रमश: अपना, समाज का और राष्ट्र का निर्माण करता हुआ मोक्ष की उच्चतम चोटी को प्राप्त कर परमानन्द का भोग करे।

किसी ने ठीक ही कहा है—

जहा घोषणा राम के नाम की है।
जहा कामना कृष्ण के काम की है।
अहिंसा जहां शुद्ध बुद्धार्थ की है
प्रशंसा जहा शंकराचार्य की है
वहां देव ने दिव्य योगी उतारे।
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे।।

(१४ जैनमन्दिर राजा बाजार नई दिल्ली)

डा० पुरुषोत्तमदेव आयुर्वेदालंकार का निधन

हैदराबाद के सामाजिक एवं शैक्षणिक जीवन को गहरी क्षति

हैदराबाद। अत्यन्त दुःखद समाचार है कि गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक एवं द० भारत विशेषत: हैदराबाद दक्षिण में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के उन्नायक डा० पुरुषोत्तमदेव आयुर्वेदालंकार का २१ जुलाई के दिन हैदराबाद में ६४ वर्ष की आयु मे अचानक देहावसान हो गया।

वह भिषगाचार्य, कलकत्ता के एम० एस०, झांसी के आयुर्वेद बृहस्पति थे, वह आयुर्वेद सम्मेलन पत्रिका के सम्पादक, उस्मानिया, वाराणसी, जामनगर आदि विश्वविद्यालयों की विशिष्ट समितियो के सदस्य, हैदराबाद के राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय एवं फार्मेसी के संस्थापक-अध्यक्ष, आन्ध्रप्रदेश के भारतीय औषधि विभाग के उपनिदेशक आदि उत्तरदायी पदो पर कार्य करते रहे। वह श्रीलंका तथा थाईलैंड में आयुर्वैदिक शोध संस्थान एवं चिकित्सालयो के उद्घाटन के सिलसिले मे विशेष आमन्त्रित थे। उन्होंने आयुर्वेद विषयक २०० से अधिक गवेषणात्मक लेख लिखे थे।

उनके निधन से आयुर्वेद चिकित्सा एवं प्रणाली के एक ख्यातिप्राप्त विद्वान् एवं सफल चिकित्सक सदा के लिए हमें छोड़ गए हैं। उनके वियोग से आन्ध्रप्रदेश विशेषत: हैदराबाद के सामाजिक, शैक्षणिक जीवन को गम्भीर क्षति पहुंची है। परम दयालु परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति देंगे और उनके शोकसन्तप्त परिजनो को हार्दिक सान्त्वना देंगे।

६८ मूले जाट स्वेच्छया वैदिक धर्म में प्रविष्ट

समालखा जिला करनाल की हिन्दू शुद्धि समिति का अभियान

२ जुलाई को गाव घोघड़िया जिला जींद मे प्रात हवन हुआ और दुल्ला मूले जाट सदस्यो ने यज्ञोपवीत धारण किए। आर्यसमाज घोघड़िया के प्रधान श्री रामसिंह जी की अध्यक्षता मे शुद्धि कार्य हुआ। गांव के श्री नौरंगराम, श्री देईचन्द्र, श्री धर्मपाल आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति भी मौजूद थे। शुद्धि समिति के मन्त्री श्री रतनसिंह के प्रयत्नो से दूल्ला मूले जाट परिवार के २४ सदस्यो ने स्वेच्छया पुन: वैदिक धर्म मे प्रवेश किया।

७ जुलाई के दिन ग्राम फरमाना जिला सोनीपत मे यज्ञ-हवन हुआ और श्री रतन सिंह जी महामन्त्री शुद्धि समिति समालखा के प्रयत्नो से ६ मूले जाट परिवारों के ४४ सदस्यो ने यज्ञोपवीत धारण किए। आर्यसमाज के प्रधान श्री पूर्णसिंह की अध्यक्षता मे शुद्धिकार्य सम्पन्न हुआ। गाव के श्री प्रताप, श्री मेहरसिंह, श्री धर्मवीर सिंह, व रूपचन्द आदि के प्रमुख लोगो ने शुद्धि कार्य मे पूर्ण सहयोग दिया। श्री भागमल के पुत्र श्री धर्मवीर को शुद्धि समिति द्वारा हिसार के ब्राह्म महाविद्यालय में विद्याध्ययन के लिए दाखिला करवा दिया गया।

मानव-कल्याण

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु

मानव-तन पाया तुमने सत्कर्म के हेतु मानव-जीवन का यही सार है।
हर समय ईश्वर को याद कर बन्दे, जग का मोह-माया निस्सार है।।

मुश्किल से मानव-तन को पाया है, तुमने इसको सदा ही ख्याल कर।
प्रभु से नाता जोड, सबका हितैषी बन, इसको मन मे विचार कर।।

खाली-हाथ आया तू, सब यहीं छोड़कर, खाली हाथ ही जाएगा।
इसका तू चिंतन कर, माया को दूर कर, तेरा कल्याण हो जाएगा।।

काम में न अन्धा बन, माया का दास न बन, उत्तम यही विचार है।
प्रभु से प्रेम कर, जीवन को सार्थक कर इसी में सबका प्यार है।।

'ब्रह्मानन्द' का आरजू, सदा यही है, कभी किसी का उपकार न कर।
तभी तू प्रभु का प्यारा बनेगा, कभी किसी का अनिष्ट न कर।।

अतरसंड, मुजफ्फरपुर, (बिहार)

आर्यसमाजों के सतसंग

रविवार, ७ अगस्त १९८३

अन्धामुगल-प्रतापनगर—पं० अशोककुमार विद्यालकार; अशोकनगर—प० अमरनाथ कान्त; अशोक विहार—पं० दीनानाथ सिद्धान्तालकार, आर्यपुरा—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; आरकेपुरम् सेक्टर ५—श्री देवेश जी, आरकेपुरम् ६—प० विद्याव्रत शास्त्री; आनन्द विहार—प० वेदव्यास जी; आर्यनगर-पहाडगंज—प० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार; अमर कालौनी—पं० ज्ञानचन्द, किंग्जवे कैम्प—श्रीमती प्रकाशवती, शास्त्री; कालका जी डी० डी० ए० फ्लेट—प० परमेश जी शर्मा, कृष्णनगर—पण्डित देवेन्द्र शास्त्री; गाधीनगर—प० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; गुप्ता कालोनी—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, ग्रीन पार्क—आचार्य रामचन्द्र शर्मा, गोविन्दपुरी—ओ३मप्रकाश शास्त्री; चूनामण्डी—आचार्य नरेन्द्रजी; जनकपुरी सी-३—प०ओ३मवीर शास्त्री; जनकपुरी ३।२४ बी—आचार्य विक्रम शास्त्री; टैगोर गार्डन—व्याकुल कवि, तिलकनगर—प० सोमदेव शास्त्री; तिमारपुर—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, देवनगर—श्रीमती सुशीला राजपाल, नारायणविहार—पण्डित रमेश वेदाचार्य, नयावास—कवि सत्यपाल वेदार; न्यू मोतीनगर—पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; नगर शाहदरा—प० रामनिवास शास्त्री; पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प्रो० वीरपाल जी, प्रीतमपुरा—श्री मुनिशंकर वानप्रस्थ; मोडलबस्ती—प० सुमेरचन्द्र विद्यार्थी; मोडल टाउन—प० दिनेशचन्द्र पाराशर; महरोली-तुलसीदेव संगीताचार्य; मोतीबाग—प० खुशीराम शर्मा, राणाप्रतापबाग—डा० सुखदयाल भूटानी; सर्वोरी गार्डन—प० आशानन्द भजनीक, बालीनगर-पं० सीशराम भजनीक, लड्डूघाटी—पं० ओमप्रकाश गायक, लाजपतनगर—सत्यपाल जी मधुर—त्रिनगर—रणजीतसिंह राणा—विनयनगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य, विक्रमनगर—जयभगवानजी, सरायरोहेला—प० तुलसीराम आर्य, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, श्री निवासपुरी—बलवीर शास्त्री, हौजखास—बी ९९, गुलमोहर पार्क, प० सत्यभूषण वेदालकार, गोविन्दभवन—दयानन्द वाटिका—प० मुनिदेव आर्यभजनोपदेशक, खिचड़ीपुर—स्वामी शिवानन्द सरस्वती, गीता कालोनी—मोहनलाल गाधी।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता, वेदप्रचार विभाग।

नेपाल में मुसलमानो की स्थिति

मुस्लिम पत्र साप्ताहिक 'कान्ति' भारत के पडोसी देशो में मुसलमानो की स्थिति प्रकाशित कर रहा है। इसके अनुसार नेपाल मे मुसलमानो की स्थिति इस प्रकार है—हिमालय की उपत्यका मे नेपाल एक हिन्दू राज्य है, इसकी आबादी १ करोड़ ५० लाख है। नेपाल के ७५ मे से ५० जनपदों में मुसलमान पाए जाते हैं, केवल एक लाख मुसलमान पहाड़ी क्षेत्रो मे हैं, शेष तराई में हैं। ७१ की जनगणना के अनुसार बांके में मुसलमान २२ प्र० श० हैं, तराई के रोताहात, सरहा ससारी, महोत्रो, कपिलस्तु और रोपिनदेई के हर जिले में कम से कम एक लाख मुसलमान हैं। देश की राजधानी काठमाण्डू मे १९६१ मे १५०० मुसलमान थे, १९७१ मे यह संख्या तीन हजार हो गई और १९८१ में चार हजार।

२५ वर्ष पहले नेपाली मदरसो मे मुसलमान प्रवेश नहीं ले सकते थे, लेकिन १९४० के बाद उन्हे विद्यालयो-कालेजो में प्रवेश की अनुमति मिल गई, मुसलमानों के लिए पृथक् मदरसे स्थापित हो गए हैं, हर गांव में एक मदरसा है जहां बच्चों को उर्दू और मजहब की शिक्षा दी जाती है, यद्यपि देश मे मुसलमान इन्जीनियर और डाक्टर हैं, परन्तु सरकारी विभागों मे कम हैं, १९८० मे ५ मुसलमान लेक्चरर थे। जिला धानो के जगपुर मे जामिया सलफिया नाम से मजहबी मदरसा खोला गया है, इसे मदीना विश्वविद्यालय ने एक लाख रुपए दिए हैं, उम्मीद है कि इस मदरसो की स्थापना से नेपाल मे मजहबी शिक्षा का स्तर ऊचा हो जाएगा।

काठमाण्डू मे कई मस्जिदें हैं, दो के साथ मजहबी मदरसे कार्य कर रहे हैं, नेपाली मस्जिद के साथ हिन्दुस्तानी तकिया नामक मुसाफिर खाना भी है। यद्यपि नेपाल मे इस्लामी कानून लागू नही है इसके बावजूद धर्म पर कोई पाबन्दी नहीं है, हर वर्ष ५० मुसलमान हज के लिए जाते हैं। नेपाल के कानून के अनुसार वहा का कोई हिन्दू नागरिक अपना धर्म परिवर्तन नही कर सकता, वहा गाय काटने पर प्रतिबन्ध है। नेपाल में मुसलमान अपना विवाह इस्लामी तरीके से कर सकते हैं, परन्तु तलाक नही दे सकते। बहुसंख्यक मुसलमान खुशहाल हैं, खेती करते हैं, हर घर मे एक हाजी जरूर है।

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज लक्ष्मी नगर, दिल्ली-९२—प्रधान—श्री त्रिलोकीनाथ महेश्वरी, उपप्रधान—श्री गणपत राय मेहता, मन्त्री—श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा, उपमन्त्री—श्री सत्यदेव शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश मलिक।

आर्यसमाज यमुना बिहार—दिल्ली-५३—प्रधान—श्री ललिता प्रसाद बन्सल, उपप्रधान—श्री शोभाराम आर्य, उपप्रधाना—श्रीमती शकुन्तला देवी जी, मन्त्री—श्री दुर्गाप्रसाद जी, उपमन्त्री—श्री कमलकिशोर आर्य, श्री पी० सी० भाटिया, कोषाध्यक्ष—श्री विश्वामित्र रहेजा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजकुमार आर्य, लेखा निरीक्षक—श्री जगदीश राय।

आर्यसमाज श्रद्धानन्द पुरम (अर्बन एस्टेट) गुड़गाव—प्रधान श्री एल० डी० गुलियानी, उपप्रधान—श्री सत्यपाल बहल, मन्त्री—श्री लाजपत आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री रामदास जी, उपमन्त्री—श्री महेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री पुरुषोत्तमदास।

आर्यसमाज कोटला—मुबारकपुर, नई दिल्ली-३—प्रधान—श्री मोहनलाल कोहली, उपप्रधान—श्री सत्यपाल तलवार, मन्त्री—श्री शिवचरणदास गुप्त, उपमन्त्री-श्री ओ३म् प्रकाश मल्होत्रा; कोषाध्यक्ष—श्री बालकिशनदास आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिदेव बहल, लेखा-निरीक्षक श्री बी० डी० शर्मा।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा—सुल्तानपुर—प्रधान—श्री भीमकुमार सिंह, मन्त्री—श्री राधेश्याम आर्य एडवोकेट, उपमन्त्री—श्री समरजीत सिंह, श्री प्रयागदीन, कोषाध्यक्ष—श्री अमर बहादुर सिंह।

आर्यसमाज—अड्डा होश्यारपुर, श्रद्धानन्द बाजार, जालन्धर—प्रधान—श्री रामनाथ यादव, उपप्रधान—श्री अमृतलाल खन्ना। महामन्त्री—श्री योगेन्द्रपाल सेठ, मन्त्री—श्री सोहनलाल; कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र अग्रवाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुभाष सहगल, लेखा निरीक्षक—श्री सुदर्शनलाल आनन्द।

दिल्ली में वेदप्रचार-सप्ताह-कार्यक्रम की धूम

१—आर्यसमाज लाजपत नगर मे ८ अगस्त से १४ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। जिसमे परमहस स्वामी जगदीश्वरानद सरस्वती का वेद प्रवचन और प० वेदव्यास भजनोपदेशक के मधुर भजन हुआ करेंगे।

२—आर्यसमाज त्रिनगर मे १३ से १५ अगस्त तक आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण का वेद प्रवचन और प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के मधुर गीत होगे।

३—आर्यसमाज सराय रोहेला मे ५ अगस्त से ७ अगस्त तक परमहस स्वामी जगदीश्वरानन्द जी का वेद-प्रवचन और प० वेदव्यास जी के मधुर भजन हुआ करेंगे।

४—आर्यसमाज सदर बाजार—(पहाडी धीरज) मे श्री रामकिशोर वैद्य जी का वेद प्रवचन और प० सत्यदेव जी स्नातक के मधुर भजनोपदेश हुआ करेंगे।

हरि तीज का सामूहिक पर्व लोधी गार्डन

दिल्ली के समस्त आर्यमहिला जगत को सहर्ष सूचित किया जाता है कि इस बार महिलाओ का रंग-रगीला हरितृतीया पर्व सोमवार दिनांक ८ अगस्त को प्रात. ११॥ बजे से ४॥ बजे तक "लोधी गार्डन मे धूमधाम से मनाया जाएगा। अपनी-अपनी समाज की बसो द्वारा भारी सख्या मे सम्मिलित होकर समारोह को सफल बनाए। अपनी बसें जोर बाग टेलीफोन एक्सचेंज" के सामने वाले गेट पर लगावें। उद्यान के मुख्य द्वार पर ओ३म् ध्वज लगा होगा।—प्रेमशील मंत्रिणी, प्रान्तीय आर्य महिला सभ दिल्ली।

वैद्य रामकिशोर जी द्वारा रामायण- कथा

रामगली आर्य समाज मन्दिर सी-१३ हरि नगर घण्टाघर नई दिल्ली ११००६४ में १-८-८३ से ७-८-८३ तक रात्रि ८ बजे से १० बजे तक भगवान राम के जीवन सम्बन्धी कथा (रामायण की कथा) समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् कथाकार वैद्य रामकिशोरजी कर रहे है तथा प०जगदीश प्रसाद जी विद्या वाचस्पति भजनोपदेश कर रहे हैं। श्रद्धालु भक्तो से अनुरोध है कि समय पर पधारकर कथा का आनन्दामृत पान करें।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा का उत्सव

८ अगस्त प्रात लोधी गार्डन में

प्रान्तीय आर्य महिला सभा का उत्सव ८-८-८३ को लोधी गार्डन मे प्रात ११ बजे से ४-३० तक मनाया जाएगा। जोरबाग टेलीफोन एक्सचेंज के सामने वाले दरवाजे के पास अपनी बसें खड़ी करें।

—प्रेमशील मन्त्रिणी

शुद्धि एवं विवाह

आर्यसमाज लाजपत नगर नई दिल्ली मे २० जुलाई को श्री ए० ए० खान एस० पी० के सुपुत्र नदीब का शुद्धि सस्कार किया गया और नया नाम नवीन रखा गया।

नवीन का चारु नामक [illegible] साथ विवाह सस्कार कराया [illegible] अवसर पर दिल्ली पुलि[illegible] और गणमान्य व्यक्ति [illegible] व्यक्ति उपस्थित थे। [illegible] संस्कार प० मेघश्याम वेदालंकार ने सम्[illegible]

रजि० न० डी० सी० 759
साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा न० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष : ७ अंक ४२ | रविवार १४ अगस्त, १९८३ | ३० श्रावण वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५९

इस्लामी देशों में गैर मुस्लिमों के साथ अत्याचार

अरब देशों में रोजे के समय पानी पीने वाले गैर मुस्लिमों को कोड़े

नई दिल्ली 'टाइम्स आफ इण्डिया' दिल्ली के ११ जुलाई के अंक में पृष्ठ ११ के कालम ४ पर प्रकाशित समाचार के अनुसार रमजान महीने में सऊदी अरब की सरकार ने उपवास या रोजे के समय मे पानी पीने या खाने वाले गैर मुस्लिमो को ४०-४० कोडे लगाने की सजा दी थी।

दिल्ली के पत्रकार भूतपुर्व राजनयज्ञ श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने दिल्ली के मुस्लिम साप्ताहिक 'रेडियन्स' का ध्यान इस सम्बन्ध मे आकर्षित कर पूछा कि यदि मुस्लिम देशों में गैर मुस्लिमों को इस्लाम धर्म व सस्कृति का जबर्दस्ती पालन कराया जाता है और यदि गैर मुस्लिम प्रधान देशो में भी इस्लाम की परम्पराओ को, जो कि सार्वभौम न होकर सऊदी अरब एवं अरब जगत् से जुड़ी हुई हैं, को त्यागने के लिए विवश किया जाए तो वे कैसा अनुभव करेंगे ? उस हालत मे इन गैर मुस्लिम देशो मे इन मुस्लिमो के रहने का अधिकार नहीं बनता। इन सम्पादक महोदय ने स्वीकार किया है कि हर मुस्लिम के लिए कुरान अन्तिम शब्द है, फलत. उपवास के समय मे कुरान के अनुसार मजन-पेस्ट भी ब्रुश से न कर केवल उगली से किया जा सकता है। सभी धर्मों मे उपवास का महत्त्व होने पर भी किसी एक सम्प्रदाय की दूसरो पर उपवास या उससे सम्बन्धित परम्पराए जबर्दस्ती गैर मुसलमानो पर लादने की अनुमति नही दी सकती।

अरब व खाड़ी देशों में हिन्दुओं से अन्याय

अन्तिम संस्कार एवं सार्वजनिक धार्मिक सभाओं पर सरकारी रोक

नई दिल्ली। हमारे तथाकथित सेक्यूलर भारत देश मे विदेशी धर्मावलम्बी विशेषत: इस्लाम और ईसाइयत को मानने वाले अपनी धार्मिक मान्यताओं को मानने के साथ धर्मान्तरण करने के लिए स्वतन्त्र हैं, परन्तु विदेशो मे हिन्दू आर्य धर्म मानने वालो पर किस तरह की ज्यादतिया प्रचलित हैं, इसके कुछ नमूने शुक्रवार ५ अगस्त के दिन भारतीय ससद की कार्रवाई के समय उजागर हुए। डा० भाई महावीर के एक प्रश्न के उत्तर में देश के विदेश-मन्त्री श्री नरसिंह राव ने स्वीकार किया कि खाड़ी तथा पश्चिमी एशिया के मुस्लिम देशों में इस्लाम के अतिरिक्त दूसरे धर्मों के प्रचार एव प्रसार पर प्रतिबन्ध है। उन्होने यह सूचना भी दी कि खाडी देशो मे धार्मिक प्रार्थनाए या सभाए हो सकती हैं, परन्तु ये अपनी मर्यादित सीमाओ में हो सकती हैं, राज्य का हस्तक्षेप न होने देने के लिए वहां ध्वनि विस्तारक यन्त्रों का प्रयोग नही किया जाता।

रमजान के दिनों में सार्वजनिक रूप से पानी पीने पर सऊदी अरब के रियाद स्थान पर ३०० विदेशियों को सरेआम कोड़े लगाए गए। भारतीय विदेशमन्त्री ने सूचना दी कि इन कोड़े खाने वाले विदेशियो में भारतीय सम्मिलित नही थे।

भाई महावीर ने राज्य सभा में प्रश्न पूछा था कि क्या यह तथ्य नहीं है सयुक्त अरब अमीरात में भारतीय मृतकों को अन्तिम संस्कार करने के लिए दुबई ले जाना पड़ता है ? भारतीय विदेशमन्त्री ने स्वीकार किया कि उन्हें इस विषय मे वस्तुस्थिति की जानकारी नहीं है कि इन देशों में पीढ़ियों से रहने वाले भारतीयों को अपने मृतको को अन्तिम संस्कार के लिए भारत या दूसरे देशों में ले जाया जाता है। उन्होंने इस विषय में वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त कर उसकी सूचना यथासमय सदन को देने का आश्वासन दिया।

अरब देशों में रोजगार के नाम पर धर्मपरिवर्तन का प्रयत्न

नई दिल्ली। ऊंची तनख्वाह तथा सुविधाओं का लालच देकर सऊदी अरब भेजे जाने वाले लोगों के साथ कितना अमानवीय व्यवहार किया जाता है, इसका रहस्योद्घाटन दिल्ली की बस्ती रघुवीर नगर निवासी श्री ललितकुमार द्वारा शुक्रवार ५ अगस्त के दिन डिफेंस कालोनी पुलिस मे दर्ज कराई गई, रिपोर्ट मे किया गया। उससे मस्जिद मोठ स्थित एक कथित अन्तर्राष्ट्रीय सस्था के एक व्यक्ति ने ग्यारह हजार रुपए लेकर पहली जून को पेण्टर की नौकरी बताकर सऊदी अरब भेज दिया। एग्रीमैण्ट मे तीन हजार रुपए मासिक वेतन कहा गया था, वहा पहुचने पर उसे एक खेत पर दूसरे भारतीय मजदूरों के साथ गुलामो की तरह काम पर जोत दिया गया। फार्म के सुपरवाइजर ने उसे तथा उनके साथियो को धर्म-परिवर्तन कर मुसलमान बन जाने के लिए दबाव डाला तथा मना करने पर बुरी तरह पीटा गया। श्री ललितकुमार किसी तरह पुलिस के पास पहुंच गया और २ अगस्त को आने मे सफल हो गया।

आर्यसमाज नगर शाहदरा में यज्ञशाशाला शिलान्यास

रविवार ७ अगस्त को प्रात ९ बजे से यज्ञोपरान्त भव्य यज्ञशाला के निर्माणार्थ शिलान्यास किया गया। श्री राजकुमार जी धवन सुपुत्र श्री भगवान दास जी धवन मैनेजिंग डायरैक्टर मेसर्ज आर० के० प्रापर्टीज, आर० के० जिन्दल, नवनिर्माण गृह के कर कमलो द्वारा किया गया। समारोह मे शाहदरा क्षेत्र की समस्त आर्यसमाजो के कार्यकर्ताओ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया एव यज्ञशाला निर्माणार्थ लगभग १८ हजार रुपये दान एकत्र हो गया जिसका अधिक भाग धवन परिवार ने ही दिया। शाहदरा क्षेत्र की उपसभा की की प्रधाना श्रीमती ईश्वर देवी जी धवन ने इस यज्ञशाला के पूर्ण निर्माण का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। यह बड़े हर्ष का विषय है। हम आय सन्देश परिवार की ओर से श्री भगवानदास जी धवन, श्रीमती ईश्वर देवी धवन एव उनके परिवार को इस शुभ कार्य के लिए बधाई देते हैं।

द० दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का वार्षिकोत्सव

रविवार १४ अगस्त को आर्यसमाज लाजपत नगर में

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे दक्षिणी दिल्ली की ४७ आर्यसमाजों का सयुक्त वार्षिकोत्सव रविवार १४ अगस्त को प्रात ७॥ से लेकर दोपहर १ बजे तक आर्यसमाज लाजपत नगर मे होगा। इसमे पंजाब की गम्भीर स्थिति पर ससद सदस्य आचार्य भगवानदेव, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री गोस्वामी गिरधारीलाल, निरकारी नेना श्री जयराम दास सत्यार्थी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा, प० सत्यपाल शर्मा, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल आदि प्रमुख आर्य नेता अपने विचार प्रकट करेंगे। इस अवसर पर आचार्य हरिदेव जी, श्री प्रकाशवीर व्याकुल, वेदव्यास जी आदि के उपदेश व भजन होगे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

परमात्मा अद्भुत स्वरूप है ! उसी की उपासना करें

—प्रेमनाथ एडवोकेट

उपस्थान मन्त्र (सन्ध्यान्गत)

ओ चित्र दवानामुदगाददनीक चक्षुर्मित्रस्य वरणस्याग्ने आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष७
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुश्च स्वाहा ॥ यजु० ७।४२॥

कुत्स ऋषि, सूय देवता भुरिमार्षी त्रिष्टुप छन्द धैवत स्वर।

शब्दार्थ —(वह परमात्मा) [चित्रम] अदभुतस्वरूप (आश्चयस्वरूप), [देवा-नाम] दिव्यगुणयुक्त धार्मिक विद्वानो के (हृदय म) [उदगात] उत्कृष्टता से प्राप्त (प्रकाशित) [अनीकम] (हमारे अब दु खो का नाम) क्रोधादि शत्रुओ के विनाशाथ एक) परम बल [मित्रस्य] सवमित्र (अर्थात सबसे द्वेषरहित मनुष्य), प्राण वा सूयलोक का (वा) [वरुणस्य] श्रेष्ठ (गुण कर्म वाले) मनुष्य का (वा) [अग्ने] अग्नि अथवा विद्युत का [चक्ष] प्रकाशक (दशक) है (वा) [द्यावापृथिवी] सूय पृथिवी आदि सब लोको को (वा) (अन्तरिक्षम) (अनन्त) आकाश को [आप्रा] उत्पन्न करके अच्छी प्रकार से धारण वा सरक्षण करने वाला है (वा) [जगत] प्राणी जगत का [च] वा [तस्थुष] स्थावर अर्थात जड जगत का [आत्मा] आत्मा अर्थात इन सब चराचर जगत मे व्यापक (सूय) सूय नाम वाला ब्रह्म है (उसी का हम) (स्वाहा) अपने सत्य शुद्ध हृदय मे आह्वाहन करे (अर्थात् उसके अतिरिक्त अन्य किसी की उपासना न करें)।

भावार्थ —परमात्मा अदभुतस्वरूप है क्योकि वह अनन्त अनुपम दिव्य गुण-युक्त है। वह हमारा परम बल वा परम सहायक है। योगी लोग ही उसका अपने आत्मा म उसका साक्षात कर सकते हैं। परमेश्वर आकाश के समान सवत्र व्याप्त, सूर्य के समान स्वय प्रकाशमान और प्राण (सूत्रात्मा वायु) के तुल्य सबका अन्तर्यामी है। इससे सब जीवो के लिए सत्यासत्य का बोध कराने वाला है। जिस मनुष्य का परमेश्वर के जानने की इच्छा हो, वह योगाभ्यास करके अपने आत्मा मे उसे देखने को समथ हो सकता है, अन्यथा नही।

अनमोल हीरे

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

✱ ध्यान रखो कि मित्रो और रिश्तेदारो से लेन देन करना मित्रता और रिश्तेदारी को नष्ट कर देता है।

✱ वेदशास्त्रो का पढने वाला अगर आचरण न करे तो पढने से कोई लाभ नही।

✱ प्रत्यक मनुष्य को चाहिए कि जैसा दूसरो को उपदेश करता है वैसा अपने को बना ले। नही तो लोग उसकी बातो का विश्वास करना छोड देगे।

✱ प्रिय क्या है करना और न कहना। अप्रिय क्या है कहना और करना नही।

✱ जो ज्ञान की बडी बडी बाते करते हैं जिनके हृदय मे दया नही है उन्हे स्वग की आशा नही करनी चाहिए।

✱ वे मनुष्य धन्य है जिनके अन्दर दया है क्योकि परमपिता प्रभु की दया के वे ही भागी है।

✱ जो किसी दुखी को देखकर उस पर दया नही करता, वह मालिक के कोप का पात्र होता है।

✱ जिस मनुष्य की अच्छे कम करने पर भी निन्दा होती है वह मनुष्य बडा भाग्यवान है।

✱ जो मनुष्य अपना कल्याण नही चाहता पाप के फल दुख को नही मानता और ईश्वर को मानने मे भी आनी-कानी करता है। उसको उपदेश करना ऐसा है जैसे भैंस के आगे बीन बजाना।

✱ कहने वाले वक्ता के जीवन को मत देखो वह जो कहता है उसका गौर करो।

✱ अभिमान बहुत बडा शत्रु है, जिसके अन्दर इसका निवास हो जाता है उसका सदगुणरूपी धन नष्ट हो जाता है।

✱ भगवान दीन-बन्धु है अभिमानी-बन्धु नही है।

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ६१ वां वार्षिकोत्सव

३ से ९ अक्तूबर ८३ को आयसमाज मन्दिर मे सारोह पूर्वक मनाया जाएगा। उत्सव की सफलता के लिए समाज के प्रधान श्री राममूर्ति जी कैला एव मन्त्री श्री सुभाष विद्यालकार अपने सहयोगियो सहित प्रयत्नशील हैं। दिल्ली की आर्यसमाजो से प्रार्थना है कि इन तिथियो मे कोई विशेष कायक्रम न रखकर अपना पूर्ण सहयोग इस केन्द्रीय आयसमाज को प्रदान करे।

बोध-कथा

दृढ़ संकल्प

लगभग ढाई हजार वष पहले की बात है। उस समय देश के कई हिस्सो में अकाल—दुर्भिक्ष को स्थिति पैदा हो गई। वर्षा न होने से सूखा पड गया। गरीब जनता भूख के कारण त्राहि-त्राहि कर उठी। उन्ही दिनो महात्मा बुद्ध प्रदेश-प्रदेश में विचरण करते हुए श्रावस्ती पहुचे। वहा भी अकाल था। उन्होंने अपने सब धनी, शक्तिशाली एव लोकप्रिय शिष्यो को बुला भेजा। उनसे कहा—'इस भूखी जनता को भोजन कराने का उत्तरदायित्व कौन सम्भालेगा ?

नगरसेठ बोला—"अकाल से पीडित इतने लोगो को कौन खिला सकता है। मेरे पास तो बस थोडा सा ही अन्न है जिससे मेरा और परिवार कठिनता से अपना गुजारा कर सकेगा। आह्वान करने पर राज्य के सबसे शक्ति शाली सेनापति बोले—'इस जनता का पेट भरने के लिए मेरे पास भी कुछ नही है, मेरे घर में भी कुछ नही है।' जनता एव राज्य का गोदाम अन्न से भरने वाले भूमिधर किसान बोले— सूखे से खडी फसल सूख गई है। हमे चिन्ता है कि हम राज्य का भूमि कर कैसे चुका सकेंगे ?"

सब धनियो, सम्पन्न व्यक्तियो एव जनता के नेताओ द्वारा किसी प्रकार की सहायता देने से इन्कार कर दिए जाने पर वहा दरवाजे पर बैठी भिखारिन सुप्रिया हाथ जोडकर सिर उठा कर बोल उठी— महात्मा जी, मैं भूखो को भोजन दूगी मैं धनहीन हू पर मुझे इसकी कोई चिन्ता नही है अकिंचनता और निर्धनता ही मेरी ताकत है, मेरी सम्पत्ति और अन्न आप सबके घरो मे है मैं पैसा पैसा, दाना-दाना एकत्र करूगी, भूखो को खिलाऊगी, किसी को भी भूख से मरने नही दूगी।'

—नरेन्द्र

बज उठी रणभेरी

रचयित्री—डा० पुस्पावती एम० ए० पीएच० डी० दर्शनाचार्य, विद्यावारिधि

सचालिका—मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल, डी० ४५।११६, नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी

दिल्ली से दुन्दुभि की उठती नई पुकार। जिसमे झकृत वीर हृदयो की ताण्डव झकार।
राम व गोपाल समवेत, ऐसे हृदय की ललकार।
सुन क्या टिक पाएगे, देशद्रोहियो के सरदार ?
वीरो के इन्द्र जमे उस भूपर, जिस पर बरसे आग।
आर्यों का रक्त उत्सुक आज, खेलने को मरण-फाग।
जगत् रामजी के—की रक्त बद जगा रही नया देश अनुराग।
आय भूल सकेंगे नही अखण्ड देश का राग।
राम औ गोपाल यहा तो हैं झासी की रानिया भी।
प्रताप शिवा के रणकौशल तो है पदिमनी की कुर्बानिया भी।
वीरेन्द्र जलती ज्वालाओ म, तो बहन है मर्दानिया भी।
बलि दे सकते भाई यदि तो बहनें छुटा सकती जवानिया भी।
मत हिचको घर की चिन्ता मे, बहने दुहरा देगी बलिदान-कहानिया भी।

सुख-समृद्धि प्राप्त हों —

ओ३म् यस्य व्रते पृथिवी नंनमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति ।
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपा स न पर्जन्य महिशर्म यच्छ । ऋ ५ ८३. ५

पृथ्वी जिसे नमन करे और पशुगण आशाए रखें, जिसके लिए वनस्पतिया भी नाना औषध रूप धरें, वह प्रिय मेघ शान्ति, सुख और समृद्धि का दान करे।

ओ३म्
आर्य सन्देश

प्रश्न है देशभक्ति का !

जिस तरह के नए ज्वलन्त प्रश्न एव समस्याए उठ रही हैं, उनसे ध्वनित होता है कि कुछ महाशक्तियां यत्नपूर्व भारत की स्थिति बिगाडने मे लगी हुई हैं। पिछले दिनो ये संवाद प्राप्त हुए हैं कि खालना आन्दोलन एव अलगाववादी आन्दोलनो के पीछे पाकिस्तानी तथा अमेरिकी शक्तिया काम कर रही है। जुलाई के अन्तिम सप्ताह और अगस्त के प्रारम्भ मे भारत के दक्षिण मे अवस्थित श्रीलका मे जिस तरह के भारत-विरोधी दगे हुए और वहा जिस प्रकार तमिलभाषी भारतीयो का सामूहिक हत्याकाण्ड किया गया उससे भी यही मालूम पडता है कि कुछ भारत विरोधी षड्यन्त्र पक रहा है। यह सवाद भी मिला है कि लका की सरकार ने सयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन पाकिस्तान और बांगला देश से सम्भावित विदेशी आक्रमण के समय सैनिक सहायता की माग की थी। सरकारी तौर पर यद्यपि इस समाचार को निराधार कहा गया था, परन्तु ब्रिटिश सरकारी प्रवक्ता एवं विदेशी समाचार समितियो एव सवाददाताओ ने मूल समाचार को सत्य और प्रमाणित किया है। इन सभी बातो से यह प्रतीत होता है कि पश्चिमोत्तर, पूर्वोत्तर अचलो में अशान्ति स्थापित करने के बाद अब कुछ विदेशी शक्तिया भारत के दक्षिण में अव्यवस्था पैदा कर भारत की स्वतन्त्र, निरपेक्ष,तटस्थ नीति को सीधी चुनौती देने में लगी हुई हैं।

उल्लेखनीय है कि हिन्द महासागर मे मारीशस के उत्तर मे दिएगो गार्शिया मे अमेरिकी नौसैनिक एव हवाई अड्डा प्रतिष्ठित है। हिन्द महासागर मे विश्व की महाशक्तियो के बेड़े चक्कर लगा रहे हैं। अफगानिस्तान मे रूसी सेना के प्रवेश के बाद पाकिस्तान मे अमेरिकी सैनिक अड्डे स्थापित किए गए है, अब अपुष्ट समाचारो मे कहा गया है कि श्रीलका के त्रिकोमली पे अमेरिकी सैनिक अड्डे स्थापित करने की योजना बनाई जा रही है। पाकिस्तान, श्रीलका और दिएगोगार्शिया मे अमेरिकी अड्डे कम्युनिज्म के विरुद्ध न होकर वस्तुत भारत विरोधी हैं। आज भारत के अन्दर और बाहर जिस प्रकार व्यूह रचना हो रही है, उससे समय रहते प्रत्येक देशभक्त भारतीय को सावधान होकर सचेत एव सन्नद्ध हो जाना पडेगा। आज दुर्भाग्य ऐसा है कि देश मे अलगाववादी शक्तिया निरन्तर पनप रही हैं। कल तक जो सिख हिन्दू धर्म के रक्षक और उसके लिए बलि दे रहे थे, वे कह रहे हैं कि हमारा हिन्दू-धर्म से कोई नाता-रिश्ता नही है। इन दिनों अंग्रेजी पत्रो मे इस तरह के सिखो के पत्र एव लेख प्रकाशित किए जा रहे हैं कि उनका हिन्दुओ से कोई नाता-रिश्ता नही है।

२४ जुलाई, १९८३ के दिन 'आर्य सन्देश' मे आर्य प्रतिनिधि पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्रजी का 'क्या सिख हिन्दू नहीं हैं ?' शीर्षक एक प्रामाणिक लेख प्रकाशित हुआ था। उसमें उन्होंने लिखा था कि गुरुग्रन्थ साहब मे ३३० बार वेदो का उल्लेख हुआ है, गुरु गोबिन्दसिंह जी ने स्वीकार किया था कि गुरु नानकदेव का जन्म वेदी परिवार मे हुआ था, गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपना सम्बन्ध श्रीराम के सूर्यवंशी कुल से स्थापित किया था, गुरु तेग बहादुर ने रघुनाथ की टेक रखी थी, गुरुग्रन्थ साहब मे वेद, राम-कृष्ण, हरिनारायण, मधुसूदन का बार-बार उल्लेख हुआ है, जिससे उनका सम्बन्ध प्रधानतया हिन्दुओं से स्थापित हुआ था, गुरु गोविन्दसिंह की आत्मकथा मे कृष्ण-अवतार, राम-अवतार, चण्डीचरित्र, चौबीस अवतार और हिन्दू सस्कृति की विशद चर्चा की गई है। सभी सिख गुरु हिन्दू थे, गुरु गोविन्दसिंह ने लिखा था—'सकल जगत् मे खालसा पन्थ गाजे, जगे हिन्दू धर्म सकल भण्ड भागे।' इस सब विवरण से स्पष्ट है कि गुरु गोबिन्दसिंह की दृष्टि में खालसा पन्थ और हिन्दू-धर्म ये दोनो एक थे, वह जहा खालसा-पन्थ की गर्जना चाहते थे, वहा हिन्दू-धर्म की जाग्रति भी चाहते थे। सिख गुरु देश-भक्ति और भारतीय संस्कृति के पक्षपाती थे, खेद है कि आज उन गुरुओं के शिष्य बनने वाले धर्म, देश, और संस्कृति की उपेक्षा कर रहे हैं और देशभक्ति के स्थान पर देशद्रोह की ओर अग्रसर हो रहे हैं, इसका निवारण करना ही होगा। *

चिट्ठी-पत्री

"गर्व करने योग्य एवं बढ़िया हिन्दी पत्र"

समाज के प्रत्येक घटक के साथ जिसका समवाय सम्बन्ध है अर्थात् यथा पृथ्वी और गन्ध, पानी और शैत्य, अग्नि और उष्णता, वायु और स्पर्श, आकाश और शब्द, वस्त्र और तन्तु, गुरु और शिष्य, लेखक और पाठक, मा और बेटा इसी प्रकार आत्मा और परमात्मा का शाश्वत एव अभिन्न नाता होता है। समाज का उभय पक्ष जिस समाचार-पत्र के विषय मे जीवन्त अनुभूतिया अपने अन्तस्तल मे समेटे हुए, उस पत्र की पत्रकारिता के प्रति मन्त्रमुग्ध रहता हो। जो जन-जन के मानस मन्दिर मे आशा के स्नेह से विश्वास की ज्योति जलाकर वाह-वाह की घण्टिया बजवाने वाला, नारद जैसा सवाद-कारक एव समृद्ध सूचनाओ का सचेतक, सन्देशवाहक, अर्जुन जैसा लक्ष्यभेदक, कृष्ण जैसा कर्मयोग का सत्योपदेष्टा, युधिष्ठिर जैसा मानव धर्म का पोषक, पितामह जैसा सत्यसन्ध तथा मनु जैसा सार्वभौमिक व्यवस्था का व्यवस्थापक एव उद्गाता तथा याज्ञवल्क्य जैसा प्रचारक हो।

जो समाज के प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित, पण्डित-अपण्डित, सबल-निर्बल, पूज्य-अपूज्य वर्ग की प्रत्येक इकाई के साथ तादात्म्य स्थापित करता हुआ मुखरित की वाङ्-माधुरी के स्वरो को गुनगुनाता हुआ तथा मूक की वाणी-वीणा की तन्त्री को स्पन्दित करता हुआ एक अपेक्षित नवीन युग की सृष्टि का कर्त्ता हो सके। जिसकी तत्परता जन-साधारण की विकराल समस्याओ से आवेष्टित गिरा को मुखरित तथा उद्गिरित करने वाली वात्सल्य से आप्लावित हो। सूक्ष्म से सूक्ष्म सवेदनाओ के ज्वार-भाटे के सवेगो का अनवरत सवहन का निर्वहन कर्ता, व्यावहारिकता, मनोवैज्ञानिकता एव वस्तु स्थिति का प्रत्यक्ष रूप से सच्चा क्रियान्वयक हो। मानव के उत्थापक दृष्टिकोण और उदीयमान तथा परिपक्व उद्गारो के तटस्थ उद्गाता की उद्गेयता का उद्वहन कर्ता हो।

पत्र कार्यालय के बहुमजिले भवन के पास चलकर आ, खिडकी खोलकर और उसमे से नीचे की ओर झाककर, कार्यालय के द्वार खोलकर और सोपान पंक्ति के द्वारा नीचे उतरकर, बाहर फुटपाथी सिसकती हुई मरणासन्न एव रेंगती तथा घिसटती हुई (शिक्षा एव रोजी के अभाव मे) दिनचर्या को परिचित करा उसे उजागर करने के आदर्श के साथ गगनचुम्बिनी अट्टालिकाओ के नीचे वाले भूगर्भो तक जिसकी प्राण शक्ति की पहुंच हो, जिसके योग्यतम खबर-खोजी सवाददाता, उन्मेषशाली लेखक, क्रान्तदर्शी कविगण, उत्प्रेरक सम्पादक वृन्दरूपी विशाल बाढ एव तीव्रतम लेखनी से निःसृत अग्र-लेख और सम्पादकीय हो।

अपनी व्यापकता के लिए विश्वविख्यात हो अर्थात् उत्तरोत्तर कीर्ति का सस्थापक हो। जिसने इतनी नुकीली एव प्राणवती सक्रियता के कार्यान्वयन का स्तुत्य प्रयास किया हो कि जिससे प्रभावित होकर मानव शरीर "समान" वायु के समान समाज का सयोजक वृन्द, उसके एक-एक शब्द प्राण सूघने केलिए भ्रमरो के भावसे अकुलाहट के साथ मण्डराता रहे। जिसके एक-एक वाक्य रूपी मकरन्द को पान करने की कमनीय कामना के साथ तृषित हो—पाठक यूथ मधुमक्षिका मण्डलीवत् उड्डीयमान रहे अर्थात् उडते फिरें, जिसकी एक-एक पंक्ति उभय पक्ष शासक और शासित के लिए रवि-रश्मि बनकर प्रकाशरूपी प्रसाद की प्रदातृ हो। जिसका एक-एक पृष्ठ पाठक परिधि को हृदयगम कर जिसका प्रत्येक स्तम्भ जाग्रत जगत् के लिए वर्तमान के भ्रम एव भविष्य के तिमिर मे तल्लीन पथ का प्रदर्शक तथा नानक प्रकाश-पुञ्ज बन सके। जिसके प्रत्येक अंक की व्यग्रतापूर्वक सामूहिक प्रतीक्षा की जाती हो, जो अपने शीर्षको के मुह बोलते चित्रो के माध्यम से, अपने प्रखर प्रेषण से बाह्यान्तर की द्विविधा प्रशसा प्राप्त का अर्जन कर सके।

"ऐसा हिन्दी पत्र गर्व करने योग्य एव बढिया लोकप्रिय हिन्दी पत्र हो सकता है।

विद्याव्रत विद्यार्थी (वेदालकार प्रथम वर्ष) डाकखाना,
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, जिला सहारनपुर (उ० प्र०)

हवन-यज्ञ और कुछ कड़वी मीठी सच्चाइयां

एक आर्योपदेशकजी ने आर्य सन्देश' द्वारा आर्यजगत और यज्ञ-हवन प्रेमियो को हवन-सामग्री की खोज की प्रेरणा दी है! जैसी हवन-सामग्री प्रयोग मे आ रही है, उसका महर्षि दयानन्द या किसी भी प्राचीन आचार्य ने विधान नही किया। सस्कार विधि मे महर्षि दयानन्द जी ने जिस हवन सामग्री का निर्देश किया उस पर गम्भीरता से कभी सोचा भी नही गया, न ही उसे प्रयोगा गया। जो कुछ मनुष्य स्वय खा सकता है, वे ही पदार्थ हवन-सामग्री के रूप मे प्रयोगे जाए, अन्त मे यजमान आदि यज्ञ-शेष भी खायें यही प्राचीन निर्देश मिलते हैं। ब्राह्मण-ग्रन्थों मे और प्राचीन यज्ञ-पद्धतियो आदि मे जिन छोटे-बड़े यज्ञो का विधान है, उनसे जाना जाता है, कि वातावरण

(शेष पृष्ठ ८ पर)

यह क्या हो रहा है ?

—चमनलाल
प्रधान, आर्यसमाज, अशोक विहार

'यह क्या हो रहा है' ये शब्द पाच सहस्र वर्ष पूर्व महाभारत काल मे महाराजा धृतराष्ट्र ने बडे खिन्न मन और दुखी हृदय से अपनी असह्य वेदना को प्रकट करते हुए महात्मा विदुरजी के प्रति कहे थे। धृतराष्ट्र महाराज बडे दुखी थे। यह चक्रवर्ती राज्य वास्तव मे उनका अपना नही था, इस विशाल राज्य के एकमात्र अधिकारी पाण्डव थे, परन्तु धृतराष्ट्र के पुत्रो कौरवो ने अन्याय से उसे अपनाया हुआ था।

धृतराष्ट्र स्वय इस अन्याय को सहन नही कर सकते थे, अत वह उसको पाण्डवो को लौटाने के पक्ष मे थे, परन्तु उनके दुष्ट पुत्रो की चण्डाल-चौकडी (दुर्योधन, दुश्शासन, कर्ण, और इनका मामा शकुनि) धृतराष्ट्र को ऐसा करने नही देती थी। इस दुष्ट दुर्योधन के दुर्व्यवहार के कारण राज्य-व्यवस्था पूर्णरूपेण अस्त-व्यस्त हो गई थी। चहुओर आतक छाया हुआ था। मगध के राजा अभिमानी जरासन्ध ने ८४ छोटे-बडे राजाओ को बन्दी बनाया हुआ था और सौ होने पर उन्हे देवी की बलि करने की प्रतिज्ञा की हुई थी। ऐसी अराजकता के कारण सारी प्रजा बडी दुखी थी, कोई भी सुरक्षित नही था। अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार और अनैतिकता जीवन के सभी क्षेत्रो मे व्याप रही थी। "जिसकी लाठी, उसकी भैंस" की नीति सबने अपनाई हुई थी। जीवन के प्राचीन मूल्य समाप्त प्राय से हो गये थे। वर्णाश्रम व्यवस्था समाप्त हो चुकी थी। आचार्यों ने भी परम्परागत आश्रमो मे सभी को राजपुत्रो एव सामान्य प्रजा की सन्तानो समान रूप से शिक्षा देने की पवित्र प्रणाली को स्वार्थ के वश छोड दिया था। द्रोणाचार्य जैसे तपस्वी गुरु ने अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए राजपुत्रो (पाण्डवो-कौरवो) को राजगृह में ही जाकर शिक्षा देना स्वीकार कर लिया था (राजा द्रुपद द्वारा एक समय द्रोणाचार्य अपमानित हुआ था और अपने अपमान का बदला लेने हेतु राजपुत्रो को राजगृह मे ही शिक्षा देकर, उन द्वारा द्रुपद को पकडने के हेतु)। यही नही नैतिक पतन इतनी पराकाष्ठा को पहुच गया था कि राजपुत्रो को इतना अभिमान हो गया था कि वे अपनी सत्ता के मद मे किसी की विद्वता का कुछ भी मूल्य नही समझते थे। इस कारण गुरु-शिष्य का पवित्र सम्बन्ध भी कलुषित हो गया था। सहपाठियो का आपसी प्रेम (श्री कृष्ण और सुदामा जैसा) समाप्त होना जा रहा था, इसके विपरीत ही तो द्रुपद और द्रोण यानी एक-दूसरे के शत्रु हो गए थे। स्त्री जाति की दुर्दशा कुछ कम, नही थी, राज दरबार मे बाल-ब्रह्मचारी दादा भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य जैसे महान व्यक्तियो ने इतने आचारहीन, चापलूस और खुशामदी हो गए थे कि सत्य को सत्य और अन्याय को अन्याय कहने मे असमर्थ थे—इतनी बुद्धि भ्रष्ट ऐसे महान योग्य लोगो की हो गई थी। मनोरजन के बहाने दुर्योधन और शकुनि की चाण्डाल चौकडी से किस प्रकार धर्मराज युधिष्ठिर को पासो के खेल मे फसाकर कपट-छल से किस तरह उसका राज्य हडप लिया और महारानी द्रौपदी का कितना महान अपमान भरी सभा मे किया गया, इससे कौन अपरिचित है और सब हुआ उन महान आचार्यों और भीष्म पितामह जैसो की उपस्थिति मे। जब यह सारा अत्याचार हो रहा था—और द्रौपदी-जैसी पतिव्रता नारी को पासो मे रखा गया तो ये सब लोग वही पर तो थे, जो जरा भी इस अन्याय के विरुद्ध अपना जुबान न हिला सके।

सारा परिवार और समस्त मन्त्रि-मण्डल आचारहीन और पापाचारी हो गये थे। हा, यदि उस समय राजदरबार और परिवार मे कोई न्यायप्रिय सत्य का साथी था, तो केवल वह था—महात्मा विदुर। यह तो कभी-कभी इस अन्याय के विरुद्ध कुछ कहना चाहता था, परन्तु अन्य सब उसकी आवाज को अनसुनी कर देते थे। राजनीतिक एव सामाजिक-सभी क्षेत्रो मे पतन की पराकाष्ठा थी। इसी कारण धृतराष्ट्र बडा चिन्तित और दुखी था। सचिव, गुरु अरु वैद्यजो बोले प्रियकमात् वह राज्य नष्ट-भ्रष्ट होत न लागे देर।

अर्थात् उस समय देश मे धन-दौलत, रुपया-पैसा, हीरे-मोती, हाथी-घोडे रथ तथा अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओ की किसी की कमी का अभाव नही था, तो भी प्रजाजन त्राहि-त्राहि कर रहे थे और पृथ्वी मृत्यु के मुख मे जा रही थी। चहुओर ह्रास था, क्योकि जीवन के सभी क्षेत्रो मे भ्रष्टाचार फैला था, इस दलदल से जनता को निकालने के लिए किसी धर्मात्मा आचारवान् निस्वार्थी व्यक्ति की आवश्यकता थी। और इतिहास इस बात का प्रमाण है कि युगपुरुष द्वापर युग के नेता योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी ने इस कमी को अनुभव किया और सत्य और न्याय का पक्ष लेकर इस मार्ग मे कूद पड़े और अपनी कार्य-कुशलता बेजोड सूझ-बूझ और आत्मबल से पतनोन्मुख राष्ट्र के जीवन मे चेतना डाली और बिखरे हुए देश को एक सूत्र मे बाधकर फिर से पुरानी गौरवमय स्थिति मे ला खडा किया और इसके बाद सहस्रो वर्षों तक सारे भूमण्डल का गुरु बना रहा।

अब जरा विचारिए तो सही कि पाच सहस्र वर्ष पूर्व धृतराष्ट्र से कहे ये शब्द "यह क्या हो रहा है"—क्या आज इस देश की स्थिति पर लागू नही होते। देश को स्वतन्त्र हुए छत्तीस वर्ष हो गए हैं, परन्तु नेताओ की प्रवृत्ति और आत्म-कल्याण की कुनीति के कारण स्वराज्य को सुराज्य न बना पाए आज की राजनीति, सारहीन, अव्यावहारिक और व्यवसायात्मक होने के कारण देश के निवासियो के जीवन के हर क्षेत्र मे भ्रष्टाचार व्याप रहा है और देश के बुद्धिजीवी वर्ग के लोग (जो किसी विकसित राष्ट्र समाज के प्राण होते हैं) कितनी ऊची थी यह भावना उन दिनो जब देश के दीवाने भगतसिंह, राजगुरु, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, सहदेव आदि अनेक लाल हर समय फासी की रस्सी को गले का हार बनाने के लिए उत्सुक रहते थे। जब आचारवान नेता, राष्ट्रपिता महात्मा गाधी, प० नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, लोकमान्य तिलक, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, देशबन्धु चितरजनदास, विपिन चन्द्रपाल, सावरकर और ऐसे अनेक निस्वार्थ सेवी नेता सिर-धड की बाजी लगाकर अपने उन्नत व्यवसाय, निजी सुख-सम्पदा को लात मारकर जेल की यातनाए सहना और सयम का जीवन व्यतीत करने की मानो प्रतिज्ञा उन्होने कर ली थी। इन महान नेताओ के सामने लोक कल्याण ही वास्तव मे आत्म-कल्याण था। और इसी पवित्र लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर राष्ट्रपिता ने जनता को विश्वास दिलाया था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यहा राम राज्य का-सा वातावरण स्थापित किया जाएगा, जहा सब देशवासी आपसी प्रेम से सयमी और सदाचारी होकर शाति के वातावरण मे रहकर सभी देशोन्नति मे लग सुख का जीवन बिताने वाले होगे।

परन्तु दुख है कि भ्रष्टाचार जैसा कि ऊपर लिख आए हैं—जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे व्याप रहा है, परन्तु राजनीति मे फैले भ्रष्टाचार की तो कोई सीमा ही नही रही। आज की राजनीति यथार्थवाद, वास्तविकता से नितान्त शून्य है इसलिए कोई समस्या हल नही हो पा रही है—असम मे गत तीन वर्षों से आग लग रही है, सहस्रो मासूम लोग घर से बेघर हो गए हैं, रोमाचकारी नर-सहार हो चुका है, परन्तु विदेशियो के निष्कासन की समस्या का कुछ भी हल तो नही हो रहा, दूसरी ओर पजाब मे उग्रपन्थी, आतकवादी सिखो ने पिछले दो वर्षों में न जाने कितने बेगुनाह लोगो को मौत के घाट उतार दिया, परन्तु शासन कोरा वक्तव्य देकर समस्या की इतिश्री कर देता है। कश्मीर की दशा तो और भी भयकर होती जा रही है। जन-साधारण का जीवन बडा अस्त-व्यस्त हो गया है। नेताओ की वोट (मत) की कुरीतियो के कारण। वोट के वास्ते ताकि कुर्सी कायम रहे, मुस्लिम और सिख सन्तुष्टि की नीति से देश को नष्ट-भ्रष्ट करके रख दिया है। पब्लिक सेवाओं में, सरकारी नौकरियो में—सब जगह इन (मुसलमानो) के लिए और हरिजनों तथा पिछडे वर्गों के लोगो के लिए स्थानों को सुरक्षित करने की नीति ने बहुसख्यक हिन्दू लोगो के हितो को जो विध्वसकारी आघात पहुचा है, वह तो एक और बात है, परन्तु इस नीति के कारण देश का विकास रुक गया है क्योकि इन आवश्यक सेवाओ मे अयोग्य व्यक्तियो ने घर कर लिया है और योग्य मारे-मारे फिरते हैं।

शराब, मास, होटलो में नव-युवतियो के नग्न नाच, आचार को गिराने वाली फिल्मो को दूरदर्शन पर दिखाना इत्यादि, इन ऋषि-मुनियो, कपिल, कणाद, गौतम आदि महान आत्माओ के देश की सस्कृति और सभ्यता को खुला चेलेन्ज है। हिन्दी राष्ट्र-भाषा होने पर भी जगह-जगह पग-पग पर ठुकराई जा रही है। भाषावाद जातिवाद, प्रदेशवाद, भाईचारावाद की समस्याए इतना उग्ररूप धारण करके सामने आ रही हैं कि देश विघटन की ओर अग्रसर होता जा रहा है। देश के नौजवानो की दुर्दशा सीमा से बाहर होती जा रही कोई आचारवान नेता इनका मार्ग-दर्शन को उपलब्ध नही है। सरकार ने कभी भी गम्भीरता से बच्चो की शिक्षा और जनता को प्रजातन्त्र के मूल्यो से अवगत कराने पर ध्यान नही दिया। परिणाम यह हुआ कि अशिक्षित मूढ जनता भेड़-बकरियो की तरह निर्वाचन के अवसर पर निर्वाचन स्थलो पर हाक कर लाई जाती है। दूसरी ओर शिक्षा का स्तर इतना गिर गया है कि कोई भी बच्चा जरा-से नेताओ के प्रभाव और रुपये के कारण बडी से बड़ी, ऊची से ऊची स्थिति पा सकता है।

आचारहीनता और भ्रष्टाचार इतना बढ गया है कि बडे से बडा स्थान इससे च्युत नही है। लूट-मार दिन-दहाड़े डाकाजनी, बैंको का लूटना भ्रष्टाचार के ही कारण तो ये पनप रही हैं सब बातें। रिश्वतखोरी, घूस देने-लेने का बाजार इतना गर्म है कि इस दुष्वृत्ति के कारण कुछ भी सम्भव हो सकता है। पब्लिक से सम्बन्धित सरकार का कोई भी विभाग इससे च्युत नही है। सक्षेप में यही कहना पर्याप्त होगा कि स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि न्याय पसन्द, सरल स्वभाव, आचारवान, बुद्धिजीवी के लिए इस समय यहा कोई स्थान नही है और सड-सड कर मरना ही उसके भाग्य मे मानो लिखा है।

आर्य बन्धुओ! ऋषि ने देश की प्राचीन सभ्यता, सस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए अपने जीवन की बलि दी थी और इस पवित्र कार्य को आगे ले जाने के वास्ते आर्यसमाज की स्थापना की थी।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

एक सत्यकथा

धर्मजीवी

—सुदर्शन गांधी

सुचिता शिवरानी वैसे तो एक साधारण-सी स्त्री थी, पर उसका रगरूप का निखार लोगो का ध्यान उसकी ओर खीचता था। सबसे बडी उसकी विशेषता यह थी कि वह रामायण का पाठ बड़े ही सुन्दर और बड़े ही रसीले ढग से करती थी। पाठ अयोध्या काण्ड का हो या सुन्दर काण्ड का, वह चौपाई-दोहे गाते-गाते उसमे इस प्रकार से डूब जाती कि उसको अपने आसपास के वातावरण का ध्यान ही न रहता और आखो से अश्रुधारा अविरल रूप से बहती जाती। वाणी का मिठास और रस मे भीगे-भीगे शब्द जब-जब शुचिता शिवरानी के मुह से निकलते तो सुनने वाले झूम उठते। यही कारण था कि शुचिता महिला समाज की अनिवार्य अग बन गई थी।

उसकी आयु तीस-पैंतीस के करीब होगी। सुन्दर नाक-नक्शा, बालो के बीच सीधी माग मे ढेर सारा सिन्दूर उडेल कर उतना ही बिन्दी का बडा टीका लगाकर, कोई भी सस्ती-सी साडी पहनकर वह एक प्रकार से घर-घर की रौनक बन गई थी। गली-मुहल्लो से उसको अक्सर बुलावे आते रहते। किसी नवजात शिशु का नामकरण हो या कोई गृह-प्रवेश का मुहूर्त हो या कोई तीज-त्यौहार, शुचिता का आना आवश्यक था। रामायण को लाल रग के गोटे वाले कपडे मे लपेटे, वह ठीक समय पर जा पहुचती और फिर तो ऐसे मुग्ध भाव से झूम-झूम कर वह रामायण की चौपाइयो का सस्वर पाठ करती कि सब झूम उठते। शुचिता को ऐसा आभास होता कि साक्षात् राम उसके सामने बैठे हैं, और वह उनके चरणो मे लोट-पोट हो रही है। वहा बैठी स्त्रियो मे 'धन्य-धन्य' की आवाजें गूज उठतीं। शुचिता की रामायण-कथा के प्रति इतनी गहरी आस्था यों ही नही पैदा हो गई थी प्रत्युत इसकी पृष्ठभूमि मे उसके माता-पिता द्वारा दिए गए सस्कार थे। शुचिता की रामायण के प्रति अगाध निष्ठा उसके पिता की धरोहर थी। जो कि उसको विरासत मे मिली थी, बहुत बचपन मे ही वह अपने पिता के साथ बैठकर रामायण का पाठ थोड़ा-थोड़ा करना सीख गई थी। रामायण के कई दोहे-चौपाइयां तो उसे कठस्थ हो गई थीं। उसके पिता छोटी शुचिता को कई बार जलसो-सत्संगो मे ले जाया करते थे। जहा वह काफी सख्या मे आए जनसमूह को रामायण कठस्थ किए हुए दोहे-चौपाइया सुनाया करती थी।

रामायण किस प्रकार शुचिता की अभिन्न मित्र बन गई और शुचिता ने क्योंकर भगवान राम को अपना इष्टदेव माना, एक प्रकार से बहुत कुछ त्याग कर। इसका एक कारण और भी था जो कि भक्तिन शुचिता को जानने वालो मे से बहुत कम लोगो को ज्ञात था। कभी-कभी सुन्दर काण्ड को पढते-पढते जब उसका गला रुधने लगता, आखो से बूदें टपटप गिरतीं, तो सुनने वालो की भी आखें भर आतीं। शुचिता मातृत्व के सुख से वचित थी। उसकी कोख हरी नही हुई। दाम्पत्य जीवन के अलमस्त सुख से शुचिता वचित थी उसका पति इस काबिल नही था कि वह उसके बच्चे की मा बन सके। गहरी वेदना, कष्ट और मानसिक उत्पीडन के कारण, रामायण की कथा उसकी एक सम्बल, एक सहारा बन गई, वह भक्ति की ओर झुकती चली गई। रामायण की चौपाइयो मे छिपे रहस्यो तथा आदर्शों मे वह जीने की राह ढूढ रही थी। धीरे-धीरे वह घर-गृहस्थी की बातें भूलती जा रही थी और वह दिन दुपहरी सझा रामायण की कथा सुनाती रहती। घर-गृहस्थी की उसे कुछ खास चिन्ता न थी। रिश्तो मे उसकी ममेरी बहिन के रूप मे एक अनाथ लडकी उसके घर मे ही रहती थी और वह घर का कारोबार एक तरह से सम्भाल लेती थी।

दिनो-दिन शुचिता अपनी भक्ति-भावना के कारण उस शहर का मुख्य आकर्षण बन गई। एक दिन उसे एक ऐसा बुलावा आया, जिसका नाम सुनते ही वह प्रसन्नता से मस्त हो गई, वह बुलावा उस शहर के एक पहुचे हुए महन्त की ओर से था जिसका इस शहर मे बहुत नाम था और जिसकी बहुत बडी हवेली थी। हवेली का मुख्य द्वार सोने के पानी से मढा हुआ था और मुख्य हाल के ऊपर कलश भी सोने का था। महन्त साल्ध्य समय मुख्य हाल मे पहुचकर अपने भक्तजनो को दर्शन देते। सोने की हत्थो वाली कुर्सी पर विराजमान होते। ठीक पीछे दो सेवक मोर के पखों वाले बडे-बड़े पखो से उन्हें पखा झलते। दाईं ओर उनके एक ओर सेवक खडा होता, जिसके हाथ मे पीकदान होता और जिसमे महन्त जब-तब थूक देते। उनके सामने दरी पर उनके दर्शनाभिलाषी भक्तजन उनके चरण छू-छूकर बैठते, दायी ओर पर्दे की ओट मे स्त्रिया बैठती, महन्त पहले तो कुछ प्रवचन कहते, इसके पश्चात् शकासमाधान करते। शका समाधान का समय अलग-अलग भक्तो को अलग-अलग दिया जाता तथा स्त्रियो को अलग तथा पुरुषो को अलग।

इसी 'शका-समाधान' के दौरान एक दिन शुचिता ने भी अपनी समस्या महन्त को कह डाली—'स्वामी जी, आज तक मेरी गोद खाली है। आशीर्वाद दो कि मैं मा बन सकू।"

महन्त ने भक्तिन को निरखा-परखा, गुरुमन्त्र भी दिया और उसकी कथा मे बार-बार आने को कहा। जिस दिन शुचिता को घर पर हवेली मे आने का बुलावा मिला, कि उसे इतने सिद्धहस्त के आगे कथा बाचने का अवसर मिलेगा, तो शुचिता का रोम-रोम पुलकित हो उठा। उसने सोचा कि इतने बडे सन्त की सेवा का फल यो ही व्यर्थ नही जाएगा, उनका आशीर्वाद शायद उसको मातृत्व का वरदान दे जाए और उसकी झोली भर जाए। बस फिर तो उसने सोचना क्या था? थोडे समय पश्चात् वह उनके दरबार मे उपस्थित थी। महन्त के श्रीचरणो को छूकर वह एक ओर बैठ गई। महन्त ने सुरमे लगी आखो से उसकी ओर देखा। स्नेहिल मुस्कान बिखरते हुए शुचिता से कहा तुम्हारा कथा बाचना अद्वितीय है, लोग-बाग से हमने तुम्हारा वर्णन सुना है, रामभगवान की भक्तिन हो तुम।'

शुचिता सिर झुकाए महन्त के शब्द आत्मसात् करती रही, जैसे किसी ने मिश्री घोलकर उसे पिला दी हो। महन्त फिर बोले, "देवी किसी दिन इस हवेली मे भी तुम्हारा पाठ हो जाए, हम भी सुनना चाहेगे तुम्हारे भक्ति-भजन को।"

"जो आज्ञा देवता" शुचिता मन से अतीव प्रसन्न पर ऊपर से हिचकते-हिचकते कह गई। महन्त ने अपने अगले दिन आने की आज्ञा दी। महन्त जी की आज्ञा सिर आखो पर, कर शुचिता घर को रवाना हो गई। शुचिता का मन हिलोरें ले रहा था। उसे लगा श्रीराम का अवतार लेकर महन्त जी ने शबरी के हाथो झूठे बेर खाने का आग्रह किया है। वह अगले दिन हवेली मे पहुच गई। हवेली के सब लोग अपने-अपने आसन पर आसीन थे। एक ओर महन्त अपने चौड़े हत्थे वाली कुर्सी पर विराजमान थे, शुचिता ने महन्त के चरण छुए और पाठ शुरू करने की तैयारी मे लग गई। उसका स्वर दिशाओ मे गूज उठा, सस्वर वह गा उठी।

चौ० जो आपना चाहे कल्याना।
सुजसू समति सुभगति सुखनाना।।
सो पर नाई लिलास गोसाई।
तजऊ चउथि के चद की नाई।।

ऐसा वातावरण ऐसा दृश्य वह उपस्थित कर लेती थी कि देखने वाले और सुनने वाले अभिभूत हो जाते थे। अपना होशहवास खोकर। उस समय भी ऐसा लगा कि वह भावविह्वल होकर भक्ति के सागर मे गोते लगा रही थी। महन्त पर कुछ और प्रकार की प्रक्रिया हुई। वह अपलक उस स्वर की स्वामिनी को मद-मद, मुस्कान सहित देखते रहे। इसके पश्चात् कई बार ऐसा होता कि मास बीतते न बीतते हवेली मे आने का बुलावा आ जाता। इस बार जो आदेश मिला, वह अखण्ड पाठ का था। इसके लिए रात को भी वहा ठहरने का आग्रह था। प्रबन्ध की कोई कमी न होगी, सेवक-सेविकाए हाथ बाधे खड़ी रहेगी। ऐसा महन्त की ओर से विश्वास दिलाया गया था। शुचिता भी इन्कार कैसे करती। रात के ६ बजे पाठ का आरम्भ हुआ। शुचिता ने अपना आसन जमाया। रामायण पर नया गोटा लगा कपडा चढाया। फूलो से उस ग्रन्थरत्न की पूजा की। धूप-बत्ती जलाकर आरती उतारी और पाठ आरम्भ हो गया। शुचिता को भी नया गोटे किनारे वाला दुपट्टा ओढाया गया। माथे पर चौडी बिन्दिया, राम के नाम का ढेर सारा सिन्दूर और साक्षात् सुन्दरता की मूर्ति बनी वह पाठ करने लगी। स्वर उभरने लगा, गति बढने लगी, समा बधने लगा, लोगो के सिर किसी कलपुर्जे की भाति हिलने लगे। पाठ चलता रहा, विधिपूर्वक चलता रहा। शुचिता कहती रही। लोग आखें बन्द करके आनन्द लेते हुए सुनते रहे और राम नाम का जयकारा लगाते रहे।

बारह-एक बजे तक तो श्रोताओ ने खूब साथ दिया, झूम-झूम कर राम जी के चरणो मे सिर नवाते रहे, अपना लोक-परलोक सुधारते रहे, पुण्य कमाते रहे, सासारिक बधनो से कटते रहे, पर धीरे-धीरे नीद उन पर हावी हो रही थी, एक-एक दो-दो करके लोग अपना आसन छोड रहे थे, पहले बच्चे और फिर स्त्रिया भी उठने लगी, कुछ लोग वहा पर दरी पर पसर गए यहा तक कि दो-चार को छोडकर सब नीद की शरण मे पहुच गए। वह दो-चार भी आधे सोए आधे जागे की अवस्था मे थे। पर भक्तिन बिना रुके एक लय मे पाठ किए जा रही थी—जय जय राम, राम जय जय राम, उसके मुख पर थकान का कोई निशान न था।

कुछ समय निकला होगा। एक सेवक शुचिता के पास आकर फुसफुसाया। शुचिता नही समझी। सेवक ने 'महन्त' का कुछ कहकर एक ओर को इशारा किया। शुचिता कुछ भी न समझ सकी और फिर से उसने अपना छोडा हुआ प्रसग आरम्भ कर दिया। कुछ क्षण और बीते होगे, सेवक फिर से आ पहुचा और कुछ 'फुस-फुस' करने लगा। बार-बार प्रसग टूट रहा था, इससे शुचिता ने सोचा, चलो पहले निपट लें फिर कथा मे ध्यान नही टूटेगा। ऐसा सोचकर वह पल्ला सभालकर उधर की ओर बढ गई। एक दरवाजे के आगे आकर वह ठिठक गई, निश्चय नही कर पाई। पीछे मुडकर सेवक की ओर देखा कुछ पूछना चाहा, सेवक ने अन्दर जाने को इशारा किया। शुचिता हैरान-परेशान, क्योकर उसको कथा छोडकर इधर आने को कहा गया है? किसको उसकी इतनी जरूरत पड गई कि राम की कथा उसके आगे हेय हो गई? फिर भी उसके सेवक के इगित के अनुसार कमरे के दरवाजे को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य जगत् समाचार

मुसलमान सिखों के हितैषी नहीं हैं

अलगाववादियों को पाक मदद सिख सरदार भगतसिह से सीख लें।

रविवार २४-७-८३ को फरीदाबाद मे श्री सत्यदेव आर्य की अध्यक्षता मे पजाब सुरक्षा दिवस मनाया गया। जिसमे फरीदाबाद क्षेत्र की समस्त आर्यसमाजो व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद फरीदाबाद मंडल मे भाग लेकर एक सभा बुलाई। सभा मे श्री गोपी राम, श्री बलवीर सिंह आर्य, अध्यक्ष महोदय, श्री सोमदेव आर्य, श्री सत्यप्रकाश, श्री चन्द्र गुप्त, श्री गिरधारी लाल, श्री ओमप्रकाश, तथा श्री विनायक शर्मा आदि ने विचार प्रकट किए। वक्ताओ ने यह तथ्य उजागर किया कि सभी सिख गुरुओ ने अपना सारा जीवन हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये लगाया, यहा तक कि पाचो प्यारे भी हिन्दू ही थे। फिर सिख अपने आपको कैसे हिन्दुओ से अलग समझते है।

ये समाचार भी मिल रहे हैं कि पाकिस्तान तथा अन्य मुस्लिम देश इस आन्दोलन मे उग्रवादी अकालियो को हर प्रकार का सहयोग कर रहे हैं। जो कि कभी आपस मे भी मिलकर न रह सकें और अपने शासन काल मे हिन्दुओ (सिखो) पर जुल्म ढाते रहे हैं। क्या वे मुसलमान कभी सिखो (हिन्दुओ) के हितैषी बन सकते हैं ?

इस समाचार पर विचार किया गया कि लीबिया की गद्दाफी सरकार ने खालिस्तान के दावेदार जगजीत सिंह चौहान को लीबिया आने का निमन्त्रण दिया गया है। प्रस्ताव मे सरकार से अनुरोध किया गया कि लीबिया सरकार को कडा विरोध पत्र भेजा जाए। इस निमन्त्रण को भारत के आन्तरिक मामलो मे दखल माना गया। इसके पीछे यह भावना नजर आती है कि तुम खालिस्तान मागो हम दूसरा पाकिस्तान मागेंगे। शायद इसी षड्यन्त्र के अन्तर्गत मुसलमानो को नकली सिख बना कर पजाब मे भेजा जा रहा है। यह उनकी इस्लामी योजना का षड्यन्त्र दिखाई देता है।

प्रस्ताव मे सरकार से माग की गई कि जिन धार्मिक स्थानो मे हथियार जमा किए गए हैं या अपराधी छिपकर गए हैं। उन्हे सरकार अपने नियन्त्रण मे ले तथा ऐसा प्रबन्ध किया जाए कि भविष्य में पूजास्थलो का दुरुपयोग न हो। हत्यारो व अपराधियो को स्वर्ण मन्दिर से निकालने के लिए पुलिस या आवश्यकता हो तो सेना को भी बुलाया जाए।

प्रस्ताव मे सरकार से माग की गई पजाब मे तुरन्त राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए क्योकि पजाब सरकार व पुलिस व्यवस्था बनाए रखने में असफल रही है।

२४ जुलाई के एक समाचार मे भिडरवाला ने कहा है कि घरेलू उडान मे सिखो की किरपान छोटी कम दी गई है हिन्दुओ का जनेऊ छोटा क्यो नहीं किया गया। साथ मे कहा कि सिखों के कारण ही पाकिस्तान की सीमा आज बाघा तक है वर्ना आज यह सीमा यमुना तक होती। शायद श्री भिडर-वाले को इतिहास की जानकारी नही है, जिस वीरता की वे बात करते हैं वह सिखो मे यज्ञोपवीत (जनेऊ) के कारण से ही है। इसका ज्वलन्त उदाहरण शहीद सरदार भगतसिह हैं। जिन्होने ७ वर्ष की आयु मे यज्ञोपवीत धारण करके देश के काम आने की प्रतिज्ञा की थी। इसी प्रतिज्ञा ने उन्हे देश पर बलिदान होने की प्रेरणा दी थी। जिसकी पुष्टि उनके उस पत्र से होती है जो उन्होने लाहौर डी. ए वी कालेज से जाने के बाद अपने दादा जी को लिखा था। वर्ना असेम्बली मे बम फेंककर भगतसिह के लिए भागना कोई मुश्किल कार्य न था। भागकर वह कायरता का कलक नही लगवाना चाहता था। यज्ञोपवीत (जनेऊ) तथा डी ए. वी कालेज लाहौर ने ही उसे कायर बनने से बचाया तथा स्वतन्त्रता सग्राम के चोटी के शहीदो की पंक्ति मे लाकर खडा कर दिया।

उपर्युक्त प्रस्ताव लोकसभा अध्यक्ष को भेजा गया है। प्रतिया प्रधान मन्त्री, गृह मन्त्री, मुख्य मन्त्री हरियाणा व पजाब प्रोफेसर शेरसिह जी, श्री वीरेन्द्र जी, दिल्ली प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक सभा, स्थानीय लोक सभा सदस्य तथा स्थानीय समाचार-पत्रो को भेजी गई है।

डी० ए० वी० अजमेर का छात्र राजस्थान बोर्ड मे सर्वप्रथम

आर्यसमाज अजमेर के अन्तर्गत सचालित डी० ए० वी० हायर सैकेण्डरी स्कूल, अजमेर की कक्षा १० का छात्र सजीव कुमार जैन ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की सैकेण्डरी वाणिज्य परीक्षा में समस्त राजस्थान मे प्रथम स्थिति से उत्तीर्ण होकर राज्य स्तरीय योग्यता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

धर्मजीवी (पृष्ठ ५ का शेष)

ठेल कर कमरे मे पदार्पण किया। उसकी परेशानी की कोई सीमा नही थी, जबकि उसने देखा कि वह तो महन्त के शयनागार मे पहुच गई थी। महन्त साक्षात् काम का रूप बनाए अपने गुदगुदे बिस्तरे पर अधलेटे से बैठे थे।

पीपल के पेड के पत्ते की भाति उसकी काया काप उठी। जब तक वह पीछे मुडने को पैर उठाती, पीछे का दरवाजा किसी ने धकेलकर बन्द कर दिया। उसके सामने क्या था। महन्त का ताबे जैसा तपा मुख ऐसी लाल आखें जैसे महन्त ने खूब पी रखी हो। शुचिता वहा की वहा खडी रही, मन के किसी कोने ने धिक्कारा, दिल जोर से धड़का, कुछ अनहोनी होने की आशका ने धर दबोचा पर फिर धर्म परायण शुचिता ने मन की एक न चलने दी, उसकी धार्मिक प्रवृत्ति उस पर हावी होने लगी, मन को मस्तिष्क ने ललकारा "जानती हो ऐसे सन्त-महात्मा की अवज्ञा का क्या फल होता है, नरक मे कीडे पडते है।"

इस प्रकार से शुचिता ने अपने मन को समझाना और सात्वना देना ठीक समझा। तभी महन्त ने भी देखा कि शुचिता का मन-भटकाव की स्थिति मे है। महन्त अनुभवी व्यक्ति था। शुचिता को ऐसी द्वन्द्वमय स्थिति मे देखा तो जरा ठहर-ठहर कर उसने तीर फेंकना शुरू किया। धीरे-से उसने घुटी-घुटी आवाज मे अपना आदेश जारी किया—महन्त ने उसे अपने पास आने को कहा, शुचिता का एक पैर आगे, एक पीछे, किसी प्रकार वह घिसट-घिसट कर वहा पहुची, महन्त ने अपने पैर दबाने को कहा। वह पलग की पाटी का सहारा लेकर जमीन पर घुटने टेककर उनके चरणो को दबाने लगी। महन्त ने शुचिता के सिर पर वरदहस्त का आशीर्वाद देते हुए उसे पलग पर बैठने का आदेश दिया। प्रभु की आज्ञा का उल्लघन कैसा ? यह सोचकर उनके चरणो मे बैठ गई। महन्त ने अपने शब्दो मे मिश्री घोलते हुए शुचिता पर पहला जाल फेंका। हमने इसलिए तुमको इस एकान्त मे और रात की इस घडी मे बुलाया है कि हम तुमको एक मन्त्र के वशीभूत करके तुमको अपना कृपापात्र बनाएगे जिससे तुम्हे सतान-प्राप्ति होगी, तुम मा बनोगी, तुम्हारी चिर साध को हम पूरा करेंगे।"

शुचिता का अब डर एक पल में फुर्र-सा उड गया, उसने अपने मन को ठोक बजाकर समझाया। वह प्रसन्नवदन बोली "आप मेरे ईश्वर हो" महन्त ने अगला कदम उठाया। यह तुम्हारी इच्छा तभी पूरी होगी जब तुम कुछ एक अनुष्ठान व्रत कर सकोगी। ग्यारह बार तुमको हमें इसी शयनकक्ष मे इस प्रकार से मिलना होगा, और इक्कीस मगलवार तुमको भूखा रहकर व्रत रखना होगा। उन्होंने फिर कहा "तुमको हमारा सामीप्य ग्रहण करना होगा, देवि, मन को साधो डर किस बात का। तन का आवरण हटाकर हमारे मन की गहराई को ग्रहण करो।"

ऐसा कहते-कहते महन्त ने पलभर से भी कम समय में अपने चरण छुड़ाकर अपनी बलिष्ठ बाहो मे शुचिता को कसकर पकड़ लिया और अपने पलंग पर ठेल दिया।

शुचिता एक बार शेरनी की तरह बिफरी, पर महन्त की जोरा-जोरी के आगे उसकी एक न चली। शुचिता ने चिल्लाना चाहा। महन्त के जबडों की पकड ने उसकी सिसकारी को वहीं रोक दिया।

केवल उस रात ही नही, प्रत्युत कई बार कई मौको पर शुचिता को महन्त की ओर से महन्त के विश्वस्त सेवको द्वारा बुलाया जाता और वह नारकीय जन्तु अपनी काया की भूख शान्त करता। जब कभी शुचिता आनाकानी करती, उसे डरा-धमका कर आने को मजबूर किया जाता। इस प्रकार से वह प्रवचन करने वाला विद्वान् मनस्वी महन्त घोर पाखंडी था और शुचिता जैसी कितनी-अबलाओ को वशीभूत करके अपना विश्वास उन पर जमा कर, अपनी भूख को शान्त करने के लिए उनको विवश करता रहता, कौन जानता था इस तथ्य को शायद कोई भी नही और कभी भी कोई न जान पाता, यदि एक दिन एक ऐसी भयावह घटना न घटती जिससे महन्त की क्रीडा लीला का प्रपच खुलकर सामने आ गया था।

महन्त का दर्शन करने और अपनी शका-समाधान करने के लिए काफी सख्या मे स्त्रिया वहा आया करती थीं। एक और स्त्री इसी प्रकार शुचिता की भाति महन्त की वासना का शिकार बन गयी थी, वैसे तो इस बात का कानो-कान किसी को खबर न हो सकती थी क्योकि महन्त के सेवक खूब खबरदारी से रहा करते थे। पर उस स्त्री के दिल मे क्या आई कि उसने ऐसा घृणित कार्य करने के पश्चात् जीना व्यर्थ समझा क्योकि महन्त का वह कुछ बिगाड नहीं सकती थी, उसने अपने जीवन को ही खत्म करना ठीक समझा और इसी घटना के उपरान्त अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दी। आग की लपटों को एक घर में उठते देखकर अड़ोसी-पडोसी इकट्ठे हो गए। दो-चार ने हिम्मत करके थाने मे खबर कर दी। जब तक पुलिस का थानेदार पहुचा, वह अधजली लकडी की भांति सुलग रही थी। थानेदार ने उसका बयान मागा, कारण पूछा तो वह सिसक-सिसककर टूटे-फूटे शब्दों में बोली—"मैं तो मरूंगी ही पर औरों को बचा लो, महन्त को पकड़ लो, मेरा उसने सर्वनाश कर डाला। मैं पापिन हो गई।"

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाजों के सतसंग

रविवार १४ अगस्त १९८३

अन्धामुगल-प्रतापनगर—स्वामी शिवाचार्य जी, अशोक नगर—प० सुमेरचन्द्र विद्यार्थी; आर्यपुरा—आचार्य रामचन्द्र जी, आनन्द विहार—प० ओमप्रकाश शास्त्री, अमर कालौनी—प० खुशीराम शर्मा; किशन गज—पं० ओमप्रकाश गायक, कालका डी. डी. ए. फ्लेट—प० आशानन्द भजनीक, कृष्णनगर—प० देवीचरण देवेश; गाधी नगर—डा० रघुनन्दन सिंह; गीता कालौनी—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, ग्रेटर कैलाश-२ प० कामेश्वर शास्त्री, गुडमण्डी—शीशराम भजनीक, गुप्ता कालौनी—प० रामरूप शर्मा, ग्रीनपार्क—प हरिश्चन्द आर्य, गोविन्द भवन—प० ओ३म्प्रकाश वेदालकार, चूना मण्डी—प० तुलसीराम आर्य भजनोपदेशक, भोगल—प० विद्याव्रत शास्त्री, जनकपुरी सी०-३—प० दिनेशचन्द पाराशर, तिलक नगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, तिमारपुर—प० मोहनलाल गाधी; दरियागज—आचार्य विक्रम शास्त्री, देवनगर—प० रामनिवास शास्त्री, नारायण विहार—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, नयाबास—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; न्यू मोती नगर—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार, प्रो० सत्यपाल वेदार—पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, मोडल बस्ती—प० ओमप्रकाश शास्त्री, मोती बाग—पं० विद्याराम, महावीर नगर—तुलसीदेव सगीताचार्य, राणा प्रताप बाग—श्री मुनि शकर जी, बाली नगर—श्रीमती सुशीला राजपाल; रोहतास नगर—प० देव शर्मा शास्त्री, रमेश नगर—प० ओमवीर शास्त्री, लक्ष्मीबाई नगर—जय भगवान, लाजपत नगर—प० प्रकाशवीर व्याकुल, त्रिनगर—प० चुन्नीलाल, लोधी रोड—मनोहरलाल ऋषि, विनय नगर—श्रीमती गीता शास्त्री, विक्रम नगर—प० सोमदेव शर्मा, सदर बाजार—प० अशोक विद्यालकार; सराय रौहेला—डा० सुखदयाल भूटानी; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र, सोहनगज—प० रणवीर राणा, शादीपुर—प० रमेश वेदाचार्य, हौजखास—अमरनाथ कान्त, लड्डू घाटी—प० सत्यभूषण वेदालकार।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग।

यह क्या हो रहा है ?

(पृष्ठ ४ का शेष)

जब-जब हिन्दू-जाति, प्राचीन वैदिक सभ्यता तथा सस्कृति पर जिधर से भी आक्रमण हुआ या आक्रमण की सम्भावना हुई, ऋषि-भक्तो, देश प्रेमियो और सच्चे आर्य लोगो ने जान-माल की बाजी लगाकर इसकी रक्षा करने मे जरा भी ढील नही की। बडी से बडी विदेशी सत्ता बलशाली के भी दूषित इरादो को भी पूरा नही होने दिया। स्वतन्त्रता सग्राम मे भी ऋषि-भक्तो का अधिक भाग रहा। यह समाज हिन्दू-जाति और आर्य सभ्यता का अपने जीवनकाल से प्रहरी बनी चली आ रही है। इस समय भी देश इस सस्था के अलावा और कोई भी सस्था ऐसी नहीं है जो अपनी प्राचीन सभ्यता, जिसको मिटाने के लिए समस्त विरोधी शक्तिया और शासन भी लगा है—को बचाने की कुछ चिन्ता करे। अत. मेरी आर्य बन्धुओ से अपील है कि सब आर्य सस्थाए, आर्य वीर, एकजुट होकर अपने आपसी सब भेद-भाव भुलाकर, इस पवित्र सस्कृति सभ्यता को बचाने के लिए एक बडा आन्दोलन चलाए। याद रखिये केवल यज्ञ-हवन करने, मेज कूटने से काम न चलेगा। लोगो आलस्य प्रमाद को त्यागो और प्राचीन सभ्यता और सस्कृति को बचाने के आन्दोलन मे लग जाओ।

मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल से प्रवेश प्रारम्भ

मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल, डी० ४५।१२९, नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी मे प्रवेश आरम्भ है शिशु से आचार्य (एम० ए०) तक की कक्षाओ मे। आर्य पाठविधि से वेद, अष्टाध्यायी, गणित, भूगोल, विज्ञान आदि का शिक्षण। वेद के उच्चाध्ययन की सुविधाएं। निर्धन मेधाविनी छात्राओं को छात्रवृत्तिया। सात्विक पौष्टिक भोजन। स्वावलम्बन, मिस्नरी भावना। स्थान सीमित, प्रवेश चयन से।

(२) योग, साधना, सेवामय जीवन के इच्छुक वानप्रस्थियो को आमन्त्रण है। निजी कमरा बनाने हेतु मातृमन्दिर की भूमि उपलब्ध है। डा० पुष्पावती पीएच० डी० दर्शनाचार्य, विद्यावारिधि – अध्यक्षा।

भारत माता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे।

१७० ईसाई भाइयों ने वैदिक दीक्षा ली।

दिनाक २४-७-८३ रविवार ग्राम गुडगावा (आवला) बरेली मे भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा देहली के उपदेशक श्री अमृतलाल नागर के धर्मप्रचार के फलस्वरूप शुद्धि सभा शाखा बरेली के तत्वावधान मे ग्राम गुरुगाव जिला—बरेली के १७० पुरुषो, स्त्रियो और बच्चो ने ईसाई धर्म छोडकर हिन्दू धर्म में प्रवेश लिया। आर्यसमाज आवला के अधिकारी एव आर्य समाज अनाथालय बरेली व शाखा शुद्धि सभा बरेली के अधिकारियो की उपस्थिति मे प० दीपचन्द जी शर्मा कार्यालयाध्यक्ष भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा व श्री रामजीदास अकिंचन पूर्व मत्री आर्यसमाज आवला से यज्ञ पर हिन्दू धर्म की दीक्षा ली। यजुर्वेद के मत्रो द्वारा शपथ ग्रहण करके १५० वर्ष पुराने ईसाई भाइयो ने भारत माता के प्रति निष्ठावान रहने की यज्ञ कुण्ड पर शपथ ली। श्री चौधरी प्रेमपालसिह व चौधरी सोवरणसिंह गुरुगाव की उपस्थिति मे एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमे साहू जगदीशरण अग्रवाल तोपखाना बरेली वालो की अध्यक्षता मे साहू जगदीशप्रसाद गज आवला आदि ने अपने व्याख्यान मे हिन्दू जाति को जाग्रत होकर देश मे आने वाले धार्मिक सकट के प्रति जागृत होने की प्रेरणा दी। अन्त मे सभी ठाकुर, वैश्य, ब्राह्मण ने सहभोज मे सम्मिलित रूप से प्रसाद ग्रहण किया। गाव के अन्य जाति वाले हिन्दू यह देखकर चकित रह गए कि चौधरी प्रेमपालसिह, चौधरी सोवरणसिह और ब्रह्मपालसिह शुद्धि मुदाओ के हाथ से प्रसाद ग्रहण कर रहे है। याद रहे इस क्षेत्र मे छुआछूत का बहुत जोर है। इस सहभोज से गाव वाले बहुत प्रभावित हुए और उन्होने अपनी भूल स्वीकार की। अन्त मे प०दीपचन्द जी ने सबका धन्यवाद किया।

आर्यसमाज रोहतास नगर शिवाजी पार्क, शाहदरा—दिल्ली— प्रधान—श्री रामलाल शास्त्री, मन्त्री—श्री नेमपाल सिह वर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश रहेजा, प्रचार मन्त्री—धर्मदत्त जी, लेखा निरीक्षक—श्री गोविन्द लाल सेठी।

राष्ट्रविरोधी संगठनों पर प्रतिबन्ध लगे

आर्यसमाज बम्बई का भारत सरकार से अनुरोध

आर्यसमाज बम्बई की यह सभा पजाब की बिगडती हुई अवस्था को देखते हुए तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के आदेशानुसार निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करती है। दिनाक २४-७-१९८३ रविवार की यह सभा भारतीय गणतन्त्र के माननीय राष्ट्रपति श्री जेलसिह और माननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से निवेदन करना चाहती है कि सम्प्रति सीमा प्रान्त पजाब मे जिस प्रकार अनुशासनहीनता-अराजकता, हिन्दू धार्मिक स्थानो की पवित्रता को नष्ट करना तथा उन अपराधियो को शरण देकर हिंसा आदि कुकृत्यो को बढावा देना और खालिस्तानी मागकर अकाली दल और उनके साथ अनेक राजनीतिक नेता अपने व्यक्तिगत स्वार्थवश कार्य कर रहे हैं जो कि देश के लिए घातक सिद्ध होगा। ऐसे सगठनो पर शीघ्र से शीघ्र प्रतिबन्ध [illegible] आतकवादियों को नियन्त्रि[illegible]

साथ [illegible]ई की यह सभा यह भी निवेदन करना चाहती है कि वह वहां रह रहे अन्य धर्मावलम्बी लोग जो सिख समुदाय अर्थात् अकाली दल से सम्बन्धित नहीं है, उनके जान-माल की तथा उनके धार्मिक स्थलो की सुरक्षा की जाए, यदि समय रहते इसका निराकरण नही किया गया तो सम्भव है कि भविष्य मे भारत गणतन्त्र के विभाजन का भी सामना करना पड़े, अत. हमारा निवेदन है कि पजाब मे राष्ट्रपति शासन लगाया जाय, जिससे इस विकट स्थिति पर काबू पाया जा सके और देश मे शान्ति स्थापित हो सके।

आर्यसमाज देश की विषम स्थिति को सुलझाने में सदैव अग्रसर रहा है। देश उन्नत हो, यहा के देशवासी सुखी-समृद्ध हों यही आर्यसमाज की आन्तरिक इच्छा है। ऋषि दयानन्द ने कष्टमय अपना सम्पूर्ण जीवन देशहित निछावर कर दिया। उन्ही के अनुरूप आर्यसमाज का प्रत्येक व्यक्ति देश कल्याण कार्य मे आपके साथ होगा। धर्म और देश की रक्षाहेतु आर्यसमाज सदैव ही बलिदान देता रहा है और आज भी आवश्यकता पडने पर वह कर्त्तव्य से किंचित् भी विलग नही होगा।

हवन-यज्ञ (पृष्ठ ३ का शेष)

के सुधार-सशोधन आदि से भिन्न और अधिक उच्चतर उद्देश्य है। यज्ञ-हवन आदि का आजकल के यज्ञ-हवन तो प्रदर्शप्रिय और रूढ़ीवादी, दक्षिणा लोभी लोगों द्वारा ही आयोजित होते हैं। यदि ब्राह्मण-ग्रन्थों और गृह्य-सूत्रो के छोटे-बड़े यज्ञ विधान देखे विचारे जावें तो अधिकतर त्याज्य ही है, क्योंकि उनमे पशुबलि, नरबलि, जटिल, हास्यास्पद और अश्लीलतम विधान भी हैं। पहले श्रीकृष्ण जी ने, अब महर्षि दयानन्द ने यज्ञवाद का जो सुधार किया या चाहा वह नहीं हो सका। यज्ञ-हवन की पुरानी रूढिया मिटी नहीं, नई रूढिया प्रचलन पा गईं। पुरोहितशाही की बुराइयां भी आ गईं। आर्यजगत विचारे। —कृष्णचन्द्र एम० ए० काव्यतीर्थ ११/३ शक्ति नगर, देहली-७

धर्मजीवी (पृष्ठ ६ का शेष)

थानेदार सिर थामकर रह गया।

दूसरे दिन उस हवेली का मुख्य द्वार पत्थरो के टकराव से टूटा-फूटा पड़ा था। लोग हवेली को घेरे चिल्ला रहे थे—मार डालो [illegible] तेरी बोटी-बोटी न चीलों को खिला दें तो। कोई कह रहा था—दुष्ट तेरी बहू-बेटिया भी बाजार मे बिकेंगी, दुष्ट ढोग रचाए बैठा है। और शुचिता शिवरानी का कही नामोनिशान न था, पता नही वह कहां गायब हो गई थी।

[illegible] ग्रुप फ्लैट, २४२ एफ०, राजौरी गार्डन एक्स. दिल्ली-२७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा आदित्य प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष . ७ अंक ४४ | रविवार २८ अगस्त, १९८३ | १२ भाद्रपद वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५९

उग्रवादी और अलगाववादी देशद्रोही तत्त्वों से बचो

अकाली पाकिस्तान के हाथ की कठपुतली बने :

पूर्वी दिल्ली जमनापार की आर्यसमाजों द्वारा सभा अधिकारियो का स्वागत

आर्यसमाज, अनाजमण्डी शाहदरा में भव्य समारोह

रविवार दिनांक २१-८-८३ को शाहदरा मे

क्षेत्र की जिला उपसभा के तत्वावधान मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नव-निर्वाचित प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा एव उन द्वारा गठित मन्त्रिमण्डल व अन्तरग सभा सदस्यो का जमनापार की समस्त आर्यसमाजो द्वारा आर्यसमाज अनाजमण्डी शाहदरा मे स्वागत किया गया, जिसमे सभा-प्रधान के अतिरिक्त वरिष्ठ उपप्रधान श्री विद्याप्रकाश जी सेठी, सभा मन्त्री श्री प्राणनाथ घई, उपमन्त्री श्री हरिदेव आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलवन्तराय खन्ना, पुस्तकाध्यक्ष श्री दुर्गादास एव अन्तरग सदस्य सर्व श्री चौधरी हीरासिह, लाजपतराय, वीरेन्द्र प्रताप, सत्यपाल भाटिया, नेतराम शर्मा, विद्यासागर, राजसिह भल्ला, बलबीर सिंह, बहिन ईश्वर देवी धवन, हरिराम आजाद, श्रद्धानन्द इत्यादि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपस्थिति पर्याप्त थी। सभी उपस्थित नर-नारियो मे उत्साह था और सबने सभा के अधिकारियो का तन, मन एव धन से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। चौधरी हीरासिह जो पजाब की पदयात्रा से लौटे थे, ने पंजाब की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पंजाब में बड़ी गम्भीर स्थिति है और इस स्थिति के सुधार में आर्यसमाज ने विशेष योगदान करना है। इसलिए हमे केवल संध्या-हवन पर ही निर्भर न रहकर जन-सम्पर्क के कार्य को तीव्र करना चाहिए। सभामन्त्री एव सभा प्रधान ने आर्यसमाजो का आह्वान किया कि केवल स्वागत समारोह से कुछ नहीं बनेगा। आर्यसमाजो को सभा की योजनाओ जैसे ग्राम प्रचार योजना, प्रचार वाहन, आर्यवीर दल को शक्तिशाली बनाना, यज्ञों द्वारा घर-घर मे वैदिक धर्म प्रचार एवं पंजाब की समस्या के सन्दर्भ में अकाली उग्रवादी एवं अलगावादी देशद्रोही तत्वों के प्रति जनता को जागरूप करने मे पूरे वेग से कार्य करें। सभा प्रधान ने बताया कि अकाली पाकिस्तान के हाथ की कठपुतली बनकर देश से विद्रोह कर रहे हैं। पाकिस्तान ने भी अपने व्यक्ति सिखो के वेश मे भारत मे शरारत करने हेतु भेजे हुए हैं और सिखो को उकसाने के लिए पाकिस्तान रेडियो से गुरवाणी का पाठ भी शुरू

कर दिया है। अकाली उनके हाथ मे नाच रहे हैं। यदि वे पाकिस्तान को वास्तव मे अपना हितैषी समझते हैं तो ननकाना साहब को पवित्र स्थान घोषित करायें और उसे इटली स्थित वेटिकन सिटी घोषित कराएँ।

वन्देमातरम से राष्ट्रगीत की गूंज

लन्दन। १५ अगस्त के दिन लन्दन मे आर्यसमाज लन्दन के तत्वावधान मे यहा भारतीय स्वतन्त्रता दिवस बढे उल्लासपूर्वक मनाया गया। वन्दे मातरम भवन मे आयोजित इस कार्यक्रम मे लन्दन तथा निकटवर्ती नगरो मे प्रवासी भारी सख्या मे उपस्थित थे।

इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा थे। श्री गिरीशचन्द्र खोसला तथा यजमान आसनो पर आर्य बालक तथा तथा बालिकाऐं ही थी। यज्ञोपरात बच्चोद्वारा राष्ट्रगान जन-गण-मन का सुमधुर ध्वनि से सारा हाल गूज उठा। एक स्वर, एक ताल, एक लय पर गाए गए राष्ट्रगान से सम्पूर्ण वातावरण सुरभित हो गया। तत्पश्चात युवको द्वारा सगठित सरगम ग्रुप के कलाकारो ने रगारग गीत गाए तथा श्रोताओ का मनोरजन किया। सरगम के नायक श्री आदित्य चाठली के उत्साह की सराहना की गई।

आर्य युवा सगठन द्वारा प्रस्तुत मधुर गीत के पश्चात दो शास्त्रीय नृत्य हुए, फिर प्रारम्भ हुआ चिर प्रतिक्षित 'भगडा' नृत्य, रगारग वेषभूषा मे सुसज्जित बच्चो परंपरागत ढोल वादन के साथ थिरककर बहुत सुन्दर प्रदर्शन किया। इस नृत्य को तैयार करवाने के लिए साउथाल निवासी श्री सन्धु ने बहुत ही परिश्रम किया हिन्दू युवा सभा स्लाओ बर्कशायर के सदस्यो ने भारतीय सांस्कृतिक तथा धार्मिक जीवन पर स्लाइडें दिखाई। सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री भारद्वाज नेरोबो वालो ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए बच्चो को पारितोषिक वितरण किए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे श्री व श्रीमती त्रिलोक गाजरी, श्री व श्रीमती मोहनलाल कोहड ने जो परिश्रम किया वह सराहनीय है।

—गिरीशचन्द्र खोसला

अपने कार्य निष्ठा और राष्ट्रीयता से पूर्ण करो

ईमानदारी की प्रतिज्ञा करें—आर्य समाज

खण्डवा में नेताओं का परामर्श

खण्डवा। गत १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य मे आर्य समाज द्वारा सचालित स्कूलो का राम कालोनी मे झडा वन्दन करते हुए आर्य समाज के उपाध्यक्ष श्री मावजी भाई भानुशाली ने कहा कि—हमे अपने कार्य को निष्ठा, प्रामाणिकता, राष्ट्रीयता के आधार पर करना चाहिए।

कार्यक्रम के अध्यक्ष सहायक पजीयक सहकारी समिति एव आर्यत्व से ओत-प्रोत श्री सोमप्रकाश जी अग्रवाल ने कहा कि—प्रति वर्ष १५ अगस्त का त्योहार मनाया जाता है। हमे इस दिवस पर सकल्प करना चाहिए कि आगामी वर्ष मे जो भी कार्य करेंगे वे ईमानदारी से करेंगे। इससे देश का उत्थान होगा।

इसी अवसर पर वन विभाग के अनुविभागीय अधिकारी श्री सक्सेना साहब ने वनो का महत्व बताते हुए कि जीवित रखने के लिए हमें आक्सिजन की आवश्यकता होती है और यह आक्सिजन हमे पेड-पौधो से मिलती है। पेड ही हमे जिन्दा रखते है। हम मशीन के द्वारा आक्सिजन पैदा नही कर सकते। वृक्षो के कटने से पानी की कमी होने लगी है। वृक्षो का बड़ा भारी महत्व है। इनको बच्चों को समझना चाहिए। प्रकृति के सतुलन के लिए वृक्ष महत्वपूर्ण है।

राकेश रानी कटघरे में।

१६ अगस्त के दिन दिल्ली कचहरी मे कमरा न० २० मे प० राकेश रानी के विरुद्ध एक मुकद्दमे की कार्यवाही आरम्भ हुई और मैजिस्ट्रेट ने विचार के लिए १४ सितम्बर, १९८३ की अगली तारीख डाल दी। स्मरण रहे कि इस प्रकार के २२ अभियोग पण्डिता राकेश रानी के ऊपर चल रहे हैं। पण्डिता राकेश रानी ने अपने एक वक्तव्य में कहा कि वह दिन दूर नही जब सारे देश के मूर्धन्य राजनीतिज्ञो को हमारे मार्ग पर चलना होगा और देश द्रोहियों के विरुद्ध कडे से कडे कदम उठाने होगे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

विद्यामाहात्म्य

सरस्वती या सरथं ययाथ स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती।
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयस्वानमीवा इष आधेह्यस्मे॥ ऋग्वेद-१०।१७।८

अन्वय—या सरस्वति देवी स्वधामि पितृभि मदन्ती सरथ ययाथ, अस्मिन् बर्हिषि आसद्य मादयस्व, अस्मे अनमीवा इष आधेहि।

भावार्थ—(या सरस्वति देवि) यह जो अध्ययनाध्यापनरूप विद्या है वह (स्वधामि) सत्क्रियाओ के साथ (पितृभि) शिक्षको, आचार्यों, विद्वानो से सङ्गत हुई (मदन्ती) जनमानस को सुख पहुचाती हुई (सरथ) समुचित प्रकार से एक सुनिश्चित मार्ग पर आरूढ होकर अयाथ) प्राप्त होती है, (अस्मिन् बर्हिषि) इन विद्वानो की सभा मे (आसद्य) प्राप्त होकर (मादयस्व) हर्षित करती है, और (अस्मे) हमारे लिए (अनमीवा इष) आरोग्य कारक एव परम शान्ति आदि इष्ट क्रियाओ को (आधेहि) धारण कराती है।

सुधासार—इस मन्त्र मे पितर शब्द शिक्षको के लिए प्रयुक्त हुआ है और वास्तविक शिक्षक होते हैं, गुरु, आचार्य, विद्वान् माता-पिता एव आप्त पुरुष—इन सभी महानुभावो का हर स्थिति मे सत्कार एव सत्सङ्ग करते हुए परा-अपरा सम्बन्धित सभी शिक्षा पहलुओ को जीवन मे विकसित करना चाहिए वस्तुत ये पितर है जो अधो दुरितो कुसंस्कारो से हटाकर सद्मार्ग की प्रेरणा देते हैं। यह सरस्वती जो शिक्षा रूप मे प्राप्त होती है जीवन मे अवर्ण्य आनन्द प्रदान करती है इसलिए तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्व विषय विद्याधिकार कुरु"।

—रूपकिशोर शास्त्री

ज्योतिर्मय हो

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट

वेदो के पावन पथ पर, फिर चले हमारा देश।
ऋषि-मुनियो के गूजें भू पर—पुन मधुर उपदेश।
मित्र बनें धरती के सब जन, सभी दिशाए मित्र बनें।
हटें दनुजता के जो छाए, सदियो से हैं मेघ घने।
ज्योतिर्मय हो भू का कण-कण, ज्योतिर्मय हो जन-अन्तर।
ज्योतिर्मय हो आभा मन की—ज्योतिर्मय अवनी-अम्बर।
जाति-पाति का भेद मिटे सब, मिटे मनुजता उत्पीडन।
ज्ञानालोक धरणि पर फैले, नर का हो नव नयनोन्मीलन।
मोहाक्रान्त मनुज के उर मे, उठे नवलतम उद्बोधन।
प्रकृति जयी के गूढ रहस्यो—का सुन्दरतम सशोधन।
नव्य ज्योति पा ले अगडाई, मानव जगती का उद्भ्रान्त।
आर्य बनें सब भूमि निवासी—ज्योतिर्मय हो मन विश्रान्त॥

'तिस्रो रात्री: यद्वात्सी गृहे मे'

—सत्यव्रत सिद्धान्तलंकार

उपनिषदो मे कई रहस्यमय बातें उपाख्यानो मे समझाई गई हैं। कही-कही रहस्य पहेलियों मे उलझा दिए गए हैं। ऐसी ही एक रहस्यमय उलझन कठोपनिषद् मे नचिकेता के उपाख्यान में बधी हुई है। कहते हैं नचिकेता के पिता मुक्ति की कामना के लिए धन-धान्य से अपना सम्बन्ध मोड रहे थे, सब कुछ दान मे दे रहे थे। ऐसा लगता है कि वे भी आजकल के वानप्रस्थियो तथा सन्यासियो की तरह थे, जो न घर-बार छोडते हैं, न दुकान छोडते हैं, परन्तु वानप्रस्थियो या सन्यासियो का बाना पहन लेते हैं, और घोषणा कर देते हैं कि वानप्रस्थी हो गए या सन्यासी हो गए। अपने पिता को ढोग करते देखकर कि यद्यपि वह छोडने का दिखावा कर रहे हैं, तथापि वह छोड कुछ भी नही रहे, उसे क्रोध आया और अपने पिता को ललकारा कि यदि मुक्ति की कामना से कुछ छोडना है, तो मुझे छोडकर दिखलाओ। तुम तो घर-गृहस्थी के बधन मे पड़े हुए हो, दिखावा क्यो कर करते हो ? ऐसे व्यक्ति को जब चैलेंज किया जाता है, तब वह और जोर से दिखावे को सच दिखाने की कोशिश करता है। नचिकेता का पिता भी पुत्र की तरफ से चैलेंज आता देखकर उबल और कह बैठा—हा, तुझे भी छोडता हू, इतना छोडता हू कि तुझे मौत के हवाले करने को तैयार हू। कठोपनिषद् मे लिखा है कि लोलुप वानप्रस्थी पिता ने तो उसे क्या छोडना था, नचिकेता स्वय ऐसे ढोगी वानप्रस्थ पिता को छोडकर मृत्यु के द्वार पर जा पहुचा। मृत्यु घर पर नही थी, वह तीन रात बिना खाए-पिए मृत्यु दर्शन की प्रतीक्षा करता रहा।

यह कहानी के रूप मे एक रहस्यमय गुत्थी है। ऐसी कोई घटना नही हुई। इस घटना की रचना करके उपनिषत्कार ने एक वैदिक रहस्य को कुछ शब्दो तथा तथ्यो मे बाध दिया है। उन्ही पर हमे विचार करना है।

पहला शब्द है—'वाजश्रवस'। यह नचिकेता के पिता का नाम है। वाज का अर्थ है-अन्न। यह व्यक्ति बडा समृद्ध था, अन्न का इसके पास भण्डार था, इस अन्न-धन-धान्य के भण्डार के कारण ही इसे श्रवस कहा जाता था, श्रवस का अर्थ है जिसका सब जगह नाम सुना जाता है। उसके नाम की तारीफ होती है, नाम की धूम मचती है। वह प्रसिद्धि का भूखा था, अपने नाम का डका सब जगह बजता हुआ सुनना चाहता था ठीक ऐसे जैसे आज के नेता सब जगह-अखबारो मे, मीटिंगो मे जितना काम करके हाथी जितना भारी-भरकम बनना चाहते हैं। 'श्रवण' तथा 'श्रवस' भाई-बहन हैं।

दूसरा शब्द है—'नचिकेता' किति संज्ञाने धातु 'केता' शब्द बना है। 'नचि' का अर्थ है-नहीं। जो समझता है कि वह कुछ नहीं जानता, और न जानना चाहता है, उसे नचिकेता-अर्थात् जिज्ञासु कहते हैं। यहां नवयुवक पुत्र ही पिता के रग-ढग को देखकर जिज्ञासा मे पड गया, हमारे समाज में बड़े-बड़े ढोंगी अपने को नेता कहते हैं और क्योकि सभी किसी न किसी ढोग के शिकार होते हैं, सब एक-दूसरे की नेता-गिरि पर तालिया पीटते हैं, दिल में सोचते हैं तुम महात्मा हो तो हम भी महात्मा क्यो नही। नचिकेता ऐसा नहीं था, वह हर बात मे सोच-समझ से काम लेता था, पिता तक को नही छोडता था।

तीसरा शब्द है-'यम'। यम का अर्थ है 'मृत्यु'। वेदो में आचार्य को 'मृत्यु' कहा गया है 'आचार्यो' वै मृत्यु'। नचिकेता यमाचार्य के निवासस्थान पर पहुचा इसका सीधा अर्थ है कि नचिकेता ने आचार्य के सम्मुख जाकर अपने को मार डाला। आचार्य को 'यम' कहना और नचिकेता को अपने आपको मृत्यु के हवाले कर देना-इसमे वैदिक-सस्कृति का एक महान् रहस्य छिपा है। वह रहस्य क्या है ? बालक जब जन्म लेता है तब अपने तथा माता-पिता के सस्कारो को साथ लेकर आता है। बालको को आचार्य के सम्मुख आने के लिए उन सस्कारो को मिटा देना होगा, ताकि आचार्य कुल के सस्कार उसके चित्त-पटल पर पड़ें। इन सस्कारो को आसानी से नही मिटाया जा सकता। आचार्य जब मृत्यु रूप हो जाता है तब वह सकल्प कर लेता है कि बालक के पुराने सस्कार मिटाकर उसमें नवीन सस्कारो का आधान करेगा, तभी आचार्य मृत्यु का रूप धारण करता है और तभी उसे मृत्यु कहा जा सकता है और बालक के पूर्व सस्कारो की मृत्यु हो जाती है।

अब रही चौथी बात—आचार्य के कुल मे बिना खाए-पिए तीन रात बिताना 'तिस्रो रात्री' इसका अर्थ है ? तीन रात कहा। तीन दिन और तीन रात नही कहा। यहा तीन रात का मतलब तीन रात्रियो से नही है बालक जब आचार्य के पास जाता है, तब उसका जीवन अन्धकार-मय होता है, वह मानो अपना जीवन रात्रि मे अन्धकार में बिता रहा होता है। वे तीन अन्धकार कौन से है ? शारीरिक विकास का न होना-यह पहला अन्धकार या पहली रात्रि है। जब तक वह शारीरिक दृष्टि से पूर्ण पुष्ट तथा पूर्ण स्वस्थ नही होता, तब तक उसके जीवन की पहली रात है। शारीरिक के बाद उसके जीवन की दूसरी रात्रि मानसिक अज्ञान है। जब तक वह मानसिक-दृष्टि से पूर्ण ज्ञानमय नहीं हो जाता, सब विद्याओ का अध्ययन नही कर लेता तब तक उसके जीवन की दूसरी रात है। मानसिक अज्ञान के बाद उसके जीवन की तीसरी रात्रि आध्यात्मिक है, जब तक आध्यात्मिक दृष्टि से वह आत्मज्ञान नहीं प्राप्त कर लेता, तब तक उसके जीवन की तीसरी रात है। 'तिस्रो रात्री यद्वात्सी. गृहे मे' इसका यह अर्थ नहीं है कि नचिकेता मृत्यु के घर तीन रात तक भूखा-प्यासा बैठा रहा। इसका रहस्यमय अर्थ

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हमें निर्भय करें !

ओ३म् यतो यत. समीहसे ततो नो अभय कुरु।
शन्न. कुरु प्रजाभ्योऽभय न पशुभ्य' ॥

हे परमेश्वर, आप जिस-जिस देश से जगत् की रचना और पालन के अर्थ चेष्टा करते हैं, उस-उस देश से भय से रहित करिए अर्थात् किसी देश से हमको किञ्चित् भी भय न हो, वैसे ही सब दिशाओ में जो आपकी प्रजा और पशु हैं, उनसे भी हमे भयरहित करो।

ओ३म्
आर्य सन्देश

गीतोपदेष्टा श्रीकृष्ण का सन्देश

३१ अगस्त का दिन है श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का। उस दिन द्वापर युग मे श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ था। इस भारतभूमि मे वैसे तो अनेक महापुरुष हुए हैं, परन्तु उनमे से यहा की जनता के जीवन को यदि किन्हीं दो महापुरुषो ने सर्वाधिक प्रभावित किया है तो वे हैं पहले मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और दूसरे गीतोपदेष्टा श्रीकृष्ण जी। भारतीय सस्कृति एवं राष्ट्र के उन्नयन मे दोनो ही महापुरुषो का अद्वितीय योगदान है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर यह देखना समीचीन रहेगा कि इस भारत राष्ट्र को अपने समय मे श्रीकृष्ण महाराज ने क्या सन्देश दिया था ? जिस समय श्रीकृष्ण जी अवतीर्ण हुए थे, उस समय देश छोटे-छोटे राज्यो और इकाइयो मे बटा था। उस समय मथुरा मे कस, मगध मे जरासन्ध, चेदी मे शिशुपाल, हस्तिनापुर मे कौरव लोग राज्य कर रहे थे। उस समय श्रीकृष्ण महाराज ने छोटे-छोटे राज्यो मे बटे भारत को एक केन्द्रीय सदृढ शासन मे प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। मथुरा-वृन्दावन मे आतक स्थापित करने वाले कस को उन्होने स्वत नष्ट किया। ८६ के लगभग छोटे राजाओ को कैद कर १०० नरेशो को बन्दी बनाने की योजना बनाने वाले जरासन्ध को उन्होने भीम द्वारा मल्लयुद्ध मे सदा के लिए पराजित कर दिया। उसके बाद उन्होने राजसूय यज्ञ के माध्यम से पाण्डवो के नेतृत्व मे इन्द्रप्रस्थ दिल्ली मे एक केन्द्रीय शासन की प्रतिष्ठा की।

उस राजसूय यज्ञ के अवसर पर अर्घ्यदान देने का प्रश्न उठने पर भीष्म पितामह ने परामर्श दिया कि विभक्त बिखरे भारत को एक सूत्र मे बाधने के कारण श्रीकृष्ण ही अर्घ्य या पूजा के अधिकारी हैं। उस समय शिशुपाल ने उन्हे चुनौती देने की कोशिश की तो सुदर्शन चक्र से श्रीकृष्ण जी ने उसे वहीं समाप्त कर दिया। इस प्रकार पाण्डवो के नेतृत्व मे बृहत्तर भारत की परिणति हुई। खेद है कि युधिष्ठिर ने इस साम्राज्य को जुए मे दाव पर लगा दिया। ११ वर्ष के वनवास तथा एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद पाण्डवो को इनका खोया हुआ राज्य मिल जाना चाहिए था, परन्तु दुर्योधन ने पाण्डवों के दूत श्रीकृष्ण को कहा था—सूई की नोक जितनी भूमि भी वह बिना युद्ध के नही देंगे। युद्ध की प्रारम्भिक घडियों मे पाण्डवो के प्रमुख योद्धा वीर अर्जुन किंकर्तव्यविमूढ हो उठे थे। उन्हें कर्तव्य कर्म का-अन्याय और अत्याचारी से लडने का गीता का शाश्वत सन्देश श्रीकृष्ण ने दिया था। उस सन्देश ने उस समय के हताश कर्तव्यहीन अर्जुन मे उत्तरदायित्व का एक नया बोध दिया था। आज भी देश की हताश, निराश एव किंकर्तव्यविमूढ जनता को श्रीकृष्ण जी का कर्मयोग का गीता का सिद्धान्त मार्गदर्शन कर सकता है। इसी के साथ एक बात और भी स्मरण रखने की है कि अपने द्वापर युग पे श्रीकृष्ण जी के समय महाभारत एवं पुराणो के रचयिता श्री व्यास और आजन्म ब्रह्मचारी श्री भीष्म जैसे महापुरुष थे। स्वभावत जिज्ञासा होती है कि श्री व्यास सरीखे विद्वान् एव भीष्म सरीखे सच्चरित्र महामानव को इतिहास एव परम्परा मे वह सम्मान प्राप्त नही है जो कि श्रीकृष्ण को प्राप्त है।

श्रीकृष्ण जी भारत के सास्कृतिक एव राजनीतिक इतिहास मे सदा आदर से स्मरण किए जाते रहेगे। भारत राष्ट्र के लिए उन्होने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। उन्होने गीता का ऐसा अमर सन्देश दिया है जो सदा-सर्वदा मृतप्राय व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र और मानवता को कर्मयोग का सन्देश देता है। उनका दूसरा सन्देश शठ या दुष्ट का नियन्त्रण करने के लिए नीति का अवलम्बन उचित कहा गया है। दुर्योधन, कर्ण, द्रोण, भीष्म जैसे कौरव सेनापतियों को पराजित करने के लिए उन्होने नीति का अवलम्बन सदा ग्राह्य किया। उन्होने सत्य और न्याय का पक्ष लिया परन्तु चालबाजी से राज्य हडपने वाले और उसके अधिकारी व्यक्ति को उसका प्राप्तव्य देने से इन्कार करने पर उन्होने आपद्धर्म एव नीति के अवलम्बन को सदा उचित माना। भारतीय सस्कृति मे श्रीकृष्ण सोलह कलाओं से युक्त कहे गए हैं। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे उनके लोकोत्तर चरित्र और कार्यों की खुलकर प्रशसा की है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर आज गीतोपदेष्टा श्रीकृष्ण से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। सर्वप्रथम जिस प्रकार विभक्त भारत को एक सूत्र मे बाधने के लिए श्रीकृष्ण जी ने अपने और यादव कुल की प्रतिष्ठा का ख्याल न कर न्याय के पक्षपाती पाण्डवो का साथ दिया था, उसी प्रकार हमे भी व्यक्ति, प्रदेश के सकुचित स्वार्थो के स्थान पर मातृभूमि के हितो को प्राथमिकता देनी होगी। इसी प्रकार राष्ट्रद्रोही अलगाववादी तत्व जो कुछ कर रहे हैं, उनका अन्त करने के लिए श्रीकृष्ण जी सरीखी रीति-नीति अपनानी होगी।

अनमोल उपदेश

- विषय विष के समान घातक है, इसका परित्याग करना सुख का मूल है।
- जल मे डूबा मनुष्य बच जाता है, पर विषयो मे डूबा मनुष्य नही बच सकता।
- कुत्ता सूखी हड्डी चबाता है सूखी हड्डी मे खून नहीं होता, उसे अपने खून का स्वाद आता है, उसी में आनन्द समझता है यही दशा विषयी मनुष्यो की होती है।
- कामनाओ का दास भी बना रहे और सुख प्राप्त करने की आशा करे—यह असम्भव है। गाल फुलाना और हसना एक साथ नही होता।
- जो मनुष्य विषयों मे वैरराग्य चाहता है, यह एक बडा धोखा है, क्योकि विषयो मे एक आसक्त हो जाने पर सभलना मुश्किल हो जाता है।
- मन की चचलता, मन के दोष, विषयो मे आसक्ति, ईश्वर की शरण मे आने पर सारे दोष अपने आप दूर हो जाते हैं।
- मन की तरगो को रोकने मे जो आनन्द आता है इस आनन्द का अनुभव वही मनुष्य कर सकता है जो विषयो से दूर रहता है, जो विषयो को आनन्द मानता है वह इस आनन्द से वचित रहता है।
- जहा विषयों की चर्चा होनी है वहा नरक है, जहा ईश्वर की चर्चा होती है वही स्वर्ग है।
- महात्मा वही है जिसे कोई भी विषय मलिन नही कर पाता, बल्कि मलिनता भी उसे छूकर पवित्र बन जाती है।
- मनुष्य अपनी प्रत्येक वासना पर विजय प्राप्त कर सकना है, क्योकि उसी अनन्त परमात्मा का अश है जिसकी शक्ति का सामना कोई नही कर सकता।
- जो विषयों का प्रेमी है वही बधा हुआ है, विषयो का त्याग ही मुक्ति है।
- विषयो मे आनन्द का स्पर्श मानकर जो प्राणो की बाजी लगाकर उसी की तरफ दोडते हैं वे विषय-विष स्वादन से सतप्त होकर पुन-पुन जन्म-मृत्यु का दुखान्त नाटक खेलते फिरते हैं।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

महर्षि शताब्दी पर : आर्यजनता को सामूहिक निमन्त्रण

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह दिनाक ३, ४, ५, ६ नवम्बर १९८३ को अजमेर मे मनाया जा रहा है, जिसकी सूचना आपको भिन्न भिन्न माध्यमो से दी जाती रही है। अखिल भारतीय आर्य यति मण्डल ने यह निश्चय किया है कि सन्यासी गण चारो दिशाओ से पद-यात्रा करते हुए इस यज्ञ मे सम्मिलित होंगे। हमारा सभी विद्वानो, उपदेशकों, भजनोपदेशको तथा आर्यसमाज से सम्बन्धित सभी सस्थाओ सगठनो एव समस्त आर्यजनो से नम्र निवेदन है कि आर्थिक तथा अनेक कठिनाइयो को सहन करके भी इस यज्ञ मे अवश्य सम्मिलित होगे।

हमारे जीवन मे ऋषि के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करने का दूसरा अवसर नही आवेगा। समस्त आगन्तुक महानुभावो के आवास एव भोजन की व्यवस्था यथाशक्ति स्वागत समिति द्वारा की जाएगी। कृपया अपने पहुचने की सूचना १५ अक्तूबर तक अवश्य भिजवाए, ताकि व्यवस्था मे सुविधा रहे।

—स्वामी योगानन्द जी, प्रधान—परोपकारिणी सभा, स्वामी सर्वानन्द जी, प्रधान—यति मण्डल, स्वामी सत्यप्रकाशनन्द, अधिष्ठाता समारोह; छोटूसिह जी एडवोकेट, स्वागत-अध्यक्ष; श्री करण शारदा, मन्त्री—परोपकारिणी सभा एव स्वागत मन्त्री।

महाभारत का एक ज्वलन्त प्रश्न : श्रीकृष्ण ही मूर्धन्य क्यों ?

सम्पूर्ण महाभारत का गम्भीरता से अध्ययन करने के बाद एक प्रश्न अनायास ही उठता है। वह है, इस समूचे युग-निर्माणक इतिहास के तीन निर्माताओं—भीष्म पितामह, व्यास मुनि और श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में। भीष्म मृत्युंजयी आदित्य ब्रह्मचारी और विशाल भारत-साम्राज्य को तृणवत् ठुकरा देने वाले। व्यास, पराशर और कुमारी माता सत्यवती के पुत्र योगी, ज्ञानी और हिमाचल की उपत्यका में गुरुकुल के संचालक। तीसरे श्री कृष्ण, आचार्य संदीपन के शिष्य, स्नातक, गृहस्थी और जगत् के उच्चावच में निष्काम कर्मयोगी और अन्तिम श्वास तक सक्रिय। आश्रम, शिक्षा-दीक्षा, उम्र और ज्ञान की दृष्टि से भीष्म और व्यास—दोनों ही कृष्ण से वरीय हैं। पर, भारत के इतिहास और युग-युगान्तर कालीन प्रचलित परम्पराओं के अनुसार जो पद श्री कृष्ण को प्राप्त है, वह शेष दो को नहीं।

भीष्म की दो प्रतिज्ञाएं पिता का विवाह

भीष्म का मूल नाम देवव्रत था। इनके पिता शान्तनु राजा एक मल्लाह-कन्या सत्यवती पर मुग्ध हो, उससे विवाह करने का प्रस्ताव ले उसके घर गए, तब मल्लाह ने दो शर्तें रखीं—१ सत्यवती के गर्भ से जो पुत्र हो, वही राजगद्दी पर बैठे, २. राजा के लड़के देवव्रत का लड़का राज्य का अधिकारी न हो। शान्तनु इन दोनों शर्तों को सुनकर अत्यन्त दुःखी होकर जब महलों को वापस आए, तब देवव्रत के पूछने पर उन्होंने विवाह की इच्छा और मल्लाह द्वारा रखी गई दोनों शर्तों का वर्णन पुत्र को बताया। पिता की प्रबल आकांक्षा को पूर्ण करने हेतु देवव्रत ने पिता को साथ ले मल्लाह के घर जाकर यह घोषणा की—"आज से मैं प्रतिज्ञा करता हूं, मैं राजगद्दी नहीं लूंगा। आजन्म ब्रह्मचारी रहूंगा, पुत्र रहित होता हुआ भी मैं दिव्य लोक में अक्षय पद प्राप्त करूंगा।"

(महाभारत, आदि पर्व १।९४ ८८)

युवक देवव्रत द्वारा, अपने पिता की इच्छा पूर्ति के लिए इन दोनों घोर व्रतों का वरण न केवल भारत किन्तु विश्व इतिहास में अद्वितीय और अनूठा है। इस भीषण प्रतिज्ञा के फलस्वरूप देवव्रत महाभारत काल में ही नहीं, किन्तु अनवरत काल के लिए 'भीष्म' (भीषण प्रतिज्ञा वाले) नाम से विख्यात हो गए। कुरु वंश में सर्वाधिक वयोवृद्ध, अग्रगण्य, तपस्वी, विद्वान् अनुभवी इत्यादि गुणयुक्त होने से 'भीष्म' नाम के साथ, स्वतः 'पितामह' शब्द भी जुड़ गया।

भीष्म की अग्निपरीक्षा

भीष्म की अग्निपरीक्षा का एक अन्य अवसर सत्यवती के दो पुत्र हुए, चित्रांगद और विचित्रवीर्य। दोनों ही निःसन्तान मर गए। कुरुवंश के अन्त का संकट आ गया। सत्यवती ने भीष्म से इन दोनों रानियों से नियोग द्वारा वंशरक्षा के आपद्धर्म के रूप में सन्तान उत्पन्न करने के लए कहा। अपनी विमाता के इस आदेश को भीष्म ने महाभारत आदिपर्व १।९७, १४-१५ के अनुसार निम्न शब्दों में अस्वीकार कर दिया—"तीनों लोकों का राज्य अथवा देवों का राज्य व इन दोनों से भी अधिक यदि कुछ प्राप्त हो, वह सब छोड़ सकता हूं, पर मैं सत्य को कभी नहीं छोड़ सकता। हे सत्यवती ! तुम जानती हो, तुम एक शर्त के अनुसार आई हो। मैंने जिस सत्य की प्रतिज्ञा की है, वह तुम जानती हो।"—कितना उज्ज्वल और दृढ़ चरित्र है। इस प्रकार भीष्म द्वारा अपनी प्रतिज्ञा भंग करने से स्पष्ट इन्कार कर देने के हेतु सत्यवती ने अपने कौमार्यकाल के पुत्र व्यास को नियोग के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप, उपर्युक्त दोनों रानियों से धृतराष्ट्र (कौरवों के पिता, जन्मान्ध) दूसरा पाडु (पाडवों का पिता) और तीसरा दासी पुत्र विदुर—यह उत्पन्न हुए। इस प्रकार वंश रक्षा हो सकी।

विद्यावारिधि और मृत्युंजयी भीष्म

आदित्य ब्रह्मचारी, सत्य के दृढ़व्रती होने के अतिरिक्त भीष्म प्रगल्भ विद्वान्, वेदशास्त्रज्ञ, गहन चिन्तक, अनुभवी और अध्यात्म विद्या के पारंगत थे। मृत्युंजयी भीष्म ने सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा में छह मास तक रणशैया पर पड़े पाडवों विशेषतः युधिष्ठिर को जो, ऐतिहासिक घटनाओं सहित, गहन ज्ञान पूर्ण उपदेश दिए हैं, वे महाभारत के 'शान्ति पर्व' में सन्निविष्ट हैं। विद्वानों एवं समीक्षकों की सम्मति है कि अनेक विषयों के गहन ज्ञान के कारण शान्ति पर्व भगवत् गीता की तुलना में किसी प्रकार भी न्यून नहीं। दोनों ही महाभारत के अन्तर्गत हैं। हां, यह तथ्य अवश्य है कि गीता लगभग ७०० श्लोकों में ही आबद्ध है जबकि 'शान्ति पर्व' के अन्तर्गत कई हजार श्लोक हैं। इन दोनों गीता और शान्ति पर्व—ग्रन्थों के कारण ही, शायद महाभारत को पांचवां वेद माना जाता है।

कृष्ण की वरीयता क्यों.

भीष्म रूढ़ि-पालक

यहां एक प्रश्न अनायास ही पैदा होता है। इतनी 'गुणराशि अलंकृत भीष्म की तुलना में एक गृहस्थी, आयु, अनुभव, शिक्षा, ज्ञान में भी न्यून श्रीकृष्ण को भारतीय सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और युग-युगीन परम्पराओं में इतना ऊंचा पद क्यों दिया गया और उसे पुराणों के अनुसार षोडश कलावतार के उच्चतम आसन पर सुशोभित कर दिया गया जब कि शताधिक वर्ष की आयु का दीप्तिमान् यह वृद्ध उपेक्षित ही रहा ?

१ भीष्म की सबसे मुख्य और प्रथम निर्बलता यह थी कि वह परम्परा-निर्वाहक और स्थितिपालक थे। पितामह होने के नाते उन्होंने यह कभी साहस नहीं किया कि मोहग्रस्त और जन्मान्ध धृतराष्ट्र को पदच्युत कर महाभारत संग्राम को रोक देते। इसके विपरीत दुर्योधन—जिसके मन में पितामह के प्रति तनिक भी आदर नहीं था, अपितु वह उसे पाडव पक्षपाती ही सदा समझता रहा—की प्रेरणा पर, चुपचाप कौरव सेना का सेनापतित्व स्वीकारा। भीष्म की यह मान्यता थी कि 'राजा कालस्य कारणम्' (राजा काल का निर्माता है) और 'राजा हि परम दैवतम्' (राजा ही परम देव) है। म० भा० शान्ति पर्व १२।६९,५८ राजधर्मानुशासन पर्व में भीष्म कहते हैं—

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

"राजा ही मनुष्य को सशक्त, सबल बनाता और वही उसे दुर्बल कर देता है। नृपति क्रोध के शिकार व्यक्ति को सुख कहां ? वह अपने शरणागत को ही सुखी बना पाता है।"

श्रीकृष्ण क्रान्ति के मूर्तरूप

श्रीकृष्ण का सारा जीवन बचपन से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक निहित स्वार्थों और प्रतिबद्धताओं के सर्वथा, विपरीत, पूर्णतया क्रान्तिकारी था। वह युग क्रान्ति के प्रथम प्रस्तोता और न्याय, धर्म, प्रजा और सर्वहारा की रक्षा के लिए अत्याचारी राज्य संस्था के विध्वंसक थे। गीता ११।३२ में भगवान् कृष्ण की गगन भेदी यह घोषणा आप्रलयान्त उनके समूचे जीवन सिद्धान्त की गूंज देती रहेगी—

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धो, लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्त ।

पापियों और लोकों के नाश में प्रवृत्त मैं कालरूप हूं। तेरे युद्ध न करने पर भी सेनाओं में खड़े ये सब योद्धा नष्ट हो जाएंगे।" आचार्यकुल से शिक्षा प्राप्त करते ही संसार में प्रवेश कर अत्याचारी, प्रजापीडक राजा कंस, जरासन्ध, महिषासुर, चाणूर, मुष्ठिक इत्यादि राक्षसों का ही नाश नहीं किया, किन्तु अपने फुफेरे उद्धत, दुष्ट भाई शिशुपाल का भी उसकी माता से की गई प्रतिज्ञा के अनुसार कि १०० से एक भी अधिक गाली देने पर मैं उसका वध कर दूंगा।" इन्द्रप्रस्थ राजसूय यज्ञ में समवेत समस्त राजाओं के सम्मुख सुदर्शन चक्र चला एक क्षण में ही सिर धड़ से अलग कर दिया।

भीष्म और श्रीकृष्ण

२. भीष्म नीतिज्ञ नहीं थे। उन्होंने युद्धक्षेत्र में पाडवों की ओर से शिखण्डी के सम्मुख आने पर धनुष-बाण इसलिए रख दिया, क्योंकि वह पूर्वजन्म में स्त्री था। पूर्वजन्म में कौन क्या था, यह कैसे निश्चित रूप से जाना और प्रमाणित किया जा सकता है ! श्रीकृष्ण की गहरी नीतिमत्ता ही यह थी कि शिखंडी को आगे खड़ाकर अर्जुन के तीव्र बाणों द्वारा भीष्म को अत्यन्त घायल रूप में शरशय्या पर लिटा दिया। इसी प्रकार, द्रोण, जयद्रथ, कर्ण, जरासन्ध, दुर्योधन—कौरवपक्ष के सभी महारथियों का अन्त श्रीकृष्ण की नीति से ही सम्भव हो सका। द्रोण सदृश कट्टर जात्याभिमानी व्यक्ति-पाडवों की शिक्षा के लिए गुरु पद पर नियुक्त करना भीष्म के नीतिज्ञ शून्य होने का ही परिचायक है। द्रोण ने अपने एकनिष्ठ शिष्य एकलव्य का अंगूठा दक्षिणा मांगने की आड़ में इसलिए कटवा दिया क्योंकि वह निम्न-वर्ण का था। इसके विपरीत, श्री कृष्ण ने कौरव-पांडव सन्धि के दौत्य कर्म के सम्बन्ध में हस्तिनापुर जा दुर्योधन के बदले विदुर का ही आतिथ्य स्वीकारा, यद्यपि वह दासी पुत्र था। समयानुसार, समुचित नीति मार्ग श्रीकृष्ण द्वारा अपनाने की ऐसी अनेक घटनाएं महाभारत में हैं। म० भा० सभा पर्व २।१४,६ में भीम ने ठीक ही कहा है—

"कृष्ण की नीति, मेरा बल, अर्जुन की विजय शक्ति ये यज्ञ की तीन अग्नियों के समान हैं। इससे मगध नरेश पर विजय निश्चित है।"

श्रीकृष्ण द्वारा राजसूय यज्ञ-प्रेरणा

३. युधिष्ठिर द्वारा किए गए राजसूय यज्ञ के पीछे श्री कृष्ण ही एक मात्र प्रेरक थे। भीष्म को एकच्छत्र राज्य स्थापित करने की आवश्यकता नहीं सूझी, क्योंकि उसमें काल प्रवाह को नया मोड़ देने की सूझबूझ उसमें न थी। श्रीकृष्ण ने इतने विशाल रूप में विश्वविजय उद्घोषक और आहिमाचल समुद्रान्त भारत के नृपति वर्ग को एक यज्ञवेदी पर आसीन करने का यह अनोखा अनुष्ठान युधिष्ठिर के माध्यम से क्यों करवाया ? इसका उत्तर इस महापुरुष ने म० भा० सभापर्व २।१४।२ में स्वयं तत्कालीन इतिहास को एक नई दिशा देने की दृष्टि से यह दिया है—

"अपना-अपना स्वार्थ सिद्ध करने में व्यस्त राजागण घर-घर बैठे हैं। कोई एक साम्राज्य नहीं है। यहां तक कि इस समय सम्राट् शब्द ही लुप्त प्राय हो गया है।" इसी प्रसंग में श्रीकृष्ण को "आकाश स्थित नक्षत्र गणों में सूर्य सम देदीप्यमान कहा है। श्रीकृष्ण के बाद भारत की स्वतन्त्रता के महान् योद्धा सरदार पटेल ही एक ऐसे राजनयिक इस युग में हुए जिन्होंने एकता के मूलभूत सिद्धान्त को मूर्त रूप दिया।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

द्वापर के महान नेता श्रीकृष्ण जी की आज भी आवश्यकता है

भू-मण्डल की इस ऋषि-मुनियो की जन्मभूमि मे दो विलक्षण चमत्कारी शरीर-धारी विभूतियो का प्रादुर्भाव हुआ, जिनके उज्ज्वल सुचरित्र, नरहितकारी सुनीतियों व्यावहारिक, सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक मर्यादाओं ने संसार मे कुछ ऐसी क्रान्ति पैदा कर दी है जिसका उदाहरण विश्व के किसी भी देश के इतिहास के खोजने पर भी नहीं मिलेगा। ये ही वो महान आत्माएं ससार की सभ्यता और सस्कृति के धारक और अग्रदूत हैं। पिछले पांच सहस्र वर्षों से यहा बड़ी-बडी पाच सभ्यताए फैलीं – मिस्र, यूनान, बेबिलोनिया, चीन और भारत—परन्तु सिवाय भारत के सभी सभ्यताए लोपप्राय सी हो चुकी हैं।

ये प्रात स्मरणीय दो महान आत्माए त्रेता मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम—जिनके जीवन का सुचित्रण आदि ऋषि महर्षि वाल्मीकि जी ने बाल्मीकि रामायण मे किया है और दूसरे महापुरुष योगीराज श्रीकृष्ण चन्द्र जो पाच सहस्र वर्ष पूर्व हुए थे – का भव्य चित्रण महर्षि व्यास जी ने महाभारत ग्रन्थ मे किया है। ये ही दो महान ग्रन्थ हैं जिनको महाकाव्य कहते हैं—हमारे प्राचीन साहित्य के आधार हैं। यही एक बडा कारण था, अन्य देशो की सभ्यता के लोपप्राय होने का, कि उनके पीछे ऐसे किसी महान पुरुष का चरित्र नही था।

परन्तु दु ख है कि आज कुछ पढे-लिखे लोग पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित और विशेषकर पुरातत्त्ववेत्ता अपनी न जाने किन खोजो के आधार पर इनके ऐतिहासिक अस्तित्व को स्वीकार नही करते और इनको काल्पनिक कहकर रह जाते हैं। जिस प्रकार करोडो भक्तजनो के हृदयो पर एक भारी आघात होता है और सन्तानो पर बडा कुप्रभाव पडता है।

इनमे से योगीराज श्रीकृष्ण हमारे सामने दो रूपो मे आते हैं—एक भागवत पुराणो के श्रीकृष्ण और दूसरे महाभारत के श्रीकृष्ण। उन्नीसवी शताब्दी भारतीय पुनंजागरण के प्रमुख उद्गाता महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास मे कृष्ण के पवित्र चरित्र पर मिथ्या आरोप के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है—"इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियो से रास मण्डल-क्रीडा आदि मिथ्यादोष श्रीकृष्ण जी पर लगाए हैं। इसको पढ-पढ़ाकर, सुन-सुनाके अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत-सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओ की झूठी निन्दा क्योंकर होती।" अतः साधारणत. लोग, कृष्ण को बचपन में चोर थे और दूध, दही, मक्खन चुराया करते थे—युवावस्था में व्यभिचारी थे, और उन्होने बहुतेरी गोपियों के पतिव्रत धर्म को नष्ट किया, प्रौढावस्था मे वचक और शठ थे, और द्रोणादि के प्राण भी लिए। इस प्रकार के मिथ्या अनर्गल आरोप और मनमाने आक्षेप लगाकर स्वार्थी दुराचारी लम्पटी लोगो ने श्रीकृष्ण के अमल-धवल चरित्र को कलुषित करने मे और ऐसे ही अनेक विकृत विशेषणो से सम्बोधित करने में किञ्चिन्मात्र भी सकोच नही किया। देव दयानन्द ने सहस्रो वर्षों से विकृत श्रीकृष्ण के ओज तेज और क्षमताशील चरित्र को जनता के सम्मुख रखने का सफल प्रयत्न किया। उन्होने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे इन लोकोत्तर आदर्शों के प्रतिष्ठापक महापुरुष योगीराज श्रीकृष्ण के सम्बन्ध मे लिखा—'देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण-कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है। जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नही।"

ऐसे महाप्रतापी युग पुरुष का जन्म पाच सहस्र वर्ष पूर्व द्वापर और कलि की सन्धि वेला मे दुराचारी कस के बन्दीगृह मे भादो के कृष्ण पक्ष की अष्टमी की घोर अन्धेरी रात्रि मे देवकी के गर्भ से हुआ था। उस समय देश मे भ्रष्टाचार की अन्धेरी तमिस्रा अपनी निगूढ कालिमा के साथ छाई हुई थी, उस समय भारत मे जन, धन, शक्ति साहस, क्या कुछ नही था, पर एक अकर्मण्यता भी थी, जिससे सब कुछ अभिभूत, मोहाच्छन्न और तमसावृत था। अराजकता, अनाचार का बोलबाला था। चक्रवर्ती राज्य का कुछ भी महत्त्व नही था। सारा राज्य छोटे-छोटे स्वतन्त्र किन्तु निरंकुश राज्यो मे विभक्त हो चुका था। एक चक्रवर्ती सम्राट् के न होने से विभिन्न माण्डलिक राज्य नितान्त स्वेच्छाचारी तथा प्रजापीडक हो गये थे। मथुरा के कस ने अपने पिता उग्रसेन को बन्दी किया हुआ था। मगध के दुष्टाचारी जरासध ने ८७ निरापराध राजाओ को बन्दी बना रखा था, और एक सौ होने पर रुद्र पर बलि करने का सुसकल्प किए हुए था। चेदि देश का शिशुपाल तथा हस्तिनापुर का दुर्योधन सभी विलासी और दुराचारी थे। कौरवो ने अन्यायपूर्वक पाण्डवो के राज्य को हस्तगत कर रखा था और एक सूई की नाके समान भूमि बिना युद्ध के वे लौटाने को तैयार नही थे। प्रागज्योतिषपुर के अत्याचारी राजा नरकासुर ने १६ सहस्र राजकुमारियो को अपने अन्तपुर मे बन्दी कर रखा था। शराब, जुए का प्रचलन राजगृहों तक ही सीमित नही था। बड़े-बडे आचार्य धर्म-भ्रष्ट और कर्तव्यभ्रष्ट हो गये थे। स्त्रियों का सतीत्व भी सुरक्षित नहीं था। चहुंओर त्राहि-त्राहि मची थी।

ऐसी विकट परिस्थितियो मे श्रीकृष्ण का मन बडा द्रवित हो उठा। उन्होने अनाचार दुराचार, भ्रष्टाचार, अन्याय, रूढियो और निम्न वर्ग के दीन-दुखियो के दुखो को दूर करने का दृढ सकल्प किया और सारा जीवन इन अत्याचारो के रोकने मे लगे रहे और सचमुच गीता मे कहे गए वह इन सबके लिए 'काल' थे। कृष्ण ने अपनी नीतिमत्ता, अपूर्व नीतिज्ञता, रणचातुरी, अनुपम सूझबूझ तथा व्यवहारकुशलता से पाण्डवो को अपना राज्य दिलाने मे सफलता पाई और बिना कुछ रक्त बहाए पैशाचिक वृत्ति वाले दुष्ट जरासध का भीम द्वारा वध कराकर ८७ निर्दोष राजाओ को मुक्त कराया।

—चमनलाल
प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार

श्रीकृष्ण महान आत्मा थे। उन्होने शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्तियो के सम विकास का उच्चादर्श जनता के सम्मुख रखा। और अपनी ज्ञानार्जनी, कार्यकारिणी, तथा लोक रजनी—इन तीनो प्रकार की प्रवृत्तियो को विकास की सीमा तक पहुचाया हुआ था। सभा पर्व मे भीष्मपितामह ने जहा कृष्ण की अग्रपूजा का प्रस्ताव रखा था वहा उनके अद्भुत गुणो का विवरण इस प्रकार किया गया है—

नृणा लोकेहि कोऽन्योऽस्ति
विशिष्ट केशवादृते।
दान दाक्ष्य श्रुते शौर्य ह्री
कीर्ति बुद्धि रुत्तमा।
सन्नति श्रीधृतिस्तुष्टि
पुष्टिश्च नियताच्युते।

अर्थात् इस समय मनुष्य लोक मे श्रीकृष्ण से बढकर कौन है? दान, दक्षता, वेदादि शास्त्रो का श्रवण, शूरवीरता, बुरे कार्य करने मे लज्जा, कीर्ति, उत्तम बुद्धि, नम्रता, शोभा, व ऐश्वर्य, धैर्य, सन्तोष, सब प्रकार की शारीरिक, मानसिक, आत्मिक पुष्टि व शक्ति का विकास—ये सब गुण अच्युत अथवा कर्तव्य मार्ग से कभी न विचलित होने वाले श्रीकृष्ण मे नियत रूप से विद्यमान थे। और भी वेद-वेदाङ्ग विज्ञान बल चाप्यधिक नृणा लोकेहि कोऽन्योऽस्ति विशिष्ट केशवादृते।

श्रीकृष्ण की महत्ता का एक और प्रमाण भी है। जब भीष्म पितामह रणक्षेत्र मे शरशय्या पर पडे उत्तरायण की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो कृष्ण ने युधिष्ठिर को नरशार्दूल भीष्म जी के पास जाकर राज धर्मादि विषयो पर उपदेश उनसे लेने का प्रस्ताव किया।

भीष्म जी के पास जाकर कृष्ण जी ने उनसे युधिष्ठिर जी को राजधर्मादि विषयो का उपदेश देने की प्रार्थना की, तो पितामह ने भयकर शारीरिक क्लेशो से पीडित होने के कारण उपदेश करने मे अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए श्रीकृष्ण को कहा कि आप जैसे सर्वविद्यानिधान महापुरुष की उपस्थिति मे मेरा कुछ कहना भी अविनय के तुल्य ही है—अत आप स्वय ही युधिष्ठिर को उपदेश करो।

कृष्ण मद्यपान जुआ आदि जैसे अनेक सामाजिक बुराइयो के घोर विरोधी थे। जब मद्यपान का प्रचलन अधिक हो गया तो कृष्ण ने नगर मे ढिंढोरा पिटवाया कि कोई नगरवासी आज से मदिरापान नही करेगा, और यदि कोई मदिरापान करता पाया गया तो उसे बन्धु-बान्धवो सहित सूली पर चढा दिया जाएगा।

श्रीकृष्ण सन्ध्योपासना तथा अग्निहोत्र आदि दैनिक कर्तव्यो के पालन करने मे कभी प्रमाद न करते थे। महाभारत मे स्थान-स्थान पर उनकी इस प्रकार की दिनचर्या का उल्लेख मिलता है। दुर्योधन से सधि-वार्ता के लिए जाते हुए मार्ग मे जब-जब प्रात और साय समय उपस्थित होता था, कृष्ण सन्ध्या और अग्निहोत्र करना नही भूलते। महाभारत मे लिखा है—

प्रातरुत्थाम कृष्णस्तु कृतवान् सर्वमाह्निकम्।
ब्राह्मणैरभ्युज्ञात प्रययौ नगर प्रति॥

अर्थात् प्रात काल उठकर कृष्ण ने सन्ध्या हवन आदि सब क्रियायें की, पुन ब्राह्मणो से आज्ञा लेकर नगर की ओर प्रस्थान किया इसी तरह और भी उल्लेख हैं।

कृष्ण सच्चे आर्य थे और सयम का जीवन व्यतीत करते थे। एक पत्नीव्रत का पालन करते हुए उन्होने सपत्नीक बारह वर्ष तक ऋषि आश्रम मे रहकर दृढ ब्रह्मचर्य धारण किया। तदनन्तर उनके प्रद्युम्न जैसा पिता के गुणशील, शौर्य सदाचार अनुरूप पुत्र उत्पन्न हुआ।

श्रीकृष्ण महावली और शक्तिशाली होने के साथ-साथ बडे सहनशील और धैर्यवान् भी थे। शिशुपाल की धृष्टता जब सीमा पार कर गई तब कृष्ण ने भरी सभा मे उसका सिर धड से जुदा कर दिया था। शारीरिक बल के अतिरिक्त वह सगीत, चिकित्सा-शास्त्र अश्व परिचर्या आदि अनेक लौकिक विद्याओ के भी ज्ञाता थे। उत्तरा के मृतप्राय पुत्र (परीक्षित) को उन्होने ही जीवन प्रदान किया था। माता-पिता की आज्ञा का पालन तथा गुरुजनो के प्रति पूज्यभाव की भावना कभी विस्मृत नही की। वह वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रबल पोषक थे, और सदा दलित पीडित तथा शोषित वर्ग का साथ देते हुए सदा देखे गये। नारी वर्ग के प्रति भी उनकी श्रद्धा और आदर का भाव रहता था। कृष्ण चरित्र की सर्वोपरि विशेषता उनकी राजनीतिक विलक्षणता और नीतिज्ञता थी। उनका राष्ट्रवाद, लोक कल्याण, जनहित,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महर्षि निर्वाण शताब्दी के लिए अजमेर चलें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यात्रा के लिए सुविधापूर्ण बसों की व्यवस्था

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा एव सभा मन्त्री श्री प्राणनाथ धई ने दिल्ली भर की आर्यसमाजो एव आर्यजनता को एक विशेष पत्रक द्वारा सूचना दी है कि नवम्बर, १९८३ मे अजमेर मे मनाई जाने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में शताब्दी समारोह मे भाग लेने के इच्छुक भाई-बहनो एव आर्य जनता की सुविधा के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने विशेष बसो का प्रबन्ध किया है। इन बसो के माध्यम से यात्री अजमेर के अतिरिक्त चित्तौडगढ, हल्दीघाटी, उदयपुर, माउण्ट आबू, जोधपुर और जयपुर के ऐतिहासिक एव धार्मिक स्थान देख सकेंगे।

जनता की सूचनार्थ निवेदन है कि ये बसें ३ नवम्बर की रात को दिल्ली से चलकर उक्त स्थानों पर होकर ११ नवम्बर को प्रात दिल्ली वापस पहुच जाएगी। कुछ बसें ६ नवम्बर के दिन अजमेर से चलकर ७ नवम्बर को प्रात दिल्ली वापस आ जाएंगी।

दोनो सभा अधिकारियो ने जनता को स्मरण कराया है कि ऐसा अवसर फिर नही आएगा, प्रत्येक आर्य परिवार का नैतिक कर्त्तव्य है कि वे अजमेर शताब्दी मे सम्मिलित हो, इसलिए १८५) प्रति सवारी किराया देकर डीलक्स बसो मे अपनी सीटें सुरक्षित कर लें। मार्ग मे भोजन तथा आवास का प्रबन्ध जहा आर्यसमाजो की ओर से नही होगा, वहा यात्रियो को उनकी व्यवस्था स्वत करनी होगी (दिल्ली से अजमेर और अजमेर से वापस दिल्ली का मार्ग व्यय सौ रुपए प्रति यात्री होगा।)

बसो मे सीटें सुरक्षित कराने के लिए निम्न स्थानो से सम्पर्क करें—१ सभा कार्यालय, आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली दूरभाष—३१०१५० २ श्री रामशरणदास आर्य, महामन्त्री, दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, ओ-१७, बी. जगपुरा विस्तार, नई दिल्ली, दूरभाष ३७०२६१। ३३०, ३. श्री सुरेन्द्रकुमार हिन्दी, ई-१२३, अशोक विहार, फेस—१, दिल्ली-५२, दूरभाष—२३१७७६, ४ श्रीमती रामचमेली क्यू ३४, राजौरी गार्डन नई दिल्ली-२७, ५ श्रीमती ईश्वर देवी भवन ६/१७६, फर्श बाजार, शाहदरा दिल्ली, दूरभाष—२०४५२७, ६. श्री भजन प्रकाश आर्य—ई-३५, प्रताप नगर, दिल्ली-७ दूरभाष ५१८२६०।

छात्र अनुशासित हो देशसेवा का व्रत लें

स्वतन्त्रता दिवस पर अनेक कार्यक्रम सम्पन्न

नई दिल्ली। रविवार १४ अगस्त सब्जी मण्डी स्थित गुरुकुल गुजरावाला सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में स्वतन्त्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य ने छात्रो को आहवान किया कि वे अनुशासित होकर अपने कर्तव्यो का पालन करें व देशसेवा का व्रत लें।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री श्याम सुन्दर लाल ने इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया व युवको को नैतिक शिक्षा दी।

आर्यसमाज लाजपत नगर मे श्री सुरेन्द्रसिंह व श्री रत्नदीप के निर्देशन मे युवको ने जूडो-कराटे, लाठी का सुन्दर प्रदर्शन किया। गुरुकुल गौतम नगर के युवको ने योगाभ्यास, लेजियम, श्री अजय-कपूर व सजय भाटिया ने तलवार लडन्त आदि के कुशल कार्यक्रम प्रदर्शित किए। आर्यसमाज गाधीनगर मे श्री मुन्नालाल आर्य की अध्यक्षता मे युवको ने लाठी-तलवार तथा आर्यसमाज कबीर बस्ती मे श्री रमेशचन्द्र के सयोजन मे भारोतोलन का व्यायाम प्रदर्शन किया। 'स्वतन्त्रता दिवस' पर अशोक विहार, मन्दिर मार्ग, विक्रात नगर मे भी कार्य-क्रम आयोजित किए गए।

आर्य समाज करौलबाग में वेद सप्ताह

दिनाक २३ अगस्त से ३१ अगस्त ८३ तक मनाया जा रहा है। जिसमे वेद प्रवचन डा० प्रज्ञादेवी जी वाराणसी और भजन श्री सत्यपाल जी मधुर के हो रहे हैं।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव वेदोपदेश प्रात ६ बजे से ७॥ बजे तक अजमलखा पार्क करौलबाग मे होता है। रात्रि प्रवचन एव भजन आर्यसमाज करौल बाग मे ८ बजे से ६॥ बजे तक होते हैं।

योगीराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव ३१ अगस्त बुधवार रात्रि ८ बजे से १० बजे तक आर्यसमाज मन्दिर मे सोत्साह मनाया जाएगा।

महाभारत का एक ज्वलन्त प्रश्न

(पृष्ठ ४ का शेष)

श्रीकृष्ण आदर्श गृहस्थी

४. भीष्म तो आदित्य ब्रह्मचारी थे। पर, श्री कृष्ण गृहस्थ मे रहते हुए भी ब्रह्मचर्य व्रत और संयम के कठोर पालक थे। म० भा० सौप्तिक पर्व १०।१२, २९ मे उनके अपने शब्दो में—"१२ वर्ष तक घोर तप और ब्रह्मचर्य का पालन, हिमालय की घाटी मे निवास के बाद अपने सदृश ही व्रत पालिका रुक्मिणी से सनत्कुमार सदृश मेरा एक ही पुत्र प्रद्युम्न नाम का हुआ" —वैदिक आश्रम व्यवस्था के अनुसार गृहस्थाश्रम चारो आश्रमो में ज्येष्ठतम और उत्कृष्टतम माना गया है। मनु ने तो अपनी स्मृति मे इस आश्रम मे धर्मनिष्ठ जीवन व्यतीत करने वाले को स्वर्ण का अधिकारी बताया है। हिन्दू धर्म के समस्त देवी-देवता अवतार होते हुए भी गृहस्थी बताए गए हैं। ब्रह्मा को गृहस्थ से वचित रखते हुए सारे भारत मे उनका एक ही मदिर पुष्कर तीर्थ मे है जबकि अन्य समस्त देवी-देवताओ के सैकडों हजारो मदिर और दर्जनो तीर्थस्थान हैं। हिन्दू जाति के आदर्शरूप राम और कृष्ण—दोनो सर्वमान्य महामानव गृहस्थी ही हैं। भीष्म और [illegible]—दोनो की तुलना मे कृष्ण को वरीयता दिए जाने का एक हेतु उनका सयमी और आदर्श गृहस्थी होना भी है।

भरी सभा में द्रौपदी का घोर अपमान

५. इन्द्रप्रस्थ मे राजसूययज्ञ के बाद द्यूत क्रीडा मे धूर्त शकुनि द्वारा छल-कपट भरी उकसाहट मे फस युधिष्ठर द्वारा दाव पर रखे गए समस्त राज्य, चारो भाई और यहा तक कि महारानी द्रौपदी भी—सर्वस्व हार जाने के बाद एक वस्त्रा रोती-चिल्लाती द्रौपदी का बलात् धर्षण कर भरी सभा मे जब उसे लाया गया, और शकुनि, दुशासन, कर्ण, दुर्योधन इत्यादि द्वारा इस असहाय नारी के प्रति कुत्सित-अश्लील, कुचेष्टापूर्ण मजाक किए गए, तब उस सभा मे भीष्म, द्रोण, कृप, धृतराष्ट्र इत्यादि सब श्वसुर तुल्य प्रमुख कौरव उपस्थित थे, पर, इस घृणित कार्य के विरोध मे किसी ने चू तक नही की। पाडव भी तीव्र आक्रोश और ग्लानि से अभिभूत हो अधोमुख चुप ही बैठे रहे। तब द्रौपदी ने स्वय ही साहस बटोर इन श्वसुरसम वृद्ध कौरवो से दर्द भरी गुहार की। द्रौपदी ने जब सीधा और स्पष्ट प्रश्न भीष्म से कौरव दल द्वारा इस लज्जा और घृणास्पद व्यवहार पर भी उसके एकदम चुप रहने का कारण पूछा, तब भीष्म ने जो उत्तर, महाभारत के अनुसार, दिया, सचमुच वह इस पितामह के समूचे पावन चरित्र पर एक अमिट कलक ही है। भीष्म के शब्द हैं—

'अर्थस्य पुरुषो दास' दासस्तु अर्थो न कस्यचित्

पुरुष धन का गुलाम है, धन किसी का दास नही है।

द्रौपदी का दृढ़ संकल्प

द्रौपदी के इस अपमान की जब घटना हुई उस समय श्री कृष्ण द्वारका गए हुए थे। सधि प्रस्ताव के साथ दौत्य कर्म का दायित्व उठा जब श्री कृष्ण विराट नगर से हस्तिनापुर जाने लगे, तब अजस्र अश्रु मोचन के साथ तीव्र खिन्न स्वर में द्रौपदी ने कौरवो द्वारा किए गए घोर अपमान की व्यथा कृष्ण को सुनायी और अपना दृढ़ सकल्प बताया—"जब तक इन दुष्टो का नाश नही होता, तब तक मैंने पापियोद्वारा बलात् धर्षित की गयी अपनी वेणी को न बाधने की ही प्रतिज्ञा की है।" आदरयुक्त दृढ़ स्वर मे द्रौपदी को 'भगिनी' नाम से सम्बोधित करते हुए श्री कृष्ण ने म० भा० वन पर्व ८२।४५-४७ मे सान्त्वनापूर्ण शब्दों मे कहा—"देवी! तुम विश्वास करो। क्रूर अत्याचार का बदला अवश्य लिया जाएगा। शत्रुओं की स्त्रिया रोएगी। धृतराष्ट्र पुत्र कालग्रस्त होंगे और कुत्ते-सियारो का भोजन बनेंगे।"

मुनिवर व्यास : सामाजिक संघर्ष से सर्वथा विरत

महाभारत के दूसरे चमकते सितारे व्यास मुनि हैं। भीष्म की तरह व्यास भी आजन्म आदित्य ब्रह्मचारी, पुनीत, निष्कलक, उच्च और गौरवशील जीवन के धनी थे। पर, सार्वजनिक और सामाजिक संघर्ष से अछूते, प्राय आत्मकेन्द्रित ही रहे। जिस समय युद्ध अभिमुख कौरव-पाडव सेनाए कुरुक्षेत्र रणस्थल मे एक दूसरे के सम्मुख खडी थी, उस समय, महाभारत के अनुसार, दोनो सेनाओ के बीच व्यास मुनि आ उपस्थित हुए और अत्यन्त निराश स्वर मे चिल्लाये—"उर्ध्व बाहु हो मैं आर्त स्वर में पुकार रहा हू, पर कोई मेरी बात सुनता नही। याद रखो! धर्म से ही अर्थ और काम की प्राप्ति होती है। तब इस धर्म का पालन क्यो नहीं करते।" इन शब्दो के साथ ही व्यास मुनि वहां से विदा हो गए। यदि वह इस युद्धभूमि मे ही सत्याग्रह कर आमरण व्रत के साथ बैठ जाते, तब जहा उनका स्थान अत्यन्त सहस्रशीर्ष उच्च शिखर स्थित इतिहास मे होता, वहा भारत का इतिहास भी अकल्पित रूप में सर्वथा भिन्न ही होता। वह तत्काल युद्धक्षेत्र से हिमालय की उपत्यका मे स्थित अपने आश्रम मे चले गए।

कालचक्र, जगतचक्र, युगचक्र प्रेरक श्रीकृष्ण

हिमालय के तुग शिखर वत् भगवान् श्रीकृष्ण का समूचाचरित्र, जीवन, आपाद् मस्तक पूर्णमासी के चन्द्रवत् धवल यशःकीर्तिमय आज तक मानव मात्र के लिए आल्हाद और प्रेरक रहा और सृष्टि के अन्त तक निश्चय ही रहेगा।

के० सी० ३७।बी अशोक विहार, दिल्ली-५२

रविवार, २८ अगस्त, १९८३

आर के पुरम सेक्टर ६—प० ओमवीर शास्त्री, आर के पुरम सेक्टर ९—प० परमेश शर्मा; आनन्द विहार हरिनगर—जयभगवान मण्डली, आर्यनगर—पहाड़गज—प० देवशर्मा शास्त्री, किशनगज—प० सुरेन्द्र कुमार, किंग्जवे कैम्प—स्वामी शिवानन्द, कालका—प० खुशीराम शर्मा, कालका डी० डी० ए० फ्लैट—आचार्य रामचन्द्र शर्मा, कृष्णनगर—श्रीमती उषा शास्त्री, गाधीनगर—प० विद्याव्रत शास्त्री, गीता कालौनी—व्याकुल कविराज, ग्रेटर कैलाश न० १—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, ग्रेटर कैलाश नं० २—प० सोमदेव शर्मा, शास्त्री गुडमण्डी—श्री मोहनलाल गाधी, गुप्ता कालौनी—प० शीशराम भजनीक, गोविन्द भवन—प० बलवीर शास्त्री, ग्रीन पार्क—श्रीमनोहर लाल ऋषि; चूना मण्डी—प० देवीचरण देवेश, टैगोर गार्डन—प० रामनिवास शास्त्री, तिलकनगर—प० कामेश्वर शास्त्री, तिमारपुर—प० विद्याराम [illegible]स्त्री, दरियागज—श्रीमती गीता शास्त्री, देवनगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; नारा-विहार—प० देवेन्द्र शास्त्री, न्यू मोतीनगर (कर्मपुरा) श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, नेगर शाहदरा—डा० रघुनन्दन सिंह; पजाबी बाग—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, पजाबीबाग एक्स्टेन्शन—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, बिरला लाइन्स—अशोक विद्यालकार, माडल बस्ती—रमेश वेदाचार्य, मोतीबाग—डा० सुखदयाल भूटानी, महाबीर नगर—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, रघुवीर नगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; राणा प्रताप बाग—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार; राजौरी गार्डन—प० र[illegible]त [illegible]; बालीनगर—प० सत्यभूषण विद्यालकार; रोहतास नगर—मा० ओमप्र[illegible] आर्य, रमेश नगर—श्री मुनिशकर वानप्रस्थ, लड्डूघाटी—पं० सुमेरचन्द्र, लक्ष्मीबाई न[illegible] ओमप्रकाश जी गायक, त्रिनगर—प० रामरूप शर्मा, लारेन्सरोड—प० [illegible] सिद्धान्तालकार; विक्रमनगर—अमरनाथ का[illegible]त, सदर बाजार—प० तुलसी[illegible]पदेशक, साकेत—ओम्प्रकाश शास्त्री, र[illegible] रोहेला—श्रीमती सुशीला राजपाल, सुदर्शनपार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, र[illegible]गज—प० खुशीराम शर्मा; शालीमार बाग—पं० ओम्प्रकाश वेदालकार, शादीपुर[illegible] हरिश्चन्द्र आर्य, हौजखास—प० रामदेव शास्त्री, ।

वेद सप्ताह के कार्यक्रम

बिरला लाइन्स—प० महेश चन्द्र भजनमण्डली, आर्यसमाज सदर बाजार—प० रामकिशोर जी वैद्य का वेद-प्रवचन, प० सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार के भजनोपदेश, आर्य समाज करौलबाग—प० सत्यपाल मधुर जी के भजनोपदेश, डा० प्रज्ञा देवी का वेद प्रवचन; आर्य समाज अमर कालौनी—प० तुलसीदेव सगीताचार्य के भजन, आर्यसमाज मोडलबस्ती—आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण का वेद प्रवचन, रमेश नगर—स्वामी जगदीश्वरानन्द जी का वेदप्रवचन, जनकपुरी सी० ३-प० तुलसीराम आर्य का भजनोपदेश; आर्यसमाज सफदरजग इन्क्लेव—प० वेदव्यास भजनोपदेशक एव प० ज्ञानि प्रसाद ढोलक वादक का कार्यक्रम, कीर्तिनगर—प० चुन्नीलाल का भजनोपदेश, अशोक विहार—प० प्रकाश चन्द्र व्याकुल कवि का भजनोपदेश, आर्य समाज हनुमान रोड—श्री गुलाब सिंह 'राघव' के भजनोपदेश स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती का वेद प्रवचन, —स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग।

आर्यसमाज हनुमान रोड मे वेद जयन्ती सप्ताह

२३ अगस्त से ३१ अगस्त १९८३ तक आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे वेद जयन्ती सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। मगलवार २३ अगस्त को प्रात सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार किया गया। बुधवार २४ से ३१ अगस्त तक प्रतिदिन प्रात ७।। से ८।। तक ऋग्वेद बृहद् यज्ञ किया जा रहा है। बुधवार २४ अगस्त से ३० अगस्त तक प्रतिदिन रात्रि ८ से ९ बजे तक सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रो० रत्नसिंह वेद कथा प्रस्तुत कर रहे हैं। कथा से आधा घण्टा पूर्व प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री गुलाब सिंह राघव प्रतिदिन मधुर भजन प्रस्तुत करते हैं। रविवार २८ अगस्त को प्रात सत्याग्रह बलिदान दिवस पर प्रो० रत्नसिंह एव आचार्य नरेन्द्रदेव शास्त्री विशेष प्रवचन प्रस्तुत करेंगे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम बुधवार ३१ अगस्त को प्रात ९ से ११ बजे तक सम्पन्न होगा।

आर्यसमाज मॉडल टाउन दिल्ली-९ मे वेद सप्ताह

आर्यसमाज मॉडल टाउन, दिल्ली-९ मे २५ अगस्त से ३० अगस्त तक प्रात ६ मे ८ बजे तक यजुर्वेदीय यज्ञ किया जा रहा है। यज्ञ श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, प० कर्ण देव शास्त्री एव प० भोलानाथ शास्त्री के निर्देशन मे हो रहा है। प्रतिदिन रात्रि को ८।। से ९ बजे तक भजन स्त्री समाज द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रति रात्रि को ९ से १० बजे तक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० वाचस्पति उपाध्याय वेदकथा प्रस्तुत कर रहे हैं।

बुधवार ३१ अगस्त को प्रात ८।। से १० बजे तक 'महर्षि दयानन्द की दृष्टि मे योगेश्वर श्रीकृष्ण' विषय पर १० से १२ बी तक तथा महाविद्यालयो के छात्र-छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता होगी। पहले-दूसरे-तीसरे आने वाले छात्र-छात्राओ को नकद पुरस्कार दिए जाएगे।

आर्यसमाज आर्यपुरा का वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्यसमाज आर्यपुरा, सब्जी मण्डी, दिल्ली-७ ने अपने क्षेत्र की प्रत्येक बस्ती मे वेदप्रचार-कार्यक्रम के अन्तर्गत पूर्णमासी और अमावस्या पर यज्ञ-उपदेश-वेदपाठ-भजन आदि के कार्यक्रम करने का सकल्प किया हुआ है। उसी सन्दर्भ मे आर्यसमाज आर्यपुरा ने ८ अगस्त, १९८३ को अमावस्या के दिन ४२३० आर्यपुरा की बस्ती मे यज्ञ-उपदेश-भजनो का कार्यक्रम किया। स्मरण रहे कि आर्यसमाज आर्यपुरा मे प्रतिदिन प्रात ६।। से ७ बजे तक सन्ध्या, यज्ञ, प्रवचन एव आर्याभिविनय की कथा होती है।

आर्यसमाज के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज आशा पार्क, जेल रोड, नई दिल्ली-११००१८। प्रधान—श्री रामदास मोगा, उपप्रधान—श्री दालचन्द जी, मन्त्री—श्री ईशकुमार नारग, उपमन्त्री—श्री वेदकुमार गुलाटी, कोषाध्यक्ष—श्री बनवारीलाल कपूर, लेखा-निरीक्षक—श्री कुलभूषण गोयल।

परीक्षा।

कहानी कुछ वर्षों पुरानी है, जब देश मे रियासतें थी, पर इस कथा की सीख आज भी अमर है। एक राजा के दीवान थे, काम करते-करते वृद्ध हो गए। वह राजा के पास पहुचे। राजा से प्रार्थना की—मेरा बुढापा आ गया, अब मुझे छुट्टी दीजिए। राजा ने पहले तो असमर्थता प्रकट की पर जब बूढे दीवान जी ने असमर्थता दिखाई, तब राजा ने उन्हे अपनी जगह योग्य ईमानदार दीवान नियुक्त करने की सलाह दी। अखबारो मे राज्य के दीवान के लिए विज्ञापन छप गए, किसी तरह की कोई योग्यता-अनुभव की शर्त नही थी। सैकडो व्यक्ति निश्चित तिथि पर राजधानी पहुचे। उन सब की खूब आवभगत की गई, अधिकाश मौज मजा करने लगे। सभी मनोरजन मे डूब गए। कुछ पूजा-पाठ मे लग गए। कुछ चुने हुए युवा उम्मीदवारो ने समय देख कर हाकी के मुकाबले का प्रबन्ध किया, ढिंढोरा पिट गया। शहर भर के लोग राज्य की दीवानगीरी की नौकरी के उम्मीदवारो का खेल देखने जुट गए। मौके पर अधिकारी भी आए। यह खेल खूब जमा।

खेल के कडे मुकाबले के बाद सभी खिलाडी और दीवान पद के उम्मीदवार शहर लौटे। रास्ते मे एक ढलान था, उस ढलान को पार कर एक चढाई थी, जहा पर बोझ से लदी बैलगाडी लिए एक बूढा गाडीवान खडा था। उसने इन सभी खिलाडियो और उम्मीदवारो की उम्मीद भरी नजरो से देखा कि कोई सहारा देख कर उसकी गाडी को उस ऊचाई पर पार करवा देगा। आखिर मे एक तेजस्वी युवक आया। उसका उस दिन का खेल सबसे शानदार था, उसे पैर मे हल्की चोट भी आई थी। गाडी खडी देखकर वह ठिठक गया। उसने गाडीवान को आगे जुए पर बैठने को कहा और पीछे गाडी को धक्का लगाया और बैलो को ललकारा। उसके जोर से धक्का देते ही गाडी वह बाधा पार कर ऊपर पहुच गई।

पुराने दीवान जी ने एक तेजस्वी युवक को राज्य के दीवान पद पर नियुक्त करने की घोषणा करते हुए कहा—"यह युवक एक डिग्री प्राप्त योग्य व्यक्ति है, यहा इसने अपने समय का पूरा सदुपयोग किया, फालतू मनोरजन मे इसने समय नही बिताया यह सबसे अच्छा खिलाडी भी है। और साथ ही सकट पडने पर यह अकेला उम्मीदवार था जिसने गाडीवान की मदद की, ऐसा ही दीवान राज्य और प्रजा का कल्याण कर सकता है।

—नरेन्द्र

'तिस्रो रात्री यद्वात्सी गृहे मे' (पृष्ठ २ का शेष)

यह है कि बालक को आचार्य कुल मे जाकर समझ लेना चाहिए कि वह अपने तई मर गया, वह अन्धकार मे है, और आचार्य के सम्पर्क मे आकर उस मृत्यु से अमृत की तरफ जाना है, शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक अन्धकार से निकल कर प्रकाश की तरफ जाना है। आचार्य कुल मे तीन रात्रिया बिता देने का यही अर्थ है ।

इसके अतिरिक्त आचार्य-कुल मे तीन रात्रिया बिता देने का वैदिक-सस्कृति की दृष्टि से एक और अर्थ भी है। बालक आचार्य-कुल मे ब्रह्मचारी बनकर जाता है। ब्रह्मचर्य की तीन अवस्थाए कही गई हैं-'वसु' 'रुद्र' तथा 'आदित्य'। वसु ब्रह्मचारी २४ वर्ष का होता है, रुद्र ३६ या ४० वर्ष का और आदित्य ब्रह्मचारी ४८ वर्ष का होता है । यमाचार्य के कुल मे जो बालक तीन अन्धकार अर्थात् वसु रुद्र व आदित्य की रात्रि के जीवन बिताकर बढता जाता है वह आदित्य ब्रह्मचारी बनकर निकलता है। आदित्य का काम प्रकाश देना है। ४८ वर्ष से पहले का जीवन एक प्रकार का अन्धकार का, रात्रि का जीवन है। ब्रह्मचारी यमाचार्य के कुल मे इन तीन रात्रियो को बिता देने के बाद प्रकाश के जगत् मे आने का अधिकारी है। तिस्रो रात्री यद्वात्सी गृहे मे का यह भी अर्थ है। तभी तो उस परिष्कृत ब्रह्मचारी को देखने के लिए— समायान्ति देवा अर्थात् देवता भी उसके दर्शन के लिए उमड आते हैं।

सक्षेप, मे अपने 'वाजश्रवस' नाम के लोलुप पिता से विदाई लेने के बाद आचार्य के सम्मुख अपने सारे सस्कार मारकर तीन रात तक पड़े रहने के बाद सूर्य के समान आदित्य ब्रह्मचारी के रूप मे प्रकट होने की रहस्यमय पहेली को ऋषि ने कठोपनिषद् मे एक उलझन के रूप में, लिखा है। बिना खाए-पिए तीन रात्रियो को बिता देने का अर्थ है कि शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक अन्धकार मे से वसु, रुद्र तथा आदित्य की स्थिति मे पहुचने तक ब्रह्मचारी को तपस्यामय जीवन मे से गुजरना पडता है। इसी तपस्या को प्यास तथा भूख के साथ रहना कहा गया है—'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत' मे तपसा का यही अर्थ है—"तप"-अर्थात् भूख-प्यास की परवाह न करते हुए अन्धकार मे निकल कर प्रकाश [illegible] जाना।

द्वापर के महान् नेता श्रीकृष्ण जी की आज भी आवश्यकता है

(पृष्ठ ५ का शेष)

तथा सब प्रकार की अराजकता, अन्याय, तथा शोषण की प्रवृत्ति को समाप्त कर धर्मराज्य की स्थापना के लक्ष्य को लिए था। इस उद्देश्य से उन्होने न्यायपक्ष को लेकर पाण्डवो का साथ दिया। और अपनी कुशल नीति से उनको विजयी बनाकर एक सुदृढ़, सशक्त चक्रवर्ती राज्य की स्थापना की, जो कृष्ण के पश्चात् सहस्रों वर्षों तक चलता रहा।

सक्षेप मे यह कह सकते हैं कि वह अपने युग के महान् राजनीतिवेत्ता, समाजसेवी, योगी, दार्शनिक, आर्य मर्यादाओ के कट्टर समर्थक और सबसे बढ़कर आर्य साम्राज्य स्रष्टा, विश्व के हृदय सम्राट संसाररूपी जल मे रहकर भी कमल की भान्ति निर्लेप रहने वाले महात्मा, योगीराज एव स्थितप्रज्ञ मुनि थे। आज की विकट स्थिति को निपटने के लिए परमप्रतापी कुशल राजनीतिज्ञ, देशभक्त, लोककल्याण की भावना वाले स्थितप्रज्ञ योगीराज श्रीकृष्ण जैसे महान नेता की आवश्यकता है।

एच ६४ अशोक विहार, दिल्ली-११००५१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ [illegible]
गांधीनगरदिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपए   वर्ष ७ अंक ४५   रविवार ४ सितम्बर, १९८३   १२ भाद्रपद वि० २०४०   दयानन्दाब्द—१५९

दिल्ली की आर्यसमाजों में वेद-प्रचार की धूम

स्थान-स्थान पर वेद-कथाएं : वेदों के पारायण यज्ञ एवं अन्य कार्यक्रम

नई दिल्ली। २३ अगस्त से लेकर ३१ अगस्त, १९८३ तक दिल्ली की लगभग सभी आर्यसमाजो में वेदप्रचार सप्ताह की धूम रही। छोटी बडी अनेक आर्यसमाजो मे प्रात वेदो के पारायण महायज्ञ, वेदोपदेश एव भजनोपदेश हुए। रात्रि को भी विद्वानो की कथाए, भजनोपदेश के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

आर्यसमाज सफदरजंग इन्क्लेव की भव्य शोभा-यात्रा।

आर्यसमाज सफदरजग इन्क्लेव के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे गत कई दिनो से यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव रात्रि को वेद-कथा का आयोजन चल रहा है। रविवार २८ अगस्त को मध्याह्नोत्तर ४ बजे से उत्सव के उपलक्ष्य मे एक भव्य-शोभा यात्रा का आयोजन था। शोभा यात्रा मे दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो के अतिरिक्त आर्यसमाज तिलकनगर के उत्साही प्रधान श्री वीरभान जी भूतपूर्व प्रिंसिपल अपने अन्य साथियो एव अपने स्कूल के नन्हे-मुन्ने बच्चो सहित इस शोभा यात्रा मे आए। डी० ए० वी० स्कूल आर० के० पुरम, दयानन्द वेद विद्यालय के यूसुफ सराय एव अन्य कई स्कूलो के छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के नवयुवक अपने शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन एवं लाठी तलवार के करतब दिखला रहे थे। शोभा यात्रा मे दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजो से पधारे सैकडो नर नारी उपस्थित थे। सभा-प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा सभा मन्त्री श्री प्राण नाथ भई पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री रामनाथ सहगल मन्त्री प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रामलाल मलिक, श्री रामभज बतरा, श्री रामशरणदास आर्य, महामन्त्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल एव अन्य गणमान्य महानुभाव आर्यसमाज के कर्मठ प्रधान श्री खेर जी के साथ शोभा यात्रा की अगुवाई कर रहे थे। उक्त आर्यसमाज के इस सफल आयोजन पर हम 'आर्यसन्देश की ओर से समाज के प्रधान एव अधिकारियो को बधाई देते हैं।

आर्यसमाज बिरलालाइन्ज में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव एवं सभा प्रधान एवं मन्त्री का स्वागत।

रविवार २८ अगस्त को प्रात ८ से १२ बजे तक आर्यसमाज बिरला लाइन्ज में यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। तदुपरान्त सभा प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा एव सभा मन्त्री श्री प्राणनाथ भई का आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम पूज्य स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री अशोक कुमार जी वेदालंकार के अतिरिक्त बिरला आर्य कन्या वरिष्ठ सैकेण्डरी स्कूल की कन्याओ ने रुचिकर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सभा प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने अधिकारियो का धन्यवाद करते हुए योगीराज श्री कृष्ण द्वारा गीता मे दिए गए उपदेश के अनुसार सभी उपस्थित आर्य बहिन भाइयो को नि स्वार्थ भाव से वैदिक धर्म की सेवा करने एव अपनत्व कोत्यागकर एक शक्तिशाली सगठन के रूप मे आर्यसमाज के वर्तमानकाल के उत्तरदायित्व को पूर्ण करने के लिए आह्वान किया।

आर्यसमाज गोविन्द भवन में लाला गोविन्द राम पुण्य स्मृतिदिवस

आर्यसमाज गोविन्द भवन सब्जीमण्डी मे रविवार २८ अगस्त १९८३ को स्वर्गीय महात्मा गोविन्द रामजी का स्मृति दिवस प्रात ९ बजे से १२ बजे तक मनाया गया। बृहद यज्ञोपरान्त गुजरावाला गुरुकुल पब्लिक स्कूल के बच्चो ने रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया और विभिन्न आर्य कार्यकर्ताओ ने पुण्य आत्मा के प्रति भाव भरी श्रद्धाजलि अर्पित की। सभा प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने इस अवसर पर बोलते हुए बताया कि स्वर्गीय लाला गोविंद रामजी कितनी लगन और श्रद्धा से गुजरावाला गुरुकुल की सेवा अपने जीवन काल मे करते रहे। देश के विभाजन के पश्चात जब लोग अपना सर्वस्व लुटाकर सब कुछ छोडकर अपनी जान बचाकर भारत पहुचे थे उस समय भी लाला गोविन्दराम गुरुकुल गुजरावाला की पर्याप्त धन राशि अपने साथ लेकर दिल्ली पहुचे। और उसी रुपए से वर्तमान गोविंद भवन (पूर्व राम बाग) सब्जी मण्डी की सारी विशाल बिल्डिग गुरुकुल गुजरावाला ट्रस्ट के नाम से खरीद ली। कुछ समय आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का कार्यालय भी इसी भवन मे लाया गया था। जब स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ सभा के मन्त्री बने थे। गुरुकुल गुजरावाला वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल जो पूर्व लोधी रोड मे स्थापित किया गया था इस बिल्डिग मे लाया गया जो आज भी बडी सफलतापूर्वक चल रहा है। आर्यसमाज गोविन्द भवन भी इसी भवन मे स्थित है और भवन एव स्कूल इत्यादि स्वर्गीय लाला गोविन्द राम जी के कीर्ति स्तम्भ हैं जिनके सचालन मे मेहता परिवार पूरा सहयोग प्रदान कर रहा है। समाराह मे लाला गोविन्द जी एव लाला बसीलाल जी के परिवारो के सभी सदस्यगण उपस्थित थे।

चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर का उत्सव

रविवार २८ अगस्त के दिन दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य सस्था चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर सूरज पर्वत का वार्षिकोत्सव शुरु हुआ। यह उत्सव २८ अगस्त से एक सितम्बर तक चल रहा है। रविवार २८ अगस्त को छात्र छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। जिसका विषय था, यदि आज स्वामी दयानन्द एव स्वामी श्रद्धानन्द जीवित होते तो छात्र छात्राओ के अतिरिक्त विभिन्न विद्वानो एव कार्यकर्ताओ ने भी अपने विचार व्यक्त किये। भोजन पश्चात २ बजे से ला० राम गोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे एक विचार गोष्ठी हुई जिसका विषय था कि वर्तमान परिस्थितियो मे आर्यसमाज को (१) सरकार के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। (२) अथवा अपनी पृथकता बनानी चाहिए (३) अथवा विरोधी दलो के साथ मिलकर शोर मचाना चाहिए।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द सरस्वतीजी श्री क्षितीश जी वेदालकार, श्री के० नरेन्द्र जी, सोमनाथ एडवोकेट प० सत्यव्रत सिद्धातालकार बलराज मधोक ला० हसराज गुप्त, डा० प्रशान्त कुमार इत्यादि अनेक महानुभावो ने अपने विचार व्यक्त किए। गोष्ठी बिना किसी निर्णय लिऐ समाप्त हो गई। २९ अगस्त से १ नवम्बर तक अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमो का आयोजन है। यह सस्था वयोवृद्धनता चौधरी देशराज जी की धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीमती चन्द्रवती जी की पुण्य स्मृति मे स्थापित है और इसका प्रत्येक कार्य भवन सफाई प्रबन्ध शिक्षा का स्तर धर्म शिक्षा इत्यादि वास्तव मे जैसी होनी चाहिऐ वैसी ही है इस सुन्दर एव रचनात्मक कार्य के लिए चौधरी देशराज एव उनके सहयोगी बधाई के पात्र है यह सस्था आर्यसमाज की एक गौरवपूर्ण सस्था है।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

सर्वोत्कृष्ट मन्त्र-गायत्री

परमात्मा हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग पर चलावे

—प्रेमनाथ एडवोकेट

ओ भूर्भुव स्व तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न. प्रचोदयात्॥

॥यजु० ३६।३ वा ३०।२॥ ऋ० ३।६२।१०॥सा०१३।४।३।१॥

शब्दार्थ—[ओ३म्] परमेश्वर (परमात्मा को सर्वोत्तम नाम) [भू] प्राणाधार वा प्राणप्रिय, [भुव] (धार्मिक जीवो के) सब दु खो का दूर करने वाला, [स्व] सुखस्वरूप वा सर्वव्यापक [तत्] उस [सवितु] सब जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता [देवस्य] आनन्दस्वरूप सर्वप्रकाशक वा (धर्मात्मा, मुमुक्षु वा मुक्त जीवो को) सर्वानन्द देने वाले के [वरेण्यम्] सर्वोत्तम, अतिश्रेष्ठ [भर्ग] निष्पाप शुद्ध स्वरूप का [धीमहि] हम ध्यान करें। [य] जो (परमात्मा) [न] हमारी [धिय] बुद्धियो को [प्रचोदयात्] सन्मार्ग मे प्रवृत्त करें।

मन्त्र के ऋषि-देवतादि—यह वेद मन्त्र जैसा कि ऊपर बताया गया है ऋग्वेद, यजुर्वेद व सामवेद तीनो वेदो मे आता है और यजुर्वेद मे दो बार। इन सब का ऋषि विश्वामित्र है, सिवा यजुर्वेद के ३०वें अध्याय का जो यह दूसरा मन्त्र है वहा इसका ऋषि नारायण है।

इस मन्त्र का देवता तीनो वेदो मे सविता है और स्वर षड्ज है। इस मन्त्र का छन्द सामवेद मे गायत्री है, किन्तु ऋग्वेद व यजुर्वेद मे इसका छन्द निचृद्गायत्री है और यजुर्वेद के ३६वें अध्याय मे 'भूर्भुव स्व' का देवी बृहती है और स्वर मध्यम है।

मन्त्र भाग—गायत्री मन्त्र के तीन भाग है—(१) ओ३म् (२) भूर्भुव स्व (३) तत्सवितुवरेण्यम्। ओ३म् शब्द तो किसी वेद मे इस मन्त्र का भाग नही आता किन्तु यह परमात्मा का सर्वोत्तम नाम होने से इस मन्त्र के पहले बोला जाता है जैसा कि और मन्त्रो के पहले भी।

'भूर्भुवस्व' यह भाग भी केवल यजुर्वेद के ३६वें अध्याय के मन्त्र मे आता है दूसरो मे नही। ये तीनो (भू, भुव व स्व:) महाव्याहृतिया कहलाती हैं। 'तत्सवितुर्वेण्यम्' यह भाग तो तीनो मे एक जैसा आता है।

भावार्थ—ऋषि दयानन्द यजुर्वेद के ३०वें अध्याय मे इस मन्त्र के भाष्य मे इसका भावार्थ निम्न प्रकार से देते हैं—परमेश्वर सदा जीवो को शुभ मार्ग के लिए ही प्रेरित करता है। अशुभ के लिए कभी नही। जीव ईश्वर की प्रेरणा का उल्लघन करके ही अशुभाचरण करता है और ईश्वर की व्यवस्था से दण्ड पाता है। जैसे परमेश्वर जीवो को अशुभाचरण से अलग कर शुभाचरण मे प्रवृत्त करता है वैसे राजा भी करे। जैसे परमेश्वर मे हम पितृभाव करते अर्थात् उसको पिता मानते हैं, वैसे राजा को भी माने। जैसे परमेश्वर जीवो मे पुत्रभाव का आचरण करता है वैसे राजा भी प्रजाओ मे पुत्रवत वर्ते। जैसे परमेश्वर सब दोष, क्लेश वा अन्यायो से निवृत्त है, वैसे राजा भी होवे।

इसी गायत्री मन्त्र का यजुर्वेद के ३६वें अध्याय मे भाष्य करते हुए इसका भावार्थ निम्न प्रकार से करते हैं—जो मनुष्य कर्म-उपासना और ज्ञान सम्बन्धी विद्याओ का सम्यक् ग्रहण कर सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त परमात्मा के साथ अपने आत्मा को युक्त करते हैं और अधर्म, अनैश्वर्य और दु खो को छोड, धर्म, ऐश्वर्य और सुखो को प्राप्त होते हैं उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म का अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता है।

'इस मन्त्र का ऋग्वेद मे भाष्य करते हुए ऋषि दयानन्द इसका भावार्थ निम्न प्रकार से लिखते हैं—जो मनुष्य सबके साक्षी, पिता के सदृश वर्त्तमान, न्यायेश, दयालु, शुद्ध सनातन और सबके आत्माओ के साक्षी परमात्मा की ही स्तुति और प्रार्थना करके उसकी उपासना करते हैं, उनको कृपानिधि परम गुरु परमेश्वर दुष्ट आचरण से पृथक् कर श्रेष्ठ आचरण मे प्रवृत्त करा और पवित्र तथा पुरुषार्थयुक्त करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करता है।

(अपूर्ण)

बिरला लाइन्स आर्यसमाज में वेद कथा

सोमवार २२ अगस्त से शनिवार २७ अगस्त, १९८३ तक प्रतिदिन रात्रि मे ८॥ से ९॥ बजे तक आर्यसमाज बिरला लाइन्स कमला नगर मे प० अशोक कुमार विद्यालंकार ने वेद कथा प्रस्तुत की। कथा से पूर्व प० चुन्नीलाल जी भजनोपदेशक के भजन हुए। रविवार २८ अगस्त को यज्ञ के पश्चात् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा का अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन के पश्चात् पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज की अध्यक्षता मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया। स्वर्गीया प्रधाना श्री रतनदेवी जी की स्मृति में श्रद्धा के फूल पुस्तक का विमोचन स्वामी सत्यपति जी ने किया।

अनमोल वेदोपदेश [ऋग्वेद]

परमेश्वर चेतन और जड चलने वाले और स्थिर सभी पदार्थों का एक मात्र राजा है।

सरल और सत्य मार्ग पर चलने वाले देवो—विद्वानो की सुबुद्धि सबका कल्याण करने वाली होती है।

वह परमेश्वर अकेला ही सब प्रकार के अनुग्रह और निग्रह आदि कर्म करने मे समर्थ है।

इच्छा करने वाले नि.सन्देह अपने प्राप्तव्य को प्राप्त कर लेते हैं अथवा ऐश्वर्य-प्राप्ति का दृढ-सकल्प रखने वाले निश्चय ही अपेक्षित ऐश्वर्य पाते हैं।

विद्वान, योगी ज्योतियो की परम ज्योति सर्वश्रेष्ठ प्रकाशस्वरूप परब्रह्म को प्राप्त करता है।

अद्भुत गुण-कर्म-स्वभाव वाला ज्ञानी पुरुष परमेश्वर के सत्सग से प्रभु उपासना के सुख ऐश्वर्य और आनन्द से युक्त हो जाता है।

दक्षिणा देने वाले अमर हो जाते हैं। अथवा दक्षिणा देने वाले मोक्षानन्द का भोग प्राप्त करते हैं।

अन्न-धन आदि द्वारा दीन-दुखियो का पालन-पोषण करने वाले दु ख और पाप को प्राप्त नही होते अर्थात् दानी मनुष्य को दु ख और पाप नहीं घेरते हैं।

दानी अथवा यज्ञशील पुरुष के लिए प्रभु की ओर से कल्याणकारी शक्ति प्रदान होती है।

न्यायकारी परमेश्वर सरल और सत्य के मार्ग पर चलने वाले तथा उत्तम व्रतो का पालन करने वाले मनुष्य की सब प्रकार से रक्षा करता है।

दानशील मनुष्य धन की, ऐश्वर्यों की शोभा बढाता है।

दानशील पुरुषो के सम्बन्ध मे बुरे वचन कभी नही कहने चाहिए अथवा दानी की निन्दा नही करनी चाहिए।

—ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

धर्म की दुहाई !

महाभारत का युद्ध अठारह दिन चला था। पहले दस दिन तक कौरव दल के प्रधान सेनापति भीष्म थे। भीष्म के घायल होने पर कौरव दल के मुख्य सेनापति द्रोण हुए, द्रोण के भी मारे जाने पर कर्ण कौरव सेना के सेनापति नियुक्त हुए, उस समय दुर्योधन को सलाह दी गई कि अब भी सन्धि कर ली जाए, परन्तु दुर्योधन ने एक न सुनी। उसकी दृष्टि मे अर्जुन-कर्ण का द्वन्द्व-युद्ध महाभारत का निर्णायक युद्ध हो सकता है। आखिर अर्जुन और कर्ण मे सीधी भिडन्त शुरू हो गई। कर्ण ने दात पीसकर अर्जुन पर हमला किया, परन्तु अर्जुन ने कर्ण का अभिमान तोडने मे सारी ताकत लगा दी। इतने मे कर्ण ने एक साप के आकार का बाण डोरी पर चढाकर ऐसा निशाना लगाया कि दर्शक चिन्तित हो गए, परन्तु अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण ने घोडो को ऐसे बिठा दिया कि रथ नीचा हो गया और पहिए, जमीन मे गड गए, तीर अर्जुन के सिर के ऊपर से उसका मुकुट काटते हुए निष्फल चला गया। कृष्ण ने रथ से उतरकर पहिए निकालने की कोशिश की, युद्ध के नियम के अनुसार कर्ण को युद्ध बन्द करना था, परन्तु उसने वैसा नही किया। उसने अर्जुन पर लगातार हमला किया। अर्जुन ने कर्ण का जवाब दिया। जल्दी ही कर्ण के रथ का पहिया भी फंस गया। अब कर्ण ने अर्जुन को दुहाई दी—'मैं सकट मे फस गया हू, मुझ पर हमला बन्द कर दो। यह धर्म नहीं है।"

उस समय श्रीकृष्ण ने कर्ण से कहा था—"जब भीम को जहर भरा भोजन दिया गया, जब तुम लोगों ने उनके लिए लाख का घर बनवाया, एकवस्त्रा द्रौपदी को सभा में जब घसीटा गया, जब तेरह वर्ष बीत जाने पर भी पाडवो को उनका राज्य नही लौटाया गया, जब अकेले अभिमन्यु पर छह महारथियो ने मिलकर हमला किया, तब तुम लोगो का धर्म कहा गया था? अब सकट मे पडने पर तुम धर्म की दुहाई देते हो!" श्रीकृष्ण की डाट सुनकर कर्ण चुप हो गया, उसने रथ का पहिया निकालने की कोशिश की, परन्तु अर्जुन के बाण ने उसकी गर्दन पर सीधा निशाना लगा दिया।

—रेन्द्र

शिवसंकल्प

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्जोतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मन. शिवसंकल्पमस्तु ॥
यजुर्वेद ३४ ३

ज्ञान देने वाला जो मन चेतनाशील, धैर्यरूप और अविनाशी है, वह सब प्राणियो के हृदय में प्रकाश करने वाला है। जिस मन के बिना कोई कार्य किया जाना सम्भव नहीं, मेरा वह मन कल्याणयुक्त विचारो से युक्त हो।

राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिकता दें !

इस भारतभूमि मे तीन ऐसे राष्ट्रनिर्माता महापुरुष हुए हैं, जिन्होने अपने-अपने समयो मे विभक्त, अनेक छोटी इकाइयो मे बटे भारत को एक एव सयुक्त भारत या बृहत्तर महाभारत के निर्माण का प्रयत्न किया था। उनमे से सर्वप्रथम महाभारतकालीन गीता के उपदेशक परम राजनीतिज्ञ श्रीकृष्ण जी थे, जिन्होने अपने समय मे छोटे-छोटे राज्यो मे विभक्त एव अनेक निरकुश नृपतियो से पीड़ित देश को न्यायपरायण पाण्डवो के नेतृत्व मे महाभारत के रूप मे परिवर्तित किया था। दूसरे महापुरुष मौर्य साम्राज्य के सूत्रसचालक राजनीति शास्त्र मे पारगत महामति चाणक्य थे, जिन्होने मौर्य राजाओ के नेतृत्व में भारत की पश्चिमोत्तर सीमाओ को आधुनिक अफगानिस्तान तक पहुचाया था। समय-समय पर देश मे दूसरे ऐसे राजा और शासक हुए जिन्होने अपना चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित किया, परन्तु देश मे केन्द्रीय सुदृढ सत्ता स्थापित करने का तीसरा सफल प्रयत्न करने वाले महामानव सरदार वल्लभभाई पटेल थे। उन्होने अग्रेजो द्वारा छोडे गए देसी रियासतो के क्लस्टरो को यत्नपूर्वक समाप्त किया, जूनागढ और हैदराबाद की ज्वलन्त समस्याओ को कुशलतापूर्वक सुलझाया। उन्हे यदि मनचाहा करने की छूट दी जाती तो कश्मीर की समस्या भी कभी की सुलझ चुकी होती।

अपने पार्थिव जीवन के अन्तिम दिनो मे सरदार पटेल राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वाधिक महत्ता दिया करते थे। अपने अन्तिम सार्वजनिक भाषणो मे उन्होने देश की सुरक्षा के लिए दो सकटो की चर्चा बार-बार की थी। उन्होने कहा था कि राष्ट्र की सुरक्षा के लिए दो खतरे सदा रहते हैं एक आन्तरिक अव्यवस्था तथा दूसरे बाह्य आक्रमण के खतरे। खेद है कि इस समय देश के सम्मुख दोनों ही खतरे विद्यमान हैं। पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर क्षेत्रो में अलगाववादी शक्तिया पहले ही कार्यरत थीं, अब कई क्षेत्रीय दल केन्द्र की स्थिति निर्बल कर राज्यों के अधिकार बढाना चाहते हैं। इसी के साथ यह भी भूल नही सकते, हमारा पड़ोसी पाकिस्तान तीन बार आक्रमण कर मुह की खाने के बावजूद सयुक्त राज्य अमरिका और चीन की मदद से भारत के विरुद्ध अपनी सैनिक स्थिति मजबूत करने के लिए प्रयत्नशील हैं। विश्व की महाशक्तिया भारत के पडोसी-बागला देश, पाकिस्तान, श्रीलका और नेपाल आदि मे भारत विरोधी मोर्चे को मजबूत करने के लिए प्रयत्नशील हैं। यह बात भी भूली नहीं जा सकती कि बागलादेश, पाकिस्तान आदि बडी गिनती मे अपने घुसपैठिए भारत भेजते रहे हैं। इन घुसपैठियो के कारण असम, कश्मीर, पजाब एवं राजस्थान मे पचमागी तत्व निरन्तर मजबूत होते रहे हैं। श्रीलका के हत्याकाण्डो से वहा भारतवशियो की स्थिति अधिक सकटपूर्ण हो गई है।

एक सामान्य प्रेक्षक की दृष्टि मे ही देश की स्थिति पर्याप्त भयावह है। आज भी देश मे आन्तरिक अव्यवस्था और बाह्य आक्रमण के दोनो ही खतरे विद्यमान हैं। इस स्थिति का निवारण करने के लिए केन्द्रीय शासन, राज्यो की सरकारो एव सामान्य जनता, राजनीतिक दलो सभी को प्रयत्नशील होना चाहिए। हमे राष्ट्रीय सुरक्षा पर आने वाले सकटो की रोकथाम को प्राथमिकता देनी चाहिए। राज्यो एव क्षेत्रो मे अलगाववादी एव पृथकतावादी तत्वो की रोकथाम के लिए सभी सास्कृतिक एव राष्ट्रीय तत्वो को सगठित हो जाना चाहिए। भारत का इतिहास साक्षी है कि जब-जब केन्द्र मे सत्ता निर्बल हुई, देश अनेक छोटी इकाइयो मे बट गया और विदेशी आक्रमण का खतरा पैदा हो गया। ससार की महाशक्तिया भारत को स्वावलम्बी, शक्तिशाली और महान नही देखना चाहतीं, वे यहा के अलगाववादी तत्वो को मदद दे रही हैं। घुसपैठियो को सहारा दे रही हैं। इस विस्फोटक स्थिति का निवारण करने के लिए केन्द्र और राज्यो की सरकारों को सगठित और सन्नद्ध होना चाहिए। साथ ही इस सम्बन्ध मे जागरूक सांस्कृतिक संस्थाओं एव प्रबुद्ध राष्ट्रजनो को भी सगठित एव सन्नद्ध होकर विस्फोटक स्थिति के नियन्त्रण के लिए अपनी भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए।

योगी या भगवान श्रीकृष्ण और भारतीय संस्कृति

हम भगवान श्रीकृष्ण जी का जन्म दिन मनाते हैं क्योकि हम भगवान श्रीकृष्ण जी की सतान हैं परन्तु क्या हमे कोई श्रीकृष्ण की सतान आज कह सकता है ? श्रीकृष्ण जी गऊपाल या गोपाल थे हम विलायती कुत्ते कोठियो मे पालते हैं। वे दूध-दही मक्खन खाते थे, हम चाय, शराब और तम्बाकू का सेवन करते हैं। वे योगी थे हम भोगी हैं। टी० वी० दूरदर्शन फिल्म सिनेमा देखते हैं। नाचते हैं गाते हैं, लडके-लड़कियो के साथ नाचते और गाते हैं शराब और बीयर पीते हैं। फिल्मी गाने गाते हैं। हम नगी लडकियो का नाच देखते हैं तो क्या हम श्रीकृष्ण की सन्तान हैं या रावण कुम्भकर्ण की सन्तान हैं ? क्या हम भारतीय सस्कृति की रक्षा कर रहे हैं या उसे नष्ट कर रहे है ? स्कूल-कालिज के लड़के और लड़कियां टी० वी० देखने मे इतनी मस्त रहती हैं कि पढने की पुस्तको को महीनों भूल बैठे हैं। बस नौजवानो का तो बेडा गरक होने वाला है। भगवान ही बचाए।

—मगलराम बसल, मुख्याध्यापक, ३१/५ जैकमपुरा, गुड़गांव

वयोवृद्ध हिन्दी-साहित्यकारों को ताम्रपत्र दिए जाएं

२८, २९, और ३० अक्तूबर, १९८३ को दिल्ली मे तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन होने जा रहा है। उसके स्वागताध्यक्ष अध्यक्ष, लोकसभा, नई दिल्ली श्री जाखड हैं। अच्छा हो कि उक्त अवसर पर ८० वर्ष से उम्र वाले सभी हिन्दी साहित्यकारो को ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया जाए। श्री सन्तराम बी० ए० ९६ वर्ष (आजकल पैर की हड्डी टूट जाने से दिल्ली मे हैं मार्फत श्रीमती गार्गी चड्ढा, ५१ नवजीवनविहार, नई दिल्ली-१७) प० बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार (८९ वर्ष), डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, ८७ वर्ष, विजिटर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय आदि अनेक ऐसे साहित्यकार हैं, जो सतत ६०-७० वर्षो से हिन्दी-सेवा मे लगे है, उनकी परिचयात्मक एक पुस्तक भी उन अवसर पर प्रकाशित की जाए।

—अखिल विनय, आधुनिक हिन्दी सेवी, पो० बा० ७७४६, बम्बई-९२

पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय के पत्रों का सकलन

आर्यसमाज के मूर्धन्य दार्शनिक विद्वान स्व० प० गगा प्रसाद जी उपाध्याय ने अनेक व्यक्तियो को पत्र लिखे है। इन पत्रो मे उपा० जी के उन अमूल्य विचारो की अभिव्यक्तिया छिपी पडी हैं जो सम्भवत उनकी कृति मे नही आ सकी है। प० स्वामी सत्यप्रकाश जी की इच्छा है कि उन बिखरे हुए पत्रो का एक सकलन प्रकाशित किया जाए। मैं उनकी इच्छानुसार यह सूचना प्रकाशित करा रहा हू कि जिन महानुभावो के पास पू० उपाध्याय जी के पत्र हो, वे उन पत्रो की मूल प्रति या फोटो प्रिन्ट प्रति मेरे पास भेजने की कृपा करें। पत्र सकलन का उत्तरदायित्व मुझे सौपा है।

— जगदीश आर्य मन्त्री-आर्यसमाज सासाराम

हम सच्चे व्रतों का संकल्प लें

देवताओं और देवियो के नाम पर नर-नारी दिनभर उपवास रहते हैं और सायकाल या रात्रि मे प्रसाद ग्रहण कर अपना उपवास तोडते है, इसे ही वे व्रत समझते हैं। यह वेद विरुद्ध है। व्रत का अर्थ होता है प्रतिज्ञा। किसी भी शुभ अवसर पर बृहत् यज्ञ करना चाहिए और रात्रि मे किसी वेद के पडित या विद्वान से उनका जीवन चरित्र तथा वेद, रामायण, गीता का उपदेश सुनना चाहिए और उनके अनुकूल आचरण करना चाहिए। योगीराज श्रीकृष्ण ने अपने शरीर की १६, १०८ नाडियो को अपनी योग-साधना के द्वारा वश मे कर लिया था, जिसे लोग उनकी १६,१०८ रानिया होने की बात मानते हैं यह गलत है। वह प्रतिदिन वेद पाठ, सध्या और हवन-यज्ञ करते थे। उनकी विवाहिता पत्नी का नाम रुक्मिणी और पुत्र का नाम प्रद्युम्न था।

श्रीकृष्ण गोपाल थे, इसी से उन्हे गोपालक भी कहते है। उनकी बासुरी की तान सुनकर सभी नर-नारी और पशु-पक्षी मुग्ध हो जाते थे। श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता आज लोगो के लिए प्रेरणा है। उनके बीच जात-पात, ऊच-नीच या धनी-निर्धन का कोई भेदभाव नही था। इससे हम लोगो को शिक्षा लेनी चाहिए। देवताओ, देवियों, महापुरुषो तथा शहीदो के प्रति अपमान भरा शब्द न बोले, न किसी को बोलने दे। उनके नामो को ऊचा और सम्मान करें। जन्माष्टमी के अवसर पर अपने जीवन के अन्दर से सभी दुर्गुणो को दूर करने का व्रत (प्रतिज्ञा) करें। अपने जीवन के अन्दर स्वच्छ खान-पान उत्तम आचरण विचार को अपनाए। यही सच्ची पूजा और व्रत है। राष्ट्र धर्म की रक्षा करें, गोहत्या बन्द कराने के लिए जोरदार कदम उठाए। शिवशकर के बसहा (बैल) गोपाल की गैया उनकी भूमि पर कट रही हैं। गोहत्या को बन्द कराना ही सच्ची पूजा और धर्म है। राम कृष्ण के भक्त तब कहलाएगे, गोहत्या जब बन्द कराएगे।

—सूर विश्वम्भर आर्य, समस्तीपुर (बिहार)

आर्यसमाज और राजनीति

—रामस्वरूप

आर्यसमाज के छठे नियम मे इस समाज का मुख्य उद्देश्य ससार का उपकार यानी सबकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना माना गया है। इस समाज की इकाई अर्थात जो आर्य हैं, उनका परम धर्म वेद पढना-पढाना, सुनना-सुनाना माना गया है। तीसरे नियम मे, वेद पढ़ने-सुनने मात्र की नही, वरन पढाने सुनाने की योग्यता भी प्रत्येक आर्य मे होनी अनिवार्य है। वेद, सृष्टि, समष्टि (मानव समाज), व्यष्टि (व्यक्ति) के सब धर्मों का सकेत करता है। वेद की त्रिविध प्रक्रिया अधिदेव-अधिभूत-अध्यात्म भी क्रमश उपर्युक्त तीनो से सम्बन्धित है। संसार का उपकार यानी व्यक्ति (शारीरिक-आत्मिक) तथा समुदाय (सामाजिक) की उन्नति मे राज्य व्यवस्था का उपयोग किया जा सकता है। वेद के सत्य अर्थ का प्रकाश करने के लिए आर्यसमाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थ-प्रकाश' पूर्वार्द्ध की रचना की थी जिसके छठे समुल्लास मे राजधर्म की व्याख्या है। जैसे ब्राह्मण ग्रन्थ ब्रह्म यानी वेद की व्याख्या है, वैसे ही 'सत्यार्थ प्रकाश' वेद के आधार पर मानव जीवन की अनेक विधाओ को स्पष्ट करता है। समुदाय और व्यक्ति का राजधर्म यानी समाज का सगठन सुदृढ करने के लिए वेद तथा आर्षग्रन्थो के आधार पर इसके छठे समुल्लास मे विवेचन किया है। ऋषि ने जिस सन्दर्भ मे राजधर्म का प्रयोग किया है, इस समय मे उसके लिए राजनीति शब्द का प्रचलन है। आर्यसमाज के सदस्यों ने विभिन्न देशोके स्वातन्त्र्य आन्दोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। भारत ने भी तथा अन्य देशो मे भी। कोई देश राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हो जाए तो उसकी आजादी बरकरार रखने के लिए कठोर तप की अपेक्षा होती है। मोक्ष नामक पुरुषार्थ सबके लिए है, अत किसी मनुष्य का किसी भी प्रकार भी परवशता न भोगनी पडे, इसके लिए आर्य लोग सतत चेष्टावान रहें यह उनका सहज धर्म है।

आर्यसमाज मे अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय अन्य स्तरो पर जो पदाधिकारी हैं, उसमे वेद-आर्ष ग्रन्थ, ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थो में गति रखने वाले नगण्य हैं, अत राजनीतिक कार्य-कलाप के सन्दर्भ मे एक दुविधा अनेक वर्षो से चल रही है। अनेक सभासद् व्यक्ति विभिन्न राजनीतिक दलो से जुडे हुए हैं। अधिकाश आर्यसमाज के पदाधिकारी क्योकि राजनीतिक दलो से बंधे हैं, इस कारण इन दलो का विरोध आर्य सगठन मे भी उजागर होता रहता है। कुछ वर्षों पूर्व कुछ उत्साही युवको ने एक अलग आर्यसभा नामक राजनीतिक दल की स्थापना की, जिसे वे आर्यसमाज का राजनीतिक पक्ष मानते हैं, परन्तु जो अन्तर्राष्ट्रीय सगठन है आर्यसमाज का, उसने ऐसा नही माना। परिणामत आर्य सगठन मे पारस्परिक स्नेह मे और न्यूनता आई। आर्य सभा स्थापना के पहले भी कुछ प्रयास हुए थे, परन्तु अलग दल नही बन पाया था। अभी कुछ सप्ताह पूर्व 'राजार्य-सभा' नाम से पुनः एक और प्रयास किया गया है। आर्यसमाज वालो को विभिन्न राजनीतिक दलो का सदस्य होना चाहिए या नही तथा अलग राजनीतिक दल बनाना चाहिए या नही, इन दो प्रश्नो का उत्तर सोचने के पहले ऋषि के द्वारा निर्दिष्ट कुछ सिद्धान्तो पर विचार कर लिया जाए।

तीन सभाओ का वैदिक सिद्धान्त

पहला तीन सभाओ वाला सिद्धान्त कहलाता है यानी धर्मार्य-सभा, विद्यार्य-सभा एव राजार्य-सभा, तीनो होनी चाहिए। इसके लिए ऋषि प्रमाण देते हैं ऋग्वेद ३।३।७६ का। जिसके भावानुवाद मे खुलासा किया है कि तीन सभा व्यवस्था से सब विद्या स्वातन्त्र्य धर्म सुशिक्षा धन आदि युक्त हो, निष्कर्ष यह निकला कि आर्यसमाज के आदर्श के अनुरूप राज्य व्यवस्था कही हो तो वहा हर व्यक्ति विद्वान, स्वतन्त्र, धार्मिक सुशिक्षित और धनवान होगा, फिर अथर्व वेद के १६।७। ५५।६ मन्त्र का हवाला देते हुए ऋषि व्याख्या करते हैं कि किसी एक व्यक्ति को राज्य की पूर्ण प्रभुसत्ता न दी जानी चाहिए परन्तु राजा अर्थात् सभापति सभा के अधीन रहे, ऐसी व्यवस्था ही होनी चाहिए, इसके आगे शतपथ ब्राह्मण १३।२।३ के अनुवाद मे ऋषि बतलाते हैं—अकेला राजा अर्थात् सभापति उन्मत्त होकर प्रजानाशक बन सकता है और आगे अथर्ववेद ६।१०।६८।१ की व्याख्या मे ऋषि बतलाते हैं कि जो व्यक्ति प्रशसनीय गुण-कर्म स्वभाव युक्त हो तथा सर्वमान्य हो, उसे सभापति (राजा) बनाया जाए।

तात्पर्य यह कि वेदसम्मत राजधर्म या राजनीति के अनुसार एकतन्त्र नहीं लोकतन्त्र भी बहुमत वाला न हो करके सर्वसम्मति वाला होना समीचीन होगा। सभापति सभा के सभ्यो की सम्मति से कार्य करे तथा जो सभ्य या सभासद् हैं, वे प्रजा की सम्मति से कार्य करें। इस सूत्र मे एक बात और सामने आती है वह यह कि सबसे पहले स्तर पर लोकतन्त्र प्रतिनिधि निरपेक्ष यानी प्रत्यक्ष होना आवश्यक है। जैसे समुदाय की एक महत्वपूर्ण इकाई ग्राम है। तो ग्राम स्तर पर सारे ही व्यक्ति या नागरिक मिलकर बैठें, सामूहिक विचार करें तथा उन सबकी सम्मति या सर्वसम्मति ग्राम-स्तरीय प्रतिनिधि को बता दें। जनपद मे अनेक ग्राम होते हैं, नगर भी होते हैं। नगरो के खण्ड बन सकते हैं जो गाव वाली आबादी के बराबर से हो, उनमे भी जनतन्त्र प्रत्यक्ष हो सकता है। जनपद मे ग्राम व नगरखण्डो के जो प्रतिनिधि हैं, वे सब मिलकर जो सर्वसम्मति दें, उसके अनुसार जनपदीय प्रतिनिधि करें।

जनता का सीधा नियन्त्रण

एक राष्ट्र मे अनेक जनपद होगे तथा सब जनपदो के प्रतिनिधि सर्वसम्मति से जो तय करें उसको राष्ट्र का सभापति व्यवहार मे लाए। राष्ट्रीय सभापति की भाति ही जनपदीय सभापति, ग्राम (या नगरखण्ड) सभापति भी होगे ही। बहुमति (सत्ता पक्ष) व लघुमति (सत्ताहीन पक्ष) के लिए ऋषि ने लिखा है। शासन सर्वहित के लिए है, अत यह तो सर्वसम्मति यानी सबके मत से होगा। उपर्युक्त पद्धति में निर्णय शक्ति प्रजा या लोक के हाथो मे सीधे-सीधे ही है, प्रतिनिधि को तो जैसा बताया जाए उसे अगले स्तर की सभा में जाकर कहना है। 'प्रतिनिधि का प्रतिनिधि' भी इस व्यवस्था मे होगा। जैसे ग्राम प्रतिनिधियों का प्रतिनिधि हो गया जनपदीय प्रतिनिधि, ऐसे ही आगे भी। इस पद्धति में प्रजा के नियन्त्रण मे प्रतिनिधि रहेगा। परिणामस्वरूप प्रतिनिधि के नियन्त्रण मे प्रशासन, प्रशासन के नियन्त्रण मे आरक्षी (पुलिस) तथा आरक्षी के नियन्त्रण मे असामाजिक तत्व रहेगे, अभी तो ठीक उल्टा ही है।

असामाजिक तत्व किसी प्रकार की धृष्टता-बलात्कार-अत्याचार-अन्याय नहीं कर सकें तथा शासन मे जो बैठे हैं, वे भी उपर्युक्त दोषो से दूर रहे, इसके लिए ऋषि प्रदत्त इस स्वर्णिम सूत्र को व्यवहार रूप देने के लिए आर्यसमाज वालो की शक्ति लगनी चाहिए। अभी तो शक्ति लग रही है, राजनीतिक दलो को पनपाने मे या कोई तथाकथित अपना राजनीतिक दल बनाने मे। दलो की दलदल में शामिल होना या अपनी और दलदल बनाना, ये दोनों ही आर्यत्व के विरुद्ध है। जब आर्यसमाज वाले ऋषि विरुद्ध चलेंगे तो परिणाम अनिष्ट होगा ही, जो अभी तक होता ही आ रहा है। अतएव जो आर्यसमाज के सभासद् राजनीतिक दलों मे हैं, उन्हें मृग मरीचिका छोड़ने का साहस दिखाना चाहिए, यह आर्योचित है।

तीनों सभाओं के सम्बन्ध

तीनों सभाओ के पारस्परिक सम्बन्ध और वरीयताक्रम पर विचार करने के पहले तीन सभाओ के कार्यक्रम को जान लिया जाए। 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' में राजा-प्रजा धर्म विषय में ऋषि ने संकेत किया है कि धर्मार्य-सभा अधर्म अनाचार की नाशक है। विद्यार्य-सभा अज्ञान की नाशक है, अर्थात् राष्ट्र या क्षेत्र की शक्ति की पुज ब्रह्मशक्ति की पुज, आत्मशक्ति की पुज क्रमशः राजार्य विद्यार्य-धर्मार्य सभाए हैं। द्वितीय आश्रमस्थ वर्ग में क्षत्रिय के ऊपर ब्राह्मण है अत राजार्य-सभा से ऊपर विद्यार्य-सभा का स्थान है। गृहस्थी विद्वानो के अलावा वानप्रस्थी विद्वान भी इसमें होगे। तथा ब्राह्मणो मे भी विशेष वे हैं जो कि पुरोहित हैं। आश्रमो मे चतुर्थ है—सन्यास, चौथे आश्रम में ऋणत्रयी निरपेक्ष व्यक्ति बन जाता है। अतः धर्म निर्णय में परिवार सर्वश्रेष्ठ है। इनके सहयोग हेतु पुरोहित वर्ग है। अत. इस धर्मार्य सभा का कथन विद्यार्य-सभा से भी ऊंचा हुआ। यह कहा जाए कि सत्ता के ऊपर ज्ञान व इसके ऊपर चरित्र का स्थान उस समाज व्यवस्था में होगा, जो वेद सम्मत समझी जाती है। यदि समष्टि शरीर कल्पित किया जाए तो इसमे मन के समतुल्य राजार्य-सभा, बुद्धि के समतुल्य विद्यार्य सभा आत्मा के समतुल्य धर्मार्य-सभा होगी। यदि सृष्टि के तीन लोक से तुलना जाननी है तो पृथ्वी स्थानी होगी, राजार्य-सभा, अतरिक्ष स्थानी होगी—विद्यार्य-सभा, दयुस्थानी होगी—धर्मार्य-सभा, राज्य का सम्बन्ध पृथ्वी से ही है।

किसी राष्ट्र या क्षेत्र विशेष मे तीनों सभाए उस स्थिति मे होगी जबकि सब लोग (या नागरिक) सम्प्रेरणा मे आर्य बन जाए। यदि ऐसा नहीं है तो फिर धर्म-सभा, विधान-सभा, राजसभा बन सकती है। तथा आर्यसमाज वाले सतत चेष्टा करें, कि प्रतिनिधि बनाने के लिए जो निर्वाचन पद्धति है वह छल-भय-लोभ आदि से मुक्त हो जाए। प्रतिनिधि नागरिक यानी प्रजा (लोक-जन) के अधीन रहे। सत्ता का दुरुपयोग कोई भी न कर पाए। सातवें नियमानुसार यथायोग्य व्यवहार सबके साथ हो। जो अपराध करे तो उसे दड मिले व निरपराध को दण्डित नहीं किया जा सके। अपराध न करने का शिक्षण देना विधान-सभा के लिए तथा मन को अपराध भाव मुक्त बना—देने का काम धर्म-सभा के लिए है। जो आर्य हैं उनकी प्रतिष्ठा तो ऐसी हो कि प्रतिनिधि बनने के लिए उन्हें निर्वाचन के क्षेत्र मे न उतरना पडे। क्षेत्र के लोग सर्वसम्मति से उन्हे चुन लें, जो प्रजानिष्ठ प्रतिनिधि व्यवस्था है उसमे राजनीतिक दलो के दलदल की कतई आवश्यकता नहीं है। लोकतन्त्र को राजनीतिक दलमुक्त करने मे पूरी शक्ति राज्यो की लगनी चाहिए। संसार के उपकार के लिए यह एक अत्यावश्यक कदम है। (अपूर्ण)

—गणेश कुटीर, वैदालाल मार्ग, अजमेर

हमारे उपदेश और उपदेशक

आर्यसमाज एक वेदोद्धारक आन्दोलन है। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए यह सार्वभौम मानवता की मनोवृत्ति मे सुधार-परिष्कार द्वारा उदात्त और सात्विक परिवर्तन करना चाहता है। दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि आर्यसमाज का मुख्य लक्ष्य है वैदिक आचार-विचार का प्रसार। ससार के अधिकाश मत-मतान्तर रूढवादो, करट्टतापूर्ण मन्तव्यो और अन्धविश्वासो को सर्वाधिक महत्व देते हैं, तर्क की कसौटी पर अपने विश्वासो और मन्तव्यो की सत्यता को परखने से घबराते हैं। इसके विपरीत आर्यसमाज अपने सभी सिद्धान्तो, मन्तव्यो और आचार-विचारो मे तर्क को सर्वोपरि प्रधानता देता है। यही भारतीय सस्कृति की आर्ष परम्परा भी है। आर्यसमाज सृष्टिक्रम और विज्ञान विरोधी पन्थाई ढकोसलों तथा चमत्कारों को नही स्वीकारता। जो शक्तियां अपने मत, मजहब या सम्प्रदाय का सहारा लेकर राजनीतिक उत्कर्ष प्राप्त करना चाहती हैं, वे आर्य समाज को अपने मार्ग में बाधा कहने लगती हैं। चोर को चादनी सुहाती नहीं।

प्रचार शैली कैसी हो ?

खण्डन-मण्डन-प्रधान प्रचार शैली को अपनाकर आर्यसमाज ने थोडे समय में ही बहुत महत्वपूर्ण और स्थायी सफलताए प्राप्त की हैं। आर्यसमाज के प्रयासों से सस्कृत भाषा को नवजीवन मिल चुका है, बुद्धिवाद भी जाग्रत हुआ है। भौतिक विज्ञान की उन्नति और नित्यप्रति नए-नए आविष्कारो ने एक ओर तो वैदिक-सिद्धान्तों को पुष्ट किया है, दूसरी ओर विद्या-विज्ञान विरोधी साम्प्रदायिक चमत्कारबहुल रूढवादों को झुठलाया भी है। यह ठीक है कि आर्य समाज समझौतावादी नहीं, परन्तु यह कूप-मण्डूक या विचारों की स्वतन्त्रता का विरोधी भी नहीं जो लोग राजनीतिक प्रभुता प्राप्त करने के लिए अपने मत-वालों की सख्या वृद्धि करना चाहते हैं, वे एक ओर तो किसी को अपने सिद्धान्तो की सत्यता को परखने का अधिकार नहीं देते, दूसरी ओर भिन्न मतवालों को सह-अस्तित्व को भी नहीं स्वीकारते। आर्यसमाज इस धाधली का अन्त करना चाहता है।

लक्ष्य वैचारिक क्रान्ति था।

आर्यसामाजिक प्रगतियों के अन्तर्गत जो छोटे-बड़े केन्द्रों और सुविशाल संस्थावाद का प्रसार हुआ है, उसका मुख्य उद्देश्य वैचारिक-क्रान्ति को सफल बनाना ही है। सुयोग्य अध्यापकों और सुयोग्य उपदेशकों का आर्यसमाज के सामूहिक जीवन में बहुत ऊंचा स्थान है। उत्सवों सत्सगों आदि को अधिकाधिक उपयोगी और प्रभावी बनाने के लिए यहा कुछ विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

देश, काल, पात्र, परिस्थिति और आवश्यकता-भेद से आर्यसमाज के प्रचार प्रसग भी बहुत प्रकार के हैं। विचार-गोष्ठियो, पारिवारिक-सत्सगो, अपने या पराए विशेष-विशेष ग्रन्थों, पुस्तको और इतिहासो से सम्बन्धित स्वाध्याय-सम्मेलनों, उत्सवों, समाज-सुधारक प्रगतियो आदि की सफलता के लिए सदाचारी, धुन के धनी और अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ सुवक्ता, कष्ट-सहिष्णु विद्वान उपदेशको की तो बहुत अधिक सख्या मे आवश्यकता है ही, सुपरीक्षित, सुविचारित प्रचार-प्रणालियो, शैलियो, आयोजनाओ और उनके क्रियान्वयन के लिए आवश्यक साधनो एव सहायको का होना भी जरूरी है। क्या हमारे पास सुयोग्य उपदेशक हैं ? यदि हा, तो क्या उनके सरक्षण और दिशा-बोध के लिए हमारा तन्त्र परिपुष्ट है ? यदि नही, तो स्थिति सुधार और आवश्यकता-पूर्ति के लिए क्या हो रहा है ? कौन क्या करता है ?

मूल्यांकन का मानदण्ड नही

आजकल आर्यसमाजो के सत्सगो और अन्य प्रचार-प्रसगो मे विद्वानो द्वारा जो-जो प्रवचन, व्याख्यान आदि प्रस्तुत किए जाते हैं, वे प्राय किसी वेद-मन्त्र का व्याख्या-विस्तार रूप ही होते हैं। वक्ता पर समय का ढीला-सा प्रतिबन्ध तो होता है, किसी विशेष विचार या विषय के प्रतिपादन का कोई बन्धन प्राय नही होता। वक्ता की योग्यता-अयोग्यतानुसार उसका कथन रोचक, अरोचक यथार्थ, अयथार्थ, उपयोगी, अनुपयोगी, परिस्थिति और श्रोता-मण्डल के अनुकूल या प्रतिकूल भी हो जाता है। कथन के मूल्याकन का कोई मानदण्ड या विधान कहीं नहीं है। दिखावटी शिष्टाचार के प्रतिपालन से कभी-कभी तो अयोग्य वक्ताओ को अनुचित प्रोत्साहन भी मिल जाता है। एवमेव अयोग्य आयोजको के व्यवहार से कभी-कभी योग्य जनो को अनुत्साहित व लाञ्छित भी होना पडता है।

वक्ता-श्रोता की प्रिय शैली

इस वेद-मन्त्र-व्याख्या-शैली में व्याख्यान किसी एक ही विषय या विचार बिन्दु तक सीमित नहीं रहता। वह प्राय बारह मसाले की चाट बन जाता है। वक्ता लिए यह शैली अधिक सरल है। कुछ वक्ता तो वेद के महत्व की दुहाई देकर मन्त्र के प्रकरण और सन्दर्भ के विपरीत भी बोलते हैं—अज्ञानवश और अति उत्साहवश। यह शैली साधारण तथा श्रद्धालु समुदायों के सामने प्रभावी मानी और सराही जाती है। पहले वेदों के अनुसार किसी एक विषय के व्याख्यानों के क्रम-बने थे, फिर यह एक मन्त्रानुसारी शैली चली। आजकल की यही वक्ता-श्रोता सभी की प्रिय शैली है। इस शैली के कई लाभ हैं। इसके पक्ष मे बहुत कुछ है। इस शैली के व्याख्यानो मे श्रोतागण किसी विचार विन्दु को ग्रहण करने मे प्राय असमर्थ रहते हैं, विशेष करके तब, जब वक्ता यथोचित रीति से व्याख्यान का उपसहार न कर सके।

नियत विषय पर व्याख्यान

किसी एक नियत विषय का व्याख्यान देना अधिक कठिन है। इसके लिए वक्ता की विशेष योग्यता, प्रचुर-शब्द राशि, उच्चारण की स्पष्टता, पक्ष-विपक्ष का तुलनात्मक ज्ञान, श्रोतावर्ग की योग्यता को समझने की मनोवैज्ञानिक दक्षता, आयोजको के उद्देश्य, साथियो-सहयोगियो का पारस्परिक सद्भाव और सहयोग आवश्यक है। कोई अल्पश्रुत व्यक्ति इसे सहसा ही नही अपना सकता। यह शैली श्रम-साध्य है। इसके लिए गम्भीर स्वाध्याय भी अपेक्षित है। अधिक काल तक अभ्यास द्वारा यह चमकाई जाती है, विद्वानो मे सराही जाती है।

यह शैली वक्ता की योग्यना को बढाती है। आर्यसमाज के आरम्भिक प्रचार युग में इस शैली ने बडे-बडे चमत्कार दिखाए थे। यह शैली भ्रम-निवारक एव विशेष प्रभावकारी है। वक्ताओ को यह अधिक लोकप्रिय एव यशस्वी बनाती है। श्रोताओ मे यह शैली स्वाध्याय की प्रवृत्ति को भी बढाती है।

एक पचहत्तर वर्ष का बूढा पुराना, कार्य-निवृत्त आर्योपदेशक होने के नाते नए आर्योपदेशक और वक्ता-वर्ग से मेरा निवेदन है कि अपना कोई सगठन बना लें। वेद, व्याकरण, दर्शन, श्रौत-स्मार्त साहित्य, दर्शन, योग, इतिहास, चिकित्सा, राजनीति, किसी न किसी पुरानी, किरानी, कुरानी आदि मत, आदि के विषय मे अच्छी और प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करके कम से कम अपने एक विषय के विशेषज्ञ बनें। जो भाई किसी भारतीय, अभारतीय भाषा मे या सस्कृति में उत्तमता से बोल सकें, वे अपने अभ्यास को कम न होने दें, बढाए, काम मे लाए। जब अपने अन्तरात्मा मे विचारो की उपयोगिता और परिपक्वता का अनुभव करें, तब लेखन कार्यों-साहित्य-रचना मे भी अग्रसर हो।

स्वाध्याय के अवसर जुटाएं

छोटे-बडे सत्सग-प्रसगो के सभी आयोजको और सस्थाओ सभाओ के अधिकारी वर्गों को मेरा परामर्श है कि उपदेशको को न तो देश की व सभा-सस्थान गत रीति-नीति पार्टी बाजी मे उलझाएं, न उनसे धन्य सग्रहकरायें, आवश्यकतानुसार उपदेशको से भिन्न चन्दा एजेंट भले ही रख लें। उपदेशको के लिए पारस्परिक विचार-विमर्श, स्वाध्याय और योग्यता वृद्धि के अवसर भी जुटाए। विशेषज्ञो के भाषणो मे आस-पास के मान्यवरो को व्यक्तिगत सम्पर्कों द्वारा विशेष श्रोताओ के रूप मे सादर आमन्त्रित करें। शास्त्रार्थों शका-समाधान के कार्यक्रम बनाए। परस्पर विचार या पत्राचार करके सुयोग्य विद्वानो के व्याख्यान-विषय भी निर्धारित किया करें। इससे व्याख्यान फरोशो पर कुछ अकुश भी लगेगा।

विद्वानों का समादर किया जाए

जो कोई विद्वान उपदेशक किसी भी एक विषय, एक वेद, एक दर्शन, एक उपनिषद एक ग्रन्थ, कुरान, पुराण, बाइबिल, किसी एक विचार-धारा यथा या समाजवाद, या किसी भी धार्मिक मत-पन्थ-प्रवर्त्तक के सिद्धान्तो, थ्योसोफिकल-सोसाइटी-राधा-स्वामी-मत, सिख-पन्थ, देव-समाज अहमदी, वहाबी, आगाखानी, जैन, बौद्ध आदि-आदि के विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करें, उनको आयोजनापूर्वक उत्साहित करने के साथ ही साथ सुशिक्षित और बुद्धिजीवी वर्गों के सम्मुख सम्मानित और सुप्रतिष्ठित भी करे। ऐसा न हो कि उनकी विशेष योग्यता वेकार ही चली जाये

सी-२।७३, अशोक-विहार-२
दिल्ली—११००५२

घुसपैठियों की रोकथाम तुरन्त करो

राष्ट्रीय सुरक्षा को भारी खतरा : श्री अशोक सिंहल की मांग

नई दिल्ली। पाकिस्तान और बगलादेश की सीमा से लगने वाले देश के सीमावर्ती राज्यो—असम, पश्चिमी बगाल, मणिपुर, बिहार, राजस्थान, पजाब और काश्मीर में बडी सख्या मे मुसलमानो के घुसपैठ की भारी चिन्ता है। इस निर्बाध घुसपैठ से राष्ट्रीय सुरक्षा को गम्भीर सकट पैदा हो गया। किसी भी देश की किसी भी सरकार का प्रथम कर्तव्य देश की सुरक्षा होता है।

विश्व हिन्दू परिषद के सयुक्त महामन्त्री श्री अशोक सिंहल ने कहा कि असम मे विदेशियो के घुसपैठ की समस्या देश के सामने गत २५ वर्षों से है। पिछले इन सुदीर्घ वर्षों मे सरकार ने इन विदेशियो की घुसपैठ को रोकने के लिए एक भी ठोस कदम नही उठाया। सरकार ने १९६२ मे असम बगलादेश की सीमा पर कटीले तार लगाने का निर्णय किया था और २० वर्ष बाद केन्द्रीय सरकार ने फिर वही पुराना निर्णय किया है।

असम मे बडी सख्या मे बगलादेश से घुस आए मुसलमानो ने चुनाव के समय सीमावर्ती क्षेत्रो से असमी हिन्दुओ को खदेडने का प्रयास किया। स्त्री-पुरुषो और बच्चो को निर्दयतापूर्वक कत्ल कर दिया गया, घरो और सम्पत्ति को नष्ट कर दिया। २०० नामघर (पूजास्थान) फूक दिए गये और ३०० को क्षति पहुची। इसके विपरीत एक भी मस्जिद को हानि नही पहुची। सरकार के अपने ही नवीनतम निश्चय के अनुसार बगलादेश सीमा पर कटीले तार लगाने मे ७ वर्ष लग जाएगे। यह कल्पना का विषय है कि इतने वर्षों मे और कितने घुसपैठी। बगाल, बिहार और असम मे जायेंगे। पजाब भी घुसपैठ की दृष्टि से सुरक्षित नही है। पाकिस्तानी मुसलमान हिन्दू और सिक्खो का वेश धर कर पजाब मे घुस रहे हैं और वहा वैमनस्य एव भेद-भाव पैदा करने का षडयत्र कर रहे हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा के अतिरिक्त इस घुसपैठ से आन्तरिक सुरक्षा के लिए भी समस्या पैदा हो गयी है। इन घुसपैठियो की प्राय तस्करो, हत्यारो, डाकुओ, असमाजिक तत्वो एव उग्रवादियो से साठ-गाठ रहती है।

श्रीलंका तमिलों की भावना सन्तुष्ट करें

उन्हें स्वशासन दिया जाए : श्री अशोक सिंहल का वक्तव्य

नई। दिल्ली विश्व हिन्दू परिषद के सयुक्त महामन्त्री श्री अशोक सिंहल ने श्रीलका के उपद्रवो के बारे मे एक वक्तव्य मे कहा है कि यह बडे खेद की बात है कि श्रीलका के हाल के उपद्रवो मे बहुसख्यक सिंहलियो के तमिल लोगो पर किए गए आक्रमणो मे जिसे तमिल उग्रवादियो के कार्य की प्रक्रिया बताया गया, सैकडो घर, दूकानें और कारखाने ध्वस्त हो गए। सैकडो व्यक्ति मारे गये। एक लाख से भी अधिक तमिल बेघर हो गये और करोडो की सम्पत्ति नष्ट हो गई। सर्वाधिक निर्मम घटना जेल मे घटी जहा सिंहली बदियो ने तमिल बदियो को लाठियो एव कुल्हाडियो से मार डाला। श्रीलका के तमिलों ने वहा की स्वतन्त्रता के समय अपने लिए पृथक राज्य की माग न कर अपने सिंहली भाइयो के साथ ही रहने का निर्णय किया। अत इस समय इनमे उत्पन्न मतभेदो की जाच की जानी चाहिए। तमिल जिनमे टी यू. एल० एफ के नेता भी हैं, यही चाहते हैं कि उनके साथ समान व्यवहार किया जाये। अत यह जरूरी है कि स्थानीय स्वशासन प्रदान कर तमिलो की भावना को सन्तुष्ट किया जाये। यदि ऐसा नही हुआ तो परिणाम गम्भीर हो सकता है।

—अखिल भारत हिन्दू महासभा के अध्यक्ष श्री विक्रम नारायण सावरकर ने श्रीलका मे रहने वाले तमिल हिन्दुओ पर हुए भारी अत्याचारो हत्याओ व लूट-पाट पर गहरी चिन्ता व दुख व्यक्त किया।

जिला परिषद की मुस्लिम सदस्या हिन्दू बनीं

कानपुर। आर्यसमाज गोविन्द नगर मे समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने ब्लाक ककवन की निर्वाचित २७ वर्षीय मुस्लिम सदस्या कु० बतुलन को उनकी इच्छानुसार हिन्दू धर्म मे प्रविष्ट कराया।

इस अवसर मे आयोजित शुद्धि सस्कार समारोह मे आर्यसमाज नेता श्री देवीदास आर्य ने कु० बतुलन का नया नाम विमला देवी घोषित करते उन्हे यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण कराया व गायत्री मन्त्र का पाठ कराया। हिन्दू धर्म की विशेषताए बताईं। कु० विमला देवी ने कहा कि हिन्दू धर्म मे महिलाओ के विशेष आदर व सम्मान ने उन्हे हिन्दू धर्म के लिए काफी प्रभावित किया है।

भारत में श्रीलंका जैसा कानून बनाया जाए

अलगाववादी शक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाए

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को एक पत्र भेजकर श्रीलंका के तमिलों की व्यापक हत्या पर रोष और क्षोभ प्रकट किया है। इस सन्दर्भ में श्रीमती गांधी के उस वक्तव्य की पुष्टि की है जिसमें उन्होने श्रीलंका की तमिल जनता की अलगाववादी नीति का विरोध किया है। इसके साथ ही श्री शालवाले ने मांग की है कि भारत की अखण्डता और सुरक्षा के लिए देश के समस्त अलगाववादी सगठनो एवं तत्वों की गतिविधियो पर रोक लगाने के लिए, जो विदेशी शक्तियो के कुचक्र के अन्तर्गत हिंसा एव अराजकता का वातावरण बढा रहे हैं, संसद के इसी सत्र में श्रीलंका प्रशासन जैसा विधेयक प्रस्तुत कर उसे कानून रूप में पारित कराया जाए।

महर्षि दयानन्द पर वृत्तचित्र प्रदर्शित

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई की उपलब्धियाँ

बम्बई। बम्बई महानगर मे विगत ३८ वर्षों से जनता जनार्दन की सेवा मे अविरत कार्यरत सान्ताक्रुज आर्यसमाज की पिछले वर्ष औपचारिक रजत जयन्ती मनाई गई थी। आर्यसमाज के विशेष प्रयत्न से पिछले वर्ष ही दूरदर्शन के बम्बई केन्द्र ने 'महर्षि दयानन्द' शीर्षक ३० मिनट का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। २४ अगस्त, १९८२ को वेदो मे नारी का स्वरूप' विषय पर डा० सुनीति एव श्रीमती सुशीला देवी विद्यालङ्कार का ३० मिनट का आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। महानगर की महिलाओ द्वारा माग किए जाने पर अक्तूबर मे यह कार्यक्रम फिर दिखाया गया। उल्लेखनीय है कि २६ फरवरी, १९३६ को दिन नवभारत टाइम्स बम्बई ने 'अपने शहर को जानिए' शीर्षक परिशिष्ट मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज पर एक पूरा अनुच्छेद प्रकाशित किया था।

समीक्षा

उपनिषदों का सार : अध्यात्म मीमांसा में पढ़ें

अध्यात्म—मीमांसा—लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, प्रकाशक—विरजानन्द वैदिक (शोध संस्थान) गाजियाबाद, उ० प्र० २०१००९। पृष्ठ संख्या-२९०। मूल्य (सजिल्द) ४५)

यजुर्वेद का चालीसवा अध्याय 'ईशावास्य उपनिषद्' 'ईशोपनिषद्' के नाम से सुप्रसिद्ध है। मूल यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयि शाखा या माध्यन्दिन शाखा के नाम से विख्यात है। इसी शुक्ल यजुर्वेद की काण्व नामक एक अन्य शाखा भी है। इसी काण्व सहिता का चालीसवा अध्याय ईशावास्य उपनिषद् है। मूल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा के चालीसवें और काण्व शाखा के चालीसवें अध्याय मे तीन अन्तर हैं, माध्यन्दिन शाखा मे १७ मन्त्र हैं तो काण्व सहिता मे १८ मन्त्र हैं, काण्व सहिता 'पूषन्नेकर्षे यम सूर्य' प्रारम्भ वाला अतिरिक्त मन्त्र है। इसी तरह दो सामान्य अन्तर हैं। भारतीय दर्शन की विभिन्न पद्धतिया उपनिषदो के तत्वज्ञान से समृद्ध हुई हैं। उपनिषद् ब्रह्मविद्या का प्रमुख ग्रन्थ है। वर्त्तमान मे १०८ उपनिषद् उपलब्ध हैं। आदि शकराचार्य से लेकर महर्षि दयानन्द जैसे तत्वचिन्तको ने ११ उपनिषद् प्रमुख मानी हैं। विवेचनो का कथन है कि भिन्न-भिन्न उपनिषद् होने पर भी सभी उपनिषदें ईशोपनिषद् का ही विस्तार समझी जाती है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे उपनिषदो मे सर्वप्रधान ईशोपनिषद् के माध्यम से भारतीय चिन्तन के मूलतत्वों का स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। जितने भी लोक-लोकान्तर हैं, वे सब ईश्वर से प्राप्त और आच्छादित हैं। पर ब्रह्म परमात्मा विश्व के कण-कण मे विद्यमान हैं, लालच न कर, यह धन-सम्पत्ति किसकी रही है, इसलिए निष्काम कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। वह ब्रह्म सर्वत्र विद्यमान है, इस जगत् के भीतर-बाहर है। चिन्तक चराचर वस्तुओ को परमात्मा मे देखता है। जब आत्मदर्शी सब भूतो को समान मानता है फिर उसे शोक और मोह नहीं होता। वह परमात्मा सर्वव्यापक अशरीरी, शुद्ध, निष्पाप, क्रान्तदर्शी है। जो प्रकृतिविद्या-कर्म की उपासना करते हैं अथवा जो केवल ब्रह्मविद्या मे लीन रहते हैं, जो ज्ञान-आत्मविद्या को प्रकृति-विद्या और कर्म को साथ-साथ जानता है वह मृत्यु को पार कर मोक्ष को प्राप्त करता है। कार्यरूप मे परिणत सृष्टि अथवा व्यष्टिवाद को—सृष्टि के ज्ञान से समष्टिवाद से मोक्ष पा लेता है। ब्रह्म का यथार्थ ज्ञान सुनहरे ढकने से ढका है। ब्रह्म तेजोमय है, उस स्वरूप का प्रत्येक दर्शन नहीं कर पाता। जीवात्मा अमर है, यह स्थूल शरीर भस्म होने के साथ समाप्त हो, इसलिए ओ३म् नाम परमेश्वर को और किए हुए कर्म को स्मरण करो। परमात्मा हमे सन्मार्ग पर प्रवृत्त करें। इस 'अध्यात्म-मीमासा' ग्रन्थ में इस उपनिषद् की शास्त्रीय चर्चा के साथ व्यावहारिक पक्ष का भी भली प्रकार प्रतिपादन किया गया है। पाश्चात्य विद्वानो की सूक्तियो एव आधुनिक प्रमाणो से विषय स्पष्ट एवं सरल हो गया है। ईशोपनिषद् के अध्यात्म रहस्य को जानने-बूझने के लिए ग्रन्थ पठनीय एवं मननीय है।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

रविवार ४ सितम्बर १९८३

अन्धामुगल प्रतापनगर—डा० रघुनन्दन, अशोक विहार—प० दीनानाथ सिद्धान्तालकार, अशोक नगर—प० ओम्प्रकाश गायक, आर्यपुरा—डा० सुखदयाल भूटानी, आर० के० पुरम—प० देवीचरण देवेश; रामकृष्णपुरम सेक्टर ६—प० रणजीत सिंह राणा, आनन्द विहार—हरिनगर—प० रामदेव शास्त्री, अमर कालौनी—पं० ज्ञानचन्द, किंग्जवेकैम्प—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; कालका डी० डी०-ए फ्लेट—आचार्य विक्रम शास्त्री, कालका—प. ब्रह्मप्रकाश, किशनगज—श्री अमरनाथ कान्त, कृष्णनगर—प. विश्वप्रकाश शास्त्री, खिचड़ीपुर—प. जयभगवानमण्डली, गाधी नगर—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, गीताकालौनी—प० हरिश्चन्द्र आर्य, गुप्ताकालौनी—प० रामरूप शर्मा, गोविन्दपुरी—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, गोविन्दभवन—दयानन्द वाटिका—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, चूनामण्डी—प० प्रकाशचन्द शास्त्री, जनक पुरी सी०३—प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, जनकपुरीबी-२—ओम्वीर शास्त्री, टैगौरगार्डन—प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य, तिलकनगर—प० दिनेशचन्द पाराशर, तिमारपुर—पण्डित विद्याव्रत शास्त्री, देवनगर—पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री, नारायण विहार—प० अमीचन्द मतवाला, नयाबास—व्याकुल कवि, नगर शाहदरा—प० देव शर्मा, पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—आचार्य हरिदेव सिद्धान्तभूषण, पजाबी बाग—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, प्रीतमपुरा—प० सुमेरचन्द विद्यार्थी, बिरलालाइन्स—प० चमनलाल, बाली नगर—प० सोमदेव शास्त्री' मॉडलबस्ती—प० खुशीराम शर्मा, मॉडलटाउन—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, महरौली—प० बलवीर शास्त्री, मोतीबाग—प० मनोहरलाल ऋषि, राणाप्रताप बाग—प० रामनिवास शास्त्री, राजौरी गार्डन—अशोक विद्यालकार, रमेश नगर—प० कामेश्वर शास्त्री, लड्डूघाटी—प० परमेश शर्मा, लाजपत नगर—प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक, विक्रम नगर—प० देवेन्द्र कुमार शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, त्रि नगर—आचार्य रामचन्द्र शर्मा, श्रीनिवास पुरी—प० शीशराम भजनीक, हौजखास—प० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक, सराय रोहेला—व्याकुल कवि। —स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, वेदप्रचार विभाग अधिष्ठाता

श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक का जीवन दर्शन (सचित्र) पुस्तक

साइज—२०X ३०/१६ पृष्ठ ५२ ग्लेज कागज उत्तम छपाई आकर्षक मूल्य—५ रु० समाजो व आर्य सस्थाओ के लिए रियायती दरो पर।

प्रकाशक—कमल किशोरार्य महामन्त्री परोपकारिणी यज्ञ समिति

१०ए।१५ शक्ति नगर, दिल्ली-७

इस पुस्तक मे श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु जी के सक्षिप्त जीवन दर्शन के साथ उनकी लोक सेवा व हीरक जयन्ती के अवसर पर प्रस्तुत बडे-बडे आर्य नेताओ, आर्य विद्वानो, साहित्यकारो व पत्रकारो प्रशस्तियो के अतिरिक्त विविध फोटोग्राफ और अभिनन्दन पत्रो से सिद्ध होता है कि यह सब सामग्री आर्य जगत के लिए बहुत प्रेरणाप्रद है। पुस्तक जनसामान्य के साथ-साथ विशेषकर युवको के लिए बहुत ही उपयोगी है। उल्लेखनीय है के श्री धर्मेन्दु जी स्वनिर्मित महानुभाव हैं और इनकी आर्य जगत द्वारा चलाए गए गोरक्षा आन्दोलन, नारी रक्षा आन्दोलन आदि कार्यक्रमो मे स्मरणीय महत्वपूर्ण भूमिका रही। जीवन-निर्माण मे उनके जीवन दर्शन से अमिट प्रेरणाए मिल सकती है। पुस्तक पढ़ने व सग्रह करने योग्य है।

—ललिता प्रसाद बंसल प्रधान आर्यसमाज यमुना विहार, दिल्ली

हिन्दू-सिख का रक्त एक है, चहुंदिशि गुंजा दो गान।

—डा० पुष्पावती पी एच० डी०, दर्शनाचार्या, विद्यावारिधि

मा के सपूत! सच्चे भाई का कर दो स्नेह-विस्तार।
दुर्योधन! जरासन्ध! तुम भी लो पावन राखी तार॥
सदा-सदा को छोड़ दो खालिस्तान के भूत का दुर्विचार।
शरण आओ मा की, गेह सवारो छोड़ विदेशी विचार॥
मिल-जुल कर मा की सेवा करें नया हो फिर उत्थान।
विश्व-अशान्ति पर घन जल बरसें, अखण्ड भारत-निर्माण॥
खालिस्तानी! लजाना मत गुरुओं के पावन बलिदान।
हिन्दू-सिख का रक्त एक है, चहुदिशि गुजा दो गान॥

डी.४५/१२६ नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी

हमारे प्रमुख पर्व

भाई-बहनों की रक्षा का व्रत लें

– कवि बनवारीलाल 'शादां'

हमारे देश मे जितने त्योहार मनाये जाते हैं, उतने अन्य धर्म मे नही, हमारे त्योहारो का कुछ न कुछ महत्व अवश्य है। जैसे श्रावणी, दशहरा, दीवाली, होली, जेठ का दशहरा हम यहा पर केवल एक त्योहार को लेंगे

रक्षाबन्धन का त्योहार (श्रावणी पर्व)

हिन्दुओं के पवित्रतम व मुख्य त्योहारो मे से रक्षाबन्धन भी एक है। यह त्योहार श्रावण मास की अन्तिम तिथि पूर्णिमा को मनाया जाता है, प्राचीन ग्रन्थो के पढने से प्रतीत होता है कि पहले जब ऋषि मुनि यज्ञ करते थे तो राजा को रक्षा के लिए वचनबद्ध करते थे। ये वचन बन्धन श्रावणी के त्योहार पर किया जाता था। उसी दिन हवन-यज्ञ आदि होते थे, वैदिक मन्त्रो से यज्ञोपवीत पहना जाता था। वेद कथायें होती थी। मध्यकाल मे बहनो द्वारा भाइयो के रक्षाबन्धन बाधने का रिवाज चला।

रक्षाबन्धन बाधने के कारण कई मुसलमान राजाओ को भाई बनकर हिन्दू बहनो की रक्षा के लिए अपने तन मन धन से रक्षा की। रक्षाबन्धन का महत्व मध्यकाल मे अधिक समझा जाता था। विशेषकर राजपूतो मे, अपना सहोदर भाई ही नही यदि किसी अपरिचित के पास भी रक्षाबन्धन भेज दिया जाता था तो वह रक्षाबन्धन द्वारा बना भाई बहन के लिए प्राण तक न्योछावर करने को तैयार रहता था। मुसलमानो के शासनकाल मे जब कोई किसी सती-साध्वी की लाज बिगाडने का प्रयत्न करता तो वह किसी बलवान के पास राखी भेज देती और वह बलवान प्राणो पर खेलकर उस अबला की रक्षा करता। राखिया केवल हिन्दुओ को ही नही मुसलमानो को भी भेजी जाती थी।

इतिहास कहता है बाबर का पुत्र हुमायू राणा सागा का कट्टर शत्रु था, परन्तु राणा की स्त्री कर्मवती ने बहादुरशाह से डरकर हुमायू के पास राखी भेजी और उसे भाई बनाया। हुमायू ने भी अपने साम्राज्य तक को दाव पर लगा कर उसकी रक्षा की। यह है राखी का महत्व, परन्तु आजकल तो केवल हम कुछ रुपये देकर इस राखी का महत्व खो देते है। आजकल प्राय देखने मे आता है कि लोगो को अपने त्योहारो के प्रति उपेक्षा का भाव है। यह ठीक नही, केवल कुछ रुपये देकर अबलाओ की रक्षा नही की जा सकती। यदि स्त्रियो को यह विश्वास हो जाए कि जिस पुरुष के राखी बाधी जा रही है वह पुरुष उसकी निष्काम भाव से हर समय रक्षा करेगा, तो बहुत से सकटों का सामना कर सकती हैं। भाई-बहनो के लिए तभी रक्षाबन्धन मनाना सफल हो सकता है। पुरुषो मे निष्काम सहायता की प्रेरणा पर्व से ग्रहण करें। यह पर्व निष्काम कार्य, अनासक्ति आदि ऊचे भाव हृदय मे पैदा करता है। स्त्रियो के हृदय मे भाइयो के प्रति पवित्र प्रेम आशा आदि जाग्रत करता है। भाई इस पवित्र त्योहार को समझें। बहन इस आशा से राखी बाधती है कि भाई मेरी रक्षा करेगा। भाई यह प्रतिज्ञा करता है कि मैं तन मन धन से बहन की रक्षा करूगा। यह कितना पवित्र और ऊचा भाव है। इसी भाव को हृदय मे रखकर राखी का त्योहार मनाना चाहिए।

प्रो० श्री स्वतन्त्र भारत फार्मेसी १०८०२ मानिकपुरा नई दिल्ली ५

एक सुयोग्य पुरोहित चाहिए

'आर्यसमाज, पखा रोड सी" ब्लाक (सी-३ पार्क), जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८, के लिए एक सुयोग्य, आर्यसमाजी पुरोहित चाहिए। योग्यता शास्त्री (वाराणसी सस्कृत विश्वविद्यालय) या गुरुकुल कागडी का वेदालकार या विद्यालकार अथवा पजाब विश्वविद्यालय के शास्त्री समकक्ष हो। पुरोहित सस्कार कराने मे निपुण, अच्छा वक्ता तथा समाज के प्रचार कार्य मे पूर्ण रूप से सहयोग देने वाला हो। निवासस्थान एव योग्यतानुसार वेतन दिया जाएगा। प्रार्थना-पत्र मत्री, आर्य समाज, 'सी" ब्लाक पखा रोड (सी-३ पार्क), जनकपुरी, नई दिल्ली ११००५८, के नाम ४ सितम्बर, १९८३ तक अवश्य पहुचा दें—वैद्य महेन्द्रपालसिंह आर्य मंत्री।

बच्चे सदाचारी बनें

३६ वें स्वाधीनता दिवस पर उद्बोधन

सोमवार सन् १५ अगस्त १९८३ को प्रात १० बजे से आर्य अनाथालय पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली मे ३६ वा स्वाधीनता दिवस श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक की अध्यक्षता मे बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। सर्व प्रथम श्री धर्मेन्दु ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तदनन्तर आर्य कन्यासदन तथा आर्य बाल गृह के बालक-बालिकाओ ने गायन, कविता, तथा भाषण दिए। बच्चो को पारितोषिक भी दिए गए। श्री धर्मेन्दु जी ने बच्चो को सुशिक्षित, सदाचारी व शिष्टाचारी बनकर अपने जीवनो को सफल, सुखी व आनन्दित बनाने का आशीर्वाद दिया। 'जनगण' तथा शान्तिपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई। कार्यक्रम का सचालन आचार्य श्री प० दिनेशचन्द्र पाराशर शास्त्री जी ने किया।

अकालियों से चर्चा में हिन्दुओं से सलाह लो

पंजाब हिन्दू संगठन की सरकार से मांग

जालन्धर। बुधवार २४ अगस्त के दिन पंजाब हिन्दू संगठन की ओर से घोषणा की गई कि वह अकालियो और सरकार के मध्य ऐसे किसी समझौते को मान्य नही करेगा, जिसे संगठन के परामर्श के बिना मंजूर किया जाएगा। संगठन ने यह सूचना भारतीय संसद के सदस्यो के नाम लिखे अपने एक पत्र में दी है।

संगठन ने अपने पत्र में अकालियो का आनन्दपुर प्रस्ताव पूरी तरह ठुकरा दिया है, क्योकि वह दो राष्ट्रो के सिद्धान्त पर आधारित है तथा उससे राज्य मे अलगाववादी, साम्प्रदायिक एवं राष्ट्रविरोधी प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन मिलता है। संगठन ने राज्य मे एक भाषा प्रचलित रखने की नीति को भी चुनौती दी है, उसने मांग की है कि राज्य मे हिन्दी को द्वितीय भाषा की स्थिति देनी चाहिए।

संगठन ने अपने पत्र मे पंजाब के हिन्दुओ की शिकायतो की जांच करने के लिए एक उच्च स्तरीय आयोग नियुक्त करने की मांग की है जो उनके समाधान के उपाय सुझाए। हिन्दुओ मे सुरक्षा की भावना पैदा करने के लिए उसने हिन्दुओं को उदारता-पूर्वक शस्त्रो के लाइसेंस देने की मांग की है। संगठन ने यह बात मानने से इन्कार कर दिया है कि अकालियो की मांगो से सब पंजाबी सहमत हैं। अकालियो ने कभी भी गैर अकालियो से सलाह नही ली है। अकालियो की धार्मिक मांगें पहले ही मान ली गई हैं, अब वे राजनीतिक और आर्थिक मांगो के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज जंगपुरा (भोगल)—प्रधान—डा० जे० पी० गुप्ता, उपप्रधान—श्री रामचन्द्र जुनेजा, पं० रामकृष्ण, मन्त्री—श्री सरदारीलाल चोपड़ा, उपमन्त्री—श्री नत्थूसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री राधाकृष्ण बिदानी, लेखनिरीक्षक—श्री ओमप्रकाश चौधरी।

द० दिल्ली आर्यसमाज, जंगपुरा विस्तार—संरक्षक—श्री रतनचन्द्र सूद, चौ० गोपालदास भाटिया, श्री कुन्दनलाल धवन, प्रधान—श्री गणपतराय टक्कर, उपप्रधान—श्री आत्मदेव, श्री प्यारेलाल बतरा, मन्त्री—श्री आर्यमित्र बजाज, उपमन्त्री—श्री बशीलाल, श्री सुखदेवराज धुन्ना, कोषाध्यक्ष—श्री जगदीशचन्द्र चड्ढा, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती कान्ता सिक्का, लेखानिरीक्षक—श्री देवदत्त कटियाल।

'छोड़ो मधुमय देश हमारा'

राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट, मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

ईसा के चेलो ने आकर, भारत मे कुहराम मचाया।
लोभ-जाल मे हमे फंसाकर, अनाचार का पथ दिखलाया॥
ज्योतिर्मय भारत मे तुमने, दूषित अपने पाव पसारा।
छोड़ो मधुमय देश हमारा॥

राम-कृष्ण की यह धरती है, त्याग तथा बलिदानो की।
ऋषि-मुनियो की वसुन्धरा यह, भू है दिव्य महानो की॥
तिमिराच्छित भौतिक संस्कृति से, फैला रहे गहन अंधियारा।
छोड़ो मधुमय देश हमारा॥

अपौरुषेय वेदो की भू पर, बता बाइबिल की बातें।
भारत की भोली जनता पर, करते मिथ्या प्रतिघातें॥
हटो विदेशी पादरियो तुम! हिमगिरि से हमने ललकारा।
छोड़ो मधुमय देश हमारा॥

कृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष सभा

आर्य प्रतिनिधि उपसभा जिला शाहदरा की ओर से ४ सितम्बर, रविवार, रात्रि ७-३० बजे, मेन रोड रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर, दिल्ली मे कृष्ण जन्माष्टमी पर एक सभा आयोजित की जाएगी जिसमे श्री कविराज रघुनन्दन सिंह जी निर्मल श्री चमनलाल क्षत्रिय, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती अपने विचार रखेंगे।

रजि० नं० डी० सी० 759
साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन: ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपए | वर्ष : ७ अंक ४६ | रविवार ११ सितम्बर, १९८३ | २० भाद्रपद वि० २०४० | दयानन्दाब्द—१५९

दिल्ली में आर्य वीर दल को शक्तिशाली बनाया जाएगा।

प्रान्तीय आर्य वीर दल की समिति गठित

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अन्तर्गत दिल्ली प्रान्तीय आर्यवीर दल सगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए रविवार ४-९-८३ को आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड मे आर्यवीर दल की प्रगति मे रुचि रखने वाले महानुभावो एव युवको की बैठक प्रान्तीय आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रीतमदास रसवन्त द्वारा आयोजित की गई थी। बैठक मे नगर की विभिन्न आर्यसमाजो के अधिकारियो के अतिरिक्त ग्रामो के भी कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुऐ।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस भी उपस्थित थे। आर्यवीर दल के विधानानुसार प्रान्तीय समिति गठित की गई एव उक्त समिति द्वारा सभी आर्य समाजो से अनुरोध किया गया कि प्रत्येक आर्यसमाज अपने अन्तर्गत आर्यकुमार सभा का गठन करे, जिस मे छोटी आयु के बालको के कार्यक्रम हो और प्रत्येक आर्यसमाज मे से न्यूनतम ५ आर्यवीरो के नाम व पते तुरन्त सभा को भेजे जावें। सभा शीघ्र ही आर्यसमाजो द्वारा भेजे गए नवयुवको की सूची एव अन्य आर्य समाजो के कार्यकर्ताओ के परिवारो के युवको का एक बृहद सम्मेलन बनाकर आर्यवीर दल के कार्य को दिल्ली मे वेग पूर्वक चलाएगा।

निर्वाण शताब्दी के लिए धन भेजें

आर्यसमाजों को दिल्ली सभा के प्रधान का आह्वान

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी ३ से ६ नवम्बर, ८३ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अजमेर मे मनाई जा रही है। प्रत्येक नर-नारी का कर्तव्य है कि इस अवसर पर भारी सख्या मे अजमेर पहुचकर महर्षि के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करें और इस समारोह के व्ययार्थ अधिक से अधिक धन सभा को भेजें ताकि शताब्दी समारोह के मान्य अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी को एक भारी थैली दिल्ली की आर्य जनता की ओर से भेंट की जा सके। प्रत्येक आर्य को कम से कम १० रुपए प्रत्येक परिवार के सदस्य के हिसाब से इस अवसर पर अवश्य भेज देने चाहिए। हमारे जीवन में यह अवसर पुन: नही आयेगा। ऋषि-ऋण से उऋण होने के लिए इस समारोह को अभूतपूर्व सफलता प्रदान करने मे अपना पूरा योगदान प्रदान करें।

—सरदारीलाल वर्मा, प्रधान दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-१

पं० सत्यदेव विद्यालंकार की पत्नी का शोक

दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि गुरुकुल कांगड़ी के पुराने स्नातक प० सत्यदेव जी विद्यालकार की धर्मपत्नी श्रीमती साबित्री देवी जी का मगलवार ३०-८-८३ को देहावसान हो गया। यह तो सभी जानते हैं कि जो भी जन्म लेता है उसे एक दिन जाना भी अवश्य होता है और यह जन्म-मरण की व्यवस्था केवल परमात्मा हाथ में है जिसमे किसी का कोई दखल नहीं, इसलिए परमात्मा की व्यवस्था के आगे नतमस्तक होना ही पड़ता है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगतात्मा को उनके शुभकर्मों के अनुसार सद्गति प्रदान करें और उनके वियोग मे शोक से सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें जिस से वह इस क्षति को सहन कर सकें। आर्य सन्देश परिवार की ओर से हम पण्डितजी के परिवार से सवेदना प्रगट करते हैं। शुक्रवार के दिन आर्यसमाज ग्रेटरकैलाश न० १ मे उनकी स्मृति मे श्रद्धाजलि सभा में स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती, सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलालजी, गुरुकुल कागडी के विजिटर प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, प्रो० वेदव्रत आदि जी ने दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि अभिव्यक्त की।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा की विभिन्न उपसमितियों का गठन

सभा के अन्तर्गत संस्थाओं एवं कार्यों के कार्यान्वियन के लिए अन्तरंग सभा का निर्णय

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत चल रही विभिन्न सस्थाओ एव कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए १३ अगस्त, १९८३ के दिन सभा की अन्तरग सभा ने सर्वसम्मति से निम्न उपसमितियो का गठन किया—

(१) आर्य विद्या परिषद्—सर्वश्री सरदारी लाल वर्मा, विद्या प्रकाश सेठी, तीर्थराम आहूजा, प्रो० भारत मित्र, प्राणनाथ घई, डा० धर्मपाल आर्य, हरिदेव आर्य, बलवन्त राय खन्ना, दुर्गादास, प्रेमनाथ एडवोकेट, सोमनाथ एडवोकेट, महाशय धर्मपाल, राजसिह आर्य, चौ० देमराज, श्रीमती ईश्वर देवी धवन, डा० प्रशान्त कुमार, प्रि० ओम प्रकाश तलवाड, जसवन्त राय साही, श्रीमती ईश्वर देवी (शक्तिनगर), बी० एस० सिघल, भजन प्रकाश आर्य, श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा, चौ० हीरासिह, नवनीतलाल एडवोकेट, डा० महेश विद्यालकार, श्रीमती एस० सेठी (बिरला स्कूल), सत्यपाल भसीन, मागेराम आर्य, सूर्यदेव, लाजपत राय, रतनचन्द सूद, प्रीतमदास रसवन्त, प्रि० रघूमल स्कूल श्रीमती एस० मेहरा, रतनलाल सहदेव, खैरायती लाल भाटिया।

(२) आर्यवीर दल श्री प्रीतमदास जी रसवन्त (अधिष्ठाता)

(३) आर्य विद्या सभा पजाब : श्री सरदारी लाल वर्मा, श्री बलवन्त राय खन्ना, श्री सोमनाथ एडवोकेट।

(४) दीवानचन्द स्मारक गोकलचद आर्य चिकित्सालय ओचन्दी. सर्वश्री सरदारी लाल वर्मा, विद्याप्रकाश सेठी, तीर्थराम आहूजा, प्रो० भारत मित्र, प्राणनाथ घई, डा० धर्मपाल आर्य, हरिदेव आर्य, बलवन्त राय खन्ना, दुर्गादास, सोमनाथ एडवोकेट, चौ० हीरासिह, मागेराम आर्य, खैरायती लाल भाटिया, हसराज गुप्ता, गोकल चन्द आहजा, रतनचन्द सूद, राममूर्ति कैला, वीरेन्द्र प्रताप, प्रि० होशियार सिह, महेन्द्रपाल आर्य, डा० जुनेजा (पजाबी बाग), प्रधान आर्यसमाज औचदी, श्यामसुन्दर आर्य, नवनीत लाल

(५) रतनचन्द आर्य नेत्र एव जनरल चिकित्सालय राजा गार्डन सर्वश्री प्राणनाथ घई, डा० महेन्द्रपाल (जनकपुरी), राजेन्द्र दुर्गा (पजाबी बाग)।

(६) न्याय सभा—श्री सरदारी लाल मघोक (अध्यक्ष), सर्वश्री हरिकिशन लाल मलिक, महेन्द्र प्रताप एडवोकेट, विक्रमाजीत आहूजा, सुभाष विद्यालकार एडवोकेट।

(७) सम्पत्ति सुरक्षा एव जनसम्पर्क समिति - सर्वश्री वीरेन्द्र प्रताप (सयोजक), श्री प्राणनाथ घई, विद्यासागर, सुरेन्द्र कुमार हिन्दी, सत्यपाल भसीन, नेतराम शर्मा, हरिदेव आर्य, प्रि० वीरभान, प्रेमनाथ एडवोकेट, श्री प्रद्युम्नलाल तलवाड, राजकुमार भाटिया।

(८) प्रचार समिति—सर्वश्री राजेन्द्र दुर्गा (सयोजक), सुरेन्द्र कुमार हिन्दी, सुजान सिह जी, राजसिह भल्ला, कुलभूषण साहनी, एच० सी० जैरथ, वेदव्रत शर्मा।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की साधारण सभा

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की साधारण सभा ११ सितम्बर को साय ४ बजे आर्यसमाज, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे होगी। इसमे सयुक्त सदस्यो के हेतु निर्वाचन होगा। आर्यसमाज वार्षिक शुल्क ३०) नकद तथा प्रतिनिधियों की के सदस्यता शुल्क १०) के साथ बैठक मे अवश्य भाग लें।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

सर्वोत्कृष्ट मन्त्र—गायत्री

—प्रेमनाथ एडवोकेट

ओ३म् भूर्भु व स्व तत्सवितुर्वरेण्यभर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो न प्रचोदयात्॥ यजु० ३६।३॥

(गत अंक से आगे)

व्याख्या—इस मन्त्र मे जो प्रथम ओ३म् है यह परमात्मा का सर्वोत्तम नाम है, क्योकि एक तो यह नाम सिवा परमात्मा के और किसी पदार्थ का नही अन्य नाम भौतिक पदार्थों के भी हैं यथा अग्नि, वायु, आदित्यादि। प्रकरणानुकूल इनके अर्थ परमात्मा के लगते हैं। दूसरे यह कि इस (ओ३म्) नाम जो 'अ' 'उ' वा 'म' का समुदाय है इससे परमेश्वर के बहुत नाम आ जाते हैं। यथा (१) अकार से विराट (विविध प्रकार से जगत् को प्रकाशित करने वाला) अग्नि (ज्ञानस्वरूप, जानने, प्राप्त होने वा पूजा के योग्य) वा विश्व (जिसमे आकाशादि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इन सब मे व्याप्त हो रहा है)। आदि (२) उकार से हिरण्यगर्भ (जिसमे सूर्यादि तेज वाले लोक उत्पन्न होकर जिसके आधार रहते हैं अथवा जो सूर्यादि तेज स्वरूप पदार्थों का गर्भ अर्थात् उत्पत्ति का निवास स्थान है), वायु (जो चराचर जगत् वा धारण कर्त्ता का सब बलवानो से बलवान है), तैजस (जो स्वय प्रकाशस्वरूप और सूर्यादि तेजस्वी लोको का प्रकाश करने वाला है) आदि। (३) मकार से ईश्वर (जो सब जगत् का स्वामी वा अनन्त ऐश्वर्य वाला है), आदित्य (जिसका विनाश कभी नही होता) वा प्राज्ञ (जो निर्भ्रान्ति ज्ञानयुक्त सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है) आदि।

जैसे तीन-तीन अर्थ तीनो मात्राओ (अ, उ वा म) के ऊपर व्याख्यात किए है वैसे ही अन्य नामार्थ भी इनसे जाने जासे हैं।।

'भू' 'भुव' 'स्व'—ये तीनो महाव्याहृतिया कहलाती है। इनके अर्थ तैत्तिरीय आरण्यक (प्रपा० ७, अनु० ५) मे इस प्रकार दिए हैं भूरिति वै प्राण. भुवरित्य पान. स्वरिति व्यान और ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश (तृतीय समुल्लास) मे इन पदो की व्याख्या निम्न प्रकार से की है—'भूरिति वै प्राणन्य. प्राणयति चराऽचर जगत् स भू स्वयम्भूरीश्वर अर्थात् जो सब जगत् के जीवन का आधार प्राणो से भी प्रिय और स्वयम्भू है इगसे 'भू' परमेश्वर का नाम है। भुवरित्यपान —य सर्व दु खमपानयति साऽपान अर्थात् जो सब दु खो से रहित, जिसके सङ्ग से जीव सब दु खो से छूट जाते है इससे उस परमेश्वर का नाम 'भुव' है। 'स्वरितिव्यान' यो विविध जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यान. अर्थात् जो नानाविध जगत् मे व्यापक होकर सबका धारणकर्त्ता है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'स्व' है।

ऋषि दयानन्द ने उक्त महाव्याहृतियो के अर्थ सक्षेप से पञ्च महायज्ञ विधि मे इस प्रकार दिए हैं—भूरिति वै प्राण। भुवरित्यपान। स्वरिति व्यान। इति तैत्तिरीयोपनिषदद्वचनम् (प्रपा० ७, अनु० ६) भू प्राणयति जीवयति सर्वान प्राणिन स प्राण प्राणादपि प्रियस्वरूपो वा, सचेश्वर एव अर्थात् जो सब जगत् के जीने का हेतु और प्राण से भी प्रिय है इससे परमेश्वर का नाम 'भू' है। 'भुव' यो मुमुक्षूणा मुक्ताना स्वसेवकाना धर्मात्मना सर्व दु खमपानयति दूरी करोति सोऽपानो दयालुरीश्वरोऽस्ति अर्थात् मुमुक्षुओ और अपने सेवक धर्मात्माओ को सब दु खो से अलग करके सर्वथा सुख मे रखता है इसलिए परमेश्वर का नाम 'भुव' है। 'स्व' यदभिव्याप्य व्यानयति चेष्टयति प्राणादि सकल स व्यान, सर्वाधिष्ठान बृहद् ब्रह्मेति अर्थात् जो सब जगत् मे व्यापक होकर सबको नियम मे रखता, और सबके ठहरने का स्थान है तथा सुखस्वरूप है इस से परमेश्वर का नाम 'स्व' है। यह व्याहृतियो की सक्षेप से व्याख्या कर दी। अब आगे गायत्री मन्त्र की व्याख्या की जाती है।

'सवितु'—यह सवितृ शब्द की षष्ठी विभक्ति का रूप है, प्रथमा मे जिसका रूप 'सविता' है। सविताषु (प्रसवैश्वर्यो.) धातु से निकला है जिसके अर्थ हैं उत्पन्न करने वा ऐश्वर्य के अर्थात् सब जगत् की उत्पत्ति करने वा सकल ऐश्वर्य का दाता होने से परमात्मा का नाम 'सविता' है।

'देवस्य'—परमात्मा सब जगत् को प्रकाशित वा आनन्दित करता है इस से उस परमात्मा का नाम 'देव' है। यह शब्द 'दिव' धातु से निकला है जिसके दस अर्थ हैं (१) (क्रीडा जगत् को क्रीड़ा कराना) विजिगीषा (२) (धार्मिको को जिताने की इच्छायुक्त) (३) व्यवहार (सब चेष्टा के साधनोपसाधनो का दाता) (४) द्युति (स्वय प्रकाशस्वरूप वा सब का प्रकाशक (५) स्तुति (प्रशसा के योग्य) (६) मोद (आप आनन्दस्वरूप और दूसरो को आनन्द देने हारा) (७) मद (मदोन्मत्तो का ताड़ने हारा) (८) स्वप्न (सब के शयनार्थ रात्रि वा प्रलय का करने हारा (९) कान्ति (कामना के योग्य (१०) गति (ज्ञानस्वरूप, जानने प्राप्त होने योग्य)। इसलिए देव भी परमात्मा का नाम है। देवस्य देव शब्द की षष्ठी विभक्ति का रूप है। अत इसके अर्थ हैं कामना के योग्य आनन्द दाता परमात्मा के।

'तत्'—उस (इन्द्रियो से न ग्रहण करने योग्यपरोक्ष

'वरेण्यम्'—वर्त्तमर्हम् अत्युत्तमम्, सर्वेभ्य उत्कृष्ट सर्वाकत्तु योग्यम् अर्थात् अत्युत्तम स्वीकार करने योग्य

'भर्ग:'—पञ्च महायज्ञ विधि में ऋषि दयानन्द इसके अर्थ लिखते हैं—"निरुपद्रव निष्पापं शुद्ध सकल दोष रहित पक्वं परमार्थ विज्ञान स्वरूपम् अर्थात् शुद्धनिष्पापविज्ञानस्वरूप।

ऋषि ने यजुर्वेद के ३६वें अध्याय के भाष्य मे इसके अर्थ किए हैं सर्व दु ख प्रणाशक तेजस्वरूपम् (सब दु खों के नाश करने वाले तेजस्वरूप को) और ऋग्वेद के भाष्य में इस के अर्थ दिए हैं "भृज्जन्ति पापानि दु खमूलानि येन तत अर्थात् जिससे दु ख के मूल सब पापों का नाश हो वह।

'धीमहि'—ध्यायेम अर्थात् ध्यान करें अथवा धारण करें।

'य'—जो परमेश्वर, 'न' हमारी 'धिय' धारणावती बुद्धियो को 'प्रचोदयात्—प्रेरयेत् अर्थात् बुरे कामो से छुड़ा कर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।

(अपूर्ण)

नहीं चाहिए खालिस्तान

प्रो० सारस्वत मोहन मनीषी

नहीं चाहिए खालिस्तान, नहीं चाहिए पाकिस्तान।
देश भक्त हर हिन्दू चाहे वही अखण्डित हिन्दुस्तान।
धर्म युद्ध का लेकर नाम न कुर्सी युद्ध रचाओ।
'रगरेटा गुरु का बेटा' था हिन्दू यह न भुलाओ।
बाबा नानक की शिक्षाओ पर मत धूल गिराओ।
हिम्मत है तो ननकाना साहब पर ध्वज फहराओ।
हिन्दू सिख हैं एक समान, एक पिता, मा की सन्तान।
मा की कोख नही बटती है भूल गए क्यो कुछ नादान। नही.........

जिसको खालिस्तान चाहिए बाडमेर वह जाए।
जैसलमेर की रेतीली धरती पर फूल खिलाए।
भगतसिह की बलिदानी गाथा को नहीं भुलाए।
ऊधमसिह की तरल शहादत को मत दाग लगाओ।
कातिल होता नहीं महान, साथ न जाएगा सामान।
टुकडो-टुकडो में बट-बटकर बन जाता कब्रिस्तान। नही.........

हिन्दू माता प्रथम पुत्र को सिह न अगर सजाती।
तो क्या 'सत सिपाही' की कल्पना मूर्त हो पाती।
'पज पियारो' की टोली सिर कफन बाध ना आती।
तो विचित्र नाटक की सारी कथा धरी रह जाती।
वाणी का मतकर अपमान, पख बिना मत भरो उडान।
जल मे रहकर मगरमच्छ से वैर नही करते विद्वान। नही.........

बिल्ली बनकर अगर लड़े तो बन्दर आ जाएगा।
भाई-भाई के हाथों मे खंजर आ जाएगा।
आखो आगे सैंतालिस का मजर आ जाएगा।
बगिया से बसन्त भागेगा पतझर आ जाएगा।
फूट, लूट का हो अपमान, करो एकता का सम्मान।
जिस आगन की ईंटें लडती बन जाता वह घर शमशान। नही.........

जिसने पहले रक्षा की, वह क्यो अब मार रहा है।
किसने बोये बीज घृणा के, कौन विचार रहा है।
गीली आखो जलियावाला बाग निहार रहा है।
अपना जीवन-मरण साथ इतिहास पुकार रहा है।
बूद सिंधु की है पहचान, छोड़ द्वैष के तीर-कमान।
भस्मासुर के प्राण स्वय ले लेगा शिवाजी का वरदान। नही.........

अपने घर को आग हमे अब आप बुझानी होगी।
भूले-भटके राही को भी राह सुझानी होगी।
हमको अपने गुरुओ की हर रस्म निभानी होगी।
'देहु शिवावर मोहि कभी' की तान सुनानी होगी।
बढे तभी अपना सम्मान, छिपा हुआ इसमे उत्थान।
अपने श्रम से बजर को भी वीर बना देते उद्यान।

डी० ए० वी० कॉलिज, अबोहर (पजाब)

राष्ट्र की अभिवृद्धि करें

ओ३म् अभीवर्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे।
येनास्मान् ब्रह्मणस्पतेऽभिराष्ट्राय वर्धय॥ अथर्व १-२९ १

जिस प्रकार हमसे पहले मनुष्य उत्तम सामर्थ्य और धन पाकर महाप्रतापी हुए हैं, वैसे ही उस सर्वशक्तिमान जगदीश्वर के अनन्त सामर्थ्य और उपकार का विचार करके हम लोग पूर्ण पुरुषार्थ के साथ विद्याधन और धन की प्राप्ति से सर्वदा उन्नति करके राष्ट्र की अभिवृद्धि करें।

आवश्यकता है प्रत्येक क्षेत्र की प्रगति की!

यह प्रसन्नता का विषय है कि भारत का उपग्रह इन्सैट-१ बी० पृथ्वी की कक्षा मे प्रतिष्ठित कर दिया गया है और उसके सभी यन्त्र व्यवस्थापूर्वक कार्य कर रहे है। यह उपग्रह रेडियो, दूरदर्शन के कार्यक्रमो के व्यापक विस्तार एव मौसमतथा भूसर्वेक्षण कार्यों में बड़ी मदद करेगा। विश्व मे इस प्रकार के पहले बहुद्देश्यीय उपग्रह की सफलता से जहा उत्साह और प्रेरणा मिलती है, वहा इस सम्बन्ध मे चिन्तन भी अपेक्षित है। यह उपग्रह भारतीय कल्पना एव डिजाइन के आधार पर अमेरिकी सस्था ने निर्मित किया है। आज आवश्यकता है कि ऐसा उपग्रह भारतीय सस्थाए अपने कारखानो एव प्रयोगशालाओ मे स्वयं बनाए। हमे ऐसे उपग्रहो के लिए सोवियत रूस या अमेरिकी बैसाखी का सहारा छोड़कर उनके निर्माण मे अपना ही अवलम्ब लेना होगा। हमे यह भी स्मरण रखना होगा कि वेदो मे उल्लेख है 'त्रिवृता रथेन' स्थल, जल और अन्तरिक्ष मे पूर्ण गति से जाने वाले विमानों का। वहा यह भी उल्लेख भी किया गया है—जैसे विद्वान शिल्पी लोग सब मार्गों से चलने वाले कलायन्त्रो का विकास करते हैं। वैसे ही हम प्रगति करें।

वेदो मे ऐसे उल्लेख भी मिलते हैं कि ऐसे यान थे जो कि 'त्रिभिरेकादशैरिह पृथ्वी' तीन दिन में महासागर पार कर लेते थे और ग्यारह दिनो मे समस्त पृथ्वी लोक की परिक्रमा कर लेते थे। रामायण मे पुष्पक विमान एव अमोघ अस्त्र-शस्त्रो का उल्लेख है। इसी प्रकार महाभारत के युद्ध के अवसर पर या अन्य घटनाओ के अवसर पर ऐसे दिव्यास्त्रो के प्रयोग की चर्चा की गई है, जिसे एक समय आधुनिक विद्वान कपोल कल्पना कहते थे, परन्तु अणु व हाइड्रोजन बम आदि के निर्माण के बाद इस प्रकार के दिव्यास्त्रों की बात अब युक्तिसगत समझी जाने लगी है। हमारे देश ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे अपूर्व प्रगति की थी, खेद यही है कि महाभारत के भीषण युद्ध एव बाद मे म० बुद्ध और म० महावीर के समय कथित अहिंसा के नारे के युग मे हमारी वे सब उपलब्धिया समाप्त हो गईं। आज विश्व मे भारत के वैज्ञानिक एव उद्योगपति उच्चतम स्थिति पर पहुच गए हैं, वे विश्व के प्रत्येक क्षेत्र मे अग्रणी बन सकें इसके लिए जनता, शासन प्रत्येक को प्रयत्नशील होना पड़ेगा।

भारत का इतिहास साक्षी है कि जब ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे हम पिछड़ गए तब विदेशी आक्रमणकारी हमारे देश मे छा गए। सिकन्दर की तीव्र घुडसवार सेना की व्यूह रचना के सम्मुख भारतीय हस्ति सेना नही टिक सकी, इसी प्रकार बाबर के गोला-बारूद के सम्मुख राणा सागा की वीर सेना तलवारो से मुकाबला नहीं कर सकी। इसी प्रकार आधुनिक युद्ध कलाओ से दीक्षित यूरोपीय सेनाओ के सम्मुख पुरातन हथियारो से व्यूह रचना करने वाले मुगल, मराठे, सिख आदि नही टिक सके। यह ठीक है कि हमारी पराजयो में हमारे मतभेद तथा दूसरी राष्ट्रीय बुराइया भी कारण बनी, परन्तु इसी के साथ हमे इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि प्रतिदिन नए युद्ध के शस्त्रास्त्रो के सम्मुख हमारे पुराने हथियार एव युद्ध नीति नहीं टिक सकेगी। हमारा भारत देश अणुयुग मे प्रवेश कर चुका है, हमारे उपग्रह पृथ्वी की कक्षा मे पहुंचकर वैज्ञानिक गतिविधि करने लगे हैं, यह सब ठीक है, परन्तु इन सब क्षेत्रों मे हमें विदेशी परावलम्बन छोडकर प्रत्येक ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हमें प्रगति करनी है। उसी स्थिति मे हम इस प्रतियोगी विश्व की प्रतियोगिता में आगे बढ़ सकेंगे

गायत्री यज्ञमण्डल के नए पदाधिकारी

गायत्री यज्ञ मण्डल कैनाल कालोनी, ओखला—अध्यक्ष—श्री नित्यानन्द शर्मा, उपाध्यक्ष—श्री के० पी० सिंह, सचिव—श्री राजबल त्यागी, उपसचिव—गजेसिंह शिशव, कोषाध्यक्ष—श्री चुन्नीलाल गिरि, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री दिनेशकुमार दीक्षित, आय-व्यय निरीक्षक—श्री शिवेन्द्रपाल शर्मा।

आर्यसमाजी और जातिवाचक शब्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदानुकूल गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था से जातिवाद को समाप्त करने पर जोर दिया था तथा आर्यसमाज द्वारा विशेष रूप से जाति-पाति छुआछूत की सामाजिक बुराई को दूर करने का अभियान चलाया था, किन्तु आर्यसमाज के निर्माण काल के कुछ वर्षों उपरान्त छोटा या बडा आर्यसमाजी कार्यकर्ता अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाना गौरव समझने लगा, इससे जातिवाचक को बढावा मिला। समस्त आर्यसमाजी अगर अपने नाम के आगे आर्य लगाएँ तो समस्त विश्व आर्यों के सगठन का परिचय मिलेगा, तथा लाखों पत्रो पर कार्यालयो पर, दुकानो पर, जब आर्यशब्द बार-बार पढने को मिलेगा तो स्वत ही आर्यसमाज को बल मिलेगा। तथा परस्पर आर्यों को भी एक दूसरे से शीघ्र परिचय का अवसर मिलेगा। और यह परम्परा वशगत सस्कार रूप मे चलती रहेगी। आर्य शब्द स्वत ही प्रेरणादायक रहेगा क्योकि प्रत्येक आर्य को यह आभास रहेगा कि मैं श्रेष्ठ हू, मेरी विशेष जिम्मेवारी है। अत ऋषि निर्वाण शताब्दी पर यही हमारी सच्ची श्रद्धाजलि होगी व सकल्प होगा अगर हम सभी आर्य जातिवाचक शब्द को समाप्त कर देवें।

—उम्मेद सिंह आर्य विशारद, गढ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उ० प्र०)

उर्दू के प्रलेख देवनागरी लिपि में दिए जाएं

भारत स्वाधीनता होने से पूर्व कई हिन्दी भाषा क्षेत्रो के न्यायालयो मे भी उर्दू का प्रचलन था यद्यपि जनता अधिकाशत हिन्दी जानती थी। उससे सारी जनता को बहुत कष्ट होता था। स्वाधीनता के बाद न्यायालयो मे हिन्दी को अपनाए जाने पर राहत मिली है। किन्तु तब बहुत कष्ट होता है जब पुराने दस्तावेजो की, जो पहले कभी उर्दू अग्रेजी मे तैयार हुए थे, नकल उर्दू मे प्राप्त होती है। यह उचित होगा कि यदि कोई व्यक्ति उन दस्तावेजो की, जो मूल रूप से उर्दू मे हैं, नकल प्राप्त करते समय यह निवेदन करे कि उसे नकल देवनागरी लिपि मे दी जाए तो उसकी सुविधा न्यायालयो तथा अन्य कार्यालयो मे दी जानी चाहिए।

—हरिबाबू कसल, प्रचार मन्त्री, दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन

आर्य परिवार संघ अभियान व निर्वाण शताब्दी

आर्यसमाज दूसरी शती मे प्रवेश कर चुका है, परन्तु अधिकाश आर्य सभासद ऐसे हैं कि उनकी पत्नी व सन्तानें आर्य नही बनते हैं। दुष्परिणाम यह होता है कि आर्योचित निष्ठा पीढी आगे बढने के साथ ही कम हो जाती है। इस बारे मे विभिन्न सम्मेलनों व उत्सवो मे चिन्ता भी अधिक की जाती है। इधर कुछ समय से कोटा स्थित नगर आर्यसमाज केथूनीपोल, कोटा के उत्साही आर्य सभासदो ने आर्यसमाज मे संकीर्णता से बाहर होकर गुण, कर्म, स्वभावानुसार आर्य परिवार के निर्माण के लिए उपक्रम किया है। इस शुभ कार्य के लिए ये युवा मित्र बधाई के पात्र तो हैं ही, परन्तु सब आर्यसमाजें इस अभियान मे अतिशीघ्र भाग लेने लग जाए, यह हमारा निवेदन है। आर्यसमाज सगठन (सार्वदेशिक-राष्ट्रीय-प्रादेशिक) अतिशीघ्र परिपत्र जारी करे आर्यसमाजो को-कि एक निश्चित अवधि मे जिस जिस आर्यसमाज मे जो सभासद जात पात तोडकर विवाह किये है तथा पति-पत्नी दोनो आर्य हैं उनकी सूची सगठन को मिल जाए। इस सूची की एक प्रति मन्त्री, आर्य परिवार सघ, ४ भ-२७ विज्ञान नगर, कोटा (राजस्थान) को भी भेज दें। ताकि आर्य परिवार सघ के लगनशील कार्यकर्ता उन आर्यों या आर्य परिवारो से पत्राचार द्वारा सम्पर्क कर सकें। इससे आर्यसमाज में आर्य परिवार शिविर लगने में सुविधा हो जाएगी।

— रामस्वरूप, सम्पादक वेदमार्ग, अजमेर (राजस्थान)

'आर्य सन्देश' के पाठकों से

'आर्यसन्देश' के ४ सितम्बर, १९८३ के अक मे पृष्ठ ५ पर 'हमारे उपदेश और उपदेशक' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। इस लेख के लेखक आर्यसमाज के वयोवृद्ध आर्योपदेशक श्री जगतकुमार शास्त्री हैं। भूल से उनका नाम छपने से रह गया था, जिसका हमें खेद है।

आर्यसन्देश के २८ अगस्त के अक मे प्रकाशित कुछ तथ्यो के बारे मे सत्य विवरण यही है कि पाण्डवो को १२ वर्ष का वनवास मिला था न कि ११ का। इसी अक के तीसरे पृष्ठ पर 'अनमोल उपदेश' मे आर्यसमाज के मन्तव्य की दृष्टि से यह बात सिद्धान्त ठीक है कि आर्यसमाज ईश्वर, जीव, प्रकृति के त्रैत सिद्धान्त को एव तीनो को अनादि मानता है। यह भी तथ्य है कि परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ही हैं, अन्य कोई सज्जन नही। भ्रान्त विवरणो के प्रकाशन के लिए हमे खेद है—सम्पादक

'नमस्ते' व 'नमस्कार' पर एक छिद्र

लेखक वैदिक गवेषक डा० शिवपूजन सिंह कुशवाह, एम० ए० साहित्यालंकार कानपुर।

'नमस्ते' शब्द वैदिक है। सभी धार्मिक ग्रन्थो मे अभिवादन के लिए 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग है। 'नमस्ते' शब्द को विशेष रूप से प्रचलित करने के लिए महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का प्रयत्न श्लाघनीय है। 'नमस्ते' परस्पर बडे छोटे, भृत्य, चोर-डाकू, स्त्री प्रभृति को भी कर सकते हैं। 'नमस्कार' करना भी अवैदिक नही है और न महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने निषेध ही किया है। बग प्रान्त में आज भी परस्पर 'नमस्कार' करने की परिपाटी है। साप्ताहिक पत्र'आर्य सन्देश' नई दिल्ली, वर्ष ७ रविवार ७ अगस्त १९८३ ई०, अक ४१ पृष्ठ २ मे स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष 'वैदिक सस्थान' नजीबाबाद का 'नमस्ते बनाम नमस्कार' शीर्षक एक लघु-लेख प्रकाशित हुआ है। उसमे उन्हे 'नमस्कार' शब्द पर आपत्ति है। वह लिखते हैं—नमस्कार का अर्थ है नम कार और नम का अर्थ है मान करना 'कार' शब्द तो शब्द की पूर्ति के लिए प्रयुक्त होता है। 'नमस्कार' करने वाले को परिव्राजक जी ने अशिक्षित, अनपढ भी लिख डाला है।

समीक्षा —'नमस्ते' करना तो उचित ही है जो मुख्य रूप से शास्त्रानुकूल है। यदि गौण रूप से कोई 'नमस्कार' कर लेता है तो वह अनपढ नही कहा जा सकता।

स्वय महर्षि दयानन्द जी सरस्वती तथा अन्य वैदिक विद्वानो ने भी 'नमस्कार' शब्द का प्रयोग किया है। 'नमकार' का अर्थ है—झुककर अभिवादन करना।

'नमस्' (अव्य०) (नम्-असुन्) प्रामति, अभिवादन, प्रणाम, पूजा यह शब्द स्वय सदैव म० प्र० के साथ प्रयुक्त होता है। सम० कृति (स्त्री०) कारणम्, प्रणति, सादर प्रणाम, सादर अभिवादन (नमम् शब्द के उच्चारण के साथ) द्रष्टव्य प० वामन शिवराम आप्टे कृत संस्कृत हिन्दीकोष पृष्ठ ५१० अत नम या नमम् के साथ 'कार' लगाना व्यर्थ नही है।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की स्पष्टोक्ति

नमो व पितरो रसाय नमो व पितर शोषाय नमो व पितरो जीवाय नमो व पितर स्वधायै नमो व पितरो घोराय नमो व पितरो मन्यवे नमो व पितर पितरो नमो वो गृहान्न पितरो दत्त सतो व पितरो देष्मैतद्व पितरोवास ॥" (यजुर्वेद अ०२ मन्त्र ३२)

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती कृत आर्य भाषा (हिन्दी) मे अनुवाद करते हुए " ·····(नम) नमस्कार हो। " (नम.) नमस्कार हो। 'यजुर्वेदभाष्यम्' प्रथमो भाग पृष्ठ १११) वैयाकरण प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु महोदय ने 'यजुर्वेद भाष्य विवरण' (प्रथम भाग, पृष्ठ ११८) मे इसकी पुष्टि की है। यदि उनकी दृष्टि मे 'नमस्कार' शब्द का प्रयोग ठीक न होता अवश्य टिप्पणी मे लिखते। प० सुदर्शनदेव जी आचार्य एम० ए० ने (दयानन्द-यजुर्वेद भाष्य-भास्कर) प्रथम भाग पृष्ठ १६७ में इसकी पुष्टि की है। उन्होने इस ग्रन्थ मे अपनी हिन्दी लिखी है। उन्होने ५ बार 'नमस्कार' का प्रयोग किया है। पं० युधिष्ठिर जी मीमासक ने भी 'यजुर्वेद-भाष्य सग्रह' (पृष्ठ १७३) मे महर्षि दयानन्दजी सरस्वती कृत भाष्य पर टीका-टिप्पणी करते हुए 'नमस्कार' पर कोई आपत्ति नही की है। यह पुस्तक पंजाब विश्वविद्यालय की 'शास्त्री' परीक्षा मे नियत ग्रश प्रचलित है। चतुर्वेद भाष्यकार प० जयदेव शर्मा 'विद्यालकार' मीमासातीर्थ ने अपना भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द जी के लेख की पुष्टि की है। उन्होने चार बार नमस्कार का प्रयोग किया है। (यजुर्वेद भाषा भाष्य, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ६०-६१) स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक विद्यामार्तण्ड (पूर्व वैदिक गवेषक प० प्रियरत्न आर्ष) ने 'यजुर्वेदान्वयार्थ' पृष्ठ ४१ (प्रथम दशाध्यायात्मक) मे इसी मन्त्र के हिन्दी अनुवाद मे तीन बार 'नमस्कार' का प्रयोग किया है। इसी मे यजु०२/३२ पर उव्वट महीधर भाष्य —'उव्वट' षट्कृत्वा नमस्करोति ·।' श्री महीधर--'का० (४,१, १५) नमो व इत्यञ्जलि करोतीति। षट्कृत्वो नमस्करोति (शुक्ल यजुर्वेद संहिता प्रथम खण्ड चौखम्भा) पृष्ठ ९५-९६)

उपर्युक्त भाष्य का हिन्दी अनुवाद करते हुए चतुर्वेद भाष्यकार प० जयदेव शर्मा विद्यालकार, मीमासातीर्थ लिखते हैं। 'उव्वट, महीधर दोनो ने यह मन्त्र ऋतुओपरक लगाया है। हे ऋतुओ ! (नमो व रसाय) आपके स्वरूप वसन्त को नमस्कार है। (व शोषाय नम) आपके सुखाने वाले ग्रीष्मको नमस्कार है। (व जीवाय नम) जीवन के हेतु वर्षाओ को नमस्कार है। (व स्वधायै नम) आपके अन्नोत्पादक शरद् के लिए नमस्कार है। (व वीराय नम) आपके घोर रूप हेमन्त को नमस्कार है। (मृत्युवे नम) शिशिर को नम है।' (यजुर्वेद महिता भाषाभाष्य प्रथम खण्ड, पृष्ठ ६१)।

यदि शर्मा जी को कोई आपत्ति 'नमकार' पर होती तो अपने भाष्य व उव्वट महीधर के भाष्य मे 'नमस्कार' का प्रयोग न करते। यही यजु०२/३२ मन्त्र का भाष्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' मे भी किया है। वहा भी उन्होने छह बार 'नमस्कार' का प्रयोग हिन्द-अनुवाद मे किया है। (रामलाल ट्रस्ट अमृतसर का प्रकाशन पृष्ठ ९९४)। इसका सम्पादन व टिप्पणी प० युधिष्ठिर मीमासक ने की है। यदि 'नमस्कार' पर कोई आपत्ति होती, तो अवश्य करते।

प० सुखदेव जी वेदालकार, विद्यावाचस्पति, दर्शनभूषण ने भी 'ऋग्ववेदादिभाष्य भूमिका' की टीका-टिप्पणी 'वेद तत्व प्रकाश' के नाम से की है। उन्होने भी छह बार नमस्कार की पुष्टि की है। उन्हे भी आपत्ति नही है। (पृष्ठ ६४७-६४८) यजु० २।३२ की व्याख्या 'शतपथ ब्राह्मण' मे भी है—

'अथनीवि मुद्वृह्य नमस्करोति। पितृदेवत्या वै नीवि—स्वमान्नीविमुद्वृह्य नमस्करोति यज्ञो वै नमो (शतपथ ब्राह्मण २।४।२।२४) इसका अनुवाद करते हुए प्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान प० गगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० ने ५ बार 'नमस्कार' लिखा है। (रत्नदीपिका टीका, पहलाभाग पृष्ठ २८०)

'येसमाना समनस पितरो यमराज्ये।
तेषा लोक' स्वधा नमो
यज्ञो देवेषु कल्पताम्' ॥
(यजुर्वेद अ०१९ मन्त्र ४५)

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने इस मन्त्र का अर्थ 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे करते-करते हुए (नम) उनको हम लोग नमस्कार करते हैं। एक बार 'नमस्कार' का प्रयोग करते हैं।

प० सुखदेव जी वेदालंकार भी इसका समर्थन करते है। (वेद तत्त्व प्रकाश, पृष्ठ ६५४)

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्म्म धृतो नमासि। तत्र न आहु परम जनित्र सन सविद्वान् परिवृङ्विधि तक्मम् ।'—अथर्ववेदकाण्ड ।, सूक्त २५ मन्त्र १) इस मन्त्र मे 'नमासि' शब्द आया है।

प्रसिद्ध आर्यसमाजो विद्वान् प० क्षेमकरण दास जी त्रिवेदी इमका अर्थ करते हैं —(नमासि) अनेक प्रकार से नमस्कार (अथर्ववेद भाष्य, प्रथम काण्ड, पृष्ठ १२४) सस्कृत मे (नमासि)णम प्रहृणत्वे-असुन्। आद्युदात्त । नम्रभावना।

प० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, विद्यामार्तण्ड···(नमासि कृण्वन्) नमस्कार करते हैं। (अथर्ववेद का भाष्य, पहला भाग, पृष्ठ ७१)

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक विद्याभास्कर पं. सूर्यकान्त व्याकरणाचार्य शास्त्री, एम. ए. लिखते हैं — नमस-नमस्कार ऋग्वेदकाल से ही सम्मानपूर्वक नमस्कार करने के लिए नमस् शब्द का आम प्रयोग हो रहा है। वैदिक कोश (ब हि० विश्वविद्यालय) पृष्ठ २३९

श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय ११ श्लोक ३१ मे 'नमोऽस्तु' श्लोक ३५ मे प्रणम्य नमस्कृत्वा श्लोक ३६ मे 'नमस्यति।' श्लोक ३७ मे 'नमेरन्', श्लोक ३९ मे 'नमो, नमस्ते' श्लोक ४० मे 'नम, "नमोऽस्तु' शब्द आए हैं। इनका अर्थ कई आर्यसमाजी विद्वान् (प० आर्यमुनि जी व स्वामी समर्पणानन्द जी) ने 'नमस्ते' व 'नमस्कार' शब्दो का प्रयोग किया है।

निम्नाकित आर्य विद्वानो ने 'नमस्कार' व नमस्ते दोनो का प्रयोग किया है।

महामहोपाध्याय प० आर्य मुनि जी (गीतयोग प्रदीप भाष्य, पृष्ठ ३९९) प० राजाराम शास्त्री (श्रीमद्भगवद् गीता पृ. २७६, २७९, २८३) स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती शास्त्रार्थ महारथी प० बुद्धदेव जी विद्यालकार विद्यामार्तण्ड (भग्वद्गीता समर्पण भाष्य २४४-२४७) प० कृष्ण स्वरूप जी विद्यालकार (गीता-मर्म पृष्ठ ४००, ४०२, ४०३, ४०७) प० सत्यव्रत जी 'सिद्धान्तालकार (भगवद्गीता पृष्ठ ३५५, ३५९, ३६१, ३६२) प० तुलसी रामजी, स्वामी सामवेदभाष्कार (भगवद्गीता पृष्ठ ९४, ९५ ९६) प० भीमसेन शर्मा इटावा भगवद्गीता भाष्य पृष्ठ ३३७, ३३९, ३४१, ३४२, प० रामावतार शर्मा विद्याभास्कर, वेदान्ततीर्थ, मीमासारत्न (गीतापरिशीलन पृष्ठ २६०, २६२, २६३) प० श्रीपाददामोदर सातवलेकर जी, गीतालकार 'विद्यामार्तण्ड' (भगवद्गीता पृष्ठ ६६१, ६६७, ६६९)।

मैंने १७ आर्य विद्वानो के भाष्यो के प्रमाण प्रस्तुत किए हैं, जिन्होने स्पष्ट रूप से 'नमस्ते' व नमस्कार शब्दो का प्रयोग किया है। आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का भाष्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आर्ययुवकों को नई प्रेरणा

फीरोजपुर छावनी समाज में व्यवस्थित कार्यक्रम

आर्यसमाज, लुधियाना रोड, फीरोजपुर छावनी मे २२-८ से २५-९-१९८३ तक ब्रह्मचारी आचार्य आर्य नरेश ने स्थानीय जनता और आधुनिक भौतिकवाद की चकाचौंध में भटके युवको में देश-भक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी। उनके क्रातिकारी विचारो ने आत्मा और परमात्मा के वास्तविक रूप पर प्रकाश डालते हुए युवको को अपने-अपने चरित्र, व्यवहार तथा आहार को सुधारने के लिए सचेत किया। आर्ययुवक सभा के ओजस्वी भजनो ने भी समा बाध दिया। कार्यक्रम की व्यवस्था आर्य युवक राकेश और उसके साथियो ने निभाई, जिससे एक सुव्यवस्थित वेद प्रचार हुआ।

भारतीय भाषा दिवस—१४ सितम्बर पर

अंग्रेजी और हम

—डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री

राष्ट्र की संकल्पना मे भाषा का प्रमुख स्थान है, पश्चिमी विचारको का तो सामान्य विचार यह रहा है कि 'एक भाषा' के बिना 'एक राष्ट्र' हो ही नही सकता। इसीलिए वे प्राय यह कहते हैं कि चूकि भारत मे एक नही, अनेक भाषाए बोली जाती हैं अत भारत एक राष्ट्र नहीं। उनके इस विचार से आप सहमत हो या न हो, पर किसी राष्ट्र में भाषा के महत्व से इनकार नही कर सकते। प्राचीन भारतीय मनीषियो ने बहुभाषा-भाषी राष्ट्र भारत की इस आवश्यकता को पहले ही समझ लिया था। इसीलिए वे कश्मीर से कन्याकुमारी तक, और कच्छ से कामरूप तक एक भाषा संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन करते-कराते थे। ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप मे उसी का प्रयोग करते थे। उसी मे शास्त्रीय चर्चाए करते थे। राजकाज मे भी उसी का व्यवहार करते थे। सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डा० हसमुख धी. साकलिया के अनुसार सम्राट अशोक के समय तक सरकारी कामकाज संस्कृत मे ही होते थे। अशोक ने अपने शासनकाल मे जनता के लिए जारी की जाने वाली राजाज्ञाओ मे संस्कृत के साथ प्राकृतो का भी प्रयोग शुरू किया, और यह परम्परा १५ वीं शताब्दी तक चलती रही। इससे स्पष्ट ही यह अनुमान किया जा सकता है कि अशोक के समय से ही संस्कृत के अध्ययन की परम्परा काफी क्षीण होने लगी होगी, और आम जनता मे जनभाषाओ का व्यवहार अधिक होने लगा होगा, अशोक एक समझदार शासक था, वह इस नियम को भलीभाति जानता था कि राजकाज जनता की भाषा मे ही किया जाना चाहिए, तभी जनता का आत्मीय सहयोग प्रशासन को ( ) सकता है।

परकालान्तर मे विदेशी शासको ने इस सिद्धान्त की उपेक्षा कर दी, सबने तो नहीं, पर अनेक मुस्लिम शासको ने फारसी को राजभाषा बनाया, और अंग्रेजो ने अंग्रेजी को, अब प्रशासन मे प्राथमिक महत्व शासको की भाषा को मिलने लगा, इसके दो परिणाम हुए, एक ओर तो राजकाज मे आम जनता की सहभागिता कम होती चली गई, उसके लिए राज्य और शासन जीवन का अग नही, वरन् एक आरोपित तन्त्र बन गया जिसका निर्वाह बस इतना ही करना था कि उसके प्रतिनिधियो को उनकी इच्छानुसार यथासमय कर आदि दे दिया जाए और बदले में अपने जीवन की सुरक्षा की मांग की जाए। शासक वे विदेशी, अत वे भी इससे अधिक कुछ करना चाहते नही थे, जनता की उन्नति करना उनका लक्ष्य नही था। लक्ष्य था जनता का शोषण और भारतीय सम्पदा का दोहन। विदेशी शासको की भाषा को राजकाज की भाषा बनाने का दूसरा परिणाम यह हुआ कि भारतीय भाषाए अपमानित होती गईं। अत दरिद्र बनती गईं, और इसका लाभ मिला शासको की भाषा को, जिन्हे विशिष्ट सम्मान मिलता गया। अंग्रेजी का जो सम्मान हमारे समाज मे आज तक है वह इसी की तर्कपूर्ण परिणति है। हमारे देश मे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान भी अंग्रेजी के माध्यम से आया, इसलिए उसकी इज्जत मे चार चाद लग गए।

स्वाधीन भारत के सविधान मे हिन्दी को जो सघ सरकार की राजभाषा का दर्जा दिया गया, और अन्य भारतीय भाषाओ को जो सम्मान दिया गया। वह उसी सिद्धान्त की स्वीकृति का परिणाम था जिसका पालन अशोक ने किया था। अशोक के समय मे संस्कृत के पक्षधरो ने प्राकृतो के प्रयोग पर कोई बावेला मचाया था या नहीं, यह तो ज्ञात नही, पर स्वाधीनता के बाद राजकाज मे भारतीय भाषाओ के प्रयोग पर अंग्रेजी के हिमायती जरूर बावेला मचाते रहे हैं उनकी निष्ठा विदेशी गौराग प्रभुओ के साथ हो गई है और राजकाज मे भारतीय भाषाओ को घुसते देखकर उन्हे अपनी कुर्सी हिलती हुई नजर आने लगती है, तभी तो आजादी के ३५ वर्ष के बाद भी भारतीय भाषाए फरियादी के रूप मे सामने आती हैं।

जब यह कहा जाता है कि केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी विभिन्न भाषाभाषी हैं, और अभी तक देश ने ऐसी नीति स्वीकार नही की है जिसके अधीन सारे देश मे सघीय भाषा हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य रूप से किया जाए, इसलिए केन्द्र सरकार के कर्मचारी हिन्दी मे कामकाज करने मे अभी तक सक्षम नही हैं तो खीझ कितनी भी हो, फिर भी यह तर्क समझ मे तो आता है, पर जब यह कहा जाता है कि किसी राज्य के कर्मचारी उस राज्य की क्षेत्रीय भाषा को नही जानते। इसलिए राज्यो मे भी क्षेत्रीय भाषाओ का प्रयोग नहीं किया जा रहा है तो यह तर्क गले नही उतरता। आश्चर्य तब और भी अधिक होता है जब हमारा साक्षात्कार इस तथ्य से होता है कि क्षेत्रीय भाषाओ का अध्ययन-अध्यापन सम्बन्धित राज्यो मे माध्यमिक स्तर तक, और कहीं-कहीं स्नातक स्तर पर अनिवार्य रूप से किया—कराया जाता है। यह शिकायत भी निरपवाद रूप से सुनने को मिलती है कि नई पीढी का अंग्रेजी पर अधिकार कम होता जा रहा है। इसके बावजूद सारे काम अंग्रेजी मे ही हो रहे हैं, केवल सरकारी उपक्रमो मे ही नही, वरन् उन छोटे-मोटे उद्योगो मे भी अंग्रेजी का ही प्रयोग हो रहा है जिनके सचालको को अंग्रेजी के ककहरे का भी ज्ञान नही।

जनता की सहभागिता—ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र हो या प्रशासन का, व्यापार वाणिज्य का क्षेत्र हो या कृषि और कला का, उसकी सफलता की अनिवार्य शर्त है जनता की सहभागिता, पर आज हमारे समाज मे अंग्रेजी का वर्चस्व इस सहभागिता के मार्ग मे सबसे बड़ा अवरोध है, इस बात की ओर हमारा ध्यान ही नही जाता कि देश के मन्द विकास का एक मुख्य कारण यह भाषायी लगडापन भी है। सरकार जनहित की अनेक योजनाए बनाती हैं, लाखो नही, करोडो और अरबो रुपए इन पर खर्च करती है। इसके बावजूद अगर इनका लाभ ग्राम जनता को नही मिल पाता तो इसका एक मुख्य कारण यह अंग्रेजी की दीवार भी है। आम जनता को इन योजनाओ की जानकारी तक नही हो पाती, योजनाए प्रवर्तित कब हुई, इसकी सूचना तक नही मिल पाती, योजनाओ की सफलता-असफलता का मूल्यांकन भी हो जाता है और सामान्यजन को इसकी हवा तक नही लगती। सामान्य जन अपनी बात अधिकारियो तक पहुचाना चाहे, तो पहले तो वे उसकी पहुच के बाहर होते हैं। किसी तरह वह अधिकारियो तक पहुच भी जाए तो फिर वही अंग्रेजी का अभेद्य दुर्ग आडे आ जाता है। अत सबसे पहली आवश्यकता इसी बात की है कि समस्त कामकाज मे जन भाषाओ को वह समुचित स्थान दिया जाए जिसकी वे जनतन्त्र मे वास्तविक अधिकारिणी हैं—

क्या इसके लिए हमे सरकार का मुह जोहने की आवश्यकता है? जिन लोगो ने अपना दैनिक जीवन अंग्रेजी को ही सौप रखा है वे शायद ऐसा ही कहेगे। वे अपने बच्चो को नर्सरी से ही अंग्रेजी की घुट्टी पिलाना, अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयो मे भेजना भी शायद तभी बद करेगे जब सरकार इसके लिए कानून बनाएगी। निमत्रण पत्र अंग्रेजी मे छपाना, पते अंग्रेजी मे लिखना, नामपट अंग्रेजी मे लगाना, अभिवादन मे अंग्रेजी का प्रयोग करना, और ऐसे ही तमाम काम अंग्रेजी मे करना भी वे शायद तभी बद करेगे जब ऐसा कानून बन जाएगा। कानून बन जाने पर भी जब तक बम चलेगा तब तक शायद उसकी उपेक्षा भी करेंगे। आखिर करें क्यो नही? इग्लैण्ड मे भी तो यही हुआ है। वहा १७ वी शताब्दी तक अंग्रेजी को 'अविकसित और गवारू' माना जाता था। उस समय लैटिन और फ्रासीसी भाषाओ को सम्पन्न माना जाता था। तब इग्लैण्ड मे अंग्रेजी को उसका समुचित स्थान दिलाने के लिए सन् १७४० मे कानून बनाया गया कि सार्वजनिक स्थान पर लैटिन या फ्रासीसी भाषा का प्रयोग करने वालो पर जुरमाना किया जाएगा। अंग्रेजो के मानसपुत्र शायद भारत मे ऐसे ही किसी कानून के बनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

वस्तुत आवश्यकता जनमानस को जाग्रत करने की है। जनतान्त्रिक देश कानून से नहीं, जागरूक जनबल के सहारे चलते हैं। हमारे सामाजिक जीवन मे अंग्रेजी का प्रयोग जितना घटेगा, शासन की भाषा के रूप मे भी अंग्रेजी उतनी ही निष्प्रभ होती जाएगी। हर सामाजिक कार्य एक प्रकार का यज्ञ होता है जिसमे आहुति देनी होती है सबसे पहले अपनी। भारतीय भाषा दिवस पर विचार कीजिए कि दैनदिन जीवन मे अपने कार्य क्या आप अपनी ही भाषा मे करते हैं? इसके लिए अंग्रेजी की बैसाखी के मोहताज तो नही? भाषा सम्बन्धी आपकी यह आत्म निर्भरता सारे समाज को आत्म निर्भर बनाएगी।

२५ जयश्री, ७५ वर्ली सी फेस रोड, बम्बई—४०००२५

दिल्ली में आर्यवीर दल का पुनर्गठन किया जाएगा

दल को संगठित करने का कार्यभार श्री प्रीतमदास रसवन्त को
४ सितम्बर के दिन दिल्ली में विशेष बैठक सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की दिनाक १३-८-८३ की बैठक मे वर्तमान परिस्थितियो को दृष्टि मे रखते हुए निर्णय किया गया कि दिल्ली मे आर्य वीर दल का पुनर्गठन किया जाए ताकि युवा शक्ति एक नेतृत्व मे कार्य कर सकें। दिल्ली में आर्य वीर दल को सगठित करने का कार्यभार आर्यसमाज चूनामण्डी, पहाड गंज, नई दिल्ली के प्रधान श्री प्रीतम दास जी रसवन्त को सौंपा गया, जो उन्होने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसके साथ-साथ यह भी निर्णय लिया गया कि आर्य वीर दल की एक आवश्यक बैठक रविवार दिनाक ४-९-१९८३ को मध्यान्ह ३ बजे आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे रखी गयी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्राणनाथ घई ने आह्वान किया कि कृपया इस बैठक मे समस्त आर्य वीर दल के अधिष्ठाता एव आर्यसमाजो के मन्त्री महोदय अवश्य सम्मिलित होने की कृपा करें, ताकि आर्य वीर दल के कार्य को सुचारु रूप से चलाया जा सके।

आर्य जनता से विनम्र अपील

भारत की असख्य आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं मे प्रवचनों व साहित्य द्वारा वैदिक धर्म की शक्तिशाली प्रचार प्रणाली को योजनाबद्ध शिथिल किया जा रहा है। इसके पीछे कौन-सी शक्तिया काम कर रही हैं। यह एक रहस्य है। निष्ठावान आर्यजन इस तथ्य पर चिन्तन करें व उचित कदम उठावें, अन्यथा आर्यसमाज का भविष्य अंध-कारमय हो जाएगा।

—धर्मेन्द्र धीग्रा, आर्यसमाज, खारीवाव मार्ग, बडोदरा३९०००१

संस्कृत : मानव-चिन्तन की अमूल्य निधि

अतीत से प्रेरणा लें : श्री बलराम जाखड़ का परामर्श

नई दिल्ली। मंगल २३ अगस्त को रक्षाबन्धन के पर्व पर संस्कृत-दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने कहा—संस्कृत भारत की राष्ट्रीय एकता और विश्वबन्धुत्व की भावना का सबसे बड़ा साधन है। उनका कथन था कि संस्कृत मात्र एक भाषा ही नहीं, वरन मानव-चिन्तन की अमूल्य निधि है। संस्कृत साहित्य एव संस्कृति ने देश को विश्व में बहुत ऊचा स्थान दिलाया। आज हमें अतीत की इन उपलब्धियों पर गर्व करने की नहीं, प्रत्युत उनसे प्रेरणा लेकर नई खोज करने की जरूरत है। संस्कृत के प्रसार की जरूरत पर बल देते हुए श्री जाखड़ ने कहा कि यह केवल राज्यो का विषय नहीं है, समूचे राष्ट्र का विषय है।

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय, राष्ट्रीय सस्कृत सस्थान एवं श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय सस्कृत विद्यापीठ के सयुक्त तत्वावधान मे आयोजित इस विशिष्ट कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्रीमती शीला कौल ने कहा कि सरकार राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में सस्कृत को महत्व देती रहेगी। श्री जाखड़ ने प्रत्येक राज्य में कम से कम एक सस्कृत विद्यापीठ स्थापना करने का सुझाव दिया।

श्री मंजुनाथ शास्त्री ने वानप्रस्थ की दीक्षा ली

अजमेर डी०ए० वी० हायर सैकेण्डरी स्कूल के सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री मजुनाथ शास्त्री एम० ए० ने २३ अगस्त श्रावण पूर्णिमा के दिन पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य कर्मवीर स्वामी सदानन्दजी के कर-कमलो से वानप्रस्थ की दीक्षा ली। स्वामी जी ने शास्त्री जी के दीर्घ जीवन की कामना की।

सत्यार्थप्रकाश की परीक्षा

आर्ययुवक परिषद् (पजी) दिल्ली द्वारा सचालित परीक्षा इस वर्ष १८ सितम्बर ८३ को सदैव की भाति सारे देश के २०० परीक्षा केन्द्रो में परीक्षा ली जाएगी। परीक्षाओं मे भाग लेने के इच्छुक बहन भाई एवं अपने नगर मे नया केन्द्र स्थापित कराने के इच्छुक परीक्षा-मन्त्री आर्य युवक परिषद् एच-६४ अशोक विहार दिल्ली-५२ से पत्र-व्यवहार करें।

—देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक प्रधान

युवक शहीदों से प्रेरणा लें

आर्यसमाज समस्तीपुर द्वारा शहीद कार्यक्रम

आर्यसमाज समस्तीपुर के तत्वावधान मे जन-जागरण हेतु नुक्कड सभा द्वारा वीर सावरकर जयन्ती, अमर शहीद उधम सिंह बलिदान दिवस तथा १७ अगस्त को लदन मे कर्जन वाईली को मारने वाले अमर शहीद वीर मदनलाल ढींगरा के बलिदान दिवस पर अनेक वक्ताओ ने स्वतन्त्रता संग्राम के शहीदो के जीवन पर प्रकाश डाला। स्थानीय गांधी चौक पर बालक सत्यप्रकाश के क्रातिकारी कविता पाठ से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। क्रातिकारी सूर विश्वम्भर आर्य ने मदनलाल ढींगरा को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि गुलामी के समय वह राम थे इन्होंने १ जुलाई १९०९ को कर्जन वाइली रूपी दुष्ट रावण को मारा था। तथा १७ अगस्त १९०९ को इन्हे फासी दी गई। देश के नौजवानो का आह्वान करते हुए श्री आर्य ने उन्हे स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए शहीदो के जीवन से प्रेरणा लेने की सलाह दी तथा देशवासियो को अपनी स्वतन्त्रता के प्रति सचेष्ट रहते हुए सिपाही बनकर तैयार रहने की अपील की।

मन्त्री
नवलकिशोर शास्त्री

ऋषि निर्वाण शताब्दी पर फिल्म

केन्द्रीय मन्त्रियों द्वारा सहयोग का आश्वासन

नई दिल्ली। डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के नेतृत्व मे प्रो० शेर सिंह श्री सहगल, प्रो० वेदव्यास जी आदि आर्य नेताओं का एक शिष्टमण्डल भारत सरकार के गृह सचिव श्री टी० एन० चतुर्वेदी से मिला। शिष्टमण्डल को सचिव महोदय ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के कार्यकर्त्ता प्रधान प्रो० शेर सिंह ने सचार मन्त्री से भेंट करके निर्वाण शताब्दी के अवसर पर ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध मे एक डाक टिकट जारी करने का अनुरोध किया। सचार मन्त्री ने सुझाव को उपयोगी स्वीकार किया। डाक टिकट का डिजाइन बनाने में उन्होने प्रो० साहब से सहयोग की मांग की। प्रो० शेर सिंह जी केन्द्रीय सूचना मन्त्री श्री हरिकृष्ण लाल भगत से भी मिले और समारोह के विषय मे आकाशवाणी और दूरदर्शन के सहयोग के लिए तथा डाकूमैन्टरी फिल्म बनाने का अनुरोध किया। श्री भगत ने अजमेर पहुचने एव मन्त्रालय के सहयोग तथा फिल्म बनाने की स्वीकृत दी।

भारत राष्ट्र में हम जागें !

राष्ट्रे जागृयाम वयम् राष्ट्र में हम जागें।

राष्ट्र मे हमे जागना चाहिए। 'जागृयाम' मे विधान और आदेश, दोनो हैं। 'जागृयाम' अपने लिए आदेश और विधान, दोनो है। शास्त्र आदेश ही करते हैं, जैसे, 'सत्यम् वद' सत्य बोलो। वेद तो परम शास्त्र है। अत: 'जागृयाम' यह आदेश है। श्रुति का काम आदेश देना है, तथा स्मृतिया विधि का निर्देश करती हैं।

जागना एक क्रिया है। जागने का सम्बन्ध प्रकाश से, दिन से, थकान-समाप्ति से, रात्रि-समाप्ति से, निद्रा-समाप्ति से है। दूसरे को जगाना आसान है। स्वय को कौन जगाएगा? या तो थकान समाप्त होने पर, या आंख पर प्रकाश पडेगा तब जागना होगा। हम कब कैसे जागेंगे? मन्त्र कहता है, हम राष्ट्र में हैं तो हमे जागना चाहिए। यदि जागे हुए हैं तो राष्ट्र भी जागना चाहिए। जागे हुए नागरिको से ही राष्ट्र है। जागरूक समाज से ही राष्ट्र का निर्माण होता है।

राष्ट्र शब्द का अर्थ है—दीप्ति, चमक। 'राजा' शब्द भी इसी 'राष्ट्र' शब्द वाली 'राज्' से बना है। अत राजा वह हुआ जो प्रजा के बीच चमके। उसकी चमक का जहा तक प्रभाव है वह क्षेत्र हुआ उसका राज्य। राजा का कार्य है शासन, सुरक्षा और प्रजापालन। यदि यह प्रबन्ध वह ठीक से नहीं कर पाता है। तो वह सही मायने में राजा है ही नहीं। राजा किसी पर आश्रित नहीं होता, जैसे सूर्य राजा है,—अपने प्रकाश क्षेत्र का। अपने मण्डल का वह मण्डलेश्वर है।

तेज और प्रकाश का सीधा सम्बन्ध आंख से है। जो राष्ट्र की वर्तमान स्थिति को देखता है, राष्ट्र की समस्याओं के प्रति सचेत है वही सच्चा राजा और नागरिक कहलाने का अधिकारी होगा।

उदाहरणार्थ हमारे देश को प्रजातन्त्र का देश कहा जाता है। प्रजातन्त्र में प्रजा का हित न हो तो कैसे हुआ यह प्रजातन्त्र? प्रजातन्त्र के नाम पर हमारे सामने अयोग्य आदमी उम्मीदवार के रूप में खडे कर दिए जाते हैं जो किसी राजनीतिक दल के सदस्य होते हैं। हमे उनमें से एक को चुनना पडता है। तो यह हमारी पसन्द का प्रतिनिधि कैसे हुआ? सवाल यह है, हम क्या करें? क्या है इसका हल? एक जागरूक नागरिक होने के नाते हम क्या करें?

हम केवल एक काम कर सकते हैं—प्रबल जनमत तैयार कर सकते हैं। हम जागकर जगाने का काम कर सकते हैं। ताकि इस प्रकार की गलत चुनाव-प्रणाली को बदलने के लिए जनमत का दबाव पैदा किया जा सके।

रविवार, ११ सि म्बर, १९८३

अन्धामुगल—प्रतापनगर—प० हरिचन्द शास्त्री; अशोक विहार—मनोहर लाल ऋषि; —आर्यपुरा—प० रणजीत राणा; —आरकेपुरम सैक्टर ६—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; आनन्द विहार—प० अमीचन्द मतवाला, अमर कालौनी—आचार्य नरेन्द्र जी, कालका डी० डी० ए० फ्लेट—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; कृष्णनगर—पं० रमेश वेदाचार्य, गाधीनगर—आचार्य हरिदेव सि० भूषण, गीता कालौनी—श्री मुनिशंकर वानप्रस्थ; ग्रेटर कैलाश न० २—डा० रघुनन्दन सिंह, गुडमण्डी—प० [illegible]चन्द पाराशर; ग्रीन पार्क—प० तुलसीराम आर्य, भोगल—प० देवीचरण देवेश, [illegible]कपुरी सी० ३—स्वामी शिवानन्द, तिलकनगर—प० सोमदेव शर्मा, तिमारपुर—पं० देवेन्द्रकुमार शास्त्री; दरियागज—प्रकाशचन्द शास्त्री—न्यू मोतीनगर—डा० सुखदयाल भूटानी, निर्माण विहार—प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, पजाबी बाग—प० दिनेशचन्द पाराशर, पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प० कामेश्वर शास्त्री, राणा प्रताप बाग श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, रमेशनगर—पं० प्राणनाथजी, लद्दूघाटी—आचार्य राम चन्द्र शर्मा; लारेन्स रोड—प० बलवीर शास्त्री, लक्ष्मीबाई नगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य, महावीर नगर—ओम्प्रकाश गायक, मॉडल बस्ती—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, लाजपतनगर—प० रामरूप शर्मा, लोधी रोड—स्वामी यज्ञानन्द जी, विक्रम नगर—प० देव शर्मा शास्त्री, सदर बाजार—प० सत्यभूषण वेदालकार, सरायरोहेला—शीशराम भजनीक, सुदर्शन पार्क—मा० ओम्प्रकाश आर्य, सोहनगज—गणेशप्रसाद वानप्रस्थी, शादीपुर—विद्याव्रत शास्त्री, त्रि नगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, हौज खास—जयभगवानमण्डली, ।

५ से ११ सितम्बर वेद प्रचार सप्ताह कार्यक्रम—

१. आर्यसमाज आर्यपुरा—प० वेदव्यास भजनोपदेशक के साथ प० ज्योतिप्रसाद ढोलककलाकार का कार्यक्रम रहेगा। २. आर्यसमाज अनाजमण्डी शाहदरा मे—प० रामकिशोर वैद्य की कथा—साथ प० सत्यपाल मधुर के भजन हुआ करेंगे यज्ञ की पूर्णाहुति ११ सितम्बर को प्रात होगी। ३. श्री प० सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार का ६ सितम्बर से २१ सितम्बर तक आर्यसमाज संघपुर बोधा अहमदाबाद मे कार्यक्रम रहेगा।

—स्वरूपानन्द सरस्वती, वेदप्रचार विचार विभाग

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज नरेला, दिल्ली.. प्रधान—चौ० देशराज जी, उपप्रधान—चौ० प्रेमकृष्ण और श्री कन्हैयालाल, मन्त्री—श्री आनन्दकुमार, उपमन्त्री—मा० प्रकाशवीर, श्रीसूरजभान, कोषाध्यक्ष—लाला सूरजभान, पुस्ताकलयाध्यक्ष—प० देवेन्द्रनाथ शास्त्री, [illegible] निरीक्षक—चौ० लायकराम, प्रधान आर्यकुमार सभा—प्रो० लायकराम जी।

आर्यसमाज मन्दिर, लुधियाना रोड, फीरोजपुर छावनी—प्रधान—श्री रामचंद्र आर्य, उप प्रधान—श्री द्वारकानाथ वर्मा, श्री अमरनाथ नैयर, मन्त्री—श्री मनोजार्य उपमन्त्री—श्री सुरेन्द्र गुप्त, श्री जितेन्द्र ठाकुर, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मपाल तनेजा, निरीक्षक—श्री सुखदयाल, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री देवराज दत्ता।

आर्यसमाज मन्दिर, काकरिया रोड, रायपुरदरवाजा, अहमदाबाद-२२—प्रधान—श्री रतनप्रकाश गुप्ता, मन्त्री—हरिश्चन्द्र श० पचाल, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री जयन्ती भाई सहदेव।

आर्यसमाज सदरबाजार के पदाधिकारी—प्रधान ला० गोपीचन्द तारवाले, उपप्रधान—श्री भीमसिंह, चौ० जगमाल सिंह, मन्त्री—वैद्य इन्द्रदेव, उपमन्त्री—श्री सतीशकुमार सैनी, सहायक मन्त्री—श्री वीरेन्द्र सिंह, कोषाध्यक्ष—श्री महावीर सिंह यादव।

'विश्व को आर्य कैसे बनाएं लेख प्रतियोगिता'

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में आर्य युवक परिषद् (पजी) दिल्ली ने एक लेख प्रतियोगिता 'विश्व को आर्य कैसे बनाएँ' विषय पर आयोजित की है। बहुत से लेख प्राप्त हैं जिन्हें निरीक्षण करवाया जा रहा है। परिणाम प्राप्त होने पर परिपत्र छपवाकर लेखको को सूचित कर दिया जावेगा। प्रथम को ५००) द्वितीय को ३००) तथा तृतीय को २००) के पारितोषिक भी भेज दिए जाएंगे।

—देवव्रत धर्मेन्दु, आर्योपदेशक प्रधान

अनमोल शिक्षा

—ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

☀ मनुष्य रेत बालू) के मकान मे निशङ्क और मस्त बैठा है। इसे नष्ट होने मे कितनी देर लगेगी।

☀ बालू के मकान मे रहकर भी बरसो जीने की इच्छा करता है। तेरा यह बालू का मकान पलक मारते ही गिर जाएगा।

☀ जिस प्रकार अञ्जलि मे जल नही ठहरता है, उसी प्रकार जवानी भी किसी के पास नही रुकती।

☀ शरीर बिजली की चमक और बादल की छाया की तरह चचल और अस्थिर है, जिस दिन जन्म लिया, उसी दिन से मौत सिर पर मडराती फिर रही है।

☀ स्त्री, पुत्र, भाई, बहिन, माता-पिता, बन्धु आदि तब तक साथी हैं जब तक शरीर का नाश नही होता, फिर सबका साथ छूट जाता है।

☀ शरीर के लिए कोई कितनी चेष्टा करे, इसे आराम से रखे, नाश अवश्य होगा आज हो या सौ वर्षों बाद।

☀ चिरकाल तक जीवित रहने की कामना करना अज्ञानता है और उत्तम जीवन व्यतीत करके प्रमाद करना कितनी भूल करना है।

☀ जितनी समुद्र की लहरें हैं, उतनी ही मन की दौड है। इस शरीर का क्या भरोसा क्षण भर मे नष्ट हो जाता है।

☀ नाशवान वस्तु (सम्पदा) की खोज मे जीवन खपाना कोरी मूर्खता है।

☀ मनुष्य तेरी जिन्दगी ढाई पल की है, इस ढाई पल की जिन्दगी को बर्बाद न कर, इसे खत्म होते देर नही लगेगी।

☀ आज तुम्हारा शरीर स्वस्थ है आश्चर्य नही कि कल तुम बीमार होकर मरण शय्या पर पडे हो।

☀ दुनिया मे बहुत हैं और उम्र का यह हाल है कि पलक मारने का भरोसा नही।

उच्च रक्त चाप (हाई ब्लड प्रेशर) रोग से छुटकारे के उपाय

—डा० शिवाशंकर पाण्डेय

प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा रोगो का नाश नही किया जाता वरन् जीवन को प्राकृतिक पद्धति पर लाने का अभ्यासी भी बनाया जाता है उच्च रक्त चाप के रोगियो के लिए भी यही उचित होगा कि वे अपनी दिनचर्या ऐसी बना लें ताकि उन्हें इस व्याधि से सहज मे ही छुटकारा मिल सके। दिनचर्या की प्रमुख बातें इस प्रकार हैं—

१. सूर्योदय से कम से कम १-१॥ घटा पहले उठना। चार बजे सवेरे उठना सर्वोत्तम है। शौच, भ्रमण एव स्नान के बाद कम से कम आधा घटा ईश्वर का ध्यान।

२. मौन रहने अथवा कम बोलने का अभ्यास।

३. नीबू के रस से सयुक्त जल का सेवन।

४. भोजन सादा हरी सब्जियो से सयुक्त थोडा दही भी लिया जा सकता है। दलिया चीनी रहित दूध के साथ लेना हितकर है।

५. जहां तक हो नाश्ता करनेकी आदत से बचें। भोजन खूब भूख लगने पर करें किन्तु पेट को थोड़ा खाली रखें।

६. ३-४ बजे पपीता, ककडी, खीरा, फ्रूट, खजूर, टमाटर, खजूर, जामुन आवला आदि ऋतु फल ले सकें तो अवश्य लें।

७ रात्रि का भोजन ८-९ बजे अवश्य लें। शाम को भी थोडी भूख रखकर हल्का भोजन करें। भोजन के बाद थोडी देर टहलने जाना हितकर होता है।

८. सोने से आधा घटा पूर्व एक पाव दूध लेना हितकर होगा।

९. रक्तचाप की परीक्षा भी समय पर कराते रहना चाहिए। इससे रक्तचाप के बारे मे स्थिति का पता चलता रहता है तथा सयमित जीवन के परिणाम सामने आने लगते हैं जिससे रोगी का उत्साह बढता है।

१०. प्रसन्नचित्त एव चिन्ता मुक्त रहने से भी उच्च रक्त चाप को नियन्त्रित रखने में मदद मिलती है।

११ नमक तथा चीनी का प्रयोग कम से कम करें मिठास के लिए शहद अथवा गुड की चासनी का उपयोग किया जा सकता है।

१२. सामिष भोजन का सर्वथा परित्याग करें।

उच्च रक्त चाप के रोगी यदि इनमे से दो तिहाई बातो का भी पालन करेंगे तो उन्हे आशातीत लाभ होगा और वे इस व्याधि से अपने आप को मुक्त हुआ अनुभव करने लगेंगे।

सरस्वती पीठ, यमुनाबाजार,
दिल्ली-६

आर्य स्त्री समाज, अशोकविहार—सरक्षिका—श्रीमती प्रेमशील जी महेन्द्र, प्रधाना—श्रीमती ईश्वर राणी जी, मन्त्रिणी—श्रीमती पद्मावती जी तलवाड, कोषाध्यक्ष—राजमल्होत्रा।

चन्द्र आर्य विद्यामन्दिर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज की गौरवपूर्ण संस्था चन्द्र आर्य विद्यामन्दिर एव छात्रावास का वार्षिकोत्सव जो रविवार २८ अगस्त को शुरू हुआ था प्रथम सितम्बर को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रथम सितम्बर को प्रात. यज्ञोपरान्त दिल्ली के राज्यपाल श्री जगमोहन द्वारा नवनिर्मित कक्ष का उद्घाटन किया गया। राज्यपाल जी के स्वागतार्थ चौधरी देशराज प्रधान चन्द्र-आर्य विद्या मन्दिर के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लालाराम गोपाल शाल वाले, दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा चन्द्र विद्या मन्दिर के मन्त्री श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, मैनेजर श्री सुशील कुमार चौधरी, उपमन्त्री श्री वीरेश चौधरी एडवोकेट एव, दिल्ली सभा के मन्त्री श्री प्राणनाथ एव केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री सूर्यदेव उपस्थित थे। राज्यपाल महोदय ने संस्था का निरीक्षण किया एव हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की और विकासार्थ अतिरिक्त भूमि एव आर्थिक सहायता देने की भी घोषणा की। तत्पश्चात् सास्कृतिक कार्यक्रम एवं श्रीमती चन्द्रवती जी के प्रति श्रद्धान्जलि सभा हुई जिसकी अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने की। सभी वक्ताओ ने मुक्त कठ से सस्था की सुव्यवस्था प्रबन्ध, सफाई, शिक्षा इत्यादि की भूरि-भूरि प्रशंसा की। वास्तव मे यह सस्था आर्य जगत का गौरव है। इसके सुन्दर प्रबन्ध के लिए चौधरी देशराज जी का तप एव त्याग प्रशसनीय है जिसके लिए वह एव उनके सहयोगी सर्व श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, सुशील प्रकाश चौधरी, रामकुमार अग्रवाल इन्द्र नारायण, वव्रत धर्मेन्दु स्कूल की प्रिन्सिपल, छात्रावास की इन्चार्ज श्रीमती राजकुमारी एव अन्य अध्यापिकाए बधाई के पात्र हैं।

आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सफदरजग एन्क्लेव का वार्षिकोत्सव आर्यसमाज मन्दिर मे २७ अगस्त से बुधवार, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व तक बड़े उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर शनिवार से बुधवार तक प्रतिदिन प्रात. ७ से ९ बजे तक महात्मा दयानन्द जी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण किया गया। वेद पाठ डा० तीर्थराम शास्त्री ने किया। इन दिनो रात्रि को आचार्य पुरुषोत्तमजी द्वारा वेदकथा प्रस्तुत की गई।

रविवार को सायं ४॥ से ७ बजे तक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। इस शोभायात्रा मे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के आर्य वीर, डी० ए० वी० माडल स्कूल आर०के० पुरम ९ के बच्चे, गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी, कन्या महाविद्यालय न्यू राजेन्द्र नगर की छात्राए एवं दक्षिण दिल्ली की आर्यसमाजों एव सनातन धर्म सभा के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

यज्ञ एवं वेदकथा के साथ श्री सत्यपाल मधुर के भजन हुए। बुधवार के दिन प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में योगेश्वर कृष्ण और आर्यसमाज विषय पर महात्मा दयानन्द, आचार्य पुरुषोत्तम, डा०तीर्थराम शास्त्री आदि के उपदेश का कार्यक्रम रखा गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय में वेद संगोष्ठी

डा० प्रह्लाद कुमार की ३८ वीं जयन्ती पर १०-११ सितम्बर को दिल्ली विश्वविद्यालय के कला सकाय स्थित कक्ष २२ मे वेद सगोष्ठी आयोजित की गई है। मुख्य अतिथि भू० पू० ससद सदस्य श्री विजय कुमार मल्होत्रा हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा० सत्यकाम वर्मा करेंगे। डा० फतेह सिह शान्ति का मनोविज्ञान विषय पर प्रवचन देंगे। महाशय धर्मपाल जी छात्रवृत्ति वितरण करेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा आदिवा प्रेस १६७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगरदिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २० रुपए वर्ष : ७ अंक ४७ रविवार १८ सितम्बर, १९८३ २७ भाद्रपद वि० २०४० दयानन्दाब्द—१५९

महर्षि निर्वाण शताब्दी निमित्त धन सभा को भेजे।

भारी संख्या में अजमेर पहुंचने के लिए सीटें आरक्षित करें।

रविवार ३० अक्तूबर, ८३ को दिल्ली में महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाइए

भारी संख्या में जनता पहुंचे : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य जनता से अनुरोध

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अन्तरंग सभा बैठक शनिवार दिनांक १०-९-८३ को हुई, जिसमे सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव द्वारा दिल्ली की आर्यसमाजो एवं आर्य जनता से अनुरोध किया गया कि आर्य जनता भारी सख्या में महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर में पहुचकर महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धा एवं कर्तव्यपरायणता एवं अपने विश्वव्यापी सगठन का परिचय दे। अजमेर जाने के लिए सभा द्वारा चलाई जाने वाली विशेष बसो में अपनी सीट अभी से आरक्षित करवा लें, ताकि सभा दिल्ली से जाने वाले आर्य बहन-भाइयों के आवास एव भोजन-व्यवस्था के लिए शताब्दी समिति अजमेर को पर्याप्त समय पूर्व सूचित किया जा सके।

सभा द्वारा आर्यसमाजो एवं आर्य जनता से यह भी अनुरोध किया गया कि शताब्दी समारोह के निमित्त अधिक से अधिक धन सग्रह करके शीघ्र सभा-कार्यालय मे जमा करवाने का कष्ट करें, ताकि समय पर धन भेजा जा सके।

सभा ने यह भी सर्वसम्मति से निश्चय किया कि रविवार ३०, अक्तूबर ८३ को दिल्ली मे महर्षि निर्वाण शताब्दी उत्सव भी प्रात काल ८ से ११-३० बजे तक मनाया जाए जिसमे आर्य विद्वानो के अतिरिक्त राष्ट्रीय नेता भी महान् युगनिर्माता महर्षि के प्रति श्रद्धाजलि देने के लिए आमन्त्रित किए जाए। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजें उस दिन अपना साप्ताहिक सत्संग स्थगित करके विशेष बसो द्वारा इस उत्सव स्थान पर भारी सख्या मे पहुंचकर ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धा एवं प्रेम का परिचय दें।

आर्यसमाजें आर्यवीर दलों का संगठन अनिवार्य रूप से चलाएं

सभा प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो से अनुरोध किया है कि वे अपनी आर्यसमाज मे आर्यवीर दल एवं कुमार सभा का संगठन अनिवार्य रूप से चलाएं। ७ वर्ष से १७ वर्ष के बालक कुमार सभा के कार्यक्रमों में भाग लें और अपने क्षेत्र के नवयुवकों को आकर्षित करने के लिए उनकी रुचि के स्वास्थ्य वर्धक कार्यक्रम अपनाएं। सभा इसमें आर्यसमाजों की पूरी सहायता करेगी। दिल्ली प्रान्तीय आर्यवीर दल के लिए प्रत्येक आर्यसमाज पाच आर्यवीर तैयार करे। आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रीतम दास रसवन्त दल के पुनरुत्थान के लिए दिन-रात उत्साहपूर्वक कार्य कर रहे हैं और निकट भविष्य मे ही डा० प्रशान्त जी के सहयोग से दिल्ली के आर्यवीर दल को सशक्त बनाने के लिए कृतसकल्प हैं।

आर्यसमाज हनुमान रोड का ६१ वां वार्षिकोत्सव

पूर्व भी सूचित किया जा चुका है कि, आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ६१ वां वार्षिक उत्सव [illegible] अक्तूबर ८३ को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। [illegible] आर्यसमाज के कर्मठ प्रधान श्री [illegible]भूति जी केला एवं मन्त्री श्री [illegible] [illegible] प्रयत्न कर रहे हैं।

ईश्वरभक्ति के भजनों के कैसट

आर्यजनता को पूर्व भी सूचित किया था कि आकाशवाणी के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा ईश्वर भक्ति के भजनो के कैसट निर्माण कराए गए हैं। एक कैसट का मूल्य ३० रुपए है। अत आर्य जनता को ये कैसट भारी सख्या मे खरीदकर कैसट निर्माण कराने वाले कलाकारो को उत्साहित करना चाहिए। ताकि वह और भजनो के कैसट भी बनवायें। अपने आर्डर सभा कार्यालय मे भेजें ताकि एक साथ ये कैसट मगवाये जा सकें और ऋषि निर्वाण शताब्दी उत्सव पर कैसट निर्माताओ को भी आमन्त्रित किया जा सके।

श्री राजाराम आर्य को शोक

आर्यजनता को दु ख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज अशोक नगर के कर्मठ प्रधान श्री राजाराम आर्य की पुत्रवधू का देहावसान हो गया है। हम 'आर्य सन्देश' परिवार की ओर से आर्य जी के परिवार के साथ सवेदना प्रगट करते हुए प्रभु से दिवंगतात्मा की सद्गति एव पारिवारिक जनों को इस क्षति को सहन करने के लिए धैर्य्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

श्रीलंका का रक्तरंजित घटनाचक्र भारत की सुरक्षा के लिए खतरा

नई दिल्ली। श्रीलका की समस्या एक निकट पडोसी देश की स्थानीय समस्या मात्र नही है। वहा पर जो कुछ हो रहा है, वह भारत की सुरक्षा और प्रगति के लिए गम्भीर खतरा है। इस प्रकार के पर्याप्त प्रमाण हैं कि श्रीलका मे सशस्त्र सेनाओ ने भारत विरोधी दगो मे सक्रिय भूमिका प्रस्तुत की है। भारतीय मूल के हजारो तमिल प्रजाजन मार डाले गए, उनके घर जला दिए गए, उनकी सम्पत्ति लूट ली गई या नष्ट कर दी गई। हजारो को देश छोडने के लिए विवश कर दिया गया। यह आग और लूट का लज्जाजनक काण्ड इतने व्यवस्थित और सुनियोजित ढग से किया गया कि यह सन्देह ही नहीं रहता कि सारे काण्ड मे सरकार का योगदान रहा है। सत्तारूढ लोगो की मदद के बिना इतने विशाल परिमाण मे जान-माल की क्षति सम्भव ही नही थी। इसी के साथ इन दगो से पूर्व सारे देश के पत्रो मे भारत विरोधी प्रचार व्यवस्थित ढग से किया गया। जेल की चारदीवारी मे बहुत से सक्रिय तमिल कार्यकर्ता मार डाले गए। भारतीय बैंको और भारतीय कूटनीतिक कर्मचारियो को भी बक्शा नही गया। स्पष्ट है कि श्रीलका से भारतीय मूल के प्रजाजनो को हटाने के षड्यन्त्र को व्यवस्थित रूप से कार्यान्वित किया गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि पश्चिमी देश भारत की सस्कृति, धर्म को खत्म कर भारतीय राष्ट्र को घेरने, परेशान करने और कमजोर करने के लिए व्यवस्थित प्रयत्न कर रहे हैं। महाशक्तिया हमारे शान्तिपूर्ण क्षेत्र मे अपने विघातक युद्ध-यन्त्र को लाने के लिए तुले दीखते हैं। लका के सकट से समय रहते भारत को सावधान हो जाना चाहिए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक— प्रद्युम्नलाल तलवाड़

विद्या से ही सुख

'न विद्यया विना सौख्यम्'

सरस्वती देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वती सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् । अथर्व १८।४।४५

अन्वय—देवयन्त सरस्वती हवन्ते तायमाने अध्वरे सरस्वती सुकृत सरस्वती हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्य दात् ।

संस्कृत व्याख्या —देवयन्त आत्मान देव सम्पादयन्त सुधियो जना सरस्वती अर्थात् वाणीमाहोस्वित् गामाहोस्वित् वेद-विद्या 'सरस्वती इति वाङ्नाम" हवन्ते स्वीकुर्वन्ति । तायमाने वर्धमाने अध्वरे वेदारम्भ संस्कारादि यज्ञे वाणी स्वीकुर्वन्ति सुकमण सरस्वती धारयन्ति सरस्वती वाणी या वेद विद्या दत्तमनसे जीवाय वरेण्य वस्तु ददाति 'न विद्यया विना सौख्य मिति प्रथितञ्च' ।

भाषार्थ —(देवयन्त) स्वय को विद्यायुक्त बनाने के इच्छुकजन (सरस्वती हवन्ते) स्वाध्यायरूप वाणी को स्वीकार करते हैं । (तायमानेऽध्वरे सरस्वती) अध्ययन रूप यज्ञ मे या यज्ञादि संस्कार मे वेदवाणी को स्वीकार करते हैं । (सुकृत सरस्वती हवन्ते) सुकर्मी भाग्यशाली मनुष्य ही विद्या को स्वीकार करते हैं। (सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्) विद्या प्राप्त करने व देने वाले पुरुष के लिए विद्या उत्तम सुख प्रदान करती है ।

सुभासार —मनुष्य यदि ससार के कष्टो से उपराम होकर सुख प्राप्त करना चाहता है, तो उत्तम कोटि का विद्वान् बने, विद्या से अत्यन्त प्रेम करता हुआ निज अध्ययन अर्थात् स्वात्माध्ययन और अध्यापन काल में रहकर विद्याप्रचार करे। विद्या प्राप्ति और विद्वान् राग सौभाग्य एव पुण्यकर्मों से होता है। और जो मनुष्य विद्योपलब्धि एव प्रचार के लिए अपना तन-मन-धन लगाता है, विद्या उसी के लिए अद्भुत सुख प्रदान करती है शास्त्रकारो ने भी कहा है कि—

"विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणा गुरु"

—रूपकिशोर शास्त्री

को वेदानुद्धरिष्यति ?

लेखक—श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि यजुर्वेद की क्रमपाठ सहिता जो अभी तक अलभ्य है उसके प्रकाशनार्थ वेदमूर्ति श्री प० युधिष्ठिर जी मीमासक ने पाच हजार रुपए देने की इच्छाप्रकट की है। एतदर्थ श्री मीमासक जी का हार्दिक धन्यवाद। यह ग्रथ २१ वर्ष पूर्व मैंने गुरु कृपा से लेखबद्ध किया था तथा श्री मीमासक जी ने कुछ वर्ष पूर्व इसे मुझे लाने के लिए भी कहा था। इसके प्रकाशन मे अनुमानत ५० हजार रुपए व्यय होगे।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने वेदभाष्य पद पाठ के आधार पर किया तथा सस्कृत विधि मे लिखा कि वेदो को पद, क्रमादि सहित पढें। प्रचीनकाल से यही परिपाटी वेदाध्ययन की है जैसा कि—"वेदं साङ्गपदक्रमोपनिषदैगायन्ति य सामगा" द्वारा प्रकट है।

मन्त्रार्थज्ञान के लिए पद सहिताओ की अति आवश्यकता होती है। क्रम पाठ सहिता से वेद मन्त्रो के पद और पद पाठ के पदो के उदात्तनुदात्तादि स्वरो की सधि और वर्णों की सधियो का ज्ञान होता है जो वेदार्थ ज्ञान मे अत्यन्त सहायक होता है तथा अष्ट विकृति पाठो के स्वराकन की योग्यता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह उदात्तादि स्वरो के और वर्णो के उच्चारण मे अत्यन्त कुशलता भी प्रदान करती है।

क्रम पाठ के लिए लिखा है—क्रम स्मृति प्रयोजन —उदात्तादि स्वरो की स्मृति तो विशेष रूप से क्रमपाद से होती है मन्त्रानुवृत्ति का भी लाभ होने से अर्थ का भी विशेष लाभ होता है। अत यजु क्रम पाठ सहिता के प्रकाशन की आवश्यकता है यजु पाठ पुस्तक तो श्री मीमासकजी ने अत्यन्त पुरुषार्थ से प्रकाशित कर दी है उससे वैदिक समाज बहुत उपकृत हुआ। इसी प्रकार क्रमपाठ कीइस पुस्तक से देश-विदेश के वेद के साहित्य मे वेद पाठ की गगा का महत्वपूर्ण अवतरण होगा।

याज्ञवल्क्य शिक्षा मे लिखा है कि—ऋक्सहिता त्रिरभ्यस्य यजुषा व समाहित अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेदादि का तीन प्रकार सहिता पाठ, पद पाठ और क्रम पाठ—इन तीन प्रकार से अभ्यास करने पर जीवन पवित्र होता है। याज्ञवल्क्य ने सहिता को यमुना, पद पाठ को सरस्वती और क्रम पाठ को गगा की उपमा दी है इसमे स्नान करना अर्थात् नित्य अभ्यास से पुण्योदय बताया है।

आदरणीय युधिष्ठिर जी मीमासक ने अपने पत्र दि० २५-७-८३ में लिखा कि "इस कार्य पर इस समय कम से कम ४०-४५ हजार रुपया व्यय आएगा। इतना मेरा और न ट्रस्ट का ही सामर्थ्य है। हा, आप या कोई व्यक्ति इस महनीय कार्य करे तो मैं ५००० रुपए तक सहायता कर सकता हू—पर आजकल इसकी महत्ता को दो-तीन व्यक्तियो के सिवाय कौन समझता है।…'

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ब्रह्म-परमेश्वर के सान्निध्य में

—अमरनाथ खन्ना

परमेश्वर मेघ के समान जगत् की रक्षा करने वाला हमारे हृदयो मे विराजमान होकर हमारा प्राणाधार है, ऐसा समझकर हम पुरुषार्थ के साथ सुख प्राप्त करें।

वह परब्रह्म कृपा करके हमसे सब पदार्थों की रक्षा कराता है, इस कारण अभिमान छोडकर हम पुरुषार्थ करते रहे।

ससार के कर्ता-धर्ता परमेश्वर के उपकारो को देखकर मनुष्य प्रयत्नपूर्वक विद्यादि सुखसाधनो की प्राप्ति से मोक्षानद भोगें।

जो पुरुष पूर्ण भक्ति से परमात्मा को अपने रोम-रोम मे व्यापक जानकर पुरुषार्थ करता है, परमात्मा उसके सब विघ्नो का नाश करदेता है, जैसे चिकित्सक बडे-बडे रोगो को, और नीतिकुशल मध्यस्थ राजा आदि वादी और प्रतिवादी के झगडो को मिटा देता है।

जो मनुष्य शुद्ध अन्तकरण से परमात्मा को आत्मा मे स्थिर करता है, उसको आध्यात्मिक शान्ति होने से आधिभौतिक और आधिदैविक शान्ति भी मिलती है।

मनुष्य परमेश्वर के सहाय से प्रयत्न करें कि वे कभी मिथ्या न बोलें।

मिथ्या न बोलें, स्वप्न मे भी बुरा विचार न करें, और दुष्कर्मों से बचकर शुद्ध आचरण रखें तथा नेत्र आदि इन्द्रियो से कुचेष्टा न करें।

मनुष्य परमेश्वर की महिमा देख कर सदा सत्य ही बोलें और पुरुषार्थ पूर्वक सबसे उपकार लेवे।

ईश्वरीय नियम तोडने वाले मनुष्यो को परमेश्वर अपनी न्याय व्यवस्था से रोग आदि कष्ट देता है, और अपने आज्ञाकारियो को वह अत्यन्त सुख पहुचाता है।

जो पुण्यात्मा पुरुष विद्याबल से सब प्रकार के सुखो को पहुंचाते, और तीनो द्यावापृथिवी और अन्तरिक्ष लोको और तीनो भूत, भविष्यत् और वर्तमान कालो के वृत्तान्त जानते हैं, वे परब्रह्म की छत्र-छाया मे रहकर सब विघ्नों को हटाकर आनन्द भोगते हैं।

मनुष्य परमेश्वर के उत्तम-उत्तम गुणो का चिन्तन करके पुरुषार्थ के साथ दुष्कर्मों से बचकर सदा आनन्द भोगें।

—द्वारा आरती मिनरल्स, १५/७ मथुरा रोड, फरीदाबाद (हरियाणा)

आदर्श चरित्र

लका का राजा रावण भिक्षुक के वेष मे आकर सीता जी का हरण कर ले गया। श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण के साथ सीता जी की खोज मे जटायु के पास गये, वहां से रावण द्वारा सीता जी के हरण का समाचार पाकर पम्पासर पहुचे। वहा हनुमान के माध्यम से सुग्रीव से मित्रता हुई। सुग्रीव ने समाचार दिया कि एक दिन क्रूरकर्मा राक्षस एक नारी का हरण कर ले जा रहा था। उस समय वह 'हा राम, हा लक्ष्मण' पुकार रही थी। उसने एक पर्वत शिखर पर पाच वानरो को बैठा देखकर आकाश से अपनी चादर और अपने आभूषण गिरा दिए थे। सुग्रीव ने सीताजी द्वारा गिराए हुए वस्त्र और आभूषण दिखाए। उस वस्त्र और आभूषण को देखकर श्रीराम की आंखों में आसू भर गए। उन्होने अनुज लक्ष्मण से कहा—"हरण की जाती हुई सीता अपना उत्तरीय और आभूषण भूमि पर फेंक गई थी, तुम तनिक उन्हे पहचानो तो सही।" उन्हें देखकर लक्ष्मण ने अपने अग्रज श्रीराम को उत्तर दिया था।

नाह जानामि केयूरे नाह जानामि कुण्डले,
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ।।

भगवन् न मैं ककण (बाजूबन्द) को पहचानता हूं और न मैं कानों के कुण्डलो को भी जानता हू, परन्तु मैं पैरों मे पहने जाने वाले इन नूपुरों (बिछुओं) को अवश्य ही पहचानता हू, ये निश्चय से सीताजी के ही हैं, क्योकि मैं प्रतिदिन उनके चरणो में प्रणाम करते समय इन नूपुरों (बिछुओ) को ही देखा करता था और उन्हें भली प्रकार पहचानता हूं।"

—महेन्द्र

हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलें !

अ तो मा सद् गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृत गमयेति ।। शतपथ ब्राह्मण १४ ३ १.३०

हे परमेश्वर, आप हमे असत् मार्ग से हटाकर सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करें, हमे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलें और मृत्यु से हटाकर मोक्ष के आनन्दरूपी अमृत की ओर प्रवृत्त करें।

कुछ ऐसा कीजिए, जिससे स्थायी गौरव हो !

प्रसन्नता का विषय है कि आगामी दीपावली के अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी सम्पूर्ण आर्य सस्थाओ, आर्यजनो के सहयोग से अजमेर मे मनाई जाएगी। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ किया जाएगा। शताब्दी के अवसर पर आर्य, युवक, आर्य महिला, वेद, शिक्षा, समाज-सुधार, आदि अनेक सम्मेलनो के साथ चार वेद गोष्ठिया, दर्शन एव इतिहास गोष्ठियो के अतिरिक्त देश-विदेशो से आए आर्यनेताओ एव आर्यजनो की परिवार गोष्ठी भी आयोजित की गई है। सस्कृत सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन एव श्रद्धाजलि सम्मेलनो के माध्यमसे अतीत के एव परीक्षित आर्यजनो का सत्कार कार्यक्रम सम्पन्न होगा एव भविष्य के लिए दिशा निर्देश भी मिल सकेगा। इन सम्मेलनो और गोष्ठियो की बडी महत्ता है। विशाल शोभायात्रा एव लाखो आर्यजनो के शताब्दी कार्यक्रम मे एकत्र होकर महर्षि के प्रति अपनी आस्था एव विश्वास प्रकट करने से भारत के राष्ट्रीय जनजीवन मे एक नई चेतना एव जागरण की ज्योति जगमगा सकेगी, इससे राष्ट्र के सास्कृतिक एव नैतिक अभ्युत्थान के लिए एक नया दिशानिर्देश सम्भव हो सकेगा। ये कार्य सम्भव हो और पूर्ण सफल हो, इनके लिए दिल्ली प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा एव दूसरी निर्वाचित सभाओ के माध्यम से शताब्दी कोष मे प्रत्येक आर्यजन एव आर्य सस्थाओ को योग देना होगा।

इसी के साथ आगामी निर्वाण-शताब्दी पर कुछ ऐसा कार्य करना चाहिए जिससे आर्यसमाज का स्थायी गौरव हो और महर्षि के चरणचिह्नो पर कुछ भविष्य का कार्यक्रम निर्धारित किया जा सके। हमे स्मरण करना होगा कि महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सस्कार विधि आदि अनेक ग्रन्थो के माध्यम से मानवजाति को वैदिक सन्देश दिया था। अधिक अच्छा होता कि महर्षि की शताब्दी के अवसर पर विश्व एव देश की सभी प्रादेशिक भाषाओ में सम्पूर्ण ऋषि वाङ्मय के लोकप्रिय सक्षिप्त सस्करण प्रकाशित किए जाते। यदि शताब्दी के अवसर पर यह कार्य व्यवस्थित रूप से किया जा सकता तो विश्व भर के भूमय मे वेदो और महर्षि का अमर सन्देश स्थायित्व ग्रहण कर लेता और इस प्रकार के प्रकाशन से शताब्दी सदा के लिए अमर हो जाती। खेद है कि इस दिशा मे न तो उचित चिन्तन हुआ है और न कोई व्यवस्थित कार्यक्रम बन पाया है। इसी के साथ एक अन्य अछूती दिशा मे भी कार्य करने की सम्भावना है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थो मे अपने दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विचार बडी तेजस्विता और प्रामाणिकता के साथ दिए हैं, शताब्दी के अवसर पर उनके ये विचार पृथक्-पृथक् शोध ग्रन्थो के रूप मे व्यवस्थित कर प्रकाशित किए जाते तो महर्षि वाङ्मय को विश्व के अमर साहित्य की दृष्टि से सुरक्षित किया जा सकता था।

कुछ विद्वानो ने अपने शोधग्रन्थो के आधार पर महर्षि के दार्शनिक विचार सग्रहीत एव प्रकाशित किए हैं, महर्षि के ग्रन्थो मे उनके आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक विचार भी पृथक्-पृथक् सग्रहीत एव प्रकाशित किए जाने चाहिए। आर्यसमाज के दर्जनो परिश्रमी विद्वान् शोधकार्यों मे सलग्न आर्य युवक एव युवतिया हैं। यदि वे अपने अगले कुछ वर्षों के अमूल्य क्षण महर्षि के साहित्य को आधुनिक विधाओ की दृष्टि से व्यवस्थित एव सग्रहीत करने के लिए अर्पित कर दें तो महर्षि और आर्यसमाज के स्थायी गौरव का कार्य पूर्ण हो सकता है। महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर अजमेर पहुचकर वहा की शोभा-यात्रा, विविध सम्मेलनो एवं गोष्ठियो मे योग देना प्रत्येक आर्य सस्था एव आर्यजन का पुनीत दायित्व है। इस शताब्दी को पूर्ण करने मे आर्थिक योग देने के लिए प्रत्येक आर्य संस्था एव आर्यजन को अपनी श्रद्धाभरी आहुति देनी चाहिए। इसी के साथ जो आर्य युवक एव युवतियां शोधकार्य से परिचित हैं, यदि वे महर्षि के विस्तृत साहित्य से उनके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक चिन्तन पर अपने व्यवस्थित शोधग्रन्थ तैयार कर महर्षि वाङ्मय को आधुनिक स्वरूप देने का सकल्प कर सकें तो वह महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

'महर्षि दयानन्द एक महान् अर्थशास्त्री' पर शोध-लेख

आजकल सभी विद्वान् ऋषि दयानन्द को वेदो—सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, महान् समाजसुधारक, देशोद्धारक, प्राच्य राजनीतिक मूल्यो के सस्थापक, स्त्रीजाति के उद्धारक, दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री, ब्रह्मचारी एव योगी स्वीकार करते हैं, लेकिन ऋषि दयानन्द एक महान् अर्थ शास्त्री भी थे। अर्थशास्त्र के अवमूल्यो व सिद्धान्तो के आधार पर उन्होने गरीबों, शोषितो और दलितो के उद्धार का भगीरथ प्रयत्न किया था। उनके इस उल्लेखनीय कार्य का उचित मूल्याकन करने के लिए 'महर्षि दयानन्द—एक महान् अर्थशास्त्री'—'महर्षि दयानन्द—ए ग्रेट इकोनोमिस्ट' शीर्षक विषय पर विद्वानो के शोध लेख आमन्त्रित किए जा रहे है। उन सभी शोध-लेखो का सकलन करके एक सन्दर्भ ग्रन्थ तैयार करने का निश्चय किया गया है। कृपया उक्त विषय पर अपना शोध लेख हिन्दी या अग्रेजी मे लिखकर निम्न पते पर २५ अक्तूबर १९८३ तक भेजकर महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के प्रति न्याय देने व दिलाने का कष्ट करेंगे। जो भी उत्तम लेख होगे, उन लेखो पर सम्माननीय पुरस्कार दिए जाएगे।

—रूपकिशोर शास्त्री, आर्यसमाज, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

कब होगा पुण्य-प्रभात ?

राग-द्वेष की भीषण आधी, कब प्रशमित हो, होगी शान्त।
काम-क्रोध के विकट बवण्डर, कब छोडेंगे करना भ्रान्त।
कब प्रमाद-आलस्य विदा ले मुझे करेंगे मुक्त-प्राय।
महा-मोह की स्वप्निल नगरी मे कब नीद खुलेगी हाय।
घोर अविद्या-निशा ढलेगी, कब डोलेगी मलयज-वात।
तुम मुस्कान बिखेर मिलोगे—कब होगा वह पुण्य-प्रभात ?

—विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय'

स्वर्ग और नरक मानव के अपने कर्मों से

उज्जैन। मध्यभारत आर्य प्रतिनिधि सभा के द्विदिवसीय अधिवेशन के अवसर पर भाषण देते हुए सभा के प्रधान प० राजगुरु शर्मा ने कहा—"असल मे स्वर्ग-नरक का वास्तविक रूप इसी लोक पर ही सबको भोगना पडता है। सत्कर्मों के करने से उसे पारिवारिक सुख-शान्ति के साथ उन्नति के स्वर्गमय जीवन के अवसर देखने को मिलते हैं, इसके विपरीत अशान्ति और कलह के रूप मे नरकमय जीवन इसी लोक मे प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। महाभारतकालीन युधिष्ठिर ने व्यक्तिगत स्वर्गप्राप्ति के स्थान पर नरक मे पडे अपने त्रस्त-दुःखी बन्धु-बान्धवो की सेवा अपना कर्त्तव्य समझा था।"

श्री कैलाशनाथ सिंह पुनः अध्यक्ष बने

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नए पदाधिकारी

लखनऊ। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ६७ वा वार्षिक अधिवेशन ४ सितम्बर, १९८३ को लखनऊ मे सम्पन्न हुआ। उत्तर प्रदेश के भू० पू० शिक्षा मन्त्री श्री कैलाशनाथ सिंह पुन अध्यक्ष निर्वाचित हुए। शेष पदाधिकारियो की सूची इस प्रकार है—उपाध्यक्ष—श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर, श्री देवेन्द्र आर्य, श्री कपूरचन्द्र आजाद। मन्त्री—श्री इन्द्रराज, उपमन्त्री – श्री जयनारायण अरुण, श्री मनमोहन तिवारी, श्री क्षेमसिंह आर्य, श्री वीरेन्द्र रत्नम्, कोषाध्यक्ष—श्री विद्यासागर, पुस्तकाध्यक्ष— श्री विनयकुमार।

आर्यसमाजो के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज पजाबी बाग एकस्टेन्शन, नई दिल्ली-२६ के पदाधिकारी– प्रधान—श्री चितरजनदास नय्यर, उपप्रधान— श्री मदनमोहन सलूजा, श्री ओ३म् प्रकाश चड्ढा, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, मन्त्री—श्री सुभाषचन्द्र मित्तल, उपमन्त्री— श्री मगलसेन खन्ना, श्री श्यामसुन्दर सरदाना, श्री सुमेश महाजन, कोषाध्यक्ष—श्री शादीलाल, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री एस० के० सहगल।

भोजन के अन्त में मठे का सेवन करें

भोजनान्ते पिबेत्तक्र, वासरान्ते पिबेत्पय।
निशान्ते च पिबेद्वारि, त्रिभिरोगो न जायते।।

भोजन के अन्त मे मठे का सेवन करें, दिन के अन्त मे दूध का सेवन करें और रात्रि के अन्त में जल का सेवन करें। इन तीनो के सेवन से रोग नही होते।

हिन्दू राष्ट्रवाद तथा आर्यसमाज

—सियाराम निर्भय

मुझे दुख होता है यह देखकर कि आजादी के ३५ वर्ष मे हिन्दू जितना हीन भावना का द्योतक हुआ है, उतना मुगलकाल तथा अग्रेज के शासनकाल मे भी नही था, जामा मसजिद के इमाम शाह अब्दुल्ला बोखारी, जनता पार्टी के ससद सदस्य भारत के दूसरे जिन्ना श्री शाहुबुद्दीन, भापजा के दूसरे अकबर मौलाना सिकन्दर बख्त, मुसलमानो के हृदय प्रेमी श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा, श्री राजनारायण तथा श्री जगजीवन राम—जैसे लोग अगर हिन्दूवाद और हिन्दूराष्ट्र के नाम से भडकने हैं तो मुझे उतना आश्चर्य नहीं होता, पर जब किसी आर्यसमाज के प्रचारक को मैं राष्ट्रीय सकट की घडी मे हिन्दू राष्ट्रवाद के नाम से बिदकते देखता हूं तो घोर क्षोभ होता है।

पिछले दिनो मुझे कुछ विद्वानो के हिन्दूवाद तथा हिन्दूराष्ट्र के सम्बन्ध मे लेख पढने को मिले। लेख पढने के बाद मुझे ऐसा लगा मानो हिन्दू राष्ट्र के माने मजहबी राज्य समझा जाता है। यह धारणा तथा मान्यता गलत है। हिन्दू कोई धर्म अथवा सम्प्रदाय नही है। यह एक राष्ट्र के विस्तृत समूह का नाम है, जिसमे सभी पन्थ, मत और सम्प्रदाय के मानने वाले लोग स्वतन्त्र रूप से वास करते हैं। इग्लैण्ड, अमेरिका, लका, नेपाल, मलेशिया, इण्डोनेशिया आदि देशो मे भी विभिन्न मत और सम्प्रदाय के लोग अल्पमत मे रहकर वे सभी उन देशो की मुख्य राष्ट्रीय धारा तथा वहा के बहुमत के साथ अपने को मिलाकर रखे हुए है।

भारतीय जनसघ के अध्यक्ष, प्रो० बलराम मधोक का कहना है कि "हिन्दुस्तान तो हिन्दू राष्ट्र है ही, इसे हिन्दू राज्य घोषित कराना है। अगर हिन्दुस्तान हिन्दू राज्य नही होगा तो निश्चय जान लें यह हिन्दू राष्ट्र भी नही रह सकता।" अरबो के पेट्रोडालर इन देश को दारूले इस्लाम बनाने पर तुले हैं। इस भयानक परिस्थिति तथा राष्ट्रीय सकट का हमे निवार करनाण होगा। यहा के हिन्दुओ को एक सूत्र मे बाधने का सकल्प लेना होगा। आर्यसमाज हिन्दू कौम का सदा रक्षक रहा है। हैदराबाद का सत्याग्रह, पजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन और वर्तमान काल मे मीनाक्षीपुरम मे आर्यसमाज का कार्य हिन्दू कौम के लिए महान क्रातिकारी और सुधारवादी रहा है।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि कई लेखको के लेखो के इस आशय पर जिसमें उन्होने लिखा है कि—"इस देश की वर्तमान अवस्था मे हिन्दू राष्ट्र अर्थात् देश में हिन्दुओ का ही राज्य हो यह विचार देश के टुकडे-टुकडे कर देगा। इस देश में केवल हिन्दू ही नहीं बसते। करोड़ो अन्य धर्मों के लोग भी हैं। प्रत्येक धर्म के लोग अपना-अपना राष्ट्र मागेंगे। करोड़ो की सख्या की जनता को दबाया नहीं जा सकता। हिन्दूराष्ट्र मागने वाले (पाकिस्तान का विरोध कैसे कर सकते?" ऐसे लिखने वाले यहा भी भयकर भूल कर बैठे। भिंडरवाला तथा लोगोवाला की तरह ये भी सिक्ख को अलग कौम समझ रहे हैं। खालसा पन्थ है, कौम नही। सिखो के दशम गुरु गोविन्द सिंह ने हिन्दू कौम की रक्षा के लिए खालसा पन्थ की स्थापना की थी न कि अलगाव के लिए।

हिन्दूराष्ट्र मे रहने वाले सभी मत और सम्प्रदाय के लोग एक साथ मिल्लत और प्रेम से रहकर अपने आपको हिन्दू राष्ट्रवाद की धारा से जोडकर भारतीय सस्कृति और सभ्यता के प्रति वफादार और ईमानदार रहेगे, यही हिन्दू राज्य की विशेषता होगी।

प्रो० बलराज मधोक के शब्दो मे—"आज हिन्दुस्तान एक सुलभ धर्मशाला बन गया है। जो आता है इसका एक हिस्सा दखल कर अगले हिस्से का भी दावेदार बन जाता है"। किसी की आस्था रूस के साथ, किसी की आस्था चीन और पाकिस्तान के साथ है। अगर शासन व्यवस्था इसी प्रकार बनी रही, तो आगे परिणाम क्या होगा, उसे राष्ट्रवादी जन ही समझ सकते है, दूसरे नही।

धर्म और मजहब के वास्तविक स्वरूप को नही समझने वाले राजनीतिज्ञो ने ही भारतीय सविधान को धर्म निरपेक्ष बनाया है, जबकि धर्म सापेक्ष होता है। धर्म मानव और समाज को नैतिक मूल्य के मार्ग पर आगे बढने का आधार है।

आज भी विदेश मे हिन्दू को धर्म नही मानकर एक राष्ट्र के नाम से जाना जाता है। अभी हाल मे जनता पार्टी के नेता ससद सदस्य डा० सुब्रह्मण्यम् स्वामी चीन की यात्रा पर गए थे। वहां के राजनायक ने श्री स्वामी से पूछा कि आप किस धर्म के मानने वाले हैं। डा० स्वामी ने उत्तर दिया कि मैं हिन्दू धर्म को मानता हूं। फिर राजनायक ने कहा कि मैं आपके देश के बारे मे नहीं जानना चाहता। मैं आपका धर्म जानना चाहता हूं।

उसी प्रकार १९३५ मे जब श्रीमती इन्दिरा गाधी यूरोप गई थी तो वहा के लोगों ने भी उनसे ऐसे ही प्रश्न किए कि आप वेदान्त के मानने वाले हिन्दू हैं या इस्लाम के मानने वाले हिन्दू हैं? आज भी विदेशों मे हिन्दू को राष्ट्र या देश के नाम से जाना जाता है, धर्म के नाम से नहीं।

जिस प्रकार का बलात् धर्म-परिवर्तन हिन्दुओं का हो रहा है, अगर यही क्रम जारी रहा तो भारत में इस्लामी राज्य बनने मे देर नही होगी। राम के स्थान पर मुहम्मद, काशी की जगह काबा और मूर्ति की जगह कब्रपरस्ती बढ़ जाएगी। उस समय आर्यसमाज वैदिक धर्म का प्रचार किस कौम के लोगो मे करेगा, यह एक विचारणीय प्रश्न है। पाकिस्तान बनने के बाद सबसे ज्यादा नुकसान अगर किसी सस्था को हुआ है, तो वह आर्यसमाज है। लाहौर का डी० ए० वी० कालेज आज इस्लामी प्रचार का मुख्य केन्द्र बन गया है।

'ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है" आर्यसमाज का ६ वां नियम बनाने वाले ऋषि दयानन्द ने भारत की गुलामी तथा अबला के करुण क्रन्दन से विह्वल होकर यह भी कहा कि—"अपना राजा अयोग्य होते हुए भी श्रेष्ठकर है—पर पिता के तुल्य पालन करने वाला विदेशी राज श्रेष्ठ नहीं।" महर्षि की इस राष्ट्रवादी घोषणा से आज के आर्यजनो को विशेष प्रेरणा लेनी चाहिए। जो विभिन्न दलो में सिद्धान्तहीन होकर पड़े हैं।

भारत वर्ष को दारूले इस्लाम की नापाक योजना बनाने वाले देश के दुश्मनो को दुरुस्त करने का एक ही विकल्प है कि हिन्दुस्तान को जल्द से जल्द प्रत्येक भारतीय से राष्ट्रभक्ति की शपथ ली जाए। इसी से आर्यसमाज जीवित और जागरूक रह सकता है तथा वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार हम धडल्ले के साथ कर सकते हैं। विदेशो मे भी आर्यसमाज का जहा प्रचार है वहा के प्रवासी भारतीय जनता मे ही हैं, अन्य मतो मे कम हैं। इसलिए आर्यसमाज को अपने व्यापक हित को ध्यान मे रखते हुए प्रखर भारतीय राष्ट्रवाद का सकल्प सुदृढ करवाना होगा। अपने वार्षिक उत्सवो पर अन्य सम्मेलनों के अलावा राष्ट्र एव संस्कृति रक्षा सम्मेलन करके भारतीय राष्ट्र एवं सस्कृति के सम्बन्ध मे जन-चेतना जाग्रत करनी होगी, और यह भी बताना होगा कि भारत राष्ट्र धर्म निरपेक्ष न होकर सर्वपन्थ समभावी होगा। समाजवादी, गाधीवादी न होकर जन-कल्याणवादी होगा। भारत राष्ट्र मे गोहत्या नही होगी। सच्चे भारत राष्ट्र में सबके लिए समान नागरिक (सिविल) कानून होगा। देश मे ब्रह्मचर्य एवं चरित्र निर्माण पर बल दिया जाएगा न कि कृत्रिम साधनो से सन्तति नियमन को। सब तरह की नशाबन्दी की जाएगी। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का भारतीय करण होगा। कश्मीर की धारा ३७० समाप्त हो जाएगी। ये सभी देश हितकारी विशेषताए भारत राज्य की होगी। आर्यसमाज जिस कार्य को करना चाहता है, जिसका वह प्रचारक तथा पक्षधर है, वह शासन व्यवस्था के माध्यम से आसान हो जाएगा। महाभारत का वाक्य है—"राजा कालस्य कारणम्" समाज और प्रजा पर राजा का प्रभाव होता है।

हमारा भारत राष्ट्र कभी भी मजहबी राज्य न था न होगा। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि भारत मे जब भी स्वदेशी शासन कायम हुआ तो गोहत्या नही हुई। महाराजा रणजीत सिंह ने पंजाब मे जब अपना शासन स्थापित किया तब अनारकली रोड मे टूटे हुए गिरजाघर को फिर से बनवाकर खडा करा दिया, पर शर्त यह लगा दी कि तुम अग्रेज, हमारे राज्य मे गोहत्या नही करोगे। आज हमें भी अपने राष्ट्र मे सस्कृति एव राष्ट्र रक्षा की वफादारी की बुनियाद मजबूत करनी होगी।

मन्त्री, आर्यसमाज, आरा (बिहार)

बीती ताहि बिसारि दे

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेई।
जो बनि आवै सहज में, ताहि मे चित देई।।
ताहि मे चित देइ, बात जोहि बनि आवै।
दुर्जन हसे न कोई, चित मे खेद न पावै।।
कहे गिरिधर कविराय, वहै कर मन परतीती।
आगे की सुधि लेइ, समुझि बीती सो बीती।।

शहीद-ए आजम भगतसिंह के अनुज, जिनका २२ अगस्त ८३ को निधन हो गया।

क्रान्तिकारी देशभक्त सरदार कुलवीरसिंह

—श्यामसुन्दर सेठ

महासचिव अ० भा० नौजवान भारत सभा—मन्त्री अखिल भारतीय जनसंघ

स्वाधीनता संग्राम मे जहा असख्यक भारत माता के सपूत सत्याग्रह व अहिंसक आन्दोलन के माध्यम से अग्रेजी साम्राज्य की नीव हिला रहे थे वहां अनगिनत युवक सशस्त्र क्रान्ति की राह अपनाकर अपनी हरी-भरी तरुणाई मातेश्वरी के चरणों मे अर्पित कर चुके थे। उनमे कई शहीद-ए आजम भगतसिंह, मदनलाल ढींगरा, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह सरीखे राष्ट्रभक्ति के धधकते ज्वालामुखी बनकर फासी की रज्जू को सावन का भूला समझकर झूल गए। उस क्रान्ति मार्ग के पथिक ही थे देशभक्त सरदार कुलवीरसिंह।

शहीद-ए आजम भगतसिंह का समूचा परिवार तो मानो मातृभूमि की परतन्त्रता रूपी शृखलाए (जजीरे) काटने हेतु जीवन का ध्येय ही मान बैठा था। उनके पिता सरदार किशनसिंह, चाचा सरदार अजीतसिंह, सरदार स्वर्णसिंह आदि की राष्ट्रहेतु जीवन समर्पण व क्रान्ति की डगर पर चलने की परम्परा को शहीद-ए आजम भगतसिंह ने फासी की रस्सी को चूमकर व अनुकरणीय बलिदान देकर आगे बढाया, उनके दोनो छोटे भाई सरदार कुलवीर सिंह व सरदार कुलतारसिंह भी उसी पथ के पथिक बने। सरदार कुलवीरसिंह जी क्रान्ति वीर भगतसिंह से आठ वर्ष छोटे थे। जेल की काल कोठरी से अग्रज सरदार भगतसिंह के सन्देश उनके क्रान्तिकारी साथियो तक पहुचाने की भूमिका बड़ी कुशलता से निभाते थे।

२२ वर्ष की आयु मे अपने जीवन को जोखिम मे डालकर जार्ज पचम के शासन की रजत जयन्ती के कार्यक्रम मे बिजली की तारो को लोहे की जजीर से अडाकर जड़ा वाला, चनयोट रायल पर सरगाघा आदि क्षेत्र की बिजली फेल कर दी। सारा कार्यक्रम ही स्थगित हो गया। जनसेवा में लगाव के कारण वह लायलपुर डिस्ट्रक्ट बोर्ड के सदस्य भी रहे—अपनी कार्य कुशलता से पूरे क्षेत्र मे अपनी योग्यता व प्रतिभा की धाक जमा दी। जनता की मांगो को पूरा करने हेतु निडरता का प्रदर्शन करने पर उन्हे मनवा कर ही दम लेना उनके स्वभाव मे शामिल था। वह समाजवादी दल के प्रमुख कार्यकर्ता थे। जेल यात्रा के दौरान उन्हें स्वर्गीय जयप्रकाश नारायण, डाक्टर राममनोहर लोहिया सरीखे महान नेताओ के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह खादी कैदी थे, व दूसरे विश्व युद्ध के दौरान उन्हे पुन गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होने कई बार लम्बी-लम्बी भूख हड़तालें करके राजनीतिक बन्दियो को उनके अधिकार दिलाए। वह आठ वर्षों तक लगातार जेल की सलाखो के पीछे रहे।

स्वातन्त्र्योत्तर जनता की सेवा का व्रत लेकर रचनात्मक आन्दोलनो का सूत्रपात करते रहे। वह एक बार पजाब विधानसभा के फीरोजपुर से सदस्य निर्वाचित हुए। कुछ समय दिल्ली मे रहने के बाद फरीदाबाद मे स्थायी रूप से रहने लगे। उनके छोटे भाई सरदार कुलतारसिंह सहारनपुर के निवासी बने जो उत्तरप्रदेश मे मन्त्री भी रहे हैं। सरदार कुलवीर सिंह जी इन दिनो "महान देश भक्त सरदार अजीतसिंह की जीवन गाथा लिख रहे थे जो निकट भविष्य मे छपने वाली थी। वह गत वर्ष पाकिस्तान गए थे जहा उन्होने सरदार भगतसिंह व अन्य क्रान्तिकारियो के प्रमाण व हालात् इकट्ठे किए थे जो स्वाधीनता सग्राम का बहुमूल्य दस्तावेज है। उन्होने शहीद भगतसिंह मेमोरियल ट्रस्ट' बनाया—उन्होंने अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए उसके कार्य मे भारी रुचि ली। गत जुलाई १९८३ मे शहीद-ए आजम भगतसिंह मेमोरियल ट्रस्ट की मीटिंग मे केन्द्रीय उद्योग मन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी भी पधारे। उनमे सरदार कुलवीर सिंह का भाषण तथ्यो व भावुकता से परिपूर्ण था जो श्रोताओ से लिए चिरस्मरणीय रहेगा।

वह बड़े व्यवहारकुशल, मधुरभाषी व हसमुख थे, इसीलिए मित्रो का क्षेत्र बडा विस्तृत था। उनके दोनो सुपुत्रो मे भी देशभक्ति व समाज सेवा की वही भावना विद्यमान है। इन पक्तियों के लेखक का इस परिवार से घनिष्ठ सम्बन्ध पाकिस्तान बनने से पूर्व ही जुडा हुआ है। इनके जीवन से विदा लेने से पूर्व दो दिनो से लेखक अपनी पुत्री श्रीमती सुनीता मलिक के साथ सेवा मे रत था क्योकि इनसे बडी आत्मीयता थी। मृत्यु से पूर्व उन्होने सम्बोधित होते हुए कहा "सेठजी अब मेरा बिस्तर तो बध चुका है—बच्चो से ऐसे ही मधुर सम्बन्ध बनाए रखना। देश के हालात् ठीक नहीं हैं—नेता राजनीति में मिशनरी भावना से नही अब इसे व्यापार समझकर आते हैं। भगतसिंह ट्रस्ट मेमोरियल ट्रस्ट के कार्यभार का दायित्व भी आप जैसे लोगो पर छोड़े जा रहा हू। भगवान की ऐसी ही इच्छा है।"

देश भर से शोक सन्देशो का ताता-सा बंध गया। राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, हरियाणा के मुख्य मन्त्री, पजाब के मुख्यमन्त्री, राज्यपाल प० भगवत दयाल, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष लालारामगोपाल शालवाले, विभिन्न राजनीतिक दलो के नेताओ ने भावभीनी श्रद्धाञ्जलिया अर्पित की। शवयात्रा मे तो मानो सारा फरीदाबाद ही उमड पड़ा।' 'शहीद भगतसिंह अमर रहें' क्रान्तिवीर कुलवीरसिंह अमर रहें' से वातावरण गूज उठा। उनका अन्तिम सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। सच तो यह है—

बड़े गौर से सुन रहा था जमाना।
तुम्हीं सो गए दास्तान कहते-कहते।

एन ८८ कीर्ति नगर नई दिल्ली-११००१८

आह्वान

—तुलसीराम आर्य, भजनोपदेशक

मनुष्य 'कर्त्तव्य' और 'उद्देश्य' इन दो जजीरो से जकडा हुआ है। दोनो मे इस हद तक समानता हो सकती है कि दोनो एक-दूसरे से अलग-अलग दिखाई न देकर एक-दूसरे मे समाहित से दिखाई देते हैं। 'उद्देश्य' यदि 'कर्त्तव्य' से बधा हुआ है, तो वह मानव के लिए एक उत्कृष्ट देन है। तब वह मानव एक इन्सान बन जाता है और इन्सान से एक देवता बन जाता है और अपने पीछे वह उज्ज्वल पथ छोड़ जाता है जो उसके यशोगान को सतत् अथक गाये चला जाता है और देता रहता है एक सीख 'कर्त्तव्य और दूसरा उद्देश्य' की उस राही को जो कि उस पर चले जा रहा है।

यदि 'उद्देश्य' 'कर्त्तव्य' से बधा हुआ नही है तो आवश्यक नही कि आपका 'उद्देश्य' मर्यादा का अतिक्रमण नहीं कर रहा हो। यदि आपका 'उद्देश्य' मर्यादा के अन्दर है तो 'कर्त्तव्य' भी स्वत ही उस 'उद्देश्य' के अन्दर समाविष्ट हो जाता है और उसी की गूजन उससे प्रतिध्वनित होती है। इस स्थिति मे यदि मैं यह कहू कि 'उद्देश्य' और 'कर्त्तव्य' एक दूसरे के पूरक हैं, तो अतिशयोक्ति नही होगी। जब तक मानव इन दोनो को साथ-साथ रखेगा, तब तक विश्व की कोई भी ताकत उसे कल्याण पथ से विमुख नही कर सकती।

अत मानव को अपना 'उद्देश्य' स्वत्व को ही लेकर नही चुनना चाहिए, बल्कि उसके अन्दर परार्थ की भावना होनी चाहिए। उसे स्वत्व को परार्थ के लिए न्योछावर कर देना चाहिए। उस स्थिति मे उसका वह 'उद्देश्य' अपने आप ही उसका 'कर्त्तव्य' बन जाता है, लेकिन 'कर्त्तव्य' के अन्दर भी उस समय की स्थिति का रूप परिलक्षित होना चाहिए। उसके 'उद्देश्य' के अन्दर जो समाज का लक्ष्य निरूपित होता है वही मानव समाज के उत्थान का कारण बनता है। एक समय था, जब 'कर्त्तव्य' और 'उद्देश्य' समानार्थक समझे जाते थे। सभी लोग अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग थे। वह युग था हमारे महर्षि मनु का, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का व हनुमान का, लेकिन आर्यावर्त का हृत् भाग्य कि उस कर्तव्य को महाभारत के दौरान 'स्वार्थ' ने समूचा ही निगल लिया। और आज तक वह विष-बीज पनप रहा है तथा धीरे-धीरे एक विशालकाय वृक्ष का रूप लेता जा रहा है। उसकी जड़ें काफी गहरी हो चुकी हैं, लेकिन प्रसन्नता की बात यह है कि 'आर्यसमाज' उस विष वृक्ष की छवि धूमिल करने की प्रतिज्ञा ले चुका है। वह कर्त्तव्य के प्रति सजग है। आर्यसमाज वह प्रहरी है जो कभी सोना नहीं जानता वह कभी विश्राम करना नहीं जानता, क्योकि उसे ज्ञात है कि उसके क्षण भर विश्राम का अर्थ है विष वृक्ष' का पनपना जिसको नष्ट करने की वह शपथ ले चुका है। आर्यसमाज के वो सैनिक जो श्री राम, हनुमान व श्री कृष्ण के गीत गाते हैं, जिनके पद चिह्नो को लक्षित कर पद-प्रदक्षिणा करने की जिन्होने शपथ ले रखी है वो आज घर-घर अलख जगाते फिर रहे हैं। वो ललकार-ललकारकर आज के नवयुवको को उनके कर्त्तव्य के प्रति सजग करते हुए कह रहे हैं—"आर्यो उठो! वह समय हो चुका है जब तुम्हे सघर्ष का बिगुल बजाना है। अपने आपको पवित्र लक्ष्य की वेदी पर न्योछावर कर तो और ललकार कर इन बुजदिलो से कह दो जो क्रान्ति के नाम से डरते हैं जिन्हे खून तो खून लाल रग से भी डर लगता है कि आर्य कभी रुकना नही जानते हम अपने अभियान के लिए अग्रसर हो चुके है। आर्यो हमारा लक्ष्य महान है और हम प्रतिज्ञा करते हैं कि इस मशाल को जो हमारे हाथ मे है कभी बुझने नही देंगे। आओ और हमारे साथ इस धर्मयुद्ध मे कूद पडो। देर किस बात की है।

—२७ किलोकरी गाव, पो० जगपुरा (भोगल) नई दिल्ली-११००१४

को वेदानुद्धरिष्यति ?

(पृष्ठ २ का शेष)

आदरणीय वेदज्ञ, विद्वान् श्री मीमासकजी द्वारा सकल्पित राशि की स्थापना से इसके प्रकाशन के लिए शेष राशि की पूर्ति के लिए सभी वेद प्रेमी धनी-मानी सज्जनो, आर्यसमाजो एव सस्थाओ से निवेदन है कि वे इस महत्वपूर्ण प्रकाशन कार्य मे हमें मुक्त हस्त से धनराशि प्रदान कर यश के भागी बनें जिससे—यजु क्रम सहिता का प्रकाशन कार्य शीघ्र प्रारम्भ हो सके तथा अन्य अनेक अप्रकाशित वेद कार्य के प्रकाशन का भी सुअवसर प्राप्त हो सके।

—वेद सदन, महारानी रोड, इन्दौर-४५२००७

आर्य जगत् समाचार

कुडलूर में एक हजार हरिजन हिन्दू ही रहेंगे

दक्षिण भारत में आर्यसमाज की दूसरी उपलब्धि

आर्य कार्यकर्त्ताओं को श्री शाल वाले की बधाई

दिल्ली। मद्रास के कुडलूर क्षेत्र के १००० हरिजनो ने हिन्दू समाज मे समान स्थान न मिलने और भेदभाव के कारण १५ अगस्त से इस्लाम धर्म ग्रहण करने की घोषणा की थी। यह समाचार मिलते ही आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम्, सभा के कार्यकर्त्ताओ, सार्वदेशिक सभा के श्री पृथ्वीराज शास्त्री, आदि ने मद्रास आर्यसमाज के श्री टी०कृष्णन्,श्री डी० सी० मल्होत्रा,श्रीएम० नारायण स्वामी के साथ कुडलूर क्षेत्र का व्यापक दौरा किया। स्थानीय उच्चवर्ग के हिन्दुओ और हरिजनो से सम्पर्क कर सामाजिक भेदभाव खत्म करने का प्रयत्न किया। इस सम्बन्ध मे सरकारी अधिकारियो ने भी पूरा सहयोग दिया, फलत धर्मान्तरण का षड्यन्त्र विफल हो गया।

मीनाक्षीपुरम आर्य महासम्मेलन के बाद कुडलूर मे धर्मान्तरण षड्यन्त्र विफल करने की घटना को सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले ने दक्षिण भारत मे आर्यसमाज की दूसरी सफलता उद्घोषित किया है। इस सफलता के लिए श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम्, आन्ध्र आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्यसमाज मद्रास के कार्यकर्त्ताओ को बधाई दी है।

विश्वविद्यालय ज्ञान की ज्योति जलायें

डबलिन (आयर) मे मुख्य वक्ता द्वारा उद्बोधन

हरिद्वार। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा पिछले दिनो इग्लैण्ड और आयर गए थे। उन्होने कैम्ब्रिज मे दक्षिणी एशियाई अध्ययन केन्द्र देखा। ट्रिनिटी कालेज के पुस्तकालय मे ६० हजार पुस्तकें हैं।

आयर की राजधानी डबलिन मे ८ अगस्त को विश्वविद्यालय-सम्मेलन हुआ। उसमे ४१ देशो के ६०० प्रतिनिधि आए हुए थे। ट्रिनीडाट के फादर पैण्टन ने मुख्य भाषण मे कहा कि गरीब पिछडे वर्ग मे जागरण पैदा करना चाहिए। युवा लोग सम्मान के साथ जीना चाहते हैं। सभी की सम्मति रही कि विश्वविद्यालय जनता के मध्य जाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाए, अन्धकार, अन्धविश्वास और अज्ञान मिटाना चाहिए, अन्यथा विश्वविद्यालयो के अस्तित्व का कोई सार नही।

ट्रिनिटी कालेज डबलिन के पुस्तकालय मे २० लाख पुस्तकें हैं। वहा ८०० ई० का बाइबिल-सस्करण रखा हुआ है।

आर्य युवतियां आगे आएं।

आगामी महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी अजमेर मे केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश की १०० वीरागनायें अपनी सेवाए इस महान अवसर पर भेंट करेंगी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के महिला विभाग के रूप मे केन्द्रीय आर्य युवती परिषद्" का गठन किया गया, जिसकी सयोजिका ब्रह्मचारिणी रामदेवी आर्या को नियुक्त किया गया है। श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र, श्रीमती शातिदेवी मलिक तथा श्रीमती सरोज दीक्षा युवती परिषद् की सरक्षक होगी।

युवतियो की महारानी लक्ष्मीबाई ब्रिगेड मे १६ से ४८ वर्ष की आयु की युवतिया भाग ले सकेंगी, अजमेर शताब्दी शुल्क ३१ रु० मात्र है, वेषभूषा मे सफेद कमीज, सलवार, कपडे के जूते, जुराब केसरिया चुनरी व ६ इच की कृपाण (कटार) शामिल है। युवती परिषद् का सदस्यता अभियान शुरू हो चुका है, योग्य युवतिया व आर्य महिलाए सम्पर्क करें।

—ब्र० रामदेवी आर्या २८७-डी, कच्चा तिहाड नई दिल्ली-१८

अध्यक्षा, केन्द्रीय आर्य, युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश आर्यसमाज कबीर बस्ती, दिल्ली-७

श्रावणी पर दुर्गुण त्यागने का व्रत

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग अहमदाबाद-२२ मे दि० १९ अगस्त से दि० २३ अगस्त तक वेद कथा सप्ताह मनाया गया। जिसमे आर्यजगत् के विद्वान महात्मा श्री प्रेमभिक्षु, जी महाराज (सपादक तपोभूमि) श्री प० सत्यानन्द जी वेद वागीश एव श्री प० कमलेश कुमार अग्निहोत्री के प्रभावशाली प्रवचन एव भजनोपदेश हुए। आर्यजनो के विशाल समुदाय ने इस आयोजन का लाभ उठा कर वेदकथामृत का पान किया। अन्तिम दिन श्रावणी (उपाकर्म) के पर्व पर कई भाइयो ने यज्ञोपवीत धारण किए और अनेक ने दुगुण त्यागने का व्रत लिया।

आर्यसमाज हनुमान रोड में

श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे वेद जयन्ती सप्ताह का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक मनाया गया। २३ अगस्त को श्रावणी पर्व से प्रात प्रतिदिन ऋग्वेद पारायण महायज्ञ एव रात्रि को प्रसिद्ध आर्य विद्वान प्रो० रत्न सिंह जी द्वारा वेद कथा, श्री गुलाब सिंह राघव द्वारा सगीत का आयोजन था। रविवार २८ अगस्त को सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया गया एव आर्य शहीदो के प्रति श्रद्धान्जलिया अर्पित की गई। ३१ अगस्त को प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् श्री कृष्ण के जीवन पर भाषण प्रतियोगिता का भव्य आयोजन था जिसमे दिल्ली के सीनियर सैकन्डरी स्कूलो के १७ छात्र-छात्राओ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी वक्ता छात्र बहुत तैयारी के साथ आए थे और सभी भाषण बडे ही सारगर्भित एव ओजस्वी थे। इस समारोह की अध्यक्षता भूतपूर्व राज्यपाल भगवान सिंह जी ने करनी थी परन्तु उनके अचानक दुर्घटनाग्रस्त होकर अस्पताल पहुच जाने के कारण समारोह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा की अध्यक्षता मे सपन्न हुआ। प्रथम, द्वितीय एव तृतीय आने वालो को क्रमश १०१, ५१ एवं ३१ रुपये नकद के साथ आर्य साहित्य भेंट किया गया। पारितोषिक वितरण भारत मे मौरीशस के दूत श्री गोवर्धन जी द्वारा किया गया। समाज का हाल पूरा भरा हुआ था। प्रथम पुरस्कार रघुमल आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्रा ने प्राप्त किया।

श्रीकृष्ण के आदर्श अपनाइए

नई दिल्ली। आर्यसमाज लाजपतनगर मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव श्री० एल० सूरी जी की अध्यक्षता मे मनाया गया, जिसमे प्रमुख वक्ता के रूप मे श्री नरेन्द्र अवस्थी पत्रकार ने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हे महान कर्मयोगी, सामाजिक समता का प्रणेता, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ बताते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे उनके आदर्शों को अपनाने के महत्व पर बल दिया।

वेदो के मार्ग से ही सर्वांगीण उन्नति सम्भव

दिल्ली की महिला आर्यसमाजों की ओर से वेदप्रचार दिवस

सोमवार दिनाक ५-९-८३ को ग्रेटर कैलाश-२ की सुन्दर घाटी मे अर्द्धनिर्मित आर्यसमाज मन्दिर मे दिल्ली की ४० से भी ऊपर महिला आर्यसमाजो की सैकडो बहनो ने वेदप्रचार-दिवस मनाकर वेद के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। यजुर्वेद के सुन्दर मत्रो द्वारा यज्ञ के पश्चात् श्रीमती सावित्री जी मेहता ने ध्वजारोहण किया। श्रीमती सुशीला जी आनन्द ने ओ३म् शब्द की भावपूर्ण व्याख्या की। अनेक बहनो व कन्याओ के वेद पर आधारित भजन हुए। यजुर्वेद के २० वें अध्याय के प्रथम २० मन्त्रो की प्रतियोगिता मे १७ बहनो ने भाग लिया, जिनमें दो बालिकाए भी थीं। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली बहनो ने पारितोषिक रूप मे वैदिक साहित्य सभा प्रधाना श्रीमती शान्ति जी के कर-कमलो से प्राप्त किया। सर्व श्रीमती ऊषा शास्त्री व शकुन्तला शर्मा प्रतियोगिता की निर्णायिका थी। अशोक विहार की आठवीं कक्षा की छात्रा कु० ऋचा ने द्वितीय स्थान प्राप्त करके वेद के प्रति अपनी श्रद्धा का परिचय दिया। इसके अतिरिक्त कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छात्राओ के सामूहिक मन्त्र पाठ ने सभी को आनन्दविभोर किया।

श्रीमती शकुन्तला दीक्षित की अध्यक्षता मे डा० सुषमा मल्होत्रा ने 'वेद मे नारी का स्थान' विषय पर पुरातन व नूतन के परिप्रेक्ष्य में वेद के आधार पर बहुत ही सारगर्भित प्रवचन दिया। श्रीमती उषा शास्त्री ने भी 'वेद मे ईश्वर का स्वरूप' विषय पर विराट् व राष्ट्र शब्दो की व्याख्या करते हुए प्रभु के स्वरूप का दिग्दर्शन कराया। अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्रीमती दीक्षित ने कहा कि वेद मे आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक एवं लोक-परलोक, व समूचे सृष्टि नियमों का पूर्ण मार्ग दर्शन मिलता है। उसी पथ पर चलकर हम सर्वांगीण उन्नति कर सकते हैं। आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-२ की ओर से सभी ने सामूहिक प्रातराश किया।

—प्रेमशील, सभा मन्त्रिणी

१८ सितम्बर, १९८३

अन्धामुगल—प्रतापनगर—आचार्य रामचन्द्र शर्मा, अशोक नगर—जयभगवान भजन मण्डली, आर्यपुरा—कवि प्रो० सत्यपाल बेदार, रामकृष्णपुरम सेक्टर ६—प० बलवीर शास्त्री, आर० के० पुरम सेक्टर-६—प० देवीचरण देवेश, अमर कालौनी—प० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक, इन्द्रपुरी—प० सत्यभूषण वेदालकार, किंग्जवे कैम्प—प० सोमदेव, कालका जी—प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, किशनगज—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, कृष्णनगर—प० अमीचन्द मतवाला, गाधीनगर—प० रमेश वेदाचार्य, गीता कालौनी—प० रणजीत राणा, ग्रेटर कैलाश १—प० प्रकाशचन्द शास्त्री, गुडमण्डी—स्वामी शिवानन्द जी, ग्रीनपार्क—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, गोविन्दपुरी—प० हरिश्चन्द्र आर्य, गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—डा० रघुनन्दन सिंह, चूनामण्डी—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, भोगल—प० अमरनाथ कान्त, जनकपुरी बी-२ प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, टैगोर गार्डन—प० रामदेव शास्त्री, तिलक नगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, तिमारपुर—प० सुमेरचन्द विद्यार्थी, दरियागज—प० देवेन्द्र कुमार शास्त्री, [..]नगर—मनोहर लाल ऋषि; नारायण विहार—पं० विद्याव्रत शास्त्री, पजाबी बाग—प० कामेश्वर शास्त्री, प्रीतमपुरा—देवराज वैदिक मिशनरी; विनय नगर—प० गणेश प्रसाद, मॉडल टाउन—आचार्य दिनेश चन्द्र पाराशर, महरौली—प० ओमप्रकाश गायक, मॉडल बस्ती—प० तुलसी राम आर्य, मालवीय नगर—प० ओमवीर शास्त्री, राजौरी गार्डन—प० रामरूप शर्मा; रोहतास नगर—आचार्य हरिदेव, रमेश नगर—स्वा० यज्ञानन्दसरस्वती, लड्डूघाटी—महेशचन्द्र पाराशर, लारेन्स रोड—ओ३म्प्रकाश वेदालकार, लक्ष्मीबाई नगर—व्याकुल कवि, विक्रम नगर—शीशराम भजनीक; सराय रोहेला—प० रामनिवास शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सोहन गज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, शालीमार बाग—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार, शादीपुर—प० देव शर्मा शास्त्री—त्रिनगर—प० खुशीराम शर्मा; हौज खास—प० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण। —स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग

राष्ट्र श्रीकृष्ण के आदर्शों का अनुकरण करे

अखण्डता का व्रत लें : जन्माष्टमी पर आर्यनेताओं का उद्बोधन

दिल्ली। आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा—आज देश को योगीराज श्रीकृष्ण के आदर्शों की बडी आवश्यकता है। श्रीकृष्ण ने पाच हजार साल पहले खण्ड-खण्ड भारत को अखण्ड बनाने के लिए पाण्डवो को निमित्त बनाया था। श्रीकृष्ण ने कभी भी बुराई के साथ समझौता नहीं किया। आज श्रीकृष्ण के अनुयायियो को अलगाववादी ताकतो से जूझना होगा।

नई दिल्ली। आर्यसमाज कीर्तिनगर मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एव हिन्दू जागृति-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले श्रीकृष्ण को महान् कर्मयोगी एव सामाजिक समता का प्रणेता घोषित किया, उन्होने जनता से राष्ट्र की अखण्डता के लिए व्रत लेने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि पत्रकार श्री नरेन्द्र अवस्थी ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे श्रीकृष्ण का सन्देश दिया।

—आर्यसमाज ग्वालमण्डी, फीरोजपुर छावनी मे कृष्णजन्माष्टमी उत्साहपूर्वक मनाई गई।

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी शाहदरा का चुनाव सम्पन्न

रविवार दिनाक ४-९-८३ को सभा उपमन्त्री श्रीहरिदेव आर्य की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री मूलराज डोगरा, उप प्रधान—सर्वश्री भगतराम भाटिया एव चरणजीत लाल कालडा, मन्त्री—श्री बलदेव राज, उपमन्त्री—श्री विशनदास भाटिया, प्रचार मन्त्री—श्री सूर्य प्रकाश मलिक, कोषाध्यक्ष—श्री तुलसी दास भाटिया, पुस्तकाध्यक्ष—श्री चन्द्रकान्त मलिक।

समाजसेवी श्री रामसिंह का निधन

आर्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली के पुरोहित प० मेघश्याम जी वेदालकार के पिताजी श्री रामसिह जी का बीमारी के कारण ११ अगस्त को निधन हो गया। वह स्वतन्त्रता सेनानी, देशभक्त और समाज सेवक थे। अलीगढ क्षेत्र मे आजादी के समय उनका बडा योगदान था। उनकी आत्मा की शान्ति एव सद्गति के लिए और परिवार मे धैर्य व सहनशक्ति के लिए प्रार्थना की गई। —पुरुषोत्तमलाल, मन्त्री, आर्यसमाज लाजपत नगर।

भारत के हिन्दू हिन्दू उन्मुख हो जाएं
तो भारत का नेतृत्व उनके हाथों में सम्भव
श्रीलंका, मलेशिया और मारीशस से सीख लें :
प्रो० बलराज मधोक का परामर्श

नई दिल्ली। प्रसिद्ध हिन्दू नेता प्रो० बलराज मधोक ने देश की स्थिति पर यह वक्तव्य दिया है।

चुनाव निकट आ रहा है, इसलिए वोटो की राजनीति तेज हो गई है। विरोधी दलो ने चुनाव की दृष्टि से गठजोड शुरू कर दिया है। लोकदल और भाजपा का गठजोड उनमे से एक है। जनता पार्टी, शरद पवार की कांग्रेस तथा बहुगुणा की समाजवादी पार्टी का गठजोड हो रहा है। इस गठजोड का तालमेल कम्युनिस्ट दलो के साथ भी हो सकता है। ऐसा लगता है कि लोकसभा के अगले चुनाव, चाहे वे मार्च १९८४ मे हो या जनवरी १९८५ मे, कांग्रेस के मुकाबले मे दो मोर्चे होगे।

अभी तक जनसघ को छोडकर सभी दल हिन्दू मतो को घर की मुर्गी समझते रहे हैं। हिन्दू हितो की उपेक्षा करके १० प्रतिशत के लगभग मुस्लिम मतो को किसी प्रकार अपनी ओर खीचना उनकी चुनावनीति का प्रमुख भाग रहा है। गत आम चुनावो का विश्लेषण करने से पता लगता है कि हर चुनाव मे मुसलमान मतदाताओ की प्रथम वरीयता मुस्लिम लीग रही है। जहा कही मुस्लिम लीग के उम्मीदवार के जीतने की सभावना हुई, मुस्लिम मतदाताओ ने अपने मत उसे ही दिए। अभी हाल ही मे हुए दिल्ली के चुनाव मे इस तथ्य की फिर पुष्टि की है। मटियामहल मुस्लिम बहुल क्षेत्र मे कांग्रेस, जनता पार्टी और भाजपा के नगर निगम के लिए मुस्लिम उम्मीदवार खडे किए थे। वहा मुस्लिम लीग ने भी अपना उम्मीदवार खडा किया था। मुस्लिम मतदाताओ ने मुस्लिम लीग के प्रत्याशी को ही विजयी बनाया।

मुसलमान मतदाताओ की दूसरी वरीयता जीतने की सभावना वाले मुस्लिम उम्मीदवार होते हैं चाहे वे किसी भी दल की ओर से खडे हो। १९७१ के आम चुनावो तक जहा मुस्लिम लीग का या अन्य कोई जीतने वाला मुस्लिम प्रत्याशी न हो, वहा मुस्लिम मतदाता अपना मत कांग्रेस को देते थे। १९७७ के चुनाव मे उनकी पहली दो वरीयताए तो पूर्ववत रही, परन्तु अन्य स्थानों पर मुसलमानो ने जनता पार्टी के गैर मुसलमान प्रत्याशियो को भी अपने मत दिए। परन्तु १९८० के आम चुनाव मे उनकी तीसरी वरीयता फिर कांग्रेस बन गई।

अब कांग्रेस का एक वर्ग इस बात को भाप गया है कि मुस्लिम मतदाता पहले की तरह कांग्रेस की झोली मे नही रहा। दूसरी ओर देश मे हिन्दू चेतना जगने लगी है इसलिए हिन्दू मतो को प्रभावित करने की आवश्यकता उन्हे भी अनुभव होने लगी है। यदि इस समय जनसघ एक सशक्त दल के रूप मे मैदान मे होता, तो यह अधिकाश हिन्दू मतो को अपने साथ ले सकता और अपने बल पर कांग्रेस का प्रभावी विकल्प बन जाता। दिल्ली और जम्मू मे भाजपा की हार का प्रमुख कारण हिन्दू मतो का उससे विमुख होना है। इस स्थिति का लाभ इन्दिरा कांग्रेस उठाने लगी है। परतु श्रीमती गाधी की पारिवारिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि उन्हें सच्चे अर्थों मे हिन्दू हितैषी नही बनने दे सकती।

चौधरी चरणसिह, श्रीमती गाधी और श्री वाजपेयी से बेहतर हिन्दू माने जाते हैं। उनका अपने आपको बार-बार आर्यसमाजी कहना भी इसमे उनका सहायक है। जानकार लोगो के अनुसार भाजपा वाले चौधरी चरणसिंह की इस हिन्दू तस्वीर का लाभ उठाने के लिए ही लोकदल के साथ मिले हैं, परन्तु लोकदल मे भी ऐसे लोग बहुत हैं जो चौधरी चरणसिंह को खुलकर हिन्दू की बात करने से रोकते हैं।

इसलिए आज की स्थिति मे न तो कांग्रेस और न ही लोकदल-भाजपा गठबन्धन पूरी तरह हिन्दुत्ववादी दल की भूमिका निभा सकता है। हिन्दू मत अभी तक हिन्दू के रूप मे अप्रभावी रहे हैं। परतु आध्र प्रदेश के अभी के चुनावो के अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि कोई दल ४५ प्रतिशत के लगभग हिन्दू मत अपने साथ ले सके तो उसे मुस्लिम मतो की आवश्यकता भी नही रहेगी। श्री रामाराव की तेलगू देशम पार्टी की जीत का यही रहस्य है। मलेशिया और श्रीलका का अनुभव भी इसकी पुष्टि करता है। मलेशिया मे मुसलमान केवल ५१ प्रतिशत है और श्रीलका मे बौद्ध ७०% के लगभग हैं। परन्तु मलेशिया मुस्लिम मतो और श्रीलका बौद्ध मतो को इकट्ठा करके मुसलमानो और बौद्धो ने वहा पूरी सत्ता सभाली हुई है। इसलिए कोई कारण नही कि हिन्दुस्तान के ८५% हिन्दू अपने बल पर हिन्दुस्तान की राजनीति को हिन्दू उन्मुख रूप न दे सकें। मारीशस का उदाहरण इस दृष्टि से प्रामाणिक हैं। वहा हिन्दू ५३% हैं।

परन्तु यह तभी सम्भव होगा जब हिन्दू मतो का बडा भाग किसी एक हिन्दुत्ववादी दल के पीछे खडा हो जाए। आज हिन्दू मानस इसके लिए तैयार है। परन्तु कोई सशक्त हिन्दुत्ववादी दल देश मे नही है।

अशोक विहार में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज अशोक विहार फेज १ मे २३ अगस्त से ३१ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। ३१ अगस्त के दिन यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् वक्ताओ ने योगीराज श्री कृष्ण के सन्देश से जनता को प्रेरणा लेने के लिए कहा।

आर्यसमाज अशोकविहार फेज ३ (गुरुकुल) मे २४ अगस्त से ३१ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रतिदिन प्रात ६ से ७॥ तक यज्ञ के बाद प० दीनानाथ सिद्धान्तालकार के उपदेश एव रात्रि को ७॥ से ६॥ बजे तक भजन श्री प्रकाश व्याकुल के और श्री प्रकाशचन्द्र वेदालकार की वेदकथा हुई। ३१ अगस्त को प्रात ६ बजे यज्ञ-पूर्णाहुति के बाद जन्माष्टमी पर्वसभा श्री प्रद्युम्नलाल तलवाड की अध्यक्षता मे हुई। सर्वश्री शान्ता भण्डारी, कुन्ती सक्सेना, कान्ता गण्डोक के मधुर भजन-सगीत के बाद सर्वश्री सुमेरचन्द विद्यार्थी, सन्तोष तनेजा प्राचार्य, यशपाल, आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार के श्री कृष्ण जीवन पर प्रभावशाली भाषण हुए।

आर्यसमाज पंखारोड में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज पखारोड सी ब्लाक, जनकपुरी मे "वेद प्रचार सप्ताह" श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक समारोहपूर्वक मनाया गया। २४-८-८३ से ३०-८-८३ तक प्रतीदिन प्रात यज्ञ तथा उपदेश और रात्रि मे आचार्य सत्यप्रिय जी का प्रवचन चलता रहा, जिसका जनकपुरी के शिक्षित समुदाय पर विशेष प्रभाव पडा। दिनाक ३१-८-८३ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी प्रात ८ बजे से ११.३० बजे तक मनाई गई जिसमे चतुर्वेद शतक यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और प्रात ९ से ११.३० बजे तक समाज मन्दिर के मैदान मे एक सार्वजनिक सभा आचार्य सत्यप्रिय (कुरुक्षेत्र वाले) जी की अध्यक्षता मे हुई।

आर्यसमाज कृष्णनगर में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज कृष्णनगर मे १२ सितम्बर से १८ सितम्बर तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है। अन्तिम दिन ऋग्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। रात को स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के हृदयस्पर्शी उपदेश एव प० आशानन्द जी के भजन हो रहे हैं।

आर्यसमाज दीवान हाल के नए अधिकारी

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे आर्यसमाज दीवानहाल के वार्षिक अधिवेशन मे नये पदाधिकारी चुने गए—प्रधान श्री सूर्य देव, मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मचन्द्र गुप्त, उपप्रधान—श्री ऊधोदास, श्री गोविन्दराम भावल, श्रीराम-अवतार आर्य, श्री बटेश्वर दयाल, उपमन्त्री—श्री बैजनाथ वर्मा, श्री कृष्णगोपाल दीवान, श्रीरामनाथ, श्री विश्वबन्धु आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री।

द० दिल्ली आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार के लिए पुरोहित चाहिए

दक्षिणी दिल्ली आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार, नम्बर-१, लिंक रोड, फ्लाई ओवर, नई दिल्ली-१४ के लिए योग्य पुरोहित चाहिए। भवदीय-रामशरणदास आर्य, महामन्त्री, दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ओ-१७ बी जंगपुरा विस्तार, नई दिल्ली-१४

एक योग्य सेवाभावी वानप्रस्थी आर्य चाहिए

श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल की अहर्निश सेवा के लिए एक योग्य, शिक्षित सेवाभावी त्यागभाव रखने वाले आर्य विचारो के वानप्रस्थी की आवश्यकता है। आवास, भोजन, पानी-बिजली के अतिरिक्त योग्यतानुसार वेतन ! मामचन्द आर्य, व्यवस्थापक, श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल, हरियाणा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा [illegible] २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : [illegible]०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपए | वर्ष : ७ अंक ४८ | रविवार २५ सितम्बर, १९८३ | २७ आश्विन वि० २०४० दयानन्दाब्द—१५९

३० अक्तूबर, ८३ का दिल्ली शताब्दी कार्यक्रम रद्द

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रधान के निर्देश पर कार्यवाही

अजमेर शताब्दी कार्यक्रम में पूरा सहयोग देंगे : दिल्ली अन्तरंग का निश्चय

नई दिल्ली। मंगलवार २० सितम्बर, १९८३ के दिन शाम को ५ बजे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की विशेष बैठक आर्यसमाज, हनुमान रोड में आयोजित की गई। इस अवसर पर दिल्ली सभा की अन्तरंग सभा के ३२ सदस्य उपस्थित थे। सर्वसम्मति से यह धारणा प्रकट की गई कि आगामी ३० अक्तूबर, १९८३ के दिन दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो के साप्ताहिक सत्सग सामूहिक रूप से आयोजित करना सर्वथा उचित था, परन्तु इस सम्बन्ध मे आर्यजगत् को सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले के इस निर्देश पर विचार किया गया कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर से पूर्व कोई भी प्रान्तीय सभा अथवा आर्यसमाजें स्थानीय अथवा प्रान्तीय स्तर पर न करें। सर्वसम्मति से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा को अधिकार दिया गया कि वे दिल्ली सभा की अन्तरग सभा की भावना सार्वदेशिक सभा के प्रधान को पहुचा देंगे। दिल्ली सभा के प्रधान श्री वर्माजी ने सभा की भावना श्री शालवाले जी को पहुचा दी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले के समस्त प्रतिनिधि सभाओ को दिए निर्देश को देखकर ३० अक्तूबर का कार्यक्रम रद्द कर दिया गया है। समस्त सम्बद्ध आर्यसमाजो, आर्यसस्थाओं एव आर्यजनो से सभा प्रधान श्री वर्मा जी ने अनुरोध किया है कि ३ नवम्बर से ६ नवम्बर १९८३ तक अजमेर मे निर्वाण शताब्दी महापर्व मे वे पूर्ण सहयोग दें। इसके लिए आर्थिक सहायता प्रतिनिधि सभा के माध्यम से शीघ्र अजमेर भिजवा देंगे।

दो विराट देशव्यापिनी तीर्थ यात्राएं की जाएंगी

राष्ट्रव्यापी एकात्मता यज्ञ का आयोजन उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम की अद्वितीय यात्राओं की व्यवस्था

नई दिल्ली। भारत राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए विश्व हिन्दू परिषद् मुख्य स्रोत के रूप में दो अद्वितीय और विराट तीर्थ यात्राओ का आयोजन कर रही है। इनमें से उत्तर से दक्षिण (हरिद्वार से रामेश्वरम्) तक और दूसरी पूर्व से पश्चिम गगा सागर से सोमनाथ तक पूर्ण की जाएगी। दोनो अद्वितीय विराट तीर्थयात्राओं की दूरी ३०००-३००० किलोमीटर के लगभग होगी। देश के विभिन्न भागो और स्थानो से चलने वाली अन्य ४७ सहायक तीर्थयात्राए इनमें सम्मिलित हो जाएगी।

एकात्मता यज्ञ का मुख्य रथ दिनांक १६ नवम्बर, ८३ को प्रबोधिनी एकादशी के दिन प्रस्थान करेगा और गीता-जयन्ती १६ दिसम्बर, १९८३ को अपनी यात्रा पूर्ण करेगा। तीर्थयात्राएं ५० हजार किलोमीटर से भी लम्बे मार्ग को पार करेंगी, १७०० से अधिक स्थानों पर धर्मसभाएं आयोजित होंगी, जहां धर्माचार्यों के भाषण, प्रवचन और संकीर्तन होंगे। अनुमान है कि इस राष्ट्रव्यापी विराट एकात्मता यज्ञ में १० कोटि (करोड़) लोग सहभागी बनेंगे।

आवश्यकता है सेवाभावी आर्य युवक ड्राइवर की

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को प्रचारार्थ ग्रामों में जाने वाले अपने प्रचार वाहन [illegible] के लिए एक नवयुवक आर्य विचारों तथा सेवाभाव वाले कुशल [illegible] ड्राइवर की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। साक्षात्कार के लिए शीघ्र सम्पर्क करें—

सभा मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

हम पृथ्वी माता का सन्तुलन सुरक्षित रखें

नई दिल्ली। रविवार १८ सितम्बर के दिन नई दिल्ली मे विश्व ऊर्जा सम्मेलन का प्रारम्भ ऋग्वेद के सगठन सूक्त के इन मन्त्रों से किया गया—

> सगच्छध्व सवदध्वं संवो मनासि जानताम्।
> देवा भाग यथा पूर्वे सजानाना उपासते॥

(सभी मनुष्य भली प्रकार मिल-जुलकर रहे। सब लोग प्रेमपूर्वक आपस में बातचीत करें। सबके मन में एकता का भाव हो, सब अविरोधी ज्ञान प्राप्त करें। विद्वान् लोग जिस तरह सदा से ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करके उपासना करते रहे हैं, उसी तरह तुम भी ज्ञान और उपासना में लगे रहो)

> समानी व आकूति समाना हृदयानि व।
> समान मस्तु वो मनो यथा व सुसहासति॥

(सबके सकल्प एक जैसे हो, सबके निश्चय एक जैसे हो, सबके आशय एक जैसे हो। सबके मनो मे एक-सी ऊंची भावना हो। सब लोग एक-दूसरे से सहयोग करते हुए अच्छे ढग से अपने कार्य पूरे करें।)

विश्व ऊर्जा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा, "हमे पृथ्वी माता के अच्छे अतिथि बनना चाहिए, हमे न तो उससे अधिक अपेक्षा करनी चाहिए और न ही उसका सवेदनशील सन्तुलन अव्यवस्थित करना चाहिए।"

अथर्ववेद मे पृथ्वी सूक्त मे कहा गया है—

> यत् ते भूमे विखनामि क्षिप्र तदपि रोहतु।
> मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्॥

हे भूमिमाता, जो कुछ भी मैं तेरा खोद डालू, वह शीघ्र ही उग जाए। हे खोजने योग्य भूमिमाता, न तो तेरे मर्मस्थल को और न तेरे हृदय को कभी हानि पहुचाई।

दिल्ली प्रान्त के समस्त आर्य वीर दल, आर्यसमाजें तथा आर्य संस्थाएं ध्यान दें :

श्री बाल दिवाकर जी हंस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के आदेशानुसार दिल्ली प्रान्त की समस्त आर्यसमाजो तथा आर्यजनो से प्रार्थना है कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर मे सेवाए अर्पित करने वाले आर्य वीरो की सूची (नाम, पता तथा आर्यसमाज, आर्य सस्था का नाम) २ अक्तूबर १९८३ से पूर्व अधिष्ठाता आर्य वीर दल दिल्ली प्रान्त, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

आर्य वीरों की गणवेश, आवश्यक बैज आदि लाठी, सीटी, डायरी इत्यादि के उपलक्ष्य में आर्य वीर दल दिल्ली प्रान्त की आगामी बैठक मे जो २ अक्तूबर ८३ (रविवार) मध्याह्न ४ बजे आर्यसमाज मन्दिर लाजपत नगर-II, सी ब्लाक (निकट सी० जी० एच० डिस्पेन्सरी) मे हो रही है विस्तारपूर्वक घोषणा की जायेगी। इसके अतिरिक्त अजमेर जाने की व्यवस्था इत्यादि के उपलक्ष मे भी घोषणा वहीं पर कर दी जाएगी तथा सूचना भी भेज दी जाएगी।

उपर्युक्त बैठक में सम्मिलित होने की सबसे विशेष प्रार्थना है।

हरिदेव आर्य	जगदेव आर्य	प्रियतम दास रखवन्त
मन्त्री	सह सचालक	अधिष्ठाता

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

सर्वोत्कृष्ट मन्त्र -गायत्री

—प्रेमनाथ एडवोकेट

ओ३म् भूर्भुव. स्व तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो न: प्रचोदयात् ।। यजु० ३६।३।।

शब्दार्थ—[ओ३म्] सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर [भूः] हमारा प्राणाधार वो प्राणप्रिय [भुवः] हमारे सब दु.खो को दूर करने वाला [स्व.] सर्वव्यापक सुखस्वरूप है। (उस) [देवस्य] ज्ञानस्वरूप सर्वानन्दप्रद कमनीय [सवितु.] सर्वजगदुत्पादक सर्व-पिता के [तत्] उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य (योग द्वारा आत्मा में ग्रहण करने योग्य) [भर्ग.] सर्वदु.ख विनाशक तेजस्वरूप शुद्धस्वरूप का [धीमहि] हम ध्यान करें [य:] जो (परमात्मा) [न] हमारी [धिय] बुद्धियों को [प्रचोदयात्] प्रेरणा करे अर्थात् कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर चलाए।

व्याख्या—(११ सितम्बर, १९८३ के अक से आगे)—मनुष्य के लिए बुद्धि परमावश्यक है। इसी के द्वारा मनुष्य परा (आध्यात्मिक) वा अपरा (भौतिक) विद्या का लाभ कर सकता है और इसी के द्वारा मनुष्य ऐहिक (सांसारिक) वा पार-मार्थिक (मोक्ष) सुख का लाभ कर सकता है। सब दु.खो का मूल पाप है और पाप बुद्धि भ्रष्ट होने से होता है। गीता में भी आया है—'बुद्धिनाशात् प्रनश्यति' अर्थात् बुद्धि के नाश से मनुष्य नष्ट हो जाता है। जिसकी बुद्धि का सर्वथा नाश हो जाता है उसको हम पागल कहते हैं। जो बुद्धि ऐसी वस्तु है तो इसी की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना सर्वोत्तम वा परमावश्यक है। उक्त गायत्री मन्त्र मे भक्ति के तीनो अग आ जाते हैं अर्थात् स्तुति, प्रार्थना वा उपासना। इस मन्त्र के पदार्थ की व्याख्या विस्तारपूर्वक गत अको में की गई है। यहां पुनरुक्ति की आवश्यकता नहीं। परन्तु इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए सत्यार्थ प्रकाश वा पञ्चमहायज्ञ विधि में अन्त में भावपूर्ण स्तुति प्रार्थना की है। उसको यहा देना समुचित समझता हूं। ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश (तृतीय समुल्लास) मे लिखते हैं—'हे परमेश्वर! हे सच्चिदा-नन्द स्वरूप! हे नित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव! हे अज निरञ्जन निर्विकार! हे सर्वान्तर्यामिन्। हे सर्वाधार जगत्पते! सकल जगदुत्पादक! हे अनादे! विश्वम्भर! सर्वव्यापिन्! हे करुणामृतवारिधे। सवितुर्देवस्य तव यदोम्भूर्भुवः स्ववरेण्यं भर्गोऽस्ति तद्वयं धीमहि दधीमहि धरेमहि ध्यायेम वा। कस्मै प्रयोजनायेत्यत्राह। हे भगवन्। य: सविता देव. परमेश्वरो भग-वानस्माकं धियः प्रचोदयात्, स एवास्माकं पूज्य उपासनीय इष्टदेवो भवतु नातोऽन्यं भवत्तुल्यं भवतोऽधिकं च कञ्चित् कदा-चिन्मन्यामहे।

हे मनुष्यो! जो सब समर्थों में समर्थ, सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप, नित्य शुद्ध, नित्य बुद्ध, नित्यमुक्त स्वभाव वाला, कृपासागर, ठीक-ठीक न्याय का करने हारा, जन्म-मरणादि क्लेशरहित, आकाररहित सबके घट-घट का जानने वाला, सबका धर्ता पिता, उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करने हारा, सकल ऐश्वर्ययुक्त, जगत् का निर्माता, शुद्धस्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है उस पर-मात्मा को जो शुद्ध चेतनस्वरूप है, उसी को हम धारण करें। इस प्रयोजन के लिए कि वह परमेश्वर हमारे आत्मा और बुद्धियों का अन्तर्यामिस्वरूप हमको दुष्टा-चार, अधर्मयुक्त मार्ग से हटाकर श्रेष्ठाचार सत्यमार्ग में चलाए। उसको छोडकर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग न करें, क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है। वही हमारा पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखों का देने हारा है।"

इसी प्रकार पंचमहायज्ञविधि में ऋषि दयानन्द इस मन्त्र की व्याख्या इस प्रकार लिखते हैं—"हे सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप! हे नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव! हे अज। हे निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारिन्! हे करुणामृत वारिधे सवितुर्देवस्य तव यद्वरेण्य भर्गस्तद्वयं धीमहि। कस्मै प्रयो-जनाय? या हि सम्यग्ध्यात प्रार्थित सर्वेष्ट देव. परमेश्वर. स्वकृपाकटाक्षेण स्वशक्तया च ब्रह्मचर्य विद्याविज्ञान सद्धर्म जितेन्द्रियत्व ब्रह्मानन्द प्राप्तिमतीरस्माक धी: कुर्य्यादस्मै प्रयोजनाय। तत्परमात्मस्वरूप वयं धीम-हीति सक्षेपतो गायत्र्यर्थोविज्ञेय:।।

अर्थ—हे सत् (अविनाशी), चित् (चेतनस्वरूप वा आनन्दस्वरूप! हे नित्य पवित्र, नित्य ज्ञानी वा नित्य मुक्त! हे अजन्मा! हे निराकार (आकार काया रहित), सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी! हे कृपालु, सब जगत् के जनक और धारण करने वाले सर्वानन्द परमेश्वर! आपके अति श्रेष्ठ शुद्धस्वरूप को हम धारण करें। किस प्रयोजन के लिए इसलिए कि आप हमारी बुद्धियों को सब बुरे कामों से अलग करके उत्तम कामों में प्रवृत्त करें। ऐसे सम्यक् ध्यान किया हुआ वा प्रार्थित सबका इष्टदेव परमेश्वर अपने कृपा-कटाक्ष वा अपनी अनन्त शक्ति से हमारी बुद्धियों को ब्रह्मचर्य, विद्या, विज्ञान, सद्धर्म, जितेन्द्रि-यत्व ब्रह्मानन्द आदि गुणों से युक्त करे जिससे हमें धर्म, अर्थ, काम वा मोक्ष मनुष्य देहरूप वृक्ष के चार फल प्राप्त हों।"

(अपूर्ण)

अजमेर शताब्दी मनानी है

लेखक—[illegible]

उठो, आर्यों, निद्रा छोड़ो, स्वर्णिम अवसर आया है,
ऋषिवर दयानन्द की महिमा ने स्वरूप दिखलाया है।
उठो, जाति की कसम तुम्हें, अब नव-प्रभात फिर छाया है,
कण-कण मैंने नव जागृति का सन्देश सचित्र सुनाया है।
पार्थिव देह न दयानन्द का किन्तु अमर यश की काया,
उनके शुद्ध-पुनीत कर्म का गौरव छाया मनभाया।
उस गौरव-गाथा की गरिमा तुमको आज दिखानी है,
सभी काम तज अन्य आज अजमेर शताब्दी मनानी है।।

० ० ०

उठो, आंख खोलो, देखो भीषण है झंझावात चला,
देश, जाति के महानाश का अनहोना उत्पात चला।
कल तक जो अपने साथी थे सहसा पराए हैं,
ना जाने किसकी साजिश है, विष के बाण चलाए हैं।।
उन सबका स्वागत करना है, बलि को उद्यत होना है,
करना दृढ़-संकल्प आर्यो अब न तनिक भी सोना है।
ऋषि की आत्मा की गूंजी फिर सकल धरा पर वाणी है,
सभी काम तज अन्य आज अजमेर शताब्दी मनानी है।।

० ० ०

तुम्हें कसम है लेखराम की, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द की,
कसम महाशय राजपाल की, कसम अमर सुमेरसिंह की।
कभी न छोड़ा धर्म जिन्होंने प्राणों का, ना मोह किया,
झूल गए फांसी पर, किन्तु नहीं स्वदेश से द्रोह किया।।
जिनका लहू लोहू बन आया, जिनकी अमर कहानी है,
आज समय आया है फिर वह शक्ति तुम्हें दिखलानी है।
सभी काम तज अन्य आज अजमेर शताब्दी मनानी है।।

० ० ०

देखो, बलिदानों की लाली, फिर पूरब में छाई है,
भारत मा ने उत्सुक होकर दृष्टि आज दौड़ाई है।
काम लेख का बन्द न करना, कलम जगाने वाली है,
अन्धकार कर दूर, दिलों में आग लगाने वाली है।।
बुत पूजा, फिरकापरस्ती, कन्या-विक्रय को बन्द करो,
छोड़ो ईर्ष्या-द्वेष भाव अब नए बनाना छन्द करो।
पुन: चलाओ तर्क-तीर इन सबकी आग बुझानी है,
सभी काम तज अन्य, आज अजमेर शताब्दी मनानी है।।

—ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-११००१६

अनमोल वेदोपदेश

—ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

दान की महत्ता

दक्षिणा देने वाले आकाश में तारों के तुल्य संसार में उच्च स्थिति प्राप्त करते हैं।

सुवर्ण दानी अथवा हित रमणीय सुन्दर उपदेश देने वाले मोक्षरूपी अमृत का सेवन करते हैं।

वस्त्र-दानी अथवा सज्जनों को गृहादि आश्रय देने वाले दीर्घायु प्राप्त करते हैं।

दानकर्ता न मरण को प्राप्त होते हैं और न नीच गति को।

दानशील का धन कभी नष्ट नहीं होता।

अदानशील अपने मित्र [illegible] सहायक, दया करने वाला नहीं पाता।

जो महल करने वाले उत्तम पात्र को [illegible] देता है अथवा जो निर्बल को देता वही उदार है।

[illegible] पूर्ण करने वाला दानशील न देने वाले कंजूस से बढ़ जाता है।

उपदेश करने वाला ज्ञानी मौन रहने वाले ज्ञानी से श्रेष्ठ होता है।

[illegible] कि वह याचक की [illegible]।

[illegible] की रक्षा करते हैं।

जो मित्र की [illegible] करता, वह मित्र नहीं

सच्चे मानव बनो !

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥ ऋ० १०.५३.६

हे मानव, इस जीवन का ताना-बाना बुनते हुए तुम अन्तरिक्ष के सूर्य का अनुसरण करो। मानवीय बुद्धि से विनिर्मित ज्योतिष्मार्गों का सदा संरक्षण करो। भक्तों के कार्यों की समुचित अभिवृद्धि करो। तुम सच्चे मानव बनो। दिव्य गुणों एवं कर्मों वाली सन्तान पैदा करो।

शत्रु या मित्र की ठीक पहचान करें।

पशु-पक्षी एव सामान्य प्राणी भी अपने भले-बुरे की पहचान करते हैं। सांप और नेवले का का विरोध प्रसिद्ध है। कौए और उल्लू की शत्रुता भी प्राकृतिक कही जाती है। इसी प्रकार शेर और हाथी की प्रतिद्वन्द्विता भी कही जाती है। सांप-छछून्दर आदि जन्मगत विरोध की भावना वाले प्राणी भी स्थायी वैर-विरोध रखते हैं। इसी के साथ यह भी कहा जाता है कि ये परम्परागत शत्रु भाव रखने वाले प्राणी भी सच्चे ऋषि-महात्माओं के सान्निध्य में अपना द्वेषभाव भूल जाते हैं और स्नेहभाव से व्यवहार करने लगते हैं। प्राणिजगत का यह स्थायी वैर-विरोध या किसी प्रभाव विशेष से तटस्थता या मैत्री की स्थिति से मानव समाज भी लाभ उठा सकता है। भारतीय राजनीति-विज्ञान के सूत्रधार आचार्य विष्णुगुप्त या महामात्य आचार्य चाणक्य ने परामर्श दिया था कि किसी भी राज्य के स्थायी शत्रु या मित्र नहीं होते। जो अपने लम्बे अनुकूल कार्यों एवं सहयोग से अपनी मित्रता प्रमाणित कर दें तो उन्हे अपना मित्र समझो। इसी प्रकार अपने स्थायी शत्रु के शत्रु को भी अपना मित्र बनाने का प्रयत्न करो। यह भी स्मरण रखो कि किसी भी देश का कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होता। हमें इस कसौटी पर देखना चाहिए कि राजनीति में हमारे देश के सच्चे शत्रु या मित्र नही होते, हमें अपने व्यवहार और शक्ति से निरन्तर अपने मित्र बढ़ाने चाहिएं और शत्रु घटाने चाहिए।

राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के ३६ वर्षों के लम्बे काल मे, कुछ कटु तथ्य उभर कर आए हैं। हमारे राष्ट्र की तटस्थता एवं गुट निरपेक्षता के बावजूद विश्व राजनीति में हम लगभग अलग-थलग पड़ गए हैं। १९६२ में चीनी आक्रमण के समय हमारी निर्बलता एवं असहाय स्थिति जग जाहिर हो गई थी। इसी प्रकार १९६५ तथा १९७१ के पाकिस्तानी आक्रमणों के समय में मध्य पूर्व के अरब राष्ट्र, सयुक्त राज्य अमेरिका आदि का भारत विरोध प्रबल हो उठा था। यह ठीक है कि १९७१ के युद्ध में सोवियत रूस का नैतिक समर्थन प्राप्त था, परन्तु यह भी कटु तथ्य है कि बांगला देश में पाकिस्तानी सेनाओं के आत्मसमर्पण के बाद जब पश्चिमी मोर्चे पर भारतीय सेनाएं निर्णायक कार्रवाही करने के लिए प्रयत्नशील थीं, तब भारतीय सेनाओं की अजेय गति को अमेरिका ने रूस की मदद से रुकवाने में सफलता पाई थी। आज स्थिति इस तरह से विचित्र और विकट बन गई है कि उसे सुलझाने के लिए नीति के कुछ मूल तत्वों को समझना आवश्यक है। सबसे पूर्व तो समस्त भारतीय दलों को यह अनुभव कर लेना चाहिए कि उनके आपसी विरोध हो सकते हैं, परन्तु वे केवल आन्तरिक विषयों के बारे में होने चाहिएं। विदेशियों से व्यवहार में सबको एक और संयुक्त हो जाना चाहिए।

पाण्डव प्रमुख युधिष्ठिर की प्रसिद्ध उक्ति है कि पाच पाण्डव और सौ कौरव आपस में मतभेद एवं द्वेष रख सकते हैं, परन्तु जब उन पर कोई तीसरी विदेशी शक्ति आक्रमण करे तो पांच पाण्डव और सौ कौरव १०५ होकर उनका मुकाबला करेंगे। गन्धर्व राजा के मुकाबले में पाण्डव-कौरव एकत्र हो गए थे। पिछले दिनों पाकिस्तान के जन-आन्दोलन को सरकार द्वारा समर्थन देने पर दो दलों ने राष्ट्रीय नीति की आलोचना की है, जो सर्वथा अनुचित है। एक तो पाकिस्तान भारत का ही एक पुराना भाग है, यदि वहा की जनता भारत राष्ट्र का समर्थन चाहती है तो हमें उसे पूरी शक्ति से उसका समर्थन करना चाहिए। इस दक्षिणी एशियाई महाद्वीप में भारत देश की एक विशिष्ट स्थिति है। भारत को अपने अनन्त साधनों एवं कोटि-कोटि मानवशक्ति का समुचित प्रयोग कर एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरना होगा। नेपाल, बांगला देश, पाकिस्तान आदि पड़ोसी राष्ट्रों के साथ हमें मैत्री सम्बन्ध बनाने चाहिएं, परन्तु यह भी ध्यान रखना होगा कि इन पड़ोसी देशों में विश्व की महाशक्तियां भारत विरोधी मोर्चाबन्दी नहीं कर सकें। यदि भारत अपने साधनों एवं मानवशक्ति का समुचित प्रयोग कर अपनी स्थिति स्पष्ट एवं सबल कर दे तो ये पड़ोसी राष्ट्र हमारे मैत्रीभाव का सम्मान करेंगे। संसार के भारत विरोधी महाराष्ट्र हमारी निर्बलता तथा किंकर्त्तव्य विमूढ स्थिति का ही लाभ उठाते हैं। जिस दिन आर्थिक, सैनिक एव राजनीतिक दृष्टि से भारत अपनी स्थिति महान् और अजेय बना लेगा, विश्व की राजनीति में हमारा विरोध एवं शत्रुभाव स्वतः समाप्त हो जाएगा। वीर राष्ट्रों का ही सम्मान होता है, इतिहास की इस सीख को जीवन में अपनाने से हमें स्थायी मित्र भी मिल सकेंगे।

दिल्ली दूरदर्शन के कार्यक्रमों में हिन्दी की उत्तरोत्तर उपेक्षा।

कुछ वर्ष दिल्ली दूरदर्शन द्वारा जितने भी कार्यक्रम प्रसारित किए जाते थे, उन सबके शीर्षक हिन्दी में हुआ करते थे। किन्तु धीरे-धीरे अनेक कार्यक्रमो के शीर्षक अंग्रेजी में आते जा रहे हैं। यहां तक कि हिन्दी फीचर फिल्म से सम्बन्धित सूचनाए भी लिखित रूप में अंग्रेजी में होती हैं। उदाहरण के रूप में जब फीचर फिल्म के बीच समाचार आते हैं, तब उसके बाद लिखा होता था 'फिल्म का अगला भाग कुछ देर मे' इसकी जगह अब अंग्रेजी में लिखा होता है "नेक्सट पार्ट आफ फिल्म फोलोज"। देखने वाले को यह सब विचित्र लगता है। दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्रों के दर्शक अधिकाशतः हिन्दीभाषी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में तथा छोटे-छोटे नगरों में अधिकाश दर्शक अंग्रेजी के इन वाक्यो को न तो पढ़ पाते होगे और न समझ पाते होंगे। अंग्रेजी कार्यक्रमों से सम्बन्धित सूचना में यदि अंग्रेजी का प्रयोग किया जाए तो वह बात समझमें आ सकती है, किन्तु हिन्दी कार्यक्रमों की सूचना इस प्रकार अंग्रेजी में देने की कोई तुक नहीं बनती। दिल्ली दूरदर्शन पर प्रति सप्ताह प्रादेशिक चित्रहार आता रहा है। उसके माध्यम से दिल्ली वासियों को तथा आसपास के हिन्दी भाषी क्षेत्रों के दर्शकों को हिन्दी से अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के गानों तथा उन फिल्मों के अंशों का रसास्वादन करने का अवसर मिलता रहा है। एकता की भावना बढ़ाने की दृष्टि से यह कार्यक्रम निःसन्देह उपयोगी है। किन्तु इसकी उपयोगिता कम की जा रही है। पहले इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदर्शित किए जाने वाले विभिन्न अगों मे फिल्मों के नाम आदि देव नागरी लिपि में दिए जाते थे, जिससे सामान्य दर्शक भी यह समझ पाते थे कि फिल्म कौन-सी है तथा किस भाषा की है। अब न जाने क्यो अनेक वर्षों से चली आ रही परम्परा को बदलकर कार्यक्रम का नाम, फिल्मो का नाम तथा उनकी भाषा का विवरण आदि केवल रोमन लिपि मे दिया जा रहा है। इससे तो इस इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य काफी कुछ नष्ट हो जाता है। आवश्यकता है कि यह प्रवृत्ति बदली जाए तथा दिल्ली दूर दर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमो से सबधित सूचनाए मुख्यतः हिन्दी तथा देव नागरी लिपि में लिखी जाए। जो कार्यक्रम अंग्रेजी के हो वहां यथा आवश्यकता अंग्रेजी आदि का प्रयोग सीमित रूप मे किया जाए।

—हरिबाबू कंसल, प्रचार मन्त्री, दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
रामकृष्ण आश्रम मार्ग, नई दिल्ली-१

यजमान-व्रती बनो !

मानव समाज के ऊपर महर्षि दयानन्द जी के अनन्त उपकार हैं, विशेष करके नारी जाति व पिछड़े वर्ग के लोगों पर। महर्षि जी की मृत्यु को सौ वर्ष बीते, परन्तु उऋण होने के पर्याप्त प्रयत्न आर्यों ने नहीं किए हैं। मनुष्य मात्र का चरित्र पतन की ओर जा रहा है। आगामी दीवाली पर महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर एक सुनहरा अवसर आया है, वह जीवन में फिर नहीं मिलेगा। निश्चय ही नहीं मिलेगा। महर्षि जी की पुण्य स्मृति में निर्वाण शताब्दी के अवसर पर चतुर्वेद परायण यज्ञ पर एक लाख रुपये से ही अधिक व्यय होना है। आर्यो! इस यज्ञ मे यजमान-व्रती बनो। कोई टैक्स या फीस नहीं, पुण्य कमाओ, महर्षि ऋण कुछ तो चुकाओ, जीवन सफल बनाओ।

—दयानन्द वानप्रस्थी, अध्यक्ष, चतुर्वेद पारायण यज्ञ, व सचालक
तपोवन आश्रम, देहरादून

आर्यसमाज सान्ताक्रुज और कैप्टन देवरत्न आर्य

मुझे ज्ञात हुआ है कि परोपकारिणी सभा अजमेर के कुछ अधिकारी एव कर्मचारी यह मिथ्या प्रचार कर रहे हैं कि कैप्टन देवरत्न आर्य जो हमारी समाज सान्ताक्रुज के पिछले तीन वर्षों से महामन्त्री रहे, उनको जून १९८३ मे हुए अन्तरग सभा के नव-निर्वाचन के समय हमारे कहने से महामन्त्री अथवा किसी पद पर नही रखा गया है। इस आशय के अनेक समाचार विद्वानों एव आर्य नेताओ से हम प्राप्त हुए हैं। इस विषय में मैं यह जानकारी सूचनार्थ देना चाहूंगा कि साधारण सभा मे निर्वाचन के समय कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपने तीन वर्ष के कार्यकाल की रूपरेखा सदस्यो के सामने पढकर सुनाई तब उन्होंने स्वय ही कहा था कि "मैं कम से कम एक वर्ष के लिए कोई भी पदाधिकारी नहीं बनकर यह आदर्श स्थापित करना चाहता हू कि हम दयानन्द की सम्पत्ति को मठ नहीं बनाएं।" मेरी सेवाएं आर्यसमाज को आवश्यकतानुसार सदैव मिलती रहेगी। वह अपने इस निश्चय पर दृढ़ रहे। अतः हम उनको किसी भी पद पर निर्वाचित करने में असमर्थ रहे।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने इस आर्यसमाज का कार्य और ऋषि के बताये आदर्शों को कितने सुचारु रूप से सम्भाला जिसके कारण आर्यसमाज सान्ताक्रुज की देश व विदेशो मे ख्याति हुई है। ऐसे सुयोग्य उत्साही व विद्वान् व्यक्ति के लिए ऐसे मिथ्याप्रचार की निन्दा की जानी चाहिए।

—प्रकाशचन्द मूना, प्रधान, आर्यसमाज सान्ताक्रुज, बम्बई-५४

योग मार्ग का अनन्य साधन : पांचवां नियम-ईश्वर-प्रणिधान

—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

श्रेष्ठ जीवन निर्माण के साधनों मे यम-नियम मूलाधार माने गए हैं—योगदर्शन मे। हम नियमो की व्याख्या कर रहे हैं। 'आर्य सन्देश' के पिछले अंकों में इस व्याख्या के प्रसग में 'शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय'—इन चार नियमो पर विचार किया जा चुका है। पाचवा नियम 'ईश्वर-प्रणिधान' है। योगदर्शन, साधन पाद सूत्र १ में क्रियायोग का लक्षण करते हुए 'तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान' इन तीन का समावेश किया गया है। योगदर्शन समाधिपाद के प्रारम्भ मे वृत्ति और सस्कारों के अहर्निश चलने वाले चक्र को सूत्र २२ में मृदु, मध्य और अधिमात्र—तीन भागो मे विभक्त करते हुए इनके सयम और निरोध का उपाय सूत्र २३ में 'ईश्वर प्रणिधानाद्वान' द्वारा 'ईश्वर-प्रणिधान' का निर्देश किया गया है। साधन पाद सूत्र ३२ मे पाच नियमो का निर्देश करते हुए पाचवें नियम मे पातजल ऋषि ने फिर तीसरी बार 'शौच सन्तोष तप स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमा.' में पांचवां नियम ईश्वर प्रणिधान-उपदिष्ट किया है। सम्पूर्ण योगदर्शन मे 'ईश्वर प्रणिधान' के अतिरिक्त अन्य कोई शब्द नहीं हैं—जिस पर, विभिन्न प्रकार से, इतना बल दिया गया हो।

ईश्वर और प्रणिधान

'ईश्वर-प्रणिधान' मे दो शब्द हैं—ईश्वर और प्रणिधान। समाधिपाद के २४ वें सूत्र मे ईश्वर का लक्षण इन शब्दों में है—'क्लेश कर्म विपाकाशयैरपरामृष्ट. पुरुष विशेषईश्वर'। इस सूत्र मे कहे गए 'पुरुष' शब्द के दो अर्थ हैं—'जीवात्मा और परमात्मा'—दोनो ही चेतन हैं। 'जीवात्मा' कर्म करने मे स्वतन्त्र पर फल भोगने मे परतन्त्र होने के अतिरिक्त देहादि सम्बन्ध से प्रकृति के सम्पर्क मे भौतिक शरीर द्वारा जुडा हुआ है। बिना स्थूल शरीर के जीवात्मा न तो कर्म कर सकता है, न ही उनका फल भोग सकता है। पर 'ईश्वर' को 'पुरुष विशेष' शब्द से निर्दिष्ट करते हुए शास्त्रकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कर्म करने व उसके फल भोगने से सर्वथा असम्पृक्त वह 'ईश्वर' अर्थात् 'ऐश्वर्य गुणयुक्त' है। इस 'ऐश्वर्य' शब्द के अन्तर्गत सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी के अतिरिक्त अनन्त गुण हैं, जैसे—ऋषि दयानन्द द्वारा उपदिष्ट आर्यसमाज के १० नियमो के अन्तर्गत दूसरे नियम में इन शब्दों मे वर्णित हैं—'ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता'।

उस सूत्र में उस ईश्वर को (१) क्लेश, अर्थात् ५ क्लेश, जैसे अविद्या, अस्मिता, (अहंकार) राग, द्वेष, अभिनिवेश (जन्म-मृत्यु) (२) कर्म पुण्य पाप आदि (३) विपाक—इन कर्मों के फल-परिणाम सुख, दु:ख के रूप में (४) आशय—इन कर्मों के सस्कार, वासना आदि से सर्वथा असम्पृक्त वह ईश्वर है।

योग सूत्र में कथित 'प्रणिधान' का अभिप्राय है—सर्वथा एकाग्र और अनन्य चित्त से पूर्ण निष्काम व्यक्ति द्वारा इस अनन्त गुण भडार प्रभु के प्रति विनम्रता और विनय से आत्म समर्पण पूर्वक उपासना-ध्यान-चिन्तन करना।

ईश्वर प्रणिधान का फल-प्रज्ञा

इस प्रकार सतत सम्प्रादित 'ईश्वर-प्रणिधान' का फल क्या होगा—पातजल ऋषि योग दर्शन साधनपाद सूत्र ४५ में कहते हैं—'समाधि सिद्धि ईश्वर-प्रणिधानात्'। सर्वात्मना प्रभु समर्पित साधक इस प्रकार अपने को अकिंचन पर प्रभु को ही अकल्पनीय प्राथमिकता और महत्त्व सहित समर्पण द्वारा उपासना में अहर्निश संलग्न उसी की सर्वव्यापक गोदी में अपने को सन्निविष्ट सफलता, प्राणिमात्र के प्रति आत्मीयता और निर्वेद की वृत्ति से, चित्त मे अवर्णनीय आह्लाद, आनन्द, निर्भयता, प्रसाद अनुभव से योगी प्रज्ञा तत्त्व को उद्दीप्त कर लेता है। उपनिषत्कार ने कहा है समाधि द्वारा जिस व्यक्ति ने अपने चित्त के सब मलों को दूर कर अपने को प्रभु अर्पण कर लिया है, उसे जो आनन्द होता है, वह वाणी से नही बताया जा सकता, केवल अन्त करण से अनुभूत होता है। आपाद मस्तक उन्मार्ग गामी जेहलम (अब पाकिस्तान) के तहसील दार अमीचन्द मेहता के सत्सग में गाए एक भजन को सुनकर ऋषि दयानन्द ने जब यह कहा कि "है तो हीरा पर कीचड़ मे पड़ा है"—उसके जीवन में एकदम क्रान्ति आ गई। ऋषि भक्त दृढ आर्य, सदाचारी और आर्यसमाज का सेवक बन गया। उसके भजन प्रभुभक्ति रस पूर्ण और अन्तरात्मा से निकले चमत्कारी स्वर युक्त हृदयस्पर्शी हैं। उपनिषद् के उक्त सम्बोधन पर आधारित इस प्रभु भक्त के निम्न शब्द कितनी गहरी आत्म अनुभूति के द्योतक हैं—

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया,
वाणी से जाये वह क्यो कर बताया ?
गूंगे की रसना के सदृश कैसे बताऊं,
इस आत्मा ने वह क्या रस उड़ाया ?

तीन उपाय : संस्कार चार प्रकार के

इस आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के उपाय क्या हैं—जो आज के युग में एक सामान्य व्यक्ति भी शुचि भावना से कर सकता है ? इसका उत्तर योगदर्शन के समाधिपाद सूत्र १४ में निम्न शब्दों में—

स तु दीर्घकाल नैरन्तर्य
सत्कारासेवितो दृढ़भूमिः।

तीन उपाय बताए गए हैं। प्रथम—दीर्घकाल। चिरकाल से आत्मा में संचित कर्मराशि के संस्कार बार-बार उभरते रहते हैं। इनमें पाप-पुण्य और दोनों प्रकार के सस्कार होते हैं। जिनके पाच रूप हैं—(१) प्रसुप्त अर्थात् वह संस्कार जो चित्तभूमि मे सोये हुए के समान हैं। सामान्य व्यक्ति इन्हें न जानता है और न जानने का प्रयास करता है। कभी अनुकूल स्थिति में ये उभर आते हैं। (२) तनु—अत्यन्त सूक्ष्म रूप में चित्तभूमि मे से ऊपर निकल आते हैं। हम प्रतिदिन देखते हैं कि एक व्यक्ति बडा पापी है पर कभी वह श्रेष्ठ कर्म कर डालता है। इसके विपरीत श्रेष्ठ व्यक्ति जिसकी सर्वत्र मान्यता है, पाप करता है। लोग दोनों प्रकार के व्यक्तियों पर आश्चर्य से कहते हैं कि ऐसा कार्य किया जिसकी इससे न कभी आशा न थी। (३) विच्छिन्न—जैसे किसी पौधे का बीज खेत में से एक-आध अंगुल ऊपर आ जाता है, इसी प्रकार यह संस्कार अनुकूल वातावरण में प्रकट हो जाते हैं। जैसे—सत्संग से वापस घर आ रहा एक व्यक्ति किसी दीन-दुखिया को अनायास दो रुपये दे देता है। वही व्यक्ति आगे जाकर बाजार से सब्जी खरीदता दूकानदार को अन्य ग्राहकों के प्रति अत्यन्त व्यस्त देख दो-तीन आलू अपने थैले में डाल लेता है। (४) उदार—भूमि मे डाला और माली द्वारा किंचित रक्षित बीज ऊंचा वृक्ष बन जाता है—इसी प्रकार उपर्युक्त तीनो प्रकार के संस्कार अनुकूल परिस्थिति मे प्रबल रूप में प्रकट हो जाते हैं। जैसे पाप-पक में ग्रस्त मुशीराम युवक बरेली मे महर्षि दयानन्द के—पिता के बार-बार आग्रह पर सर्वथा अनिच्छा से सत्सग मे केवल आध घण्टे के उपदेश से महात्मा मुशीराम बन गया। दूसरी ओर महात्मा गांधी का एक पुत्र हीरालाल इतना दुर्व्यसनी बन गया—कभी मुसलमान और कभी हिन्दू—कि गाधीजी को उससे किसी भी प्रकार सम्बन्ध व उसका दायित्व लेने से इन्कार करना पड़ा।

एक ही लक्ष्य : एक ही मार्ग

इसलिए आखिर उन्नति के लिए जो भी सात्त्विक निश्चय करो वह अधिक से अधिक ही नहीं, किन्तु समूचे जीवन तक, पूर्ण श्रद्धा से प्रतिदिन-प्रतिक्षण उसका पालन, विपरीत परिस्थितियों और बाधाओं के बावजूद यदि साधक करेगा तो नि सन्देह मोक्ष पद का अधिकारी हो जाएगा।

ईश्वर-प्रणिधान युक्त क्रिया योग का मार्ग निश्चय ही लम्बा है, आज का उतावला और चुटकी में फल का इच्छुक व्यक्ति इतने दीर्घ मार्ग का नाम सुनते ही घबरा जाता और थकावट अनुभव करता है, पर याद रखो, यही एक मार्ग है, अन्य कोई नहीं। इसमें 'शार्टकट' व परीक्षा पास करने की कुंजी का मार्ग नहीं है। वेद के शब्दों में "नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय" मोक्ष का और पाप पर पुण्य की विजय प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग नहीं है। यह आम धारणा एकदम अशुद्ध और अपने को धोखा देने वाली है कि उद्देश्य एक हो पर उस तक पहुचने के अनेक मार्ग हो सकते हैं। अगर प्रभु एक है और मोक्ष का स्वरूप एक है तो उसका मार्ग भी एक ही होगा। यही वैदिक धर्म की शिक्षा है। मनु के निम्न शब्द सर्वथा सत्य और प्रेरक हैं—

(१) धर्म शनै. सचिनुयाद्
वाल्मीकिमिव पुत्तिका।
परलोक सहायार्थं
सर्वभूतान्य पीड़यत् ॥
(२) तस्याद धर्मं सहायार्थं
नित्य सचिनुयात् शनैः।
धर्मेण हि सहायेन
तमस्तारति दुष्करम् ॥

अर्थात्—मनुष्य जैसे दीपक [illegible] (मनु ४।२३८ और १७२) बाकी धीमे-धीमे बनाता है, उसी प्रकार धर्म का शनै.शनै. संचय करे। नित्य प्रति करे। इस प्रकार धर्म की सहायता से महान् अधकार को पार कर लेता है।

पता—के० सी० ३७।बी० अशोक विहार
दिल्ली-५२

सुख के इच्छुक जीव जागरूक बन

—चमनलाल, प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार

हमारे निवास का अधिष्ठान यह ससार विरोधी तत्त्वों से घिरा है। यहां सघर्ष ही संघर्ष है। जीवन पथ बड़ा कटीला, ऊबड़-खाबड़ और पथरीला है। पदे-पदे वासनाओं और आसुरीय वृत्तियो के बड़े-बड़े गढ़ हैं, जीव को जीवन की सफलता के लिए इन से बचकर चलना होगा। चाहे यह इहलौकिक अथवा पारलौकिक हो, मानव को इन सब प्रकार के व्यवहारों में सजग, सावधान, सतर्क और जागरूक होकर कदम उठाना होगा। जो आदमी जीवन के प्रत्येक व्यवहार में चाहे वह छोटा हो बड़ा-सदा सर्वदा चौकन्ना, सावधान, मुस्तैद, सतर्क, चौकस और जागरूक रहता है, वह ही सफल जीवन होता है, उसको ही सब अभिलिषित वस्तुएं प्राप्त होती हैं। इसके विपरीत काहिल, सुस्त असावधान और सोने वाले व्यक्ति को तो पेटभर रोटी भी कठिनाई से प्राप्त होती है। विद्यार्थी के ही जीवन को लीजिए—जो विद्यार्थी चाहे वह स्कूल का हो अथवा कालिज का, विश्वविद्यालयों का हो वा किसी शोध काम में लगा हो-यदि वह अपने कार्य कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहता है और खाना, पीना, सोना विश्राम करना यथा पढ़ना लिखना पहले ही से सुनिश्चित समयानुसार करता है, प्रत्येक विषय को जितना चाहिए उतना ही समय देकर परीक्षा की तैयारी करता है, हम सभी जानते हैं कि ऐसे जागरूक विद्यार्थी सफल मनोरथ होते हैं, और दूसरे समय को व्यर्थ में खोने वाले और अपने पाठों की अवहेलना करने वाले सदा रोते ही दिखाई देते हैं। विद्यार्थी जीवन मे जागरूक होने की अपेक्षा उद्योग और व्यापार में लगे लोगो की और भी कहीं अधिक सावधान, जागरूक रहने की अत्यन्त आवश्यकता है। इस क्षेत्र मे तो व्यापारी जरा चूका और बस लाखों रुपए खो बैठता है। अपने धन्धे में प्रति क्षण चौकन्ना आदमी थोड़े ही समय मे लाखों का स्वामी बना दिखाई देता है। मार्केट में भावों का बढ़ना, घटना आयात् निर्यात की नीतियों की जानकारी खरीदने बेचने सम्बन्धी बातों और लोगों की धारणा के प्रति जागरूक रहना सफलता का एक बड़ा महत्वपूर्ण लक्षण है। मेरे एक मित्र बड़े उद्योगपति (जिनका स्वर्गवास हो चुका है) कहा करते थे कि मैं अपने उद्योग में दो बातों के प्रति विशेष तौर से हर क्षण सतर्क और जागरूक रहता हूं वे हैं श्रमिक आन्दोलन और आयकरों का छापा। इन दोनों बलाओं का आने का संदेह होने पर मैं जैसे तैसे किसी भी कीमत पर उनको रोकने का प्रयत्न करता हूं और यही जागरूक होना वह कहा करता था, मेरे उद्योगपति होने का एक खास कारण है। उद्योगपतियों और व्यापारियो को देखते हैं, उनके जीवन पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है, कि आरम्भ मे उन्होने अपने धन्धों का बहुत छोटे स्तर पर कार्य करना शुरू किया था, परन्तु अपनी सूझ-बूझ और हर समय प्रतिक्षण अपने कार्य के प्रति जागरूक होने के कारण ही वे आज इतने ऊंचे स्थान को प्राप्त कर पाये। कुछ ही दिन पहले महान एक बहुत सफल उद्योगपति (जी० डी०) बिरला का लन्दन मे देहान्त हुआ था—सब जानते ही हैं कि वह इतनी आयु में भी अपने उद्योगो के प्रति कितने जागरूक और सतर्क थे कि वह वहां इसी काम के वास्ते गए थे। इसके विपरीत हम यह भी देखते हैं। कि बडे स्तर पर काम आरम्भ करने वाले परन्तु सतर्क और जागरूक न होने के कारण सब कुछ खो बैठे। और ऐसे असावधान लोग इस सतर्कता गुण के अभाव मे अपनी जरा-जरा सी लापरवाही के कारण उनके पास नौकरी करते दीख पड़ते हैं जिनको पहले वह स्वय वह अपने अधीन रखते थे।

इसी प्रकार कृषि धन्धे मे लगे किसान भाइयो को तो अच्छी फसल प्राप्त करने के वास्ते बहुत ही सावधान और जागरूक होने की आवश्यकता है। जो किसान भाई सही समय पर जमीन को तैयार करना समय पर ठीक सही बीज बोने, नियत समय पर उर्वरक लगाने याने देने, और जाच करने पर यदि खेती को कीड़ा लग गया है तो समय पर उचित दवाई आप छिड़कने और खरपतवार निकालने के काम मे लापरवाही और आलस्य करता है तो दूर दर्शन पर समय-समय परचेतावनी दी जाती है ऐसे लोगो को पूर्ण फसल नही मिलती। इसके विपरीत हर समय सतर्क रहने वाले किसान भाई बहुत अच्छी फसल करते हैं। यही नहीं एक ग्रामीण लोकोक्ति है—

जागतों की कटड़िया सोतो के कटड़े।

इसमें एक बहुत बड़ा तथ्य छुपा है कि आलसी प्रमादी मनुष्य में सब कुछ ही गवा बैठता है। बात कुछ ऐसी है कि ग्रामीण लोग गाय, भैंसों का व्यापार भी करते हैं और वे बियाने वाली भैंसों आदि को कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े नगरों मे बेचने जाते हैं। कई-कई मिलकर प्रकृति से ही उनमें कुछ बडे सचेत और चालाक होते हैं और कुछ आलसी राम भरोसे सब काम करने वाले। किसी रात्रि उनमे से किसी की भैंस ने कटड़ा दिया और दूसरे की भैंस ने कटड़ी। दैवयोग से कटड़ी वाला सो रहा होता है और दूसरा जिसकी भैंस ने कटड़ा दिया था जाग रहा होता है। उसने तुरन्त अपना कटड़ा उस सोते हुए दूसरे की कटडी से बदल लिया। ऐसा हम माता वा नर्स के जागरूक न होने के कारण अस्पतालो में बच्चे बदलने व उठा ले जाने की घटनाएं समाचार पत्रों में पढ़ते हैं। पांच सहस्र वर्ष पूर्व की घटना से कौन परिचित नहीं है कि वासुदेव ने कितनी सतर्कता और सावधानी से कस के पहरेदारों की लापरवाई के कारण अपने नवजात शिशु (जो बाद में योगीराज कृष्ण के नाम से प्रसिद्ध हुआ) को नन्द की नवजात लड़की से बदलकर अपने पुत्र की जान बचाई और यह वही कृष्ण है जो जीवन मे प्रतिक्षण जागरूक रहा और हर क्षण सावधान और सचेत रहकर पाण्डवो को विजयी कराने मे सफल हुआ और औरङ्गजेब की कैद से छत्रपति शिवाजी की मिठाई के टोकरे में छिपकर निकलना नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का पठान की वेश भूषा में अंग्रेजो के राज्य से निकलकर विदेशों में जाना—यह सब उनके अत्यन्त जागरूक और सतर्क होने के परिणामस्वरूप ही तो हुआ था। और तो और कोई भी वाहन चालक—स्कूटर, साइकिल, कार, हवाई जहाज अथवा रेलगाडी कोई भी वाहन हो—ये अपनी और दूसरो का जान अपने जागरूक होने के कारण बचा सकते हैं और इसके विपरीत जरा-सी असावधानी और लापरवाही के कारण सहस्रो लोगो की जान ले बैठते हैं। यही हाल युद्ध मे सैनिकों और सेनापतियो का है। सभी जानते हैं द्वितीय विश्व महायुद्ध मे जब तक हिटलर जागरूक और शत्रु के हथकण्डो और षड्यन्त्रो से सावधान रहा विजय उसके पाव चूमती रही परन्तु उसकी जरा-सी भूल और असावधानी के कारण वह रूस के अन्दर दूर तक जाकर बर्फ मे फस गया और उसको वहा से वापस आने का अवसर न रहा। परिणाम यह कि वही उस विजेता की पराजय का कारण हुई और उसकी पराजयने संसार का नक्शा ही बदल दिया। वेद के अनुसार जीवन में जागरूक होना अत्यन्त आवश्यक है और आलसी प्रमादी को कुछ भी प्राप्त नही होता। सारे ऐश्वर्य सदा-सर्वदा जागरूक को मिलते हैं।

यह ज्ञातव्य है कि हमारे मनीषियो ने हमारे जीवन को द्विचक्र वाहन कहकर पुकारा है इसमे एक आधिभौतिक अभ्युदय और दूसरा आध्यात्मिक निःश्रेयस का है। इन दोनो की प्राप्ति के लिए अथवा इन दोनो को ठीक तौर पर रखने में ही जीवन की सफलता मानी जाती है। अथर्व वेद (२।७२।१) मे यह स्पष्ट कर दिया है कि वेदवाणी के अनुष्ठान से हमको दोनो ही प्रकार के मङ्गल उपलब्ध होते हैं—

स्तुता मया वरदा वेदमाता,
प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयु: प्राण प्रजां पशु कीर्ति द्रविणं
ब्रह्मवर्चसम्। मह्य दत्वा व्रजत
ब्रह्मलोकम्॥

परन्तु जिस प्रकार सासारिक ऐश्वर्य यह सात प्रकार के मङ्गल प्राप्त करने के लिए कितने जागरूक सावधान होने की आवश्यकता का विवेचन हम ऊपर कर आये हैं, तो जीवन सुलभ विकास और सफलता के लिए ब्रह्मलोक को प्राप्त करने की भी नितान्त आवश्यकता है। हमारे हृदयान्तरिक्ष में देवासुर सग्राम चलता है। इसके विध्वंस के लिए आत्मा को जागरूक होने की विशेष आवश्यकता है। जरा भी असावधान होने से दुष्प्रवृत्तिया आत्मा दबा देती है। और वह ब्रह्मलोक नाकस्य शर्माणि सोम अथवा परमात्मा को प्राप्त करने से वञ्चित रह जाता है। अत. वेद चेतावनी देता है—ऋग्वेद, सामवेद

यो जागार तमृचा. कामयन्ते
यो जागर तमु सामा नियन्ति,
यो जागर तमय सोम आह तवाहम
स्मि सख्ये न्योका।

भावार्थ यह कि जो व्यक्ति आलस्य प्रमाद, निद्रा को परे फेंककर सतर्क, सावधान जागरूक होकर वेद का स्वाध्याय करके पद के और उसका मर्म समझाने के लिए भरपूर परिश्रम करता है वेद उसी को चाहता है। वेदमन्त्रो ऋचाओं का गूढ अर्थ और रहस्य उसकी समझ मे आता है। वेद तो सब प्रकार के वरदानो को देकर सौम्य स्वभाव प्रभु को भी प्राप्त कराने की क्षमता रखता है। आलसी असावधान प्रमादी को वेद की ये ऋचाएं भी कुछ लाभ नही पहुचा सकती। वेद के ऐसे जागरूक विद्यार्थी के आगे सचमुच भगवान अपने पट खोल देता है और कह देता है। तवाहमस्मि सख्ये न्योका अर्थात् मैं सदा सर्वदा तेरी मित्रता मे रहूगा। मेरा निवास मेरे ज्ञान का प्रकाश सदा तेरे हृदय मे रहेगा। भगवान सोम हैं उनमे चन्द्रमा की-सी शान्तिदायक आह्लादकता है। उस शान्ति और आनन्द धाम के हमारे (जागरूक व्यक्तियो) हृदयो मे निवास हम भी अवर्णनीय शान्ति और आनन्द के समुद्र मे गोते लगाने लगेंगे और तब इसरसके समुद्रभगवान के इस दर्शन—इसके साक्षात्कारसे हमे जीवन का चरमलक्ष्य एक मात्र लक्ष्य प्राप्तहो जागगा। सचमुच जो व्यक्ति राष्ट्रऔर देश जागरूक चौकन्ने रहे हैं व रहतेहैं, वही सुख शान्ति समृद्धि के भागी बनतेहैं। मानव जाग, अपने ध्येय को जागरूक होकर कार्य करें।

भारतीय वर का जापानी वधू के साथ विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान मे रविवार दिनांक ११-९-८३ को आर्यसमाज मन्दिर में अजमेर निवासी श्री सुरेश वल्द कन्हैयालाल का नारा (जापान) निवासिनी वरिको उर्फ रानी का आदर्श विवाह वैदिक रीति से श्री देवदत्त जी शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जापान से आये वधू पक्ष के सदस्य भारतीय वैदिक रीति से सम्पन्न विवाह को देखकर बहुत प्रभावित एव प्रसन्न हुए।

आर्यसमाज की ओर से इस अवसर पर वर-वधू को सत्यार्थ प्रकाश ग्रथमाला का सैट भेंट स्वरूप दिया गया। उपस्थित समाज के गणमान्य सदस्यो ने वर-वधू को आशीर्वचन दिया।

आर्य जगत् समाचार

आर्यो, चरित्रवान् बनो-देश में सुराज्य लाओ !

सन् १८५७ के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम सेनानी ऋषि दयानन्द का मत था कि परकीय एव विदेशी अच्छा राज्य (सुराज्य) स्वकीय चाहे दोषपूर्ण राज्य हो, स्वराज्य से अच्छा नहीं। लालच एव प्रलोभन के आधार पर कायम किया हुआ सुराज्य चन्द अर्से के लिए भोली-भाली जनता पर हावी होकर गुमराह कर सकता है, परन्तु स्वकीय जनहितार्थ कायम किया हुआ राज्य सदा के लिए प्रजा को सुख एव ऐश्वर्य प्रदान करने वाला होगा। भारत को जब आजादी मिली तो आर्यसमाज ने देश हिताय अनेक कल्याणकारी योजनाए बनाई। ससार मे भारत के गौरव सवर्द्धन हेतु नानाविध कार्यक्रम जनता के समक्ष प्रस्तुत किए, विश्व मे आर्यसमाज की धूम मच गई, परन्तु जबसे आर्यसमाजी बन्धु दूसरों के पीछे चलने लगे, तबसे उनमे निष्क्रियता आ गई। आर्यसमाज में वैदिक धर्मावलम्बी साधु-सन्तो, महात्माओ तथा विद्वानो का जो आदर होता था, वह भी वैसा नही रहा। सभाओ, सम्मेलनो यहा तक कि वेद पारायण यज्ञों तक में जनसमूह एकत्र करने अथवा आर्थिक लाभ की दृष्टि से जब सर्वोपरि स्थान धनाढ्यो और मन्त्रियो आदि को दिया जाने लगा है, देशभक्त-विद्वान् तो सदा आदरास्पद हैं, परन्तु सिद्धान्तहीनो-चरित्रहीन व्यक्तियो को विद्वज्जनो की अपेक्षा विशेष सम्मान देना अच्छा नहीं।" लेखक को मथुरा मे महर्षि जन्म शताब्दी देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, १९३३ मे अजमेर में महर्षि निर्वाण अर्द्ध-शताब्दी मे भी भक्ति भावना का अवलोकनीय दृश्य उपस्थित हुआ था।

अब जब कि महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी (३ से ६ नवम्बर तक) अजमेर मे मनाई जा रही है, तो हमें इस अवसर को एक महान् मेले के रूप मे न मनाकर एक ऐसे रूप मे मनाना चाहिए जिससे ऋषि का देशोद्धारक कार्यक्रम पूरा किया जा सके। आर्यसमाज के सम्मुख अनेक आवश्यक कार्यक्रम हैं, जिन्हे पूर्ण करना है। इस अवसर पर देश-विदेश के वैदिक विद्वान् एकत्र होगे, वही पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके ऐसा कार्यक्रम निर्धारण किया जाए, जिससे आर्यसमाज पूर्ववत् सक्रिय हो और विश्व में वैदिक निनाद गुजायमान हो। साथ ही आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक, शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति द्वारा ससार का उपकार हो।

—राजर्षि राजा रणंजयसिंह, अमेठी (उ० प्र०)
मू० पू० प्रधान, आ० प्र० सभा उ० प्र०

कुरेशी बेगम उमादेवी बनीं

कानपुर—आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे एक विशेष शुद्धि समारोह में समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने २६ वर्षीय मुस्लिम युवती श्रीमती कुरेशी बेगम को उनकी इच्छानुसार हिन्दू धर्म ग्रहण कराया। उसका नाम श्री उमादेवी रखा गया। शुद्धि के बाद उनका विवाह श्री उमेश चन्द्र केसरवानी के साथ कराया गया।

इससे पहले जिला परिषद् कानपुर के नव निर्वाचित मुस्लिम सदस्या कु० बतुलन ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया था तथा उसका नाम विमला देवी रखा गया था। दोनों मुस्लिम युवतियों को आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने वैदिक धर्म की दीक्षा दी। और यज्ञोपवीत पहना कर गायत्री मन्त्र का पाठ पढाया।

आर्यसमाज फरीदाबाद में ३ दिन का कार्यक्रम
विधर्मियों के षड्यन्त्र के विरुद्ध नेताओं का उद्बोधन

आर्यसमाज फरीदाबाद शहर ने दिनाक ९ से ११ सितम्बर तक देश की ईसाइयत और इस्लामी करण के घोर षड्यन्त्र के विषय में तीन दिन का भव्य कार्यक्रम रखा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए स्वामी जगदीश्वरा नन्द जी सरस्वती नैष्ठिक ब्रह्मचारिणी रामदेवी ने अपना मूल्यवान तीन दिन का अमूल्य समय दिया। दिनाक ११-९-८३ को श्री धर्मवीरी जी को वाणप्रस्थ की दीक्षा दी। वाणप्रस्थ की दीक्षा के बाद उनका नाम गोरक्षक आनन्द रखा गया।

शान्ति का मनोविज्ञान विषय पर वेदगोष्ठी

१० और ११ सितम्बर को डॉ प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति की ओर से दिल्ली विश्वविद्यालय के कला सकाय में एक वेदगोष्ठी आयोजित की गई। वेद के अधिकारी विद्वान डॉ फतेहसिंह ने शान्ति का मनोविज्ञान विषय का प्रतिपादन वेद एव आधुनिक मनोविज्ञान के आधार पर किया।

दो दिन की इस वेदगोष्ठी मे दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ सत्यकाम वर्मा ने अध्यक्षीय भाषण दिया। इस समारोह मे मुख्य अतिथि थे भूतपूर्व ससद सदस्य प्रो० विजयकुमार मल्होत्रा। इस वेद गोष्ठी मे दिल्ली विश्व विद्यालय के वेद विकल्प के विद्यार्थियों को आर्यकेन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी द्वारा डॉ प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति की ओर से छात्र-वृत्तियां दी गई।

विश्वविद्यालय में हुई इस गोष्ठी में दिल्ली के प्रमुख विद्वानों प्राध्यापको तथा छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। गणेशप्रसाद विद्यालङ्कार ने वेद ग्रन्थो के गायन से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इसके सयोजक डॉ प्रशान्त वेदालकार तथा सस्कृत विभाग के रीडर डा कृष्ण लाल थे। समिति के अध्यक्ष डॉ सत्यदेव चौधरी ने समस्त अभ्यागतों का धन्यवाद किया।

नवीन बूचड़खानों की अनुमति न दो
आर्यसमाज खण्डवा की ओर से शासन को ज्ञापन

गत १८ तारीख को आर्यसमाज खंडवा की ओर से गो वध, विदेशों से चर्बी आयात करना, प्रस्तावित नवीन बूचड़खानो को खोलने की अनुमति न देना म० प्र० से गौ निकासी बन्द करने के बारे मे एक विशाल जुलूस आर्यसमाज शिवाजी चौक से होता हुआ टाउन हाल बोम्बे बाजार, ओवर ब्रिज होता हुआ शाम को ५ बजे अतिरिक्त जिलाध्यक्ष आर० एस० मडलोई को आर्यसमाज के अध्यक्ष पं० रामचन्द्र आर्य, मत्री कैलाश चन्द्र पालीवाल, गुरुसिंह सभा के सरदार तीरथसिंग, जिला फुटकर व्यापारी सघ के भाऊजी 'भाई विश्व हिन्दू परिषद श्री जगदबा प्रसाद मिश्र' गणेश तलाई आर्यसमाज के प गयाप्रसादजी ने ज्ञापन दिया। ज्ञापन का वाचन उप प्रधान श्री गिरधारीलाल जी आर्य ने किया। इसी अवसर पर महिला आर्यसमाज की ओर से श्रीमती चन्द्रकाता पालीवाल, श्रीमती सुशीला सोनी ने ज्ञापन दिया। आभार प्रदर्शन श्री बाबूलाल चौधरी ने किया।

यज्ञ के लिये विद्वत् समिति का निर्माण

महर्षि दयानंद जी की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर होने वाले चतुर्वेद पारायण यज्ञ को दोषमुक्त आदर्श शोभनीय बनाने के लिए एक विद्वत् समिति बनाई गई है जिसके निम्नलिखित सदस्य होंगे।

१· स्वामी दीक्षानंद जी, दिल्ली; २ श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री दिल्ली; ३. श्री प० सत्यानन्द जी वेद वागीश अलवर; ४. श्री प० सत्यव्रत जी राजेश गुरुकुल कांगडी, हरिद्वार

—दयानन्द वानप्रस्थी, अध्यक्ष चतुर्वेद यज्ञ ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर

पत्र कार्यालयों पर हमले की निन्दा

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री अनिल कुमार आर्य ने "इतहाद-उल-मजलूमीन" के कार्यकर्ताओ द्वारा प्रताप भवन सहित राजधानी के प्रमुख समाचार पत्र कार्यालयों पर प्रदर्शन व हमले की सख्त निन्दा की है। उन्होंने इन तत्त्वों द्वारा निन्दनीय हमले को लोकतन्त्र पर हमले की सज्ञा की।

श्री आर्य ने कहा, मगर "इतहाद" कार्यकर्ताओं को पुरातत्व विभाग की मस्जिदें सौंप दी जाएगी, तो अन्य संगठन भी यह मांग उठा सकते हैं। ऐसे तत्वों के खिलाफ सरकार सख्त कदम उठाए।

उल्लेखनीय है कि गत शुक्रवार "इतहाद-उल-मजलूमीन" के कार्यकर्ताओं ने इण्डियन एक्सप्रेस, मिलाप, प्रताप, टाइम्स आफ इण्डिया के कार्यालयों पर प्रेस विरोधी नारे लगाये व हिंसक प्रदर्शन किया।

स्त्रीसमाज अशोक विहार

दिल्ली आर्य महिला जगत को सहर्ष सूचित किया जाता है कि आर्य स्त्रीसमाज अशोकविहार फेज १ के तत्वावधान मे शुक्रवार दिनाक २३-९-८३ से वेद प्रचार सप्ताह प्रतिदिन २-३० बजे पारिवारिक रूप मे मनाया जाएगा। पूर्णाहुति तिथि १-१०-८३ शनिवार को १२ से १-३० तक, पश्चात् श्रीमती सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता में वेद सम्मेलन के अंतर्गत वेद स्तुति ज्ञान व प्रवचन होंगे। उत्तर प्रदेश आर्यमहिला जगत की विख्यात कवयित्री श्रीमती पद्मा शर्मा द्वारा कविता पाठ होगा। बच्चों के कार्यक्रम के अतिरिक्त कुलाची हंसराज स्कूल के अखिल भारतीय सैकेंडरी स्कूल की परीक्षा में प्रथम आने वाले कुमार अरुण गुप्ता को सम्मानित किया जाएगा। भारी संख्या में आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

—पद्मावती तलवाड, मन्त्रिणी

आर्यसमाज आर्यपुरा में वेदप्रचार

दिल्ली। आर्यसमाज आर्यपुरा सब्जी मण्डी दिल्ली-७ के प्रांगण में श्रावणी (उपाकर्म) पर्व का दिवस युवा पुरोहित पं० धर्मेन्द्रपाल शास्त्री और पं० इन्द्रसेन "विश्वप्रेमी" के भजनों-प्रवचनों द्वारा धूमधाम से मनाया गया। साथ में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व आर्यपुरा आर्यसमाज एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद तथा नव आदर्श आदि जनहित संघ अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा कबीर बस्ती आर्यसमाज में मिलकर उत्साहपूर्वक मनाया जिसकी अध्यक्षता श्री श्यामसुन्दर जी ने की।

रविवार, २५ सितम्बर, १९८३

अन्धामुगल—प्रतापनगर—पं० सत्यभूषण वेदालकार; अशोक विहार—आचार्य विनेशचन्द्र पाराशर; आर० के० पुरम सेक्टर-५—पं० ओमवीर शास्त्री; रामकृष्ण पुरम से० ६—पं० हरिश्चन्द आर्य; रामाकृष्णपुरम सेक्टर ९—तुलसीराम आर्य; आनन्द विहार—हरिनगर—प० रमेशचन्द वेदाचार्य; अमर कालौनी—डा० रघुनन्दनसिंह; किंग्जवे कैम्प—पं० हरिश्चन्द आर्य; कालका डी० डी० ए फ्लेट—ब्रह्मप्रकाश वागीश; करौल बाग—प० सत्यपाल मधुर; कृष्णनगर—व्याकुल कवि; गांधीनगर—प्रो० वीरपाल; गीता कालौनी—प० ओमप्रकाश गायक, ग्रेटर कैलाश नं०-१—पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, ग्रेटर कैलाश न-२ देवीचरण देवेश; गुड़मण्डी—प० बलबीर शास्त्री; गुप्ता कालौनी—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, ग्रीन पार्क—प० देव शर्मा शास्त्री; गोविन्द भवन—दयानन्द भवन वाटिका—आचार्य रामचन्द्र शर्मा; भोगल—देवेन्द्रकुमार शास्त्री, टैगोर गार्डन—पं० सोमदेव शर्मा; तिलकनगर—प० रामदेव शास्त्री; दरियागंज—श्री सुमेरचन्द्र विद्यार्थी, देव नगर—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती एवं—पं० चुन्नीलाल भजनोपदेशक; नारायण विहार—प० परमेश्वर शर्मा; न्यू मोतीनगर—प० अमरनाथ कान्त; नगर शाहदरा—प० मनोहरलाल ऋषि; पजाबी बाग—प० ओ३म्प्रकाश वेदालकार, पजाबीबाग एक्स्टेंशन—प्रो० सत्यपाल बेदार; विनय नगर—पं० चमनलाल, बिरला लाइन्स—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; मालवीय नगर—स्वामी शिवानन्द सरस्वती, मॉडल बस्ती—प० रामनिवास शास्त्री; मोतीबाग—गणेशप्रसाद विद्यालकार, रघुवीर नगर—पण्डित विद्याव्रत शास्त्री; राणाप्रताप बाग—प० अशोक विद्यालकार, बालीनगर—प० अमीचन्द मतवाला; रोहतास नगर—मा० ओउम्प्रकाश आर्य; रमेशनगर—प० शीशराम भजनीक; लड्डूघाटी—प० रणजीत राणा, लारेन्स रोड—पं० प्रकाशचन्द शास्त्री; विक्रम नगर—स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती; सदर बाजार—प० रामरूम शर्मा साकेत—पं० जयभगवान भजन मण्डली, सराय रोहला—पं० खुशीराम शर्मा; सदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र, सोहनगज—प० महेशचन्द्र पाराशर, त्रिनगर—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार; हौज खास—डा० सुखदयाल भूटानी

आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज राजगढ जि० सिरमौर (हिमाचल) का उत्सव १०-१२ सितम्बर को धूमधाम से मनाया गया। प० चुन्नीलाल जी आर्य के भजनोपदेश हुए, आर्यसमाज ऋषि नगर सोनीपत मे—पं० सत्यपाल जी मधुर के १६ से १८ तक भजनोपदेश हो रहे हैं। ३० सितम्बर से २ अक्तूबर तक आर्यसमाज अर्जुन नगर गुड़गाव में प० वेदव्यास भजनोपदेशक के भजनोपदेश होंगे। २१ सितम्बर से २ अक्तूबर—प० रामकिशोर जी वैद्य महोपदेशक का वेद प्रवचन—आर्यसमाज सैजपुर बोगा—अहमदाबाद (गुजरात) में रहेगा।

—स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग

'महर्षि दयानन्द एक महान् अर्थशास्त्री'

८ अक्तूबर को राकेश कैला भाषण प्रतियोगिता

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ के ६१ वें वार्षिकोत्सव पर शनिवार ८ अक्तूबर को दोपहर २ बजे दिल्ली विश्वविद्यालय के रीडर डा० वाचस्पति उपाध्याय की अध्यक्षता में 'महर्षि दयानन्द एक महान् अर्थशास्त्री' विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता आर्यसमाज के प्रधान श्री राममूर्ति कैला के स्वर्गीय सुपुत्र राकेश कैला की पुण्यस्मृति में आयोजित की गई है। प्रथम पुरस्कार चल विजयोपहार, ३०१) नकद, वैदिक साहित्य एवं ग्लूकोज, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार २०१) तथा १०१) नकद, वैदिक और ग्लूकोज पैकेट दिए जाएंगे।

आर्यसमाज किंग्जवे कैम्प के पदाधिकारी

प्रधान—श्री देवराज तनेजा, उपप्रधान—श्री चिन्तामणि, श्री राजकुमार भाटिया, उपप्रधाना—श्रीमती भवानी देवी जी, मन्त्री—श्री प्रताप शंकर आर्य, उपमंत्री—श्री गिरिधारीलाल जी, प्रचारमन्त्री—श्री देवेन्द्र कुमार, मन्त्रिणी श्रीमती [illegible] देवी जी, कोषाध्यक्ष—श्री देवराज नारंग, लेखा निरीक्षक—श्री सुशील कुमार।

२५ सितम्बर को १०० आर्य युवकों के प्रतिज्ञापत्र भेंट होंगे

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में राजधानी के १०० आर्य युवकों के प्रतिज्ञापत्र एक विशाल समारोह पूर्वक २५ सितम्बर (रविवार) आर्यसमाज अनारकली मन्दिर दोपहर २ बजे मार्ग मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी, दिल्ली समिति के प्रधान श्री रामलाल मलिक व मन्त्री देशराज बहल को सादर भेंट किए जायेंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता हेतु स्वामी ओमानन्द जी ध्वजारोहण हेतु श्री रामगोपाल वानप्रस्थ, आर्शीवाद हेतु स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज व मुख्य अतिथि प्रो० वेद व्यास होगे।

आर्य नेता श्री दरबारी लाल, प्रो० शेर सिंह, श्री सरदारी लाल, श्री मुल्ख राज भल्ला, महाशय धर्म पाल, स्वामी शक्ति वेश, स्वामी सत्यपति जी, स्वामी जगदीश्वरा नन्द जी, श्री तिलकराज गुप्ता श्री करण शारदा, आदि विशेष निमन्त्रित होगे।

आर्यसमाज पालम कालोनी राजनगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पालम कालोनी, राजनगर मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-४५ का तीसरा वार्षिकोत्सव २२ सितम्बर से २५ सितम्बर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर २२ सितम्बर से २४ सितम्बर तक प्रात. ६॥ से ८॥ तक यज्ञ होगा। ८॥ से ९॥ बजे तक स्वामी शान्तानन्द महाराज के भजनोपदेश होंगे। इन दिनों प्रति रात्रि को ६॥ से ९॥ तक भजन और उपदेश होगे। २५ सितम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति हो रही है। उत्सव के अवसर पर प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्री चमन और श्री मिश्रीलाल जी की भजन मण्डली भी पधार रही हैं।

रविवार २५ सितम्बर को समाज की यज्ञशाला एव सत्सग भवन की आधार शिला श्रीचन्द जी घई अपने पूज्य पिता की स्मृति मे शान्तिस्वरूप घई सत्सग भवन का शिलान्यास करेंगे।

समृद्धि का राज

दूसरे विश्व महायुद्ध मे जापान के विरुद्ध अमेरिका ने अणुबम का प्रयोग किया। १९४५ की गर्मियो मे जापान खण्डहरो का रूप बन गया। लाखो आदमी मर गए थे, जो बचे थे उनके मास के नोथड़े रह गए थे, ४० प्रतिशत नगर नष्ट हो गए थे, शहर की आबादी आधी रह गई थी, भूखा जापान-चिथडो मे लिपटी जनता दीन-हीन, स्तब्ध, हतप्रभ और क्षत-विक्षत हो गई थी, जापान मे न कोयला होता है, न लोहा, न तेल और न यूरेनियम, थोड़ी-सी कृषियोग्य जमीन, इस पराजय, दु ख और विनाश के बावजूद जापान फिर खड़ा हो गया। ससार का सर्वाधिक विकसित एक औद्योगिक राष्ट्र बन गया, यह चमत्कार कैसे हुआ। जापान की समृद्धि एव प्रगति के लिए सम्भवत वहा की जनता के राष्ट्रीय गुणो को टटोलना होगा, जो कि वहा की जनता के स्वाभाविक गुणो और चरित्र से मिलता है।

जापानी पराजय के बाद एक अमेरिकी व्यापारिक सस्था ने अपनी शाखा जापान मे खोली। अमेरिकी लोग थोड़े समय काम कर कम मेहनत से बहुत पैसा कमा लेते हैं। अमेरिकी सस्था ने अपनी जापानी शाखा मे सब कर्मचारी जापानी रखे। अमेरिकी कानून के अनुसार सप्ताह मे केवल पाच दिन काम करने का निश्चय किया गया, सप्ताह के दो दिन शनिवार और रविवार की छुट्टी रखी। अमेरिकी व्यापारी का ख्याल था कि उसकी उदारता का जापानी कर्मचारी एव कारीगर स्वागत करेंगे, परन्तु सस्था के व्यवस्थापक को देखकर अचम्भा हुआ कि सभी जापानी कर्मचारी इस व्यवस्था का सामूहिक विरोध कर रहे थे। उसने कर्मचारियों को बुलाया, कहा—"तुम्हे क्या कष्ट है ?" जो तुम विरोध कर रहे हो ?"

जापानी कर्मचारी एक स्वर में बोले—"हमे कष्ट है। हम दो दिन खाली नही रहना चाहते। हमारे लिए सप्ताह मे एक दिन का अवकाश ही पर्याप्त है।"

"यह क्यो ?"—पूछने पर जापानी कर्मचारी एव कारीगर बोले—"आपका ख्याल है कि अधिक आराम से हम प्रसन्न होगे। नही, यह बात ठीक नही। अधिक आराम से हम आलसी बन जाएगे, मेहनत के काम मे हमारा मन नही लगेगा, हमारा स्वास्थ्य गिरेगा, हमारा राष्ट्रीय चरित्र गिरेगा, अवकाश के कारण हम व्यर्थ ही घूमेगे-फिरेंगे हम फिजूल खर्च बनेंगे, जो छुट्टी हमारी सेहत बिगाड़े, हमारी आदत खराब करे, आर्थिक स्थिति खराब करे, हममे ऐसा अवकाश नहीं चाहिए। ऐसा अवकाश हमे नही चाहिए।"

अमेरिकी व्यवस्थापक ने अपनी टोपी सिर से उतारी। उसने जापानी कारीगरो का अभिवादन करते हुए कहा—"आप जापानी भाइयो की समृद्धि और सफलता का राज आपका परिश्रम और लगन है। आप कभी भी बीमार और गरीब नही रह सकते।'

—नरेन्द्र

गोबर-गोमूत्र में अर्थ और ऊर्जा का अनन्त स्रोत

दिल्ली। भारत की सस्कृति और अर्थ व्यवस्था हजारों वर्षों से गोपालन पर आधारित रही है। आज भी देश की ७३ प्र० श० जनता कृषि गोपालन पर आश्रित है। अनुमान लगाया गया है कि इस समय देश मे १६॥ करोड़ गोवश और ५॥ करोड़ भैसवंश है। सामान्यतया एक प्राणी से नित्यप्रति १२ किलो औसत गोबर गोमूत्र मिलता है। आज आधे गोबर-गोमूत्र का ठीक प्रयोगभी नही हो पाता। आधे गोबर से उपले कण्डे बनते हैं उपलों से सिर्फ ११ प्र० श० गर्मी का लाभ मिल पाता है, बाकी नष्ट हो जाती है गोबर गैस मे भी बहुत कम गोबर का प्रयोग हो पाता है। यदि इस गोबर का सेन्द्रिय कम्पोस्ट खाद और गोबर गैस संयन्त्र द्वारा ठीक उपयोग हो तो निर्धन देशवासियों को ६० प्र० श० लाभ मिलने लगेगा। पूरे गोबर-गोमूत्र का सही ढग से वैज्ञानिक उपयोग हो तो कई अरब रुपयो का देश को लाभ हो सकेगा।

भारत से अधिक आबादी वाला चीन जब एक करोड गोबर गैस प्लान्ट स्थापित करने मे सफलता की ओर बढ़ रहा है तब भारत भी ५० लाख गोबर गैस प्लाण्ट स्थापित कर खाद से दूना तीन गुना अन्न पैदा कर उसका निर्यात कर सकता है।

१४ जुलाई १९८३ के टाइम्स आफ इण्डिया ने पुसद महाराष्ट्र के गो० गोवर्द्धन केन्द्र के शोध परिणाम प्रकाशित किए हैं। इसके अनुसार १ किलो गोबर घोल शुद्ध मिट्टी, वृक्षो की सूखी पत्तियां और कचरे के सम्मिश्रण से ४० किलो उत्तम अन्नपूर्णा सेन्द्रिय खाद तैयार होता है। गोबर चूर्ण से अगरबत्ती, धूप कपडे धोने का चूर्ण भी बनाया जा रहा है। मूक वैज्ञानिक पाढरी पाण्डे गोबर से रंग बनाने मे प्रयत्नशील हैं। [illegible] घरो का तापमान कम नियन्त्रित कर सकेगा। उक्त रग सीमैन्ट के बने मकानो को गर्मी मे ठण्डा और जाड़े मे गरम रखेगा। कई असाध्य रोगों—विकृत यकृत रोग, यक्ष्मा, कैन्सर, कुष्ठ मे गोमूत्र लाभप्रद सिद्ध हुआ है। गोबर गोमूत्र का यदि सही प्रयोग किया जाए तो राष्ट्र के अन्न उत्पादन एव स्वास्थ्य सुधार के साथ हर वर्ष करोड़ो रुपए कमाए जा सकते हैं। नैरोबी ऊर्जा सम्मेलन मे प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने सगर्व कहा था कि भारत में बैलो की शक्ति द्वारा ३० हजार मेगावाट ऊर्जा मिलती है यदि इसका समुचित उपयोग हो तो देश का आर्थिक कायाकल्प हो सकता है।

आर्यसमाज जंगपुरा द्वारा सफल वेदप्रचार

घर-घर में पारिवारिक सत्संग की धूम

आर्यसमाज जंगपुरा (भोगल) में श्रावणी पर्व पर वेदसप्ताह दि० २३-८-८३ से ८-९-८३ तक पारिवारिक सत्सग के रूप मे मनाया गया, इस अवसर पर आचार्य श्री छविकृष्ण जी शास्त्री द्वारा विशेष प्रभावशाली प्रवचन हुए। आर्यसमाज भोगल पिछले तीन वर्षों से वेद सप्ताह को पारिवारिक सत्संग के रूप में मनाता है, इस प्रकार के कार्यक्रम मे वेद का काफी प्रचार हुआ तथा हमारी उपस्थिति भी समाज की अपेक्षा बहुत अधिक रही, तथा सदस्यों में काफी उत्साह भी दिखाई दिया, क्योकि छपे कार्यक्रम के अनुसार हमारा कार्यक्रम तीन दिन और चलता रहा। इस कार्यक्रम से जहां अधिक से अधिक प्रचार हुआ वहां समाज को भी काफी लाभ हुआ।

छात्र-छात्राओं की निबन्ध प्रतियोगिता

आर्यसमाज बाजार, सीताराम, दिल्ली ने आगामी ३० अक्तूबर, १९८३ को दोपहर २ बजे आर्यसमाज मन्दिर में 'धार्मिक, सामाजिक व [illegible] अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती' विषय पर दिल्ली के छात्र-छात्राओं की निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की है। प्रतियोगिता में ९ वीं से १२ वी कक्षा तक के छात्र-छात्राएं भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले प्रतियोगियों को २५१, २०१ और १५१ रु० के पुरस्कार दिए जाएगे। प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक छात्र-छात्राएं अपने नाम २५ अक्तूबर तक अपने विद्यालय से प्रमाणित करवाकर प्रचारमन्त्री, आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली के नाम भिजवा दें।

रजि० न० डी० सी० 759
साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल [illegible] द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित [illegible] में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : [illegible]

ओ३म्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपए | वर्ष : ७ अंक ४६ | रविवार २ अक्तूबर, १६८३ | १५ आश्विन वि० २०४० दयानन्दाब्द—१५६

सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों से बांटो

वेद का आदेश शिरोधार्य कर जिन्होंने अपना सर्वस्व आर्यसमाज एवं उनकी संस्थाओं को अर्पित किया

दिल्ली में दीवानचन्द आवल जन्मदिवस सम्पन्न

दिल्ली। दिल्ली के नगर में लाला दीवानचन्द आवल का नाम विशेष महत्व रखता है। विशेषतया आर्यसमाज जगत में तो उनकी इतनी सेवाएं हैं और उनकी इतनी यादगारें हैं कि जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। इसी के अनुरूप आर्यसमाज प्रतिवर्ष इस महान दानवीर का जन्मदिवस उत्साहपूर्वक मनाता है। दिल्ली में उनकी यादगार आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल जो उनके नाम से ही विख्यात है, के अतिरिक्त आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड भी उन्हीं की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी माता सतभ्रावा द्वारा बनवाया गया था। दीवानचन्द आवल नरसिंहहोम मद्रास होटल के समीप, दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य अस्पताल औचन्दी जिसे सभा चला रही है, दीवानचन्द सूचना केन्द्र फीरोजशाह रोड, दीवानचन्द आवल सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लोधी रोड आदि-आदि अनेक संस्थाएं एवं भवन उनकी स्मृति में आर्यजनता के दिलों मे सदैव बनाए रखते हैं। कुछ दिवस पूर्व दीवानचन्द के ट्रस्ट के तत्वावधान में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। रविवार २५ सितम्बर, को आर्यसमाज दीवान हाल एवं दीवानचद आवल सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लोधी रोड मे इस महान आत्मा का जन्मदिवस मनाया गया। दीवान हाल के आयोजन की अध्यक्षता श्री मुलखराज भल्ला ने की। इस अवसर पर लाला रामगोपाल प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सोमनाथ एडवोकेट कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आदि नेताओ ने उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनकी सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए बताया कि वास्तव में लाला जी का जीवन वेद के आदेश 'सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथो से बाटो' के अनुरूप था। उन्होने दो रुपए मासिक से अपना जीवन प्रारम्भ किया और लाखों रुपए कमाए परन्तु सर्वस्व आर्यसमाज एव उनकी संस्थाओ के लिए अर्पण कर दिया। यद्यपि लाला जी वेद प्रचार मे विशेष रुचि रखते थे, और दिल खोलकर दान किया करते थे, तथापि उनका उत्तराधिकारी दीवानचन्द ट्रस्ट उनके पीछे इस कार्य में कोई विशेष योगदान नही देता। आर्यसमाज एवं आर्यजनता इस ट्रस्ट के ट्रस्टियों के इस पवित्र कार्य मे पूर्ण सहयोग की अपेक्षा करती और आशा करती हैं कि ट्रस्ट के कर्णधार इस ओर ध्यान देंगे जिससे स्वर्गीय लाला जी की आत्मा की सन्तुष्टि हो। दीवानचद अस्पताल औचंदी को ट्रस्ट से वार्षिक सहायता उपलब्ध हो रही है जिसके लिए सभा उनकी आभारी है।

दीवानचन्द स्कूल लोधी रोड मे भी लाला जी की सेवाओं के प्रति आभार प्रदर्शित किया गया।

महर्षि निर्वाण शताब्दी के लिए आर्यसमाजें धन यथाशीघ्र भेजें

आर्यसमाजों, से आर्यसंस्थाओं एवं आर्यजनता इससे पूर्व भी अनुरोध किया जा चुका है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर के लिए अधिक से अधिक धन सग्रह करके अथवा आर्यसमाजों के कोश से शीघ्र सभा कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करेंगे, ताकि दिल्ली की आर्यसमाजों की ओर से सामूहिक रूप से एक बृहद् धन राशि भेंट की जा सके। सभा द्वारा यह भी कहा गया था कि यदि आर्यसमाजों के पास शताब्दी समिति द्वारा कोई नोट छपवाए गए हों तो भी उन नोटों के ब्योरे के साथ धन सभा को भेज देवें। इस धन को उनकी ओर से नोटों के बदले जमा करवा देगी। संगठन को महत्व देते हुए सभी धन सभा के माध्यम से ही भेजा जाना चाहिए यह सम्बन्धित आर्यसमाजो का कर्त्तव्य है। अब शताब्दी का समय निकट आ गया है, अत शीघ्रता से धन भिजवाए ताकि शताब्दी सम्बन्धी प्रबन्ध मे शताब्दी समिति को सुविधा हो। मैंने अपने पूर्व परिपत्र मे आर्य परिवारों से अनुरोध किया था कि १०) रुपये परिवार के प्रत्येक सदस्य के हिसाब से सबको अवश्य इस निमित्त दान देना चाहिए। यह न्यूनतम राशि है जिसे वर्तमान महगाई के युग मे प्रत्येक आर्य को महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धा दर्शाते हुए सहर्ष स्वत ही देना चाहिए।

—सरदारी लाल वर्मा प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

द० अफ्रीका में महर्षि निर्वाण शताब्दी

नगरो-ग्रामो में प्रचार : आर्यसाहित्य वितरित

द० अफ्रीका की धरती महर्षि दयानन्द और वेदों के अमर सन्देश से गूंज उठी

डरबन (द०अफ्रीका) द०अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे पूरे १६८३ के वर्ष मे दयानद निर्वाण शताब्दी के विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत के दो धुरन्धर आर्य विद्वानो प० सत्यपाल वेद शिरोमणि, डा० सत्यकाम वर्मा आयुर्वेदालकार द० अफ्रीका ऋषि निर्वाण समिति के अध्यक्ष प० नरदेव वेदालकार के मार्गदर्शन में प्रचार-कार्य करते रहे। विभिन्न नगरो-ग्रामो मे १०० से अधिक प्रचार-सभाए की गईं। २८ मई से ३१ मई तक डरबन के आर्य भवन और वेद मन्दिर मे केन्द्रीय शताब्दी समारम्भ हुआ। डरबन और मेरिट्सबर्ग नगरो मे दो विश्व धर्म सम्मेलन आयोजित किए गए। चार नगरो मे महायज्ञ तथा ५० ग्रामो मे यज्ञ किए गए। इन समारम्भो मे वेद सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, महिला परिषद्, विज्ञान परिषद्, हिन्दूसम्मेलन, भजन सम्मेलन, एव परिसवाद के कार्यक्रम किए गए। जगह-जगह नगर-शोभा-यात्राए निकाली गई और प्रभात फेरिया आयोजित की गईं। इन कार्यक्रमो मे सैकेडो-हजारो की सख्या मे जनता ने वेदो का सदेश सुना, ८०% भारतीय आबादी वाले नेटाल प्रात मे जागृति की लहर व्याप्त हो गई। शताब्दी का केन्द्रीय विचार था—वेद ही मानव जाति की मार्गदर्शक ज्योति हैं।

शताब्दी समारम्भ का एक विशिष्ट कार्यक्रम अफ्रीकन जुलू नगर स्टेंगर नगर मे रखा गया। यहा जुलू मन्त्रिमण्डल के मुख्य मन्त्री गाट्शा बुथलेजी का सम्मान किया गया। जुलू भाषा मे प० नरदेव जी वेदालकार की 'हिन्दुत्व की प्रारम्भिक शिक्षा' पुस्तक वितरित की गई। शताब्दी कार्यक्रम के लिए पुरोहितो एव विद्वानो के प्रशिक्षण के लिए वेदो, गीता, दर्शन, रामायण, सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन का ५ सप्ताहो का कार्यक्रम रखा गया। २४ से अधिक पुरोहित प्रशिक्षित किए गए। स्थान-स्थान पर स्वाध्याय मण्डल स्थापित किए गए। डरबन, दयानन्द गार्डन और पीटर मेरित्सबर्ग मे २०० से अधिक आर्य नर-नारियो का याजक-याजिका की दीक्षा दी गई। इन्होंने निष्काम भाव से वैदिक धर्म की सेवा करनेका संकल्प किया। विदेश के प्रवासी युवक-युवतियों में धर्म सम्बन्धी प्रथमा, प्रवेश, प्रकाश, प्रवीण और प्रभाकर सम्बन्धी पाच धार्मिक परीक्षाए प्रचलित की गईं। इन परीक्षाओ ४००० से अधिक विद्यार्थी सम्मिलित हो चुके हैं। हिन्दुत्व के प्रचार के लिए स्थानीय जनता की सुविधा के लिए हिन्दुत्व की प्रारम्भिक, बुनियादी और अनिवार्य शिक्षा सम्बन्धी तीन अग्रेजी पुस्तकें प० नरदेव जी ने तैयार की।

आर्यसमाज, स्वामी दयानन्द सरस्वती, गायत्री मन्त्र, विवाह सस्कार पर १६-१६ पृष्ठो के अनेक ट्रेक्ट तैयार कर बिना मूल्य बाटे गए। प्रार्थना-कार्ड हजारो की सख्या मे वितरित किए गए। आर्य उपासना की ५० हजार प्रतिया वितरित की जा चुकी हैं, इसका गुजराती सस्करण छप चुका है तेलगू सस्करण तैयार हो रहा है। इन प्रयत्नो से दक्षिण अफ्रीका की धरती महर्षि दयानन्द सरस्वती और वेदो के पवित्र सन्देश से गूज उठी है।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक— प्रद्युम्नलाल तलवाड़

सर्वोत्कृष्ट मन्त्र -गायत्री

—प्रेमनाथ एडवोकेट

ओ३म् भूर्भुव स्व तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो न प्रचोदयात् ।। यजु० ३६।३।।

शब्दार्थ—पिछले अंको मे गायत्री मन्त्र का शब्दार्थ व्याख्या सहित दिया गया है। अब पुन इस अंक मे शब्दार्थ किया जाता है ताकि यह अच्छी प्रकार पढने वालो की समझ मे आ जाए और स्मरण हो जाए। [ओ३म्] परमेश्वर [भू] हमारा प्राणाधार [भुव] सब दु खो का नाशक [स्व] सर्वव्यापक (है)। [सवितु] (उस) सर्वजगदुत्पादक [देवस्य] सर्वप्रकाशक सर्वानन्दप्रद ईश्वर के [तत्] इन्द्रिय से अग्राह्य [वरेण्यम्] सर्वोत्कृष्ट [भर्ग] शुद्धस्वरूप का [धीमहि] हम ध्यान करें। [य] जो [न] हमारी [धिय] बुद्धियो को [प्रचोदयात्] अच्छे कामो की ओर प्रेरित करें।

गायत्रीमन्त्र का महत्व—ऋषि दयानन्द अपनी पुस्तक 'पञ्चमहायज्ञ विधि' मे इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए आरम्भ मे लिखते हैं—"अस्य सर्वोत्कृष्टस्य गायत्री मन्त्रस्य सक्षेपेणार्थ उच्यते' अर्थात् "इस सर्वोत्कृष्ट (सर्वोत्तम) गायत्री मन्त्र का सक्षेप से अर्थ लिखा जाता है।" इस मन्त्र को ऋषि दयानन्द ने सर्वोत्कृष्ट माना है। इस मन्त्र को गुरुमन्त्र भी कहते हैं, क्योकि बच्चे का जब वेदारम्भ सस्कार होता है तब गुरु इस मन्त्र का उपदेश पहले बच्चे को करता है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास मे ऋषि लिखते है—"प्रथम लड़को का यज्ञोपवीत घर मे हो और दूसरा पाठशाला मे आचार्यकुल मे हो। पिता-माता वा अध्यापक अपने लडके-लड़कियो को अर्थसहित गायत्री मन्त्र का उपदेश करा दें।

एक समय एक व्यक्ति ने ऋषि दयानन्द के पास आकर कहा कि "महाराज, हमे तो सस्कृत नही आती हमारा कल्याण कैसे होगा?" तो ऋषि ने उत्तर दिया कि गायत्री मन्त्र को अर्थसहित सीखकर स्मरण कर लो और उसका जाप किया करो।"

पञ्चमहायज्ञ विधि के देवयज्ञ प्रकरण में ऋषि दयानन्द लिखते हैं—"एव प्रात सायं सन्ध्योपासनकरणान्तरमेतैर्मन्त्रैर्होम कृत्वाऽग्रे यावदिच्छा तावद्गायत्रीमन्त्रेण स्वाहान्तेन होम कुर्यात्" अर्थात् प्रात-साय सन्ध्योपासना के पीछे सामान्य होम के मन्त्रो से होम करके अधिक होम करने की इच्छा हो, वहा तक 'स्वाहा' अन्त मे पढकर गायत्री मन्त्र का होम करें। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास मे अग्निहोत्र प्रकरण मे लिखते हैं—"अग्निहोत्र के प्रत्येक मन्त्र को पढ़कर एक-एक आहुति देवे और जो अधिक आहुति देनी हो तो 'विश्वानि देव' वा गायत्री मन्त्र से आहुति देवें। इसी प्रकार ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे भी लिखते हैं दैनिक सामान्य मन्त्रो से हवन करके अधिक होम करने की इच्छा हो तो 'स्वाहा' शब्द अन्त मे पढकर गायत्री मन्त्र से करे।

मनुस्मृति के दूसरे अध्याय मे इस मन्त्र (जिसको सावित्री भी कहते हैं) का महत्व निम्न श्लोकों से दिया है।

अकार चाप्युकार च मकार च प्रजापति.।
वेदत्रयान्निरदुहद्भूर्भुवं स्वरितीति च ।।
त्रिभ्य एव तु वेदेभ्य. पाद पादमदूदुहत्।
तदित्यृचोऽस्या साविभ्या
परमेष्ठी प्रजापति ।।
एतदक्षरमेता च जपन्व्याहृतिपूर्विकाम्।
सध्ययोर्वेद विद्विप्रो वेद पुण्येन युज्यते ।।
ओकार पूर्विकास्तिस्रो महाव्याहृत्योऽव्यया।
त्रिपपद चैव सावित्री विज्ञेय
ब्रह्मणो मुखम ।।
एकाक्षर पर ब्रह्म प्राणायामा. पर तपः।
सावित्र्यास्तु पर नास्ति
मौनात सत्य विशिष्यते ।।
पूर्वी सध्या जपस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्।
पश्चिमा तु समासीन. सम्यगृक्षविभावनात् ।।
अपा समीपे नियतो नैत्यक विधिमास्थित।
सावित्रीमध्यधीयीत गत्वारण्य समाहित ।।
(मनु० २) ७६, ७७, ७८, ८१, ८३, १०१, १०४, ११८।

अर्थ—(१) प्रजापति (परमात्मा) ने तीन वेदो (ऋग्, यजु वा साम) से 'अ', 'उ' वा 'म्' (तीन अक्षर) वा भू भुव और स्व (तीन महाव्याहृतिया) सार रूप दुही हैं।

(२) इसी प्रकार तीनो वेदो से परमेष्ठी प्रजापति ने पाद-पाद करके सावित्री (गायत्री···तत्सवितुर्वरेण्य···) मन्त्र के तीन पाद दुहे हैं।

(३) ओकार रूप अक्षर और भू भुव, स्व इन तीनों व्याहृतियो सहित दोनो सन्ध्याओ में जप करने से वेदवक्ता विद्वान को वेद केस्वाध्याय का पुण्य (सुख) मिल जाता है।

(४) ओकारपूर्वक तीनों महाव्याहृतिया (भू, भुव, स्व) और ३ पाद वाली सावित्री (गायत्री) परमात्मा का मुख अर्थात् उसकी प्राप्ति का द्वार जानना चाहिए।

(५) एकाक्षर 'ओ३म्' परम ब्रह्म है, प्राणायाम (न्यून से न्यून तीन हों) परम तप है। सावित्री (गायत्री मन्त्र) से उत्कृष्ट और कोई मन्त्र नही है और मौन रहने से सत्य बोलना उत्तम है।

(६) (ब्रह्मचारी) दो घड़ी रात्रि से लेकर सूर्योदियपर्यन्त प्रात काल और सूर्यास्त से लेकर तारो के दर्शनपर्यन्त सायंकाल जगदुत्पादक परमेश्वर की उपासना गायत्री के सकल अर्थ विचारपूर्वक जाप द्वारा करे।

(७) जङ्गल में अर्थात् एकान्त देश मे जाकर सावधान होकर, जल के समीप बैठकर एकाग्र हो नित्यकर्म (संध्योपासन) को करता हुआ सावित्री (गायत्री मन्त्र) का जाप करे, परन्तु यह जाप मन से करना उत्तम है।

बुद्धि और चित्त

—स्व० डा० वासुदेवशरण उपाध्याय

बुद्धि के द्वारा हम जितनी कुछ उन्नति करते हैं, वह चित्त की उन्नति या सस्कार के बिना बिल्कुल अपूर्ण और अधूरी है। केवल बुद्धि की उन्नति से मनुष्य का पशु-भाग शान्त और सयत नहीं बनाया जा सकता। सदाचार, सयम, पवित्रता आदि दैवी गुणों की स्थिति का अधिकतम श्रेय चित्त की उन्नति को ही है। प्राय देखने मे आता है, कि मनुष्य मे दिमागी तरक्की खूब पाई जाती है, लेकिन चित्त की वृत्तियों पर काबू न पाने की वजह से कोई-कोई दबी हुई प्रवृत्ति अकस्मात् ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ती है और बड़े परिश्रम पूर्वक बनाए हुए उन्नति के विशाल भवन को क्षणमात्र मे नष्ट-भ्रष्ट कर देती है। मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान और उसकी सब निहित शक्तियो का सयम ही सच्ची मानव संस्कृति है।

पश्चिमी ढग से चलाई हुई शिक्षा की रीति मे भी बुद्धि को ही खूब विकसित करने की ओर ध्यान दिया जाता है, चित्त-वृत्तियो (इन्स्टिंक्ट्स) पर संयम प्राप्त करके उन्हे अपने अधिकार मे लाने की शिक्षा उस शिक्षा-प्रणाली का अभिन्न अंग नहीं है। इसके विपरीत भारतवर्ष के ऋषियो ने मनुष्य की इन दो मन. शक्तियो का तत्त्व अच्छी तरह जान लिया था। शुरू से ही उनकी शिक्षा-प्रणाली में मस्तिष्क के पशु-भाग या चित्त को समुन्नत बनाने पर बहुत ध्यान दिया जाता था। ब्रह्मचर्य, पवित्रता, सत्यादि गुणो पर जो इतना अधिक ध्यान दिया गया था, उसका कारण और रहस्य यही है।

—आर्यसमाज खारीवाव, बड़ोदरा-१

विघ्नों को हटाने के लिए उपदेश

—अमरनाथ खन्ना

❋परमेश्वर ससार के सब सूक्ष्म और स्थूल पदार्थों का रचने वाला और हमारे गुप्त प्रकट कर्मों को देखने और (विचारने) वाला है। उसका सदा ध्यान करके हम दुष्कर्मों से बचकर सत्कर्म करते रहे।

❋सर्वदा सर्वोपरि विराजमान परमेश्वर की महिमा और उपकारों को विचार कर हम लोग कुव्यवहार से बचकर पुरुषार्थ के साथ आनन्द भोगें।

❋मनुष्य जगदीश्वर के सर्वोपकारक गुणो को विचारता हुआ प्रयत्न करके दुष्कर्मों से अपनी रक्षा करें।

❋परमात्मा सबके ऊपर-नीचे, मध्य मे विराजमान होकर अपनी न्यायव्यवस्था से हमारे उत्तम कर्मों के अनुसार हमे उत्तम फल देता है।

❋जैसे सूर्य मेघमण्डल से निकलकर देदीप्यमान होता है, इसी प्रकार परमात्मा अन्तरिक्षस्थ प्रत्येक पदार्थ से विज्ञानियों को प्रकाशमान दीखता है। वह जगदीश्वर दुष्टो को दण्ड और शिष्यों को आनन्द देता है।

❋अद्वितीय प्रकाशस्वरूप परमात्मा सूर्यादि लोको से काल और विस्तार मे (बडा) है। वही रथारूढ और बाणधारी शूर को रणक्षेत्र में बल देता है, उसी जगदीश्वर के आश्रय से हम अपना जीवन धार्मिक बनाकर आनन्द भोगें।

❋विश्वकर्मा ब्रह्म ने बुद्धि आदि गुण मनुष्य शरीर आदि दिव्य पदार्थ रचे हैं, वही सब मे रमकर जीवन शक्ति दे रहा है, उसी को मनुष्य हृदय मे धारण करके पुरुषार्थ के साथ यशस्वी होकर आनन्द भोगे।

द्वारा आरती मिनरल्स, १५।७ मथुरा रोड, फरीदाबाद (हरियाणा)

आर्यसमाजों एवं आर्य जनता से अनुरोध

आगामी दीपावली महोत्सव पर अजमेर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाई जाएगी। इस अवसर पर आर्यसन्देश का एक विशाल विशेषांक प्रकाशित किया जाएगा। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य सस्थाओ एवं आर्यजनों से अनुरोध है कि वे अपनी संस्थाओ की ओर से अथवा व्यक्तिश इस अंक एक या आधे पृष्ठ का विज्ञापन देकर महर्षि के प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि देने की व्यवस्था करेंगे।

आपके कृपापूर्ण सहयोग की प्रतीक्षा है।

व्यवस्थापक आर्यसन्देश
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

जीवन माधुर्य से परिपूर्ण हो!

ओ३म् जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् ।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ।। अथर्व १,३४,२

जिह्वा के अग्रभाग मे मिठास हो, कण्ठस्वर भी सुरीला हो,
ज्ञान-कर्म में आकर्षण हो, जीवन माधुर्य से परिपूर्ण हो।

भारतीय भाषा और पहनावे का अपमान

यह कितने अधिक कष्ट की बात है कि राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हो जाने के बावजूद हमारे राष्ट्र मे अभी हमारी राष्ट्रभाषा और भारतीय भाषाओ का प्रचलन नही हो सका है। अभी भी हम अपने शासकीय, शैक्षणिक, सामाजिक एवं सामान्य व्यवहार मे विदेशी आग्लभाषा अंग्रेजी का प्रयोग कर रहे हैं। इतना ही नहीं, मद्रास के हिन्दू (१८-८-८३) में कोयम्बटूर के श्री ई० वी० वसुराज ने एक घटना का विवरण प्रकाशित कराया है। वह बम्बई के शान्ताक्रूज उपनगर के समीप एक होटल मे ठहरे थे। उन्होंने एक कमरा आरक्षित किया था। जब वह खाने के लिए मुख्य भोजन-कक्ष (डाइनिंग रूम) मे पहुचे, तब उन्हे अन्दर जाने से केवल इसलिए रोक दिया गया कि वह सफेद धोती पहने हुए थे। उन्हे कहा गया कि धोती एक सभ्य पोशाक नहीं है, भोजनालय मे आने वाले विदेशियो को यह धोती रास नहीं आती। थोड़ी देर मे वसुराज को यह सूचना भी मिली कि लुगी पहने अरबवासियो के भोजन-कक्ष मे प्रवेश पर कोई प्रतिबन्ध नही है। होटल के मालिक ने यह सूचना भी दी कि सभी समीपस्थ होटलो मे धोती के प्रति चिढ है।

खेद का विषय है कि अंग्रेजो के शासनकाल मे भी होटलों एवं जलपानगृहो मे धोती या भारतीय वेशभूषा के प्रयोग पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था। यह भी उल्लेखनीय है कि चर्चिल सरीखे उग्र भारतविरोधी राजनीतिज्ञ के विरोध के बावजूद महात्मा गाधी लन्दन की गोल मेज सभा मे और तत्कालीन पचम जार्ज के आमन्त्रण पर धोती और शाल पहनकर ही उनके राजकीय भोज मे सम्मिलित हुए थे। उस पराधीनता के युग मे भारत मे और विदेश शासक के भोज मे भी भारतीय वेशभूषा के धारण पर कोई प्रतिबन्ध नही लग सका था। आज यदि बम्बई के एक होटल के भोजन कक्ष मे यह प्रतिबन्ध लगा है तो उसके मूल मे कोई सरकारी प्रतिबन्ध कारण नही है, प्रत्युत हमारी गुलामी मनोवृत्ति ही मूल मे है। सम्भवत लार्ड मैकाले की वह उक्ति चरितार्थ होती दिखाई देती है कि जिसमे उन्होने भविष्यवाणी की थी कि अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के प्रचलन का एक समय यह प्रभाव होगा कि हमारा अंग्रेजी शासन चाहे न रहे परन्तु भारतीय अपने नामो और स्वरूप के बावजूद वेशभूषा और भाषा से अंग्रेजियत से प्रभावित हो जाएगे।

बम्बई की घटना प्रमाणित करती है कि हम राजनीतिक दृष्टि से चाहे स्वाधीन हो गए हों परन्तु शिक्षा और राजनीति के फलस्वरूप हम इतने अधिक अंग्रेजियतों के गुलाम बन गए हैं कि हम न तो अंग्रेजी भाषा का व्यवहार छोड़ सकते हैं और न विदेशी वेशभूषा का ही छोड़ सकते हैं। इससे बढकर अपमान की बात क्या होगी कि एक भारतीय भोजनालय में धोती पहनने वाले को प्रवेश न करने दिया जाए। यह भी अत्यन्त अपमान की बात है कि धोती के ही समानरूप लुगी है, परन्तु उसका व्यवहार करने वाले अरबो-करोड़ो की सम्पत्ति के स्वामी अरब प्रजाजनो के होटलो मे प्रवेश पर कोई रोक नही है। यह कितने अधिक कष्ट की बात है कि हमारे निर्धन दीन-हीन गरीब प्रजाजन तो इन होटलो मे प्रवेश न कर सकें, उनमें स्वच्छ पवित्र आहार करने वाले सात्विक वेशभूषा वाले देशवासी भी प्रवेश न कर सकें, परन्तु वहां अखाद्य अपेय पदार्थों का सेवन करने वाले विदेशी पर्यटक केवल इसलिए स्वागताई हैं, क्योकि वे मुहमांगी धनराशि भुगतान कर सकते हैं। यदि ऐसी प्रवृत्ति दूसरे पंचतारा, बड़े-छोटे होटलों और भोजनालयो में व्याप्त हो गई तो उससे हमारे देश मे हमारी सस्कृति रीति-नीति और भारतीय भाषाए अपमानित और तिरस्कृत हो उठेंगी। स्वाभिमानी आर्य भारतीत जनता को समय रहते इस प्रकार के घटनाप्रवाह को रोकना चाहिए।

भारतीय सस्कृति की अवहेलना

आशा थी कि स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर भारतीय सस्कृति का प्रचार-प्रसार होगा किन्तु दुख है कि ३१ वर्षों पश्चात् भी उन्नति की कौन कहे हम निरन्तर अवनति की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। अंग्रेजियत की झूठी चकाचौंध ने हमारी आखो पर पर्दा डाल दिया है। और हम पाश्चात्य सस्कृति का अधानुकरण करते जा रहे है। न तो हम अंग्रेज ही बन पाए और न भारतीय ही रह गए। हमे इतनी योग्यता नही कि अंग्रेजी भाषा पर अधिकार प्राप्त कर सकें, केवल वेश भूषा, रहन सहन तथा खान-पान आदि बुराइयो को ही हम ग्रहण करते जा रहे हैं। पत्र हिन्दी मे लिखते हैं और उस पर पता अंग्रेजी मे, सूट, बूट, टाई तथा अन्य बनाव-शृगार मे अंग्रेजो का कान काटने का दम भरने वालो मे कितने ऐसे हैं जो शुद्ध अंग्रेजी लिख पढ सकते तथा इस भाषा मे बात कर सकते हैं। किन्तु आप घरों मे मम्मी, डैडी, अन्टी, अकल आदि सम्बोधनो का फैशन हो गया है। सोचिए मा-पिता, मौसी, चाची चाचा आदि सम्बोधनो मे जो माधुर्य, अपनत्व तथा सार्थकता है वह, अंग्रेजी मे व्यक्त करना सर्वथा असम्भव है। कितनी लज्जा की बात है कि हम इस अधकचरे ज्ञान का फिर भी पीछा नही छोड रहे है। दूसरो को भारतीयता पर चलने का उपदेश देने वाले भी अपने बच्चो को अंग्रेजी मीडियम के अथवा अंग्रेजी पद्धति पर आधारित विद्यालयो मे ही भेजते हैं। यदि इन बुराइयों का समय रहते उपचार न किया गया तो राष्ट्र मे घुन लग जाएगा और सारा राष्ट्र जर्जर हो जाएगा। समस्त जनता का यह कर्तव्य है कि वह स्वय अपने बच्चो तथा परिवार सहित भारतीय सस्कृति को अपनाए तथा यथाशक्ति अन्यो को भी इसके लिए प्रेरित करें। इसी मे राष्ट्र का भला है।

—पं० दुर्गाप्रसाद भट्ट पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता, रुदौली, जनपद बाराबकी उ० प्र०

गाय की चर्बी से बने वनस्पति साबुन का प्रयोग बन्द करो

कुछ दिनो से समाचार पत्रो मे यह प्रकाशित हुआ कि गाय की चर्बी का वनस्पति घी बनाने में उपयोग किया जा रहा है। यह चर्बी साबुन बनाने के लिए दी गई थी या प्राप्त की गई थी। सरकार की यह घोषणा भी है कि गाय की चर्बी का आयात बन्द कर दिया गया है। इन समाचारों से कुछ निष्कर्ष निकलते हैं। प्रथम यह कि भारत सरकार की दृष्टि मे गाय की चर्बी से साबुन बनाना कोई आपत्तिजनक काम नही है, दूसरा यह कि चर्बी के आयात को रोकने से सरकार जनता की दृष्टि मे अच्छी बने रहना चाहती है। भारत की जनता जानना चाहती है कि प्रतिदिन वध की जा रही ५०,००० (पचास हजार) बैल और गौओ की चर्बी की खपत ऊचे दामो मे भारत मे हो, इसी कारण बाहर से आयात तो नही रोका गया? भारत मे चर्बी का उपयोग न हो, ऐसी व्यवस्था कहा है? तीसरा प्रश्न है कि वनस्पति घी मे चर्बी का उपयोग करने वाले मात्र 'मिलावट' के दोषी ही तो बनाए जा रहे हैं। "देश की सस्कृति पर आघात" इस अपराध के दण्ड का प्रावधान भी कही है? भारत मे "देशद्रोह" या "सस्कृति द्रोह" भी कोई अपराध है? सन् १८५७ मे दिन बरबस याद आ जाते हैं। कारतूस मे लगी चर्बी को मात्र काटना था और फेंक देना था। तब अभूतपूर्व क्रान्ति हुई। यदि एक दो गद्दार न होते तो अंग्रेजो के "सूर्य से प्रकाशित रहने वाले" साम्राज्य मे सूर्यास्त हो जाता।

अपने भारतवासी अगर और कुछ नही कर सकते, तो अपने दैनिक जीवन मे वनस्पति घी तथा बडी मिलो मे बने साबुन का प्रयोग बन्द करने की प्रतिज्ञा करें। तेल, साबुन बनाने के लिए स्थानीय निर्माताओ को प्रोत्साहित करें। अथवा गाधी आश्रम द्वारा सचालित ग्रामोद्योग से निर्मित साबुन और तेल का प्रयोग करें।

—धर्मवीर विद्यालकार सयोजक हिन्दू जागरण मच, ५ अशोकनगर, पीलीभीत

ऋषि निर्वाण शताब्दी और आर्य पुरोहितों का दायित्व

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के सयोजक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के तत्वावधान मे १७ सितम्बर, ८३ के दिन आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली प्रदेश की अन्तरग सभा की बैठक आर्यसमाज हनुमान रोड मे आयोजित की गई थी। अन्तरग सभा ने निश्चय किया महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर को पूर्ण सहयोग दिया जाए, सभा की ओर से अधिक से अधिक राशि एकत्र कर थैली के रूप मे निर्वाण शताब्दी को दी जाए। दिल्ली एव समीपस्थ क्षेत्रो मे आर्य पुरोहितो से अनुरोध है कि वे अपनी छोटी-बडी आहुति अनिवार्य रूपसे गुरुदेव के चरणो मे अवश्य दें।

महर्षि निर्वाण शताब्दी के कार्यक्रमो, सम्मेलनो एव शोभायात्रा मे सगठन का विशिष्ट परिचय देने के लिए निश्चय किया गया कि आर्य पुरोहित यह गणवेश धारण करेंगे—१ सफेद धोती २ सफेद कालर वाला कुर्ता, ३ जवाहर कट जाकेट ४ हल्का पीला रेशमी दुपट्टा, ५ सभा द्वारा निर्धारित परिचय-पट्टिका ६. फोम की चप्पल। शताब्दी के अवसर पर सभा अनेक गोष्ठियो का आयोजन कर रही है, उसमे अनेक कर्मकाण्डी वैदिक विद्वान् भाग लेंगे। सभा के सगठन को अखिल भारतीय स्वरूप देने पर भी विचार किया जाएगा।आशा है कि समस्त पुरोहित वर्ग अपना सहयोग देकर अपने सगठन का परिचय देंगे।

—वेदकुमार वेदालंकार, महामन्त्री, आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश

अहिंसा

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल० टी०

श्री पतञ्जलि मुनि ने योगदर्शन के दूसरे अध्याय के साधन पाद सूत्र ३० मे कहा है कि 'तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा' अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यम हैं। यम का अर्थ है नियमन करना अर्थात् अनुशासन में बाध देना। यमो मे पहला स्थान अहिंसा का है। इनको यम इसलिए कहा जाता है कि मन सहित इन्द्रियो को विषयो में लिप्त होने मे बाधक होते हैं। अहिंसा एक महत्वपूर्ण व्रत है। इसे 'सार्वभौम' महाव्रत' नाम भी दिया गया है। 'सार्वभौम' का अर्थ है 'जो हर देश, काल तथा जाति पर एक सा लागू हो। जब इन यमो के अनुशासन मे व्यक्ति या समाज अपने को बाध लेता है तब वह व्यक्ति या समाज अपने भीतर के शत्रुओ पर अधिकार कर लेता है। जब भीतर शत्रु नही रहा तब बाहर तो रह कैसे सकता है? क्योकि भीतर के शत्रुओ-लालच, लालसा, बेईमानी आदि के कारण ही तो हम बाहर के शत्रु कल्पित कर लेते हैं या बना लेते हैं।

अहिंसा का अर्थ है मन, कर्म और वचन से हमेशा किसी प्राणी को दुख न देना ही अहिंसा है। योगदर्शन मे लिखा है 'जाति देश काल समयान वच्छिन्ना सार्वभौमा महाव्रतम्' (योगदर्शन २३१) ये यम जाति, देश, काल और समय पर एक से लागू होते हैं। इसको इस प्रकार समझा जा सकता है जैसे 'अहिंसा' का व्रत इस प्रकार धारण करें कि हम दूसरो को भले ही मारेंगे, पर ब्राह्मणो को नही मारेंगे, तो यह महाव्रत नही कहलाएगा। ससार मे किसी भी व्यक्ति, प्राणी, या पशु को पीडा न पहुचाना निश्चय रूप से अहिंसा महाव्रत है। इसे ही अनवच्छिन्न अहिंसा कह सकते हैं। इसी प्रकार देश मर्यादित अहिंसा भी महाव्रत नही। देश मर्यादित का मतलब है कि हरिद्वार आदि तीर्थस्थानो मे नही मारूगा, काल मर्यादित अहिंसा का तात्पर्य है अमावस्या को और पूर्णिमा नही मारूगा। समयावच्छिन्न अहिंसा का मतलब है कि प्रतिज्ञा के विरुद्ध हिंसा न करना। यह सब महाव्रत या सार्वभौम व्रत नही। जाति, देश, काल और समय की मर्यादा बिना जो इन पर एक-सा लागू हो वह सार्वभौम महाव्रत है। अहिंसा भी इसी रूप मे सार्वभौम महाव्रत है।

मनु महाराज ने यम का पालन आवश्यक बतलाते हुए कहा है 'यमान् सेवेत सततं न नियमान् केवलान् बुध' मनुष्य को यम का पालन करना जरूरी है। इन यमो में अहिंसा का महत्वपूर्ण स्थान है। योगदर्शन मे कहा है 'अहिंसा प्रतिष्ठाया तत्संन्निधौ वैरत्याग' अर्थात् अहिंसा मे अचल स्थिति होने पर अहिंसक के सम्मुख सबका वैर समाप्त हो जाता है। पतञ्जलि मुनि का यह वाक्य पूरी तरह ठीक है? अहिंसा जिस प्रकार निषेधात्मक वर्णन करती है वैसे ही भावात्मक रूप विश्व प्रेम है। जो सम्पूर्ण प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने लगेगा, तो वह बहुत से पापो से बच जाएगा। और उस प्रेम से नए विश्व का निर्माण हो सकेगा। हम अपने प्रेम का ससार मे विस्तार कर दें यही तो परमात्मा की प्राप्ति है। परमात्मा सम्पूर्ण जगत् में व्यापक है, ससार के छोटे से छोटे प्राणी मे भी विद्यमान है और इतना ही नही वह हम सबका जनक है अत हमारा सम्पूर्ण विश्व से सम्बन्ध बन्धुत्व का भ्रातृतत्व का है। और भ्रातृत्व का सम्बन्ध स्थापित होने से हमे एक दूसरे के दुख में सहायक होना होगा, दूसरे को सताने के स्थान पर प्रेम करना होगा। यदि इस अहिंसा की भावना का विस्तार घर मे होगा तो घर स्वर्ग हो जाएगा। यदि इसका विस्तार ग्राम, नगर देश, और विश्व में होगा तो हम विश्व को स्वर्ग तुल्य बना सकेंगे।

मनुष्य और पशु में अन्तर है। बहुत से लोगो का विचार है कि प्रकृति का नियम तो हिंसा है। उनका विचार है कि जीवन के प्रति सघर्ष-अस्तित्व के लिए संघर्ष से ही हो रही है। पौधों, पशुओ, पक्षियों तथा समाज मे यही नियम काम कर रहा है। निर्बल-बलवान् का भोज्य है। बड़ा पौधा छोटे पौधे के रस को छीन लेता है, बलवान पशु निर्बल पशु को खा जाता है, बड़ी मछली छोटी को निगल जाती है। इसे हमारे यहा 'मत्स्य न्याय' कहा गया है। वे कहते हैं 'मत्स्य न्यायाभिभूत जगत्'। अग्रेज कवि टैनीसन ने कहा है 'नेचर इज रेड इन टूथ एण्ड क्ला' प्रकृति कैसी है? जिसके दात तथा पजे खून से लथपथ हो रहे हैं।

ससार मे दो प्रकार के मनुष्य हैं। एक भौतिकवादी और दूसरे अध्यात्मवादी। भौतिकवादियों का विचार है शक्तिशाली को जीते रहने का अधिकार है। इस विचार ने शक्तिशाली राष्ट्रो को दूसरे राष्ट्रो को पददलित करने और उन पर अधिकार करने का अधिकार दिया है। परिणामस्वरूप शक्तिशाली राष्ट्र विश्व विजय के लिए निकल पडते हैं, परिणामस्वरूप रक्तकी नदियां बहने लगती हैं लाखों निर्दोष प्राणियों का जीवन समाप्त कर दिया जाता है, बालक अनाथ हो जाते हैं, स्त्रिया विधवा बन जाती हैं। जर्मन अपने को ससार का शासक मानने लगे तो महायुद्ध हुए, अग्रेजों ने इसी विचार से साम्राज्यवाद की स्थापना की अपने स्वार्थ, अपनी बढती जनसंख्या और अपनी भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए भारत आदि को गुलाम बनाया।

इसके विपरीत महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी शकराचार्य, स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी आदि आध्यात्मिक विचारधारा के व्यक्ति हैं और वे मनुष्य को पशु-पक्षी के स्तर पर लाने को तैयार नही। उनका विचार है कि भौतिकवाद के स्थान पर आत्मतत्व का विकास आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हिंसा आत्मा का नहीं जड़ प्रकृति का नियम है और अहिंसा आत्मिक उन्नति का नियम है। महात्मा बुद्ध के जीवन की एक घटना कही पढ़ी थी। आज से अढाई हजार साल पूर्व भारत के मगध राज्य में अजात शत्रु नामक राजा राज्य करता था। उस समय यज्ञो मे पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी। एक दिन राजा के यज्ञ में बलि के लिए बकरियों के एक झुड को ले जाते देखकर एक साधु ने पूछा "ये बकरिया कहा ले जाई जा रही हैं? ग्वाले ने कहा 'राजा के यज्ञ मे बलि चढाने के लिए। वह साधु भी बकरियो के आगे-आगे चलने लगा और राजा के सामने एक तिनका तोड़कर रख दिया और कहा 'राजन्! क्या तुम अपने सम्पूर्ण राज्य की शक्ति लगाकर इस तिनके को जोड़ सकते हो? अजातशत्रु ने कहा 'नही। भिक्षु बोला 'जब तुम एक तिनके को भी तोड़कर जोड नहीं सकते, तो जीवन तो बड़ी चीज है। उसे नष्ट करने का तुम्हें क्या अधिकार है? राजा ने निरुत्तर होकर सिर झुका दिया और बकरिया छोड़ दी गई। यह भिक्षु थे। यह है आत्मतत्व का रूप।

महर्षि दयानन्द के जीवन मे अहिंसा के अनेक दृष्टान्त आते हैं। भरी सभा मे महर्षि दयानन्द पर उनके विरोधियो ने साप फेंका—सच्चा गेहुंअन साप। महर्षि ने पुष्पमाला की तरह धारण कर सचमुच शकर बन गए। विरोधियो ने पत्थर फेंके, पत्थरो की वर्षा को पुष्पवर्षा की तरह स्वीकार किया, प्राण लेने वाले, जहर देने वाले जगन्नाथ को रुपए देकर नेपाल जाने का मार्ग निर्देश करने वाले महर्षि का स्वरूप कितना उच्च और कितना महान् है। यह है अहिंसा की शक्ति। सुकरात को जिन्होंने जहर दिया, उनके भी कल्याण की कामना करते हुए जहर का प्याला पी लिया, महात्मा गाधी ने अहिंसा और सत्य की साधना मे अपने प्राण न्योछावर कर मनुष्यो में देवता नहीं बने?

परन्तु, इतना ध्यान रखने की बात है कि अहिंसा का अर्थ निर्बलता और कायरता नहीं। यदि आप शस्त्र सज्जित व्यक्ति का अहिंसा द्वारा सामना नहीं कर सकते तो शस्त्र से मुकाबला करो, पर निर्बलता और कायरता दिखाना-अहिंसा नहीं। महात्मा गांधी कहते थे कि यदि तुम अहिंसा से स्वराज्य नहीं ले सकते तो हिंसा से ही लो परन्तु गुलाम न रहो। मनु महाराज ने कहा है—'आततायिन मायान्त हन्यादेवा विचारयम्' आततायी को बिना विचारे मार डालो।

स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महावीर स्वामी, बुद्ध और महात्मा गाधी का जीवन अहिंसा—वास्तविक अहिंसा का उदाहरण है। चैतन्य महाप्रभु के जीवन की एक घटना है। एक दिन चैतन्य अपने शिष्यो के साथ कहीं जा रहे थे। दो दुष्ट आए और उनके माथे पर ईंट दे मारी। खून बहने लगा। चैतन्य के शिष्य उन्हे मारने को दौड़े। पर चैतन्य ने कहा "इसने भले ही मुझे मारा है किन्तु मैं इससे प्रेम का बर्ताव करूगा, यही मेरा धर्म है।" वे मस्त होकर प्रभु-भजन करने लगे। चैतन्य हरि-हरि कहने लगे और शिष्य नाचने लगे। वे दोनो दुष्ट भी उसी रंग मे रगकर उनके चरणों पर गिर पड़े।

प्रेम और अहिंसा से तो पशु भी प्रभावित हो जाते हैं, मनुष्य की तो बात ही क्या? इसीलिए वैदिक धर्म का विश्वास है 'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर त्याग'। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वा[illegible] ने 'अहिंसा परमो धर्म' माना है। ईसा ने कहा है 'जो तुम्हारे एक गाल पर थपड़ मारे उसके आगे दूसरा गाल कर दो।' स्वामी दयानन्द का जीवन तो अहिंसा का एक उदाहरण है। सम्पूर्ण जीवन उन्होने गाली निन्दा सुनी, ईंट पत्थर सह १८ बार जहर पीया न जाने कितना दुःख सहा, परंतु उन्होने सबका कल्याण ही चाहा। स्वामी श्रद्धानन्द जी की सेवा और प्रेम तो गुरुकुल कागड़ी की ईंट-ईंट बतला रही है। मुझे स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन की वह घटना सदा याद आती है जब सुल्ताना डाकू का आतक पूरे देश और विशेषकर बिजनौर जिले मे फैला हुआ था। सुल्ताना की ओर से डाके के लिए तैयार रहने की नोटिस आ चुकी थी। जिस डाकू के डर से बडे-बडे दिग्गज काप उठते थे, सरकारी अधिकारियो का पेशाब हो जाता था, पुलिस थर-थर का[illegible] लगती थी, वह सुल्ताना डाकू गुरुकुल पर जिस दिन आक्रमण करने को आनेवाला था, स्वामी श्रद्धानन्द के दिल और चेहरे पर भय का निशान भी नहीं था। रात को सभी कुलवासियो, बच्चो, स्त्रियो और दूसरे लोगो को निश्चिन्त सोने के लिए आदेश देकर १५-२० ब्रह्मचारियो को हाकी देकर और स्वय सबसे आगे बिना शस्त्र के रात को पहरा देने निकल पड़े। लम्बा शरीर, चेहरे पर अहिंसा और प्रेम का तेज, हृदय मे संसार की कल्याण कामना लिए जब वे पहरा दे रहे थे। अपने निश्चित समय पर सुलताना और उसके साथी घोडों पर आए। स्वामी श्रद्धानन्द ने पूछा "कौन हो?" जवाब में उसने कहा तुम कौन हो? स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा "ये गुरुकुल के छात्र हैं और मैं इनका आचार्य और पिता। यहां है कुछ नहीं परन्तु सुलताना डाकू आज यहां आक्रमण करने आने वाला है। हम उसका मुकाबला

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सारे जहां का दर्द हमारे दिल में है

—पं० जगतराम आर्य

देश पर या समाज पर कोई भी सकट आए, मुसीबत आए तो सिवाय आर्यसमाज अथवा आर्य समाजियो के अलावा किसी को कोई दुख दर्द नहीं, चिन्ता नहीं। अपनी समाज और अपने भाइयों से कोई सहानुभूति नहीं। गैर आर्यसमाजियो पर ही हमें गिला है जिनको हम पौराणिक कहते हैं वे अपने आपको सनातनधर्मी कहते हैं। उनकी तो यह हालत है "हलवा पूरी खाय के रहो पलंग पर सोय, अनहोनी न होत है होनी है सो होय" आर्यसमाजी खून देने वाला मजनू है पौराणिक भाई दूध पीने वाला मजनू है। शुरू से ही जहा हिन्दू का पसीना बहा है आर्यसमाजी वहा खून बहाता आया है।

आर्यसमाज मूर्तिपूजा नही करता, चित्र की पूजा नही करता चरित्र की पूजा करता है। दिल्ली मे शिवमदिर का झगड़ा था, मुसलमान लोग जबर्दस्ती शिव मदिर चादनी चौक मे अपना कब्जा करना चाहते थे, हमारे पौराणिक भाई भोला बाबा घर से ही नही निकले आर्यसमाज के नेताओ ने उस स्थान पर अपने आपको खतरे मे डालकर धरना दिया, लड़ाई लड़ी, बहुत कष्ट का सामना किया, परन्तु शिव मन्दिर पर मुसलमानो को कब्जा नही करने दिया, विजय प्राप्त करके शिव मन्दिर अपने पौराणिक भाइयो के हवाले कर दिया।

हैदराबाद दक्षिण मे वहा के निजाम नवाब जो कट्टर मुस्लिम लीगी थे, हिन्दू मन्दिरो पर पाबन्दी लगा दी कि हैदराबाद स्टेट मे किसी भी हिन्दू मन्दिर मे घण्टा, घडियाल, शख न बजाया जाए, ऊची आवाज से आरती-कीर्तन भी न किया जाए। अपने आप को सनातनी कहने वाले किसी के कान पर जू नही रेंगी, आर्यसमाज यह कब सहन करने वाला था, आर्यसमाज ने निजाम हैदराबाद की चुनौती दी कि हिन्दू मन्दिरो पर लगाई गई पाबन्दी हटा लो वरना समस्त भारत का आर्यसमाज धर्म-युद्ध छेड देगा। निजाम हैदराबाद नही माना तो आर्यसमाज को ऐतिहासिक आर्य सत्याग्रह करना पड़ा। इस काम के लिए गुरुकुल, डी० ए० वी० कालेज, डी० ए० वी० स्कूल तथा अन्य सभी आर्यसमाजें और आर्य सस्थाए एकजुट होकर धर्म युद्ध के लिए सिर पर कफन बाधकर घर से बाहर निकल आई। दूर-दूर से आर्य नेताओ के जत्थे हैदराबाद सत्याग्रह करके १६ हजार आर्य जन गिरफ्तार हुए- जेलो मे सख्त यातनाए सहन कीं, उस अति सस्ते जमाने मे आर्यसमाज के आठ लाख रुपए सत्याग्रह मे खर्च हुए थे जो आज के दिनो मे ८ करोड के बराबर हैं। बाईस आर्यवीरो का बलिदान उन्हीं दिनो मे हो गया था। आखिर जेलें भर जाने के बाद, निजाम को झुकना पड़ा और हिन्दू मन्दिरो पर से पाबन्दी हटानी पडी।

सनातन धर्म जगत् के सबसे बडे नेता पं० मदनमोहन मालवीय का एक भाषण लाहौर मे सनातन धर्म के मंच पर हुआ था उसमे मैं भी वहा उपस्थित था, प० मालवीय जी ने ठीक ही कहा था, "ऐ सनातन धर्मी भाइयो, आर्यसमाज से हमारा अवतारवाद, मूर्तिपूजा, श्रद्धा आदि पर सैद्धान्तिक मतभेद हो सकता है, मगर मैं आपको यह बता देना चाहता हू कि आर्यसमाज ही धर्म की बाड है और हिन्दुओ का रक्षक है"।

आज धर्मप्रचार के लिए आर्यसमाज के लोग दान, धन मागने जाते हैं तो कई भाई कह देते हैं हम तो सनातनी हैं, परमात्मा उनको सद्बुद्धि दें। आज पजाब मे अकाली भाई बेगुनाह हिन्दुओ की हत्याए कर रहे हैं और हिन्दू मन्दिरो पर नाजायज कब्जे कर रहे हैं, आज पजाब के हिन्दू की जान और माल सुरक्षित नही है समस्त भारत का आर्यसमाजी पजाब के हिन्दू को आश्वासन दे रहा है कि आप अपने आपको अकेले मत समझो, सारा भारत आपके साथ है। प्रत्येक आर्यसमाजी पजाब मे हिन्दुओ की स्थिति के कारण दुखी है बेचैन है।

२४ जुलाई को दिल्ली की २०० आर्यसमाजो मे हिन्दू सुरक्षा दिवस जनसभा करके मनाया गया और प्रस्ताव पारित करके भारत सरकार को भेजा, हम अपने सनातन धर्म के कई मन्दिरो मे गए और जाकर उन्हे जनसभा मे आमन्त्रित किया, बडे खेद और दुख की बात है कि भोले बाबा मन्दिरो मे सीताराम, राधेश्याम का कीर्तन करने वाला एक भी व्यक्ति पजाब के हिन्दुओ से सहानुभूति रखने वाला नही पहुचा।

ए० अपने आपको सनातनधर्मी कहने वाले प्यारे भाइयो, अगर आप जिंदा रहना चाहते हो तो हिन्दू सगठन को मजबूत बनाओ। अपने धर्म स्थान तथा जान व माल की सुरक्षा चाहते हैं तो—हिन्दुओ की रक्षक एक मात्र सस्था आर्यसमाज के साथ मिलकर काम करो।

८।६६३५ जगतनिवास, प्रेमगली गांधीनगर, दिल्ली-३१

अहिंसा (पृष्ठ ४ का शेष)

करेंगे। उससे डरेंगे नही। इसीलिए पहरा दे रहे हैं।" सुलताना घोड़े से उतरा, स्वामी श्रद्धानन्द के पैर छुए और यह कहते हुए कि वह सुलताना मैं ही हूं। आपके यहां कुछ न होगा।" वापस चला गया। यह है अहिंसा की विजय। गाधी अहिंसा के उपासक थे। 'अक्रोधेन जयेत् क्रोध असाधु साधुना जयेत्' क्रोध को अक्रोध से, असाधुता को साधुता से जीतना चाहिए। यही अहिंसा है।

१६५, जाफरा बाजार, गोरखपुर, उ० प्र०

स्वार्थ-त्याग

कुछ पुरानी बात है। उन दिनो इग्लैण्ड और स्पेन के मध्य लडाई चल रही थी। लडाई के मोर्चे पर अग्रेजो का एक वीर योद्धा सर फिलिप सिडनी घायल होकर गिर गया। उस समय वह कई भीषण चोटो और प्यास से तडप रहा था। उसकी फौज के एक सिपाही ने अपने अफसर को जब प्यास और चोट से तडपते देखा तब वह उनके लिए पानी का एक प्याला भी लेकर आया। वह अफसर पानी के प्याले को होठो तक मुश्किल से लाया होगा कि उसकी नजर सामने मैदान मे पडे एक दूसरे सिपाही पर पडी। वह उससे भी कही अधिक घायल था। फिलिप सिडनी ने अपनी प्यास को दबाकर वह पानी का प्याला अपने से भी अधिक घायल सिपाही की ओर बढाकर कहा—'तुम मुझसे कही अधिक घायल हो, तुम्हारी तड़पन मुझसे कहीं अधिक है, तुम्हारी पानी की जरूरत मेरे से कहो अधिक है।" यह कहकर वह पानी उन्होने अपने उस अदने से सिपाही को पिला दिया।

उस सैनिक अफसर की उस उदारता एव स्वार्थ त्याग ने सारी फौज में उत्साह की एक नई लहर व्याप्त कर दी। —नरेन्द्र

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाएंगे

राष्ट्र में एकता व चेतना के लिए हिन्दी जरूरी

दिल्ली में हिन्दी दिवस पर जन संकल्पः

अनेक नेताओं के भाषण

नई दिल्ली। अ० भा० कांग्रेस (इ) के कार्यकारी अध्यक्ष प० कमलापति त्रिपाठी ने बुधवार १४ सितम्बर १९८३ के दिन इस बात पर खेद प्रकट किया कि स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद हिन्दी को उचित सम्मान नही मिला है। उन्होने कहा कि हिन्दी प्रादेशिक भाषाओ के साथ सम्पर्क भाषा के रूप मे कार्य कर सकती है। ज्यो-ज्यो सरकारी भाषा के रूप हिन्दी का प्रयोग बढेगा, त्यो-त्यो प्रादेशिक भाषाओ का व्यवहार भी बढता चला जाएगा। हमे सविधान मे मिले हिन्दी के स्थान को दिलाने के लिए जन-जन तक पहुचना चाहिए। राष्ट्र मे एकता और चेतना बनाए रखने के लिए सभी राज्यो मे हिन्दी को व्यावहारिक रूप से प्रतिष्ठित किया जाना आवश्यक है।

हिन्दी दिवस के अवसर पर राजधानी मे आयोजित एक विशेष समारोह मे जनता ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा की स्थिति दिलाने तथा उसे जन-जन तक पहुचाने का सकल्प किया।

दिल्ली के शिक्षा सम्बन्धी कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि देश मे आज जो बिखराव नजर आ रहा है, वह हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा न मिलने के कारण ही है। उन्होने हिन्दी को सशक्त बनाने की अपील की और घोषित किया कि दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत कार्यालयो मे हिन्दी का प्रयोग निरन्तर बढाया जा रहा है।

आन्ध्र प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए

हैदराबाद में इत्तहादुल मुसलमीन जैसे संगठन अवैध घोषित किए जाएं—सार्वदेशिक की मांग

दिल्ली। हैदराबाद के पुराने शहर मे इत्तहादुल मुसलमीन द्वारा बार-बार साम्प्रदायिक आग भडकाने का आरोप लगाते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने विशेष तार भेजकर मुख्यमन्त्री श्री एन० टी० रामाराव से माग की है कि हैदराबाद के हिन्दुओ पर किए जा रहे अत्याचारो को रोका जाय।

उन्होने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा-गाधी तथा राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी को भी तार देकर बताया कि हैदराबाद मे निजाम राज्य के रजाकारो के प्रतिनिधि इत्ताहादुल मुसलमीन जैसे साम्प्रदायिक सगठनो पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। यदि प्रान्तीय सरकार शान्ति स्थापित करने तथा राष्ट्रवादी नागरिको की रक्षा करने मे असमर्थ हो तो आन्ध्र प्रदेश मे राष्ट्रपति शासन लागू दिया जाय।

प्रत्येक देशवासी राष्ट्रीयता की शपथ ले

भारत की मूलधारा से योग करें आर्य नेताओं का सत्परामर्श

मकराना—भारत की मूल-धारा से हटकर यदि किसी भी ताकत ने देश के टुकडे करने चाहे उनके भी टुकडे कर दिए जायेंगे। यह सिहनाद यहा हिन्दू नेता पडिता राकेशरानी ने विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए किया।

पडिता राकेश रानी हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित कर रही थी। उन्होने कहा कि मुसलमान हो या ईसाई, पारसी हो या सिख, सविधान के अनुसार वे सब भारतीय हैं और यह बोध उन्हे जब तक नही होगा उन्हे देश में रहने का कोई अधिकार नही।

हिन्दू नेता व सुप्रसिद्ध विचारक वेदभिक्षु ने इस अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि व्यक्ति चाहे जिस किसी वर्ग, राजनीतिक दल विचारधारा अथवा सम्प्रदाय का हो किन्तु राष्ट्र की सुरक्षा के प्रश्न पर उसे "भारतीय" हो जाना चाहिए।

बम्बई में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन

बम्बई। आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई की ओर से १५ अगस्त के दिन आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आयोजित किया गया। भू० पु० केन्द्रीय रक्षामन्त्री प्रो० शेरसिह ने कहा कि साम्प्रदायिक सघर्षों का सूत्रपात अग्रेजो ने किया था, आज भी ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका से उन्हे प्रोत्साहन मिलता है। प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकारनाथ आर्य ने राष्ट्रीय एकता की महत्ता पर प्रकाश डाला। सभा के मन्त्री श्री ज्येष्ठ वर्मा ने सभी नागरिको पर समान राष्ट्रीयता कानून लागू करने की माग की। भारतीय इतिहास पुनर्लेखन सस्था के जीवन कुलकर्णी ने आरक्षण व्यवस्था समाप्त करने का सुझाव दिया। भारतीय स्टेट बैंक के राजभाषा अधिकारी डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री ने एकता के राष्ट्रीय गौरवपूर्ण इतिहास के प्रचार की महत्ता पर बल दिया।

आर्यसन्देश को पूर्ववत् सहयोग दें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुख पत्र 'आर्य सन्देश' आर्यजनता का अपना पत्र है। यह वर्ष भर सामान्य अको एव विशेषाको के माध्यम से आर्यसमाज के मन्तव्यो एव सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार मे निष्ठापूर्वक सलग्न है। कागज, छपाई, डाक व्यय आदि खर्चों के बढ जाने के कारण अत्यन्त विवशतापूर्वक हमे 'आर्यसन्देश' का वार्षिक मूल्य १५) से बढाकर २०) कर देना पडा है। इसी प्रकार स्थायी ग्राहको के लिए सहायता की धन राशि १५०) से बढाकर २००) कर देनी पडी है। आशा ही नही, पूर्ण विश्वास है कि हमारी विवशता देखते हुए आर्यसमाजें और आर्यजनता 'आर्यसन्देश' को पूर्ववत् सहयोग देगी। पत्र-व्यवहार करते समय अथवा धन भेजते हुए अपनी ग्राहक सख्या का उल्लेख अवश्य करेंगे।

केवल हिदुओं पर प्रतिबन्ध क्यों

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद के के महामन्त्री श्री हरमोहन लाल ने एक वक्तव्य मे मध्य प्रदेश सरकार के हाल ही मे हिन्दू मन्दिरो और हिन्दू ट्रष्टो के बारे मे जारी एक अधिसूचना पर टिप्पणी करते हुए कहा कि मध्य प्रदेश सरकार ने अपनी अधिसूचना मे हिन्दू ट्रस्टो और हिन्दू मन्दिरो की व्यवस्था के लिए जिस प्रस्तावित कानून का सकेत दिया है वह केवल हिन्दू संगठनो के लिए ही है। इससे मस्जिदो, गिरजाघरो और मुस्लिम व ईसाई ट्रस्टो को मुक्त रखा गया है। क्या यही धर्म निरपेक्षता है, क्या सरकारी कानूनो को धार्मिक आधार पर बनाना धर्म निरपेक्षता है। इस अधिसूचना मे मन्दिरों और हिन्दू ट्रस्टो से जो भी अर्थ संग्रह हो उसका १० प्रतिशत सरकारी कोष मे जमा करने को कहा गया है।

विश्व में हिन्दी का तीसरा स्थान

सागर। १६ सितम्बर को हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह पर सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डा० लक्ष्मीनारायण दुबे ने कहा कि आज विश्व मे २८०० भाषाए बोली जाती हैं जिसमे रूसी भाषा को ३६ करोड, अग्रेजी को २५ करोड और हिन्दी को २४ करोड लोग बोलते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि हिन्दी विश्व मे तृतीय स्थान रखती है, उसके बाद भी हिन्दी की हिन्दी के देश भारत मे उपेक्षा ही यह बडे दु ख की बात है।

अध्यक्षता करते हुए उप सचालक उद्योग, श्री जमीदार साहब ने कहा कि—हिन्दी भाषा के सबसे बडे दुश्मन हम हिन्दी भाषी हैं क्योकि हम अपने बच्चो को कानवेन्ट स्कूल मे भेजते हैं, बच्चो का नाम बंटी पिंकी रखते हैं और बच्चे हमे मम्मी पापा कहते हैं और हम खुश होते हैं।

पुरी के मन्दिर में प्रवेश पर रोक

हिन्दू धर्म की भावना के विपरीत

नई दिल्ली १६ सितम्बर, १६८३। समाचार पत्रो मे प्रकाशित इस घटना पर कि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को पुरी के मन्दिर मे प्रवेश करने नही दिया गया, अत्यधिक विस्मय और खेद प्रकट करते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के महामन्त्री श्री हरमोहन लाल ने इस घटना को हिन्दू धर्म की उदार और विशाल शिक्षाओं के विपरीत हिन्दू धर्म के स्वरूप को धुधला करने वाली और दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होने कहा कि यह बात इसलिए ही दु खद नही है कि यह प्रधानमन्त्री के साथ घटी है, अपितु यदि यह किसी अन्य सामान्य व्यक्ति के साथ भी घटित होती तब भी उतनी ही दुर्भाग्यपूर्ण होती।

डेनमार्क के गुरुकुल सदृश विद्यालय

इंग्लैण्ड में स्वावलम्बन · पुस्तकालयों में पाठकों की सुविधा

हरिद्वार। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा ने अपने लन्दन-प्रवास के दौरान अपने सस्मरणो मे लिखा है—रेल स्टेशनो के समीप—ऊची-नीची पहाडियो पर खेतो खलिहानो को देखकर हृदय प्रसन्न हो उठता है। डेन्मार्क मे गुरुकुल सदृश लोक विद्यालयो का आन्दोलन चलाया गया था। ये बडी सफलता से चल रहे हैं, उन्हे राज्याश्रय भी मिला है।

बरघिम मे शिक्षा का क्रम निरन्तर प्रचलित रहा। यहा पर सभी शिक्षक—प्राध्यापक अपने चाय, कपडे धोने, सामान ढोने आदि के सभी कार्य स्वय करते हैं। सामान उठाने के लिए कहीं कुली नही मिलते, कभी-कभी ट्राली मिल जाती है। बसें, रेलें ठीक समय पर चलती हैं। यदि एक मिनट भी देर हो जाए तो गाडी नही मिलती।

पक्तिबद्ध मकानो के अतिरिक्त जनता अपना छोटे-छोटे बगीचे मे गर्व से कार्य करती है। घर के घास के मैदान में भी मशीन सब स्वय ही घास काटते हैं।

यहा के छोटे-बडे पुस्तकालय की प्रशसा के योग्य हैं। उनके साथ सग्रहालय भी हैं। प्रौढो, बडे-बूढो, युवा-युवतियो, विद्यार्थियो सबकी जरूरतो के लिए यहा पुस्तकें, पत्रिकाए, फिल्मे एव वीडियो हैं, जो चीजें तुरन्त नही मिलतीं, उन्हे टैलेक्स सम्वाद से तुरन्त मगा लिया जाता है। यहा अन्धो-अपगो के लिए पाठय सामग्री विद्यमान रहती हैं। पाठकों की सुविधा के लिए कर्मचारी सदा तत्पर रहते हैं।

जिला सिरमौर हिमाचल प्रदेश के आर्यसमाज राजगढ़ में वेदप्रचार

आर्यसमाज जिला सिरमौर हिमाचल प्रदेश के राजगढ का वार्षिकोत्सव ६, १०, १०, सितम्बर को सम्पन्न हुआ। उसमे श्री दयाराम शास्त्री चण्डीगढ सैक्टर १६ डी, स्वामी निगमानन्द दीनानगर, श्री चूनी लाल भजनोपदेशक दिल्ली, श्री योगेन्द्र सिंह भजन मण्डली हिमाचल प्रदेश आदि विद्वानों के प्रवचन एव भजन हुए। यहा की समाज एक आदर्श समाज है।

रविवार, २ अक्तूबर, १९८३

अन्धामुगल-प्रतापनगर—प० प्रकाशचन्द वेदालकार, अशोक नगर—प० तुलसीराम आर्य, आर्यपुरा—प० खुशीराम शर्मा—आर० के० पुरम सेक्टर-६ पं० सत्यभूषण वेदालकार; आनन्द विहार—प० शीशराम भजनीक, अमर कालोनी—प० ज्ञानचन्द, किशनगज—प० सोमदेव शर्मा, किग्जवे कैम्प—प० कामेश्वर शास्त्री; कालकाजी—श्रीमती गीता शास्त्री; कालकाजी डी० डी० ए० फ्लेट—आचार्य नरेन्द्र जी, कृष्ण नगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, गीता कालोनी—प० अमीचन्द मतवाला, जगपुरा-विस्तार—माता लाजवन्ती; गोविन्दपुरी—प० तुलसीदेव सगीताचार्य, गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—डा० सुखदयाल भूटानी, चूना मण्डी—डा० रघुनन्दन सिह; जनकपुरी सी-३—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, जनकपुरी बी-२ प० विश्वप्रकाश शास्त्री, टैगौर गार्डन—प० विद्याव्रत शास्त्री, तिमारपुर—प० रामनिवास शास्त्री, देवनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, नारायण विहार—प० हरिश्चन्द आर्य, नगर शाहदरा—पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, पजाबी बाग—प० रमेश चद वेदाचार्य, पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प० रामस्वरूप शर्मा, प्रीतमपुरा—प० मनोहरलाल ऋषि, बिरला लाइन्स—प० बलबीर शास्त्री; विक्रमनगर—प० मोहन लाल गाधी, विनय नगर—आचार्य दिनेशचन्द पाराशर, माडलबस्ती—प० सुमेरचन्द्र विद्यार्थी, महरौली—प० अमरनाथ कान्त, मोतीबाग—स्वामी शिवानन्द, मॉडल-टाउन—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, राणाप्रताप बाग—प० चमनलाल, रमेशनगर—प० रामदेव शास्त्री, लड्डूघाटी—प० ओ३म्प्रकाश गायक, लाजपतनगर—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्रीनिवासपुरी—प० जयभगवान् जी, सराय रोहेला—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी; हौजखास—प० महेशचन्द्र पाराशर, तिनगर—प० देव शर्मा शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता, वेदप्रचार विभाग

आर्यसमाज सरस्वती विहार के नए पदाधिकारी

प्रधान-श्री एस० एल० बजाज, उपप्रधान श्री विशनदास गम्भीर एव श्री ए० पी० दीवान-मन्त्री-श्री के० डी० वर्मा, उपमन्त्री-श्री सी० बी० शर्मा, श्री सी० पी० अरोडा, कोषाध्यक्ष-श्री रामचरण सिह चौधरी, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री ईश्वरदास कुमार, लेखा-निरीक्षक श्री श्यामलाल गोयल।

आर्यसमाज डाक पत्थर (देहरादून) के पदाधिकारी—प्रधान—श्री नरेन्द्र सिह वर्मा, उपप्रधान—श्री महेन्द्र सिंह वर्मा, मन्त्री—श्री रामकुमार तोमर, उपमन्त्री—श्री सतीशचन्द्र गुप्ता कोषाध्लक्ष—श्री रामकृष्ण गुप्ता।

फीरोजपुर छावनी में सफल पारिवरिक सत्संग

आर्यसमाज, लुधियाना रोड, फीरोजपुर छावनी को तत्त्वावधान मे २२-९-८३ प्रात पहली बार पूर्णमाशी का आर्य पारिवारिक सत्सग प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य जी के निवास स्थान पर हुआ। यज्ञ, पुरोहित श्रीराम शास्त्री की तथा उप प्रधान श्री द्वारका नाथ वर्मा ने बड़े सुचारु रूप से सम्पन्न करवाया। भजन के उपरान्त श्री रामचन्द्र शास्त्री जी ने सभी को आशीर्वाद दिया तथा उनके अनमोल वचनों से लाभान्वित किया।

गाजियाबाद से अजमेर पद-यात्रा

गाजियाबाद। महर्षि दयानन्द शम्भु दयाल वैदिक सन्यास आश्रम के आचार्य स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती के नेतृत्व मे बीस सन्यासियो वानप्रस्थियो ब्रह्मचारियो की टोली २२ सितम्बर, १९८३ को चार बजे यज्ञानुष्ठान और महर्षि दयानन्द के मानव उत्थान कार्यों पर एक महती सभा मे प्रकाश डालकर वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद से अजमेर के लिए प्रस्थान किया।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का वार्षिक चुनाव

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की वार्षिक साधारण की बैठक रविवार, ९ अक्तूबर, १९८३ को साय ३॥ बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड मे होगी। इस अधिवेशन में गत वर्ष का विवरण, आय-व्यय का ब्यौरा स्वीकार करने के बाद नए वर्ष के लिए सभा अधिकारियों एवं अन्तरंग सभा का निर्वाचन किया जाएगा। सहयुक्त सदस्य अपना ५) का शुल्क जमा करा दें अथवा ९ अक्तूबर को साथ लेते आए। जिन समाजो ने अपना सम्बद्धता शुल्क ३०) और सदस्यता शुल्क नहीं दिया है, वे भी जमा करा दें।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज का योगदान

आर्यसमाज का इतिहास—तीसरा भाग; लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालकार तथा प्रो० हरिदत्त वेदालंकार; प्रकाशक—आर्य स्वाध्याय केन्द्र ए-१।३२ सफदरजग इन्कलेव, नई दिल्ली-११००२९; पृष्ठ सख्या ७२०; मूल्य सजिल्द १००)

भारत के राष्ट्रीय जीवन मे जन-जागरण पैदा करने मे आर्यसमाज की सक्रिय भूमिका रही है। भारत के बाहर विदेशो के व्यापक क्षेत्र मे आर्यसमाजो की स्थापना हुई है और उन्होने वहा के सामाजिक एव धार्मिक जीवन पर प्रभाव डाला है। आर्यसमाज का प्रभाव क्षेत्र जनता के किसी विशिष्ट वर्ग तक ही मर्यादित नही है, प्रत्युत कथित सामाजिक उच्च वर्ग एव दलित समाज को एक करने मे भी उसकी भूमिका रही है। अनेक सामाजिक एव धार्मिक कुरीतियो के निवारण सम्बन्धी जन-जागरण सम्बन्धी कार्यों के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र मे आर्य समाज ने उल्लेखनीय योगदान किया है। मैकाले ने देश मे एक ऐसी शिक्षा पद्धति प्रचलित करने की कोशिश की थी कि जिससे स्वरूप एव नाम से भारतीय अपनी वेश-भूषा एव सस्कारो से अग्रेजियत से ढले हो। उस दशा मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश एव अपने दूसरे ग्रन्थो या प्रवचनो के माध्यम से ऐसी आर्ष भारतीय पद्धति अपनाने का आग्रह किया जिसमे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ भारत की सस्कृति एव परम्पराओ के अनुकूल प्राचीन वेदशास्त्रों एव चिन्तन के अध्ययन को अनिवार्य घोषित किया। महर्षि प्रचलित शिक्षाप्रणाली के दोषो को दूर करने के साथ उसमे भारतीय तत्वचिन्तन एव शिक्षा प्रणाली के मौलिक तत्त्वो का पुनरुज्जीवन करना चाहते थे। महर्षि एक प्रगतिशील शिक्षाशास्त्री थे, उन्होने विश्व एव मानवता के कल्याण के लिए जिन उपायो का निर्देश किया था, उनमे उचित प्रकार की सन्तुलित शिक्षा की व्यवस्था का प्रारम्भ एक मुख्य भाग था।

सन् १८८३ मे महर्षि दयानन्द का देहावसान हो जाने पर उनके स्थायी स्मारक के रूप मे महर्षि की शिक्षापद्धति के आधार पर ऐसे शिक्षणालयो की स्थापना आवश्यक समझी गई, जिनमे सस्कृत भाषा, वेद-वेदाग, प्राचीन सत्य शास्त्रो के साथ नए ज्ञान-विज्ञान के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था हो, साथ ही जिनका वातावरण वैदिक धर्म तथा भारतीय सस्कृति के अनुरूप हो। फलत पजाब, सयुक्त प्रान्त, राजस्थान के आर्य नेताओ ने एग्लोवैदिक या एग्लो-आर्यन शिक्षण सस्थाए स्थापित की। अर्द्धशताब्दी से भी कम समय मे डी०ए०वी०शिक्षण सस्थाओ का जाल देश विदेशो मे व्याप्त हो गया।

परन्तु आर्यसमाज के चिन्तक एव विद्वान् इन डी० ए० वी० सस्थाओ द्वारा छात्रो को भारतीय धर्म एव सस्कृति का परिचय मिलने मात्र से सन्तुष्ट नही थे, उनका ख्याल था कि इन सस्थाओ मे वैदिक की तुलना मे अग्रेजियत पर अधिक बल दिया जाता है, फलत प० गुरुदत्त और महात्मा मुशीराम आदि चिन्तको ने ऐसी सस्थाए स्थापित करने की महत्ता पर बल दिया, जिनमे महर्षि द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का पूरा अनुसरण किया जाए। इस चिन्तन के फलस्वरूप गुरुकुलो की स्थापना की गई, गुरुकुल कागडी की स्थापना से भी कई प्राचीन चिन्तको को सन्तोष नही हुआ। गुरुकुल कागडी की शिक्षा पद्धति के असन्तुष्ट विद्वानो ने आर्ष गुरुकुल स्थापित करने का प्रयत्न किया। डी० ए० वी० सस्थाओ के समान उन दयानन्द आर्य विद्यालयो, महाविद्यालयो एव गुरुकुलो की सख्या सैकडो मे है। आर्य शिक्षण सस्थाओ का स्वरूप चाहे कैसा हो, यह तथ्य स्वीकार करना होगा कि अविद्या के नाश विद्या की वृद्धि, स्त्री शिक्षा के प्रसार एव शिक्षणालयो मे किसी प्रकार के जातिगत भेदभाव को समाप्त करने, वैदिक धर्म-भारतीय सस्कृति के प्रसार के साथ विदेशो मे भी बसे भारतीय मूल के लोगो को भारतीय धर्म, भाषा और सस्कृति को सरक्षण मे लाने का मुख्य श्रेय देश-विदेशो मे फैली आर्यसमाज की सहस्रो शिक्षण सस्थाओ को देना होगा।

'आर्यसमाज के इतिहास के इस तीसरे भाग मे आर्यसमाज के शिक्षा विषयक इसी क्रियाकलाप का विस्तृत विवरण एव विवेचन दिया गया है। इस तीसरे भाग के कुल २६ अध्याय हैं। पहले दो अध्यायो मे प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति एव शिक्षा कन्द्रो का परिचय दिया गया है। दूसरे अध्याय मे १९ वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे शिक्षा की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे अध्याय मे शिक्षा के क्षेत्र मे आर्यसमाज के प्रवेश का विवरण है। चौथे अध्याय मे दयानन्द एग्लो वैदिक स्कूलो और कालिजो की स्थापना एव विकास पर डाला गया है तो पाचवे अध्याय मे गुरुकुल कागडी की स्थापना एव विकास का विवरण है। छठे सातवें अध्यायो मे स्त्रीशिक्षा मे आर्यसमाज के योगदान तथा कन्या महाविद्यालय जालन्धर की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। १३ अध्यायो मे विभिन्न गुरुकुलो, उनके विकास एव वर्त्तमान स्थिति का विवरण दिया गया है, पाच अध्यायो मे डी० ए० वी० आन्दोलन एव सस्थाओ के विराट् स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। एक अध्याय मे विदेशो मे आर्य शिक्षण

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज ······ पृष्ठ ७ से आगे

संस्थाओ की स्थिति एवं भविष्य पर प्रकाश डाला गया है तो एक स्वतन्त्र अध्याय मे आर्य शिक्षण संस्थाओं के भविष्यका मूल्याकन किया गया है । सक्षेप मेकहा जाए तो आर्यसमाज के इतिहास के इस तीसरे भाग से शिक्षा के क्षेत्र मे आर्यसमाज के योगदान का व्यवस्थित परन्तु सन्तुलित परिचय मिलता है। इस भाग मे आर्यसमाज के शिक्षा विषयक कार्यकलाप का समग्र स्वरूप रखनेका एक श्लाघनीय प्रयत्न किया गया है। आशा है कि आर्यसमाज के इतिहास के ये भाग इस आन्दोलन के विश्वकोश सिद्ध हो सकेंगे। यह इतिहास आर्यसमाज की सस्थाओं एव इस विचार के मानने वालो के लिए सग्रहणीय है तो साथ ही समस्त पुस्तकालयो एवं भारत के शिक्षा आन्दोलन में दिलचस्पी रखने वालो के लिए एक अलभ्य मूल्यवान् ग्रन्थरत्न है।

—नरेन्द्र

प्रभु ओ३म् की महिमा

—रचियता—स्वामी ब्रह्मानन्द जिज्ञासु

प्रभु ओ३म् तेरी महिमा कितनी अपरम्पार है।
हम न समझ पाते, तेरा कैसा चमत्कार है।।
प्रभु तूने सृष्टि रचकर, जीवो का निर्माण किया।
यथा कर्मानुसार सबको, तूने फल प्रदान किया।।
श्रेष्ठ कर्मियो को तूने दुर्लभ मानवजीवन दिया।
घोर दुष्कर्मियो को तूने पशु तुल्य जीवन दिया।।
तूने मानव हितार्थ दिव्य वैदिक ज्ञान दिया।
तथा भोग्य-उपकरण देकर जीवो का कल्याण किया।।
प्रभु तुम सर्व शक्तिमान हो एव आश्रयदाता हो।
तुम सबका पोषण करते, तुम जीवनदाता हो।।
प्रभु तेरी हम जीवो पर कितना उपकार है।
इसलिए प्रभु तुम्हे हम पर इतना अधिकार है।।
सत्य सर्वव्यापी प्रभु का सबके हृदय मे रमण है।
ऐसे महान् परमेश्वर को 'ब्रह्मानन्द' का नमन है।।

आर्यसमाज हिण्डोन में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

दिनांक २३ अगस्त, (१६८३ रक्षा-बन्धन से जन्माष्टमी) तक आर्यसमाज हिण्डौन सिटी में वेदप्रचार सप्ताह के उपलक्ष में आयोजित यजुर्वेद-पारायण यज्ञ पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज के आचार्यत्व मे सोत्साह समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पुण्य पर्व पर श्री प्रह्लाद कुमार जी आर्य द्वारा अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में स्थापित श्री घूड़मल आर्य पुरस्कार" आर्य जगत के उद्भट दार्शनिक विद्वान महान मनीषी गाजियाबाद निवासी ६० वर्षीय पूज्य आचार्य उदयवीर शास्त्री को उनके वेदान्त दर्शन के विद्योदय भाष्य पर ससम्मान भेंट किया गया। इसमें अभिनन्दन पत्र, एक सॉल एवं ११०१) रुपया की राशि समर्पित की गई। इस भव्य समारोह में पूज्य आचार्य प्रेम भिक्षुजी वानप्रस्थ मथुरा, डा० ओमप्रकाश जी वेदालंकार, एम० ए० पी० एच० डी० भरतपुर प्रभृति विद्वान उपस्थित थे।

शोक समाचार

हमारे कर्मठ कार्यकर्ता तथा आर्यसमाज मौजपुर के संस्थापक डा० कृष्ण-अवतार आर्य को मातृ शोक दिनाक २५-६-८३ दिन रविवार को हो गया है। आदरणीय स्वर्गीय माता जी बडी धार्मिक प्रवृति की थी। उनकी आर्यसमाज में बड़ी श्रद्धा थी। उसी का परिणाम है कि उनका सारा परिवार आर्यसमाज से सम्बन्धित है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा यह शोक समस्त परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने का सामर्थ्य दे।

माताजी की रस्म पगड़ी दिनाक ६-१०-८३ दिन बृहस्पतिवार समय ३-३० बजे हमारे निवास स्थान ए-३१/१५ बी, स्वामी दयानन्द स्ट्रीट मौजपुर दिल्ली-५३ मे सम्पन्न होगी।

दूरभाष-२१२४५०

डॉ० कृष्ण अवतार आर्य
राजेश कुमार, संजय कुमार आर्य

रजि० न० डी० सी० 759
साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा न० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपए | वर्ष : ७ अंक ५० | रविवार ९ अक्तूबर, १९८३ | २३ आश्विन वि० २०४० दयानन्दाब्द—१५९

दिल्ली भर में आर्यवीर दल का पुनर्गठन होगा

दिल्ली प्रान्तीय आर्यवीर दल १०१ आर्यवीर महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर अजमेर सेवार्थ भेजेगा।

दिल्ली के आर्यवीर दल को पूर्ववत् सुदृढ बनाने के लिए दिल्ली सभा कटिबद्ध है। आर्य समाज लाजपत नगर मे आयोजित बैठक मे रविवार २ १०.८३ को दक्षिण दिल्ली की आर्यसमाजो के अधिकारियो ने आर्य समाजो मे आर्यकुमार सभा एव आर्य-वीर दल की शाखाए खोलने का आश्वासन देते हुए आर्यवीर दल के अधिकारियो को पूर्ण सहयोग देकर आर्यवीर दल को पुनर्गठन करने का निश्चय किया। अजमेर जाने वाले १०१ आर्यवीरो के नाम आर्यवीर दल के सह सचालक श्री जयदेव जी चौधरी प्रिंसीपल डी० ए० वी० स्कूल राजेन्द्रनगर के पास आ रहे हैं।

सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने, जो बैठक में उपस्थित थे, दक्षिण दिल्ली की आर्य समाजो को अधिक से अधिक सख्या मे अजमेर पहुचने के लिए अपील की और शताब्दी के लिए धन एकत्र करके सभा को भेजने के लिए जोर दिया।

सभा द्वारा प्रचार-वाहन क्रय की गई

आर्य जनता को सहर्ष सूचित किया जाता है कि सभा द्वारा पूर्व निश्चय के अनुसार जो प्रचार-वाहन क्रय करने की योजना थी वह सोमवार, ३ अक्तूबर, १९८३ को पूर्ण हो गई है। प्रचार वाहन सभा को प्राप्त हो चुका है उसमे लाउडस्पीकर आदि लगा कर सभा ग्राम-प्रचार के कार्य को व्यापक रूप देगी। आर्य ड्राइवर के लिए पूर्व भी विज्ञापन दिया जा चुका है। ड्राइवर उपलब्ध होते ही प्रचार कार्य तेजी से प्रारम्भ हो जाएगा, कई दानी महानुभावो एव आर्य समाजो द्वारा प्रचार वाहन की मद मे धन देने के वचन दिए गए थे और वे यह चाहते थे कि वाहन उपलब्ध होने पर ही धन राशि देंगे। उन सभी महानुभावो से हमारा अनुरोध है कि अपनी राशि शीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें।

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव प्रारम्भ

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ६१वा वार्षिकोत्सव प्रारम्भ हो गया। सोमवार ३ अक्तूबर से स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ प्रात ७ से ८.३० बजे तक रात्रि को स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती जी की ही पवित्र वेदकथा एव प्रसिद्ध रेडियो कलाकार श्री ओ३म प्रकाश वर्मा द्वारा प्रतिदिन रात्रि को ७.३० से ९ बजे अमृत वर्षा हो रही है। शुक्रवार दिनाक ७ अक्तूबर को दोपहर मे १२ बजे से ५ बजे साय तक आर्य स्त्री समाज का वार्षिकोत्सव उत्साह-पूर्वक मनाया जाएगा। उसी दिन रात्रि को स्वामी सुन्दरानन्द सरस्वती द्वारा हिमालय के आकर्षक एव महत्वपूर्ण स्थलों का रंगीन स्लाईडो द्वारा दिग्दर्शन कराया जाएगा यह तब नवीन वस्तु होगी जो पहली बार ही दिल्ली मे दिखाई जा रही है। शनिवार प्रात १० से १ बजे तक दिल्ली के हायर सैकेण्डरी स्कूलो के छात्रो द्वारा राकेश कैला भाषण प्रतियोगिता का कार्यक्रम होगा जिसका विषय है महर्षि दयानन्द महान शिक्षाशास्त्री। दोपहर पश्चात् महाविद्यालयो एव विश्वविद्यालयो के छात्रो द्वारा भाषण प्रतियोगिता होगी जिसका विषय होगा 'महर्षि दयानन्द एक महान अर्थशास्त्री"। शनिवार रात्रि को मानव निर्माण सम्मेलन एव रविवार प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का कार्यक्रम है। ऋषि लगर के पश्चात् आर्य केन्द्रीय सभा की वार्षिक साधारण सभा होगी।

अजमेर शताब्दी पर बसों से जाइए
१५ अक्तूबर तक सुविधा का लाभ उठाइए

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्राणनाथ घई ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो एव आर्यसस्थाओ एव आर्य जनता से अनुरोध किया है नवम्बर मास मे अजमेर मे मनाई जाने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य मे दिल्ली के आर्य बहन भाइयो को अजमेर शताब्दी मे भाग लेने के लिए आर्य जनता की सुविधार्थ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने विशेष बसो का प्रबन्ध किया गया है। बसें २ प्रकार की हैं। एक दिल्ली से अजमेर होकर वापिस आ जाएगी जिसका मार्गव्यय १०० रुपए प्रति यात्री है और दूसरी बसें अजमेर शताब्दी समारोह की समाप्ति पर चितौडगढ उदयपुर, माऊटआबू जोधपुर जयपुर होती हुई ११ नवम्बर को प्रात दिल्ली पहुचेगी, इसका मार्ग व्यय १८५ रुपए प्रति यात्री है।

सभा ने निश्चय किया है कि जो सीटें १५ अक्तूबर १९८३ तक बुक हो जाएगी उनका ही प्रबन्ध किया जाएगा। इसलिए आपसे निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज से जाने वाले भाई बहनो के नाम, पते, आयु तथा धन सहित सभा कार्यालय मे १५ अक्तूबर से पूर्व भिजवादें ताकि उनका प्रबन्ध किया जा सके।

आशा है कि इसकी सूचना साप्ताहिक सत्सगो मे विस्तृत रूप से देकर अधिक से अधिक आर्य बहनो को वहा जाने की प्रेरणा दी जाएगी।

श्री वीरेन्द्रप्रताप जी एक्सीडेन्ट में घायल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख सक्रिय कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्रप्रताप जी २२ सितम्बर १९८३ की रात को १०॥ बजे ओरीजिनल रोड पर माटाडोर से उतरते हुए एक्सीडेन्ट के शिकार हो गए। उनकी कूल्हे की हड्डी टूट गई। चिकित्सा के लिए श्रीराम मनोहर लोहिया चिकित्सालय के हड्डी विभाग मे पहली मजिल पर ८ नम्बर शय्या पर प्रविष्ट हैं और स्वास्थलाभ कर रहे हैं।

तपोवनाश्रम देहरादून के अध्यक्ष महात्मा दयानन्द को एक जीप भेंट

रविवार २ अक्तूबर १९८३ को आर्य समाज करौलबाग मे आयोजित समारोह मे तपोवनाश्रम देहरादून के अध्यक्ष महात्मा दयानन्द को आर्य जनता की ओर से यातायात की सुविधार्थ एक नई जीप भेंट की गई। इस जीप को उपलब्ध कराने हेतु जिन महानुभावो ने परिश्रम करके इस योजना को सफल बनाया है, वे सब बधाई के पात्र है।

आर्यसमाज कृष्णनगर द्वारा वेद प्रचार सम्पन्न

आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली मे १२ सितम्बर से १८ सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह बडी धूमधाम से ऋग्वेदीय पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। जिसके ब्रह्मा आर्यजगत् के मूर्द्धन्य सन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती तथा सचालक व निर्देशक हरिओम सिद्धान्ताचार्य थे। प्रतिदिन स्वामीजी की वेदकथा व प० आशानन्द और प० चन्द्रपाल भजनोपदेशक के मधुर भजन सप्ताह तक हुए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
व्यवस्थापक—प्रद्युम्न लाल तलवाड़

प्रत्येक गृहस्थी का दायित्व

—रूपकिशोर शास्त्री

आ प्राच्यवेथामप तन्मृजेथा यद् वामभिभा अत्रोचु.।
अस्मादेतमघ्न्यौ तद्वशीयो दातु पितृष्विहभोजनौ मम ॥

अथर्ववेद १८।४।४९

अन्वय—यद् अभिभा अत्र उचु तद् वा प्राच्यवेथा अपमृजेथा अघ्न्यौ अस्मात् पितृषु एत मम दातु वशीय इह भाजनौ।

संस्कृत व्याख्या—इह खलु गृहस्थौना कुने विदुषामुपदेशो वर्ततेतरा यद् हे दम्पती, (यदभिभा अत्रोचुस्तद्वा प्राच्यवेथा मपमृजेथा) यत्किन्चिदभिभा निर्ञोपदेशेन विद्यादानेनान्यान् सम्यग्भान्ति ये ते विद्वासोऽत्र गृहस्थधर्मं उचुरुपदिष्टवन्तस्तद् युवा प्राच्यवेथाप्रकृष्ट गृह्णीतम् अपमृजेथा सुविचारेण मशोध्य आचरतम् (अघ्न्यावस्मात् पितृष्वेतम्) अहिंसनीयौ दम्पती! युवा अस्मात् मार्गात् पितृषु उपदेशकेषु निरन्तर स्थित्वा विद्या सुप्रेरणा वा प्राप्नुतम् (मम दातुर्वंसीय इह भाजनौ) मम विद्याप्रयच्छतुर्भोग्यमिह रक्षयितारौ युवा स्थ ।

भावार्थ—हे दम्पती! (यदभिभा अत्रोचुस्तद्वा प्राच्यवेथामपमृजेथा) जो तुमको आप्त पुरुष उपदेष्टा गृहस्थ धर्म एव मर्यादाओं के सम्बन्ध मे उपदेश करें, उसको तुम भलीभांति हृदयगम करो और विवेक के अनुसार धारण एव आचरण करो (अघ्न्यावस्मात् पितृष्वेतम्) तथा हे निर्ठपीड्य पति पत्नी तुम आप्तोक्त मार्ग पर निरन्तर आरूढ होकर विद्या, ज्ञान एव सद्प्रेरणाओं को प्राप्त करो (मम दातुर्वसीय इह भाजनौ) और विद्यादानी के वचनो, उपदेशो का हर सम्भव पालन करते हुए उसकी वाणी की रक्षा करने वाले बनो।

सुधासार—प्रत्येक गृहस्थी का परम कर्तव्य है कि विद्वानो के वचनो-उपदेशो को अवश्य ही ध्यान से सुने और पूर्ण विवेक से तदनुसार आचरण करके अपने जीवन को कृतार्थ करें। निश्चय ही ऐसे गृहस्थियो का जीवन सुखद प्रेरणादायक एव अनुकरणीय बनेगा।

अनमोल शिक्षाप्रद उपदेश

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, दिल्ली

☀ चरित्रहीन विद्वान से चरित्रवान अनपढ ऊचा होता है।

☀ अपने अन्दर से दुष्कर्मों को ढूढ-ढूढ कर बाहर निकालने की कोशिश सदा जारी रखो।

☀ मैं कौन हू, कहा से आया हू कहा जाऊगा, क्या करने आया हू, क्या कर रहा हूं, इस पर बार-बार विचार करो।

☀ ज्ञानी मनुष्य स्वय पुल का निर्माण करके ससार-सागर से पार हो जाता है।

☀ प्रत्येक कार्य करने से पहले उसका भविष्य भली प्रकार सोचकर प्रारम्भ करना चाहिए।

☀ बडे-बूढो के प्रति, अपने प्रति, ब्रह्मज्ञानियो के प्रति, प्रिय व्यवहार करना चाहिए।

☀ क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त हो जाता है।

☀ सत्य पर चलना तलवार की धार पर सफर करना है, परन्तु इसमे बडी शक्ति है। यह ईश्वर की प्राप्ति का मुख्य साधन है।

☀ अशान्त वातावरण मे ईश्वर चिन्तन करना नही होता है।

☀ शुभ कर्मों की भावना को कभी दबाना नही चाहिए, क्योकि यह भावना क्षण-क्षण मे बदलती रहती है जैसे समुद्र की लहर एक आती है, एक जाती है।

☀ चलते-फिरते सोते-जागते, कभी ईश्वर को और मृत्यु, को नहीं भुलाना, ये कभी दूर नही रहते हैं तेरे अग-सग रहते हैं।

☀ हर परिस्थिति मे सेवा का स्वभाव बनाओ, हृदय मे दया एवं उदारता का घर बना लो।

'तुम हिला सकते हिमालय'

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट

तुम मनुज हो, शक्ति तुममें है अपरिमित, काश! तुम होते अगर अपने से परिचित,
पतझरो में तुम लगा मधुमास देते—कोटि दलितों के अटल विश्वास बनते,
शख ध्वनि कर निज भुजाओं, से किया करते प्रलय।
वीरता की शक्ति बनकर, तुम हिला सकते हिमालय ॥

चाह होती यदि हृदय मे राह बन जाती स्वय, कर रही शृंगार वीरो का सदा अक्षय जयं.
पत्थरों को तोड़कर, सरिता बहाते, विघ्न सारे पन्थ के हम हैं हटाते,
शक्ति संचित कर बढो! तुम नष्ट कर दो आपदाए।
देखकर बढते चरण को, काप जाएं दस दिशाएं ॥

वज्र-सा उर है तुम्हारा तुम बढो, लक्ष्य पर अपने सुपावन तुम चढो,
सूर्य बनकर रश्मि पावन तुम उगाओ, प्रखर किरणो से तिमिर जग का भगाओ,
सूर्य-शशि के, औ सितारो के बनो तुम अब प्रणेता।
विश्व विजयी 'आर्य' हो तुम, विश्व के अनुपम विजेता ॥

मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

८० से उम्र वाले कुछ हिन्दीसेवियों के नाम पते

९६ श्री सन्तराम बी. ए., ५१ नवजीवन विहार, नई दिल्ली—१७ (९६ वर्ष)
९३ वर्ष—श्री छविनाथ पाण्डेय, आर्यकुमार प्रेस, पटना (विहार)
९३ वर्ष—श्री मोहनलाल महतो वियोगी अयावाल, विष्णुपद मन्दिर के पास, गया (विहार)
९१ वर्ष—डा. सिद्धेश्वर वर्मा (नई दिल्ली)
९१ वर्ष—प० बनारसीदास चतुर्वेदी, चौबे मुहल्ला, फीरोजाबाद, उ० प्र०
९० वर्ष—श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, ५३ खुर्शेदबाग, लखनऊ—४, उ० प्र०
८९ वर्ष—श्री वियोगी हरि, एफ-१३।२ माडल टाउन, दिल्ली—९
८९ वर्ष—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार, के० सी. ३७।बी. अशोक विहार, दिल्ली-५२
८८ वर्ष—डा बाबूराम सक्सेना, मोतीलाल नेहरू रोड, प्रयाग स्टेशन के पास, इ
८७ वर्ष—डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, चासलर, गुरुकुल कागडी
८५ वर्ष—श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, सकीर्तन आश्रम, झूसी (प्रयाग)
८५ वर्ष—दादा धर्माधिकारी, सर्व-सेवा सघ प्रकाशन, राजघाट काशी (उ० प्र०)
८५ वर्ष—स्वामी सत्यभक्त, सत्याश्रम, बोरगाव, वर्धा (महाराष्ट्र)
८१ वर्ष—डा उदयनारायण तिवारी, ६ अलोपी बाग, दारागज, इलाहाबाद, उ० प्र०
८१ वर्ष—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, वेदपाठी भवन, खटीकान, मुजफ्फरनगर उ. प्र.
८१ वर्ष—डा मुशीराम शर्मा 'सोम', आर्यनगर, कानपुर, उ० प्र०
८१ वर्ष—बाबूरामसिहासन सहाय 'मधुर', एडवोकेट, कलेक्टरेट कचहरी, बलिया उ० प्र०
८१ वर्ष—नाटककार—प० लक्ष्मीनारायण मिश्र, शारदापीठ, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, उ० प्र०
८१ वर्ष—श्री ओमप्रकाश त्रिखा, स्वाध्याय आश्रम, गाधी स्मारक निधि, पट्टीकल्याण
८० वर्ष—पं. गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र' डी लिट्, शांति कुटी, (करनाल) हरियाणा आगर—मालवा (म. प्र.)
८० वर्ष—प. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, विकास प्रेस, सहारनपुर, उ. प्र.
८० वर्ष—पं० सत्यकाम विद्यालकार २।१७४ सायरोड, बम्बई—२२
८० वर्ष—श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय, सहारनपुर (जन्म ७-१२-१९०२)
८० वर्ष—श्री वैजनाथ महोदय, १२ उत्तरराज मोहल्ला, इन्दौर (म. प्र.)
८० वर्ष—श्री कृष्णगोपाल माथुर, १३४ दशहरा मैदान, उज्जैन
८० वर्ष—कविवर जगन्नारायण देव शर्मा, पुष्कर विद्या मन्दिर, पांडेघाट, वाराणसी
८० वर्ष—श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द, लश्कर, ग्वालियर ४७४००१, म प्र.
८० वर्ष—श्री कालिका प्रसाद दीक्षित "कुसुमाकर" दीक्षितपुरा, जबलपुर
८० वर्ष—प्रवासीलाल वर्मा मालवीय, १५० लश्कर गंज इलाहाबाद
८० वर्ष—वेंकटलाल ओझा, संचालक, हिन्दी पत्र प्रदर्शनी, कचारहट्टा रोड, हैदराबाद

उस ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार !

ओ३म् यो भूतञ्च भव्यञ्च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। अथर्व १०.८.१

जो भूत भविष्यत् वर्तमान सबके हैं अधिष्ठाता।
जो हैं केवल आनन्दरूप उन ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार।।

ओ३म्
आर्य सन्देश

बड़े लक्ष्य : बड़ा दायित्व

आगामी नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह मे दीवाली के अवसर पर समस्त आर्य जगत् महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर मे मना रहा है। इस ऐतिहासिक अवसर पर लाखों आर्यजन अजमेर मे एकत्र होकर महर्षि के प्रति अपनी भावाजलि प्रस्तुत करेंगे। इस अवसर पर विराट् शोभा यात्रा, महायज्ञ एव बृहद् गोष्ठियों और महासम्मेलनो के माध्यम से विगत शताब्दी एवं सवा सौ सालो मे आर्यसमाज के तत्त्वावधान में किए गए शैक्षणिक, सामाजिक, सास्कृतिक कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाएगा। इसमे किसी को भी सन्देह नही है कि पिछले सवा सौ-डेढ सौ वर्षों मे राष्ट्रीय पुनरुत्थान-जन-जागरण के क्षेत्र मे ही नहीं, देश की सास्कृतिक, नैतिक, शैक्षणिक सामाजिक, क्षेत्रो की समुन्नति मे आर्यसमाज ने अपना योगदान किया। आर्यसमाज के अतीतकालीन कार्यों की प्रत्येक इतिहासकार श्रद्धा से सराहना करता है, उसकी वर्तमान शक्ति एव साधनो की विपुलता से भी कोई इन्कार नहीं कर सकता। आज संसार भर मे हजारो आर्य समाजें एव आर्य सस्थाएं हैं और लाखो और करोडो की सख्या मे ऐसे व्यक्ति उपस्थित होगे जो महर्षि दयानन्द सरस्वती एव आर्यसमाज के मूल निर्देशो, मन्तव्यो, नियमो एवं विचारधारा से सहमत होगे। इस सब के बावजूद विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या यह सन्तोष एवं आनन्द का अवसर है ?

उक्त प्रश्न के उत्तर में यह बिना किसी सन्देह के कहा जा सकता है कि विश्व एव भारत मे आर्यसमाज एव उसकी सस्थाओ का भौतिक विस्तार देखकर एव विभिन्न आयोजनो व महासम्मेलनो की सफलता उसकी यशस्विता का उद्घोष कर रही है। पर इसी के साथ जब हम यह देखते हैं कि आज देश मे सर्वत्र दैन्य-दारिद्रय है, मानसिक दासता है, नैतिकता का सर्वत्र ह्रास है, सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त है, रोग और अशिक्षा भी सर्वत्र विद्यमान है। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपना शिक्षण पूर्ण करने के बाद गुरु-दक्षिणा की पूर्ति के लिए जब जन सम्पर्क के लिए प्रवृत्त हुए, तब वह देश और जाति की दशा देखकर द्रवित हो उठे। देश के सास्कृतिक, नैतिक, सामाजिक एव राजनीतिक अभ्युदय के लिए ही उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की थी। देश-दुर्दशा के निवारण के लिए सौ साल पहले आर्यसमाज के अस्तित्व की जितनी आवश्यकता थी, आज कही उससे ज्यादह आज उसका अस्तित्व अपेक्षित है। इन वर्षों मे समाज सुधार-शिक्षा, प्रसार, स्त्रीशिक्षा, दलितोद्धार आदि विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमो को शासन ने भी अगीकार कर लिया है, इसी के साथ इस कटु तथ्य से भी इन्कार नही किया जा सकता कि आज आर्यसमाज को अनेक क्षेत्रो मे कुछ उपयोगी कार्य करने हैं।

शताब्दी का अवसर वस्तुत आर्यसमाज के आत्म-निरीक्षण की घडी है, जहा हमें पिछले शताब्दी के अवधि मे किए कार्यों का लेखा-जोखा करना है वहां हमे अपनी वास्तविक स्थिति का मूल्याकन कर भावी योजनाए बनानी होगी। सबसे पहले तो हमें अपने सदस्यो और संस्थाओं की वास्तविक स्थिति देखनी होगी। हमें यह देखना होगा कि क्या हम सच्चे आर्य हैं ? क्या हम नाम मात्र के आर्य हैं ? क्या हम भारतीय संस्कृति, जीवनमूल्यो पर आस्था रखते हैं और उन्हें अपने जीवनो मे श्रद्धापूर्वक अपनाते हैं ? यदि इन सब प्रश्नो का सही उत्तर नही में है तो आज सच्चे आर्यों और आर्य-समाज के सच्चे रचनात्मक कार्यक्रम की सर्वाधिक आवश्यकता है। इसी के साथ महर्षि दयानन्द के प्रसिद्ध ग्रन्थो के लोकप्रिय संस्करण भारतीय एवं विश्व भाषाओं में प्रकाशित होने चाहिएं। महर्षि दयानन्द के दार्शनिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक विचार व्यवस्थित रूप मे भारतीय एव विश्वभाषाओ मे प्रकाशित किए जाने चाहिएं। ये सभी कार्य महत्वपूर्ण हैं। ये सभी महान् लक्ष्य हैं, इन्हे पूर्ण करना एक बृहद् उत्तरदायित्व का कार्य है। हम यह भी भूल नही सकते कि, वेदों उपनिषदो, भारत के मूल संदर्भ ग्रन्थों के आधार पर भारत के मौलिक वैज्ञानिक, दार्शनिक, राष्ट्रीय विचारो और चिन्तन को भी संसार के समक्ष प्रस्तुत करना होगा। इसके लिए अगले सौ वर्षों का एक व्यवस्थित कार्यक्रम निर्धारित करना होगा। ये सभी लक्ष्य बड़े हैं। इन्हें पूर्ण करना एक बड़ा दायित्व का कार्य है। क्या हम उन्हे पूर्ण करने का सकल्प करेंगे ?

आर्यसमाज के संजीवन हेतु द्वितीय शताब्दी के लिए दिशाबोध

- मानव मात्र को आर्यसमाज के दस नियमो, आर्योद्देश्य रत्नमाला आदि से परिचित कराना। विश्व की समस्त भाषाओ मे नियम आदि की व्याख्या अनुवाद व उनका विक्रय नि शुल्क वितरण आदि।
- प्रत्येक भाषा क्षेत्र में नए आर्यसमाजो का विस्तार।
- प्रत्येक आर्यसमाज मे यथा समय दैनिक नित्यकर्म, शास्त्रीय प्रवचन व स्वाध्याय की व्यवस्था। पुस्तकालय मे वैदिक वागमय सम्बन्धी समस्त ग्रन्थो, और व्यायाम-शाला औषधालय, सगीतसदन, गोशाला आदि प्रत्यक्ष सेवा-कार्यक्रमो की व्यवस्था।
- यथा सम्भव सस्कृत व आर्ष ग्रन्थ ज्ञान होने पर ही पदाधिकार देना।
- प्रत्येक भाषा में कम से कम एक पत्रिका का आरम्भ, जिन भाषाओ मे एक से अधिक पत्रिकाए हैं उनमें विषय निर्धारण आर्ष पाठविधि के समस्त ग्रन्थो की खोज व सानुवाद प्रकाशन हो। वेद विषय सूची अनुसार वेद के बचे भाग का दयानन्द पद्धति से भाष्य की व्यवस्था।
- प्रत्येक स्तर पर आर्य प्रतिनिधि सभाओ का निर्माण और राष्ट्रीय स्तर पर अ० भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्माण, इसी प्रकार अन्य देशो मे भी। इन पर सार्वदेशिक का निर्देश होना।
- विश्व के समस्त विश्वविद्यालयो व शिक्षा मडलो मे आर्य ग्रन्थो के ज्ञान को ऐतिहासिक क्रम से प्रविष्ट कराना।
- आर्यसमाज की सभाओ मे हर स्तर पर धर्मार्यसभा विद्यार्यसभा, राजार्यसभा की व्यवस्था।
- सारे आर्य गुरुकुलो को सूत्रबद्ध करने वाला वैदिक विश्वविद्यापीठ व आधुनिक आर्य विद्यालयों को सूत्र बद्ध करने वाला आर्य वि० वि० बनवाया जाए।

—गिरधारीलाल मत्री, आर्यसमाज अरडका, जिला अजमेर

आर्यसन्देश में चुनी हुई सामग्री का प्रकाश

साप्ताहिक पत्र 'आर्यसन्देश' बडी सफलता के साथ जनता की सेवा कर रहा है। "आर्य सन्देश" मे बहुत चुनी हुई सामग्री प्रकाशित की जाती है। आशा है आपका पत्र उत्तरोत्तर उन्नति करता रहेगा।

— जसवीर सिंह सम्पादक, राजधर्म साप्ताहिक, गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक)

"डालडा काण्ड ! अपराधियो को कठोर दण्ड दो"

भारत की अस्मिता के साथ खिलवाड करने वाले अपराधियों को कठोर से कठोर दण्ड देने की आवश्यकता है ताकि वे भविष्य मे इस प्रकार का जघन्य अपराध करने का दुस्साहस पुन न कर सके। हम भारतीय गाय को माता के समान मानते है और उसकी पूजा करते हैं। गाय का सम्बन्ध भारतीयो की धार्मिक भावना से जुडा हुआ है। धन के लोभी उन गद्दार पूँजीपतियों को किसी भी कीमत पर नही बख्शा जाना चाहिए, जिन्होने चन्द चादी के टुकडो के लिए भारत की पचानवे जनता की धार्मिक भावनाओ पर कुठाराघात करते हुए डालडा जैसे अति प्रचलित खाद्य पदार्थ मे गाय की चर्बी का प्रयोग किया है। इस काण्ड ने भारत की जनता के मनोभावो को झकझोर दिया है। अपराधियो के साथ किसी भी प्रकार की कृपा या ढील जनता बर्दाश्त नही करेगी।

—राधेश्याम आर्य, एडवोकेट

आर्यसमाज क्या है ?

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ० प्र०

किसी संस्था को समझने के लिए उसके संस्थापक को समझना आवश्यक है। यही बात आर्यसमाज के विषय में भी चरितार्थ होती है। आर्यसमाज को समझना हो तो, पहले आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को समझना होगा। महर्षि दयानन्द को समझने के लिए आवश्यक है, उनके मन्तव्य समझे जाए। किसी व्यक्ति को, चाहे वह साधारण हो अथवा असाधारण तब तक नही समझा जा सकता, जब तक उसके मन्तव्य समझ न लिए जाए।

जिन महापुरुषों ने अपने पीछे अपना कुछ साहित्य छोड़ा है, उन्हें समझने के लिए उनके साहित्य का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। यदि किसी महापुरुष का साहित्य उपलब्ध न हो तो उसका जीवन चरित्र भी उस महापुरुष के मन्तव्यों की जानकारी करा देता है, परन्तु तब जब किसी निष्पक्ष लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो। यदि किसी पक्षपाती तथा मतवादी स्वार्थी लेखक के द्वारा वह लिखा गया है, तो उसमें लेखक द्वारा स्व-मान्यताओं का मिश्रण कर दिया गया होगा तथा स्व-स्वार्थों की सिद्धि के लिए उसमें अनेक अनर्गल बातें भर दी गई होगी। ऐसी स्थिति में कभी-कभी तो वास्तविकता का पता लगाना और तथ्यों को जानना तथा समझ पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के विषय में ऐसी बात नही है। एक तो उसका प्रारम्भिक कुछ अंश स्वयं महर्षि वर्णित है। दूसरे जो महर्षि-चरित के सर्वप्रथम लेखक थे, वह न तो कभी महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए थे और न उनके द्वारा संस्थापित आर्यसमाज से उनका कोई सम्बन्ध था। सम्बन्ध तो क्या वह आर्यसमाज से परिचित तक भी नही थे और न महर्षि दयानन्द के विषय में ही कुछ जानते थे।

महर्षि के देह-त्याग के पश्चात् श्री केशवचन्द्रसेन बंगाली से उन्हें महर्षि दयानन्द के विषय में, उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में कुछ जानकारी हुई, जिसे सुनकर उन्हें ऋषिवर के विषय में विशद जानकारी प्राप्त करने की धुन सवार हो गई। यह भी संयोग ही कहिए अथवा देवयोग कि जिन केशवचन्द्रसेन ने उस व्यक्ति को ऋषि दयानन्द के विषय में जानकारी दी, वह भी आर्यसमाजी नही थे अपितु ब्राह्म समाज के नेता थे। उस ब्राह्मसमाज के नेता, जिसकी आलोचना महर्षि दयानद ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में की है।

ऋषि दयानन्द के जीवन की खोज में उस बंगाली युवक ने अपनी जीवन भर की अर्जित की हुई सम्पत्ति होम दी। जहां-जहां ऋषि के जाने का और जिस-जिससे भेंट व वार्ता होने का उसे पता चलता गया, वह युवक वहीं-वहीं गया और उन लोगों से मिला, जिनसे महर्षि की भेंट और वार्तालाप हुआ था। इस प्रकार उसने तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर ऋषिवर की जीवन-गाथा का संकलन किया। यद्यपि इस कार्य में उसके स्वास्थ्य का भी विनाश हो गया। जिस व्यक्ति ने अपना स्वास्थ्य और जीवन भर की कमाई इस कार्य के लिए होम दी, वह स्वार्थी तो हो ही नही सकता। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से उसका सम्बन्ध तो क्या परिचय भी नही था, इसलिए पक्षपाती भी वह नही था। उस धुन के धनी युवक का नाम था देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय।

ऐसी स्थिति में—जब न तो लेखक का स्वार्थ हो और न उसके मन में पक्षपात हो—अपने चरित्र नायक के जीवन चरित्र में न तो वह अपनी मान्यताएं भर सकता है और न अनर्गल बातों का प्रवेश कर सकता है। वह तो सत्य का खोजी और तथ्यों का अन्वेषक होता है, अत वास्तविकता का ही वर्णन करता है। सम्भव है कि कहीं किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा कुछ भ्रान्तियां हो भी जाए तो भी उनसे तथ्यों पर पर्दा नही पड़ सकता अपितु ध्यानपूर्वक आद्योपान्त पढ़ने से तथ्य उजागर हो ही जाता है।

इतने पर भी महर्षि दयानन्द का विपुल साहित्य उपलब्ध है, जिसका अधिकांश भाग उनके जीवनकाल में ही प्रकाशित हो चुका था। सहस्रश पृष्ठों और विविध विषयों के अनेक ग्रन्थों के रूप में लिखे गए उनके साहित्य के अध्ययन से उनके मन्तव्यों का पता लगाया जाता है। उन मन्तव्यों के अनुसार ही आर्यसमाज का कार्यक्रम है। अभिप्राय यह है कि उन मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस प्रकार से आर्यसमाज अपने संस्थापक महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार का संस्थान है और उसे इसी रूप में समझा जाना चाहिए।

यदि आर्यसमाज के सदस्य बन जाने वाले व्यक्ति भी इस भूल में हैं तो और भी खेदजनक बात है और साथ ही भय यह है कि आर्यसमाज में ऐसे लोगों की संख्या-वृद्धि हो जाने से आर्यसमाज पथ-भ्रष्ट हो जाएगा। वर्तमान समय में ऐसा परिलक्षित भी होने लगा है और उसका कारण भी उपर्युक्त प्रकार के सदस्यों की आर्यसमाज में भरती व संख्या-वृद्धि होना ही है।

इस प्रकार के सदस्यों की संख्या-वृद्धि हो जाने से आर्यसमाजों की संख्या की वृद्धि भी हो जाएगी किन्तु वे ऋषिवर दयानन्द की आर्यसमाजें न होंगी। वे या तो मतवादियों की, साम्प्रदायिक दृष्टिकोण वालों की आर्यसमाजें होंगी और या फिर ऐसे लोगों की आर्यसमाजें होंगी— जिन्हें कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार एकत्र होकर अपना समय बिताना था, किसी अन्य नाम से न सही—आर्यसमाज के नाम से ही सही। एक क्षेत्र मिल गया, जन-सम्पर्क हुआ, जन-सहयोग भी मिला, नेतागीरी का मार्ग भी खुला और इस प्रकार व्यापक रूप में मन-बहलाव होने लगा।

आर्यसमाज क्लब नहीं है —

ऐसे लोग कहीं भी जाएं, किसी भी संस्था में जाएं, किसी भी नाम से संगठित हो, मन-बहलाव के साधनों तक ही सीमित रहते हैं। खेल, नाटक, भोज इत्यादि उनका मिशन होता है। उनके सामने न सिद्धान्त होता है न तथ्यान्वेषण। न वे तथ्य और सिद्धान्त को जानते हैं और न जानना चाहते हैं। भोज अर्थात् खाने-पीने के नाम पर धन भी वह बढ़ चढ़कर देते हैं और इस कार्य के लिए परिश्रम भी करते है, फिर खाने-पीने में पीछे रहने का तो प्रश्न ही क्या।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर आर्यसमाज में नाटकों और लड़कियों के नृत्यों के आयोजन भी बहुत बढ़-चढ़कर करते हैं और कराते हैं और आगे बढ़े तो किसी राजनीतिक नेता का स्वागत-समारोह समाज भवन में करा दिया, उसे मानपत्र दे दिया और बस छुट्टी।

ये सब कार्य क्लबों के हैं, आर्यसमाज के नही। इनसे आर्यसमाज का दूर का भी सम्बन्ध नही। ये सब कार्य उन्हीं लोगों के द्वारा होते है, जिन्होंने न तो ऋषि दयानन्द का जीवनचरित्र पढ़ा है और न उनके ग्रन्थों का अध्ययन किया है, अर्थात् जिन्होंने ऋषिवर के मन्तव्यों को नही समझा। कहना यह चाहिए कि ऐसे लोग आर्यसमाज के सदस्य तो जिस किसी प्रकार भी बन गए किन्तु आर्यसमाजी नही बने। आर्यसमाज को केवल क्लब की भावना से ही स्वीकार किया और इसी भावना से उसके मंच का उपयोग करते हैं।

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है—

दूसरी प्रकार के लोग वे हैं, जो आर्यसमाज को एक सम्प्रदाय मात्र समझते हैं। इन्होंने भी न तो ऋषिवर दयानन्द का जीवनचरित पढ़ा और न उनके द्वारा लिखे हुए किसी ग्रन्थ को ही पढ़ा। पढ़ना क्या ? ऋषि के ग्रन्थ न देखे और न उन्हें यह पता कि उन्होंने कोई ग्रन्थ लिखा है। कुछ को ऋषि के लिखने की जानकारी तो है किन्तु उनके मुख्य ग्रन्थों···संस्कार विधि और सत्यार्थ प्रकाश—के नाम तक ज्ञात नही।

ऐसे लोग आर्यसमाज को केवल हवन-सम्प्रदाय समझते हैं। नई दिल्ली में एक आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष महोदय कहने लगे – 'स्वामी जी, हम तो यज्ञ···।" मैंने उनकी बात तो मध्य में ही काटकर कहा, "आप तो यज्ञ क्या। यज्ञ शब्द के अर्थ भी नही जानते। केवल घी-सामग्री जला लेने का नाम यज्ञ नहीं है।" भला जिसे यज्ञ शब्द के अर्थ नहीं आते वह यज्ञ कैसे हो सकता है। 'यजमानो वै यज्ञ' यजमान को यज्ञ होना ही चाहिए। परन्तु जो व्यक्ति यज्ञ शब्द के अर्थ तक नही जानता, वह यज्ञ (अग्निहोत्र) की प्रक्रियाओं की संगति नही लगा सकता, उन्हें समझने और उनकी संगति लगाने की योग्यता से दूर; वह यज्ञ कैसे हो जाएगा। उसका जीवन यज्ञमय कदापि नही बन सकता। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक। वह यह समझता है कि आर्यसमाज हवन करने वालों का संगठन है और किसी प्रकार उसके मस्तिष्क में यह बात बैठ गई है कि हवन करना धर्म है और इसके करने से मोक्ष या स्वर्ग की अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। बस वह हवन में श्रद्धा रखने लगा—वह श्रद्धा, जो वास्तव में नाम मात्र की श्रद्धा है, पर वास्तव में श्रद्धा नही अपितु अन्धविश्वास है।

हवन—एक श्रेष्ठ कर्म

हवन करना श्रेष्ठ कर्म है—महान् श्रेष्ठ कर्म और तथ्य यह है कि हवन मानव मात्र के द्वारा किया जाना चाहिए। इससे सुगन्ध का प्रसारण और दुर्गन्ध का निवारण होकर न केवल मनुष्य जाति का अपितु प्राणिमात्र का लाभ और हित सिद्ध होता है। यह परोपकार का परमोत्कृष्ट साधन है, परन्तु सुगन्ध का प्रसारण तो अग्निहोत्र की क्रियाओं को बिना किए सुगन्धित द्रव्यों को जलाकर भी किया जा सकता है। जब सुगन्ध का प्रसारण होगा, तब उसके परिणामस्वरूप दुर्गन्ध का निवारण भी हो ही जाएगा। परन्तु यज्ञ का एक अंश अर्थात् सुगन्धित् फैलाने का यज्ञ (शुभ कर्म) हो जाएगा किन्तु यज्ञमय जीवन 'यजमानो वै यज्ञ.' जो यज्ञ का वास्तविक लाभ है, वह नही हो पाएगा। साम्प्रदायिक भावना व अभिरुचि की पूर्ति भी हो जाएगी···केवल घी-सामग्री जलाने से न सही, साथ मे वेद मन्त्रों को बोलकर सही—किन्तु धार्मिक जीवन नहीं बन पाएगा। वह तो तभी बनेगा, जब विधिपूर्वक यज्ञ करते हुए यज्ञ में प्रयुक्त मन्त्रों के अर्थों और प्रक्रियाओं को भी समझने का प्रयत्न किया जाएगा।

एक बात इस सन्दर्भ में ध्यान देने की यह है कि संन्यासी को यज्ञ से मुक्त रखा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वैदिक गुरुकुल प्रणाली का लक्ष्य : सर्वांगीण विकास

—बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पिछले दिनो गुरुकुल कांगडी के कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा ग्रेट ब्रिटेन के बरमिंघम नगर मे सम्पन्न हुए तेरहवें राष्ट्रमण्डल सम्मेलन मे भाग लेने गए थे। इस लेख में प्रस्तुत हैं लेखक के उसी अधिवेशन के तथा इस यात्रा से सम्बन्धित अन्य संस्मरण

बरमिंघम के तेरहवें राष्ट्रमण्डल विश्वविद्यालय सम्मेलन की बात है। १२-१३ अगस्त को विश्वविद्यालय कैम्पस मे कुलपतियो का सम्मेलन था। इसमे चर्चा का विषय था कि विश्वविद्यालयो मे दो वर्षों का पाठ्यक्रम हो अथवा तीन वर्ष का कइयों ने ठीक ही कहा—१२+२ हो अथवा १२+३ हो, यह चर्चा निरर्थक है—देखना यह है कि २ वर्ष अथवा ३ वर्ष की अवधि मे विद्यार्थी कितना अध्ययन करता है। कितने दिन पठन-पाठन होता है। यदि ३ वर्षों मे ६-६ मास विश्व-विद्यालय बन्द रहे तो ३ वर्ष का लाभ क्या हुआ ? यदि २ वर्ष मे विद्यार्थी २००-२५० दिन काम करे तो अधिक लाभ होगा। यह तो अब स्पष्ट ही है कि भारत मे आक्सब्रिज माडल असफल हो चुका है। नए माडल की तलाश मे भी हमें अब दूर नही जाना है। १९६२ मे, अमेरिका के लैंडेग्राट कालिजो के माडल पर भारत मे, पन्तनगर, उदयपुर, लुधियाना मे कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किए गए थे। उनमे अनुसन्धान और अध्यापन के अतिरिक्त विस्तार-प्रचार की जिम्मेवारी भी शिक्षको पर डाली गई थी। इसी कारण कृषि विश्वविद्यालय के स्नातको ने गत २० वर्षों मे वैज्ञानिक कृषि के विस्तार हेतु जो कार्य किया है, वह अनुकरणीय है। उन्ही की प्रेरणा से भारत का साधारण कृषक अब आधुनिक कृषि-युग मे प्रवेश कर चुका है और भारत मे हरित क्रान्ति का जो सूत्र-पात हुआ उसका श्रेय कृषि विश्वविद्यालयो को समुचित मात्रा मे मिलना ही चाहिए। भारत के साधारण विश्वविद्यालयो मे अभी विस्तार कार्य की उपयोगिता को उचित महत्त्व नही दिया जा रहा।

बरमिंघम के सम्मेलन मे यह बात उभर कर आई कि विश्वविद्यालय का मुख्य कर्तव्य अपने इर्द-गिर्द रोशनी फैलाना है, अर्थात् अपने अनुसन्धान के परिणाम जनसाधारण तक पहुचाने चाहिए। इसी भावना से प्रेरित होकर ही स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गुरुकुल कागडी की स्थापना की गई थी। वह भारत की तत्कालीन शिक्षा-प्रणाली से जो आक्सब्रिज माडल पर आधारित थी, असन्तुष्ट थे क्योकि उसके अनुसार हमारे युवक केवल क्लर्क अथवा राज्य प्रशासन के पुर्जे बनकर रह जाते थे, इसीलिए उन्होने गुरुकुल द्वारा वैदिक शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने का आन्दोलन चलाया। इस प्रणाली का परम लक्ष्य विद्यार्थी को सर्वांगीण विकास करना है अर्थात् विद्यार्थी की शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक उन्नति के अतिरिक्त उसे अर्थकरी विद्या से लाभान्वित करना भी इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य है। इसी उद्देश्य को लेकर गुरुकुल मे कई प्रकार के धन्धे सिखलाने का कार्यक्रम भी हाथ मे लिया गया था और कालक्रम मे आयुर्वेद और कृषि विश्वविद्यालयो की स्थापना हुई।

शुरू-शुरू मे गुरुकुल के संस्थापक और संचालक उच्च आदर्शों से प्रेरित थे। ८० वर्ष तक गुरुकुल ने दिग्गज महारथी पैदा किए, जिन्होने देश-विदेश मे खूब हल-चल मचाई। इतिहास के क्षेत्र मे क्या, राजनीति के क्षेत्र मे क्या, आयुर्विज्ञान के क्षेत्र मे क्या, पत्रकारिता के क्षेत्र मे क्या, सर्वत्र खूब योगदान दिया।

धन का सदुपयोग हो

१५ अगस्त को बरमिंघम विश्वविद्यालय के भव्य सभागार मे मुख्य अतिथि राष्ट्रमण्डल के जनरल सेक्रेटरी श्री दत्त रामफल ने अपने भाषण मे जनसाधारण की दरिद्रता और आवश्यकताओ की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि जितना व्यय आज सामरिक अस्त्र शस्त्रो के उत्पादन पर हो रहा है उसके अंश मात्र से ही विश्व के जनसाधारण को स्वास्थ्य निवास, अज्ञान और अभाव की समस्याओ का निराकरण हो सकता है। उन्होने कहा कि इस वर्ष विश्व का फौजी व्यय ६५० बिलियन डालर है, अर्थात् प्रतिमिनिट १२ करोड रुपये के लगभग इस प्रकार जो व्यय फौज पर आठ घण्टे मे होता है, विश्व भर से मलेरिया का आतंक समाप्त कर सकता है और लगभग २० करोड व्यक्तियो का जीवन स्तर ऊचा कर सकता है। गुरुदेव टैगोर की विश्वविख्यात कविता का उद्धरण देते हुए उन्होने कहा कि हम ऐसा ससार बनाना चाहते हैं जो तग घरेलू दीवारो से टुकडे-टुकडे न हो चुका हो। जवाहरलाल नेहरू के मशहूर वाक्य को दोहराते हुए उन्होने कहा कि सबसे खतरनाक वे दीवारें हैं, जो मन मे खडी हो जाती हैं, जो हमे गलत परम्पराओ को भग करने से रोकती हैं और नए विचारो को इसलिए ग्रहण नही करने देती क्योकि वे अपरिचित से होते हैं।

बरमिंघम नगर के विश्वविद्यालय ऐस्टन के चासलर सर एड्रियन कैडबरी ने कहा कि विश्वविद्यालय का कर्तव्य केवल मनुष्यो की ससारी योग्यता बढाना ही नही होना चाहिए, किन्तु विश्वविद्यालय को ऐसे मनुष्य तैयार करने चाहिए जो ससार को बदलने-संवारने मे पूरा सहयोग दें और ससार में हौसले और दृढ सकल्प से आचरण करें।

मानव-निर्माण का लक्ष्य

इन पंक्तियो के "लेखक ने बतलाया कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को ऋषिकेश से गढमुक्तेश्वर तक का तट अनुसन्धान और विस्तार कार्य हेतु प्रदान किया गया है। इसी प्रकार भारतीय विश्वविद्यालय सर्वांगीण मानव निर्माण को अपना लक्ष्य मानकर चलते हैं। वे हल और कुल्हाडी के पीछे खडे मानव का निर्माण करना चाहते हैं ताकि वे पूरी शक्ति से हल चलाए और सोच-समझकर कुल्हाडी का प्रयोग करें। विश्वविद्यालय का मुख्य कर्तव्य मानसिक जजीरें तोडना है तथा शिक्षको और नेताओ का प्रशिक्षण है ताकि वे राष्ट्र के युवक समुदाय को सही नेतृत्व दे सकें। विश्वविद्यालय सूर्य के समान है उन्हें अपने इर्द-गिर्द प्रकाश की किरणें वितरित करनी होगी। अन्धकार को दूर करना होगा। गरीबी के विरुद्ध युद्ध मे पूरा योगदान देना होगा।

"लूनीवर्ग की पूर्वी एकादमी मे आयोजित संगोष्ठी में बरमिंघम के तेरहवें राष्ट्रमण्डल विश्वविद्यालय सम्मेलन के निष्कर्ष एव तीसरी दुनिया को शिक्षा समस्याओ पर मैंने उन्हे बतलाया कि इग्लैण्ड, कैनेडा, आस्ट्रेलिया आदि मे आज कार्यरत सज्जनो के ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने की समस्या है। विज्ञान और तकनीकी विद्या जिस गति से वृद्धि कर रहे हैं, कार्यरत लोगो को अपनी नौकरिया सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है कि वे अपना कौशल निरन्तर बढाए रहें। कम्प्यूटर क्रान्ति ने शिक्षा और ज्ञान के मानदण्ड ही बदल दिए हैं।

इनके विपरीत हमारे देश मे अभी तक निरक्षरता और अज्ञान की समस्या गम्भीर रूप मे उपस्थित है। साक्षरता लाने मे ही हमे अनेक वर्ष लग जाएगे। किन्तु अब श्रव्य-दृश्य साधनो मे असाधारण क्रान्ति होने मे हमे इन द्रुत और कीमती साधनो का उपयोग करने हेतु उच्चकोटि की शिक्षा सामग्री तैयार करनी होगी और इस दिशा मे भारतीय विश्वविद्यालय एक महान् भूमिका निभा सकते है।

गुरुकुल कांगड़ी का योगदान

मैने उन्हे यह भी बतलाया कि आक्सब्रिज माडल से असतुष्ट होकर स्वामी दयानन्द से अनुप्रेरित होते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने १९०० मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। वैदिक वाङ्मय की शिक्षा के साथ-साथ उनका अभिप्राय आधुनिक विज्ञान से भी स्नातको को पूर्णत अवगत कराने का था—और इसमे उन्हें यथेष्ट सफलता भी प्राप्त हुई।

'आपका देश इतना गरीब है, फिर आप अणु बम पर करोड़ों रुपए क्यो खर्च करते हैं।' प्रश्न के उत्तर मे लेखक ने कहा कि सर्वप्रथम हम स्वावलम्बी बनना चाहते है। क्यो न हमारे वैज्ञानिक इस दौड़ मे भी विश्व के वैज्ञानिको के साथ कन्धा मिलाकर चलें ? दूसरे, हमारे आणविक प्रयोग शान्ति के लिए है न कि युद्ध के लिए। तीसरे, इनसे हमे ऊर्जा उपलब्ध होगी। इसके साथ-साथ ही हम अपने स्पेस अनुसन्धान के कार्यक्रम को भी बढावा दे रहे है। इसमे हम सस्ते मे करोडो अशिक्षित लोगो तक ज्ञान ज्योति फैला सकेंगे।

एक प्रश्न के उत्तर मे लेखक ने उन्हे बतलाया कि गुरुकुल का लक्ष्य तो सर्वांगीण शिक्षा देना है न कि केवल तीन विषय पढाकर स्नातक की डिग्री प्रदान करना। हमारे ब्रह्मचारी १७-१८ वर्ष गुरु के गर्भस्थ रहकर वेद-वेदाग के अतिरिक्त विभिन्न शास्त्रो अथवा उपवेदो का ज्ञान प्राप्त करें ऐसा हमारा लक्ष्य है। स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली मे आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थवेद सिखलाने का भी प्रावधान है।

एक अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्न कि भारत मे अभी भी अकाल से जनसाधारण मृत्यु को प्राप्त होते है, ऐसा चीन मे नही होता, लेखक ने उत्तर दिया कि चीन का तो कोई क्या जाने, किन्तु भारत तो एक खुली किताब है। सन् १९५० के मुकाबले मे हमारे यहा अब ३५ करोड टन की बजाय १३ करोड टन अन्न पैदा हो रहा है। अत हर राज्य मे अन्न के भण्डार स्थापित हो चुके है और रेल और यातायात के साधन इतने अच्छे है कि जब कभी वर्षा के अभाव के कारण कहीं सूखा पडता है तो फौरन वहीं अनाज पहुचा दिया जाता है। अपौष्टिक अथवा असन्तुलित आहार की बात हो सकती है, लेकिन अनाज के अभाव मे किसी की मृत्यु होना अब भूतकाल की कहानी हो गई है।

'आप पडोसियो को डराते बहुत हैं' प्रश्न के उत्तर मे मैंने कहा डराने की बात भी प्रचार मात्र ही है। हम तो दक्षिण एशिया मे शान्ति और परस्पर सहयोग चाहते है। डराते तो वे है जो भारत महासागर मे आणविक अड्डे बना रहे हैं और युद्ध की सामग्री तैयार करने पर अरबो रुपए खर्च कर रहे हैं।

जर्मनी गत ३० वर्षों मे पुन आर्थिक उन्नति के शिखर पर खडा हो गया है। इसमे बाहरी सहायता के अलावा जर्मन कला-कौशल को भी श्रेय देना होगा। जर्मन लोग मेहनती है, पुरुषार्थी है, ज्ञानी है, कलाकौशल मे सिद्धहस्त है। यहा ज्ञान और धर्म का यथेष्ट मेल है। इसलिए जर्मनी आज पुन विश्व के समृद्ध देशो मे गिना जाता है। साधारण जर्मन अपनी दौड मे व्यस्त है, पडोसी के लिए किसी के पास समय नही। यही स्थिति इग्लैण्ड मे भी दृष्टिगत हुई। हा, आयरलैण्ड मे भार-

(शेष पृष्ठ ७ पर)

उत्तर प्रदेश द्वारा दस लाख रुपये भेजने की घोषणा

२५ सितम्बर को लखनऊ मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा एवं निमन्त्रित व्यक्तियो की एक विशेष बैठक हुई। जिसमे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के कार्य कर्त्ता प्रधान श्री प्रो० शेर सिंहजी भूतपूर्व राज्यमन्त्री भारत सरकार तथा प्रो० रत्न सिंहजी गाजियाबाद का स्वागत किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के यशस्वी प्रधान श्री कैलाशनाथ सिंह जी ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि समस्त आर्य जगत् की आर्य समाजो की सख्या का एक तिहाई अकेले उत्तर प्रदेश मे है। आर्यसमाज की सेवा मे यह प्रान्त सदा अग्रणी रहा है। शताब्दी समारोह को सफल बनाने मे भी यह प्रान्त अग्रणी रहेगा, अत मैं इस बैठक मे घोषणा करता हूं कि शताब्दी समारोह के लिए इस प्रान्त से १० लाख रु० की राशि संग्रह कर शीघ्र ही अजमेर भेजी जायेगी। लगभग एक लाख रुपया पहले ही इस प्रान्त से एकत्रित किया जा चुका है।

बम्बई का योगदान

गत सप्ताह श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे हुई एक बैठक मे बम्बई की सभी आर्यसमाजो और सभी विशिष्ट आर्यजनो ने निर्वाण शताब्दी के लिए पूर्ण सहयोग का वचन दिया। कुल मिलकर सबने डेढ लाख रु० देने का वचन दिया। तत्काल स्वामी को २२ हजार रु० नकद भेंट किया। आगामी सप्ताह तक शेष राशि शताब्दी कायालय मे पहुच जाने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त शताब्दी स्मारिका के लिए बम्बई से २५ हजार रु० के विज्ञापन आने की आशा है।

हरिजन की जगह अनुसूचित शब्द का प्रयोग

दिनाक २९-९-८३ को दिल्ली प्रदेश की हरिजन कल्याण परिषद् एक बैठक कार्यकारी पार्षद श्री वंशीलाल जी चौधरी की अध्यक्षता मे हुई इस अवसर पर दिल्ली प्रशासन, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली पुलिस एव सरकारी विभागो के अनेक अधिकारी उपस्थित थे। महर्षि दयानन्द शताब्दी अजमेर सान्निध्य मे श्री माम चन्द रिवारिया ने प्रस्ताव रखा कि परिषद् के साथ हरिजन शब्द हटा दिया जाना चाहिए। हरिजन शब्द के बजाय अनुसूचित-जनजाति कल्याण परिषद शब्द होना चाहिए। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। परिषद के अध्यक्ष श्री वशीलाल जी चौधरी ने आश्वासन दिया कि आगे से परिषद का नाम यही रखा जाएगा। अन्य विभागो को भी इस सम्बन्ध मे सर्कुलर भिजवाकर उन्हे अनुसूचित-जनजाति कल्याण परिषद के नाम से सम्बोधित करने के लिए लिखा जाएगा।

मातृमन्दिर वाराणसी साधारण सभा की बैठक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे मातृ मन्दिर वाराणसी की साधारण सभा ९-१०-८३ को (रविवार) को दिन मे ३ (तीन) बजे से १५, हनुमान रोड दिल्ली मे होगी। सभी सदस्य गण व सहायक एव शुभचिन्तक सहानुभाव सानुरोध आमन्त्रित है।

बाहर से आने वाले महानुभावो के लिए ठहरने की व्यवस्था १५, हनुमान रोड दिल्ली मे है। कृपया श्री सरदारी लाल जी वर्मा सभा प्रधान से वहा सम्पर्क करेंगे। पुष्पावती

आर्यसमाज दरियागंज का वार्षिकोत्सव

अक्तूबर के दूसरे-तीसरे सप्ताह में आर्यसमाज दरियागंज नई दिल्ली-२ का वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है। ३ से ७ अक्तूबर तक प्रतिदिन साय ७॥ से ८॥ बजे तक प० वेदव्यास जी के भजन और ८॥ से ९॥ बजे तक प्रो० रत्नसिंहजी के प्रवचन हो रहे हैं। शनिवार ८ अक्तूबर को यज्ञ के बाद सार्वदेशिक, सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ध्वजारोहण करेंगे। श्री वेदव्यास जी के भजनो के बाद आचा विक्रम प रमेश चन्द्र शास्त्री और महात्मा रामकिशोर वैद्य के प्रवचन होंगे। ११ से ११॥ बजे तक ऋषि लगर होगा।

दोपहर २ बजे से ४॥ बजे तक श्रीमती प्रेमशील जी महेन्द्र की अध्यक्षता मे आर्य महिला सम्मेलन होगा। भजनो के बाद श्रीमती उषा शास्त्री और डा० देवेन्द्र द्विवेदी के व्याख्यान होगे। रात्रि के समय प० सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रो० रामसिंह जी और आचार्य हरिदेव के प्रवचन होगे।

रविवार ९ अक्तूबर के दिन भी बृहद् यज्ञ एव भजनो के बाद श्री देवेश जी, श्री रामकिशोर जी वैद्य के प्रवचन होगे। प्रीतिभोज के बाद भजन होंगे। दोपहर २॥ से ३॥ तक प रमेशचन्द्र शास्त्री एव आर्य वीर दल के संचालिक बाल दिवाकर हस के व्याख्यान होंगे। शाम को ४ से ५ बजे तक श्री रामकिशोर जी वैद्य के प्रवचन होंगे।

सामूहिक वेदगान ने समां बांध दिया

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार का वेद प्रचार दिवस सम्पन्न

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार के तत्त्वावधान में १-१०-८३ को वेद प्रचार दिवस प्रीत भव्यता से सम्पन्न हुआ। ऋग्वेद के मंत्रों से यज्ञ के पश्चात् विदुषी बहिन जीमती सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन हुआ, जिसमें अनेक बहनो द्वारा सुन्दर भक्ति संगीत प्रस्तुत किया गया। अशोक विहार की महिला समाज के सामूहिक वेद मन्त्रोच्चारण व वेद स्तुति गान ने समा बाध दिया। इस अवसर पर उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी श्रद्धेय स्वामी दीक्षानन्दजी ने वेद मन्त्रो के आधार पर अत्यन्त भावपूर्ण व प्रेरणादायक उपदेश देकर उपस्थित बहनों को आनन्द विभोर किया। आर्यजगत के विख्यात कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी व "श्री मती पद्मा शर्मा साधिका" की ओजस्वी कविताओं ने सभी को मन्त्र मुग्ध कर दिया। कुछ छोटी बच्चियों ने भी वेद मन्त्र व कविताए सुनाकर धर्म के प्रति सोच प्रकट की। २० महिला समाजों की भारी संख्या में पधारी बहिनो ने समारोह की शोभा को बढाया। मन्त्रिणी पद्मावती

आर्य समाज क्या है?

(पृष्ठ ४ का शेष)

गया है। यज्ञ करना धर्म है तो सन्यासी को क्या धर्मात्मा नहीं होना चाहिए। परन्तु उसके कन्धे से तो यज्ञ का उपवीत (यज्ञोपवीत) भी सन्यास की दीक्षा के समय ही उतरवा लिया जाता है। वास्तविकता यह है कि सन्ध्या और हवन (ब्रह्म यज्ञ और देव यज्ञ) बाह्य कर्म हैं। संन्यासी इन्हे पढ़ने के बाद ही बनता है। अब उसका जीवन यज्ञमय, परोपकारपरायण बन गया है। अब उसे यह पाठ्यक्रम पढने की आवश्यकता नहीं रही। अन्य लोगों को अभी इसे पढ़ना है। यदि साम्प्रदायिक भावना से यज्ञ किया जाता है, तो विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ठीक अर्थो मे नही पढ पाता अतएव अनुत्तीर्ण रहता है।

एक बार पजाब प्रदेश की एक आर्यसमाज के प्रधान ने आर्यसमाज भवन मे दैनिक यज्ञ के प्रसग मे कहा कि "यदि यहा आकर नित्य यज्ञ न करें तो आर्यसमाज बनाना ही व्यर्थ हुआ।" मैंने उनसे निवेदन किया कि यह आर्यसमाज नही है। वह बिगडकर बोले "मैं बाईस वर्ष पाकिस्तान में (पकिस्तान बनने से पहले उस क्षेत्र मे जो पाकिस्तान मे चला गया है) आर्यसमाज का प्रधान रहा हू और अब छह वर्ष से यहा भी प्रधान हू। मैं आर्यसमाज को नही समझता।" मैंने कहा "मुझे तो आश्चर्य है कि आप अट्ठाइस वर्ष आर्यसमाज के प्रधान रहकर यह भी नही जान सके कि आर्यसमाज किसे कहते हैं।"

जो व्यक्ति अट्ठाइस वर्ष की लम्बी अवधि तक आर्यसमाज के प्रधान जैसे उत्तरदायी पद पर रहकर आर्यसमाज के अर्थ नही समझ सका और जिसे आर्यसमाज तथा आर्यसमाज मन्दिर का अन्तर ज्ञात नही, जो भवन को ही संस्था समझता है, क्या वह आर्यसमाजी कहलाने का अधिकारी है। नही कदापि नहीं। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक और आर्यसमाज भवन में साम्प्रदायिक भावना से ही आकर दैनिक हवन मे सम्मिलित होता है। वह आर्यसमाज के मन्तव्यों को समझने की योग्यता नही रखता, आर्यसमाज के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ऐसे व्यक्ति से कोई आशा रखना दुराशा मात्र हैं।

मेरा अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ न किया जाए, वहां अवश्य किया जाए, नियमित किया जाए, किन्तु मैं यह कहना चाहता हू कि आर्यसमाज मन्दिर आर्यसमाज नामक सस्था का कार्यालय है, आर्यसमाजियो का सभा-भवन है। घर मे तो यज्ञ किया न जाए—जिसक' स्वयं आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द ने 'पच महायज्ञ विधि, 'सस्कार विधि', 'सत्यार्थ प्रकाश' और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, मे वर्णन व विधान किया है—आर्यसमाज मन्दिर मे आकर यज्ञ कर लिया जाए। क्या यह ऋषिवर दयानन्द के विधान के विरुद्ध नितान्त साम्प्रदायिक भावना नही है। और क्या इस प्रकार की भावना-अभिरुचि और दृष्टिकोण रखने वाले लोग आर्यसमाजी कहलाने के अधिकारी हैं।

वास्तविकता यह है कि आर्यसमाजी बनने वाले लोग पौराणिक घरों से ही आते हैं। उनके वही अन्ध-परम्परा वाले अन्धविश्वासी संस्कार होते हैं। यदि आर्यसमाज मे प्रवेश के समय ही उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित अथवा वैचारिक क्रान्ति का स्रोत उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ने को मिल जाता है, या फिर जो सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर ही आर्यसमाजी बनते हैं तो उनके अन्धविश्वासी सस्कार समाप्त हो जाते हैं और वे अन्ध परम्पराओ से सर्वथा मुक्त हो जाते हैं।

इसका कारण यह है कि वे महर्षि के दृष्टिकोण और आर्यसमाज को समझ गए होते हैं। ऐसे लोग कहीं भी जाए, किसी भी क्षेत्र में रहें—वे न तो कभी अन्ध-विश्वासों में फंसते हैं और न किसीके कहने से बहकते हैं। वास्तविक अर्थो में वही आर्यसमाजी कहलाने के अधिकारी होते हैं। क्रमशः

रविवार, ९ अक्तूबर १९८३

अन्धामुगल-प्रतापनगर—प० अमरनाथ कान्त, अशोकविहार—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार; आर्यपुरा—पं० तुलसीराम आर्य, आनन्दविहार—पं० रामरूप; अमर कालोनी—श्रीमती गीता शास्त्री, कृष्णनगर—प० अशोककुमार विद्यालंकार; गांधीनगर—डा० रघुनन्दन सिंह, गीता कालोनी—पं० हरिश्चन्द्र आर्य; न्यूमोतीनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; निर्माण विहार—प० महेशचन्द्र पाराशर; पंजाबीबाग—पण्डित प्रकाशचन्द शास्त्री, पंजाबीबाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; विक्रमनगर—प० बलवीर शास्त्री, विनयनगर—प० रामनिवास शास्त्री; भोगल—प० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; मॉडलबस्ती—प० सोमदेव शर्मा, महरौली—प० रणजीत राणा; मॉडल टाउन—प० शिवकुमार शास्त्री; मालवीयनगर—आचार्य रामचन्द्र शर्मा; महावीर नगर—पण्डित रामदेव शास्त्री, राणाप्रताप बाग—आचार्य दिनेशचन्द पाराशर; राजौरी गार्डन—प० खुशीराम शर्मा, रमेशनगर—पं० ओ३मप्रकाश वेदालकार, लड्डूघाटी—स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, लक्ष्मीबाई-नगर—पं० ओ३मप्रकाश गायक, लाजपत नगर—प० सत्यभूषण, वेदालकार लारेन्स-रोड—आशानन्द भजनीक, सदरबाजार—प्रो० वीरपाल जी, सरायरोहेला—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री; सोहनगज—प० देव शर्मा, शादीपुर—प० प्रकाशचन्द वेदालंकार—हौजखास—प० देवराज वैदिक मिशनरी, त्रिनगर—प० मनोहरलाल ऋषि; सुदर्शनपार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, हनुमान रोड—स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती का प्रवचन एव ओमप्रकाश वर्मा के भजनोपदेश।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग।

आर्यसमाज हनुमान रोड का ६१वां वार्षिकोत्सव

राष्ट्र एकता सम्मेलन, बृहद् यज्ञ एव भाषण प्रतियोगिताएं

आर्यसमाज हनुमान रोड के ६१ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर रविवार ९ अक्तूबर को प्रात १०॥ से १ बजे तक राष्ट्र एकता सम्मेलन आयोजित किया गया है। इसमें स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी विद्यानन्द जी, स्वामी दीक्षानन्द जी गुरुकुल कागड़ी के उपकुलपति डा० रामप्रसाद जी वेदालकार, मथुरा के प्रेमभिक्षु जी सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्रीहरिकृष्ण लालभगत, ससद सदस्य आचार्य भगवान देव सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओ३म् प्रकाश जी पुरुषार्थी, पजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी आदि प्रमुख आर्य नेता भाग ले रहे हैं।

शनिवार ८ अक्तूबर को प्रात १० बजे से १२-३० तक ऋषि दयानन्द एक महान् शिक्षा शास्त्री विषय पर सीनियर विद्यालय के छात्र-छात्राओ की राकेश कैला भाषण प्रतियोगिता होगी। मध्याह्नोत्तर २ बजे से साय ५ बजे ऋषि दयानन्द एक महान् अर्थ शास्त्री विषय पर कालेजो के छात्र-छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता होगी।

शुक्रवार ७ अक्तूबर को रात्रि ८ बजे से ९ बजे तक स्वामी सुन्दरानन्द सरस्वती स्लाइडों द्वारा हिमालय के ऐतिहासिक आकर्षण दृश्य दिखलाएगे।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर २ बजे ९ अक्तूबर तक प्रतिदिन प्रात ७ से ८॥ बजे तक ऋग्वेदीय बृहद् यज्ञ किया जा रहा है। ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती हैं और सगीत रेडियो कलाकार श्री ओ३मप्रकाश वर्मा प्रस्तुत करते हैं। ४ से ७ अक्तूबर तक प्रति रात्रि ८ से ९ बजे तक स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की वेदकथा होती है। उससे पूर्व श्री ओ३मप्रकाश वर्मा के भजन होते हैं।

आर्यसमाज पूर्वी कैलाश (सूरज पर्वत) का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पूर्वी कैलाश (सूरज पर्वत) नई दिल्ली-६५ का वार्षिकोत्सव २ से ९अक्तूबर १९८३ तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर २ अक्तूबर से ८ अक्तूबर तक प्रति रात्रि ८॥ से ९॥ बजे तक आचार्य पुरुषोत्तम शर्मा के प्रवचन हो रहे हैं। उससे पूर्व प्रतिरात्रि ७॥ से ८॥ बजे तक भजनोपदेशक प० चुन्नीलाल भक्ति-सगीत प्रस्तुत करते हैं। ९ अक्तूबर को वार्षिकोत्सव का मुख्य कार्यक्रम होगा। प्रात यज्ञ के बाद श्री गोपालशरण विद्यार्थी यज्ञोपदेश, श्री पुरुषोत्तम जी वेदोपदेश करेंगे। डी० ए० वी० स्कूल रामकृष्ण पुरम और चन्द्र विद्या मन्दिर के छात्र-छात्राए रोचक कार्यक्रम रखेंगे श्रीमती राजकुमारी जी, श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्री नरेन्द्र अवस्थी सामयिक चर्चा करेंगे।

आर्ययुवक सभा गुरुकुल विभाग फीरोजपुर छावनी के नए पदाधिकारी—प्रधान-श्री सुरेन्द्र गुप्त, एडवोकेट; उपप्रधान-श्री देवराज दत्ता व श्री मनोजार्य; मन्त्री, श्री जितेन्द्रार्य; कोषाध्यक्ष-श्री बलराम खुराना, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री राजेन्द्रकुमार गुप्ता, प्रचार मन्त्री-श्री विजयानन्द।

वैदिक गुरुकुल प्रणाली का लक्ष्य · सर्वांगीण विकास

(पृष्ठ पांच का शेष)

तीयों के प्रति श्रद्धा है। ऐटनबरो की 'गांधी' फिल्म के सम्बन्ध मे यह लोगो की समझ से बाहर है कि अहिंसा से हिंसा पर कैसे विजय प्राप्त की जा सकती है। गांधी की प्रणाली उसका दर्शन व्यावहारिक हो, ऐसा नही समझा जाता।

मैंने जब भारत के स्वाधीनता सग्राम मे दोनो विश्व महायुद्धों मे जर्मन सहायता का वर्णन किया तो ये लोग चकित हुए। हा, साहित्य के क्षेत्र मे विशेषकर भारतीय साहित्य के क्षेत्र मे जर्मन अनुसन्धान के प्रयत्नो का इन्होने स्वागत किया।

इसी विषय को लेकर भारत की विदुषी कौंसिल-जनरल श्रीमती कुमार से लम्बी-चौड़ी बात हुई। उन्होने गुरुकुल कागडी के कार्यक्रम मे दिलचस्पी प्रकट की और चाहा कि उन्हे इस सम्बन्ध मे पूर्ण सामग्री भेजी जाए।

लन्दन के स्कूल आफ ओरियेंटल और अफ्रीकन स्टडीज के डायरेक्टर प्रो० कोवन ने बताया था कि अब वहा सस्कृत मे दिलचस्पी कम हो गई है क्योकि इससे किसी को रोजी कमाने में कोई लाभ नही। हाई कमीशन के शिक्षा अधिकारी श्री मुखर्जी ने बताया कि वहा आयुर्वेद में जरूर दिलचस्पी है और यदि हम लन्दन मे सस्कृत के प्रति रुचि पैदा करना चाहते है तो लन्दन विश्वविद्यालय मे आयुर्वेद की चेयर प्रतिष्ठित करनी चाहिए। उसके द्वारा सस्कृत मे पुन रुचि जाग्रत की जा सकती है।

यह जानकर मुझे कोई अचम्भा नही हुआ कि बहुत से जर्मन और अग्रेज अध्यापको ने वेदो के नाम तक नही सुने। जब मैंने उन्हें बताया गया कि दयानन्द मार्टिन लूथर की तरह सुधारक थे और आर्यसमाज का आन्दोलन प्रोटेस्टैन्ट के आन्दोलन की तरह सुधार-आन्दोलन है तो उनकी जिज्ञासा कुछ जगी। जब मैंने उन्हे बताया कि दयानन्द कार्ल मार्क्स का समकालीन था और यह कि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक मार्ग साम्यवाद और पूजीवाद के मध्य का मार्ग है, जिसमे व्यक्ति के सम्मान और समाज के हित दोनो की सुरक्षा की व्यवस्था है तब उनकी जिज्ञासा और तीव्र हुई।

इस विषय पर मेरी नैरोबी के प्रतिष्ठित आर्य नेता पण्डित सत्यदेव जी और आर्यसमाज लन्दन के प्रधान प्रोफेसर भारद्वाज से भी बातचीत हुई। ये दोनो भी इसी विचार के हैं।

यहा यह भी उल्लेख करना उचित होगा कि ब्रूसेल्ज के जिस होटल मे हमे यूरोपीय यात्रा के दौरान ठहराया गया था वहा बाइबिल के उद्धरणों को लेकर चार भाषाओ में प्रकाशित एक ग्रन्थ पडा हुआ था। उस पर लिखा हुआ था—यह प्रति आपकी है, ले जाइये। हा, अमुक सस्था को इसके लिए ३ डालर भेज दीजिए।

निरन्तर-शिक्षा

निस्सन्देह शिक्षाक्रम आयु पर्यन्त चलता रहता है न कि विश्वविद्यालय की उपाधि प्राप्त करने के साथ। जो विचारक पुनर्जन्म मे विश्वास रखते हैं उनके अनुसार तो यह क्रम जन्म-जन्मान्तर तक चलता रहता है। ज्ञान-विज्ञान मे निरन्तर परिवर्धन होता जा रहा है, उसमे अद्यतन रहना अब कठिन हो गया है। इसी के साथ ज्ञान-विज्ञान के रहस्य किस प्रकार खोजे जाए और जो सूचना अथवा ज्ञान किसी भी समय किसी को चाहिए उसे कहा से, कैसे प्राप्त किया जाए, इसे भी समझने के लिए निरन्तर प्रशिक्षण की आवश्यकता है। कम्प्यूटर की अपनी भाषा है और तकनीकी तौर पर उन्नत देशो मे आज का विद्यार्थी समुदाय और शिशु समुदाय उसके प्रयोग से शिक्षा ग्रहण कर रहा है।

स्वास्थ्य हो, इंजीनियरिंग हो, व्यापार हो, सभी क्षेत्रो मे अबाधगति से ज्ञान परिवर्धन हो रहा है।

उन्नत देशो मे ज्ञान के प्रसार और प्रवाह हेतु तरह-तरह के उपकरण तैयार हो चुके हैं और उनमे निरन्तर सुधार जारी हैं। अब विषय विशेष की सीमाए भी नष्ट प्राय हो चुकी हैं। विभिन्न विषयो के परस्पर मेल से ही विश्व के रहस्य उद्घाटित होते हैं। यह सिद्धान्त अब सर्वमान्य हो चुका है। भारत के ऋषि-मुनि भी इसी विचारधारा के थे। आजकल यहा आक्सब्रिज मॉडल के अनुकरण मे ३ विषयो को लेकर ही डिग्री प्रदान की जाती है। लेकिन जिस भारतीय शिक्षाविधि का ऋषि दयानन्द ने प्रतिपादन किया, उसके अनुसार ब्रह्मचर्याश्रम मे, गुरुकुल मे रहते हुए निरन्तर १६-१७ वर्ष तक ब्रह्मचारी को २०-२५ से अधिक विषयो का ज्ञान प्राप्त करना होता था। वेद-वेदाग के अतिरिक्त उसे आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थवेद का ज्ञान भी प्राप्त करना होता था। फिर इतिहास, भूगोल, अकगणित, बीजगणित, खगोल शास्त्र, ज्योतिष विद्या ऐसे अनेक शास्त्रो का अध्ययन करना होता था इसके साथ ही उसके गुण-कर्म और स्वभाव के अनुसार यह भी निश्चित किया जाता था कि उसने किस वर्ण मे प्रवेश करना है, अर्थात् उसने ब्राह्मण का, क्षत्रिय का, वैश्य का अथवा कोई अन्य पेशा अपनाना है। फिर उसे तदनुसार यथायोग्य विषयो मे पारगत किया जाता था।

वैदिक काल मे शिक्षा यहीं समाप्त नही हो जाती थी। गृहस्थाश्रम मे रहते हुए गृहस्थो को समय-समय पर विभिन्न पर्व, यज्ञ और सस्कार रचाने होते थे। प्रत्येक पर्व, यज्ञ और संस्कार भी निरन्तर शिक्षा के प्रबल साधन थे। इन अवसरो पर गृहस्थ को उसके सामाजिक, पारिवारिक

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गीतों की एक सुन्दर पुस्तक : राघवगीत उद्यान

लेखक एवं प्रकाशक—स्वरूपानन्दजी सरस्वती (पूर्व श्री त्रिलोक चन्द्र राघव); सम्पादक एवं प्राप्तिस्थान—श्री गुलाब सिंह राघव, आर्यकुटीर, ४४६ सनलाइट कालोनी—२, आश्रम नई दिल्ली—१४। पृष्ठ संख्या—९६; मूल्य ३ रु० ५० पैसे

स्वामी स्वरूपानन्दजी सुकवि एवं चिन्तक हैं। उनकी २८ के लगभग काव्य पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आर्यसमाज के ही नही, भक्ति रस के सब पारखी उनकी काव्यकृतियो से आनन्द लेते हैं। आर्यसमाज के भजनोपदेशक उनके गीत बडे भाव से गाते हैं। यह भी बड़े गौरव की बात है कि उनकी काव्यकृतियों को स्वामी जी के सुपुत्र श्री गुलाबसिंह 'राघव' मधुर स्वर में प्रस्तुत करते हैं। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि स्वामी स्वरूपानन्द जी की नव काव्य कृति 'राघव गीत उद्यान' भव्य स्वरूप में प्रकाशित हुई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी के अवसर पर यह काव्यकृति उपहार एवं स्वाध्याय के लिए एक उपयोगी कृति है। उल्लेखनीय है कि अनेक गीतों की तर्ज तथा उनके अनुकूल वेदमन्त्रो का हवाला भी दिया गया है। आशा है कि आर्यजनता इस काव्यकृति का लाभ उठाएगी।

वैदिक गुरुकुल प्रणाली का लक्ष्य सर्वांगीण विकास (पृष्ठ ६ का शेष)

तथा राष्ट्रीय पर्वों-कर्तव्यों का बोध कराया जाता था। तत्पश्चात् वानप्रस्थाश्रम तो विशेषतः अध्ययन, अध्यापन, मनन, चिन्तन के लिए सुनिश्चित था ही।

यह धारणा कि विश्वविद्यालय का काम केवल डिग्री प्रदान करना है, मूलत निरस्त हो जानी चाहिए। उपाधि प्रदान तो शिक्षा की प्रक्रिया मे एक चरणमात्र है। शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थी मे स्वाध्याय की, निरन्तर शिक्षा की जिज्ञासा उत्पन्न करना होना चाहिए। तभी तो वैदिक शिक्षा प्रणाली मे समावर्तन के समय गुरु शिष्य को उपदेश देता था कि स्वाध्याय से कभी जी मत चुराना और सर्वदा दान देना अर्थात् आज के सन्दर्भ मे करो की चोरी न करना, क्योकि दान अर्थात् कर से ही तो शिक्षालय, विद्यालय गुरुकुल चलते हैं।

निरन्तर शिक्षा के साधन

प्रश्न उठता है कि निरन्तर शिक्षा के साधन क्या हो? भारत मे इस विषय पर बहुत प्रयोग हो चुके हैं। अपठित लोगों के लिए रेडियो वरदान सिद्ध हुआ है। अब दूरदर्शन और उपग्रह भी उपस्थित हो गए हैं। कृषको को खेती की [illegible] रेडियो से मदद मिली है, भार[illegible] मे अंग्रेजी महीनो [illegible]तीय महीनो का प्रयो[illegible]

सत्य का त्याग [illegible]

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने पर्यटन के सिलसिले में एक बार [illegible] फर्रुखाबाद स्थान पहुंचे। उन दिनों अचानक फर्रुखाबाद में हिन्दुओं [illegible] आपसी झगड़ा हो गया। पुलिस ने दोनों पक्षों पर अभियोग [illegible] अदालत में पेश हो गया। अभियोग चल पड़ा। आर्यों ने स्वामीजी से कहा कि आप सारी घटना के प्रत्यक्षदर्शी हैं। आप हमारी [illegible] से साक्षी दे दें।"

महर्षि ने उत्तर दिया—"साक्षी के रूप में मुझे यदि न्यायालय में बुलाया गया और मुझसे कुछ पूछा गया तो कुछ मैंने देखा है, कह दूंगा।"

आर्यों ने पूछा—"आप क्या कहेंगे?" महर्षि ने उत्तर दिया—"मैं यह कहूंगा कि इस झगडे मे दोष आर्यों का है।" इस पर आर्य बोले—"इस पर [illegible]

महर्षि ने उत्तर दिया—"[illegible] मारे जाओ, [illegible] तुम्हारी खातिर अपने आत्मा का हनन नही कर सकता। जो सच बात है, वही कहूंगा। सत्य का त्याग सम्भव नही।"

—[illegible]

'दयानन्द और उनका भाष्य' पुस्तक का विमोचन

वेद सस्थान सी—२२ राजौरी गार्डन नई दिल्ली की वैदिक शोध-योजना के अन्तर्गत प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तक 'दयानन्द और उनका भाष्य'। ले० डा० फतहसिंह) का विमोचन सुविख्यात विद्वान डॉ० लोकेश चन्द्र संसद सदस्य के करकमलो द्वारा ६ अक्तूबर १९८३ अपरान्ह चार बजे सस्थान की विशेष सभा में हो रहा है।

रजि० न० डी० सी० 759
साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा आदिया प्रैस २३९८, रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म् — कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ४० पैसे वार्षिक २० रुपए वर्ष : ७ अंक ५१ रविवार १६ अक्तूबर, १९८३ २९ आश्विन वि० २०४० दयानन्दाब्द—१५९

पंजाब के निरंकुश पर नर-संहार गहरा शोक

उग्रवादी-अलगाववादी तत्वों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही हो

दिल्ली के राष्ट्रीय एकता सम्मेलन की मांग : आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ६१ वां वार्षिकोत्सव जो ३ अक्तूबर से शुरू हुआ था रविवार ९ अक्तूबर को मध्यान्तर ४ बजे सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। शुक्रवार दोपहर महिला सम्मेलन में रघुमल आर्यकन्या पाठशाला की छात्राओं के रगा-रंग कार्यक्रम के साथ विभिन्न विदुषी देवियों के भाषण एवं भजन हुए। रात्रि को हिमालय दर्शन रंगीन चित्र प्रदर्शन का कार्यक्रम स्वामी सुन्दरानन्द सरस्वती द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया एवं जनता की माग पर पुन यह कार्यक्रम शनिवार रात्रि को भी रखना पड़ा। शनिवार को राकेश कैला स्मृति भाषण प्रतियोगिता हुई एवं रात्रि को स्वामी सत्यप्रकाश जी का मानव विषय पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ। रविवार प्रात. ९।। बजे तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा सम्पन्न कराई गई। तत-पश्चात् आर्य रामप्रसाद जी उप कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का उपदेश एव श्री ओ३मप्रकाश जी त्यागी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन हुआ, जिसमें आचार्य भगवानदेव जी संसद सदस्य पं० शिवकुमार शास्त्री भू० भू० संसद सदस्य, वैद्य राम किशोर जी आदि अनेक विद्वानों ने भारत की वर्तमान चिन्ताजनक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए पंजाब में निरकुश नर संहार पर गहरा शोक प्रगट किया। अन्त में एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से माग की गई कि उग्रवादी एव अलगाववादी राष्ट्र विरोधी तत्वों को वे जहां भी हों पकड़कर सख्त सजा देकर जनता में विश्वास उत्पन्न किया जाए। पारित प्रस्ताव द्वारा पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू करने पर सरकार की सराहना तो की गई परन्तु जब तक सरकार इन राष्ट्र विद्रोही तत्वो को स्वर्ण मन्दिर अमृतसर से निकालकर उनके विरुद्ध कार्यवाही नहीं करती जनता का सरकार पर विश्वास नहीं जमता और यह स्थिति बिगड़ भी सकती है जिससे सारे देश मे यह आग भड़क सकती है, जिसकी जिम्मेदारी सरकार पर होगी।

निर्वाण शताब्दी में ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व

अजमेर में ३ से ६ नवम्बर तक आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी में भाग लेने के लिए एक प्रतिनिधि मण्डल २४ अक्तूबर १९८३ को भारत पहुच रहा है जिसका नेतृत्व आर्यसमाज लन्दन के प्रधान प्रो० सुरेन्द्र नाथ जी भारद्वाज करेंगे। इस अवसर पर शताब्दी समारोह समिति ने निश्चय किया है कि ब्रिटेन में प्रो० भारद्वाज जी द्वारा की गई आर्यसमाज की अनुपम सेवाओं के प्रतिफल उन्हें 'आर्य रत्न' की उपाधि से विभूषित किया जाएगा।

प्रो० भारद्वाज विगत २० वर्षों से ब्रिटेन भर में वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। १९८० में लन्दन में हुए ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजक प्रो० भारद्वाज ही थे, वह केनिया, सूरीनाम दक्षिणी अमेरिका, फ्रांस आदि कई देशों में प्रचारार्थ भ्रमण कर चुके हैं।

प्रतिनिधि मण्डल में आर्यसमाज लन्दन के मिनिस्टर आफ रिलीजन श्री गिरीश चन्द्र खोसला भी होंगे। शताब्दी समारोह की प्रदर्शनी में 'आर्यसमाज लन्दन' का एक विशेष मण्डप होगा। जहा कि ब्रिटेन में प्रवासी भारतीयों के सामाजिक धार्मिक जीवन, प्रगति व प्रचार के दृश्य तथा वास्तविक व महत्वपूर्ण आकड़े प्रदर्शित किए जाएगे। यह प्रतिनिधि मण्डल ५ सप्ताह तक भारत में रहेगा तथा दिल्ली में आयोजित तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी भाग लेगा। प्रो० भारद्वाज का भारत में निवास २१६८, रानी बाग दिल्ली-११००३४ होगा।

शिक्षाशास्त्री एवं अर्थशास्त्री के रूप में महर्षि दयानन्द का मूल्यांकन

आर्यसमाज हनुमान रोड में दो दिलचस्प भाषण प्रतियोगिताएं

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी के वर्ष मे आर्यसमाज हनुमान रोड के तत्त्वावधान मे समाज के वार्षिकोत्सव पर महर्षि के दो स्वरूपो पर बडी दिलचस्प प्रतियोगिताए हुई। दोनों ही प्रतियोगिताए समाज के प्रधान श्री राममूर्ति कैला के दिवगत पुत्र राकेश कैला की स्मृति में आयोजित की गई।

शनिवार ८ अक्तूबर को प्रात १० से १२।। बजे तक दिल्ली के हायर सैकेण्डरी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने 'महर्षि दयानन्द एक महान् शिक्षा शास्त्री' विषय पर भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। इस भाषण प्रतियोगिता मे रघुमल बालिका आर्य विद्यालय राजा बाजार की कुमारी अनु प्रभाकर को चल विजयोपहार एव २५१ का प्रथम पुरस्कार, चिराग इन्क्लेव शासकीय वरिष्ठ बाल माध्यमिक विद्यालय के राजकुमार को १५१) का दूसरा तथा बिडला आर्य बालिका विद्यालय की छात्रा कुमारी वीणा को १०१) का तीसरा पुरस्कार दिया गया।

दोपहर बाद २ से ५ बजे तक महर्षि दयानन्द एक महान् शिक्षाशास्त्री विषय पर महाविद्यालयो एव विश्वविद्यालयो के छात्रों की प्रतियोगिता डा० वाचस्पति उपाध्याय की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के श्री सुभाषचन्द्र को ३०१) का प्रथम पुरस्कार, लाल बहादुर शास्त्री सस्कृत विद्यापीठ की कुमारी सुनीति को २०१) का द्वितीय पुरस्कार और दिल्ली विश्वविद्यालय की ला फैकल्टी के श्री सूरत विद्यावाचस्पति को १०१) का तीसरा पुरस्कार दिया गया।

यह घोषणा भी की गई कि अगले वर्ष से कालेजो के लिए राकेश कैला भाषण प्रतियोगिता के लिए प्रथम तीन पुरस्कारो के रूप मे स्वर्ण, रजत और कास्य पदक दिए जाएगे। पुरस्कार दिल्ली प्रशासन के शिक्षा विषयक पार्षद श्री कुलानन्द भारती ने बाटे और उन्होने देश के उत्थान मे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान की प्रशसा की।

आर्यजनता अजमेर शताब्दी में भाग ले आगामी ४ नवम्बर १९८३ दीपावली के दिन

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी सर्वत्र धूमधाम से मनाई जाए।

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के श्री रामगोपाल शाल वाले ने एक पत्रक द्वारा निर्देश दिया है कि यद्यपि निर्वाण शताब्दी का मुख्य आयोजन ३ नवम्बर से ६ नवम्बर १९८३ तक अजमेर मे हो रहा है, सभी आर्य जन उसमे भाग ले। जो लोग वहां न पहुच सकें, उन्हे सार्वदेशिक सभा की ओर से आदेश दिया जाता है कि वे दीपावली के दिन निर्वाण शताब्दी महोत्सव अपने-अपने ग्राम, नगर और कस्बो मे बड़े उत्साह पूर्वक मनावें।

प्रात. प्रभात फेरियां निकाली जावें, आर्य जन अपने घरो मे ओ३म् ध्वज फहराने का विशेष कार्यक्रम रखें, सार्वजनिक सभाए की जावें और महर्षि दयानन्द प्रतिपादित साहित्य बड़ी सख्या मे बांटा जावे। सामूहिक यज्ञ तथा यज्ञोपवीत परिवर्तन कार्यक्रम किए जावें। आर्य जनता अपने-अपने क्षेत्रों मे यह सब कार्य धूम-धाम से संपन्न करे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

आओ, हम 'त्र्यम्बक' परमात्मा की उपासना करें ।

—प्रेमनाथ एडवोकेट

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । ॥ऋ०७।५९।१२॥२।यजु०३।६०॥

वरिष्ठ ऋषि, रुद्र देवता, छन्द-विराड ब्राह्मी त्रिष्टुप् (यजु०) वा अनुष्टुप् (ऋ०), स्वरषंवत् (यजु०) वा गाधार (ऋ०)।

शब्दार्थ—(हम लोग) [सुगन्धिम्] सुविस्तृत पुण्यकीर्तिरूप सुगन्धयुक्त [पुष्टिवर्धनम्] शरीर और आत्मा के बल को बढाने वाले [त्र्यम्बकम्] तीनो कालो मे एक रस ज्ञानयुक्त वा तीनो कालो मे जीवो वा कार्य कारण जगत की रक्षा करने वाले सर्वाध्यक्ष सर्व स्वामी रुद्र जगदीश्वर की [यजामहे] नित्य पूजा अर्थात् उसकी निरन्तर स्तुति वा उसका निरन्तर सत्कार-पूर्वक ध्यान करें (और उसकी कृपा से) [उर्वारुकम् इव] जैसे खरबूजा फल (पककर) [बन्धनात्] (लता के) बन्धन से (छूटकर सुन्दर स्वादिष्ट हो जाता है वैसे हम लोग भी) [मृत्यो] मृत्यु (शरीर वियोग अर्थात् जन्म-मरण के बन्धन) से छूट जाए (और) [अमृतात्] मोक्षरूप सुख (की श्रद्धा अथवा इच्छा वा उसकी प्राप्ति के लिए अनुष्ठान) से [मा] अलग कभी न होए ॥

भावार्थ—इस मन्त्र मे उपमालकार है। मनुष्य लोग ईश्वर को छोडकर किसी का पूजन न करें, क्योकि अविहित (अप्रतिपादित) और दुःखरूप फल होने से परमात्मा से भिन्न दूसरे किसी की उपासना न करनी चाहिए। जैसे खरबूजा फल लता मे लगा हुआ अपने आप पककर समयानुकूल लता से छूटकर सुन्दर स्वादिष्ट हो जाता है वैसे ही हम लोग पूर्ण आयु को भोगकर शरीर को छोड़ के मुक्ति को प्राप्त होवें, कभी किसी अनास्तिक पक्ष को लेकर कभी मोक्ष की प्राप्ति के लिये अनुष्ठान वा परलोक की इच्छा से विरक्त (अलग) न होए। और न कभी नास्तिक पक्ष को लेकर ईश्वर का अनादर करें। जैसे व्यावहारिक सुखो के लिये हम अन्न जलादि की इच्छा करते हैं वैसे ही ईश्वर, वेद वा वेदोक्त धर्म और मुक्ति के लिये निरन्तर श्रद्धा करें ॥ ऋषि दयानन्द यजुर्वेद भाष्य) ॥

हम लोगो का उपास्य जगदीश्वर ही है, जिसकी उपासना से पुष्टि, वृद्धि, शुद्ध कीर्ति और मोक्ष प्राप्त होता है और मृत्यु सम्बन्धित भाग नष्ट होता है। उसको छोडकर अन्य (किसी जीव अथवा जड़ पदार्थ) की उपासना हम लोग कभी न करें। (ऋषि दयानन्द ऋग्वेद भाष्य) ॥

अतिरिक्त स्पष्टीकरण—परमात्मा को इस वेद मन्त्र मे 'त्र्यम्बक.' कहा गया है क्योकि वह तीनो कालो मे सब जीवो वा कार्यकारणरूप जगत् का रक्षक है और उसका ज्ञान तीनो कालो मे एक रस अखण्डित रहता है। वह परमात्मा 'पुष्टिवर्धन' भी है, क्योकि वह हमारे शरीर वा आत्मा के बल का बढाने वाला है। और वह 'सुगन्धि' भी है, क्योकि उसके महान यश की सुगन्धि विश्व मे फैली हुई है। उस परमात्मा की ही हम सदा पूजा अर्थात् उपासना करें, जो मनुष्य उसके स्थान पर अन्य किसी जीव अथवा जड पदार्थ की उपासना करता है वह पशु के समान है। इस मन्त्र मे एक बडे सुन्दर दृष्टान्त खरबूजे फल का दिया है कि जैसे खरबूजा ठीक पककर लता से पृथक हो जाता है और सुस्वादु हो जाता है वैसे मनुष्य को भी चाहिए कि वह पूर्ण आयु भोगकर मृत्यु से छूट मोक्ष अर्थात् परमानन्द को प्राप्त होवे, इस मोक्ष को पाने के लिये मनुष्य कभी श्रद्धा वा उत्कृट इच्छा से रहित न हो, क्योंकि मोक्ष प्राप्ति के लिये मुमुक्षु होना आवश्यक है और वेदोक्त धर्म का अनुष्ठान, ईश्वर ज्ञान योगाभ्यास आदि भी ॥

१२ गाधी स्क्वयर, मल्कागज, दिल्ली—७

: मुस्कराते रहो (१) :

—हरप्रकाश आहलूवालिया

आजकल प्राय: बैंको मे अथवा अन्य दूसरे कार्यालियों में देखने मे आता है कि 'मुस्कराते रहो' के बोर्ड लटकते रहते हैं। यह तो एक व्यावसायिक आवश्यकता है, ताकि दफ्तरो और बैंकों के कर्मचारी जनता से सद्भावना से व्यवहार करें। और मुस्कराते हुए उनकी समस्याओं को हल करने का प्रयास करें। किन्तु क्या ऐसा सचमुच होता है। उत्तर नही मे ही मिलता है, क्योकि कठिनता से एक-दो प्रतिशत कर्मचारी थोडी बहुत सहानुभूति से व्यवहार करते हैं।

महात्मा आनन्द स्वामी जी प्राय इस बात पर बहुत जोर दिया करते थे कि मुस्कराते रहो। जिन पाठकों को उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे जानते होगे कि वह तो स्वय ही मुस्कराहट की एक मूर्ति थे। और मुस्कराहट उनके मुखारविन्द पर हर समय झलकती रहती थी। किन्तु वह तो महात्मा थे। बहुत से ऐसे महात्मा और सन्यासी होते हैं जो स्वय भी मुस्कराते हैं और दूसरो के जीवन मे भी मुस्कराहट भर देते हैं।

चलिए, महात्माओ को छोडकर नीचे उतरते हैं। और जन साधारण मे से कुछ अलग-अलग श्रेणियो पर दृष्टिपात करते हैं और देखते हैं कि कौन सचमुच मुस्करा सकता है। आइए, पहले हम निम्न वर्ग के लोगो को लेते हैं। जिनमे अधिकतर ऐसे व्यक्ति होते हैं कि जिनको दो समय का भरपेट खाना भी नही मिल पाता अथवा मिलता है तो उसको जुटाने के लिये इतना अथक प्रयत्न करना पडता है कि उनके मुस्कराने का कोई प्रश्न ही नही उठता एक कवि के शब्दो मे—

"जब मन अन्दर से रोता हो,
बाहर से खुशी मनाए क्या?"
वह भूखे-नगे भाग्यहीन मुखडे पर,
मुस्कराहट लाए क्या?

इसके पश्चात् हम मध्य वर्ग के लोगो को लेते हैं। आर्य समाज के एक पुराने कवि ने अपने एक भजन मे लिखा था कि—

सच्ची खुशी से रहते हैं, वह जन सदा अलग,
मन जिन का विषय भोग में
होवे फसा हुआ।

जीवन भर हम लोग भोग की वस्तुओं को संग्रह करने में ही लगे रहते हैं। आजकल मध्य वर्ग के घरों में भी रेडियो, टी. वी, फ्रिज, कूलर आदि जैसी चीजें आवश्यक वस्तुओं की सूची में शामिल हो गई हैं। परन्तु क्या इन सब चीजों ने हमारे जीवन को पहले से कुछ अधिक सुखी बनाया है? क्या ये उपलब्धियां हमारे जीवन में कुछ अधिक मुस्कराहट ला सकी हैं, किन्तु इसका उत्तर भी नहीं में ही मिलता है। हमारे जीवन की समस्याए अधिक जटिल होती जा रही हैं। और हमारी मुस्कराहटो के क्षण सीमित होते जा रहे हैं। एक उर्दू कवि ने कहा है—

हजारो ख्वाहिशें ऐसी,
कि हर ख्वाहिश पर हम निकले,
बहुत निकले मेरे अरमान,
लेकिन फिर भी कम-निकले।

चलिए, अब हम उन लोगो को लेते हैं, जिनको हम उच्च वर्ग के कहते हैं, जिनके पास इतना धन होता है कि उनकी सबसे बड़ी समस्या यही होती है कि उसका व्यय कैसे किया जाए। उस धन को कहा लगाया जाए और करों से कैसे मुक्त हुआ जाए। ऐसे लोग चाहे वो करोडपति हों वड़े-बडे उद्योगपति हो अथवा उच्च दर्जे के राजनीति नेता हो, उनमें, (सब नही) ऐसे होते हैं, जो कि दूसरों के हितों की अवहेलना करके अपने जीवन मे मुस्कराहट लाना चाहते हैं। कई बार उनकी मुस्कराहट का रास्ता गरीबों के खून और पसीने से लथपथ होता है। ऐसे लोग यदि मुस्कराते हैं तो वह मुस्कराहट बनावटी और केवल दिखाने के लिये होती है। ऐसे लोगों के लिये ही एक कवि ने कहा है कि—

दूसरो के लबो की हंसी छीनकर,
आपको मुस्कराना नही चाहिए?

एफ-६३, अशोक विहार I
दिल्ली—११००५२

अपने दोष कैसे मिटाएं ?

—अमरनाथ आर्य

बुद्धिमान् पुरुष विज्ञानपूर्वक अपने आत्मिक और शारीरिक दोष मिटाए। सिद्ध रोहिणी—लाक्षा आदि औषधियो से रोग निवृत्त करते रहे।

विचारवान् पुरुष स्वय ही अपने दोषों का वैद्य होता है।

मानव अपना चंचल मन ज्ञान प्राप्ति में ऐसा संयुक्त कर दे कि जैसे चिकित्सक या वैद्य हिले हुए अगो को जोड़ देता है।

जैसे वैद्य चिकित्सा करता है, वैसे मानव ईश्वर-विचार से अपने दोष दूर करे।

जैसे उत्तम शिल्पी का बनाया हुआ सुदृढ रथ दूसरे रथों से आगे निकल जाता है, वैसे मानव प्रयत्नपूर्वक आगे बढ़ कर प्रतिष्ठा प्राप्त करे।

जैसे चिकित्सक चोट की, शिल्पी टूटे रथ को जोड़ कर सुधार लेते हैं, वैसे बुद्धिमान् मनुष्य विचलित मन को व्यवस्थित एव नियन्त्रित करें।

कोठी न० १३३१, सैक्टर १५, फरीदाबाद (हरयाणा)

"डालडा काण्ड ! अपराधियों को कठोर दण्ड दो"
आर्यसन्देश में छपी हुई सामग्री का प्रकाश
१०० व ५० रुपए की खरीद पर सुन्दर उपहार

बन्धन-मुक्ति : निष्काम कर्म से

ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ यजु० ४ २

मानव धर्मयुक्त वेदोक्त निष्काम कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष जीवित रहने की इच्छा करे । इस प्रकार आसक्ति रहित किया गया कर्म बन्धन का कारण नहीं होता ।

राजनीतिक दलदल और आर्यसमाज

भारत के प्रधान राजनीतिशास्त्री आचार्य चाणक्य ने घोषित किया था—'सर्वे धर्मा राजधर्मणि पर्यवस्यन्ति' सब धर्म राजधर्म में समाहित हैं । वैदिक प्रणाली के अनुसार राज्यव्यवस्था के स्थापित करने से ही वर्त्तमान समस्याओं का समाधान सम्भव हो सकता है । स्वभावत जिज्ञासा हो सकती है कि यदि वर्त्तमान राजनीतिक, आर्थिक एव सामाजिक समस्याओं का समाधान वैदिक प्रणाली के अवलम्बन से सम्भव है, तो वर्त्तमान राजनीति मे आर्यसमाज का भाग लेना क्या उचित नही होगा ? इस बात मे सन्देह नहीं है और इतिहाहास इस तथ्य का साक्षी है कि भारतीय प्रजा और सस्कृति आर्य शासको के शासन काल में ही पल्लवित और विकसित हुई है। इसी के साथ आचार्य महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य एव सुराज्य के प्रतिपादन मे सच्चे राजधर्म के परिपालन की महत्ता प्रतिपादित की थी । इसलिए इस बात मे तो किसी को सन्देह नही होना चाहिए कि राष्ट्र में अच्छा स्वशासन और सुशासन हो तो इसकी सतत निगरानी के लिए आर्यसमाज को निरन्तर सजग और सन्नद्ध रहना चाहिए परन्तु प्रश्न है कि इस सबके बावजूद एक संस्था के रूप मे क्या आर्यसमाज को सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहिए या नही ?

जब देश को राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त होने वाली ही थी. उन दिनो महात्मा गांधी से पूछा गया था कि क्या कांग्रेस को रचनात्मक कार्यों को छोड़कर केन्द्र और प्रान्तों मे पदग्रहण करना चाहिए या नही ? उस समय मे महात्मा गाधी ने परामर्श दिया था कि अधिक अच्छा हो कि स्वाधीनता सग्राम एव रचनात्मक कार्यों में निरन्तर सलग्न काग्रेस सक्रिय राजनीति से दूर विधायक कार्यों मे ही लगी रहे । उस समय गाधी जी की वह सलाह नहीं मानी गई थी और काग्रेस पदग्रहण की दल-दल मे आकण्ठ निमग्न हो गई । आज स्थिति यह है कि एक समय देश की स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए तन-मन धन सर्वस्व की आहुति देने वाले देशसेवकों की अगली पीढी आज अपने-अपने घर भरने मे जुटी हुई है । देश में आज जिस भ्रष्टाचार, घूसखोरी, अनाचार एव स्वार्थपरता का दौर चल रहा है, सम्भवत वह इस घृण स्वरूप मे कभी नहीं भड़कता, यदि स्वाधीनता-प्राप्ति के दिनों में प्रमुख दिनों के प्रमुख नेता सत्ता और कुर्सी से पृथक् रह कर रचनात्मक कार्यों में ही संलग्न रहते । जो बात कांग्रेस के सम्बन्ध मे ठीक है, वह आर्यसमाज के लिए तो कहीं अधिक सटीक और खरी है ।

यह ठीक है कि देश में सच्चे राजधर्म की प्रतिष्ठा कर प्रजा के सुख एव रंजन के लिए राष्ट्र में सच्चे जननायक एव प्रजा सेवक चाहिए । देश मे व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार ए ं कुरीतियां समाप्त हों इसके लिए देश में आज ऐसे लाखों करोड़ों जितेन्द्रिय परदु खकातर, सत्य के लिए मर मिटने वाले आर्य युवक-सच्चे आर्यजन चाहिए। ससार की शारीरिक, आत्मिक सामाजिक सब प्रकारकीउन्नति करना आर्यसमाज का एक निर्देश है, अपनी व्यक्तिगत उन्नति के साथ दूसरो की सामाजिक, आर्थिक सब प्रकार की उन्नति करना आर्यसमाज का एक उदात्त लक्ष्य है । ये ऊंचे लक्ष्य तभी पूर्ण हो सकते हैं जब सत्य एवं परोपकार के लिए सर्वस्व की बलि देने के इच्छुक आर्य सज्जन एवं सगठन राजनीति की दल-दल से दूर रहें । हमे देश की दुरवस्था एव बिगड़ती स्थिति की उपेक्षा नहीं करनी है, इसके नियन्त्रण के लिए हमें राजनीति के कीचड़ से दूर रहने वाले नि स्पृह, कर्मयोगी आर्यजनो का अखिल भारतीय सगठन सुदृढ़ करना चाहिए । यदि इस प्रकार का निरन्तर सजग सगठन राष्ट्रभर मे सगठित और सन्नद्ध हो जाए, जिसके नियन्त्रण मे कोटि-कोटि आर्यजनो का बल हो तो वह सक्रिय राजनीति से दूर रहते हुए भी देश मे चरित्रवान् परोपकारी सच्चे आर्यजनो के नेतृत्व मे एक स्थायी सुशासन की प्रतिष्ठा में योग दे सकेगा ।

आर्यसमाज : आज के सन्दर्भ में प्रश्नावली

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी देश-विदेश मे मनाई जा रही है । इस अवसर पर आप कैसा अनुभव कर रहे है ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म टकारा मे हुआ, शिक्षा-दीक्षा मथुरा मे और निर्वाण अजमेर मे । इन तीनो स्थानो पर महर्षि के स्मारको का निर्माण हुआ है । क्या आप इन स्मारकों की वर्तमान स्थिति से सतुष्ट हैं ?

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन की प्रमुख प्रारम्भिक घटनाओ से मृत्यु को जानने और मृत्युञ्जय बनने की बात को मन मे ठान लिया था । क्या महर्षि दयानन्द अपने उद्देश्य मे सफल हो सके ?

महर्षि दयानन्द १८८३ मे दीपावली के दिन निर्वाण से पूर्व पर्याप्त समय तक रुग्ण रहे थे । क्या आप समझते हैं कि उनको उचित औषध और पथ्य न मिल सके, इसके पीछे कोई षडयन्त्र था ?

स्वामी दयानन्द के निर्वाण को सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं । सौ वर्ष पहले की परिस्थितियो मे आर्यसमाज जितना सार्थक और उपयोगी था, क्या वह आज की परिस्थिति मे उतना ही सार्थक एव उपयोगी हो सकता है ?

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो का आपके व्यक्तिगत जीवन पर क्या प्रभाव पडा ?

आप एक पक्के आर्यसमाजी हैं ? हम जानना चाहते हैं कि आप अपने जीवन एव व्यवहार मे आर्यसमाज के सिद्धान्तो को कितना अपना सके हैं ? कृपया यह भी बताए कि आपके परिवार मे आपके बाद आने वाली नयी पीढी आर्यसमाज के सिद्धान्तो मे कितनी आस्था रखती है ?

वेद सम्पूर्ण देशो कालो अथवा जातियो के लिए है । आपकी राय मे ऐसे कौन से कारण हैं जिनकी वजह से लोग वेदो से विमुख होते जा रहे हैं ?

वेदो में स्त्रियो को सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है । आर्य समाज ने भी स्त्री-शिक्षा के प्रचार से उन्हे सम्मान एव उचित स्थान दिलाने का बडा ही महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । इस सम्बन्ध मे आर्यसमाज की भूमिका क्या होनी चाहिए ?

'सगच्छध्व सवदध्व' का सन्देश यदि वर्तमान विश्व पालन करे तो क्या विश्व-समाज का निर्माण नही नही हो सकता ?

पश्चिमी सभ्यता की चमक-धमक मे वेद-सस्कृति कैसे बचाई जा सकती है ?

आर्यसमाज के पहले दो नियम ईश्वर के सम्बन्ध मे, अगले तीन नियम अपने स्वय के सम्बन्ध मे तथा अन्तिम पाच नियम अन्य लोगो के सम्बन्ध मे कर्त्तव्य का विधान करते हैं ? क्या आप अपने जीवन मे इन नियमो का पालन करते हुए इस स्थिति को प्राप्त कर सके हैं ?

क्षेत्र, भाषा एव धर्म की सकीर्णता, राष्ट्रीय चरित्र का अभाव, अनैतिकता एव भ्रष्टाचार, जनसख्या का विस्फोट, बेकारी तथा युवा पीढी की दिशाहीनता, स्वार्थी राजनेताओ के हाथ में सत्ता का अधिकार, प्रजातन्त्र का दुरुपयोग, गरीबी एव अशिक्षा का विस्तार सामाजिक कार्यों के प्रति उदासीनता और स्वार्थों का जमघट आदि वर्तमान समस्याओ का एक आर्यसमाजी के रूप मे आप किस प्रकार समाधान करना चाहेगे ?

भारत की अनेक प्रमुख समस्याओं-वर्ण-व्यवस्था, अस्पृश्यता, पाखण्ड एव भ्रष्टाचार, राष्ट्रद्रोह एव विघटनकारी प्रवृत्तियों तथा बलात् धर्मान्तरण आदि समस्याओ को समूल समाप्त करने के लिए आप क्या करना चाहेगे ?

आज राष्ट्र एव राष्ट्रीयता की भावना के विकास के लिए आर्यसमाज क्या करें ।

विश्व मे हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए आर्यसमाज को क्या करना चाहिए ?

आज देश-विदेश मे आर्यसमाज की जो स्थिति है तथा आर्य नेता और उनके अनुयायी जिस प्रकार आर्यसमाज को चला और अपना रहे है, क्या आप उनसे सन्तुष्ट हैं ?

आपके अनुसार आर्यसमाज क्या है और आर्यसमाज को विश्व-कल्याण के लिए, मानव जाति के कल्याण के लिए क्या-क्या कार्यक्रम अपने हाथ मे लेने चाहिए ?

कृपया उक्त प्रश्नों के सक्षेप मे इस पते पर उत्तर दें—

— मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

आर्यसमाज क्या है ? (गतांक से आगे)

आर्यसमाज सभी का हितैषी है

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ० प्र०

जो लोग आर्य समाजी नही बने हैं, वे आप समाज को अपना विरोधी समझते हैं। वे चाहे हिन्दू हो अथवा मुसलमान, ईसाई हो, जैनी हो अथवा सिख, पारसी आदि कोई भी हो, परन्तु इसमे लेश मात्र भी सत्यता नही है। सत्य तो यह है कि आर्यसमाज सभी लोगो का, समस्त ससार का, विश्व ब्रह्माण्ड का और न केवल मनुष्य मात्र का अपितु प्राणिमात्र का हितैषी है।

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दो मे 'ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" विज्ञ पाठक विचार करें कि ससार का उपकार करना जिस सस्था का मुख्य उद्देश्य है, वह ससार की हितैषी हुई अथवा नही ? और फिर ससार के उपकार की बात कहना एक अलग बात है किन्तु उपकार कैसे हो सकता है। यह दूसरी बात है। आर्यसमाज के स्वनामधन्य सस्थापक ने तो ससार के उपकार का प्रचार अर्थात् उपकार के सूत्र भी आर्यसमाज के उपर्युक्त नियम मे ही बता दिए हैं।

प्रथम सूत्र है शारीरिक उन्नति करना। शारीरिक से अभिप्राय है स्वास्थ्य सम्बन्धी। आर्यसमाज गुरुकुल शिक्षापद्धति द्वारा बालको से ब्रह्मचर्य का पालन करा के और जीवन मे सयमपूर्वक रहने के सस्कार डालकर शारीरिक उन्नति का सूत्र लागू करना चाहता है। इस प्रकार से शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट मानवो का निर्माण होगा। स्वस्थ मानव सन्तानोत्पत्ति करने और वह भी स्वस्थ सन्तान की उत्पत्ति करने मे समर्थ होता है।

इस नियम का दूसरा सूत्र है आत्मिक उन्नति करना। गुरुकुलीय शिक्षा के द्वारा बालक-बालिकाओ मे आध्यात्मिक भूख जाग्रत की जाती है। उन्हे ईश्वर का ध्यान अर्थात् सन्ध्या करनी सिखाई जाती है और वास्तविक स्वरूप की जानकारी कराई जाती है।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम मे परमात्मा के स्वरूप की सक्षिप्त जानकारी करा दी है, वह नियम निम्न-लिखित है—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

विश्व मानवता परमात्मा के नाम पर भटक रही है। ऋषि दयानन्द ने उक्त नियम मे बताया है कि वह सत्-चित्-आनन्दस्वरूप है। सत् वह सदा रहता है और उसमें कभी कोई परिवर्तन नही होता तथा वह चित्-चेतन है, ज्ञानी है और आनन्दमय है अर्थात् वह परमपिता परमात्मा स्वयं केवल सदा रहने से ही सत् नही है, अपितु उसका स्वरूप भी सत्—सदा एक जैसा, एक रस रहने वाला है, अपरिणामी है, अपरिवर्तनशील है। वह चेतन है, उसकी चेतना सर्वज्ञानमय है अर्थात् उसमें प्रत्येक विषय का सर्वांगपूर्ण ज्ञान निहित है। उसे कभी भी, किसी भी काल मे कदापि भी और किसी भी प्रकार की आधि तथा व्याधि, दुःख तथा क्लेश नहीं प्राप्त होते। वह जिस प्रकार स्वरूप से सत् और स्वरूप से चित् है, उसी प्रकार स्वरूप से ही आनन्द है, आनन्दस्वरूप है। आनन्द का जहा तक प्रश्न है, वह देखने (दर्शन करने) की नही, अपितु समझने तथा अनुभव करने की वस्तु है अतएव उसके दर्शन का नही, उसे समझने और उसकी अनुभूति करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह अनुभूति नेत्रो की नहीं—मन का विषय है अत. आनन्दानुभूति मन मे ही होती है। नेत्र आदि इन्द्रिया इसका प्रत्यक्ष नही कर पातीं।

उक्त नियम मे दूसरी बात बताई है परमात्मा के निराकार होने की। निराकार (नि-आकार) आकार रहित अर्थात् जिसका कोई आकार, कोई डील-डौल न हो और डील-डौल न होगा तब—जब शरीर न होगा। इसका अर्थ यह है कि वह शरीरधारी नही है। जब वह शरीरधारी नही है अर्थात् उसकी कोई आकृति नही है तो उसकी कोई मूर्ति भी नही बनाई जा सकती। इससे यह सिद्ध हुआ कि उसकी मूर्ति बनाना नासमझी है अतएव मूर्तिपूजा निरर्थक है।

आगे कहा है कि वह सर्वशक्तिमान् है अर्थात् अपने कर्त्तव्य कर्मों मे उसे किसी के सहयोग और सहायता की आवश्यकता नही होती। न तो व्यक्ति के सहयोग और सहायता की आवश्यकता होती है और न किसी उपकरण की ही आवश्यकता पड़ती है। वह न्यायकारी है अर्थात् जो जैसा करता है, वैसा ही वह उसे फल देता है। न वह किसी को छूट देता है और न अकारण दुःख रूप दण्ड तथा सुखरूप पुरस्कार प्रदान करता है। वह दयालु है, उसके स्वभाव में निर्दयता नही है। वह अजन्मा है, उसका न कभी जन्म हुआ और न होगा। कुछ लोग परमात्मा को अवतार लेने वाला अर्थात् समय-समय पर जन्म धारण करने वाला कहते हैं, यह उनकी भ्रान्ति है। वे कहते हैं कि वह दुष्टों के संहार के लिए जन्म लेता है। परमपिता परमात्मा बिना जन्म लिए अशरीरी रहते हुए जब जड़-चेतनमय विश्व ब्रह्माण्ड को उत्पन्न कर इस इतनी विशाल सृष्टि की व्यवस्था बनाए रखकर उसका संचालन कर सकता है और जीवात्माओं द्वारा मानव शरीर धारण कर दिए गए समस्त अच्छे-बुरे कर्मों की व्यवस्था रखकर उनमें से प्रत्येक को स्व-स्व कर्मानुसार विविध योनियों और जन्म-जन्मान्तरों मे भेजकर यथायोग्य कर्म-फल रूपी भोग प्रदान करता है, वह अपने ही उत्पन्न किए किसी व्यक्ति को मारने के लिए जन्म ले अर्थात् बिना शरीर धारण किए उसे मार भी न सके, यह नितान्त नासमझी की बात है। वह अजन्मा है, अजन्मा ही रहेगा। न उसने कभी जन्म धारण किया है और न भविष्य मे कभी जन्म लेगा।

वह परमात्मा अनन्त है अर्थात् उसका कभी अन्त नहीं होगा। वह पहले भी था, सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी था, वर्त्तमान मे भी है और भविष्य में भी रहेगा। अनन्त का दूसरा अर्थ है जिसका कही अन्त अर्थात् सीमा न हो। नहीं वह कहीं समाप्त होने वाला नही। प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक स्थान पर वह है और सदा रहता है। बड़ी से बड़ी और लम्बी से लम्बी दूरी पर भी वह उपस्थित है एतदर्थ वह अनन्त है और क्योकि कही भी, बडी से बड़ी दूरी पर भी अन्त न होने के कारण उसकी सीमा कही नहीं है अत वह अनन्त तो है ही, असीम भी है।

परमात्मा निर्विकार है। उसमे विकार, विकृति अर्थात् बिगाड नही होता। वह सदैव एक रस बना रहता है। प्रलय काल मे जैसा था, अब भी वैसा ही है और भविष्य मे भी ऐसा ही—जैसा अब है—ज्यो का त्यो बना रहेगा। वह अनादि है। उस परमदेव का आदि अर्थात् प्रारम्भ कभी नही था, इसी कारण से उसे अनादि तत्त्व कहा जाता है। उसकी उपमा का अर्थात् उस जैसे गुण-कर्म-स्वभाव युक्त अन्य कोई तत्त्व नही है, इस कारण से वह अनुपम है।

वह सर्वाधार=सबका आधार, सबका आश्रय, सबका सहारा है और सबका धारण करने वाला है। विश्व ब्रह्माण्ड को उसी ने धारण किया हुआ है। सर्वेश्वर=सबका ईश्वर, सबका शासक तो है ही, किन्तु सबका सबसे श्रेष्ठ शासक है अर्थात् न केवल समस्त देशों की प्रजा का शासक है अपितु समस्त देशो के शासको का भी शासक है। मनुष्यों का ही शासक नहीं अपितु समस्त जड़-चेतनादिको का शासक है। सम्पूर्ण जड़-चेतन, समस्त चर-अचर जगत् पर उसी का शासन है इसीलिए वह सर्वेश्वर कहलाता है।

वह सर्वव्यापक है—सबके, न केवल प्राणिमात्र के अपितु अप्राणि अर्थात् जड़ जगत् के, जड़ पदार्थों के भीतर भी व्याप रहा है और समस्त जड़ चेतनादिकों से बाहर जो आकाश और जो अन्तरिक्ष है, उसमें भी व्याप रहा है। इसी कारण समस्त जड़-चेतनादि के भीतर की स्थिति को भी यथावत् (ज्यों की त्यों) जानता है और इस समस्त जड़-चेतन के भीतर की स्थिति को जानने के कारण वह अन्तर्यामी कहलाता है।

वह अजर है। उसे कभी जरा-वृद्धावस्था नहीं सताती। वृद्धावस्था शरीर में व्यापती है। परमात्मा क्योकि अशरीरी है इसलिए उसे वृद्धावस्था प्राप्त होने का प्रश्न ही नहीं उपस्थित होता। जरा का अर्थ जीर्णता भी है। परमात्मा के अशरीरी होने से उसमें जीर्णता को अवसर ही नहीं है। जीर्णता अर्थात् निर्बलता भी शरीर के जीर्ण होने पर ही प्रकट होती है।

वह अमर है अर्थात् मरता कभी नहीं, क्योकि शरीर नही है अतः जीर्णता नहीं आती और जब जीर्णता ही नहीं आती तो मृत्यु भी नहीं आ सकती। मृत्यु नाम ही जीव और शरीर के सम्बन्ध-विच्छेद होने का है। परमात्मा का शरीर ही नहीं तो विच्छेद किसका किससे होगा। अत. वह अमर है। वह अभय भी है। भय होता है अपने से शक्तिशाली अथवा कम से कम अपने समान से। न तो कोई परमात्मा से अधिक शक्तिशाली है और न कोई उसके समान ही है एतदर्थ उसे भय नही होता।

वह नित्य है। नित्य का अर्थ है सदा। वह सदा रहता है और सदा ही रहने वाला है। ऐसा कोई समय नहीं बीता, जब परमात्मा नही था। अब भी वह है और भविष्य मे भी वह सदा-सर्वदा रहेगा अतएव वह नित्य है। वह पवित्र है—कि कोई भी, किसी प्रकार की अपवित्रता उसे नहीं लगती। अपवित्रताएं लगती हैं शरीर मे—वह है शरीर रहित अतः उसपर अपवित्रताओ का लगाव नहीं होता, इसीलिए उसे निर्लेप कहते हैं।

वह सृष्टिकर्त्ता अर्थात् सृष्टि का उत्पन्न करने वाला है अतएव उसी की उपासना करनी योग्य है—अन्य की नही। यह जो कुछ चर-अचर, जड़-चेतन सृष्टि दिखाई दे रही है और जो इतनी सूक्ष्म है कि जिसे हम नही देख पाते, और सब उसी परमपिता सर्वशक्तिमान् परमात्मा की बनाई हुई है। यही कारण है कि उसे सृष्टि-कर्त्ता कहते हैं। इस प्रकार के गुणों से युक्त जो परम तत्त्व परमात्मा है, उसी की उपासना करनी उचित है और वही उपासना किए जाने के योग्य है, अन्य मत-मतान्तरो द्वारा कल्पित ईश्वर नही।

इस प्रकार ईश्वर के गुणों को समझ कर उपासना करने से ही आत्मिक उन्नति होती है, अन्य प्रकार से नहीं। इस प्रकार आत्मोन्नति किए हुए व्यक्तियों के द्वारा जो समाज बनेगा, वह आचार-विचार से पवित्र होगा। दूसरे इस प्रकार के शारीरिक और आत्मिक उन्नति किए हुए व्यक्ति ही समाज को उन्नति की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

आर्यसमाज का आठवां नियम है अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि

(शेष पृष्ठ ७ पर)

विजयदशमी और रावण का वध

—भोलानाथ शास्त्री

अश्विनी सुदी दशमी विजयदशमी के पर्व के रूप में मनाई जाती है। भारत के अनेक प्रान्तों महाराष्ट्र आदि में यह पर्व मिलनोत्सव के रूप में प्रचलित है। हमारे यहां कानपुर के आसपास अब भी विजयदशमी के दिन सभी ग्रामवासी राग द्वेष भुलाकर आपस में पान भेंट करते हैं, और आशीर्वाद देते हैं कि आपकी भावी जीवन यात्राएं सफल हो।

"इसके विजयदशमी नाम से ही स्पष्ट है कि—विजय के लिये दशमी अर्थात् जिस दिन विजय के लिए प्रस्थान किया जाए वह दशमी विजयादशमी। किसी संस्कृत के कवि ने इसी की पुष्टि की है

आश्विनस्य सिते पक्षे दशाम्यां तारकोदये।
स कालो विजयो नाम
सर्व कार्यार्थ साधक ॥

आश्विन् शुक्ल पक्ष दशमी तिथि मे तारामण्डल के उदय होने पर यह समय 'विजय' नाम से कहा गया है। यह कार्यों की सिद्धि करने वाला समय है, इसीलिए 'विजयदशमी, को प्राचीनकाल मे विजय मुहूर्त मानकर राजा विजय यात्रा के लिए दृढ़ संकल्प लेकर शत्रुओ पर चढाई करते थे। वैश्य लोग व्यापार के लिए प्रस्थान करते थे। यही इसका प्राचीन स्वरूप है। "परन्तु आज प्रचलित है कि—विजयदशमी के दिन राम ने रावण को मारा था परन्तु वह बात वाल्मीकि रामायण, तुलसी रामायण, अग्निवेश रामायण और पद्मपुराण आदि के अवलोकन से प्रमाणित नही होती। क्योंकि रावण वध चैत्र की अमावस्या को हुआ था। वाल्मीकि रामायण मे विवरण है कि वर्षाकाल मे रामचन्द्र जी किष्किन्धा पर्वत पर सुग्रीव के यहा थे।

पूर्वोध्य वार्षिको मास श्रावण सिलागम।
प्रवृता: सौम्य चत्वारो मास वार्षिक संजिता।
वा रा २६।१४

हे सुग्रीव, वर्षा के चार मास आ गए हैं। उसका पहला महीना यह श्रावण मास है। अब उद्योग करने का समय नहीं है, तुम अपनी नगरी मे प्रवेश करो। मैं इस पर्वत में लक्ष्मण के साथ रहूगा। जब वर्षा के चार मास व्यतीत हो गये तब श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि—

वर्षा समय काल तु प्रतिज्ञाप हरीश्वर:।
व्यतीतांस्त्चतुरो मासान्विहरन नावबुध्यते॥
वा. रा. ४।३०।२६

"हे भाई लक्ष्मण, सुग्रीव ने वर्षा बीतते ही सीता को खोजने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु वर्षा के चार मास बीत गए, और विहार में मस्त सुग्रीव जान नहीं पाया। इसी बात की पुष्टि सन्त तुलसीदास ने की है।

वर्षा विगत सरद ऋतु आई।
लक्ष्मण देखहु परम सुहाई।
वर्षागत निर्मल ऋतु आई।
सुधि न तात सीता कै पाई॥

चार मास वर्षा के बीत गए परन्तु हे भाई लक्ष्मण! सीता जी की खोज भी अभी नहीं हो पाई।

श्रीराम ने सुग्रीव के पास लक्ष्मण को भेजा कि—सीता की खोज कराओ अन्यथा उसी बाण से आप भी मारे जाओगे ऐसे वचन सुनते ही सुग्रीव ने तुरन्त अपनी सेना को बुलाया और श्रीराम की आज्ञा से चारो दिशाओ में अपनी वानर सेना भेज दी, और एक मास मे वापस आने का आदेश था। परन्तु मास के अन्दर सीता की खोज नही हो पाई क्योकि तुलसी रा० किष्किन्धा काण्ड मे लिखा है कि—

जनक सुता कहु खोजहु जाई,
मास दिवस मा आएहु भाई,

परन्तु सीता की खोज न मिलने पर—

इहा विचारहिं कपि मन माहि।
बीती अवधि काज कछु नाही।
इहा न सुधि सीता के पाई।
इहा गये मारिहिं कपिराई॥

इस प्रकार सीता की खोज की खोज करते-करते वानर सम्पाति के पास पहुचे जो कि—गृद्धराज जटायु का भाई था और सन्यास आश्रम मे रहता था। उसने सीता की जानकारी वानरो को दी कि—सीता रावण की वाटिका मे अशोक वृक्ष के नीचे रहती हैं। वा० रा० ५।२२।८

'तब हनुमान जी लका गए। वहा अशोक वाटिका मे पहुचे और सीता माता को देखा उसी समय रावण ने आकर सीता को कहा कि—

द्वौ मासौ रक्षित व्योमे
योऽवधिस्ते महाकृत।
तत शयन मारोह ममत्वबर वर्णिनि॥

हे! सुन्दरी सीता मैंने जो तुमको एक वर्ष की अवधि दी थी उसके अनुसार मुझे अब दो महीने प्रतीक्षा करनी है। इसके पश्चात् रावण के जाने पर हनुमान से सीता जी बोलीं।

वर्त्तते दशमो मासो द्वो तु शेषोप्लवङ्गम्।
रावणेन नृशसेन समलो य कृतो मम॥
५।३७।८

हे हनुमान निर्दयी रावण ने मेरे जीवन की अवधि निश्चित कर दी है। उसका दशवां महीना बीत रहा है। अब दो महीने शेष हैं। सीताहरण चैत्र मे हुआ, एक वर्ष की अवधि थी इसलिए चैत्र से दश महीने गिने जाए तो भी महामास मे सीता जी की हनुमान जी से भेंट हुई और चूडामणि लेकर हनुमान राम के पास गए, और फिर राम के कहने पर समुद्र मे पुल बना तब लंका में आए, और राम के सुमेरु पर्वत में अपने शिविर मे राम कहते हैं कि—

ततोऽस्तंमगत सूर्य सन्ध्या प्रतिरञ्जित।
पूर्ण चन्द्र प्रदीप्ताच क्षपया समति वर्तते॥

सन्ध्या की लाली में रंगा हुआ सूर्य अस्त हो गया और पूर्णचन्द से प्रकाशित रात्रि छा गई।

इस तरह माघ शुक्ल पक्ष मे सीता ने हनुमान से कहा था कि—

मास दिवस महु नाथु न आवा।
तौ पुनि मोहि जिवत नहिं पावा।

एक मास के अन्दर ही राम आए। माघ पूर्णिमा तक हनुमान ने किष्किन्धा जाकर राम को सीता का सन्देश दिया था मास भर बाद फाल्गुन पूर्णिमा को राम ने लका को घेरा था। क्योंकि चैत्र शुक्ल पक्ष मे पुष्य नक्षत्र मे राम को अयोध्या पहुचना था। क्योकि—भरत ने कहा था कि चौदह वर्ष पूरे होने पर यदि आपका दर्शन मुझे न मिला तो मैं अग्नि मे प्रवेश करूगा।

इस प्रकार यो राम के पास चैत्र कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिन और शुक्ल पक्ष के कुछ दिन शेष हैं।

जब रावण ने लक्ष्मण के हाथो मेघनाथ का वध होने का समाचार सुना तब क्रोध के वशीभूत होकर लडने के लिए चल पडा। तब रावण के मन्त्री अमात्य सुपश्वि ने रोका था और कहा कि—

अभ्युत्थान त्वमद्यैव कृष्ण पक्ष चतुर्दशी।
कृत्वा निर्याह्यमा वास्या विजयाय बलै व्रत
॥६।९२।६६

आज कृष्णपक्ष की चतुर्दशी है। आज तैयारी करके (कल अमावस्या को) आप सेना सहित प्रतीक्षा करके विजय के लिये प्रस्थान कीजिए। रावण ने मन्त्री की सलाह मान ली। इस प्रकार चैत्र पक्ष चतुर्दशी को मेघनाथ वध हुआ, अगले दिन अमावस्या को राम-रावण युद्ध हुआ उसमे रावण ने लक्ष्मण को मूर्च्छित कर दिया, उधर रावण भी राम के बाणो से घायल हो गया और मूर्च्छित हो गया था तब उसका सारथी रावण को युद्ध स्थल से हटा ले गया। जब रावण को होश आया, तब सारथी को डाटा कि—मुझे यहा क्यो लाया उधर लक्ष्मण भी सचेत हो गये और राम-रावण युद्ध फिर से प्रारम्भ हुआ। इसके फलस्वरूप रावण मारा गया अमावस्या को, अर्थात् रावण का वध चैत्र की अमावस्या को हुआ था। इसके बाद श्री रामचन्द्र जी को चिन्ता है कि—सीता को मुक्त कराके पुष्य नक्षत्र नवमी तिथि तक अयोध्या पहुचकर भरत को अग्निप्रवेश से रोकने की। इसके बाद विभीषण का राज्याभिषेक करवाकर अयोध्या की ओर चल पड़े। और चैत्र शुक्ल पञ्चमी को भरद्वाज ऋषि के आश्रम मे पहुच गए थे। अत्र प्रमाणानि—

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पचम्या लक्ष्मणाग्रज।
भरद्वाजाश्रम प्राप्य ववन्दे नियाता मुनिम्।
६।१२४।१

चौदह वर्ष पूरे होने पर पञ्चमी तिथि को राम ने भरद्वाजाश्रम मे पहुचकर मुनि को प्रणाम किया, राम तो भरद्वाज ऋषि के यहा ठहरे। परन्तु हनुमान को उसी समय अयोध्या भेज दिया था। हनुमान ने भरत के पास पहुंचकर कहा कि—

ता गंगा पुनरासाद्य वसन्तं मुनि सन्निधौ।
अविदन पुष्य योगेन श्व राम द्रष्टुमर्हसि॥
६।१२६।१

गगा तक आकर भरद्वाज मुनि के पास ठहरे। राम के दर्शन आप कल पुष्य योग में करेंगे क्योकि—चैत्र मास पुष्य नक्षत्र में भरत का जन्म दिन था और राम का वन गमन दिवस था।

अब आप कह सकते हैं कि—श्लोको मे चैत्र मास नही लिखा तो फिर चैत्र मास कहा से आया, इसका समाधान इस प्रकार है कि—राम का राज्याभिषेक भी चैत्र मास मे ही होना था, किन्तु राज्याभिषेक न हो करके बनवास हुआ था अत्र प्रमाणानि—

चैत्र श्री मानय मास. पुष्य पुष्पित कानन
यौवराज्याय रामस्य सर्व मेवोप कल्पयताम
२।३।५

यह चैत्र का पुण्य मास है, जिससे वन फूलो से पूर्ण है। श्री रामचन्द्रजी के यौवराज्य अभिषेक की सब सामग्रिया आप लोग एकत्र कीजिये फिर उन्होंने रामचन्द्र को बुलाकर कहा—

अद्यचन्द्रोभ्युपगमत पुष्यात् पुनर्वसुम्।
श्व पुष्य योग नियत वक्ष्यन्ते दैवचिन्तका
वा० रा० २।४।२

आज चन्द्रमा पुष्य से पहले पुनर्वसु मे आ गया है। कल पुष्य योग निश्चित है। ऐसा ज्योतिषीगण कहते हैं। इस पुष्य नक्षत्र मे अपना अभिषेक कराओ, ऐसा मेरा मन प्रेरणा दे रहा है। हे राम, कल मैं तुम्हारा अभिषेक करूगा।

क्योकि चैत्र शुक्ला नवमी को पुनर्वसु नक्षत्र मे राम का जन्म हुआ था, और चैत्र शुक्ला दशमी पुष्य नक्षत्र मे भरत का जन्म हुआ था। पुष्य नक्षत्र कभी चैत्र शुक्ला नवमी को और कभी दशमी को आता है। जिस वर्ष राम का जन्म हुआ था, उस वर्ष पुष्य नक्षत्र चैत्र शुक्ला दशमी को आया था, परन्तु राज्याभिषेक के समय पुष्य नक्षत्र नवमी तिथि मे था, परन्तु राज्याभिषेक न होकर वन को प्रस्थान किया था, इस प्रकार चैत्र मास मे ही राम के चौदह वर्ष पूरे होगे। न आगे न पीछे। ठीक चैत्रमास नवमी तिथि को श्रीराम अयोध्या आए थे।

इस तरह चैत्र अमावस्या को हुआ रावण वध आश्विन मास मे जा पहुचा। तदनन्तर दीपावली को राम का राज्याभिषेक हुआ ये दोनो ही भ्रान्तिपूर्ण और निर्मूल धारणायें हैं।

"परन्तु यह तब हुआ जब वाल्मीकि रामायण का पठन पाठन समाप्त हो गया। राम को महापुरुष न मानकर भगवान आराध्यदेव मान लिया गया, परन्तु वास्तविकता तो यह है कि—राम स्वकुलदीपक

(शेष पृष्ट ८ पर)

फीजी में हिन्दी की रक्षा स्वामी दयानन्द ने की

भू० पू० मन्त्री एवं सनातन धर्म के प्रधान श्री शर्मा की स्वीकारोक्ति

सूबा (फीजी) "स्वामी दयानन्द ने वही काम किया जो कभी भगवान् श्री कृष्ण ने किया था। यदि फीजी और अन्य मुल्को मे हिन्दी और हिन्दू संस्कृति विद्यमान है तो यह महर्षि दयानन्द की सर्वोच्च देन है। कलियुग मे स्वामी दयानन्द ने शखनाद किया और हिन्दी की रक्षा की।"

ये शब्द फीजी के सनातन धर्म सभा के प्रधान और भू० पू० मन्त्री माननीय विवेकानन्द शर्मा ने सूबा मे एक समारोह में कहे हैं। हाल मे उनका इस आशय का एक पत्र २७।८।८३ का फीरोजाबाद में श्रद्धेय प० बनारसीदास चतुर्वेदी के पास आया है।

आर्य जगत् क संक्षिप्त समाचार

—१६ अक्तूबर के दिन आर्यनेता एव जगदेवसिंह सिद्रान्ती का ८३ वा जन्म दिन सिद्रान्ती भवन रोहतक मे मनाया जा रहा है।

—आर्ययुवक परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित लेख-प्रतियोगिता मे ५०० रु० का पहला पुरस्कार श्री यशपाल आर्यबन्धु, मुरादाबाद को, ३०० रु० का दूसरा पुरस्कार पाणिनि महाविद्यालय, सोनीपत के श्री कृष्णदेव शास्त्री को और तीसरा २०० रु० का पुरस्कार सार्वदेशिक सभा के श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक को दिया गया है।

—२२ सितम्बर, १६८३ के दिन स्वामी प्रेमानन्द जी के नेतृत्व में २२ सन्यासियो, वानप्रस्थियो और ब्रह्मचारियो का यात्रीदल गाजियाबाद से अजमेर के लिए चल पडा है।

—मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी मे काशी के नागरिको और विद्वन्मण्डली ने महाराष्ट्र सरकार द्वारा विद्यालयो के पाठ्यक्रम से सस्कृत को अनिवार्य विषय से हटाने की निश्चय की निन्दा की गई और उस पर पुनर्विचार कर संस्कृत को पाठ्यक्रम मे पुन सम्मिलित करने माग की गई।

—पूर्व निमाड जिला आर्यसमाज खण्डवा द्वारा सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डा० लक्ष्मीनारायण दुबे की हिन्दी-सेवाओ के निमित्त उनका सार्वजनिक सम्मान किया गया।

आर्यसमाज हरदोई का ६६ वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हरदोई का ६६ वां वार्षिकोत्सव १४-१५-१६ अक्तूबर को आर्यकन्या पाठशाला भवन मे मनाया जा रहा है। इस अवसर पर नजीबाबाद के स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, आर्यवीर नेता श्री उत्तमचन्द शरर, ज्वालापुर के डा० सत्यव्रत राजेश, हिसार के श्री जयप्रकाश आर्य, भारत सरकार के राज्यमन्त्री श्री धर्मवीर, सार्वदेशिक सभा के सयुक्त मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, उत्तर प्रदेश के महोपदेशक प० शिवकुमार शास्त्री, बरसाना मथुरा के कुंअर जोरावर सिंह और श्रीमती प्रभावती देवी, उ० प्र० सभा के भजनोपदेशक श्री ब्रह्मानन्द, प० हरिकृष्ण अवस्थी आदि आर्य नेता पधार रहे हैं।

आर्यसमाज नारायणविहार में वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज जी० ब्लाक नारायण विहार नई दिल्ली मे वेदप्रचार सप्ताह २६ सितम्बर ८३ से २ अक्तूबर तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया प्रतिदिन प्रातः। काल यज्ञ चलता रहा और रात्रि को पूज्य स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की वेद-कथा बड़ी सरल रीति चलती रही, जिसको श्रोतागण ने बहुत पसन्द किया और उपस्थिति भी बहुत सन्तोषजनक रही। इसके साथ ही कथा से पूर्व सभा के भजनोपदेशक श्री सत्यदेव जी स्नातक एव ज्योतिप्रसाद जी ढोलक वादक की भजनमण्डली द्वारा बड़े मोहक भजन गाए गए। जिसका उपस्थित आर्यजनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। यह सारा आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

माता रामकली देवी की श्रद्धांजलि सभा

मौजपुर मूरा घोण्डा शाहदरा क्षेत्र के डा० कृष्ण अवतार, श्री राजेशकुमार एव सजयकुमार की धर्मनिष्ठा माता श्रीमती रामकली जी की स्मृति मे बृहस्पतिवार ६ अक्तूबर को आरिष्ठी एवं शोक श्रद्धांजलि सभा हुई। उसमें दिवंगत आत्मा धर्मनिष्ठा एव सात्विक जीवन का अनुसरण करते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति और शोक सन्तप्त परिजनो की सान्त्वना निमित्त प्रार्थना की गई।

वैदिक और लौकिक संस्कृत में स्वर सिद्धान्त

लेखक—आचार्य सोमदेव शास्त्री, प्रकाशक आर्यसमाज सान्ताक्रूज, बम्बई—५४, पृष्ठ संख्या ११४, मूल्य (सजिल्द) २४)

वैदिक वाङ्मय मे मन्त्रो को समझने के लिए स्वरों की विशेष महत्ता है। वैदिक भाष्यकार पदार्थ और वाक्यार्थ के साथ स्वरो का विशेष सम्बन्ध स्वीकार करते हैं। वेदार्थ को समझने में स्वरो का बोध आवश्यक है। प्रसन्नता का विषय है कि प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन से इस दिशा मे एक मौलिक कार्य किया गया है। पूर्वकाल मे वैदिक और लौकिक शब्द समान थे, कालान्तर से शब्दभेद और स्वर भेद उत्पन्न हुआ। इस ग्रथ मे स्वरो के स्वरूप, उनके भेदो, स्वर सहित वाङ्मय, स्वरो के नियमो, वाक्य स्वर के स्वर भेद का उल्लेख किया गया है। स्वर विषय बहुत गम्भीर है, लेखक के इस वर्णन से वेद के अनुरागी, स्वाध्यायशील पाठक वेदो मे प्रयुक्त उदात्त आदि स्वरो का भेद समझकर प्रयुक्त कर सकें तो वेदमन्त्रो और उनके वास्तविक अर्थ को समझने मे मदद मिल सकेगी। इस मौलिक ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए लेखक और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं। प्रत्येक स्वाध्यायशील वेद के अनुरागी को ग्रन्थ का अध्ययन-मनन करना चाहिए।

कामनापूर्ती

मूललेखक अशोक वे किशोराणी आर्य सिन्धु, अनुवादक—प्रकाशचन्द अशोक किशोराणी वेदालकार, प्रकाशक —ससार साहित्य मण्डल, १४१ मुलुन्द कालोनी, बम्बई-४०००८२, पृष्ठ सख्या १२४, मूल्य सजिल्द—२५)।

सामान्य व्यक्ति को अपने व्यापार काम धन्धे आदि के विविध कामो को निपटाने मे कठिनाई होती है, अधिकाश व्यक्ति दिमागी, शारीरिक निर्बलता के शिकार हो जाते हैं, आपका जीवन लक्ष्य छोटा-बड़ा कोई भी क्यों न हो—परन्तु उन्हे प्रारम्भ करने मे आप में आत्मविश्वास और उत्साह नहीं है, ऐसे सभी हालात में जीवन में नया आत्मविश्वास और उत्साह पैदा कर एक नई दक्षता पैदा करने मे प्रस्तुत पुस्तक कामना पैथी बड़ी मदद दे सकती है। सफलता का वास्तविक रहस्य क्या है, धन, यश, सम्मान कैसे पाया जा सकता है, सफलता और शक्ति का स्रोत क्या है, अपनी शक्तिया कैसे व्यवस्थित एवं विकसित की जा सकती हैं—इन सबके लिए लेखक ने ढाई लाख रुपयों के शुल्क का एक ही नुस्खा प्रस्तुत किया है—हम अपनी आन्तरिक शक्ति पहचानें अपने गुण पहचानें—अपना छोटा-बड़ा लक्ष्य निर्धारित कर उसकी पूर्ति मे लग जाए—पूर्ण आत्मविश्वास एव उत्साह से कार्य मे लग जाएंगे तो सफलता निश्चित है। अंग्रेजी में आत्मविश्वास पैदा करने वाली अनेक पुस्तकें हैं, हिन्दी मे इस प्रकार का साहित्य न्यून है। आशा है, पाठक ग्रन्थ का स्वाध्याय कर इन गुणो का अपने जीवन मे समावेश करेंगे।

मासिक महर्षि सन्देश

आर्यसमाज, भारतनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०) को इस बात का श्रेय है कि वह सीमित साधनो एव शक्ति के बावजूद हिन्दी मासिक 'महर्षि सन्देश' का प्रकाशन कर रहा है। इसके अंको में सुन्दर कविताएं, उद्बोधक लेख, प्रेरणाप्रद जीवनियां, एव आकर्षक सत् आर्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है। आशा है कि अपने सुयोग्य सम्पादक श्री वेदभानु आर्य और अनुभवी विद्वान् व्यवस्थापक प० विश्वनाथ वेदालकार के पथ प्रदर्शन मे 'महर्षि सन्देश' निरन्तर उन्नति पथ पर अग्रसर रहेगा। पत्र का वार्षिक मूल्य ११) है, प्रकाशक हैं आर्यसमाज भारत नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)।

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी पर १ लाख सचित्र ट्रैक्ट प्रकाशित

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने अजमेर में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह के संदर्भ में १ लाख ट्रैक्ट प्रकाशित कराए हैं। परिषद् संरक्षक श्री श्यामसुन्दर आर्य द्वारा प्रकाशित २० पृष्ठीय महर्षि दयानन्द की जीवन झांकियों पर आधारित उक्त ट्रैक्ट आर्य जनता को १५ रु० सैकड़ा तथा १५० रु० हजार अल्प मूल्य पर उपलब्ध कराया जा रहा है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, कबीर मार्ग, दिल्ली-६

पितृ-शोक

—वैदिक प्रचारक पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा पराशर का स्वर्गवास

कुरान, बाइबिल, अरबी-फारसी एवम् वैदिक सिद्धान्त के प्रकाण्ड पण्डित, आचार्य दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री व प० महेशचंद्र पराशर के पिता आर्य वैदिक प्रचारक पं० श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा पराशर वैद्य जी का २ अक्तूबर १६८३ के दिन रविवार रात्रि १०.३० बजे स्व गृह पर जयप्रकाश नगर शाहदरा में ८१ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह नियम संयम सदाचार के उत्तम पथगामी थे तथा महर्षि दयानन्द जी महाराज के महान भक्त थे व महान् विचारक थे।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में दंगल

रविवार २३ अक्तूबर १६८३, को दोपहर १ बजे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में अ० भा० दंगल होगा। इस अवसर पर हरियाणा के शिक्षा मन्त्री श्री जगदीश नेहरा और राज्य केन्द्रीय मन्त्री चौ० दलबीर सिंह पधार रहे हैं।

रविवार, १६ अक्तूबर १९८३

अन्धामुगल-प्रतापनगर-स्वामी शिवानन्द सरस्वती, आर्यपुरा सब्जीमडी-आचार्य रामचन्द्र शर्मा, आर० के० पुरम सेक्टर ६- प० रामरूप शर्मा, आर० के० पुरम सेक्टर ९-श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, इन्द्रपुरी-प० खुशीराम शर्मा, किंग्ज्वे-कैम्प-प० विश्वप्रकाश शास्त्री, कालका प० ओमप्रकाश वेदालकार; कालका डी० डी० ए- फ्लैट-प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; कृष्णनगर-प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, गाधी-नगर-पं० शीशराम भजनीक; गीता कालोनी-जयभगवान; जगपुरा विस्तार-प० ज्ञान-चन्द्र जी; ग्रेटर कैलाश न १-प्रकाशचन्द शास्त्री, गुडमडी प्रज्ञानद सरस्वती, गोविन्द-पुरी-श्रीमती गीता शास्त्री; गोविन्द भवन-प० प्रकाशचन्द वेदालकार; चूनामडी-डा० लक्ष्मीनारायण दुबे, जनकपुरी बी०२-प० हरिश्चन्द आर्य, टैगोरगार्डन-रणजीत सिंह राणा, तिलकनगर-पं० रामदेव शास्त्री, तिमारपुर-प० तुलसीराम आर्य, दरियागज-पं० मुनिदेव आर्य, देवनगर- प० कामेश्वर शास्त्री, नारायणविहार-प० महेशचन्द्र पाराशर-पजाबी बाग एक्टेंशन-प रामनिवास शास्त्री; प्रीतमपुरा-आचार्य नरेन्द्र, बिरलालाइन्स-आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार; विक्रमनगर ओमप्रकाश गायक, भोगल-डा० रघुनन्दन सिह, मॉडलबस्ती प० बलवीरसिह शास्त्री; महरौली-प० अमीचन्द मतवाला; मॉडलटाउन-प० सुमेरचन्द्र विद्यार्थी; राजौरीगार्डन-प० दिनेश-चन्द पाराशर, रोहतासनगर-डा० द्विवेदी, रमेशनगर-प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य, लड्डू-घाटी-पहाडगज-प० सोमदेव शास्त्री, लक्ष्मीबाई नगर-प० सत्यभूषण वेदालकार; लारेन्सरोड-प० देवीचरण देवेश-सराय रोहेला-प० हरिश्चन्द शास्त्री, श्री निवासपुरी-प० देवशर्मा शास्त्री, सोहनगज-प० देवराज श्री वैदिक मिश्नरी, शादीपुर-प० मनोहर ऋषि, हौजखास-प० चन्दभानुजी; त्रिनगर-श्री मोहनलाल गाधी प० रामकिशोर वैद्य-आनन्द निकेतन-प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार साथ मे प० ज्योतिप्रसाद ढोलक कलाकार, रामायण की कथा; आनन्द निकेतन (मोतीबाग)-प० सत्यपाल मधुर, आर्यसमाज इस्माइलपुर-प० वेदव्यास सगीतज्ञ, आर्य समाज अमर कालौनी-प० चुन्नीलाल आर्य, कोसीकला (मथुरा) आचार्य हरिदेव-अमर कालोनी प० तुलसीदेव सगीताचार्य।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग, (दिल्ली)

आर्य स्त्री समाज महाबीर गंज के चूना मण्डी के अधिकारी

संरक्षिका—श्रीमती शकुन्तला पहूजा, प्रधाना—श्रीमती पुष्पारानी पहूज, मन्त्रिणी—श्रीमती कृष्णा रसवन्त, कोषाध्यक्षा—श्री हरबंस राजपाल, पुस्तकाध्यक्षा—शान्ता जी वर्मा।

हमें दुश्चरित से हटाकर सुचरित में प्रेरित करें!

वैदिक ऋषियो ने सूर्य को जगत् की आत्मा कहा है।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च

सूर्य हमारे लिए ऊर्जा का अथाह भण्डार है। आज विश्व के सामने ऊर्जा का गम्भीर सकट विद्यमान है। समय रहते यदि समस्या का समाधान नही किया गया तो हमारे विश्व की वही स्थिति और गति हो सकती है जो आत्मारहित शरीर की होती है। पिछले दिनो भारत की राजधानी दिल्ली मे अस्सी से अधिक देशो के चार हजार वैज्ञानिकों के विश्व ऊर्जा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत की प्रधानमन्त्री ने अपने सारगर्भित भाषण का प्रारम्भ ऋग्वेद के अग्नि सूक्त के इस मन्त्र से किया था।

स्वमग्ने द्युभिष्त्वमाशु शुक्षस्त्वि मद्भ्यस्त्वमश्मन स्परि

त्व वनभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्व नृणा-नृपते जायसे शुचि

'हे ज्योति स्वरूप अग्ने, तुम दीप्तमान होकर जलो से, पत्थरो से, वनो से तथा ओषधियों से उत्पन्न होते हों।' प्रार्थना मन्त्र मे कहा गया है

विश्वानिदेव सवित दुरितनि परा सुव

यद् भद्र तन्न आ सुव।

हे विश्वदेव सविता, आप हमे सभी पापाचारो से दूर कीजिए और हम मे सद्गुण उत्पन्न करें। इस प्रार्थना मन्त्र मे जो प्रार्थना सविता सूर्यदेव से की गई है, वही प्रार्थना यजुर्वेद में अग्नि से भी की गई है।

परिमाग्ने दुश्चरितोद् बाधस्वा मा सुचरिते भज।

हे अग्नि देव भगवन्, मुझे दुश्चरित से बचाइए और सुचरित मे प्रेरित करें।

आर्यसमाज सभी का हितैषी है। (पृष्ठ चार का शेष)

करनी चाहिए।' अविद्या का नाश होगा ही विद्या की वृद्धि से। विद्या की वृद्धि के ये प्रकार हैं—विद्यालय, पुस्तकालय, उपदेश आदि।

आर्यसमाज अपनी स्थापना के समय से ही प्रत्येक प्रकार से विद्या की वृद्धि में लगा है। उसने भारत और भारत से बाहर विदेशो में भी सहस्रो की संख्या मे प्राथमिक विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयो तक खोले हुए हैं। लडको और लडकियो दोनो के लिए पृथक् पृथक् लगभग १०० गुरुकुल खोले हुए हैं। सहस्रों पुस्तकालय और वाचनालय आर्यसमाज मन्दिरों मे स्थापित किए हुए हैं। दर्जनो पत्र-पत्रिकाए आर्य-समाज की शिरोमणि सभाओं द्वारा तथा कई अन्य आर्यसमाजी विचार की सस्थाओ द्वारा प्रकाशित हो रही हैं।

जहा-जहा आर्यसमाजें हैं, वहा-वहा वर्ष मे एक बार अथवा एक से अधिक बार सत्सगो का आयोजन का और विद्वानो को उन आयोजनो मे आमन्त्रित कर प्रवचनो द्वारा सर्वसाधारण को विद्या (ज्ञान) दान किया जाता है। ये सभी आर्यसमाज के सर्वहितैषी होने के प्रमाण हैं।

आर्यसमाज के नौवें नियम मे महर्षि ने यह विधान कर कि "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रवना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए, आर्यसमाज के सर्व हितैषी स्वरूप को नितान्त उज्ज्वल कर दिया है। आर्य-समाज के दसवें नियम मे प्रत्येक हितकारी नियम मे सबकी स्वतन्त्रता की चर्चा करके भी सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहने का विधान किया है।

पाठकगण! उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि आर्य-समाज सर्व हितैषी सस्था है, वह कोई सम्प्रदाय, मत अथवा पन्थी नही है।

आर्यसमाज—आर्यसमाज ही है—

प्रिय पाठकगण! इससे पहले दो स्तम्भो मे हम यह चर्चा कर चुके हैं कि आर्यसमाज न तो क्लब है और न सम्प्रदाय है। उसके पश्चात् आर्यसमाज के सर्वहितैषी स्वरूप का भी सक्षिप्त वर्णन कर दिया है। इस स्तम्भ मे हम यह चर्चा करना चाहते हैं कि आर्यसमाज—आर्यसमाज ही है। इससे पहले स्तम्भ मे आपने आर्यसमाज के सर्व-हितैषी स्वरूप की थोडी चर्चा पढ़ी है। सबका हित-चिन्तन और सर्व-हितकारक कार्यों को वे ही लोग करते हैं, जो आर्य होते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि आर्यत्व परहित-चिन्तन और परहित-साधन मे ही निहित है। स्वहित तो पशु-पक्षी तथा अनार्य लोग भी करते हैं। आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। जो परहित-चिन्तन तथा परहित-साधन न करे, वह आर्य कहलाने का अधिकारी नही हो सकता।

परहित-चिन्तको और परहित-साधको से मिलकर बना हुआ समाज—आर्यसमाज कहलाता है। आर्यसमाज का छठा नियम इसकी स्पष्ट घोषणा कर रहा है कि "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, न केवल उद्देश्य अपितु मुख्य उद्देश्य है। इसका अर्थ यह है कि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ससार के उपकार के लिए ही की है।

आर्य शब्द 'ऋ' गतौ धातु से बना है। जिसमे गति हो, जो आगे बढने के लिए उत्तरोत्तर प्रयत्नशील हो, वह आर्य है अर्थात् आर्य का अर्थ है प्रगतिशील। इस प्रकार आर्यसमाज का अर्थ हुआ प्रगति-शील, उन्नतिशील लोगो का समाज। उन्नति दो प्रकार की होती है। एक भौतिक और दूसरी आध्यात्मिक। इस सबको दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का अर्थ हुआ उत्तरोत्तर आध्यात्मिक और भौतिक दोनो प्रकार की उन्नति चाहने और करने वाले व्यक्तियो का समाज। इसी प्रकार का समाज श्रेष्ठ व्यक्तियो का समाज कहलाता है।

आर्यसमाज के ९वें नियम मे यह कह कर कि "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए, परहित-साधन तथा परोपकार को प्राथमिकता तथा स्व-हित पर परहित को वरीयता प्रदान कर दी है। इस प्रकार आर्यसमाज ऐसे लोगो का समाज है कि जो स्वय तो आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति करे ही—इस लोक और परलोक स धन मे, इस लोक के साथ-साथ परलोक साधन मे भी परम पुरुषार्थ करे ही किन्तु अन्यो के हित के लिए भी पूर्ण सामर्थ्य के साथ जुटे रहे।

फिर ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के तीसरे नियम मे "वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनना सब आर्यों का परम धर्म" बताया है क्योकि वह वेद को सब सत्य विद्याओ का पुस्तक मानते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि ऋषिवर मानव-मात्र की उन्नति का साधन वेद को मानते हैं। ऐसी स्थिति मे समस्त आर्यजनो और सामूहिक रूप से आर्यसमाजो का परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वे यथासम्भव स्व-शक्ति के अनुसार वेद के अध्ययन और उसके प्रचार-प्रसार मे जुट जाए। यही आर्यसमाज का वास्तविक कार्य है, इसी से विश्व मानवता का भला होगा।

आर्यसमाज के द्वारा किए जाने वाले अन्य समस्त सेवा कार्य तो सम-सामयिक, अल्पकालिक और वेद को जनमानस तक पहुचाने के लिए साधन तथा जन-सम्पर्क के सेतु मात्र हैं। यही आर्यसमाज है और यही आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप है। इसी कारण हम कहते हैं कि आर्यसमाज—आर्यसमाज ही है, न क्लब है और न सम्प्रदाय-मत-पन्थ आदि है।

डा० सूर्यदेव शर्मा का देहावसान

आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान्, प्रसिद्ध वक्ता लेखक, शिक्षाशास्त्री, आर्यसमाज अजमेर के उपप्रधान भूतपूर्व प्रधानाध्यापक डा० सूर्यदेव का ८४ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उन्होने अनेक सस्थाओ को ७५ हजार रुपयों का सात्विक दान किया था। परमात्मा उनको आत्मा को सद्‌गति करेंगे।

सच्ची जनसेवा

भारतभूमि मे एक शासक थे राजा रन्तिदेव। उन्होंने जन-कल्याण एवं आत्म-शुद्धि के लिए ४८ दिन का व्रत किया। वह इस लम्बे व्रत को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद व्रत की समाप्ति के निमित्त अन्न पूर्ति या पारण करना चाहते थे कि एक भिक्षुक आ पहुचा। 'मैं भूखा हूं' यह आवाज कानो मे पडते ही रन्तिदेव ने वह भोज्य पदार्थ उस भिखारी को देदिया। उसे देने के बाद भी पात्र मे कुछ [illegible] जब वह अपना व्रत पूर्ण करने के लिए तैयार हुए तब चार कुत्ते लेकर एक चाण्डाल आ गया। उसने पुकार की—'मुझे और मेरे कुत्तो के लिए कुछ खाने के लिए है।' उन्होने वह शेष अन्न भी उसे दे डाला। इस पर वह चाण्डाल अपने असली दिव्य वेश मे प्रकट हुआ। उसने कहा—"महाराज' आपका दान अपूर्व है, आपका त्याग अनुपम है, भगवान् आपको मोक्ष और सब सिद्धिया प्रदान करें।"

रन्तिदेव ने हाथ जोडकर कहा—

'न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दु खतप्ताना, प्राणिनामर्त्ति नाशनम्॥

"भगवन्, मैं न तो यह राज्य चाहता हूं, न मुझे कोई स्वर्ग चाहिए, न मुझे मुक्ति लोक में निवास करना है, मेरी तो एकमात्र इच्छा यही है कि मैं दु खो-कष्टों से दु खी आर्त्त मानवता के उद्धार के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहूं। समस्त प्राणि[illegible] दु ख के निवारण के लिए मैं सदा यत्नवान् रहूं।

विजय-लक्ष्मी और रावण का वध (पृष्ठ ५ का शेष)

मातृ मोद वर्धक, पितृनिदेश पालक थे। एक पत्नीव्रत निरत सुहृदय दुख विमोचन, मित्र प्रजापालक नरेश, मर्यादा व्यवस्थापक, आर्य संस्कृति के पालक वेद एवं यज्ञ के रक्षक सत्य के पुजारी और अन्याय के विरोधी तो थे।

परन्तु राम के गुणों को जीवन में न उतारना बल्कि राम-राम रटना या रामलीला कर लेने से हमे कुछ लाभ नहीं मिल सकता है। क्योंकि सबको मालूम है कि—रावण इसलिये मारा गया कि—उसने पराई स्त्री का अपहरण किया साधु, महात्माओ को सताया, परन्तु आज रामलीला देखकर कोई रावण के गुण तो अपनाते नही, हा रावण के गुण को बहुत अपना लेते हैं। [illegible] नहीं कितने राक्षस मारे गए, परन्तु आज प्रतिदिन खुलेआम सड़को मे अनेक रावण कितनी ही सीताओ की इज्जत लूटते हैं, और अपहरण करते हैं। शायद ऐसे अत्याचारो को तो रावण भी सहन न करता। फिर भी ऐसे रावणो को कोई भी सजा नहीं मिलती, और कोई भी राम दिखाई नहीं देता। मैंने अपनी आंखों से राम लक्ष्मण तथा सीता बने कलाकारों को बीड़ी और सिगरेट पीते देखा है। इस प्रकार पूर्वजों का भद्दा मजाक उड़ाया जाता है। यही नहीं, अश्लील फिल्मी गाने तथा स्वाग टाइप नाच होते हैं। बिजली चले जाने पर सीटिया बजती हैं। गन्दे व्यग्य किए जाते हैं। चोर लुटेरे धन और इज्जत दोनों लूटते हैं।

हे राम के मानने वालो, जरा अपने अन्दर झांककर देखो कि रावण मेघनाथ कुम्भकर्ण तुम्हारे व हमारे अन्दर तो नहीं बैठे, क्योकि जिसके अन्दर काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, छल, कपट, चोरी, झूठ आदि हैं, वही रावण है। इसलिये मैं यही कहूंगा कि—रावण और कुम्भकर्ण के पुतले जलाने की बजाय हम और आप अपने अन्दर बैठे रावण को जलायें।

लेखक—भोलानाथ शास्त्री
आर्यसमाज, माडलटाउन दिल्ली—९

रजि० नं० डी० सी० 750 साप्ताहिक आर्य सन्देश, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ५० पैसे   वार्षिक २० रुपए   वर्ष ७ अंक ५२   रविवार २३ अक्तूबर, १९८३   ५ कार्तिक वि० २०४० दयानन्दाब्द—१५९

वर्त्तमान स्थिति में आर्यवीर दल के संगठन की महत्ता

दल का संगठन सुदृढ़ किया जाएगा : दिल्ली के आर्यवीर सेवा-कार्य के लिए महर्षि निर्वाण शताब्दी पर अजमेर जाएंगे

वेदप्रचार कार्य के लिए सभा के वेदप्रचार विभाग को माटाडोर प्रचार वाहन सौंपा गया

नई दिल्ली। सोमवार दिनांक १७ अक्तूबर के दिन प्रात ८॥ बजे आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश की बैठक हुई। सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि दिल्ली राज्य के पुनः आर्यवीर दल को अधिक सगठित और सुदृढ किया जाए। दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने देश के पश्चिमोत्तर क्षेत्र पजाब और राजधानी दिल्ली की बिगडती हुई कानून-व्यवस्था की परिस्थिति के सन्दर्भ मे आर्यवीर दल के सुदृढ सगठन की महत्ता पर बल दिया और आश्वासन दिया कि प्रान्तीय आर्यवीर दल को दिल्ली आर्यप्रतिनिधि एव दिल्ली की आर्यसमाजो का पूरा सरक्षण और सहयोग प्राप्त होगा।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के मन्त्री श्री प्राणनाथ घई, दिल्ली प्रदेश के आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रीतमदास रसवन्त, सहसचालक श्री जगदेव आर्य, डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार, द० दिल्ली आर्यसमाजो के प्रतिनिधि श्री रामशरण दास आर्य, प्रमुख आर्य कार्यकर्ता श्री तीरथराम आर्य आर्यवीर दल के मन्त्री हरिदेव आर्य, ग्रामीण क्षेत्र के सक्रिय आर्य कार्यकर्त्ता श्री मागेराम आर्य आदि ने अपने सामयिक विचार प्रकट किए।

यह भी सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि आर्यवीरो का एक सगठित सेवा-दल सेवाकार्य के लिए महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर अजमेर भेजा जाए। [illegible] आर्यवीरो ने पूरी निष्ठा और अनुशासन से कार्य करने का वचन दिया। यह भी निश्चय हुआ कि आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ताओ और दिल्ली के आर्यवीरो की एक आवश्यक बैठक रविवार दिनाक २३ अक्तूबर, ८३ को प्रात ११ बजे आर्यसमाज चूनामण्डी-पहाडगज नई दिल्ली मे होगी।

इसी अवसर पर दिल्ली आर्यप्रति निधि सभा की ओर से ग्रामो तथा पिछडी बस्तियो मे वेद प्रचारार्थ जो प्रचार-वाहन माटाडोर क्रय की गई है, वह वेद-प्रचार के निमित्त वेद-प्रचार विभाग को सौंप दी गई। पूर्ण आशा है यह प्रचार-वाहन दिल्ली राज्य मे पिछडी, उपेक्षित बस्तियो और ग्राम्य क्षेत्रो के प्रचार-कार्य मे यशस्वी योगदान करेगी।

४ नवम्बर को राजधानी दिल्ली में सामूहिक ऋषि निर्वाण महोत्सव

रामलीला मैदान में विशाल सार्वजनिक सभा

दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान श्री धर्मपाल एव महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने एक पत्रक प्रसारित कर दिल्ली की आर्यसमाजो, आर्यसस्थाओ एव आर्यजनता से अनुरोध किया है कि गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी शुक्रवार ४ नवम्बर १९८३ को प्रात ८ से १२ बजे तक रामलीला मैदान मे सामूहिक रूप से महर्षि निर्वाण महोत्सव मनाया जाएगा। इस अवसर पर सामूहिक यज्ञ के बाद विशाल सार्वजनिक सभा होगी। इस अवसर पर दिल्ली मे विद्यमान प्रमुख आर्यनेता एव विद्वान् [illegible] और आर्यजनता को महर्षि निर्वाण शताब्दी [illegible] सन्देश देंगे। आशा है इस [illegible] आर्यजनता भारी संख्या परिवारो के साथ [illegible] कर महर्षि के प्रति अपनी [illegible] श्रद्धांजलि प्रस्तुत करेगी।

महर्षि शताब्दी पर अजमेर जाने के लिए हरियाणा रोडवेज द्वारा दिल्ली हरियाणा से विशेष बस-सेवाएं

नई दिल्ली। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान एव महर्षि निर्वाण आयोजन समिति के अध्यक्ष आयनेता प्रो० शेरसिह जी एव प्रमुख आयनेता दीवान भीमसेन जी के प्रयत्नो से हरियाणा रोडवेज ने महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर १ नवम्बर १९८३ से ७ नवम्बर, १९८३ तक सात दिन के लिए निम्नलिखित स्थानो से अजमेर तक आने जाने के लिए निम्न सेवाओ को चलाने की स्वीकृति दे दी है। इन स्थानो से प्रत्येक यात्री से आने-जाने का सामान्य किराया लिया जाएगा। किसी तरह का अतिरिक्त व्यय नही लिया जाएगा।

दिल्ली से अजमेर प्रतिदिन	छह सेवाए
रोहतक से अजमेर ,,	दो ,,
भिवानी से अजमेर ,,	दो ,,
गुडगाव से अजमेर ,,	दो ,,
सोनीपत से अजमेर ,,	दो ,,
यमुनानगर से अजमेर ,,	दो ,,
रिवाडी से अजमेर ,,	दो ,,
फरीदाबाद से अजमेर ,,	दो ,,
हिसार से अजमेर ,,	दो ,,
जींद से अजमेर ,,	दो ,,
नारनौल से अजमेर ,,	दो ,,
करनाल से अजमेर ,,	दो ,,

जनता दिल्ली और हरियाणा स्थित हरियाणा रोडवेज के केन्द्रो से सम्पर्क कर अपनी यात्रा की व्यवस्था कर ले।

श्रीमती विद्यावती पुरी का देहावसान

दक्षिण दिल्ली आर्यसमाज जगपुरा विस्तार नई दिल्ली १४ की भूतपूर्व (स्त्री समाज) की प्रधाना श्रीमती विद्यावती पुरी धर्मपत्नी स्व० श्री तीर्थराम पुरी का २८ ९ ८३ को बम्बई मे अचानक निधन हो गया।

जिसकी शोक सभा और शान्ति यज्ञ दिनाक १० १०-८३ को साय ५ बजे दक्षिण दिल्ली आर्यसमाज मे हुई जिसमे आर्यसमाज के प्रधान व मन्त्री एव अन्य सभासदो ने श्रद्धाञ्जलिया अर्पित की।

ये दोनो व्यक्ति आर्यसमाज के प्रतिष्ठित कार्य-कर्ताओ मे से थे, ऐसे व्यक्तियो का जाना हमारे लिए शोक का विषय है। इनकी जीवनिया हमारे लिए प्रेरक है।

महर्षि शताब्दी के कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी अन्दर पढ़ें

'आर्यसन्देश' का अगला अंक

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी विशेषाक होगा।

प्रमुख आर्य नेताओ, विद्वानो के चुने लेख, कविताए, रचनाए [illegible], आकर्षक विशेषाक अपनी प्रति सुरक्षित कराए

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

ईश्वर के जानने से ही मोक्ष की प्राप्ति

—प्रेमनाथ एडवोकेट

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदु ।
यस्तन्नवेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ।।

ऋ० १।१६४।३९

दीर्घतमा ऋषि, विश्वेदेवा देवता, भुरिक्त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर।

शब्दार्थ—[यस्मिन्] जिस [ऋच.] ऋग्वेदादि वेद शास्त्रो से प्रतिपादित [अक्षरे] नाशरहित [परमे] परमोत्कृष्ट (अत्युत्तम) [व्योमन्] आकाशवत् व्यापक परमेश्वर में [विश्वे] सब [देवा.] पृथिवी सूर्यादि सब लोक तथा समस्त विद्वान् [अधिनिषेदु] मध्य मे स्थित होते हैं [य] जो (मनुष्य) [तत्] उस परब्रह्म परमेश्वर को [न] नही [वेद] जानता (वह) [ऋचा] ऋग्वेदादि (चारो वेदो) से [किम्] क्या [करिष्यति] (सुख का लाभ) कर सकता है ? अर्थात् कुछ भी नहीं। (और) [ये] जो (वेदो को पढ के धर्मात्मा योगी होकर) [तत्] उस परब्रह्म को [विदु] जानते हैं [ते] वे [इत] ही [इमे] ये [समासते] (परब्रह्म मे) अच्छे प्रकार (समाधि योग से) स्थित होने है (और मुक्तिरूपी परमानन्द को प्राप्त होते हैं)।

भावार्थ—जो सब वेदो का परम प्रमेय (प्रमाणनीय) पदार्थ रूप और वेदो से प्रतिपाद्य ब्रह्म अमर और जीव तथा कार्य-कारणरूप जगत् है इन सबमे से सबका आधार अर्थात् ठहरने का स्थान आकाशवत् व्यापक परमात्मा है और जीव तथा कार्य कारणरूप जगत् व्याप्य है। इसी से सब जीवादि पदार्थ परमेश्वर मे निवास करते हैं और जो मनुष्य वेदो को पढकर इस प्रमेय (ब्रह्म) को नही जानता, वह वेदो से कुछ भी फल को नही पाता और जो वेदो को पढकर प्रकृति (कार्य वा कारणरूप) वा ब्रह्म को गुण कर्म स्वभाव से जानता है वह धर्म अर्थ काम वा मोक्ष की सिद्धि द्वारा आनन्द को प्राप्त होता है।

व्याख्या—ब्रह्मज्ञान अर्थात् परमेश्वर को जाने बिना मुक्तिरूप आनन्द किसी को प्राप्त नहीं हो सकता। उसको जानने के लिए वेदादि शास्त्रों का पढना आवश्यक है। और केवल उनको पढ़ने से ही कुछ नहीं होगा जब तक उस ब्रह्म को जाना नही, माना नही, उसका ध्यान योग द्वारा नही किया और उसकी वेदोक्त आज्ञा पर चला नही। ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में इस वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—"जो सब दिव्य गुण कर्म स्वभाव विद्यायुक्त और जिसमे पृथिवी सूर्यादि लोक स्थित हैं उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान न करते हैं, वे नास्तिक मन्दमति सदा दु ख सागर मे डूबे ही रहते हैं। इसलिए सब ही उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं। इसी मन्त्र का अर्थ करते हुए ऋषि सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास मे लिखते हैं—"जिस परमेश्वर मे सब वेदों का मुख्य तात्पर्य है उस ब्रह्म को जो नही जानता वह ऋग्वेदादि से क्या कुछ सुख को प्राप्त हो सकता है ? नही, किन्तु जो वेदो को पढकर धर्मात्मा-योगी होकर उस ब्रह्म को जानते हैं वे सब परमेश्वर मे स्थित होकर मुक्तिरूपी परमानन्द को प्राप्त होते हैं।

१२ गाधी स्क्वेयर, मल्कागज, दिल्ली-७

अजमेर चलो-अजमेर चलो !

ले० 'सत्यभूषण' शान्त वेदालंकार

मत देर करो मत देर करो, अजमेर चलो अजमेर चलो।
आर्यो ! स्वर्णिम अवसर आया जादू सिर चढकर बोला है।
बलिदानों की गाथा दुहरा, युग ने अपना मुह खोला है।
मिल जाओ दूध, औ सलिल सदृश, अब मत कोई अंधेर करो।।
मत देर करो—मत देर करो, अजमेर चलो, अजमेर चलो।।
अजमेर महर्षि दयानन्द का, अद्भुत स्मारक कहलाता है।
युग-सूत्रधार नव-निर्माता का अन्तिम दृश्य दिखाता है।।
उसकी पावन रज पाने को, निज हृदय पवित्र बनाने को।
मत देर करो, मत देर करो, अजमेर चलो, अजमेर चलो।।
अजमेर महर्षि दयानन्द की, अद्भुत इक अमर कहानी है।
विषदाता को भी अभय दिया, यह प्रीत बड़ी लासानी है।।
तन विष के फफोलो से पूरित, स्मित छाई किन्तु मुखमडल पर।
प्रभु की स्तुति मे ही लीन रहे, भूले न कभी उसको पलभर।।
बलि के पथ पर आगे बढ़ने में, पुरुषारथ अब की बेर करो।
मत देर करो, मत देर करो, अजमेर चलो, अजमेर चलो।।
भारत मा का वक्ष स्थल ले अब, काटो से क्षत-विक्षत होता है।
करने को खड-खड इसकी, अत्याचारी तत्पर होता।।
है आग लगी चहु ओर आज, भ्रष्टाचारो का चक्र चला।
सकट की विकट घड़ी आई, दुश्मन दिखलाता कुटिल कला।।
उसके व्यापक इरादे को, कर विफल शीघ्र ही फेल करो।
मत देर करो, मत देर करो अजमेर चलो अजमेर चलो।।

—ग्रीन पार्क,नई दिल्ली-१६

चलो आर्यो अजमेर चलें !

— कवि० बनवारी लाल 'शादां' वैद्य

अजमेर चलो अब ना देरी लगाओ, ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाओ।
सभी जन चलो लेके परिवार सारा, शताब्दी का चल करके देखो नजारा।
पुष्कर रोड तीन से छै नवम्बर जाओ, ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाओ।।
वैदिक यन्त्रालय याद ऋषि की दिलाता, सत्यार्थ प्रकाश ऋषि का लिखा नजर आता।
ऋषि की लेखनी के दर्शन को पाओ, अजमेर चलो अब ना देरी लगाओ।।
जवा से बहो पीछे, करके दिखा दो, तन, मन, धन, अपना, अब आर्यो लगा दो।
वही ऑन मान शान अपनी बनाओ, दयानन्द की निर्वाण शताब्दी मनाओ।।
अमूल्य समय 'शादां' है, तन मन लगा दो, उठो ओ३म् झण्डा घर-घर मे फेरा दो।
यहा श्रद्धा सुमन ऋषि के चरणो चढ़ाओ, उठो आर्यो अब ना देरी लगाओ।।

आयु कैसे बढ़ाएं ?

पुरुषार्थी लोग ब्रह्मचर्य आदि के सेवन से सदा बलवान् रहते हैं, इसी प्रकार सब मनुष्य मानसिक पाप और शारीरिक रोग के त्याग और शुभ गुणो के सेवन से बल बढाकर अपना जीवन सफल करें।

मनुष्य शुद्ध आचरण से सामाजिक आत्मिक और शारीरिक पीड़ा मिटाए और बलवान् होकर पाप को हटाए।

जैसे ग्राम्य पशु जगली जीवों से अलग रहकर प्रसन्न रहते हैं और जल की उपस्थिति मे प्यास से निवृत्ति होती है, इसी प्रकार मनुष्य पाप से निवृत्त होकर सबके सुख मे प्रवृत्त हो।

सूर्य पृथ्वी और पानी से अलग रहकर ससार का क्लेश हरते हैं, ऐसे ही सब मनुष्य दु ख का नाश करके सुख भोगें।

जैसे पिता, पुत्री को दान देकर सदा हित करता रहता है, सब लोक और पदार्थ अलग-अलग रहकर परस्पर उपकार करते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य आत्मिक और शारीरिक दोष हटाकर परस्पर सुख बढावें।

सूर्य का ताप श्वास-प्रश्वास द्वारा शरीर में प्रविष्ट होकर नेत्र आदि इन्द्रियों को अन्न रस पहुचाता है, और चन्द्रमा की शीतलता मन को शान्ति देती है।

कोठी १३१३, सेक्टर १५, फरीदाबाद, (हरयाणा)

'डालडा काण्ड ! अपराधियों को कठोर दण्ड दो"
आर्यसन्देश में छपी हुई सामग्री का प्रकाश
१०० व ५० रुपए की खरीद पर सुन्दर उपहार

धार्मिक वृत्ति से पोषक अन्न ग्रहण करो

ओ३म् धर्मैत्ते पुरीष तेन वर्धस्व चा च प्यायस्व।
वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि॥ यजु० ३८.२१

हे धर्मस्वरूप प्रभु, यह आपका ही पुष्टिकारक अन्न है। उसके द्वारा धर्म वृद्धि को प्राप्त हो। आपकी कृपा से हम वृद्धि एवं उन्नति को प्राप्त हों।

ओ३म्
आर्य सन्देश

स्वभाषा, स्व-संस्कृति और स्वदेश को प्राथमिकता दीजिए

अक्तूबर के चौथे सप्ताह मे भारत की राजधानी दिल्ली मे तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन हो रहा है। इस सम्मेलन में विश्व भर के अनेक देशो के हिन्दी-सेवी विद्वान् आ रहे हैं। इस समय ससार के सभी प्रमुख देशो के विश्वविद्यालयो में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन एव शोत्र कार्य की व्यवस्था है। यह कितने अधिक सन्ताप की बात है कि ७० करोड़ जनता के देश की सम्पर्क भाषा एव राष्ट्रभाषा को सविधान की स्वीकृति के बावजूद देश में वह आदर और सम्मान प्राप्त नही है, है, जो कि उसे मिलना चाहिए। जब उसे अपने देश मे ही अपना प्राप्तव्य उपलब्ध नही है तो यह आशा करना व्यर्थ है कि विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनो एव आयोजनो मे हिन्दी को ७० करोड की भारतीय जनता की लोकवाणी के रू। मे एक प्रमुख विश्वभाषा का रूप दिया जा सकेगा। नागपुर और म।रीशस के विश्व सम्मेलनों मे हिन्दी को एक विश्वभाषा के रूप मे प्रचलित करने की माग की गई थी। इम बार दिल्ली के सम्मेलन मे भी यह माग दुहराई जाएगी, इसमे सन्देह नहीं है, परन्तु हमे स्मरण रखना होगा कि आज हिन्दी की वर्तमान दुरवस्था के मूल मे हम हिन्दी भाषियो द्वारा विदेशी भाषा, सस्कृति और देश का अन्धा अनुकरण है।

भारत मे अंग्रेजी भाषा को शिक्षा एवं राजभाषा के रूप मे प्रचलित करते समय तत्कालीन शिक्षा सचिव मैकाले ने यह भविष्यवाणी की थी कि एक समय ऐसा आएगा, जब भारत से अंग्रेजी शासन समाप्त हो जाएगा। उस समय शरीर से भारतीय होने के बावजूद वे पहरावे और बोलचाल मे अंग्रेजियत से प्रभावित रहेगे। खेद है कि आज मैकाले की वह भविष्यवाणी चरितार्थ हो रही है। राष्ट्र के स्वाधीनता प्राप्ति के बाद सविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर स्वीकृत किए जाने के बावजूद उसे उस पर अभी तक प्रतिष्ठित नहीं किया जा सका है। इस दु खद स्थिति का अन्त करने के लिए प्रत्येक देशवासी को कुछ सकल्प करने होगे। हमे ज्ञान-विज्ञान की खोज को एव विश्व के नवीनतम आविष्कारो और खोज को आत्मसात् करने के लिए जहा विश्व की प्रमुख भाषाओं का अध्ययन करना चाहिए, वहा हमे इन सभी ज्ञान-विज्ञानो, खोजो और आविष्कारों से हिन्दी एव भारतीय भाषाए समृद्ध करनी चाहिए। हमे यदि देश का सम्मान बढाना है तो हमे स्वभाषा, स्व सस्कृति और स्वदेश को प्राथमिकता देनी होगी। हमे स्मरण रखना होगा, कि जब तक हम इन आधारभूत तत्त्वो को अपने जीवन में व्यवहृत नहीं करेंगे तब तक देश का कायाकल्प सम्भव नही है।

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों, उपदेशों और आर्यसमाज की स्थापना द्वारा सबसे बडी सीख यह दी थी कि हमे जहां नवीन ज्ञान-विज्ञान को ग्रहण करने मे सकोच नही करना है, वहा हमें अपने अतीतकालीन ज्ञान-विज्ञान एव सस्कृति को पुरी श्रद्धा के साथ उसे मूल सच्चे स्वरूप मे ग्रहण करना होगा। उन्होने वैदिक सस्कृति, सस्कृत एव हिन्दी भाषा, भारतीय चिन्तन एव वेशभूषा को पुन गरिमा प्रदान की थी। विदेशी धर्मावलम्बियो से उन्होने सीधे शास्त्रार्थकर वेदों के तत्वज्ञान की महत्ता प्रतिपादित की थी। जन्म से गुजराती होते हुए भी उन्होंने आर्यभाषा-हिन्दी के माध्यम से वैदिक सस्कृति एवं तत्त्वज्ञान का सन्देश दिया था। तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन और महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर समस्त भारतवासियो को स्वभाषा, सस्कृति और स्वदेश की गरिमा को हृदयंगम करने का सन्देश देते हैं। यदि देश के हिन्दी भाषी क्षेत्रो की जनता पूरी प्रामाणिकता के साथ हिन्दी और भारतीय भाषाओ को अपनाने का सकल्प कर उसे व्यवहार मे परिणत कर दे तो हमारी अनेक समस्याए सुलझ सकती हैं। जिस दिन हम इन व्रतों को जीवन मे अपना लेंगे, उस दिन हमारी मानसिक दासता का अन्त हो जाएगा और प्रत्येक दृष्टि से राष्ट्र को स्वावलम्बी शक्तिशाली और महान् बनाने की दिशा मे हम प्रवृत्त हो सकेंगे। प्रथम शकराचार्य और महर्षि दयानन्द ने एकाकी ही अपने-अपने युग मे सास्कृतिक क्रान्ति का सिंहनाद किया था। उनकी विजय के मूल में उनके दृढ़ संकल्प और उनके अनवरत प्रयत्न सहायक सिद्ध हुए थे, आज देशवासी भी स्वभाषा स्व-संस्कृति और स्वदेश के लिए उनके संकल्पों और प्रयत्नों का अनुकरण करेंगे, तो सफलता अवश्यम्भावी है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महान विचारक और कर्मयोगी थे

—रामगोपाल शाल वाले, प्रधान सार्वदेशिक, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

महर्षि दयानन्द का जीवन घटनापूर्ण है और घटनाओ की यह जजीर बडी लम्बी है। इस जजीर मे पहली दो कडिया मूर्ति पूजा मे अनास्था, सच्चे शिव (परमात्मा) के दर्शन और प्रिय बहन-चाचा के आकस्मिक देहावसान से मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की उत्कण्ठा एव जिज्ञासा के प्रादुर्भाव के रूप मे जुडी थी। इसके पश्चात् सदैव के लिए गृहत्याग, सन्यासदीक्षा, निरन्तर १५ वर्ष तक बीहड वनो, उच्च पर्वतो एव विश्व सरिता तटो पर भ्रमण करते हुए सच्चे योगियो की खोज, गुरुवर विरजानन्द से भेंट, आदर्श शिष्या द्वारा गुरु के आदेश के परिपालनार्थ देश एव विश्व कल्याण के लिए विरक्ति मार्ग से निवृत्ति मार्ग में प्रवेश, ब्रह्मचर्य की प्रतिमा, महान वेदोद्धारक, प्राचीन आर्य सस्कृति पुरस्कर्त्ता एव सजीव प्रतीक, गोरक्षक, राष्ट्रभाषा हिन्दी के पृष्ठपोषक, दलित, पतित और अबलाओ के उद्धारक, स्वतन्त्रता के सूत्रधार, आधुनिक भारत के निर्माता, महाविद्वान, विश्व-कल्याण भावना, करुणा, कर्त्तव्यपरायणता और न्याय भावना के प्रतिपालक, अधर्म अनीति के परिहारक, निर्भयता की मूर्ति, धर्ममय राजनीति के सदेशवाहक के रूप मे शकर, बुद्ध और कृष्ण की श्रेणी मे स्थान प्राप्ति, लोगो के हर प्रकार के बन्धनो के छेदन, विपदाता को क्षमादान आदि की उस महामानव के घटनापूर्ण जीवन मे दिव्य एव उज्ज्वल कडिया जुडी थी।

भारतीय धार्मिक विचारधारा ने एक विशुद्ध भारतीय समाज (आर्यसमाज) को जन्म दिया, जिसके शीर्षस्थान पर उच्चतम कोटि का व्यक्तित्व (महर्षि दयानन्द का) था। सिंह समान प्रकृति वाला वह मानव उन मानवो मे था, जिन्हे भारत का मूल्याकन करते और भुलाते हुए भी यूरोप भुला न सकेगा। वह विचारक और कर्मयोगी का आदर्श-सम्मिश्रण थे। और नेतृत्व की प्रतिमा से जाज्वल्यमान थे। वह इलियड या गीता के नायक और हरक्युलिस जैसे बलशाली थे, जिन्होंने हर प्रकार की बुराई, अनीति और अधर्म के विरुद्ध आवाज उठाई। वह प्रकाश के रक्षक एव प्रचारक थे। प्रभु के बेजोड योद्धा थे। वह मानवो और सस्थाओ के चितेरे थे। वह सासारिक प्रलोभनो और भोगो से लोहा लेने वाले दुर्दान्त योद्धा और विजेता थे।

दयानन्द वह महामानव थे, जिन्होने आध्यात्मिकता को क्रियात्मक रूप देने में अपूर्ण सफलता प्राप्त की थी। इन्होने कहा था—योगी बनो, साथ ही कर्मयोगी बनो। मुझे अपनी मुक्ति की आकाक्षा नही है। निर्धनो, असहायो, दलितो, पतितो आदि की मुक्ति मे ही मेरी मुक्ति है।" दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषो मे थे जिन्हे इतिहास महामानव, दिव्यद्रष्टा और मानवो के सुन्दर जीवन का निर्माता अकित करेगा। वह उन दिव्य व्यक्तियो मे से थे जिन्हें वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों ने देवताओ की पदवी प्रदान की है तथा जो मानव जाति के आदर के पात्र रहे हैं और हैं। इस महामानव की बलिदान शताब्दी पर उनके पावन सदेश को जन-जन तक पहुचाने का सकल्प लेकर हम आगे बढें।

विश्व हिन्दू परिषद और संस्कृत

विश्व हिन्दू परिषद की नवम्बर मे हरिद्वार से रामेश्वरम् तक एकात्मता यात्रा प्रारम्भ होने जा रही है। इस प्रसग मे विशेष कथ्य यह है कि इस यात्रा मे २० लाख प्लास्टिक की छोटी-छोटी शीशियो मे हिन्दुओ को बाटने के निमित्त हर की पौडी से गगाजल भरा जा रहा है। इन शीशियो पर विश्व हिन्दू परिषद का सन्देश छपा है—'विश्व हिन्दू परिषदस्य एकात्मता यज्ञस्य अवसरे प्रसाद रूपे अभ्यर्थना सहित समर्प्यते इद गगाया पुण्योदक।" यह पढकर खेद हुआ कि परिषद ने सस्कृत पोषक सस्था होते हुए सस्कृत मे परिषद की षष्ठी विभक्ति का शुद्ध रूप परिषद के स्थान पर 'परिषदस्य' छाप रखा है।

दक्षिण के लोग सस्कृतज्ञ हैं और ऐसा लिखा होने से सस्कृत का अपमान हो रहा है। परिषद के सम्बद्ध अधिकारियो विशेष रूप से सस्कृत पोषक एव उसके प्रचारक डाक्टर कर्णसिंह महोदय का ध्यान इस भयकर अपमानजनक वैयाकरणिक त्रुटि की ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

—विद्याव्रत विद्यार्थी 'वेदालंकार', गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

युग-पुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ० प्र०

सायकाल का समय था और दीपमालिका का दिवस— लगभग साढे पाच बजे थे, उस समय प्रत्येक घर दीपको से जगमगाने लगा था। उधर राजा साहब मिनाय की अजमेर स्थित कोठी मे एक महान् दीप—ऐसा महान्, जिसने सहस्राब्दियो से बुझे दीप – वेद ज्ञान को अपनी सम्पूर्ण योग्यता और सामर्थ्य से भूमण्डल पर प्रकाशित कर दिया था, निर्दयी काल के प्रबल झोके से बुझ रहा था। बुझा तो वह दीप—किन्तु ससार को वह ज्योति देकर, वह अमर ज्योति, जो न केवल युग-युग तक अपितु प्रलय काल तक अपनी प्रखर रश्मियो से सम्पूर्ण विश्व को, विश्व ब्रह्माण्ड और विश्व मानवता को न केवल प्रदान करेगी अपितु देदीप्यमान् बनाए रखेगी।

ससार के सभी झझावात न केवल मोहमाया के अपितु मत-मतान्तरो के भी —उसे बुझाने दौडे। परन्तु वह अडिग, निश्चल और अटल हिमालय की भाति खडा रहा और खडा रहकर विश्व-मानवता के हित मे उस ज्योति को प्रखर और जाज्वल्यमान् उद्दीप्त रश्मिया बखेरता रहा। प्रत्येक पग पर उस तप पूत ने यह प्रमाणित किया कि—

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथा प्रविचलन्ति पद न धीरा ॥

—नीतिनिपुण लोग निन्दा करें अथवा स्तुति, लक्ष्मी (धन) आए या जाए, चाहे आज ही मृत्यु हो या युगो के पश्चात् किन्तु धैर्यवान् लोग न्याय के पथ से कभी भी विचलित नही होते।

इस युग-पुरुष महान् तपस्वी वैदिक ऋषि को हम युग-प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से स्मरण करते हैं। न केवल आज ही स्मरण करते हैं अपितु 'यावत् चन्द्रदिवाकरौ' जब तक चन्द्रमा और सूर्य आकाश मे स्थित हैं— प्रबुद्ध जन सर्वदा उनके नाम पर श्रद्धोपेत होकर सिर झुकाते रहेगे।

इतिहास के पृष्ठों मे जहा तक दृष्टि जाती है, महर्षि दयानन्द हमे प्रथम महापुरुष दृष्टिगोचर होते हैं, जिन्होने यह घोषणा की कि 'जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।" यह घोषणा उनके पूर्वाग्रह रहित होकर सत्य को स्वीकार करने की उनकी मनोवृत्ति की परिचायिका है। इसी मनोवृत्ति का परिचय उन्होने आर्यसमाज की स्थापना करते हुए उसके चौथे नियम की यह भाषा बनाकर दिया कि "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।"

सत्याग्रही उसी व्यक्ति को कहना सार्थक है, जो सत्य के लिए आग्रह करे, जो अपनी मनमानी बात—चाहे वह कितनी भी अन्याय युक्त हो— मनवाने के लिए अडा रहे, वह तो दुराग्रही ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्पूर्ण जीवन को आद्योपान्त और उनके ग्रन्थो को अध्ययन करने के बाद हम इस परिणाम पर पहुचे हैं और पूर्ण दायित्व के साथ यह कह सकते हैं कि दुराग्रह उन्हें छू भी नहीं गया था। अपने और पराये का भेद-भाव उनके मन मे था ही नही। पक्षपात उनके विचारो और जीवन मे लेश भी, नाम-मात्र को भी नही था।

इस सब का कारण यदि खोजा जाए तो इसके अतिरिक्त दूसरा नही मिलेगा कि उन्होने वेद का न केवल अध्ययन अपितु गहन अध्ययन किया था। वेद को ससार के किसी मापदण्ड, किसी भी विद्वान् के दृष्टिकोण से नही अपितु वेद के ही मापदण्ड और वेद के ही दृष्टिकोण से समझा था। वर्त्तमान युग के वेदवेत्ता कहलाने वालो मे महर्षि दयानन्द की यही विशेषता है, यही उनका ऋषित्व है और उसी के कारण वह यह घोषणा करने मे समर्थ हो सके कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" और क्योकि उन्होने वेद को सब सत्य विद्याओ का पुस्तक समझा और घोषित किया एतदर्थमेव उन्होने 'वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म' भी बताया। इससे कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति इनकार नही करेगा कि जो "सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" ससार का कोई भी आर्य पुरुष, कोई भी श्रेष्ठ व्यक्ति उस पुस्तक के पढ़ने-पढाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म मानने मे हिचकिचा नही सकता।

ऋग्वेद मे एक स्थल पर कहा गया है 'ऋषि स यो मनुर्हित:' ऋषि वह जो मनुष्य मात्र का हितकारी हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती मनुष्य मात्र के हितकारी थे—इससे केवल वही व्यक्ति नकार कर सकता है, जो पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो। इससे बढकर महर्षि को मनुष्य मात्र की हितकारिणी प्रवृत्ति का और क्या परिचय दिया जा सकता है कि उन्होने अपने द्वारा सस्थापित सस्था आर्यसमाज का एक नियम ही यह बना दिया कि "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" ससार के उपकार मे व्यक्ति का उपकार निहित ही है।

तथ्य यह है कि महर्षि को मनुष्यमात्र की हितकारिणी वृत्ति बनने का कारण भी उनका गहन वेदाध्ययन ही है। वेद मे क्योकि किसी वर्ग किसी क्षेत्र आदि का पक्ष नहीं है, हमारा अभिप्राय है कि वेद न तो पक्षपात युक्त ग्रन्थ है तथा न देश या वर्ग विशेष के लिए है अपितु वेद मनुष्य मात्र के लिए है, सार्वभौम है और सार्वकालिक है तथा मत-मतान्तर के आग्रह से रहित है। वेद मनुष्य को न तो मुसलमान बनाना चाहता है न हिन्दू, न पारसी न जैन, न बौद्ध न ईसाई और न मूसाई। वेद तो मनुष्य को मनुष्य देखना चाहता है और मनुष्यता ही संसार मे सर्वजनीन तत्त्व है। वेद तो स्पष्ट शब्दो मे 'मनुर्भव' मनुष्य बनने का निर्देश करता है।

यह जो मनुष्य बनने का सन्देश है, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी को वेद से प्राप्त किया और यही सूत्र लेकर ससार के उपकारार्थ आर्यसमाज की स्थापना की और स्व-जीवन को भी इसी कार्य में होम दिया। जीवन भर वेद-ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया और अपने उत्तराधिकारी के रूप मे आर्यसमाज को वेद-आलोक प्रचार का दायित्व समर्पित कर दीपावली की सायङ्काल के धीमे-धीमे टिमटिमाते दीपकों के प्रकाश में वह आधुनिक युग-प्रवर्त्तक और युग-पुरुष संसार से विदा हो गया।

अनेक दीप जलाए उस युग-पुरुष ने अपनी तपस्या और साधना से। आज वह ससार में यद्यपि कहीं दिखाई नहीं देता किन्तु संसार का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं— जहा उसकी छाप, उसकी जीवन-ज्योति की जाज्वल्यता और देदीप्यता का परिचय न दे रही हो।

सच्ची विद्या

छान्दोग्य की कहानी है। ऋषि आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु गुरुकुल से शिक्षा ग्रहण कर जब लौटा तब उसके पिता को अनुभूति हुई कि पुत्र में कुछ अहंकार पैदा हो गया है। पुत्र ने बतलाया उसने सब विद्याएं पढ़ ली हैं। पिता आरुणि बोले—"क्या तूने वह विद्या भी पढ ली है जिस पढकर सब कुछ जान लिया जाता है।" पुत्र ने कहा—"वह तो मुझे मालूम नहीं।" ऋषि आरुणि बोले—"यह मिट्टी देखो, उससे घडा, मटका, सुराही, मिट्टी के खिलौने—हाथी, घोड़े, तोते, कबूतर, राजा-रानी, कुत्ता-बिल्ली सब बन सकते हैं, सबके नाम अलग, स्वरूप अलग पर सब मिट्टी के होते हैं। पानी डालते ही गल जाते हैं, इसी तरह धातुओ से बर्तन बनते हैं, अलग-अलग पदार्थ आभूषण सबके भीतर धातु का मूल तत्त्व एक ऐसा है, सारे खनिज पदार्थ, सम्पूर्ण वनस्पति, सारे पशु-पक्षी एक ही मूल तत्व से प्रभावित हैं।"

श्वेतकेतु बोला—"पिता जी, बात कुछ गहरी है, समझ मे नही आती? समझा कर बतलाइए। ऋषि आरुणि ने कहा—सामने एक वृक्ष है। उस पर कही भी चोट करो सब जगह से एक जैसा ही रस निकलेगा, यह रस रूपी आत्मा से भरा है, यह आत्मा निकल जाने पर यह वृक्ष सूख जाता है।"

श्वेतकेतु बोला—"बात कुछ कठिन है, समझ मे नही आती ऋषि ने सामने के वृक्ष से फल लाकर तोड़ने के लिए कहा। फल के तोड़ने पर पुछा—"फल के अन्दर क्या दीखता है?' "पिताजी फल के अन्दर अणु जैसे छोटे-छोटे दाने हैं। फिर इन दानो को तोडने का पिता ने आदेश दिया। पुत्रने दाने तोडे, परन्तु उसे कुछ भी दिखाई नही दिया। पुत्र की निराशा देखकर ऋषि बोले—"एक पात्र में जल ले आओ।' पानी से भरे पात्र मे उन्होने पुत्र को नमक की बड़ी डली डालने के लिए कहा। एक पहर बीत जाने पर ऋषि ने श्वेतकेतु से कहा—"पुत्र, तुमने जो नमक की डली डाली थी, वह पात्र से निकालकर ले आओ।" श्वेतकेतु ने पानी देखा डली दिखाई नही दी फिर अंगुली से पानी टटोला, पर वह डली नही मिली। पिता ने कहा—अब जल का आचमन करो। पुत्र ने कहा—"पिता जी पानी तो बहुत नमकीन है। सब जगह पानी खारा है।"

पिता बोले—जिस तरह नमक की वह डली दिखाई नही देती, फिर भी वह जल मे सर्वत्र व्याप्त है, उसी तरह हर पदार्थ मे वह सत् तत्व, भी व्याप्त है। इस तत्व को जानने का प्रयत्न करो। यह जानने की विद्या ही सच्ची विद्या है।'

— नरेन्द्र

आर्यसमाज मालवीय नगर के पदाधिकारी

सरक्षक—श्री केवलराम वर्मा, प्रधान—श्री भूपसिंह गुप्त, उपप्रधान—श्री धर्मवीर भसीन, डा० तीर्थराज शास्त्री, श्री मदनमोहन शास्त्री, मन्त्री—श्री वेदरत्न आर्य सहमन्त्री—श्री देशराज जुनेजा, श्री चिरंजीत लाल मोहन, श्री चमनलाल अरोरा कोषाध्यक्ष—श्री नन्दलाल ग्रोवर, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री मूलचन्द आर्य, लेखा-निरीक्षक —श्री मदनलाल वर्मा।

महर्षिदयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर

- ईशोपनिषद वे० शा० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ४.५०
- महकते फूल सुरेश चन्द्र वेदालंकार ६ ००

प्रो० विष्णुदयाल एम. ए.

- वेद भगवान बोले ६.००

पं० सत्यपाल विद्यालंकार

- श्रीमद्भगवत गीता ८ ००

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

- वेदोद्यान के चुने हुए फूल २५ ००

पं० नरेंद्र

- हैदराबाद के आर्यों की साधना व सघर्ष ६ ००

महर्षि दयानन्द सरस्वती

पं० भगवद्दत्त रिसर्च स्कालर द्वारा सम्पादित

(आठ परिशिष्ट, मोटे अक्षर)

- सत्यार्थप्रकाश २५ ००
- सत्यार्थप्रकाश (आर्ट पेपर पर छपी) १०१ ००

बालोपयोगी पुस्तकें

त्रिलोकचन्द्र विशारद

- महर्षि दयानन्द १.५०
- स्वामी श्रद्धानन्द १.५०
- गुरु विरजानन्द १.५०
- पं. लेखराम १.५०
- स्वामी दर्शनानन्द १.५०
- पं गुरुदत्त १.५०

स्वामी दर्शनानन्द

- बालशिक्षा-धर्मशिक्षा १ ००

पं० सत्य भूषण वेदालंकार एम० ए०

- नैतिक शिक्षा प्रथम भाग ० ७५
- नैतिक शिक्षा द्वितीय भाग ० ७५
- नैतिक शिक्षा तृतीय भाग १ ००
- नैतिक शिक्षा चतुर्थ भाग १.५०
- नैतिक शिक्षा पंचम भाग २.००
- नैतिक शिक्षा षष्ठ भाग २.००
- नैतिक शिक्षा सप्तम भाग २.००
- नैतिक शिक्षा अष्टम भाग २.००
- नैतिक शिक्षा नवम भाग २ ५०
- नैतिक शिक्षा दशम भाग २ ५०

बालोपयोगी

- आदर्श बालक भाग १ ६ ००
- आदर्श बालक भाग २ ६ ००
- आओ खेलें खेल ४ ००
- लोक व्यवहार ५ ००
- सफलता की राह ५.००
- उन्नति की राह ५ ००
- बोध कथाएं ५ ००
- ज्ञान कथाए ५ ००
- प्रेरक कथाए ५ ००
- राष्ट्रीय एकता के प्रतीक त्यौहार (सचित्र) ६ ००
- हम सब राम के बेटे (शिष्टाचार) सचित्र) ६ ००
- ऋतु गीत (रगीन सचित्र) ६.००
- सविधान की कहानी १० ००

श्यामचन्द्र कपूर लिखित

प्रत्येक का मूल्य ६-००

- **नन्दिनी का वरदान** (रामायण की कथाएं)
- **शरणागत की रक्षा** (वेदो की कथाएं)
- **कीर्ति का माग** (महाभारत की कथाएं)
- **सबसे बड़ा ज्ञानो** (उपनिषदों की कथाएं)
- **सच्चा सपूत** (जातक कथाएं)
- **फूलों की वर्षा** (पुराणों की कथाएं)
- **विश्वास का फल** (कुरान की कथाएं)
- **जनता का प्यारा** (भागवत की कथाएं)
- **सपने देखने वाला** (बाइबिल की कथाएं)
- **आशा की ज्योति** (जैन ग्रन्थों की कथाएं)

कर्मकांड की पुस्तकें

- आर्य सत्सग गुटका १.२५
- वैदिक सन्ध्या ०३०
- पंचयज्ञ-प्रकाशिका ३ ००

चित्र चित्र चित्र

- महर्षि दयानन्द रगीन २०×३० ३ ००
- महर्षि दयानन्द एक रंग १८×२२ २.००
- गुरु विरजानन्द ,, १८×२२ २ ००
- स्वामी श्रद्धानद ,, ,, २ ००
- स्वामी दर्शनानन्द ,, ,, २ ००
- म० हंसराज ,, ,, २ ००

अन्य प्रकाशन

- आप क्या नही कर सकते ? स्वेट मार्डन ३ ००
- चिन्तामुक्त कैसे हो? ,, ३ ००
- हंसते-हंसते कैसे जियें ? ,, ३ ००
- जो चाहें सो कैसे पायें ? ,, ३ ००
- अपना खर्च कैसे घटाएं ? ,, ३ ००
- अवसर को पहचानो ! ,, ३ ००
- अपने आप को पहचानिए ! ,, ३ ००
- आप सफल कैसे हो ? ,, ३.००
- उन्नति कैसे बनें ? ,, ३.००
- धनकुबेर कैसे बनें ? ,, ३.००
- महाभारत मनहर चौहान ५ ००
- रामायण ,, ५ ००
- पंचतन्त्र गोपालकृष्ण कौल ५ ००
- हितोपदेश सुनील शर्मा ६ ००

डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा

- गर्भ-स्थिति, प्रसव और शिशुपालन १२ ००
- सुबोध मेक-अप सुशीला कपूर ४ ००
- आधुनिक पाक-कला मीनाक्षी धींगड़ा १२.००
- आधुनिक मिष्ठान-कला ,, १२.००
- शर्बत आइसक्रीम स्क्वैश ,, १२ ००
- अचार-मुरब्बे चटनी ,, १२.००
- अमृतवाणी कृष्ण विकल २० ००
- बीडी सिगरेट कैसे छोड़ें नरेन्द्रनाथ १२ ००
- हमारी बोध कथाएं यशपाल जैन २० ००

राजीव वत्स

- जूडो आत्मरक्षा के लिए ३०० चित्र १२.००
- Judo for All ,, ,, १५.००
- रेडियो ट्रांजिस्टर मैकेनिक हयात २५ ००
- सुबोध ट्रांजिस्टर सर्विसिंग ,, २० ००
- सुबोध ट्रांजिस्टर गाइड ,, २५ ००

योगाचार्य भगवानदेव

- स्वास्थ्य और योगासन ५.००
- घरेलू इलाज डा० समरसेन १२ ००
- योगासन से इलाज ,, २० ००
- जूडो कूगफू कराटे राजीव ६.००
- आहार चिकित्सा वैद्य सुरेश चतुर्वेदी २५ ००
- हृदयरोग कारण निवारण लक्ष्मी नारायण २०-००
- कैंसर कारण निवारण डॉ० जायसवाल २०.००

पं० उदयवीर शास्त्री

- साख्य दर्शन का इतिहास ५०.००
- वेदान्त दर्शन का इतिहास ४०.००
- ब्रह्मसूत्र (वेदान्तदर्शन) ८०.००
- साख्य सिद्धान्त ४० ००
- साख्य दर्शन २५.००
- न्याय दर्शन ४०.००
- योग दर्शन ४०.००
- मीमांसा दर्शन आर्यमुनि तीन भाग १३०.००
- वेदान्तदर्शन आर्यमुनि ६०.००
- वैशेषिक दर्शन ,, ४०.००
- न्यायदर्शन ,, ५०.००
- साख्यार्य भाष्य ,, २०.००
- योगार्य भाष्य ,, ६.००
- निरुक्त हिन्दी भाष्य दो भाग पं० चन्द्रमणि ६०.००

स्वामी वेदानन्द कृत

- ऋषि बोध कथा ६ ००
- ईशोपनिषद ४ ५०
- स्वाध्याय-सन्दीप १५ ००
- सावित्री प्रकाश २ ००

स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती कृत

- आत्म विज्ञान हिन्दी ४०.०० अंग्रेजी ३५ ००
- बहिरंग योग ,, ४५ ०० ,, ३५ ००
- ब्रह्म विज्ञान ,, ७५ ०० ,, ३५ ००
- निर्गुण ब्रह्म ,, २५ ०० ,, २० ००
- प्राण विज्ञान ,, २५ ०० ,, ३० ००
- हिमालय का योगी I ,, ३० ०० ,, ३० ००
- ,, II ,, ४० ०० ,, ४५ ००
- दिव्य ज्योति विज्ञान ,, ४०.००
- दिव्य शब्द विज्ञान ,, ४० ००

पं० जयदेव विद्यालंकार कृत

- ऋग्वेद ७ खण्डों मे २१०.००
- अथर्ववेद ४ खण्डों मे १२०.००
- यजुर्वेद २ खण्डों मे ६०.००
- सामवेद १ खण्ड मे ३०.००

वैद्य गुरुदत्त

- ब्रह्मसूत्र (दो भाग) ६४ ००
- न्याय दर्शन ४५ ००
- साख्य दर्शन ४० ००
- सृष्टि-रचना ११.००
- भारत . गाधी-नेहरू की छाया मे (पॉकेट) ६ ००
- भारत मे राष्ट्र ४.००
- युगपुरुष राम ३ ००
- द्वितीय विश्वयुद्ध ३.००
- महर्षि दयानन्द ३ ००
- दो लहरो की टक्कर (दो भाग) ९६.००
- भाव और भावना १२ ००
- बुद्धि बनाम बहुमत १५ ००
- मुण्डक-माण्डूक्य उपनिषद् (दर्शन) १५.००
- राष्ट्र राज्य और सविधान १५ ००
- वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान हिन्दुराष्ट्र १५ ००
- मैं हिन्दू हू १५.००

पं० सत्यकेतु विद्यालंकार कृत

- आर्यसमाज का इतिहास (प्रथम भाग) १००.००
- आर्यसमाज का इतिहास (तृतीय भाग) १००.००
- प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग २८ ००
- दक्षिण पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति २३.००
- मध्य एशिया व चीन मे भारतीय सस्कृति २० ००
- प्राचीन भारत २८ ००
- भारतीय सस्कृति का विकास २४.००
- प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन २४.००
- एशिया का आधुनिक इतिहास ४४ ००
- प्रमुख राज्यों के संविधान २९.००
- समाज शास्त्र ३२ ००
- सविता देवता ३५ ००
- चाणक्य २५ ००
- पतन और उत्थान २६.००

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

- वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार ५०.००
- वैदिक संस्कृति का संदेश ३५.००
- ब्रह्मचर्य सन्देश १५.००
- एकादशोपनिषद् ७५.००
- उपनिषद् प्रकाश ६५.००
- सस्कार-चन्द्रिका ५०.००
- बुढापे से जवानी की ओर ४०-००
- होमियोपैथिक के मूल सिद्धांत २५-००
- होमियोपैथिक औषधियां सजीव चित्रण ६०-००
- रोग उनकी होमियोपैथिक चिकित्सा ७५.००
- श्रीमद् भागवत गीता ५० ००

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-११०००६

अघमर्षण सूक्त का आधिदैविक एवं आधिभौतिक अर्थ

सन्ध्या (ब्रह्मयज्ञ) मे अघमर्षण के प्रसिद्ध मन्त्र हैं—

ओ३म्
ऋत च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो राज्यजायत तत. समुद्रो अर्णव.॥१
ओ समुद्रादर्णवादधि सवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥२
ओं सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिव च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्व.॥
ऋ १०. १९० १-३

(१) **अभीद्धतप**—परमपिता परमात्मा जीवात्मा अपने पूर्वजन्मों के कार्यकाल प्राप्त कर सके, इस निमित्त सृष्टि की रचना करते हैं। उन परमात्म देव को 'अभीद्धतम' अर्थात् ज्ञानपूर्वक कठोर कर्म का अबाध गति से होते रहना—'के रूप मे स्मरण किया गया है।

(२) **ऋत और सत्य**—सृष्टि के निर्माण और रचना के अनन्तर उसके उपयोग के लिए प्रयुक्त होने वाले नियमो को यहा ऋत और सत्य (अर्थात् प्राकृतिक नियम और व्यावहारिक नियम) कहा गया है।

किसी वस्तु के अथवा सस्था के निर्माण से पूर्व मनुष्य भी दो प्रकार के नियमों का निश्चय करता है। एक प्रकार के नियमो का निश्चय करता है। एक प्रकार के नियम वस्तुनिर्माण या सस्था के सगठन के सम्बन्ध मे बनाता है। दूसरे नियम. वस्तु के उपयोग अथवा सस्थाद्वारा किए जाने वाले कार्यों की पद्धति के सम्बन्ध मे बनाता है। कुर्सी के निर्माण की प्रक्रिया के नियम और निर्मित कुर्सी के उपयोग के नियम अलग-अलग होते हैं।

(३) **रात्रि तथा समुद्रोऽर्णव**—तत्पश्चात् प्रभु ने जगत् की उत्पत्ति के उपादान कारण 'प्रकृति' की ओर ध्यान दिया। "रात्रि" का अर्थ मूल प्रकृति होता है। जड़ प्रकृति में उस अभीद्ध तपसे 'प्राण' का संचार हुआ। प्रकृतिक्रमश महत् और अहंकार के रूप मे प्राप्त हुई।

सूक्ष्मतम प्रकृति का अव्यक्त से व्यक्त रूप मे होना, महत् रूप है। और अधिक व्यक्त होकर एक-एक परमाणु का पृथक्-पृथक् होना अहकार रूप मे प्रकट होने की अवस्था को इस सूक्त में "समुद्रोऽर्णव" इन शब्दों से कहा गया है। अभिप्राय है सख्यातीत परमाणुओ का सघात, अर्थात् प्रकृति की अहकारावस्था। यजुर्वेद १७।२ में सख्याओं की गिनती के क्रम मे "समुद्र" यह अन्तिम संख्या है. जो दस हजार खरब के समान है।

(४) **अहोरात्र**—यहां तक प्रकृति अपने ही रूपमे अर्थात् अव्यक्त से व्यक्त में है। इसका अगलारूप—पञ्चतन्मात्राओं में परिवर्तन होना है। पंचतन्मात्रओ में आने पर प्रकृति विभिन्न रूपों में प्रकट होगी। जड़ प्रकृति में यह परिवर्तन का कार्य "अभीद्ध तप" से प्राप्तप्राण (ताप=गति) द्वारा होना है। सृष्टि रचना अब रयि और प्राण' से होनी है। तप के प्रभाव से कुछ परमाणु प्राण शक्तिमय होगे तथा दूसरे जड रह जाएगे, जो परमाणु जड़ ही रहेंगे, उन्हे रयि और जो प्राणमय होते हैं, वे प्राण कहे जाते है। आज भी पाश्चात्य विज्ञान मे इन्हें इलेक्ट्रान (प्राण) और न्यूट्रान या प्रोटोन (रयि) कह सकते हैं। इस सूक्त में प्राण और रयि को अहोरात्र नाम दिया है।

(५) **संवत्सर**—पचतन्मात्राओ की रचना से पूर्व, प्रभु ने, प्राणवानद परमाणु (इसे आगे प्राण कहेंगे) की गति को नियमित करने के उद्देश्य से जो गतिनियम बनाया, उसे इस सूक्त मे सवत्सर कहा है।

सवत्सर का सामान्य भाषा मे अर्थ वर्ष है। सूर्य के चारो ओर घूमती हुई पृथ्वी जब पुन उसी स्थान पर आ जाती है, जहा से उसकी गति आरम्भ हुई थी, उसे हम सवत्सर या वर्ष कहते हैं। (प्रारम्भिक स्थान, वर्ष मे कोई भी दिन, मास, ऋतु मान सकते हैं। यहा हमने गति अथवा दूरी की गणना वर्ष अर्थात् समय से की है। आजाका वैज्ञानिक भी नक्षत्रो की दूरी वर्षों (समय) मे करता है। इसके साथ ही आजका वैज्ञानिक स्वीकार करता है कि ताप, विद्युत्, चुम्बक, गति आदि शक्तिया पावर्स एक-दूसरे मे परिवर्तित होती हैं। पानी की गति से टरबाइन मे गति देकर विद्युत् उत्पन्न करते हैं। और बिजली द्वारा मोटर को गति देकर मशीने चलाते हैं। इसी प्रकार सवत्सर शब्द यहा गति-सूचक है, काल सूचक नही। समस्त शक्तिया "प्राण" शब्द से ग्रहण होती हैं। और प्राण 'अभीद्ध तप' का गुण है।

अब सवत्सर के पदो पर ध्यान दीजिए। स+वत्+सर। सृ, सरणे से सर शब्द सरकने अर्थ मे है।" सरतीतिवत्" या 'वर्तुल सरति'। अर्थात् सरण करने के समान हैं। जैसे लट्टू एक ही स्थान पर स्थिर है और गतिमान् है अथवा वृत्त की परिधि मे (कक्षा मे) सरण करना। यहा की गति पर ध्यान दीजिए। पृथ्वी अपने अक्ष पर लट्टू की तरह घूम रही है, जिससे दिन और रात होते हैं। फिर इसी प्रकार गति करती हुई सूर्य के चारो ओर अपनी कक्षा (परिधि) मे भी घूम रही है, जिससे ,ऋतुए बनती हैं। इस गति को वेद मे (यजुर्वेद अ० २७ क० ४५) मे इसे परिवत्सर (परित. वर्तुल सरति इति) कहा है। वहा सवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इद्वत्सर, वत्सर" शब्दो का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार सूर्य प्रकरण मे भागवत्पुराण स्कन्ध ५, अध्याय २३ श्लोक ७ में सवत्सर, परिवत्सर, इडावत्सर, अनुवत्सर, वत्सर शब्द आए हैं।

पृथ्वी के साथ-साथ सूर्य के चारों ओर चन्द्र, मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र आदि ग्रह भी लट्टू की तरह घूमते हुए, अपनी-अपनी कक्षा मे घूम रहे हैं। आपस मे टकराते नही। इस प्रकार की गति का नियम सवत्सर, सौर्य-मण्डल मे दिखाई देता है। समयबद्ध, गतिसीमाबद्ध गति ही सवत्सर है। प्राण ने रयि के चारो ओर इसी सवत्सर गति से परिभ्रमण करना है। अत. पदार्थ—रचना से पूर्व प्राण-रयि (अहोरात्र) को नियमित करने वाली सवत्सर गति का प्रभु ने पहले विचार किया।

प्रस्तुतकर्त्ता—धर्मवीर विद्यालंकार

इस सूक्त का देवता है भाववृत्त। इसका आध्यात्मिक अर्थ न करते हुए, आधिदैविक अर्थ है—वृत्त की भावना अर्थात् विद्यमानता। वृत्त को अंग्रेजी मे सर्कल कहते हैं। वृत्तभावना को कहेगे सर्कुलेशन। यह सरकुलेशन अर्थात् वृत्त की परिधि (कक्ष) पर भ्रमण ही 'सवत्सर" मे प्रगट हुआ है।

रयि के चारो ओर प्राण के परिभ्रमण से सृष्टि रचना है, ऐसा आज का विज्ञान इस रूपमे मानता है कि इलेक्ट्रान परमाणु, न्यूट्रान और प्रोटोन के चारो ओर गति करते हैं। आज विज्ञान अपूर्ण है। उसमे नित नए आविष्कारो से सिद्धान्तो मे परिवर्तन हो रहा है। वेद का सिद्धान्त नित्य और शाश्वत सत्य है।

(६) **विश्वस्य मिषतो वशी**—'प्रण' और "रयि" परमाणुओ की सख्या उनके कक्षो की सख्या, उनकी गति या स्पीड के प्रत्येक क्षण का नियमन, प्रभु के वश मे है।

(७) **धाता यथापूर्वकल्पयत्**—वह परमात्मा ही इस सृष्टि को बना रहा है। और धारण कर रहा है। उसने इस प्रकार की सृष्टि पहले भी कई कल्पो मे बनाई है।

(८) **सूर्य, चन्द्र, दिव पृथिवी, अन्तरिक्ष, स्व**—प्रभु ने ये छह प्रकार के पदार्थ ६, गुणो (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, मनन) वाले बनाए। और प्राणी (मनुष्यो पशु, पक्षी आदि) के शरीर मे पाच ज्ञानेन्द्रिया (चक्षु, जिह्वा, घ्राण, नाक कान) और मन प्रदान किए। मन्त्र के ये ६ शब्द उत्पन्न पदार्थों के भेद बता रहे हैं।

ऋषि—अघमर्षण मधुश्छन्दस। सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता और वशीकर्ता वह प्रभु है। ऐसा जानकर मनुष्य पाप कर्म से निवृत्त होता है। अघ का मर्षण करता हे, चूर-चूर करता है, मसल देता है। फिर प्राप्त करता है, जीवन माधुर्य का सगीत तब बनता है अघमर्षण मधुश्छन्दस।

मधु शब्द वृहदारण्यक उपनिषद् की मधु विद्या की ओर भी सकेत करता है।

देवता—भाववृप्त है। आधिदैविक अर्थ "वृत्त की विद्यमानता न होने से परमाणुओ की वृत्ताकार भ्रमण-गति के नियम की ओर सकेत करता है।

साथ ही सन्दर्भ मे 'प्र—वृत्त" और दुष्कर्म से "नि—वृत्त" होने की ओर सकेत कर रहा है।

छन्द—प्रथम मन्त्र मे ईश्वर की महिमा का स्तोत्र करते समय विराऽनुष्टुप है। दूसरे मन्त्र मे प्रकृति के परिवर्तन के वर्णन के समय अनुष्टुप है और तीसरे मत्र मे सृष्टि वर्णन होने से निचृदनुष्टुप है।

इस प्रकार मन्त्रार्थ निम्न है—ज्ञान और प्रकाशस्वरूप प्रभु ने सृष्टि रचना सकल्प किया। पहले ऋत और सत्य नियमो का विचार किया। फिर अव्यक्त प्रकृति को व्यक्त (महान् तथा अहकार) रूप दिया। फिर प्राण (तप) द्वारा परमाणुओ को प्राणवान् बना गति प्रदान की। इससे पूर्व परमाणुओ की गति, सख्या, कक्ष आदि को नियमित करने के निमित्त "सवत्सर" के नियम का निश्चय किया। उन परमाणुओ का, उनकी गति का और प्रत्येक क्षण मे होने वाले परिवर्तन का नियत्रण प्रभु ही करते हैं, उनके ही वश मे है। परमाणु के गतिशील होने पर प्रभु मे छह प्रकार के पदार्थ, छह प्रकार के मूलभूत गुणो वाले तथा मनुष्य शरीर मे उनके ग्रहण करने वाली पाच ज्ञानेन्द्रिया और मन की रचना की। ऐसी रचना, प्रभु, पहले भी कई कल्पो मे करते रहे हैं।

सरस्वती भवन, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर, ३०५००१

पंजाब के आतंकवादियों का दमन हो

दीवान हाल में आयोजित जन सभा की मांग

पजाब के हत्याकाड के विरोध मे आर्यसमाज दीवानहाल में आयोजित जन सभा ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शाल वाले की अध्यक्षता मे एक प्रस्ताव पारित कर पजाब के हत्याकाड पर गहरा दुख और शोक व्यक्त किया और बस यात्रियो के हत्याकाण्ड और पजाब के उग्रवादी अकाली आन्दोलन के पीछे पाकिस्तान और भारत मे रहने वाले पाकिस्तानी ऐजेन्टो का हाथ घोषित कर उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की माग की गई। सभा ने पजाब मे राष्ट्रपति शासन लागू करने मे फैसले का स्वागत किया और आशा प्रगट की कि पजाब का नया प्रशासन पजाब की स्थिति को सम्भालने का प्रयत्न करेगा। वह अपराधियो को पकडकर उनका दमन करेगा।

सभा में श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम जी, श्री ओमप्रकाश त्यागी, प्रो० बलराज मधोक ने अपने विचार व्यक्त किए।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में विदेशी विद्वान् आएंगे

नई दिल्ली। त्रिदिवसीय तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर भारतीय भाषाओ के लब्धप्रतिष्ठ लेखको के साथ ५० देशो के सुविख्यात विदेशी हिन्दी लेखक तथा विद्वान भाग लेंगे जिसमे रूस ओर अमेरिका के सबसे अधिक ५० विद्वान् शामिल हैं।

सम्मेलन के प्रचार सचिव डा० रत्नाकर पाण्डेय ने बताया कि नागपुर और मारीशस मे सम्पन्न हुए प्रथम और द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन मे कुल ३० देशो के १२० विद्वानो ने भाग लिया था। जबकि तृतीय सम्मेलन मे विदेशी विद्वानो की संख्या ४०० से भी अधिक है भारत के अतिरिक्त विश्व के अन्य देशो मे लगभग एक सौ प्रतिष्ठित हिन्दी लेखको का सामूहिक प्रतिनिधित्व स्टेडियम के सम्मेलन मच पर होगा।

डा० पाण्डेय के अनुसार अधिकाश लेखक पहली बार भारत के इस ऐतिहासिक समारोह मे सम्मिलित होगे। रूस और अमेरिका के अलावा मारीशस तीसरा देश है जो लगभग दो दर्जन प्रतिनिधियो को भेज रहा है। सम्मेलन मे भाग लेने वाले विदेशी हिन्दी लेखकों मे प्रमुख हैं—डा० बी० पी० बारानिकोव, डा० ए० बरखुदारोव, डा० इ० चैलीशेव, डा० सजानरेखा, अलेक्जेंडर, प्लेनिश्लोव (रूस), डा० कोलिन पी० मेसिका, प्रो० थियोडोररिकार्डी, डा० मिस कैरिन शीमर, डा० माइकेल शपीरी, डा० फ्रैंकलिन साउथवर्क, मि० थामस रिजवे (अमेरिका), प्रो० एन० बलबीर (फ्रास) डा० श्रीमती मारग्रेट गातसलाफ (जर्मनी), तौमियो मिजोकामी (जापान), मि० गोस्ता पेर्मन (स्वीडन), डा० आर० एस० मैकग्रेगर, डा० राबर्ट स्नैल (इगलैंड), डा० लौथार लुत्से, प्रो० डा० एन्जो तुरबियानी (इटली), मि० सोमदत्त बखोरी, मि० ए० एम० भगत, मि० प्रह्लाद रायसरन, श्री दीपचन्द बिहारी (मारीशस), डा० ओडोलैन स्मैकल (चैकोस्लोवाकिया) आदि भाग ले रहे हैं।

इसके अलावा आस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान, बगला देश, बैल्जियन, बर्मा, कनाडा, चीन, क्यूबा, डेनमार्क, फिनलैंड, फिजी, पूर्वी जर्मनी, गुयाना, हालैण्ड, हागकाग, कोरिया, मगोलिया, नेपाल, नीदरलैण्ड, नार्वे, पाकिस्तान, पोलैण्ड, ग्रीम, श्री लका, दक्षिणी कोरिया, सुरीनाम, स्विटजरलैण्ड, तजानिया, थाइलैण्ड, त्रिनिडाड, यूनाइटेड किंगडम, तथा युगोस्लविया आदि के प्रतिनिधियो के शुभागमन से हिन्दी को विश्व-स्तर पर प्रसारित करने और राष्ट्र मघ की भाषा बनाने मे कर्मठ मदद मिलेगी।

उग्रवादियों का दमन किया जाए

पंजाब के हिन्दुओं की जानमाल की रक्षा की जाए

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी की मांग

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के अध्यापको, छात्रो तथा कर्मचारियो की यह सभा पजाब के उग्रवादियो द्वारा की जा रही व्यापक हिंसा, तोडफोड़ तथा अराष्ट्रीय गतिविधियो की कडी निन्दा करती है तथा केन्द्र सरकार से अनुरोध करती है कि उग्रवादियो का दमन करने के लिए कठोर कार्यवाही करे और पजाब के हिन्दुओ की जान-माल की रक्षा के लिए शीघ्र प्रभावकारी कदम उठाए।

इन उग्रवादियो ने पिछले कई महीनो से गुरुद्वारो से इतर मन्दिरो को अपवित्र करने, गोमास को धार्मिक तथा सार्वजनिक स्थानो पर फेंकने, निरीह पुजारियो द्वारा निरकारियो की हत्या करने, कर्त्तव्य परायण पुलिस कर्मियों की नृशंस हत्या करने तथा भोले-भाले निरपराध यात्रियों को गोली से भूनने की जो अमानवीय कार्यवाही की है, उससे राष्ट्र विरोधी शक्तियों के हाथों मे खेल रहे उग्रपंथी नेताओ की घिनौनी चालों का पर्दाफाश हो गया है। पजाब मे राष्ट्रपति शासन की जरूरत बहुत पहले से अनुभव की जा रही है। अब उस निर्णय की घोषणा से देश के लोग आश्वस्त हुए हैं।

यह सभा आगे माग करती है कि इन हत्याओ मे से प्रत्येक की जांच कराई जाए तथा अपराधियो को कठोर से कठोर दण्ड दिया जाए अन्यथा उग्रवादियो के कारण सिक्खो और हिन्दुओ में पैदा किए जा रहे अलगाव को लेकर देश भर में घृणा का वातावरण उत्पन्न होगा। उमडते हुए जन-आक्रोश के कारण इसके परिणाम आततायियों के लिए भी अच्छे नहीं होंगे।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की धूम

विदेशों और देश के भक्त पहुंचे : कार्यक्रमों की धूम

अजमेर, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड १४ अक्तूबर १९८३। ६ अक्तूबर से चतुर्वेद पारायण यज्ञ नियम से प्रतिदिन प्रात: ६ से ९ और मध्याह्नोत्तर ३ से ६ तक हो रहा है। अभी ऋग्वेद चल रहा है। १८-१०-८३ को ऋग्वेद पूर्ण होगा। १९-१०-८३ से यजुर्वेद आरम्भ होगा। प्रात: यज्ञ के अनन्तर आचार्य श्री विश्वश्रवा यज्ञ परक प्रवचन में सरल ढग से गहन विषयो को समझाते हैं। सायकालीन यज्ञ के अनन्तर महात्मा दयानन्द जी के प्रवचनो मे भक्तिरस प्रवाहित होता है, तथा पुण्य कर्मों-यज्ञादि के-प्रति उत्साह उत्पन्न होता है। १२-१०-८३ से सायकालीन प्रवचन मे स्वामी जीवनानन्द जो, रोहतक निवासी, श्रवण-मनन के अनन्तर तदनुसार आचरण करने के लिए प्रेरणा देते हैं।

सात्त्विक, निशुल्क भोजन त्रुटिहीन है। स्नान, शौच, वस्त्र प्रक्षालन, निवास की सुन्दर व्यवस्था यज्ञस्थली, ऋषि उद्यान मे उत्तम है। अन्नासागर की लहरें और ठण्डी हवा जहा गरमी का अपहरण करती है, वहा चित्त को ध्यान मे लगाने मे सहायक हैं। अन्नासागर का विस्तृत घाट ऋषि उद्यान में भी है, जहा स्नान (और साथ वस्त्र प्रक्षालन) का आनन्द है।

प्रतिदिन प्रात.काल श्री श्यामसुन्दर जी योगासन सिखाते हैं। तदनन्तर स्वामी सत्यपति जी योगाभ्यास सिखाते हैं। यज्ञ के अनन्तर स्वामी सत्यपति जी महाराज पहले हिन्दी का और फिर सस्कृत का व्यास भाष्य, पतजल योग पढाते हैं। भोजनोपरान्त (मध्याह्न) आचार्य श्री विश्वश्रवा जी वेद शिक्षा पढ़ाते हैं। सभी ऋषिभक्त प्रसन्नतापूर्वक इन सभी शिक्षाओ मे सोत्साह भाग ले रहे हैं। रात्रि को भोजनोपरान्त स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रवचन होते हैं। १३-१०-८३ को आशाराम जी भजनीक ने अपने सुमधुर कण्ठ से प्रभावकारी शैली मे ऋषि दयानन्द की जीवन-सम्बन्धी चित्र दिखाए।

पाण्डीचेरी-महाराष्ट्र, गुजरात, बगाल अमेरिका के १५, पजाब उत्तर प्रदेश के ६२, गुडगावा, घिरौण्डा, रोहतक दिल्ली के ३५, राजस्थान—जयपुर, चित्तौड़ मध्यप्रदेश—हैदराबाद के १८, कुल उपस्थिति १३० है। उत्तर प्रदेश के ४० व्यक्ति चले गए हैं। उनके स्थान पर ५० व्यक्ति २/३ दिन मे आ रहे हैं। —धर्मवीर

जम्मू-कश्मीर में तीन मास तक वेदप्रचार

श्री रोशनलाल की पैदल यात्रा का प्रभाव

तिहाड ग्राम के श्री रोशनलाल इस वर्ष गर्मियो में तीन मास तक जम्मू-कश्मीर मे वेदप्रचार कार्य मे सलग्न रहे। उन्होंने नौशेरा, बनहाल, लुम्बडी, राजल, बंगूठी, डेढसेरा, राजलकोट आदि क्षेत्रो मे पैदल घूमकर जगह-जगह यज्ञो और सभाओ के माध्यम से वेदप्रचार किया। उन्होने आर्यसमाज तिहाड़ तथा तिलक नगर की ओर से साहित्य बाटा, जिससे लोगो पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। इन क्षेत्रो मे ईसाइयो का प्रचार बढ़ रहा है, उसे रोकने की बडी जरूरत है। लुम्बडी में आर्यसमाज की स्थापना हो गई थी, वहा मास्टर चुन्नीलाल और श्री मोतीलाल के प्रयत्नो से वार्षिकोत्सव बडा सफल रहा।

नौशेरा राजौरी आदि ग्रामो मे आर्य परिवारो ने भाग लिया। यहां कई दिनों तक भण्डारा हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी सूर्यदेव, स्वामी भुवानन्द, महात्मा ज्ञानभिक्षु, महात्मा गोपाल जी आदि पधारे और अपने प्रवचन दिए।

नौशेरा की एक देवी ने अपने नगर में भी इन महात्माओं के प्रवचन कराए। इन क्षेत्रो मे विदेशी धर्मावलम्बी प्रचार की कोशिश कर रहे हैं, यदि समय रहते आर्यसमाज ने इनकी रोकथाम नहीं की तो स्थिति बिगड़ सकती है।

पं० बाबूलाल दीक्षित स्मारक भाषण-प्रतियोगिता

आर्यसमाज डिबाई बुलन्द शहर मे १४ अक्तूबर १९८३ को प्रकाण्ड पण्डित महान् स्वतन्त्रता सेनानी महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास के संस्थापक स्व० प० बाबूलाल दीक्षित की स्मृति मे डिबाई क्षेत्र सभी स्कूल-कालिजो के छात्र-छात्राओ की वृहद् भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विषय था—"स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का सर्वाधिक सक्रिय योगदान" प्रथम पुरस्कार—कु० नीरा भारद्वाज, द्वितीय पुरस्कार—श्री अशोक एवं तृतीय पुरस्कार—श्री यज्ञप्रकाश आर्य ने प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त तीन प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए। इस प्रतियोगिता का आयोजन एव समस्त व्यय स्व० प० बाबूलाल दीक्षित के अनन्य शिष्य, श्री रूपकिशोर शास्त्री, नई दिल्ली ने किया। प्रतियोगिता सभा के अध्यक्ष श्री ब्रह्मदेव शास्त्री एव श्री रूपकिशोर शास्त्री ने बच्चों को आशीर्वाद भी प्रदान किया। प्रतियोगिता बहुत ही रुचिकर एव लोगों के द्वारा सराही रही।

—रघुनन्दन लाल शर्मा
मन्त्री

रविवार, २३ अक्तूबर १९८३

अन्धा-मुगल प्रतापनगर—पं० खुशीराम शर्मा; आर्यपुरा—प० सुमेरचन्द वेद्यार्थी; आर० के० पुरम से०६—प० हरिकचन्द आर्य, रामकृष्ण पुरम ६—स्वामी शिवानन्द; किशनगज—प० बलबीर शास्त्री; किंग्जवे कैम्प—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; कालका डी० डी० फ्लेट—रमेशचन्द्र वेदाचार्य, कृष्णनगर—डा० द्विवेदी जी; गाधीनगर—प० कामेश्वर शास्त्री; गीता कालोनी—ओमप्रकाश गायक; ग्रेटर कैलाश न०-१—प० देवीचरण देवेश, ग्रेटर कैलाश न०-२—प० जयभगवान, गुडमण्डी—प० अमरनाथ कान्त; ग्रीनपार्क - प० मनोहरलाल ऋषि, गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० शीशराम भजनीक; गुप्ता कालोनी—स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती; चूनामण्डी—देवराज वैदिक मिशनरी, टैगोर गार्डन—प० प्रकाशचन्द वेदालकार; तिलकनगर—डा० सुखदयाल भूटानी, तिमारपुर—प० रामरूप शर्मा, दरियागंज—प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री; देवनगर—प० खुशीराम शर्मा, नारायण विहार—प० चमनलाल जी महोपदेशक, न्यू मोतीनगर—प० महेश पाराशर; नगर शाहदरा—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, पजाबी बाग—आशानन्द जी भजनीक, पजाबी बाग एक्स्टेन्शन—प० शिवप्रकाश शास्त्री, बिरला लाइन्स—प० विद्याव्रत शास्त्री, बालीनगर—रणजीत राणा, विक्रमनगर-कोटला फिरोजशाह—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विनयनगर—प० ओमप्रकाश वेदालकार, भोगल—आचार्य नरेन्द्रपाल, माडलबस्ती—पं० मुनिदेव आर्य, मोती बाग—प० रामदेव शास्त्री, माडल टाउन—प० रविदत्त गौतम; रघुवीर नगर—प० बलवीर शास्त्री, राणाप्रताप बाग—प० मुनिशकर; राजौरीगार्डन—प० रामनिवास शास्त्री, रोहतासनगर—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; रमेशनगर—पण्डित मोहनलाल गाधी; लड्डू घाटी पहाड गज—प० देवराम शास्त्री, लक्ष्मीबाई नगर—स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती, लारेन्स रोड—प० सोमदेव शास्त्री; सदरबाजार—प० दिनेशचन्द पाराशर; साकेत—तुलसीदेव सगीताचार्य, सराय रोहेला—डा० रघुनन्दन सिंह, सोहन गज—प० परमेश शर्मा; शालीमार बाग—प० कर्णदेव शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; हौजखास प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, त्रिनगर—प० तुलसीदेव आर्य, अमर कालोनी—प० चुन्नीलाल आर्य; प० सत्यदेव स्नातक (रेडियो कलाकार) निर्माण विहार—वार्षिक उत्सव—प० रामकिशोर वैद्य, निर्माण विहार—प० ज्योति प्रसाद, अमर कालोनी—आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तर्क केशरी-प० वेदव्यास भजनोपदेशक, इस्लामपुर—प० सत्यपाल मधुर।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार

शिवालक पहाड़ियों में वेद प्रचारार्थ

महात्मा दयानन्दजी महाराज को जीप भेंट

दिल्ली। 'वेद की ज्योति जलती रहे' 'ओ३म् का झण्डा ऊचा रहे' के गगनभेदी नारो से आर्यसमाज करोलबाग मन्दिर का प्रागण गुजायमान हो उठा, जब श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने श्री महात्मा दयानन्दजी महाराज को डीजल जीप की तालिया भेंट कीं। यह जीप श्रद्धालु आर्य जनता तथा दिल्ली निवासियों की ओर से शिवालक पहाड़ियो के दुर्गम क्षेत्रो में वेदप्रचारार्थ दी गई है। जब महात्मा जी इस जीप पर सवार होकर मन्दिर से विदा हुए तो सैंकडो नर-नारियो को आखें हर्षोल्लास से सजल हो उठी।

आर्यसमाज करोलबाग के मन्त्री श्री ओमप्रकाश सुनेजा ने समाज के गौरवमय इतिहास की चर्चा करते हुए बताया कि यह समाज सामाजिक कार्यों मे सदा अग्रणी रही है।

आर्यसमाज आर्यपुरा के प्रधान चौ० सुखलाल का देहावसान

दिल्ली। आर्यसमाज आर्यपुरा के प्राणस्वरूप प्रधान सर्व श्री चौ० सुखलाल का देहावसान गत ११ अक्तूबर ८३ की रात्रि ८ ३० बजे हो गया। चौधरी साहब महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज के प्रति पूर्ण आस्थावान् थे जिसका ज्वलन्त उदाहरण उनका परिवार है। वह नि.स्पृह कर्मठ समाज सेवी, विचारक एव महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के सफल बनाने के लिए सतत् प्रयत्नशील एवं कृत सकल्प होकर धन और अन्न एकत्र करन में सन्निहित थे। उनकी शोक सभा २३ अक्तूबर ८३ की दोपहर दो बजे राजपूतान धर्मशाला आर्यपुरा में होगी। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे इस दिवंगत पुण्यात्मा को उनके सद्कर्मों के फलस्वरूप सद्गति प्रदान करें।

महाशय धर्मपाल आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान निर्वाचित

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक अधिवेशन आर्यसमाज मन्दिर १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे सभा प्रधान महाशय धर्मपाले जी की अध्यक्षता मे रविवार ९-१०-८३. को अपराह्न ३-३० बजे से ५-३० बजे तक सम्पन्न हुआ। गत बैठक की कार्यवाही की सम्पुष्टि की गई और श्री सूर्यदेव महामन्त्री ने वार्षिक रिपोर्ट और डा० रघुवर दयाल कोषाध्यक्ष ने आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया, जिसे साधारण सभा ने पारित किया। नव वर्ष के लिए अधिकारियो एवं अन्तरग के निर्वाचन के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय लाला रामगोपाल शालवाले ने प्रस्ताव रखा कि देश की समस्याओ और आर्यसमाज के उत्तरदायित्व को देखते हुए हमे चुनाव की प्रक्रिया मे न पड़कर एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। हमे आगामी वर्ष के लिए महाशय धर्मपाल जी से ही केन्द्रीय सभा के प्रधान पद को सुशोभित करने की प्रार्थना करनी चाहिए तथा आगामी वर्ष के लिए अन्तरग का गठन बिना अधिक परिवर्तन किए वह स्वय कर लें। साधारण सभा के सभी मान्य सदस्यो ने करतल ध्वनि से इस प्रस्ताव को पारित किया।

एक प्रस्ताव मे पजाब की चिन्ताजनक परिस्थिति पर चिन्ता अभिव्यक्त कर अकाली आन्दोलन के पीछे विदेशी तत्त्वो के होने और उनका कड़ाई से नियन्त्रण करने की माग की गई।

आर्यसमाज कीर्तिनगर में नि शुल्क स्वास्थ्यशिविर

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली—१५ मे २३.१० ८३ को प्रात ९ बजे से १२ बजे तक नि शुल्क हृदय स्वास्थ्य एव ई० सी० जी० का शिविर लगेगा। जो सुयोग्य डा० आर० एन० कालडा (हृदय रोग विशेषज्ञ) तथा अन्य सहयोगी चिकित्सको द्वारा आयोजित है।

कृपया सम्पर्क करें, मन्त्री, आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली—१५

विश्वपाल मन्त्री

खेलकूद के बिजली के फलक पर नतीजे हिन्दी मे क्यों नहीं ?

एशियाई खेलो के प्रारम्भ होने से पूर्व समाचार पत्रो मे यह सूचना छपी थी और उसे पढकर हमें यह सन्तोष हुआ था कि खेलो के जो परिणाम बिजली के फलक पर दिए जाएगे, यह एक बार हिन्दी मे तथा एक बार अंग्रेजी मे हुआ करेंगे। किन्तु जब खेल आरम्भ हुए तो यह देखकर निराशा हुई कि नतीजे के फलक पर परिणामो के सम्बन्ध मे घोर उपेक्षा बरती जा रही थी। सारे परिणाम तथा टीमो के विवरण नतीजे के फलक पर केवल अंग्रेजी में जा रहे थे। हाल ही मे जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम मे पाकिस्तान तथा भारत से बीच जो क्रिकेट मैच हुआ उसका नतीजा भी फलक पर केवल अंग्रेजी मे दिखाया जा रहा था।

बाहर के अन्य देश इस प्रकार के उपकरणो मे अपने देश की भाषाओ का प्रयोग करते हैं। भारत जैसे विशाल देश मे जहा अनेक योग्य वैज्ञानिक है और वैज्ञानिक क्षेत्र मे उनकी कई उल्लेखनीय उपलब्धिया रही हैं, अपने देश की भाषाओ का प्रयोग सम्भव होना चाहिए। सम्भवत बिजली सम्बन्धी उपकरण विदेशो से मगवाते समय सरकार की ओर से इस बात का प्रबन्ध किया गया था कि खेलो के परिणाम नतीजे के फलक पर हिन्दी मे भी आया करेंगे। तकनीकी दृष्टि से उस प्रकार का प्रबध करने मे कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए चूकि देश मे देवनागरी लिपि के गणनयन्त्रो का विकास हो चुका है और उनका उत्पादन भी आरम्भ हो गया है।

—हरिबाबू कसल, ९।२३, वसन्त विहार, नई दिल्ली-११००५७

हंसापुर बहसूमा में १६वां आर्य सम्मेलन

महन्त डा० स्वामी जी की अध्यक्षता मे २० से २३ अक्तूबर ८३ को यजुर्वेद, महायज्ञ बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमे श्री स्वामी शिव आचार्य जी, श्री स्वामी चन्द्रवेश जी, शास्त्री वेद प्रकाश जी, श्री हरिसिंह आर्य गायक, श्री बेगराज सिंह जी, भारत प्रसिद्ध ब्रह्मचारी इन्द्रजीत जी, हाथी बाधने वाली जजीर तोडना, भाले की नोक कण्ठ पर रखकर आठ सूत का सरिया मोडना, कार रोकना, और तरह-तरह के प्रदर्शन दिखाये जाएगे।

हम अजमेर क्यों चलें ?

—ले० सत्यभूषण 'वेदालंकार' एम० ए०

महर्षि दयानन्द के एक सौ वर्ष पश्चात् जब देश की वर्तमान दशा पर दृष्टिपात करते हैं, तब हृदय उद्वेलित हो उठता है, भ्रष्टाचार, कन्या-विक्रय फैशन, साम्प्रदायिकता आदि का दौर दौरा है, मद्य-मांस, धूम्रपान तो आम बात हो गई है। इस विकट काल में हमारे अन्त स्तल, मन-मानस को झक-झोरता हुआ, एक प्रश्न उठ खड़ा होता है, निर्णयात्मक उत्तर मांगने को अखिल भ्रान्ति जाल की जटिल प्रहेलिका को सुलझाने को, कि हम आर्य अजमेर क्यों जाए ? यथार्थ के परिप्रेक्ष्य मे इसका समुचित उत्तर पाना ही होगा। प्रथम तो मेरा विचार है कि आज के इस दूषित वातावरण में आर्यसमाज की आवश्यकता स्वत, सिद्ध है, पहले से भी बढ गई है। भोगवाद की प्रबलता से टक्कर लेने के लिए, अकर्मण्यता के सिद्धान्त से मुक्ति पाने के लिए हमे प्रबल संघर्ष को उद्यत होना होगा। आर्यसमाज (श्रेष्ठ-जनो का समुदाय) ही एक ऐसा सगठन है, जो इस कार्य को सुचारु रूप से कर सकता है। महर्षि दयानन्द ने कभी असत्य, अन्याय भोगवाद के सामने सिर नहीं झुकाया इसका एक अनूठा उदाहरण उनके जीवन में आता है। उत्तराखण्ड के बडे प्रसिद्ध ओखी मठ में महर्षि दयानन्द जब पहुचे, तब महन्त ने उनके ब्रह्मचर्य एवं तेज पर मुग्ध होकर कहा, कि इस मठ की जितनी संपत्ति है वह सब तुम्हारी होगी। तुम मेरे शिष्य बन जाओ। पर महर्षि ने तपाक से उत्तर दिया—"इस मठ की सम्पत्ति से किसी भी अश में कम मेरे पिता की सम्पत्ति नहीं। यदि मुझे सम्पत्ति का मोह होता, तो मैं घर छोडकर ही क्यो आता ?"

अत. अजमेर जाना है, तो प्रण करिए, कि हम सिनेमा, टी० वी० मद्य मास आदि आराम तलबी विलास के साधनो का परित्याग कर सच्चे अध्यात्म मार्ग के पथिक बनेंगे। अजमेर आर्यों का तीर्थस्थल है, क्योंकि यहां एक महान् तेज: पुज अपनी अमर ज्योति के कण बिखेर गया है। ऋषिवर का सन्देश "निदन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु। लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पद न धीरा।" अजमेर जाकर हमे सत्य और न्याय पर अडिग होने का दृढ सकल्प लेना है। हमे यत्र तत्र सर्वत्र 'शृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्रा' का वैदिक नाद गुजाना है। भारत की पुण्यभूमि की पेट्रो डालर की विभीषिका से मुक्त कराना है। वेद भाष्य विभिन्न भाषाओ मे करके उसे घर-घर पहुंचाना है। कितना महान् एव दुष्कर कार्य है यह आर्यो! विचार करो, हम न उठे, तो देश को कौन उठाएगा ? इस शताब्दी को हम ऐसा मनाए कि पिछली सब शताब्दियो, समारोहो से यह बढकर हो। "सग [illegible] हमारे दृढ सगठन को देखकर लोग चकित हो जाएं।

आर्यसमाज साकेत के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री एस० आर० कटारिया, उपप्रधान—प्रो० [illegible] विद्यालंकार पी० एच० दबास, मन्त्री—श्री आर० सी० जी सक्सेना, संयुक्त मन्त्री—श्री [illegible] पाल गुप्त, कोषाध्यक्ष—श्री एम० एम० आहूजा, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती [illegible] भाटिया, आय-व्यय निरीक्षक—श्री जी० एस० भाटिया।

30 वे सस्करण से उपरोक्त [illegible]

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भारतीय प्रेस [illegible] में मुद्रित। कार्यालय १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली, फोन : ३१०१५०